

ललित कलाएँ किस दिशा में ?

पिटरिम सरोकिन

[श्री पिटरिम सरोकिन की एक अत्यन्त ही प्रेरक रचना है—'विष्णुस्तूत्रकाश्च आद्य इतिहासः'] सर्व सेवा संचयकाशन की ओर से ही उसका अनुवाद प्रकाशित हो रहा है—'मानवता की नवरचना' शीर्षक से । अनुवादक है—श्रीकृष्णदत्त भट्ट उक्त पुस्तक के विन्माकित अंश में लेखक ने बताया है कि हमारी ऐंद्रिय संस्कृति ने ललित कलाओं की क्या हुईयां कर रखी है और उत्तम दिशा में मोड़ने का उपाय क्या है ? —सं०.]

ईश्वरार्पित की प्रतिष्ठा। पर सुप्रसिद्ध होती थी । उसकी महानत्व वास्तुशिल्पकृतियों में प्रेक्षित था। उसके संगीत और साहित्य में भी इसी उच्च स्तर की कला में ईश्वरार्पण और रचयिता के साथ मानव सादात्म्य की ही भावना बरी थी । इसमें ईश्वर के श्रेष्ठतम साधन्य के प्रत्यक्ष चिह्न थे, जो मनुष्य की आत्मा को इस ऊँचाई तक ले जाते थे । ईश्वर, देवदूत और सत्-महात्माओं की ओर माना जाता था । उसकी प्रकथ-योग्यताएँ थीं—स्वयंभूत, ईसा का प्रास पर लोटफना, पुनरुज्जीवन आदि के रहस्य । उसके कलाकार ईश्वरीय गौरव और महत्ता के अधिकतर प्रसार के लिए, मानवीय आत्मा की सुक्ति के लिए विशेष रूप से थे । मानव को उसके पदानों तथा मानवता में आरंभ की भावना का प्रसार करने में ऐसी कला अत्यन्त महान् शक्ति थी ।

आर्यों से पन्द्रहवीं शताब्दी के बीच में जो कला विकसित हुई, उसने इसके आधार को और अधिक विरल किया । ईश्वरीय रम्य के बहिर्लोक ऐंद्रिय जगत् की भी अभिव्यक्ति करने लगी, परन्तु उसमें उसकी सर्वोत्तम और कष्टकर भावनाएँ ही स्वयंस् की जाती थीं । ईश्वर की उनको या ही, अर्द्ध-वैधी वीर भी उसके साथ जुड़ गये थे । उसने ऐसी किसी वस्तु का अंकन नहीं किया, जो अस्पृश्य, भरी, पतनशील कथना विकृत हो । आधुन्य मूल्यवान् कला भी धर्म, ज्ञान स्वभाव युक्तों से उष्णका संव्यवस्थित नहीं हुआ था । यह पतित हो उलट पतनी थी, आधुन्य को सुन्दर और श्वेत को शारद्वत । वह मनुष्य की शिक्षण देती थी, उसमें प्रेरणा हुईकती थी, उसे शुद्ध करती थी और उसे ठंडा कर महान् आदर्शों के क्षेत्र में पहुँचा देती । बाद की शताब्दियों में हमारी ऐंद्रिय संस्कृति के विकास के साथ-साथ कला में भी उत्तरोत्तर इन्द्रियपरतपणवा आती गयी । यह पस्तुकपना में लौकिक थी, स्वरूप में दर्शनीय जगत्वा प्राकृतिक थी । यह अपने धार्मिक और नीतिशास्त्रीय मिश्रण को उत्तरोत्तर छोड़ती गयी । 'कला कला के लिए', यह उसका नैतिक हो गया । धर्म और दर्शन, विज्ञान और नीतिशास्त्र से उसका संबंध-विच्छेद हो गया । फलतः यह विषयों की न सही, ऐंद्रियों की सुक्ति का मूल्यतः परिष्कृत साधन बन गयी ।

मध्ययुगीन कला संबंधी मूल्य फिर भी पुष्टयुगीन में थे, दत्तलिए ऐंद्रिय कला को अपने नदहों और शारद्वक बीमारियों में गिरने और फँसने से बचा सके । विवृति-पूर्व के इस स्तर में उसमें साहित्य और नाटक, चित्र-कला और सुक्ति-कला, वास्तुकला और संगीत में महान्तरम मूल्यों की प्रत्यापना की । परन्तु मध्ययुगीन कला संबंधी मूल्यों के हाथ के साथ-साथ उसका अन्तर्गत ही धीरे-धीरे पतनने लगा, जिसके कारण कला की सुजन-शीलता कमजोर बन गयी और वह अधिकाधिक रुग्ण, पतनशील, नकारात्मक और असंगत बनती गयी । मध्ययुगीन कला के उत्तुग शिखर से और तेरहवीं से पन्द्रहवीं शताब्दी की कला की आदर्शवादी चोटी से यह ऐसी नीचे गिरी कि सामाजिक पनाले के गर्त में जा बूनी । पहले जहाँ उसके आधार और अन्त का पाप था ईश्वर, वहाँ अब उसकी आरंभना और पूजा के पाप बने—पापकवी, डाकू, अपराधी, बेव्याप, पागल, मानसिक रूप से विवृत मानव आदि । उसके परम प्रिय स्थल बने—फारा अपराधियों के छिपने के गुप्त स्थान, पुलिस के वीरधर, पागलखाने; किसी नायिका, स्त्रीरिणी, शारद्वना जगत्वा भ्रष्टाचार का शयन-कक्ष, नाटक मलय, मदिरालय या सैलून, पत्रयपकारियों और पासणियों का अड्डा जगत्वा शहर की वह सड़क, जहाँ सनसनीखेज हत्या जगत्वा अन्य अपराध हो रहे हैं । उसके मूल्य दो विषय हैं—कायड के दो भाव—अपने सभी संभव स्थों में नदहली जगत्वा जगत्वा—और विधेपत—धीनसंबंधी । वह कन्दरागिवासी के रूप में भी हो सकती है, 'पोगाण्डिक' जिल्लाण रूप में भी । वह अजिन-जिगीय संबंधों की भी हो सकती है, धम-जिगीय संबंधों की भी । साधारण रूप में भी हो सकती है, विवृत रूपों में भी । इस प्रकार कला ने अपने को गिराकर हत्या और विषय-भोग की सुक्ति के उत्तंजक साधन का रूप ग्रहण कर लिया । वह विनोद, और मनोरंजन तथा परिचय से बनी हुई मासुतिरिणी को उकसाने का एक साधन बन गयी । वह 'रेक पदावती', 'खड्ड, वीरध-भारत, साधुन, खेड आदि विभाजित वस्तुओं के हाथ की कष्टगुलकी मान बन कर रह गयी । वह 'पट्टी पहनने वाले नरकों' अपराधी कोशालाव के सामग्री संबंधी आसनों के गुप्त विचित्र के स्तर पर उतर आयी ।

कला के इस स्तर पर उतर जाने का अर्थ यह हुआ कि वह केवल एक मात्रक कोज बन कर रह गयी, जिसे मात्रक चीजों के मासि सारता और बंधी जा सकता है । जल्दा राम पते के लिए यह इतना ताल के लिए सिरा की गयी कि वह अन्ध-मानों की सुक्ति बने । काल, अन्ध दर्शनों की संव्यवस्थित शायों की जगत्वा उष्ण हो अधिक रहा करती है । मात्रक चीज बन जाने के कारण यह सामाजिक वा कि वह समाजियों और शारद्वारिक विषयियों पर निर्भर करे । इतिहास विषय-विषय उसका स्तर निम्न से निम्नतर होना गया है । अपने इस गुणवत्त हाथ की सुक्ति उसमें संव्यव-गत सुक्ति (जिज्ञासा जगत्वा अपना अन्धता), अन्धत्व (विश्वनिष्ठाता), सतनशीलता 'आर्य' और शानतना में बने वाले उपार्थों द्वारा करने की बौद्धिता की है । यह अन्धकार 'मध्ययुगीन' और शानतना में बने वाले उपार्थों के लिए है । जगत्वा गुणवत्त का यह उलटव-कलाकृति का स्थान सबसे बड़ा चीज ने के लिया है । जगत्वा गुणवत्त का यह उलटव-साहित्यिक विवेकता ने के लिया है । अपने कला-कारकी का स्थान 'गुणवत्त' के तीव्र-धारात्मक लोभों में के लिया है । कुशल कला-आलोचक का स्थान 'गुणवत्त-साधारणता' में के रसा है । गुणवत्त कलाकारों का स्थान कला-रचना करने वालों, जगत्वा करने वालों की ओर माने-जगत्वा बर्णों को दिया जाता है । नास्तिक कलाकृतों के स्थान पर जगत्वावतते वेहुरों को महत्त्व दिया जाता है । श्रितिया का स्थान, कलापदवति को दे दिया जाता है । मौलिकता का स्थान मकल को दे दिया जाता है । शारद्वक मूल्यों का स्थान कलाकारक सफलताओं को दे दिया जाता है । कला की ऐंद्रियियों की ओर गुणवत्तक कलाकारों के सफलता का स्थान 'कला-संयोग' और 'श्रितिय एक गुणवत्त-मान' 'मकल' जैसी सुष्प संव्यवत्तों को दे दिया जाता है ।

* दिल्ली, जिनियाण, सड्डर । जगत्वा १-११।

गुणवत्त-साध, शुद्धता, ई जगत्वा, वी

वापू के काम को आगे बढ़ाना सर्वोदय-मित्रों का परम कर्तव्य

डा० राजेन्द्रप्रसाद

[यहमदाबाद के सर्वोदय-मित्रों का एक सम्मेलन १६ दिसम्बर को गुजरात के राजभवन में राष्ट्रपति के साम आयाजित किया गया गुजरात सर्वोदय-मण्डल के अध्यक्ष डॉ० द्वारकादास ज्योती ने प्राथमता की कि आप हमें, राष्ट्र को अनेकतम से नेतृत्व की ओर तथा हिंसा से अहिंसा ओर आगे बढ़ने में मार्गदर्शन और प्रेरणा दें। इसके बाद राष्ट्रपति ने जो भाषण दिया, उसके आवश्यक अंश यहाँ दिये जा रहे हैं। -सं०]

आज मैंने एक धर्मसंकट में डाल दिया, जन्त में आपने कहा कि यथापि हम धार्मिक नेता नहीं हैं, फिर भी सहाय्य सेना रखते हैं, और आप चाहते हैं कि मैंने द्वारा कुछ ऐसी प्रेरणा पाऊँ कि सहाय्य सेना से जोप अग्रसर सेना की ओर बढ़ें, बंद सकें। मैं इतना ही कहूँगा कि मुझमें यह शक्ति नहीं है। मैं आपसे यही बाहूँगा कि आप अपनी शक्ति से सहाय्य-सेना, जो सहाय्य सेना है, उस सेना को अग्रसर बना देने का प्रयत्न करें।

आजकल हम एक ऐसे जमाने में गुजर रहे हैं, जिसमें दो प्रकार की विचार-शैलियों का संघर्ष है। एक विचारशैली, जो परिचय से मिलती है, वह समाधि पर अधिक जोर देती है। बापू की ही हुई इसी शैली समाधि पर नहीं, व्यक्ति पर अधिक जोर देती है। परिचामी विचारधारा का यह भावपूर्ण रहता है कि यदि सारा समाज दूषित हो गया, तो व्यक्ति भी दूषित हो जायगा। हम यह जानते हैं कि जब तक व्यक्ति दूषित न हो, तब तक सारा समाज दूषित नहीं हो सकता। ये दो विचारधाराएँ हैं। मैं इस योग्य नहीं हूँ कि मैं यह कह सकूँ कि जो समाधिवाद वाले लोग हैं, वे निरालोक गलत हैं। पर मैं इतना जरूर कह सकता हूँ कि मैं इस पर पूरा विश्वास रखता हूँ कि व्यक्तिवादी जो विचारशैली है, वह अपनी जगह पर अत्यंत शुद्ध है, अत्यंत प्रभावशाली है और अत्यंत सत्य है। उस पर हम लोग चलते रहेंगे, जो उसका अक्षर रूप नहीं रह सकता है।



डा० राजेन्द्रप्रसाद

व्यक्ति-सुधार से ही समाज-सुधार

इस बात को ध्यान की घड़ति है, उस शास्त्र-मन्त्रि में सबसे बड़ा चीज यह है कि व्यक्ति अपने अधिकार की समाधि के हाथ में लेता है। चुनावों के जलिये हम अपने सारी अधिकार देते हैं, जो उनका अर्थ ही यह हो जाता है कि जब तक हमारे पास हुए लोग काम करते तबमें, तब तक काम, ठीक-ठीक होता जायगा और जब पर हम सहाय्य रखते हैं कि वे काम ठीक करेंगे। इस तरह अग्रसरों से ऐसी सजिन को हम उनके साथ दे देते हैं और उनसे पाइयें हैं कि उन व्यक्ति का वे ऐसा इतनेभार करें कि जिसमें केवल अपनी, व्यक्ति की ही उन्नति न हो, बल्कि उनकी सेवा से लाने देना को, सब लोगों की उन्नति भी। यह एक ऐसा भावना है, जिसके संबंध में धर्म-विचार करने से कोई विशेष लाभ हमको नहीं होगा। हमको तो यह ध्यान है कि जिस तरह पर हम चल रहे हैं, यह ध्यान कहीं तक ठीक है और हम कहीं तक ठीक रूप से चलने का प्रयत्न कर रहे हैं। मैं यह कह विश्वास है कि यदि व्यक्ति सुधार पाए, तो वह समाज की सुधार करता है।

आजों को काम शुरू किया है और समाज धारणों में, जिसका संघर्ष महात्मा गांधीजी के रहा है, उस सभी धारणों की ओर सभी संघर्षों का मुख्य उद्देश्य यही है कि व्यक्ति को बचवा बनायें। व्यक्ति को बचवा बनाने का अर्थ यह है कि वह अपने परिवार के भी भयान हो, उसके बचने का प्रयत्न करे और उसका परिवार सुख हो। जब वे लोगों को सुख हो जायें, समाज परिवार भी सुख, विभाग भी सुख और परिवार भी सुख, उसी उच्च मनुष्य को व्यक्ति ठीक ढंग से करी, ऐसा माना जायगा। उस वह अपने व्यक्ति के सुखों की भी अपनी ओर धीरे-धीरे बढ़ाएँ है। इन साधनों का जो काम है, वह बढ़ती है कि मनुष्य को सुख करे।

जमीं हम चारों ओर इस बात की शिकायत सुनते हैं कि हमारे लोगों का परिवार कुछ कमजोर देखते में आ रहा है। वही धोखेधारी बल्लारी है, वही गुप्तकारी बल्लारी है, तो वही व्यक्ति जिन्में जो काम दिया जाता है, उस काम को वह पूरा करेगा, इसका पूरा बरतना नहीं होता है। हमें इस बात का उदाहरण है कि जो काम आरम्भ किया गया, वह सब पूरा होता और

कमी है। मैं इस समय देखता हूँ कि संघर्ष-यान सब बन्द रख दो जिन आते हैं, रकब के लिए मग भी होती है, लेकिन जोसे सर्वोदय-मित्रों में वगैरह, इनकी शरर सेने भाके कोई नहीं रहें। अभी जमाने कि कि क्या कि राष्ट्रपति-मन्त्र में सर्वोदय-पाय रख्य गया है, यह खी बात है। फिर हमारे पास के समय से कोई अन्त करने के जाने वाला कोई नहीं आया। और इस बावद ही कुछ दिनों के बाद वह बन्द हो गया। हमने दुबारा कुछ किया, जिसका कुछ किया। लेकिन काम-कार नहीं होता है। पर कोई उलका चुने उलका नहीं रहता है, जो लोगों का समय में उलका और बरौसा भी बन हो जाता है। मैं यही बाहूँगा कि जमाने यहाँ से पैगले कर इस काम को पुनः फिर है, और साथ करके जब संविधान-संशोधन में इस काम को हाथ से लिया है, तो हम जमाना कर सकने हैं कि उनका उपाय इस प्रकार का होगा कि सब लोगों तक पहुँच सकेगा और लोगों से काम कर सकेगा। साथ इस उद्देश्य में २० हजार पाएँगे ही कुछ संशोधन-पाय रखे गये हैं। इन पानियों में से आप मुझे भी एक पाना पारवार उपस्थित है।

पानों का इन्तजाम करें

एक पात्र का अन्तर आर ठीक ढंग के संतुलन कर सकते हैं, जो लोग परिवार में जो आते हैं और काम का कुछ अंश बना सकते हैं और परिवार को कुछ ठह करक संतुलन की ओर माहुर कर सकते हैं। इन उद्देश्य से उच्च काम के काम का वही हूँ है। मैं जमाने को दूखर बना रहूँ, विशा सहने कि आप जो कर रहे हैं, उसको और ठीक तरह से बलागो और बल्लारी बहने के बलागो और काम को जाने बढायें।

सर्वोदय-यान
सर्वोदय-यान की योजना मुझे अच्छी

रु १९२०-२१ में हमारे दिहास से तो नहीं कहते थे, वे, एक मुझे मन दे दिया, मैं एक-एक हरी रख ही गयी जब घर की खीरे के लिए जल। जाता था, तब एक-एक मुझे जल पान में जो काम देते थे, वह उल्लेख करते थे। मैं जानकी बदायुँ कि वह केव-वी (रु १९-२२) बाल एक संक हाता काम उसीने बनाया रहा। उनक उमरकाई बल्लारी थी। घर-घर में परिवार से कहती थीं कि कार्यवाही कर दो मे। विचार-कामेल का सफलता २१ साल में हुआ। वह संतुलन बहुत ही संतुलन का और परतक अक्षर की है, क्या नहीं है। यह ठीक है कि इस वंश की शकल नहीं है, मारत की हवा में बदन मगो है। मगर उसकी उमर कम थी। इसका कुछ-कुछ अन्तर मनी यही है। मैं बाहूँगा कि इस वंश की अन्तर का ठीक तरह से बलागो, तो इसका सब बहुत पूरा तक का सफलता है।

मैं तो यही माना करूँगा कि सभी का काम यही तो बन-बैठक हुयेगा का परिवार, बलागो यही तो एक उद्देश्य है। यहाँ से ही उल्लेख का, उपस्थित का प्रभाव आरम्भ हुआ था। इन उद्देश्य केवासे हमें जमाना बहती बलागो यही तो दुकरी काम बहती बह काम हो जाइयें वही आरम्भ को बात नहीं है।

मैं तो यह बाहूँगा कि आप में ऐसे समय के रहते काम है, जिस बहुत काम है, पर मैंने काम के अन्तरी जिन्मेंधारी की उल्लेख करी है। यह यह है कि इस काम। आप बहालरार की रती और बलागो रहे, जिसके आरम्भ की और तो लोग भी लाभान्वित होयें और देश के लोग भी इनके लाभ स सके।

श्री नानाभाई भट्ट का जीवन-साधना

चतुर्थ व्यास

"बड़े की अलना बहुत देवी, छोटी की महानता बेल कर जीना हूँ।" सुखराव के अग्रगण्य कवि श्री उमाशंकर कोशी ने जिस छोटे श्रद्धार्थी की महिमा गायी है, उसे एक छोटे श्रद्धार्थी के बड़े जीवन-काव्य का आधार हम रसास्वाद और अध्ययन करेंगे।

परिवार की आर्थिक गरीबी की वजह से भी नानाभाई के लिए प्रागे पढ़ने का कोई इतनाम नहीं था। इसीलिए पूरा परिश्रम करते थे नैट्रिक में उच्च नंबर से उत्तीर्ण हुए और रिपब्लिश (मेरिट स्कॉलरशिप) प्राप्त की। आर्थिक गरीबी की, पर वौदिक और आधुनिक सभ्यता की इसीलिए तो अपने पास एक ही जोड़ कपड़े होते हुए भी उनके आत्मगौरव में कोई कमी नहीं आयी। हर रोज रात को कपड़े धो लेने में और सुपट कढ़ी स्वच्छ कपड़ों को पहन कर बॉलिंग करते थे। हर रोज के पॉन्ट-स्ट्रैप घाटे के नियमित स्थायत्व से इतिहास और साहित्य का अच्छा ज्ञान उन्होंने प्राप्त कर लिया। २१ वें साल की उम्र में ५०० एं. टोकर बॉलिंग के 'फेलो' बने, २२ वें वर्ष में हार्डरूल के हेडमास्टर बने। पर उन्होंने राज्य के टीचान के पास आरने लिए प्राथमिक शाला के शिक्षक की वजह की मांग की। इस समय उनके एम० एं. होने की तैयारी मजसूल होने लगी। एक शिवालय में रहते थे और घर पर सिर्फ राने के लिए बाते थे। यहाँ उन्होंने रोमान और ग्रीक साहित्य का गहरा अध्ययन करते दो साल का अध्ययन-क्रम एक ही साल में पूरा किया। एम० एं. होने ही भ्रमजगत् के शासलक्ष्य कॅडिज में इतिहास के प्राध्यापक बने।

दूसरा प्रवाह

बनारसीन शिक्षा के साथ-साथ एक दूसरा भी जोरदार प्रवाह उनके जीवन में चल रहा था। उनके कुछ पुराने, जो आस्था-धर्म की निष्ठा के स्वरूप में निरालु आधिपन वृत्ति से सेवा-भारतीय जीवन बिताते थे, उनके संस्कार व्यवस्था में नानाभाई को मिले थे और जवानी में उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र, योगसूत्र आदि के परिशीलन से तथा उनके गुरु श्रीमच्छास्त्राय महाशय के सामिप्य से वे महाशय-वर्षषण के संस्कार और भी टढीमूल हुए। हीनों प्रवाह धनना-व्ययना काम करने वाले थे।

प्रोफेसर का तमाशा !

जब प्रोफेसर के मन में स्वयं के निर्णय के लिए पीछे सीकानामी घड़ी और प्रयागपद परिणामावक १९१० में भागतार की एक पुरानी घंटासाल में अपने घर के इन्देव 'श्री दधिनामूर्ति भागत' के नाम से एक छात्रालय मुक्त किया। फिर भी वे एरनिशवा से एसी, कोटार, बीमारो की सेवा, विद्यापिठों के अध्यक्ष में सर्व-भारत और सभा के लिए एक वर्ष का समय में ऐसे व्यक्त हो गए कि विदित नहीं और काल विपरीत के लोग हमारे इस 'प्रोफेसर' का यह जगती तमाशा आश्चर्य से देखते ही रह गये।

बापू से मुलाकात

सन् १९१५ में गांधीजी की दधिनामूर्ति में आये। उन्होंने अपनी आत्मिकता से कसबा देव का, छात्रालय के काम निष्ठा की स्थापना नहीं है, उस और ध्यान और सेवा। नानाभाई को मुद्रा-व्यवस्था के इतना इतना भाव था। जब भी उन्होंने अपना पुरा हाल और स्वयं काम कर प्रयत्न शुरू कर दिया और देखते-देखते नये नया, नये कार्यवाही और नयी उपस्थिति के विचारक अच्छी तरह उन पया और भी दधिनामूर्ति एक अतिव्यं सत्य बन गये।

कॉलेज-कर्म

सन् १९२० में गांधीजी की मुद्राका हो चुकी थी। गांधीजी ने, अग्रगण्य के पास भी हुये का आदेश दिया। इस छात्रालय को एक आर्थिक के विचार में और साधारण में एक नये छात्रालय का देव्य हुआ। दधिनामूर्ति के आग्रहण में सत्य-व्यवस्था बन गयी। नानाभाई के जीवन में एक प्रबल प्रतिक्रिया हुआ और लोग भो-मन के साथ हिन्दू-धर्म के हाँके को पक्ष कर, महाशय की सभाओं को छोड़ कर उन्होंने एक प्रकार के विद्यार्थियों की सभा काय से प्रवेश किया। इस तरह उन्होंने मुद्रा को सारा भी एक नये परिपत्र बनने पर भीड़ दिया।

श्रीक-निर्वाह

दूरी और नानाभाई के साहित्य को एक मन दिया था आस्था दिया। जिससे

नई वाक्य की योजना में

सन् १९१७ में गांधीजी ने देश के सामने 'नई वाक्य' का विचार रखा और नानाभाई विद्युत्करी यद्यन साथ से इन्गी बनी सत्या छोड़ कर १९१९ साल की उम्र में बनेके कांठान नाम के गाँव में जाकर बैठ गये। दधिनामूर्ति के नियामक प्रागदशना-भूति की सचिवायक शाला के 'नई वाक्य' बन गये। यहाँ उनरी प्राग-जीवन के अन्त में और नूरे उत्पत्ती का दर्शन हुआ। हरिजन बचकों की शाला में प्रवेश देने की बात पर आमजनो ने उनका विरोध किया। उनको साथ साथ जपू के गाँव में कहा गया। वे बँधे पाठे, जपू से लीक को ठहरा है। निर्यात सेवा और सर्व-भारत का मद कुछ और ही होता था। जिस प्रागनि-शक्ति में विद्योति होत था, वै ही कुछ करते थे। बाद हरिजन बचकों की गाने-बनाने, नेत्र से दवाका में लाये और उन्होंने उनके साथ भोजन भी किया। बाद में जो जन सेवा के हेतुओं के और हुएने लोग भी दधिनामूर्ति का विकास होता था। संकटों विद्याओं वसन्त में मुद्रा-व्यवस्था बन कर भुगतार और देश-परिवे में फीरे, जो साथ ही एक साल अपनी मासुदरका को दास करके बालिगस्य पर कुछन-कुछ अग्र दास भेजते रहने में।

साहित्य-नैतिक नानाभाई

एक दसा मेंपया नाम का शास्त्र आंश में डाकू डाकने के लिए आने वाला था। संस्था को दो कोई बहसत नहीं थी, पर शास्त्रिक के नाते नानाभाई ने यह एक चुनौती के थे। वे नीतर उनके जिय साथी की सुनौदर भाई रातले पर लगे रह गये थे। बाद निकलने, तो जले कहा गया कि मुद्रा हमारी सास पर से ही गौर में जा सकते हो। डाकू निषान कर संस्था में आया। नानाभाई के घर पर भोजन किया और उनसे वचन दिया कि आंशक और मजदूरों के हेतुओं में यह डाकू भाई करोगा। मेंपया नानाभाई के साथ एक मुद्राकरी

[जो पृष्ठ १० पर]

के सामुद्रिक जीवन में एक सचारी धरोहर का प्रयोजन करने वाले एक शोधक की। मानव-वश की दुर्लभता का नानाभाई को एक दार्शनिक को मान गये थे। नानाभाई को विचारों का कुञ्जलि बनाया गया।

राष्ट्रीय संग में

भारतीय में राष्ट्रीय भावना और राजनीतिक के बीच के खेद की व्यवस्था काय ठीर से कठिन हो जाना है। नानाभाई के जीवन के सत्य सत्यिक वा दर्शन होता है। उस वसन्त में भारतीय जैसे राज्य के साथ बहुत अच्छा संबंध कर भी उन्होंने स्वामी बनी राष्ट्रीय संस्था का विकास किया।

पुस्तकी निष्ठा। सन् १९२८ के बार-बोली के उत्तर में एक काव्यवादी मुद्रा पड़े, जो जिसे नानाभाई ने उनके इतिहास देकर उनके ना तो काय पर खले खाने को कहा था, यही नानाभाई उन १९३० की पंथ में बनने को बचने की नीति की नीति में चुन कर, धार्मिक और वास्तविक सावधान के अन्धकार को भी हटाने के तरीके बनेनी छोड़ कर और दधिनामूर्ति के विकास पर वे दरमियान देकर चल गये।

विस्मय काय ओ करे

जिस में नानाभाई को गांधीजी के दिने हुए सुनौती को टोलने का, उन पर यह दर्शन के लिए करने का और उन पर काली निष्ठा विचार करने का अच्छा मौका मिला। विरमयाम संग में वे अत्यंत लोक-निय संस्कार को बन गये थे। कई नेता कसकी अग्रणी भी बने थे। उस समय राजनीय नेताओं की अग्रत भी थी। मगर नानाभाई की लोक-निय के मूल बलिक बहरे थे। जिन से लूटे हीये सब राबिकीय आग्रण छोड़ कर हीये दधिनामूर्ति के बनने विद्यार्थियों के बीच चुनौती बन गयी। गांधीजी ने उनके इस नाम में ही टोल सभ्यता दी।

सुलभनी

मुद्राकर विद्यार्थी राष्ट्रीय विद्या का आधार-स्तंभ था। यहाँ बच्चों स्मिक्तियों का एक देश सुन्दर था, जिसके कोकन में विद्यार्थी, राष्ट्रीय भावना और देश के उत्तर रहे गये। उनमें अग्रत भी जिन्हें यहाँ

ग्रामदान से क्या होगा ?

गणेशलाल काम

रात के ग्यारह बजे होंगे, छद्मी की आँखें मुन्दने लगीं। वह बेठी-बेठी अपने पति के आने की प्रतीक्षा कर रही थीं। फिर वह झुंझला कर जड़ी और दरवाजा बन्द करती हुई बोली, "शायद वे नहीं आयेंगे आज ! सारा घर तो गुमा, मैं बच तक बैठ कर तपस्या करती रहूँगी ? एक दिन की बात हो तो सही, सभी दिनों की यही कहानी !" वह किचाड़ बन्द कर बिछोने पर चली गयी।

अभी आधा घण्टा हुआ होगा कि किचाड़ पर किसी ने दस्तक दी। कई बार बोर-बोर से छटखटाने के बाद छद्मी की आँखें खुली और झुंझला कर किचाड़ खोलने दरवाजे की ओर बढ़ी। किचाड़ खोल कर उसने अपने पति से पूछा—“ऐसा कौनसा काम है, जो दिन भर के करने से नहीं होता और रात-रात भर यों भटकते फिरते हैं ?”

“काम ही कुछ ऐसा है, जो दिन-रात तो क्या, सारा जीवन देकर भी कर सका, तू भी सस्ता पड़ेगा !” —जगदीश ने कमरे में प्रवेश कर कहा।

“आखिर मेरी तो सुनूँ, ऐसा क्या काम है, जिसका मोल जिन्दगी से किया जाता है ? क्या मेरे सुनने लायक नहीं है ?” —छद्मी ने पूछा।

“हूँ-हूँ! भला क्यों नहीं, तुम्हें न केवल सुनना ही चाहिए, बल्कि उसमें सक्रिय रूप से भाग भी लेना चाहिए। एक-दो की समस्या नहीं, यह तो सारे गाँव की समस्या है, देस की समस्या है। आज ग्रामदान की बैठक हो रही है। यह हमारे लिए प्रगति का नया बचम है। हम सारे गाँववालों की इस घर विचार करना चाहिए। इसे सफल बनाने का पूर्ण प्रयास करना चाहिए।”

“क्या बड़ा, ग्रामदान ? क्या मतलब है ग्रामदान का ? यह फिर क्या रस खिला ग्रामदान का ? इतले क्या होगा ?” —छद्मी ने पूछा।

“ग्रामदान देस की सारी समस्याओं का निदान है। अगर सब मानो तो ग्रामदान से ही देस की सारी समस्या सुलभ सकती है। और किन्हीं समस्या के मुकदमे हमारी स्वतंत्रता टिक नहीं सकती।” —जगदीश बाबु ने अपनी पत्नी से कहा।

“मैं बिल्कुल भी नहीं समझ सकती ग्रामदान और देस की समस्या में क्या सम्बन्ध है ?” —छद्मी ने निजान्त निर्वाण होकर प्रश्न किया।

“केवल सुन ही नहीं समझती हो, ऐसी बात नहीं, बहुत वे पूरव ही ग्रामदान के बारे विचार को, समस्या के मौलिक निदान को नहीं समझते हैं। हमारा दुःख ही धारक बैसा मुद्दु और व्यापक नहीं है, जो इस राष्ट्रीय संघर्ष को सर्वज्यासी बता सके।” —जगदीश बाबु ने तब की धमकी बना कर कहा।

“हूँ, जो ‘ग्रामदान’ का क्या मतलब ?” —छद्मी ने जिज्ञासु भाव से पूछा।

“तुम जो पढ़ी-लिखी हो न ! कमानो ‘ग्रामदान’ का क्या अर्थ हो सकता है ? जिसे जाने को विशेषता केवल बात बनाया और अपनापन ही है क्या ?” —जगदीश बाबु ने हँस के आग्रह से कहा।

“मैं तो समझती हूँ कि ग्रामदान का मतलब है, गाँवों का दान ! लेकिन गाँव का दान कैसे होगा, कौन करेगा और इसके क्या होगा ?” —छद्मी ने अपनी धँसा प्रश्न को।

“ग्रामदान सचमुच गाँवों का दान ही है। यह तो तुम ठीक समझो। इस बारे में तुम्हारी जो-जो संका है, वह किसी के भी मन में उठ सकती है। जो सुनो, तुम्हारी संका का समाधान कैसे देता है ! तुम्हारा प्रश्न है कि ग्रामदान कौन करेगा, यही न ?

“गाँव में रहने वाले सामान्य शोकर ग्रामदान करने के लक्ष्य लोग अपना मौलिक स्वतंत्र-मिशन कर देंगे। ‘भंडा कुछ नहीं’ होगा, हमारा बंध कुछ होगा। हम सारे सामान्य ‘एक परिवार’ बनेंगे, सभी के सम्मिलित मन से हमारी जीवन की अनिर्वाण आवश्यकताओं की पूर्ति होगी।”

“और इसके हम सारे प्राणीयों के भवान मित्र पायेंगे। हम सभी कोय सुखी बनेंगे। आज की उच्छ्राम का प्रति मैं विचार परिशिष्ट नहीं रहूँगी कि किसी के पास सब कुछ हो और किसी के पास कुछ भी नहीं !”

छद्मी ने कहा—“जी हाँ, जो तो ठीक है ! बहने के लिए हम स्वतंत्र हैं, लेकिन हमारी परिस्थिति बेसी नहीं हो सके है, जो स्वतंत्रता के लिए योग्यता हो।”

“जो फिर तुम स्वयं के लिए क्या करती हो ? स्वतंत्रता संस्थाप के लिए तुम्हें भी तो कुछ करना चाहिए न ? हम सारे लोगों की ऐसा समझना चाहिए कि स्वतंत्रता के संस्थाप की जिम्मेवारी हमारे ऊपर है। हम भी अपनी स्वतंत्रता को एक कमी ही, अपनी जिम्मेवारी को हमें निभानी ही चाहिए, सभी स्वतंत्रता का मूल सुख और सुव्यवस्था ही संस्थाप।

“तुम्हें क्या काम बनेले हो पड़ेगा ?” —छद्मी ने कहा।
“अच्छा, लेकिन उनका ही बीजिये, जितना मैं—सँवाल सहे—सहमी ने कहा।
“देवी ! मैं अपने हितों का मात्र धर्मो से करता था रहा है। आज आधी हो। छी, सम-सम-न भी उद्योग करेगा। लेकिन छद्मी, एक बात कभी तरह—क्यों भी न कि तुम किस राहों पर जाय हो ? कहीं ऐसा न हो कि पासे लोचना है ?”
“आप बागे-बागें बल्ले रहेंगे, मैंने लोहेंगे ? जब पृथिवी तो पीसा करती-करती ही तो मैं पृथ्वी। अब फिर बनेको लीट जाऊँगी क्या ?”
“अच्छा तो तुम, ‘ग्रामदान’ केर विचार है। मैं बाहना हूँ। घर के लोगों को समझाओ और सारे को महिलाओं को भी समझाना काम है। गुन-गुन से एक संकुचित पड़ कर आज मनुष्य को मानवता सजोमें हो गयी कि वह—
परिचरणा भी नहीं कर पाते। यह हमारी भागी दायि है। जनकी कह हमारी प्रगति कभी सम्भव नहीं होगी।”

“ग्रामदान की बात उनको समझाओ इसके लक्ष्य बना लियेगा, यह क्यों जरूरी है, यह सब विचार समझाओ और लक्ष्य पर-उड़ जाने मजुरी पर काम करने के बजाय स्वतंत्र रूप से जीवन की आवश्यकताओं का पूर्ति करने के लिए उद्येष्ट बनाओ।”
“तुम वह उतना कर सकोगी, जो दिन ग्रामदान सफल हो सकेगा। इसलिए ‘ग्रामदान’ की प्रतिष्ठा मैंने देना कर दी है। अब आगे तुम्हारे हितों का काम सारी है।”

छद्मी ने हृदय में एक क्षण का अनिर्वाण हुआ। उसके उभे नई बेजना मिली। उसने आज समझा अपने पति के जीवन को कि यह किंच पुन में सोये-सोये रहते हैं। उसके हृदय में बनेले देस के प्रति, कर्म-से-कर्म बनेले सारे गाँव के समान स्वर पर जाने की कौनो व्यापका है। आज एक बड़ अपने पति के विचार को नहीं समझ रही थी। इसी से वह उसको उदरता की ज्येष्ठा किया करती थी।
“जो मुझे क्या करना होगा ? कुछ मेरे करने से तो हो सकेगा तो बतलाइये !” —छद्मी ने उच्छ्राम स्वर में पति से जिज्ञासा की।

जगदीश विस्मय से बड़े चौंक रहा। उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ कि वह क्या सुन रहा है। उसकी जो अपने दाते पर जाने के लिए वह बर्षों से प्रयास कर रहा था। आज वह भास ही उस मार्ग पर सा मिली। फिर आश्चर्य क्यों न हो ?
जगदीश ने हृदय में एक क्षण का अनिर्वाण हुआ। उसके उभे नई बेजना मिली। उसने आज समझा अपने पति के जीवन को कि यह किंच पुन में सोये-सोये रहते हैं। उसके हृदय में बनेले देस के प्रति, कर्म-से-कर्म बनेले सारे गाँव के समान स्वर पर जाने की कौनो व्यापका है। आज एक बड़ अपने पति के विचार को नहीं समझ रही थी। इसी से वह उसको उदरता की ज्येष्ठा किया करती थी।
“जो मुझे क्या करना होगा ? कुछ मेरे करने से तो हो सकेगा तो बतलाइये !” —छद्मी ने उच्छ्राम स्वर में पति से जिज्ञासा की।

जनता की महानता

जो हरे-भरे शेरों में, मोर-बिड़ियां सुतीयें हैं, सुन्दर लोकोपयोग में नूतने हुए गाँवों में कूट करने वाली, सूर्य की किरणों के समान निष्ठाप और उज्ज्वल, वायव्य बिलोने वाली महान् जनता ! राष्ट्र की उच्च कीर्ति उठाने वाली है। ये लक्ष्यवादी पातलें तुम्हारे ही मन का उदरान है, दुनिया को जीवन की देन देने वाले तुम हो। जिन्हें प्रचार मयूर जलवाणी गर्वित एक-दुन्दरे के निक कर ब्रह्मन् विस्तारवाली हो जाती है, इस प्रकार तुम्हारे सभी मन आस में पुन-निल कर बनाने हीरेवर्ष एवं बनाने दाँत को प्राण ही ! —गजुबंद

वाराणसी में विनोबा

चीया दिन : १८ दिसम्बर ।

आज सुबह ४ बजे से व्यक्तियत पचाँसे ओर मुयाकतां ना दोर प्रारम्भ हुआ । ५ से ६ बजे के बीच साधना-केन्द्र ५ सर्व सेवा संघ के कार्यकर्ताओं को विनोबाजी के साधना के स्वरूप पर मार्गदर्शन दिया ।

वामबर्तान-संग के बाद विनोबाजी त्रिदशद्वारासंग के पाप मच्छोदरी पार्क में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ द्वारा आयोजित स्वयंसेवकों की सभा में गये । विनोबाजी ओर दल के पहुँचने पर संघ के कार्यदे के भूताविक कुल रस्म-अदायगी हुई । इसके बाद संघ के एक अधिकारी द्वारा विनोबाजी का गीता के महत्त्व प्रवक्तव्य के रूप में परिचय कराया गया । इस अवसर पर बोलते हुए विनोबाजी ने कहा कि "जब मानव एक है, यह विचार लेकर मैं भूम रहा हूँ । मेरा कोई भंडा नहीं है । 'जब जगत्' के लक्ष्योप में अपनी जप-विषय समिहित ही है, पराजय विभी भी नहीं । इन भावना को पुष्ट करने के लिए दिलों को बोझने की जरूरत है । भूदान के अतिरिक्त अन्य कार्यवासी में नागरी विधि के प्रकार को जिनना हो सकता है, प्रोत्साहित करता हूँ, क्योंकि यह भी एक भारत को बोझने का साधन है ।"

अब मैं विश्वव्यापक दृष्टि रखने की सलाह देते हुए कहा, "जितना अच्छा संघ बुनिया में है, हाथ है और जितना वृष्टि है, वह भी हमारा ही बिना हुआ है । आपका दिल और चेरा दिल साथ जुड़ा है । मैं चाहता हूँ, आपका दिल पूरे विश्व के साथ जुड़ जाय ।"

त्रिदशद्वारासंग से करीब आठ बजे विनोबाजी फिर साधना-केन्द्र पहुँचे । ८ से ९ तक सर्व सेवा संघ के कार्यकर्ताओं को बैठक में संग लिया । सर्वकर्ताओं ने अपनी स्वायत्तारिक विवरणें बताया और इस सम्बन्ध में कई सवाल पूछे । बाबा ने एक सवाल के जवाब में कहा कि "आज व्यक्ति-दिनात्मक बनना जा रहा है । अक्षर पर का, आकिस का और टेक्सिस क्लव का अक्षर छोड़ो लिया जाय, वो चीनों की मुद्राओं में काफी धन्य आयेगा । जिनसे हमारा प्रेम-सम्बन्ध है, वो हमारे कार्य के साथी नहीं हैं, और जो कार्य के साथी हैं, जोसे प्रेम-सम्बन्ध नहीं है । हमारा प्रेमक्षेत्र और नमोक्षेत्र मिल जाय, वो धर्मोन्मत्त बन जायगा । कर्म और प्रेम का विच्छेद गलत है । दिनात्मक—दिनन व्यक्तियत्त से पूर्णतया-पूर्णे मानव बनना चाहिए ।"

बाब की प्रार्थना-सभा का मुख विषय था 'विश्व और विद्या' का विचार जो बाब सिलवो की ओर हलक है, सब पर दुल प्रेरक करते हुए विनोबाजी ने कहा, "सिद्धिद्वारा पर क्या सचट भाव है कि जीवन के मार्गदर्शन, मुख सफल हो गये है, क्योंकि मानवों को पुर से ही विद्या नौकरों की हो गयी ।" वेद का वह जो उदाहरण-संग, सिलक है, इसको फिर वे जगुव होना चाहिए ।"

विद्यार्थियों को समझाते हुए विनोबा ने कहा कि "विश्वक मयने को नौकर न मानें । विश्वक सम्बन्धक कर और विद्या की ही होनी चाहिए, काज पढना चाहिए, बँधे धारों, हकरी चर्चा करें । आज को जो अन्तर के 'आदर्श' आज है, वही विद्यार्थी को पढ़ाना बनना है । यह सब गलत है । विद्यार्थी में अन्त-संशर्तक होना चाहिए ।"

विनोबा ने और देकर कहा, "जिस प्रकार आज हमारा सामाजिकी की स्वयंसेवक को माननी है, वही हीद्वित्त विद्यार्थी की होनी चाहिए । सोवणीकी में जातिवि की बॉम्ब है । अगर हमें समझ नहीं रहे, तो सोवणीकी का सवातर सुप्रतापवादी में हो सकता है । विश्वक सर्व आसत रहे और देव को ज्ञान रसे ।"

बाब की विद्या की चर्चा करते हुए विनोबा ने कहा कि "यह विद्यो-पन्न है । उपर में तो विश्व-विभक्त होना है, न बागी विभक्त न चारी-विभक्त ही होगा ।"

आठ बजे बाजी के पश्चात विनोबाजी के विधि । सुलग, भाग्य-भाका, पाठि-वेना, लुनो-विश्व, आयोपनीय पोरवर्ण, पंचमी शोध, सवित्र-वेदो, बलीपिप, कल्प-प्रत्य-संभल और वेदकाशी एवं विनोबाजी की पाठिसात-नाकाभावि विभिन्न विषयों पर मुख कर चर्चा हुई ।

वेदकाशी के संबन्ध में पूछे गये एक सवाल के जवाब में विनोबा ने बताया कि "पूरे सामर्थ्य पर व्यापक दृष्टि से

वोधना चरुता है । अक्षर हमेशा योका ही योका नहीं होता है, यह अक्षर को तरफ लक्ष्यवान होता है । बुनिया में सबने बने और सवापान है, म्यात नहीं है । लोगों में इस समय को सही परवेत्तीकरण में नहीं आया ।" बाबे चर्चा करते हुए कहा, "एक बहल सभा के बाद कविराज को कहा था कि (कल्याणसिलक), की (आदर्श) और को (संघ) । इस विद्यो में रहने वाले सब मयारक, एक हीने देवों के माने जायें । इन देवों में माने-जाने के लिए, रहने के लिए कोई प्रतिबन्ध नहीं होना चाहिए ।"

पंचमी दिन : १९ दिसम्बर ।
यह बानी में बाबा का अंतिम दिन था । आज की सांभनिक कार्य-संग नहीं रहता था । कार्यकर्ताओं ने चर्चा और मुलाक़ातों में दिन बीटा । प्रातःकाल कार्य-कर्ता सर्व में चर्चा करते हुए विनोबा ने

कर्म हीनों की ओर कर एहाय विद्यन बिना, जीवन-कार्य के लिए आद्यत्तक सवित्र से लक्ष्य प्राप्त किन्तु, सुखरत में सानोच का मया सुख कुछ बिना और सुलभ अन्तस्वमर्षाचरण से बिना तरफ् ओर-साधना पर लगना है, उतना जीवन उत्तरार्धक में किन्तु । विदवी के बने को साग का एक 'मेलोसर्तों' (मिमाक) ही मानते रहे, जो कर्मने मय के अज्ञान पर को 'आवा' (सुखरत में 'आवा' मान 'शेरा') होना । मानव मानव बन जातीमें सवीप, मानव और मीरक का अनुभव करते रहे । ऐसे मानव जीवन मानवार्थी मष्ट के जीवन की बुष्ट होती हुयने मान की ।

आज को उतना जीवन एक चरर और निष्क संघ अंश मयूर बन गया है । मैं बँड़े लक्ष्य करते ही तो जगुलीमें बहुत था :

"मैं परमपुत्रक की प्राप्ति के लिए ही योका हूँ । परमपुत्रक की में बनने के माय से जीवन में बढम चरुता पर रहा हूँ ।" जिन दिन में जगुलीका कि यह मायें मुझे उपय नहीं से जा रहा है, उन दिन में संपत्ता हीने में जरा भी शिथिलतायद नहीं बनती । मैं कोई संभक नहीं, यत्त मुनाकर-करी, मिर्कें यगुली ।"

असो काल की कविराज देवता के सौकार और सौदार काल मुने नन से कलाक पटना है कि इसके कोने में ही को-वेग नहीं । (का ५२ मी ६१)

[श्री मानाभाई भट्ट की जीवन-साधना—पृष्ठ ७ का]
मुपारने के लिए छोड़ गया था, जो आज प्राथमिक सेवा करता है ।
बीमा मान का सुखत कासु लीनों के माक और काल काठना का । मानाभाई उसके पास का पढ़ने और जगुली उते सवसाया । उस से उसके पास काम छोड़ दिया ।
रसनी कालना
कालना के अन्तर्गत जीवन के और सामुहिक जीवन के कुछ निरिच्छक विचार हैं, जो उतना वे आद्यत्तक पाठन करते जाते हैं । रसनीय तो जगुलीमें हा सहाय अर्थोके अर्थ जीवन में भाग-सविश्या और पर के छोड़े करे अर्थक जीनों को मयता, प्रतनना और बुनानुकर एक तरफ हटा रिता; सर्वसे पर, बाकी और

सर्वोदय-पात्र

छपरा

छपरा नगर में २३ अगस्त से सर्वोदय-पात्र चल रहे हैं। अभी तक कुल १०५ सर्वोदय-पात्र बचे गये हैं। लगातार ७५ सर्वोदय-पात्र चलते हैं। गरीबी और सुखमय के कारण यहाँ पर सर्वोदय-पात्र भी अच्छी तरह नहीं चल रहे हैं। छपरा नगर के रहियारों को खपत क्षेत्र बना गया है, जहाँ मुहूर्ति खाति कर धारण है। इस मुहूर्ति के अधिकतर लोग जानिक हैं। १ दिसम्बर से प्रति दिन मुहूर्त प्रकाश फेरी निकाली जाती है। लोगों के चन्दर उतसाह नजर आता है। लेकिन सर्वोदय-पात्र के प्रति उतसाह नजर नहीं आता है। खपत क्षेत्र के लिए यहाँ पर कार्यक्रम रहा गया है—छपरा, मुहूर्ति के मुकामे का फैसला, नगर में सर्वोदय स्वाभाविक-वेष्ट बनाना, भूदान-निर्वाह देना, छात्री का प्रचार, मनी-निवृत्त का प्रयास। इस तरह धीरे-धीरे जन-जागृति की तरफ जाना है। सर्वोदय-पात्र में उतना उतसाह नहीं मजर आता है, जितना अन्य कामों में। यहाँ पर तीन गाति-धीनिक हैं, जो प्रति दिन एक-एक पर जाकर सपन स्थापित करते हैं। वे तीन गाति-धीनिक सस्त्रिय हैं। (१) सुभद्रा सुनि, (२) विनेतयन प्रकाश, (३) महावीर प्रसाद और गाति-साहसकः की परहसत प्रकाश।

भैरठ

भैरठ छपरा से सर्वोदय-पात्रों का कार्य प्रारंभ करने का साक्ष्य रहा है। इस समय तक लगभग ८०० सर्वोदय-पात्र रहे जा चुके हैं और इन पात्रों द्वारा २००८ रुपये ५५ गये पैके एकत्रित किये हैं। इसमें से करीब ५५० रु० सर्वोदय पात्र, प्राप्त तथा बिक्रे को भेज दिये गये हैं और १५५ रु० का साहित्य खरीदा गया है, जो नगर में विभिन्न सर्वोदय-निर्वाहों को प्रयातन दिया गया है। इसका वे छात्र-धेरी के रूप में उपयोग करेंगे। इस प्रकार के २० क्षेत्रों में कार्य आरम्भ किया गया है। कुछ विद्यार्थी मुहूर्तों के अन्तर्गत स्वयंसेवक बनने की विद्या तथा सर्वोदय-पात्रों को एकत्रित करने को दिया है। विद्या-कार्य भी प्रारम्भ हो गया है।

कुमारप्पा-स्मारक-निधि में

बाणदासी स्थित सत्रै तैवा संघ के केन्द्रीय कार्यालय, प्रकाशन और पत्रिका विभाग के कार्यकर्ताओं ने कुमारप्पा-स्मारक निधि में ७५ रुपये ७० गये पैके उनके जन्म-दिन, ४ जनवरी के निमित्त समर्पित किये।

मुजफ्फरपुर जिला, आगराज्य सर्वोदय-सम्मेलन

शुक्र २ दिसम्बर को मुजफ्फरपुर टाउन हाल में जिला सर्वोदय-मंडल की ओर से जिला आगराज्य सर्वोदय-सम्मेलन की स्वतः प्रस्ताव शाह के समर्थित्व में हुआ। प्रारम्भ में जिला पंचायत-परिषद के अध्यक्ष श्री रत्नेश्वरी गणप सिंह ने जिसे से आये हुए मुक्तियों एवं प्राथमिकताओं में लगे हुए कार्य-क्रमों का स्वागत किया तथा आभारपूर्वक के बार्नों में नवजीवन हालते एवं गाति-नेता की स्थापना पर जोर डाला।

सम्मेलन में अध्यक्ष आर.आर. सरदार के अध्यक्षता-अधीन श्री ध्यातमन्थन मिश्र, बिहार सर्वोदय-मंडल के संयोजक श्री रामगुप्त सरदार, बिहार सरकार के उपमन्त्री श्री हृदय नारायण चौधरी, जिला मजल्ल सुबक रमयाय के अध्यक्ष श्री सगुन्दन बसवत आदि के भाविक एवं कार्यान्वित भाग्य हुए। गाँवों के उत्थान के लिए सर्वोदय के रास्ते से निर्विरोध मुक्तियों का बुनास, बहुकार्यता के आधार पर गाँवों के सर्वोदय का संचालन, भावदान एवं गाति-नेता के संघटन की आवश्यकता की विद्यासलपत्र एवं श्री काशीदेव सिंह के गाति-नेता के उद्देश्य एवं संघटन पर मोक्षदात भाग्य हुए। यह निर्णय किया गया कि इस तरह के सम्मेलन सम्बन्धित एवं भागत के आधार पर किये जायें तथा अगला-के-अगला सम्मेलन में लोगों को गाति-नेता में धीवित किया जाय।

अ० मा० सर्व सेवा संघ का आय का विवरण

(बाह दिसम्बर '६०)

गाँव	सर्वोदय-पात्र	रकमांलि	खपतदान	धुण
उत्तर प्रदेश	४०-०५	२४-१०	२-००	३६-१५
मध्यप्रदेश			३,७०२-३४	३,७०२-३४
बंगाल	६-००		८,५००-००	८,५००-००
केरल		१,६०७-००		१,६०७-००
कुल	४६-०५	१,६०७-००	२४-००	११,९१६-४९

प्रकाशन-समाचार

'भूदान-यज्ञ, श्री और पेनो' के मुद्रित लेखक को पारबन्धू की राष्ट्रीय विद्यालय पर लिखी गयी जितना अद्वयतन सामग्री से परिपूर्ण है। सर्वोदय सम्पदा और समग्र दर्शन प्राप्त्य की इस विषयता है, जिसकी साक्ष्य भूदान-यज्ञ नामी किताब के अन्तर्गत राष्ट्रीय विद्यालय की इस विभाग में भी मिलती है। 'मा मूल किस्तये विविध' वाली विवरण-सूची का अर्थात्कार करने के कारण इसमें पाठकों को एक ही मुलक में अनेक मुलकों पढ़ने का लाभ सहज मिल जाता है। आशा करता हूँ, सर्वोदय-सेवक इसका लाभ उठावेंगे।
बिहार-आश, २०-१२-६० - विविधोपाय का जय जयत्

* सर्व सेवा संघ-प्रमुखों, काशी से वीर्य प्रकाशित होने वाली 'भूदार राष्ट्रीय विद्यालय' मुलक की प्रकाशनों के मुल्य रु. २-००; अखित रु. २-५०।

कथा	कहौ	किसका
जीवन की शोष	१	नागभार भद्र
अन्ध की अपहरण की बाहर लाये !	२	निनीया
'नागरी लिपि द्वारा लेख्य जीविते	२	—
भूदान मुक्ति ही गयी है : बहुत मोटी ।	३	एक-०० हे
'नये जलियन' अन्त-युद्ध कर अन्यायने	३	निनीया
भारत की रक्षा के लिए भूदान आधुनिक	३	विनीया
कलियुग-वर्द्धित किस दिया में !	४	विदित्य कोरेडिन
'हृदय तिहार समाने आये हैं !'	४	कस्तूरिन्दन
बापू के काम की भागे बसना.....	५	२१. चंकेसम्पद
श्री नालाभार भद्र की जीवन-साधना	७	कलक-क्याय
सामदान से क्या होगा ?	८	गलेसक कर्म
'सर्वोदयों में नवजीवन	९	राय भद्र
उत्तरप्रदेश में छात्री-आलोचियों का विवरण	९	सुन्दरान्त बहुमुण्य
बाणदासी में विनीया	१०	मशीन्द्रस्यार
पेहरर के विद्यक बढ़ी हुए अन्तर्गत का प्रकाश	११	—
क्या-चार-खजानों	१२	—

खपना :

ग्रामसहायक नरि.

छात्री के 'नवे मोड़' को अनुहार धाम-नरार्दों की आधार ०० छवि, पञ्चगुण-विद्यालय, मिनाल । छात्री काम साह-साय चलाने है। इतने प्रतिष्ठित कार्य-वर्तनी भी खरी है। जो 'एयो' ईश्वरिगत कम्मन्दि' की कल्पना आधार कर इस सम्बर का प्रतिफल (नौ भाई का) प्राप्त पुरर्षों को एक साथ का मुह । काम में देकर 'ग्राम-साहायक' के निपुण धाम-नरार्दों के कार्य के नि. इस 'कोर्स' में सर्वो उन्नीकी हो । ०५ माह के अन्तर्गत-विद्यालय के रिपट एक साल का कार्य के हो । छात्री-कार्यवर्ती प्रतिष्ठित (साल) प्राप्त किये 'बुक्क' की । सर्वो हो सकते हैं । नवी प्रतिष्ठित (एक साल) प्राप्त व्यक्त एक साल के कार्य के । विना मही हो सकते हैं। यही सुनिचायी का प्रमाण-पत्र प्राप्त व्यक्तियों को है। उत्तर सुनिचायी प्रमाण-पत्र प्राप्त किये व्यक्तियों के दो साल के कार्य का अनुभव प्राप्त है। तीन साल का प्रयास साक्ष्य का अनुभव करने वाले व्यक्तियों की सर्वो हो सकते हैं। प्रतिष्ठित-पाल में ५० रु० प्रति छात्रवृत्ति दी जाती है। इस '६' से चलेगा। सर्वो के लिए आवेदन '३' जनवरी, '६१ तक आ जाने चाहिए। अन्तर्गत, छात्रीयम -आरसगा विद्यालय (बिहार) प्रारम्भ

समाचार

जिला सीधी । विद्यप्रदेश भूदान-यज्ञ की १० नवम्बर की रिपोर्ट के अनुसार सीधी विनीयाओं के आने के कारण छात्र समग्र छात्रीय कोला । मुक्तिधियों को बर्षी कयी अजीब के प्रमाण-पत्र दिने हैं तथा उन्नीय सुधी कयी गोमी । परदास में ५७० कयी भूदान में प्राप्त हुमा ३६० रु० की साहित्य-विनीय हुई तथा ५०० रु० की कयी विनीयाओं को भेज में गयी । टीका छपरा में विनीयाओं ५०० रु० की कयी विनीय तथा ८५० रु० का साहित्य विना । शिवा मुकुन्दग । गाति-नेता बार्नों संगठित करने निरु एक किन्तु गाति-नेता साक्षि बार्नों कयी परधरी, '६१ के कार्य में सा कार्य के प्रारंभ में आरुन्त साक्षी-टी-गामे, नन तथा किन्तु बार्ना-आराना करने का ठम किया गया ।

दूसरी शक्ति है किन्तु, याने साहस्य और तीसरी है विचारण। इन्हीं से दुनिया को चाँदित और समृद्धि मिलेगी। आज दुनिया में ही दो चीजें पाइती हैं। इस चीज पहिली का नामार केकर सचोदय-विचार दुनिया में आम करना चाहना है।

प्रक्रिया

हमने कहा है कि सर्वोदय कल्याणमूलक साम्य लागू चाहता है और मत्सरमूलक साम्य है साम्यवाद। मत्सरमूलक साम्य की प्रक्रिया उदार चेतने को नीचे खींचने को जोर देकर 'केवल' में लाने की है। इस प्रक्रिया में हर कोई उदार देखता है और नीचे खींचने की कोशिश करता है। मत्सरवति भी अपने लाल चपचप में संतुष्ट नहीं रहता है, करोड़पति भी सरस देखेगा और उसे नीचे खींचने की कोशिश करेगा। सद्गुरुवति कसपवति भी उरक देखेगा और उसे नीचे खींचने की कोशिश करेगा। साम्यवति सद्गुरुवति की तरफ देखेगा, सद्गुरुवति सतपति की तरफ देखेगा—यह प्रक्रिया मत्सरमूलक साम्य में होती है। कल्याणमूलक साम्य में यह प्रक्रिया नहीं होती है, उसमें तो बँटने में रहता है, "पानी से मीठ है, पानी के बीज के।" जो मत्सर की विचार में रहता है, वैसे पानी की धुल माला है। गौरीचंदकर पर जो पानी गिरता है, वह भी चान की तरफ जाता है। जहाँ में बँटा है, वहाँ पानी बाला बाणया, तो वह भी बचनी भीचान की तरफ बँडेगा। सद्गुरु की सतह से इस फीट ऊपरवाला पानी पँच फीट पर जायगा। पँच फीटवाला पानी तो फीट पर जायगा। जो फीटवाला पानी ऊपर पर जायगा। ऐसा सर्वोदय में होगा। हर कोई दुबो नी, डिक्नु दुबो नहीं, यह सोचिया कि मुसडे भी कोई दुबो ही, उसे मरद करने के लिए हने जाणा चाहिए। जैसे कम्ब के लिए हर को दूधडे है और बर-आपिड होने पर प्रकान्या होजा है, वैसे ही बचने के दुबो की सहाय में दुदना चाहिए। लुर वो दुबो है, जो टोटो की मूल है, लेकिन बाली में एक ही टोटो है, तो लुर बोझा मूला रहेगा, अपना पेट पूरा नहीं मरेगा, लेकिन उस टोटो का दुदना मिटाकर हर दूधडे को देना, जिसेकी बाली में एक भी टोटो नहीं है।

फलगा

सर्वोदय में जो जहाँ है, वहाँ से बचाना का लोच रहयेगा। जैसे, मंगल-यमुना-भारता बहती है, वैसे ही मत्सर संघति की धारा बहती रहे, कल्याण की धारा बहती रहे। यह एक महान् मिशाल है कि पाहें अपने को साना कम पत्र रहा हो, तो भी अनेको समझना चाहिए कि अपने भी नीचे कई लोग हैं, जिसेको विचरुण लागू नहीं मिल रहा है। इस तरह कल्याण से मेलित होकर नीचे की तरफ आयेगे और अपने से

दुबो को मदद करने तो जो हया पत्र होगे, जैसे 'कंड रलाइड' होगा—ऊपर का हिस्सा इहू बाणया। अगर नीचे के उतर वाले कल्याण बहनी धारयो तो ऊपरवाली को ऐसे ही नीचे लाना पड़ेगा। इसी तरीके से भूने इस भूतल में जकीन मिली है। वैसे लोगों से कहा कि जो दुबो की देता है, पुर दुबो होता है, तिसपर भी बचन-मेलित होकर मदद करता है तो इसमें शक नहीं है कि ऊपरजले लेल भी देना शुरू करने। भारतीय हृदय पर हमारी बढ़ा है। यह कल्याणमूलक साम्य लाने की प्रक्रिया है।

मत्सर

साम्यवाद की प्रक्रिया मत्सरमूलक है। जो बचने को मुलानी है। धीरे-धीरे बचना रही है। वह चीला नहीं है, तो मुले से भी बचने को समझना मारती है। उभाया मारे से सहरा कवई सोने वाला नहीं है। जो साम्यवाद लाने उभाया मारता और साम्यवोय जाने धीरे-धीरे बहरा कर कबो को मुलानी। जो बचने को उभाया मारती है, तो बचका मिलनातर है। उधो तरह दुनिया आज विलसा रही है। जो बाव दुनियेक कसो के पाहण के लेंडा "क चाँदित चाँदित" कह रहा है।

अब उनके ध्यान में जो यह बात था रही है। जब मुक में साम्यवा मिलना था, तब से सोचते थे कि वह एक ठारी दुनिया में साम्यवा नहीं देखा, एक एक दुगारे देण में साम्यवा सुपसित नहीं रहेगा। इसलिए दूधडे देण पर साम्यवा कल्याण चाहिए और उनको साम्यवादी बताना चाहिए, ऐसा उनका चान बहना था। इसलिए दिवा और बहिडा के पपडे क बना पड़ते हो। इस तरह पप हन नहीं मारते हैं। आरिंदान करने की सहरत पनेगी, तो करने, देडी ऐंड में ने ने।

केचन अब ध्यान में यह बात आयी है कि जो हिंसाचारित मुद्र दमित है, वह सखनी के हो हाम में रहेगी, ऐसा बनना नहीं है। मित्रगी समित है, उनको सब कम्पु-मिस्टो के हाम में रहेगी, पूँजीवाजियों के हाम में नहीं रह सकनी है, ऐसा नहीं है। यह जिन्वी कम्पुमिस्टो के हाम में रहनी है, उनको ही पूँजी-वाजियों के भी हाम में रहनी है। यह पतिज्ञता नहीं है। मैं बहिडा का बस हूँ, लेकिन मुझे भी अगर कोई मुलेक, तो मैं हटूँया कि हिंसा-चरित बल अवर कसम लागी है और बहने है कि मैं दुबनों के हाम में नहीं जाऊँगी, सखनी के हाम में ही रहूँगी, तो मैं उतरा रहोहरा बचनी। [अनुप]

[सारथको, १५-१२-६०]

नागरी लिपि द्वारा तेलुगु सीखिये : ७

[जयला सर्वोदय सम्मेलन जमल में आश प्रदेश में विजयवाड़ा के स्थान पर होया। जिस प्रदेश में सम्मेलन रहे जा रहा है, उस प्रदेश में भास तेलुगु है। त्रितीय यह बाडमाला बल हरी है। इसकी आनकारी चुके हैं। इस बाडमाला में साम्य से जो पाठक तेलुगु भासा सीख रहे हैं, प्रगति का विवरण हमें भेजे, तो आगे के पाठ संवार करने के लक्ष्य हमने बचनया यह रूप आआन है या नहीं, वह भी हमारे पाठक हैं। इस पाठ में हय कुछ क्रियाएँ तथा कुछ संतारों दे रहे हैं। पहले में भी छोटे तरह हैं। कुछ क्रियाएँ, संतारों और मध्यम रिचे लक्ष्य हैं। —सं०]

हिन्दी	[क्रियाएँ]	तेलुगु	हिन्दी	[संतारों]
सीधना		नेरु कोउड	कपडा	परपुड,
सिधांना		मेपुट	भोती	
करना		वेपुट	साङ्गी	
वैचार करना		वयान वेपुट	दुप्रा	
लेना		धीसिकोउड	कोलिया	
देना		इन्पुड	दुपुडा	
लाना		तेन्पुड	दुपुडा	
परीसना		वैरिपुड	बोडनी	
राना		मिउड	साफा	
पीना		प्राउड	नेप्री	
देखना		कपुड	विस्तर	
घोना		कडुपुड	इकी	
पॉदना		सुडुपुड	किसान	
नहाना		स्नानुड	पेटेल	
सैरना		रुपुड	सुखिया	
बूटना		सुगुड	नीकर	
साफ करना		सुधुड	गॉय, टोडा	
उठरना		विगुड		
कटना		वेकडुड	सहर	
खलना		नडुपुड	मिना	
सेर करना		पिकाव वेल्गुड	मदेरा, मॉल	
बौटना		पदनेपुड	देरा	
कटना		थेपुड	नकसा	
पठना		पडुपुड	तालाव	
सोना		मिपुपुड	हँखा	
आगना		मेककोउड	बर	
गोलना		तेपुड	पाठराला	
बंद करना		मुपुड	दयापाना	
गाना		प्राउड	अध्यापक	
गाला खानना		वालुड	नाम	
श्रायंत करना		श्रायंत वेपुड	पता	
देखना		ब्राहुड	कमरा	

विनोबाजी की पदयात्रा का कार्यक्रम

विनोबाजी ने १ जनवरी को सया रिजे में प्रवेश किया था। १७ जनवरी तक कार्यक्रम ३० दिवसपर के बर में है। जाने १८ जनवरी के २५ जनवरी के भुंजर रिजे में पदयात्रा के २५ जनवरी के ३० जनवरी तक प्रायगुड रिजे पर-यात्रा करते ३१ जनवरी को मुनिना रिजे में प्रवेश करेंगे।

जनवरी माह की शारीक और पढ़ाव-अव्यय रहे दे रहे हैं।

१८ जनवरी	२२ जनवरी	२५ गुणजनन	३० भोगाडिया
१९ जनवरी	२३ जनवरी	२७ गोरीगुम-मन्डर	३१ भोगा (वि० मुनि)
२० जनवरी	२४ जनवरी	२८ भागपुर	१ फरवरी दखिया
२१ जनवरी	२५ जनवरी	२९ दुपनीपुर	२ फरवरी मुजनी

विनोबाजी का पत्र

आ १७ जनवरी तक : बाकंत—विना सर्वोदय-मंडल, सो० मुनिगवर्धन (गव०) १८ के २५ तक : मिना सर्वोदय-मंडल, उज्जैन मंगल, मुनी २६ के ३० तक : विना सर्वोदय-मंडल, देवम पर, भागपुर

सब मानव हममें हैं : हम सबमें हैं !

[आरम्भ में ध्वज-बंदन हुआ और 'जय स्वदेश, जय गंङ्गद्वि' का गीत गाया गया और उसके बाद 'आर० एस० एस०' (राष्ट्रीय स्वरोत्सेवक संघ) के कार्यकर्ताओं की तरफ से एक भाई ने विनोबाजी का स्वागत करते हुए कहा कि "जिस हिन्दू धर्म की परिपूर्णता में मानव-धर्म का जन्म दिया, उसी मानव-धर्म के प्रवर्तक विनोबा हम लोगों के बीच आये हैं, यह हमारे लिए बड़े सौभाग्य की बात है। हम उनके 'गीता-प्रवचन' का बड़ी निष्ठा से और आनन्द से अध्ययन करते हैं। हम उनसे प्रार्थना करते हैं कि वे हमें गीता पर उपदेश करें।" उस वक़्त, ता० १८ दिसम्बर में कायी में विनोबाजी ने जो प्रवचन दिया है, वह अपने ढंग का अनूठा है। -सं०]

आप लोगों में गीता का नाम लिया। गीता पर मेरा जो प्यार है, और आप पर भी जो प्यार है, उसके कारण मुझे यहाँ आना ही था। मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है कि मैं यहाँ आ सका। आपने यहाँ पर एक बहुत अच्छा भजन सुनाया, उसका भी बख़र मेरे चित्त पर हुआ है। आप हमारे हैं और हम आपके हैं। सब मानव एक हैं, यही विचार लेकर मैं घूम रहा हूँ।

यहाँ आपने जो सडा फहराया, वह वैराग्य वा संज्ञा है। मैं उसका आदर करता हूँ। मैं अपना कोई संज्ञा नहीं रखता। संक्रामण में दम्भ की व्याख्या करते हुए कहा था, "दम्भो घामोऽतिव्यमः"-दम्भ यानि घम में की ध्वजा फहराना। बहुत दम्भ भंडों से दम्भ धीरे धीरे फेर फेरता है लेकिन यह जरूरी नहीं है कि उनसे द्वेष फले। धर्मोऽल्लिए में बहता हूँ कि सब सडा की जय। जब मैं पहले-पहल उत्तर-प्रदेश में भूदान के काम में निकला था, तब एक दफा काप्रेसबाले मेरे स्वागत में अपना कडा लाये, फिर दूसरी पार्टीवाले लाये और फिर तीसरी पार्टीवाले लाये। तब मैंने कहा था कि सब दंडों की जय। धर्म में 'जय-जगन्' कहता हूँ, तो उसके पेट में सबकी जय, विजय होती है, किसी की पराजय नहीं आती है।

गीता-प्रवचन : संस्कृत में भी

गीता के विषय में मैंने जो कुछ लिखा है, वह आपके पास पहुँच गया है और मुझे कई लोगों में सुनाया कि आपका इस जगल में सारे भारत में गीता की और 'गीता-प्रवचन' की इज्जत होती है और सब बहुत प्यार से उसे पढ़ते हैं। जगल में हमें अभी कुछ संस्कृत गीत भी सुनाया। मैंने संस्कृत विचारविचार के व्याख्यान में संस्कृत के विषय में मेरा जो आदर था, वह प्रकट किया है। धारणे यह जान कर खुशी होगी कि 'गीता-प्रवचन' का अनुवाद संस्कृत में जायजत गया है। वैसे मैंने तो कहाया नहीं, करने वाले सज्जन मिल गये। सुवर्षा के महाराष्ट्रगोपाय्य और पर साठों पाठक, जो ब्रह्मसंघ में रहते हैं, उन्होंने उसका अनुवाद किया है। उसको कुछ सशोषित भी किया गया और अब वह छप रहा है। सारे भारत में एतना साने के लिए वह एक साने बन गया और हर भाषा का साने उसे पढ़ेगा, उसके जरिये संस्कृत भाषा का मान्य बलगा और संस्कृत के जरिये भारत के हृदय की जो दृष्टा हो सक्ती है, वह होगी।

भारत की एकता : नागरी लियि

आपने यह आनन्द खुशी होगी कि 'गीता प्रवचन' के पसुमि भारत की तरफ भावार्थ में उन-उन स्थितियों में छपे हैं और उसके अलग-गू से सारे ठगुमि नागरी स्थि में भी छपाना शुरू किया है। तैमपु, कन्नड और गुजराती ठगुमि नागरी में छप चुका है। हम कुछी स्थि में का विषय नहीं करते, लेकिन सारे भारत में नागरी चलनी है, ती बहुत एतना होगी और भाषाएँ सौलने के लिए बहुत महूलियत होगी। इस सतु से भारत की एतना के लिए अपने इत से भी हम कर सकते हैं, यह कर रहे हैं। हमारा बहुत बडा कारखाना भूदान का चलना है। उसके जरिये काख्य का आतिमण होता है। वह हमारे कारखाने का बडा माल है। उसके साथ-साथ जो कुछ गीत जीरें, 'आपसमर' बनती है, जनें बहुत बडी चीज है-सारे भारत में गीता का प्रचार। उसके लिए 'गीता-प्रवचन' के द्वारा हम विचार जनेंजने से लकते थे, वे रहे हैं।

दूरों के मुख-दुख को अपना ही अनुभव करो

गीता विची मार्ग विरोध का आनन्द नहीं करती है। भक्ति से ही मुक्ति मिलेगी या शान से ही या कर्म से ही मुक्ति मिलेगी, ऐसी एकगी बातें यह नहीं करती हैं, जिनके सामनोग ही बात करती हैं। यह बडती है :

योगियों में भी वह परमयोगी है, जो अपने मुख-दुख को जैसे ही इकरों के मुख-दुख का अनुभव करता है और दूरों के मुख-दुख को अपनी ही चिन्ता करता है, जितनी अपने मुख दुख की करता है।

यह बहुत बडी बात गीता ने बताया है कि दूसरों के मुख की उतनी ही चिन्ता करो, जितनी अपने मुख की करते हो।

इसा मनीषी, जो कि ब्रह्मसंघ की आरम्भ में ही, काख्य-पुति, प्रेस-मति थे, उन्होंने कहा कि 'श्वर इत नाबर एतु बायसले'।-पड़ोसी

पर उतना ही प्रेम करो, जितना अपने पर करते हो। उन्होंने जिन पड़ोसी पर प्यार करी, इनका ही नहीं कहा, बल्कि जिनका और बडा अपनं पर करती हो, उतना ही और बडा ही पड़ोसी पर करी, यह भी बात नहीं, यह बहुत बडी बात है। इस सोचपै है कि जिन पर मैं इत अपने लिए क्या-क्या करे हैं। पदान लिये है, सोते हैं आदि। आपने लिये जितना प्यार करना है, उतना ही दूसरों पर करना है-याने दूसरों की भी पैवी ही चिन्ता करती है। यह बहुत बडी बात गीता ने

गीता का महान् आदर्श

आप 'गीता-प्रवचन' का अध्ययन करते हैं। मेरा दिल आपके साथ जुड़ा हुआ है। आपका दिल सारे विश्व के साथ जुड़ा रहे। हम सारे जिन की सेवा करेंगे, आत्ममय किसी पर नहीं करेंगे। इसमें हम सूर्य-नारायण से योग लेते। यह हमारे दरवान पर हाथिर रहते हैं, यहाँ खने रहते हैं। उनके चिरवत याने श्वाय उनसे विपके रहते हैं। वे सेवा के लिए हाथिर रहते हैं। आपने दरवाना गोडान्सा रोडो जो मोरें और घुसुमें। आधा खोडो, जो आये आर्योयों की पूरा खोला जो पूरे आर्योयें, लेकिन किसी पर आत्ममय नहीं करेंगे, बल्कि सेवा के लिए तैयार रहेंगे। गीता ने कहा है :

"इयं विवस्वने योगं प्रोक्तवानहमव्ययम् ।
विवस्वान्मनवे प्राह मनुर्विस्वानकेजनीत् ॥"

हमारे सामने उपस्थित किया है। जनको प्रकर का और न करे इमें पर्युन आया है कि हारक को समता है कि सूर्ये नारायण मरं है। यह हर करे सामने आ, मेरी पोटरी के सामने आ है। "यां प्रति यां प्रति सर्वेण समम्-संन साय ।" के सवने लिये समता है। यह उनकी महिया है। यही आदर्श गीता ने हमारे लिए रखा है।

विपसी है, जो उतनी आत्ममय है याद है, वह भी गीता ने बताया है। लेकिन जो आत्ममय तुनिपार की पर्युन निता ही रंता मनीष ने यही बात भी है। आपकी एकता का भाव जिनके अडले वाले जिन, परीशर ही सजा नसे जितना, मनुष्य अपने पर जितना प्यार करे है, उतना ही पगेरी पर करे, यह अडले है। इसलिए हमें आत्ममय, अडले में ईश्वर निरा हमारे है।

सब हमारे हैं

हुक भाषान में कहा था "अर्थि वेरेरे वेरानि सननीय कुचरान" -वेरे से वेरे का सनन नहीं होता है। "अस्कोचेन जिने कोयं,"

सामान सामुदा जिने । जिने करिये बानेन सवनेमानीसवाविनम् । अकोषे से कोय की जोती, उसारा से कंजुकी को जीनी, सत्य से अण्य को जोती । इसमें आरनीमय भी जितनी बडी मिसल और आर हमारे सामने रखा है। महात्मा बुड, ईसा मसीह, गीता-संय हमने ही है, ऐसा हमें महसुस होने चाहिए।

अभी आपने अपने गीत में विरानोय रामदास, रवानर, गुड गीरिध आदि के नाम लिने। ये हम संन करेने वेनेने है, जो विश्वासिने परीमति, बरिधर संनिये आदि दो-चार नाम लिने हैं। ये गीतों परीमति, ऐसा यह देने हैं। हम जिन करियों का नाम लेते हैं उनमें ही करियों का नाम लेते हैं, ऐसी बातें हैं। कुछ का नाम हम लेते हैं लेकिन इज्जत हम सबकी करते हैं। युजान परीम में एक वजु बडी बात है कि अल्लान ने हर अमलत के लिए वेगन भेने हैं। यह इस्लाम का एक उखर है उनमें यह कहा है कि तुजें वेनर लेने जिनेने नाम हम जनेने हैं और तुजें वेने है कि जिनेने नाम हम नहीं जनेने है। लेकिन जिनेने नाम हम नहीं जनेने

बाबा रामवदास का पुण्य स्मरण

कपिलदत्त अवस्थी

सन् १९५५ की बात है। उन दिनों विनोबाजी द्वारा प्रेरित भूदान-यज्ञ आन्दोलन अपनी अग्रगण्यता की पराकाष्ठा पर था। जिधर देसो उधर बस भूदान, ग्रामदान की ही चर्चा होती थी। १८ अप्रैल १९५१ से आचार्य विनोबा आगे भूदान का सन्देश लेकर भारतीय गाँवों के हर कोने में ग्रामस्वराज्य की स्थापना का सफलतम प्रयास करते रहे हैं। ग्रामस्वराज्य में से "ग" यानी गाँव तथा गरीबों को निकाल कर बाबा रामवदास भी रामराज्य की स्थापना के लिये उत्तर प्रदेश के इन्हें गाँव में पहुँचे। बाबा रामवदास से सात उत्तर भारत परिचित हो गया था।

भारतीय मानव का मुख्य ध्येय ईश्वर का ज्ञान प्राप्त करना है। इसके समस्त सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक कार्यों का संवाधान ईश्वरी माधना की दृष्टि से होना चला आया है, उसके कार्यों में समस्त मानवों की सेवा एक आवश्यक अंग रही है। अध्यात्म-तत्त्वज्ञाना भावनाओं के दर्शन का सीमाव्य विन्दे प्राप्त हुआ है, उनके उभर सर्वप्रथम करण से ध्येययोग उनका बरदस्तल ही रहा होगा। यह इतनी आत्मगमिता से मिलते थे कि वो एक बार भी उनके पास पहुँचाने, उनका ही देखकर आया। अजनबी कभी यह महसूस ही नहीं कर पाता कि मैं बाबा से पहली बार मिल रहा हूँ। बाबा की स्मर-शक्ति इतनी तीव्र थी कि चाहे जहाँ आप उनसे मिले हों, वह तुरन्त मिलते ही कह देते थे कि आर तो अबसुक्त स्थान पर हमसे मिले थे।

बाबा रामवदासजी का जन्म १२ दिसम्बर, सन् १८९६ में महाराष्ट्र में हुआ था। इनका वचनन का नाम रामचन्द्र था। रामचन्द्र ऐसे महापुरुषों में थे, जिनका सारा जीवन जनता के लिये ही था। इनको न कोई निजी स्वार्थ ही था और न बहम् भाव ही। वेते तो हर मनुष्य को दूसरे के दुख में दुखी तथा दूसरे के सुख में सुखी होना ही चाहिए। यह केवल सत्पुरुषों की ही पहचान है, मानव के अन्तर्निहित मानवता की परीक्षा तथा पहचान है। परन्तु रामचन्द्र इससे भी अधिक और आगे थे, वे दूसरे के दुख से केवल दुखी ही नहीं होते थे, बल्कि दूसरों के पानों से अपने को भी अधिक और आगे थे, वे दूसरे के दुख से केवल दुखी ही नहीं होते थे, दूसरे के पाप की अपने सिर ओढ़ने वाले खुद को ही सजा देते हैं और उसे भुगतने के लिये सर्वत्र तलार रहते हैं। इनमें भी यह खूबी असौम्य मात्रा में थी, इसलिए अनन्त महाप्रभु ने इनका नाम "रामवदास" रखा और सर्वसाधारण ने उन्हें "बाबा रामवदास" ही जाना।

विविध के सत्यनों की एक के बाद एक लालकलिका दुर्घटनाओं ने इनको संतार-रिफला से विरत कर दिया और जब वह महाराष्ट्र से अन्तर्गत की ओर में चल पड़े, तो पहले सीधे रेल द्वारा प्रयागराज आये। रेल पर लकर बरने हुए उनका एक पंजाबी के साथ हो गया। हिन्दी यह जानते न थे, इसलिए हिन्दी भाषी प्रभु से उनके लिये एक बिन्दु समझाया जा सकी। इनकी अंती में केवल हीन माने होते थे। रामचन्द्र ने प्राण-भंगिमा से अपनी भूल अपने को ब्यात बताया। उस पक्ष में हलवाई की सुझाव से दुर्घटना बिलपयी। इसके पहले कभी भी अक्षरकृत भोजन इन्होंने किया नहीं था, इसलिए भूज रहते हुए भी हलवार कर दिया। इनको लगा था कि किसी सुख होरजन की बुझाती है। बस प्रयाग के पक्षे तो अग्रिम ही रहे। उन्होंने उंडना शुरू कर दिया। अन्ततोगत्ता धर्मपात्रों का बिचार दिये बिना भोजन कर ही लिया।

एक प्रयोगवा पर बुरो प्रतिनिधता हुई और कोई २५ दिनत बाद के हो गयी।

पक्षे ने इनकी दुःखीनाश और वाणी-मत्ता देल कर अपने दोस्त के गहरे उन्हें संरक्षित पडना शुरू किया। इनका परिचय हिन्दी साहित्य समरुजन के सादरेरिपन से हो गया। वही बाबा रानी हुई सुखके पक्षे तथा कच्छे-अच्छे हिन्दी मीदर लेते थे। एक दिन वही पर रामचि टखनी के से भेट ही गया। टखनी में अक्षरन की साक्षात्कार देल कर इनकी गांधीजी के विचारों से अक्षरन कदावा और सलाहिलय पक्षे की मेरणा थी।

अक्षर की गांधीजी के विद्व महारमा गांधी ने एक देप के नवनुवर्गी का साक्षात्कार किया, वो बाबा रामवदास अपने भी रोक न लिये। गांधी ने मास्त्र की स्वयंका के लिये प्रयास किया, अपनी स्वयं की साक्षात्कारी के लिए भी प्रयास किया। इनकी लिए वह रामचन्द्रपुर होते हुए भी उच महाराष्ट्र में।

बाबा रामवदास को सन्त विनोबा को ही सार्वगांधीजी "आदर्श सत्पुरुष" कहते थे। बाबा रामवदासजी चाहते थे कि गाँवों में हर मनुष्य के पास भूमि तथा जीविका के साधन रहे और संघर्षके लिए आचार्य विनोबाजी द्वारा संघर्षके लिए

भूदान-यज्ञ आन्दोलन में वह जन-मन-धन से दूर पड़े और अविभक्त समय तक भूमि-हीनता विद्यते के प्रयास में रुके रहे। वह करते थे कि गाँव का रामा गाँव का सिंघाण बने। उसकी धरती मायपकताओं की पूरित स्वयं करे।

बाबा रामचन्द्र स्वयं तो कुछ नहीं, पर सत्यामों के बहुरूप थे। मीरपुर का मुद्रापत्र उनरी उद्योग देर ही। वेते ही सिन्धी की जन-दस्तावेज आज तक बड़ी प्यारी है, उनके मूल में बाबा का हाथ

जनशक्ति के संगठक बाबाजी

मीरपुर के बहुरंगन की जाने वाली पक्की सड़क के बिनादे गण्डा एक बहुत बड़ा गाँव है। इस गाँव के बाबा रामवदासजी का पवित्र सम्पर्क था। सन् १९१६ के जून में किसी कार्य के बाधासे गण्डा पक्षरे। प्रामाणिकता में गाँव के सन्मय में चर्चा बली। लोगों ने बाबाजी को अवगत कराया कि वहाँ दोष-निर्दोष से हजारों एकत्र जमीन बच सकती है, जिससे हजारों मन अन्न भी पैदाबदक जायगी। बाबाजी ने गाँव वालों की इस अनुभूत आग्रहप्रकृता को समझ लिया और वहाँ जायना कर दी कि नौ दिन में यह गाँव निरिक्त हो जायगा। लोगों ने कार्य अक्षरकृत कर दिया। बाबाजी ने कुछ लोगों ने इस अक्षरकृत कार्य में लेने का आग्रह किया। बाबाजी जन के चुके थे। बाबाजी ने अपने घर की योग्यता लक्ष्मी के पानों में भी कर दी। दूसरे दिन प्रातः गाँव की नगरी ही सवे और डाग मेल पडने लयी। बाबा ने गाँवकी चारवा केर मिट्टी डालने का कार्य शुरू कर दिया, यह सत्पुरुष विजली की भीति सार्वकालिक रूप से लगे रहने लगे। १२०० आधवी प्रति दिन सुबह के हजारों की संख्या में लोगों मिट्टी केंचने लगे। १२०० आधवी प्रति दिन सुबह १२ प्रात तक बाबा-गाँव के साथ नौ दिन लगातार काम करते रहे। गांधीजी ने दर १५ फीट चौड़ा और ६ फीट ऊँचा बाँध बन कर तैयार हो गया। बाबाजी ने दर १५ फीट चौड़ा और ६ फीट ऊँचा बाँध बन कर तैयार हो गया। बाबाजी ने दर १५ फीट चौड़ा और ६ फीट ऊँचा बाँध बन कर तैयार हो गया। बाबाजी ने दर १५ फीट चौड़ा और ६ फीट ऊँचा बाँध बन कर तैयार हो गया। बाबाजी ने दर १५ फीट चौड़ा और ६ फीट ऊँचा बाँध बन कर तैयार हो गया।

—रामचन्द्र सिंह

बचपन रहा है, कि मोहिनी-बाल, ही जनेउर, प्राकृतिक विरिफला, लगे सामोरीग, भूदान-यज्ञ आन्दोलन, लगे रवारक निधि, समाज-सुधार, रेल लगे ओर यानी जन्म उनकी समझ देरने की कभी भूल ही नहीं सकना। बहुउत्ति उर उतर प्रदेश गांधी-समारक निधि में संवाचक पद पर रहे हैं। यही से उर भोजन में एक नया मोक्ष नाम और लगे कुछ छोड़ कर अक्षरकृत माय-धन्यता से लिए निष्क पडे। उत्तर प्रदेश की लगे यात्रा समाज करके प्रयत्नशाली की लगे यात्रा करते हुए सिन्धी में १५ जनवरी १९५८ को बाबा रामवदास परलोकगते हुए। उनके बरदस्त-आद्यय का परिपरी विविध प्रकाश के आध्यात्मिक विद्यते का एक विशाल सन्दूक है। फिदिन लगे अविनिष्ट पुत्र, लयी, पत्नी तथा निर्धन, उर लगे प्रजा उनी उरती कुला के पाप थे।

उत्तर प्रदेश में हल कोष विर सार्व ईसा मसाह की अजमती ११ दिसम्बर को 'कुल-रोगी-सेवा निधि' के रूप में बनाये हैं, बरोकि ईसा ही कुलरोगियों की अक्षरनने वाले महाराष्ट्र में। जहाँका अनुसरण करने वाले बाबा रामवदासजी की अजमती से लेकर पुण्यनिधि (१२ दिसम्बर से १५ जनवरी) के साक्षर देला बर कार्य सुचारुत रिका जाय। अक्षरकृत विर लगे कुल रोगी-सेवा निधि में पात सुँवे सेपा उनके सुचारुवर्त की मंगल आगना करे। इस्ते उर रोगियों की बडा अर निरफेला। स्मरण-सुधार में भी इर सहायुमति से सहायता मिल जाती है। १५ जनवरी को बाबा रामवदास जी पुण्यतिथि सा रही है। उत्तर प्रदेश के साथ-साथ सारे भारत में यह कुल-रोगी-सेवा विरत मायना जाय, ऐसी हमारी प्रार्थना है। ऐसे महापुरुष का स्मरण करने से ही अपनी आत्मा को साक्षर का मान होय है। नो साक्षर ऐसे महापुरुषों ही सिन्धी है, वही साक्षर हम सचने पर ही सचनी है। इसकी मेरणा ऐते पवित्र दिन पर से हने लेते है।

भूदान-यज्ञ, मुम्बई, ११ जनवरी, १९१

तेलंगाना में अदाति-मनन कर, विधायक को लपकते हुए गंगा-यमुना के विद्यालय मैदान में एक बार यात्रा हुई थी। उसके बाद गौतम बुद्ध के विहार में लाखों एकड़ जमीन प्राप्त करके चैतन्य महाप्रभु की भूमि में प्रेम-यात्रा चली, यात्रिक के कदम चढ़ रहे थे। फिर वह वीरभूमि-‘बंड अघोष’ को ‘धर्म अघोष’ बनाने वाली कल्पि भूमि-भूमिपुत्रों को उनका एक प्राकृतिक हक यात्रिक ही गया था, हजारों गाँवों ने ‘ग्रामदान’ का संकल्प किया। आंध्र प्रदेश में कम्युनिस्टों से स्नेह से ‘हस्ताभिराण’ हुआ था। तमिलनाडु में माता मीनाजी की वृषा से निश्चित लोगों को ‘ग्रामदान’ की प्रेरणा हुई थी। सरकाराचार्य और ईशगामधीह के केरल में ‘चारों चर्चों’ ने कह दिया—‘यह यात्रा देवपुत्र-ईश का संदेश देती है।’ ‘विचार-क्रांति’ की निदात्री, एलबाल की ग्रामदान-भरिपद वनाटक में हुई। महाराष्ट्र के ‘अत्राणी महाल’ में त्राहि की ज्योति प्रकट हुई। पंढरपुर के मंदिर के दरवाजे मानव मात्र के लिए खुल गये। बापू के गुजरात में तो भक्त की तीर्थयात्रा हुई। उसके बाद भीरा के मेवाड़ में कितने ही गाँवों की वृहत्तों ने जाहिर किया—‘घर-घर में सर्वोदय-मान उठा है।’ ‘सूफ नाम’ के पंजाब में गुवा—‘वृषाभ नहीं वृषा के दिन आये हैं।’ असंख्य अष्टि-मुनिगों की तपस्या से दवेत और ऊँचे बने हुए नगाधिपराज हिमालय का दर्शन लेकर कदमीर चाटी और हिमालय प्रदेश में यात्रा हुई। चम्बल के बेहरी को ‘अहिंसा’ का साक्षात्कार हुआ। बेहरी जिला की इंदौर नगरी में एक अनोखा प्रयोग-क्षेत्र बनो। आसंतु हिमालय एक प्रदक्षिणा पूरी हुई। फिर से यात्रिक के चरण वीर और तुलसीदास की भूमि से आगे बढ़े और ‘कर्मनासा’ नदी को पार करके बुद्ध और महावीर की भूमि में घूम रहे हैं।

सचमुच ही यह प्रेमभूमि है। दोड़े आते हैं लोग। उल्ले से फलते हैं जो रोख चीरता है—जगह-जगह छोटे-छोटे गाँव हैं, सारा गाँव उमड़ थाता है। सचक के किनारे विविध तक फले हुए खेत और जंगल को पार करके लोग दौड़े-आते हैं। वे दर्शन के प्यासे हैं, लेकिन पेट के भूरे हैं, पर उसकी पर्वाह नहीं है। हजाराँ की तापदा ली आते हैं—दर्शन से घम होते हैं। दिन भर पशुव को घेर रहते हैं, पिछड़ी से शौंके हैं, दुखाने से देखते हैं और जब दर्शन हो जाते हैं, तो हाथ झुका जाते हैं, सिर झुक जाता है, जेब-नीप चमक उठते हैं। दो-तीन दिन से यह दृश्य देख कर एक बहाने में कहा, ‘किन्तु प्यार से आते हैं।’ मन को खुशी हो रही थी, लेकिन कल बाबा ने उस मन को धक्का दिया। विराहल समा पर नम्र स्थिर करके कहा:

‘इन दिनों बड़ी-बड़ी सभामें का मुझे डर आलम होता है। हजाराँ लोग एक आराज लेकर आते हैं। अमर काम नहीं बना, तो इतने लोग निराश होते। इसका सामाजिक नतीजा क्या आयेगा? इससे बाबा सिर्फ वेपार ही नहीं आयेगा, बल्कि समाज में दूसरी ताकतें उठेंगी होंगी। करोड़ों लोगों ने बाबा को सुना है—उनमें एक भूख पैदा हुई है। उनकी रुचि नहीं हुई, तो तुलकास हो सकता है। और यह डर है कि हिंदुस्तान में दूसरे प्रकार की शक्ति उठेगी होंगी। इस पर बाबा ने सोचा बहुत है और यह खतरा उठा कर बाबा पूरा रहा है।’

विहार के प्रमुख लेखक सर्वोभी जगन्नाथ, रामदेवबानु, वेंदनाथबाबू, वामन-बाबू, गौरीबाबू तोच रहे थे कि ‘बाबा का खलप कैंसा रहेगा?’

उन्मत्त विनोबाजी ने कहा: ‘कल्याणलोक काजित यह हमारा उद्देश्य है। विहार में ज्योति बल उत्पत्ती है। इतिहास गुरुन को छोड़ कर भीरा की किसी बामंजक में हवन जलहा नहीं आया है। सरकार ‘केरों’ (समान) का सोचती है—एक बोले में एक बहूदा जमीन लेने की बात करती है। ‘वे बोले’ की बात करता है और कहता है कि आस एक बोले में एक बहूदा बान कीजिये। भारत में घूम कर आया है। मेरा निरोधन करता है कि भूराज के सत्ताप मैदान में सारा कोई विचार नहीं है। हजाराँ के कल्याणकारी तक मैंने वही विचार समझाया है।’

आज लोगों के सामने कहे मेरे वक्तासं गुण पाये। लेकिन लोग नहीं मूल तकते कि यह ‘भूराजी-बाबा’ है। इतिहास गुरुन बल कल्याण का मूल कार्यक्रम छोड़ना नहीं है।

जब से विहार में प्रवेश हुआ है, विनोबाजी लोगों की एक वृषारा दे रहे हैं और बाब दिखाते हैं, ‘हमारे प्रिय, पुत्र, विहार के एकमात्र अहिंसक पुत्र्य को बान सबसे श्रेष्ठ स्थान पर है, डॉ. राजेंद्रनाथ के घर में सर्वोदय-मान रहा है। अमर हमारे देश में पैदा होटी, तो हिंदुस्तान के घर-घर में सर्वोदय-मान रहा जाता। कम-से कम विहार में तो यह बात होनी ही चाहिए थी। मैं राम राजुनन ॥ अमले जम-दिन तक यह नाम मान पूरा कीजिये।’

इसने से विनोबाजी का समाधान नहीं होता है। आगे जाकर वे कहते हैं, ‘जो श्वेदर-नाथ रसेना, उरके काम में यह सारक-मंत्र गुनाये कि एक बोले में एक एक बहूदा जमीन देनी है। भारत माता का समाधान तब तक नहीं होगा, जब तक हर मुझिनी को जमीन नहीं मिलेगी।’ इसलिए सारा करके विहार धरती के मे

जमील करती है कि बाबा इतने लोगों को मुलाते नग जाये। काम नहीं होया, धर्मोत्पत्ति नहीं आयेगी, तो घुरे परिणाम आयेगे। बाबा बाह्य कि सभके परिणाम आये। इतिहास यह पूरा रहने है। घुनना ‘बंद करेगा, तो नी अमकालित तलेगी नहीं। लोग कहते बाबा निराप ही गया और बंड गया। बाबा गुना है, तो लोगों को घोषी भासा है कि बाबा गुनना है, तो घायर कुछ होगा। इतिहास हम दुसरा विहार में आये हैं।’

बाबा कहते हैं, ‘वारे हिंदुस्तान में मुझे बहुत प्रेम मिला है, लेकिन विहार को हम बनने बाप की छुट्टे मानते हैं। और यह परंपरा बहुत पुरानी मानते हैं—अनक, बुद्ध, महावीर इनो भूमि के हैं। घोषी की यही आये थे।’

वेदा बाप के घर आया है, तो कपना हक मांगता है। कपना है—विहार कश्चित ने आठ साल पहले प्रस्ताव दिया था,

‘२२ लाख एकड़ जमीन प्राप्त करेंगे।’ उसके अनुसार २२ लाख एकड़ जमीन प्राप्त करेंगे। १ बने हुई १० लाख एकड़ जमीन अब दे दीजिये।

‘घोषी में कल्याण और रोख एक सुदोमर पाव’—यही हमारी माँग है—यथा वेदो को निराप करके आस सेमैने?

संस्था-नाम यह नाम जंगल के लीटनी है और दुर्लभापयक का बल होना है, सब दिन घर पदाज की घेरे हुए लोग बापच घर सोते है—एक दिन उठे देख कर बाबा ने कहा, ‘कीन था यह है।’ यह तो ‘सहजरीय सहजपाद’ वेद में भगवान का एक वर्णन किया है। हमारा हृषिकेश, हजारा परबाल, हजारा जलोनासा, हमारा शिरवाणा भगवान। यही अमारा है।’

सावारा के एक बाले आये थे। बाबा से कह रहे थे, ‘आयेने इनना बडा धर्मोत्पत्ति उठाया है कि इतने बार बदि निकल चुड़े, तो भी जाइरो उम्भरक यह कितना।’

बाबा : ‘हमारा उम्भरक यह आयेने नग काम का हमारा नाम नहीं, नरीयो कय काम हो होने दीजिये। धरिती की रानी और शिवायो महाप्राय’ का नाम इतिहास में रोपन है। जहाँने बहूना काम किया है। लेकिन, यग नहीं मिला। हम तेवो अमकालित के लिए नहीं निकले हैं। हम जन्मो अबह तो बहुत प्रथम में। गरीबोको के आदेच के अनुसार काम करते थे, धानवापना, एकमतक काम धर्यादि करते हो थे।’

हम चाहते हैं कि गरीबों की बाबा मंग न हो।

उभोगुण देह का घने हो है। रीन में वह कुन्य हो जाता है। विहार के कुछ कामकाज कहते हैं, ‘य फलाह कम हुआ था, बचका हुआ करने बाबा दुसरा आये हैं।’

‘आज कल्याण, ‘सकल धाम ए एकपीठा सम्यक रूप गये से। वदे न देते दुसरा आये हैं।’

सवाल परना के निष्ठावान काम लेक भोजीरगु भगवान की निर्मातें हुई हल बाप सुष्टि के विधिपर लख लेल सहे हैं। उनकी बलिं मिलना गया है, फिर भी उनका मिल उठाने परना की क्षामक बग जागत है। कल्याण की बाबा के पाठ के सभान-पलाय के धारिपर का कर्मन कर रहे थे, बड़ी बहनों को पूरा बल की भरी मिल सहे हैं।’ उनको लीयो बलिं तो रही थी।

बाबा ने कहा, ‘हिंदुस्तान में है—हूर जहाँ-जहाँ गया, मैंने लीयो गरीबी देवी है। अब हमें फिर से जय करणा होगा। लख करके का काम जयार्थो का है। यह गरीबों निदानों के लिए जनको काम बनती चाहिए। बाब और मैं जय करके करते घूमने। हम जय करेंगे, अमर काम करें, गादि धन करें, अमर काम हैं। फिर ऐसा सम्यक साधिया कि हम स्थान कल्पे, बहुरे लप करने लगेगे। कपना ‘अर, लपने लगेगे। इस तरह धन, धान, तर, लप और ध्याय ऐसी जेनी रहेगी। हमारा जमी ध्यान का अर्थिकता नहीं है, जय का है। जमी अमर लप करने, तो जनकी बापों में तापन आयेगी। फिर वे काम करेंगे और हमारा रेकल लपक पावे के लिये। कोलना कुछ नहीं, निरके कल्याण।’

विहार के हुरे कार्यकर्ताओं को संयोग करते हुए बाबा ने कहा, ‘घोषी में कदा धन की मुट्टी भर धान, यह मंत्र लेकर आस लर निकल गिये। संस्य

भारतीय कृषि के अर्थशास्त्र को अगमर उगाहासुखं 'गोवर का अर्थशास्त्र' कहा जाता है। लेकिन गोवर का वास्तविक मूल्य आज तक किसी ध्यान में आया ही, ऐसा नहीं लगता। देश में कुल गोवर का किन्तव हिस्सा जला दिया जाता है, इसकी भी जानकारी नहीं है। उनमें मुख्यतया निम्न परिस्थितियाँ हैं। तब विन्मोहार्थ, अन्ध-अन्ध लोगों में यह संस्था विश्व प्रचार तथा व्यापार तोत्र है और उसका निराकरण करने में किस प्रकार के संयोजन की आवश्यकता है यदि मुद्दे के बारे में जाँचदेवार अध्ययन करने की जरूरत है, ऐसा किसी को महसूस होते नहीं लगता। राष्ट्रीय सम्पत्ति के अधिकतम उपयोग की दृष्टि से सामयिक उर्वरकों की अपेक्षा सामुल्लभ खाद का परिपोषण करना किन्तु लाभ-प्राप्त होगा, इस ओर भी कोई ध्यान देना नहीं चाहता। इन सब बातों की ओर ध्यान देना चाहिए, ऐसा भी लोग सोचते नहीं देखते।

इस स्थूल धार्कण पर ही नजर डालें। मिर्कै पशुओं का ही खाद प्रतिघण ८० करोड़ टन होता है, जिसमें २० करोड़ टन इन्फे के रूप में तथा १६ करोड़ टन जिनमें भी खाया शायद पर जहाँ-तहाँ सूख कर सूड़ कर गट-जमा है। गाँव-गाँव में गोवर को ईंधन के रूप में उपयोग करने से होनेवाली आर्थिक हानि का अन्दाज यह बता सकता है। खाद ३० करोड़ टन गोवर का खाद बना कर कृषि में उपयोग किया जाय, तो १० लाख अनाज अधिक पैदा होगा।

खादर होकर का गमिण और प्रदूषण : आज ही नहीं, किन्तु आज के ६३ वर्षों में खादर होकर के भारतीय कृषि पर किये गये गये अध्ययन के आधार, अत्यन्त निश्चय दिया जा। कृषि ईंधन के रूप में जला दिये जाने वाले इस गोवर को भी के गाँव में उपयोग करने के बारे में इनके कान्ठे कान्ठे में भी कुछ प्रयति न होनी चाहिए, इसका एकमात्र कारण यह है कि डा० होल्कर द्वारा उपलब्ध किये गये प्रसंग का तब तक नहीं दिया जा सका है। यह प्रसंग यह है कि 'गोवर के खाद के उपयोग में इनके कार्यों पर सरकारी बाड़ी जितने बर्धनेमय प्रयोग करने दिये जायें, उतु उतु तक तीव्रतर प्रस्ताव को सरकारी रोडों के लिए रोडों के निर्माण में भी बिलग होना, तब तक उत्तरी प्रयोग का क्या काम ? गोवर को जला दिया जाता है, उसकी जल-अन्ध-अन्ध लोगों में कम-अन्ध-अन्ध होनी पानी गयी है। केलावन, धारवाण, मोलापुर, खादर अन्ध-अन्ध बर्धने राज्य के कन्नड़ क्षेत्र में इन मासक्य में हाल में ही जा रहा है। तब ही गयी। इस क्षेत्र की मुला, बलारती, घण्ट, समुद्रगती, ऐसे बार गाँवों में बर्धने के अन्तु ब्रह्म-अन्ध आदिके इन्धु किये गये। अन्धवन्दे से यह प्रकट हुआ कि अयोग्य पुरे क्षेत्र में २० प्रतिशत गोवर जला दिया जाता है, जब कि सरकारी काम में ३० प्रतिशत तथा अनुसूचित जाति में जला दिये जाने वाले गोवर का प्रमाण १२ प्रतिशत तक पहुँचा है। अन्धवन्दे यह रूप ही जाया है कि गोवर का जलना अन्य ईंधनों की अपेक्षा कम प्रकृतिक है, किसी ही किलने-बाँधने, देखा नहीं। हीरो द्वारा कुल प्रस्ताव जलना करता, जिनकी अन्धवन्दे के बारे में इनके तक जलाने के लिए भोग तैयार रहते हैं। उपर्युक्त दलदली दृष्टि से इनके से कोई भी प्रसंग नहीं होता। बर्धने हुए उनका जलना होने से 'दास्य' में इनकी हुई भी जलाने के ब्रह्म नहीं आ सकी। समुद्रगती प्रदेश में जलनी का बर्धनायत होने से दास्यवर्गियों को जलाने हेतु सरकारी प्रायत करने में बाँधनी नहीं पड़ती। इसके क्षेत्र बन्दे, बलदनी विभाग में गूले अन्धवा समुद्रगती विभाग को अन्धवा गोवर का बर्धनायत प्रस्ताव ही होता है। पशुओं की सखा को कम है, किन्तु अन्ध वस्तु भी अन्धवा होता है।

गैस प्लांट का महत्त्व : जमा किये जाने वाले २० करोड़ टन गोवर से गोवर गैस-प्लांट के द्वारा ९ लाख टन नायट्रोजेन गैस में ५५ लाख टन अमोनियम सल्फाइड का बर्धनर काम मिल सकती है। मिट्टी स्थित उर्वरक कारखानों का बाँधित उत्पादन ही गोवर टन नायट्रोजेन (गैस) द्वारा लाख टन अमोनियम सल्फाइड प्राप्त है। अन्धवा गोवर गैस-प्लांट के द्वारा मिलने वाले उपर्युक्त ५५ लाख टन अमोनियम के उपयोग के लिए मिट्टी जंते १६ कारखानों और अन्धवन्दे होने। मिट्टी कारखानों में अन्धवा मूल मूल २५ करोड़ पक्का है। इन सबका अन्धवन्दे महत्त्व ही किन्ती जंते और कारखानों बर्धने के लिए ३०० करोड़ पक्के मूल मूल की रूप में खर्च करने होंगे।

किसी कि वह एक बिहार में यह मूल नहीं होगा, सब तक घर का अन्धवन्दे नहीं होगा। इन दिनों बिहार की यदि कुछ भी हो गयी है। मोतीबानूने मुला, 'मवा इन्धकी बर्धन भागकी उचितता मरम हुई है, यह है'। बाबा : 'मति मुक्त कम हो गई है। इनका कारण बाँधनी बर्धने है, गाँव बायी है। और सरकारी गाव लेकर भी तो बर्धना है। उपर्युक्त मर हवाकी वस्तुएँ भी कति बर्धने है।'

अन्ध-अन्ध बाबा 'जिय-पवित्र' से तुज-तीरामनी की बाणी गाणी-दल के आदि-बन्दी को समझा रहे है। यही-अन्ध-अन्ध-अन्ध का एन्धेन समझाने के बाद उन्होंने बड़ा इन्धकी बाँधनी पंलि— तुलसी तब तीर-तीर-अन्धवन्दे एन्धवन्दे बीर। बिबन्धर पंलि देहि मुन्धवन्दे बाँधनी का स्वरण से यह गयी है। मुझे भाव होता है कि मैं हीनेबा यथा के किन्तरे ही मुन्धनी है। किन्तु अन्धवन्दे है कि कभी अन्धवन्दे नीक सब भाग मुन्धनी है, कभी हवा की जल भावू है।

सामयिक दृष्टि से ही 'गोवर गैस-प्लांट' के द्वारा होने वाला में खाद प्रायत करना संभव है। लेकिन एक अन्य महत्त्वपूर्ण स्थल है, जिसकी बर्धन 'गोवर गैस-प्लांट' स्थलमें बर्धन शेष शेष शेष शेष शेष है। यह काम यह है कि गैस प्लांट से प्रदूषण या तो मिलेगा ही, लेकिन पर-पर में सुविधाजनक रूप से जमाया जा सकने वाला नि-एन्ध ईंधन भी हासिल होगा। इस ईंधन को पैदा में कौन-कौनसा अनुभव से ही सम्भव होगा, फिर भी सरकारी ही पर विन्मोहवार् हिस्सा किया जा सकता है।

मिन्धवन्दिया अन्ध महत्त्व की बात यह भी है कि 'गोवर गैस-प्लांट' की मदद में नायट्रोजेन के उत्पादन पर होने वाली लागत का परिष्कार कारी कर होगा। यह भी बर्धने लिये मुद्दे के स्पष्ट होता है।

(१) 'गोवर गैस-प्लांट' में लिए उपर्युक्त होने वाला कच्चा माल राष्ट्रीयकृत क्षेत्रों में उपयोग होने वाले कच्चे भाग से कारी सरता होगा।

(२) सरकारी ही हवाई भी अन्धवा गयी अन्धवन्दे का रूढ़ है। 'गोवर गैस-प्लांट' भाँडे जन्धु बिबन्धरे रहने से यह खर्च बर्धने।

(३) गोवर गैस-प्लांट में अन्धवन्दे पर खर्च भी अन्धवन्दे ही होगा। रासायनिक कर्धने के कारखानों में अन्धवन्दे के लिए को भारी बर्धनर तक खर्च किये जाते हैं। गोवर गैस-प्लांट में लिए पन्धरी अन्धवन्दे नहीं होगी। इनकी ही मिन्धवन्दिया की बर्धन खर्चों के उत्पादन पर होने वाले कुल खर्च में कम-से-कम २० प्रतिशत बर्धनी तो होगी ही। इन बर्धन का सामयिक कृषि परिपोषण पर जो सुपरिपोषण होगा, उसके अन्धवन्दे लय करने की आवश्यकता नहीं मान्य पड़ती।

(४) '१६ दास्यवन्दे शीकरी', (१६) है।

राजस्थान में भूमि-प्राप्ति और वितरण-कार्य

राजस्थान मुद्दान-यम शीकरी, अन्धवन्दे की सुकन्धवार् राजस्थान के २६ जिलों में नम्बर १९६० के साथ तक में कुल बर्धने यही किये जा रहे हैं। ८,६६० दास्यवन्दे में कुल ५,३३,३२२ एकड़ भूमि २६ जिलों में सब तक मिले। भूमि किल्लत : गाँव ६० तक ८७,३६६ एकड़ १,३,३३७ परिवारों में बर्धने से नम्बर ९० तक १,१६० एकड़ १,०९१ परिवारों में कुल ११,१०९ एकड़ कुल ११,३२८ परिवारों में सब तक १५ जिलों से बिबन्धर प्रायत हुआ है, सबके अन्धवार् नायट्रोजेन-काम, अन्ध-अन्ध वस्तुओं को बाणर को हुई भूमि कुल २५,१६४ एकड़ है, २,४७८ दास्यवन्दे की बाणर को गयी है। उन्धे भूमि में ३,०१,६५१ एकड़ भूमि २६ जिलों में बिबन्धर होना कारी बायी है। अन्धवन्दे बर्धने बाँधे साथ का एक बायी है, बिबन्धरी योगवन्दे के साथ में काने का विचार है।

चम्बल घाटी की डायरी

शहरों में पोस्टर-आंदोलन सक्रिय भेठ

रथो कार्य-समाज सदर भेठ की बैठक में निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से २६ दिसम्बर को पास हुआ।

"सामंजसिक स्थानों पर अयोधनीय पोस्टरों का प्रदर्शन नागरिक हितों पर कुछ प्रभाव डाले। साथ ही देव के मन्त्रमुक्तों के तथा बालकों के शैक्षिक काम का ह्रास है। अतः रथो-अयोधनीय सदर भेठ की मनाय बहनों इस प्रकार के पोस्टरों को लक्ष्मण करने की मांग करती है। पोस्टरों से सम्बन्धित स्थितियों से हृदय अनुरोध करते हैं कि इस प्रकार के, पोस्टर्स सामंजसिक स्थानों से हटुए जायें। इस लेख विचार-विचारियों का भी ध्यान देव और आकर्षित करना चाहती हैं कि वे ऐसे पोस्टरों के प्रदर्शन पर प्रतिबंध लगायें तथा हृदय जनता से ज्वली करती हैं कि वे अपने घरानों की दीवारों पर इस प्रकार के पोस्टरों को लगाने की आज्ञा न दें।"

भेठ के दिनांक ५ दिसम्बर की साप्ताहिक मीटिंग में बहनों ने यह प्रस्ताव पास किया है कि सड़कों पर जो अश्लील चित्रों के निशान (पोस्टर) लगाये जाते हैं, उनका निरोध किया जाय तथा इसके विरुद्ध जचित कार्यवाही की जाय, क्योंकि इसका प्रभाव जनता पर बुरा पड़ता है।

सुधमजक

सचमजक के ५२ प्रतिष्ठित नागरिकों ने, जिनमें विश्वविद्यालय के प्राध्यापक, स्कुलों और कलेजों के प्रिंसिपल, राजनैतिक पक्षों के नेता, बार-बनौतियों के सेक्टर, विधान सभा के डिप्टी स्पीकर, नारटोरेस के सदस्य एवं अन्य सामाजिक, पेशवारीयक स्थानों के प्रमुख भी हैं, एक अवैली में सफल नागरिकों से अनुरोध किया है कि अयोधनीय पोस्टरों को हटायें।

साहित्य बुलेटिन का निरुद्धक विधि के सभापति का प्रवचन करने में, १९६१ के चार वृत्तों के वारिक बुलेटिन के रूप में होने का निरुद्धक, विचारना साथ 'शांति की राह पर' और सचमजक स्वामी इन्द्रसचक्र, हेन्देव रथ और सुप्रसन्न रहें। पहला अंक १५ जनवरी '६१ को प्रकाशित होगा।

कानपुर

अयोधनीय पोस्टर हटाओ आन्दोलन यहाँ प्रारंभ हो चुका है। सर्वे सेवा संपन्न इस सम्बन्ध में जो प्रस्ताव किया जा रहा, उसमें प्रतिमा नागरिकों में वितरित की गयी है। एक को है। व्यापक प्रतिष्ठित नागरिकों के हस्ताक्षर एक अवैली नागरिकों के नाम प्रकाशित की गयी है। विवेचना-मालिकों से भी सम्पर्क साधा जा रहा है, जिससे वे भी स्वयं अयोधनीय पोस्टर लगाने से इन्कार कर दें।

आगरा

आगरा में एक दिन का अयोधनीय पोस्टर नगर में आने से बचाने के लिए विवेचना बालों को चले हटाने के लिए विवेदन किया। यह बह नहीं हटाया गया, तो जिकरीया को और विवेचना बालों को सूचना की गयी कि सा. ५ जनवरी को कार्यकर्ता उस पोस्टर को हटा देंगे। यह भी प्रचार की गयी है। सा. ५ जनवरी को विवेचना बालों में यह पोस्टर हटा दिया और उस वक यह लेख का जगना-विचारक हटाया पोस्टर हटा दिया। हटने में जो और बगह ऐसे पोस्टर हैं, उनके बारे में भी सूचना की जा चुकी है। अयोधनीय पोस्टर लंबी आन्दोलन में बन-बन कर जो फाटो हलोजन में

रायपुर

विवेचना-मालिकों ने अयोधनीय पोस्टर न लगाने का बचन दिया है और निर्वाचक समिति के निर्णय को मान्य रखे जाहोजन हैं जो भी ठर किया है। चार स्थानों में अपने पोस्टर मिनी करने पर हटा दिने में है। स्थानीय राज्यपाल विभाग के संचालक स्वामी भागवतीजी ने २६ दिसम्बर को अधिवक्ता का बुलावा किया। स्थानीय अधिना-नरत्वालों का एक अधिवक्ता प्रकाश की इन्टि उपस्थिति में वारिक हटाए।

मिण्ड जिले के परगना सदर में १८ गाँवों के शान्ति-मित्रों की एक सभा चम्बल घाटी शान्ति-समिति के अध्यक्ष स्वामी कृष्णस्वरूप की अध्यक्षता में १२ दिसम्बर को काया माम में हुई। प्रत्येक गाँव से एक शान्ति मित्र लेकर १८ गाँवों के १८ शान्ति मित्रों की एक क्षेत्रीय शान्ति-समिति बनी। श्री गोदारामजी सरोजक यन्त्रये गये। स्वामी कृष्णस्वरूप और महावीर सिंह ने समिति के कार्यक्रम के बारे में बताया। इस क्षेत्र में घूम रहे शान्ति-नैतिक सर्वेधी राजनारायण त्रिपाठी, सुप्रसन्न और जेतसिंहजी के प्रयत्नों के परिणाम-रूप यह शहर में हुआ और ८२ नये शान्ति-मित्र भी मिले।

समिति की बैठक २० दिसम्बर को प्रभाव काशील मिण्ड में हुई, जिसमें समिति के विधान, रजिस्ट्रेशन तथा भागे के कार्यक्रम पर चर्चा हुई।

जनवरी, १९६१ में होने वाले चम्बल घाटी शान्ति एवं विचार-सम्मेलन के स्वरूप और कार्यक्रम पर विचार-विमर्श के लिए क्षेत्र के शार्वजसिक कार्यकर्ताओं को एक सभा १२ दिसम्बर को हुई, जिसमें सात व्यक्तियों की समिति बनी।

अभियुक्त मटरे घरी

विनोबाजी के सभासदसमर्पणकारी भागी मटरे भागप के अतिरिक्त वेदान्त जगू भी आर्यदास मजूमर को अनागत है। मारा ३९५ और ३९७ के कार्यों में विनोबा की हूमा। विज्ञान मज ने अपने फैसले में सजु की बहानी को प्रामक और शान्ति की अपरिचय मानते हुए उसे मुक्त किया। बचाव पक्ष की ओर से एचबीएच की रामकुमार तिवारी ने निमूक पैरवी की।

मिण्ड में बेड़ियाँ पटीं।

१८ दिसम्बर को प्रातः मिण्ड निशा-नेल आत्मसमर्पणकारी भागीयों के पैरों की चेंदियाँ काट दी गयीं।

सब मरी हुए।

मिण्ड में चल रहे मुचबर्तों में, २३ दिसम्बर, '५० को लोचनन, देवाहि, रामसरोरी, रक, विद्याराम, बहूई, रामसवाल, बदनसिंह, सुप्रसिंह मारा ३०७ के आरोपी में सब निर्दोष करी घोषित किये गये। पूरे मज के एक भाग करी होने की यह पक्षी घटना है। आरोपी बहानों की निण्ड जिले के कोषण पुलिस-वाले के अलापर अमसाध बंदूक में २६ मार्च और ३० मार्च '६० कोषण बानियों की पुलिस के मुदमेह है। २६ मार्च की मुदमेह में ओरमन, देवसिंह, रामसरोरी, रक, बहूई और विद्याराम से तथा ३० मार्च की मुदमेह में ओरमन व रामसरोरी, बहूई, विद्याराम, रामदास, बदनसिंह और सुप्रसिंह से। शान्ति-आवासीय से दोनों पक्षों से मोठी बहने की बाइ को प्रामक माना, क्योंकि

एक ही साली करण्य व मोठी का निवान पटना-स्वलय पर नहीं बताया गया है।

पुलिस के गवाहों का २००-३०० मज की दूरी पर साक्ष्यों की बाइ में पटना-मना को प्रामक समझा है। बागो विद्याराम का नाम ही आर्यसमर्पण के बाद धारिक किया होता है। दोनों मुचरमे जिला वेदान्त जगू की मजूर बाडी रिटर्नी के गवाहिय में बले और धारण के लिखक बचाव-पक्ष की ओर से मजबूत की कालसिंह कुचबाइ और की मुनासिंह कुचबाइ में निमूक पैरवी की।

मिण्ड, ककर, अमाह और भाएर, इन बाओ स्थानों की अदाओं में आत्म-समर्पणकारी के मुचरमे चले रहे हैं। मिण्ड में रामदास और बदनसिंह पर मज कोई अधिवोध न होने से उनका भागप लेल के लिए स्वागतकार किया गया है। भाएर के पैरवी-कार्य की जिम्मेदारी की बागुपाल निजल ने संभाल ली है।

विनोबाजी के शांतिपत्र में अयोधित उदार प्रदेव शांति-वेना देवी में स्वामी इन्द्रसचक्र, कस्तूराल, महावीर सिंह और जगतसिंह बाराको मने।

इस अंक में

कथा	कहानी	किमुका
सर्वोपर के लिए दुनिया उलटु है।	१	विनोबा
मागरी जिदि ठारु हुण्डु शीखिये	२	—
जातेबाठे बहों की बगह जानेवाले बहाना हैं	३	विनोबा
एक पुत्रीजी।	३	विद्याराम
'कर्म' सचारा का मनुष्य	३	"
अनुकरणीय कदम	३	"
सब मानक हूयें हैं, हृदय सचमें हैं।	४	विनोबा
कार्यकर्ताओं की ओर से	५	मजसाल विधान
बाबा रामचन्द्रदास का सुप्र हसल्य	६	रजिस्ट्रेशन बहरोप
जनसचिक के संरक्षक बाबाजी	७	राजसचक्र सिंह
हृदय क्यों धारिक-नैतिक बनें ?	७	विद्याराम
आजकी कथनों की मिजने का पाप	७	बाबा रामचन्द्रदास
विनोबा काशी-मज से	८	मुमुषु देवराडे
गोबर का संप्रदान	९	ए. ए. बगुमदार
सं. प्र. के धारम-संज्ञाओं के बीच विनोबा	१०	मुदरालाल बहुगुणा
बाबा-सरोजक	११	—
शांति-वेना बाबों के लिए बहाना को अयोध	१२	—
पक्षम-भाटी की भागीरी	१३	—

एक महिला की पुकार

नागरी लिपि द्वारा तेलुगु साहित्य : ७

हिन्दी

तेलुगु

अन्यास्य वाच्य

मैं तेलुगु सीख रहा / रही हूँ ।
 हम भूदान-यज्ञ परिषद के द्वारा
 तेलुगु सीख रहे / रही हैं ।
 तेलुगु भाषा सीख कर हम-
 धार्मिक ग्रंथ में धारणें / गी ।
 आप यहाँ क्यों जाना चाहते / ती हैं ?

अन्नासम कौरु कु वाच्यम
 नेतु वेतुगु नेनुकोतुमुपुम।
 मेसु भूदान यज्ञ परिषद द्वारा
 तेलुगु नेनुकोतुमुपुम।
 तेलुगु भाषा नेनुकोमि मेसु
 धार्मिक ग्रंथतुनकु पातुडुड।
 तमह इचचदिकि वेतुगु वेतुदरुतु-
 चुप्राय ।

इस साल, अप्रैल महीने में यहाँ
 स्वयंसेवा-सम्मेलन होनेवाला है ।
 क्या, आप भी धारणें / गी ?
 हाँ, हम भी उसमें भाग लेंगे / गी ।
 मैं तेलुगुजी में सफर करूँगा / गी ।
 मैं भी आपसे साथ तेलुगुजी
 में ही भागूँगा ।
 यहाँ के लोग कौन भाषा बोलते हैं ?
 वे तेलुगु बोलते / ती हैं ।
 उनसे आप किस भाषा में बोलेंगे / गी ?
 मैं उनसे तेलुगु में बोलूँगा / गी ।
 सम्मेलन कितने दिन
 चलेगा और क्या ?
 अप्रैल महीने-मेटाएड, पचास बरस
 शरीरों में, कुल दिन चलेगा ।
 सम्मेलन किस जिले में,
 कहाँ होनेवाला है ?
 कांभ प्रदेश के पश्चिम गोदावरी
 जिले में सम्मेलन होनेवाला है ।
 यहाँ पहुँचने के लिए वेनैतुल रेलवे
 स्टेशन में उतरना होगा ।

हैं संबंसारु येमियतु नेतेलु। बरु
 सर्वोदय सम्मेलनयु अरुगुपुम।
 तमदरुह वचचदर।
 अतुतु, मेसुकुड अंडु पालगोनेडु।
 नेतु रेलुको प्रयागयु वेतुडु।
 नेतुकुड तमतो रेलुतेने
 इचचदर।
 अचदि प्रजतु ये भाषा मातलावेरु।
 बरुह तेलुगु मातलायुपुम।
 ये चारिको तमरु ये भाषेतु मातलावेरु।
 नेतु चारिको तेलुगुको मातलायुतु।
 सम्मेलनयु येकि चेडुतु
 जयतु । येसुडु।
 येमियतु नेल-भरेनित्तु, पंदीम्मिदि, इरु
 शरीरुललो मोपुतु मुडु वेतुलु अरुतु।
 सम्मेलनयु येविस्तारु
 येचद अरुगुपुम।
 कांभ प्रदेशतुको पश्चिम गोदावरी
 जिलेतुको सम्मेलनयु अरुतु।
 अचदिकि वेतुगु येमैतु ।
 तेलुगुको विपणनेतु।

[एक पाठक ने इंग्लैण्ड में प्रकाशित होने वाले "आयल मुनीबर्नल" नाम की पत्रिका में एक अमेरिकन महिला की ओर से छपी हुई अंग्रेज की नकल भेजी है, यह हम नीचे दे रहे हैं ।

विनोय ने जब अयोधनीय पोस्टर्स और चित्रों के खिलाफ आवाज उठायी, तो एक दलैल यह भी दी गयी कि योगनीय और अयोधनीय का मायदन् भिन्न-भिन्न युगों में और मुल्लों में—और भिन्न-भिन्न व्यक्तिवों का भी—अलग-अलग हो सकता है, इसलिए यह तय करना बहुत मुश्किल है कि क्या योगनीय और क्या अयोधनीय है। इस दलैल के अन्तर्गत मैं ब्रह्म कहा जाता है कि विन याताँ को हम अयोधनीय और अन्तर मानते हैं, जहाँ परिचयी देवों के लेप्य वैसा नहीं मानते ।

यह सही है कि आदर्शों में और मूल्यों में भिन्नता होती है, रचि-भिन्नता भी होती है, फिर भी कुछ देवी बातें हैं, बिनाये बारे में अयोधनीयता-योगनीयता का निर्णय करना कठिन नहीं होता । भिन्न परिचयी सम्प्रदाय और परिचयी लोगों के विषय मायदन् होने की सुधारें ही जाती हैं, उन्ही सम्प्रदाय और माताभरण में पत्नी हुई एक 'परिचयी' महिला की यह पुकार है । वैसा हमने अन्तर लिखा है, सब तो यह है कि आज जो कुछ जनमत के नाम से चलता है और चञ्चला जाता है, वह अविश्वर कुछ चन्द स्वयं-सेवित लोगों की आत्माय है ही । सामान्य स्त्री-पुरुष, चाहे वह पूरुष का हो या परिचय का, धारद एक ही-ही तरह सोचता है ।

यूथ अमेरिकन महिला की पुनार समल स्त्री-आदि की पुनार है। हमारी अलिं-सुन्नी आदिए कि हम अने दिन अल्लभारों में, विनोय-भरों में, विस्तारों अदि में जिनमें के श्रवणभाष का प्रदर्शन करते मातु-आदि का किन्ता अल्लन कर रहे हैं । —संतु]

श्री हूँ
 मैं आगकी पत्नी हूँ, आगकी प्रेरणी हूँ, आगकी माता हूँ, आगकी बहन हूँ, आगकी मित्र हूँ ।

मेरी मदद कीजिये
 मैं एकलिंग बन्दी गयी थी कि मैं दुनिया को लीज्या, आनन्दलन, गम्भीरता, सुविधा और प्रेम दे सकूँ । लेकिन मैं इच्छती हूँ कि मेरे अन्तितल के इस उदरेय की पूर्ति करना मेरे लिए उल्लेख्य कठिन होता आ रहा है । विनोय और टेलीविजन वाले तथा विशिष्टतापन मेरी को अन्य विनोय-आदी लोग हैं, उन सबकी मुझ पर मत इत्थिमाक

बेनाक एक ही काम के लिए कर रहे हैं—आलोचन के लिए ।
 इसके कारण मैं अस्पानित हुई हूँ; उम्मे मेरी आवाज को नष्ट कर दिया है; इसके कारण मैं वह बन सकने में असमर्थ हूँ, जो आप चाहते हैं कि मैं बनूँ—मुद्रता, प्रेरणा और प्रेम का स्रोत । प्रेम की मूर्ति—मेरे बच्चों के लिए, मेरे पति के लिए, मेरे परिवार के लिए ।

मैं फिर से मेरा सही स्थान प्राप्त करने में आपकी मदद चाहती हूँ, चाकि बिना उदरेय के लिए मेरा सर्वन दुःख है, उन्को मैं पूरा कर सकूँ ।

हमारी वैधी मान्यता रखते हैं, वे निष्प कर अक्षर बालने वाली मैत्री सावत पैदा करेंगे, विश्वर धारण रोचना मुश्किल होगा और विश्वके धरत के आनंद के पूर्ण और परिचयी युगो का पालनन दूर होकर सारी मानव जाति की एक नई आशा और उल्लेख्य अर्थिय का परप्रदाय पैदा हो और यह इदु निरन्धर हो कि आन्दरा मनुष्य पर-सूरे को मानने के लिए सैध पैदागी लड़ने शाम में उन्ने की और प्रयुक्त नहीं होगा, किकि आश का प्यार और सहयोग बढ़ाने की दिशा में आगे बढ़ेगा ।

तात्कालिक उद्देश्य
 हमारा तात्कालिक उद्देश्य तो इतना ही है कि अन्धता शरधार यह बात समझ ले कि रश्मि के लिए आन्धरिक रश्मि पर निर्भर रहना केवल धन है और इच्छो वह कुछ ही बात । इच्छो और अन्धक

प्राप्त कर सकें, तो हमारे सामने और व्यापक बर्जुन का क्षेत्र खुल जायेगा । हम प्रार्थित की उन गिणाल सम्भावनाओं को परिचित हैं, जो कि आदर्श की सुदि और भिन्न-प्रार्थिक की आदि की क्य और सिदि के लिए अगुने से हासिल हो सकती हैं । जब तक हम किन्ता रखेंगे, सब तक सामाजिक शांति और सारी मानव जाति के परस्पर मार-चारे के उदरेय की पूर्ति में अ्ये रहेंगे ।

हम हर व्यक्ति के एक मनुष्य के नाते अंगुल करना चाहते हैं कि आप केवल जन्मी सम्प्रदाय को याद रखें और अन्य सब बातों को भूल जायें । अगर आप ऐसा कर सकें, तो हमारे सामने एक नये स्वर्गिय युग का रास्ता प्रकट होे । अन्धता; अगर आप ऐसा न कर सकें, तो हमारे सामने सामुद्रिक मनुष्य के अन्धता और कुल बानी नष्टी रहेगी । (मूल अर्थ-ही)

एक आवश्यक सूचना

संस्थाओं तथा पुस्तकालयों के लिए
 वेतासाम वे विरुलने वाली ७० वां-७० वर्ष केरा संघ की हिन्दी साहित्य विभाग 'नई टाउन' के बनवरी १९९१ के अंक दे बरिष्ठा ॥ सम्पादन में 'गिणाल, साहित्य और बहिला' में सम्मिलित विभिन्न भाषाओं में साहित्य की बहुत कमवारी प्रकाशित करे है । हम पाठकों का ध्यान इस साहित्य-मुक्ती की ओर आकर्षित करते हैं । हर सुधी में साहित्य और बहिला के सुविधागी विचार, बहिवक प्रविशेष के सामुद्रिक प्रयोग, साहित्य-व्यापक की वैज्ञानिक और सामाजिक सुविधा,

उन्को साहित्य और दार्शनिक सुविधा, युवा और बहिवक सुवृत्ता विषयों पर प्रकाशित मौलिक पुस्तकों का भाव, साहित्यिक बहिला कि पूरा बालनारी की बनी है । यह सुधी बनी विज्ञान-प्रदर्शनों और रचनात्मक संस्थाओं के पुस्तकालयों । किण आन्दरा प्रचयोती धनमें का धन बनेगी । हमारी विचारण है कि हर संस्था और पुस्तकालय इस सुधी की संग्रह देके । बनें यहाँ के पुस्तक संग्रह में जो बनी नबर आये, उन्के पूरा करने में यह सुधी बहुत सहायक होगी । —संतु]

स्वार्थप्राप्त में आमदान-सम्मेलन

२१ जनवरी को आचार्य विनोय भावे के साहित्य में शारीर्य, सुंदर में एक सम्मेलन होगा, विनोय प्रदेश मर के प्रायतुनी को प्रयमसंभव गोंयों के प्रति-निधि बरवर्षों अदि विभिन्न-रुचि आये के बारे के लिए कार्य-सूचन प्राप्त करेंगे । स्वयं रहे कि विदार में लगभग १५० आमदान बोलित होंगे । सितम्बर १९०८ तक के बारे में बरवर्ष-प्रदान करते अन्विपुष्टि हो सकुं है । सुंदर विने में ही आमदान गोंय देय है, विनोय स्नाधि दूर-दूर तक फैली है । शारीर्य के अग्र-

प्राय ५ आमदान गोंय हैं । हर गोंयों में आधिक आमदान हुआ है । आम-संभव गोंयों में सामुद्रिक जीवन की ओर बढ़ने का कुछ निरन्धर संकल्प है । ये प्रति-वर्तिक बम-संभव एक मर हरद वैचार करने उद्योग करते के उदरेय ५ वर्ष के अक्षर अति-व्यक्ति १२ मर हर ५००० में, यही तरह से शिनी न बनें सामुद्रिकी बहलाओं के बारे में भी संकल्प है । प्रत्येक में आम-संभव गोंयों में संकल्प बनी बनी है । —आरतनायक, मरी,

अस्पृश्यता-निवारण के आन्दोलन का ताना अनुभव हमारे पास है। अछूती को पाठशाळा में भेजने नहीं देना, सार्वजनिक रास्ते पर से चलने नहीं देना, कुएँ में से पानी निकालने को सख्त लिखत उठाने न देना, मन्दिर में बनेंन आदि सुनने के लिए बंठने की बात तो दूर। ऐसी जब हालत थी तो अंग्रेज सरकार को इस विचार को बरदास्त करने की, बन्दी उमरक सहयन करने की, तब समाज में नेताओं ने लोगों की धर्मवीर्य जाग्रत करने की बोगियाय की। इस ढंग का आन्दोलन पण्डित-जगह चला, तब गांधीजी ने इस सारे खयाल को सार्वजनिक धर्म में लाकर राष्ट्रीय मंत्रादेश पर एक सामाजिक अध्याय और प्राथमिक विचारण करने का आदेश।

तब से मरण और अस्पृश्य दोनो बहने लगे कि इसके लिए कानून बनाना जरूरी है। देश के सभी समाजों में अस्पृश्यता-निवारण कानून बनाने पर जोर दिया। प्रांतीय सरकारों ने छोटे-बड़े कानून बनाये। और स्वराज की स्थापना होते ही राष्ट्रीय विधान की द्वारा राष्ट्र में घोषित किया कि किसी के भी प्रति अस्पृश्यतामूलक व्यवहार करना न बँवस पाए है, वरिन्तु गुनाह है। राष्ट्र की सरकार ऐसा गुनाह करने वाले को सजा करेगी। तदर्थ और अटून, रिटून और यहिदून—सब लोगो में सर्वानामति से अस्पृश्यता-निवारण कानून पारित किया। कानून में बड़ी भी बच्चारत ली है।

लेकिन जिस दिन कानून बना, उसी दिन से लोग कहने लगे कि कानून से क्या होगा? कानून को काम पर लाना है। प्रत्यक्ष रूप में अरदायत कइयों गेहें है? अखल तब यह कहें कि अस्पृश्यता १० फी-सदी को घातें गेहें, लेकिन जो एक दफा खाई है; यह अण समाज को असह्य दुर्ह है। कानून हुआ इसलिए नहीं, किन्तु कानून बनाने-बनाने को लोक-जागरिय है और समाज पंच-अधम का अखलको खरार सामकने लागा, इस कारण अस्पृश्यता घटी गेहें। कानून बनने से एक तरह का समाज-सुधारण के द्वारा मजत हुए, लेकिन दूसरी तरह अस्पृश्यता-निवारण के लिए अखल लोगेनाला हूदय हुआ। अखल-पत्रों पढ़े गया है। जो काम लोकनेताओं को करना चाहिए, वही काम न्यायालय और पुलिस पर हम छोड़ देते हैं, हम सुधार की मेजलिना हूदय कम हो ही जाती है।

महापान-निषेध का भी देसा ही हुआ है। बन्दों का प्रत्यक्ष हमारे पास है ही। बनों की सरकार ने महापान-निषेध का कार्यक्रम बने ही इससाह से धरनाया, कानून बना लिये। पुलिस महकमे की सारी शक्ति इस कार्यक्रम के पीछे लगायी। लेकिन उससे साम्य महापान-निषेध का आन्दोलन रिवाजों आन्दोलन बना। रचनात्मक कार्यक्रम में भी अस्पृश्यता-निवारण का हिसता राम अमल करने की एक भाव हो गई।

कानून कानून है। उसकी सारी शक्ति, सक्कत भीयं शक्ति को द्वारा कोकर प्यालाओं के द्वारा बनावनिकवण करने में लगाया जाता है। जब भी विरोधोना करने में बरकल बरना कोशीलिय कोशीली को हटाने को बना उठाये हैं। सुनान का काम को भीयक का, धारणन का कार्यक्रम अंततःअधमन का का। अखल-अधम का कोशीलिय सामाजिक विवेकवारी को और कोशील हो हूदय वादक बनने का का। दन का कोशीलियों में सामिक कायु की ही। बर कोशील में स्याम की भावना बना करके कानून सारण को कायिक काम पुराणे को हटा लयमें का। कोशीलियों का प्रयत्न लागू अमल दन उठनी की।

सामाजिक दवाओं में से आधुनिकीय पीढियों को हटाने का कार्यक्रम प्रभावदाय शक्ति है, अखल-सुदृष्ट है। की विरोधन में यह आन्दोलन बोध समय पर उठया है। उपाय चाय जइसे। उठनी मयोंना की शक्ति है। विवेका बरकल में बहो लोग दान देकर संकेत से प्रवेक करके हैं, उन बरों में सामिक कार्यक्रम सुधारने को बाय हूदय कार्यक्रम में रही है, किहाला उठ उठया गही है। बरका हूदय है, न देय देय का एक मयरीय है। सुदर के और नई के गयने जाने-जाने का अण अणिकार है। मेरी भावना का स्यालन न हूदय हूदय कोई शक्ति नद नया नया कर, हूदय कीयें दाली पर उठे दे, जो यह में अण-सुदृष्ट अणिकार पर उठे दे, जो यह में उठे बरदायन गही अणो। तब को बरदायन दे या को बने बरका कोई और-जोयु के माय-नकारण कणम, कोश-सुदर कर और मेरी भी में अमल पुरेवण, तो सिकाय करने का मेरा अणिकार है। सामन का अण करबनाके में प्रवेकण करने की सुचाना में नगर-सिवाको को और बरदार को बर बरका में और एसा की अण कर बरका है। मेरी बरका को, मेरी सामाजिक अणम शक्ति अणुता की बरका को, अणम पुरेवणे गानी कीय को रोडने का अणिकार सुदरे गिा चाहिए।

हमारे बनों में बहोनी जाती है कि हमने खरार आनी है। परिषद में एक नया कायु बन रहा है। इनका सुधारण करने काम बहते हैं कि कोशीलियों में हूदय का है, अण-न बना है? ऐसी कोय शक्ति के कर में मारन में बायद हमारे मयिरी के छोडी लेने हैं। अहीनो अण मयिरी के बाय यहकर अणाय कला-निधियों के साम्य अणनीय कुनिये के बिब को कीबते हैं और सारी अणतया अणिकारी की सारीय को करने हैं। अणनीय की बान है-एक पद बनना है कि कानून बनाना अणनीय है, उसमें एकी-सुदर के अणोय के प्रयन और सिवा का सिमुद्रक सारों में बरण दिया है, हूदय कायु बन रहा है कि अण-न को कायिए कि से अणनीय सार बरकल की दण-निधियों को, अणनीय सुधारणको में यह अण-नयाय सारिक कर पते हैं। और परिषद के कोय हो हूदयै हर बोध में गुण है। उहीने जिस बोध की पाक नागा, अणया लयनेक हो इस करये हैं।

और एकीय और अधुनीय विवे बहें, हूदय अण-न विवेका पर अणुण खरनेके कायुने में ही हो। हूदय की यही, ऐके अण-न पर भए करने वाले विवेका की युद करने के लिए बरदार की ओर से के-बर भीय-सुदृष्टिकरण को स्यामन है। लेकिन नया उठये लोपो को लयने हैं? लेकिन को स्यामन से न जाते हुए काकोलेयक अणव दिवाने की और लोकरअण करके अण कयने की विवाह बना का बाधो विवाह हुआ है।

इस काम ने हूदयारी धारिक कायन पर भी अण-नक दिया है। अणकल हूदयक पर में का की कायु देके-बदर हकने की नया अर्थ रही है। न के-बदर कली-नको हकने सुन्दर होये है कि उणको देयकर विवालय अणम कोही है, अण-नक अणिकारि अणुण होती है। साम-यिक अणिकार का विवालय करने का यह एक उणम सारक है। लेकिन कली-नको अणोय कीय नायसतवना बरने की और की लयनी बली है और और एणमें अणम लोयकल प्रसण अणम विवे कोय कीयक और एणन को कोय में से काये, जो कोही भी कोय नई काकोली निण ही गही सतया।

हूदयारी धारिक कायन में अणनीय अण-नकता है कि अण-नक विवालय बानने में अण-नक को कायुनयार भी कलीयें है-हूदयारी अणिकारी और अण-नक लोपो में भी धारिक अणिकार को लेउक यहै अणनीय अणनीयता सुद-सुद कर बर दी जाती है। हूदयारी धारिक मयिरी के अण-न और सारु कोयारी पर और विवालय पर देवी अणनीय, अणनीयक, अणनीय और अण-न

अखल यह अणनीय और एकीय का अण नया है, कोशीलिय शक्ति बहें, अणनीय शक्ति बहें, हूदयारी अणनीय बनेगी।

हमारे बनों में बहोनी जाती है कि हमने खरार आनी है।

परिषद में एक नया कायु बन रहा है। इनका सुधारण करने काम बहते हैं कि कोशीलियों में हूदय का है, अण-न बना है? ऐसी कोय शक्ति के कर में मारन में बायद हमारे मयिरी के छोडी लेने हैं।

अहीनो अण मयिरी के बाय यहकर अणाय कला-निधियों के साम्य अणनीय कुनिये के बिब को कीबते हैं और सारी अणतया अणिकारी की सारीय को करने हैं। अणनीय की बान है-एक पद बनना है कि कानून बनाना अणनीय है, उसमें एकी-सुदर के अणोय के प्रयन और सिवा का सिमुद्रक सारों में बरण दिया है, हूदय कायु बन रहा है कि अण-न को कायिए कि से अणनीय सार बरकल की दण-निधियों को, अणनीय सुधारणको में यह अण-नयाय सारिक कर पते हैं। और परिषद के कोय हो हूदयै हर बोध में गुण है।

उहीने जिस बोध की पाक नागा, अणया लयनेक हो इस करये हैं। और हूदय की बात यह है कि हूदयारी अणनीय संवृधिय का गुणानन करनेवाले कई देयकअण हूदये अणनीय हैं, धारिक अणनीय और अणनीय के रिवाजों में भी अणनीय अणन कली-कली बाते हैं, अणन यानी-एण के अणमयन को है। (य एण जिस मेरी के अणन को देयकर के सिवा करनी जाती, एक एक रिवाज गिनी, उण अणने हूदये अणनीय-अणनीय को कोयारी पर और सिवारी पर नैनी मेरी सुधारी होये है और अण-नयन में अणन विवे अण-नयन बनाये जाते हैं, उणका अणन सिवा। उण अणन येयो को नयाय देये हूदय अणनीय उणयाही सिवा अणने कि मयिरी में आनेवाले अणन अणनीय का अणन हूदय अणनीय की अणनीय हो नही।)

अणन बया बरिण है। सामाजिक सुदीयिरी का रोय पुणारा है। और हूदयारी एक और अणिकारी धारिकर का पुणरतन नायकअण और सुदुरो कोय पुदुरी-अणनीयका कोयौयन-अणन अणिकारि का अण-नयन—एणने से एणना अणकलना है। अणने काम के लिए प्रयत्न उठाया है, एणन संवने हैं। ही प्रयत्न करना चाहिए। ('नयाय लयने में ')

अशोभनीय पोस्टर हटने चाहिए : देश के विभिन्न शहरों की माँग

अशोभनीयता-निवारण बुनियादी नैतिक कार्य है

कानपुर नगर-महापालिका के उपप्रमुख का आवासन

कानपुर-नगरपालिका (नगर-महापालिका) के उपप्रमुख (डिप्टी मेयर) श्री शिवनारायण टण्डन ने अशोभनीय पोस्टर हटाने के आन्दोलन के संबंध में कानपुर-महापालिका के सचिवों का आवासन देने हुए विनोबा को लिखा है :

परम पूज्य विनोबाजी,

अशोभनीय पोस्टरों को हटाने का कार्य जो सर्वोच्च-कार्यकर्ताओं ने आपके आदेशानुसार प्रारम्भ किया है, यह सर्वथा उचित, प्रशंसनीय और सुलभ है। इस कार्य के द्वारा एक ओर तो कार्यकर्ताओं का संगठन सुगम हो सकता है, और दूसरी ओर नगरिकों के बीच अराजक बर्तों की ओर निर्दोष करने की जन-जागरण शक्ति उत्पन्न हो सकती है, जिससे कि जीवन के अत्यापक क्षेत्र में विद्युत् आवना की संगठित शक्ति उद्योगमान हो सकती है। मैं तो इस कार्य को स्वयंसेवा-आन्दोलन के नमक-सखायक की तरह बुनियादी नैतिक कार्य ही मानता हूँ।

इस संबंध में आभारणीय स्वभावार्थ है। मैं भी आपसे कहूँगे जो मुझसे दिये हैं, वे सादर और श्रेष्ठ मूल्य मान्य हैं। मैंने कानपुर के अपने समाज-नित स्वयंसेवा-कार्यकर्ताओं से प्रार्थना की है कि वे तत्काल-पूर्वक कामकाज बंद करके और अपने कार्य-क्षेत्र में परिचित करें, जिसके लिए प्रारम्भिक प्रयास प्रारम्भ हो चुके हैं। इस संबंध में महापालिका का भी पदवीय आचरण होना, उसे महापालिका

कार्यालय उपप्रमुख
शिवनारायण कानपुर,
२१-१२-६०

बन्धन देनी, ऐसा मेरा विचार है। इस संबंध में आपके स्वयं और चेष्टा है। मैंने इसे दिये हुए संदेश को पुरा करने में भी को सेवा में स्वयं कर चुके, उसे सर्वेक्षण करना आशीर्वाद ही मानता हूँ। मैं अभी तक आपसे दृष्टि करने के लिए हाथिर हो रहा हूँ, इसका मुझे शोक है। मेरा प्रयत्न होगा कि मैं शीघ्र ही आपकी सेवा में उपस्थित होकर आपसे स्वयं करने का उद्योग प्रारंभ कर दूँ।

आशा है
शिवनारायण टण्डन
उपनगर प्रमुख

कलकत्ता के नगरिकों की समा की माँग

अधिकारी वर्ग उचित कार्यवाही करें

सर्वोच्च-निवारण-परिषद्, कलकत्ता की प्रेरणा से अशोभनीय पोस्टरों के विनाश करने के लिए कलकत्ते के नगरिकों की एक समा ता० २० जनवरी को विभिन्न नरकता-नगरपालिका के मेयर को निवेदन करने, शायी प्रमुख अहम, श्री पी० के०, श्री सुधीन्द्रचन्द्र देहा, श्री जे०एल० गोविन्दजी भादवजी देहा ने इस कार्य के प्रति अपनी पुनर्विचार प्रकृति की ओर कलकत्ते के नगरिकों से कुछ नाराजों का ध्यान देने के लिए कारी को है।

मेयर की निवेदन-पत्र मनु में अपने आग्रह में कहा : "एक समय यदि परिवर्तनीयों की नकल करने के द्वारा हलके-हलकियाँ बरिष्ण-रक्षण की हैं, तो निवृत्त हो यह एक योग्य प्रसंग है। ही सच है कि भारत में परिवर्तन को वास्तु आज के पचास वा सो साल बाद बर्तों में ही न मानें। लेकिन-उत्पन्न हो ही नहीं तो उसकी संस्था ही क्यों करें ? उसे नहीं समाज पर कार्य ?"

उन्होंने अतीत करते हुए कहा कि "इस पर ध्यान देना चाहिए और हल सबकी यह प्रस्ताव करना चाहिए कि जो पत्तों हो, धीमे-धीमे ही, ऐसे ही पोस्टर हटाने के लिए कार्यवाही करें।"

इस आशय को चलाने के लिए वेदु सबको की एक सहायता समिति का गठन हुआ, जिसमें नरकता-नगरपालिका के मेयर और अन्य १९ प्रमुख नगरिक हैं।

इस समा में एक प्रस्ताव भी पारित हुआ, जिसका मुख्य अर्थ दे रहे हैं : "देखा गया है कि ऐसे विषय, जिनके साथ कला का कोई सम्बन्ध नहीं है, विभिन्न नगरपालिका की कार्य-वाहता जम्बू कर अर्थात्पत्रित का ही एक स्वयंसेवाक तर्क है।"

विज्ञापन का सांस्कृतिक और सामाजिक महत्त्व

जनवरी के प्रारम्भ में स्वयंसेवा 'एच० टी०' के विभिन्न विभागों का उद्घाटन करने के लिए केन्द्रीय सूचना और प्रसारण-मंत्री डा० पी० वी० के० केन्द्र ने इस कार्य पर ध्यान दिया है।

जिसे देना का विचार करने की सांस्कृतिक और सामाजिक महत्ताओं के अनुभव करने चाहिए, नहीं तो विज्ञापन की प्रभावशाली प्रकृति ही समझने को जानी है।

साथ ही-संस्कृति में भी महत्त्व है। इससे ही सामाजिक विचार-धारा, जो सामाजिक संघ पर चल रही है, उसे भारतीय जनताओं और विचारों को प्रकट करना चाहिए। यह जरूरी है कि वह लोगों को सामाजिक जम्बूतियों को चलाने की

ही एक ही काम रास्तों पर प्रकट हो है। ऐसा मानना हुआ कि केन्द्रीय सूचना और प्रसारण-मंत्री के आदेशों के अनुसार यह बहाना देती है कि अशोभनीय पोस्टर हटाने के लिए आवश्यक उचित कार्यवाही नहीं है। कारण भी तो है, यह कि विज्ञापन करती है कि जनता के लिए हानिकारक तथा अशोभनीय पोस्टरों को हटाने के लिए अधिकारी-वर्ग उचित कार्यवाही प्रकट करें। इसमें यह भी मानती है कि इस को जारी करना पर ऐसी सर्वोत्पन्नता का विचार करना ही नहीं है कि अशोभनीय पोस्टरों के हटाने का प्रकट विवेक-व्यवस्था को हानि पहुँचाने तथा विज्ञापन-अधिकार पर प्रभाव करना नहीं है।

अतः आज की यह समाज पूर्ण विज्ञापन करती है कि कलकत्ता के नगरिकों की समाज के लिए कार्यवाही करवाई जाये। इसके पूर्व ही विज्ञापन-अधिकारियों को हानि पहुँचाने का विचार करने से अशोभनीय पोस्टर हटाने पर ध्यान देना है।"

अतः आज की यह समाज पूर्ण विज्ञापन करती है कि कलकत्ता के नगरिकों की समाज के लिए कार्यवाही करवाई जाये। इसके पूर्व ही विज्ञापन-अधिकारियों को हानि पहुँचाने का विचार करने से अशोभनीय पोस्टर हटाने पर ध्यान देना है।

किसी को भी मत पर पोस्टर आन्दोलन सफल हो !

[संक्षेप, कानपुर में एक भाई ने अशोभनीय पोस्टर-उत्पन्न नगरपालिका का ध्वंस करने हुए अपने दिल की व्यथा इन शब्दों में प्रकट की है कि "एक आशीर्वादन सफल हो, बाह्य हस्तों के लिए प्रार्थना की आहुति बर्तों में देनी पड़े।" —सं.]

जिस दिन, प्रथम बार "मूदान-व्यस" में विनोबाजी के अशोभनीय पोस्टरों के खिलाफ आन्दोलन को प्रारंभ, एक साधना सल-सल में होइ गयी। कुछ ऐसा समा, जैसे विनोबाजी ने मेरे मन का कार्य किया है। "मूदान-व्यस" में विनोबाजी की सवि वा ज्ञान ही रहा है। और आज अपने बापों जिनसे से नहीं उठ पा रहा हूँ, जब कि ३० दिन-भर के अंत में भाई रामचन्द्र सिंह मुजवाह के धर्म पढ़े। मैं विनोबाजी का वह धर्म हूँ कि इस भाई का योग अभी साक्षात्पत्र ही हुआ है। आप अभी उस हीरो पर पर पर रहें हैं, जिसमें फिलहाल पर ही समाज का सफल है, किन्तु मिलने पर नहीं।

मैं एक देश ही विद्युत् हमारे धर्म हैं, जिसके सचिव को विनय और श्रेष्ठ-स्वतंत्रों पर विचार करते साहित्य में निरास लिखा है। मैं उन सचिवों की प्रशंसा ही नहीं करूँ, जो हमारे पर मुझे और जो-किसी धर्मार्थ को योनी में था योनी। लेकिन मुझ धर्म भविष्य एक तरह की विद्युत् योनी को नहीं मानना हूँ। परिणाम भूम पर ही अभिमान रहना, मैं भी ठीक का। किन्तु परिवर्तन का स्नेह, सबों का समाज, मुझ और आपसे पूर्णमान हो चुके हैं। अंत में अन्त होने का उचित मज्जा प्रभाव और धर्म ही सफल है कि स्वयं को पहचान

कर भी अपने भाग की व संसार उठके।

जिसे अपना को घना ही जानी है, यह भी यह हो चुकी है। केवल विचार ही योग्य है। संभवतः सभी नष्ट हो चुकी हैं, जिन्हें विनोबा जैसे सब धर्मार्थों में लिख जाय, जो पुनः-पुनः उत्पन्न करता हैं। है। जब अन्तिम एकता गयी है कि भारत के सचिवों का यह सच परत न हो, मैं ही काय करता है कि विनय विचार में हो रहा है। मैं बाहुली कि यह आन्दोलन सफल हो, बाह्य हस्तों के लिए प्रार्थना की आहुति हो नहीं न देनी पड़े।

शान्तिः शान्तिः शान्तिः !

ब्रह्मसेता ऋषि शान्ति की उपनिषद् शान्ति के लिए, शान्ति से कहते थे। विश्वात्मक भाव से वे उनका प्रिय शान्ति-गीत गाने थे। शान्ति-गीत के सुर भारत-भूमि की हवा में पड़े हैं। उन सुरों को व्यक्त किया जा रहा है। 'भूदान' की वीणा से शान्ति-गीत के सुर दुनिया सुन रही है।

नीले आकाश में नीचे मैदान में गाँववाले शान्ति की वाणी शान्ति से सुन रहे थे। "बापू को निर्वाण के राय हमारी पाया शुद्ध हुई—एक शान्ति-सैनिक के नाते हम धूम रहे हैं। तेलमामा में अयाति थी, सरकार को मेना भेजनी पड़ी। कम्प्यूनिस्टों में गलत तरीके आजमाये थे। सोय बरे हुए थे। हम वहाँ पहुँचे। वही भूदान शुरू हुआ। भूदान के परिणामस्वरूप नहीं शान्ति हुई। सरकारें बहाने से सेना हटा सकी। कम्प्यूनिस्टों ने रबैया बढ़ाई। लोगों को इतमीनान हुआ। इतिहास लिखना कि भूदान का आरम्भ शान्ति के काम के लिए हुआ था। इसलिए हमारा कहना है कि शान्ति-सैनिक के लिए, रोज के लिए 'भूदान' के सिवाय दूसरा ध्येय नग्य नहीं है। रोज एक एक जमीन हासिल हुई, तो भी समझना चाहिए कि शान्ति के लिए काम हुआ। करीब पाँच हजार शान्ति-सैनिक देश में हैं। वे रोज एक एक जमीन प्राप्त करने तो साल भर १०-१२ लाख एकड़ जमीन प्राप्त हो सकती है। इस दृष्टि से शान्ति-सैनिक काम करें। भूदान के बिना शान्ति ही नहीं राकती है।"

शरान्ति की धार में नुने जाने वाले विदेशी भाई काले हैं, शान्ति-यात्री में शामिल होते हैं और कहते हैं, "सच-सुच। दुनिया को कुछ ही काम से बचाने वाली यह राह है।" हाल ही में गांधीग्राम में उनसे एक वृद्ध-बिरौची, शान्तिप्रिय सेवकों की परिषद् हुई थी। जिसमें करीब २० देशों के प्रतिनिधि शरीक हुए थे। जैसे से कुछ भाई 'निनेराजी से मिलने आये थे। उनमें पाना, अमेरिका, फ्रान्स के प्रतिनिधि थे। और उनके लेक्चरमीत्री आर्यादेवी भी साथ आयी थीं। श्रीमती आर्यादेवी ने कहा, "बिरुध-शान्ति-सेना का निवार एक पूर्ण विचार है, ऐसा सुने लगवा है। हम जहाँ भी काम कर रहे हैं, विश्व शान्ति का ही काम कर रहे हैं, इस भावना से करें। इस काम के लिए अनुशासनयुक्त वैज्ञानिक मनोवृत्ति वाले कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है। सारी दुनिया में आज धार के प्रति जो आदर्श-भार है, वैसा दूसरे किसी के प्रति नहीं है। इसलिए इस काम में आपसे मार्गदर्शन की कृपया है।"

निनेराजी : "इस विषय में हमारा एक विचार है, जो लोगों की दृष्टि से 'मिथि' बन जाता है। जितना छोटा क्षेत्र हम लेते हैं, उतना ठोस कार्य (कॉन्क्रीट वर्क) हम कर सकते हैं और जितना व्यापक क्षेत्र हम लेते, उतना हमारा काम भागनात्मक होगा। अपनी जगह स्पष्ट करनी है, जो भ्रष्ट लेखक स्पष्ट करेंगे। स्पष्ट-बिरुध का पूर्ण मानसिक होगा। उस स्थान के लिए शारीरिक कार्य और विचार के लिए मानसिक। हम अपने मन में गन्दगी

कम थीज मेरे विधेधर !
कर-धीरे मे

कहाँ की बात करता हूँ।
हम सब एक प्रकार के दास हैं।
सबका अपना अपना स्वार्थ है। स्वर्ग के भरण-भरण जानि, पंग है। उनको निदान के पल में भी मर्ती हूँ। पूरा विषय के धार विद्ये हुए जाने हैं। सब मिल कर एक भूदान करना है। उन सभी को पीछे कर उनसे दे रहति कानून बाप, दो बीघर के लिए पाने की चीज ही खाती है। पर उनके दर्शन का और सदा का जो बान्ह है, यह भरण-भरण दास देखने में और तेज करने में है। सब दृष्टि से विरुध-शान्ति की तरफ देखना है।
केविन सबकी लगना था। यह बह बयना हो जायगी है। मैं कभी कभी सोचता हूँ कि वह ईश और बुद्ध ईश हुए थे, सब लोगों में ईशना आन नहीं था। केविन उनके प्रति पणु-पत्ती तक का श्रेय था। इस प्रकार का उन हम कर्मों। यही विरुध-शान्ति का सर्वोत्तम साधन है। इस बाते हमारी इति मजिदी बन होगी और कारिदक भाव से, पचास किशवा बड़ेवा, उनका हो काम मुक्त होगा।
छोटे क्षेत्र में इति जोरदार, उनसे बन और धरती में होगा। बड़े क्षेत्र में इति में भी बन और, उनसे पचास और धरती में और उनसे भी पचास और धरती में।"

वर्ष-विचारणीय में कई तरह के सवाल निनेराजी के सामने उठाए जा चुके हैं। बर्तमान काल में सर्व-वर्तमान का ही कार्य ही शान्ति ही बुद्ध केना है। ऐसे ही सभी के आने हुए एक धार के धार में चलने हूँ पूजा :
"हम प्रार्थना करते हैं लेकिन जल्द से जल्द नहीं लगता है। ऐसी प्रार्थना से क्या काम होगा?"
विनोबा : प्रार्थना में क्या चित्त की ईश्वर की तरफ आने के लिए श्रेया देते हैं, धरने का है। उस समय हम मन में चित्त-पवित्र बचाते हैं। उसके अनुसार हमारा चित्त बलता है। इसलिए मेरे लिए यह जो प्रार्थना होती है, वह अनुकूल है। धरत के अनुकूल तरह का भाव पैदा होता है, बाकी धार । सर्व 'विश्वानन्द' में नहीं, केविन विश्व में होता है। 'सर्व' धार का सर्व हिन्दो में 'श्रीम' करते हैं। केविन किसे 'पौर' करते हैं क्या सर्व होता है ? जब तक विश्व में हम न दें, तब तक माझन नहीं होगा। यह ठीक है कि धरत में 'पौर' धरत माझ रिग। गुण है, इसलिए उसे उसी बलना का जाती है। चित्त को दृष्टा करत है, जो विरुध-पुष्टि होती शान्ति, मन से ऊपर उठना चाहिए। 'हम चित्त के गुताम व बनें। चित्त को हम गुताम व बयानें।'
प्रश्न : जल्द से जल्द 'विश्विकल प्रोत्थ' है क्या ?
विनोबा : "विश्विकल प्रोत्थ हो, सब भी यह ही है, ऐसा मैं नहीं कहता हूँ। कोई 'बनोरोत्थ' देख नयुन है 'सर्वविषय' बनाते हैं। उसे पता नहीं पचता है कि उसके धरती पर क्या धरत-रिग होती है। केविन उसे से सर्वोत्थ नहीं मानना। प्रार्थना के धरती को धारोत्थ किना है। केविन उनसे रिग-गुष्टि होती हो है, ऐसा मैं नहीं मानता हूँ। शान्तिमान है एक भी बह रही है।

कि अपना इच्छापूर्वक समान कर है। जब कामजोषादि विचार जाते हैं तब इच्छापूर्वक या परिमाण बनाई। उसे प्राणायाम से रोक सकते हैं। नि. एकाग्र करने के लिए शरीर, मनो की मूर्ति जिसे धरत से सामने रखने के एव प्रथा सच सकती है। केविन वे हाः पाठक ही मान्यता। प्रकृत नीज कर्तव्य में है। मितना भी कर, अंदर दुःखने में भारत बाली चाहिए। इसलिए मि चीज भी हमने करी। उसे दूर करने चाहिए। उसे योग-पूज की भाषा है 'मतिवा-मानना' करते हैं। बड़ोता है तो कपना पैदा करनी चाहिए। प्रेयन का अपना भाव है—एकसे चित्त गुष्ट होय बयाना और बाप में 'प्रत्ये वेको ह्यपुष्टिः सर्वोत्थिते'। चित्तपुष्टि के 'मिर्मांरि' शान्तिवता देनी चाहिए।
एक कार्यकर्ता से बर्तनी रही तो। उनसे बात करते हुए बाबा ने कहा, "कार्यकर्ताओं में आपक-भाषण में गुण प्यार होता चाहिए। केविन होता यह कि एक होता है में-शेष और दूसरा होता है कर्म-शेष। बापिक से बाप के साथी अपना, कर्मक में टैमिष है साथी भरण, प्रेम के साथी पर में। उनसे बात का साधक होता है। उसे मैं 'विन्दु कान्ति' (किम अविशाल) कहता हूँ। इसके कारण हमें सदागत नहीं मिलती। त्ता पिसे शरीर के शान्तिवर्तों के लिए नहीं रह रहा हूँ। आज जब दूर धरत में भी यही होता है।"

प्रश्न : प्रश्नकर्ता को दूर धरत में क्या बन हो तो ?
विनोबा : शीघ्र पैदा करनी चाहिए। पिनाक भी बड़े ही-हम बुद्धों को विना बड़े हैं, केविन घर में पैली को नहीं दिया पकते। भाप अपने कार्य में उनके मन में रह पैदा करना चाहते हैं, जो भाग्य की बह नके नुन-नाम में रह सेवा चाहिए। ठाकुरी बड़े में, रकोई बनने चाहिए में उसी तरह करनी चाहिए। बिनको समान का कार्य करते की है, बनरो धारी करना गुताम ही।
मूहान-भक्त, दृष्टाकर, २० जनवरी, '६१

मूदान थल

साप्ताहिक



मूदान-थल मूलक प्रामोद्योग-प्रधान अधिसक प्रगति का रास्दा वाहक

संपादक : सिद्धराज बड्डा
२७ जनवरी '६१

बाराणसी : शुक्रवार

वर्ष ७ : अंक १७

विश्व शांति-सेना के सन्दर्भ में

रचनात्मक काम का विशेष स्थान

-विनोबा

[विस्तार के आतिर में गांधीयान (वशिष्य भारत) में युद्ध-विरोधी अन्तर्राष्ट्रीय नव त्रैवायिक सम्मेलन हुआ था। उस सम्मेलन में एक "विश्व शांति-सेना" बनाने का तय हुआ। उस कार्यक्रम के बाद धीमती सेनाओं विनोबा से मिलने गयी थी और उन्होंने विश्व शांति-सेना के स्वरूप, कार्यक्रम इत्यादि के संबंध विनोबा का मार्ग-दर्शन कराया। उत्तर में विनोबा ने एक "प्रकट चिन्तन" के रूप में कुछ बातें कही, जो मैं यहाँ यहाँ रखी हैं। -सं०]

हमें यह समझना चाहिए कि विश्व-शांति की बात एक वैचारिक बस्तु है। सारे दिन में एक विचार चलाने की बात विशेष मुद्दों के द्वारा ही हो सकती है। इस अर्थ में हमने देखा कि वास्तव्य में शांति का प्रचार अपने दिल के जरिये किया और गांधीजी ने अपने कर्म के जरिये किया। उनका कार साधारण लोग नहीं कर सकते हैं। विरिद्ध युद्धों का ही यह काम है। लेकिन विश्व शांति-सेना की जो बात कही है, उसमें उस विचार को प्रचार देने की बात है। कभी कदाचित्त तो यही होगा कि कोई लाख लाखों के भी, जो उन पर अपनी राय कायम करे और 'फन' के तौर पर कुछ कार्यवाहियों को भेजे। उसे पैसा करना राजनीतिक लोगों के हथ में है। जो भी वे हमारी मदद चाहते हैं, पैसा भी नहीं बलि के मन्द नहीं चाहते हैं। इस धारणा कायम जा चाहते हैं। इस परिस्थिति में हमें काम पड़ जाये।

तो इसके लिए अलग-अलग देशों में विचार के सत्रों को के समुद्र बनाने हों। इस तरह से एक-एक अंग में ही होगी और ये लोग अपने-अपने में शांति-सेना का कुछ काम करने में उनको उत्साह अग्राह्य होगा। जहाँ प्रचार के काम हैं, जहाँ हमारे देश के लोग इस काम को देखने चाहें और एक-एक के काम का परिचय प्राप्त करें। मैं बहुत खुश हूँ। जो एक-दूसरे के मत-मनविदे से उठे हुए करें। लोग मिल कर अग्र-अग्र काम देना अपने। जो जानें, वे बार-बार महीने करणें और कुछ मोमें भी। इस से हमारे देशों के लोग मानें उन्हें और अपने हैं। यह इसका आरम्भ है।

कहाँ कोई काम उठाया जा रहा है, उसके बारे में "रेपोर्ट" करने की बात है।

एक ही शोधित कर रहे हैं। यह कार्य बुझला-सा, वास्तव्य विचार है। यही ही विश्व शांति-सेना में विचार का भी प्रचार हो रहा है।

यह हमारा जगता नाम है कि प्रारम्भ में यह बात समझना और सबकना मुश्किल नहीं है। और हमें पालन लक्ष्य कर लाने नहीं करते और हमारे बंध मुक्त हैं।

हमारे देश में हम पैसा की बरतानु करने की बात करी, तो मुझे भी की मुझे नहीं चाहिये। यहाँ भारत में लोगों की यह सुनने की बात है। यह भारत की विशेषता है कि यहाँ के वैदिकियों को राष्ट्रियेन विज्ञाना मुश्किल है।

हमारे देश में ऐसा रचनात्मक कार्यक्रम होना चाहिए, जिसके बारे में देश को प्रतीत हो कि यह काम दूसरे नहीं कर सकते, वही लोग कर सकते हैं। हमारा विचार को लगेने के लिए हमें यह धरिया मिलना है, मूदान, प्रामोद्योग और नई पालीय। जैसे यहाँ के रचनात्मक काम करती हैं। हमारे मनाना, लालीय बनें, केवल हमारा "शोध" बनियानें है। जैसे ही ये लोग अपना अनिधान "शोध" करने देते हैं बतानें, यह हमारा साथ मुपाय है।

हमारे अगला रचनात्मक कार्यक्रम जो हमारी ओ प्रेषित है, यह अपने हथ में विचार को है। हमारे काम के लिए यह एक अन्वेषण-क्षेत्र होगा। इस कार्य-

क्रम के जरिये अहिंसा का विचार चलाना अगला होता है। अहिंसा का विचार को लगेने के लिए मूदान, प्रामोद्योग और नयी पालीय में लोगों को तय हुए देशी मिली है कि हमारे आत्यंतिक और दूरे के दूरे विचार को लक्ष्य न करते हों, लेकिन ये लोग भी जैसे देश में पालीय ही और पैसा कलक करवाते हैं। मुझे मान्य नहीं कि परिचय के देशों में कोना ऐसा अनिधान विचार को लक्ष्य है, जैसे यहाँ प्रामोद्योग को लक्ष्य है। हमारे देश में यह पैसा बाधा है कि कोश अतिव्यय का पालीय प्रियोग की नहीं न हो, एक काम नके और करके देना को लक्ष्य होगा। काम के बारे में अगर लक्ष्य करनी है, तो इतनी फास के साथ कल्पना चाहिए, पैसा भी जाना जाता है। इस प्रकार हमें ही अन्वेषण-रचना में पैसा हमारा स्थान है, पैसा और देशों में पालीयकारियों का नहीं है। यह स्थान कल्पना होगा, जिसके कि उनको अन्वेषण की बनने उद्योग को आन्वेषण महसूस होगा। हमारा अहिंसा में आत्यंतिक विचार कुछ को लक्ष्य नहीं मानते होंगे, लेकिन वादी के लिए अन्वेषण की साम्यता देनी है।

मैं विनोबा सोचता हूँ, मुझे इस चीज का महसूस महसूस होता है कि यह बहुत बड़ी चीज गांधीजी ने हमारे लिए की है। यह वादी हमारे देश में ही हम पैसा-विद्यमान और को लक्ष्य करने की बातें करती हैं। हम एक आर्थिकी की बनाते करते।

हमारे देश में ऐसा रचनात्मक कार्यक्रम होना चाहिए, जिसके बारे में देश को प्रतीत हो कि यह काम दूसरे नहीं कर सकते, वही लोग कर सकते हैं। हमारा विचार को लगेने के लिए हमें यह धरिया मिलना है, मूदान, प्रामोद्योग और नई पालीय। जैसे यहाँ के रचनात्मक काम करती हैं। हमारे मनाना, लालीय बनें, केवल हमारा "शोध" बनियानें है। जैसे ही ये लोग अपना अनिधान "शोध" करने देते हैं बतानें, यह हमारा साथ मुपाय है।

(बीरभार, १० मया, २-१-६१)



उत्साह भी एक महत्त्व है। हर देश के बीच बीच, छुट्टी लोग यहाँ बनें, यह एक उत्साह दूसरा प्रकार होगा। लोचर प्रकार यह होगा कि जहाँ एक छोटे क्षेत्र में अगर हम छात्र-मुक्त उत्साह बना दें, तो शोध करें। अपने देश में ही लक्ष्य है, तो करें। उनमें हमारे देश की मदद हम लें। इस तरह एक-दूसरे के प्रयोग में हम चलाने हों। जहाँ लोचर पर कुछ महत्त्व जानें हाइ प्रयत्न करें, यह भी उत्साह एक प्रकार होगा। यह एक विशेष विचार है। विनोबा नैतिक महत्त्व लक्ष्य कर कुछ-कुछ पर लक्ष्य है, वे

क्या हमने वह पानी पीया है, जिसमें गांधीजी की भस्म प्रवाहित की गयी थी ?

गांधीजी की याद में हम आत्म-निरीक्षण करें

दादा धर्मोदासजी

द्वितीय संवत् साल होने आये गांधीजी का स्मरणान्त हुए । गांधीजी के चरित्र की भस्म इन देश के मुख्य-मुख्य जलानायकों में-प्रवाहित की गयी थी । उस भस्म का स्मरण हमें लोगों में सोचना होगा कि अब इस देश के लोग जो पानी पीयेंगे, उसमें गांधीजी की मृत्तु तासीर होगी । अपने जब बचपने से या बूढ़ों को चापस में रखते देना होगा, तो यह बहते सुना होगा कि हम भी अपनी माँ का दूध पीये हुए हैं । हम देश का मनुष्य दुनिया के सामने राड़ा होकर बजा, यह बह खचना है कि मैंने वह पानी पीया है, जिसमें गांधीजी की भस्म प्रवाहित की गयी थी । अगर हम यह नहीं बह सकते हैं, तो हमारे लिए यह सोचने का विषय है । यह विचार इस देश के अन्य लोगों के लिए आज जिनका प्रस्तुत है, उससे बड़ी अधिक प्रस्तुत हम लोगों के लिए है, जो दादा बरते हैं कि हम गांधीजी के विचार की समझते हैं और उन पर चलने की नीतिगत करते हैं ।

पहली बात जो गांधीजी ने हमें सिखायी थी, वह यह है कि सत्ता, संघर्ष और शत्रु-इन चीजों से देश में हम निरपेक्ष सुखपाय का विकास करें । क्या इसका विचार हम अपने में कर सकते हैं ? पैदाशर्तों के जमाने में एक न्यायाधीश या-सामराज्यी मनुष्य । राजोपा ने अपने भ्रातृत्वं का गूँथ किया, जो पैदाशर्तों का न्यायाधीश था । उनकी सत्तारूढ़ता पाता था । राजोपा पैदाशर्तों के ऊपर अपने दरबार में गुलाब । पैदाशर्त की शक्ति ने उनसे पुत्राधिपति प्रत्यक्ष पैदाशर्त न बना दिया है, अब तुम क्या करना चाहते हो ? और सामराज्यी ने क्या कि न्यायासन पर बैठ कर मैं एक ही चीज सिखाया है कि इस राज्य में जो कोई दूसरे का सत्तारूढ़ता, उसे दंडानुसार मारपीटकर करना चाहिए । शक्ति ने दुष्टाणु, विचार नहीं सवाल पुष्टा और उन्होंने हर बार देहान्त प्राप्ति तक की ही बात कही । शक्ति ने बड़ा कि क्या तुम जानते हो कि हम तुम्हारी जीभ काट सकते हैं, तुम्हारे शरीर की चोटी-चोटी काट सकते हैं, तुम्हें बाल-चोटी में घुँट कर सकते हैं । सामराज्यी ने सजाय दिया कि प्राणों के मोह के कारण मेरे मुँह से कोई कमजोरी का शब्द निकलने से पहले अन्दाज होगा कि प्राण इस जीभ को कटवा ला ।

सत्ता और शत्रुत्व के सामने इस प्रकार का साधनकाय का व्यवहार और व्यवहार करने की शक्ति क्या हममें रहे गयी है ? सत्ता से वेरा भक्तक सत्तारूढ़, मनुष्यनिर्दिष्ट, मुनिनिर्दिष्ट और से नहीं है, बल्कि वेरा सत्तारूढ़ के अन्तर्गत के विचारक समाज उठाने में है । क्या विचारकों में यह धर्मत्व है कि विचारकों की उन्मत्तता के निम्नत्व से समाज उठा सके ? क्या मनुष्यों के मन-बलपूर्वक से समाज उठा सके ? क्या हमारे अन्तर्गत में यह धर्मत्व है कि हम जो समाजवाचक करते हैं, हमारे अपने जीवन में जो लोग, मोह है, उसका उन्मत्तक हम कर सके ? सामराज्यी में पैदाशर्तों के कारण में सत्ता का उन्मत्तक किया । गांधीजी ने लोगों के दरबार में अपने पानी का उन्मत्तक किया और धर की आत्मापरी में बार देते निकले, तो उस बूढ़े में अन्तर्गत में लिपि दिया कि मैं अस्मि-पदही हूँ, तो मेरे लिए यह सज्जा का विषय है कि मेरी पदचरि में बार करते तल लिपे । इस तरह अपने कर्मनिर्वाह का, कमजोरी का, बेहमावियों का उन्मत्तक निम्न के, सहयोगियों के सामने हम लोगों में किया है ?

आज के संसार में दो पापियाँ ब्राह्मि-जरी मानी जाती हैं । एक कमजोर पाटी और दूसरी पाटी गरी है, बल्कि समुदाय है, जिसे आज गांधी परमाणु भक्तिवादी का समुदाय कहते हैं । गांधी निम्न

मनुष्यनिर्दिष्टों में क्या चाहिए । पाँचठ बरिटी, पी० एच० पी० की बरिटी में सत्ता चाहिए और अन्य में मोह-बर्षों के क्षेत्र में निरिच्छक बनना चाहिए, सत्तारूढ़-मूलक में जो सत्ता चाहिए । आज यह न हममें कि (सर्व शत्रुत्वों में ही) यहाँ का समुदाय है । संघर्षाचार्य की पारी के लिए जो सत्ता है । जिसे दो मंत्रियों में ही शत्रुत्व-आचार्य में सत्ता होता है, देहा नहीं, ही पुत्राचार्य में ही होता है । इस तरह के सत्ते अब राज्य का और पुत्र का क्षेत्र छोड़ कर बर्ष के क्षेत्र में प्रवेश करते हैं, अब कोई शत्रु नहीं रहती है ।

हमला प्रतिष्ठित आय-अन्वये भीषण वैशेष्य है, इस मनुष्यी शर है, लेकिन मनुष्यी शर मनुष्यों में अन्तर तिष्ठती है, मुण ही, तो मनुष्यी शर, आन्तर ही अन्तर को भारी हो सकता है । अन्वये भीषण । मुण ही सत्ता है । जिन्होंने सत्ता, सत्तारूढ़ और शत्रुत्व नहीं छोड़ दिया । सत्ता । शत्रुत्व । शत्रुत्व है, संघर्ष आरंभ के बाल है नहीं । शत्रुत्व आरंभ के बाल में नहीं होती है, अब आरंभ के बाल कीलती शरालत है, जिसके चरिते आय सत्तारूढ़ में क्रांति करना चाहते हैं ? गांधीजी के पुणों के विचार और कोई शत्रुत्व नहीं हमारे पास नहीं है ।

सरकार गांधीजी का नाम लेकर विलकुल दूसरे रास्ते जा रही है, पर हम तो गांधीजी का नाम लेकर किसी भी रास्ते से नहीं जा रहे हैं !

अन्वये में कृत पाप पुण्यजने विनियमित । पुण्यजने कृत पाप कथकोपे अविनियमित । दूसरी यहूत पाप कर, तो पापों में जो सत्ते हैं, लेकिन शत्रुत्व में पाप कर, तो कर्तव्य मोचने ? सत्ता, संघर्ष और शत्रुत्व का सन्तान संघर्ष पैदा करता है । संघर्ष की प्रतिक्रिया मनुष्यनिर्दिष्ट शत्रुत्व में, अन्वये में, दरबार में है । यह अन्तर कर्तव्य सत्तारूढ़-पापों के क्षेत्र में था पायी, तो फिर आय मूल सत्ता कोविन्द कि दुनिया के लिए कोई भाषा नहीं रहेगी ।

मेरे आन्तर विवेक दिया कि हमारे

[पुत्र ३ वां अध्याय]
 कोई विवेक स्पेस और महत्व होगा, जो कि आज करीब-करीब नहीं है ।
 • यौवा कि हमने उन्नत कहा है, हिन्दु-स्वाम ने आरंभ रचनात्मक काम इसी दृष्टि से या इसी तरह से हो रहा हो, तो सत्ता नहीं है । दूसरी कमजोरी स्पष्ट है । लेकिन यह बचपनी नहीं है कि गांधी और विवेका । संदेश हिन्दुत्व ही आरंभ के आय । जो सत्ता है कि दुनिया का इष्टतम कोई मनुष्य मनुष्य के सत्तारूढ़ को अपने बड़ाने में पदाय कामयाब हो । युवा की यह पुत्राचार्य के लिए पूरी होती है, यह मनुष्य वाच है । मुख्य बात उसके पूरे होने की है ।

अविनियमित के समुदाय में इस देश के लोग ही नहीं, दुनिया के लोग भी अपने को मानते हैं । बर्षोंकि दुनिया के लोग संघर्ष से क्या पाते हैं; उनके पास इतने संघर्ष है कि अब वे चले बोलने बने हैं । दुनिया में लोग सत्ता से ऊब बने हैं और सत्तारूढ़-सत्ते के अन्तर्गत हो बने हैं । हमारे देश में अभी मुण और पैदाशर्त है । इस-लिए वैश्व की कोमुदाय को है ।
 हमारे नहीं हम सत्ता की साक्षात्ता का नाम आज देते रहे हैं । आम-न्यायक में सत्ता चाहिए, हिन्दुत्व कीलक,

महात्मा गांधी और कुमाराप्पा का अन्तिम और प्रथम मिलन

[बापू की मृत्यु के दोन बारह साल बाद, उनी दिन २३ जनवरी १९६० को कुमाराप्पाजी कावेड़ासाल हुआ। उन दोनों के पुण्य स्मरण के निमित्त यह सम्मेलन के रहे हैं।]

—स०—

—मणीन्द्रकुमार

पिछले साल की बात है, श्री कुमाराप्पाजी अग्रहार-कारखाना में थे। एक बहाने से, जो चमत्क मिलने लगी थी, उनसे ३० जनवरी की रात को कहा, "श्री बापू की पुण्यतिथि की समा में शारीक होना चाहती हूँ, इसलिए आपसे विदा लेती हूँ।" श्री कुमाराप्पाजी ने सहज हास्य कर कहा, "श्री भी नहीं हास्य रहेगा!" यद्यपि सोचती ही रही कि वह जर्जर शरीर वहाँ तक कैसे था जायेगा?

उस बहाने को बाद में जानू हूँ कि कुमाराप्पा का बचन सत्य था। वे बापू की स्मरण करने के लिए जो घर, सो चाहेप इतक बुनियातों में नहीं जाये। यद्यपि भी अन्याय को इतने बड़ी बचा बचाइयानों से सजती है?

यह तो था अन्तिम मिलन। किन्तु उनका बापू से प्रथम मिलन भी कम आनंदक नहीं था। म्यू. १९२६ की बात है। कुमाराप्पाजी अमेरिका से अपना दिव्यन समाप्त कर लौटे ही थे। वे जब अमेरिका में कोलंबिया विश्वविद्यालय में अध्ययन करते थे, तब उन्होंने गैर-मौलिक विचार लिखा था "राज्य और हमारी गरीबी" (जल्दिक वादनेन एफ़ अवर चर्चरी)। उस वहाँ पर एक हिन्दी माध्यमक ने उनसे कहा, "गुजराते इस विचार में क्षमता: गांधी अपनी दिव्यवनी लेने।"

अक्टूबर १९२९ के अन्त में जब गांधीजी किनी कार्यवत बमर्द आये हुए थे, कुमाराप्पाजी ने इस एक बापू से विद्या उचित कराया। वे बापू के निराश "स्युधुम्न" लुट्टे। बापू के निनी कतिपय श्री प्यारेलालजी ने कहा कि बापू कोमेन की प्रसंग समिति की बैठक में परसत हैं, इसलिए उनसे आज गुलाफता नहीं हो सकती है। कुमाराप्पा गुलफत यह कह कर पले गये कि वह निम्न गांधी की वे हीतिने। उसी दिन रात में प्यारेलालजी ने कुमाराप्पा को फोन पर कहा कि वे बापू से सारसमती-बने मिलें। गांधीजी ने इतना लया समय इकट्ठि दिया था कि उन निम्न को देख कर ही वे कुमाराप्पा से मिलना उचित समझते थे। प्रमाण में थे। वे यूरोपीयन तरीके से बपूके पदने से और एक छरी कैरर जलने थे। तब कुमाराप्पा गांधीजी-आश्रम



Dr. J. C. KUMARAPPA.



गांधीजी

साल में ९ मई १९२९ की दोपहर को ३। कुमाराप्पाजी उस सत्र परसदनु परिचामी लुट्टे, तब उनको अन्तिमपद में अध्ययन गया। उनको बनी निराश ३०, कर्णिक कर्णिक में पनीकके के मान पर बेजग एक चारवाँ की और बापूके उभे ने सलान करने के लिए कोई भी आशुचित्य चारवा नहीं थी। उन्होंने मत में लीचा,

मिलनी लखी लगना नाम हो जाये, यहाँ के नामों। कपीर २ कहे वे बापू से मिलने के लिए अन्तरे लखिने मिलने। बापू बाबरखी के दिनारे एक क्षीयसी में रहते थे। रातले में उन्हींने देखा, एक बूढ़ आदमी गोरब के अर्धेजु फॉलन में एक सार के नीचे बनेयन देखा में बैठ कर चलाता बात रहा है। कुमाराप्पा ने एकते वल्ले चरगा नली देखा था और उन्ने पर १० मिन्तक का लम्बा, निम्नित्त समय में बसाया था, इसलिए उनी के ल्हारे टिक कर चलता चरण देवने स्ये। कपीर पोच मिन्तक पर उन बूढ़ ६०मिन्तक में सुरतुलले हुए दाने पूजा, "क्या तुम कुमाराप्पा हो?" कुमाराप्पा ने उनी लप मरुल्ल हुआ कि यह बूढ़ आदमी गांधी ही की सफता है, इसलिए कुमाराप्पा ने पूजा "क्या अण्य गांधी हैं?" का गांधीजी ने फिर दिला कर स्वीकृति दी, तब उल्ल कुमाराप्पा अपनी सारगी और शीमती पोषाक का लयलक लिने निम्ना ही गोबरे से लिने अँगन पर बैठ गये। पैर बैन कर बैठे देन कर पाठ की लप आदमी दोनो-दोनो हुए चुलीं सवा। गांधीजी ने कुमाराप्पा को एक पर बैठने की कहा। कुमाराप्पा ने बपू कि उर में नीचे बैठ की गया हूँ, इसलिए यहाँ ठीक है।

दलके एक सातचौठ के दीवाम में गांधीजी ने कुमाराप्पा के कहा, "मुझे गुमारापु निम्नक बेदद पंक्ष है। गुमारापु और मेला अशुकि टिडिगेन मिन्तका है, इसलिए कपीर न मुले आम पुनर्मिष्येन के काय मे मरुद करे और सारुअत में गुमारापु के गाँव के अन्तिक "करी" (लेवुणु) में मरुद करे।" कुमाराप्पा ने भीच में टोक कर कहा, "मुझे तो गुमरापुकी और न गिनीं आया है। ऐसा आदमी कुमारापु के गाँवों का क्या अध्ययन कर लकहा है?" बापू ने कहा,

"गुमरापु विचारित के अन्त्यक और सार उन्ने मरुद करेगे।" बापू ने आगे कहा, "विचारित के वाक्य चालकर कान लकहा बालेकर सेमिले ही।" और सार ही मुलपे हुए बापू ने कहा, "नो स्मृतिप गुमारे हिन्दु कुलीं लये थे, वे ही सारा सार है।"

गोरी देर बाद कुमाराप्पा गुमरापु किगरीपरी में बाराबाला में मिलने लगे। यहाँ कुमाराप्पा को निराश होना पया। साराबादर वे उनको एक काम के लिए अशुय उदरणा। उनका मानना था कि ऐसा आराधनात्मक और सादरी शरद-बाद से रहने लया स्थिति गुमरापु के गाँवों की किगरीपरी में वे नर्यांन कर सके। कुमाराप्पा भी अपने स्वभाव के मुकारिक निना बापू से लिने, सारुअत से चमर्द भी लले गये और वहाँ पहुँचने पर उन्होंने लिखा कि सारा वे उनको एक काम के लिए टोक नहीं लकहा, किन्तु फिर भी आप को नाम लींये, उसे करणे को तैयार रहूँगा।

अन्त-पलली गांधी ने कुमाराप्पा की लोकात्मताओं को पेशकर लिखा था। वे कुमाराप्पा को लोचना नहीं चाहते थे। उन्होंने कुमाराप्पा को पल लिखा कि उन्हें गुलन सारमणीय थाकर परिनिदिप काम ल्माल केन बाधिप। कुमाराप्पा को लना कि बापू ने साराबाला को यानी कर लिपा है। इधरिप वे सारमणीय लिन गये।

किन्तु कुमाराप्पा बापू ही पली पव-न में तब जाये, अब वे अपनी निराश "पवक बाओर हमारी गरीबी" की भूमिका लिखलने के लिए कम्पे के पले गये। कुमारापु किनी अपनी प्रकिद "हाँडी गांधी" पर थे। कुमाराप्पा ने लीचा कि बापू को उल्लत नरुने मिलेगी, इसलिए उन्होंने लींचे भूमिका "अन्तिम पुदु तैयार कर लिना और सारा

कि बापू उल पर हलाकर पर हैं। यह गुमरापु की एक विधिप गुलाफता थी। गांधी ने हँल्ले हुए उनसे कहा कि उन्होंने लिच निची भी भूमिका पर हलाकर लिना है, पर सुद उनको ही लिचि थी।

आगे बापू ने कहा कि मैं चारवा हूँ किगुम मेरी गिरसारी के बाद महादेव देवार्द को "पग लिपिया" के गंगलन में मरुद करे। पहले कुमाराप्पा को गुनत लागुन हुआ। उस वक "पग लिपिया" दिनुल्लान कर उच दूने का पक था, को लोवा दुर्द भारतीय अलामा को इकसोर रहत था। कुमाराप्पा ने लोचा कि मेरे लैला नपन आदमी लयने कला कर सकता है। किन्तु गांधीजी ने फिर एक तर कुमाराप्पा की हकीकों को एक और पल पर पूरे लिखाप के लप उनको बड़ा कि सारा-दने के लिए तुम लयंग कोष ही। कुमाराप्पा को मानना पया और लोंगेगय गांधीजी की गिरसारी के पहले ही महादेव देवार्द गिरसारा कर लिने गये और गुच अरिबे कर्द गांधीजी की गिरसारा कर लिने गये। इसलिए अल्लत: कुमाराप्पा पर ही सारा शेर आ पया। कुमाराप्पा ने अपनी हृदि से बापू के विचारको परिपुत्र लिच और वे एक अन्त्ये पहाउन्नेपे के अन्त्ये पनकर वन रहे। यह ही कुमाराप्पा की लुपु वे पलली गुलाफता। तब वे कुमाराप्पा अशियन लिन तब बापू का काम करते रहे। उन्होंने बापू के आंगिक पिडली को शारीक स्वकर लिना। बाओरीगों को पुनर्जीवन दिपा और आम-सजीवन पर स्यावी महत्व का बाधिप लिना है। वे गांधी-अन्त्येप के महान् मिन्तका के रूप में देद निरेस में प्रखरत थे।

[गांधीसाम... पुद ६ का रो]
कि, यह भी अन्तिमपद शारीप लेना भी शोचना के बारे में। एक मोबना है, और निम्न प्रसाप लिखे १०-१२ लॉरों में सलराप का पर बक रहा है उल्ले, बाधिप देना है कि पीर पीरे भारत सलर सनपव गरी ही अन्त्येप अन्तिपान सैनप-मिन्तक की और बक रही है। लमोजन एक सलराना लुच की मर सारात है लयंग का प्यान आशुकि लिपा, और अण्य मरुद की कि सारा के लगी-लेनी सारा एक लदरे के लनि सारबेच रहने और सलप रहने इन्के गिरसारा अपनी साराप उदरने।

सधे ललसदलनक सार, ओ इव लमोजन में हूँ, पर अन्त्येपरीप परिनेना के लमोजन। मेला कि अन्त्येपरी ने लमोजन में कहा, लमोजन में सारबिच लेनी ने यह मरुद लिपा कि लिच सप अन्त्येपरी की अन्त्येपरी सारि-दने के बारे में लोच रहे थे, उन सप मानी लुनिया में अन्त्येपरीप परिनेनेका का उर हो पया था। ऐसा कपना अशुकि नली लेनी कि अन्त्येपरीप सारि-दने लेनी की सपाना के विचार को सार पर के सार करने और उने सारबेच करने के लिए कपन बडाने के देविसाधिक लिखने के सारा गांधीसाम का यह अन्त्येपरी की सारबेच लुनिया के देविसाप में अलाना कि लिच सपन सपना।

अशोभनीय पोस्टर्स हटने चाहिए : देश के विभिन्न शहरों की साँग

म्बालियर

जबलपुर

सां० ३ जनवरी १९६१ को म्बालियर की महिला-संस्थाओं की प्रतिनिधि तथा विचारशील नागरिकों व रचनात्मक और धार्मिक कार्यकर्ताओं की एक सभा हुई। सभा में विचार-विमर्श के बाद अशोभनीय पोस्टर्स निर्धारक समिति का गठन हुआ। राणी लक्ष्मीबाई राजवडे समिति की अध्यक्षता चुनी गयी है।

सां० २ जनवरी को गाँधीवाच से कोटेटे बरन की विद्यार्थिनी कुछ पत्रों के विषय जबलपुर रहे। उनकी छपत्तियों में इसी दिन ५ बजे सायं तिनपेटलें समिति को बैठक हुई। उसमें समिति-सदस्यों के बलात्ता नगर के ७ विद्येमायूहों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। बैठक में विद्ये-भदरों को ने यह स्पष्ट किया कि वे जन पोस्टर्स को हटाने वाले हैं जो भोजन-जठोरण के निर्बंध की बाध साधेंगे, उन्हें तिनपेटलें हटाने की निर्बंध के लिए संवेगों तथा समिति की स्वीकृति के बाद ही प्रकृति करेंगी।

सासाराम

छपरा

नागरिक समिति, सासाराम (जिला पाण्डुवा, बिहार) ने नागरिकों के नाम भरील करते हुए एक पत्रक और धार्मिक कार्यकर्ताओं को एक सभा हुई। सभा में विचार-विमर्श के बाद अशोभनीय पोस्टर्स निर्धारक समिति का गठन हुआ। राणी लक्ष्मीबाई राजवडे समिति की अध्यक्षता चुनी गयी है।

छपरा (बिहार) के नागरिकों के नाम एक निवेदन प्रकाशित करते हुए बिहार नगर को प्रमुख सामाजिक, राजनैतिक एव रचनात्मक सत्ताओं के प्रतिनिधि एवं अन्य प्रतिष्ठित कार्यकर्ताओं ने अशोभनीय पोस्टर हटाने की माँग की है।

काशी विद्यार्थियों में सर्वोदय नवयुवक मंडल

इसानीय राष्ट्रीय विद्यार्थी-संस्था, काशी विद्यार्थियों में सां० १८ जनवरी को सर्वोदय नवयुवक मंडल के नाम से विद्यार्थियों की एक सभा का उद्घाटन श्री विद्यार्थिनी संस्था द्वारा हुआ।

उद्घाटन-समारोह को अध्यक्षता विद्यार्थिनी के अध्यक्ष श्री राजारामजी झा की थी। प्राध्यापक श्री कृष्णचंद्र शर्मा ने 'सर्वोदय' में संस्था की स्थापना के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। सचस्यों के लिए सा. ३ बहने और विद्ये राजनैतिक पत्रों पर प्रकाश डालने के निवन्ध रखे गये हैं। इस अवसर पर श्री विद्या झा ने विद्यार्थियों के नाम भेजे हुए संदेश में कहा:

"आधा है कि आपका समूह स्नेह तथा स्नेहपूर्ण संबंधों का आधार है। न कि विद्या की रीति-रिवाज के आधार पर। अहिंसक भावित के लिए जो संघटन बनते, उनमें आचार, स्वच्छ तथा कार्य-पद्धति में भावित के मूल्यों की सलक निरनी चाहिए।"

पुष्पों का संगठन बनना, इनदिष्ट बनना है कि उसमें सर्वोदय नवयुवक मंडल, वैज्ञानिक दृष्टि एवं वैज्ञानिक नृति को अपनाया जायगा।

सर्वोदय का आशय अहिंसक जीवन है। अहिंसक जीवन महिंसक भावित का नून परिणाम है।"

जिला सर्वोदय-मंडल, पूना

जिला सर्वोदय मंडल, पूना की ओर से सां० १९६० में सर्वोदय नवयुवक मंडल का गठन हुआ। अध्यक्षता महापुरुषों के सदस्य, सिले, वेणुगड, बसवणी, सोनगड, आदि स्थानों में हुई। ५०० विद्यार्थियों ने विचार-दृष्टि से विमर्श प्रकाश हुआ। साहित्यिकी १००-२० की हुई। ८ कोनों से सर्वोदय-मंडल की स्थापना की। 'सर्वोदय' में साप्ताहिक के ६ पत्रक बन।

राजस्थान समग्र सेवा संघ

राजस्थान समग्र सेवा संघ के नये विधान के अनुसार प्रांत के विभिन्न जिलों के क्षेत्रों में ११८ कार्यकर्ताओं के लिए निर्वाचित प्रतिनिधियों की प्रथम सभा ३१ दिसम्बर को जय के दुर्गापुर 'बाधोच' में हुई। प्रतिनिधियों ने संघ की स्वरूपा के लिए १६ स्वरूपा का बहस (कार्यक्रम) किया। उद्घरण करने समय इस बात का पूरा ध्यान रखा गया है कि प्रांत के स्थल जिलों-विमर्श और सर्वोदय मंडलों का गठन हो सके और जहाँ गठन होना का रहा है-का प्रतिनिधित्व हो सके तथा सर्वोदय के कार्य में छठी युवाओं कार्यकर्ताओं को भी साथ में सम्मिलित किया जा सके। यह स्मरण रहे कि प्रांत के २६ जिलों में से अत्र एक १६ जिलों में जिला सर्वोदय-मंडल स्थापित हैं और शेष जिलों में चीन ही मंडलों का गठन किया जा रहा है।

जिला सर्वोदय-मंडल, हिसार

जिला सर्वोदय-मंडल, हिसार के दिसम्बर माह की विद्ये में अनुसूचर विद्यार्थियों की दृष्टि में विद्या सहायकों में १२ मील की ओर परधाना १३ गाँवों में हुई। यह हुआ कि कोकलेक प्रति मास समिति-दान में, घर में सर्वोदय-पत्र रखें और साल भर में हस्तपदा ५ नुस्खे प्राप्त हैं।

सर्वोदय-दान में अब तक २७ बालाओं से १५७ रुपये २८ नये पैसे और १०० सर्वोदय-पत्रों के २२ रुपये ३१ नये पैसे प्राप्त हुए।

सर्वोदय पुस्तक-अवधार, सिरसा द्वारा और कुछ स्थितियों के प्रयत्न के साथ तक कुल ३८१ रुपये की साहित्य-निर्वा हुई।

सर्वोदय-मंडल का दिसम्बर माह का कुल अर्थ १०४ रुपये ६३ नये पैसे हुआ। 'भूदान' साप्ताहिक की ५० प्रतियों की बिक्री हुई।

जिला सर्वोदय-मंडल, पनवत

जिला सर्वोदय-मंडल, पनवत की सभा सां० १८ दिसम्बर को हुई। २५ लोग एक ही सभा में हजरि थे। सभा में इस कार्य में लिए नीचे दिये कार्य-क्रम करना एवं हुआ।

(१) जिले में मूलात्मक का प्रतिनिधित्व-अधिक प्रचार। (२) 'साप्ताहिक' मंडलों साप्ताहिक के ५०० नये प्राप्त बनाना। (३) सर्वोदय विचार-प्रचार की दृष्टि से जिले में कुछ शिबिर लिये जायें। (४) सर्वोदय प्रचार भी-मूलात्मक के कार्यक्रम की शिक्षा में भी प्रयत्न लिये जायें। (५) साहित्यिक मंडलों की दृष्टि से जिले में परधाना का कार्यक्रम बनाना जाय।

जयपुर जिला सर्वोदय-मंडल

३० दिसम्बर को जयपुर जिला सर्वोदय मंडल का गठन करने हेतु सभा के बाद सभा के तत्पश्चात् नये जयपुर में एक सभा आयोजित की गयी। सभा में जिला सर्वोदय-मंडल का गठन होकर मंडल में सर्वोदय तथा २०० सां० एवं सेवा क्षेत्र और सभ्य सेवा सभ के विद्यार्थि-निर्वाचकों का प्रस्ताव भी मसौदात्मक जैन, श्री धर्मार्थ-लाल जैन तथा श्री रामनारायण पुरोहित का निर्वाचन किया गया। सभा में मंडल का निर्माण, भारी कार्यक्रम की स्मरण, बचत सभाएं आदि कार्य के लिए एक उद्देश्य का गठन किया गया।

पोरारपुर जिला सर्वोदय-मंडल

१४ जनवरी को पोरारपुर जिले के गवर्नर लोकेश्वरी की साहाय्य हेतु की सहायता देना की अध्यक्षता में की गयी। बैठक में साधु-भक्त के लिये दिये दूधों का निर्वाचन किया गया। पुस्तकें तथा साधु-दान प्रकृत करने पर और दिया गया।

इस अंक में

कथा	कहाँ	किसका
रचनात्मक काम का विशेष स्थान	१	निमेष
काशी का द्वािनि-विद्यार्थी	२	नारायण देसाई
शक्ति-निर्वाचकों के लिए	३	विजयदत्त
शक्ति-स्थापना में रचनात्मक काम का महत्त्व	३	सिद्धार्थ प्रसाद
अथ का महत्त्व	३	निमेष
कथा हलने वह धानी दीया है, अन्विमें गाँधीजी की भ्रम प्रकृति ही गयी थी ?	५	दादा धर्मोत्तराई
महत्त्वा गाँधी के राम	५	भीलायण दिनेश
गाँधीजी का युद्ध-निर्वाचक अन्विमें-श्री राम	६	मिहाराज देसाई
सर्वोदय-मंडल के चार विभाग प्रयोग-रूप	६	महाराज प्रसाद
स्वदेशीयता के आधारों का सम्बन्ध	८	सुखन चव्वा
अन्वय भारत की नागरिकों में मेरी अन्विमें	८	सिमरन ठाकर
भारतका जमीनी और सुगमता	८	कान्ति-सुखार
पंचरत्न के निर्माण बढ़ो हूँ अन्विमें का प्रकृति	१०	—
नय, प्रयत्न कार्य-रूप की रचना	११	—
भूदान धर्म, निर्वाच, सामाजिक और और	१२	—
साप्ताहिक-संस्था	१२	—



—जयप्रकाश नारायण

२० जनवरी '६१ को सायना केन्द्र, बामो में श्री शंकरराव देव का ६६ वाँ जन्म-दिन मनाया गया। श्री जयप्रकाश नारायण ने सारे परिवार की ओर से उन्हें मुहूर्त पहनाया और शुभचामना प्रकट की कि उनका सामान्य और स्नेह हम सबको, देश-वासियों, मानव मान की सतत मिलता रहे।

साम्ययोग के उपासक के नाते असम आ रहा हूँ

श्री आचार्ये,

अब तो अरम की दिशा में हम प्रयाग कर रहे हैं। सुदृढ़ पाले में पूरक की वरक क्षमिमुख होकर मारता करने का प्रसन्न बादा है, तो मैं सोचता हूँ कि सामने अरम पीछ रहा है। मैं वही 'बवाल' के नाते नहीं आ रहा हूँ, साम्ययोग के उपासक के नाते आ रहा हूँ। विज्ञान के प्रयत्न में हर चीज की उत्पन्न वैज्ञानिक रूप से ही देखना पड़ेगा, ऐसी सब सामयिक तैयारी करके प्रयत्न की इच्छा से यथासमय बहूँ पहुँच जाऊँगा। बहूँ कुछ घटनाएँ घटीं, वे मृतकाल में घामिल हुईं। मैं मृतकाल में नहीं जाना चाहता। अविद्य में पैदा नहीं चाहता। अतीत-बनागत छोड़ कर वर्तमान में ही काम करना। आरत-पाशा में अरम माल रह गया था। पूरे दस साल के बाद बहूँ पहुँचूँगा। मुझे उन्मील है, किसी पर मेरा कोई आक्रमण नहीं रहेगा। मेरा का आक्रमण भी बनासिद्ध-पुनर होगा।

आपने "नामधोर" वाली विताव दी थी। वही नागरी में छपी अमलप्रामने दी। इसका अध्ययन मैंने शुरू कर दिया है। मेरा बही मसीब है। कोई भी नाथा सीखता हूँ, तो उसमें मैं जैसे के-जैसे विचार का मुझे परिचय हो जाता है।

आकर बोहि पर सत्य समझे।

मो तेहि मिलत न बज्य समझे ॥

स्त्री-पारिव, ब्रह्मविद्या, सर्वोप-नयन मिल कर एक चीज, मुक्त, रामदान, क्षमसिदान मिल कर दूसरी चीज बन लेतीं को बोद्धने वाली 'श्री लालीब', ऐसा बनना बार्थकर्म रहेगा। सबको प्रयाग।*

पञ्चायत : वदनी (म. प्र.) का. १८-११-६०

—विनोदा का जय जयत

* मुझे आचार्ये श्री सर्वनाथक के नाम लिखा था।

प्राप्ति-स्वीकार

पुस्तक का नाम	लेखक	ग्रन्थ-संख्या	मूल्य
दुष्टिवा से आत्मदर्शन कार्यकर्ता क्या करें ?	विनोदा	५६	०-४०
एक सहाय	समस्त यार्थ	४८	०-२५
प्राथमिक	१० न० आदेश	२८	०-२०
स्वामिन्-सिद्धिर्जन (नाट्य)	भोजनाथ सिंह	४८	०-२३
मदमदात (नाटक)	विश्वकर्मा शय	१२४	१-००
पंचम राह : ३ (अमनालक प्रयाग)	मं० रामकृष्ण नाराय	२१६	१-२५
द्वारे भूले साधुयो : पाँच भाग			प्रति भाग
(१) बरफ न कर काहूँ ख बौर ?			
(२) इतने की क्या बात है ?			
(३) अमलन बनाओ अमना दिश			
(४) धार भी लातु बनो है			
(५) आओ सही राह पर			

श्रीरामदास मन्द ४८ ०-२०

विषयक के बारे में पिछले पाठ में बताया गया है। अब नियमावली का बनता है, इसके बारे में कुछ सीख लीजिये। तेलुगु धातु के अंत में 'उ' को 'ख' करके उसके साथ 'वदु' या (वदु + अण्डि) = 'वदुडि' जोड़ देने से नियमक बनता है या उभय रीति से धातु के अंत के 'उ' को 'ख' करके उसके साथ बन्ध पुन्य एवम्बन्ध में 'कु' या 'कुसु' और बहुवचन में 'कुडु' या 'कण्डि' जो जोड़ दिया जाता है।

मत वैठ = (कूपौतु + अ = कूपौत + वदुदु) = कूपौतवदुदु।
 मत करो = (बेयु + अ = बेयु + वदुदु) = बेयुवदुदु।
 मत पीजिये = (प्रागु + अ = प्रागु + वदुदु + अण्डि) = प्रागवदुडि।
 मत पढ़ = (पदुवु + अ = पदुव + कु) = पदुवकु।
 या
 = (पदुवु + अ = पदुव + कुसु) = पदुवकुसु।
 मत जाओ = (वेल्लु + अ = वेल्ल + कुडु) = वेल्लकुडु।
 मत सुनिये = (विनु + अ = विन + कुडु) = विनकुडु।
 या
 = (विनु + अ = विन + कण्डि) = विनकण्डि।

हिन्दी तेलुगु
 रू मत लिल। (१) नीडु प्रायवदुदु। (२) नीडु प्रायकुडु।
 तुम मत लिपिये। (१) नीर प्राय वदुदु। (२) नीर प्रायकुडु।
 आप मत लिपिये। (१) समर प्रायकुडु। (२) समर प्रायकण्डि।
 गहाँ मत वैठ। इच्छा कूपौतवदुदु।
 उसे मत बुलओ। धानिनि/धामेनु/धानिनि पिलुववदुदु।
 कल यहाँ मत आर्ये। रेयु अककण्डि के वेल्लकण्डि।
 आप कन्हें अन्दर मत जाने दीजिये। तमर धारिनि जोपसिदि पामिन्वकण्डि।
 तुम उसको पाँच रुपये मत दो। मीर धानिकि/धामेकु/धानिकि काडु।
 आप धाज की सम्रा में भाग्यु मत कीजिये। तमर नेदि तमसो मादलाडकण्डि।
 पूरह काम मत कर। नीडु ईपनि बेयुकुडु।
 तुम इतने पैसे खर्च मत करो। मीर इत हन्नु खर्च बेयुकुडु।
 इयादा मत खाओ। मिनिमीरि तिनकुडु।
 जोर से मत बोलो। पैगारगा मादलाडकुडु।
 दरवाजा बन्द मत करो। तलुडु मूयवदुदु।
 इसे मत छोड़ो, पुलिस के हवाले कर दो। धीनिनि विडुव वदुदु पोकोसुडु वपगिणुडु।

हिन्दी	तेलुगु	हिन्दी	तेलुगु
पधारना	द्वचेवुद	माययु बैना	मादलाडुदु, इपन्वसिपुद
मुलाना	विलुपुद	दोड़ देना	वसिलिपुद, रिडुपुद
खिलाना	परपुद	रारी देना	कोडुदु
खोलना	तेरपुद	बेचना	अम्मुद
चाहना	कोरुद	खोलना	वुडुद
		भोजन की चीजें	
		पपु	पपु
		हलदी	हलदी
		अन्नसु	मेल
		रिप्यसु	धी
		पुडुसु	मट्टा
		रोटी	रोटी
		सकरत	सकरत
		उदर की दाल	मलाई
		बने की दाल	हीर
		आरार की दाल	रायडु
		मूँग की दाल	पसर पपु
		गहूँ का खाटा	दही
		ममक	राककर
		गुड़	उपु
		मिर्च	वेल्लु
		मेथी	मिस्फकापु, कापु
		खरई	मैनुडु
			आवातु
			मैरा

हारी अहितक समाज का प्रतीक है। स्वतंत्रता-संपादन में इसका अविस्मरणीय स्थान रहा है। काम भी हारी का उपयोग ही एक ऐसा उद्योग है, जो प्राचीन संघ के सबसे गरीब और उर्जाहीन व्यक्ति को काम देकर उसे हिम्मत और सहारा प्रदान करता है। नये मोड़ के कार्य के यान हमें मोसाहून मिल रहा है। इसका यह अर्थ है कि गांधी का छोटे-छोटे समूहों के रूप में आयोजित होकर उनका समर्थन करता है। हम दुर्गम-उद्योगधारा समुदायों के संगठन के महत्त्व को समझते हैं। हम अपने आर्थिक दायों को ऐसा रूप प्रदान करना चाहते हैं, जिनमें इन समुदायों का प्रमुख स्थान रहेगा और जो कि ऐसे समाज की रचना करने में सहायक होंगे, जिनमें स्वतंत्रता और समता सबकी ही प्राप्ति हो।

हम संकल्प करते हैं कि हमारे गांधी में कोई भी भूलत और बेवतार नहीं रहेगा। हम भूगर्भीयों को धूमि अपना अन्वय प्रायोद्योग देंगे, जिनमें के अपनी ओषधिका बला लगे। हम गांधी का सर्वजन करके उपयोग सामर्थ्य भी जाँच करेंगे, जिससे उनका अधिकतम उपयोग किया जा सके। प्रथमतः हम इसका उपयोग गांधी की स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये करेंगे, परन्तु हम साक्षात्त के लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सहायक होने हैं। अपने नये कार्य का भी स्थान रखते हैं।

हम अनुभव करते हैं कि मुकुन्दबायी के कारण गांधी की संपत्ति और समय का बहुत अपव्यय हो रहा है। अतः हम संकल्प करते हैं कि गांधी के साथ ही गांधी में ही सुभाषाने का प्रयत्न करेंगे, उन्हें छोड़कर अज्ञातों में फैलते के लिए नहीं हैं। बाहर है।

हम जानते हैं कि गांधी के बर्षों की उपमति करने हैं। निरूप जग्गी-ने-अच्छी

दिया और समुचित धाराधारण की आवश्यकता है, जिससे कि वे विचारों में प्राप्त संस्कृति को बहुत बर सके और उनमें ऐसी दार्ष्टि पैदा हो सके, जिससे वे अपने आसपास को चीनों में धार्ष्टि परिवर्तन स्वयं कर सकें। इस ध्येय को प्राप्त करने के लिए हमें आज को चानू दिसा-पद्धति में उचित परिवर्तन आवश्यक प्रतीत होने हैं। यह दिसा में अग्रसर होने के लिए जीवन के मूर्त्त्यों में उचित परिवर्तन करने का हम संकल्प करते हैं।

हम अनुभव करते हैं कि गांधी की सुरक्षा के लिए हमारा स्वयं का उत्तर-दायित्व है, जिसके लिए हम आवश्यक प्रयत्न करेंगे।

हम संकल्प करते हैं कि साथे मने के लिए हम बहुत बने प्रयत्न करेंगे, क्योंकि हमें विचार है कि इसीमें अपना भी भला निहित है। निश्चय हम इस प्रकार करने का आशय रखते हैं कि जिससे सम्बन्धी सदृष्टि और जिनमें सबका संतोष प्रकट हो। गांधी की धर्मार्थों और धार्थों में सब धर्मियों को सक्रिय भाग लेने का उन्माद उत्पन्न हो, ऐसा हम प्रयास करेंगे। हम विशेष रूप से यह ध्यान रखने का प्रयत्न करेंगे कि गांधी में कोई भी व्यक्ति अपने को पंक्ति अनुभव मने और अपने विचारों व विरोध को व्यक्त करने में बहू स्वतंत्र और निर्बाध रहे। इस प्रकार जनसमूह के धाराधारण को समाज में बनाये रखने में सहायता मिलेगी।

हमारे हमें अपनी सहायता स्वयं करने के अन्वये दुःख निवारण को प्रयत्न में सहायता प्रदान करे, जीवन के मन्त्र प्राप्त करने के हमारे प्रयास में उत्तरा मार्ग-दर्शन हमें मिले यही प्रार्थना है।
भव जगत् ।”

“कटनी” में कटनी

उत्तर प्रदेश की मांस-वैद्यका करने के साथ हम तीन मांस-सर्वनी गुजारी राय, ब्रजराज ठापा भी त्रिनोबायी के पास उल्लेख करते हैं। २० दिन साथ रह कर दायां ने कटनी—“गुण हीने के मिल कर बड़ी सुगंधी हुई। बीबी, आज का था नाम अन्नम सुगंध। बनीकि ‘कटनी’ (अबलपुर में बटनी नाम की तहसील) में बटनी होगी (जाता होगा)।”

मैंने कहा—“बाबा, मैं तो जीवन-समर्पण के फलित के आधार यहाँ की, मैं भी आयेवा होना, नेली तैयारी ही हो। पर मैं घोषणा है, काशी में एक संस्कार पत्र है, जोकि भी लगाने की बात है, वो जैसा था यहाँ !”

“हाँ, ठीक है, काशी सुगु बनो।”

श्री ब्रजराज माई ने अपने बिले का आधार का साहित्य किया, तो बाबा ने उन्हें सहायता भेजा। जो गुजारी राय श्री बटौर के लिए कहा कि “आज बल मेरी भाषी धार्ष्टि बर्ष यहाँ रही है। मुझमें वे एक बने यहाँ।”

मैंने बाबा से कहा कि ‘काशी के लिए सामर्थ्य चाहिए। जो सुख ही हो कर बाबा ने पूरा, ‘जिनसे दिन हुए मूर्त्तों’ अभाव दिया, ‘कठोर ४ वर्ष’।
“जो फिर अनुभव की क्या बात? फिर भी सब देना संघ के हमारे लोग हैं हो यहाँ। मुन्दराला को भेजा है यहाँ। बाबा, उनकी मदद करो”—इस भाषा ने कहा।

—जलरत्न नारायण

हमने ‘गीता-प्रवचन’ में सांख्य और योग, ऐसे दो विभाग बताये हैं। वे दो विभाग मिल कर परिपूर्ण जीवन-शास्त्र बनता है। जीवन-शास्त्र का एक अर्थ है सांख्य व एक है योग। सर्वोदय भी सांख्य व योग, ऐसे दो अर्थ हैं। दोनों मिल कर परिपूर्ण सर्वोदय-विचार बनता है। सर्वोदय का जो साध्य (याने ‘धियरी’) है, वह में आज बहूना है।

सर्वोदय का मूलभूत विचार है कि परस्पर हितों का विरोध न हो। अर्थात् हित में आपका हित है। आपके हित में मेरा हित है। दोनों के हित में देना या हित है। देना के हित में मेरा व आपका हित है। देशहित का विरोध हित को विरोध नहीं। विश्व के हित का देना के हित को विरोध नहीं। हम यहाँ सर्वोदय का विशेषी दे। यह है दुनिया।

सर्वोदय-विचार में प्रायोगिक व यंत्रोद्योग भी परस्पर अविरोध से एकसाथ चल सकते हैं। उनका क्षेत्र विभाजित करना होगा। फिर क्षेत्र में प्रायोगिक रखा जाय व किस्म क्षेत्र में यंत्रोद्योग रखा जाय, ऐसा विभाजन हो जाय तो एक ही देश में प्रायोगिक व यंत्रोद्योग चल सकते हैं। प्रायोगिक व यंत्रोद्योग एक-दूसरे के विरोधी होने ही चाहिए, ऐसा नहीं। दोनों का समन्वय कर सकते हैं।

यह तीन प्रकार के हैं : एक सहायक यंत्र, दूसरा समय-साधक यंत्र व तीसरा उत्पादक यंत्र।

“सहायक यंत्र याने ‘मशिनमन’, जैसे, जिसका उपयोग कारख-खार में ही होता है। ऐसे जो धाराधार इत्यादि बनाते हैं, उद्योग नाम हैं सहायक यंत्र। सर्वोदय में सहायक यंत्रों के लिए आवश्यक नहीं। सहायक यंत्र का वह सर्वोदय-विचार के लोच विरोध करते हैं।

समयसाधक यंत्र सहायक यंत्र की वही करते व उत्पादन भी नहीं करते, समय बचाते हैं। जैसे टैक्सा है, रेलवे है, हवाई जहाज है। इन सबके उत्पादन नहीं होता, व सहायक यंत्र हैं, समय बचाता है। हवाई जहाज में हलकी पंक्ति है कि बमार्थ के समय बाराह घंटे में बाते हैं। ४०० साल पंक्ति की बाराह घंटे में, अब १२ घंटे बाते ही व समय बचाता है। तो वे समयसाधक यंत्र हैं। सर्वोदय में इसका विरोध नहीं। सर्वोदय को वे सहर्ष देते हैं, माया है। नये यंत्र हमको माय है। कम यहाँ। ब्रजराज व यंत्रों में इष्टतम रक्षित करने। रक्षित भी सर्वोदय को माय है। सहायक यंत्र बर्षा-आभार्य है, समय-साधक यंत्र सर्वोदय नकल है।

अब उत्पादक यंत्र रहे। उत्पादक यंत्र की निर्माण-कारख-धे। उत्पादक यंत्र दो प्रकार के होते हैं। एक प्रकार-मनुष्यों के धम की पूर्ति करने हैं। हमारे हाथों के धम के देना को काम नहीं कर सकते हैं, यह करने में सहायता देते हैं ये यंत्र। ‘पूरक’ माय भी उत्पादक यंत्र का एक प्रकार पूरक यंत्र, मनुष्य के धम की पूर्ति करने वाले हैं। हम हाथ से पूरक करते, तो हथकरा काम पूरक नहीं होता। उष्णकी वे योधी काम पूरक करते हैं। कदाचत यंत्र योधी, कदाचत यंत्रों से उष्णकी भी यंत्रा यंत्र होती है। यह सहायक यंत्र की पूर्ति को भी यंत्र है, वे पूरक, उत्पादक यंत्र

यह दोन में सर्वोदय के माय का विचार है। इसमें किसी के हित में विरोध नहीं, पूरा अविरोध है। यंत्र-उद्योग व धाराधार को विरोध नहीं। परिस्थिति से पैदा कर उनको “उत्पन्न” कर सकते हैं।

* समाज-विज्ञान विभाग के सहायक-निदेशक के सहायक निदेशक प्रयत्न के।
पत्रा-बुद्ध, सं. २०-१२-१०

विनोबा-यात्री दल : जीय-प्रकाशजी के आश्रम में

दो दिन से मरिचिया बाबा हैं। रात्री को जीय दे रहा था। दुबरे दिन जयप्रकाशजी के आश्रम में आया था। ॥३॥ बाबा के हाथिक भयनर था। भौरी बाबू हैरान हो गये थे। बार्डबर्ग बटलने का घोषा था। उपर जयप्रकाशजी भी विचित्र थे। उन्होंने बाबा को कायम से बिठो लिखे—“बाबा दुबरे कायम में इस बका नही सामने तो जो बचका। जातान के कोट, तस बाबायेन। फायरबम में बटल कर गये वालों को निचारा मत कीजियेवा।” बाकी चर्चा हुई। बाबा ने पैसलर किया, “जीने का एक गैर टाला काय और एक दिन में दो भाँके किये जाई।” बाकसीरीयज ने पीछे हूँ भील था। रातल बचका था, बाँच में जीत की परगटो कोर पून भी भायुपिक थी। दुबह ५३ घंटे से हैं। सोने लड वन, तर “पीड” बहूये। दोबरे में दी बरफ करतो तीन बने फिर ले बते। आजा गरि व भील पून था। उर्या में कयो हूँ भील तीन भील उर हाथ थी। फिर वे कयना टाला कोर पून। और की टोक भनुमान ने बचने के लिए समझते समझते बाबो-दल भी बहूये और नाई बरफ बये थे। बाबा को पून से प्यारा लखीक होतो है। बाभिर साय को ॥३॥ बहूँ दुबरे भुयन पर बहूये। उन नाँव को दो-तीन पटो की मोटाटा बिकी थी। फिर भी छोटे-के “बच” गरि ने कोई बयो नही राखी थी। “छोटो ही बचने में आजा” देने की बात पर्यंत कर बाबा कयन में जाये। गरय बाबो ने हाथ-भूँड भी लिया। तस कि बाबा अब सेठ जायये थे। लेकिन वे प्रहास पर डैठे। “दिन्य-नानिद” सोते कोर मायो वस को बहूनों को मुण्ठोपासकी भी रसमको बायो समझते लने।

१५ नीन बजना हुआ था, दुबारा की दुबारा बं, मुगल-काय को बा, लेकिन बरिच को बरतो भी होत रहे थे ता रही थी :

“रघुवरहि कचहूँ वन लासि है ”, नू बाहि बिचि लुग-सायन छोड़ है जिपकी बरनि भूरि जासि है ।”

दिहाड़ की बाबा कुछ हूँ, उर ब इतराणोयो बाबो-दल में बाविक हो गयो है। मायम में कल बाबा कयने, दक्षिणे देवारी के लिए बहू बाणे बहूनेवालो भी। उर दिन बहू बुर भी १९ नील बयो थी। उर बहू भावे कयो, बाबा ने उनते कहा, “भयनरायणी भी कहिये कि बाबा बका नही है...” और वे लखिये को भयन व कय बकसाने में मन डो मने—“नील नानि का नाम तेसा को बुटिया का उर्या उर्या हो मुल भी गीद बायेन। तेरे वन की बड़ी भाँडे बलन भाग बायेवी ”

दुबरे दिन दुई-अदे सेठ कोर उँवे तास के पैरों को निहाते हुए कासिता भागे बहू रहा था। रात्री उर बरवाय था। बाबा पुनचार कोन-से बल रहे थे। किडी में बहू, “आज बाड़े दल भील की पड़ है।”

बाबा ने बचाव दिया, “बहू भीडा बकना गही है। रात्री हो १९ तास के बायल बाबा चल रही है। बायम में कुण्ठी की बकना गही होयी है। रात्री की भीकर तोस तास में ‘दिखाव’ होत है—उने को बायम में बहू कर बाबु के कायरे के कयनर १०-१२ तास लेवा की कोर लल केव नित्त होकर पून रहे है। हमार बा बायम बल रहा है।”

बाबा, कोस बका कर मायरे हुए लोकायिा घाम से बचाना दिया। पूरा नीर काय-मुनरा, सिता-भील था। जगदू-बाहू बरबनर बने। “बाबा की इफुड, मैं बहू।” के माते से बाभारण गूँव उर। बाँच के चीरो भी हूँ पर-नीचे पड़ाई की तासई में बायम की बुटिया बाबा कायी। जयप्रकाशजी, प्रभागीनी, गीरी-बाबू, बायम के वन भाई-बहूनों के साथ भायनरें बने थे। बायम-नियन एक कडुकर के भील का मुंदर डार बनाय था। कुडुन, बायरी, पुतांभल से रंगाय हुए। बाये के बिट्टी के बयने हुए, लिन-पीरी भीर बरना के बिचि वन बका रहे। हायने पहाड़ बने है, मुण्ड भी रेशल नेग है। उरुडि का वन मनोदूद पून और भीर वरिच से बाबा की देव बचन की बास बिभायो—“उरुदूरे विरलो कयने क बरिदानम्। विवा विरतो बयानम्।” पहाड़ी की उमिचि बहूँ रहे गये रहे, भरियो का वन है, बहूँ मायो का वन होता है। कँडे होता है? क्या करते थे?

छोटे बच्चों के लिये आशुकि पाठशाळा बसा रहे है। बाबा ने उनते पुण्ड, “बाबा भाय कासुलियन बच्चों में कीर हिनुलान के बच्चों में ‘बायलियनिक लिपरे’ (मनोऽज्ञानिक कर्क) पठे है।”

उन्होंने बचाव दिया, “बहूँ। बच्चों का भैरव, बाभरिच कोर रात्रीरिच विषय समान हो सीकया है।”

दूर बाबा ने कहा, “बिचनन मार निमरर दू नाँर-लेते बन्ने ईरर के उर्या नजकीक होत है। इरुबिये उरिया के उर बरने समान होत है। बरी उर में ही वरक का जाता है।”

“ मैं सच कहता हूँ कि ध्यायन करने को मिले तो चन्द्रदू लय्या है। ”

को भीटा लगेगा, लेकिन दिल कहेगा कि ‘भारे, ये सोग मर रहे हैं, नू उठ जा। नही तो अहिंसा का अरथा दारा छोड़ दे।’ इसलिए पून रहा है।”

—विनोबा

उनके पिता वर बच करे हुए बाबा ने कहा, “पन नही दिहाय में बने-बने लोचों के अरने लोकाये बाने है। दिहाय का इरियास लोकायन बरियाये।”

दुबरे दिन पुण्ड बायम के बचनीकन के लिए आग किया। बाय-नर वनकी नरक पहाड पर जनी थी। कोर-बीच में कुण्ठे जो वे कि पहाड विनान हूँ होय, कियन समय लोका उर-जाने थे। बहूते के—“पहाड देव कर उर बर बहूने की एकरा होत है।”

बहूँ की पहाडी, उरक-सायन बयन में बरुन परियन वर्या है, बयनर, बररर, एरुड, उरय, कोस बाँर कन के केप है। उरके बलाका वन की लोरी कोर कयो भी है।

दुबरे दिन दोबरे में बायम के कोर यता किने के हायि-जैरक पीले रर क बायन तिर पर लका कर बाय के पीले कयनन हाय की कोर बयानयन में दो-दो की कतार में बच रहे थे। बाबा की ‘दुरि दोरी’ कोर बाकी बरका पोना रर—

बलने हुए या रहे थे—“रुकोने दबदी बने—लेके लोकराणी बने”—लसी बजार थी।

बाँरें कोर वरुषी थी, ताम हो रही थी। ‘कतारी रोने’ की मनीय, प्रतिज लिये हायिने के लोकी जा रहे थे। उर उरों की इरि में भायो की पेश ने बाये मोचन में बरने।—ललो कतार के बायो-बाणे, बाबा मोनुरक बल रहे. थे। किडी ने हलरी आबाज में पुण्ड—“जय प्रकाशजी भील गीर रहे है।” बरनकहाँ की बकता गय कि दे बासिरी उरपन रहे। दस पर किनी तीरने ने सभेता की ‘है। निरंयन’ भाये बल रहे है और ‘अरना’ गीते ।”

कसिया घाम में की रियावर वरनी कुण्ड-रीगिनों की लेवा वर रहे है। १९५५ में है बहूँ उर काय में है। उरके पुरीके बरवाँ में नजकीक दलपुड में विनोबाणी में बायं-बायं में कुण्ड-रीगिनों की लेवा कर रहे है। कसिया में इरुबिये के २५ वर बगाये है। वरों की दो कतारें कयने-कयने सको है। वर के भीलन, वीधरें उरक-मुचरी थी। उर बरतो की ‘गायी-बाय’ ताम रिया है।

दुबरे दिन पुण्ड विने में उरये था। फिर के वसले की बरवाँ बनी। १९ नील को उररी राड, मोडू, बरवरीली, उँबी-भील। बाबा का दुबारा हटा गही था। दुबारा की हाथ देने के लिए लोरी की गूँव हूँ है।

बयन बाबो, लोरी बाबू, बयान-पीवी, गहारे-बार्द और सब धायी लोच में वरु थे। हायि-जैरक का लया उर वरिच हाय था। बचरी बयो-जयप्रकाशजी से लिचन रिया कि रात में हाहि उरने के के लोय जायेंगे कोर रातरा हाय करीं, रावर हूदायेंगे।—बाड बने धार्यना वन हूँ—बाबा ‘बहू बहूँ’ में वरु। बाबो-बाबा की बाई-बहूनें विररर विज कट लेने की तीवरी ने थे।

उनी बहू बल रही थी, बयरे का बररका बर कयने गयी हो देहा-बायन वन कोर-पीड कोर नरन लोरी वरुने हुए कयन-कायकी का रहे थे। प्रदाय-पदोरी के पुण्ड, “हल बल बहूँ का रहे है।”

“परासता बका करे।”—बहूँ भीली। और उर रात में राडे बाहूड बने उर उरने थे उर काय में लगे थे, बयन बायि-जैरक के साथ। राते वर मोडें पलर के, उरुँ हूदाय गयो। एक बहूने ने दुबरे कयनरई से पुण्ड, “आज बहू बाय के लिए उरको बरीं बाये देते है।”

कयनरई ने कहा, “हल करे वर? बहू मर कि।” वर बाभिर बाय-भयनरयी ने कहा, बायि-मेसा का बाय दे। मैं उरको हूय हूँ और बहू ने बहू बाय न बहूँ, बहूँ बडे बनया ?”

[पाठक लक्ष्मी आश्रम, कौसानी को सन्तानिकता मूक तैविका सरला नेहू से पुनर्विचिंतित हो हो] ये अब आश्रम पाहती है । आता है, पाठक इस प्रयोग में दिलचस्पी लेंगे । —सम्पादक]

मूढात्मा गांधी के आलोचकों ने लक्ष्मियों की नई लालीम द्वारा बहादुरी समाज की सेवा करने के लक्ष्य से कस्तूरबा 'महिला' उद्योग मण्डल, लखनौ आश्रम, कौसानी (जिन् ७ अलगमोडा) की स्थापना सन् १९४६ में हुई थी । यह एक संस्था या स्वयंसेवक बहलता रही । धुम में छोटी लक्ष्मियों के लिए बुनियादी तैयारी देने का लक्ष्य रहा । शुरू-शुरू ६ छोटी लक्ष्मियों को लेकर एक भवन के छोटे मकान में काम शुरू हुआ । संस्था बन्दो-बन्दो बन्दे लगी । संस्थान के पास की प्रथीम देवार 'सम्पन्न' के निजी मकान बने तथा कुछ हुजारी भ्रातृ को बाद को बुनाई का काम शुरू हुआ । धारों पहाड़ी जिले के छात्राएँ आने लगी । हमारी बहू बन्धना भी कि घर वाले लक्ष्मियों को सिर्फं कार-बोर्ड-बोर्ड आने लगे । एक एक ही यहाँ पर रहने देंगे, पर यह बल्लत साबित हुआ तथा पूरी बुनियादी छात्रा बन्दे के बाद कुछ छात्राएँ उत्तर बुनियादी शिक्षा पाने के लिए सेवाश्रम भी गयी ।

उस दरमियान में प्रधान का आवाहन मनुक पर महसूस हुआ कि यदि हम भी उतनें कुछ भ्रम न लें, तो हमारा अस्तित्व धर्म है । हमें अपनी बहुरा-बोडारी को हीमिन्ड नहीं रखना चाहिए । साथ : स्थानीय राजनीतिक कार्यकर्ताओं के साथ कुछ रीरे हुए तथा बन्धनों को लेकर प्रलमभा, पीठी और टिहरी जिलों में बाहू भी हम मन्तों लक्ष्मियों को लेकर जाती थीं, हम जाती थी कि पहाड़ी बहुरा हम साराथी को हुनने के निम्ने लगी है; हुन कर तुष्ट होती है । सम्यैय पहुँचने वाली की ही कमी है । फिर भी पीठी और टिहरी में कुछ कार्यकर्ता मिले ।

उस दरमियान में एक कार्यकर्ता विनोबाजी के सान्निध्य में एक यहाँ हुई । हम पीठी के पलकबन्धन आश्रम में छात्राओं की संख्या एकदम बढ़ी । परिवार की संख्या ८५ तक हो गयी । कैलिन प्रथम में लोगों ने क्षत्रीय लक्ष्मियों के एक बाहुरी आश्रम में भेज दिया, विचार और लक्ष्य समझ कर नहीं । वे सिर्फं अपना समझते थे कि अच्छी शिक्षा पाने के साथ ही साथ उनकी लक्ष्मियों बर्तमान समाज की तरफ प्रवृत्तियों के दूर-दूर रहूँगी । विचार और कार्य-कार्यक्रम के अभाव में विचार भी मुख्यतःकर्म बर्तनी मिलता तथा निष्पत्ति का कि संस्था की कम करते जाना चाहिए । इसके फलस्वरूप हम पाठे है कि लगभग ३० लोगों का परिवार हमारे लिए बने लक्ष्य तथा है; इतने अनिष्ट-मल समर्थ और परिवारिक भावना रहने की सम्भावना है । अपनी सीमित स्त्री-बालित से हम ज्यादा संस्था में एक भावना की कायम नहीं रख सकती हैं ।

हमने पाया कि लक्ष्मियों को सेवाश्रम भेजना बहुत उचित नहीं है । विभिन्न सामाजिक मताचारण और भरे परिवार में रहने की बन्ध । बाद में हमारे छोटे परिवार और पहाड़ का संकुचित सामाजिक वातावरण उन्हें लिए बहुत अनुरूप नहीं होता है । इसके साथ-साथ सब लक्ष्मियों का बहू जाना समर्थ भी नहीं था । इसलिए निष्पत्ति इस कि पाठे हमारे साथ निष्ठने सीमित नहीं नही, कौसानी में ही उत्तर बुनियादी शिक्षा शुरू करने का

धरणा में सीमित रहने से सब कार्यकर्ताओं के मन में उभलबुलबुल होती रही है कि वहाँ तक इस सीमित स्थान में रहना उचित है । कई बार आश्रम का दिखने करने का विचार हुआ, लेकिन किसी को जिम्मेदार कार्यकर्ता के उतरा समर्थन नहीं मिला । इसलिए में सन् '५८ में 'बालीवर्षा-समि-लन' के समय विनोबाजी ने स्पष्ट संसार किया कि यह 'आश्रम' काय है । हुन उस के बाद यहाँ कर सकतीं, बाहुरी को उरुका रूप बन्दत सकतीं हो ।

इसके फलस्वरूप गांधी हृदय-मन्थन और विचार-विनिमय का; कुछ निराला को हुई । आश्रम में निरम्य हुआ कि बुनियादी और उत्तर बुनियादी छात्रा के बन्दे में हम एक 'नई लालीम-परिवार' में परिणित हो जायें । इस परिवार के सदस्य कम-से-कम २५-२५ वर्ष की उम्र तक रहें । सिवाय पूरी पाने के बाद वे स्वायत्तलक्ष्मि रूप में आश्रम और समाज में काम करें । हम यदि समाज में खुद बोधा काय न कर सकें, तो कम-से-कम हम आश्रम की सीमाओं में रह कर एक भावना का आश्रम बन जायें ।

सन् १९५४ में हमारी स्थापना हुजारी लक्ष्मी मेरी और उनके प्रति भी मानसिद्ध प्राप्त, दोनों ने मिल कर सफ़ाई में व्यवस्था की । बाय में इस सेवा-केन्द्र स्थापित करने का निष्पत्ति किया । उन्होंने सदाय भावर के सीधर साक्षात्कारियों के एक गाँव घुना । गाँव-बातों में उन्हें एक कार्यकर्ता रहने की थी; मानसिद्धि ने अपनी बोसार्त जारी रखी । साथ बहुत अनेकी बने लगे बन्धनों के साथ उन छात्राओं तथा युवावियों में बीच उरु लोपी गयी । यह कर बाहुराओं तथा बन्धुवियों के द्वारा उरु कर रही हैं । मानसिद्धि की परभावार्थे सात करके उत्तरलक्ष्मि में जारी रहती तथा जनता ब्रह्मा है । यदि कोई छात्री भावर के केन्द्र की जिम्मेदारी उठाने की तैयारी होतो हो वे उत्तरलक्ष्मि में एक स्थानी केन्द्र सोचते हैं । हाल ही पीठर के सिद्धर ने उनकी पाँच छात्रा की मीन उपस्था के फलस्वरूप बन्धनी जिले में पूरा समय देने बोले पाँच छात्रिणें हीमिन्ड निकले ।

हदलिये हुए एक 'लक्ष्मी आश्रम निष्पत्ति' स्थापित करके अपने पुराने निर्भर को सान्निध्य में तथा आश्रम में जो निष्पत्ति समय-समय पर देखने काय करते हैं, निष्पत्ति करना पहाड़ है कि यदि वे एक काम को हमारे बाहुरी प्रसन्न भी उरुचित के लिए उपयोगी मानते हैं, तो मिस प्रकार से नो वे हूयें काम चलने में मदद दे सकें, उधरी प्रकार निष्पत्तिवित्त बाधदा-नवर भर कर हमारे पास नयें ।

- (१) लक्ष्मी आश्रम के कार्यों में मेरी सहप्रति हैं । मैं नाहाता (बहुरी) हैं कि यह काम चलता रहे ।
 - (२) उस काम में योग देने के हेतु वे मे साथदा करता (करती) हैं कि मैं एक साथ में उरुको बन्दे के लिए -
 - (अ) ये- सखे का चन्दा 'मेवा बन्धा' करती हैं ।
 - (इ) लक्ष्मी हाथ की नही हूँ .. मुँदी मूल मेन रूँना (रूँनी) ।
 - (ई) अपने जिलों में मदद दिलवाने में ... समय-समय रूँना (रूँनी)
- सरला नेहू

प्रथम होना चाहिए । उपादा बन्धन उपलब्ध न होने के कारण हम अपना और सेवा-कार्यों और सामाजिक कार्यों की ओर उरु तथा लक्ष्मियों को-भीरे करके आश्रम में विभिन्न जिम्मेदारियों का भार उठायें । यह काम सन् १९५६ में शुरू हुआ । सन् १९५६ में देव को अल्प संयंत्रों का बीदा करने के साथ लोग छात्राएँ पूर्वी रायगंज के मासदाय के एक सपन-लेख में बन्दे गयीं तथा 'भार छात्राएँ आश्रम में विभिन्न काम की जिम्मेदारियों उठाने लगीं ।

विनोबाजी के मार्गदर्शन में वर्षोदय का विचार उरुसोचर बहलता आ रहा है ।

मित्रों से निवेदन

कस्तूरबा महिला उद्योग मण्डल, लखनौ आश्रम, कौसानी सन् १९४६ में पूरु महाराजा पाने के आशोचरके से स्थापित हुआ । उरुतन मुख्य लक्ष्मियों की नई लालीम द्वारा सारे पहाड़ी समाज की सेवा करना है । उरुतन एक वर्ष की बीदा हुई तथा अभी जगद-जगद पर आश्रम की स्थापितवाएँ पहाड़ के दूर-दूर गाँवों में निष्पत्ति-लक्ष्मि स्वयंसेवकों को कठिनाइयों का सामना करके हीमिन्ड के काम कर रही हैं ।

यहूँ पहाड़ घनी मिनों के चन्दा बीप कर, सरकार के, कस्तूरबा और महाराजा-बाजी-स्मारक निधिओं से मदद लेकर काम चलता रहा । लेकिन अब बन्धना बन्द रहा है तथा उरुतन विनोबाजी का कष्ट लक्ष्मी लगत है कि हूयें प्रभाव-से-ज्यादा प्रभाविकार (न्यायाचार) घर रहने का प्रयत्न करना चाहिए, केवल का काम सारे समाज की सहृदयि पर आश्रित होना चाहिए । जनता की मुदती-मुदती से उरुतन पोषण होना चाहिए । यह माणस्य हो जायेगा कि यह सचमुच जनता की एक आनन्दक सेवा करता है, या नहीं और तब वह नरगत के साथ बन्धना बन्ध करवा देता है । इसके साथ-साथ देव बन्द हन दोनों निष्पत्तियों का निष्पत्ति हो हुआ है कि अविद्ये में वे स्वतन्त्र साराथी की मदद नहीं देंगी । लेकिन ऐसी उम्मीद

खादीग्राम में विनोबा : ग्रामदान-सम्मेलन

ता० २१ जनवरी को विनोबा का पञ्जाब थमभारती, लाठीबाग (मुंगेर जिला) में रहा। उस दिन वहाँ बिहार राज्य के ग्रामदाता गाँवों के प्रतिनिधियों और कार्यकर्ताओं का एक सम्मेलन हुआ, जिसमें बोलेले विनोबा ने कहा कि जिस तरह आग को छोटी-सी विनोबारी घास के बड़े ढेर को भी लकड़ कर देती है, उसी तरह ग्रामदाताओं गाँवों में किया हुआ काम का छोटा-सा भारभू आसपास के सब गाँवों पर और सबाधर पर अंतर करेगा। विनोबाजी की तबियत कुछ दिनों से खराब चल रही है। हरातर भी रहती है, दली और नुकासी भी है। इतनाही बोलेले में कुछ बहिनवाँ होती थी। विनोबा ने ग्रामदाताओं गाँवों के लोगों को जाने सम्बोधित करते हुए कहा :

“ग्रामदान में दूरने की कोई बात नहीं है। ग्रामदान का यह अर्थ नहीं है कि गाँव का दान देकर हम सब गाँव से बाहर चले जायें। ग्रामदान का मतलब है कि सुक पाँट कर लायें। जो मेजमनी हैं, उन्हें अपनी जमीनी से थोड़ा-थोड़ा देकर उन्हें अपने परिचार में लायेंगे, सब गाँव की ताकत नसेगी। दिलों को जोड़ने के लिए नरम दिल की जरूरत होती है। नरम दिल बुद्धिगे वो ग्रामदान होगा। नरम दिल के लिए दिल में नरम चादिय, बह सखत न हो। उसके लिए हमने जोत को जमीनी में से 'बोमे में नट्टा' की बात कही है। इस काम को हर कोई उठा सकता है। यह जमाने जिसे वे चाहे हैं, अपनी सबयूँ को ही हैं और उसे अपने परिचार में दाखिल करें। इस प्रकार मालिक और मजदूर एक होंगे, कोई बेजमीन नहीं रहेगा। उसके बाद लोग ग्रामदान की बात कबूल करेंगे। जो ग्रामदान हो चुके हैं, उन्हें हिम्मत रखनी चादिय और उन ग्रामदाताओं को नमूने के पत्ताला चादिय। सारे बिहार के हर गाँव में 'बोमे में एक नट्टा' के हिसाब से दान माँगें। छाप देतेमें कि इस प्रकार हजारों ग्रामदान बनेंगे। यह होने को बात है।

हमने एक भाई कुछ रहे थे कि बाप जमीन का हिसाब तो मानते हैं, और बह मिलता भी है, लेकिन कारालानों का भी हिसाब मानते हैं क्या और

यदि मांगते हैं तो मिलता भी है क्या? में उन्हें बहता हूँ कि किसी बकान का बोने का हिसाब अगर मिलता है, तो क्या ऊपर की बजिल दिकेनी? बाबा तसले प्रेम करना चाहता है, बह ऊपर बाटों पर भी प्रेम करेगा, उनके पास भी जायगा। वे भी ऐसा ही करेंगे। यदि बोमे के लोग इतना कर लेंगे तो उन्हें अपनी बिलकिल तसले प्रेम चाहिए हैं। वे भी अपने कारालानों को समाज का बनायेंगे। मैं बिहारत हिसाब हूँ कि अगर जमीन का मसला हल होता है, तो ऊपर की बजिल तोड़ने में मैं बाप बूँत, अगर मैं जिया रहा तो, मैं न रहा तो बिहार सारी करेगा।”

तमकुही रोड (देवरिया) में सर्वोदय-आंदोलन

[तमकुही रोड देवरिया जिसे का बहुत ही छोटा बाजार है। इसमें ५०० के लगभग घर हैं। यहाँ पर एक इंटर कावेज है, जिसके शिक्षण भी सुभाष मुकुल और बाबा के एक प्रमुख शिक्षक को इंस्ट्रुक्टर प्रसार परते के सभिमलि प्रयास का साधारण पर इस लक्ष्य में सर्वोदय-आंदोलन का कार्य बहुत ही ज़रूरत एवं स्पष्टता से चल रहा है। —सं०]

२९ अगस्त १९५८ को 'सर्वोदय स्वाध्याय मंडल' तमकुही रोड की स्थापना की गइरने काजमेनी के हाथों से हुई। उसपरदेसीय भागी स्वाध्याय-मिच के सवर्ष में स्वाध्याय-मंडल का कार्यकाल चलना प्रारंभ हुआ। निवर्तित रूप से मास में दो बार मंडल के सवर्षों, सर्वोदयियों की बैठकें हुईं। सभय-सभय पर विषये कार्यकाल सभयो-विनोबा ज्योती, सर्वोदय पाठ प्रारंभ करते रहे हैं। इसके ३३ सदस्य इस समय हैं। यह मुसल विचार की संस्था है।

साध-साध सभी को नई पुस्तक देते हैं और पुस्तकी पुस्तकें बाणल राते हैं। ५०० घरों की यह ग्राम-सभा है। १०५ सर्वोदय-पाठ निवर्तित रूप से चलने पर बिहार में सर्वोदय का स-देय पड़ेव जायगा। सर्वोदय-पाठ के संस्थापक बड़े ही उसाह से और

सर्वोदय-मार्गदल—सर्वोदय-पाठ का संघालन करने के लिये २९ अक्टूबर १९५८ से इस मण्डल की स्थापना की गयी है। इसके सदस्यों के लिये कोलेजियल के संघालित पिठाओं की मा-या सभा आदतर लाठी-बागी डीना काव्यकाल माना गया है। मण्डल में अभी १९ निवर्तित सदस्य, ३ विद्यो-सदस्य और १ स्वाध्याय निवर्तित, इस तरह कुल १६ ज्यति हैं। अब से इस क्षेत्र के सर्वोदय-कार्य का संघालन इसी मण्डल के द्वारा होगा।

सर्वोदय-पाठ—२९ अगस्त १९५८ से ही सर्वोदय-पाठ की स्थापना प्रारंभ कर दी गयी थी। प्रथम और द्वितीय छवर्षाई, अर्थात् सितम्बर १९५९ तक इतनी सख्या ३५ रही है। तृतीय छवर्षाई, अर्थात् फरवरी १९६० तक १८ पाठ बहक ५३ हो गये। चतुर्थ छवर्षाई, अर्थात् १ सितम्बर १९६० तक २३ और पाठ बह गये, अर्थात् कुल ७६ पाठ हो गये। १६ अक्टूबर १९६० को भी निर्मल बदन की उपरिधि में

वेराह का अंतर : दो नये ग्रामदान

ता० २० जनवरी को विनोबाजी बिहार के प्रसिद्ध ग्रामदाता गाँव वेराह पहुँचे। यहाँ दो और गाँवों के ग्रामदान की पोषणा बाबा के आग्रह पर हुई—अत्रास और सज्जनपुर। दोनों गाँव वेराह के पास हैं।

द्वितीय कॉन्फ्रेंस मनाना गया। १६ अक्टूबर १६० तक उनकी संख्या २०५ हो गयी है। अब तक इनकी संख्या कम थी, अब तक इनमें एक दिन निवर्तित रूप से इनको इकट्ठा किया जाता था। अब पाणों के बड़े जाने से प्रति दिन २-२ सर्वोदय मिच के द्वारा १८-१८ सर्वोदय-पाठ होते में ६ दिन इकट्ठा किये जाते हैं। अब यहाँ सर्वोदय-पाठ के द्वारा धनन काम करना चाहते हैं। इसी के माध्यम से सर्वोदय-साधिय का प्रसार करने सर्वोदय का प्रसार-धरम चाहते हैं। सर्वोदय-मिच पाठ इकट्ठा करने के

समानापूर्वक पाणों में मानाब टालते रहे हैं और अपने निवर्तित दिन पर सर्वोदय-मिच को पाठ का अन्तार देने की उच्छुक रहते हैं। किसी कारण से सर्वोदय-मिच अगर नहीं पड़ेव पाये, तो उनको उल्लसत नुनना पडता है और वात अधिवर्धित होने लगता है। सर्वोदय-पाठ से अब ३०६ ५०-६२ न० १० प्राप्त हो चुके हैं, जिसमें से ५६ २० ८५ न० १० सर्वोदय संघ को और ३० ६ न० १० का हिसाब दिया गया है। इतने ही पाणों के द्वारा इतनी प्रेम-देव

मान पर धनन रूप से काम करते रिचार है।

सम्पत्ति-दान—८ सदस्यों ११ सितम्बर, १५९ को 'विनोबा सन्धि' के अन्तर्गत पर सम्पत्ति-दान का संस्था किया गया। ६ सदस्यों ने दूने मूल्य की लक्ष संदीय कर अपना संस्था पूरा किया। १८ सदस्यों से १२०८. नकद प्राप्त हुआ, जिसे के ७० ६० की एक अन्वयती बनवायी गयी और ५० ६० की पुस्तकें मंगायी गयीं। ११ सितम्बर १६० को 'विनोबा सन्धि' के अन्तर्गत पर २२ व्यक्तियों ने सम्पत्ति-दान किया लिया, जिसमें कुल ५८४६० २२ न० १० का संकलन हुआ। इसमें से १२ न० ६० रुपये संस्था के दूने मूल्य की लक्ष एरिदों में। १० व्यक्तियों के द्वारा ५९५ १० ५० न० १० नकद प्राप्त हुआ, जो यहाँ सर्वोदय सभय-सभा के नाम में इकट्ठा आयेगा। उनका विचार है कि एक छात्राव विचार में सर्वोदय कार्यकर्ता को निर्वाह देना अयोग्य और उचित इरादा यह के सारे सर्वोदय-कार्य का संघालन के लिये बिलसे काम में कुछ और वेव आयेगा।

सर्वोदय-मिच—'सर्वोदय-मिच' पर सदस्यों के द्वारा ७ गुण्टी बह बहाक के रूप में प्राप्त हुआ। इस बात लक्ष और बढ़ाने का विचार और गणन किया गया है।

ग्राम-सेवा कार्य—स्वाध्याय मण्डल की स्थापना के बाद सके विचार से मण्डल के सवर्षाई दोने पर ग्राम सेवा कार्य प्रारंभ किया गया। इसके द्वारा गाँव की सवर्षाई, गाँव सवर्षाई, सवर्षाई-सवर्षाई-सवर्षाई का निर्वाह एवं दक्षिणाचार्य का सफल आयोजन किया गया। सविन-पाठशाला में १०० व्यक्तियों का विचार हुआ।

सर्वोदय 'स्टाल'—निवास-विभाग एवं विचार-विभाग के सवर्षाई ने भी सर्वोदय-मंडल बुकान का दो दिन संघालन किया गया। 'स्टाल' में मुकत-दाता के कपड़े और प्राणोदयी चीजें रखी गयी थीं। सामान बेचने के लिये भी इच्छानदार नहीं था। प्रायन्त के दो-तीन घण्टे में विना इच्छानदार के दुकान का उदरेश नहीं बना सकने के कारण और नई चीज होने के कारण ११ ६० ५० ६० १० के मूल्य का सामान नहीं मास हो गया। पर बाद में पाठक पर 'स्टाल' के विचार को समझ देने से और नैतिक भावनाओं के आरोपण से फिर वैसी बचतना नहीं बनी और अन्त तक स्टाल सफलपूर्वक चल। इसके द्वारा नैतिक मूल्यों के स्थापना में बड़ी मदद मिली है।

यहाँ के सभी सदस्य अपना-अपना व्यापार एवं नौकरी आदि करते हुए बहक हुए समय में सर्वोदय का बदन सभय-सभय समझ-संस्था के द्वारा संस्था करके मान कर रहे हैं।

—हरिहरप्रसाद पांडेय, संवेकक सर्वोदय मण्डल, तमकुही रोड जि० देवरिया, बो० वेरवाही

नव-निर्वाचित जिला-प्रतिनिधियों की नामावली

उत्तर प्रदेश

जिला	प्रतिनिधियों के नाम व पते
(१) मथुरा	श्री जयन्ती प्रसाद, सर्वोदय आश्रम, प्र० बा० सादाबाद, मथुरा
(२) बदायूँ	श्री विजयी महार, श्रीवासी रोडसाहन, आलखपुर, बदायूँ
(३) फतेहपुर	श्री हेमरामिंद, जिला सर्वोदय कार्यालय, फतेहपुर
(४) लखीमपुर खीरी	श्री विजयदत्त मिश्र, हाथीपुर, लखीमपुर खीरी
(५) कानपुर	श्री ब्रजलाल मिश्र, जिला भूदान-समिति, सिलक हॉल, कानपुर
(६) मेरठ	श्री सारदर सुन्दरलाल, जिला सर्वोदय-मंडल, मेरठ
(७) बाराबंकी	श्री रामकिशोर त्रिपाठी, जिला सर्वोदय-कार्यालय, जयवंती
(८) बहावलपुर	श्री विद्याभारत बर्मन वैद्य, ग्राम-मिर्ठीपुरवा, बहावलपुर
(९) इलाहाबाद	श्री सुरेशचन्द्र शर्मा, सर्वोदय-कार्यालय, ६७ बी, राधेराव बाग, इलाहाबाद
(१०) पीलीभीत	श्री रामचन्द्र त्रिपाठी, जिला सर्वोदय मंडल, पीलीभीत
(११) उन्नाव	श्री राजनारायण शर्मा, स्वराज्य आश्रम, लाठी मंडाई, उन्नाव
(१२) देवरिया	श्री मधुसूदन प्रसाद शर्मा, सर्वोदय-मंडल, देवरिया
(१३) मिर्जापुर	श्री बंगाली महादत्त सिद्ध, जिला सर्वोदय-मंडल, दुहड़ी, मिर्जापुर

राजस्थान

(१) अजमेर	श्री महादत्त उपाध्याय, आराधनबाग, अजमेर
(२) नागौर	श्री ब्रह्मिभद्र स्वामी, नागौर जिला सर्वोदय मंडल, मछपाना
(३) बीकानेर	श्री माणिक्यलाल त्रिपाठी, जिला सर्वोदय मंडल, डूंगरपुर
(४) टोंक	श्री सुशीलकर चतुर्वेदी, जिला खादी प्रायोगिक समिति, पो० टोंक
(५) बांसवाड़ा	श्री मंगलजी शर्मा, मार्गद स्थित सैनिक चंलयापीठाहा (आगरा)
(६) जयपुर	श्री देवीशंकर श्यामलाल, शिवशंकर, पो० देवलपुर
(७) मत्स्यपुर	श्री देवकीचंदरजी वैद्य, श्री रामगोपालचंद, सेठ का मठ, मत्स्यपुर
(८) लुणा	श्री बनारसीलालजी, वैद्य, गांधी आश्रम, मुजानगर
(९) जयपुर	श्री बहादुरलाल वैद्य, खादी प्रायोगिक आयोग, हीराबाग, सवाई रामसिंह रोड, जयपुर
(१०) अलवर	श्री हजारीलालजी शर्मा, निचनगढ़ (अलवर)
(११) बीकानेर	श्री ब्रह्मनाथजी मंगेश, लाठी राउ, खादी मंडार, बीकानेर

मध्य प्रदेश

(१) मच्छिसागर	श्री भीमायजी मंड
(२) झांझार	श्री महात्मा बरील, अयोध बाग, सोमगारिया, झांझार

उत्तर-प्रदेश

जिला मथुरा :
सर्वोदय आश्रम, सादाबाद के संस्थापक श्री बरनी प्रसादजी के पत्र के अनुसार कक्षा सादाबाद में २ अक्टूबर, '६० को ३५ वर्य में सर्वोदय-पत्र रलवाये गये, जो विंशत तक ५० हो गये हैं। दिसम्बर, '६० तक इन ५० पत्रों के ६१ रुपये ८१ नये पैसे संग्रहित हुए तथा संगतिदान के लिखन में ५० रुपये प्राप्त हुए। इन दोनों रकमों का प्रयाग सर्व सेवा गण को भेजा गया। सर्वोदय-पत्र हर घर में राने सार्व, इन पत्रों के कार्य चल रहा है। शराबाद तहसील में ३० जनवरी के एक परनामा प्रारम्भ होगी, जो ७७३१ १ वर्य तक चलेगी।

जिला बीजाबाद :
सर्वोदय-मण्डल, भिरी के संतोषकर की लिखित के अनुसार मण्डल के अंतर्गत काम-पंचायतों के चुनाव ॥ जारी तनाज हो गया था। इसे कम कर जनाज में आगों सहभाज ज्ञाने रमणे का प्रयास चला।

गुजरात

जिला बड़ौदा
बड़ौदा जिला सर्वोदय-मंडल के १९६० के वार्षिक विवरण के अनुसार जिले में १० प्राथमिक सर्वोदय-मण्डलों की रचना की गयी। जिले में १० क्षेत्रोत्पन्न हैं।
सर्वोदय-मंडल का आयोजन नर्मदा नदी के तट पर स्थित कल्याणी में किया गया। इन्हें एक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया था। जिले के विभिन्न स्थलों के १२८० गुणियों प्राप्त हुईं।
२ अक्टूबर का कार्यक्रम शहीदा कहर तथा अन्य क्षेत्रों में भी चला। सांठालाल सर्वोदय-मंडल में दो स्थिर हुए।
बड़ौदा के सर्वोदय नगर बनाने की दृष्टि से भी कुछ कार्य बड़ौदा नगर में चले।
२ अक्टूबर को 'बर्लान-बर्ली सारद' मजदूरा गया। एक दृष्टान्तों का भी उद्घाटन हुआ। 'भूमिपुत्र' के माहक बनने तथा नाटकों के संर्गर्ष का कार्य चला है।

जिला बाराबंकी

दिसंबर महीने में १ दालाई के कटौत ७८ बीघा २ बिघा भूमि प्राप्त हुई तथा ७०० १९० बीघा १ बिघा भूमि आरिखत हुआ। १० सर्वोदय-पत्र राने गये।

(२) लखर	श्री निजामुद्दीन, सर्वोदय कार्यालय, देवरी, लखर
(४) होशंगाबाद	श्री हरिदत्त मंडल, होशंगाबाद जिला सर्वोदय मंडल - पो० दवागाव
(५) सुरीना	श्री लखनवीचन्द्र वैद्य, जिला सर्वोदय मंडल, सुरीना
(६) पिपची	श्री सत्यनारायण शर्मा, सर्वोदय कार्यालय, पिपची
(७) पना	श्री गोकुल प्रसाद शर्मा, महात्मा-बेनीनगर, पना

पंजाब

(१) चौबीस घणना	श्री श्रीकृष्णचंद चक्रवर्ती, मार्गद-वारी मीरद, पो० टारमंद टार
(२) बड़का	श्री मोहनजी मोहनचंद, ग्राम-नाथपलपुर, पो० हडम्बरपलपुर
(३) मुक्तिदास	श्री अहिभूषण शर्मा, ग्राम-पो० फेंदार चादपुर
(४) प० दिनारपुर	श्री डा० ईशचन्द्र सिन्हा, ग्राम-गीरीपुर, पो० शक्तिबाग
(५) बीरगुम	श्री सत्यापती सिद्ध, सर्वोदय आश्रम, बाजीग्राम, बीरगुम

बिहार

(१) रौंकी	श्री योगेश सिद्ध, जिला सर्वोदय-मंडल, रौंकी
(२) गुरुवा	श्री वैद्यनाथ प्रसाद श्रीधर, सर्वोदय आश्रम, श्रीमतीपट्टर (पूर्व)
(३) धनबाद	श्री रामनरेश सिद्ध, सि० ता० प्रा० संघ, मरिया (धनबाद)
(४) हजारीबाग	श्री स्वामिमुन्दर प्रसाद, विहार सर्वोदय मण्डल, कचम हुंसी, रजद

महाराष्ट्र

(१) बुलढाणा	श्री नारायणराव जवरे, जिला सर्वोदय-मंडल कार्यालय, धाट्यावा, पो० मुनगाव
(२) नाशपुर	श्री संकेत शंकर, सर्वोदय-कार्यालय, अम्बेकर भवन, हुमना रोड, नाशपुर-२
(३) गूदा	श्री महाश्रीदेवी विचलकर, सीवागल बाग, मातापणजे, गूदा
(४) अहमदनगर	श्री रा० वि० श्यामकर, सर्वोदय केंद्र, राठुड, ता० अशोके

असम

जिला	प्रतिनिधियों के नाम व पते
(१) जलपाईगुँ	श्री राजलालचंद्र दे, जिला सर्वोदय-मंडल, बलरांगुड़ी
(२) दरंग	श्री हिमेश धरा, सर्वोदय उद्योग-केंद्र, पो० केवरीबाड़ी
(३) बामनग	श्री लोकराव भूदर, असम सर्वोदय-मंडल, बादमाटी, गुवाहाटी

आन्ध्र

(१) महाबूदनगर	श्री निवार्य देवही, सर्वोदय-कार्यालय, नागा, कर्तूर
(२) नेल्लोर	श्री देनद कुमाराजी

उत्तरकल

(१) सुन्दरगढ़	श्री भजनचन्द्र महावीर, ग्राम-सोरावा, पो० कुलीरोव
(२) रामपुर	श्री मदनमोहन दाह, उड़ीसा भूदान-समिति, पो० सुपने
(३) केजूर	श्री कीर्तन विश्वी महावीर, आनन्दपुर, केजूर

केरल

(१) त्रिक्केरम	श्री अनारद तिल्ले, गांधी सारद मिषि, त्रिक्केरम
----------------	--

वमिलनाड

(१) कन्याकुमारी	श्री शिरुते कुमार दास, कर्त्तव्या-केंद्र, पालोटी, पो० कुमर-रिवासरम
-----------------	--

पंजाब-वेप्यू

(१) गुलशान	श्री वीरदेव कपूर, कगारद में २५ के, मन्दीक रेलवे गीटा, देसाही
(२) कल्याण	श्री उदयचंद आचार्य, खादी विद्यालय, रामगुला (कल्याण)
(३) अमृतसर	श्री कल्याण सिद्ध, जिला सर्वोदय मंडल, अमृतसर
(४) रोपिवापुर	श्री गणेशचन्द्र प्रसाद, मार्गद गांधी राउर भंगार, रोपिवापुर
(५) टपियाना	श्री लखर उज्जवर मिश्र, जिला सर्वोदय कार्यालय, टपियाना

गुजरात

(१) महेशाण	श्री योगेश्याल पुटेज
------------	----------------------

हिमाचल प्रदेश

(१) मण्टी	श्री स्याल्यल बर्मा, मार्गद-बाराबंकी, ७० भाजोड, टिमज १
-----------	--

अशोभनीय पोस्टरों के खिलाफ बढ़ते हुए जनमत का प्रवाह

अशोभनीय पोस्टरों का निर्माण व प्रचार बन्द हो

इलाहाबाद के छात्रों और नवयुवकों की एक सभा में शुक्रवार, सां २० नवम्बर १९११ को निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किये गये :

दिल्लय-व्यवसाय सम्बन्धी प्रस्ताव

इलाहाबाद के छात्रों और नवयुवकों को यह तथा इस बात पर बलाना बहुत खेद और निन्दा प्राप्त करती है कि देश में बने जा रहे पिछले हैं। एवम् और वषय में निरन्तर विरहट का रही है और इनके प्रचार के लिए जो विज्ञापन तथा पोस्टर प्रकाशित किये जा रहे हैं, जो अशोभक तथा अशोभनीय होते हैं। ये दोनों नवयुवकों को दुर्गमियों की शोषण तथा निरोध भावनाओं का पुनरोत्पन्न करने हैं और जनन प्रमाण एवं किलन उषय प्रकाशक को सदाचारो जीवन के प्रति आकर्षित करने के समर्थ, उनको सख्त शास्त्री पर और अशोभक भावनाओं को और उत्तेजित करते हैं। इस कुप्रवृत्ति के कारण देश भर के नवयुवकों को परिचय का बडा हान हो रहा है और इससे न केवल राष्ट्रीय प्रति में शक्ति लुप्त होती, बल्कि उद्योगी भावनाओं को नष्ट करने पर आती है। इसलिये यह सभा दिल्हय-व्यवसाय के अन्वेषण करती है कि इस व्यवसाय को तत्पक्ष प्रचारार्थक विचार करे और दिल्हय-विशाली और वनके विज्ञान को सारा पदवियों में ऐसे शोभक और प्रमाण्य परिचयन और प्रचार करे, ताकि इनका नवयुवकों के ऊपर खल्लय नकरे और उनके शोभक तथा शैतिक क्षमता और विज्ञान में सहायक हो।

सिनेमा-मालिकों और महा-पालिका सम्बन्धी प्रस्ताव

इलाहाबाद के छात्रों और नवयुवकों को यह तथा इस बात पर बलाना दुःख प्राप्त करती है कि नगर और दोकानों पर सिनेमा के जो पोस्टर और विज्ञापन किये जा रहे हैं, वे अशोभक हैं। इनके कारण हमारे युवकों, छात्रों और शालकों के दिल व विज्ञान पर खल्लय उत्पन्न करने जाते हैं और वे सख्त शास्त्री पर और दुर्गमियों की ओर बहक रहे हैं। यह सभा इलाहाबाद के सिनेमा-मालिकों के अन्वेषण करती है कि इन विज्ञापन को तत्पक्ष प्रचारार्थक और नगर की शोषणों के अशोभनीय पोस्टर हटाये। और छात्रों के लिए भी सभा, सभाका वर कर दे। साथ, यह सभा इलाहाबाद की महापालिका के निवेदन करती है कि हर शालके में छात्रागमि बन्दे और देश प्रचार करे कि अशोभनीय पोस्टरों और चित्रों के नष्ट हो सुनिश्चित हों।

प्रांतीय और केन्द्रीय सरकार सम्बन्धी प्रस्ताव

इलाहाबाद के छात्रों, नवयुवकों को यह तथा प्रांतीय और केन्द्रीय सरकारों का प्रचार इन कुप्रवृत्तियों को तत्पक्ष प्रचारार्थक है कि हमारे देश में बने जा रही हैं और इनके अन्वेषण करने के लिए हमें सख्त शास्त्री पर और दुर्गमियों की शोषणों को नष्ट करने पर आती है। इस सभा के अन्वेषण करने के लिए हमें सख्त शास्त्री पर और दुर्गमियों की शोषणों को नष्ट करने पर आती है। इस सभा के अन्वेषण करने के लिए हमें सख्त शास्त्री पर और दुर्गमियों की शोषणों को नष्ट करने पर आती है।

काशी में मोन जुलूस

१९ नवम्बर को कुल्लय निरुत्थान, किन्तु कर्मा है विल। सत्वाग्रहण का शोभकप्रकार प्रयोग। नगर भर में इतनी सख्त शक्ति प्रदर्शित। सन्तुल्यतापूर्वक आन्दोलन विज्ञान प्रयोग को महत्त्व, सर्वशोका रूप, सर्वोपरि नवयुवक, शोभनीय तत्पक्ष-प्रचार तथा छात्रों को विभिन्न प्रकाशनों के कार्यकर्ता सभाका वर कर दे। साथ, यह सभा इलाहाबाद की महापालिका के निवेदन करती है कि हर शालके में छात्रागमि बन्दे और देश प्रचार करे कि अशोभनीय पोस्टरों और चित्रों के नष्ट हो सुनिश्चित हों।

पोस्टर तथा अन्य चीजें नहीं देखें, परमेश्वरी छात्रों में श्रावण की शक्ति उत्पन्न करने लगी तो नगर भर में अत्यन्त प्रयोग। लेकिन! यह सब चीजें नष्ट कर दें। ये सख्त आदेश हैं जो रहे हैं, पर मोन कर्मों हैं। अन्त, इनके अन्त में अत्यन्त कुल्लय है। इनके

वर्मा में भी अशोभनीय पोस्टरों के खिलाफ आवाज

श्री यशवन्तजी, संसदक 'बीरन्त अखिल' को सख्त से उनके मित्र डा० ओम्प प्रभाकरजी ने अपने ८ नवम्बर के पत्र में लिखा है कि वर्मा में भी अशोभनीय पोस्टरों के खिलाफ आन्दोलन होना चाह।

पत्र इस प्रकार है :
"२१ दिसम्बर '१० से १ जनवरी '११ तक गाढे में आर्य-समीक्षण हुआ। अत्यन्त दुःख और अत्यन्त खराबी थी। १२ नवम्बर से ५५ प्रतिनिधि आये। उनमें कई उद्योगी प्रचारक पारित हुए। एक प्रस्ताव विनोद के संबंध में था, जो इस प्रकार है :
सूचक और धर्मविषय में विनोद द्वारा जो अशोभक चित्रों में प्रेषण मिलते

हैं, उनको ध्यान में रखते हुए वह समेलन भारत तथा वर्मा के विनोद सेना-संगठन से प्रकाशित करता है कि वह इस विषय में अधिक जानकारी रहे तथा चीन-प्रमाण किल्लियों और अशोभनीय पोस्टर का का प्रदर्शन बन्द करवाये। साथ ही जनता और संसदों में प्रार्थना करता है कि अशोभक चित्रों, अशोभनीय पोस्टरों, आशोभक चित्रों तथा चित्रों के विरोध में लोकमत स्थापित करे।"

सरकार अशोभनीय पोस्टरों पर पाबन्दी लगाये

आज सभा, विरोधक छात्रों के १ जनवरी के सप्ताहिक सत्रों में पारित किया गया प्रस्ताव इस प्रकार है :

"आर्य समाज, उपनिषात शोध, विरोधक छात्रों की यह तथा आर्य समाजों द्वारा विचारों के अन्वेषण तथा दुर्गम अशोभक चित्रों और अशोभनीय चित्रों को नष्ट करने के लिए हमें सख्त शास्त्री पर और दुर्गमियों की शोषणों को नष्ट करने पर आती है। इस सभा के अन्वेषण करने के लिए हमें सख्त शास्त्री पर और दुर्गमियों की शोषणों को नष्ट करने पर आती है।

कि वह अशोभक चित्रों, अशोभक चित्रों तथा चित्रों के विरोध में लोकमत स्थापित करे।"

संपादक के नाम पत्र

आदर्शपूर्ण श्री यशवन्तजी,
"सूचना-पत्र" के सां २० नवम्बर '११ के अन्त में श्री शशीपुत्र कुमारजी द्वारा 'संस्कृतिक विवेक के लक्ष्य में विज्ञापन-पत्र' शीर्षक संपादक के नाम पत्र और उक्त पर आभारों लिखी चली। उक्त पत्र कर आभारों और दुःख हुआ। श्री शशीपुत्र कुमारजी ने पत्र में लिखा है कि दुःख विनोदजी के सेवार्थी अत्यन्त वर पत्र पर अत्यन्त अधिक लिखते हुए, दुःख और अशोभक चित्रों का अन्वेषण करे है। साथ यह विज्ञापन विवेक है कि सेवार्थी के सम्बन्ध में भी शशीपुत्र कुमारजी का यह

सेवार्थीय स्यात्-संगठन, उक्त है। बाज के सप्ताहिक पत्र हूयें। पूर्वोक्तों में ही चीनका बन्धनी थी और स्थानीय नागरिकों के साथ मिल कर एक सप्ताहक सभिये बनायी थी। इस सभिये में ही स्वागत का सख्त अन्वेषण भी थी। स्थानीय सहायक से ही सर्वों की व्यवस्था की गयी और अधिक-से-अधिक छात्रों को ध्यान में रखी है। सभाका आदि अधिक छात्रों के लिए हमें केवल लाने-ले जाने की नवम्बरी देनी पड़ी है। सख्त शास्त्रीयक सभ के सख्त पर शास्त्रीयक छात्रों, दुःख का होते हुए भी शास्त्रीयक वाले माई के अत्यधिक स्वागत और आभार के कारण है। सभाके के नाम पर हमने केवल पत्र, सभा, मोनवाक्य आदि को अधिक-से-अधिक ध्यान-सुधर रखने का प्रयास किया। जो-किस सत्रों में भी हमारा सर्व-दुःख का प्रत्येक सभिये-सम्मेलन से वम आया है।

सोम्य वेदों पर्य्य चारों है। श्रावण सत्र और नगर, और छात्रों का अत्यन्त वर सख्त शोभक इन अशोभनीय पोस्टरों को हटाने, पानना ही नहीं, श्रावण चीन नष्ट हो, उक्त चित्रों और चीन नष्ट हो। और अन्तः अशोभनीय पोस्टरों नष्ट हो।
दाखनसख्त पूर्वोक्त आया, व और शशीपुत्र कुमारजी। सभी विज्ञापन नवम्बक हुए, और उन प्रमाण्य की निरुत्थान यह चली, सभी प्रमाण्यक विज्ञापन।
सर्वोदय नव अशोभनीय चली
-विनोद भास्कर,
वेरापुर

इस मेल पर एक सत्र होने तो-पत्र है कि हमारी स्पर्धा सख्त रही। सत्र-सत्रों की नहीं हुई और कोई सख्तने वाली कर्मों की नहीं रही।
आया है कि सेवार्थी के सम्बन्ध में अन्त में प्रमाण्य सभिये-सम्मेलन करे लोको का प्रमाण्य-विज्ञापन करे।
विनोद भास्कर
वेरापुर
नवम्बक

विचारधियां

विचारधियों तथा कार्य विचारों के आ-
रम्भ प्राप्त हुए, उनके अन्तर्गत इन अन्त-
र्गत प्रतीक में अपने एक-दो अर्थ मिलों
के भी निधि के लिए वरदान प्राप्त की।
“राम के मुक्तके भावना पर ही अधिक
धन” देकर भी हृदय विद में उचित ही
रिधा है। सदा दो ही विचारधियों में से
देख जो विचारधियों में स्पष्टगर्भक इत वर
में भंग किया, पर वन था नहीं है।
इतना ही नहीं, अन्त-के-अन्त तक वरदान वाले
वैशेषिक के चरित्रधियों में भी इस संघर्ष
में अन्त नैव दिया।

मांगना नहीं, देना है

आत्मकल हर शहर में फूट
गई बस्तीयों होंगी है। दर-
अहक होना यह बाह्यो भी गौरी
बस्ती अगल शहर में है, तो
अधिका भाँवसात नगर-नीम का
करना बाह्यो। कौन का
कल मयूनतोवाहोही काम करमों
के बदलें बाह्यो के हावड़न
में ही समक आती है। तपोशा
रह होवा है की कर्म बनवा
नहीं। गौरी बस्तीयो कायम है
रहती है।

ह्रीजन याद रामे की
ह्रीजन-परीजन मां द भम कानून
में नहीं रहा है। कानून में
मजना काज कीया है, जब
नागरीक को करना है। ह्रीजन
भयर हमें यह संकट है, यह
संकट है, असा कह कर धीमे
से भूतकी भीम्वत नहीं बढ़ाये।
मामने के बदलें देना बाह्यो,
धमो समाज में जोडवत बढ़ाये।
कागाभीक परतोपटा मंग कर,
केगडा करके, दौन हाँकर, हीर
दुका कर नहीं होंगे। हम सबक-
भरण है, असा समझ कर सेवा
करनी बाह्यो। वामो मंगना बाँड
का देना बुद्ध करना बाह्यो।
दुकरे का परतोपटा बाह्यो,
औकरी राह नहीं देना बाह्यो।
परापेटा वामो है, तो देने का
करा। संपत्तीदान देगे,
धनो का हीसा देगे और
सर्वोदयपार तो रजमे ही।
उमरी सारे समाज में से ह्रीजन-
परीजन का मां द भीमगा और
दुदुपार होगा।

—बीनोबा

अपने में आत्म-विश्वास पैदा करें

श्री कुमारपात्री की स्मृति में प्रामो-
दोमें ता एक सहाय्य और एक प्रामो-
दोम केन्द्र स्थापित करने की दृष्टि से देना
के लिये हुए गणक-न लोगों ने पंच एतल
करने की धनसक्ति के लिए अनेक विचारों
की। हम उन कामों में कि आत्मकल एक
प्रकार सार्वजनिक कामों के लिए धन-सहाय्य
करना कितना सुविधा हो गया है। आसारी
के बाद एक पुनःपुनः मनीसि दिव में
आती है। इसका मुख्य कारण यह है कि
लोक-चक्रांग के नाम पर सार्वजनिक सेवा
के लिये लोगों में उत्साह का उत्पन्न बढ़वा
का रह है। लोग करते हैं कि उत्साह इन
कर कामों के नाम पर देना बस्य करती
है, फिर हम सार्वजनिक प्रयत्नों के लिए
अत्या से भय नहीं है—हालांकि यह
दोस्त धर्मियों को वा देखे ही सुधारक
लोगों को उम्मीद नहीं है, विनयी आन
दुःख है कि न्यूतन सीमा के उत्तर
है। सुदृष्टी धर्म धर्मियों की एक ओर छोड़
दे दो भी देना में उत्साह देखे लोग है,

विनके योगे-योगे सर्वयोग में बने-बड़े काम
पार पर सकती है।

“मूलतथ्य” में वत हमने कुमारपा-
त्रियों के लिए अनेक विचारों, उन एक वाक्य
की जानसारी हवाओं तक तक धुँवाँ
और धन-सहाय्य में उनका सहयोग प्राप्त
करने के कलाया को मुख्य बाव इत्ये वन
में की, यह वर भी कि इस रहने मुख्य भर
में बैठे हुए हवाओं पाठकों में—ओ विचारों
में व्याप की दृष्टि से वन्य वर या निचले
मध्यम वर्ग के ही लोग होंगे—आत्म-
विश्वास और अधिनयन बावले हो। आन
देव में एक तरह का असीध, उल्ला और
सिद्धिवा का वातावरण छावा हुआ है।
लोगों की भाव नहीं है कि उनके अन्त-
रहितनी प्रति द्वियी गरी है। अन्त-र
देखे वामों के लिए कुछ करने में किमकरो
है, पर उत्तर एक किमकत को छोड़ कर हम
काम में प्रवृत्त हो बावले अपने-आपने
बावले में हम कितना काम कर सकती है,
वह नीचे के एक वर में मन्व्य होय।

मैं “मूलतथ्य” वर का एक सहायी चारक हूँ। ३० दिसम्बर के वर में
“कुमारपात्री-निधि” के लिए वरों एकत्र करके दो ओरनी अपने-
मूलतथ्य वर में, उनसे मुझे अपना निधि देना प्रेरित की इच्छा हुई।
परन्तु मेरे वर में वर निवार उल्ला रहा कि वर इतले लिए अपने
कालेज के विद्यार्थी और निवाक ताधियों में भी उन विधि में दान
करने की प्रार्थना की जाय? कई लोक तक विचार करने के उपरान्त अने
हमें निश्चय पर विचार पामो कीर निवचन विधा का वरन धले कार्य के
लिए अवश्य प्रयत्न किना जमा बाह्यो। विचारधियों में देखे वारों
के लिए मादना उत्पन्न करने का मैंने अपने रिधा-उत्सर्ग का एक
भाग भी दसप्रम। इसलिये कालेज के प्रयातन के अन्तर्गत बाह्यो
की और उनसे अनुचित विनये पर विचारधियों के इत विचार पर वर-
नको का, जिसमें उनको वावो, अन्त-विचार और वारा वरवर्ष के उत्तर
सहाय्य करके विचार, श्री कुमारपात्री का योग और सिद्धि है। वर में
भी जाताय। दान देने में मैंने एक के मुक्तके भावना पर ही अधिक
धन दिया, इतलिये वर को एक अन्त-के-अन्त एक गया सेवा और
कालकनी-विचार एक वरवम रही।

हमारा कर्तव्य हीर कालेज है, विनये देवर्तनी और भीदवर्तनी, केवल दो वरवर्तनी।
नीचे लिखे अन्त-र विचारधियों में इत कार्य में माय विनय।

वत्सा	विचारधियों की कुल संख्या	दान देने वालों की संख्या	रकम
१३	१३०	७४	६०-२०७०
१४	१६	७७	३०-६९
			१५-१३
			योग १००-२२

व्ययपत्रक अपने विचारक धर्मियों से भी मैंने दान देने के लिए आग्रहपूर्वक प्रार्थना
की और कभी धर्मियों ने दानपुस्तक दान दिया।

आठ निजी फालेन
मुक्तकाल (उ० म०)

हृदय विद
अप्यद, रसायन का विभाग

*विधि-संकेत: १=१; १=१
१=१, धनुषाक्षर हस्त विद है।

आधा है, हमारे अन्त पात्रक भी
इतले प्रेरण लें।

—सिद्धराज

आंदोलन के लिए शुभ विद्व

३० जनवरी के दिन राणा कैद,
काली में हाकिमीक विचारक का आरंभ
की वातमात्राओं के हवाओं हुआ और उत्तर
पुनो के वाव उल्ला कानून में श्री काको-
वारी के हवाओं महापुत्र के बावर्तनीओं
के एक विचारक वरने का आरम्भ था। हौनो
पटनाद आन्ध्रकेन की दृष्टि से महावर्तनी
है। हाकिमीक वरनों के लिए विचारों के
विवरण में ही कुछ को चुका है। वनमें थे
कुल कम लेय विचारक का माय अमी वनका
पवने हैं। कावर्तनी अन्त-र उल्ला है कि
“अनार का” जोड कर महीनों के मैथे धन
बावद विचारक वरने में मन्व्य होकर है
वर्तनी। हम वरको इत वात का मात होने
की आवश्यकता है कि अन्त-र वरने के
वर्तनीओं आन्ध्रकेन को उल्ला बनाता है
की उनके लिए विचार की गवर्तनी में वाना
अपनय आरम्भ कर है। धुन आन्ध्रकेन
वमान-वचना के परिचरित का अन्त-र है।
उल्ला वनर न देव की धीमती से मन्-
रिध है, न बीनय के किनी अन्त-रिधो है।
सर्वपण का आन्ध्रकेन अन्त-र भाग में एक
वर्न आन्ध्रकेन, परन्तु वातावरण
उल्ला वन कीमिद वन। देना इत
आपोदरन का नहीं। हमना का परिचरित
के माते हैं धुनो का परिचरित, वाते लोरी
के विचारों और उनको मान्यताओं में
परिवर्तन। इतलिये इत वर में ही हुए
कार्यवाही को दुनिया का निजि विचार-
धर्मों, जीवन के विधि अमी और
प्रयत्न मान्यताओं की मनो-रहित कु-
वर्तनी की वरवर्तनी में वाने ही कुछ अन्त-
रवर्तनी है। हाकिमीक वरने इत के अन्त-
र और भी कुछ ध्यावर्तनी वरों का वन
दालिक कर लेना जाती है, जिससे वह
व्यथी और अन्त-रवर्तनी के मैथे पर वरवर्तनी
और हाकिमीक वरने में कामयाब
हो वरने।

इत दृष्टि से इत विचारक-वर्तनी की
सुखवत आन्ध्रकेन के लिए एक शुभ
विद्व है। आधा है, बावर्तनी इतके वाव
उल्ला वने।

—सिद्धराज

नई तालीम : नया जीवन-मूल्य

रामचन्द्र

"आपका नाम ?"

वेग से बौड़ने हुई देखागड़ी से अजबके धार के खेत और दूर पर दिखाई देते पहाड़ पीछे छुट रहे थे। मैं सोचना जा रहा था—"विहास भंजितं त्वं कदा कदा थापे वद रहो है।" हज अस्त मूल अते हैं कि उसके साथ एम भी आते बड़ रहे हैं। काज। हम सभी अपनी मंजिल को सख्त जाने हैं।

"जो ! कोल सुनो... बहने हूँ"—सदयाची के प्रश्न हैं। चीन-ना गया।

"मेरा मतलब... आप कौन हैं ?"—ओरो जिस्त के साथ वलमून की जेब से सिगरेट निकाल कर इतमीन हैं। उसे दिखासतलाई को बिंबिया पर ठोके हुए उन सख्त ने पूछा।

"अंतर कि आपको बोल रहा है : मे एक मारमी हूँ।"—नेगे कुछ मजा लेते हुए कहता।

"आलिं ? साहब आप करते क्या हैं, क्या जाति है आपकी ?"—हल्के रीक के साथ जहंने पूछा।

"जो ! कहां सो कि आदमी हूँ। मेरा क्याल है, इस पर धका नहीं होनी चाहिए। और र्ही बात काम की, सो मैं परतो जमीन को खोद कर कुछ पैदा करने का अम्यास करता हूँ। मोटे तौर पर आप वो समझ लीजिये कि बमाने-खाने की कोशिश के सिवा बिचोप और कुछ नहीं करता, धायद आप मुझे मजदूर जाति का भावें, लेकिन मे तो अपने को इत्सात मान मानता हूँ।"—कुछ विभोद के साथ मैं नेने वहा।

"तो क्या आप सर्वोच बलि है ? मैंने तो आप को 'आले हुरुं' कहा था।" उस्तामीन भास से चेहरे की बदलती हुए जमीने अपनी सिगरेट मुकामावी।

"मैं फिर बाहर के इरावे में खोने की कोशिश करने का, लेकिन शर तक पूरी तरह उतार बाढ़ूँ। प्रतो मैं उरुह मुकामा।"

"आलिं साब करते क्या हैं ? क्या जाति है आपकी ?"—

हमारी से (विश्वस्तारें धन (मनी), अधिकार (वावर), सम्मान (कोजि-दान) हैं। कब मैं एक ओर तो हमारी संजिक्त माननाओं को रोचर देती हैं। दूसरी ओर हमारे बीच आपकी। और की बीमारें लड़ी करती हैं। और सबसे प्रमुख बात यह कि अन्यथा का उपहार करती हैं।

"सर्वोद्य-आन्दोलन को सर्वो-संपर्क का निरूपक पैदा करता है, बुद्धिमानि कब वदान की गतिवा गती कर सिधाय की प्रक्रिया हो गयी है, इतना-विद नई तालीम ही सर्वो-संपर्क का निरूपक है। तिसमें नई तालीम को स्याम की यहा-नौयारी को धारर सामान्य सामाज में ही सम्मन दे।"

आदि विचार नई तालीम के बारे में सामने आने रहते हैं। फिर उरने साथ मजदूर को जुदा दखार है कि उरने रेरे को है। टीक जो प्रारभ, नैरे कि वह सख उनका करता है। कि सोरोन-आन्दोलन में कोनका हारवम पैना निवा आर, को इरावे गति पैदा करे, नवीं आवे; पर कि इरावे और निशापण के बाए एक पावेअम रखत जा रहे हैं। तात वान बनायाजि होना चाहिए, लेकिन प्रजापार के लिए यह जरूरी है कि अन्तर के साथ हुए विरुन अविशान युवा हो, कार्योप के लिए दिव कर हो तो फिर आन्दोलन से भी सामान्य

निव नयह है और न विद्यार्थी न, इतलिए इकके नुहारदीवारी है। अवर का सिधाय बरसाभाबिक ही होगा, यानी वह औद्योगिक को तालीम नहीं हो सखी। सामान्य उपाय में प्रवेश करने के लिए जब हम सरका के दरवाने पर जाकर खड़े होते हैं, तो वो बाएएँ दिखाई पड़ती हैं—

एक वो यंतमान उपाय को यथा-स्थिति में चलने के लिए प्रचलित तालीम। इतरी, सर्व-निराकरण के लिए वगुु की नई तालीम, सिधाय सर्वोप पाठय में सब तक बगुन सीमित है। समाज एक को र्थाय मानमें वृद्ध भी छोड़ने को तैयार नहीं और इनके को सहाय्य करते हुए भी अमलने को तैयार नहीं। यह एक संघटनागीन स्थिति है।

तालीमों संघ और सर्व सेवा संघ के संघ के बाद पूरा सर्वोद्य-आन्दोलन ही नई तालीम का काम घोषित किया गया। अद्यय संस्था की तालीम जो सखन बंद हो गयी (जो होनी ही थी)। लेकिन कारोलन के कार्य में नई तालीम का आधार अकार्य में भाग्य ही, पैसा नहीं लगरा। परिस्थिति ऐसी है कि प्रचलित तालीम को पोषता कर हम जारी एक विविष्टता के साथ सख विचारी पकामें को उरका यथाअम्यापी अवर नहीं होने पे ही और प्रचलित तालीम में प्रवाह को उरविश-कार्य को और मोड जाय, यह भी उरफल सम्भव नहीं क्या पड़ा।

सवासाय का कारोलन प्रत्यय प्रनि-कार को असुधोपके के आधार पर क्या। बरने मुरुक से विवेचियों को यामने के लिए वन-बाएएँ हुई और सखपुं देन की आवाज ने "अबेओ पाठय छोरो" का गारा बन-गाया। लेकिन जीवन के मुबुं को बरलने के लिए निरवय को उरुपोय साथ बाधे नहीं है। विन मुबुं को हस नाम में व्याप देनामा क्यते है, बरने बरने जीवन का आधार बाएएँ सारी यविदुकाओं के अदना ही पारने। पर यह पूरे वर नये यामबीन मुबुं की उलास, बरने लिए उवरार आहूद का प्रयय सत्यापय्य और प्रतिहार, इन को गतिमें वर ही नई तालीम को यामा क्यते बिगरेती है।

सत्यापय्य और सत्याप्यही सख नई तालीम और नई तालीमों के साथच नै कोई भेद नहीं। नई तालीम अरुपु में आम मुकुर कर से हीन प्रवाह सिधायी वर रहे हैं।

(५) प्रचलित तालीम में नई तालीम के उत्तरों को स्थान देने के लिए उरवरार के आहूद दिया सख और नई तालीम के सिधायकों को उरवार डाए अकार्य-बपया जाय।

(६) देश में नई तालीम के सम्पुं वि को समाज के सामने प्रस्तुत करने के लिए विद्यालय मुबुं और प्रयोग के सं- में बालने जायें।

(७) अर तक के अनुभव को समग्रता-पर नई तालीम की अरली मंजिन की सजाय को जाय।

वही तक प्रचलित तालीम का प्रय है, आम की आर्थिक परिस्थिति में अलास बढ़ाने में बिच का हर राशु पूरी हास ले सगने नै कीशिय कर रहा है। अरिण सख मार्गिक वीरार हो सखें, इतके लिए सिधाय में प्रत्यय सत्यापय्य नवीं तालीम या रहा है। मीन का तो गारा ही है। "बर्न ग्राइव कु रिड"—नहाई करके बस काम करे। अपने पैसा में अरका को बुनिवारी सिधा-नीति के अनुवार छोटे-छोटे विद्यालयों में लेती, बाधनी, सदाई आदि बलता हो है, लेकिन जेभी सिधा में उरवाव-कार्य का बीरे अमान नही होने तथा अन्य सामाजिक कार्यों से उरवा अमान उरवाव-कार्य ही कहा जा सख है। अरिण वकालता की बरपा म रखे हुए प्रशासनी अरिण काम उरवार से मुक से आदिर तक की सिधा में उरवाव-कार्य कोरने का आहूद करे, तो अलास कुछ परिणाम नवर आवे।

मनुष्य और प्रयोग के लिए नई तालीम के माय पर सखरते लगे बरता है। "आहूद बांण करे ही भुरा है। हमारी जिबरी और सारे काम ही सिधायन ही, इनके लिए सार्भाधिक जीवन और इतना अविश्वार्य है। हमारी रीत व आचार उरवार अरम को मानना व सर्वोप यकोठी परिचारी, नवीं में मुकाम हो चाहिए। इतके लिए दो बार्नकम हो जयने हैं।

(१) जिनेके अन्तर नई तालीम के सिधे उरने है, ऐये विचारों को निरिचारी ना—विन प्रचार मुनिहीमें को वीर बरने जा रहे हैं—नीक बरवा बाएएँ। अरिण विश्वाह से इन पर ओषा का सखता है, लेकिन एक सखी को अरुन अरुन तैयारी यह होनी चाहिए कि बानो रीत के लिए बहो बाहूँ। नै पैदा नहीं होने, अरपा रह और भी संथा का ही एक वर को बामा कोर उरने रहने बामों पे नई तालीम के प्रयोग और अम्याप के लिए नई, वरवा को सिधे प्रयल बरता होय।

(२) जिनेके अन्तर बामबिराज है और तेओ उवा उरवीं डाए अरुनी अरिण बच्य अरने को सख ही है, से इतिनी लिकी लिक के सख वर जाई, वही बुद्धिमत्त उपाययमान या उरवीरकम इतिरुन उवाययत हो सखें। परसखर नैरे का सखपन राने जाय विरों को टोपी का ऐये पावेने में, वही पूरे का अरिण-के अरिण

आन्ध्र प्रदेश में नई तालीम गोष्ठी

प्रचारकर

जनवरी १५-१६ को आन्ध्र प्रदेश सर्वोदय-मण्डल के उत्सवामय में प्रदेश के नई तालीम-कार्यकर्ताओं की एक गोष्ठी हुई। गोष्ठी में भाग लेने वालों में सर्वोदय-मण्डल के कुछ सदस्य, सरकार के नियुक्त बुनियादी तालीम-समितिके अध्यक्ष व मुख्यमंत्री गिद्या-मन्त्री श्री गोपालराव एल्लेठे, गिद्या-विभाग के श्री आनन्दराव, अखिल भारत सर्व सेवा संघ के सहयोगी श्री रामाङ्गलु श्रीदर उपस्थित थे। प्राचीय सर्वोदय-मण्डल की तरफ से ऐसी भीष्ठी का आयोजन यह पहली बार हुआ। करीब ३० व्यक्तियों ने गोष्ठी में भाग लिया।

एक गोष्ठी के सामने १-४ विचारणीय मुद्दे रहे। पिछले २०-२२ सालों से, जब से हिन्दुस्तानी तालीमी रूप को स्थापना हुई तब से, आन्ध्र में बुनियादी तालीम का काम करने वालों स्वतन्त्र संगठनों रही हैं। आन्ध्र काठौम कलायाला, मण्डली बन्दर ने दक्षिण भारत में सबसे पहले बुनियादी तालीम के काम को उठाने का श्रेय प्राप्त। उस समय सरकार 'निचे एवं वार्यन्तों काय हो रही' नाम में रूप है। हिन्दुस्तानी तालीमी सभ के नई तालीम-मन्त्र ने प्रविष्टत कुछ वार्यन्तों स्वतन्त्र रूप से नई सालों से बुनियादी तालीमी का प्रयोग करते आये। लेकिन पिछले ५-६ साल की परिस्थिति यह है कि ऐसी कानूनी रणधर्म में सब काम बन्द-सा हो रहा है या सरकारकी नीति-निर्णयों के अनुकूल भेजा जा रहा है।

कार्यकर्ताओं के सामने यह एक मुख्य प्रश्न है कि कौसी व्यवस्था जारी करे, जिससे बुनियादी तालीमी की स्वतन्त्र प्रयासों में पहले वाले विचारियों को नई-तालीमी की मूलभूत पद्धतियों से विज्ञान मिले और कार्यरत मिल में आये। इसका ही नहीं, उनमें से जिस लोगो की उन्नी तालीमी के लिए योग्यता हो, वे उसे प्राप्त कर सकें ऐसी बुनियादी व्यवस्था हो। आज दुनियाय से कौसी परिस्थिति नहीं है। बुनियादी प्रयासों में पढ़ाई होने के बाद उन्नी पद्धति की उत्तर और उत्तम बुनियादी प्रयास में पढ़ सकें और जीवन में उन शिक्षकों की अमल में आने की कोशिशें, सांस्कृतिक और सामाजिक दायता मिल सकें, ऐसी व्यवस्था नहीं है। इसे नीचे बनलें, यह उसके सामने एक बड़ा प्रश्न ही गया है। यह परिस्थिति कार्यकर्ताओं के अपने सम्बन्धों के लिए और गरीब के सम्बन्धों के लिए अत्यन्त ही *
पढ़ाई से चलने वाली प्रयासों में विज्ञान मिले है। बुनियादी तालीमी की पद्धति से चलने वाली विकें २ हजार प्रयासों हैं, जिनमें २ लाख शिक्षकों विज्ञान वाले हैं। विकें २७८ प्रयासों में बुनियादी प्रयास के आधिर के २ बनों की पढ़ाई होती है, मात्र कि ४६० मिलर तालीमी है, जिनका मुख्यतः बुनियादी तालीमी की पद्धति का उद्देश्य के साथ विज्ञान सम्बन्ध नहीं रखता है। एक उत्तर बुनियादी विद्यालय है जिसके विद्यालय ६ लाख का पठ्यक्रम पृथ करके के बाद मासुकी मैट्रिक की परीक्षा देने हैं। विद्यालय प्रविद्यालय विद्यालय ११२० हैं, जिनमें हर साल ५-६ हजार शिक्षक शिक्षण हैं, पर उनमें से आये हैं ऐंसे हैं, जिनमें बुनियादी तालीम का नाम नहीं है, कानो नाम मात्र के लिए बुनियादी प्रविद्यालय-विद्यालय हैं, ऐसा करने में कोई अस्तय नहीं होगा। वास्तुस्थिति यह है कि आज आन्ध्र बुनियादी तालीमी के बारे में कोई सात स्थान नहीं रखता है। जो तालीम का प्रविद्यालय विद्यालय बुनियादी तालीम के नाम से चलते हैं, उनके काम से भी जितनी की उद्योग नहीं है और सम्बन्धों नहीं हैं, जिनका कि कुछ हल हूँगा होगा।

गोष्ठी के सर्वोदय-मण्डल की यह मुद्रासा कि इस घाटी परिस्थिति के बारे में समय-समय पर मिल कर विचार करने के लिए, जो स्वतन्त्र विद्यालय चलते हैं, जिनमें बुनियादी तालीमी के मौलिक गुण हैं, ऐसे सब विद्यालयों की एक विचारणीय स्थिति करने के लिए सर्वोदय-मण्डल के अन्तर्गत एक नई तालीम-समिति का बन्ना किया जाय। यह समिति स्वतन्त्र रूप से चलने वाली बुनियादी प्रयासों का सचय-धन्य पर नियंत्रण और समीक्षा करके उस प्रयोग को सुव्यवस्थित करने को भीष्ठी करे। सरकार के अंतर्गत चलने वाली बुनियादी प्रयासों में जो काम होता है उसके बारे में समय-समय पर राय प्रकट करें, लोगों को विचार सम-आये और अपने रंग में काम चल सके

ऐसी प्रणाली-देकर संस्थाओं को मदद करे। समिति सरकार और स्वतन्त्र चलने वाली संस्थाओं के बीच कड़ी का काम करे।

नई तालीम-समिति में ५ सदस्य हैं। श्री आनन्दरावों और परमेश्वरदासवनों उसके संयोजक नियुक्त किये गये। समिति की भेदाओं में निम्न प्रकार विचार किया गया :

(१) स्वतन्त्र रूप से जो प्रयास चलती हैं, उनका काम आजादी के वातावरण में चले ऐसी परिस्थिति तैयार की जाय। सरकार की नीति और नियमों से इनका काम बन्द न हो सके इस तरह प्रयोग करने के लिए नई तालीम-समिति को और उसके अलग संस्थाओं को आजादी मिले, ऐसी सरकार से बचा की जाय।

(२) ऐसी संस्थाएँ बनी-बनी हैं, जिनमें प्रयोग चलता है, उसके २-३ वहुतों पर विज्ञान ध्यान दिया जाय, जिससे वाली प्रयासों को वैज्ञानिक मार्गदर्शन प्राप्त हो और वे प्रयासों कायकार के क्षेत्र सामा-यिक, सांस्कृतिक और आर्थिक विकास-नाम से भीष्ठी सम्बन्ध बनायें, जिससे प्रयासों की कार्यक्रम में इन विचार वार्यन्तों का पूरा सहयोग मिले। प्रयासों में विकास-नायकता के फलस्वरूप लोगों और बच्चों की विज्ञान का अवसर मिले। ऐसे प्रयोगों से सम्बन्ध है कि हूँमें आये बाकर प्रयासों के लिए अलग बराम, उद्योग आदि की दृष्टि से गरीब शोषण रोग, बन्द र्दर की बच्ची शोभा या शोषण-घाता ही बच्चों में विज्ञान का स्थान होती। प्रयास बहारी-बहारी से बाहर स्थान-लेनी। एक ही क्षेत्र में एक ही तरह की व्यवस्था करने के लिए अलग-अलग शरणों की आवश्यकता नहीं होगी।

(३) बुनियादी प्रयासों में विज्ञान का वैज्ञानिक स्वाभाविक धोर पर जाना चाहिए, नवीन बन्धा हर क्षेत्र की 'बच्चों को बच्चे' के ही शोषण है, वैज्ञानिक उन्नी को रूपक करने के लिए और विज्ञान-विद्यार्थियों को बुनियादी प्रयास के कार्यक्रम में मुख्य स्थान देने के लिए हमारी विज्ञान नीतिय नीतिय है।

(४) बुनियादी तालीमी के अन्तर्गत के लिए विकें विज्ञान-विभाग का नियम कार्य-क्रम बरखाने नहीं होंगे। यह अर्थ आवश्यक है कि एक एक कविचारी बर्न, जिसके हाथ में संघातन का काम है और दूसरी तरफ प्रयास का सामूहिक नेत्र, 'बिडे प्रयासों के सदस्य आदि को बन्धी तरह प्रयासों में *

प्रयास किया जाय कि मात्र *
में बुनियादी तालीमी के समूहों के पर कार्यक्रम बनाना किया और उसके न विकें प्रिया में सुचारु रूपे बरिष्क बहु समय को बढ़िया के आधार पर जीवन और स्वतन्त्र-बन्धा की तैयारी हो।

(५) यह भी उदा हुआ कि आन्ध्र प्रदेश में बुनियादी तालीमी के उत्पन्न से जो जो समिति सरकार ने चुनने वाली हैं, उनमें सामने एक विस्तृत योजना ऐसी बन-जिससे प्रयास भर में बुनियादी तालीमी के लिए अनुकूल वातावरण बने और सब विज्ञान क्षेत्रीय प्रयोग सम्बन्ध हों बहूँ आरम्भ किये जा सकें। जो परिस्थान बरखा है, सब बुनियादी प्रविद्यालय हो और उस सब को व्यवस्थित रंग से विकसित किया जाय। बुनियादी तालीमी में आज हबनों की विज्ञानों की एक बनी सम्भला है। उनके उत्पन्न और उद्योगों के संश्लेषक रूपों के बारे में संश्लेषक व विचार करना है, ऐसे अनुसंधान के कार्यों के लिए शर्तों स्तर पर अनुसंधान-केन्द्र आन्ध्र में कार्य। बरखे १० लाख की योजना बनाए प्रयास की तन्नाम प्रयासों बुनियादी तालीमी की नींसे हो उसके बारे में विचार, स्वतन्त्र और सरकार को मदद करने के हेतु व 'सर्वोदय कमेटी' सरकार नियुक्त की ऐसी प्रारंभ की जाय।

यह तो गुरुदास है। हम आशा करते हैं कि आन्ध्र प्रदेश में नई तालीम के नाम में सब धन आयेगी और सरकार, जनता और कार्यकर्ता मिल कर विज्ञान की उन्न-प्रयासों को जो कि काम बारी बारी बन्द गयी है, एक व्यवस्थित पद्धति में समाज-मूलरचना में अनुकूल बनाने के लिए कार्य करेंगे।

"नई तालीम"

विज्ञान विषयक सर्व सेना सप का मूलप्रश्न

- शिक्षा के विद्यालय
- शिक्षा-केन्द्रों की आवश्यकता
- शिक्षा में आर्थिक-समय प्रयोग
- शिक्षा और अहिंसा

विद्याय के 'सम्बन्धित अनेक प्रश्नों पर प्रकाश डालने' वाली आर्थिक पत्रिका।

"नई तालीम"

संवादक

श्री श्री प्रसाद और मनमोहन
पता : बालक भोजन सर्व सेना संघ १० हैवापाम (बर्फ) अण्डापुर

अशोभनीय पोस्टर्स हटाने चाहिये : देश के विभिन्न शहरों की माँग

फिरोजपुर

अशोभनीय विन्ना-पोस्टरों के विरुद्ध जो आन्दोलन देश में चल रहा है, उसका विचार करने के लिये ११ जनवरी को फिरोजपुर शहर सर्वोच्च महिला-मण्डल की बैठक हुई। बहिन सोहनदेवीजी ने बताया कि यह आन्दोलन फिरोजपुर के स्त्री-समाज ने हीन रूप में आरम्भ किया था। उस समय मगर के बालक विनों का बहिष्कार किया गया था, पर तब वह आन्दोलन बीच में ही रह गया, क्योंकि वह सार्वजनिक न हो सका। बहिष्कार बहिनों ने ही प्रकट किया कि आज के आन्दोलन की तरफ महत्व विनियों का ध्यान गया है और लोचनबल भी लागू हो रहा है।

इसके बाद समा ने यह विचार कि बहिनों, बाबियों में भूमि कर अशोभनीय पोस्टर, मन्ने विनों की हटाये के लिये लोगों के प्रार्थना रख करे। साथ ही बहिन मगर के दिनेमा-बालिकाओं विनों, स्कूल के छात्राचार्यों के हवालों के बन्दे बहिनियों के विनों और आन्दोलन को साथे लायें। मगर में उचित स्थानों पर सभ-बागियाँ बिलाने की कोशिश भी की जायगी।

आगरा

आगरा शहर में अशोभनीय विनों के १२० पोस्टर्स, जो दुकानों या होटलों पर लगे थे, जल्दने उतार कर हटाने के लिये १५ पोस्टर बाह्ये गये और १ सभा पोस्टर बनये सहित पाया गया।

शहर में घाट रहे कमल सर्वेज के एक अशोभनीय चित्र के हटाने के लिये रुचना देवे पर भी वह नहीं हटा, इसलिए उसको तोड़ दिया गया, यानी अशोभनीय चित्रा गया।

आगरा में छोटी-मोटी १६६ सभाओं की गयी। पोस्टरों को फाटने या उतारने के पहले उसका हटा समा द्वारा अनुरोध किया जाता है। इस समय शहर में से केवल एक विनेमा को छोड़ कर बाकी सब अशोभनीय चित्र करीब-करीब हटा गये हैं। एक विनेमा-संचालक ने अपने यहाँ अपने बाधे एक चित्र के पोस्टर हटाने में सहाय्य के पहले उनमें से अशोभनीय चित्रों को मिटा कर हम लोगों को पूर्ण सहयोग देने का आग्रह करने दिया। इस प्रकार ११ विनेमा हटाये गये हैं।

पूरा समय देने वाले शहर के १० लोक-सेवकों ने इस आन्दोलन को जनरलों के शहरों में भी उलझ बनाने का सोचा है। आगरा जिले के फिरोजाबाद शहर के दोनो विनेमा में आम अशोभनीय चित्र लगे, तो उनके विरुद्ध आन्दोलन शुरू किया जायेगा। एक सप्ताह पहले एक कार्यकर्ता मधुवा शहर में गये और १० जनवरी को वहाँ सभसे सभा सचिवों वाले शहर के अशोभनीय चित्र हटाने के लिये एक समिति का गठन किया। वहाँ दो दिनों के लिये आगरा के १० कार्यकर्ता यावावस्था निर्माण करने के लिये जायेंगे।

सदाशपुर

सदाशपुर में २२ जनवरी को बिल सर्वोच्च मंडल की ओर से शहर के कुछ प्रसिद्ध बहनों तथा विनेमा-पत्र-वि-एचन के प्रतिनिधियों की एक बैठक हुई, किन्तु अशोभनीय पोस्टरों को सार्वजनिक स्थानों से हटाने के बारे में विचार हुआ। सभी ने इस आन्दोलन को समाज के लिए आवश्यक माना। बहनों के सहाय्य करने में जो सहाय्य इस आन्दोलन से मिले, वह उल्लेखनीय है। विनेमा-पत्र-वि-एचन के प्रतिनिधियों से बाधे हुए हैं। इनमें एक भी अशोभनीय पोस्टर, जो 'मास्की' तथा 'गुनी' शीर्षकों के अन्तर्गत हैं। इन लोगों ने इस आन्दोलन का समर्थन किया और कहा, "हम इस तरह से आगे बढ़ेंगे कि सही समय तक ही पोस्टर हटाने से पहले हम लोग आगे प्रदर्शन को बुल कर वह का कर लेते कि सही समय नहीं

होगा"। इन मंडल के कुछ सदस्यों ने विनेमा को हटाया है। उन लोगों ने यह भी प्रस्ताव रखा कि "यदि विनेमा प्रेसुवर्य और विरुद्ध लोग ही इस प्रकार के पोस्टर न भेजें, तो सौ टिकट हटाने ही काफी है, अन्य नहीं पर टिकट हटा जानी चाहिये।"

सदाशपुर शहर में भी कई-कई विनेमा 'प्रकार' तथा भी सचिव-सचिवी नवीन-संस्था की ओर से प्रदर्शन हैं।

इलाहाबाद

इलाहाबाद में अशोभनीय पोस्टरों के विरुद्ध जनमत उभार करने के लिए कुछ सत्रों में समाज-आयोजित भी चली रही हैं।

नये कलेजे सुन्दर के विचारों द्वारा आयोजित समा में डा० सुन्दर, सुभ, सदाचक उरुसंचालक सिद्धा विभाग; भी प्राणनाय शर्मा; भंडी उरु सुभ सचिव मंडल; मारुषेन्द्र प्रसाद, शकीर सुन्दर कालेज के सिद्धा एवं अन्य विचार मान नामाधिकों ने कहा कि बहिन-निर्माण के लिये आवश्यक है कि समा हटाये अशोभनीय पोस्टर हटाने चाहिये।

२२ जनवरी को चक्र और मोहनसिंह गंज के विचारियों द्वारा आयोजित आमजल सिद्धा कालेज के प्राणनाय में डा० सुशीलर सुभ की अध्यक्षता में सभा हुई। कालेज के आचार्य रामलालजी, आर्य सुभ के कार्यकर्ता भी मंडल-सभा आगयी आदि महत्वपूर्ण ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि विनेमा-सभा ने टिक समय पर आन्दोलन होगा है। इसे प्रकट समाजता चाहिये, यदि जो भी आन्दोलन है, उसे हटा दिया जा सके।

२० जनवरी को निर्दिष्ट समा में गांधी प्रार्थना समाज की सार्वजनिक बैठक भी इस विषय पर चर्चा की गयी। वहीं डा० सुभ, एन० गिरिधर, बहने, आचार्य, स० गोपीनाथ शर्मा हिन्दी-सिद्ध के अध्यक्ष और श्रीवासवजी, संस्था गांधी प्रार्थना समाज ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि पोस्टर-आन्दोलन का आयोजन है कि बीच के हर क्षेत्र अशोभनीयता मिटाने चाहिये।

बुलंदशहर

२० जनवरी को 'अशोभनीय पोस्टर हटाओ समिति' द्वारा आयोजित एक सभा संचालक कालेज के सुशील आचार्य भी अध्यक्षता में आयोजित हुई। समा में दो प्रस्ताव पार किए गये। एक प्रस्ताव में भारत सरकार से अनुरोध किया गया है कि वे अश्लील और अशोभनीय चित्रों पर कडा केसर लगायें। दूसरे प्रस्ताव में उच्च मंडल सरकार से मांग की गयी है कि विनेमा, सिद्धा, सिद्धा-सभा के अशोभनीय पोस्टरों के प्रदर्शन को अनुमति न दे। समा में यह भी मांग की गयी कि बुलंदशहर में होने वाली समाज में हर प्रकार के अशोभनीय पोस्टर हटाये जायें।

फिरोजाबाद

फिरोजाबाद शहर में अशोभनीय पोस्टरों के विरुद्ध जनमत उभार करने के लिए सुन्दर-सुन्दर में २० जनवरी की गयी। इस प्रकार जनमत उभार करने के बाद १० जनवरी को समा को बने सब पक्षों के नेताओं और समाज-सेवकों को बोले हुए के लिये 'सभी और' आचार्य के सुझाव-सुझाव में हों हुए सभा में सचिव और विनों को उतार। सुन्दर-सुन्दर पर उन दो ही के बहिष्कार कि या अनिष्ट हटाया गया। इसी बीच विनेमा बहनों ने देखा कि वे सत्रों में हटाये गये।

सखनऊ नगर-निगम को सकिपवा

नगर-निगम के अधिनियम १ जनवरी '६१ को मगर के समस्त विनेमा-बालिका के नाम एक पत्र में आदेश दिया है कि विरान्त के उचित-सभ के अन्तर्गत पोस्टरों के प्रदर्शन के पूर्ण रोक रखे निगम के पार बॉक्स और अनुमति के लिये भेजना चाहिये। ऐसा नहीं करने पर आवश्यक हट के अन्तर्गत निगम को ऐसे अनधिकृत पोस्टरों को मिटाने के लिये बाध्य होना पड़ेगा।

फानपुर

मगर सर्वोच्च-मंडल की ओर से सर्वोच्च-कार्यकर्ताओं तथा कार्यकर्ताओं का एक प्रतिनिधि-मंडल, विनेमा सचिवी बहाना विने, श्री० इन्द्रप्रसाद, श्री० सुभ सर्वोच्च, श्री विचार विने, श्री रामनाथन विरान्त की इच्छानुसार कि विने बहनों तथा श्री बंशनाथन सहित विने, सा० २२ जनवरी को विने-सभा सुन्दर के विने और सभसे मगर में होने वाले अशोभनीय पोस्टरों के बहिष्कार के अन्तर्गत सभ करने का निर्देश दिया। विने-सभा सुन्दर ने इस सचिवी के बहनी सहित प्रकट करने हुए सचिव सचिव कार्यकर्ता द्वारा बने पोस्टरों के प्रदर्शन रोकने का समर्थन किया।

मेरठ

मेरठ-सुन्दर, मेरठ के सत्र एक समाज में सभा गया है कि मगर के अन्तर्गत सुन्दर सचिव और विने सुन्दर के अन्तर्गत समाज में सत्र है कि सचिव सुन्दर सचिवों पर अशोभनीय पोस्टरों का प्रदर्शन सचिवी विने पर सुन्दर-सुन्दर है। सुन्दर, सुन्दर और सभ के अन्तर्गत सुन्दर है कि समाज में पोस्टर, विने, सुन्दर और सचिवी सचिव और विने सचिवी में न आये हैं।

रचनात्मक कार्यों का ध्येय

नागरी लिपि द्वारा तेलुगु सीखिये : १२

शंकरराव देव

[कार्यकर्ताओं के बीच हुई चर्चा के दौरान मैं कुछ ऐसे प्रश्नों के भी शंकरराव देव द्वारा दिये गये उत्तर हम यहाँ दे रहे हैं।—सं०]

प्रश्न : गांधीजी की प्रेरणा से देश में कई रचनात्मक कार्य चल रहे हैं। हम स्वच्छ नहीं समझ पा रहे हैं कि इन सब रचनात्मक कार्यों का ध्येय क्या है ?

उत्तर : बहुत पहले हुए गांधीजी ने ही इसका उत्तर दिया है। उनके ये शब्द हैं कि रचनात्मक कार्यों को प्रीति होकर स्वच्छ है। इसके माने यह हुआ कि रचनात्मक कार्यों का स्वच्छ स्वराज्य है।

यह स्वराज्य पांडित्यमयरी स्वराज्य नहीं है, कल्याणकारी राज्य नहीं है, सभामंडलियों का स्वराज्य नहीं है, समाजवादी संघ का स्वराज्य नहीं है और साम्यवादियों का स्वराज्य भी नहीं है। गांधीजी का स्वराज्य तो उन्होंने अपने पुस्तक 'हिन्द स्वराज्य' में जिते आत्मशासन या आत्मशासन कहा है, यह है। आज के राजनैतिक गारिभाजिक शब्दों में इसे अराज्यवाद भी कह सकते हैं; क्योंकि माने गये हैं खुद गांधीजी ने कहा कि वे एक किनासरोकक अनाधिकार-सैन्याधिक अराज्यवादी हैं। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि इस आत्मशासन या अराज्यवाद में कोई शक या आशय नहीं रहेगा, यानी इसमें शासक और शासित, ऐसे को बर्ण नहीं रहेगा। यहाँ भारत में जित रिभक्ति का वर्णन किन्तु श्लोक में किया गया है, यही यह आत्मशासन है।

"निच राज्य म राजाशोभ न दण्डो म च दासिभ्यः।
धर्मोभव प्रजाः सर्वा रक्षति श्म परस्परम्॥"

—इस राज्य में म कोई राज्य-संरक्षण वा, म राजा वा, न दण्ड वा, न कोई दण्ड देने वाला वा, बल्कि सारी प्रजा धर्म-मुक्ति के ही परस्पर का रक्षण किया करती थी।

प्रश्न : क्या यह कल्पना ध्यानाहारिक है ?

उत्तर : हाँ ठीकिये। इस संभव में गांधीजी की दृष्टि क्या थी, यह हम समझ लें। गांधीजी के लिये साध्य और

साध्य, ये दो किन्तु शब्दों नहीं हैं। उनही दृष्टि में साम्य और शासन के बीच की शीर्ष और बुद्ध का संबंध है। शीर्ष वे बुद्ध पैदा होता है, मूल में चल लगते हैं, जहाँ में मूल होते हैं। इसके माने यह हुए कि निच राज्य में शासन वा स्वच्छ नहीं होगा, उस राज्य का निर्माण भी शासन वा स्वच्छ के बिना ही होगा। और ये रचनात्मक कार्यक्रम ही उस राज्य की स्थापना के साधन हैं। इसके रचनात्मक काम सर्वहित-मुक्ति से स्वर्ण-मुक्ति के बिना हुआ काम है। यही कारण है कि गांधीजी ने जैसे ऊपर-कहाँ, उस तरह के लोच स्वच्छ-पूर्वक, सर्वहित-मुक्ति से शीर्ष के सारे काम करने लगे उसका फल वा परिणाम ऐसे समाज की स्थापना में होगा, जिसमें स्वच्छ वा शासन की आवश्यकता नहीं रहेगी। इसके ही हम आज आवश्यक समाज कहते हैं।

प्रश्न : लेकिन जैसा आज का मान्य है, उसको देखते हुए यह अवस्थान लगता है कि वह स्वच्छ-पूर्वक स्वार्थ का त्याग करने और स्वार्थ के लिये प्रयत्न करने लग जायगा।

उत्तर : यदि आज का मान्य जैसा का होता बना रहेगा और कुछ भी परिवर्तन अपने में नहीं करेगा तो मान्य होगा कि आवश्यक समाज की स्थापना आवश्यक है। गुन गांधीजी के कहा है कि यह एक आवश्यक सिद्धि है। लेकिन हम सब श्रेणों की कोशिश होगी यह लिये कि हम सब आवश्यक को ठीक ठीक करने दें। इस प्रकार के उस कार्य को और बढ़ने की प्रेरणा प्राप्त करते हैं।

प्रश्न : क्या यह सब गांधीजी की कोरी कल्पना की चीज नहीं है ?
उत्तर : गांधीजी का सर्वशक्ति बकर है, लेकिन वे खुद बहते थे कि वे व्यावहारिक

तेलुगु भाषा में विशेषण चीज तरह के हैं : गुणवाचक, संतयाचक और क्रियावाचक विशेषण। संता के परने ही विशेषण प्रयुक्त होता है। लिना, बराने अनुसार इसका स्वयं-परिचय ही होता।

इस भाषा में गुणवाचक और संतयाचक विशेषण के उदाहरण ये हैं :

गुणवाचक विशेषण संता के गुण को बताता है

हिन्दी	तेलुगु	हिन्दी	तेलुगु
छोटा लड़का	विभ्र पिल्लवाड	बड़ा धनवान	गोपु धनवंड
छोटी लड़की	विभ्र पिल्ल	सफेद फागन	तेल्ल फागिड
बड़ा घर	पेडू इल्ल	फाली पिल्ली	नल्ल पिल्लि
		लाल स्वाही	वैरें लाल

'सुचना : क्रमो-क्रमो विशेषण के साथ 'नि', 'अदन' भी जोड़ देंगे।

सफेद घोड़ा = (तेल्ल+नि) तेल्लनि गुरेड

जल्दी बात = (शुद्धय+अदन) = शुद्धयमदन संगति

सबल कान्य = (सरस+यन) = सरसमदन कान्यमु

संतयाचक विशेषण के दो प्रकार

(अ) संतयाचक विशेषण

एक कलम	थोक कलम	छा विरोधी (दुरमन)	आलस्य गुरेड
दो पोने	दुड गुरेड	सात लड़के	पेडुड कान्य
तीन कित्तों	मुड पुल्लकुरेड	आठ रुपये	येनिमिदि स्वाम्य
चार छपे	नाडुड कुरेड	नी धवियें	तोमिदि गतिधाराड
पाँच आदमी	अडुगुड मडुपुड	दस पक्के	पडुगुड लिल
		(आ) पूर्णाधिक विशेषण	
पहला पाठ	मोरेदि पाठुड	छटा	छाटा
दूसरा लड़का	दुसरा माडुड	सातवाँ	सातवाँ
तीसरी लड़की	मूवक पिल्ल (वालिक्)	आठवाँ	आठवाँ
चौथा घर	नासवा इल्ल	नववाँ	नववाँ
पाँचवाँ सदस्य	अद्वेच समुड	दसवाँ	दसवाँ

आरंभकारी हैं। याने भारत में अद्वेचा तक पहुँचने वा एक-न-एक व्यावहारिक कार्यक्रम देने का वे बरकर प्रयत्न करते थे और देते भी थे। यह उनही कारणों की कि वे ऐसा कर रहे थे। गांधीजी की व्यावहारिकता हमें भी कि वे मानते थे कि जब तक मनुष्य को कोई दूख-दुःख-दुःख व्यावहारिक चीज वा चलाता नहीं मिलता, तब तक वह पुत्रपी चीज वा पुत्रमा पाना नहीं छोड़ेगा। जिसका के और पर-प्रतिष्ठा को लें। गांधीजी अहिंसावादी थे। वे आत्मरक्षा के लिये भी हिंसा का उपयोग करने के परा में नहीं थे। लेकिन वे मानते थे कि जब तक व्यावस्था का कोई दूख-दुःख-दुःख सन्तोषित्वक ठीका मनुष्य को प्राप्त नहीं होगा, तब तक वह हिंसा वा शस्त्र को नहीं छोड़ेगा। यही कारण है कि गांधीजी काय-तक को लोप-प्रतिष्ठा को पराद करते थे। परन्तु इसके माने ये नहीं कि वे हिंसा में मानते थे। उनका मान्य यही था कि जब तक हिंसा का व्यावहारिक करने का उपाय मनुष्य में हाथ में नहीं आता, तब तक वह व्यावस्था के प्रयत्न में या तो हिंसा करेगा वा कब-तब जायगा। मनुष्य के लिये वायराटा हिंसा से अधिक हानिकारक है। पर जब भी वे मानते थे कि हिंसा में बन्दे हिंसा को अपनात मनुष्य के लिए कम हानिकारक नहीं है।

हमलिए जनका यही प्रयत्न रहा कि मनुष्य के पास व्यावस्था का कोई अहिंसावादी तरीका हो, जिसके मनुष्य व्यावस्था को हिंसा छोड़े से बच सके। गांधीजी का यह भी व्यावहारिक आरंभकारी स्वभाव था यही-जैसे परावर्तन को जन्म दिया।

प्रश्न : रचनात्मक कार्य की संतयाचक का क्या संबंध है ?

उत्तर : गांधीजी कहते थे कि स्वच्छ यह हिंसा मुक्ति के लिए एक नैतिक विषय है और इस नैतिक विषय के प्रति मनुष्य के हृदय में धरा देना करने का प्रथम-संता ही वे सारे रचनात्मक कार्यक्रम हैं, क्योंकि इस विषय में वे नैतिकता है वह स्वच्छ-सम कार्य में ही ही कलित होती है। यही पहले कहा है, रचनात्मक काम सर्वहित-मुक्ति से स्वच्छ-पूर्वक किया हुआ काम है, जिसे पीछे म किंधी समाज भी मरेगा ही मरेगी थी। केवल सर्वहित-मुक्ति की यारी बन-मुक्ति को मरेगा ही और स्वच्छ-पूर्वक ही हिंसा के लिए लिये जाने वाला काम ही नैतिक काम है।

रचनात्मक कार्य हुए नैतिक कार्य हैं। इसीलिये हमने मनुष्य में नैतिकता की निर्माण होता है। और यह कारण है कि रचनात्मक कार्य मनुष्य में हाथ में मरेगा राज्य (निमित्ती और शक्ति) दोनों में निराकरण के लिए एक उपाय साधन बन-पाता है।

गाँदी के अन्त-अन्त ही अन्त-कर्म ही होते सगा हैं।

यह अन्त-कर्म सब तक नहीं जायगा, जब तक सब लोच सत्ता के सर्वगर्भ धूलने वाले हैं। सत्ता-ही बूट अन्त-एक स्वच्छ समाज देती हो, जो सत्ता हाथ में म ही सत्ता-संस्था की मुक्ति होगी। यह अन्त-कर्म 'विरोधी पार्टी' नहीं होगी। जो-हा-हाही जैसी हो, बँसी ही रहेगी ही। सोचने पर पता में जायगा कि यह जैसी हो, बँसी कायम नहीं रह सकेगी।

यह बड़ा परामुक्त समाज हीना चाहिए, सभी लोकवाही कायम रहेगी। इसलिए मुझे संतोष के विनाय कुछ दुःख ही नहीं है। मैं साम्यवाद नहीं हूँ, न ही कोई सम्प्रदाय की स्थापना करने का मेरा संकल्प है। हिंसावादी भी जितो भी संतया वा अन्त-एक ही है। मैं ही परस्पर का वा विना मुझे एक अन्त-एक ही हूँ। किन्ती पंच का कोई अहिंसावादी रहने की कोई फरक नहीं है। उदय-प्राय से जो दोस्तता है, यह बहाना ही। अगर हमें मेरी कोई मालगी हो और मुझे कोई सम-साये ही में समझता जायगा। पर मुझे जो सुख है, वह मैंने बहा है।

संगमों का मेला

काका फालेलकर

प्राग-ऐतिहासिक संस्कृति के मूढ़ प्रतिनिधि आदिवासियों के बीच, पश्चिम की अवनत संस्कृति का विजय जिसमें पाया जाता है, ऐसे लोहे और इस्पात के प्रचंड, राखती कारखाने स्थापित करना—यही एक अदम्य, अभूतपूर्व संगम है। बंगाल, बिहार की पुष्प सस्कृति की पुष्प बीजा पर जहाँ पुष्पसलिला स्वर्णरेखा बहती है और भोली-भाली खरनाई के प्रेमजल का स्वीकार करती है, वहाँ भारतजुग पाखी जमने में संतुल्य किमा कि भारत में ऐसे असाधारण सामर्थ्यशाल यन्त्रोद्योग का प्रारम्भ कहे, जिसकी हस्ती का स्वीकार वियनो-मन्त पश्चिम की भी आदर के साथ करना पडेगा। और उच्च संकल्पका मूहूर्त भी कंठा। उन्नीसवीं शदी का अन्धकार कम होकर बीगनी सदीके उप.काल का जब प्रारम्भ हो रहा था। अथवार और प्रकाश का जिसमें संगम है, ऐसे ब्राह्मणहूर्त की श्रुतियों ने ध्यान के लिए पवित्र, अनुकूल समय माना है। उद्योगवीर जमनेदेवी टाटा ने ध्यान के साथ युगान्तकारी पुष्पार्थ के लिए इस मूहूर्त को पखन्द किया और सोचा कि आदिवासी नाम धारण करने वाली नयी खरनाई जहाँ वैभववाली संस्कृति की सूचना करने वाली स्वर्णरेखा को अपना पानी समर्पण करती है, यहाँ पर भूमिगत जो को वाहर निकाल कर उद्योग का प्रारम्भ कहे। भूमर्त विद्या के प्रयोगों ने उन्हें विव्वाता दिव्या नि स्वर्णभूमि भारत के घेठ में कृष्णस (लोहा) कम नहीं है और उदा नहीं कित प्राचीन युग के सातत्यस कंत्रारी ने इसी भूमि ने कोयला भी तैयार करके रखा था। लोहा और कोयले का एक ही प्रदेश में संगम होना, यह कोई मामूली भाग्य नहीं है।

छाये और बैरानी संस्कृति ने एकत्र आकर अजोके के दिनों में इसी गिहार की भूमि में एक बह्दुस्त प्रसाद रखा कर दिया था। सुगत काल में ईरनी और भारतीय संगीत का जल संगम हुआ, तब सातमेन के सुक्त, मायमधवि हरिदास ने हिदुस्थानी संगीत को जन्म दिया था। ययुना के फिनारे सुगत भी भय का स्मरण दिसाने बाला ताजमहल भी संगम-संस्कृति का एक उज्ज्वल शौक है।

संगम-सीसा की सस्कृति में रमनाय होने वाली इस भारतभूमि में साकपो संगम के पास जो नया भाग्यदीर्घ उजा हुआ है, उसका फिर से दर्शन करने के लिए हमें समय मिखा सन् उन्नीस सौ साठ और एकसठ के संश्लेषकाल का।

मेरे सामने साधना-केन्द्र, बाटाएसी और समन्वय-आगत, बोधगया के धामन्त्रय पड़े ही थे। इसलिय राज्यसभा का मेरुकाडी-सत्र सत्रम होये ही इस वक्त तक है।

अधरपुत्री वासुदेवी और अधिवरतन सारथण देव कर हन श्लोक के पाठोनुव पड्डे। वहाँ के भगवत महाशोके के निबोधनमा पावापुरी ही बोये। बीनी धानी ने निवका बर्जन किया है, उर माकृता का महाविहार देखा। उरसमय का सर्वर्ष और महाजन का समवय, सोमों जहाँ पाये जाते हैं उस उरव-जल रागवह का दर्शन किया और विष्णु-पद की धर्मशिला को सर्वा करके बोधि-मार्ग के उर स्थान पर पड्डे, जहाँ नीर-कार अमररुह ने बृह भगवत की

सकन-सिद्धि का उरुतु अकार उदा किया है। बोधगया आर्य पूर्व एतिया का आर्यपर्व-वेद बना है और एक उरह के उर अन्धरपुत्रीय महर्ष जो प्राय हुआ है।

गाण्णी के सुरदेवी और अयत्रस-सारी के डारकीयों के सातथ में वो दिन निगड कर मल ककरका के रास्ते अण्णोपुर धानी डारानगर पहुँचे गये।

हमने अण्णोपुर पहुँचे तो ही हमारे आठिन्य के प्रतिनिधि को प्रेनवापनी के पुत्र कि यहाँ शरीर के दर्शन का काम

वो मिलेया हो म ? उन्नीस कहे, 'अथवा शरीर के दर्शन के ही जाणने भाषा का मयवाचरण होया।'

दिनमा शरीर जयशेरुद में अर-एक घोनी की दूरी पर है। यह कीर्ति शोचनी शरीर नहीं है। आगतशरीर की उन्नी-उन्नी पदाधियों की उरुद्वी में अर-शाव का बोडा पानी इरुद्वता होता था, वहाँ एक बह्दुस्त अण्ण देव टाटाओं ने एक अन्ध-साधन वीर भाषा और नीक को बरिचिवाले गये शरीरर वी अन्ध दिया। कुबुरत ने इस शरीरर के बीच एक शरु की अथकाय देर देर कलराचि को शोध्य-पाँध बना दिया।

याचनार के शीर हाकल के जीते यहाँ पर भी आधिर उर शरीरर का दर्शन नहीं होया। आधिरि पुत्राई करये वही मकयक छाया बरि-विस्तार नरके के सामने गण्ट होया है। शोध्यों के साथ अमलदि का विवाह होने के बादव दिगुविण होता है। अथोपुर के नगर-साधियों के लिए पीने का मुदु धानी यहाँ से जाता है। वे इस गयेर के फिनारे बनशोचन के लिए अपनी कुतनता अन्ध करते हैं। मुबुर अरकेले पुत्राया पर रँगी की बरकी बजाने की रना शरीरर के संसगरर के सोयी वा संसगरर के शरीररों में सीवी—इकर अजव योनों नहीं दे करते। पानी में अन्ना प्रतिनिधि देखने वाले बाकर हमारे अनुश्रुति प्रण को हँवते रहते हैं। अथवा उरकी भी आर्यर्ष होया होया कि पूवी के इन जोते-जोते आर्यों में दण्डा बदा मासमान किये जागत होया। यव को जब बावन् नहीं होये, तब आगत के विचारि इसी क्षण्ट शरीरर में अन्ध-अन्ध प्रकाश को तुलना करके अन्धे स्थान की दृष्टि का दाव लगाते हैं।

ऐतिस शरीरर के साथ उन्नी दोस्ती अरकेषानी लो है पवन की बद्दर और उरकी की अथक शिथिलते लके बरिने। एक शिथर में दुरी शिथर तक पोनेनी बाओ

हवा की लहरें सीपी-सीपी करी गयीं जायेंगी। जरा नीचे उतर कर शरीर के बपाल को पुनर्गुदी विधि बना एक से लहर आये नहीं जायेंगी है। और यही की शरीरर पर से पदार होये बीच-बीर में नीचे उतरे विना नहीं रहते। यह बह्दा कि वे न मछलियों को शोच में ही नीचे उतारते हैं, उनके तब एतिय अन्धना है। मछलियों को उदरस्य करके उनके साथ शरीर लिड करने का मयारत को कुबुरत ने ही उन्ने लिखाया है। उरमें कोई बजोनी वा अन्धोनी बाव नहीं है। ऐतिस पदियों की इस पार से उन पार बाटे बीच-बीच में मन हो जाता है कि शरीरर के शैत्यरागवह का बीज-का स्वर्ण मने नीचे को कणों में।

हमारी नजर और हमारी स्मृति ने इन सब पुत्राणी का स्मरण करने शरीरर के विचार का शिहर किया और अनुभव किया कि मनीषा गिहारें शरीरर की गह्वरों और बास मान की गह्वरों से अजव ही कीर्ति हुई।

यहाँ की मनीषा के अन्धी नुँतों के हाथ हँवें स्मरण किया कि जो वेलने की बहुरनी चीरों हैं। इन वने के हैं उरते। अन्धरेका के प्रकाश को फिर से लाया और देखते-देखते हन पुनःपण पड्डे।

मुदापन उर की यात्रा भी होने लायक है। शीरुण्य के जमाने में, मुबुर के पास मुना हैं। शोचों का एक आर्यर्ष बन होया। शीरुण्य-नीपियों के हास के साथ एतिय का नाम अमरपुत्रा होया। अर शरियन ने कृष्णराज सागर के प्रशनों हो कम्पा हई कि यानी के अरवरी की रन पीर पाओङ्गा जागे करे। विजयो ने इस रास में ईश्वरपुत्र अरु इरजल ब्रामे का देना किया और शोचों ने देखा कि इस कालक शोध्यों की अथर उरके के निरु मुदापन के बड्डर करके गदने है गयीं। इस उरह विरुद में अथरान लूँवा। अर जमरुदपुर के अरंकी को शरिय मुदापन की रंयां हई और अन्धी अन्धी मुनापुत्रियों के मायोद-जमोद के लिए एक मुदापन बह्दा किया। मागत के सब बाटे निक कर भी अरार उरके के अथकार का नाश नहीं कर सकते, वो इस उरान के अथ-अथ को प्रश्रुति करने वाले सोये परि का दिन बनने की मद्दुत्तकाया किये धारण करे।

अब की बार भी अन्धी-अन्धी आधि-भेव (मैजना) बिलने के शरण को संभय में बहुर कुड अरजाने का उरको लुमें मिश्र था। ऐतिस मेरे मन में एक चीन् रग गये। सोमवार की रात को मैं बरती को गया और अइस अन्धी बा सारा परिवार आकर वि० शरीर की पादनी उर को उर कराने किरुके के यारी। अर्पनी लो मन्धु की पावल कुटी हो है, उर पर संघम भी सोया। उरका बर्जन सुन कर मेरी आँखें हँवों से नीची हो गयीं। दूरे दिन मुवह देखा, लो हमारे

* अथर्वरेखा जितना कायमस और सारक्येन नाम है। निषाम में वीर कर एर नवी की लकीरी को देखने वाले को ही ऐसा नाम सुँव सगना है।

कहते हैं कि इस नदी की रेडो गो-शोकर द्रव्यों से सोने के कण इरुद्वता करते जाते मुनर्षकारों ने ही इरका नाम स्वर्णरेखा रखा था। हम मानते हैं कि ऐसा होया, लो मनी का नाम मुनर्षकार रखा जाता। जो हो, नवी नय दर्शन करके हँवें सना आनन्द हुआ कि हम उर सुखंमुरी कनना पाहते हैं। ऐतिस रेखा होे रहते।

कहते हैं कि इस नदी का उरान रीपी गहर के दर धोल की दूरी पर है। वहाँ के अरर पुत्र की कोर पश्चिम गह्द कि मुदुदुकी की ओर से दरिभङ्गानी बजोते हैं। अथोपुर के पास पश्चिम के आकर उरके मादिवासी नवी सारकाई मिलती हैं। जयने आकर यह नदी 'मिरनापुर जिके के जंगल में प्रवेच करती है और आधिरकरर बाल-शोर जिके में दाहिनी ओर बाई' और मुदुवी-मुदुवी जाणनेकी आकार के गंगाल के उरगत में मिली होती जाये।

नवी को कुल खरनाई लो लो गीत के कुश रूप है। आधिरि शोकर नीक में दर नदी के प्रवाह पर समुद्र के ज्यारगत का आर होया है और धान के खरी हुई सोयाओं के लिए जागपन असाज हो जाता है।

भूदान यज्ञ

साप्ताहिक

भूदानयज्ञमूलकीयामोखानप्रधानअहिराकृष्णजातिवकारयदेयवाहक

संपादक : सिद्धपराज डड्डा

बारामती : शुक्रवार

२४ फरवरी '६१

वर्ष ७ : अंक २१

भूदान का सौम्यतर स्वरूप

विनोबा

[इस बार बिहार की परदाबा में विनोबा में लोगों के सामने एक नया कार्यक्रम रखा है—“बीघे में बट्टा”, यानी हर जमीन-मालिक अपनी जमीन में से प्रति बीघा एक बट्टा भूदान में दे। विनोबा में अब भूदान कार्यक्रम शुरू किया तो लोगों के एतने दिलों की मांग थी। जब से बीघे में बट्टा यानी बीघे में हिले की मांग कर रहे हैं, यह बट्टा परतू से लोगों को पीछे हटने जैसा लगता प्रभावशाली था। पर विनोबा में इस चीज को सौम्य से सौम्यतर ही और करना है। यह यहाँ—यह इस भाषण में कहोने लगता है।—सू०]

छद्म-दान वर्ष पहले हम बिहार में गये थे। वहाँ हमने लोगों के सामने दो बातें रखी थी। एक तो मूल विद्वान यह बताया कि जमीन की मालिकियत नहीं रहनी चाहिए। हम अहिंसक रूप से उस मालिकियत को हटाना चाहते हैं। हम यानी अन्न-हम सब मिल कर। जो जमीन की मालिकियत मिटाना यह हमारा लक्ष्य है। यह लक्ष्य सामने रख कर हमने कहा था कि उठा हिस्सा दान में दीजिये। कुछ लोगों ने अपना उठा हिस्सा दिया जो। काफी जमीन बिहार में मिली। लेकिन फिर भी अभी बहुत ज्यादा दान बाकी है।

इस बार की यात्रा में हमने बिहार में कहा कि आप हमें “बीघे में बट्टा” यानी बीघे में हिस्सा दीजिये। इस पर एक कम्युनिस्ट भाई ने हमें पत्र लिखा—“आपकी यह कैसी दुर्गति हुई है। आपने शुरू किया ‘स्वामित्व-विचरान’ के संज्ञ से। उसके लिए शुरू किया छठे दिरसे से और आप बीघे में हिस्सा मांग रहे हैं। क्या यह आपकी अयोग्यता नहीं है?” हमने उत्तर दिया कि भाई यह अयोग्यता नहीं है। क्योंकि मैंने ही। अयोग्यता है। हमने सिर्फ बीघे में बट्टा नहीं माँगा है, हमारी एक और माँग है, हमने कहा है—“दान से बट्टा, बीघे में बट्टा” यानी एक लोग दान दें। जिनसे मालिक हैं, जिनसे दान-बन। आप ही सोचिये, इससे क्या नहीं बनेगी? पहले हमारी को माँग थी, वह सौम्य थी। यह सौम्यतर माँग है। इसमें सफियत नहीं है या नहीं? क्योंकि अब इसमें जो हैं हर एक के पास जाना होगा और दान प्राप्त करना होगा। पहले क्या होता था? एक भाई के पास हम गये। उसने दो ही एकड़ दान दिया। बस दो गाय। दिन भर का काम हो गया। जब दो भी अच्छा है, लेकिन उससे लाभ नहीं पैदा होनी। मान लीजिये, सारे गाँव के इस किसानों ने दान दिया तो कितनी शक्ति प्राप्त होगी?

एक पूर्व हमने और बताया है। पहले हम ‘पति’ जमीन लेते थे। जिसे बंगला में ‘पति’ बने थे, वैसी जमीन लेते थे। अलग-अलग हम पहले ‘पतिव्यवस्था’ थे। अब ‘परिणाम नहीं है—एक बार हम अनुभवी लोग बन गये हैं। इस बार हम लोग भी जमीन का हिस्सा माँगते हैं, यानी यहाँ लैडी जमीन नहीं, अच्छी बात में आ रही, जमीन का बीघे में हिस्सा। एक हीनरी बात और है। इस बार हमने कहा है कि पहले बले ही माँगे, बीच में ‘दलाल’ नहीं रहेगा। भूदान का कार्यक्रम आरंभ करने का काम में मदद करवा करेगा, लेकिन कोई भी भाग नहीं लेगा। परिणामस्वरूप हमें बले और देने वाले, दोनों के दिल होंगे, एक

दो। बीच में अबैत रहना है तो दिख एक नहीं होता। इसलिए हमने उभे दया है। यह प्रकार के लिए आपने सब अयोग्य, लेकिन दया के हाथ से ही दान मिलेगा।

अहिंसक में बीघे में बट्टे बनने बात की सौम्यतर प्रक्रिया कहना है। इसमें हर एक को डरना है, अच्छी जमीन लेना है और बला को ही बलना है। परिणाम क्या होगा? एका बनेगी, जमीन बचोगी विनोबा की सिद्धांतना बनेगी २ बीघे में सौम्यतर, सरकारत प्रक्रिया कहना है। कुछ लोगों ने हमसे पूछा कि क्या निश्चिंत दिया है, वह हुआ है। मैंने

कहा, यह कैसा बला है? जिन्होंने पहले उठा हिस्सा दे दिया है, वे आज खले हैं या नहीं? खले हैं तो देना भी चाहिए। और उठा हिस्सा दिया तो अब बीघे में हिस्सा देने में क्या बड़बोली होगी? उन लोगों को मत बच गयी। अभी बिहार में जो जमीन दान में मिली है, वह अधिकतर उन्होंने ही दी है, जिन्होंने पहले दी थी। जिन्होंने दान नहीं दिया, उनकी देना बस यौदा हुआ मिलना है। इसलिए मैंने ही। जिन्होंने दिया है, वे तो देंगे तो। इस तरह जिन्होंने दिया, वे ही देंगे और जिन्होंने नहीं दिया, वे भी देंगे। कुछ लोग डरते हैं, आप लीजिए बार आयेगी तो फिर माँगे। हमने कहा, लीजिए बार आप लीजिए न। फिर भी दाना निरपत्त दिवसों में कि हम लीजिए पर भूदान नहीं माँगे। यह हम भागदल माँगे। क्योंकि हर भूदान में बट्टा-बट्टा जमीन दान में ही होती तो गाँव में श्रेष्ठ को बन पाए। श्रेष्ठ बना तो जमीन की बात कर लकड़े हैं।

हमारा आशय निम्न है कि छोटे-छोटे रहे सब शारंगी, अलग-अलग पार्टी के लोग, सब मिल कर दान दें। गाँव बचो यही है। सब प्रकार माँगना नहीं है। श्रेष्ठ भी माँग है। श्रेष्ठ से माँग आप तो कुछ कमाल देना। ऐसे श्रेष्ठ में देना है कि सरकार को जमीन दे दी है यानी ‘सीलिंग’ तो गयी है, तो दान नहीं मिलेगा। एक कथोरी में गये थे। वहाँ हमने जाने से पहले ‘सीलिंग’ तो गया था। काहे कारण एक नर ‘सीलिंग’ का, उनको बचाने भी गये नहीं काफी दान मिला। दान और सीलिंग में चर्च है।

मैंने बच्चे को सुलाटी है और धीरे-धीरे भयप्रापी है। एका नाम है दान और बच्चे की दयाका मार कर सुलने की सोचिए, यह है ‘सीलिंग’। एकाका मांसे के बच्चा छोपेगा नहीं, वह विश्वासिगा। इसलिए सरकार को सीलिंग में जमीन मिलेगी तो भी दिक में दिक नहीं सुनेगा, बरिन् सुदमेनांनो होगी। धार पर है कि दान और सीलिंग, दोनों ही द्रवना नहीं हो सकती। यह बहुत स्पष्ट में लगना चाहिए। पहले ही कि सरकार को सीलिंग के बाद दो लाख एकड़ जमीन मिलेगी। इसका धरा नाम करके सिर्फ दो लाख एकड़ जमीन मिलेगी।—इसे ही “प्रनादे-कल्ला” कहा है। यानी मादक वाम्या मार। मान लीजिये, सीलिंग के कारण ५० लाख एकड़ जमीन सरकार को मिली है तो कुछ बात थी। इस कहते हैं कि बच्चे मारें तमाका तो मार, लेकिन परिणाम अच्छा आएगा। यहाँ दो करोड़ एकड़ जमीन है। बीघे में बट्टे की माँग बहुत गती नहीं है, पर यह पूरी दो ही बीघे में हिस्सा यानी ० लाख एकड़ जमीन मिलेगी और क्या चर्च होगा। हमें जोस भी जमीन मिलेगी। सीलिंग से सरकार को लाख जमीन मिलेगी और सरकार को भूभाषना भी देना पड़ेगा। हमें भूभाषना नहीं देना पड़ेगा। सुदमेनांनो नहीं करनी पड़ेगी। सीलिंग के बाद तो ‘सीलिंग’—सुदमेनांनो चलेगी। और दान क्या करेगा? “अरे भोग, तुमने जमीन तो दो, अब पहले गांव के लिए बीघे भी दे दो।” ऐसा हम कहते भी हैं, लोग देते भी हैं। यानी कितना चर्च हो जाता है। सीलिंग के लिए तो “स्वतंत्र पार्टी” रही है। दान के लिए तो पार्टी कोलेगी। इसलिए हमारी अयोग्यता नहीं, उर मति है। हमारी प्रक्रिया सौम्यतर है, उसके किर्पासलत बचनी चाहिए, बचनी नहीं है।

दोहरा प्रयत्न करना होगा

हिन्दी के प्रिय उन्मासुद्धर और 'धर्मयुग' साप्ताहिक के सम्पादक श्री धर्मवीर भारती ने निम्ने १२ परसों के 'धर्मयुग' में 'बन्दी-उत्पत्तियों' खंभ के अन्तर्गत समाज में विनोद द्वारा बनाए आन्दोलन और शुद्धि की बड़ी झालोचना करते हुए लिखा है, "इस आदर्मी अत्यन्त पोस्टरी में विचार से पूर्णतया सहमत होना।" विन्तु साथ ही उन्होंने धरा स्वक की है कि इससे हमसावा स समाधान नहीं होगा। आज यह शुद्धिचरमात्र में गद्दी बज कर गयी। विनोद के पोस्टरी के साथ कैडेटरी में देवी-देवताओं की अयोधनीय और अत्यन्त दंग से विचित्र किया जाव है, यही वह कि क्या पढ़ने वाले, नीर्वन करने वाले भी 'मोटे छोड़ गये काल' की अण्ड भेदों छोड़ गये मोहन, हाथ अंगुली छोड़ गये' मात्र मुने वाते हैं। श्री भारती के पदों के अनुसार वेदल संस्कारालयक आन्दोलन के नवरा समाज में शुद्धि बनाने का काम होना चाहिये— "इस ऊपरी समाधान के नवाय अथ धीरज, मेहनत और स्थान से लोगों के मन में कल्याणक शुद्धि बनाने की कोशिस कीजिये, जो देखिये कि शुद्धि देने वाले जो तरह षट् जाती है और निर्मल बल विवर आता है।"

जब विनोदाजी ने इन्दौर में अयोधनीय पोस्टरी के लिखक आचार्य उदासी जी, तब यह एशामी आचार्य भी, विन्तु आज चर्चक इस पर 'बर्बात' हो रही है। देश के विभिन्न शहरों में नागरीकी और खास करके महिलाओं ने इस आन्दोलन को उठा लिया है। इस लोग महादुःख कर रहे हैं कि समाज में दिन-ब-दिन अमरता और शुद्धि बज रही है, नैतिक मूल्यों की उणेचा भी का रही है। इन्दौर और अन्य स्थानों में विनोदाजी ने गहरी धरना धमक करने हुए मातृशक्ति को आवाहन किया कि वे 'प्रीति-रत्न' के लिए रुकीये आगे आये। अयोधनीय पोस्टरी के लिखक को आचार्य उदासी का रही है, यह केवल पोस्टरी तक सीमित है, ऐसा नहीं है। पोस्टरी को केवल प्रतीक मान है, यह तो समाज में व्याप्त अन्तक अमरता और शुद्धि के लिलाक आवाज है। आज हम देख रहे हैं, अयोधनीय

पोस्टरी के लिखक इस हृदयचक्र से समाज में ऐसी निष्पत्तिया और चरण परमी प्रसार किया है। नरन चर्चा, परिचंवाचक समा और अलाओं द्वारा यह सोच भी का रही है कि समाज में व्याप्त किसी भी प्रकार की अयोधनीयता उन्म स नहीं बचना चाहिये। यह टीक है कि वेचल बभारणक आंदोलन से काम पूरा नहीं होगा। इस हृद बात के दुरी तरह अहमय है कि समाज में शुद्धि अण्डके ही हर संभव कोषिप फली चाहिये। इससे लिखे देश के समस्त मुस्त्र और पदु-लिखे नागरिकों का चर्तव्य है कि वे इस अन्याय का माने और जगसा में शुद्धि बनाने। अमरता और शुद्धि का परिष्कार और बकालक शुद्धि पैदा कला, इस इन्दौर प्रलय से ही समाज में पेशकी उद्देश्य-दंड कीजिये।

—मीमीशुद्धुमार

विच्छेद पाठ में गुणभावक और संयोगावक विभागों के उदाहरण दिये गये हैं और यहाँ क्रियावाचक विच्छेद के उदाहरण दे रहे हैं।

भाट्ट के साथ 'सुत्र', 'सुप्रति' आदि प्रत्यय जोड़ देने से नि. रिशेष्य बनते हैं।

पोला हुआ = (घटलाडु + सुम) = घाटलाडुसुम.
 घटलाडु = (घाटलाडु + सुप्रति) = घाटलाडुसुप्रति
 पट्टी हुई = (पट्टु + सुम) = पट्टुसुम.
 पट्टु = (पट्टु + सुप्रति) = पट्टुसुप्रति
 सूपना = भूतकाल में 'इन' प्रत्यय लगाया जाता है।
 साया हुआ = (विदु + इन) = विदिन
 सया हुआ = (वेत्तु + इन) = वेत्तिन
 भाया हुआ = (बन्धु + इन) = बन्धिन
 सूचना : यह धौर वे के लिए 'ई' तथा यह धौर वे के लिए 'भा' प्रयोग करते हैं।

हिन्दी	तेलुगु	हिन्दी	तेलुगु
यह सुलक	ई सुलक	यह कर्मी,	का कुमी
वे लोग	ई मयुगु	वे औरों	का सीरों
यह वे	ई, ई	वह, वे,	का, बा
ऊँचा	वैचै	मोठा	तिच्चै
गुण	वैडु	छोटा	विचै
शुच्छ	मंघि	बड़ा	पेद, मोघ
लंबा	पोडवरन	चौड़ा	बैलारन
नाटा	पोडि	पतला	समति, पुजुमति
गहरा	सोवैन	कड़ुवा	सुदुकर

विहार-बंगाल की सीमा पर

१० फरवरी को विनोदाजी विहार प्रदेश से बंगाल में प्रस्थित हुए। निर्दल देने वाले विहार के कार्यकर्ता और स्वागत करने वाले बंगाल के कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए विनोदाजी ने कहा।

"यह अति ब बताने का अवसर नहीं है। यह जो मेन वे अविभाजन करने का एक है। बाक बाटु वे कहा कि बंगाल पर हमारा प्रेम है। लेकिन केचक प्रेम ही नहीं, भारत और विराय भी है। बाटर इतिहास है कि बंगाल के महापुरुषों का हृदय विर पर बहुत गह्र है। बचन में हय उचर हू महापुरुष में रहते हैं, फिर भी हमारे हृदर के बताने में बंगाल के महापुरुषों का बहुत ही उपकार रहा है। इतिहास हूवे हय प्री के लिए बहुत बाटर है। विरायत इतिहास है कि यहाँ के लोगों के दिल में आनत है। यह आनत को गोव्य दिवा मिलेगी तो आचरंजनक बाग शरण कर लकडा है हय हूवे विरायत है। हय मेन, बाटर और विरायत सीनों केकर परा अवेप कर रहे हैं।

विहार से हय विहा हो रहे हैं। लेकिन विहार बायि जानते है कि हमने विहार पर कितना प्यार रिया है। उनके बीच हमने खरा बो शाक बिगये है। इस कजंवा की विहार-बाया में जो पदंन हूवे हुआ, यह बहुत ही था। इसीलिय हमने कहा है कि विहार हमारे बाय भी इच्छ है। यह बकन सिद्ध होगा, ऐसा हय मानते हैं। बायो हूवे विहार से बायंवे दो बो विहार-बंगाल आदि पूं बायक का बो क्षिया है, खरी में हयावे बाय होये। बायो वे हमने विहार में प्रवेश रिया। दरबलक कमी ही पूं बायक का जादिये रवान है। और कमी के हय बाय पदु-चारत है। ऐसा ही हमारे पुरवों में जो माना था। इतिहास वे किसी एक दिल में रहते थे, जो भी उरकडा अजर हूवे बिले पर होख था।

कह ही छत्रय के हूवे हारं आगति बोय में कडा भी दियार वे तो बायन-हार साठ एकक जोनन प्राय हूवे हैं। अर हय छत्रय तो नहीं माने थे, पर छत्र पर अजर हुआ। कजकर, छारा रिया एक ही है। उधो छत्रु से यं हय को कहुवा कि पूं बायत और समय बाय एक ही प्रदेश है। लेकिन वीर! पूं भारत तो एक है ही। इतिहास एक-एक साल हमारी बाय कही भी हो, पूं भारत में ही हय रहये। पूं बायत में विहार, बंगाल, बायन, चकोवा तो है ही-ये तो यहाँ तक कहुवा कि पूं बायतान के पूं भारत में है। हमारे बादिये इच्छे में हय कडा भी होवे हैं, तो जो हय रिया ही होवे है। इतिहास एक ही हयने बन्गो-मंघ रिया 'अव-अन्त'। बाया करते हैं कि उध यं के शाक हय उरकडा बीनने बं।

धरती का अभिशाप कटेगा

भ्रष्टे!

गुफ्तारी सख्त साधना भंगलमय अभिलाषा।
 करती है संस्करण नदी का वन कर स्वयंभू आशा।।
 यह प्रकाश का पूंन, स्नेह, सौन्दर्य, सय का खोत।
 प्रबुधमान हो भर देगा धरती, मावा की योद।।
 बर आवेगी भी धरती की गौद योय्य लालों से।
 निर्दल पदगेगी धरा किलकटे हय मयुर बाडों से।।
 धरती का अभिशाप कटेगा वरर हलक लायेगा।
 प्रभु का आशीर्वाद प्राप्त कर नया सूर्य आयेगा।।
 सुविवाद, स्वादर्शन, विज्ञानवाद का चाल।
 विभीषिका वन कर धरती का वना हुआ है मल।।
 द्विभ-भिम होकर बिरहेगा जब प्रकाश लायेगा।
 मानपुंन दगाल उचर वह धोर से आयेगा।।
 हे यति प्रवर! गुफ्तारा भंगलमय अधिमान प्रयाण।
 मन्-मन्द संस्वरिध धर पर वहे आयय वरदुःख।।
 पावे र्हे 'सदा हम उेर, यह संतर मरुन।
 वने, सख्त संस्पर्ध पर धमक उठे 'मृतान'।।
 —अमरगण पाण्डे

प्रेम का रास्ता विफल होता है, तो यह मानवता की असफलता है

पुलिस की गैरकानूनी ज्यादातियाँ बंद हों

—जयप्रकाश

[रात ९ फरवरी, '६१ को मिराट की सार्वजनिक सभा में दिये गये जयमकराजी के विचारधरत मापण के मुख्य श्रंख। —सं०]

मेरा मतना है कि चमत्कृत घाटी की समस्या केबेरीयों और मुसलमान हैं। जब से यहाँ आया हूँ, तब से यहाँ की परिस्थिति समझने का प्रयत्न कर रहा हूँ। चमत्कृत घाटी शांति-समिति के सदस्यों से और यहाँ के विभिन्न सामाजिक वर्गों के लोगों से सावजनिक कार्यकर्ताओं से अभी को मेने मुला, उस पर से कोई निष्कर्ष प्राप्त हो रहा है, पर इतना अस्तर बहना कि प्रेम और भाईचारे के रास्ते के लिए यहाँ का प्रश्न आज अत्यन्त ही बुरा हो चुका है।

यहाँ का यह हाल क्या हुआ, तब मैं तोचोप में था। यहाँ के समाचारपत्रों ने इस घटना को जय ही महत्वपूर्ण और चमत्कारिक माना, पर यह देकर अब अजीब लगता कि यहाँ इस घटना को विशेष महत्त्व नहीं दिया और कुछ लोगों ने निना जान घड़ी और अभयन के भी इसकी आलोचना की है।

कुछ दिनों पहले मध्यप्रदेश के टी० आर० जी० सुब्रह्मण्य और रमन का बयान अखबारों में छाया, जिससे भारी परेशानी बढ़ी। यह बयान भी गामसदारी का एक नमूना ही था। आत्मसमर्पण की घटना मान्य-परिहास का एक नया परिच्छेद है। स्वयं की छवियों में हम गांधीजी के प्रेम और कृपा का रास्ता आँसों देना चुके हैं, फिर हाथ-कानन को आरंभी क्या। यह एक नई रिवाज है, जो गांधीजी के अहिंसक आन्दोलन से सावित्री हो चुकी है। यदि यह मान्य-परिहास का भाग है तो वह आज चाहिए। यह भाविय का आस्ता-बस्ता है, तो समझें किसे किसके बकाबत मानना अभाव है। आज दुनिया भर में बाएँ तरफ से शांति-शांति को बात चोरो से चल रही है। हमें सब कानना होगा कि संहार की तरफ जाना है या सत्य, प्रेम, कृपा, भाईचारा और सहयोग की ओर।

यहाँ इस लेख में भीत बाणियों ने आत्मसमर्पण किया, इकीयों नहीं आया तो किनो अस्तर हुआ, प्रेम में नहीं मानता। रंभा और गांधीजी ने दुनिया की सत्य और भाईचारा का संदेश दिया आगर ईसा की बात आज ईसाई और गांधी की बात हम अस्तर में नहीं आते, तो हमने उन महापुरुषों की मरणोन्मत्ता नहीं है। उनका काम हम बकाबत है, सग सार्वजनिक कार्यकर्ताओं का है। आज यदि प्रेम का रास्ता निचक होता है, तो यह मानवता की असफलता है।

यहाँ इस लेख में हमन कापी असे से बका रहा है। दृष्ट-पक्षि ॥ समस्या हल नहीं हो रही है। कोई कमनास बाहु नहीं होता। कुम्हार जिस तरह मिट्टी से तरह-तरह के बर्तन बनाता है, उसी तरह मीठा

लम्बी कतारों और सगकों की धर्मनाक और मध-पत्तनमुक्त हालात; लासों लासों का प्रति दिन काम पर आने-जाने के लिए डेढ़-डेढ़, बी-बी घण्टों तक भीड़ भारी रेलगाड़ियों में चलना; शहर भर में अस्तर अस्तर सगकों पर तेजी से आने-जाने के लिए प्रयत्नशील सगकारियों और पंदस चलने वालों का बिनाल समूह और उसमें संघर्षों जगहों पर सगकारियों से होने वाली घुससगहटें और बकसगियाँ-यह मीठा बिना है उस निजदी का उस हासल का, जिसमें भारत के एक प्रथम शहर की ४३ लाख जनता को सामाजिक-रहना पड़ता है।'

यह मुझे ठंडे दिल और विभाग से सोचने के लिए मीठो ॥ कि हम फिर जाना चाहते हैं।

—जवाहरलाल नेहरू

एसा सभ्यता कि जलन के द्वारा सभ्यता नहीं मुक्तो और विनोबाजी को सनावास हम मिल गया, इससे पुलिस की कुछ सभ्यता कम हुई तो मैं इसे बेचर की बात समझता हूँ। यहाँ स्थिति का प्रश्न नहीं, विचार का प्रश्न है। शासन की

काम विचारना जानूँ इस का फायदा है। मैं यह नहीं करता कि निजेश काय लोग इस समस्या को हल करे-मेरे कथन में कोई शिरोभास नहीं है मानता है कि विनोबा का मान्य ही है पर मुझे मर पातिसेनिक बर्तन-कर्म करेगा। एकरे लिए सगको हकक देना पड़ेगा। मिनर इस समस्या पर मीठो, सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से विश्ल करके रहे हल करना होगा।

यह सैभ उतर मदेच, मयपदेश और राजस्थान के डुमों का ही नहीं, बल्कि राष्ट्रीय महत्त्व का है। सत्ता के हल लिए और सैन्य-विचार के लिए एत ही, प्रदेशों के अस्तरा नेत्र की भी सैभ होगा। यह कोई जादू का काम नहीं है। लोक-शाक्ति और समाज-शाक्ति का सार है। समाज में जो जादू की जादू है उसे बगना होगा। इस सबके लिए तीन बातें आवश्यक हैं।

- (१) सत मिल कर विचार करके कार्यक्रम बनाना। सत्य का प्रतिपादन सर्वत्र अविकर रहना है, कि विशेषतः का शील पीठ-पीठ कर हल कदना बहाने रहते हैं।
- (२) इस समस्या का समाज शासन में सृष्टि से समाजक मध्यम हो।
- (३) आत्म-समर्पणकारी बाणियों परिकारकों के सभ्यता को जानने आसकों को मुक्त नहीं बनाना बल्कि मुक्तों की सगकारियों के अस्त में कि लिए, सगकर, अस्तरि आसक के उन सगकारियों को अस्तर कर रहे हैं, जो आसक कर्माई छोड़ कर हमने मिश्रक अस्तरि कर रहे हैं। अस्तरा के प्रार्थना है, यहाँ उरसित लोगों ॥ निजेश है कि वे अस्तर पर में शांति-पत्र रत कर उरमें एक नया पैसा या एक-एक मुठि अस्तर देंगे। धय-जगत्।

'भूमि-क्रान्ति'
हिन्दी-साप्ताहिक
कार्यक सुलभ : शहर हरये
पता : ११२ स्नेहलालगंज
इन्दौर नगर, मध्यप्रदेश

विहार-केसरी श्री वाचू का महान्, किन्तु गुप्त दान

—शमोदरदास मूढदा

विद्युत् ३१ जनवरी को विहार के मुख्यमंत्री श्रीकृष्ण सिंह का आचरितिक अवसान हो गया ! वे एक राजनेता के अलावा सुहृदय भावनावान मानव भी थे। श्री दामोदरदासजी के कलम से लिखे गये इस संस्मरण से उनकी विजाल व्यापक मानवता के सहज दर्शन होंगे। —सं०

उन दिनों विनोबाजी पार्लियमेंट में प्रयागवाक (वेडिमेंट) मलेरिया से पीड़ित थे। विद्युत् ने कई वर्षों में भीषण का प्रयोग नहीं किया था। इसी भीषण मरण ने मुझ-काव्योलन के लिये उन्हें अपना साधन बना लिया था और उत्तरवाचू बहुशो बार ही ऐसी सत्रनाक बीमारी ने आक्रमण किया था, मामूली उबर कई बार माने की विष भीषण-कैसन के चले भी गये थे, लेकिन इस बार कफोटी होने बालो की-नचोटी देखी, प्रथम की ओर गमवान थी, और धारियों को भी, जिन सबके ड्राय हो भयमान प्रकट होते हैं।

विनोबाजी की हालत तेजी से बिगड़ती पा रही थी। किंवदंती ऐसी थी कि साधर भासा उष कर भी अधिक बढ़ती न कर सके। दिल्ली से अग्रणीय राजेश्वर बाबू तथा प्रधानमंत्रीजी के आह्वान पर संदेश भाये थे कि भीषण का वेकन किया जाय। भीषणों की या नहीं, इस बारे में कोल पर बार-बार पूछा भी जाता था। किन्तु भीषणों-वेकन के लिये विनोबाजी को प्रेरणा नहीं हो रही थी, न लेने का आह्वान ही हो सकता था। परन्तु लेने की शक्ति नहीं थी, और अन्त-मृत्यु के सपनों को भोड़ें नहीं टाक सकता प्रह कनका विचारक उस भी था, और अभी भी हैं। इच्छित "कोषीय" "वाचू" भीषणों वेदो मारणको हरिः"—यहो वनकी भावना सब को को, और सब की हैं।

किन्तु विनोबा अब एक व्यक्ति नहीं रह गये हैं। उनके छांटिक, मानसिक आधिपत्याधिपति थे किंचित उ अक्षरभय होने भांको एक बहुत बड़ा सुहृद सज्जन्य चरित्र हैं पा, इसलिए सभान्ता ने गंभीर रूप कारण कर दिया था। किसी गंभीर लण की कल्पना के सको नहीं उठे थे, सब और पिता का पाशाचरण था।

भी भी बाबू ने स्वयं कई बार साकर विनोबा में भीषणों लेने के लिये विनय किया। हर बार वे कभी पटना थे, तो कभी जमशेदपुर के, तो कभी सोनी जगह के और कभी-कभी तो कलकत्ता से भी बाण्डरों और हासों के ले आया करते। हर बार नया उलास उठकर आते और विचार होकर मोठे, किन्तु नहीं हारते, पर करते हुए कुछ व विद्या का अनुभव लिये विना नहीं रहते।

दोषहर के ठीक बारह बने का समय था। भी बाबू विनोबाजी के मित्र कर हुआय होकर परोक्ष के कर्म में, विद्यामन नसविधाल में हैं वे: "विहार पर पहले एक कर्लक लण हो चुका है, सुपनकाल बाई गायी के देहावसान है। अब आर बाबा नहीं मारते हैं, तो हम तो नहीं के नहीं रहेंगे।" भी बाबू के मुख से येना भरें उरु प्रकट होने लगे, सारे प्रदेश की कुरवा-मिहिल मानो उनकी बायी और बाईयों में साकार हो पडी।

"एक बार फिर क्यों न काया साथ विनोबाजी के पास?" हमने भावने आपसो व भी बाबू को सांखना देने और पुन. एक बार प्रयाग के पहाल से बहा, "समय है, वे इस बार मान भी लें, और मान लीजिये कि नहीं मान, वो भी हमें तो समझाना रहेगा कि अधिक उरु प्रयत्न करते रहे।"

भी बाबू सफल उरु सके हुए। भाग्यो उस मलेरिया के कारण निर्मित संकट पर विजय पाते के लिये प्रयु-प्रेरणा ही उरु करी हुई। भी बाबू की यह कार्यमयी विद्यामन वापस लिये, मूल्य-पन्था पर आसिरी सपनों की प्रतीक्षा करती हुई

विनोबा-विचारों वापस मूर्ति के उन्मुख मूल्यवचन को उरुह आकर चली हो गयी। श्रेय ने मानो यमराज को ललकारा का उरु समय। उपर विनोबाको का सारा बहन भीतर ही भीतर आचरितक दाह के कारण बसाएर मोर ही रहा था। और उरु बहसुभाय अन्तर्धान में भी है एक विविध मान्यन का अनुभव कर रहे थे, किंचित चर्चन करणा का उरु उरु उरु हवा ही हवा है, उरुल्लेख तो वे बाय की कर रहे हैं कि कैसे पढ़ते हैं उस समय अपने को बहामय प्रयु के बाहुवालों में ही पाया था, आर भी वह अनुभव सपर्यं उनके मान्यन का विषय बना हुआ है।

हेकिन उरु समय उस कर्म में उरु कमीर, किन्तु ग्राह्यन कर्णिक का एक-एक दाण, सबके लिए एक-दु-मुष के सज्जन हो रहा था। विनोबा मूल्यवचन अनुभव में उनकी यह ज्योति व्यापक वेक-उरु की देखीली पर सड़गी थी, मित्रत्व का जोडा छोड़ कर विद्याल में उरु लेने के लिये, उरु ज्योति के संभाव्य भावना की कल्पना भी बहाल थी। उस पारिष को वाग करणा भावस्यक था, विनोबाजी के कर्मों के पास भी हैं कहा था "विनोबा, भी बाबू गये हैं।"

मानो प्रकट सभायि से योगी को बहामय था। बाईयों को प्रयाग-कालो होकर और नमस्कार के लिये दोनों लण एकत्र रहते हुए भी वे स्वर में विनोबा के आत्म सहज पूजा:

"या कहते हैं वो बाबू?"

विनोबा के मूँह से ये उरु निकलने की हो वे कि पुनः थडा वे जुड़े हुए हानों को माने लिये अनुपूर्णे गमनों के और महान् होकर भी बाबू ने कहा:

"महाराज, भीषणों का वेकन किया जाय। हमारी इतनी प्रार्थना अब खीरार की जाय। हम आपको बचन देते हैं कि बाणरा का हम कर दें।"

विनोबाजी पुनः संशुभ हो गये। कोई महान् संकष नहीं जाता दिखाई दिया। जीवन-मृत्यु के क्षणान्तों की कल्पनाओं से उरुके ऊपर उरु पुके थे। भीषणों लेना, न लेना भीरत का बसाएर उरु नहीं हो सकता था। नमडा व निरुहाराति की उरु मूर्ति पर भी बाबू के सपनों में रामबाण का-डा बसाएर करना मुक कर दिया।

श्री वाचू विहार के महान विभूति थे

भी बाबू विहार की महान् विभूति थे। उन्होंने ५० वर्ष से भी अधिक समय तक देश को सेवा की। ब्रह्म-सत्ता तथा निरन्तर बीमार रहने के बावजूद वह अत्यन्त क्षयां तक देश-सेवा में रत रहे।

उनके हृदय में गरीब व्यसियों के लिए स्नेह तथा सहाय-भूति थी। गरीबों की व्यथाओं का उरुल्लेख करते करते उनकी आँसें छासकता जाती थीं। उनका हृदय एक स्वच्छ दाखन के साक पानी की तरह था, जिसमें से कोई भी व्यक्ति डाँक कर वह स्पष्ट रूप से देना सकता था कि वहाँ सहाय्यी में क्या है।

—विनोबा

विनोबा ने सजल शेरों के भी बाबू की ओर देखा: "मैं देखता हूँ कि मित्रों को बेटी सभ बीमारी के कारण लेने बहुत किन्ता में डाल दिया है, वह किन्ता हूँ होगी चालिए।"

भी बाबू हैं कर्मों का धार नहीं रहा! जीवन का कर ही नहीं, अन्त-यन का पुष इस उरुके भाग भाया, देखा अनुभव उरुने ही था, सारे कर्म में मान्य की भावना छा गयी।

बाण्टर कोण "केवोचरों" लिये सके होते थे। पानी के अनुपाय के साथ सिद्ध

भाषों गोडी का हि दोने नयी। बाण्टरों के विद्याल का हि इतनी माया ही काफे होगी, वेडा ही हुआ।

मानो उरु तरह पल्लाम की प्रशंसा में साड, किन्तु आडा भरे मान्य से हो गे। पाँच मिडि की मुँह गरी हो पाये र, उरुल्लेख सारायं मुक भाया। सान में उरु नाडाकरन बाबू की तरह बयन था। को बाबू को बाईयें विनोबा की ओर हुनक के भाई से एकर भी। उरुके हृदय उरु-सडा के मोडरोती थे—हुनकता किनोबा के लिए कि उरुने ल सबके चित से विर का मोड इटा सिग; हुनकता भी बाबू किड लि वे इस महाभावय के विर भी पुराने में उरुल हो रहे, उनका सपने पुनः पुनः पर हुन करते उरु कनेन सजु विचारते रहने व सत हुन करीयें उरु-हाण्टों की बाधाओं की पुनः हरी-नयी कर देने के निमित्त बन उरु।

और उरुके अधिक हुनकता परमिता परमाणा के लिए हैं। उरुको उरु उरु म्रान की और एक महान् उरु म्रान था; योकि वहि उस समय भी बाबू ने उस पल-सटा के विनोबाजी के आह्वान के बिना होता, तो क्या होता. बहमा दनि है। उस कल्पना के आर की उरु उरु उरु उरु है। ईसरी सपनायें और ही, सपनों की हय आम नहीं उरु, परन्तु उरु समय तो ही ही उरुके और ईसरी सपना भी बाबू के मुख से ही प्रकट हुई थी, इतने उरुके नहीं।

भी बाबू का पारिष एउरु बन नहीं रहा, उनको उनकी अनेकविध ठेकानों में ऐसे भी विहार के वे देय हैं। इच्छित में महत्त्वपूर्ण सभान दान किया है, परन्तु उरुल्लेख घटना के कारण भी बाबू को सजु सजुदास में जमर रहेगी, इतने उरुके नहीं।

और भी बाबू ने अपना बचन भी निवाहने का पुन अरुल किया। विहार की कल पोतने योग्य भूमि का उरुल्लेख मूढदा हैं प्राय करने का संकल मिडार कलि ने स्वकीय किया व उरुके लिए पारिषमन प्रयत्न भी किया। क्या भी बाबू के सपने सहयोग के विना यह संभव ही सकता था? उरुके भी बाबू ने प्रयत्न में कितने ही मित्रों में माना भी व मूढान प्रकट किया। इरुल ही नही, मूढान-साक-कार्नाओं की प्राय पर विनोबाजी के विहार छोडने के पूर्व, विद्यामन-सभा को एक सभाकी ही, सुदी देरी, ताकि सदाय-गग बने-जपने इरुकी

भोग-विलास राष्ट्र को निर्वीर्य बनाते हैं

वैजनाथ मद्देवय

इस ही महीना पूर्व इटली में खेती की जागतिक प्रतियोगिता हुई थी। उसमें माग लेने के लिये भारत ने भी अपने विद्यार्थियों को भेजा था। परन्तु इन प्रतियोगिताओं में भारत अत्यन्त विद्वह्रा हुआ और कमजोर साबित हुआ। ऊपर से मिलानि करने के पचाय नीचे से देखा जाय तो राष्ट्र पर उसका नरक दुःख या तीक्ष्ण या। रोलों से शक्त होजा है कि राष्ट्र के युवकों का स्वभाव कैसा है, जिनमें चिन्ता प्रायः है। इन प्रतियोगिताओं में रुत सच्योत्तर रहा। बहुत से महत्त्वपूर्ण और बड़े-बड़े उपकरण यदी जीव कर लेने गया। संयुक्त राज्य अमेरिका यों आजकल संसार में हर बात में प्रभुता माना जाता है। परन्तु खेती और व्यापार में वह भी रुत से पीछे रह गया। अमेरिका के नये राष्ट्रपति कैनेडी ने इस पर बरी चिन्ता प्रकट की है और सारं राष्ट्र से प्रतीक भी है कि वह राष्ट्र-स्वभाव और राष्ट्रीय-जल के बारे में उदासीन नहीं रहे। उन्होंने कहा है कि :

"हमारी बहुत-बहुत सभार में सबसे ऊँची है। हमारी युवाक भी अच्छी है। हम के अग्रिम भेदान हमारे यहाँ हैं। विद्यालयों में व्यापार और खेलों की तरफ बहुत ध्यान दिया जाता है। परन्तु फिर भी इन प्रतियोगिताओं में यूरोप के युवकों के मुकामों में हमारे अमेरिका के लयान बहुत पीछे रहे।"

लयापिक बात भी छह बरौसों की गयी, जिनमें ५७९ प्रतिशत अमेरिकन अथर्वन रहे, जब कि यूरोप के केवल ८७ प्रतिशत अथर्वन ही अथर्वन रहे।

राष्ट्रीय-जल की बरी-बारी में ६५७ प्रतिशत अमेरिकन लयान अथर्वन रहे, जब कि यूरोप के लयानों में केवल १६ प्रतिशत ही अथर्वन रहे। इनमें भी आस्ट्रिया और विश्व-अथर्वन का प्रतिशत तो केवल ५५ प्रतिशत ही था।

इन बरोसामों में भारत की तो कहीं गिनती ही (उल्लेखनीय) नहीं की।

कैनेडी के किलक है कि इस युवायुव विधि को हर करने के लिए भूतपूर्व राष्ट्रपति आरथेन हामर ने नरोपनकीय स्तर पर एक और मागिनीय को एक बरौसी बना दी थी। और विज्ञेय पीछे बनी से इनकी विचारियों के अथर्वन ही युवकों की राष्ट्रीय किलक दिया जात रहा है। फिर भी देश के भारतीय और युवाक का यह हाल।

राष्ट्रपति कैनेडी आगे कहते हैं—

"सबके अधिक कुछ ही बात को यह है कि अमेरिका के अर्थिक-शिक्षण युवाक, नाराज-पराय और विज्ञाओं बनने का रहे है। राष्ट्रीय की अतमान बनाने की उद्यम उद्यम कोई व्याग ही नहीं है। श्रीबराज हमारे राष्ट्र का जल है। वही बाराज-नरक कबको और निर्भीक बन रहे ही संसार की शीर्ष में हम कैसे उद्यम करेंगे? उद्यम में हमारे सामने खड़ी अर्थिक चुनौतियों का मुकाम हम कैसे करेंगे? जब तक अनेक बार हमारी लयापिकता पर सारे को है, परन्तु हमारे नीज-बानों में जहाँ हवा में उड़ता दिया है। परन्तु युवों के बरो को और खरों के बरादुरी के लयान युवाक विज्ञा है।

"परन्तु इसके लिए निज उद्यम और जल की अथर्वन होती है, यह सब-बातों का नही-नो-नही के प्रविषय थे नहीं ज्ञात किया जा सकता। उसके लिए तो अथर्वन जीवन पर बनी-मायों, व्यापारों और परिवय के कामों में रात्री को उद्यम करके और भी नयन-नयन विचारियों को यह उद्योग और सब-बातों के यैतनों और निरयार के परिवयों कायन में बनी-बनी एक लियता रहा। परन्तु सब-बातों को और युवाक

होने को नहीं मिलेगी। ऐसे बहुत से बाग-बिन्दु हमारे युवाक माने हावों से करते थे, जब हमारे जीवन में के अथर्वन हो गये। मायुकी-मायुकी लयों के धामने को मोटरी को लया-नयनी बचावों को देल कर की वो हैपन हो जाता हूँ। कहाँ गया वह युव, जब हनु बनने के वक कर उद्यमों में जाता करते थे ?

"राष्ट्रीय-जल की निरोम और खेल के लयक बरौस है। परन्तु विज्ञान, टेलीविजन और आरकन के द्वारा प्रावि-अथर्वन में हमारे युवकों के राष्ट्रीय को एक-बन-निकामा बना दिया है।"

"एक एक राष्ट्रपती समझा है और इसे हनु बनने के लिए हमारे राष्ट्र को अथर्वन करना होगा।"

इस अथर्वन बारे राष्ट्र का अथर्वन इन अथर्वन अथर्वन प्रथम की तरफ विज्ञान हनु कैनेडी के केलीय अर्थ-व्यवस्था के लेकर उद्यम नीचे बरौस आरकनीय अर्थिकारियों, विज्ञान-अथर्वनों और मायरीकों तक की उद्यमों के लिए अथर्वन है।

जो बात इस विषय में अथर्वन अथर्वन अर्थिक उद्यम अथर्वन और उद्यम अथर्वन राष्ट्रपति के लयान और उद्यम अथर्वन राष्ट्रपति को लयान होनी है, क्या यह हमारे लिए हमारे युवाक अर्थिक नष्टी नहीं है ?

"राष्ट्रीय-जल मोटरी के बारे किने धर्म कैनेडी में एक बहुत छोटी चीज है। परन्तु मैं हमारे युवकों की विज्ञाओं, आरकन और निर्वीर्य बनाने वाला आरकन अर्थिक अथर्वन है। इसलिये अथर्वन राष्ट्र के लिए अथर्वन अथर्वन है। राष्ट्रपति कैनेडी अपने राष्ट्र पर भी अथर्वन अथर्वन कर रहे हैं, यह तो सामक्य अर्थिकी लयानों के द्वारा नीज उद्यम पर है। फिर भी वे अपने आरकन और अर्थिक अथर्वन है। परन्तु हमारी तो अथर्वन लयानों की बहा ली नहीं है। अपने पर भी लयान अर्थिकी के उद्यम को लयान में अथर्वन करते हैं और न अथर्वन अथर्वन अथर्वन लयानों के लयान ?

('अथर्वन प्रेस अर्थिक', राष्ट्रीय)

देश-विदेश में सफाई-कार्य कैसे होता है ?

- वेतनियम में सफाई-कार्य को दो रूपों में विभाजित किया जाता है। शास्त्र लयान और अथर्वन-अथर्वन का काम बही नहीं करती है।
- ठाँवों में अथर्वन-कार्य अथर्वन नहीं है। अथर्वन कार्य अथर्वन-कार्य द्वारा अथर्वन लयान पर किया जाता है।
- अथर्वन में अथर्वन-कार्य अथर्वन लयान के अथर्वन लयान है। अथर्वन अथर्वन लयान अथर्वन लयान में अथर्वन लयान है।
- अथर्वन में अथर्वन-कार्य अथर्वन लयान अथर्वन लयान में लयान है।

"हृषीको यामा एक आयम से दूसरे आयम का रहने है।"—नामा ने कहा था। बापूजी में बच्चा ही किनारे 'सापना-केन्द्र', दुष्टपथा में बुद्ध धिरेर के निरुद्ध 'समन्वयधर्म', स्वयंभोव निरुद्ध की ओर में सहायी न्यायप्रकाशो का सोलादेवता का 'सर्वोत्प-यानवम'—युग सदाह थाभा हो रही थी और जगो हारुल में अद्वैत धीरेन्द्रमाई की वरणा से चलने वाले सादीधाम के 'धम-भारती' में बसा पहुँचे थे। धीरेन्द्रमाई ही इन दिनों पुणिया जिले के एक गाँव में 'ओज्याविरत धीवत' का प्रयोग कर रहे हैं। उनके पीछे 'धम-भारती' की मुरा उजान का किस्सा भावार्थ रामपुत्रिकी ने ले लिया है। विनोवाकी का स्वागत करते हुए उन्होंने बताया कि "धीरेन्द्रमाई दूर हैं, फिर भी उनकी आत्यंतिक साधना हमें चुनौती देती रहती है। इन समुच्च ज्योष की अविश्वस्य बनाये बिना कारोह्य की संविद्ध नहीं तय होगी।"

मुँगेर जिला सादी-धामोदोष संघ का उत्पत्तव करते हुए विनोवाकी ने कहा, "किरिंदीकरक के जेते कई मन्थे काम बिहार में पुरु होते हैं। लेकिन उनका पुर महत्त्व धारण बिहार के ओग मन्थे वातते हैं और भारत को उसका कौनसा नही पहुँचते हैं। सादी का सम्बन्ध गांधीजी ने स्वराज्य के आदीतलन के साध लयाया था। उन दिनों सादी को चालना देने के लिये देश को सर्वप्रथम पांडित्य महाप्राय गांधी के षष में देवे मिली थी। इन १०० साल में हमने १ प्रतिगत सादी सेवा करी है। हमें ॥॥ प्रति-गत सादी बनानी है। इस समय तक हमें पहुँचने है। पहले ही साधनाप्रवृत्तियों को धार में पाहूँगे तो अपना है। सादी में दूसरे स्वतन वसे हूँ। सादीवालों के सामने यह खयाल है कि साध तक जीते नहीं देती यदि प्रतिग रहेगी या सुदुरो अग्रगामी होगी ?

"लेकिन आज का जमाना सादी के लिये प्रतिगुह है और इस संकटकाल में है, इस बिचार से मैं सहमत नहीं हूँ। इस बात को मैं सादी के बिचार के लिये हमें अत्यंत अनुमूलना देना रहा है। हमें यह समझना चाहिये कि जन-मानस को आप किस तरह पकड़ सकते हैं।

हमारे कुछ काम ऐसे हैं, जो सच-चाए नहीं कर सकते हैं। सरकार भी भी होना नही सोचत होगी है, उनसे ऊपर यह कुछ नहीं करती। मित्र-मुद्रणा का काम हमको पसंद आया। बाई को सरकार ने पहले दो सहकार दिया। लेकिन आज में उसे लख कि सहके 'भोरल' पर महार हो रहा है, तो पहले उस पटना का काम नहीं किया। आप माने हुए साधको पर मुकदमे चल रहे हैं और आपकी कसबम कारक बाई के पुलिस कोर्ट में कह रहे हैं कि हमने साधकों को इतलिये पकड़ा है जेले के दर-दरिंये पुन रहते हैं। और ग्यामानीय पुनने है कि क्या आपकी मास्टर नहीं कि विनोवाकी की यात्रा सघर हुई थी? तो कहते हैं 'नहीं।' बात यह है कि नैतिक काम सरकार की धमिक के बाहर का होता है।

कह रहा दिनों पार्टी-पॉलीटिक्ल ॥ कुछ नहीं करेगा, सदा केकें ध्यान में था रहा है। धानि-सेना की भावपरकता सघ सघ भूचल रहे हैं। वह काम बने-बने छोड़ें को, नेताओं को पकडे है। लेकिन कींसी पार्टी यह नाम करने के लिये अपने को अग्रगं मानती है। जभी हाहूँ काम की प्रक्रिया का है। मजदर, यह काम हम कर सकते हैं, दुष्टक भी नहीं कर सकते देती आतना देना में है। किरेन्दीकरण, धानि-सेना, वैशिक कार्य, धान-प्रतिग इन कारो के लिये देश में बच्चा साधारण है।"

साधोधाम में याम को धारपदनी पार्षना का समोहन बताया। उस वकत संवाक कोशिक के पार 'आध्यात' की आर्थिक की चोपगा हुई और कुछ बिहार के सामयानी

गाँवों में बहो काय कान हो रहा है, इसकी आगामी तो सम्ये। विनोवाकी ने कहा, "यह छोटा-सा आराम है। लेकिन जैसे अर्थिक की विनोवाकी पास के बडे धरे को साक कर लगी है, वैसे ही यह आध्यात का काम सारे दुनिया पर अठर डाल सकता है।"

सत्या-साधको भी मोती धारु अपने पर साधियों के साथ विनोवाकी से मिले। उन्होंने बताया कि आज हम कांचेजालों में बस गया है कि हम लोग सब 'भारक्षेपिण' (युद्ध-नर) पर काम करिये। विनोवाकी ने सावधानी का उदाहरण दिया और कहा, "इसमें एक काज स्थान में रखनी होगी। विनोवाकी एक-दूसरे मिले का कहना क्या और उपर यह कि का फिजल हारका भी गया। ऐसा न हो।"

सादीधाम में विनोवाकी की सीधिय मन्थो नहीं थी। इनके पहले दो दिव के राउ में सादी के कारण नीर में सतक पहुँची थी।

दूसरे दिव सुबह सघा पार बने 'समभारती' के वरिचार के बीच विनोवाकी बोरो दरे बैठे। उस वकत साधारण राधपुत्रिकी ने विनोवाकी से कहा कि 'समभारती के सब कार्यकांती लीसाधार-न्यायाध-अर्थ, यह कल्पना अभी तक साकार नहीं हुई है। यद्यपि कुछ कार्यकांती अनापार तथा विवेक-कारक रहे हैं। सब कार्य (१) लोको, (२) सादी-कर्मोसन की ओर से कार्यकांती का प्रतिक्रिय तथा (३) जिले के पञ्चन का कार्य चल रहा है। तेल, साधु, सरामन का काम सादी-धामोदोष संघ पर छोड़ा है।"

सादीधाम से बिदा होकर विनोवाकी अखते मुकाम काया रहे थे। रातले में सादीधाम के आर्य-धिन भोल पर 'मुदालयते' नाम की छोटी-सी बस्ती है, वहाँ से दूसरे बहाँ २२ परिकरक बने है, जिनमें १२२ अर्थिक हैं। ये लोग मिल कर १० एकड बनोनी की छोटी करते हैं। आगामी के लिये हर परिकरक के १०० फीट सखी रहने ५० फीट चौड़ी बनाने लिये है। वहाँ कुवाँ, टालाव, सामधाल, सखन आदि का

काम हुआ है। इन लोको की अपनी सहदीय संविद्ध है। इस समिति ने सादी-धामरानी का कर्मा अठर कर दिया है। साधुकी स्वयंदाय से इन्होंने अपने कार्य-गोले में १६०० रुपये जमा किये हैं। बिहार और आध यहो सचको साधना से संतन होता है। "मुदालयते" हाथ जीते है, उनसे बड़ी अर्थिक सुवसुलत दिशाई देती, अठर बाडे की सेनो के लिये पानी का सुवसाधन हो जाय और पूरक उद्योग मिल जाय। अठर नीर पानमुदाई का धन देने की योजना है।" यह ध्यानकारी देने हुए सधमन्थीनी ने बताया कि इन लोको ने अपने को आरत के अन्तन छुटकारा कर का सहपुत्रपुत्र काम किया है।

विनोवाकी ने गाँव के काम की सहायता करते हुए कहा, "ये छोटे-छोटे काम बड़ीसने में छोटे, लेकिन परिधाम में बडे हैं। आपने पचास छोटे, सबसे बिशुन पाया उजना पानो माने थे भी आप नहीं माने। सराम छोटे-ने आपने समुपुन पानो। पानी जादा है तो जमीन तरय खली है, लेकिन विल सख बनवा है। पचास छोटे-ने सतरा यही होगा। पानी माने के सतरा भी हो सकता है।"—यों कह कर विनोवाकी गरि-बानों की एक दिलचस्प कथानी सुनयो।

"सुनकीसतलने ने बहो सखाने की कीर्तिया की। उस गाँव में उन्होंने 'अध', 'दर', 'सीधिया', 'सुधुपु' को बसाया। लेकिन 'कलि' को बहो पठर नहीं आया तो उनके 'नाथ', 'भरि', 'सेकर' गाँव में प्रवेश किया। वहाँ 'गो' का यतन है 'साम-सालन' (सुधो, यही) और बाडे लोप और पन लाया तो यँन कीरत हो गया। सुकरीदीसको फिर अग्रगमन ॥ अग्रगंता यहाँ है कि है अग्रगमन ॥ तु इत गाँव पर कुरा कर। जहाँ पानी जाता नहीं वह चारिण, कोल, परररर अमुदुय बडेगा, तो यह वान कल्पन-कारो होगा, अन्धधय गाँव का नु-साधन होगा।"

मुँगेर जिले के प्रसिद्ध सामयानी गाँव 'देराई' में विनोवाकी का एक दिन निवास रहा। इस गाँव के पीछे जिनकी जेरणा भाव कबेगी रहते थे 'सन्धो बागू' 'समुद्र' नाम में उस गाँव में आरिधय है और उस जिल में आनन्द के समारोह में सरीक हो गये थे। गाँव में प्रचलता छापी को। विनोवाकी गाँव में चुनने यये थे। यँन के हर अर्थिक के सखन पर सादी थी। कई महलें अठर बसाया थला लगी थी। उस सामयानी में भी साधिक सामिक नहीं

हय थे, ये गाँव के प्रमुख सांधो के विनोवाकी से जिने और उनसे "इसमें सामिक होने की बात हम सोसे, अपने भाग्य में विनोवाकी ने गाँव के लोको को धन्यवाद है। "आपने जो काम किया है, दीखने में छोटा है, लेकिन सख के समान है। जो बुद्धि आरके है वह सब तरफ दुनिया में नहीं के हय बँच नहीं लगे।"

गाँव में चल कर यह सुनना तो लो "जो लोग भाव आरके मलर है, उन प्यार से जीतना है। इस बाडे जालें धर्म-विकत बड़ानी होगी।"

गाँव में छोटे और बड़ों ने दीन एक समय-सा प्यार हो, यह कहते हुए लोकोरने ने बडे लोको में कहा कि "ये लोग माने बन्धे हैं। बच्चा माँ के लतन से पुके-पुठके कमी काटना भी है, तो उसे रोके देर अग्रग कमी में पाँके हो लिये पिलाती है। आपको समझना चाहिये कि ये आपने बन्धे हैं, मुदरक है।"

जब से पुनिया जिले की यात्रा शुरू कि विनोवाकी पदमे लगे हैं कि "सजिनों को इतक इतिन लगा है—जहाँ बीरजन नीर बीरजन बाहु डीते हैं, वहाँ तो-हो काम होना ही चाहिये।"

भक्तिमा गाँव में, जहाँ धीरेन्द्रमाई के पुत्रिार के साथ 'ओज्याविरत-धम' प्रयोग कर रहे हैं, विनोवाकी ने कहा "धीरेन्द्रमाई यहाँ लोकोजन में दृष्टक होने के लिये, सर्व-जन-आधार के लिये आई हैं। सर्वजन माने परमेवतक। जन-मन में जो परमेवतक है, उसकी सेवा करिये। जो जो कुछ बिजायेगा वह साधने में। जो मु-मुझा होगा तो वह भी मुझे लगे है। बाई डीते हैं, इसमें परीक्षा उनको नहीं, सधो और आपकी हो रही है। सब से निररर करके नहीं माने हैं तो बगानों की साथ बाहिये और उनके आर-धान-सलते में क्या जाना चाहिये।"

धी धीरेन्द्रमाई का कबोरे-वनीय मन्थी में चल रहा है। उन्होंने विनोवाकी से कहा कि "यहाँ तो सभी टोलो रहा हैं, लोग रहा हैं। लेकिन मजदूर है कि सभी दूर-सं-धमिक से निरत हो रहे है। कियोप में जन लख कले में पूरे सामयानी नहीं हुए हैं।"

विनोवाकी ने कहा है कि अठम गाँव के बाप भाउर-संन पूरा होगा। फिर होगा 'साम्योटी' होतो—जहाँ काम हो पडेगा, वहाँ धमिक है—हम बता सकेंगे। उसके बाद आन्धोजन के बारे में और ग्यादा सोच सकेंगे।

पुणिया जिले में भी वैश्याय बाहु के सांधेदोष में काम चलता है। यह देख कर विनोवाकी को इस जिले में अग्रगमनी है। तीन दिन जिले के धानि-सेनाओं का विचार हुआ। उसमें विनोवाकी ने बडास कि मर साधुलक प्यारक होना चाहिये। यह इस समाने की गाँव है। धानि-सेना के साथ में हम दो सलर दे रहे हैं; एक देव, और दूसरा, धमिक भी सखनी।"

देश के कोने-कोने में सर्वोदय-पत्र और सर्वोदय-मेले आयोजित

[गांधी-पुण्यतिथि ३० जनवरी से आठ-दिवस १२ फरवरी तक प्रायः अग्रणीय पोस्टरों के विज्ञापन मुद्दिम, सांख्यिक सफाई, सुव्यवस्था, सूत्रयज्ञ, सर्वोदय-मेला आदि विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा मनाया गया। कुछ स्थानों से प्रसन्न निवर्ण हम नीचे दे रहे हैं।—सं०]

—३० जनवरी से १२ फरवरी सर्वोदय-पत्रमेले के अन्तर्गत इन्दौर नगर में हुई परवाना नं० ६० आई-नहीं में भाग लिया, जिसमें माषक परिषदों के ५० आई-नहीं थीं। परवाना टोलियों ने ४०६४ पर से सम्बन्ध कर सर्वोदय का विचार-प्रचार किया। १५१८ परों में सर्वोदय-पत्र की स्थापना की। ५५५ परों से सर्वोदय-पत्र से १३६८ रुपये तथा एक मन अठारह केर भ्रमान संग्रहित किया। 'सुनिष्ठा' की १५० प्रतिवर्षी विषी एवं २२५ रुपये का सर्वोदय-साहित्य भेजा गया।

तिरुनेलवेली नगर में के हावाधान में १२ फरवरी को सामूहिक रूप से ध्यानात्मक अर्थित कर अभावहित दी गयी। अल्पकक्ष दृश्यत, पुत्रवर्षी के भाग्य भी हुए।

—दा० ३३ जनवरी को परमपुत्री से रामनाथपुर (समिलानगर) जिले के सर्वोदय तथा सुभान-कार्यकर्ताओं की एक टोली चणुकोट तथा रामेश्वर के सर्वोदय-मेले में १५ गाँवों में परवाना द्वारा विचार-प्रचार करते हुए १२ फरवरी को पहुँची। इस परवाना पर में मैत्रुद राज्य के कार्यकर्ता भी जुड़ी थी सामिल हुए। परवाना में २१-५० एकत्र भूमि का विद्यमान किया गया। सर्वोदय की परम-प्रतिष्ठा और साहित्य की करीब १०० वृत्तों में विज्ञापित हुई। संघसिधायन और जन-मार्ग भी दिखा।

—अजयपुरवासी की आत्म-भूमि सिद्धांत-विचारण गाँव में प्रतिवर्षी की तरह इस बार ३० जनवरी से १२ फरवरी तक सर्वोदय-पत्र मनाया गया। १२ फरवरी को इस बार सर्वोदय-मेला बड़े व्यापक पैमाने पर मनाया गया। सादी-सामोद्योग और पशु-पक्षी-संरक्षणों की समुच्च माषक करते थी अग्रप्रकाशनी ने कहा कि आज ओकतन लगे हैं। एशिया और अफ्रीका की साम्य-व्यवस्था एक-दूसरे परिपक्व की तरह हैं। साम-संरक्षण की स्थापना के बिना समाज स्वस्थ नहीं हो सकता है। इस अवसर पर की कल्याण और विहार प्रभा-समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष श्री बलान सिंह के भी भाग्य हुए।

—विजय सर्वोदय-मेले, पिचोटीगढ़ की ओर से विचोटीगढ़ पिचोटी पर भीप मधिर में सर्वोदय-कार्यकर्ताओं ने अनेक-अनेक क्षेत्र में ५०-५० युवियों संग्रहित करके गांधीजी की अर्धांगुलि के रूप में अर्पित की गयी।

—रंगमंच जिले के प्रायः अधिकांश छादी और भूदान में लगे कार्यकर्ताओं की एक बैठक दा० १२ फरवरी को सुबोपर की रादी-प्रदर्शनी में विनोयजी के चतुष्पत्ती कार्यक्रम (१)—सूत्रियण, (२)—विषय में एक कट्टा का स्तन देना (३)—सर्वोदय-पत्र और (४) प्राविशेना-को मिले पर में पूर्ण रूप से चालू करने के लिये विहार स्वामी-सामोद्योग संघ के अध्यक्ष भी उपदेश-कारक के सम्पादकत्व में हुए। सभी कार्यकर्ताओं ने एक राय होकर इस कार्य को संपन्न करने की सहमति प्रकट की और इसकी योजना पर चर्चा की। प्रदर्शनी का उत्पादन भी उपदेश-कारक ने किया।

—विहार स्वामी-सामोद्योग संघ, नोखादी के कार्यकर्ताओं द्वारा १० जनवरी से १२ फरवरी तक सर्वोदय-पत्र मनाया गया। इस पत्र में व्यवस्थापक 'सादी-प्रकार', श्री कल्याण शर्मा, श्री आलोचनित प्रकाश शर्मा कार्यकर्ताओं ने २५ मील पैरुल प्राप्त से १० गाँवों में पहुँच कर उपोदय-विचार प्रकाशना। इस अवसर पर २५० रुपये की सादी विषी हुई तथा भूदान परम-प्रतिष्ठा और सुभान-साहित्य भेजा गया और ध्यानात्मक में दत्त तथा भूदान में 'नीमा' की कट्टा-जमीन देना का लक्ष्य से आग्रह किया गया।

रोषादी की रानी मंडार में अल्पकक्ष दृश्यत का समारोह किया गया, जिसमें स्थानीय महिलाओं का भी सहयोग मिला।

—ग्राम सेवा केन्द्र, छपेला (दुमका) के संस्कारकर्ताओं में दा० १२ फरवरी को छपेला में प्रभाव फेरी, ग्राम-सफाई, अरुंड सुदय, सुता-विक्रम-संगम, आय तथा एवं प्रार्थना का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सावित्री-देवीकों की देवी की गयी। यह भी तब किया गया कि विचार को देवी का आयोजन करने में गाँव-गाँव में सर्वोदय, ग्राम-समाज-विचार का प्रचार किया जाए।

—नरसिंहापुर (म० प्र०) जिला सर्वोदय-संघ की ओर से सर्वोदय-पत्र में लेख-लेख की प्रकाश प्रकाशनी कृष्ण, लक्ष्मी-नारायण जैन और लक्ष्मीकान्त पाठक ने समानांतर संपन्न क्षेत्र में सामाजिक विमर्शा उन्मुख के लिए १६ गाँवों में परवाना की। १२ फरवरी को समानांतर में परवाना के समारोह-समारोह में संपन्न क्षेत्र के लोग गाँव के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

—तलम विजय सर्वोदय-संघ के संस्थापकों में १२ फरवरी को सहायक समारोह में अध्यक्षदेव के नेतृत्वा एवं विचार उपस्थिती श्री लीतारामजी काज और विजय प्रदेश के भूशुभ्र विठ्ठलजी श्री गोपबलरामजी ने गाँव-गाँव के जीवन पर प्रभाव डालते हुए अर्धांगुलि अर्पित की। सहायक-समारोह में ग्राम सेवा-केन्द्र, आनंद-रोड; सर्वोदय कार्य संघ, लखी; ग्राम विद्यारोड, सूर्यसेवा; सुविधा-समिधायन विद्यालय, उदलम की ओर से सहायक के रूप में लो-गुडिचों अर्पित की गयीं।

—छतपुर के राजवनी बुनियाद तथा विद्यालय, गांधी-समारोह नि-लेखक संघ और सादी-समाज के कर्ताओं द्वारा ७३६ गुडिचों संग्रहित गये। अल्पकक्ष सुभान, प्रभाव हरिनन बत्ती में सामूहिक एक साहित्य-विज्ञान के कार्यक्रम हुए।

—जयपुर में रोहक जिले के रोहक नगर में हुई सार्वजनिक-संग्रहित में २० बहुतायें में भाग लिया। सभा में अल्पकक्ष-विचारण, अग्रणीय पोस्टर प्रकाश, सुव्यवस्था और सर्वोदय-पत्र के कार्य का उल्लेख किया गया।

—मिर्जापुर (विहार) में लक्ष्मी-पुण्यतिथि के अवसर पर गांधी सम्मेलन की ओर में आयोजित एक सभा में विषो-सर्वोदय-पत्रकार श्री उदरदेव विद्यालया-कहा कि यह आत्म-निष्ठा-पत्र का प्रारंभ।

राजस्थान में रचनात्मक कार्यकर्ता प्रशिक्षण-विधि

राजस्थान की विभिन्न राजस्थान संस्थाओं की दृष्टि से कार्यकर्ताओं को समकक्ष जितने प्रशिक्षण देने हेतु एक-एक समय से सभा संघ ने तर्क-व्युक्ति के रूप में प्रशिक्षण-विधि-प्रकार किये हैं। फरवरी के हूतरे और लीले-समाह में अल्पकक्ष-प्राथमिक सादी-संग्रहित (पोरु) तथा टॉक विचार-सामोद्योग समिति, टोक में सा० ११ से १७ व १०-१५-२० की विधि-समाहित-संग्रहित किये गये हैं। गांधी-संग्रहित सर्वोदय-संघ की ओर से जिले में अल्पकक्ष-कार्यकर्ता का एक दिवसीय सा० २६, २७, २९, ३० मार्च को हो रहा है। इसके अन्तर्गत अल्पकक्ष, मीलनाका व बीकानेर जिले की विधि-संग्रहित हैं।

विनोवाजी की पदपत्रा

जिला जालपाईगुडी फरवरी सा० पत्रा-स्टेशन २५ लिलवाडी अलीपुर टोक में २५ सोनापुर हाट २७ अलीपुर टोक २७ जिला कुपड़िहार ३० बनेलूर बनेलूर गाँव १-२ कुपड़िहार कुपड़िहार ३ माधन ४ कुपड़िहार ५ माँच की प्रथम में प्रवेश करने।

इस अंक में

भूदान का योग्यतन स्वरूप	१	विनोवा
दोहर प्रथम बस्ती होया	२	अधी-रजुवार
षट्ती का अविद्याप कट्टा (गीत)	२	अभरनायक पाण्डेय
नागरी विधि द्वारा तेलगु सीरीजे	२	
विहार-नेंगाल की सीमा पर	३	विनोवा
सर्वोदय के काम के लिए महारथों में उत्तरीय	३	विनोवा
साक्षात्प्राप्त के कर्तव्य की आसिरी श्रील	३	शिरडार
समान-विरोधी कार्यकार्यों के लियक अनुभव	३	
कार्यों के आकर्षण का दृश्य पक्ष	४	समाहित-संग्रहित कै
प्रेम का सहायक विज्ञान-दोहा है, लो...	४	अल्पकक्ष जालपायन
अन-आश्रित आर-अन-संग्रहित के लिए क्या करें	५	श्रीरुद्र मन्मथार
सफाई-संग्रहित और स्वच्छता-संग्रहित नामों	५	अल्पकक्ष देव
नये अमाने की शुद्धता	६	शिरडार
विहार-नेंगाल की गांधी का महान, मित्र-संग्रहित दान	६	रायोदरहास मुंदा
योग-विद्यालय गांधी की विधि-संग्रहित नवतो है	६	मैलनाका संग्रहित
विनोवा गांधी-संग्रहित के	६	संग्रहित-संग्रहित
समाचार-कार्यकर्ता	१०-१२	देव

वातियों को लियों के शरीर मोक्ष्य" को भी इतने नहीं छोड़ा।

[हरिजन सेवक, २१ नवम्बर १९३६]
अस्वीकृत शिक्षण-सम्बन्धी मेरा लेख देल पर एक ध्वज-जन लिखते हैं—

“जो अस्वाहा, आपने लिखा, वैसी अस्वीकृत नीतियों के इतनाहार देते हैं, उनके नाम जाहिर करते आया अस्वीकृत शिक्षण का प्रस्ताव रोमने के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं।”

इन ध्वज-जन ने जिस संस्कारण की मुझे सफाई दी है उसका भार मैं नहीं ले सकता, लेकिन इतने अच्छा एक उपाय मैं मुझ तक नहीं।

जबता जो अगर यह असंभव होता। अस्वीकृत हो, तो फिर अस्वाहा की भावितक-पत्रों में आपसितजनक विज्ञापन लिखते उनके प्राक्क नष्ट कर सकते हैं कि उन अस्वाहा की ध्यान इस ओर आकर्षित करें और अस्वाहा फिर भी वे ऐसा करने से बाध न आयें तो उन्हें करोवना बन्द कर दें।

पाठकों को यह जान कर छुड़ी होगी कि जिस ध्वज-जन ने मुझे अस्वीकृत शिक्षणपत्रों की शिक्षागत मैत्री थी, उन्होंने इस दीप के भागी मालिक-पत्र के सम्पादक को भी इस बारे में लिखा था, जिस पर उन्होंने इस मूल के लिए पैद-प्रकाश करते हुए उसे आगे से न छापने का आदेश दिया है। यह कहते हुए भी उसी छुड़ी होती है

फिर मैं इस बारे में जो कुछ लिख, उसका कुछ अन्य पत्रों में भी समापन किया है। “निरस्तु” (नागपुर) के सम्पादक लिखते हैं:

“अस्वीकृत शिक्षणों के बारे में ‘निरस्तु’ में आपने जो लेख लिखा है उसे मैंने बहुत आनन्द के साथ पढ़ा। यही नहीं, बल्कि मैंने अपना मालिक अस्तुवाद भी ‘निरस्तु’ में दिया है और एक छोटी-सी सम्पादकीय टिप्पणी भी उस पर मैंने लिखी है।”

मैं यहीर नमूने ने एक विज्ञापन दूध पर के साथ भेज रहा हूँ, जो अस्वीकृत न होने हुए भी एक तरह है। अनैतिक को दायी है। इस विज्ञापन में एक छूट है जो हम वीर पर गीत जल्दी ही ऐसे विज्ञापनों के चक्कर में गँवते हैं। मैं ऐसे विज्ञापन लेने के रत्नार नरका रहा हूँ और इस विज्ञापन-दाता को भी यही लिख रहा हूँ। जैसे अस्वाहा में निकलने वाले समस्त पादु-सामग्रियों पर सम्पादक की निगाह रहना चाहते हैं, उसी तरह विज्ञापनों पर नजर रखना भी उसका कर्तव्य है। और कोई सम्पादक अपने अस्वाहा का ऐसे लोगों द्वारा उपयोग नहीं होने से सहमत, जो भोले-भाले देहातियों को आंलो में धूक भोक कर उन्हें अपना करते हैं।

[‘हरिजन-सेवक’
२१ दिसम्बर, १९३६]

नागरी लिपि द्वारा तेलगु सीखिये : १४

पिछले दो पाठों में तेलगु भाषा के तीन तरह के विद्योपयोगों की गयी थी। नीचे कुछ ऐसे पाठन रहे हूँ, जिनमें विद्योपयोगों का उपयोग है।

हिनदी
यह छोटा गाँव है।
गाय गीता दूध देती है।
राम अच्छा लड़का है।
शान्ता गुलाबकी लड़की है।
आठ रोटी बची पतली है।
एक सफेद फलज बो।
वे पर बहुत छोटे हैं।
बेमोलो स्टेशन के पास
नारायणपुर एक छोटा गाँव है।
यहाँ जंगल को काट कर
सर्पोदयुर को
बड़े नैनन पर पसाने का
प्रयत्न हो रहा है।
नारायणपुर बहुत अच्छा गाँव है।

हिनदी	तेलगु	हिन्दी	तेलुगु
सामने	बेट्टु, सुंदर	पाऊ में	पाऊ में
पिछले	पेनक	दे से	पातालु
बाह	तवाँत	जल्दी	लल

दो उल्लेखनीय प्रसंग

‘बुधार्पा-स्मारक निधि’ के कार्यकर्ताओं की सोयी हुई धारणा कि विन दय वरवादा है, उसका एक उदाहरण नीचे के पत्र से मिलता है:

“बुधार्पा यज्ञ” में प्रकाशित बुधार्पा-स्मारक निधि के लिए पत्र संघर्ष की प्राप्ति पढ़ी तथा निबंध किया कि मैं स्वर्गीय बुधार्पा के इस्मारक के लिए अर्धशतक द्वारा प्रतिष्ठित बन चुके। अर्धशतक का नाम और कोई नजर नहीं आया, इतना ही रोहक भवते हैं इस कार्य के लिए किन रिखाता बना कर भेजे ८ रुपये २१ पैसे तनपुरी के रूप में प्राप्त किये। विन मैं तो सत्य नहीं मिलता था, इसलिए अतारार पीच रोड को ७ से ११ बजे तक रिखाता चलाया, जितने मिलते हैं। अताथा को बहुत कुछ बातें को भी मिलता, साथ ही तोहिये का अतिम प्राप्त हुआ।

—जयनारायण, तंजोवक, जिशा सर्वोदय-मंडल, रोहक (बंगाल)

स्वर्गीय बुधार्पाजी की सम्बन्धना का दायरा किताब भ्याकपा या वह गोरख (उत्तर प्रदेश) जिले के बरौद-मंडल के प्रयत्न के पत्र से मालूम होता है:

“आपकी अपील के आधार पर तहतुलीक करदाता, जिशा गोरखपुर क्षेत्र से बुधार्पा-स्मारक निधि” में अब तक २-२५०० सड़क कर चुका है।
भी बुधार्पाजी का उपकार तहतुलीक करदाता के क्षेत्र पर उनको साक्षरिता के अतिरिक्त भी रहा है। सन् १९५२ में आता निबंधन के बाद ही मैं कदा गुला पडा था, तब से उस समय को किताब-मन्तूर प्रजा-पार्टी के इस क्षेत्र के अग्रणी शिक्षण-दाता सम्बन्ध में अल्पपत्र अतिरिक्त उन पर प्रकाशित लिखने-लेखने का कार्य है। अन्तमे परतलक भी बोधारी के बान्धु २००० रिखा आया नगर में रह कर मुझे सेन बोटा किया। उनके अविभक्त के आधार पर ही इस क्षेत्र की जनता को हारवारी सहजता मिली है।

प्रश्न की बुधना ‘दुग्धा’ को मिलेगी तो ज्यादा अच्छा रहेगा।

अब जहाँ-जहाँ अयोधनीय पोस्टरों के विच्छेद आन्दोलन सशक्ति हुआ है, वहाँ सामाजिक लोगों को चाहिए कि जो पोस्टर अयोधनीय आन्दोलन के, उसमें तीन चित्र लेखे एक अपने एक रखें, एक भी विमल राय, अय्यय, ‘दुग्धा’, केस्टर्ट रिडिशन, सकारा एकेड रोड, बम्बई-१ को भेज दें और एक दूसरे के साथ प्रकाश प्रकाशित को भेज दें। विदेशी विच्छेदों के पोस्टरों के बारे में सरकारी हस्त पर आधारित चारोंपै की जायगी, ऐसा आरक्षण भी मिले है।
जो पोस्टरों अब तक लगे हुए हैं, उनको बारे में या आगे भी ‘दुग्धा’ की समिति जिन्हें स्वीकार कर ले, उनके बारे में भी अनार स्थायी विज्ञापन समिति का नागरिकों को यह लोके कि वे अयोधनीय ही तो उनके बारे में ही ही आरक्षण कार्याधीन ही वे आर-ही तरह कर दें सकते हैं।

अयोधनीय पोस्टरों की समस्या

फिल्मी जगत् तथा सरकार का रुख सहयोगपूर्ण

[भी गीदुल्लाई अह, भी बरेछे मोदारी तथा भी देवैयुनार गुप्ता लर्न केग संघ की ओर से अयोधनीय पोस्टरों के संघर्ष में बम्बई तथा दिल्ली में विराम-उद्योग से संबंधित तथा सरकारी क्षेत्रों के निजामदार कर्मचारियों के मिल कर सातवीज कर रहे हैं। सुधी की बात है कि देवा भर में अयोधनीय पोस्टरों का प्रदर्शन कर दो, इतने सरकार तथा विन्नी क्षेत्र के निजामदार कर्मचारी सहमत हैं। एक दिवस में अब तक जो प्रयास हुआ है, उसकी योकी जानरारी नीचे दी जा रही है। —सं०]

देवा में विच्छेद उद्योग में लगे हुए लोगों की संख्या ‘मिथिल मोहन विकचर्त मोड्यूलन एकोडिपयान’ (दुग्धा) में। ‘दुग्धा’ के अध्यक्ष भी विमल राय साहसिक विरमों के निमांदा की दृष्टिकर से ही नहीं, बल्कि विरम-उद्योग के बाहर सर्वोच्च क्षेत्र की भी अज्ञान स्थान करते हैं। कुछ समय पहले उन्होंने एक पत्र द्वारा अयोधनीय पोस्टरों का निर्माता तथा प्रदर्शन रोक्ने के नाम में अपना दूर सहयोग देने का आग्रहना निमांदाजी को दिया था।

अग्नी परस्वी के शुरू में बम्बई में ‘दुग्धा’ की प्रभाव-समिति भी पैदा हुई थी। उस समय में देवा के प्रमुख विरम-निमांदा हाथिर रहे। भारत के विरम-नी, भी मुम्बई देवा के परामर्श का लय भी ‘दुग्धा’ की प्रभाव-समिति को मिला। इंदौर के जिस अयोधनीय पोस्टर के लिए देवा की चारोंपै की गयी थी, उस पोस्टर के बारे में विरम-निमांदाओं की सीनार किया कि वह विरम अयोधनीय या और नहीं स्थाना चाहिए। सम्बन्धित

विरम-निमांदा को समता पर देव भर में से उर पोस्टरों को इतने की बात तब ही गयी है, देवा बाहिर किया गया। भी विमल राय ने यह दृष्टित किया कि जन्म ही ‘दुग्धा’ के सदस्यों में से एक विरम-निमुक की जायगी, जो विरम, पोस्टर और अन्य विज्ञापन-सामग्री की बाँच निर्मितों के पृष्ठे ही करेगी और उर समिति की समूही के बाद ही पोस्टर उच्च आयेंगे।

नये पोस्टरों में योमनीय-अयोधनीय का प्रभन तो बहुत हद तक इस समिति की निमुक्ति से तब तो जायगा, लेकिन जो पोस्टरों अग्नी चारोंपे सुते हैं, उनके बारे में भी भी स्थिरताय वी बुधना है कि जहाँ कहीं अयोधनीय पोस्टर प्रकाश में आयें, उनकी बुधना उन्हें अर्थात् विरम-संघ (‘दुग्धा’) को ही साथ, ताकि संघ निमांदाओं से सातवीज कर उन्हें अयोधनीय पोस्टरों प्रदर्शन के लिए रानी कर सकें। उनका यह भी सुझाव था कि स्थानीय वीर पर कदम उठाते के पहले अगर दूध

सत्याग्रह की मूल श्रद्धा और प्रक्रिया

- विनोबा

आज हम सय महारामा गांधी का आद्य-दिन मना रहे हैं। एक छोटा-सा सम्पूर्ण आश्रम के दिन हम करते हैं। यहाँ मेरे सामने कुछ गुणियों आयी हैं। साल भर में एक गुणवी सत् आश्रम के दिन सम्मेलित के तौर पर हम देते हैं। लेकिन इसमें दो गुणिवर्गों ऐसी आयी हैं, जिनमें ६४० तक नहीं हैं। सम्मान के लिए सत् कम-ज्यादा दो तो चल सकता है, दान में भी ले सकते हैं। लेकिन आश्रम के सम्पूर्ण में कम भी नहीं ले सकते और ज्यादा भी नहीं ले सकते, यह सब लोगों को सिखाना है। इसमें लोगों का कोई दोष नहीं है। हमने एन्को वालीम नहीं दी है।

आज सात पदों में तीन-चार में था। उन वस्तु गुणराज के महान् विनय-आग्रह नामवादी शत्रु भेरे पास आये थे। उन्होंने हमसे कहा, "मैं पूछ नहीं होता तो निरन्तर घूमता हूँ" वैसे उनसे पूछा जा कि "इस समय हमारा बर्तव्य क्या है?" वे हमसे बोले हैं। आज उनको अस्ती सात को उग्र है। उन्होंने कहा, "हमारे भी चर्चों-बाँटने को सतत घूमना चाहिए। उनके लिए अभी बैठने का समय नहीं है।" मैं तो घूम रहा था, लेकिन उनके चर्चों से मुझे बल मिला। इस वक्त लोगों के पास पहुँच कर यह सब समझाने का हमारा काम है।

आज के दिन हम सर्वोपर-विचार में मानने वाले लोग यह संकल्प करते कि हम लोगों के पास आकर यह विचार समझावेंगे। विचार यह समझा सकता है, जो खुद विचार समझा है और उस पर अमल करता है। सर्वोपर-विचार इतना गहरा है कि हम उस पर अमल करने की कोशिश ही कर सकते हैं, वृत्त अमल नहीं हो सकता है। सर्वोपर-विचार के लिए परमेस्वर के दर्शन को जरूरत रखी है। बापू खुद कहते थे कि उनका कुल जोवन, साधना, सत्याग्रह आदि नाम परमेस्वर के लिए है। अन्तर ईश्वर की शोध करने वाले एकल में ध्यान-धारणा आदि करने जाते हैं। बापू एकल में नहीं गये थे, लोगों के बीच काम करते थे। यह ठीक है कि ध्यान, प्रार्थना के लिए पंद्रह-बीस मिनट निकालते थे। लेकिन वे करते थे कि "ध्यान तो हमारे काम में ही रहना ही चाहिए। और एकल तो जनता में काम करने-करते प्रति क्षण मिलना चाहिए।" एकल में हम जाते हैं तो हमारा मन मुग्धता है। वह कंठा एकल हुआ है? सम्भा एकल तो बड़ा होगा, बापू हम जैसे अलग होंगे। जैसे दुनिया से थोड़े ही अलग होगा है। इसलिए मैंने अत्यंत हीकर जगत्सेवा में एकल का अनुभव के हमेशा करते थे और कहते थे कि ईश्वर की शोध के लिए और दर्शन के लिए मेरा जीवन है।

गुणग्रहण से ईश्वर दर्शन
ईश्वर-दर्शन माने क्या यह समझना चाहिए। हिन्दुत्वान में ईश्वर के लिए बहुत भक्तिभाव है, भक्ति बीनी सेलाक शीन मु दान में लिया है कि हिन्दुत्वान "पंडि इष्टाविद्यैतेड लैड" ईश्वर से भक्तिमत्त भूमि—है। बापू उनको नहीं है। लेकिन ईश्वर की शोध जिस तरह होगी, यह सोचने की बात है। ईश्वर गुणग्रहण है। तप, प्रेम, कल्याण आदि मंगल गुण जितने मरे हैं, तब सब गुणों की परिपूर्णता ही ईश्वर है। सामने जो-भी मनुष्य आते हैं, उनमें गुणदर्शन होता चाहिए। अगर हमें किसी में दोषों का दर्शन हुआ तो हमें "माया" का दर्शन हुआ, ईश्वर का नहीं। किसीमें गुण का और दोष का दर्शन हुआ तो माया और ईश्वर, दोनों का दोष-दोषा दर्शन हुआ। वह स्वच्छ दर्शन नहीं मिला जायेगा।

अच्छ दर्शन तो सब होगा, जब हम दूर-दूर को देख कर गुण का ही दर्शन करेंगे। ईश्वर का एक-एक अंश एक-एक रूप में प्रकट हुआ है और दोष जो शोधते हैं वह माया का अन्तर का अन्तर है—जैसे बीज के अन्तर अन्तर होता है। जैसे माया पर अमल होता है। उसे माया के आचरण को भेर करके स्वच्छ, शुद्ध दर्शन होता चाहिए, अमल-अमल गुणों का दर्शन होना

चाहिए। दोषग्रहण, दोषवर्षा, दोष-संस्मरण नहीं करना चाहिए। इसलिए हमने कहा कि "जिनमें" का प्र होना चाहिए। किसी का दोष हमें दोष नहीं है, वह हमारा ही दोष है, यह मानना चाहिए। उनको मिला करना दूसरा दोष होता और उनके पीछे उस दोष की चर्चा या मिला करना, यह शोध दोष हो गया। इस तरह एक के एक दोष को का संशुद्ध चर्चा तो गुणदर्शन नहीं ही होगा, और गुणदर्शन नहीं होगा तो ईश्वर का दर्शन और शोध। इसलिए हमें अपने भी दोषों का दर्शन

नहीं करना चाहिए। अपने भी दोषों का ही दर्शन करना होगा। इन तरह हीन गुणस्वरण, गुणदर्शन, गुणग्रहण हीना चाहिए। इसीको भयजन के गुणों का स्वयं करते हैं। हम तप, प्रेम और कल्याण करते हैं। यहाँ-यहाँ हमें स्वयं का स्वयं दर्शन हुआ, यहाँ-यहाँ ईश्वर का दर्शन हुआ। बापू के कण धरे हैं, उनमें जोड़े बर्तव्य-कण पड़े हैं। बीटी सबमें ही चर्चा-कण केडी है। उसी तरह स्वयं का स्वयं दर्शन के लिया। कड़ी मंत्र का दर्शन हुआ, यह के लिया। कहीं बचना का दर्शन हुआ, यह के लिया। कहीं और कोई देखा, उसे के लिया। इस तरह हर-एक का गुणग्रहण करते-करते हमारा स्वयं गुणग्रहण होगा, तब हमें स्वयं का चर्चापूर्ण दर्शन होगा।

इस बात को बताने के कि मैं कोशिश में हूँ कि अत्यन्त का परिपूर्ण दर्शन हो। भावा-कषक, दोषों का दर्शन होगा। आज हालत यह है कि गुणों का दर्शन नहीं होता है, दोषों का ही दर्शन है। वे दोष ही सामने आते हैं। वे होते ही ही देखा नहीं। जब तक मनुष्य के हृदय में प्रवेश नहीं होता, दुर्गा ही दोषवर्षा है, बर्षा-कण का पत्र कहीं लपटा है? इस वस्तु का दर्शन ही संभव था साव्य करायो तो, गुणग्रहण को दिया जाता है, जिसे "मिनिट मॉडि वाट" कहते हैं। जब तक शोध का दर्शन नहीं होता है, तब तक उसे वाटवर्षा ही नहीं बड़ सकते हैं। इस तरह हम एक-एक मनुष्य के दोषों के चर्चा-कण दोषों को दर्शन चर्चा ही नहीं होगा। वह दान हमसे

नहीं होगा। यह तो ईश्वर का नाम है। इसलिए हमें गुणग्रहण करना चाहिए। का दोष देख कर यह हममें से यह हमें किसीका दोष देख कर यह हममें से यह गया और बा हीराका दोष हममें से यह गया और वे सब दोषों में हृदय-बीजे-बीजे गाँव ही पर हमें कचरा पूरे जगत् हीना है, जैसे हमारा हृदय हमें के संशुद्ध-स्वान होता है। सबसे परमेस्वर का पूर्ण साक्षात्कार होगा है, माने बापू के साक्षात्कार के कारण परमेस्वर का दर्शन नहीं हो सकता है। प्रथम के विना परमेस्वर की शोध, उलका दर्शन नहीं हो सकता और गुणग्रहण के विना, गुण-विचार विना मलित नहीं हो सकते हैं।

गुणग्रहण से गुणविकास
सामनेवाले में जो गुण है, उनके दर्शन होता चाहिए। उलका लीकर कल उले अपने हृदय में स्वयं के गुणग्रहण का नाम है गुणग्रहण। फिर वह गुण विकास करना होगा। बापूने कहा का गुण हमारी स्वयं-भूमि में हूने के लिए हमें मिलाया एक हीना बोझा है जो पौगुण होता है, तपगुण होता है। ही हमारी भी भूमि का हीना हीना उलके लाते बा गुण को दिया तो वह स्वयं हीना होगा। इसका नाम है गुणविकास। हमें गुणग्रहण, नीचे गुण ग्रहण और हमें गुणविकास; यह भक्ति की प्रक्रिया है। प्र क्रिया है। सर्वत्र शिवा परमेस्वर की ही का दर्शन होगा।

किर हमारा दान का, सेवा का, स्वाय का, सत्याग्रह का दर्शन करके सबका सब भयजन की शिवा प्रतिक के दर्शन के लिए है। सत्याग्रह में हम क्या-करते हैं? गुण-भूमि अमल करते हैं और उनमें भी अमल मंत्र है वह बाहर निराला है। सामने अन्तरा मंग होता चाहिए। अन्तरा मंत्र का ही तो वह दर्शन है। सामने में दो दर्शन-साक्षात्कार के अन्तर हीना है कि सामने लपटा मंत्र है। यही है गुणग्रहण।

यस गुणग्रहण के कारण पर ही सामने है। सामने जो स्वयं है, उसमें भी गुण है वह प्रभावी ही, वाटवर्षा ही दोषों को शोध करने दो दर्शन-परिचय हीन। उस गुण को प्रभावी करने के लिए गुणग्रहण करना पड़ता है। यह सत्याग्रह ही करता है। सत्याग्रही में मही गुण है। यह सामने-बाटे में भी गुण है, वह

प्रत्येक व्यक्ति में कुछ न कुछ गुण उनको होते हैं, सबके गुणों का ही दर्शन करना, अपनाना और अपने प्रयत्नों से उसका विकास करना ही सच्चा ईश्वर-दर्शन है।

बेनोवा-यात्रीदल से

विहार-यात्र के कार्यक्रमों में पूर्ण प्रिया जितने में था है। जिनोवाजी यात्र-कार नहीं है, "एक जितने में दो बड़े धर्मित हैं—भोरेभार और बेनोवावा बाहु। इतिहास इन प्रिया जितने में पूर्ण काम होना चाहिए।"

बर्ना खुद के दिन नहीं थे। फिर भी भोवम ऐसा बन गया कि वह इस-बाह्य दिन सतत बरिच है। प्रिया बाहु में सार्वजनिक हवा बरिच में ही है। एक माई ने कहा पुरा था, "आजको मात्र वा भव्यतया बन नहीं है। उस पर आप टीका करो है। तो आप राज्यकर्ताओं को क्यों नहीं सजाने?" उसक जवाब में जिनोवाजी ने एक सभा में कहा, "लोकमार्गों में जहाँ भोग चरमकर्तियों को पुनवे हैं, वहाँ लोगों पर धरत होना है, बाद में सरदार पर होना है। आज लोग सरदार की सरदार है। आज भी राज्यकर्ता है, उनसे हमारा परिचय है, उनसे हमारे कर्तव्य हैं। उनसे किन्तु हमारे मन में कोई भी है, भारी भी है। वे लोग मजदूरों के साथ रहे हैं। मजदूरों को बाईं उल्टीने सुन रही है। मजदूरों में क्या है कि कर्मिन्त की-रूपक सभ है। केवल उनको यह बात नहीं मानो गयी। उनको बात नहीं नहीं बानी गयी, वहाँ आपकी और हमारी बातों के सुनोने यह सुनकर को भासा है। मेरा करने का मतलब यह नहीं है कि उनसे कुछ विचार बिन्दु है। लेकिन उनका अपना दिमाग बना है। परिवर्ण से जो विचार बाते हैं उनसे हमारी ताकत बढ़ती है, ऐसा वे मानते हैं। इतिहास हम सोचें जना है जाते हैं और बनसने हैं।"

उत्तराखण्ड में सर्वोपर-आवृत्त भी है। बेनोवावा बाहु उच्च माध्यम के प्रमुख आधार है। दो बार मात्र से वयो-बाह्य बनने परी। कायम का आठवीं वारिच उपर भी है। कायम के पहुँचने के बाद पहुँचे लोग में जिनोवाजी के कृष्ण, "मुझे सबसे कम उम्र वाला है कि अगर एक ब्याक प्रचार करने हो तो यहाँ तक कम होनी है। बाहु परदे काय करने जाते हैं तो उस दूर तक नहीं चलाती है। हमने में से छुटकारा किये हो।" ऐसे समय समय विचार मानते हैं। जिस समय में हम अरुण सखीका होना है, यहाँ तक कि... जिस हवाई की वृत्ति में हो सकती है। "अन-अन्य" का सभ ५० करोड़ जनताओं ने उपचारण विना और ८० करोड़ जनताओं ने सभा। एम.पी. और भा.ज.प. के लिए अरुणों का सभ हम सब जानते हैं। हमने में "उपचारण" दिया। बने-बने मजदूरों के सभ, जन-यात्रा, जन-पर आदि तापन बनाने, पर उन्हें सब लोग काम में नहीं ला सके। आज लोगों के लिए "उपचारण" ही व रासा। का मुँह से और उपनिर्णों के नहीं हो सकी, यह "उपचारण" के हैं। वेन कीर उपनिर्ण अपने में बड़े प्रभ हैं। उल्टीने कीचन पर बना शीका काम करके प्रभाव के दाम जाने का होना अर्थ, उस नाशियों "उपचारण" लेकर रहे। यह "उपचारण" बनते हैं। को, भीरों की, सार्व-जनिक, सार्व-जनिक, सबको ही एकजम में काम देना। "भीरों में कृष्ण" वरते "उपचारण" हैं।

प्रिया जितने में एक विशेष बात यह रही कि सर्वप्रथम लोगों को एक सभा उभार-बनाई में है। को-बाहु के विचार के कारण, प्राथमिक बर्णन की सभा होने वाली थी, यह नहीं हुई। एक सर्वप्रथम सभा में विहार के मजदूर, एम. ए. ए. ए. विहार की एम.पी. एम.पी. के केन्द्रीय सभा बनने का प्रथम भागि लेना चाहते हैं। प्रिया की वेनोवाजी के कर्मियों काय-व्यवस्था, वीरवावा बाहु, वसा बाहु, रामसेव बाहु, कल्याण, स्याम बाहु, सुमिर है।

विरोधीयों ने आरम्भ में कहा, "विहार कर्मिन्त में १२ लाख एकजम बनने का सफल विचार था और अन्य सभा में उनका समर्थन भी किया था। ऐसी प्रथा न उनके पहुँचे हैं, न बाव। पुराना सफल रूप अनुरा होत रहे हैं तो आर-वर्णन कुटिल हो जाती है, जनता में भी प्रतिफल नहीं रहती है। "भीरों में व कृष्ण "हा को सभा बनने हमने दिया है, उनके सभाबन्धक १२ लाख एकजम बनने हुए विहार में निग बनती है। तो पुराना सफल भी पुरा हो जाता है। आज भी यह सभा है कि मुख्य के लिए सर्वक अनुभूत बनाकर है। इस अनुभूत का सारा लेना चाहिए। हूँ अभिक सफल होना चाहिए। आप सोचो कि भव्यवहार ऐसा होना है कि जनता सभा का शीका बाहु है तो जनता सभा का कर बनती है। आज हम सबको नहीं है।

उत्तराखण्ड का केन्द्रीय ने वरु, "आजके सभ में जनता के बरचस हवा बनती है। जनता ने एक को-बाहु की स्थापना किया है। लेकिन इसकी उरक से सरदार को "लीची" बनाने का रहे है। यह विचार में काय-व्यवस्था नहीं काय-व्यवस्था है। फिर भी हम सब लोग सभ से वरु बचने में समर्थ। आप एक बार साहजक के जो होत को-बाहु को

विचार-यात्र के कार्यक्रमों में पूर्ण प्रिया जितने में था है। जिनोवाजी यात्र-कार नहीं है, "एक जितने में दो बड़े धर्मित हैं—भोरेभार और बेनोवावा बाहु। इतिहास इन प्रिया जितने में पूर्ण काम होना चाहिए।"

बर्ना खुद के दिन नहीं थे। फिर भी भोवम ऐसा बन गया कि वह इस-बाह्य दिन सतत बरिच है। प्रिया बाहु में सार्वजनिक हवा बरिच में ही है। एक माई ने कहा पुरा था, "आजको मात्र वा भव्यतया बन नहीं है। उस पर आप टीका करो है। तो आप राज्यकर्ताओं को क्यों नहीं सजाने?" उसक जवाब में जिनोवाजी ने एक सभा में कहा, "लोकमार्गों में जहाँ भोग चरमकर्तियों को पुनवे हैं, वहाँ लोगों पर धरत होना है, बाद में सरदार पर होना है। आज लोग सरदार की सरदार है। आज भी राज्यकर्ता है, उनसे हमारा परिचय है, उनसे हमारे कर्तव्य हैं। उनसे किन्तु हमारे मन में कोई भी है, भारी भी है। वे लोग मजदूरों के साथ रहे हैं। मजदूरों को बाईं उल्टीने सुन रही है। मजदूरों में क्या है कि कर्मिन्त की-रूपक सभ है। केवल उनको यह बात नहीं मानो गयी। उनको बात नहीं नहीं बानी गयी, वहाँ आपकी और हमारी बातों के सुनोने यह सुनकर को भासा है। मेरा करने का मतलब यह नहीं है कि उनसे कुछ विचार बिन्दु है। लेकिन उनका अपना दिमाग बना है। परिवर्ण से जो विचार बाते हैं उनसे हमारी ताकत बढ़ती है, ऐसा वे मानते हैं। इतिहास हम सोचें जना है जाते हैं और बनसने हैं।"

उत्तराखण्ड में सर्वोपर-आवृत्त भी है। बेनोवावा बाहु उच्च माध्यम के प्रमुख आधार है। दो बार मात्र से वयो-बाह्य बनने परी। कायम का आठवीं वारिच उपर भी है। कायम के पहुँचने के बाद पहुँचे लोग में जिनोवाजी के कृष्ण, "मुझे सबसे कम उम्र वाला है कि अगर एक ब्याक प्रचार करने हो तो यहाँ तक कम होनी है। बाहु परदे काय करने जाते हैं तो उस दूर तक नहीं चलाती है। हमने में से छुटकारा किये हो।" ऐसे समय समय विचार मानते हैं। जिस समय में हम अरुण सखीका होना है, यहाँ तक कि... जिस हवाई की वृत्ति में हो सकती है। "अन-अन्य" का सभ ५० करोड़ जनताओं ने उपचारण विना और ८० करोड़ जनताओं ने सभा। एम.पी. और भा.ज.प. के लिए अरुणों का सभ हम सब जानते हैं। हमने में "उपचारण" दिया। बने-बने मजदूरों के सभ, जन-यात्रा, जन-पर आदि तापन बनाने, पर उन्हें सब लोग काम में नहीं ला सके। आज लोगों के लिए "उपचारण" ही व रासा। का मुँह से और उपनिर्णों के नहीं हो सकी, यह "उपचारण" के हैं। वेन कीर उपनिर्ण अपने में बड़े प्रभ हैं। उल्टीने कीचन पर बना शीका काम करके प्रभाव के दाम जाने का होना अर्थ, उस नाशियों "उपचारण" लेकर रहे। यह "उपचारण" बनते हैं। को, भीरों की, सार्व-जनिक, सार्व-जनिक, सबको ही एकजम में काम देना। "भीरों में कृष्ण" वरते "उपचारण" हैं।

पंथा का पक्ष पड़ा वरुदाका
 था। यह हिंसा भागवार प्रांत-रचना के
 पहले बिहार में था। दोपहर में कुछ
 मुसलमान भाई विनोबाजी से मिलने जाते
 थे। उनको छिपाया गया। वे उठते जाते
 हैं। बंगला भाषा बोलते कह गीते पढ़ते
 हैं। वे को छोड़ना नहीं हैं, वे बड़े पत्नी
 में लिखते हैं। उसे स्त्रीवार नहीं किया
 जाता है। उसके अलावा उच्चकोश होती है।
 इसका जिक्र उस दिन काही की समा
 में करते हुए विनोबाजी ने कहा, 'मे लोग
 दाता सीधे से। अति उनको खंडित
 कर में जानी चाहिए। जिले के दरार में
 बंद आने वाले भाई की रचना का
 एकजाम होता चाहिए। यह एकजाम
 दरारकी ही तरह के हो इसकी में सादर
 करना है। उन लोगों को भी लेने कहा
 कि आज लोगों की दाताकी सीधे चाहिए,
 नहीं तो दाते में देगी। व्यापार के लिए,
 नौकरी के लिए बगाली सीधेना उकरी
 है। जिस प्रदे में हम रहते हैं, वही की
 भाषा सीधेनी चाहिए।'

सच्चा समय बंगाल के कुछ जिलों
 के काये के मानो (डेक्रेटरी), अधिकारी
 आदि विनोबाजी से मिले। उन सबका
 बहुत प्रभाव आरत का कि विनोबाजी को
 'कलकत्ता' जाना चाहिए। कलकत्ता
 बंगाल का 'देन' (दिपाण) है। वही को
 बसर होना वही देन बंगाल में लेना,
 देना उनका कहना था।

विनोबाजी ने जहाँ में कहा, 'देखिये,
 कलकत्ता में कुछ वटाण की बनसंरा का
 लक्ष्य है दिखता है। उसमें इतिहास था ॥
 लोग हैं। इसलिए लम्बे इन्क्रेड की नहीं
 बुझना (एरुतनाकर)। बलकाण की दोहा
 बिहार को और प्रयास बलकाण की ही
 बुझता है। अहाराण्ड में वना नूनन का
 काम हुआ, लेकिन वृत्त में कुछ नहीं हुआ।
 अरु प्रदे में वही हुआ—असलक में कुछ
 काम नहीं हुआ। बिहार में वना काम
 हुआ, लेकिन प्रदे में कुछ नहीं हुआ।
 कलकत्ता को 'होटे बेड अला सीओटिव' है।
 ॥ वीर्य महाप्रभु के जमाने में कलकत्ता
 नहीं था। आज नहीं है। फिर भी 'शर
 स्टेडी' बेहनी पडती है। इसलिए पहले
 आरामण के जिले में, देशाजी और सिधे
 नूनन में काम करना चाहिए और बहु
 धर्मिक जेकर कलकत्ता पर हुलास करना
 चाहिए। कलकत्ता में काम करना है दो
 रचनाएँ, निम्नजानय देते 'स्टेकवाचेंड'
 चाहिए। इलाहाबाद में टपनजी, गाठ-
 नौकाय, मेहुकाय देते लोग हुए। पूना में
 जोरनाय दिखते थे।—असलक वही काम
 हुआ था। कलकत्ता में काम देता तीन
 धर्मिक है, जिसका सारे काम पर
 बनर है ?'

वगाळ की हालत पर सोलते हुए
 विनोबाजी ने कहा, 'बगाल को हमन्या
 बायिक वगार नहीं है, ब्यथायिक है।'
 (बंगाल सरकार के इन मोर विरिच्युआल
 देन इकासीनोबल)

गुजरात की चिट्ठी दिसम्बर और जनवरी

श्री रचितकर महाशय ने अनेक सर्वोदय-समीपन के पत्रानु म्युंभववावर में
 पर-पर, नवी-नवी पत्र कर ४५,००० सर्वोदय-पत्र स्थापित किये थे। जनरी
 व्यवस्था के काम में सहयोग देने वाले धर्मोदय-विचारक श्री चेटे-उभय-भक्त १६ दिसम्बर
 को आत्योन्नत किया गया था। इसमें राज्यादि को राजेन्द्रप्रसाद का मार्गदर्शन
 प्राप्त हुआ।

नवम्बर के अंत तक अष्टपदावावर के सर्वोदय-पत्रों को कुल प्राय १५,३३२
 रुपये ६२ स ० पं ० हुईं। इसमें से ६००० रुपये ससम प्रादि-कार्य के लिये और
 १६०० रुपये सर्व सेवा संग के केन्द्रित रूप के लिये भेजे गये हैं।

पश्चिमी नगर-कार्य

राज्यभार के पुनर्-निर्देश के बाद-दिन
 तक का सर्वोदय-पत्र बड़ीया मगर में
 मगने के लिये लोग दोहा में पुनर्-स्थापित
 होनी रहे। तीन क्षेत्रों में अतिप्रधान
 रूपक, साहित्य-प्रचार, सामूहिक कार्य-
 प्रायण, आरोग्य-प्रेरक, संस्कार-केन्द्र—ये
 कार्यक्रमों के लिये वाहर के कार्यकर्ता
 सफल बना रहे। वाहर में १३ विविध
 को मिले जाते हैं। 'नुरान-यंग' पुनरुक्त
 के अन्तर्गत में निदि - वन का अहित्य
 तीव्र किया जाना है।

१८ दिसम्बर को वाहर के सर्वोदय-

पत्रों विचारों की उमा हुई। सवा में ५०
 भाई बहनों ने परस्पर विचार-विनिमय
 किया और इस प्रकार की जहाँ की स्वामी
 स्वकर देने की दृष्टि से प्रति पाठ के दूर
 परिवार को समके दृष्टन मिलने का उम
 प्रिया, स्वीकृत ऐसी उमा को 'पि-नगा'
 बूट है।

सामाजिक कुटुंबियों को, जगतकर से
 केकर उमाई की सेवा, अत्रक के समरपरी
 हल करने में सहयोग देना आदि विविध
 कार्यक्रम सर्वोदय-विचारों के सुमयमें। एक से
 दो काम के लिये आर्थिक समर्थन देना
 को विचारों में सर्वोदय-विचारों के वा
 निश्चित धीरपि एक।

वाहर के एक सचन बली नवापुरा को
 प्रसाद सेवा-धन का केन्द्र बना कर छोटे-
 बड़े कार्यक्रम चलाने का प्रयास जारी है।
 व्यापार विचार-प्रचार भी वाहर में होना है।
 नवापुरा के अनुभव अहाराण्ड और भासा-
 स्वर है। फिर भी आर्थिक स्वराज्य का
 कोई प्रयास कार्यक्रम अभी तक हाथ में
 नहीं किया गया है।

गुजरात सर्वोदय पत्राग्रा

गुजरात की अनेक व्यवस्था की हरीय
 भाई व्यास के साहित्य में १४ मास
 के अंत तक ४५० पत्र हैं। कृषि ४५ भाई
 पदव्याग में रहते हैं। बल दो भास में
 अष्टपदावावर, सुरेन्द्रनर विचारों की यात्रा
 पूरी करके अनेक राजकीय विद्ये में परव्याप-
 न्नी भागे बड़े पढ़ी है। उदयविचारों ने
 लिखा है—
 'बहुत उरसाह दे हम बाते बड़ रहे हैं।
 जनप्रिय से स्वागत करते हैं। स्वायत्तिक
 सेवकों को धन्यवा मिलती रहती है।'
 सर्वोदय-विचारक का आग्रोपण
 इस साल विविध की दृष्टि से पूजाजिक
 का समोचन किया गया। दुःखान्ति-विचार
 और आद्योन्नत के बारे में विविध हेतु

५ प्रचार-पत्रक प्रकाशित किये। प्रति भर
 के २२५ मूलांशिक-सेवकों से सम्पर्क रहा।
 प्रत्येक जिले में मूलांशिक के लिये जिला-
 संयोगी और अन्य देवक प्रयास करते हैं।

प्रचार-पत्रकों द्वारा निष्ठा-मार्ग-के
 बाटो समर्पक हैं। जिला आरोग्य-सेवकों के
 वापस तथा कारी-सेवकों के जिवा-संवेदन
 में सहयोग दिया। इनके अलावा प्राय के
 वैदिक पत्रों में मूलांशिक-विचार प्रसिद्धि
 प्रकाशित हो, अनेकी व्यवस्था की। इस
 तरह दैनिकिक दृष्टि में मूलांशिक-संबंध का
 आयोजन करने का प्रयास इन दो मास
 में हुआ।

अष्टपदावावर वाहर में विविध ११
 स्थानों पर मूलाय का आयोजन हुआ।
 कृषि १६०० कार्य-विचारों में मूलाय में
 दिखाना गया। सावरमती क्षेत्र में श्री मूला-
 य का आयोजन हुआ, जिसमें बंते वावरों
 ने जो हिंसा केकर इतिहास दिया।
 गुजरात के अल्पकी मूलाय की रचनाकर
 महाशय, नवाभारत मैला और गुजरात
 वने ने श्री मूलाय-पत्र में उदयित रूकर
 मार्गदर्शन किया।

पूरा के सर्वोदय-पत्रों के ४ वर्षों
 में श्री देवे मूलाय हुए। ४१ कार्य-विचारों
 ने अष्टपदावावर में व्यवस्था। 'हेतुव्याग जिले
 में अष्टपदावावर के मूलाय में ७००
 कर्मियों वाली हुई। सामूहिक मूलाय में
 कर्मियों के पत्राग्रा को स्वच्छांशिक
 विचारों की गयी।

जन-अन्वेषणार्थ जीवन

अष्टपदावावर जिले में मोरेरा गई में
 श्री मधवलभाई उकरकर एक साधु से
 जन-अन्वेषणार्थ जीवन के एक प्रयास कर
 रहे हैं। मोरेरा के इतिहास के करीब १०-
 १२ गाँवों में विविध प्रयास करते हैं।
 सर्वोदय-पत्रक अष्टपदावावर में अष्टपदावावर
 जन-सेवा के काम को करते हैं। करीब
 ५०० सर्वोदय-पत्रक स्थापित किये गये हैं।
 इसके अलावा प्रेम-सेवा के विचारों से प्राप्त
 रकम मिला कर कुल ५५६ रुपये ५४ पैसे
 पैसे प्राप्त कर में मिले। परिष्कार के ५ छोटे
 और ४ बड़े घरों का पर वर्ष ११००
 रुपये २० पैसे बँडे हुआ। इन तरह बड़ा
 मास में लिच्छ १४४ रुपये ४६ पैसे बँडे जन-
 आर्थात्त रचित। वही मिले। फिर भी
 प्रति मास सर्वोदय-पत्र के करीब ६० रुपये
 मिलते हैं।

मैलाशा जिले के अतिविधि और
 मूलाय चालि-विधि की योग्यता परक ने

अनेक निगम-न्याय वाले क्षेत्र में सेवा को
 प्रवृत्ति आरम्भ की है। वही युवक में
 विधि-पत्र पर मुनिवार लिखते हैं। निगम
 क्षेत्र के वही बाल-मन्दिर चलाने हैं। इसका
 अर्थ वाहर के अल्प बाल-मन्दिर के चालकों
 पर भी होता है। विचारों से प्राप्त
 स्थापित करके सेवा के काम करते रहते
 हैं। ७५ सर्वोदय-पत्रों की निगमित बंग भी
 चलते हैं।

मूमि-विचारण

पूरत जिले में भासा और सोमण्ड
 तहसील को पदव्याग में मूमि-विचारण और
 सर्वोदय-पत्र का मार्ग-मम हुआ। मुनिवार
 की भी अपने विचार-मार्गदर्शकों की मूमि का
 बगल (वेच्छापुत्रक होना) ३२ गाँवों में
 ५० एक २६ मूलाय का विचारण हुआ।
 बाल के ७० कर्मियों बगलवा अनेकी
 की वाच्छी प्राणको अहा की एककी
 पदव्याग में हीन तहसील में २२६ एक
 मूमि को विचारण हुआ और १३३ एक
 मूमि की बाल की गयी ५० एक की इस
 पदव्याग में अति ही मम है।
 —अमृत मोदी

[पत्र-संख्या ३ का लेख]

जिस समीक्षकार की यह मूमिगत और
 संकल्प वही मोट पत्र का पाठ है।

(५) उम्मीदवार चाहे पाठों का
 ही नहीं मम है, परन्तु युवाय में बलक
 होने पर तो बहु अपने क्षेत्र के सभी
 मार्गिकों का प्रतिनिधि बनना है। मतदाता
 और उम्मीदवार, दोनों एक मूल्यत सम्य
 का प्याण रखें। उम्मीदवार अपने पत्र
 की बात और चल्कला की अनेका मान-
 रिकों के हित को धेके मत उष्य अपने
 प्रचार के और कार्य में लीकरिष्ठा का
 वातावरण बनाने की चेन्दा करें। लोका-
 न्त का यह मूल्यत निष्ठा है कि उम्मी-
 दवार चाहे पत्र का मने ही हो, परन्तु
 प्रतिनिधि की पदा-निर्देशा मार्गिकों का
 ही सहायता है।

(६) मतदाता की मतदान की मम है
 जाने के लिए उम्मीदवार का पत्र छोटे छोटे
 को हृदिम बना न पड़े। मतदाता को
 पत्र शक्य के और हृदयपूर्वक बह
 देना चाहिए कि उसके लिए किसी सचरी
 का हस्तगत उम्मीदवार का पत्र न करे।
 मतदान आगारिक का विधि कर्म-य।
 उसे अपने कर्म-य का पालन स्वच्छांशिक
 करता है।

(७) यदि मतदाता अपने एक कर्म-य
 का पालन सही-मार्गिकों को, तो युवायों का
 चर्च करनी कम हो जायगा और समाज
 मार्गिकों को युवायों में सदा ही सहाय।

(८) सब उम्मीदवारों को और ही
 एक ही उमा में एक ही मम से मज-जान
 है। उम्मीदवार या उनके सम्पर्क हुए
 उम्मीदवारों के म उनके धर्मवर्तों की प्रतिनिधि
 में अपने विचार मार्गिकों। सामने रखें।
 इसके अह-परदे पर मूले अह-जान लाने की
 प्रवृत्ति कम होगी।

अशोभनीय पोस्टर्स हटने चाहिये : देश के विभिन्न शहरों की माँग

घमस्यं

अहमदाबाद म्युनिसिपल कारपोरेशन का सर्वसम्मत् प्रस्ताव

बम्बई के नागरिकों को एक मार्गदर्शक तथा ७०-२८ जनवरी की धारा की अधिनियम और अज्ञान विवेका-विशेषों को पोस्टरों के जाहिर प्रदर्शन के विषय पर विचार करने के लिये जो बेलाशास्त्री को बध्युत्तर में हुई। इनमें बम्बई के नगर-पति की विम्वयुत्तर देवाई, श्री गनारिणंदर देवाई, श्री सोभायजी मुन्गे, दलिया और उत्तर बम्बई की सुबुख देवो-सभाओं की प्रतिनिधि बहनों की हृदय मोहलते और जो अनुरोधों द्वारा एक साथ की संश्लेषण पाह, जो विद्वत्पराय 'गने, जो अज्ञान पदमंगल जाहिर बम्बई के प्रमुख नागरिकों के तथा हंटीर और राजस्थान के जाये हूँ। जो देवेन्द्रभारत मुन्गा, जो महेस्व कोठारी और श्री कोमुलसाई मट्ट के भाषण इन जाहिर प्रदर्शन के विरोध में हुए। सभी बरातियों का इन विषय पर एकमत रहा कि प्रकृत जनमत जाहिर कर इह जाहिर को हुरत रोका जाना चाहिये।

उपरोक्त काम में सचो संश्लेषण व्यक्तियों, विद्वत्-व्यवसायी संस्थाओं, स्थानिक स्वराज्य-संस्थाओं तथा शैलीय और शैलीय सचरतों के आह्वानपूर्वक निवेदन विषय गया कि वे जनमानस पर अनेकिक अस्तर करने वाले अज्ञानवीय और अज्ञानिक विवेका-विशेषों और पोस्टरों की रोक्ने को आवश्यक कार्रवाई करें।

भाषण सारतों पर बजाये जाने वाले विवेका के अज्ञानवीय और अज्ञानिक पोस्टर, जिन्हा आक्रमण विवेका में न जाने वाले नागरिकों का अज्ञान पर भी होता है, जनकी रोक्ने की आवश्यक कार्रवाई को शीघ्र होनी हो चाहिये। निम्नांकित बातें सचो और शीघ्र की जा सशतो हूँ।

- (१) किन्च तथा विज्ञान-व्यवसायी विज्ञान सार की बातसामाओं को उत्तेजन देने वाले बिजों और पोस्टरों के प्रकाशन और प्रदर्शन न करने को मर्यादा बतानी होय सशतो हूँ।
- (२) साहुर के नगर-निगम तथा नगर-पालिकाएँ ऐसे बिज और पोस्टर जाहिर स्वामी पर न लगाने जायें, ऐसी रोक लगा सकनी हूँ।
- (३) आज जो बानुन है, उत्तार योग्य और साक्षयों के उपयोग करने के लक्षण ऐसे बिजों तथा पोस्टरों के जाहिर प्रदर्शन पर रोक लगा सकनी हूँ।

ता० १० फरवरी को महमदाबाद के सिटी मेयर की अध्यक्षता की अधिनियम में म्युनिसिपल कारपोरेशन की सभा में सर्वसम्मति में शीघ्र प्रस्ताव नीचे दे रहे हैं—

"राज्य को उत्पत्ति का आधार उसकी प्रजा के बालिय और नीतियता के स्वरूप अज्ञानवीय है। इस प्रकार के स्वरूप जिस प्रजा में से नररररर हो जाते हैं, बहु प्रजा अति विलासिता में डूब जाती है और जगते फिर राज्य के मलाय बनने का स्वप्न का जाता है। इस प्रकार की निरन्धीय परिस्थिति को उपरिजन करने में आज के विज्ञानी अज्ञानी जाते तथा निरन्धीय दुःख मुल्य और ते जिज्ञासक भावने का सारतें हैं। प्रजा का बालिय और नीतियता का स्तर उच्च या ग्राह्य का लके, इतन्मिप किन्धो अज्ञानिक भावने तथा निरन्धीय दुःखों पर मतिवय लगाने के लिए दाया-नररररर को आवश्यक बरम उठाने की बहु तथा निवेदन बतानी है। साथ ही दाया-नररररर को मर्यादा बतानी है कि प्रजा को स्वबेलाभियत, बालिय, नीतियता इत्यादि तत्त्वों का विकास हो सके, ऐसी विज्ञानों को प्रदर्शन देने की व्यवस्था करें।"

गोरखपुर

पोस्टर-विरोधी आंदोलन के सम्बन्ध में कई मजदूरों की मयी। अशोभनीय विज्ञान व प्रामाणिक न करने के लिए दूरप्रकाश, प्रकाशक, विज्ञान-मालिकों, म्युनिसिपल सचरतों को समझाया गया। सन्ने लक्षणे का आचार्यजन हो जाते हैं। मीरुथ केन्द्र-बोर्ड के सचरर और गोरखपुर विचारपालक के उद्युक्तमयी श्री बैरनगया ह्या ने इस आन्दोलन को और बढ़ाने के लिए पूरी मदद देने का कथुल किया। 'कवचान' मासिक-पत्रिका के संवादक श्री हनुमानगण्ड पोस्टर ने इस आन्दोलन का हार्दिक समर्थन करने हुए कहा कि यह हमारे लिए 'करो या मरो' का मूल है। 'कवचान' के हर अंक में इस संबंध में वे लिखते रहेंगे। इच्छे अगला स्वयंसेवा के अन्ते प्रकाश के दीर्घमें न रहे-बड़े धारों में जनसत्त जागत करने की इच्छि वे काम करते, देश को उन्नते वर करेगा।

जिला पियोबपुर

जनवरी माह में १६५ पयों के ६६ ७० ११ न० १० प्राप्त हुए। ११ नये सर्वोप-पात्र रहे गये। ५ सरे ४० न० १० ६३ संश्लेषण मिल्य। अशोभन मूल की सचरतों ने स्व-स्वर जाकर अशोभनीय विज्ञानों के हटाने का कार्यक्रम हाथ में लिया। श्री भीकाल आरते ने २० के २६ जनवरी तक सार के स्कूलों, कालेजों और पामिक संस्थाओं में जाहिर विचार-प्रचार किया।

जिला मयुर

जनवरी के ११ पयरी तक 'सर्वोप-पात्र' मनाया गया। साधारण बहुधोल में पदपात्र चली। ४४ प्रामों में प्रमय तथा १०० मील की पदपात्रा हुई। सर्वोप-मिला मयुप सार में संयन हुआ। खलासिल में ५ मन, ११ सेर, अनाय पात्र बहु प्राप्त हुआ। १ दशकओ से १ एकड़ २१ टि० भूमि प्राप्त हुई। १०४ सरे ६३ न० १० की साहिय मिली 'हुई। 'मान-नर' के १५ अरक बने। १४० नये रिशारों में सर्वोप-पात्र खले गये।

दिसाचल प्रदेश

जनवरी में कामना, प्रामोयोग, साहियेना का विचार अमलाने के लिए पदपात्रा हुई। पदपात्रा में २२६ सरे ८८ न० १० की साहिय-मिली हुई।

दिल जोड़ने के लिए उपनास

घिनतामयुप (नयपुर) में स्थाप-पचापते के मुनास में दो दस हो गये। गार्ड में सब काम मिलजुल कर करने की परामर्श रही है। दोनों दलों के लोगों के मय प्राप्त करने के लिए अज्ञानवीय तरीकों का उपयोग किया। यद्यपि कोशिशों के बावजूद मुनास की निर्विरोध ही हुआ, फिर भी वाता-वरण में तनाव बढ़ गया। लोगों के दिलों को जोड़ने के लिए स्थानी-शामोयोग विद्यालय, विद्यार्थसुरा के आचार्यों और विज्ञानसचरत जैन और श्री रामजी लखी मीरा व्यवस्थापक साहो-अंशर में टीम दिन का उपनास किया।

नया प्रकाशन

महादेव भाई की डायरी (भाग १)

इस पत्रके भाग में सन् १९१७, १८ और १९ की डायरी है। दिव्यी में पहली बार प्रामाणिक हो रही है। इनमें उक्त तीनों वर्षों का भाई का मन-नररररर, अर्थनीतिक विचारधारा का, चरुधर-उत्तर, स्वर्धन-विरोध, सत्याग्रह का विचार, सब कुछ पाठकों की धार के विचारों के मय-विचार को समझने के लिए वैदिकदृष्टि दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। खामय ५०० पयों के अक्षर-मय का मूल्य बिक्रि १०० रुपया।

—अ. बा. सर्वे सेवा संघ-प्रकाशन सभावाड, बनारस।

इष्ट अंक में

- १ अरलील विज्ञानियों को कैसे रोका जाए ?
- २ सिन्धी बहल तथा सखार का रस सद्योपपूर्वक नामरी लिनि द्वारा वेदुय मीथिये
- ३ मनुष्य स्वभावता सखर दे
- ४ बार्थोक्रॉमों तथा पाठकों से आवश्यक निवेदन
- ५ अखल्लुर-काद
- ६ मुनास और नामरिफ करतिय
- ७ अंतर्राष्ट्रीय मामले में युद्ध का मिसल
- ८ गणियों का मनुष्याक्रम होने के साध
- ९ गुणदर्शन, गुणधरक, और गुणधरिषास
- १० भाष्योदय का योग
- ११ निनीय-नाथीदृष्टि
- १२ सुवाकती की चिन्तनी

- १ महात्म्य गांधी
- २ —
- ३ विवेका
- ४ शिखरय
- ५ —
- ६ संकरराय देव
- ७ गुणधरक
- ८ निनीय
- ९ काका नातेलरर
- १० सुमुख देवधारी
- ११ अमृत मयी

जिला गोंडा

जिले में सब एक कुल १,८८० एकड़ ८९ ६० भूमि प्राप्त हुई है। जिले में १,७७७ एकड़ ३३ टि० भूमि बंट चुकी है। जनवरी के पयरी २१७ एकड़ भूमि बांटी गयी। 'मदुर-अरक' को सुदकर ७३ प्रतिशत चिरी। १५३ मील की पदपात्रा हुई।

संघाल परनाम

'पात्र-नररररर' साधक साधक' के को-धेक की सचिपदावर प्रसूत 'शेकर' अपने ८ कावियों को एक डोनी बना कर बाबा के सचरत मय 'दात को इकट्ठा, कोषे में बरुदा' का सचार कर रहे हैं।

गौठा बाबा के सचरत कोशदिय पसवार ममाने के लिए जाने के पालि-संश्लेषणों की और ते की हृदियर सार के मासिकरत में एक पदपात्रा डोनी प्रचार-पावर्त किया।

दिसार

जिला सर्वोप-मयसल, दिसार की जनवरी माह की रिपोर्ट के अनुसार ३१८, २० ७४ न० १० की साहिय-मिली हुई। ८० मुनास-सर्वोप पयि कावलों को भी विज्ञानो हुई। ४७ सचरतियात दावलों से ५० १ २० ८० न० १० और ५०० सर्वोप-पात्रों के १४५ न० १५ न० १० प्राप्त हुई। १४ धामों में १० मील की पदपात्रा हुई। अट्टकला की धाम-नररररर में सचरत से अट्टकला गाव के साधक के ठेके को बंद कर देने का प्रस्ताव किया है।

एक के बाद एक गादीयुग के सतम विरते ही रहे हैं। अन्ती कुछ दिन हुए विरार के भी बाइ चले पारे और जब पंडित गोविन्द वल्लभ पंत ! ऐसा लगता है, मानों एक मंग भवमान हो रहा है !

राजमान पर जैसे भील के पत्थर होने हैं, जिन्हें देत्र कर हय यद् अग्राह्य तथा सत्ते हैं कि सत्तर विनया हुआ और दिवता बाकी है, उसी तरह मानव-इतिहास के राजमान पर भील-जीव में कुछ महापुरुष आते हैं, जिन्हे हय अपनी स्थिति का कुछ अन्वयात् शोक सत्ते हैं। ये महापुरुष मानों एव-युग युग का प्रतिनिधित्व करते हैं। पांचवीं जन्ती तरह भारत के इतिहास में एक जया युग देकर जाये थे।

उस नये युग में हय देव में नई प्रेरणाएँ, नई चरमों, नई मान्यताएँ तथा नवुत्पन्न प्रकृष्ट हुआ या और उसी के साथ हय सब चीजों के बाह्य बनने वाले छोटे-बड़े नैज-सौं व्यक्तित्व ! कुछ ज्यती की तरह देदीन्यमान, कुछ पवाडा बनकीके, कुछ बन बनकीके ! पञ्चवीं शताब्दी में एक ब्रह्मचारी नाम थे। विष्णु १५ वर्षों में ब्राह्मणी की सहाई के एक और सेनानी थे। ज्यों-ज्यों समय बीताया जाता रहा है, शि-सौं ब्राह्मणी की सहाई के दिनों की याद लानम होती या रही है। नई पीढ़ी को तो उन दिनों का प्रत्यक्ष अनुभव भी नहीं है, भी अनुभव हैं वह हय ब्राह्मणी के बाह्य के विष्णु करीब १५ शताब्दी का और इतिहास पंजीय जैसे व्यक्तियों के स्मरणशय की साँझा बनके लिए अरु सुविधा है। हमारी भाषी के सामने उत्तर प्रदेश के सुयय नंभी या भारत के गुरुपयी 'पंडित गोविन्द बल्लभ पंत' नहीं हैं, ब्राह्मणी की सहाई के युग के विमानों 'पंतजी' ही हैं। ईसा बर्षन, निर्भीक योडा ! एक दौर की तरह 'हाइजने' बाण बरसा, जो 'हाइजने-साराती की बतनेदिनी की स्पष्टि कर देता या और उनमें बलिदान की बाह्य पूं कर देता या।

हिन्दी भाषा के अकारण में रो ही जिय है। लेकिन तेलुगु भाषा के अकारण में—सद्दुत्त—(पुल्ल) पुंलिय; सद्दुत्त—स्त्रीलिय और अयमद्—ननुत्त लिय के अरु थे तीन लिय बाने बने हैं।

अयमद् और देवताई के पूरणीयक अरु—राय, इय, इट, नारायण, वेदन्तय और उय के विवेचन अरु सद्दुत्त—पुंलिय कहलाने हैं। लिपियों के नाम—रयनी, सरोजिनी, सीता शरि और उनके विवेचन अरु—सद्दुत्त—स्त्रीलिय हैं, और जीवन्तु, वीराने नर वरार के नाम व विवेचन अरु अयमद्—ननुत्त लिय कहलाने हैं। वेदे—गाय—आयु; मैल—येरु; चिदिया—चिट्ट; पदाड—पर्वतु; गाँव—पूर; पीटी—पीम।

संछुत भाषा के अकारण लुपिय ज्यती के अंत की 'ड' में बदल कर उनके साथ 'डु' जोड़ देते हैं। जैसा—

राम = राम + डु = रायडु
कृष्ण = कृष्ण + डु = कृष्णडु
देव = देव + डु = देवडु

अकारण संछुत ज्यती में कुछ भी परिवर्तन नहीं होता। जैसा—

हरि = हरि; सुनि = सुनि,
सर्वर नाम के अकारण लुपिय ज्यती के अंत में सेलुगु प्रत्यय 'डु' जोड़ दिया जाता है। जैसे—

यन = यन + डु = यनडु
जल = जल + डु = जलडु
पुलक = पुलक + डु = पुलकडु

सछुत अकारण ज्यती के अंत में 'डु' जोडा जाता है। जैसे—
(पुंलिय लिय) सुद = सुद + डु + डुएडु
(स्त्रीलिय) बयु = बयु + डु = बयुडु
(ननुत्तक लिय) बल्लु = बल्लु + डु = बल्लुडु

इके के अन्वयात् पूरं पद-व्युत्पत्ति के भी ज्यतीं का लिय जाना जाता है। हिन्दी भाषा में 'पर' और 'पारा' अरु बोझने के जैसे अरु का लिय मान्य होता है, किन्तु तेलुगु भाषा में भी कुछ ज्यती के अरुके अरु = 'पारा' और भाषा = 'आड' जोड़ कर ज्यतीं का लिय जाना जाता है।

बषा = नय चिट्ट (चिखनाडु) सिदिनी = आड सिहडु
बषी = आड चिट्ट (चिख) मोर = नय नेमलि
सिह = नय सिहडु, मोरनी = आड नेमलि

आमदान और भूदान मानने का अधिक हक हमें उसी प्राप्त होगा, जब मालिक के पास के लिए हक प्राप्त करना करने के लिये तैयार होंगे। इसका दर्शन होगा तो हम बाजार दौरे और आमने-बामा हमारी योग्यता अकारण नहीं करेगा। वह हमसेना कि हमारे भी हिन की हिन बातें को अरु रहें हैं। इसलिए हमने कहा या कि चाडि-हेना के आदान की रखा होती। उनके बिना आमदान सम्भव नहीं है। नहीं अगर का कुछडा देने की बात है, नहीं अगर पास, तुझसा प्रेम होना चाहिये। देनशानी की भाग पर एकरम बरीडा हो जाना चाहिये।

लेकिन कुछ बात हमें बतानी, जब हमारे अकारण के लिये लीची की चिन्तना होगी, वं लोग हमारे हिन आरु-बाने हैं, ऐसा धरोगा अकारण भी होगा। हम नर-अकारण हूँ, इसलिए कि लक्ष्मी का हिन हय चाहें हैं। [नती का हिन हय हय]

भीरु जिन्दी का नहीं चाहते हैं देना नहीं होना चाहिये। हमारे हयम में लक्ष के लिये प्रतिक्रिया होनी चाहिये—भी देना ही उसके लिए भी प्रतिक्रिया हो, जो नहीं देते हैं, उसके लिए भी प्रतिक्रिया हो और उसे भी देना दे। इनके लोभों के हय विचार-बान बनने।

हेना के कुछ बान करना और समाज बदलने के काम करने में साम्य-सैनिक का काम-धेन-रचनात्मक कार्यकलापों से बलम पड़ेगा। साम्य-सैनिक सेवा करेगा। लेकिन सहीरे के बिना जो श्रेयसा उठाना करेगा। बाकी समाज के कपडेवा। उसके लिये कोई नय या संघ सदा नहीं करेगा। अकारण कार्यकर्ता उनके लिये नय सहा करेगा, संघ बनयेगा। सैनिक-साम्य-सैनिक से उब करेगा, लुग करेगा नहीं। बरने सहीरे की ही को अरु सदा कर लीजना सोचेंगे। [अकारण, सिं० पुंलिय, १-२-११]

आमदानी गाँवों के अंपल से

असम का आमदानी गाँव : कौकिलामुर

असम के विरासत लिये में आमदानी गाँव कौकिलामुर में १९ परिवार रहे हैं, जिनकी कुल जनसंख्या १११ है। इस १११ बीघा जमीन है। आर परिवार सुविधित हैं। यहाँ असम समाज सेवा संघ ने आम निर्देशक अर्जिन्ट गिडि की गाँव के ५ परिवारों की जमीन बंधक थी। उसे मुक्त करने के लिए अकारण आर संघ की मात सहायता में वे धारें हवार बने उन परिवारों को कर्म रूप में दिने गये। कर्म बाल करने के लिए बंधन-मुक्त करके भी आम-उत्पन्न में से एक भाग अर्था करके लिये जाता है।

दो गाँवों में दोर की धारी जमीन सामुहिक रूप में अंशित कर गयी। इस वर्ष की वनम कर में अकारण सर्व-सर्व-परिवारों की लक्ष्य-सैनिक के अकारण लिये

परस एक मय के हिलक में हुआ। आम-सभा की बैठक निर्देशक की अकारण लिये अकारण करने के लिये करीब-करीब अंशित हैं। हुआ करती है। आम-सभा आर अकारण-सिध आमनिक आदान में गाँव के सभी बरने पढ़ने वाले हैं। अकारण दुगार के लिए एक अकारण, एक अकारण, एक अकारण-पर भी है।

१. बनशरी की लामा में आरने में निधान सिध है कि—
(१) अंश बीघा ९५ अंशिय जन भी उरुन इतने की अंशिय करे।
(२) गाँव की अंशिय लक्ष्य-सैनिक का अकारण लिये के अकारण सुपरने लक्ष्य-सैनिक में करे।
(३) कर्म की अकारण लिये लक्ष्य-सैनिक की अंशिय भी अकारण लिये करे।

वापू की आखिरी "सनक"

आचार्य कृपणजी ने एक बार नई तालीम की पाथीबी की 'सबसे सारा सनक' बंद कर संतोषित किया था। 'नई तालीम पर जो उन्होंने पुरस्कार किये हैं, उनका नाम हो उन्होंने यही दिया है। पर अबल में पाथीबी की 'आखिरी सनक' को प्राकृतिक चिन्तना की। यह बहुत कम लोगो को मान्य है कि बगोने मनुष्य से कौन से सबक पहले थापू ने उठाने के बाद पुराना के पास उनकी संतुष्टि है। इसलिए जिस दरजन को हम जीवन के लिए लागू करना चाहते हैं, वह उनके सब परसुओं पर लागू होगा, किसी एक पर नहीं। इसीलिए थापू की प्रशंसियों में सारो, शमोयोग, नई तालीम, हरिकन-वेस, आदिवासी-वेस, शिरो की शिरो प्रशंसियों का प्रथम, कोनी-पुस्तक, प्राकृतिक चिन्तना आदि अनेक बातें एक के बाद एक दायित्व होती यथो।

प्राकृतिक चिन्तना का विचार लोगों को आकर्षित करता है और दो-तीन-पौरे उठकर प्रचार करने को रहा है। जोरदार और शक्तिशाली को भी विच्छेद को यथो में प्राकृतिक चिन्तना की प्रवृत्ति काशी पगरी है। जैसा कि ऊपर कहा गया है, शक्ति समक प्रस्तुत है। उस के दुर्घट नही हो सकते, इसलिए प्राकृतिक चिन्तना प्राकृतिक जीवन तथा सामाजिक जीवन से अलग न चल सकती है, न उठर सकती है। इस दृष्टि से प्राकृतिक चिन्तना के क्षेत्र में भारतीय परम्परा, विज्ञान और बोधन-दृष्टि का विशेष उपयोग हो सकता है।

श्री श्री दृष्टि दिवस पहले ही चक्रवर्तन देव व्यवस्था के प्राकृतिक चिन्तनालय में पड़े थे। उनका इन विषय में विद्वान बलदा रहना है। उन्होंने सुझाया है कि प्राकृतिक चिन्तना को जो इस देश की संस्कृति और दर्शन के आधार पर चिन्तना-शास्त्र की निर्माण की बिना में जोष करना चाहिए। उन्होंने दो-तीन बातों की ओर सास धोर से प्राकृतिक चिन्तना की तरफ ध्यान दी है -

(१) प्राकृतिक चिन्तना में रोमी की स्वाभाविक प्रकृति का मान बना है, यह पंचमहाभूतों की परिदामा में तय होना चाहिए, अर्थात् रोमी की प्रकृति में इन पंचमहाभूतों में से कौनसे महाभूत की कमी है, या अत्यन्तता है, यह रोमी की प्रकृति के निर्माण करने का तरीका होना चाहिए।

(२) जैसे निदान वैसे चिन्तना भी, पंचमहाभूतों की ही परिदामा में होनी चाहिए। मानो जित पंच-महाभूत की कमी होगी, उतनी दृष्टि करने के लिए कौन ही प्रकृति होगी? किस इलाका या आहार के जरिए वह पूर्ति हो सकती? यह वेश और रोमी दोनों को साफ मालूम होना चाहिए और बलागत चाहिए।

(३) अब हम आहार के बारे में सोचते हैं तो आरम की परिदामा प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, साइडर बने रहने की है। इन चीजों का शरीर पर क्या अथर होगा यह सोचते हैं। प्यास का संबंध जैसे शरीर के साथ है, जैसे ही मन के साथ भी है। मन निरोगी रहने में मदद होगी। हमारे धर्म, संस्कृति और वैचारिक दर्शन में मन की बीमारी तब, रज, तन-रज तीन गुणों में होती जाती है। इस लिए हमारे आहार-शास्त्र में सात्विक राजसिक, तामसिक इन प्रकार आहार का विशेषण दिया जाना है। हमारे प्राकृतिक चिन्तनालयों

जाती हैं, जैसे हमारी दृष्टि से सात्विक, राजसिक आदि आहार की आवश्यकता या अनावश्यकता मानी जाती चाहिए।

मनो को कष्ट दिन पहले जब विनोबाजी काशी जाते थे, उब बनारस के पास दुमहेपुर के प्राकृतिक चिन्तना-केन्द्र में मोलते हुए उन्होंने कहा था— 'मैंने प्राकृतिक चिन्तना का नाम रख-चिन्तना दिया है और प्राकृतिक चिन्तन को मैं सात्विक-राजसिक कह रहा हूँ। हर कोई स्वयं-चिन्तन कर सकता है।'

चिन्तनालय में एक बगह लिसा हुआ था—

"सब लोगों को एक दबा, मिट्टी, पानी, धूप, हवा।" जैसे देव कर-निरोधनी में सुष्ठव रहा 'मैंने हठमें बोझ संशोधन करना चाहिए, मिट्टी, पानी, धूप, हवा के साथ 'आत्मनः' को जो गाँवों। आत्मनः बहुत जल्दी है। बाधा हटने वाली से धूप रहा है। उसको धिरे-धिरे मिलती है? बाधा

—सिद्धराज वर्मा

कार्यकर्ताओं के साथ विनोबाजी की चर्चा

[विनोबाजी की विहार की पदयात्रा में उनसे सर्वथी आरंभ के पाठाल, मोतीलाल कंजरीवाल और राममृत्जि ने विभिन्न विभिन्न विषयों पर आन्दोलन की दृष्टि से उपयोगी पदयात्री दल की शायरी नीचे दे रहे हैं। —सं.]

सूत्रोपपन्न सर्वोत्पन्न-मूल के नये अल्पय थी आरंभ के पाठाल सोच में एक दिवस थागा में रह कर पड़े। उनसे पोटर-आन्दोलन की भी चर्चा हुई। पाठाल साहब ने कहा, "जो राष्ट्र-सोचिबिहार पर विवेचन रख सकेया वही उपलब्धि करेगा।"

विनोबाजी ने कहा : ' "मेटर बाँफ कैट स्ट्यू" (मनु-निधि की समझ) से तो भी दरिद्र होना की भोग-विनाश में समाज रोपना बीजा नहीं देना है। वारिधय के साथ विनाश साम्यो को रोप बड़ो। उद्यम आशीरी के लिए दवा-दाक का इतना मान होना। पर गरीबों का क्या होगा? अगर कोषापाही ठीक बले यह आप चाहो है तो 'धनमय' (मूलक सोचिनिगम) बनाया होगा। इसलिए मेरा कहना यह है कि अमल के मन (मूलक-मूल) पर प्रभाव डालना चाहिए। दौली साहब, साम्यी मनुष्यी चरित्रमयक काम से नहीं आयोग। पोटर-आन्दोलन की प्रति-निधि बने-बने बहुरों में जुटाई दो। पयत भावत हो सकती है। बापू के बयाने में हमने यही देखा कि अल्प-वय आन्दोलन करूँगा था, सब रचनात्मक काम भी पोटर-पते, साठी की साथ ही बड़े।

की बोली बन्नु-बीच-बीच में साधा में रह कर जाते हैं। एक दिन उनसे चर्चा करते हुए विनोबाजी ने कहा, "लोग बहुरी है कि १९५० में क्या मैं जीत था। मैं कहता हूँ कि इस पक्ष होना है। बीजा में सात्विक कर्तव्य का बंधन थाया है। 'मूल्यता-रक्ष समन्वित'—जिसमें बीरक भी परावृत्त दोनों हैं, यह अन्धा काम करने मात्र है। दूध में एकदम उछलना मात्र है तो इस पीने-पिच मात्र है। बीरक भी उछाल दोनों हो तो कार्यकर्ता विनाश है। पीर-पे से सात्व्य रहता है।"

दिए जाने चर्चा और फली। एक कार्यकर्ता ने कहा, "हम ऊपर ऊपर वा देखे वाले हैं। इसलिए १९३५ में अन्ध है कि मनु-१९ और '५३ का जोष नहीं है। लेकिन आप अन्ध कर देखते हैं। इसलिए विहार बहुरी में क्या है, यह बात देख सकते हैं।"

को दानित आकाश से, मिलती है। वह सबसे ज्यादा आकाश साता है। और पीजो के बारे में परिदृष्ट कर सकते हैं, किन्तु आकाश के बारे में परिदृष्ट बनाना नहीं है। मानो को ज्यादा-से-ज्यादा सेवन आकाश का शीर कम-से-कम सेवन जनाय का करना चाहिए।"

ऊपर संकरवाजी ने पंचमहाभूतों को जो बात सुनायी है, वह प्यान में हो दो चिन्तना के अंग के तोर पर "आकाश को खाने की बात" तुल्य प्राकृतिक चिन्तना के प्यान में आशीरी। इस प्रकार अल्प मोलक तरीके के आधार पर विचार बने तो प्राकृतिक चिन्तना का शास्त्र कि उरह चिन्तित लोग समुद्र हो सकता है, उद्यम यह एक उपरदृष्ट है।

साधा है, हमारे देश के 'आधुनिक चिन्तन' अर्थात्, इंग्लैंड और अमेरिका आदि से आये हुए प्राकृतिक-चिन्तना के मान को तो अन्धक अन्धकार, पर साधा ही भारतीय परम्परा का पुट देकर उठे और समुद्र और पुनं बनायें।

—सिद्धराज वर्मा

पाठाल, मोतीलाल कंजरीवाल और चर्चा की थी। उसको हम विनोबा-

विनोबाजी : 'हाँ! यह होता है कि सब शरीर नहीं होती हैं, सब परिदे उठते हैं। शरीर होती है, सब पते भी उठते हैं। क्या आप, पते उठने वाली नहीं की राह है बहुरी? जान की तो पतिदे उठाने शाली कांभी है। विचार गहुरी में गया, ऐसा आप कहते हैं, लेकिन अन्धक प्यान रखते हैं। यह इतना महान वाय कि शरणाई लैसा, गरीबी बनीय में छिप जाये।'

साचार्य राममृत्जि तोन विच बारा में थे। बेराई गाँव बरते हुए उन्होंने कर्मभूमि में काम करने के बाद उनके दिल में उठे कई उचाल विनोबाजी के सामने रखे। उनमें एक यह था— "मूल्य देने वाले कुछ शाना भी मूल्य प्राप्त करने वाले 'मूल्यगुण' कियान के बीच भाइयुन जैसे पैदा हो? क्या 'पीने में बहुरी' के नये बारे से कुछ अन्धक परेगा?"

विनोबाजी ने बयान में कहा, "यही शिथल का 'वह' तरीका है। हमारे धर्म की यह कौली होती चाहिए कि उतसे परस्पर संबंध में मायुप पैदा हो। अगर यह नहीं होता है तो बहुरी-बहुरी कोई मूल्य हो रहा है, ऐसा मान कर विद्वान करना चाहिए और चारणो को उलाय कर पड़े हर करने की कोशिस करनी चाहिए। अगर वास्तव में दान की प्रशिया से दान हुआ है तो उद्यम से मायुप की निर्णयित होती ही चाहिए। मूल्य-आन्दोलन के आरंभ में मैं भी यह कोषका था कि कोई दान है और कोई

रातों के लोको जिनारे फीले हुए पावर के बाव है। वहाँ के मीनेवर, मजदूर रबायत करते हैं। "उत्पत्ति" के स्वागत होता है। इपर बहते मुँह से एक आवाज करती है—जब कोई गुन गुन होता है तो ऐसी आवाज करते हैं। विनोबाजी ने कहा, यह 'उत्पत्ति' है। उत्पत्ति वह प्रकाशित भाषा है। गुन गुन से जब गुन गुन आवाज होता है, तब पानी 'उत्पत्ति' काव्य करते हैं, ऐसा बर्णन उसमें है। पंथ-उत्पत्ति दिनों के भावा उत्तराधिकार हो रही थी। दार्जिलिंग जिले में तीन दिन माना है। मुसल बंध प्रभात बेलगी है, तब एक लोका गुनगुन 'उत्पत्ति' देती है। सामने मन्नापिराम हिमालय की ओरियाँ हैं। यात्रा के आरम्भ में तो नीले आकाश में तारबन्धों का साभ्राय होता है। सामने मुँह से वातावरण व्याप्त हो जाता है। आकाश में भी उड़ीया साभ्राय। इन्धने-उत्पत्ति गुन की कोमल किरणों के चरतरा प्रकाशित होती है, तारबन्धों व्याप्त होती हैं। सिलसिलों का बंध आरंभ हो जाता है। मुसल का दिसवय आरंभ होने पर गुन गुन होता है, यात्रा में विनयवता आती है। उत्पत्ति के रनों का बंध प्रकाशित है तोपित्त पमरती है। मजदूर दल में धूमधूम तुपुटा का बंधन लपटों में कैसी बंद ?

दार्जिलिंग के पथर् भाई-बहनों आये थीं। विनोबाजी को बाधव हुआ, वे दार्जिलिंग चले तो मजदूर। परतो हम लोलीगुरी में थे। वहाँ के दार्जिलिंग १० मील दूर है। वही हुए तिले का सक्के बड़ा पहलू है।

विनोबाजी ने कहा, "हम लोलीगुरी में पहुँचे। लोलीगुरी दार्जिलिंग का पथर है। हमने पथरपत्तों का दिसा।"

इस जिले में 'नेताजी' लोली की संस्था बापी है। वहाँ सांभ्रविक सेवा का काम करने वाले दक्षिण नेताजी हैं। नीलाती मायादेवी नामदेवी को सरदाया है। उनके पति बापिके के मजदूर हैं। लोलीगुरी में वे लोली मध्य नेताजी मायादेवी के साथ विनोबाजी को मिलने आये थे। एक मजदूरि में मृतान बापिके के दादी बंधपायी एक भाई की थे। श्रीमती मायादेवी ने विनोबाजी को जो रिश्ताओं का नेताजी का अनुवाद किया है। उन्होंने कहा, "इस प्रदेश के लोग बहुत करते हैं। यह 'लोली' का प्रदेश है—एक बाजू पाकिस्तान, दूसरी बाजू पाकिस्तान और तीसरी बाजू 'मृतान'।"

विनोबाजी: "अभी मैं 'बस्परल' दिखी जोक लक्ष्मण' यह रहा था। उसमें यह भाषा है कि जहाँ एक 'डेनेली' बसती वहाँ इन्ध-उत्पत्ति के एकका हुआ है। इन्ध-हास में यही बला है। इन्ध देते में हम यही देखते हैं। अब विज्ञान का जमाना भाया है। विज्ञान के जमाने में यह 'इन्ध' की बात नहीं बलगी। अन्धर बलगी तो उ-धन का छाया होता। इन्धिये हुए इन्ध का 'विद्यमान' है। राजनीतिज्ञ यह कहते हैं कि वे। पुराना इतिहास पढ़कर उनके विज्ञान बने हैं। इन्धिये वे बला ही होचते हैं। हमें तो यह सोचना चाहिए कि 'वीरें-लोली-वी' ही वही 'सभ्य' पुष्पों एक ही है। यह बात ब्रह्मण है। कप शंभर है, नहीं है। एक जमाना था, अब बड़ी-बड़ी मर्दियाँ हीमा बनाती हैं। बापिक में मर्दियों में पानी व्यापार कर जाता था तो

मदी लोलीया मुसिक ही जाता था। उन्धवत में 'पुल' धारत का अर्थ 'विनयता' होता है। मदी के इस पार के लोलीयाने 'अनु-पुल' और उस पार के लोलीयाने 'अधिपुल'। इस तरह नहीं वे ही 'अनुपुल', 'अधिपुल' होता था। नरंकर के मराम उत्तर हिंदुल्लाम को दक्षिण हिंदुल्लाम, वैसे ही उत्तर मया के एक बाजू मध्य को मराम—उत्तर प्रदेश बगले थे। जैठ-जैठे विज्ञान बढ़ा गयी, के प्रदेश बनना कष्ट हो गया। मदी को पार कर सके। फिर यहाऊ के देश बनने लगे, फिर बाजू को बंधा बापी। समुद्र से लोली बनने लगी। लेकिन अब वहाँ भी गया। पाकिस्तान देखते, गुन गुन पथिचम पथि-राम बना है। बीच में १५०० मील का पथराला है। वैश्वियता को देखते, वहाँ दूर कोने में 'बापी' है, उस पर प्रमुप रचना बाह्यता है। जब ठी समुद्र, मान 'हाई' है। मदी के देश-जैठ खरम हो बंध, पहाड से देश-जैठ खरम हो गया, समुद्र के देश-जैठ बनना तय हो गया। अब आसमान का जैठ बापी है—जैठ, मजल आदि। आगे में जैठ की लख होगे। यह मैं रहने वाले भाई की दादी मंगल में रहने वाली लखगी है तो लखगी। जैठ-जैठे विज्ञान बढ़े, लोलीयाने का मराम का बंधा बलगेगा। लेकिन अन्धर का उत्पत्ति धायम रहूंगा। जैठ के जैठ बलगे, जैठ के जैठ बलगे, विज्ञान के विज्ञान बलगे, यह नहीं बलगेगा।

श्रीमती मायादेवी ने कहा, "लोली पर लेख दो है। फिर को क्या है।"

समयों की लोलीयाने वही वही वेते हमारी रिफेडिंग का समय की बंधता काव्यता और कीर-वीरें प्रतीकात्मक बनेले पाठविक रिफेडिंग करेगे।

आप हमारे जैठ के भासा बंधकर हैं। इन्धिये हम बापको बंधने लगे विनो के क्षात्र दक्ष पुष्प बलगे वर रिफेडिंग का एक पुष्प कार्य कर राधुगिती को बंधा-जल देते का नियमक देते हैं।"

विनोबाजी: "लोली है, इन्धिये वही 'आर्मी-नेनार-लखी' बाहिए, ऐसा मानो जाता है। मजलचम क्या हुआ? मजलचम वाले को लखने के लिए निमन्त्रण हो गया। आर्मी बापिके की लख की ओट्टे लिलने की बापी नेती की नैती टापी बपी की। उन्धे एक बापक का: 'नेनार बपी के टाटे-धनु उन्ध'। (बंधन मुसिक का साहस्य है) लोली को जैठ के मजलचम बनाओ। वही आभय बनाओ। दोनो देवों ने लोली का वही जैठ के स्वागत होता है, ऐसा हीमा बाहिए। जैठ के भयहाड ही। आभयक क्या होता है—इसके साथ मीची, उसके साथ 'पुटी', इन्धे साथ 'अलपय' ऐसा बला है। इन्ध-नीच राउट इन्ध और इन्ध-नीच उन्ध। जब ठीच बल वही लखने हैं कि इन सब बापक एक है, एक उन्ध में लखते बलते रहते।

इन्धिये हम बहने हैं—भाई, बाप की परिवार मानो, दुनिया को देव। इन्ध हुए बलपता छोटा-सा परिवार मानते हैं और अलप, बलाक, नेनार में देव बनते हैं। अब वही बरदा मजलचम बनता होय। बाप की परिवार और दुनिया को देव मानना होय। इन्धे 'जय-निरा' यह कहने की बात है जो पुल दुनिया एक है, ऐसी भावना बनानी होयी। जय-निराबार करने की बात, बिन्दू एक है यह भावना की बात है। आगे यह ही यह लखनी होगी, प्रत्यय में भावनी। आज यह विज्ञान में है। बाप के कोई रिफेरी की लूटे, पुते, बने नहीं होना बाहिए। होना यह है कि आज हुए मध्य करते हैं पर का, चितन करते हैं बापिक का, जय का, भाव्य का का देव का।

हम बाप फल कोना, काम हमारा लेनाफुल बने लोली कुल विषय हमारा चितन-लोन बने, तो मया भाविय, अन्धर नहीं होय। मय बाप दोनों वही करते हैं। बाप को 'दुसि' नहीं आये, जैठ नहीं रखते। इन्धे लोली में जो बंधते और विषय में जो बंधते होते हैं। 'हम बलाकी एक' ऐसा बलते हैं मने पुष्प 'बाप' में सब एक है, ऐसा नहीं। मयाको एक हैं जयें लखने से विनय है, बिहार से बलग है, जैठिया से बलग है—इन्ध ही उसका बाप है।"

इन्ध, मने के बाव विनोबाजी ने एक बापक भाव्य मया। उन्ध पर मने हाव से कलम से पुची बा, लोली बीया। उसके बापक टुपटे दिताये और कीने में छोटे-छोटे नाव दिताय कर उसके जो बने दिताये। यह बिच दिताय कर बने लगे, "यह है आज का लोलीया का मया।" उस बिच के साथ जुड़ने निता—"प्येडो मुनयपयम्" और उसके लोले लला—"बिचं पुटं पापे अलिम्प अनादुरम्।" लोली का बंध उन्धताये हुए बहा, "बुद्धे में यह भाव है।" बापि बहता है कि हमारे गांव में परिपुट आरोपयान बिच ही।

मायादेवी ने मजदूरपुष्प कहा, "बाव बहते हैं जो बहुत बलपता बनता है। लेकिन, काप को मयापय है। इन्धिये बाव बुद्धिय एक है, ऐसा मानते हैं। हम सबके लिए यह लोले संभव होय।"

विनोबाजी ने हाड बलाक दिया— "हम 'महात्मा' नहीं हैं। महात्मा जो बुद्ध, और महात्मा ही गये हैं। हम विज्ञानलान हैं। विज्ञान के जमाने में एतना तो हो कि हम 'सांख्यिक मय' ही बने।"

बाप में एक दिन 'महादोष' नाम के गाँव में बापका था। पंजाब के रिफेरी बाजू मदान में बलम है आये हुए उत्तरा-पिचों का 'कल मय' है। विनोबाजी ने लखने मय में लखी-कुल विज्ञित देखी। चरणावित्तों में बलगी कुल विज्ञित मयों देव की। उनको संलक्षन हैं हुए विनोबाजी ने कहा, "मैं वही भाव्य वर मेरा आगरी उपयोक्त बने ही होया, अब भाव मजलचम जाने का लोलीयें। दु-लो की मय भाव्ये। लखन हवा के लोके में मजलचम बलक कर पाता है। बलगी लखन में बला भी काम करता है। दिक् में जैठ, बिहार को दिक्क रलक कर भाव भाव्य भाव्ये। वे वही बाही रहा है। बापको कोई उन्ध लोली नहीं होगी। इतना ही आरगत में है लखता।"

विनोबाजी के पास कुछ 'रिफेडिंग' बापी है। छोटे-छोटे भासा, बापकोना, भापिक मिलते रहते हैं। पता बलता है कि कुछ राजनीतिक दल के लोली बंध रिचवित का काम उठाने की कोसिप करते रहते हैं। इन्ध का जिक करते उन भाई, बहनों के विनोबाजी ने कहा, "आप राजनीतिक को इन्ध में बलने में बापीयें। उससे बापका बद्धम मुकलम होय। बापकी रिचवित लोली राजनीतिक है। मय बाप राजनीतिक नहीं करते हैं। वे लोलीयें लिए कुछ कर रही हैं। मय लोलीयें, बापको में महादोष जाने का आभयम देता है। क्या बाप वही राजनीतिक भाग करेगे? नहीं? वेते ही बापको मयम में रिफेरी भी राजनीतिक भाग के विना जाना बाहिए। मय बाप वही रहना पाहते हैं जो बापि रहते, फिर मय बापको कोई उपयोक्त नहीं होय।"

स्त्रियाँ आत्मज्ञानी बनें

• विनोय

[उन्नीस कावच की सुधी पद्मबाहुत पदमाया में थीं। उनके मन में 'बहुधृष' के अन्वयन करने की वितासा है। इसी सितासिने में पद्मबाहुत के साथ प्ररट चितन करते हुए विनोय ने जो कुछ कहा, उसे हम सुधी कुसुम दोषाणने की हाथरी से यहाँ दे रहे हैं।—सं०]

'ब्रह्मयज्ञ' में पार योग्यताएँ श्लागी हैं: (१) निष्कामिय विवेक, (२) ऐहिक और पारलौकिक योगों के बारे में वैयग्य। (३) दाम्भद्वि सावन-संकीर्ण और (४) सुसुखुण। ऐसी चार योग्यताएँ होंगी, तभी 'ब्रह्मयज्ञ' का अन्वयन करना चाहिए। वैशे कौंचन के विनयी 'वर्तन' (स्त्रियाँ) विरय डेते हैं—आत्म्या, परमात्या, ब्रह्म आदि जारें बरते हैं, पर उरें वीरें ब्रह्म-विज्ञासा नही होती है।

सुध-चरें पान्द के लिए नही, अनुपयन के लिए है। गुह के पावन के लिए बना है, ऐसी भावना रखें तो योग्य होगा। गुह-गंवर के लिए गुध के पय जाना चाहिए। निस्वार्थ पय से सेवा चलनी चाहिए। निस्वार्थ भाव में दोनो को अपना अरना करुण्य करना चाहिए। गुह को सोचना चाहिए कि मेरे पाप मेघ कुज सी नही रहना चाहिए—जो कुज खन है, वह धर थिय को देकर उसे स्वतंत्र विचार करने लायक बनाना चाहिए। थिय को सोचना चाहिए कि मेरा स्वतंत्र व्यक्तिय ही न रहे, धर कुज सुतमें तिखन हो जाय। अपने अंत-नाल के समय मगवान् उदने अपने थियों को कुज कर बहा, "सन्ना उद तो वह होगा, जो आपने अंत-योति के समान नाम रखा है। मेरे पर था मेरे उरधरे पर निर्भर रहने की बरुत नही है।

पूर्व-जन्म के सुपत के कारण हरिकृपा हो गयी तो बेजान हो है। हमारे सँतो ने बहुत ब्रह्म काम किया है। जो वेदादि बड़े-बड़े ग्रन्थों में भय पडा है, उसे उन्हींने ही रूपायन में लाया है। गाय सुध पाव रतावे है, पचाती है और बड़े को दूध निखती है। गाय का काम सँतो ने किया है।

अभी आरंभक में 'कुपन धारिक' से कुज कार संभह करने का नाम रह रहा है। कसना यह है कि सपुण्ड 'पुरान धारिक' का अन्वयन करने के लिए हमें कितना समय देना पडा है, उसके काम समय हमारे बरतों को लगे। उनकी धारिक काम ररतें हो और नाहक बोसा विर पर उताना न पड़े, तो अच्छा।

'ब्रह्मयज्ञ' कीलाना यह (अग्ने आराम) के धर्म नहीं है। सुधारा धर्म तो आत्मलान प्राप्त करने का हीना चाहिए। 'ब्रह्मयज्ञ' उरमें नरद-रूप होता। यह डीज है। कभी-कभी प्रमों की नाहक माथा लाज जाती है, प्रमों की भी आसक्ति हो जाती है। आत्मज्ञान की बरुतले तो उकी की चर्चा करना। सुध पाव यह है कि चित्त-ध्मिद हीना चाहिए। चित्त का मल जाना है। जैसे वैज की विवाच में हमारों क्रिस की दनारें होती हैं। पर हमें क्रिस दवा की जरूरत है, वही हम । वैशे ही क्रिस में आरुण्य, मसकर, वा अन्य कोरें दोष हो उसे दूर करने के लिये को साधना करना जरुती है वह चरें। उरसे लिये योग्य सुध चाहिए। परमेश के उरों का चर होना है। सुधें वरी पार बनते हैं। कार-वच नीराय धामने हैं। क्मा उर सन पर सवार होगी। एक में चूड़ कर ही पार करनी ना। वैशे ही कोरें भी एक क्रियाच देती ही करती है, सिखते सुधें सव कुज मिल वरता है। हमें नदी पार करनी है, पही सुधय चीन है। पचानी नीका में ही देना है पैया आग्रह तो नहीं होता है।

वैशे ही मन में यह ररती की जरुत नहीं है कि मिने यह नली पंगम, वह नली पडा। इससे मनुष्य नाहक परपीन हो जाता है। हम अरानी है, यह मानना ही एक बहुत बल अज्ञान है। हमें बितनी जरुत है, उतना ज्ञान है। उसे पडा बनाना नहीं आता है, संगीय नहीं आता है जो बह कर में देता वैशे तो जैसे चलेगा। सुसे जो चीजें नहीं आती हैं, उसकी परद्विषय जानने वैशे तो लोग तो दुष्ट शानी मानने हैं, लेकिन में 'अज्ञानी' ही साहित हाजाने। जैसे सुनिया भर के वैसे का समय मल है, वैशे ही सुनिया भर का मन रा परिश्रम ही कल है।

हर चीन के, ज्ञान के पीछे दौटने के बजाय हम ऐसा मनें कि हम सब एक हैं। सुधारे सल ५० +० हैं, तो मेरे पास चीन उर ५० +० की कोरें बरुत नहीं। जो अरुत रहे पावे है, वह मेरे पास ही है। हम सब एक ध्येय पर चल रहे हैं। उरमें कोरें एक विषय में प्रबोधि है, कोरें दूरे। उरमें सिग-डता नही है। सुध-पीने ऐसी ही, सिग-डा ज्ञान हकों होना चाहिए, जैसे सुसे आरोग्य ज्ञान है और उसे नहीं है जो है पलकमान बगुआ और नु बीमार पड़ेगी। कार, सुधें जो आरोग्य-ज्ञान की जरुत है। जैसे संसुव ज्ञान सवको होना चाहिए, वह बरुती नहीं है। जैसे हमें सुधार का काम आता है और उसे मुसमान आता है। सुसे वह नहीं आता है, सुसे सुधार का काम नहीं आता है, तो भी दोनो कर चल सता है। इसका नाम है चर्चवैशे। कोरें सुधार का नाम करके समार की सेवा करता है, कोरें देवी के, सोरें संगीत से।

आत्मलान वही सही 'ज्ञान' है, जिसकी सवको बरुत है। जैसे अरुतक लर-क्रियां जगती पड़ती हैं, जोर-वियां करती हैं, पर सुधय तीन प्रकार का जल हरएक को होना चाहिए: (१) आरोग्य-ज्ञान, (२) नीतिज्ञान और (३) अन्वय-ज्ञान। इन तीनों लिये कइते हैं कि पहली को आगे अपना खेदिये। लेकिन में दूधरे अर्थ में कइया हैं। बरने प्रीज में, दपकर में, 'धराना' में कारें, इखते मेप अन्वयन करने होते। मैं चाहता हूँ कि पहली को आरंभगनी बनना चाहिए। सुज लीय सुसे चरें हैं, अपर दन तीनों बरतों को ही कसविया की लाव बनाया चाहते हैं। पैया चर्चों। मैंने कर बार इह

कार्यकर्ताओं शान्ति-स्थापना की दिशा में एक प्रयत्न

आंगण की यनी बली कटय में एक जोगी के यहाँ घाटी थी। उस वक्त ए गुंडा मरण वीरर अया और उलाय मचाने ला। स लगेभ भाग गये। मल रिता रिती प्रार लखणों को दूरे मुहल्ले में ले गये और यहाँ शादी की रस दू दिन पूरी थी। मुहल्ले में जिनिये दुलिये की देखेवोन किया। दुलिये ने उर कल। उसरो पकर लिया, किन्तु दूरे दिन विर छोड दिया, सिखले उरकी छपर पर बह गयी।

भोदल्ले के प्रतिविद्य मागरीक वीरर नगर सपोरिय देना-अंडल के सवरर श्री मेमोचन्द्रनी लिये सपुण्ड के मन में उस दिन से बही कल्पयारह गी। उन्हींने इव समरसा के निराकरण के लिए एक सभा उकी आदमी के पर पर इवरी, सिखले यहाँ शादी थी। उस दिन से उस मरान पर कोरें नहीं रहता था। क्मा में भोदल्ले के ३०-४० प्रतिविद्य व्यक्तियों के आने की अपेक्षा थी, किन्तु इव दो-तीन लोगों ने अलवका कोरें नहीं आया, इतना आरंभ था। इव लीय वी-चार व्यक्तियों के यहाँ नद में गये। सुने कहा कि दुलिये सुधें को बड़ाया देती है, उनसे पचा करती है। समरसा कठिन थी। हम लोग भी यह बह कर पचे आये कि "विद्या सविद्यन के समरसा का है होना सुपरिकल है।"

दूरे दिन मेमोचन्द्रनी ने उस धारती व्यक्तिक को बुलाया। यह अया, तर बरियार

पर कहा है। अभी उर बरनो को बहर आने नहीं देते थे। बरनो को यहलक्षम ही करना चाहिए, ऐसी भावना आज तर थी। सुधुमें ने पिपयागणिक का समन बरनो को बनाया है और पैया का सधन भी उकी को माना है। कई बड़े-बड़े मुनि के लिये के बारे में सुने मे-आता है कि वह 'स्त्री' का मुप देतो नहीं है। यह सात संसार ही छी के इरईमें इस तरह सजा कर दिया है। इसलिये यह 'स्त्री' में पैयापकान, ब्रह्मचारिक, भ्रमणिकी बनेगी तो यह सब नहीं होगा। पर ऐसी भी संसाराचार्य के समान प्रार देवधन्य होनी चाहिए।

के अन्वय सव लोगों को ऊहोंने अलग मे दिया। यह व्यक्तिक इन पर बहुत मारा था, जब से इरने सुता कि मेरे लिये वैठक करने का मचन बर रहे हैं, सही। सुध मानने के लिए रिता था। नेमो चन्द्रनी ने उरसे कहा कि सुधें पैयाग हीना है, यहाँ पर पर कोरें व्यक्तिक नहीं है सुधो मार बनता है। मैं कुज नहीं बहूंगा किन्तु एक बात की प्रतिपा करता हूँ, तु व भी इरल्ले में मरिया पीकर पूरोगा, ठेप विशेष अवरप करूंगा।

रिद क्या था। यह सुधय बरत गया और पैरों में चर कर मारो मॉरि कर पदे लीय। कि आरुत्या धारत वीरर सुधरुसे में नहीं बहूंगा। यह बात स्र बगह पैल गयी और लोको ने मेमोचन्द्रनी के प्रति भडा बह गयी।

—बिष्मनलाठ

गाँवों में सर्वसम्मति से चुनाव

बाबकल रौतों में संघारकों के चुनाव में दलगत राजकीयित के कारण धरपेते और हलवाकों उर कोमोवत का बरती है। जिना सवोवय-मडल, मुधराबादर की दाख-द्विक कोचने में लय किय गया, हर सधो को वैसे ररानों में नाकर कावित स्थापना करनी चाहिए। दूरेते प्रीज हम वीय सायी दूधुल्ले डाकुडु दारे के प्रामों में बर लिये। हमारे बरतों में एक ऐसा बर आया, सिखले वीय उरमोदरकर वसे ने और दूधु-दूरेते के सिताक बांडर सावयन सविजें बर रहे थे। हमने सब 'पौवावनों' को दृकनित करके पारद्विद सवोवय चुनाव

की बहुता समारपी। गाँववालों को यह बात ठोक लगे और सवोंने निरविरोप चुनाव करने का बरसावय दिना करी कहा, अपर लोग दूरेते पार्यों में जा सवने लेंगे। कय देहातों में वी उर प्रारर के भोडे अनुभव माये।

परिहम लोग सवोवय-बारकों के सडा होने के दूरेते पार्यों में इत प्रचार रिता कर समराने के लिये निरुल्ले तो मुसुमिय बर, बरियारर ररानों में धरंसम्मत्त चुनाव हो।

उरल्ले-वेना काराकिय हलतनु, मुधराबादर

—लखीचन्द्र

अशोभनीय पोस्टरों के खिलाफ बढ़ते हुए जनमत का प्रवाह

लोक-रुचि को गह्दे में ले जाने का काम वंद हो

विमानों में विपरीत के विचारों के प्रदर्शन का विषय सचमुच विचारणीय है। इस मामले में बहुत अनेक विचारों की समीक्षा में, यंत्रों में और बहिष्कार-परिष्कार जैसी व्यक्तिगत आलोचना तथा भी विरोध किया है, फिर भी इन सबका कुछ भी असर हुआ नजर नहीं आता, बल्कि विचारों की तस्वीरों में विज्ञापन बढ़ते जाते हैं, ऐसा दिखाई देता है।

आपारी लोग अपने मत को जोर-शोर से फैलाए के लिए तरह-तरह के विज्ञापन देने में वे निरन्तर कठिन श्रम कर रहे हैं। लेकिन मुझे यान यह है कि इन विज्ञापनों में वे १०० में से ९९ के रूप में तस्वीरें तस्वीरें बनाते हैं। एको की देहभूमि को तस्वीरें बनाती हैं। विज्ञापन बनाया जा रहा है? विज्ञापन रूपकों का हो या मोटर का, ध्वज का हो या बस का, सीमा का हो या फर्शीर का, मिश्रित का हो या प्रायश्चित्त की तस्वीरें का, गली में का हो या बजार का के बीजों का, विद्यार्थी का हो या छात्र का, ट्रेन का हो या कार, कारखाने का हो या सिगरेट का, हवाई जहाज को यात्रु हो या व्यापक-भाषी का, बंगला का हो या स्वर टायर का, रथ का हो या चाँदिय का, युद्ध का हो या विज्ञापन के सामान का हो, धर्म के तस्वीरें तो सबसे योग्य-व्यक्त एकी की हेतुने में जाती हैं। इस युक्ति के पीछे भाव के मुद्र की प्रथा का जो भाव है, वह सच नजर आता है।

आपारी का उद्देश्य लोग अपनी चीजों के विज्ञापन में चलाने के लिए विज्ञापन में एकी की तस्वीरों का उपयोग करते हैं, यह तो ठीक है, पर व्यक्ति-भोग या मानव-व्यक्त योजन की प्रतिष्ठित सरकारी तस्वीरें भी विचारों के विज्ञापन का एक रूप बन-बनूह को अपने और सामूहिक रूपों का प्रयोग करते हैं, यह दिखनी देती बात है।

यदि विचारों के हेतु के विचार लोगों को आकर्षित करने के लिए लोगों के पास और कुछ नहीं है?

विज्ञापनों के ऊपर जो विचार प्रदर्शित किए जाते हैं, वे तो असर डलाने की आकांक्षा करते हैं। आपा सही बना दिखाई दे, इस प्रकार के रूपों पढ़ते हुए प्रतिनिधियों की संज्ञा, सही या सही हुई बननावाले को विचार करने जाते हैं, उनकी देखने के लिए आसों के साथी की इच्छा हो जाती है। उन भोज में अब योग्यता नामों को देखते हैं, उस हद पर धारणी व्यक्तियों को दर्शाते प्रकाश है। इस प्रकार के आशय छोटी-छोटी गली के नये विचारों को देखते हुए वे बहुरूप बना विचार करते हैं?

विज्ञान-नीतियों की आकांक्षा के विज्ञापन में एक आई के जो बात होती, यह मुझे बहुत अच्छी लगती है। जहाँ-जहाँ कि ऐसे पोस्टर देखने वाले को पुराने होते हैं, परन्तु ऐसे देखने वाले पढ़ कर तस्वीरें

असलोल चलचित्रों के विरुद्ध लोकमत तैयार करना जरूरी

एक दिन में "आधुनिक जीवन का चलचित्रों का प्रभाव," इन विचार हुए पर एक विचार-सोपनी में व्यक्त यह वे भाषण करते हुए भारत सरकार की विदेश उपस्थिति भीमती लक्ष्मी मेहन ने चलचित्रों में आधुनिकता के विरुद्ध प्रकृत प्रत्यक्ष उपाय करने पर बत किया।

भीमती मेहन ने कहा कि चलचित्र निर्माताओं को विचार का जनमानस पर नैतिक प्रभाव पड़ना है, इसका ध्यान नहीं रखना। वे नैतिक और-के अधिक लक्ष्य की विचार में ही रहते हैं। सिन्धु यदि अलग अलग विचारों का प्रचार विचार करें, तो वे नैतिक बलगत रूप कर देंगे।

विचार-सोपनी का आयोजन, स्थानीय समिती की मदद से वे चलचित्रों में उचित नैतिक एकीकरण का काम किया गया था। गोरी में स्थित प्रकाश द्वारा चलचित्रों में सामूहिक गरीबी की भीमती के साथ ही मुझ में विचारों वाले का विचार किया गया था तथा नगरपालिकाओं

के यह आग्रह किया गया कि वे सर्वोत्तम स्थानों में भरे गिनेमा के पोस्टरों को न लगाने दें। प्रकाशने विषय में सर्वोत्तम के आग्रह किया गया है कि वह अन्य विज्ञापन निर्माताओं पर इस प्रकार का प्रभाव डाले कि वे अपने विचार तैयार करें। (दैनिक "दि-एक्सप्रेस" से)

स्त्री-सौंदर्य का दुरुप-योग रोकिये!

आधुनिक युग में स्त्री समाज की आत्मा झटकी जाती है। स्त्री देवी है, बलिष्ठ है और-मान-मोह है, ऐसी मान्यता का प्रचार के युगों में चलती आ रही है। विचारों को जो युवकों में फैलने आसकर विचारों का, ऐसी मान्यता भी धर्म में बलगत होती आ रही है। यह सब होतों हुए भी एक नामने में विचारों का विचार के आशय हो रहा है, उसे रोके के लिए सभी की शक्ति नहीं बरकरा, यह आवश्यक लगता है।

आज हम कोई भी चीज खरीदने वाले को उसकी वैधता के ऊपर स्त्री का जोर देकर विज्ञापन में आगे बढ़ते हैं। विचारों को जो विचारों में आगे बढ़ते हैं। विचारों को जो विचारों में आगे बढ़ते हैं। विचारों को जो विचारों में आगे बढ़ते हैं। विचारों को जो विचारों में आगे बढ़ते हैं।

स्त्री के सौंदर्य का यह दुरुपयोग क्या स्थिति का प्रभाव रखे है? क्या इस बारे में कुछ नहीं हो सकता? क्या स्त्री के सौंदर्य का वैधता के साथ-साथ के विज्ञापन तक विचारों की चीज में व्यक्त हो सकता है? स्त्री के सौंदर्य का वैधता के साथ-साथ और वैधता उपायों बंद करने के लिए क्या कोई उपाय नहीं हो सकता?

-ज्योत्सना राजनीकांत मेहता
[दैनिक "पुणजात समाचार"]

विचारों वाली प्रतिनिधियों को स्त्री-सौंदर्य की हो रही है न? इस प्रकार चलचित्रों निर्माण में, अपने खरीद को जर्माने रूप में मानव-समुदाय के समस्त पेश करने में विचारों का इतना विरोध नहीं करते? इस प्रकार के विचार विचारों वाली विचारों इतना खतरा नहीं मानना है कि "इस प्रकार" को ऐसे धर्मगत पोस्टर बनने का यह हो सकते हैं।

इसका उपाय को को छोड़कर अन्य को छोड़कर-रुचि को उचित के रूप में ले जाने का काम करना चाहिए। इसकी भीमती देखे तो रोस्टों के लिए उपायों विचार कर बना के प्रतिनिधियों को छोड़कर-रुचि को उचित के रूप में ले जाने के बारे में नजर नहीं करते?

-विनोदिनी मोरलकर
[युवागत समाचार से]

तन्द्रा को त्याग, उठ कुछ तो कर ले करनी

यह है बलक या मान ध्यान से देखो।
यही गरीबी सम्मान तनिक तो सोचो।

यह विचारों पर विचार लगे जो जाते, कुतिसत कुशासन को उभार कर पाते। यह मान-जाति अमान्य तुम्हारा ही है, यह अर्थ मान-ता विचार तुम्हारा ही है।

यह शूर-करी में जखड़ी अजला देखो। यह खड़ी उमारे वक्ष नग्न-सौ देखो।

यह बहन-भार, भी-बेटी विचारों में, यह पिता-पुत्र सृष्टि-मित्र अनेक दूरी में। मन-जन इनका होता निशित होतों, या कि कुशासन के परिपूरित होतों।

यह भोज-व्यय कर रहा अनेकता का। यह सिमलाता है पाठ अमान्यता का।

चित्त तरह बराना सीटी बोल-व्ययना, कृष नहूँ और स्यो मूर्खता कर दूँछाणा। यह फँसने की भूम का कि बरखारी हो रहे ह्याय अपने विनाश को भारी।

ओ मानु-व्यक्ति अब जाय, त्याग-भादानी। तू तो सजला है जाय जाय बरानी।

माँ तुने ही तो शीतल बकर आवे, तेरी ही कोले में चाची लाल सजावे। तू ही तो है माँ सल-व्यक्त की जननी, तन्ना के-व्याय, उठ कुछ तो बरले करनी।

-महलाद नारायण राधा

सस्ता साहित्य मंडल द्वारा प्रकाशित
बहिष्कृत मर-रचना का साहित्य

जीवन-साहित्य

सम्पादक

हरिप्रसाद उपाध्याय । सहायक जैन
साहित्य मंडल । पार करने

सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली

विहार की चिड़्डी

गुप्त २५ दिसम्बर '६० से १ फरवरी '६१ तक संवत्विगोवासी की पद्ययाना विहार में हुई। आपने २५ दिसम्बर को पाहावदार जिके के अनंतत दुर्गावनी ताई ॥ तमीष बकुवाया नदी को पार कर बिहार की सीमा में प्रवेश किया और इस प्रदेश के पाहावदार, नया, मुंजिर, भागनपुर तथा पूर्ववासी जिके के कुल ४७० पदावों से गुजरते हुए १० फरवरी '६१ को बिहार के अन्तिम पहावदार किरातमंडल (पूर्वियाँ) में बिहा हुए। इस डेड महीनों में लगभग ४७५ मील की पदयात्रा हुई।

विगोवासी की इस यात्रा से बिहार को एक नया उत्साह, नया प्रकथन और नया मंत्र मिला। इस पहावदार पर बनना को आकार मीड जेके दर्शन करते तथा उनके बिचारों को सुनने के लिए इच्छु होते थे। धामीय जेके के पहावदार पर शीतल कुल-के-नम दस हजार और मागरिक सेवकों के पहावदार पर २० से लेकर ४० हजार तक लोगों की उपस्थिति हुई। इस प्रकार कुल मिला कर लगभग ४ लाख लोगों ने विभिन्न पहावों पर उपस्थित होकर शांतिपूर्वक, धनार्थपूर्वक एवं प्रेमपूर्वक विगोवासी के प्रथम मुने। एषाव जगह को छोड कर कहीं भी कोई अवाचित या अस्वाभाव्य नहीं हुई।

विगोवासी की यात्रा का प्रथम पहाव पहाव बिहार सर्वोपर्य-संकेत पर था, शेराली अथवा रत्नाकरक संस्थाओं—विशेषकर गांधी स्मारक त्रिभुज बिहार शाखा, बिहार भूशासन-सचिब, बिहार सांख्यिकी-शासकीय संग, महिला बरला-समिति तथा माग में पढ़ने वाली अनेक छात्रे-बन्दी पदनात्मक संस्थाओं का सहयोग प्राप्त हुआ। राजनीतिक संस्थाओं में श्रावण एवं प्रजा-समाजवादी पक्षों का हादिक सहयोग प्राप्त हुआ। बन्दी-बन्दी शोषितक पक्षों (कोहिदा पक्ष), स्वयंसेवक पक्षों को सम्बन्धित प्रार्थी का भी सहयोग मिला। बिहार सरकार के अधिकारियों तथा साम-संस्थाओं के मुखियों आदि का भी सहयोग प्राप्त हुआ। बिहार के राज्यपाल डा० पाकिर हुसैन बिहार-प्रदेश के पार्षद रिच ॥॥ सामाजिक पहाव पर आकर विगोवासी के दिने। राजनव-मन्त्री (सह सुचर मंत्री) ५० विगोवासी का अनेक पहावों पर अपने राजनव अधिकारियों के साथ पहुँच कर सम्बोधन के दिने। सरकार के स्थायी बन्दीपालों का दूर सहयोग हर पहाव पर हासिल हुआ। माग में पढ़ने वाले शिष्यालयों के शिक्षकों एवं छात्रों का सहयोग एवं समर्थन भी प्राप्त हुआ।

विगोवासी का बिहार में यह आगमन लगभग एक साल के बाद हुआ था। पिछली बार १७ महीने पहले यह कर जर्मनी बहि-सक शानि का बिचार बिहार के प्रांतीय मंत्र में सु-गुन कर प्रचारित किया था। उस समय उन्होंने एक पत्रके से मुनिहोनों के लिए १२ लाख एकड़ भूमि को माग की थी और बिहार को विभिन्न पहावों तक एवं राजशासिक संस्थाओं से इतने भूमि प्राप्त करने का संकल्प भी किया था। विगोवासी की प्रेरणा से लगभग २१ लाख एकड़ भूमि अभी समय नहीं प्राप्त हो गयी थी। उनके बिहार में जाने के बाद मुनि-माग के बहाव प्राप्त करने के विचार-नवायों में ही शानि लगायी गयी, जिके के पहावका बरिष बन्दीने ही तीन लाख एकड़ भूमि का बरिषाया मुनिहोनों की तरफ से कीच हुआ। लेकिन १२ लाख एकड़ भूमि प्राप्त करने का संकल्प अभी बरिषाया ही रहा था। बिहार में अनेक करते ही विगोवासी से वहाँ की जनता एवं कार्य-बन्दीको को उभ संकल्प को बार बिहार में

और उसकी पूर्ण के लिए हर मुनिहोना से 'बीजे में बरिषा' (यानी कुल धामीय का बीजेवा हिस्सा) प्राप्त करने का एक नया संघ घोषित किया। बीजे में कट्टा धामीय के साथ विगोवासी तीन दर्जे रखते हैं :

- (१) सब धामीय के मासिक दान दें।
- (२) जेता को बन्दी धामीय दें और
- (३) जेता स्वयं अपने हाथ से मुनिहोनों में कटें।

विगोवासी ने पहले पहले हर नये सग का उपाचारक बिहार के उचत दुर्गावनी पहाव पर किया और देखे-देखाते यह सग बिहार की हवा में परिष्कार हो गया है। कम-से-कम निज पौष जिके के विगोवासी मुनुरे हैं, उन जिके के अधिक-कास पौष एवं नगर हवा में सके के उन्-पौष से गुज उडे हैं, और बड़े रिज हूर नहीं हैं, जब बिहार का कोडा-कोडा विगोवासी के सब नये उद्योग से प्रति-बिहाने हो उठेगा।

दुर्गावनी पहाव पर जब विगोवासी ने 'बीजे में बरिषा' की बात सुक की, तो बिहार के कार्यकर्ताओं को पौरा आगर्षक हुआ, क्योंकि उनका यह हि इस यात्रा में बाधा लाति-नेना के कार्यक्रम नर ही होता है। लेकिन बिहार की भूमि पर कदम रखते ही "मुद्रांगी बाबा" ने दुर्गा-मुद्रांग-संघ" की सब सुक कर दी और बिहार गांधी के कट्टा कि "३२ लाख एकड़ का भूशासन मुनिहोनों को देना" बिहार के कार्यकर्ताओं ने प्रस्तावित कर इस संघ की स्वीकार किया और सर्वप्रथम विगोवासी के माग में पढ़ने वाले पक्षों से बीजे में बरिषा प्राप्त करने का प्रथम किया गया। समय बहुत लोडा था। बिहार को प्रथम एकड़ उनके परिष्कारकवक दुर्गावनी के रिजान्तरक के पहावों पर दुर्गावनी पहाव और दुर्गावनी कट्टा धामीय प्राप्त हुई और यह उपाचारक दुर्गावनी कि बरिषाक प्रत्येक बिहार के साथ कट्टा धामीय प्राप्त हुआ, जिके बीजे में बरिषा के हिस्सा के पूरे बिहार से १०-१२ लाख "कट्टा" धामीय प्राप्त करना सर्वप्रथम नहीं है।

इस यात्रा में विगोवासी ने सबसे बरिषाक और बीजे में बरिषा का बरिषाक पर ही बाधा। लेकिन बिहार की भी बरिषा में उठने

बिहार की जनता और कार्यकर्ताओं के आगमने रखी। उन्होंने बिहारवासी से कहा कि राष्ट्रपति रावरेड बाबू की बन्धनस्थि बाधुणी १ दिसम्बर तक बिहार के हर मुनिहोना से (जिकेने पहले छत्र हिस्सा दिया है, उनसे भी) बीजे के कट्टे ॥ हिस्सा के धामीय 'मान को माग, और साथ ही सब निज तक बिहार के हर पर में सर्वोपर्य-संग (सबका शांति-संग) की सधाना की माग। इसके अलावा हर पहाव पर भी बाबादर पर एक शांति-संग के हिस्सा में बिहार भर में कुल ४००० शांति-संगों की माग भी उठनी है। बिहार के पीकवासी के सबसे 'विगोवासी ने अयोधनीय विष्णुपानों के निष्काकरण का कार्यक्रम रखा और बरिषा की कि वीरपत्नी तक बिहार का नगर नर की बीजे (ऐसे अयोधनीय विष्णुपानों से) "सक" कर दो पारों। बिहार में यह कार्यक्रम उठनी है सर्वोपर्य युद्ध-समयेन के कार्यकर्ताओं को सींग है और यह अनेक शकट की है कि बिहार के नौ-नवासी की पूरी शानि ॥ कार्यक्रम में उठनी। उनकी प्रेरणा से युद्ध-समयेन के कार्यकर्ताओं ने उनके बारा-संग में पढ़ने वाले लगभग एक दर्जन बरिषों में अयोधनीय रिशाप विरोधी प्रतिष्ठापन सुक कर दिया है, जिके पहले कदर के और पर उन नगरों में उठनें की "विष्णुपान विष्णुपान शांति-संग" गठित की जा चुकी है।

इस बरिषा में शांति-संगों की बरिषा को बिहार में भी प्रगति देनी से हुई है। विगोवासी के बिहार-प्रदेश के पूरे यहाँ लगभग ३०० शांति-संगों में। उनके बिहार छोडने के समय यह संख्या ८०० तक पहुँच चुकी थी।

विगोवासी की पदयात्रा के बर में उनमें अयोधनीय बरिषा, बन-संगों, रिशा-संगों के रिशासों, बांध, पुनरों और युद्ध-संगों तथा शांति-संग बरिषा की ओर से कुल मिला कर करीब १ लाख दाने, जिकेने अधिकतम सर्वोपर्य-संग के निजता और करीब १ हजारक दाने आगमन के बरिषा उपाचार-संगियों के सहयोगार्थ प्राप्त हुए।

विगोवासी की पदयात्रा में उत्पन्न विभिन्न बाधाओं पर कई महत्वपूर्ण आचरक उपाचार उपस्थित हैं।

१. बनबरी को बरिषा नर में बिहार-प्रदेश के सर्वोपर्य-संगों की का समयेन विगोवासी की उपस्थिति से हुआ, जिकेने कार्यकर्ताओं से बीजे में बरिषा के कार्य-संग में बाधा निष्काप शकट किया। विगोवासी में बरिषा के एक समय में १२ लाख एकड़ के "आयुधक एवं शानि" का

सकल की पूर्ण पर जोर दिया और कार्यकर्ताओं से निवेदन किया कि वे जेने दूर करने में पूरी शानि संगों। इस बरिषा पर कार्यकर्ताओं ने अयोधनीय अयोधनी का बोधार्थ हिस्सा का संकल्प भी घोषित किया।

१. बनबरी को भी उपाचारक आचरण शोषोदेवता रिष्ठापन आगमन में गठित किया एक समय दर्शन हुआ, जिकेने भी बरिषाकर्ताओं ने उत्पन्न शांति-संगों की बीजे के अनेक शांति-संगों के पीले शिके में किये। उन्होंने दूर की बरिषा बिहार पर पीला कलाक और बरिषा शोष पर पीला कलाक लगाया। उसी रिष्ठा संस्था में पीला कलाक बोधार्थ-संगों का एक माग बिगोवासी के साथ शोषो-देवता आगमन से तीन मील दूर कट्टावक कुष्ठ-शेकासंग तक हुआ। धीरे अन्तर्गतों स्वयं इस 'माग' की अनुप्राप्त पर गये।

२. बनबरी को बरिषाकर्ता, शारीक आगमन में हिस्सा बिहार प्रांतीयक आगमन-समयेन विगोवासी की उपाचार में हुआ, जिकेने लगभग ८० शांति-संग एवं ४० आगमनकर्ता गांधी के करीब २०० प्रतिशित एवं कार्यकर्ता शांति-संग। इनो बरिषा पर मुनिहोना गांधी शारीक संग का उपाचार की विगोवासी के द्वारा हुआ। २२ बनबरी को शारीक पहाव पर गांधी स्मारक त्रिभुज, बिहार शाखा के कार्यकर्ताओं का भी २२ बनबरी को सुलतामंडल (मालपुर) पहाव पर बिहार राज्य के मुनिहोना विष्णुपान एवं अधिकारियों का सम्मेलन हुआ। १ फरवरी को सर्वोपर्य-संग, बरिषा (शानि) का पूर्ण शानि कलाक और ४ फरवरी को सर्वोपर्य-संग, राडीपहाव (शानि) का बादाय शानिक सारीक विगोवासी की उपस्थिति में संगत हुआ। इनके भी अनेक शांति-संग नरुवासी में भी २२ बनबरी की बरिषाका आगमन में की

४ फरवरी को शानि-संग में ही बिहार के विभिन्न राजनीतिक पक्षों के प्रतिनिधियों को एक बैठक विगोवासी तथा धी अन्तर्गतों की उपस्थिति में हुई। बैठक में बरिषा पक्ष की ओर से डा. शानि बरिषा वकी की बरिषाकर्ताओं की ओर का अनुपस्थान बिहू तथा प्रजा-समाजवादी पक्ष की ओर से भी बरिषाक बिहू (अभ्यास, बिहार की एन पी.) की भी अनेक शांति-संग करूए. एन ए शांति-संग। बिहार सरकार के दो मंत्री, कुमार प्रसाद सिंह (सह मुद्रांग) और भी अनेक आगमन तथा बरिषा के बरिषाकर्ता के एक प्रतिनिधियों की इस बरिषा पर शानि-संग बैठक में विगोवासी के आगमन में बरिषा की ओर से की अनुपस्थान बिहू तथा धी एन पी. की ओर से भी बरिषाक बिहू के १२ लाख एकड़ के संकल्प को के लिए हादिक सहयोग देना का बरिषा किया।

१ फरवरी को अन्तर्गत-समयेन पहाव पर बिहार के शांति-संगों की

एक दही बोली। बाजारों को बायंगलफु को ब्रह्मपत्त में हुई जितने चायन करते हुए विनोबाजी ने विनशांति-केतन द्वारा पर जोर डाला।

विहार के सीएम पवार (विद्यमान) पर विनोबा को जिराई देने के लिए विहार के स्थानात्मक मुख्य भरी की रीज-भाषण विद्, कल्याण विभाग के यकी की मोला याचकन बना। केंद्र एव जमान-कमानवरी पक्षों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। विहार की रचनात्मक संस्थाओं के

भोर के विहार सर्वोद्यमसक के उद्येय की क्यामसुदर प्रकाश तथा विहार मूकन एव कमेटी के सभी भी बैठकपण प्रकाश चौधरी ने विनोबाजी की विवादी हैं। हर जन्के कार्यक्रम को पुरा करने का आग्रह-सक दिया।

१० फरवरी को विनोबाजी विहार के विहार हुए और पंचिम वैशाल की सीमा में प्रविष्ट हुए।

—सचिन्वदानन्द

कुमारप्पा-स्मारक निधि

[३०] विमल्वर के 'भूदान-यज्ञ' में कुमारप्पा-स्मारक निधि के लिए बाणों के नाम अतीत विचारों हुए हएने सुसादा या कि की कुमारप्पाजी के जन्म-दिनांक ४ जनवरी से उनके निधन (विगत, ३० जनवरी तक कुमारप्पा-स्मारक निधि के लिए निधि सङ्कलन में विसेय शक्ति लगायी जाय। हर सप्ताह हुबारे 'सात निधि के लिए छोटी-बड़ी रकमें आ रही हैं। हातां कि सा. ३० जनवरी बीस चुकी, पर सङ्कलन का काम अभी जारी है, यह उचित ही है। जिन बाणों में तथा कार्यकर्ताओं में अभी तक अज्ञानी तथा अज्ञेय विधां से प्राप्त करने रकमें न आये हों, के चय भी निर्धारण की हुवा करें। विमल्वर 'भूदान यज्ञ' में बाणों की सूची प्रकाशित की जाती रहेगी। —सं०—

५-०-५०

गज मक में शांति-स्वीकार कुल ६०,९८८-८१

बाणों में २ लाख तक प्राप्त रकम	३०-०-५०
सादी-धारीयोग कमीशन, बाबराड इ.प्र. संकलित	१८८-१०
सादी-धारीयोग प्रयोग समिति, बहुमदाबाब द्वारा संकलित	१२९-२५
सादी-धारीयोग विद्यालय, मधुबनी, हरणवा द्वारा संकलित	५०-०-०
श्री संकलाकषि रामानुजम्, भीरक, विवाली (बुधर)	२५-०-०
श्री सुरासत पारी, सीकी कोरौन, कनेहुप	११-०-०
श्री कुमुप भीर बहुतदाब नारोतकर, बीना (महाराष्ट्र)	१०-०-०
श्री कावराय शीवरीवाल, भीकवाडा (राजस्थान)	५-०-०
श्री कल्याण सिंह, सहायक विद्यालय, विनायक, बहुतदाब	५-०-०
श्री पी० ई० बेंदरपन देवुडी, पी० ए० ए० पैकुआपुरे (साध्य)	२-२२
श्री चिन्मयानंद पांडे, भीषापुर, कमान (उ० प्र०)	२-०-०
बहुतदाब महिला अज्ञान कमीती आग्रह, श्रीहाली बीरा संकलित	६-६३
श्री कृष्णामाता ३० उडवा, भागनगर (छोटापु)	२-०-०
श्री कम्पेकर चौधरी, भागन, रोडपुर, गजन (विहार)	२-०-०
श्री भीमबेन सुरारकेन, बाजल की बाशाराय मननक, कडकटा	५१-०-०
श्री बलदेव दास लोहादीसाल	२१-०-०
श्री महाशय स्टोर	५-०-०
श्री बाबराय डुंडीन कपनी	५-०-०
श्री भाद्रानगरबाबकी शिबी	५-०-०
श्री श्रीगंजमाई शिबी	५-०-०
श्री प्रह्लादीप्रसाद लोहादीसाल	५-०-०
श्री देवनायन	२-०-०
श्री राजनी दुवे लोहादीसाल	२-०-०
श्री हनुमन्त क्यामवाल	२-०-०
	४८१-१०
कुल रकम	६६,९९६-९३

विनोबाजी ने विहार छोड़ते समय विहारवासियों को आद काय करने का सुझाव दिया। —

- (१) 'बोपे में कट्टा' के दिसास हेतु हरएक से अच्छी भूमि की सुरामन्वाति और जमीं की इफ्फाउंसर सुभेदिनों में सितारक करा देना।
- (२) पहले दान में प्राप्त भूमि का विकल्प करना।
- (३) हरएक के घर में सर्वोद्यम-आश हो।
- (४) हरएक संभाव्य-श्रेय में एक-एक शांति-सिद्धि हो।

कानपुर के आयनगर क्षेत्र में

नागरिक शक्ति के विकास का प्रयोग

कानपुर नगर में गांधी विचार-केन्द्र की ओर से आयनगर क्षेत्र में नागरिक शक्ति के विकास और प्रेत शक्ति के निर्माण की दृष्टि से गत एक महीने को एक अत्यन्त प्रयोग चला रहा है। इस अवधि में पर पर से लेह-भक्त श्वासित पर सर्वोद्यम-यज्ञ एवं शांति-मेला के कार्य पर जोर दिया गया।

सर्वोद्यम के जीवन मूल्यों को प्रत्यक्ष अनुभार में लाने के लिए २१ से २३ अक्टूबर तक प्रयोग के सर्वोद्यम शक्ति-यज्ञ में माई-बच्चों का सह-जीवन-शिक्षण आयोजित किया गया।

अक्टूबर '५० में जनवरी '५१ तक १५५ सर्वोद्यम-यज्ञ चले गये। इनसे एक चार सड़ियों में अनाश और नरद रूप में कुल १०१ ६० ५५ नये बच्चे मिले।

उप-काम को चले के लिए देश के सर्वोद्यमियों का एक मिन-कमन्स बनाया गया। कानून अनुद्दिन नैतिक शक्ति अगाने के लिए प्रयासशील है। पारिवारिक भावना के विकास के लिए क्षेत्र के किरी भी शक्ति के यहाँ विचार में मँड के दौर पर 'गीता-प्रबन्धन' आदि देते हैं।

श्री शक्ति को बढ़ाने के लिए एक महिला सर्वोद्यम-कमन्स भी स्थापना हुई है, जिसकी सहायक बैठक हर सुन्दर को होती है।

पाण्डि विमल्वर: १५-२-६१ तक

चमल घाटी की यात्री

● चमल घाटी शांति-सिद्धि के अत्यन्त स्यामी कल्याणकर, श्री बाबूदल मिश्र, श्री महावीरसिंह और श्री भागवतसिंह ५ फरवरी, '६१ को उत्तरप्रदेश के राधेनी की ५ नगरिकों से चमल घाटी-समन्तक के बारे में चर्चा करने के लिए कलकत्ता में मिले। ● विमल्वर जिले के भाग रायपुर में विमल्वर के वकील श्री रामभाषण गुप्ता की भारी का अग्रहण लेखनन द्वारा कात हर सुष्ठि की भी अभियोग स्यादा था, उसमें अग्रहणमर्त्य के सामाजिक महार को पढ़ानेसे हुए भी गुप्त ने बचाव पक्ष की ओर से भी प्रकट वेदवी करने का अग्रहण अभिमानक-यज्ञ अर दिया जो सुष्ठि ने सुकदमाती उद्वेग लिया। ● १ फरवरी, '६१ की भी चमलघाट महाशयण दयरा छोटे हुए विमल्वर पधारे। याने विमल्वर कानपद के दाम रूत में सा० चन्द्रसेकर आम्बेदर-उच्चतर सामाजिक विद्यालय का-शिक्षणवाच किया। ● विमल्वर में चमल घाटी शांति-सिद्धि के कार्यकर्ताओं, क्षेत्र के सभी दल्लों के सामाजिक कार्यकर्ताओं-विमल्वर डिगरी कावेर के जल्लों और सामाजिक दाय में भाग्यकिये। ● चमल के वेदद मजमन्तु स्वामी शरकन्दनी की सहायता में रहे हैं। ● चमल के पावन वड पर जलदेहि कयों तक लायन की है। ४ वें वर्षों कात उनसे एक क्षेत्र में पुनः आगमन पर चमल घाटी उपचारो-लय की ओर के साह में और यज्ञ पर सेवा।

विचार प्रसार की दृष्टि से ५४ परिवारों में मूक पत्र-निर्धारण निमित्त रूप से पहुँचती हैं। १२० परिवारों के लगभग १०० बालक गांधी विचार केन्द्र के पुस्तकालय से लगभग १५० पुस्तकों का अध्ययन हुआ।

सर्वोद्यम-यज्ञ बनाने के लिए 'स्वच्छ दीपा, स्वच्छ विचार' अभियान पर जोर दिया जा रहा है। काम टी व्यापी मन्-मुद्रा, हाथे और मुद्रादेवता की न शी, हकीकी पोशिया भी का रहे हैं। बन्धे, पुँडे, भीमार और मेराओं की तथा, पित्रिक आदि पहुँचने का प्रयत्न चला रहा है।

इस प्रयोग के कारण यहाँ के नागरिकों के मन में शासन के प्रति विमल्वर रही है। सर्वोद्यम के मूल्यों को अज्ञानों की दृष्टि क्षेत्र में गांधी समाजवादी होजाते हैं।

—विद्यमान अवस्था

सब की ओर से विमल्वर में जल्ले भाग्य हुए। ● उपचारोयन साह के निरुद्धवर्ती गाँव चौरगाहा, लामरमक, महेपुर, पीकापुर, पहाडपुर और वेदपुर में शांति-वाच शले एवं हैं, विमल्वर अनाश निमित्त साह कार्यलय पर आता रहता है। गत जनवरी मास में पचास करने का अग्रहणकिये हुआ। ● मुस्ता जिले की अनाश तहसील में शांति-सिद्धि छोली पूरा रही है, जो गाँव-गाँव में शांति-मिम बना कर क्षेत्रीय शांति-समन्तक की संघीकता कर रही है। —गुरुदास

बहिष्कृत समाज-रचना का साहित्य 'प्रादी परिकार'

- सादी-धारीयोग तथा सर्वोद्यम-विचार पर विमल्वर में चमलघाटी
- सादी धारीयोग आश्रीलन की है-आपनी जालकरी है।
- कविता, लघुकथा, मौल के पद्य, साहित्य, सतीभा, सत्या-परिचय साहित्यिक पुस्तक आदि प्रकाशित होगी।
- आर्यकर्म कुलपदः हाथ-आयन पर जगारे।

संभादक
दयानाथसाह साहू: पचाहिरताक जैन
पारिक: पूव तीन कयें,
एक प्रति: पच्चीन जयें के
—राजस्थान शांति-सिद्धि
पो० खादीनाम (अधुपु)



—प्राथमिक सर्वोदय-शिक्षण, बटाना
(पुरातनपुर-निवासर) में ३५६ सर्वोदय-
पालों में १११ रुपये ५४ पैसे और
५१ रु० २५ पैसे ० साधन-दात प्राप्त
हिया।

—पठानकोट में सर्वोदय-आश्रम,
साधनपुर द्वारा ५६ सर्वोदय-पाल के जनसरो
साहू में २७ रुपये २० पैसे ० प्राप्त
हिया। साथ ही १ पालकों में ५५० पैसे ०
सहित-प्राप्त में मिले।

—श्री ७ प्रस्ताव में वकील अमरक विधि
के प्रधान कार्यालय में सहायक वकील की
पुष्पकविध करवा-वृत्त, सामुहिक सहायि
कारि कार्यको द्वारा मनायी गयी।

—मुकद्दामपुर जिले के साधन-
के सर्वोदय स्वाध्याय उपक्रेय द्वारा आयो-
जित 'पुष्प कौ वा साधन-आश्रम का उद्वे-
ग विमान विमानिकारी यमायें संति
हस्य ही मजडा है।' इस विषय की
मीठी में सहयोगी धनदातार साहू,
पद्मामुखर प्रसाद, श्री० इन्द्रप्रसादप्रसाद
मिह, महम्मदीयोर कारि में भोग लिया।

—श्रीमद ३० प्रस्ताव) जिले में
दखान-नवान पर सर्वोदय-जिले आयोजित
हूए। साधनपुर हाट आमपाय के मेले में
रचनात्मक कार्याओं द्वारा मुजीब-हित
की गयी।

—साधन जिला सर्वोदय मुकद
समेत, बिना सर्वोदय-महल मारी
समीचीय संघ द्वारा छपा मरने में
सर्वोदय-विमान मनाया गया। मिश्रकर
'६० के जनसरो '६१ तक सर्वोदय-पाल में
५० रुपये मिले।

—श्री० डाहुरल्ल संग, एतन्नलक
कोटेया, मोडीगल की आर्थिक कार्यकर्मी
में महापुरु के पीत सिने में श्रीपर विचार-
प्रकार किया। इन दुभा कि मामलाजिक
और मेवहार ताजुध में १५० मीनों
का फंड देन मुसकर करी आर्थिक पर-
नामा का प्रयोग किया जात।

मेवहार सर्वोदय की सामुहिक प्रस्ताव
की पूर्वीवारी में उद्योग और संगोब
में हो दाखलमें १२ एकड भूदान किया।

—साधन जिले में मेले कोट में १ मील
दुई पर नुकीरी पंर में विदेशी संग पर
गुनी-सिंहना दिना, ३० जनसरी की मनाया
गया। उन समय श्री० संग, श्री देवुल्ल
देरा, साधन एव साधन आर्थिक कार्यकर्मी में
प्रजासत्ता का विचार कीये की मना-
गया। उनमे के मुजाबरी मंत्र के एक
दाय में भूदान किया और एक एक मुं-
निय की पर मनीय रे लें।

—जल्दी गाँव में शिठेरी सुविधा
परिहार में। गाँव के दो सुविधानों में पाँच
एकट भूमि उन सुविधाओं की देख गाँव के
सुविधीनता निय दे।

—जायरा यदर में साधन-वाटें में
सर्वोदय-सुविधीयों की एक सज हुई,
जिनमें बाटें में धन करके, के सिने हूक
सिवा-मंडल का यदन हूया। मंडल ने
संबोधक सर्वोदयनिधनी की सिधारीलानकी,
रिटापटें देनीहाक सास्तर-नायबल हूए।
मंडल अधोधीयों कोरटर-विशेषण, सर्वो-
दय-पाय, मुताजिबि कारि के काम की बाटें
में व्यस्तिय करेया।

—अयोध्याय कोरटर-विरोधी अभियान के
अनवरत कामगुन नगर में प्रप्रिण्ट एक विध
के एक अधोधीयों कोरटर की सार्वजनिक
प्रदर्शन में इदथाया तथा एही विध के एक
अन्य अधोधीयों कोरटर के सार्वजनिक प्र-
दर्शन को रोफने के लिए नगर रणोदय
समितिके की और से मधुमैल विदेशी-मार्गको
एवं सिटी मैजिस्ट्रेट को सूचना दी गयी।

आगामी सर्वोदय-नमन्मेलन के
अनसर पर आंध्र की कतरारियों
के सम्मेलन का पृथग् आयोजन
जायरी के तीकरे संग्राह में पंचगयी
गीतारो जिले के साधन-मुकद परमान में
काय प्रदेय के साथी-कार्यकर्ताओं का
साधिक सम्मेलन साधन-मार्गको के विधा-
नीय संसाधक श्री पी० राधन की अध्यक्ष-
ताय में हुआ। सम्मेलन में 'मोरी मोठ' के
कार्यक्रम का समाज करते हुए साथ और
विधान-दुहायकों बनाये का निष्पन्न किया।
सम्मेलन में वरीक २०० कार्यकर्ता उप-
स्थित थे। आण प्रदेय में अठल मास में
होये दाते अठल भारतीय सर्वोदय-सम्मे-
लन के अनसर पर आण प्रदेय में विभिन्न
दिशों में वरीक १ हजार कार्यकर्ताओं की
एक बुरा बना का आयोजन करने का
निष्पन्न श्री दिना गया।

इस अंक में
राजि-सिन्धी के दो पाठः प्रीति और इति
विश्व वंशियो
नायरी निरि द्वारा लेगुनी सिन्धी
दुताय-आरोलय को मजदुर-आन्दोलन ई
विचार-महा
बापु की आशिको 'सत्य'
कार्यकर्ताओं के माय विरोधियों की चर्चा
संग्रह में नई साहीय कार्यकर्ता-गीती
सब करिदिण नगर की कमी ई
विरोध करवाही-दल के
सम्मेलनका का विवरण
विधान-आन्दोलन ई
कार्यकर्ताओं की और से
आजोधीय कोरटों के सिधाक बनन
दिहार की सिधि
साधन-मुकदपुर ई

अमर विद्यालय, रुद्रप्रताप आश्रम,
नरसिंहपुर का नया सत्र
१ अग्रल से आरम्भ

एव० डाहुर रुद्रप्रताप आश्रम की
रुद्रप्रताप आश्रम, नरसिंहपुर द्वारा संभाजन
अंबर विद्यालय का आयामो सत्र १ अग्रल
से आरम्भ हो रहा है।

अंबर विद्यालय में प्रवेय पालों में इनकु
विद्यार्थी साधारण अंबर विद्यालय, नरसिंहपुर
के द्वारा आविन-व्यय संवा कर दीया साभेदन
करें। आयोन्वतों की कारी-समीचीय
समीचन की ओर से ५५ रुपये की साधिक
छात्रभूतिके की जानी है। अंबर विद्यालय की
प्रतिपाठ-अभवि ५ माह की है, जिसमें
१ माह विद्यालय में प्रतिपाठ होना है, दो
३ माह वीथीय अनुभव के होते हैं।

विद्यालय में प्रवेय प्राने वाले विद्यार्थी
की विद्यालय-समीचना मैडिङ्ग वा उलके समस्त
होनी चाहिए। बहू बत्रा परिमाण कर
करके तथा उनकी सापु साधनका १८ वरें
की होनी चाहिए। विद्यार्थियों की उपा-
वास में यदुता अनिवार्य है। विद्यालय
की जीवनर्या साधन की जीवन-बर्बा
होती है।

—बननाप्रसार साहू, आचार्य

विहार सर्वोदय युगक-सम्मेलन
राजि

विहार सर्वोदय युगक-सम्मेलन
की पराम में हूँ देकर में यह उप दिना
गया कि विहार में कोरटर-आन्दोलन की
जिम्मेदारी सर्वोदय-युगक संभल उत्रये।
इके सिद् विरोधियों के भी करणी अनु-
भवि की है।

विरोधियों में प्रयास-बनमें सर्वोदय-
युगक संभल में मजदुर-की पर साधनग-
नीय के लिए ८८०० रुपये एरविष्ठ
किया।

गोरखपुर में सर्वोदय-पत्र
गोरखपुर में ३० जनसरी मे १२
बरारी तक सर्वोदय-पत्र व्यापक हर में
मनाया गया। ३० जनसरी की परदेर हर
सार्वजनिक कार्यक्रम प्रदा गया, जिनमें हर
उपनीतिष्ठ पणों, रचनात्मक संस्थाओं की
विद्यु-संग्रामों के कार्यकर्ताओं में मर-
गिया। संग्राम एक हजार दुषिडों सुं-
भल में अनति की गयी। ऐसे दिन 'आर-
धन' पत्रिका के २० प्रारक मनाये गये।

३१ रु० की समिष्ट सिद्धि हुई।
सर्वोदय-पत्र में २१ हजारने पर विचार-
प्रकार के विभिन्न कार्यक्रम स्थानोविध सिने
गो। इन स्थानों में लोपी मे सर्वोदय-पाल
रखने एवं उनकी व्यवस्था करके की जिम्मे-
दारी उत्रायी। विचार-प्रकार के लिए 'आर-
धन' विभागन सिद्ध एम. पी., श्री. साधन,
डा० विद्याल राठ, डा० महादेव प्रसाद,
राधनकर सिन्धी, पंचदेव, यदुनाकर
पाटी, करिभ्राह्म, मोहनलाल दही,
समाहक पाटी आदि में विराम लिया।

विचार-प्रकार में सर्वोदय-पत्र का
कार्यक्रम दैनिक-पत्रपत्र के सहयोग में रहे
समाहक के साथ मनाया गया। इन
अनसर पर विशेषा रूपी साधन-आन्दोलन
का आयोजन का मुनामम उत्रुकरणी
श्री भैरवनाथ शा ने किया।

१२ बरारी की महापत्र में सर्वोदय-पत्र
गया।
एक पत्र में गोरखपुर के श्री गुरतरे
के द्वारा संभल हुआ, जिनके कारन कार
में सर्वोदय-सम्मेलन के लिए साधन-आण-
करण निमार्थ हुआ।

'कमल' की अग्रद पदपना
श्री राधुनारा 'चमन' की शिद्वार माह में
महापुरु के साधार, गोरखपुर जिले
में करीब २०० भोग की परवारा करी
हूए २३ दिन के इरगोड (मैदुर
साय) रहीं। इनने अनर की रविण
संगत के कोरटर जलणे इना के वे दावारा
करने हूए ११ जनसरी की नीतिपरपु
वृद्धे। हूए इरने महापत्र के निरविष्ठ
में सर्वोदय-विमान आयम की ओर से
११२ सर्वोदय-पाल रहे वने। यह में
बैठम में १२ बरारी की कोरटर में निरा-
नामाय के सर्वोदय देने के वृद्धे। सांभ
माह के समय सक विरोधु ह्ये हूए बत्र
कनाराकरी वृद्ध रहे है।

विरोधियों की पदपना
विरोधियों के ५ कार्य को ३० संभल
के अनसर में प्रवेय छे। ३० कार्य की
संग्राम में रहे। सा० ११ का सत्र
सर्वोदय और १२ का वृद्धी है।

२५। विरोध साधन-विमान,
श्री० कोरटर, प्रथम

इस अंक में

१	विरोधी
२	सिद्धि
३	विरोध
४	विद्यु
५	विद्यु
६	—
७	श्री साधन
८	सम्मेलनका प्रसुं
९	सम्मेलनका प्रसुं
१०	विद्यु
११	विद्यु
१२	विद्यु
१३	विद्यु
१४	विद्यु
१५	विद्यु
१६	विद्यु
१७	विद्यु
१८	विद्यु
१९	विद्यु
२०	विद्यु
२१	विद्यु
२२	विद्यु
२३	विद्यु
२४	विद्यु
२५	विद्यु
२६	विद्यु
२७	विद्यु
२८	विद्यु
२९	विद्यु
३०	विद्यु

विज्ञान के इस युग में भौगोलिक सीमाओं का कोई महत्व नहीं रह गया है !



परांपर्यायी : हुक्मवार

संपादक : विद्याधरानंद दह्या

१७ मार्च १९१

वर्ष ७ : अंक २४

सँहारकं शक्ति का मुकाबिला प्रेम शक्ति ही कर सकती है

-रिचोपा

पुराने जमाने में सज़ादाई रणायण में लड़ी जाती थी। पलासी की लड़ाई छोटे रणायण में हुई थी। ५ घंटे में फैला हो गया था। सारा बंगाल अंग्रेजों के हाथों में पला गया। इन दिनों सज़ादाई ऐसे रणायण में नहीं होती है। सारे देशों में लड़ी जाती है। कुछ देश दूसरे कुछ देशों के खिलाफ लड़े हो जाते हैं। दूसरे कुछ देश उधर कुछ देश। करोड़ों लोग एक दूसरे के खिलाफ लड़े हो जाते हैं। और यह सज़ादाई-आयिक क्षेत्र में, सामाजिक क्षेत्र में, रण क्षेत्र में और 'साहित्य' के क्षेत्र में भी होती है। एक देश के लोग लाखों, करोड़ों रुपये की वित्तों में दूसरे देशों में मुजब बनते हैं। यह भी लड़ाई का एक फल है। इस तरह कुछ आनकल एक क्षेत्र में नहीं होता है। ऐसी हालत में सीमा (बाउंडरी) का तबाला थाज नहीं है ? मान लीजिये हिन्दुस्तान की लड़ाई दूसरे देश के साथ शुरू हो गयी। वह लड़ाई सपनकर, कानपुर, बम्बई, कलकत्ता में लड़ी जायेगी। इसलिये सीमा का कोई महत्व ही नहीं रह गया आज की दुनिया का बने दे दे के अर्थव्यवस्था के बाहर हो गये हैं। आज के राज्य हिसक नहीं हैं। वे हिंसा करते हैं लेकिन हिसक नहीं है। ये सँहारक हैं। इस लड़ाई में वीमार, प्राणी, मेष आदि जानवर भी मरेंगे, पेड़ भी खरब, मकान भी टूटल होंगे। पत्थी की कमल भी नहीं बचेगी। सबैन्धरा ही होना। सबै-सँहार होना। इसे हिंसा नहीं, सँहार कहते हैं। मैं हाथ में रॉजर लेता हूँ सामने खाली पर हमला करता हूँ-उसके पैर में सँहार घुसा दे—यह हिंसा है मरणा, आघात है, निरनुत्ता है। आघात में प्रेष से लकने हैं। लेकिन जब धन बिरने वाले बेजेलोड पैरान मेरेगो हो उनके बिच में लोग नहीं होगा। बरिच वे गणितो होंगे। कण्ड (एंगल) धन की सफ़ाक, दुर्ग, गति निरंयत्र—यह सब सोचकर काम करना होगा। जरा लोग में गलाही हो गयी तो इत देना के रास दुधरे देना पर आरेंगे, इसलिये शान्ति से, विना शोम के और हिलाज से काम करना होगा। शोम से काम नहीं होगा। शोम से हिंसा होती है, और विना-शोम के जो सारा क्षेत्रय होता है, यह सँहार है—

पूरी सज़ाद शक्ति के खिलाफ अंग-नाशित ही हो सकती है—असुरे के सामने सँहार करने के बल होना—उसके लिये शान्त-विजयन,अपने पर काम, मिल-गुलकर हाथ,सब का इत हो माना—वही करना होगा। उदाहरण सफ़ाकर डोक बन ते लीला का रहा है, शरीर को मुक्त बनाया भा रहा है, देश में कोई बेकार नहीं है, खान, धर्म, भारत के अंदर बाबा नहीं डालते हैं, हम सब एक हैं, अज्ञान सबका विना; लूना परिवार है, सब निरकर उताहा है। काम में मने हैं—ऐसा कुछ सामने बाबा थेला तो आक-मान का साहज नहीं करना। देश में एक हो, अज्ञान हो और अज्ञान से अज्ञान्य होना। अज्ञानो और धरकर समाज करने वाले लोग जब नहीं टोके। यही है मंग डारिन फिर दूसरे देशों का हमला होना ही रहेगा। यह सारा कहने का मतलब यही है कि बर्तमान सीमा का खलाक नहीं है। मुज निर्यात में हर एक देश दुनिया के मध्यबिन्दु में है। यह चीनोमुवी भी दुनिया के मध्य में है और कन्द भी। सामान परती और के बन रहा है। नर पुन नहीं देना। दूसरे के उधर जायेगा। उसे कोई चोक नहीं रहेगा। दिल बना अपना होगा। सारा दरिगाज का बना है और टिक लोड्य रह गया है। इसी लिये सारी अज्ञान्य सारी हुई है।

२०० साल पहले पातोलन की सवाई में अज्ञान्य काद करलियो ने अक्ष देखा। सवाई की सेवा में सावि मेव है, वे एक दूसरे के हाथ की रसोई नहीं खाते हैं। उन

उपम क्या कि अगर ऐसे बिरि है तो मेरे सारोके को जीती लिया।—ओ लोग एक दूसरे के हाथ का नहीं बारी, वे दुबले के कमा लडाकर लडाई में अके करेते ? साराया बाबो कहते थे कि यह दुधरा लुग नेर मिता दो, वही रणायण कायेरा। कुछ लोग कहते हैं जब दो रणायण का गया जब दुधर यद नेर मी मिशरिये ? जब है यह बरलन की जाते हैं। मका रणायण खोज है ? भायो तो वे अज्ञान्य के लिये सारो का कार्यकम निवारा है। मुज खोज करुते है रणायण में बनयो तो चोते हैं—जब सारी सारो ? कुछ सारो में भीते हैं। फल जराईं धुल होयो तो सब अज्ञय इन सारोईं जब बिरने—अज्ञाय मीले बंद होयो—तो क्या जने रहते ?—अज्ञय हमला सारोईं पर हो होता है।

अज्ञय महापण करलकता अये। सारो के मीले सारो सारो देखकर सन्देभे करु कि "सल सारो में वे सखन कण के पडो" निजम अज्ञाय अज्ञाय करला बार के लिये मजदारी। साराओ महापण वे खोर-गैर के मीले करुते सारो के लिये किसे बनाते थे। सल सारो में किसे टोकेते ? अज्ञाय, दुधरे अज्ञय का भीने सब नहीं बनयो है।

दिल्ली के लारोके हैं मुज सखी एक जगत् रखते थे काम नहीं बनेया। सखी बिरेलिन करण होना। गीब-गीब में अके बनिये होगे। पहले सारोईं में सज़ाई होयो, सज़ाई गीब-गीब में लोगो को अज्ञानियेन होना पडेया। १५१० में कलकत्ते में सखन म मिन्के के कारण १० लाख लोग मर गये। सल सखन इन लोग लेल थे थे। यरों का रण है उधरी सिमनेवारी है वो कहते थे और लेल में लोग बार खाते थे। फिर के काम लडाईं होयो, अज्ञाय के बार भागकर लक मुकुंयो तो बीम जिग्ने-वार माना जायेगा ? हर एक गीब में दो सार का जनाज रहना बाहिर। पाब सखा-सखयो होना बाहिर। मुज लोग हूँ बरिपामुम पुराने सारोके के कहते हैं कि मुज में कहती है यह। अज्ञु गामिक का मुए हकने अने बेवाकिल बाबा वही होया कि गीब-गीब में काम पडें। इस तो विज्ञान है। कल्पन है। हकने सज़ा है कि बाहिर और विज्ञान एक होयो तो दुनिया में रण्य कायेरा। निज्ञान और हिंसा एक होयो तो सर्वनाश होया।

आतमान कर रहा है कि गीब २ की सारोके पाप पर लडे करो। पुर्य बनयोके जसने निज्ञान को मरद सेनो होयो। वे सख पुर्य गीबो का दुधरा पतिपुन देण बनेया। "पुण्यन, अज्ञान-सिरे" अदीलत लोग क्या कहते थे ? एक जादू पेदा करो, दूसरी जादू करु कि "सल सारो में वे सखन कण के पडो" निजम अज्ञाय अज्ञाय करला बार के लिये मजदारी। साराओ महापण वे खोर-गैर के मीले करुते सारो के लिये किसे बनाते थे। सल सारो में किसे टोकेते ? अज्ञाय, दुधरे अज्ञय का भीने सब नहीं बनयो है।

यह रोडजनक दो मानना चाहिये कि बागमूह बहुत अनुभवों के इगरो देय में समुद्रिक वीर पर चाहिर होने चाही परतर की दुबसमी और घूट की बुझरी को रोचने म्म कर रहे उष पर बाबू पने का चीरई भातर यज्ञा नतीं निबल रहा है । वासीती की सुयानी बातों को छोड़ दे । जैसे देहूरी-दीली सालों में मजदब, चाडि, सध्यायक के नाम पर एक के बाद दूसरी घटनाएँ ऐसी हुई हैं जितने देय की दुबय को बहा ल्या है और कुछ मिला कर कामाजिक, आर्थिक दल क्षेत्र में देय को भारी दुबसमी का विचार होना पड है -अनुरपुर और मय्य प्रमंथ के दूसरे कुछ दिख्यों में जो कुछ हाल ही में हुआ, वह वरते तावा आँत रखने वाली मियाल है ।

कुछ निवृत्त समाचार यहाँ के लिये हैं । संकेत में उष घटना को डेजर कुछ बहा गया है । अलनायों में समाचार निरले हैं । सारी कसानी दिल को दखने वाले भी ओर पूरे दुखे करने चाही हैं । अनायन बनना, उखड़ी रहलुवायें करे वाला नेतृत्व, सरकारी उख समी के लिये सारी घटना घर्ननाक है । सभी को गदराई से सोचने के लिये मजबूर करती होगी, बरती चाहिये ।

अक्षर राहरी में ऐसी दुखई की कुछ आत होती है । फिर वह गीं, देवत में भी पैल जाती है । ऐसा मलय देला दे मानीं निमिन पावर इतान में ही हूँ । कुछा कुछ पाती है । राहरी में जो कानून बनता जा रहा है यह एक सलतनत और निरांतक भाव हो गया है । यहाँ पर-परिचारी के, समज के, परस्पर सलमय बने कच्चे चागे से दुखे हैं । आयापानी और डीपुलर की वीरों में उष एक-दूसरे के मानो पिच्छिन हैं । मिले-हुले एक निम्न की एखन सारामा में टरपने की रसता ही जेते बहाने बरामाधिक है । सलता छोटी या बड़ी मिल कर उले सके कपने की चिन्ता दखाल फिदी तरक मी नहीं होती दिवती ।

अनुरपुर के भी समाचार मिले हैं उनसे यही मालूम देला है कि सारे घटना का इतना मयंवर रूप बन जाएगा देला अकृतान मयदर चीरई नहीं करे देला । हँने एक बनी कभी साक मजर आती है कि समाज की मन्त्र को पहचानने वाले नेतृत्व की जगह-मजदब आराम कमी है । सलतार के वाय धुनिया विभाग होया है । पुलिख व पीन का कमलना होया है । लेकिन वह सभ इतना बह ब्य कनवत बनता जा रहा है कि लोको के इरायों और उनका हालत की पूरा जानकारी को उषके आस्था बरना सुनिश्चत है । दरअजल लोको के दिख-दिमाग को, उनकी मयनमाओं व उनके अजबजाब को, जानने वाली सार्वभूमिक कौषय से संनिमित्त, क्यलिकी या कार्यकर्ताओं की बमाल ही हो करती है । वह बमाल बब तक नहीं बनती तर तक निरीर परिचरिपत्त में लोको के संतुलन को कायम रखना, उनमें शांति व शोहरत बना रहना बडा इच्छत है । साथ है कि बागमूह में भी जेते नेतृत्व की कमी रही । घटना-कू के कसरी आगे बड जाने के बाद रिवाय को संभालने व रोचानारी की ओर प्यान दिया गया । परन्तु जलत काम-काम, सयस कीर से घटती हैं ऐसी कमी दूर करने की । यह साक है कि यह बमाल सुद दखाल, मानसधिक या दूधरे-दूधरे मेघाओं से मिलती हुय होगी उनका ही टीक काम यह कर लोकी ।

एक निरत रिवायि की अनुरपुर के समाचार से मजदर होती है । वह यरि कुछ ही सय रहती है से कानी संतीर है और बांच को जाने मजदर है । एक बार सारी परिचरिपत्त का उष उमते बार युवा उदरन

ही निरकमे, करंयने से गिरे हुए और रातरे से भरे कडे चांगे ।

येते अखरी पर मयास की किजानत और भन-वन की रखा के लिये मोडे-बहुल लोको का इरादा हो जाता, समुद्रिक रहा की बोधिय करना मोहद हो टीक है । अक्षर केचिदी बस्ती के बीच सलम संघटा में पड मये यों को इतके विचाय दूधर पल्ल मयही रह जाता । जिनका ऐसे लोको की सुख्या की एखन हमलवर रूप अरिद्वार बनना निरकमि ही मागामी और नादानी होगी । अलया-अलया बरितों में अलया-अलया रानी अलया एक एक है । यदि ये अरानी सुखा के नाम पर कुछ बना कर या शिंता के सलन करैइ उषा कर हमलन करे या मोचों ऐने की मीति बनयानों को सार मयन मयंवर यादरधवी हो सकत है । अनुरपुर में देला हीने की बात कुछ भी सचारी रातरी हो तो इत रहस्य की बाँध होगी चाहिये । उल हालत में ही सकत है कि हम सने गींते कुछ दूरी लारतों नाम कर रही हैं उनका भी मय्य-पेटी हो । यह साक है कि अक्षर संघटनों के ऐसी बरिल परिचरिपत्त में पडने के बाद बहुसंघटक के म जुग एक ओर ली सलमय माय रहते हो उनकी कुछ की सुखानी ही मयन पर ठग्या पानी छाँडे का काम कर सती है । यह कुरमानी बरी और संतुलित नेतृत्व के वीर सुनिश्चत है । इस प्रार नेतृत्व की कमी का सुनिश्चती सवाल ही उमर-कड बनने आला है । अकृतान हीने होया कि शान्ति-वेता का नाम ऐसी कमी की पूरा करना है । सलत वेता और संरंक के इराय यह इत काम के लिये तथा ऐंके अखरीयों पर सयन होगी चाहिये ।

अखरायों और छोरी-बरी पय-विक-काओं का ऐते सय पर आधि विमता होया है । उनका काय मन-आयन की अरिद्वारिक है हो, उलके साथ ही उते विभ्येवार, संसार-मुक और बन-जीवन को निरप व पीन बनाने का है । लेकिन अक्षर अखराय उताव-आसाराधिक देयायि को कम करने की एखन हने बढने का काम कर उलके हैं । घामागिजता के अयार के नाम पर आर सके पर आसलित, रीतु कुँ और अरिद्वारिक लारों उर सती हैं तो यह सय में भी कम करती हैं । अनुरपुर में भी कुछ परो का देवा ही रोस रहा । फिदी संघटा, अरि-समूह का नेतृत्व अरि को ऐते बस कर देय, इया, एडमर, अयानमी आदि की प्रमयंनर किनु सलम बननाही प्रमयंनर बनना चाहिये । आरतरी का सलन और वन तक कुछ सय सलम व हो जा सक

उष पर मरोहा न करने की अनील, परि-धियि को संभालने का देतर तरीका है । अनुरपुर के जो समाचार मिले उनमें इस तरह के व्यथितय धनल के समय पर लिखे जाने की सलन न होना भी एक राटकने वाली बात है ।

अनुरपुर से बाहर कुछ प्रतिक्रिया इस लिखिले ले पर-नरे देतो में चाहिर की गयी वह टीक नहीं मायम देती । उषाहलसः भारत के प्रथम मंत्री श्री म. ब. ग. द. ल. नेदर के सामने यह विचार रख गया क्यय कि ये पारितस्तन के माल-रिखत आनुपु की अनुरपुर की रिवायि के निरदखन के लिख जाने की इजाजत न है या को माल-यक सारदिक उमेलन दू-दो माह में हीने बाहर है उमके मे माग व भे । पारितस्तन में कुछ मयंनर करैइ हूँ या यहाँ सौमयानिक मोचरिप ऐसी दिखानी गयी उलकी अरि-क्रिया रूप बह इलायत या विचार कुछ लोको मे रहले बतयि । इस मयार सोचना न दिई अनी सलकले की घटना के संदर्भ मे सलत है बकि इतके दूरगामी नतीजे भी मिलने का मय है । आरिद्वार किने मे गळी की हूँ या गळी की हो तो उषका अयन दूधरी और से भी अरिद्वार मयंवर गळी कने का माली देना नहीं हो सकत । कम-कम मानव-समय एक संतोष पर सुँया है और इह सलतार यहाँ, यहाँ एक कि बरलिकी रूप, यह क्यया है कि : "मुँते हो सकत वूँते" का विचार पलुवा है, आर-सिखत का नहीं उष उले अमल में लना गुनह है । सामाजिक मयपण है । छात्र आम के मानने की सते लयात सारिखत गत यह है कि इत हर पर, हर काय में, पु बू व या मयनयय की तंग छड से ही देलने-मोचने की आरल लोको दे सकत है । काम चाहे सारिखत ही, अरिखत व मयोरखन का हो या विपुल करैइ का दक सयय सामयदियि संशयिता सके मिलने-ले सकती है । अंग यह हो बहो-वहो का कमी उमर ही भाती है । लू-भरे सके नयच और उनके अयय मनेजोयि और सारदिक भावने के बीच सौभर लया का देला है । भी नेतृत्व को माल-यक सारदिक कर्मोके उरुपानन से रोने की सलत देला सौमयानिक ही संशयिता की ही परिचायक है । पारितस्तन के घाल रिखत आनुपु को अनुरपुर के उरदरभर क्षेत्र में न जाने देते की सलत ही अनुर-रिखतकरी है । इतके कुछ नेल पुल कने या को सही रिधय है उमके रिवायि के को-सिया की जाने की कोसिया देला हो करती है ।

सिख संभामयिखार के उदर को पी जने और नरे को मिय मगानी न करने के लिख मीसरी में अने कर्मों की कमी लयाती उमधर भाव की वर-वर सार-वजन में कुछ घटना कीर उलकी मयय को उरु-नरनामों व मयार का

दूट पड़े । इतके को दो प्रत्य कसल बजाये चाते हैं वह एक-दूसरे के निरपरी लेनि कुछ सुनियारी सवाल सके करने वाले हैं । कुछ पर कसना है कि बाद में जो राय को मोची-बाण्ड दुभा अर्थात् पुलिख में गोली चलायी वह एक तरह पुलिख के सिखक अरमम में दिखार बरती जाने और अयनन संकेत के बारे में देतर होने का जो अरोप था उत सभानी लीक के परिणाम-सलर था । इसके साथ यह भी कहा गया कि पुलिख के भी कुछ विमोचन लोको में सारदियिक भावना थी । इस प्रचार लीक और कागसिजता की कुछ की उचिने से अणयाणुष गोलीबाण्ड करया । दूसरी ओर एक सखत फलक और औपिचय वह कयया मयम कि एक सलतारघरनों का दूसरे सलतारघरालों पर हमल करके का निवेदि-पिठ घटयन का, ऐसी चकती की गयी थी और उल ऐषने के लिये । प्रचार गोली चलाना अनियम व आसरायक था । यहाँ तक भी कहा गया कि इत मयार दमन नहीं होया तो फुरी सति होगी और अधिक मयंवर का बन जाता ।

यदि पहले कारण में कुछ भी सचारी हो तो यह एक ऐसी सुते और मयंवर रिवायि की अरे इयाार बरती है निरके दिखालत और निरमयय निरमयय ही है । यह रिवायि "का- ॥ लेख को लय" या "लूक ही मजदर हुआ" जैसी है । पुलिख व पीन का ऐते सय के सयक, अनया व सलत उवेचनयने उताव के सयय, शान्ति व सुखा कायम रहने तथा अनम-मधिक बनने को बाबू में बने का विमता होया है । दरअजल तो पुलिख से यह बोला है कि यह यदर के सलतारघरनों, सयके है तो देलियो, निरद्वारिक सयतों और अरिद्वार भितीयों की जान बहार होगी । सय भी संकेत की मय्यारी बहुरि कि सलत तनों पर मजर रहेगी, सुख घासकी लयागी और जलपत है यहाँ लया की बरखय क्योगी । इस अरिद्वार को पूरी न करके लू-सामयदियिख के बहाय में पुलिख या पीन का अरिद्वार, कर्मचारी बहाय ले वह बढते सलतारक है । उखरी पूरी लान-रिख, वीन और सलतारर रिखि जाने की बरखय है । इस प्रचार के पयनय करने वाले अरिद्वारि सयत के फिदी भी विभाग के लिये सलतारक हँने । पुलिख, पीन जेने बनना के मीनय-अयन से सलतारक उरदरदियिक के लिये तो निरकम

आरोहण या अवरोहण ?

मोतीलाल केजरीवाल

[श्री मोतीलाल केजरीवाल बिहार के सपाल परामर्श के मर्मज्ञ और लिप्याचार्य कार्यकर्ता हैं। लिप्याचार्य के सेवा-कार्य में व्यो हैं; पर ध्यायमान जो कुछ देखते ('वेदना' भाग से उनके लिए लाक्षणिक रूप में ही प्रयुक्त हो सकता है, वे प्रस्ताव्य हैं)। मुनते हैं वह स्वभाविक ही उनका हृदय वेदना से भर जाता है। प्रत्युन लेख से उनसे हृदय ही वेदना जाहिर होती है। वेदना के प्रकटीकरण में नहीं अतिरचना भी हो सकती है, पर हमें उनकी भावना का स्वर ही ग्रहण करना है—सं]

जैसे समुद्र में स्वार-चरता भरतियहूँ है, जैसे ही जियो भी आन्दोलन में सौत्रत और मन्दतः स्वाभाविक है। पर स्वरोंप-आगेभय में दिखाई पड़ने वाली मन्दात मन्दात बातीन है—हृदय स्व प्रतीन नहीं होता। सतमान मतिरोप हमारो जइसो के लिए पाउक डिठ हो सकता है।

हम हृदय चाहते हैं कि डिठ लिखते में पावो के रहते हुए भी पावो की विचार-पास की उत समर कुटिल कर जाना पा, बहो मिलात भाव हय मोनों में बहूपो होकर भावनी है। मन्दात नीर मोरवना नेही हमारो हृदय को पच प्रभ बना दिया है। हम मोनों को मर नही सुनता, पच मोरी को पच है।

जनता पर प सुखी प्रभाव
 दैल की काम जनता पर केवल सर्वो-
 बन्धो कार्शनी के भावों का ही बन्धना पा
 प्रभाव प्रभाव नहीं पकना। उस पर उन सबका
 प्रभाव पकना है। जो उदके सम्पर्क में आते
 हैं। चहूँरी की लो बाध हो सदा रहें ?
 रहती हो, बहोतु खय भाग के बाजार में कोई
 बने देसो का सुन नहीं है। जो उदके मन पर
 बुरा प्रभाव न आते। सिनेमा गुरूं, दुखानो
 पर सिनेमो द्वारा बहो भावो मिलात मण्डली
 मने, विद्यालय बहोसुओं को बाध पक
 दुखाने, बहो हविम जीवन आदि पापद
 हो जियो की आने से प्रभाव के प्रभुता
 होना हो। गर्भों में भी सिना-स्वार की
 हरेट के पदने बहो विपत्तक, कदापय पाप
 में बहपय काम (?) करने के लिए जाने
 पाते हारकारी वेपक, रोड बांगने के लिये
 जाने पाते राजनीतिक कार्यकर्ते, प्रविषात,
 सामदान या हर्षोपय का उरसा से जाने
 पाते सवोय-वेपक, प्रभाव-विना के मार
 पर होकरो डाल दे। बहोसुओं की वेप-पुसा
 में सजित अक्षर, जाम पंचावनी के
 निर्वाण सुविधा या हारक बचका मिश्रक
 पुरकार्य वेपक मोर बहोतु निलय बहोसु-
 बना को पुन करने के सिद्धांत में पदे-पदे
 होनी रहने बालो पुनर्जात हरेपति का
 प्रभाव देसतो जीवन पर भी पद रहा है।
 कथिममान लो काम महारमियो में घेर कर

क्या न कर पाता मारी विना का विचार
 होना चाहिए। जो चर्मनिरोप पर आधा-
 रित भा वाद पर लगे किने पावे रागों की
 कला करे रहते हैं, वे जा भी सही रावे पर
 भावें लिखत गारोबी के प्रतीने ली रावे
 का समान-पुन के भाव समीकरण करने
 जाने भावत ही रूप साध्यातितार के
 क-पठ के पवन प। कुछ उरता विचार
 बरता और मन्दात कदम उठाना
 है चाहिए। मन्दात की यदना में फिर एक
 बार यह ग्रहण किया है।

सावरोपय वातनों के सवकिन है, जो
 हयने काम जनता और सवाराय कार्य-
 कर्ता के विच पर कुछ और ही प्रभाव
 पकता है।

विरोधवादी नित्यवच जीवन को उदर
 पदना में सवकिन है। लोक लिप्याचार्य
 कार्यकर्ता सवपन बुद्धि से दैच में बाध पर
 रहें हैं। उनकी बुद्धिगत, विद्वान, सवोय
 के प्रति लिप्या और उनके स्थान से भी
 कार्यों करीशों भाव बर्तित है, किन्तु
 विपरोप कावराजय सुद, भावना की पलने
 नहीं देता। उसरा अवर म-उर्धन हो
 जाना है।

महिशा की भाषा बोलीभासे कार्य-
 कर्ताओं को इस पर विचार करना चाहिए
 कि यदि दैच की राजनीतिक बला या
 लक्ष के द्वारा महीसकी को उदरमन दिव्य
 कला ही को उरता विपोक न करें,
 किन्हीं के द्वारा सवोय की प्राणा
 कुँडल की जाती ही और वे हरेक मति-

तमिलनाडु में सत्याग्रह की तैयारी

तमिलनाडु में कई आन्दोलन हुए हैं। कुछ लोगों में अधिकांश छोटे-छोटे विभाग
 मयना भूदायित्व वर्तित कर आन्दोलन में शामिल हुए हैं, पर वहीं के कुछ लोगों के
 पालिक, जो बांध के बाहर पचा पर शेरमारा करते हैं, दामस्तर् के सामुदायिक जीवन
 में शामिल होने को तैयार नहीं होते हैं, कई महीना। वे साक्षर पुरान में शामिल
 होने वाले लोगों की वैशालिकता को भी हैं। तमिलनाडु के प्रमुख वेपक की भावप्रान्त
 में इस विचार के प्रत्यक्ष निरीक्षण और निराकरण के लिए सामुदायिक परामर्श द्वारा
 व्यापक श्रेणिक उदर का कार्यक्रम बननाका और उदके बाध सव नीने पर हृदये हैं कि
 हरेके लिए सत्याग्रह का कदम उठाना पाय। तमिल मारत हर्ष वेपक लक्ष की २५
 जनवर के २० मन्दात तक हुई प्रथम सतिमि में भी जगनामन्त्री ज्ञान विपद की उदगा
 और बर्षा हुई। प्रथम सतिमि में एक प्रस्ताव की बात किया, जिसे प्रकीर्षाओं की
 उममता सुनाने और उनके जीवनयान को बनाये रखने के लिए आधासकन देने के
 बहोसुओं के सत्याग्रह में शामिल नहीं होते हैं, जो सवने जमीन पर काठ न करके
 मन्दायोग का कदम उठाना आव और वह भी सवसानी पदो भाव कि हृद सुत में
 मन्दायोग का यद कदम, सर्व-सर्व और दिहा का न न के। इतको म्यान में उद
 कर पिछली २२ २७ और २८ दिवस की म्दुवाई जिने के ऊपरसहय में सपद हुई
 तमिलनाडु बहोसुओं की उदकेवर्णों की उदके में विविध तारावही कार्यक्रम को मान कर
 निम्नलिखित प्रस्ताव पचा गया पाय।

"यह काम प्रथम है कि तमिलनाडु
 के कई जिलों में पुरान स्थिति तक ही
 सावोलन, विचार बाकी प्रवर्तित किने ही
 पक हुआ है। उदकित पुरान भावने का
 काम भावने कायम आधुनिकता में जाने
 प्रगत नूति का निराकरण हो पावो ही
 जाना चाहिए। यह 'आन्दोलन' कहें,
 ऐसे 'आन्दोलन' मन्धिक बिहा,
 इतका पूर्ण प्रभाव हयको करना ही
 चाहिए।

नूतिमान, साधन-आन्दोलन अरे,
 हयाप सव्य पुर्ण हो; इतकित हयकी
 सत्याग्रही शक्ति से लोपी कार्शनी करवो
 होनी। उद लोभकित मन्दात करते हैं
 कि सवके लोपी काठ का मन्दा है। हृद
 सवकम में हय तमिलनाडु सवोय पदक
 का प्रस्ताव तथा सर्व सव-सव का
 प्रस्ताव दोनों का तदे दिव के कानुमोपन
 करते हैं।

(१) वेपकाल के लिताक लोपी
 कार्शनी करनी चाहिए।

(२) सामदान में शामिल न होकर
 सामदान के निर्माणकार्यों में भाग
 करने वाले फले के वा गति के बाध
 रहने वाले लेत के प्रासिकों के साथ
 मन्दायोग-आन्दोलन चलाना चाहिए।

(३) पुरान करने का कदम देकर
 फिर प्रथम प्रथम मय करवो भावे भूदाय-
 विधों के सम्बन्ध में छोटी कार्शनी करनी
 चाहिए।

एन सीमें सोचो पर सत्याग्रह करने
 के लिए जहाँ-जहाँ मोते रहते हैं, यहाँ सवो
 के तैयारीयों मूल करने चाहिए। सत्याग्रह
 के लिए हुराओं की सहाय में सिधारी को
 तैयार कर दन पावो में सग है।

प्रस्ताव पचा गया आता है कि द
 सत्याग्रह को सत्याग्रह में सत्याग्रही सव-
 वेपक भाग लेकर कार्य करे।"

शांति सैनिक के पीछे स्नेह की ही सम्मति हो सकती है

दादा परमाधिकारी

घाति सेना के बारे में हमारी सामने आज सबसे बड़ी समस्या यह है कि आखिर हम कानून किसे चहुँदे ? क्या वह मनुष्य नहीं है, लेकिन संघर्ष में मया है। जिन परिस्थितियों में घातक के विषय में आज हमको सोचना पड़ रहा है, उन परिस्थितियों में हमें शांति किसे चहुँदे ? दुनियाँ में सामाजिक नागरिक धार्मिकप्रिय होगा है। संघर्ष नहीं चाहता। लेकिन जो धार्मिकप्रिय होगा है, वह आराधना भी चाहता है, जिसे धारण करना पड़ते हैं। यह (विभूषित) सहाय चाहता है। वहीं एक जायज स्वभाव (रेपुब्ल) चाहता है, और इच्छित हैसियाँ फिर से होता है कि उसको बचानेवाली कोई शक्ति हो। जैसे मनुष्य के वक्त हम सारा सोचते हैं; 'आपने बनाया: तपोवीर्य मन्मथः'। हम बहुत उम्र का बने जो वेद के पीछे बैठ गये। यह हमारा सहायक है। मरणा बना लिया तो एक धामय सहाय हो गया।

साधारण मनुष्य की आज कुछ ऐसी स्थिति बन गयी है कि वह किसी न किसी चीज का सहाय होना है। सभी देशों का, सभी मनुष्य का, राज्य का, संस्था का, कर्मो का पलटन है। पलटन में हर विधाकी हमेशा धार नहीं होता है। लेकिन वारी पलटन मिल कर बहादुर होती है। कोई विधाही बन गया इसका मतलब यह नहीं है कि उसने मोक्ष को जीत लिया। विधाही इतना ही होता है कि अगर पलटन में खड़ा हो गया और हमको ही तो उभार कर लेने के लिए तैयार हो जाता है। एक साधक उसको ही गरी होनी है। एक धर्मिक चरमापेक्षा होता है। उस विधाकी विधाही-गौरी घातक के समय काम नहीं आती। जब एक समय न हो, उसको लिए मोक्ष ही नहीं है; और धारणा न हो तो उभर के लिए पैदा भी नहीं है। पर काम हम ऐसी परिस्थिति में पहुँच गये हैं कि जहाँ-ही के अन्त सबसे ज्यादा कोई संघ का यहाँ तो विधाही संघ का पैदा है। आज की परिस्थिति ऐसी है, कि सकार में हम के काम बना अगर किसी को आता है तो विधाही को धारणा है। क्योंकि उसमें किसी प्रकार की धारणा बन नहीं रही है। जो एक पड़ते आया की वह अब गरी रह गयी। इस दृष्टि में यह परिस्थिति हमारे बहुत सहायक है। लेकिन दूसरी तरफ के बहुत प्रतिभूत भी हैं। क्योंकि दुनिया भर का सामूहिक नागरिक अब सत्तावादी बन गया है। वह अब यह चाहता है कि कोई नेत्र सत्ता करनेवाला हो।

आज लोग को इस बात में घालि-धिया का काम करना पड़ेगा है, उनके लिए तो और भी मयाक परिस्थिति है। यहाँ का 'किरा-सिखा मरानो एव हीनेने लाया है कि यहाँ कोई सिद्धेतर का जय तो बहुत अच्छा। यह परिस्थिति घातक के लिए सहायक नहीं है। इसका मतलब यह होता है कि यहाँ का नागरिक बच 'परिनिर्णय', लीग बना रहा है। न 'केनिगनी' नहीं वह रहा है, ली के गुण तो बहुत बने होते हैं, लेकिन स्वयंवर, जिसे भीरुता, क्षमताका कहते हैं। इस प्रकार के यहाँ का नागरिक लीग बन रहा है। ली ने मनादि परम्परा कि संरक्षण ही होता है। इस तरह के बाहरसमय नागरिक संरक्षण ही कोरता है, बाहर मन्दिर में, मरिजम में, गुफादार में, पुलिसे के नाम में या जल्पने के नाम की बहादुर-वीरवारी में वा किसे नै सब अजह अज्ञान बह संरक्षण ही कोरता है। तो यह मान लेना चाहिए कि परिस्थिति घातक के लिए सहायक प्रतिभूत है।

किसे भी और पर में बना सहाय है ? किना दुर्ग कहता है। जिसे का मर्ष है जिसमें कोई आ नहीं सजना—युद्ध में जो दुर्ग है, वो जाने के लिए मुक्ति है, उतने किता, दुर्ग कहते हैं। विधाही यहाँ सजा रहता है। पहरा देता है। मंदिर इजाजत के अन्तर्गत ही जाता है। जिसको वह मार डालता है। वह दुर्ग का, उसके का और राजा के महल का गुण है। क्योंकि वहाँ सजा को, धारणाही को सुरक्षा देता है। और मरणा का, पर का सहाय गुण है। आखिर, आनेवाले के लिए दरवाजा खुला है। जो अर्ध उसका

के समय हुजूम, जो अज्ञान में अन्धी हुजूम और जिसके होने की परिस्थिति यह पंजाब है। पर वो परिस्थिति है, उसका मतलब यह है कि मनुष्य अपने पड़ोसी के बदले और किसी धर्मित का संरक्षण कोरता है। यह राज्यधर्म है, तो राज्यधर्मित की बुनियाद नहीं है ? जो कदाचित् कहीं दूरतों और कहीं बह पड़ते हैं—बच नहीं पड़ेको का बचाना भी नहीं करता, सब मुझे तीवरे की बचत पतनी है। और तीवरे यह ऐसा चाहिए जो इन दोनों का कोई न लगाये। बचने में अगर संरक्षण करता हो तो तीवरा ऐसा चाहिए जो कतनी भी न हो और युवराजी भी न हो अजब बैसा चाहिए जो अरुमिया म हो और स्वामी न हो। कतनी में ऐसा चाहिए जो धार्मिकतानी की न हो मरतोस न हो। दो मनुष्य-मनुष्य के बीच ही ऐसा चाहिए जो वा ही पया हो वा देखा हो। यही हुजूम न सहाय मतलब का इस बीच को बनी हत्यने पकड़ती है।

घाति को बुनियादें यहाँ है ? 'यू.पी.' अनुपचारण संघने इसका जो सिद्ध किया कि युद्ध का साम्य मनुष्य के मन में होता है इच्छित परिस्थिति ही स्वभावता को मनुष्यों के मन में होनी चाहिये। यह यू.पी. की पहली धारणा है। मनुष्यों के मन में युद्ध का धारण होता है इसलिए युद्ध का मन और घातक की स्वाभावता मनुष्यों के मन में हीनी चाहिए। लेकिन यमें हीनी चाहिए माने रहे हीनी चाहिए ? उनको नदीस्थिति में हीनी चाहिए। जहाँ नै पहले है वहाँ हीनी चाहिए। न ही तो हमेशा संरक्षण करदेवाले की आगरवराता हीनी और संरक्षण करदेवाता वह होता, जो संरक्षण कभी नहीं कर सकेगा। ईसा के बारे में क्या था कि दूसरी की धारने बचाय, किन्तु अपने आपकी यह नहीं बचा सका। उतने गूदी पर टेंगना पतनी नै बचा सकेगा। अपने आपकी नहीं बचा सकेगा। इसका मतलब यह है कि धर्मिक वह होगा जो अपने आपको गरी बचा सकेगा। कि समाज में यह दो दिशि हो सकेगा, एक स्थिति का और दूसरा नागरिकों का, एक स्थितिवाला भी और एक कर्मयोगी का। हुजूमने लेकर दो कर्मयोगी होता है उसकी हीनताय अवि-रुह (धामनेर) है। पुलिस और पीड के विधाही की हुजूमवार बनाने का लाल-धन होता है और उसके पीछे आती

सम्पत्ति और धारणा देता है। मेरे दिमा में जो पुलिस को दिखाने में यह बहुत बड़ा फर्क है। उसको दिवा के पीछे समाज का मानकेव है—समाज की सम्मति है। धारणा देता है और धारणा को दे। इस तरह के, जिसकी लायकर दिखाने होती है, उसको धर्मिता समाज मान्य होती है। आपकी बहिष्कार समाज मान्य है लेकिन विवेकता समाजमान्य नहीं है। आप किसी को मानना नहीं चाहते, आपका मिताना चाहते हैं, समाज कहता है, यह तो बहुत कतनी बार्ते हैं। इसके मन्मा धारणी की ही सहाय है ? लेकिन समाज आपसे कहता है युव धारणा मिताको लेकिन हम आपकी बात नहीं मानते। पुलिस के विधाही को लेनाय यह कह नहीं सकेगा क्योंकि उसके पीछे हुजूम है। धारणी विधाहित के पीछे सम्मति (संरक्षण) क्या है ?

आर २०-२५ मारची हैं—कोई हुजूम नहीं। जो कतिवारी है वही यह बोधे रहे हैं। बोधे रहे हैं इच्छित कतिवारी रहे हैं। अज्ञात हीने ही घातिवारी कहलाते ही नहीं। लेकिन आप के पीछे संरक्षण (रक्षित) क्या है ? हमारे आरको मत क्यों माने ? हमारे पीछे संरक्षण कोरता ही सहाय है, इसकी धारणी कोर है। जो बहुरथ-वी बार्ते किबो नै कहती है, अपने के एक काम को करती है। जैसी नै इस पानी, मनीन की बात हर सभा में करते हैं। सही तरह के एक और बुनियाती बात में करते गये हैं। विरु में अज्ञानिय कि पया को धारने के लिए भी मनुष्य को बहुत काफी मान्य होती है। उतने ही धारने के लिए ईशुक के आने जाने की बचत नहीं होती। लेकिन मनुष्य को धारने के लिए एतदमय सब जाना पड़ता है। इसका विरुद्ध सही और हीना यह यह है कि पैदा की हुजूमवार ही नहीं है। जो मनुष्य हा संरक्षण मनुष्य के बच सहेगा। यह केवल विरुद्ध मनुष्य की बात में नहीं कर रहा है। आप यहाँ किसी भी कीविये। पितामह धारण इस मतीने पर पहुँच रहा है कि मनुष्य के मनुष्य का रक्षण ही धरने, कोई हीनवार नहीं ही सहाय। और अगर दुनिया में कोई ऐसा हीनवार नहीं है, तो मर्तिके लिए पितामही परिस्थिति बहुत अनुभव है। किन्तु मनुष्य के मन और हृदय की परिस्थिति बहुत प्रतिभूत है। रिवाज के साथ मनुष्य बचन नहीं मिलता पा रहा है। इसका मर्ष यह है कि रिवाज के साथ का मनुष्य काम दुनिया में गरी है। दुनिया में मनुष्यता के कुछ पैमाने हूय बनाने काये हैं। दरमन एक न एक पैमाना बनाया। पुराने कीक लक्षणतानो का सहाय का कि मनुष्य बनने में ही पैमाना है। लेकिन मनुष्य में मनु-

बागी और सरकार

श्री विमला उपर को लिखे गये पत्र से :

“लोकमान तथा अन्य सभी आत्मसमर्पणकारी बागियों की असील दाखिल कर दी गयी है। उत्तर प्रदेश की पुलिस की परतर्पणकारी व्यवहारियों में अंगरेजों की छोटी का रही है। खासियत से आगरा आते समय इन बागियों को उत्तरप्रदेश-सीमा में लेयी जाने के पान रोक कर लेने को जवाब कीर मुखबिरी में आता समाप्तित किया गया। बागियों का जो सदितवने हुआ, पर वरना ही हुजुर ही नहीं है। 'ये' भेजे हो 'पुलिश-मीन' बनना है। उबे न लखे क्या हो जगह है? यह दुहाई लगा दी गयी, इन्साफियत सबको न लाये कइ। जनी बाकी है ?”

—गुरुद्वार

श्री विमला बहुत का उत्तर :
“अब निश्चय । उत्तर प्रदेश की पुलिस परतर्पणकारी जासूसियों बहालों का रही है, इन्हें मुझे न कोई हुल होना है, न आग्रह । पुलिस कोई साहसी बागी तो नहीं है कि एक बार सिधे हुए मकान पर बटल लगी है। सरकार की सहायधित्व प्राप्त बनाने । सिधे कोई 'राज रायचन्द्र' नहीं है। हमारे भीतर परतर्पणकारी को प्रतिष्ठा है, कसो का मुँह कप है सरकार कीर जसकी पुलिस । जलाबा 'इसके, लोकमान आदि आत्म-समर्पणकारी का हाथ परदा है। अस्मिता की सुनौरी ।।। मैं दे विमोचनी के साथ हो गये हैं। जसकी भी एक को कीर ही सरकार का सिधकारी न बन सकती है, न आतिशारी का साथ दे सकती है। यह सुधार तक लूट करन कडायेगी और सुधारकारियों को हर बाँधों पर कडायेगी। बागियों को पुलिस बगनागिष करायेंगी, कडायेगी, सखत आवाज बुलें गहूके दे, ही का । सिधे पर वरपर रह कर निराल नहीं हैं कि सिधे आत्मसमर्पणकारी भाई गुरुद्वार की अपेक्षा निश्च प्रकार नहीं रखेंगे

यस प्रकार सरकार में सम्मान कीर धरिष्ठा की ओरना ही न रहें ।
इन बागों बागियों में विमोचनी के सत-दृश्य को जेत सिधा है। जयपुकरा कीर जवाहरलाल के दिनों को जयभीर दिधा है। भारत के ही नहीं, अगिनु उबार के सभी सार्वभौमिक कोर विचारक व्यक्तियों के हृदय में तेहू का विस्तृतन पाया है। हाथ ही कोई जोवन पर सत्याय करके दसक पाया । को साथ है, यह जगहे उगने की सधन न पुलिस के कपे में है, न कसो ही रसती में है। मनुष्य मानव कोर के लिए बटल है। मनुष्यत्व मनुष्य-अपमान मानव को प्राण्य के अनुसार सदन करने ही पडते हैं। इसलिये वे शौर्य रखें, साति रखें। गवीर के अडे कमाए न कइ है—'कसु कमाए प्रेम के आराम—कौच दिवा नक रोना क्या दे ?”

लोकमान और उनके साथी अब मगर हो गये—अनके उठोरे निराला हैं। पाहे सुनो । विमोचके आदि के उठोरे पर में बनल बाकी के बागियों का आत्म-समर्पण एक उग्ररत कीर उग्ररत अग्ररत है ।

—विमला उग्ररत

विचार शिक्षण के लिये यद्ययाना

क्यों वे बादी, बादी के धन सहायकन कीर धन सहायकन के धाम सदानक, यह ब्युद-रचना का प्रयोग करने की आज नम में थी। यह दुहाई का प्रयोग । किसी सिधिये मुझे में ही ही बनना है यह को इच्छत वा । ऐसा भी सदा वा कि मया प्रयोग को लेने में ही हो सकता है। मुँहर जिसे में सिधारी आता सिधुसकता बरदाई का ऐसा सोच है की बलुआ बहा का सकता है। परतर्पणक कार्य कीर सधनती की उठी दृष्टियों है। इसलिये मया में आरक्ष कि एसी लेख को नरप करीब के देखाक बादिने ।
१० नवनरी को सर्वानर नम के सरदार पर 'छन्दी सत्तो' में छन्दी कीर काहियर एकरक १५ सत्तो, उधवे १६ कनी सिधे ही भयेने प्रकियित होकर निरकले है, पल परे । हुल लोक भावों में गये । आत्मयतः एक दिन वे एक बार बादि थे । धीन में भीयन आत्मन बरान हो मया किड भी मया लेग पलसे ही रहे । ४-५-५ किड पर गराक, मुण्ड ट बने पुर्न सिधियर प्राय पर वरुका । पदुपुर्न ही काम प्रदियिया ।
१० नवनर, बादी बिडी, अ कवे वाय प्रायंश कीर घमा । यही कार्यक रडता मा ।

भीयन परिकारों में सटकर होयव वा । घमा भी पचा का मुकर विरप होयव वा प्राय सदानक की सुमिषा में जायो का मया विचार विचारक कस है साथ परियर का निर्याप ।
हम जोनों ने देखा कि १२ वर्षों की पाटी कनी, कउते हुए लोषण नरीने कीर बैसारी के साथ लीन कस प्राय उरियर कीर सध सधनकीन में निश्च को तुलने कोने है। इई आग्ररतयन बादी दिवाय में नही पुडता । केनिन सध का काम यह करे सधनते होया । इह बात की ब्यवहारियता

सध नहीं होनी, बायो की गही होना । कसोरेर इन्हे सब नयन सम्यकता है। अतः उयमें ही कसाम देसने ही। बायो में एक प्रकार की नैवारिण सुन्यता (बासिडियोने-डिक्काल नेकुन) है। यह सुन्यता मयकद है। कसोरेर सुन्यत असाधारिक विचारों के पयने, का लुना कसकर है। इसलिये हुज जेनों को क्या कि कसने गहरे कीर सधके अर्थक प्रयत्न होयव काहिये । विचार सिधण द्वारा इह सुन्यता को भरने की ओर उरके फलो का कप में पयों वा प्रयेय कराने की । यसां सिधियर मूक्त है । इतके साथ बायो की सिधियर है, सधन अर्थसधियर बाय की मुक्ति में स्या सकने वाला है उधमें सत्काल अयदा लाग है, उधमे सुन्यता का अर्थकन और अर्थकन अर्थकन पडती है। सध यह ही कपे पयों कपे के सिधे चलना बाय, यानी उरके गीठे स्वाकमन करन को कसिय कीर

सिधना हो । विचार सिधण द्वारा अयक बायारण नियम कीर ययों द्वारा सधन कस—यह ब्युदरचना कारभार सिध होयो ।

यह सिधियत कप से मान लेना काहिये कि सर्वोय परयाग द्वारा ही बनता तक सृष्टियेप । परयाग विचार सिधण, कार्यकल परियणन, संघटन काडि सयक सुख भाषयप है । काम में हाय-साध बाय की कसियन मानना काहिये, विचार की ही सोचनेने में पयों पयलने होना । केनिन सध बनना ही परयाग नहीं है ।

१२ दिनों में ३२० सत्या की छादी कीर है । ह० का बाहिये विधा । परयाग कन हर पलिये बादी होयव । पडके पुने हुवे गीर सिध प्रकै गीर, अर में सधन सधर यह कस मन में है ।

रामसुवि

रत्नागिरी जिले के यामदानी धाम-निवासियों का शिविर

रत्नागिरी जिले में बालकन के पूर्व-गिरे के प्रामदानी गोंयों के ७० निवासियों का एक शिविर ता० ८-९ सत्यरी को हुआ । जिले के सील गोंयों में आत्मसमर्पणकारी चल रहा है। आशुकि लेखी से बलकन का सहायन दा है। लेखी के साथ में सुख उयोग के कर में अकर परिकरालों में कसया भी सियर करते हैं। गोंयों में अनाथ सध, सुध और घाम-भाययों के लिए सिध-सिधियारी बनती है।

नेरहापुर जिले के सिधर गोंय के कीर सत्यनय सिधे ने वहाँ की बनकारी ही । सिधर गोंय में सानय एक हजार द्यन बनाने और १५० गोंयों की सत्ती है । सिधर भी अनाथ कीर छनी सधरुन होती थी । गोंयों को आग्रयन का निश्चर बना । सध एक दृष्ट, सील जमीन गोंय की सान-पर सने मिलतुन कर लेयी थी । गोंय की यदी के याने न प्रयोग करे इह सरी १६ एकड़ जमीन में सिधर के सध-प्रयोग बनाया । अगले वर्ष और १६ एकड़ जमीन में उरको बनुयेगी । अत लेखी का नाम रत्ना दा दे कि लेखी को सुरक्य बनी मिलती । यद्येवरीय बधुत्यों की एक दुकान गोंय में बनयो है । ज्यों को पदार्द के साथ उरियारी कीर अयययन भी को सधिये देते हैं ।

रत्नागिरी के प्रामदानी गोंय को कसो को आग्रयारी देते हुये भी सिधेरकर ने सहाय कि उनके "गोंय में कमीन कस दे, केनिन आग्रयन के मर इरिये-मुकर की ओर प्यन देते के अल उग्ररतन सध सया । इह सध नर की बरक भूमि पर सती रहती है कीर केनेना बादी । गोंय में कस सिधर, सुसकनयन है, अमोचन भी सुख हो

रहा है। गोंय की आत्म-स्वायय पीलारटी बनयो गयी है ।”

जानेती गोंय के भी जवानोंने अयानर ने कहा, “इस १६ परियारी ने आग्रयन को मान्यता दी । अशुकिन परियारी की सुनि और सानय सिधरी । गोंय अत अनाथ का मयाद बन गया है। अकर परदा हम सधलते हैं। आगनी बग की चल को लेखी के मारा सत्कन बग गयी है। सध यय चीन अनाथ में सत्यनकी अग्ने ऐसी आया है ।

इसी तरह अन्य आग्रयनी गोंयों के योनों ने अग्ने अग्ने गोंय की प्रायति की बायनारी दी ।

गोंयों की सत्यनयोः की कपनों करते हुये भी योयियरप सिधे ने कडा हि आग्रयनी गोंयों की सारभिक कसियारी में सत्कन है। हुक में लींग सिधे की धरि से देसने थे, केनिन यह सिधिये अत नहीं रही है। अत हयें सधरिये भीयन के बारे में रोषना काहिये । सत्यनय सानयदा सध के लिए सधके विवाल इडि भरगानी काहिये । सिधर गोंय का नेरुष है, उनको आनी सिधियारी का सहाय करना होया । गोंय में आशुकि लेखी की ही सध बायनरी की देखाक, अरकनकी की एक दुकान आशुकिन से बनरी काहिये । साधियों, आशुकि-मोजन, सधरभिय प्राणी आदि बायकन प्राय-सध को सध में लेने पायते ।

सत्यनय प्राय निवासियों से पुर्न सधर सिधे । सिधिये के अत में आग्रयनी अग्ने में आग्रयनी सध में सिधिये सधने का सध हुआ । उत समय अत लेख एक सधर की परयाग करके गों-गोंय प्राय-स्वायय का य सधर पड्यो ।

जव मैंने रिक्षा चलाया

अन्याचारण

[३ भाग के अंक में हमने एक प्रसंग था उल्लेख किया था । 'भुमारस्याम्भार' निधि' के लिए धन-संग्रह की असील पत्र कर जिला सर्वोदय-मण्डल, 'रोहताक' में संयोजक, श्री अन्याचारण ने छः दिन रिक्षा चला कर उसकी कमाई कोष के लिए भेजी थी । रिक्षा चलाने के दिनों में-उनको जो अनुभव हुए, उधमें से कुछ नीचे के लेख में उल्लेख दिये हैं ।

ऐसे अनुभव दोय ही दिवस चलाने वाले को होते हैं । 'बर्मी-कमी' हम भी ऐसी घटनाओं के शरण बन जाते हैं । इस तरह हम अपने आपको बर्मी-कमी दूधरों की विधिति में रख सकें वो हमें इस बात का अन्दाजा हो कि दूसरों पर क्या बीतती है !—सं०]

हालती की बारह तारील । बापू का थाड-विगत ।
बोह रुक लेतह कुभाएणनी का भी थाड-विगत ।

पांचो और कुभाएणनी । बर्मीको और आठ का आर्थिक संयोजन ।

आर्थिक संयोजन के इस अन्व-साहसक चरणत वर धमकीविनों का जीवन समान के बधुर (सलाविनों के विषे तरे ही तरह ही तो है ।

'भूदान-सुवि' हाथ में था; उसमें आर्थिक विचारों के क्षेत्र में जाति जाने जाने की धारणा प्रकृत में 'कुभाएणनी सन्तक निधि' के लिए असील छपी थी । उसे एक रहा था, सोच रहा था अपनी और से भी कुछ धन-संग्रह इस सुनील सन्तक के निचे भेजें—पर क्या भेजा जाय ? कितना भेजा जाय ? यही सोचने-सोचते दिन बीत गया ।

रात हो चुकी थी । मैंने अपने आंगणे रिक्षा सुविचन के सामने गया । कुछ बने-बने-वेधे वहाँ से और उन्हीं के पास बैठे थे स्थानीय रिक्षा सुविचन के मेलेकेन्द्र, 'कामरेड छावर ।

'कामरेड छावर । छोटे रिक्षा चाहिरे ।'

'बाओ भाई, धोरा आओ बाबू-जी को ।'

'नहीं-नहीं कामरेड छावर । आम मेरी बात समते नहीं । मेरा मतलब यह नहीं है, मैं बचना यह चाहता था कि छोटे रात भर की पकाने में लेटर रिपारे पर रिक्षा चाहिरे ।'

कामरेड छावर, जो मुझसे अच्छी तरह परिचित थे, कुछ क्षीणिले-हेरन ली, तबाल पर उठक करने । वारी बाठ सामल चाने के बाद एक-दूसरे-दूसरे का रिक्षा मेरे सामने लफेर रान कर दिया गया ।

आर्थिक संघर्ष

दीन गिणीकी भी इष्ट बदनवीच (या छुपानवीच) । गानी को, निराल पर दो अर्थिक पीडु की हीट पर सकार होवे ही और दीधर इष्ट पर-वेधे कर दोनो की संघर्षा है, लिए अपने ही नजर की चुनौती और बनावरी में, जहाँ जाति-निश्चयने थेरेर नजर आ रहे थे, कदाहे ही नहीं और दोह बजा थी, दिल में एक निष्ठा और उमंग लिये मैं चला जा रहा था । बलवान मन-उपकर तीन पण्डे । शारा दावर पुनः जूझ था । रात के १२ बजने को आगे, मगर मेरी रिक्षा पर बैठने के लिए कोई नहीं आया—एक भी नहीं आया ।

अन्त में बर्मी-कमी, निराग होकर रिक्षा की चोक में खड़ा रिक्षा और लखें भी बैठ गया उठी के सहरि । नई दो कृपा गानी भी एक सरी मे, पर अन्धक के

शरण आराम की वे परिचों कुछ प्यारी-प्यारी भी लग रही थी । अपने आंगणे विचारों में कुछ सोच था अन्धक करने लगा ही था कि किसी की आवाज में छोटे अन्धक चोंका दिया :

'हे रिक्षा... !'

'हाँ बाबूनी । बैठे, वहाँ चलेगे ।'

'गानी में के चले, स्टेशन जाना है ?'

बाबू के आदेशानुसार दूर अंदरी गली में एक मजान के सामने रिक्षा लगा, 'दफा' लगा रिक्षा पर सामान बन्दे..... सामान का बोझ ही अन्धक-जीन मन से बम नहीं रहा होगा । ऊपर से बर्मी-जी बल का निवर्तन की टोकरी लिये हुए दोनो पतिभगनी, जो नन-विचारिये मायूस हो रहे थे, जा बैठे रिक्षा पर ।

इतना मारी केन्द्र केर रिक्षा चलाना, फिर उठी रात और स्टेशन का लम्बा सपर—यह सब देख पर कुछ सख गगा, बचक-का गगा, पर चल्ता तो था ही । बर्मी-जी करके उन्हें देखने स्टेशन पर पहुँचया और साहब ने मेरे हाथ में एक बकली धारा दी... । न आहूड-आहूड श्रुते यह चार माने नहीं हलने-धारे लम्बे थे, बहुत कीमती नजर आ रहे थे । कपड़े बल जुगा था और रात भी सुबह का सुनी भी, युगा दिया अन्धा रिक्षा मैंने पर भी दाद जाकर लगे-लगे की। की-पैरि-पैरि चले के पैरल पर मेरे-जो चले जा रहे थे और दिशय बल जुगा था उध चले थे, ऊपर-बाबर-उलक-कलक पर देस रहा था, पन्नील नरे पैर के इष्ट गोल थे, ऊपर लिफे के, जो मेरी दल से ढौंक बंधे पी मसदुरी के नल्ले में श्राव हुनने । मुझे यह पन्नील नरे पैरें चाहे फिन्ने ही थ्यारे और भू-बनवा-पू-पू न नजर आते ही, पर बाबार... तो देखी क्षीमते पन्नील नरे

पैरें ही थी—केतल पन्नील नरे पैरें ।
'हाय रे । हमारा आर्थिक संघर्ष ।'

सम्य समाय

'बलो टो-... ! हल्लील' यह कर एक-दूसरे की ओर दृष्टी युगा लटकी दोनो मेरे रिक्षे पर सवार हो बनीं । मैं भी चल रहा । ठहर लम्बा था, रिक्षा पल्ले-पल्ले बारी बर भी युगा था । 'जब टोन चले, इष्ट तरह हम कर पहुँचेंगे । देखते नहीं ? बचने को आगे है, अर वर तो हँस पड़ें सुंदर जाना चाहिरे था ।'

उपर पैर चलेने का उन्हा आदेश, दवर बना दुम्हा घटीर, ऊपर मैं उठी वे चल्तो दुर्र माने की हवा, पर चल्ता परल था, कपड़े उन्ने पैरें जो देते थे । लैट, अन्नी-कले के पहुँच गये अलतल लक, वे दोनो रिक्षा के उतर कर मुझे रिया पैरें दिरे और रिया कुछ बने अन्धक दलित हो बनीं । मैं भी वही लोच कर कि अभी बरिल चल्ता होगा, वहाँ रिक्षा लगी करके उन्नी प्रतीया करने लया । बरीर २ बंटे बाद बर बाहर निगली और रिक्षा परदेक कर मुझे पल्ले बर आदेश दिया ।

आदेश पाकर बल पड़ा । रिक्षा उठी वे चढ़ रहा था । बारी पर निश्चल चुके थे । लक के दन बल चुके थे । उंठ बानी बल लुकी थी ।

आनुनिक कैनेलुल पोचराम में लिदरी हुई, रिक्षा पर बैठी इष्ट युवा लटकी को उठ ने सदाना छुट-लिये था । उधे लीक आया—मुझे रिक्षा रोल्ने के लिये बरा और लाय की अपेक्ष ली से बहा : 'गामी बरा इष्ट होउठ में जाय पीली ।'

दीक वही टोण, रिया पैरें दिरे यल्ले के रीक वही टोणों उतर कर दलित हो गयीं । मैं बाहर रिक्षा रोक कर लता हो । 'गामी बरा इष्ट होउठ में जाय पीली ।' देख रहा था बल्ले से उन्नी मेर पर चार था कपड़े के कन्ठ लय चल्ने की अन्धक और होउठ में-कुछ लडखली थी ।

आप काय हो युगा, मगर वे अभी भी बाहर नहीं आयी थीं । लरी और बरनन के बाहर मेरी भी की में आया, 'बल्ले, इष्ट पल्लो जाय पी चाय ।' और उन्नी होउठ में उन्नी बल्ले बाथी देउल पर था बैसा । जाय लने को बरा ही था कि उन् दोनो की मेर के पाठ भी वे आहूड विल

दिया । निच के पैरें युगने पर पैरें ने लकम बजाया, युगनी ने सलय के बल्ले एक बरपे का नीट यमाया । पैरें ने फिर हाक कर लय रिया । वे बाहर निगलीं और मुझे रिक्षा के पास न चहर रहना छुट-लिया : 'ए रिक्षा, रिक्षा बाले... गुनवा हो नहीं, न मादर बसों जाय गया ।'

इपर मेरी मेर पर पैरें ने जाय का प्यारा रला ही था । दीक उन्नी लय उनका मुझे युवारना । आगने तेजी पकर रही थी । रिया भाव पीर ही मेर पर लीन आने लल बर बाहर निश्च आया और उन्ने बैठा वर रिक्षा को लोचया उन्नी लखिक की तरफ, उन्नी कीटी की ओर ।

कुछ दूर चलने के बाद उन्नी कीटी आ गयी और लय ही मेरी मसदुरी, फिन्ने पी बरी भी लखे-कले के आठ आने लल दिरे मेरी इपेली पर और बहा, 'चल ले ।'

'मगर मलानी, यह जो आठ आने ही दूर... इतना तो एक तरफ का ही रिपारपो हो जाता है ।

मैं तो अन्धको बने-बहो युगा कर बरा हाँ—कौन पंटे दो मेरे आंगणे आदेश पर मेरी रिक्षा को चले-चले और अल छाउट आने दे रही है ।'

'यह सब करी, हमारे पास इतना समय नहीं है... बर बर यह आनी लोच के अन्धक चली लयो ।

मेरे ने न रहा गया—रिक्षा को एक तरफ लता बल्ले चला उन्नी कीटी में । बर-बचने पर दवरना कुछ तो सामने करने में बही बने-बहो अरिय नजर आनी । लखरी दिवार नहीं बर रही थी, बायर अन्धक आ चुकी थी, किवी बूधे करे मे । मैंने बहा, 'मलानी !' 'कौन है ? क्या पाव है ?'

'हैं ही हूँ रिक्षा बाबा ।'—बाबू कर ५० नरे पैरें का बह रिक्षा, जो उन्ने मसदुरी में लिता था, उन्ने बाधिर रिया और मेरे-मुँठ से निरल की गया :—

'यही ललल ललल लल लल आब को ललली सिमी ही नहीं, पर बह अन्नी लखर अपनी लीन लरे भी मेलात वर आगाने को बरल बलकका ।'

'अन्ध-बह कर लीं न बनावरी, अपनी ओउठ देल कर चले'—यलना बह कर वे भड मिलल अलने आरते हो बलल लगी, 'नेरोजवणी के इष्ट जलाने में इल लोको को बलल मिलल जला है तो संली-ली नहीं करते ! बंज जाय नहीं मिलल है दो कले है—केतरी दी, गरीर है, क्या बर ? और बर-काम फिल्ला है तो अन्धक दिखाने लगे है ।' इतना बह कर कुछ लीच से कुछ मुड-ली रोकर बह अन्नी मेरी लखर लल आगे बहा :—'वे जाओ अपने पैरें औ-भाग जाओ परता पंके देकर बाहर निकलनाय होगा—दिशय पाउट लिया ! बलली-बल बही के !'

यह सब सुन कर मेरा भाग्य निकल-मिल उठा, गुन न रह था—

“तानी देरे वे आगरो रिक्शा पर लाइन पर चला रहा, ५ मील का चक्कर मारा, आगरो आगरो कीटी में पहुँचा था रात की १२ बजे में, यही देरे न मेरी जल-सनीदी। और आग मेरी मजदूरी मार रही है—उपर से मुझे ही बोट रही है। इन्डिगे आगरी समीप के गुण जाके। यही देरे आगरी मजदूरी है और यही देरे आगरी मजदूरी है.....”

यह सोच गुन कर यह लगेगी गहर सिन्धी। मेरे देहेरे को खर उठने प्रयास में देगा तो कुछ भोजनकीनी ही बेचकर कानि ली।

“आरे सागु, भाग। भाग, यह इन्डिगे खर उठ रहा है।”

इन्डिगे अरे औरत को मेरे से हल्लाक रही थी, अपनी शरणी के दुह से मेरे प्रति आकाशद्वज धमक गुन पर समीपकीनी ही बेचकर मेरे ही तरफ देखने लगी। इन्डिगे ने अपनी माता की तरफ आगेपिछ होकर कहा: “माताजी, आज जो निम्नकारी के कारनामा हैं। अभी निम्नकारी ही हमारे कारिग हैं आगे वे औरत को गम्भीर बर्बात हुई भी इससे बहुत बड़ा-बड़ा फलित है, मामी।” फिर दोस्तता मेरी तरफ मुन कर कहा:

“मिर्जा हादु, माग करना हमने जागरी ‘फिरजा हादु’ हमला था;”

यह गुन पर मत की और भी उठे हागी, और यही काने को हिमलत नहीं हब करती थी। बन्दी से कोठी से बाहर निकलकर सिन्धी गुमराग; रिमाग में बेस; गुमराग पेशानी सिन्धी हुए भी-रेडि पाल का रंग था अपने घर की लाल। यद्यपि मेरा-हादु, गुमराग मने के अक्षर उठे पाल अपनी बारतार १२। न मादुस भाग क्या इन्दी धरात के बाग भी नदी नदी करती थी।

कानो में बार-बार यही आवाज गुन रही थी।

“हमने जागरी ‘फिरजा हादु’ हमला किया।” रिमाग में हल्लाक, यही चक्कर मिला रहा था—क्या रिक्शा वालों का, मेरागुन को लगे मजदूरी का—उन्डिगे, जो कोरे सम्भल नहीं है।—यही वह कोरे-कोरे न मादुस का अरे की लगी थी “यह रिक्शा। यह मजदूरी। यह हादुस।” यह कथनाथ।

पृष्ठ ८ का कोण

हम काली को बरतीयो को राहण पहुँचते काली और बेचारी को रोनागर देने वाली एक पक्षीयो बीजाय न समथे, बहिक बाँके, कसब और पुन विरासत के काम में ऐसे कोर हैं। कबलिक वरक इन्डिगे मजदूरी, कोरी, विराम, कारीग्य मदि के साथ काली को यही प्रयोग प्रथा है। उरु कस विर सादी में बज करके वाले कामगारी की साय से भी कम मजदूरी देकर भी काली को उतनी सतरी नहीं बना सकें कि देहता के गरीब कोष भी खरीद सकें। भाव पागगारी को मजदूरी का सिन्धी है एतलित सादी के काम में उन्डे रत या पलास नहीं जाता है। और काली यन्दी है इन्डिगे बरीब गाँव कालो को सारी सारी में को हीजाया पाहिये वह नहीं है। इसके लिए बाल को पूरे अधिक हासल को ही अंश उठाना होता, काली और कालो को कसपायिब बननी होनी और साथ-साथ उनमें कोरसथीय मुसली की निन्दा और करने के लिये उरुके वीरगिण और सामुदायिक अंगों का भी विराल कला होता। और हैं विन्ध पाली में सने हुए को कोर हैं उनके विर-कसगरी में अल बेदगाग होता। ऐसे सपान कोर देही वरीविधि में ही मागो को अंश पादने थे, सारी जीवन काम के पाठन का भावक और किरासतक समाज का प्रतीक था सावण बल बसाय।

इन्डिगे—सहारा अर्थ यह हुमा कि नरे कोर का को विचार और कार्य-व्यक्ति भाव देह के सम्भले प्रस्तुत हुई है उसे बने गिनाये पर कोर उभरता के साथ समल में लाना होता।

उत्तर—हो, केवल एक वैगने पर और समझा के साथ समल में लाना है यही सही, इन्डिगे प्रकृत सल वह है कि इसे कोर समल में लाना है। यन्दी कालि के काल एक बहुत महत्वपूर्ण तत्व है। उसे नमद मदान करने काने की कीर्तिय करे तो सफल परिणाम वा ही विपरीत आना वा असफल आनेवा। यन्दीय यह होता कि कोरी को सारी का को सही होना चाहिये वह नदी हीग, और कोरी के विचार और व्यवहार को भी परिप्लव्य हम समझ चाहते हैं, यह का नहीं उरुके है।



—काम देना केन्द्र, गोविन्दपुर की ओर से ३० जनवरी से १२ फरवरी तक १५ हागों में पदपावार्थ हुई। उनमें साय सेवकों के समाज ५ अम सचिवों ने भी भाग लिया। १२ फरवरी की रात में बारड सेवक समाज के यक्षुग्य से सर्वोत्तम-यैके कर आयोजन किया गया। पदपावा में २ एक का प्रदान किया।

—२० जनवरी से १९ जनवरी तक त्रिदिव्य बॉय में हाय हाउस प्रशिक्षण विधिवर साविके केन्द्र, गोविन्दपुर की ओर के सम्पन्न हुआ।

—जिला सर्वोदय-मंडल चीनपुर की ओर से चीनपुर नगर जिला नगर की पहिलानी की विचार बोली रायमचारी देवी के सर्वोत्तम में हुई। गोवती में ‘कर्मयोग मन्द’ बने समाज में सब कोष बनना हाय चढ़ाये, ऐसे लिए करीम की गयो। गोवती का उदयपण सतर देवक वसोत्तम-मंडल के सम्पन्न मां-गुरदरलकीयो में किया।

—गौर बहिला मरल ने काली एक सपान में हा विन्ध कि काली विन्ध और प्रयोगयोगी रोवरी के किलक को बाली-कन शारमर किया था है, उसमें हम सबको लाय देवा बाहिर कोर-कालय प्राण करने लिए पर पर आकर वसनाते हुए हुमावारा प्रारण है।

—जिला सर्वोदय-मंडल, बदायन में उत्तराप्रदा १२ उत्तर की को सर्वोत्तम-यैके के सम्पन्न सार-मरयोगीय हुई। यैके में २०० मुन्डिा किय की गयो।

—रत्नागरी विन्ध के विराम में माधीवारा पर हुए सपान्ये येके में रिसे के रचनामरक बर्य कताओं का सम्मेलन हुआ। यही सपान को कसपायिब पदमपन भी पदमपन करी कोर वर्य वर्य में सम्मेलन में अक्षरगुण सर्वोत्तम-मंडल में सम्पन्न की गार २० पाठीकी कोर यही को एवपण सपान में भी सफल किया।

—सावारा विन्ध के सर्वोदय मरल की हाका हां १५ फरवरी को सावारा क हुई। सपान में भी बार-कें-पदीली कोर की एकनाय मय ने सर्वोदय विचार-मचार काय के बढाने के लिए धारपलत किया। माधुपथ में हीने बाके यो अमरकवर्षीके के लीरे के सपान उनको एक बली-मेट की मुन्दी, यैके लिए एक दमसल सचिवि बनयो गयो।

—कुलाहा विन्ध में उत्तर के सर्वोदय सपान में सर्वोत्तम-मंडल १२० मुन्डिा सचिव कोर ययो। हां १३ को सपुन सेवक के कल सपक हाय ‘मुन्डिा को सुवार मायु कालिय प्रस्तुत किया गया।

—हां २० जनवरी को सावरा विन्ध के विचार-मरक बदायन के सारोटी सपान में

मुन्डिाको वा पावर्था सम्मेलन सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन की विरोगता यह थी कि मुन्डिाको के साथ मुन्डिाको में भी भाग लिया। सम्मेलन में जब मुन्डिाको के लिए प्रदान की गयी थी यही, तो एक नौ-बनान विराम, जिसके पाय बाँके को यन्दी थी, सपान से उठने लाया योया मरकरी अंगो नो। यह देखकर सन कोय मजदूरी बरिहा, जिसके पाय बाँके को मादवो ने कसद. हाड कोर चीन बीषा अनीन ही। सप मुनि का बँवारा गुणन तो मुन्डिाको वरिभायो में कर दिया गया।

कुमारिया स्मारक निधि

२० फिलम्ब १० के अंक में ‘मुन्डिा वर’ के पाठो और रचनामरक बर्य-कताओं के पुनराग्या ग्यारद निधि में बंग देने के लिये निवेदन किया था, तर के अरु कस वरक हां ही ही देती है नरे एत निधि के लिये आ रही है, यह सुधी की बरते। आगु ११ सार्य के मादुस माति स्वीकार सन बंद करे। इस चीन आरवणक के अक्षरगुण मुसली-रवीकर देने। ११ सार्य का मास दरमी का आगुटी माति स्वीकार हां ४ अंशिक के अरु में बरते। निम्न उल्ला यह कथिमाय नहीं है कि कुमारीया स्मारक निधि के लिये बरने में दरम नहीं हो जानगी नरे में आर्य बुर काली की रवीर अगु पदार्थो मेनी पीती रहेगी। केवल प्रदान सप में माति रवीकर क उन्डिगे उ अमरे, ११ के अंक के बर हो जयगा।—सवादक

पाषिक बाधरी: २८-२-११ तक

संघ-प्रधान कार्यालय (साधना केन्द्र, काशी)

● सप के सप, यो मुन्डिाको में सन करी २ मुन्डिा के लीरे के बार हां २८ फरवरी को कोर कर केन्द्र पर काम। मुन्डिा सप हां कोर सपान में साविलमाक, केरल तथा आर्य प्रवत में रहा।

● यो सपानको हां २१ को जग-दोक में कोमुर के सपन सेठ में बने बहा के हां २५ की रात को सपक सावण हां २५ को सप की सारी सचिवि सपान कोर वरीगपकी सम्पन्न सचिवि की सपानो में साथ लेक के लिए अक्षर-सावरा यैके।

● केरलिय की एक सचिवि सचिवि सचिवि कुमारी चीन सेवक हां १६ फरवरी को सावनाकेर में आर्य और कटाक एक-छाया यही रहा। कुमारी सेवक अने सार को विरगामिक कृती है सपान रागयो के सचिवि को विरगामिक के लिये सपन सावना है। उन्डिगे साविक सेवक विरगाम के सप सावना है कथा ५।

● सप को न-भी स्याविलमाक सेवक को कुड पीठ के निर सावण केन्द्र का सप और सचिवि माई-बहा की सपान सचिवि।

● सप सपान में भी सारेड माई सावण हांके के सावनामें सपानो में स्यावण सावण रह है है।

सरोदय कार्यालय, नाहलगमि (अकोला) का वार्य व्यय

महाप्राधु प्रवत के बरगेला विन्ध के सरोदय सपानिय, मादुस कोर को सपान २३ फरवरी ११ को हुई। सप हुमा कि कागानो सर्वोदय-सम्मेलन के यन्दी ही विन्ध को वाग सप हाय मुनि विरिध कर को सप। मजो-मगीय वीरवत और मजोलीक पीठो को हागने का वाग विन्ध में कर। हाय एक सरोदय-मारीय सपाने यह सपान-प-मन सपक बार सप सप सरोदय-सपक सपानिय कर।

हुमा में सप दो बरों का आय-सपक का डिवाय सेव किया गया। यन् १९६९ में सप आय १६१२ और सपक का ८९२ ५० ५० न ५० हुआ। इस सप १६६५ ५१ न ५० काकी रहे। डिवाय सप ५० में डिक् २० क सपक हुय कोर सप कुन २००, ८२ न ५० ५० हुआ। सप लिए १०५ ६० २० ५० को सचिवक सप हुय १२ ११००० की रिक्ता गमने में सपान सप सप डिक् ११

अशोभनीय पोस्टर हटने चाहिये : देश के विभिन्न शहरों की माँग

पटना

अशोभनीय पोस्टरों के विनाश आन्दोलन करने के लिए पिनार के १२ नगरों में, प्रमुख नागरिकों की समिति का बन् चुकी है जिसे महिलाएं भी हैं। गत सप्ताह पटना-विद्ये में "पटना लीटी अशोभनीय पोस्टर समिति" की ओर से नगर में एक वृत्त निराह गया। पटना नगर में अशोभनीय पोस्टरों के विनाश को आन्दोलन चला रहा है उनमें पटना निगम के अधिकारियों का भ्रान्त झटका रिखा है। परिणाम स्वरूप निगम के अधिकारियों ने इस काम में दिलचस्पी लेना प्रारंभ कर दिया है।

अतः २८ फरवरी को प्रथम सार्वजनिक ही एक बैठक में अशोभनीय पोस्टरों के हटाने में अग्रणी चर्चा हुई। निगम के सदन संभालकर वे प्रथम रूप के उत्तर में कदमों को मतवाला कि अशोभनीय पोस्टरों के सम्बन्ध में आचार्य विनोद शर्मा के आन्दोलन की ओर निगम का ध्यान गया है। उन्होंने आगे भी बताया कि ऐसे पोस्टरों के विनाश निगम कदा बर्बाद करने को तैयार रहा है। मान्यव्रता हुई तो निगम की ओर से मुद्रामें भी दायर किये जायेंगे।

पटना नगर अशोभनीय पोस्टर विरोधी समिति की ओर से पटना निगम के मेयर श्री राजनचारी सिंह, गाँधी स्मरण-निधि विहार शाखा के संघालक श्री हरपू प्रसाद तथा पटना विश्व विद्यालय के कुंज श्यामलक तथा अन्य लोग पटना नगर के विभिन्न चरों के मालिकों से मिले और अशोभनीय पोस्टरों के सम्बन्ध में बातें की। मालिकों ने उनके विचार से प्रति वृत्तवृत्त प्रारंभ की। बूँकि विभिन्न विभाग के पोस्टर हटाने से ही नगर अपने ही दृष्टिकोण उनमें साम्य कठिनाई है, फिर भी उन्होंने आश्वासन दिया कि बहुत कम संभव होगा एतदो रोकने की कोशिश करेंगे।

हिसार

बिला सर्वोदय मंडल हिसार द्वारा अशोभनीय पोस्टरों के विनाश और हटाने-कटने के लिए एक वृत्तवृत्त दिनों निराहल गया। उसमें सामाजिक, राज नीति, धार्मिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों और नागरिकों ने भी भाग लिया। वृत्त की समाधि एक सभा में हुई। सभा में दायरणा के अन्तर्गत शब्द सुनाकरकोरती ने कहा कि विभिन्न शान की बात है कि आजाद भारत में शत्रु के अड्डावासी शासकों के सामने शरान्ती करने और अशोभनीय पोस्टर हटाने के लिए आन्दोलन करना पटना है। उसी दिन रात को एक सार्वजनिक सभा हुई, जिसमें सर्वोदय-कार्यकर्ता और सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने अपने विचार प्रकट किये और सर्वोदय के प्रस्ताव पारित किया कि बिला हिसार भी अन्तः समाजलिभाओं और भाग-परायणों को चाँदिए कि अन्तः-अन्तः रूप में शरान्ती पर और अशोभनीय पोस्टर, यदि जगों के रिवाज अन्तः के हटानेवाले को रोको। इसके अन्तर्गत शरान्ती बन-सम्पन्न विभाग एवं सभाचार-पत्रों में भी अशोभनीय पोस्टरों के हटाने योग्य हैं।

मथुरा

मथुरा शहर में १० फरवरी को अशोभनीय पोस्टरों के विनाश प्रयासों की निराहली गई और गली-गली में जनता जागृत करने के लिए सभाएँ की गयीं। रणनीय "राजसभ" विभागाध्यक्ष के अशोभनीय चित्र को हटाने के लिए २४ बटे की दस्तावी। सत्यवाचक अभिमानात्मक ने ६ चंटे पूर्व ही हस्ताक्षरित, पोस्टर से मूल अशोभनीय पोस्टर दौक दिया। एही प्रकार "दिग्दर्श" विभागाध्यक्ष के आत्मिक ने भी एक अशोभनीय पोस्टर हटा दिया और आश्वासन दिया कि इस काम कार्य में हमारा भी योग्य होगा। ता. २१ फरवरी को बहादुर इंटर कॉलेज में आयोजित एक सभा में भी दस्ताक्षरित चारों ने भाग में बधाया कि अशोभनीय पोस्टर का निर्माण अन्तर्गत नहीं होता है, तो जनता को चाँदिए कि संगठित होकर आवाज बुदबुद करें।

आजमगढ़

ता. १५ फरवरी को शहर के प्रतिनिधि नागरिकों की सभा में अशोभनीय पोस्टर हटाने के लिए एक समिति उनी ओर वाप हुआ कि अशोभनीय पोस्टरों में उपा की जाए। यह भी उस वृत्त कि सभासे-जुलाने के दासवृत्त अन्तर्गत पोस्टर नहीं हटाये गये, तो सभाप्रदा भी किया गया।

बुलन्द शहर

बुलन्द शहर के इजल शहरी सभ में अशोभनीय पोस्टरों के विनाश एक सभा दि. २० फरवरी को हुई जिसमें साहायक के पामों से भी लोग सहभागिता हुए। सभा में निम्न प्रस्ताव सर्व समिति से वाप हुए।

(१) विवाह भादि कार्यों में अशोभनीय रिक्काओं न बनाव जायें।

(२) पामों में कोई भी अशोभनीय चित्र चरों में न लगाये।

(३) लोकों का लोहार मेकलोक से मनाया जाय न कि गोहार, गारा भादि से अशोभनीय के चरों गये कि जायें।

सत्यवाच एक प्रामोदय समिति का भी गठन हुआ।

काशी

बिदले दिनों काशी के अशोभनीय पोस्टर निराहलक समिति की बैठक हुई। उसमें काशी के प्रतिनिधि नागरिक भाई-बहन और छात्र-छात्रा विद्यालय के कुंज भाई उपस्थित थे। 'हृष्या' की जानकारी समिति को बधायी गयी। एक विचार के अशोभनीय पोस्टर पर विदेश विचार के अन्तः विभागात्मिकों के सम्पर्क निगा राह। बटुनगर संघित पोस्टर हटाया गया।

रोहताक

बिला सर्वोदय-मंडल के बाराणस में जिते की प्रवृत्त समितियों की एक सभा थीमती लक्ष्मी देवी को अध्यक्षता में अशोभनीय पोस्टर विरोधी आन्दोलन के सम्बन्ध में हुई। जिते में सुव्यवस्थित कार्य संभाल रहे "महिला सर्वोदय समिति" का गठन हुआ जिसकी लक्ष्मी देवी की अध्यक्षता में होगी।

समिति में जिते वर के विभागात्मिकों काय वसदा तथा सत्यवाचक अधिकारी एक से अशोभनीय पोस्टर, फणे कर्नर तथा अशोभनीय गाने व साहित्य को रोकने में अशोभनीय को हाकिम के विरुद्ध हुए कार्य को रोका जा रहे हैं।

देहरादून

बिला सर्वोदय मंडल, देहरादून द्वारा अशोभनीय १५ फरवरी की विरोधी बैठक देहरादून में हुई। अशोभनीय पोस्टरों विरोधी प्रस्ताव सर्व समिति से वापि वरने आन्दोलन को जारी रखने के लिए एक उपसमिति बनायी गयी।

ग्वालियर

रुपरक अशोभनीय पोस्टर आन्दोलन समिति द्वारा ग्वालियर, पुनार, लखनपुर, योच में विभिन्न मालिकों द्वारा सभाये चरों अशोभनीय चित्रों की हटाया गया तथा नगर में लोकनीय चित्र लगे, इस सम्बन्ध में प्रयास किया गया तथा विभागाध्यक्षों से भी अशोभनीय पोस्टरों के सम्बन्ध में चर्चा की गयी। अशोभनीय पोस्टर न लगायें।

आशोभनीय समिति के सदस्य गार के अशोभनीय चरों में युव-युवक विभिन्न पोस्टरों का विनाश करने लगे हैं, ताकि कोपणों पर अशोभनीय पोस्टर न लवने पायें।

सर्वोदय-सम्मेलन के लिये रियायती केशसन

आगामी सर्वोदय सम्मेलन के लिये रियायती पत्र (केशसन) इस वार केवल सेवामाम से ही प्राप्त होंगे। सम्मेलन में भाग लेने वाले तीन रुपये प्रतिनिधि शुल्क भेजकर, सम्मेलन पत्र, भारत भारत सर्व सेवा संघ, सेवामाम (बधा) महाराष्ट्र के नाम भेजकर रियायती पत्र जारी प्रतिनिधि कक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

इस अंक में

संहर-संश्लिप्त का मुद्राबिना	१	विनोब
देवपुत्र चोखिया	१	—
गौरी के निम्न पत्र मार्ग	१	विनोब
सर्व सेवा संघ का पुनराव प्रस्ताव	१	—
जबजबुर का संकेत	५	श्री पुनचन्द्र जैन
आन्दोलन का अन्वरोध	५	कोरोलक केजरीवाल
सत्सिन्हाय में सत्याग्रह की टीकाएँ	५	—
बादिन वीरिणी के लिए अन्तिम सम्मति	५	दादणभाविहारी
आगतिकि सत्सर्गों के विनाश सत्याग्रह	५	—
श्याम स्वतन्त्र की दिशा में सारी-उजोग बने	५	संकलपर देव
सर्वोदयों की ओर से	५	—
यव मेरे विरामा नवमया	५	अन्ताराधक
समाचार	११-१२	—

विनोब की संपादना सरनिवा-अध्ययन जिला पंहाटी (अन्तः)

राज्याश्रित खादी नहीं टिक सकती

—विनोबा

मध्यमे। खादी-प्राथम्योप एवं रचनात्मक कार्यकर्ताओं के सामने विनोबाजी में अपने अंतर की धिया प्रकट करते हुए सोचोपाय किया, उसके मुख्य मंत्र टिको ना देना है।

जिते हम रचनात्मक कार्यकर्ता नहोते है, वह एक बहुत बड़ी लेकिन भ्रष्ट-हिम्मत जमात है। उदाहरणतः प्रजाय में कुल २५००० गाँव है। मुझे बहुत गया कि ०००० से ज्यादा गाँवों में इन कार्यकर्ताओं का प्रवेश है। खादी, प्राथम्योप, नवी तालीम, हरिजन सेवा आदि के जरिए प्रजाय के एक तिहाई गाँवों में प्रवेश हुआ है। फिर मैंने अखिल भारत को जानकारी प्राप्त की। पना चला कि टिकुतान के पाँच लाख गाँवों में से एक लाख गाँवों में रचनात्मक कार्यकर्ताओं का प्रवेश है।

लेकिन टिकुतान पर हम कोई अंतर डाल सकते है, ऐसा यत्नकियत आत्म-विश्वास भंगने इन लोगों में ज़ुद देखा। जैसे तड़ाई के मंदार में तड़ाई तारम होने के साथ साथे पड़ो रहती है, लगभग यैसा ही दूध भंगने स्वराज्य के बाय देखा है।

दयनीय दूरम

आठ-नौ साल मुजान का काम चलत। अम्बर चर्मा निजला, सर्वोदय की ओर से काम-स्वराज्य की भावना मुजान हुई, पाँचि देना भी व्यवस्थावा देव में सबसे महत्त्व की ओर माना कि सर्वोदय कार्यकर्ता पाँचि सैनिक बन सकते है। देना साथ होने के बाव भोनी यथा देको निर भी जो दूध दिखता है, वह बस दयाभवक है।

खादी के खाद्य पदों है। उसके उद्धार के लिए गांधी जयन्ती का काम लेकर पाँच जाला रिपेट मूल किया और इन पौड़ी मूल के लिए जनता में व्योली जो जाती है। लई गांधी के नाम से सवोिक निजलती है और वे इस प्रकार के निजलता जिनको नहीं हल्की नहीं है और जिनका रचनात्मक काम के साथ कोई साहस्य नहीं, जिनके लिए हममें कोई इज्जत नहीं है।

"राज्याश्रित खादी का मकड़ाये" राज्याश्रित पर कोई कोषा बँटला है तो वह मकड़ा नहीं बन सकता लेकिन दूँसे कोषा के लक्ष्य, अर्थात्, जनभाव में छापने से लारी, भुंगी, र्कतेनी, उसका प्रचार होना, देना मानना बिलकुल मकल है। यह जो मकड़ा येने देना वह इतना चीन था कि मुझे आना नहीं है कि इन तरह के लारी दिनेगी—वह लारी का अंत नहीं है।

खादी मे नाता

१९२० में खादी को तोष हुई उस के १९६० तक पाने बाधोत साल से मेरा खादी के सम्बन्ध रहा है। इससे अधिक खादी के सम्बन्ध रखने वाले लोग हैं मुझे मालूम नहीं। मैंने उरुवरी पर प्रयोग किया, मुनाई के प्रयोग किये, वही मजदूरी पर खादी को पोषित की। इन तरह, उरुवरी-हाइ के प्रयोग किये। इनमें खादी वह सर मानते है।

लेकिन आज जिस ढंग से खादी का काम सम्पाध्य हो रहा है, उस ढंग से खादी हरिजन माने नहीं बड़ सकती। मैं सरकार के तिमाक नहीं है। लेकिन वह जो बंध है, वह पारामूनी, जीडी, ही-वी यह खादी के क्षेत्र में चलता है और सरकार ने इस क्षेत्र में खादी को पैदा करने दिया है, यह सब होना ही चाहिए खादी को "प्रेम" होना-इतनी बंध नहीं है। बुराई का जो बंध बना है। यह सब देना पर मुझे बरी देना होनी है।

पोषण नहीं देते है। इसीलिए मैंने कहा था कि जितने खादी के कार्यकर्ता है, वे सब खादि सैनिक है। अम्बर वे नहीं है तो मैंना मुझे निजल दे। लेकिन खादि-सैनिक है दूध कल्पने से बना होता है। जैसे जो एक लारी अम्बर का कार्यकर्ता देता की देता है, जितने-सर्वोदय की धामुनी रिहाय भी नहीं पड़ी है, जो वह नहीं पड़ता है, यही बड़ा खादा येव रहा है और उसके अन्वयन प्राप्त कर देता है। इसीलिए ही हम-जनता चाहिए कि खादी को प्राथम्योपों के बीच में एक बल है, उसका अभाव डाकू-की कोशिश हूँ अगर नहीं करते तो गांधीजी के जा चुके, अब हमारी जाने की तैयारी है टिकुतान में डाकू लारी की अन्व के बाव इत दुनिया की टोडकर जाने के लिए पावरोटें मिल जाता है। जिन लोगों ने पहले से खादी को देना है, वे भी मरने को जो उरुवरी में हैं, और जो गांधीजी के लारी रह चुके है, वे भी मरने है। जो बाधकी मरव कोषा करपा है। इसके बाव जो मुहरे लोग मान्ये में बूढ़े कि वह मान्यो मरव कोषा में, भाव अपने पाँच कर सके हो जाइए।

मैंने खादीवासी से पूछा कि उरुवरी अम्बर कजो मरव देता है तो मान्यो खादी दूध से उगाया खोपी का बन लयेनी। ओ वे कोठ-ना, अम्बर मरव नहीं मिलती है तो खादी कम कपेनी। याने मरव भागत लोच ली, यही खादी निर बई। हरिजन नहीं पड़ी। कमान बनाने के लिए आकार के लिए ईंट रखते है। कमान बल नूरो को मजदूर हो जाती है सब ईंटें देता केते है, देती को हराने के बल इनाम देते है। खादी होना चाहिए। आज सरकार का आकार नहीं है, मरव है। याने उरुवरी में ईंटें खनोते है। मरवाय है कि नाह में ईंटें हरत भंगे। लेइज मरव नहीं रहनी है तो आकार की बनाय निर कारनी है। खादी का वह पैसावा नहीं रहनी है। इतनी-मित्त मुझे एक उमर कमान में रव नहीं रहनी है। मुझे एक मना बड़ रहे है कि हमने एक सच माने में वे लोग बहुत मरव मरने है। और हल कोषा में भी है। है हमने मरव जाने की हरत मरव देते जो है हम खादी को है कि यह काम बई, लेकिन हमने मरव मरव पाते है, तो में पीके पड़ जाई

है। इत तरह भोजनके हलके मित्र है, खादी है, वे चाहते की हैं कि यह काम बडे लेकिन इन मरव के हल पीके कल्पे है तो मान्यो और नहीं छोपने के लिए बाप होना पड़ेगा।

रंभाय में गांधी गिधि, नवी लोचन, खादी, प्राथम्योप कार्यकर्ताओं को हमने कमानवा का लीनी यजति पड़ होती है और यह काम कती ही तो अच्छा होता। लीनी यजति यह एक ही गई। और हमने जो सर्वोदय नाम की बात की है वह उन लोगों में उरुवरी की। मैंने खादीवासी से कहा, कि आरके कार्यकर्ताओं का अम्बर इतने नहीं में प्रवेश है तो २५००० हजार सर्वोदया नहीं नहीं बन सकते ? हम कहाती में काँ हो तो खाद्य मजदूरी है काँ और कुना नहीं करते। यह बलता नहीं है इसके साथ साथ हल सर्वोदय पाव की बग भी करे और एक तरह के अमानने का लोभो में इस काम को उरुवरी परवोडें हमार सर्वोदय पाव बनाये। मैंने उनो कहा कि सब सर्वोदय पावों की बलक हलकिय है। आरके कार्यकर्ता लोभ लोभ है। आपकी विनयी चरमति है, आपका जो सर्वोदय विचार है उसके लिए विनये मरवाना है, इनका पठा सर्वोदय पाव से लेना। टिकुतान में ५० करोड़ पर है। उनमें से एक करोड़ पर में अगर नगीरुव पाव होते है, और एक परवने है, तो विनी पावों को ईंटें माला नहीं है कि वह आरको मुठे बिना राम करे खादी है, वह साथ का साथ रहनी है और सर्वोदय है, वह साथ मजदूर करनी हो प्याम में आनेवा कि केरम में कजुनिरिटी को इनने कोरुड बँडे किने। दुआरा भी सब गुणाय हुना सब इनरी सब पोरो मही-विमि। मुझे बहुत गया कि गाँव-गाँव में खादीके हेतव बनये। मैं बहुत पानाई है कि सर्वोदय वाले गाँव में अपने "वेतन" बनाने है तो टिकुतानको भी अपना भोवना। कजुनिरिटी में केवल बनते को बई खादी उपरो विप नहीं हुवी लेकिन आर वेतन बनाने है तो सबको अपना लेना। पाँचि देना का विचार हमने देना के माने रखा, उसके बिलक कोई नहीं कोना है यह ती पचि ती मेरवा है वह उरुवरी रचनात्मक कार्यकर्ताओं को न हो। ही काय का काम बननी न होना। फिर उरुवरी मरव के हुवे बहने है इतने खादी को भी बड़ मरवना हो खनये। इनमें सब कोषा है। खादी ऐसी जमान बननी चाहिए जो मजदूर बने, "कारिड रोक" बने।

का आत्म-समर्पण बढ़ा है, आर्थिक दृष्टि से उसकी छोड़ा करने की शक्ति भी बढ़ी है और शायद इतना ही। यह मालिकों का गया हफ़दार और पुराने मालिक का गया प्रतिद्वंद्वी हुआ है, जिससे परस्पर विरोध तोड़ हुआ है, अतिरिक्त गया है, संघर्ष की भूमिका घुट हुई है। यह देखकर भय में प्रवेश उठता है कि इस तक हमारा जो 'प्रयोग' रहा है, उसमें हमारी जो कार्य-प्रवृत्ति रही है, उसमें कहीं कोई बुनियादी कमी तो नहीं रह गई? क्या हम सब-संघर्ष का सफल निष्पत्त विनियम कर सके हैं? क्या बात है कि जनता में आत्मिक के प्रति विश्वासिलताइत तक नहीं पैदा होगी? क्यों हम यद्यत्में भी 'योद्धी भी शिवाग्रशील नहीं' जता पाते? क्या हमारा आन्दोलन इतना भर कार्यकर्ताओं की संरक्षक आकांक्षा तक ही सीमित रहेगा? या समाज को भी दमिय करेगा?

हम यह सोनते थे कि भूदान की प्रक्रिया से जीर्ण-दोषी कुल पैसा दमय मक़द होगा कि कहीं-कहीं, चाहे जितने सीमित क्षेत्र में हो, पूँजी, अम और बुद्धि की सुलभ लाभकारी (द्वैती वर्तन-रक्षित) विराटें होंगी, जहाँकि अन्तर देखा नहीं होगा जो अन्तक जो वर्ग-संघर्ष दूनी और अन्त के बीच हुआ है, यह अन्त और बुद्धि के बीच होगा। योरोप तो एव संघर्ष से गुजर चुका है लेकिन हमारे सामने तो पूरी प्रक्रिया का नाम रही है। हमें लगता है कि यह दूनी, अम और बुद्धि के सम्बन्ध की दिष्टि से आधुनिक ज्ञान एक ही अन्त पर मालिक और मजदूर समझौता करने से ही करीब और जल्दी का सर्व-कार्य उन्नत को परस्पर मान्य अनुपात में बाँट सके। चीनका के क्षेत्र में साम्यवादी होने से ही मजदूरों में अन्तर्गत भी भूमिका बनेगी, अन्तर्गत मजदूरों। यह कहा जा सकता है कि प्रामाण्य में साम्यवादी नहीं तो और क्या है? है कि ही अन्त में, लेकिन प्रामाण्य में अन्त मालिक-मजदूर की द्वैती वर्तन-रक्षित का दर्शन नहीं हुआ है; अन्तक के अन्तक मजदूरों का साम्यवादी उद्वार ही प्रकट होगा है। आधुनिक से पकिते देखी कोई प्रक्रिया निकलनी चाँहिये जो गंग के स्तर पर दूनी, बुद्धि और अम की साम्यवादी की प्रायोदया पैदा कर सके, जिसमें मालिक की मजदूर दोनों अन्त के जो उर्ध्वपथ ही नहीं परस्पर एक ही देख सकें, जो मालिक में मज और मजदूर में अँत न पड़े, और जो जीर्ण-दोषी साम्यवादी से सम्पूर्ण अन्तर्जन की ओर से आ सके। अन्तक यह दिष्टि मान्य हो तो मालिक की कामनी मालिकी पर प्रकट करना यह अन्तक के विचार के लिए, अन्तक अन्तक नहीं नहीं चाँहिये। और शायद मालिकी का अँत को जाने से लिए यह प्रक्रिया अन्तक कोय भी विद्रोह हो। स्वाभिमान के नारे से हम इस उद्वार का वातावरण अन्तक नहीं पैदा कर सकें, और अन्तक भी कर सकेंगे, यह

ग्राम-स्वराज्य के लिये आज की परिस्थिति अनुकूल है

विनोबा

विज्ञेनीकरण का जो नाप विदार में हो रहा है बहुत ही महत्व का कार्य है। इस प्रकार के कई अन्तक काम यहाँ शुरू होने हैं, लेकिन उनका पूरा महत्व लोग नहीं समझते और यहाँ के लोग भारत के पास उल्टा संदेख नहीं पहुँचता। एक बहुत ही सुव्यवस्थित निवेदन हमने अभी सुना उसमें जो दर्शन सुनने को मिला उससे चित्त को प्रसन्नता हुई, यहाँ जो भी काम करने को सोचा जा रहा है उसे इतना का ध्यान रखकर किया जा रहा है कि उसमें क्या-क्या खतरें हैं।

हमने जिसका लम्बाकर देखा है कि इन दिनों नये की कल्प अधिक होती है वपदे की कल्प अधिक हो यह अन्तक भी है। एक व्यक्ति को नोय वर वपदा चाँहिये जिसका इत बरत के मूल्य के अनुपात ५०-६० दाम होगा। इस तरह पार्षीय कर्षक कोवों के लिए सोलह से करीब ५० पाँहिये। लेकिन इत बरत के मूल्य १५००० के सादी बगती है। अन्तक वितनी कमी है ११% से भी कम जादी बगती है। छादी का काय ११२० में घुस हुआ। उन्ते आन्तक देने वाली पश्चिम यज्ञाना बन्धी के रूप में हूयें मात्र हुई। जादी का मूल्य स्वरक्षण के साथ जोडा गया। इसी बन्धी कायि इत काय के प्रायः ५० में। फिर भी ५० बन्धी में हम ११% से भी कम जादी मात्र कर सकें हैं। क्या हम कमी १००% तक पहुँचें? क्या जादी बीच के छती लम्ब के लिए है जब तक हूयें हूयें कपडे नहीं मिलते? तो जादी के लिए १००% जात का लम्बका जोर है। हमारा बुनियादी जात यह था कि किसान सेती के साथ-साथ जात की कर के साथी साथी स्वायत्तमन के लिए हो और यम बाहर को अन्तक के साथ-साथ करावा की बन्धी करे। बाहर में इन्ते स्वरक्षण कपडे हैं। छादी पर विचार करने वालों के लिए प्रकट है कि छादी का यह जातक इत गति से प्रकट होता या इन्ते लिए हूयरी वदपति मात्र एक ही।

सात दिलायी नहीं देता। शायद इतना ही मालिक और मजदूर दोनों के दरजाने हमारे लिए बंद होने जा रहे हैं।

उद दरजानों की खोलकर समाज के मान्य में सुखान हमारी पदवी धारण-वत्ता है, इतलिए उन्ते खोलने की दृष्टि से हम लोगों ने दुःखमिल में चली आलोचना यह सया खोदवद मंजल की अतिप्रतिद्वार चर्चित से तीन छादी पर सुख रूप से खेर देने की हम छादी हैं।

१. छादी साम्यवादी
 २. साध्वि
 ३. मूदान-किषान
- हमने यह महसूस किया कि अन्तक छादी ग्राम स्वरक्षण की भूमिका खोड़ देदी है तो शायद फिर हमारे पास कोई आश्रय नहीं रहे जायगा जिससे हम अन्तक के मान्य की अतिद्वार का मुशकिला कर सकें, और अन्तक हम जायगा की अतिद्वार का

भाव विज्ञेनीय करण की बात हो रही है। मुम्बयपुर विवेकट्ट एकेम नुंवेर भाई है। जो भारत की सरकार केवित्त है। लेकिन दुनिया की भूमिका में हर देश की सरकार विवेकट्ट है। क्या यही विज्ञेनीकरण है? वत्तर के दोटूकडे होयें ही दोनों पक्षों में अन्तक वत्तर टूकडों में टूटकर सम्बन्ध नहीं हो सकता। विज्ञेनीकरण तक होगा। अब यहाँ यहाँ की काम छोड़ा जायेगा। सरकार आज विज्ञेनीकरण कर रही है। पचासीवी-राज कायम हो रहा है लेकिन पन्ने हवा है कि अब तक भूमि सम्बन्ध हल नहीं होयै। अब तक वार-पंचायत को योजना विवेकट्ट घोषण की योजना होयै। परन्तु विज्ञेनीकरण की बात करती है। उसकी नीयत साफ है, यह विचारना मुझे है। अन्तक अन्तक बालों की ताक है, लेकिन नीयत वाली की हूयरी भोषण की हो वत्तर है। यह बालोय हवादे अन्तक भी हो सकता है। हमारा विचार नहीं होयै नीयत के कार्यकर्ताओं के पास पहुँचना चाँहिये। विचारों का सम्बन्ध सबकी होना चाँहिये।

मुंवेर में अन्तक सेवकक रूप उन्नत है। इस मिलकर काय कर एक छोटा है देता ही होना ही चाँहिये। यह केवले विचार समझना नहीं चाँहिये। प्रक्रिये में कड़ा गया है कि किसी गाँव में भूदान प्राति और बुद्धि के विचारने से मजदूर नहीं बग है। अन्तक है कि मुदरन साम्राज्य के बीच की कोई-किसी होनी चाँहिये। लेकिन यह तो सब होना जब दोनों के पास, मालिक और मजदूर के पास, पार्षीय ही। बीयें में एक बन्दे की बात कहकर नेने नहीं बात करी है। बीयें में एक कदम भूमि मालिक के ओर अपने ही मजदूर को हैं। या कानून मजदूरों के किसी-किसी को हैं। गाँव की दो हवाय एकत्र बन्धी में एक ही एकत्र हो कानून का पकिते। उन्ते दोनों का हूयगा जुँदा, अन्तक बादों काय तीसरा वा। पुरोहित जाचकित साधित हूयगा है। अन्तक मालिक मजदूर में द्वेष बन्दा है तो एता मूदान के परिणाम में नहीं हूयगा है भूदान में कन्डे अन्तक में बहुत यत्न नहीं हूयगा, इतना ही हो हूय पुरोहितों को हूयगा बाले ही। लोग कन्डे हैं कि बीयों में एक बन्दा किश काय तो क्या बालोयें मीने बन्दा कि कायबन्दा, मालोय, मूदान नहीं। मैं मानता हूँ कि बिहार की अन्तक नेने से किश जुतांग। बिहार में लम्बन २१ लाख एकत्र अन्तक में २१ लाख काय एकर बंटी है। और ने

मानता हूँ कि लगभग २५ लाख बीयें बंटींगे। बीयें में एक बन्दा हर मालिक के विवेके को बरह मान कोत की पकित मिलेगी, मेरे इस विचार का सब समझ सकते हैं। सके लिए कोई ना नहीं बूँते मने बन्दा है कि सरकार जीतती ही होगी, यह उन्ते बन्धी की योजना बना नहीं सक्ती, लेकिन, मेरा कि मुदरन का काम सबकी पसंद माना, लेकिन प्राँतिय सरकार की स्वीकार नहीं हूयगा। यह गया कि बुद्धि का नीयत लराब हूयगा है अब पाय में बावे हूयें बाकुनी पर सुम्बन्धें बनाये जा रहे हैं, बात यह है कि नीयत काम सरकार की कायि के बाहर हूयगा है। आज गृहस्थापन की बुद्धिवादी दृष्ट रही है, इसलिए आन्तक वरम त्पापन की बात में कर रहा हूँ।

एक कामों की सरकार नहीं कर सकती हमारा मान देता है, जिसमें अन्तक के अन्तक कोय बायके ही सके हैं और उन्ते नीयत पोषण मिले, पादवी पार्षीय के कुछ नीयत नहीं, यह सबके अन्तक में का रहा है, कायि देना वा काय सबकी पसंद है, कायि देना की आन्तकका सब मजदूर कर रहे हैं, उन्ते वत्तर बात की प्रक्रिया है। बीया पीठे एक कदवा की बात सबके पसन्द है कि समुदायी उन्ते में ही अन्तक हमारा समुदायी चाहती है। इन बातों में सरकार हूयें अपनी उल्टा नरल अन्तक बनायी चाहती है। इस तरह (हमने बताया है) हमारे काम के लिए वार अनुकूलतायें हैं-विकेन्द्राकरण, साधित सेना मालिक-कार्य और काय की साधित यह कामों सबकी पसन्द है।

अन्तक में अनुकूलतायें हैं तो प्रतिकूलता हवा है? प्रतिकूलता यह है कि सरकार जायकी मरर देदी है, जिसमें को संरक्षण देती है, यह नहीं है। नानाएर की साथी के विवेके परिस्थिति प्रतिकूल है, इसलिए छादी को मिलेयुक्त कार्य में ही लेना चाँहिये।

हमें यह मानना चाँहिये कि देश के २५ लाख छादी कारीकता सब हमारे ही हैं, नरलत यह बात भी है कि वहाँ माय-मिलना चाँहिये, हम विचार कादिके और उन्ते जान दें।

सबके बन्धी की गिराव न करे, एक हूयरी का लक्षण न देखें, लक्षण न मंहंकार छोडें, अँतक यह कर न गिरे।

सादीयान
२१-१-५१

कार्यकर्ताओं के बच्चों की नयी तालीम विद्यालय और शिक्षक कैसे हों। -सिद्धराम

[नयी राष्ट्रीय विद्यालय की योजना के बारे में एक मित्र को लिखे गये पत्र से—सं०]

'नयी तालीम का मुख्य हेतु वर्ग-निवारण का है। प्रत्येक का स्वयं और बहुतराज आज जयपिक बढ़ गया है। इन दोनों विचारों के कारण समाज में गहरी गहराई और परस्पर प्रेम के बन्धन प्रतिगठित और विद्येय का सात्वतव्य स्वरूप हो रहा है। तोषण और विषमता भी इसमें के परिणाम हैं। इन दोनों को निवारण कला नयी तालीम का एक मुख्य लक्ष्य होना चाहिए। व्यवहार की भाषा में बहो तो नयी तालीम का हेतु 'सिजिल-बन्धिक' संवार करने का है, न कि एक-दूसरे को बहाने का। नयी तालीम की शारीरिक प्रक्रिया इस प्रकार की होनी चाहिए कि उसमें से निकला हुआ नवजावन एक अन्तः सञ्चर बनकर निकले। समाज में परस्पर सहयोग और प्रेम की दृष्टि से यह भी आवश्यक है कि जिसत समयका का जीवन-स्तर बढ़ाने समाज के जीवन-स्तर से निम्न हो। अतः नयी तालीम के विद्यालय, शासक और उनके अधिकारिक 'यवन हीन रहन-सहन का स्तर, ज्ञान के जोसत पाठ के स्तर से बहुत निम्न नहीं होना चाहिए। आशंस तो यहों है कि विद्यालय अन्तः ही नहीं, बल्कि और गाँव का जीवन ही नयी तालीम की धारा हो। हर गाँव में एक एक नयी तालीम का विद्यालय हो, जो गाँव का जीवन जीता हुआ वहाँ के बच्चे-बच्चियों को, जहाँ जिस परिस्थिति में वे हैं, वहाँ से एक-एक करके जाने के जाने का कार्यकर्म बनाये लाने वाली स्थानीय कार्यिक हो सकती है।

पर मैं यह स्वीकार करता हूँ कि आभ के कार्यकर्ताओं के बच्चों के विद्यालय का स्तर बहुत थोड़ा निम्न है। इस अधिप्राप्त कार्यकर्ताओं विद्यालय बच्चों के बच्चों का कर्त्तव्य है। इनमें से बहुत से प्रभाव में ज्यादा रहते हैं, और बहुत से कार्यकर्ता ऐसे हैं, जिनमें अंगीकृत काम के कारण अभी एक जगह और वही अभी जगह अन्तः 'पर' बदलना पड़ता है। पहली बात तो यह है कि प्रथम से प्रथम दस वर्ष की उम्र तक बच्चे-बच्चों अपने परिवार में रहने चाहिए। शिक्षक-जान, मानव-आपत्त और समाज-आपत्त उन बच्चों से यह आवश्यक है। इस उम्र तक बच्चों उनका परिवार है वहीं, चाहे परिवार में चाहे स्थानीय किसी छात्र में बच्चे का शिक्षण करने रहना चाहिए।

कार्यकर्ताओं के १० वर्ष से ऊपर के बच्चों से लिए सामान्य तौर पर दो शिक्षक हो सकते हैं। एक दो यह कि वे अपने परिवार में रहते हुए आज के सामान्य स्तरों में शिक्षण पाते रहें और चारित्र्य, सद्गुण, स्वभाव आदि की बनी घर के पर्यावरण से पूरी हो सकें, अगर इस प्रकार में हम मूलों में 'परिचय' से तो, प्रथम करें। दूसरा शिक्षक यह कि प्रथम में अधिक नहीं तो कम से कम एक-दो-बच्चे ऐसे आवास-कक्षा (रेवीनिंग) विद्यालय हों, जहाँ उन्हें नये नये तरीके की तालीम मिल सके। मैं भी मानता हूँ कि ऐसा एक विद्यालय तो तो अच्छा है।

तो इस तरह भूदान के काम को फिर से भारत में जोर देना है और ग्रासक बनाना है।

यह देना गया है कि बड़ा आशोकन संघ प्रस्ता है, यहाँ दूसरे काम भी मद पसले हैं। नयी तालीम की बात देखिये। यह विचार प्रवण हो रहा है, ऐसा नहीं होना चाहिए। बड़ा आशोकन का जोर कम हो जाता है, यहाँ कुछ विचार कमजोर हो जाता है। परसे मैं बहुत सारे देना कि कार्यकर्ताओं के मन भी वैसी ही है। दूसरी के अन्त में बच्चे का रास्ता बनने लिया। रास्ता ठीका गया। रास्ते में बहुत नहीं आता था, लेकिन वैश्याजी में हमें आसन्न दिया। हमने पूजा कि आप सौनदा काम करेंगे, तो उन्होंने बड़ा हम सर्वोपर्य पात्र रखलेंगे। हमने कहा था कि सर्वोपर्य पात्र रख-बाना जिनका आशय है, उसके पचास भागदान बंद होना है। उन्होंने पूजा कि तो आप क्या चाहते हैं? हमने कहा कि हम भूदान चाहते हैं। पादपत्र और उनसे मिलने में बहुत दिया और भूदान सक्षिप्त किया। आसन्न की बात है कि बाप ही एकदम जिनकी मिली और बड़ा एकदम बंद की गयी। दोनों काम हो गये। तो एक पात्र अगर देना होना चाहते हैं, तो काम हो सकता है, ऐसा अनुभव आया। गोलक गंग (आशय) ता० १३/१२

की आर्थिक जवाबदारी कम से कम हो। अधिक से अधिक 'धुस और सुननी' हो की ही सिमोदारी हो। मुझे भोजन है कि अगर हम ऐसा निश्चय करते हैं और खोज करें तो एक विद्यालय के लिए उपरोक्त प्रकार के पांच सत शिक्षक रख-मिल सकते हैं, जो नयी तालीम के विचारों के भी अनुकूल हो। वे नयी तालीम के शिक्षकों की वाक्यदाय ट्रेनिंग पाए हुए हैं तो तभी भी कोई बर्तन नहीं। उनकी सुविधा और विचार उनके अनुकूल हो, जीवन शारा हो और काम करने की रफ हो तो अपने-पुत्रों अनुभव के तब पर वे दो-चार महीने में अच्छे से अच्छे नयी तालीम के शिक्षक हो सकते हैं।

इस विद्या में हमें योजना चाहिए और इसे सामने रखकर हमारे नयी तालीम विद्यालय की शारीरिक बनानी भी एक करना चाहिए। ऐसे शिक्षक न मिलें तब तक विद्यालय बंद न करना पड़ा अच्छा है। काठवाड़ा ही मैंने अन्तर से एक मजक पढ़ा था, यह पाठ आया है। एक में शारी के बालक अपनी हाथी के होनेवाले रामदा से बलान बर रही थी। कह रही थी—मिरी हाथी का बहुत शिक्ष और तुलेंसत है। बहुत अच्छा गना जानती है, बनानी भी अच्छा जानती है, विद्यालय में उसे अच्छा ज्ञान्य है, सना-सो-सारादिनों में भी भाग लेती रही है, भागने में नियुक्त है, चिचवाती भी कर सकती है। आप क्या-क्या जानते हैं? उम्मीदवार होना है जरा दिना-आप-पदस्ता पढ़ने पर जाना बनाने का और करण सीने का नाम में कर लें। हाँ हमारी नयी तालीम का शिक्षित उठ सकी-काना न रह पाए।

कानपुर नाम सर्वोपर्य अभिमान

कानपुर नाम में समय समय पर एक विचारों विचार होना पड़े। इन दिनों में कार्यदा, एडवोकेट, विचार गोष्ठी आदि का प्रायः प्रवण चलते हैं। गोष्ठी और सुबर्ष के अधोगतीम विचारों विरोधी आदि गोष्ठी कार्यकर्म भी समय समय पर किये गये। इनमें कार्यकर्ताओं के साथ प्रमुख मार्गदर्शक ने भी भाग लिया। इन दिनों के द्वारा सर्वोपर्य कार्यकर्ताओं की वैचारिक प्रवण बढ़ कर का प्रवण चल रहा है। नया व सर्वोपर्य आन्दोलन को जिला सर्वोपर्य कानपुर, नगर सर्वोपर्य समिति तथा गांधी स्मारक समिति के समर्थित स्वरु में प्रवर्ति पत्र पर ले जाने का प्रयास चल रहा है। यीन ही उद्योग दान समिति के अन्तर्गत नाम के दिनांश और अर्थिक कार्य-कर्ताओं को एक गोष्ठी का आयोजन किया जागा जिसमें उद्योग में प्रवृत्ती की स्वरुप बनाई है। इन उद्योग पर विचार विचारों तथा तथा अन्तर्गत विचार पदार्थों पर सर्वोपर्य चर्चा होगी।

दूसरी बात यह है कि प्रथम से प्रथम दस वर्ष की उम्र तक बच्चे-बच्चों अपने परिवार में रहने चाहिए। शिक्षक-जान, मानव-आपत्त और समाज-आपत्त उन बच्चों से यह आवश्यक है। इस उम्र तक बच्चों उनका परिवार है वहीं, चाहे परिवार में चाहे स्थानीय किसी छात्र में बच्चे का शिक्षण करने रहना चाहिए।

मुझे अपनी योजना में जो शिक्षकों के लिए दो दर्ज की प्रथिमता का प्राविकन रहा है, वह आर्थिक दृष्टि से भी शोचनीय होगा और अधिक जीवन की ओर बढ़ने के उद्देश्य के लिए भी शोचनीय बाधक होगा, ऐसा नहीं लगता है। मैं जानता हूँ कि आज हमारे जैसे साधारण परिवारों के लिए दो-तीन रुपये मासिक कोई बहुत ज्यादा नहीं है। जिसके शाल-बन्धने हैं, पहरे भी हैं, उजरो से दो-तीन से लाना या देना ही पड़ता है। बेडिंग इसके भी प्रतिवृत्तपूर्ण पैदा होती है। एक तो यह कि विद्यालय का बन्ध बढ़ जाता है, कार्यकर्ता अपने बच्चों की पढ़ाई के पीछे उजरा लक्ष्य करते उसे पूरा नहीं कर सकते, इसलिए फिर समाज या सरकार से दान लेने की नीयत बनती है। जो दोनों बच्चे सुशिक्ष-भी हैं और प्रतिवृत्त भी पती हैं दूसरी प्रतिवृत्त यह पैदा होती है कि ऐसे शिक्षकों के परिवार के रहन-सहन का अन्तर करे विद्यालय पर पड़ता है और विद्यालय का स्तर गति के रहन-सहन के बहुत दूर चल जाता है।

मैं जानता हूँ कि इस समस्या का एक संसा आसन्न नहीं मुझे उर जोर में एक उपाय यह सुझा है और जिसमें मैं शोचता हूँ, उपाय यह उठ होना बसा है कि हमारी नयी तालीम विद्यालय के शिक्षक नयी व खोज उद्य के ऐसे लोग न हों, जिनकी पहरेकी बहुत ही हो या जिन पर पहरेकी बहुत ही हो। हमारे शिक्षक ५५-५० वर्ष की उम्र के अग्रजता के लोग हों, जो शरथी ही सिमोदारी को घर पर जुते हैं और जिनके सुख के बच्चे-बच्चियों की पढ़ाई रखादि समाज होकर वे लोग अपने-अपने काम में व्यस्त हुए हू। मुझे माने में वे शिक्षक 'मान-प्रसवी' हैं। यह बन्ध से मेरा जो अन्तःस है वह मैंने उरकर रख दिया है। यानी शिक्षक ऐसे हों, जिनकी शरथी

आगामी सर्वोदय सम्मेलन के लिए विनोवा का सन्देश

सिद्धाचल इन्द्रा

मार्च के एक में सर्व देश सच की प्रथम समिति की सभा जब बसायाय में विनोवा की उपस्थिति में मुलाई नहीं हो
उसका एक चर्चण मह भी था कि अनेक में होने वाले सर्वोदय सम्मेलन के लिए विनोवा नव क्या उभरे है, यह उन्हीं प्रत्यक्ष
पर्या करके जाना जाए ।

इसवार सर्वोदय सम्मेलन १८ अप्रैल को एक हो रहा है—ठीक चत्ती दिन जिस
दिन दस बरस पहले पहल मूलान विनोवा को निर्या था । सम्मेलन हो भी उन्ही
प्रान्त में रहा है जिसमें मूलान की गतिशील प्रकृत हुई थी । इस तरह मूलान आन्दोलन
का एक मूल पुरा होता है । ठीक दस बरस बाद उसी दिन, उसी प्रान्त में, जिसमें
मूलान आन्दोलन का यही पर्वण हुआ था हिन्दुस्तान भर के सर्वोदय शैबक मिलिये । उपर
बसायाय प्रेरण के साथ विनोवा की देव व्यापी एक परिक्रमा भी पूरी होती है ।

८ मार्च १९११ को विनोवा एकादश
के अपने आश्रम से पैदल रवाना हुए ये—
शिबिराम पहली के सर्वोदय सम्मेलन में
जाने के लिए—वही आश्रम से पून ही
रहे हैं कि हिन्दुस्तान के सब प्रांतीय और
प्रदेशों में पून चुनने हैं । बाद बसत बा ही
एक प्राठ बना था जहाँ ये सब एक
नहीं पहुँचे थे । दस एकादश के शिबिराम
के बाद बरस बा ५ मार्च १९११ की
विनोवा ने उस आश्रम को हूए प्रेषण की
मजदगी भी स्वयं किया और इस तरह
उन्हीं आठ परिक्रमा का एक मूल
पुरा हुआ ।

इस दस बरस में हम नहीं है बड़ी
पहुँच गयी । विनोवा ने मुनिहोने के लिये
जिसकी भी भांग जुगल की ओर मेल पूनक
जमीन वाले को उसे पूरी करने का प्रह्वान
किया । मेल और कल्याण का प्रारंभ
पूरि तरह मुनिहोणन जैसी बलिष्ठ
समस्या भी हल हो उठती है और
समाज हैं । एक वर्ष के प्रति को प्रयास
हो रहा है उसका निराकरण हो सकता है,
यही मूलान आन्दोलन का मुख्य उद्देश्य
है । मेलन के विहाय से इसके लिये
कुल जमीन के उसे हितैषी की शक्ति
कार्यकर भी, इसलिये विनोवा ने उसे
हितैषी की भांग पैसा भी । पर एका दिसका
जमीन मिलने पर भी आश्रितकार समस्य
का पूरा हल नहीं होता बल्कि सवाल सिर्फ
जमीन का नहीं था । कुछ अक्षय मह था
और कि मनुष्य बास करने ही स्वयं में
बुरा हुआ है । इस स्थिति अपने अपने स्वयं
के लिये कोशिस करता है इसलिये एक
दूसरे से संघर्ष और होत ही रही है । समा-
जायिक ही है कि होत में आकारक जोड़ता
है, कमजोर करता है । इस तरह हर
आन्दोलन एक दूसरे से बढता है और बहुतरा
या खतरा महसूस करता है । मुलान की
ही शक्ति में वह शर टिन सा रहता
है और वह मुनिहोणन उसे संघर्ष में दिखाई
देता है । इस तरह स्वयं, होड, सचयं,
बहुतरा और संघर्ष अर्थमूल मालिकी की
भावना इस मूलान में बास का मनुष्य और
समाज संघ गया है । इस जुगल को गति
उन्हीं उन्हीं को ही होती था रही । स्वोन्मी
समाज में शोचन, बसाया, विषयवादी और
नगरी बसत आ रहा है । समाज का हर
स्थिति हर दूसरे स्थिति के, याने कुल

समाज में, बढता है और उन्हे अपना
प्रतिद्वन्द्वी मानज है ।

इस तरह प्रकृति, नियति या सृष्टि की
योजना से जिस प्रकार की एकादश मनुष्य की
सहाय से लिये हुई थी, उसी को उसने
अपना पुनरुत्पन्न बना दिया । एक और एक
मिलकर जगत् सृजने के काम करने को
'धरत' हो रही है । पर बड़ी एक दूसरे की
बाँट दो होत ही जाते हैं । परस्पर प्रेम
और सहाय के बिना पूर्ण की मनुष्य स्वयं
बना सकता था, क्या उन्हे परस्पर के सचयं
और प्रेम के काम उन्हे बना दिया है ।
सचयं में से सुरक्षा की ओर हुई और
सुरक्षा की ओर में से संघर्ष और सार-
किसत की भावना पैदा हुई अतः मनुष्य
समस्या इस जुगल के निरारण की है ।
इसलिये मूलान की स्वाभाविक परिणति
धर्मदान अर्थात् मालिकिय विस्तारन की
पुनरुत्पत्ति में है । इस आधार पर एक
नये समाज की एकादश करनी थी, इसलिये
विकेंद्रित एकादश, सामिल देना सर्वोदय-वाच
कार्य की विविध उद्दिष्ट परस्पर पूरक
और संतुलित चरणगणों भी जयमें से प्रत्यु-
हित हुई ।

यह सब होने से जहाँ एक ओर विचार
पूर और समुद्र हुआ, वहीं कृति का वायरा
बड जाने से वह ही कृति नहीं और
इन तरह सामुदायिक एक दूसरे को
समूह का विस्तार लाने का जो तिल-
मूलान का दिव्योत्पन्न करने से वह आगे
का बढत शय करने का समय का गया है ।

विनोवा इस सारे अनुभव से जिस
नतीजे पर पहुँचे हैं उसका अन्तः पिछले
करिय एक बरस से वे दे रहे हैं । इन्दौर
के बहुते से ही उन्होंने महान् प्रयत्न किया था
कि नौकरी-मूलान करने का जो तिल-
सिद्धा हमने छोड़ दिया वह ठीक नहीं किया
और हमें उन्हे फिर से जारी करना चाहिए ।
देवी से आशा है कि जिनके लिये पर
देवी के कार्यसंज्ञकों में उनसे पूरा कि
उपार्जन तथा के निमित्तिले में वे जो किले
में फिर बास पर और हैं तो विनोवा ने
उन्हीं एक ही महा सुधारों में है जिसका
हो सके मूलान प्राप्त करने को हीयस
है । जेबल के कार्यकर्ताओं को सच उन्के
का पासनी कि क्या और नये निम्न में
हो १२०० एकड़ मूलान में मिली,
जिसमें से १००० एकड़ का अंतःपरा भी

साथ-साथ हो गया । बिहार पहुँचने पर दो
विनोवाओं ने मूलान-आश्रम का एक
निश्चित कार्यक्रम ही उस आश्रम के कार्य-
कर्ताओं को दिया । 'बीपें में बढत' के
दिसास से हर मुनिहोणन के जमीन प्राप्त
करके ३२ लाख एकड़ जमीन के बिहार
के पुराने संकलनों में जो बजो रही, वह
बाधानी ३ दिवसपर एक पूरा करने का
सब प्रथम विनोवाओं ने बिहार में सामिल
रखा है । बजो होत ही में बिहार की
विविध राजनैतिक पार्टियों के नेताओं की
एक सभा पटना में हुई थी, जिसने एक
कार्यक्रम में पूरा सहयोग देने का भी उप-
स्थित है ।

१००० च मार्च की शोचनयन : जयम
में प्रथम-समिति के समस्त बीपें हुए
विनोवाओं ने सामग्री मूलान की सृष्टि
से जगत् एक संघर्ष और संघर्ष एका-
'मूलो सफल है कि इस बल सम्मेलन में
पाठिकता, सर्वोदयवाच और, दीपें में बढत
इस पर चोर देना चाहिए । और ही
जमीन सौजन्य का काम शुरू किया जाय
और सचयं काटि देना की लतास जाय,
इसका सामुदायिक अर्थवाचन को जाय ।
१० साल पहले मूलान का काम सारम्भ
हुआ और तब के दूसरे मन में बड़ी रहा
है कि प्रयास का साथ काठिकता के काम
के लिये सलम का लया है । व्यापित का
बहुत बडा कारक सलमे मिलता है । सचयं
जोनों के पास जाने का, पर-पर पहुँचने
का भीय निरन्तर है । हर वर्ष की हालत
नया है, समाज में आकारक गया है, दलका
पता चलता है । इनके साथ साथ सर्वोदय
पास का काम भी हर पर में प्रवेश के
लिए हमें किले बना को सर्वोदय-सच के
रूप में हर पर में हमारे लिए स्थान
ही गया ।

इस प्रकार शान्तिप्रेर, सर्वोदय पास
और बीपें में बढत से तीनों परस्पर स-
न्धित एक ही कार्यक्रम के अंग हैं । शान्ति
सेना के निरन्तर में विनोवाओं किन्तों ही
बास जमीन शोचत जाहिर कर चुके हैं ।
इस पर जनसुन्दर में जो कुछ हुआ, जो
सबसे पहिले के मूलान को और भी उत्सा-
हित किया है । सामाजिक ही विनोवाओं
के मन पर जनसुन्दर की पटना का कार्य
हूए जयमें बढत—'निस काम के लिए
बापु ने बलिदान दिया और बासा की गयी
की कि उस बलिदान से सारबन्ध चान्द
होे बासा को फिर सँधी पटना महीं
जमेगी, यह सब सम्भवता-सा शान्ति
हुआ । नौरी को व्याप किशी पीड़ी ने आ-
भाजित से किया जो मह इन्धेय के लिए

आगे बाप देता रहेगा, यह मानना सलम
है । इसलिए हमेशा साथ-साथ रहना चाहिए ।
इसलिए हमारा शान्ति-सेना को जो विना
और काम है, उसने पीछे हूमें सारा
जगती होगी । दूसरे शार्कों का महसूस
है, फिर भी वह हमारा मुख्य काम होत
चाहिए ।

विनोवा एक से अन्धकार हार हार
कर चुके हैं कि शान्ति-सेना को नाम सिद्ध
अशान्ति न होने देना, उसे टालना या
अशान्ति हो जाने पर शान्ति स्थानता की
कोशिस करना, इसका पीछे नहीं है । समाज
में शान्ति शान्ति अभी सम्भव है अब
आर्थिक और सामाजिक परिस्थिति में
अशान्ति के जो कारण मौजूद हैं न हू
हों । स्वार्थपरता, शोचन और अज्ञान
अशान्ति के बीज हैं, इसलिए शान्ति-सेना
की निरन्तर यह कोशिस रहेगी कि आ
समाज की सलमे देना के अर्थे कोशिस का
असं शान्ति करने उन्हीं सर्वोदय-सच सन्मा-
परिवर्तन ही किया में के जाय । आश्रम
पैदा करने पर मूलान-आश्रम, समाज में शैव
वातावरण बनाते हुए एक कारगर संस्था
है । हर स्थिति काट-नाश है । कुली लोगों
के लिए समाज के लिए कुछ में ऐसी
वातावरण बनता है जो एक बडी वाड
होती है ।

१८ अप्रैल, १९११ को मूलान आदि-
जन की शारम्भ हुए एक सलम पुरा होता
है । १० वर्ष बाद फिर हैं । मालिकिय
विस्तारन की नहीं, उन्हे हितैषी की नहीं,
२० में हितैषी की भांग भी फिर से लीने
के सामने एकादश पीठी हटने जैसा बरस
बालूम होता है । पर विनोवा ने बढतवा
है (मूलानयन : २४ फरवरी, ११ पुन-
'११) कि जिस तरह बीपें में बढते बालो
बास सामुदायिक का 'शोचतः सचयन'
है । मूलान-शान्ति के तिलकिले में विनोवा
ने इस बार भीय जय को बीपें ही पहिले
पर हमें प्यान रखना बचरी है । सलम
ही यह कि बीपें में बढते, जगती बीपें
हितैषी की ओर की जमीन ली जाय, आ
बाड़े जैसी जमीन न हो बल्कि पीठ की
जमीन बचो जमीन हो । दूसरी बात आ
कि जो बार बडे मुनिहोणन से हो नहीं
बलिष्ठ हर मुनिहोणन । जयभी जमीन
जो बजो हिसाब हासिल करने की कोशिस
को जाय, कम-से-कम हर गरीब की कुल
जमीन का बजयें हिसाब नाश के मुनि-
होनों के लिए मिले, इस काम पर कोशिस
दिया जाय । और तीसरी बात यह कि
इस प्रकार ही जमीन मिले उसे ठहारा
दगा हो बडे दे । इसमें हम इन सब चीजों
का पालन करें जो व्यापक विमान पर
'दान' का, अर्थात् हिन्दु-मुसल के बँडारों
का और सामाजिक सिद्धांतों का, बासा-
(पृष्ठ १०५ पर)

अखिल भारत सर्व-सेवा संघ ग्राम-स्वराज्य घोषणा

(६ अगस्त १९६१)

आज हम घोषणा करते हैं कि हम अपनी शक्ति एक सहकारी, समन्वित और एकरस समाज के निर्माण में लगायेंगे। हम मानते हैं कि प्राथमिक ग्राम-समाज को यह जिम्मेदारी लेनी चाहिये और स्वयं अपनी ओर से उसके लिए पहल करनी चाहिये कि समाज के सदस्यों को उनके जीवन की मूलभूत आवश्यकताएँ सुलभ हों और वे समाज के अन्दर रहते हुए अपनी सुरक्षा और स्वतंत्रता का अनुभव कर सकें।

हम घोषणा करते हैं कि हमारे समाज में न तो कोई भूखा रहेगा और न कोई बेकार। इसके लिए हम वे-जमीनों या बेकारों को जमीन दिलाने की और दूसरे उद्योग-धन्धों में लगाने की व्यवस्था करेंगे। हम अपने गाँव में सुलभ सभी साधनों का अनुमान लगायेंगे और खास कर ग्राम-समाज की जरूरी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उनका पूरा या ज्यादा से ज्यादा उपयोग करेंगे। ऐसा करते हुए हम देश के उस बृहत् समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति में भरपूर योग देना अपना कर्तव्य समझेंगे जिसके कि हम एक अंग हैं।

हम वे सब जरूरी उपाय चरते हैं जिनसे हमारे आर्थिक जीवन में विविधता आये, जिनसे रहन-सहन की हमारी स्थिति में सुधार हो, जिनसे समाज के हर व्यक्ति को उपयोगी और समाज की दृष्टि से हितकारी काम मिले और गाँव में पढ़े-लिखे लोगों में अभी भी घनी आवादी से भरे शहरों की आर जाने की जो वृत्ति बनी है, उसमें रोक-थाम हो। हम अपने आर्थिक जीवन की योजना इस तरह करेंगे कि जिससे हमारे नौजवानों की बुद्धि-शक्ति को ज्यादा से ज्यादा ठोस रीति से वहीं गाँव में काम करने का भरपूर मौका मिल सके।

खादी अहिंसक समाज रचना की प्रतीक है। आज भी खादी गाँवों में हजारों-लाखों गरीबों और उपेक्षितों के लिये आशा का चिन्ह और रोजी-रोटी का साधन है। नये मोड़ के नये विचार से हमें बहुत प्रेरणा मिली है। उसकी सहायता से हमें ग्राम-समाज का समग्र संयोजन और विकास करना चाहिए। कृषि-उद्योग-प्रधान समाज की नयी रचना में खादी और आमोद्योगों के महत्व को हम मानते हैं, इसलिए हम अपने आर्थिक जीवन की नये सिरे से इस तरह रचना करेंगे कि जिससे उस नव-निर्माण में इनका महत्व का योग-दान हो और समाज में सबके लिए स्वतंत्रता और समानता की स्थिति पैदा हो सके।

इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए हमारे सारे प्रयत्न सफल हों, यही हमारी कामना है।

नोट—यह घोषणा ६ अगस्त १९६१ को भारत के गाँव-गाँव में गाँववासियों में से एक व्यक्ति एक-एक गाँव पर दे तथा गाँव के लोग मिलकर दोहरायें।

जिे मरने गाँव गा
दोस्त विचार)
का नवसंस्करण

।

इस प्रश्न को
गो को यह सम-
को रोटी देना
आवश्यकता की
री गाँव के प्रत्येक
हू जो सामाजिक
ह चाहिए। नाम
तकने के तीर पर
न सामाजिक व्यव
हिए। अन्वरी
विक्रि विभा विने
। है। पर समाज
। प्रकार की मन-
। प्रत्येक की वच
। पर प्रभु का भाग से
। प्रकार का संरक्ष
। एक हन उपर
। को प्राय न गाँव
। वही हो हो सडा
। बुद्धि में रल पर
। मुँज, कुल वन ही
। कर एक विमान
।

वही चाहिए कि यह
। मान नहीं है। लोगो
। करता होता। यह
। न काम है। परि-
। है। विविध होले
। कि और प्रोत्साहित
। र सुधार लेने। पर
। हू को विमान का
। सर्वकारों को बनने
। वही प्राय विमान
। साधारण शक्ति है।

। अब उसमें कोई
। नहीं रहा। आज की
। र, परिष्क, सारी-
। कुछ भी नहीं मिलना।
। एक लोगों को आराम
। ना पर जो सर्व होगा
। में कामोम पर कुछ
। आज की तातोव पाकर
। रदना। परिष्क यह
। अर्थन और बुद्धि, रोटी
। चले चले है। समा-
। लिए कि अमद अमद
। में। सरकार को नह
। से लगान केते हैं, जल
। विद्या के लिए दीए।
। ल बदयेंगे, सभी प्राय
। के ही सकेगा।

-विनोबा

केवल सेवकत्व, केवल नागरिकत्व, और नागरिक सेवकत्व

दामोदरदास मूंदड़ा

'सूदान-यज्ञ' के हाल के दो अंकों में शरीर घोररुई आई है सेवक की जगहपरितावा व उलकी सेवा करने की योग्यता के संबंध में मूलभूत प्रश्नों की चर्चा की है। कुछ लोगों की उनके अनुभव पूर्ण सुझावों की यथास्थिति के बारे में छद्म गद्दी साहित्य उनके मौलिक के बारे में भी संदेह होता है। यह स्वाभाविक भी है। मनुष्य जब किसी व्यक्तिगत कार्यक्रम का पूर्ण उत्तरदायी बनता है तो उसी क्षण ही वह अपने को सभ्यता के लिए वह कुछ ठरकें दार्शनिक सूझों को प्रस्तुत करने का प्रयत्न करता है। यही घोररुई आई के सुझावों पर हमें पूर्वोक्त रहित होकर व्यक्ति की स्वीकृति के आधार पर सोचना चाहिए।

अभी-अभी में गत संवत् के श्री अर्नेस्ट बोटर का वचन साया है। उन्होंने हमारे कार्यकर्ताओं के जीवन-निर्वाह के साधन के बारे में जानने की इच्छा प्रकट करते हुए एक मासिक सवाल पूछा है कि हमारे विचार वरहा के मुद्दान के कार्यकर्ताओं का निर्वहण क्या है? उक्त लेख में प्रश्नोत्तर के लिए यह कुछ ठरकें दार्शनिक सूझों को प्रस्तुत करने का प्रयत्न करता है। यही घोररुई आई के सुझावों पर हमें पूर्वोक्त रहित होकर व्यक्ति की स्वीकृति के आधार पर सोचना चाहिए।

अभी-अभी में गत संवत् के श्री अर्नेस्ट बोटर का वचन साया है। उन्होंने हमारे कार्यकर्ताओं के जीवन-निर्वाह के साधन के बारे में जानने की इच्छा प्रकट करते हुए एक मासिक सवाल पूछा है कि हमारे विचार वरहा के मुद्दान के कार्यकर्ताओं का निर्वहण क्या है? उक्त लेख में प्रश्नोत्तर के लिए यह कुछ ठरकें दार्शनिक सूझों को प्रस्तुत करने का प्रयत्न करता है। यही घोररुई आई के सुझावों पर हमें पूर्वोक्त रहित होकर व्यक्ति की स्वीकृति के आधार पर सोचना चाहिए।

एक जनमानस मित्र मोहनदास करमचंद गांधी नाम के एक साधारण व्यक्ति को 'मन टू ली एक्ट' नाम की एक छोटी सी पुस्तिका प्रकाश करा है। जोर गांधी जी उचित संस्कार देना चाहते हैं। परिणाम यह होता है कि उनकी संवेदनशीलता और ईमानदारी उन्हें मजबूर करती है कि उनका प्रेम और कारोबार घटती जीवन के उदात्त भाव से दूर हटाकर देहाल है। असाधारण साधारण में से भाषा आय।

बीज नहीं जातना कि गांधी स्वयंसेवक के लिए परिचित हैं। जोर हमारे सामाजिक राजनीतिक जिम्मेदारियों का भार वहन करते हैं। जोर मानवता के सिद्धांत का धारण करने के लिए वे अपना अस्वास्थ्य में अपने को बुराकर बा भगी बचाने में बीरव भा अनुभव करते हैं। जोर उनका यह दावा केवल साधारण नहीं था, उनके निःस्वार्थता के प्रकट हुआ था। जोर हीन नहीं बलता कि धर्म की प्रशंसा प्रकट करने के लिए अनेक पंथों की (जिनके के मान्यता संस्थाओं को तब तक संतोष नहीं हुआ जब तक कुलाल केकर खुद सेती में काम करने के लिए वे तब तक निकल नहीं पडे।

जोर हीन नहीं जातना कि मनुष्य धर्म के आवाहन पर आयम छोड़कर परिचर्य है। लिए मजबूर होने के समय तक मनुष्य धर्म के पुरोहित स्वयंसेवक के आधार पर सोचने से लेकर मिट्टी होने तक की सभी निष्ठाओं में घटती घटती बहते रहे, ऐसी ही जोर पकरी-सी मनुष्य का जोर सुधारने के लिए ऐसी मजबूर नहीं करके तब तक दिन भर परिचर्य करते रहे, जोर काठ पटा मून करता-है प्राप्त होने वाले धर्म के पंथों पर ही मशीनों जीवन निर्वाह करते रहे।

जोर हीन नहीं जातना कि मनुष्य धर्म के आवाहन पर आयम छोड़कर परिचर्य है। लिए मजबूर होने के समय तक मनुष्य धर्म के पुरोहित स्वयंसेवक के आधार पर सोचने से लेकर मिट्टी होने तक की सभी निष्ठाओं में घटती घटती बहते रहे, ऐसी ही जोर पकरी-सी मनुष्य का जोर सुधारने के लिए ऐसी मजबूर नहीं करके तब तक दिन भर परिचर्य करते रहे, जोर काठ पटा मून करता-है प्राप्त होने वाले धर्म के पंथों पर ही मशीनों जीवन निर्वाह करते रहे।

जोर हीन नहीं जातना कि मनुष्य धर्म के आवाहन पर आयम छोड़कर परिचर्य है। लिए मजबूर होने के समय तक मनुष्य धर्म के पुरोहित स्वयंसेवक के आधार पर सोचने से लेकर मिट्टी होने तक की सभी निष्ठाओं में घटती घटती बहते रहे, ऐसी ही जोर पकरी-सी मनुष्य का जोर सुधारने के लिए ऐसी मजबूर नहीं करके तब तक दिन भर परिचर्य करते रहे, जोर काठ पटा मून करता-है प्राप्त होने वाले धर्म के पंथों पर ही मशीनों जीवन निर्वाह करते रहे।

बादि-बादि सूत्रों का आधार देकर हम निम्नोक्त की गणना करके प्रकट करते हैं। मूल ज्ञाते हैं कि विनोबा की भावों में संस्कारों में जो यह सब भर दिया है वह जो 'अकस्मात्' नहीं है, उसके मूल में विनोबा की पुरी तौल तर्कों की अग्रिमता और जो कड़ी उपस्थिति है। हमें ऐसी उपस्थिति करने की प्रेरणा नहीं होती। विनोबा के श्रद्धाधाम में निहित कठोर प्रतीति के अन्तर्गत उनकी वाग्यम को सत्यात करवाया की नकल करने का प्रयत्न करते हैं। मारुत का जनमानस वहादी प्रचारात्मक बुद्धि के परिचित होने के कारण उक्त प्रति विचार आइए होने की स्थिति में नहीं है, जब तक हम अपने वैयक्तिक भाव से माने केवल प्रचारात्मक बुद्धि से हटकर उन्मुख उरु अथवा अर्थव्यवस्था जीवन की अपने हारे काम का धारा नहीं बना लेते। यही हमारा धर्म माननीय धर्मिक के धर्म की तरह यह नहीं होगा—उस वक्त में कीर सिद्धि होगा। उक्त के भीतर ज्ञाति की संस्थाओं: निहित है।

यह हमारा जीवन एक सामान्य नागरिक है। माते सर्व सामान्य जनता के सामने धर्मोक्ति पंदा प्रकट कीर सख होता तो मात्र की तरह हम बनता के केवल यथागत विष्णु अत्यन्तशीघ्र बुद्धि जीव नहीं बने रहें—हमारा जीवन सर्व सामान्य के लिए परिवर्तनकारी धर्म की साधना रहेगा।

यह हमारा जीवन एक सामान्य नागरिक है। माते सर्व सामान्य जनता के सामने धर्मोक्ति पंदा प्रकट कीर सख होता तो मात्र की तरह हम बनता के केवल यथागत विष्णु अत्यन्तशीघ्र बुद्धि जीव नहीं बने रहें—हमारा जीवन सर्व सामान्य के लिए परिवर्तनकारी धर्म की साधना रहेगा।

यह हमारा जीवन एक सामान्य नागरिक है। माते सर्व सामान्य जनता के सामने धर्मोक्ति पंदा प्रकट कीर सख होता तो मात्र की तरह हम बनता के केवल यथागत विष्णु अत्यन्तशीघ्र बुद्धि जीव नहीं बने रहें—हमारा जीवन सर्व सामान्य के लिए परिवर्तनकारी धर्म की साधना रहेगा।

यह हमारा जीवन एक सामान्य नागरिक है। माते सर्व सामान्य जनता के सामने धर्मोक्ति पंदा प्रकट कीर सख होता तो मात्र की तरह हम बनता के केवल यथागत विष्णु अत्यन्तशीघ्र बुद्धि जीव नहीं बने रहें—हमारा जीवन सर्व सामान्य के लिए परिवर्तनकारी धर्म की साधना रहेगा।

यह हमारा जीवन एक सामान्य नागरिक है। माते सर्व सामान्य जनता के सामने धर्मोक्ति पंदा प्रकट कीर सख होता तो मात्र की तरह हम बनता के केवल यथागत विष्णु अत्यन्तशीघ्र बुद्धि जीव नहीं बने रहें—हमारा जीवन सर्व सामान्य के लिए परिवर्तनकारी धर्म की साधना रहेगा।

सुक्ति

हैल एक बार मनुष्य है वरार में उत्थित है और रोकर अपनी परिचर्य करने लगी।
 'मनुष्य' ! जो भी मुझे देखते हैं उनके को दीरहा है, मेरी रसा कीरि।
 मनुष्य मनुष्यसे और मोझे—
 'पत्नी' ! यही वेप चीराम्य है। और यही वेरी मुनि है।

विनोबा

[पिछले दिनों विनोबाजी अपनी धरयात्रा के दौरान में थीं जोरेंद्र साईं के नांव पहिलया पहुंचे, वहाँ जोरेंद्र भाई स्वयं जंग प्रतिष्ठ विकास के लिए सर्वजनसाधारण-धर्माचार का प्रतिस्पर्धी प्रयोग कर रहे हैं । इसकी ध्यान में रखकर विनोबाजी ने जो विचार प्रकट किये वे नीचे विद्ये जा रहे हैं -]

पहली

“सबसे ज़ेरी प्रेम सागराई”, इस अर्थ में प्रेम भी शक्ति का स्रोत/स्रोतों में विकसित किया है । अक्षुण्ण प्रतिस्पर्धण प्रये मे, साधनीय के लिए धौर्य-वाचक के नीच बँदायी हो रही थी । धरयात्रा थी कुल्लु वर्हो टारूने, इसके लिए चर्चा बहली । धुतपण्डु की भ्रातृता के बावदाह भी कमी हो नहीं था । लेकिन धरयात्रा ने कहा कि नहीं, हम सिधुर के घर पहुँचेंगे, गरीब के घर जायेंगे । जंग घर में उनको खाने में सिर्फ़ तरकारी मिली, वह उहाँनें शायी । “साय सिधुर घर जायी ।” यहाँ ? इसलिए कि सिधुर की परिवारा धरयात्रा बद्धता चाहते थे, भयत भी तपिन बद्धता चाहते थे । भयभक्त के लिए बद्धता की कमी हो नहीं थी । राजमहल भी उनके लिए रक्षा था । लेकिन के अन्तर मर्दान में ठहलेंगे तो भयन की महिमा में हासक नहीं बद्धी । धरयात्रा की प्रतिष्ठा ही लोग शक्ति रही, लेकिन सिधुर के घर वे रहे तो सब लोग समझ गये कि सिधुर की प्रतिष्ठ अपना महिमा ही । इस उद्देश्य मन्तन की ताकत बद्धति का काम धरयात्रा में किया ।

दूसरी

राजमहलमूल सामर्थ्य के लिए महान्ना गापी इंग्लीश गये थे । उनके रहने के लिए वहाँ महल तैयार था । वे सिन्धुस्तान के प्रतिनिधि बन कर वहाँ गये थे । बादगाह ने उनके साथ बाग़ की, लेकिन गापीजी ने वहाँ अपना कदम नहीं किया । समर्थन में जो सबसे गरीब बसती थी, प्रियकी जेया होनी थी, वहाँ वे ठहरे । उनका हिंदू पहलू का कि तरीकों की ताकत बढ़नी चाहिए ।

तीसरी

थी काम कमी जोरेंद्रसाईं कर रहे हैं । लोग उनके पूछते हैं कि आयका समर्थन तो दलपार से भी है और दूसरे बांगे से भी है । कहीं से भी पैसा ला सकते हैं । लेकिन जहाँसे लोगों के आधार पर रहने का मन दिया है । वह इसलिए नहीं कि लोगों पर कोई भार पड़े, बल्कि इसलिए कि लोगों का ताकत बढ़नी चाहिए । एसी हेतु में वे यहाँ रहे हैं । लोगों की ताकत बढ़ानी है तो लोगों में पुनर्विजन जाने की योग्यता को ज़रूरी कर रहे हैं । एक अन्नायाम बाँटना, सब लोग इसके भी माने पायेंगे ।

जन् १९४९ में हिस गापीजी के साथ वे, तभी से १९४९ में हिस गिन्नुल देहाण-देहाण । बन बनायी है और उनको

ताकत देने के बनेगे, यह हमें सोचना है । हम उनके सामर्थ्य में ५५ साल पहले थे । वह जो उनको चुन थी, वह सिन्धी महल्लु की थी जो भी धरयात्रा थी, उचना बहुमूल्य वस्तु हमें हो रहा है ।

जोगी के पास जानकर उहाँ के साधनों की दोलत और ताकत फीले बन सकटोई, यह हमें बचना चाहते हैं । सरकार के उन्नत से मरद मिल सकनी है, लेकिन गाँव-गाँव के लोग गुलाम बनते, जो गुलाम गाँव का आजराद देश रहेगा । आज हर बात में सरकार को तरफ़ ताकते हैं । मरद ऐसा ही चपला रहा जो लोग देखते-देखते गुलाम बनते । देश कभी आधार नहीं बन सकेगा । सिन्धी लोग कदात्रा सभों का ध्यान रखना है ही रहेगा । गाँव-गाँव के लोग क्या देश पायेंगे ? देश को कीज चयात्रा ? इसलिए राजमज में यह जर्नी है कि हरएक गाँव कपनी ताकत पर सहा हो । मरद के हर गाँव को वे ताकते हैं, उनको ही वे आपके गाँव को वे । मान लीजिये, आपके गाँव में जोरेंद्र साईं बँधे हैं, वह हालत में समार गाँव के लोग अपने गाँव पर काम नहीं होने तो देश की ताकत नहीं बढ़ेगी । इसलिए समार सह गाँव को तपिन कला है जो अपने गाँव पर काम ठो सहा । है और यदि ताकत नहीं बढ़ेगी तो गाँव के लोग काउठको बने रहेगी और एक तरह के गाँव का नुकसान हो होगा । जिनकी प्रयोग नहीं मिली है, उनको ही मन्तन बाँट दें तो सागाधरक कक्षा बनेगा । इस बाण्टे

प्राप्ति-स्वीकार

हमारा राष्ट्रीय विचार : लेखक की वाकचक्र बंधारी; प्रकाशक

भूषण ३११	मुस्य ६६९	कला
मानसला की सुचरचना :	लेखक	डा० रिटिरिज कोरोलिन
	भूषण ३०५	मुस्य ६६९
साहित्य का चर्चा :	भूषण ५५	मुस्य ६६९
बनस संघ का मुहूर्तकरण :	भूषण १२२	मुस्य ६६९
आने का कदम :	भूषण १००	मुस्य ६६९
व्याख्या :	सोचसाहित्य विवेकोण	
	भूषण ७००	मुस्य ७
पत्र व्यवहार और जना उत्तर :	थी पुनर्वचन	५४४
	प्रकाशक	मन्तन मन्तन
मुस्य ३५३	कला	
	भूषण १५५	मुस्य ६६९
सत्य पत्र, मे ३०	हस्ताक्षर	सोचसाहित्य
	भूषण २५५	मुस्य ६६९

असम के वारहवाँ दृश्य सम्मेलन सम्पन्न

मन्तन राज्य का बारहवाँ दृश्य सम्मेलन पिछले ८-९-२० और ११ सप्टेम्बर, जो ज्योहार-बन्दीला में सम्पन्न हुआ इसमें लगभग के लगभग २०० कार्यकर्ता ही भागलिया । सम्मेलन का आयोजन गांधी धार्योग प्रदर्शनी के उद्घाटन हेतु ।

दि ९ कारकी को प्रमाण देते हैं बाद मन्तन सार्वभौमिकता का आंदोलन की बैठक हुई । सार्वभौमिकता स्थान प्रतिष्ठि का प्रतिवेदन हुआ और सिन्धी के मन्तन मन्तन पर उद्घाटन सभों का कार्यक्रम बनाया, विनोबाजी के हस्त प्रमाण में ५०० सार्वभौमिक सार्वभौमिक, १ सार्धौ लीनक १५ मुस्य मन्तन के वाहुक बंधने का निर्णय लिया ।

दि १० कारकी को असम सार्वभौमिकता का प्रतिवेदन हुआ यह भी पिछले वर्ष का कार्य दिवस और प्रमुख विनोबाजी के कार्यक्रम के बारे में चर्चा हुई । सम्मेलन में गाँवी, विनोबाजी, सार्वभौमिकता के बारे में विचार बंधनी के सार्वभौमिकता । संस्था साधना के बाद असम सार्वभौमिकता का प्रतिवेदन हुआ मिथ में लोक सेवा से विनोबाजी के भी भागलिया । पानिदेवन प्रविधान के सार्वभौमिकता हुई ।

दि ११ कारकी को मन्तन के सार्धौ मन्तन में बैठक के सार्वभौमिकता, सार्वभौमिकता के बारे में चर्चा हुई । प्रिन्तमें असम सार्वभौमिकता का प्रतिवेदन हुआ । लोक प्रमुख सार्वभौमिकता (सर्व मन्तन सेवा संघ, असम संघ और सार्वभौमिकता का असम सार्वभौमिकता में सिन्धी सार्वभौमिकता तथा प्रमुख सार्वभौमिकता का सार्वभौमिकता करने का निर्णय हुआ । सार्वभौमिकता 'सार्धौ मन्तन' सार्वभौमिकता 'मन्तन मन्तन' नहीं लानीम, 'हिस-मोताकन', 'सार्धौ सार्वभौमिकता' का विचारों पर साधन हुए । असम सार्वभौमिकता की और से सार्वभौमिकता पोटर, पुनर्वचन, बुनारवा साधारण मिथ और मन्तन के सार्धौ निर्वाचन के बारे में कार्यक्रम बनाया गया ।

१९ कारकी को वाहु के सार्धौ सार्वभौमिकता मन्तन में मुतामिल का सार्वभौमिकता बनाया ।

रोखा

थी सार्वभौमिकता प्रवेश सिन्धी सार्वभौमिकता के चर्चा के अनुसार १५ पिछले दिनों के सार्वभौमिकता में सार्वभौमिकता में सार्धौ सार्वभौमिकता प्रवेश किया है । अब ठहरे सार्वभौमिकता का ही सार्वभौमिकता है । पुनर्वचन सार्वभौमिकता के लिए २० पुनर्वचन किया है । ४ मुनी सार्वभौमिकता सार्वभौमिकता हुए हैं ।

अशोभनीय पोस्टर्स हटने चाहिये : देश के विभिन्न शहरों की माँग

हिसार—जिला सर्वोदय मण्डल की चरद्री मास की रिपोर्ट के अनुसार इस मास में मच्छरबूझ कार्य यद्वा कि अंततः तथा गांधी अभियान केन्द्र की ओर से अशोभनीय पोस्टर तथा धाराय बंधी के सम्बन्ध में एक बुलट निकाल गया तथा समा हुई। इस बुलट में 'धर्मिक, लम्बा-हल तथा राजनैतिक सभी प्रकार के नर-मात्री सेक्रेणों की वादाय में शामिल थे।

कानपुर—विदेश एव प्रपञ्चों के शानपुर के नागरिकों के नाम से एक अजीब की नई नई विज्ञापन बहाग है कि विभिन्न मालिक उन अशोभनीय पोस्टरों का प्रदर्शन रोकना वे बन्द कर दें और इस कार्य की घोषणा बनना में भी कर दें,

विशेष जन्मा गौरव बढ़ाए और बनना को व्यय होगा।

आगरा—आगरा नगर में २२ चर-वती को एक बहिरे सभ्यता का श्रावो-कष जिया गया। इस बहनों में से १० बहनें ऐसी निचरी जिन्होंने एक विनो-या पर पर लगे नये चित्र को हटाने के लिए सहायक का भीषा उठाया। जिस क्षेत्र में सभ्यता हुआ या उस क्षेत्र को चार मागों में बाँट कर यदि दसाहरी सुखते में बैठें और श्रोत-व्यवस्था कर चारों सभ्य-रूप से करने का प्रयत्न बनाया।

पुर्णिया—पुर्णिया नगर में एक छायाचित्र-कमिटी का गठन एम। ए. होने वाला है। जो जन-अपन की संरक्षी और

सुगृहियों के निवारण का काम करेगी और अशोभनीय विनोय पोस्टरों और गरी-गाणों के हिलाने दायि एवं मीचों देने वाला है।

बिहार—बिहार में स्थानीय मछिष्यों ने विनोया मछिष्यों से निवारण करे पोस्टर न हटाने का अग्रोध किया। इसके लिए बहनों ने उवाची पुरा महिलामंडल का एक संयोजन कायम हुआ है।

पटना—पटना श्रोत-विष मंडल के तलायचान में नागरिकों, दुबारा और प्रकृति-विज्ञान कार्यकर्ताओं का एक बुलट निकला। जिसमें लोगों ने अग्रद आचरण, गये गाणों, अग्रद प्रदर्शनों तथा अशोभनीय चित्रों एवं पोस्टरों का बहिष्कार करने

और उनकी होली करने का अग्रोध किया गया।

गाजीपुर—गाजीपुर की नागरिकी एक तथा कानूनी कानूनी बली, तथा-पालिकास्थान की अग्रधरा में हुई किन्ने बन्दे पोस्टरों और चारों चारों पर निवारण की दृष्टि से नागरिकों की एक समिति का गठन किया गया। इसमें गये पोस्टरों और गाणों के प्रसार के कारण निरतो हुई निरिबना पर तीव्र प्रकट किया गया।

कफोला—कफोला में अशो-नीय पोस्टरों के निवृत्त जयजयलक्ष टैपार बले का कार्यक्रम बनाया है। इस प्रकार का आन्दोलन शीघ्र ही इस जिले में चलाय थापगा।

देश के विभिन्न भाषाओं के साहित्यकारों की गोष्ठी

अ० मा० सर्वोदय संघ के प्रधान-निष्ठा की ओर से अग्रद चार के साहित्य-केवियों की भाषा दिनांक १५, १६ मार्च, १९११ को साधना-केन्द्र, काशी में श्री निरयोरी हरी की अग्रधरा में सम्पन्न हुई जिसमें विभिन्न भाषाओं के साहित्यकार उपस्थित थे।

समा में श्रोत-साहित्य के निर्माण, सम्पन्न तथा प्रसारण के नियम पर अग्र-समर्थ हुए। साहित्यिक के प्रसारण की दृष्टि, प्रधानतः संवर्धित स्वायत्तारिक पद्धत, पुराणिक विनोय पर उपस्थित सभ्यता में अग्रने-आग्ने विचार रहे।

देश-विदेश की विभिन्न भाषाओं में उत्तम साहित्य का आदान प्रदान, इसके लिए प्रयो के चरण व अग्रधरा की सभ्यता, इस सबके लिए विभिन्न भाषाओं और विभिन्न विनोय का चलाय करने पर सहायक मण्डल का गठन, श्रोत-व्यवस्था के संवर्धित एक साहित्यिक दिवसी मालिक पत्रिका का प्रकाशन, देश की विभिन्न भाषाओं, से सबके तो दिवसी भाषाओं में भी, श्रोत-व्यवस्था संवर्धित अग्रधरा-प्रतिरुल को भी प्रकृति-व्यवस्था प्रकृति-व्यवस्था, उनकी जानने-गोरी देना-गोरी एक "शारदेय" का प्रकाशन, आदि गुरों पर निवारण के चरण हुए।

शुक्रासपुर—श्रोत-व्यवस्था की ओर से चरद्री मास के प्रारम्भ में श्रोत-व्यवस्था के निमित्त शिवाय भी प्रस्तावित प्रकृति के लिए विनोय प्रकृत हुए। श्रोत-व्यवस्था प्रथम पदनामोट के निर्माण की दिशा में भी जवादा प्रथम रहा। स्वायत्त विचार प्रकाश की भी चरण चला। सहायक तथा नगरपालिका से भद्र पोस्टर हटाने की अग्रधरा की गई।

सभ्यता प्रथम कोशिकी के दो सहजीवन चित्र

सर्वोदय-आन्दोलन की गति तेज चले के लिए आग्रधरा है कि बहनें इसमें अग्रधरा रहिये रहिये रहिये। सुखी की बात है कि सहाय बहने में इस उर-व्यवस्था की पथन में सहाय इस साल गरीमों में ही सहजीवन चित्र कल्पी स्वाभय कोशिकी में अग्रधरा रहिये हैं।

प्रथम चित्र दि० १० मई से २३ मई तक होनेवाले है जिसमें श्रोत-व्यवस्था की कल्पना किया थापगा। देश में इस दो बहनों को साथ में का सवेगी। बहनों की दृष्टिकाल से लिए आग्रधरा की ओर से कालिका का प्रथम होगा। साहित्यिक विनोयों बहनें आग्रधरा के श्रोत-व्यवस्था के कार्यक्रम में, अग्रधरा-प्रथम में, वैचारिक

चरण में लक्षित रूप से भाग ले सकें, जिसके श्रोत-व्यवस्था की उसके दृष्टिकाल को पूर्णतया समझ सकें।

दूसरा चित्र दि० १ जून से १३ जून तक चलना थापगा, जिसमें केवल चित्रित बहनें भाग लेंगी। इस चित्र में चार धरे बहनें-प्रथम में श्रोत-व्यवस्था के विभिन्न विनोय पर चर्चा होगी। इस चित्र में श्रोत-व्यवस्था, श्रोत-व्यवस्था, श्रोत-व्यवस्था आदि के कार्यक्रम को भी स्पष्ट किया गया है।

बहनें इस तरह के चित्र में भाग लेकर श्रोत-व्यवस्था की निवारण को सहाय कर सकना में स्वास्त कर सकें, यही चित्र का मुख्य उद्देश्य है।

सर्वोदय-सम्मेलन के अध्यक्ष श्री जयप्रकाशजी होंगे

१८, १९ और २० अप्रैल को होने वाले देश-व्यापी सर्वोदय-सम्मेलन के अध्यक्ष श्री जयप्रकाश नारायण होंगे। यह सम्मेलन आग्रधरा में वैचारिक के नवरीक उत्तरक (बेजोरे) में ही रहा है। सम्मेलन के पूर्व १३ से १७ अप्रैल तक सर्वोदय संघ का अग्रधरा की होगी।

इस अंक में

कमिनी मांजने का आधुनिक अभिगान	१	विनोय
कार्यकर्ताओं के बहनों की तालीम	२	शिखर
प्रेम से ही सत्य दल होगा	३	विनोय
विचार प्रवाद	३	विनोय
आत्माही श्रोत-व्यवस्था का रुत-व्यवस्था	४	"
कार्यकर्ताओं का एक दृष्टि आगने	५	उत्तराकर-व्यवस्था
लेखक-नागरिक लेखक-व्यवस्था	६	श्रोत-व्यवस्था
विनोय-व्यवस्था के कार्यकर्ताओं की ओर से	७	सुख्य देशांगि
अग्रधरा की पद्धती-संस्था	८	सत्य-व्यवस्था
साहित्य-समीक्षा	९	श्रोत-व्यवस्था
सर्वोदय-सम्मेलन बहनें की गिनती	९	विनोय
समाचार	११-१२	

संघ की प्रथिवेदान में सत्य लोक

सत्य-लोक-संघ के सभी कार्य-क्रमों में सत्य लोक का प्रथम भाग ले सकते हैं। सर्वोदय-संघ के सभी कार्य-क्रमों में सत्य लोक का प्रथम भाग ले सकते हैं। सर्वोदय-संघ के सभी कार्य-क्रमों में सत्य लोक का प्रथम भाग ले सकते हैं।

सर्वोदय-संघ के सभी कार्य-क्रमों में सत्य लोक का प्रथम भाग ले सकते हैं। सर्वोदय-संघ के सभी कार्य-क्रमों में सत्य लोक का प्रथम भाग ले सकते हैं। सर्वोदय-संघ के सभी कार्य-क्रमों में सत्य लोक का प्रथम भाग ले सकते हैं।

सर्वोदय-संघ के सभी कार्य-क्रमों में सत्य लोक का प्रथम भाग ले सकते हैं। सर्वोदय-संघ के सभी कार्य-क्रमों में सत्य लोक का प्रथम भाग ले सकते हैं। सर्वोदय-संघ के सभी कार्य-क्रमों में सत्य लोक का प्रथम भाग ले सकते हैं।

विभिन्न उप-समितियों का गठन अग्रधरा में श्रावण-समय सेवा संघ की दिनांक २२ मार्च, १९११ की बैठक में कार्य-संयोजना की दृष्टि से विभिन्न उप-समितियों का गठन किया गया है।

पदयात्रा-समाचार

बिनोबाजी का ३१ मार्च से ७ अप्रैल तक निम्न स्थानों पर

पड़ाव रहेंगे	
३१ मार्च ११	दिवा
१ अप्रैल ११	मोमान
२ " ११	समरिया
३ " ११	नरकापुर
४ " ११	खण्डापुर
५ " ११	बाँर हट
६ " ११	पल्लवारी
७ " ११	बाहुकवाड़ी
स्वाधीनता-समिति का गठन	गठन
(अग्रधरा)	

सूदान यज्ञ

साप्ताहिक

सूदानयज्ञमहल्लक्ष्मणश्रीप्रधानाडिहिसकाज्जातिरिक्तार्यदयानाहक

संपादक : सिद्धचरण दहला

७ अप्रैल '६१

वाराणसी : शुक्रवार

बर्ष ७२ अंक २७

विश्वशांति और संयुक्त राष्ट्र-संघ

• पिनीवा

कभी दक्षिण भारत में मद्रास में युद्ध-विरोधी शांतिवादीयों की परिषद हुई थी उसमें दुनिया के १५,२० देशों के लोग आये थे और उन्होंने अनेक विषयों की चर्चा की और वृष्ट प्रस्ताव पास किये उनमें से एक प्रस्ताव यह भी था कि विश्वशांति सेना स्थापना हो। उस प्रस्ताव में मैं बड़ा गया था कि विश्वशांति सेना की आवश्यकता यह परिषद महसूस करती है। चन्द दिनों से एक अमेरिकन भाई मेरे पास है। उन्होंने मुझे पूछा है कि विश्व शांति सेना किस प्रकार बनेगी, उसकी प्रक्रिया क्या होगी, कौन यह सेना बनायेगा ?

आज दुनिया में एक संस्था है जिसे युनाइटेड नेशन्स—संयुक्त-राष्ट्र-संघ कहते हैं। दुनिया के देशों के मजदूर भी इसका उसके सामने खड़े जाते हैं। कुछ फैसले उसमें होते हैं और उसमें कुछ मदद भी जाती है। बैसे तो सेना की मदद की जाती है। जिन राष्ट्रों का बह समूह है उनमें कई राष्ट्रों के पास बहुत ही ज्यादा खजाने का सामान है। मसलन-रूस, अमेरिका, इंग्लैंड, चीन इनके पास सेना और सामग्री बहुत है। राष्ट्र-बंधन विषयों का संकलन है, ऐसी यह संस्था है। इस राष्ट्रों के मांस इगलों का संकलन इस करने के लिये और सब राष्ट्रों में शांति की स्थापना करने के लिये वह संस्था भी अपनी एक छोटी सी सेना रखती है। वह छोटी सी सेना के बराबर कोई टास्क फ़ोर्स नहीं रख सकती है। जहाँ जरूरत है वह पड़ती सेना जाती है।

बदर ही यह प्रश्न कि किन देशों के पास कहीं पनाह सामने है, उनमें सेह और शांति की स्थापना के लिये भी प्रतिनिधि उठ खपा में आने हैं वे क्या कर्णों रखें ? उनमें क्या महत्त्व लिखलगा ? अनेक राष्ट्रों की सेना और चीज में यू० नो० भी भी सेना देना कोई माने नहीं रखता। यह राष्ट्र समूह शांति की दृष्टि से ही स्थापित हुआ है इसमें कोई एक नहीं है। भगवते यह बहुत कुछ नहीं कर सता है, योधा बर उपता है फिर भी उपता एतदा सक्ता है और उनका आन की दुनिया की हालत में कुछ उपयोग भी है। पर कि मसलों की चर्चा नहीं हुआ करती है, उनका उद्देश्य शांतिरक्षण का है, इसमें एक नहीं है। सचचाई के साथ शांति का उद्देश्य रखते हुए और बातें हुए भी कि वे राष्ट्र बहुत ज्यादा कर्णों से लैस हैं। चीज में उनको भी अपनी सेना रखने का इच्छा रखना महत्त्व नहीं है कि कर्ण का काम नहीं कर रही है। दिव्य शास्त्रों के शांति की स्थापना को केवल अन्त ही पुत्री काम करती है। शांति की स्थापना सेना की मदद से करे, यह एक पुराना विचार होता है। बैसे ही सब राष्ट्र ऐसा रखे और दुनिया के बंधन के लिये यू० नो० भी सेना रखे यह एक परिहास होता है। अगर कोई भी राष्ट्र सेना नहीं रखे और सिर्फ यू० नो० सेना रखे तो भी परिहास होगा

केवल वह छोटा परिहास होगा क्योंकि शांति की स्थापना या राष्ट्र का बंधन सेना से नहीं होता है। उनका कार्य होता है इसलिए परिहास होता है। अगर यू० नो० सेना रखे और कहीं राष्ट्र अपनी सेना रखने से भी छोटा परिहास होता है, इसलिए आज बर्ष-बर्ष राष्ट्रों की बर्ष-बर्ष सेना रखे और राष्ट्र समूह भी सेना रखे यह बहुत ही बड़ा परिहास मानना होता है।

हमारे और आगे सामने जो उच्छा

लोगों का मत इन कर्णों के साथ है। विस्तरा अर्थात् होता अर्थ यू० नो० की नैतिक सत्ता है वेनवाले सत्ता होती और उनके द्वारा विश्वशांति का सामोका होगा। यह क्यों नहीं हुआ ? इसलिए नहीं हुआ कि जिनके हाथों से यह होना था उनमें हाथ पर हुए हैं। वे तरह तरह के कर्णकार बर रहे हैं फिर भी सेने रखने की इच्छा है सचचाई के साथ रखती है

दुष्ट राष्ट्र के कर्णकार यानी कुछ राष्ट्र ही शांति रखलिये चाहते हैं कि शांति के बिना विश्वास होना नहीं है। ऐसा वे मानते हैं। विश्वास के लिये शांति बरती है इसीलिये वे शांति चाहते हैं। कुछ इसीलिये शांति चाहते हैं कि उनके पास वे कर्ण नहीं है जो संयुक्त राष्ट्र राष्ट्रों के पास हैं और योद्धे ऐसे हैं जो शांति रखलिये चाहते हैं कि वे देशों में अगर दस्ता उपयोग कहीं हुआ तो दुनिया का सामना होगा ऐसा उर उनको है। इन दिनों शांतिवादीयों का एक ऐसा पक्ष निरुद्ध है जो पेशवा है कि आंग्लिक संस्था न बनने साथ, उनका प्रयोग न किया जाय। मना जाय है कि वे लोग शांतिवादी हैं। वे शांतिवादी हैं लेकिन सचचाई के बारे में उनका निश्चय नहीं है वे अन्तर युद्ध बर नहीं रख सकते हैं बहुत वे राष्ट्र ऐसी बात रखलिये करते हैं कि आर सके के बाद उन, यानी शरणार्थक कर्ण वे चाहते हैं। वे साथ साथ एक चले आने हैं और वे दाख आये चले ऐसा वे

चाहते हैं। वे इतने हैं कि अगर आंग्लिक एक रहते तो उनकी कुछ नहीं चलती। नहीं मान्य कि विश्व तरह यह कुछ प्रतीत हुआ, १०-१२ लाख में यह लोग रहा है कि शांति की आंग्लिक धर्मों से उतना उतना नहीं है शिवाय शरणार्थक और कर्णवालों से है। वे कर्ण शक अर्थात् को सामने नहा आने देंगे। आंग्लिक शांति दुनिया के सामने ऐसा प्रस्तुत करने हैं कि वा तो दुनिया का शांति करो या शांति की स्थापना करो। इस वाले उद्देश्य के सामने यह दो विश्व लड़ने करते हैं।

इसलिये मैं कहता हूँ कि अर्थात् के पनाह नभदीक आंग्लिक शांति है। मैं इस विचार पर निश्च हूँ। इसका महत्त्व यह नहीं है कि आंग्लिक शांति के मध्य की प्रथम करता है। उसके प्रयोग से इसा भूतिय होती है। लेकिन मुझे दो कहना है कि आंग्लिक शांति के ही टिलफ इन नहीं है। उस शांति में हम कर्ण लोगों को सिर्फ रखना ही नहीं करना चाहिए, कि आंग्लिक शांति मयोग सब करो बिल्कुल पर भी करना चाहिए कि अन्त-अन्त सामान में छोटे-छोटे शांति का भी उपयोग न करे। स्थूल में छोटी न चले, मजबूत सिता अन्त-अन्तों को न मारे न निरं, परों तक इतनी उक्ति कि सारा सेनी चाहिए।

लेकिन आज ऐसा नहीं है। यू० नो० माने विश्व उर यह बना है उनके सदस्यों के सामने शांति के मकले शांति से ही इस दो देशों चीज शांति सामने नहीं आ रही है।

अब हमारा आला है कि यू० नो० विश्व शांति सेना स्थापना करते हैं स्वरुत अयोग्य है। उधका अन्त नोन करे। ऐसी कौन ही एकेसी है, जो विश्व शांति सेना बनाने की इच्छा अन्त लुप्त शांति और पर हमारे पास है ऐसा नहीं है।

पहल ही मोझा दे अब युद्ध-यतिनिधि परिदृश में देला प्रसार भाग होता है। एक वस्तु रहस्य है कि जिन देवों की रक्षा का ब्रह्म है, शक्ति की उन देवों के अंदर जो शक्ति सेना होनी ही चाहिए। क्या दुनिया के कुछ देवों में माय जो क्षयक शक्ति सेना है? विरहावधि के लिए ये कानिया किये कि य देवों में अन्तनी-अन्तनी शक्ति सेना से और राष्ट्रीय वीर पर एक शक्ति सेना संकल हर युद्ध में हो। उनके प्रतिनिधि-मिस्त्र एक दिग्दर्शाधि सेना संकल से। उते हम 'दिना' नहीं करुंगे। यह संकल विरहावधि सेना बनाते का अधिपति माना जायगा।

इस प्रकार का विचार में आश्रय प्राप्त कर रहा हूँ लेकिन दुःख तो सोच भी हलकर विचार करुंगे जो कुछ सेना। सोचने-सोचते समय जायगा। लेकिन ये बहुत बड़ी चीज है। उक्त जायुंगे की सेना यहाँ से विरहावधि की दुनिया में से, पैदा होना है। अन्तनी मरने को होते हैं उन मरुतों पर हम होयें और लड़ाई है। वहाँ-वहाँ अन्तनी का मौजा भाग, यहाँ मनुष्य-वध का मर। यह तो मैंने प्रत्येक देव के लिए बात की।

स्वतंत्र डाक व्यवस्था हूँ

कल मैंने कहा या हमारी पोस्ट हामी चाहिए। मामूली पत्र तो सरकारी पोस्ट के जायेंगे। लेकिन हमारी एक संस्था हो और एक मंडल हो। हमने एक दशा हर गाँव में कारी नही तो १५ दिन में एक दशा जाये। साल भर में १२ दशा जायें हर भी पड़ेगा। गाँव में हूँ काम और नालिका पत्रिका हूँ गाँव-गाँव में भेजें। एक महीना को काफ़ीसे ज़्यादा यह काफ़ीसे उक्त पत्रिका में हूँ छापीं। कल मैंने ७ दिन में एक दशा जाये की बात की थी और आज भी मैं एक महीने की पत्रिका पर भाया। केवल कलना से तो कुछ नहीं बनता। आरम्भी काम कब बनता है-नर परिशिष्टि का हमने रखर की कोजा बाज है। ५ लाख गाँव में संचोदय का संदेश पहुँचाना है, दुनिया की कुछ हज़ार हज़ार करनी है और ये दीनी चीजें एक मासिक में या साप्ताहिक में मरिष्ठ करुँ और यह देखकर हमारे वाति सैनिक गाँव-गाँव जायें। उक्तको पदकर लोगों को सहायता दें और उन लोगों की क्या क्या सुगुणवें हैं, क्या हालत है, उक्तकी रिपोर्ट करें। ५ लाख देवात है। एक आरम्भी ५५ गाँव में जायगा, जो ५ लाख गाँव में पहुँचने के लिए आपको २० हज़ार जर्मन सैनिक चाहिए। २० हज़ार वाति सैनिक इन्हें से उक्तकी उक्तके दे हमर घुमते रहेंगे और रचनात्मक कार्य करते रहेंगे तो समय का नक्शा बरुल जायगा। इतना हम आश्रय कर सकते हैं; १२ महीने में १२ दशा हर गाँव में हमारा मनुष्य जाया है और सेवा करता है तो मैं कहना चाहता हूँ कि यह बहुत ही सहाय होगा हमारे के लिए। अर्थात्

अमेरिकी पदयात्री

शान्तिवाद के लिए जीवन बिताने वाले एक परिवार की भाँकी

डा० प्रभाकर माचवे

दियारागो से ४० मील दूर मेडोना गाँव में एक बनेकर परिवार में रहने का मुझे विगत ११ करवी १९६१ को बोना मिला। वहाँ एक मां अपने हृदयरे बेटे जेरी के हर हफ्ते आने वाले पीस्टकार्ड एक तले पर लगा कर रखती हैं। जिनमें माय वाले का कर पड़ते हैं। वाति समाचार साप्ताहिक में सेन फ्रांसिस्को से मास्को पैदल जाने वाले ११ युवकों के दल की सबरें छपती रहती हैं। जेरी लेहमान की उमर २४ वरस की है और वह विज्ञान में ब्रेजुएट है। पर मेमिस्को में रहते हुए उनके मन में यह तीव्र बेदना उठी कि अंतर्राष्ट्रीय शान्ति के लिए कुछ करना चाहिए। लिटिल नामक एक व्यक्ति हम दल के प्रमुख हैं। ये लोग मित्य २० मील पैदल चलते हैं; यह में कोई घरकों का बारखाना या युद्ध सम्बन्धी कोई संस्था आती है। तो उसके दरवाने पर सभा करते हैं। प्रायःन करते जाते हैं, और साथ ही बतते हैं।

गायी की 'वैल्यग्रेड' युल्लक उक्त के साथ है। 'बर्डी'की लोय सुनते हैं, वहाँ गिरीब भी होता है। १ दिग्भ्रम से यह बतया चला। जिनोवा जाये की याद दिलाने वाला यह दल १ अमैल को (सिगो) पहुँचने-तला या। इस दल के साथ एक ट्रक 'कमिटी' कर नामवालेसेट एचयन-अधिष्ठाक अन्तनीयन समिति की उमरे चलती है; किसी चर्च के लिये में या व्यक्ति के पर पर ये लोग टकरते हैं। जो कुछ तलने को मिला जाता है, उस पर रह लेते हैं। मिलाजम्यति स्वेच्छा के ही है। इस दल के ५०० मील चल चुके हैं।

जेरी देहमान के पत्नी के कुछ अंश हैं—
 "४ सितम्बर - सैनिकीयाना-मन्त्रियों में बोला। इत्याहानी भाया थी। चलने और चलाकों में बोलने में समय था अलता है कि शोभे को समय नहीं होता। अचानक सब और विचार बदर देने हैं। अलकट हवादेवर में कहा है कि 'विश्व-सौकरिक' में प्रवति इतनीयें हो गई है कि कल्पत लोय बांग उलनीं होर सुती।"

और समानता का तंत्र है।
 जेरी बचन से धार्मिक व्यक्ति का; उलने बहुत प्राण्य बहुत है, राजनीति पर भी उलने वाच प्राण्य बहुत है। उलने युल्लक संश्रय में मीने 'गायीकी ही दल युल्लक देलौं-नाम-बाहरेसे हल कीर दोष' का रूपाधि। मेमिस्को में गया और गरीबों के साथ रहा। उक्तका करत बल था।

काम में इसका उपयोग होगा। इसका मतलब यह नहीं कि हम सरकार की पोस्ट पर अधिकार काटना चाहते हैं। हम सरकार से अन्-हकर नहीं करना चाहते। लेकिन हमारे वाति सैनिक १७ लाख युल्लो रहेंगे और गाँव की सेवा करते रहेंगे जो अन्तनी का पत्रक नहीं रहेगा। आज सैनिक को अन्तनी का साहाय्य है, यह मित्र जायगा। यह बीज हिन्दुस्तान में, कम के पत्र विद्वार में या विद्वार के एक जिले में अन्तनी में जाते हैं। हर गाँव में हमारी डाक जाती है, छाते सैनिक पत्रिका सेकर काता है, यह होगा जो अन्तन बहुत बडा काम रिया में मारुंगा।

जेरी देहमान के पत्नी के कुछ अंश हैं—
 "५ जनवरी-अविनास, अविनास, देविनास है। कुछ लोग मिला जाते हैं। बहुत विरोधी लोग मिले। जो लोग आरम्भिक प्रयोग के रोजों के विरुद्ध रहते हैं, वे अपने को बहुत अरक्षित करते हैं। न तो उनका ईसाई कैथे में विश्वास है, न लोकराही है। केवल आर-और में लीज, प्रविष्टि से रहते हैं।"

मैंने कहा-कहाँ लोग रहते हैं इत्यादि बतना उनका गया है। वहाँ लोग रहते हैं। पामासी लोग तराकों का जो हुए उलनेकर कर रहे हैं। पर मैंने मत में यह हर विधि के नीचे जो लिखा है, वही उलना सन्या कर रहे हैं। यह पीस्टकार्ड के शुरू में लिखा है 'डाकर के पीकस (पत्रों लोको) अंत में लिखा है। बीच हर इन मास्को की रिने (कालिदासी जीलर ग्राहक में प्रेस और मडा रहित)

उत्तम विषय में इस प्रकार से योजना हो जाय तो यह राजमार्ग ही होगी। सब उक्त पसंद करुँ। यह बहुत बड़ी बात मही मानी जायगी, अमर में हल उभरने वाले लोगों की परिनामक नहूँगा। इस नाम से घण्टनी की जपरत नहीं है। ये परिनामक ही होंगे, संघाती लोकी। संघी-रहस्यो की भी सेना बन सकती है। ऐसा काम किसी एक जिले में करके ब्यादेरे फिर काम आये पड़ेगा। वारे प्रालय में कर दो यह करने के नहीं होगा। यह जिले में करके दिखायेंगे तो उलना कोजा। किसी भी विचार का केवल कलना मात्र से काम नहीं होगा। पूर्णतः जिले में एक गाँव में परिदृश्याई केते हैं। ये लीज स मत सेकर बैठे हैं। ये वात दिग्दुखान में ५ लाख देहातों को मायुको जो मर है क्या? क्या के कम आरके इस जिले के हर गाँव को मरुद से मर है क्या? आपके अन्तनीय सेवक लो प्रयोग कर रहे हैं-यह लोगों की मायुम भी नहीं। इत्यदि उल्लर आर होरिये। इत्यदि मैं कहता हूँ कि क्या वे नम पूर्णतः जिले में यह काम आर पूर्ण करिये।

"१५ जनवरी-उत्कन, औरिबोना में इत्याहानी में देहियो वर बोला १५ मित्त। टोकी वर हमारी लखीरें समाचारों में से गई है पर लयापारपनों में जैसे हल पर कलम पर्वी बाय दिया है, बायकट कर दिया है। सायद बासिक का ऐसा ही इहम है। ये उम लोगों में विश्वास नहीं करता जो अब के बारे दिखायेंगे हैं। शान्तिपयतो प्रसिद्ध होना चाहिए कि यह सबको मोति है। वाची में कहा था-'कामर की अहिंसा माहिंसा नहीं।"

उन लोगों का कार्यक्रम है, जो पैदल म्यूपाक तक पहुँचाना। फिर हवाई बल से लगना जाया। यहा के सारे यूरोपी लक्षणापक करते हुए मास्को पहुँचाना। ये लोग किसी भी देव के अवाधानम लक्षणी मित्तकों की ओर से यदि विरोध हो, तो उन ही अहिंसक अग्रहार कार्यतें। इन लोकर-वाची में इस अन्तुदुख आरंभकार को देख कर तुलने बहुत आश्चर्य और आनन्द हुआ अमेरिका में यह पहला परिदृश होय मिला, जिनके पर धारण का अन्त-कार नहीं होता। इस देव में देला आश्रय का मैं पाया आज है जेरी ने अवाधानम शान्तिवाद के लिए जीवन बिताने का मत लिखा है। उन लोगों का नारा है—

(विद्वानगर्भ पूर्णिया १-२-६१ का प्रकचन)

मैंने जेरी की या से, विनास मूल नारा यहिया रिसर या, बहुत वातें हुईं। वह एक छोटे घण्टी के क्लक में ५२ वरस की उमर में पुढगी है; नापी लखती रहती हैं। उन्होंने मूला-पुत्राहाय लोकरतय में विथाय है।
 मैंने कहा-"अभी को दुनिया में वंश है। उन में नही वत से कम खतर है।"
 उन्होंने कहा "मन्त में केकर एक ही वत है, और यह इन्कर की जालों में मानकी एकत्र, शान्ति

"वाति के लिए, कारकमा के तो छिडायें हैं—हम समस्तों के कि सब राज-जिक अनैतिक है; और यह काम में नहीं आरुकी पायते हैं। कि लोग बाँग करुँ और उल्लकों को मन-वाचि कि देसी नीति से शर्य करुँ जिस में देवापी शान्ति हो के, उक्त न हो।"
 मैंने कहा जेरी की या से कि उन्हें मरें होना चाहिए कि उनका पुन रिष शान्ति का प्रचारक है; तो उननी आरंभ नम हो गई। सोल-पुत्रो भी उक्तको देला मोल है। और लोग तो बहुत भी एक पागलान सम्यते हैं।"
 (साप्ताहिक हिन्दुस्तान से सागर)

पंतजी की पावन स्मृति

दामोदरदास भूँडहा

हमें यह स्वप्न में मल्पना नहीं थी कि निहार केसरी थी थीयाऊ के मृत्यु सेनाओं को स्वाहो वाक नहीं! भूख पायेगी कि दिग्दर्शक पूज्य पंतजी को पंडाजलि समर्पण करने का यह वृद्धि प्रसंग आभावेगा। यद्यपि पंतजी मृत्यु के साथ पंडर रोज तक चलते रहे और यद्यपि यह सही है कि कौट प्रामस पंतजी के मृत्यु का आघात बहुत करने के लिए एक ठरक सवारा भी ही दुःख था, सबसे आभास और प्रयत्न इस प्रबंध को टालने के लिए ही थी। काश्च देवकी वर्तमान परिस्थिति में पंतजी की उपस्थिति मानों सारंगोप ही में प्रतिभाने को प्रतीत होती थी। शरदार प्रकृत गाई दे पत्ते जाने के बाद देह में जो अभाव निर्माण हुआ था और जिसकी पूर्ति पंतजी ही अपनी दृढ़ता, मृत्युता, मुक्तिमान और रचना चतुर्य के कारण ही कर सके थे, अब नए एक नयी विधा के रूप में देव के सामने उपस्थित होने वाला था।

गाणीजी के बाद विनोबा के बारे में देहात के लोगों को लगा कि मानों गाणीजी ही पुनः हमारे बीच आ गये। फरक इसकी ही हुआ कि गाणीजी को दाहो नहीं की विनोबाजी को दाहो है। वैसे ही उत्तरार के बाद पंतजी के बारे में भी लोगों को लगा कि देव के गृह नहीं पंद पर शरदार ही पंतजी के रूप में पुनः जन्मे हैं और इस बार अपनी पहले की मुठे भी पुनः थे आये हैं और उनके साथ मृत्युता भी विशेष रूपसे। ... संघटना के आगे हमने कायंबंद को भी प्रोत्साहित किया वह पण-पण पर शरदार का स्मरण दिवाने वाला ही था। सभी ने स्वीकार किया है कि रिवासतों के बवाल को जैसे शरदार निवृत्त रहे, माताप्रात शरत रचना को एक वृद्धि समझाया और पंतजी ही सहायक व सुलझा रहे।

पंतजी हमें ही सुन के अस्वास्त्य देखीयमान उन्मत्त प्रकाश उत्पन्न थे। प्रथाया तर्जम काही आचार सभ्य भी, ऐसा दोहारा स्वच्छित्तक था उनका। शोक संघट्ट को उनको उनकी बला और पण प्रबंधन की उनको जालि अस्तुत्व ही। वे यद्यपि सदा ही अस्वास्त्य मुनू-पायो रहे, समय करने देर बल्य ही थी कठोर और हृदयमत्त थे भी थीर मनोर योद्धा का रूप उनके अस्वास्त्य में प्रकट हुआ है। मैं हीने बनेक बार उपवे मिलने का अस्वस्त्व का रूप है। परन्तु काशीकी सैधित्तों की हिदायत के प्रदान पर यमवर्नर के हस्तक्षेप के कारण मुन्य मन्त्री पर वा स्वागत-पत्र देकर वे एक और योद्धा की तरह एक हरिपुर शान्ति थे, और मंच के उन्मत्तमान थे। उन्होंने जो सिद्धि नगना थी, उस समय विनोबा उन्ने देखा व सुना है इनका वह हीरक प्रमाण योद्धा का बल हस्तिजन्तु नही पुन सचेते, जन समूह के मानस महाशायर पर उस समय उनकी शौर्यशक्ति के उदाहारण था, और अविनाश की मानना की ऐसी ऊनी लहरीं बज रही थी कि पुनः एक बार इतिहास कासायन-साहि के युद्ध पूर्व की पुनरुत्थिति के लिए हीरक सवारा ही गये थे। गवर्नर ने एक प्रकाश से देव की प्रतिष्ठा की ही यथाया पहुँचाया था, मुन्य मन्त्री के काम में हस्तक्षेप गवर्नर बर्दस्त करना पंतजी के लिए असंभव था। आर राज्यमान में हस्तक्षेप करके यमना का हासिल की चुनौती ही दी तो बदले में अपना त्याग पण देकर पंतजी ने भी अंग्रेजी हुजूमत के सामने प्रति-मुनी उपस्थित कर दी थी। और बाद में उस मासके संदर्भों को भारतीय जन मानस की भाषामानों का भाव देकरना पडा, अपना भाव हीरक सवारा।

यूनायि का विनाशिते में विनोबाजी उदार प्रदेय में प्रवेश कर रहे हैं, यह पंतजी ने भी करणगाई से सुना तो सत का स्वागत करने के लिए परकाइ हृदय आनन्द विनोबा ही उठा। अपनी पूर्व के अपने हृदय के भावों की उमाचार प्रकृत प्रकट करते हुए एक मुंदा १३ तो विनोबा की को उन्हेने लिखा ही, राज्य मर में विनोबाजी के काम में संपूर्ण सहयोग प्रदान करने का आदेश उन्हेने स्वयं रचुति से जारी कर दिया। कल्याण की आयत पूर्वक काय कि उन्हे विनोबाजी के कार्यक्रम से बंधार बाकिर रखा रहे। मित्रने का कार्यक्रम मंत्र व नीतीगत हैं। मर दुःख एक देहात में संत और पंत की लम्बी देर तक हासिक चर्चा हो रही थी। "भूतान इन्दिन मिलता है इसकी मुझे विचार विना नहीं रहते तो विनोबा ही, परन्तु आपके आगमन से जो नैतिक वातावरण निर्माण हो रहा है वह मान्य देना के लिए मान्यक मरुत्व ही का है।" बार देगा नैतिक

पंतजी ने ही यह परश्वर काही कि मुदान के लिए भी भी विशेष बने यह विनोबा की हृदय मुनार बने और सब विशेषक के अनुभार चर्चा उत्पन्न करने के लिए भी भी चोरे वा इतिहास सिमुल हो उनमें सत्यर भी विनोबाजी की स्मृति में ही सिमुल विवेचन है। यह नही सत्यापन बात रही थी। भविक फिर तो सभी राज्यों में लिए उत्तर प्रदेय का समुन ही समुने वा बग गया था। पंतजी चाहे तो यही है कि समुन ऐसा बने विनोबा चारे सभी राज्यों पर सुपरिचार ही गया।

वह उत्तर प्रदेय के भेदरत वचि में पहले दासपण का चरुत्कार हुआ और गीव के मृजियमों ने बचीव भी अपनी मानसिक गीव सचा के वाग कर दी तो लहकार और एकता के आचार पर गीव की अवस्थिति आगत हो जाने के कारण प्रति-क्रियायती चरितियों ने साधारण की इस कल्पुं पंढरा की अस्वत्व करने का पूरा प्रयत्न किया और इसमें मुक्ति, सहकार तथा उन्मत्त बलून करने वाले आधिकारी तथा एक ही गये। देवी को सचिती को-पुट में भी आये भलकर सचिती ही गये थी और सचिती वसुधैव कुटुम्बके के अन्वय में यमिवालों की कायरी विवेकता का साधन नहीं करता था किन्तु यहाँ जैसे ही पंतजी को लारी परिस्थिति में परिचय कराय गया, उन्हेने कोरन आजा जारी कर दी कि गवर्नर का अन्वय गेपंडत की अवस्थिति आगतनी सैधिसचा से ही बलून सचा गया, लोगों को भी व किन्तु आया, सारा माताप्रात बल्य गया। नैतिक आन्वोलने के महत्त्व को समझकर उदका स्वागत करने लगे पूरा बल देने की वृत्त हुए हासि व सुनयुत के अन्वय में हुए

आज देखते हैं कि जनता को काही कति-माधरी का सामना करना पड़ रहा है। मित्र इलाके में काम की मुठ हो रहा है उसके हमारे काम को हायदा का मरुत्व ही सचता है।

पंतजी का स्वच्छित्तक विनोबा महान् का इतकी पूर्ण कल्पना तक नहीं का सकती जब तक उनके निवृत्त लक्ष में आने का अस्वत्व न मिता ही। उत्तर प्रदेय की ऐसी नही विभावन बलिने नहीं थी जिन्हा व परिपुं हस्तोपे प्रतीय परने का पूरा प्रयत्न पंतजी ने ही किया ही। स्वर्गीय बाबा दासपदाय, विविच भावक दादी व करण गाई देर विमुक्ति की इतिहास उचयता का टीक विचार जूने वा और इनका सहयोग के विधान सचा के काम में भी लीते रहे। पूरा के आधिकारी कासंभल के कारण सच बाबाजी व कथ गाई ने पुनः विधान सचा को हस्तगत की शौरार करने की अपनी अस्वमयंता मरु की ही उनके हत त्याग को सहायक रूप के कम रचनात्मक काम के समन्य करने वाली सभी राज्य परिस्थिति में इन दोनों का अतिके से अतिके सहायक सत्य बनेकर, बाबा संघर्ष में ही पूरा बना रहा।

वीर युतियों के लिए उनका हृदय भी पुन्य भाग व उत्तरार बाग की सहाय ही इस सर्वदा भावों व अतिके देगा। कुमायुं विवे की अन्वय में प्रबलिते के उत्तरार व अन्य शौरक प्रयासों के उन्मा विल काही विह्वल हो उठा था। इतिहास उनकी देगा के लिए उन्हेने सत्यपण व शौर्यपूर्व बलर करनी सहायता की वसिवागत अतिके साथ का साधन बनाने के द्वारा वन हस्तोदीन युतियों के अतिके हस्त आन्वय के चरयो में अन्वित कर दिया। मर और गाव, वे सभी चोरे की सहाय ही देर को विसल को बराबर मुठते रहे, स्वर्गती अस्वमयंतायती यमन की भी एक बार अतिके विनाश स्वाम नौदुग्गिमान सामने लुजादा। उनके साथ उस इलाके के अतिके आनेके। बारे में विस्तार से चर्चा का। उनके उस अन्वय के कारण अतिके में अतिके अतिके विचार सचा मरुत ही अतिके आरतीय विनिवारी को उन्ही पर लानी विवे के उत्तरार भी उत्पन्न सके। परंतु स्वर्गता पूर्व कासमें आनी ही। कपरे परणों के कारण एक सचि अतिके वा सामाजिक विनाश की सचि योजना का टीक कार्यान्वित होना संभव भी नहीं था। सभी का अन्वय सचेते पन्ने हस्तपंता के संराम में और उनके लिए

स्वाभाविक शांति दवाव से नहीं, समझाने से होगी

उत्पाद धर्माधिकारी

मनुष्य का जीवन विश्व प्रसार मानुष की प्रतिक्रिया नहीं है, उसी प्रकार विश्व भी प्रतिक्रिया का नाम शांति नहीं है। शांति धरने में एक भावपूर्ण, कर्मी, स्वाभाविक स्थिति है। कोई दयाकारण हो जाये, वहाँ भावना हो जाये, मास्टर हो जाये, किसी तरह की हिंसा हो, उसके बाद हम शांति की स्थापना करते हैं, यह नहीं दिना भी विरोधी शांति होती है। लेकिन ऐसी कल्पना कीजिये कि विश्व दुर्ग ॥ नहीं। हाथका हुआ ही नहीं। तो कौन-सी स्थिति रहेगी? जीवन की या आत्मा की। शांति मनुष्य का स्वभाव है चाहे शांति का उलट, क्रोध, कल्याण-मुदरता भी होगी। यह सब दृष्टि पर नहीं, दूसरे लोगों के साथ करते हुए, दूसरे के साथ हमारे को सं-प-द, उत संभोगों को बनाये रखते हुए चलता है।

एक शांति समाज-परिवर्तक, मनुष्य-संसार निरोधक ॥ में उक्त शांति की बात नहीं कर रहा हूँ, विश्व शांति की शीघ्र स्थिति में पहाय की कदमों में वेटर का स्थान है मनुष्यों पर बैरुद्ध की है। दूसरों के साथ हमसे रहना है। जीवन हमेशा एकजीव ही है। एकाकी जीवन वैसी पशु क्षमते के समान है। मनुष्य का साथ का साथ जीवन रह-जीवन है, जो संभोग का नाम हुआ है। एक मनुष्य को दूसरे मनुष्य के साथ जो कर्मा जोती है, उसे हम संभोग कहते हैं। मनुष्यों के साथ हमेशा संभोग, ॥ दूसरों के साथ जीवित, यह सब करते हुए भी, संभोग नहीं है, क्रोध नहीं है, ऐसी परिस्थिति में, क्या अच्छा होगी ?

जो लोग दण्डात्मक मौलिकपर को मानते हैं, विनम्र यह विचार है कि विनम्र संभोग में ही जीवन का अंतर होता है, विद्वानों को उत्तरी इष्टिया हाथ से होती है, जो परस्पर निरोधी उत्तरी को उत्तर होती है, उनका संभोग होता है, उनमें से जीवन का, उन संभोग में ही जीवन का निरास होता है, यह विचार विनम्र के सामने है उनसे सामने भी यह उलट है, कि जब दुनिया में सर्वसंभोग नहीं रहता, कोई कर्मी का गरीब नहीं होगा, एक मनुष्य दूसरे मनुष्य पर दण्डित नहीं करेगा और एक मनुष्य दूसरे मनुष्य का शरीर अपने उपभोग का साधन नहीं मानेगा; ऐसी स्थिति में, वहाँ शांति भी नहीं और जीवन भी नहीं होगा उतमें मनुष्य की कौन-सी स्थिति होगी? क्या फिर भी संभोग रहेगा ?

इसका जवाब एक दूसरे स्तर पर दिया गया जिससे समझाना नहीं हो सकता। लेकिन कमी कमी मनुष्य निरास के लिए दक्षिण दे दिया करता है। तो यह निरं दक्षिण की गयी कि वह अंत में मनुष्य का और प्रकृति का संभोग होगा। इसका मतलब यह है कि जब बहुत का जीवन के साथ संभोग होगा। प्रकृति और मनुष्य के बीच शांति का होगा, यह एक दक्षिण तरफ का होगा।

मनुष्य और मनुष्य के बीच जो संभोग है, इस संभोग का अंत हो सकता है, होना चाहिए, हो कर रहेगा। इसे प्राकृतिक शरीर इस बात की मानते हैं। इष्टि एने इस दण्डात्मक मौलिकपर का उलट किया। विश्वकी लोग मार्क्स के नाम से पहचानते हैं। सारे-से सारे मार्क्सवादियों को एक देखी परिस्थिति की कल्पना करनी होती है, जिस परिस्थिति में कर्म नहीं रहेगा, और कर्म नहीं होने देंगे इष्टि एने विमर, सन्धन नहीं रहेगा। उस परिस्थिति में जो शांति होगी उसका क्या साधन होगा। यह जगत् हमारे लिए मनुष्य का इच्छित है कि एक प्राकृतिक शांति शांति होती है, और दूसरी शिथिल शांति होती है, जो मनुष्य का जीवन है। यह ही शरार ही होती है। एक शांति विनम्र हमसे स्थापना करनी होती है, और एक शांति यह, किष्का नाम हुआ है। हम करते हैं कि शांति का अंत हो गया। पीस का शीघ्र हो गया है। इसका मतलब शांति हमें होने से पहले शांति थी। और यह शांति विरोधी स्थापित नहीं की थी। स्वाभाविक शांति थी। जिस शांति का अभाव है। मैं भोग होता है जिसे शांति शिथिल अर्थ में ही पीस करते हैं, जिस अर्थ में लालक होता है, जोम पैदा होता है, वह शांति पहले होती है। जैसे पानी पहले है, उसके बाद में। दरत बाद में यह पानी रह कर

हो गया, मनुष्य हो गया-क्या अर्थ है। मनुष्य शांति हो गया-आप करते हैं मनुष्य "शांति हो गया"। लेकिन सधु अभाव हुआ था उसके पहले क्या था ? उसके पहले वह कौन हो था।

प्राणि संज्ञिक को यह सूझ सकती तब तक कि शांति, गंध कां देनी चाहिए कि शांति का स्वाभाविक स्थिति ही शांति है। मनुष्य और मनुष्य का जो स्वाभाविक, नैतिक स्थिति है वह शांति का स्वाभाविक है, शांति का स्वाभाविक नहीं है।

यह बात लेने की आवश्यकता इष्टि एने कि पार्लियमेंट में जब ही एक हुए-वह पानी समझ लेना है कि पहले पार्लियमेंट हुए बाद में एक हुए-ही पार्लियमेंट पर पुस्तकें लिखी जन्मी लगीं। हमें से बीस्टर देजेट की विन्सुल नामलुगो पुस्तक ही इष्टिया कास्टोरोसुस है, जो इंग्लैण्ड के संविधान पर लिखी है। उनमें यह एक बात बत-बत कहता है कि जो स्वभाव में ही मनुष्य में जो स्वाभाविक संभोग की भावना है, उसके लिए कोई व्यवस्था नहीं होगी।

मनुष्य चाहे हार जाने के लिए ज्योग, डेक्किन को जर्जर में नहीं रहेगा, इसकी सुलका, इतना जूलात्मक, इतनी शान्द-दण्ड, मनोवृत्ति उनके धर्म में है। इष्टि एने पार्लियमेंट में भी जोड़े के इष्टि एने अन्तर होना चाहिए, कुछ धर्मों के लिए अन्तर होना चाहिए। ऐश-नीति में अन्तर संभोग के लिए अन्तर नहीं होगा जो मनुष्य का नरगा। लौकिकताक राज्य-स्वरथा या लोकशासन के लिए ही निरप में जो लोक आवश्यक करते आये हैं, उनमें से यह को एक तरा राजनीतिशास्त्री माना गया है यह वह कहता है कि लोकतंत्र में ही नागरिकों के दो गिरोहों को लोकतंत्र की

सुविधा होनी चाहिए। वहाँ कुछ छात्रों के लिए अन्तर नहीं होगा, वहाँ मनुष्य की मनुष्य का पूरा निरास नहीं होगा, यह हमसे आवश्यक राजनीतिज्ञों की किताबों में पढ़ा। इष्टि एने आर लोगों के सामने यह मनुष्य पर उत्तरिष्ठ किता है कि आतिर छात्रों तो होती है और छात्रों अब होती है, उनके बाद छात्रों बंद होती है, यह बंद होने पर अन्तर, शांति, सुध हो जाती है। लेकिन छात्रों होने से पहले कौन-सी स्थिति होती है क्या उस स्थिति का नाम शांति नहीं है ?

शांति के दो अर्थ

जो अब शांति के दो अर्थ हैं। एक शांति मनुष्य संभोग के लिए स्वाभाविक, आन्तरिकता के स्तर में, निरप रहती है। मनुष्य का संभोग ही निरप शांति के आधार पर बना हुआ है, यह शांति और दूसरी शांति को अर्थगत के कारणों को दूर करने के बाद शांति होती है। अन्तर ही दुनियाँ का अर्थगत समाज में बीस्टर है, उन्हें अर्थ देते हैं, तो उनके बाद अन्तर शांति हो जाता है। जो शांति हर नैतिकारिणी को बनाता है। ऐसा समाज, जिसमें कोई भी नहीं होयी और कोई भी नहीं होगा, पौरी के लिए पौरी भी नहीं होगी और मैगा भी नहीं होगी। अब यह स्थिति नहीं है। मनुष्य शांति है, इस प्रकार की शांति हर नैतिकारिणी चाहता है।

यह किती और के नहीं देखितन के दक्षिण है। लिसे जोकरवर्षियों के शांति की स्थापना के विनम्र का स्थिति। लेकिन यह कहना यह चाहता है कि हम ऐसी परिस्थिति पैदा करना चाहते हैं, जिससे एक प्रकार का कोई मनुष्य रह ही नहीं संभोग जो पौरी या अन्तर करेगा। अब यह परिस्थिति दो तरह पैदा के भी था ठकती है।

आप लोगों में अपनी अन्तरस्था में एक कर्मी की कल्पना की होगी, जिसमें उतथा नवन कोष्ठका बंद रहा था। फल भी नहीं रहता था। बहुत दानार्थ लो, कुछ पारदा नहीं हुआ। आतिर एक अन्तर ही ने उसके कहा कि आपको कुछ नहीं हुआ है। यह लेने चाहे आम्हो दया देते हैं। आप में एक शोच की क्षम्य चल करे, यह इतना करनी है। और

यह उसे भर दोरती में बार बेने मेरे गमी के दिनों में ले जाता था। आर दूरा पहनता था और उसे कहता था कि मैंने पर तुमकी चलाया होगा। यह आदमी बर्तों नाते ही शिथिल लगता था। हर शोच में शरीर कुछ हल्का सा हो गया। फिर उतनी फटा आगने को कुछ बैना उत्तर किया को आन्तरिक स्थिति नहीं फिमा था। ही, यह उत्तरा में आगने बला तो आप नहीं करते। जैसे परिस्थिति ऐसी पैदा कर दी कि विश्व परिस्थिति में शोच आगने की क्षम्य होकर ही पना। इसे कंठकन अर्थ कि शिथिलपन कहते हैं। परिस्थिति में अन्तर कुछ जैसे इष्टि एने देखे बन्तराण, इस प्रकार के हाथ, मनुष्यों, कुछ विनम्र, और कुछ परिस्थिति का प्रभाव और आत्मसाय देश उत्तरिष्ठ पर देते हैं कि उसको लाया होकर परिस्थिति के अन्तर आगने बला ही पता है। आर कुछ लोगों के प्रु से मुझे कि ना भी ऐसी परिस्थिति ही है। पर देता था कि विश्व परिस्थिति के कारण बरतली इष्टि एने जो जाता। यह शांति के प्रति अन्तर है, लेकिन जो लोग अपनी तरह से शांति की बातों का अर्थ करता चाहते हैं वे यह कहते पाये पाते हैं कि शांति को बिना अन्तर प्रकृति के इष्टि एने परिवर्तन को उतनी नहीं थी, विकृति कि उसके आचारण को बदलने की थी। इन को उतमें बहुत बात बर्त है। मैं आरके रतार्थ को बदलूँ, आरके रतार्थ को बरतूँ हूँ, ऐसी परिस्थिति पैदा करूँ। इसी इष्टि एने-परिस्थिति नहीं है। परिस्थिति का परिवर्तन है। इसमें आरके अन्तराणी की फिजर नहीं है। हमारा (परसुधरान) कम है, दवाय (होअर्जन) अधिक है। किसी किन्ही तरह में बर्त बात आगने करना चाहता हूँ जो मेरे दिष्ट ही हो।

जब आप मनुष्य को संसाधार उत्तका साधारण बदलते हैं तो उत्तकी अन्तर उतलते हैं। अब मनुष्य को बर्तन समझते उत्तका साधारण-स्वतः ही तो उत्तकी अन्तर उतलते, नहीं बिना करते हैं। यह साधारण कि जगत् है। दोनों पौरी में यह बहुत बड़ा अन्तर है।

अब भगवान् ने मनुष्य को बनायी ही ऐश कि ज्योता दिन बंद सन्धानी में नहीं रह सकता। जो दो रत्तर की हुए हैं। उसे जब योका शिथिल उत्तर हो उतगा। ईश्वर का इतना अन्तर मनुष्य में है। उतमें अन्तर उत्तरा था। उसके समाज

जापान में अम्बर चर्खे का प्रदर्शन

अर्धवर्ष पंद्रहा

[पिछले साल श्री अरविंद पंड्या ने जापान में अन्तर्राष्ट्रीय हस्त उद्योग प्रदर्शनी में अम्बर चर्खे का प्रदर्शन किया, उसका रोचक विवरण उन्ही की जदानी सादी श्रामोयोग प्रामोणिक समिति के मासिक पत्र 'अंबर' से हम यहाँ दे रहे हैं। -सं०]
भारतीय हस्तावत में एक परिचय आया था जिसमें हस्तावत के कर्मचारियों की अन्तर्राष्ट्रीय हस्त-उद्योग प्रदर्शनी में शरीक होने के लिए निर्मित किया गया था। ठीक उसी समय में अम्बर को बात लेकर यहाँ पहुँचा।

सबको मेरी बात जैसा मन्दी और मैं सुन्दर उत्तरी तैयारी में लग गया। सबसे पहले मैंने चार हजार प्रचार पत्रिकाएँ अम्बेरी और जापानी भाषा में छपावनी दी। दस पत्रिका के बलावा चारसा तैयार करने का काम सबसे भारी था। क्योंकि घरले के पुत्रे जलम करके मैं सामू हूँ गया था। पूरे दो दिन उसको जोड़कर सजाई करने कोयें तैयार करले में पले गये।

प्रदर्शनी के दो दिन पहले सजाई हुआवत में ले गया। वहाँ पर बहुत लोगों ने अम्बर परले को पहलो मरदमा ही देखा। लोग कपनी-कपनी राय देने लगे। दोनों पक्षी समय भारत के विधि मन्त्री श्री देन भी आये और उन्होंने भी जापनी राय दी कि विमान के उमाने में यह चीज चलमेवाकी नहीं है। लेकिन चरसा विधि के मायोवाक्य बन्वा पाप पर चलमेवाकी बात को नहीं है।

दूसरे दिन भी यदानी के एक सद्गुरुत्व चरसा देवले के लिए आये। आप जापानी छोटे उद्योगों के नेता हैं और अन्तर्राष्ट्रीय हस्त-उद्योग प्रदर्शनी के सफलक हूँ। आपने चरसा देखा। सारी प्रक्रियाओं का अभ्यास किया, सुदु पकाके देखा और कुछ देर के साथ आदिप किया कि यह चरसा प्रदर्शनी में रखने लायक है। लोगों में बहुत विश्वास भी पैदा करेगा।

१४ मई १९१० को अम्बर चरसा टोकियो की अन्तर्राष्ट्रीय हस्त-उद्योग प्रदर्शनी में पेश किया गया। इस प्रदर्शनी में हाथ से बनी हुई तरह तरह की चीजें रखी गयी थी। सास करके हाथ से स्वीटर, मोनें आदि बनाये के लिए तैयार की गयी मशीनों में से मशीनों जैसे भाग भरती थी, यह विद्याया जाता था। चास, भास, मेसल, व्याप्तिक आदि का उपयोग करके उद्योग के विमान-विमान प्रकार की हस्ती और मशीनी हस्ती चीजें बना कर रखी गयी थी। इस प्रदर्शनी में हस्त-उद्योग का प्रचार करने का। सारे जापान में हस्त-उद्योग प्रेमी मिलाने की वहाँ पर खोजना दिया गया था। इसके अलावा हुए अंगठों, अम्बे-दुडे समी प्रकार के लोग और कुछ परदेवी चीज की थे।

आये हुए लोगों में से कुछ मनोरिचनों ने चरले का नाम लेकर उत्तरी शारीक की। वहाँ पर चरले का प्रदर्शन सुनह साके रस भले हैं लेकर दाम की साइडिंग बने तक पला। काशी लोगों ने सजरी पूजा कर भी देखा।

अंबर के प्रदर्शन में गिने सगती, पेटी चरसा और अंबर चरसा का हावत में रखा था। हरके के लिए अलग-अलग प्रक्रिया करके कई के लुके और बावरी के कुछ नमूने भी सजाई हैं। मुझे भी है। कुछ लोग ऐसे मानमे थे कि मैं अंबर चरसा नाम का सब जापान के बाजार में बेचने के लिए लाया हूँ। लेकिन जब मैंने दो दाम बरले देकर बताया कि मैं जापान के अंगठों से सीमाने आया हूँ और अंबर जैसा यह अमुरा यह पुत्रे करने के लिए मासिक मरद पाह्लाहूँ, सब शारी उमा का अभ्यार कर गये।

काशी अंगठों ने सजा के बाद भी चरले का निरोधन किया और कई लोगों ने अपना पता दिया। बाद में मिलने का मायदा किया। सभी कोयें अंबर का मूठ को सारी का मनुवा देखकर बहुत प्रभावित हुए। अंगठों ने लिए चरसा माने एक

सुधारी हुई सारी रिच केंच भी, लेकिन पेटी-चरसा एक वायु था। जिसका मय नहीं जापान था कि ये कई की चीजें हुईं जूनी से पकड़ सुत बनता रहा हूँ। उसी के अलावा मैं यहाँ था कि मैं कच्चे पागे को अधिक बरद देकर पकड़ा बनावे की यजोना लाया हूँ। लेकिन जैसे सबसे पाने मुझे हुई कई की यजोना बनाकर कटाई की सब सबसे कठारपयों की सीमाने पड़ी। अंगठों से देने मनाक करले बताया कि यह सारा हासगुप्टका चरसा है, क्योंकि शंभक की पुत्री से ४० अंक का सुत पाकेके बनावे। उपाक मजलम यह हुआ कि टैपिलियों की मदद से गिने २१ गुलक के कटाई की। सास-नाथ यह आदिप किया कि १० गांधीनी में सजबदा केले में इस चरले का निर्माण किया था। सब मशीनों ने इस चरले के साथ हस्ती के हावत में लाया।

इस प्रदर्शनी के बाजार अंबर चरले को कपनी प्रक्रिया हुई और लोग मुझे अलग-अलग रिचाने के लिए मुझसे लगे। सारे जापान का दौरा करने के लिए सब सुविधा ही गयी। २१ मई १९१० की बंदर मोसका सहर में होनेवाली दूसरी अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी में चरसा पेश करने का एक और सामंजन निक गया।

मेरे पास मेरा चरसा था। उसी के आसपास से बहुतों लोग मुझे के लिए आया करते थे। इससे जवानों सगमाने वाले मिलने लगे। अपने पक्वानना का पता लगाकर आदिप में सजावती होइल में लाया। यह होइल पूरे जापानी अंग से चलता था। मुझे उत्तरी चरले माने खेपे यहाँ सजके। इसमें सगमन-वह आ ही कपके। इसलिए सगम का प्रभाव बरता था। दूसरी बास होइल में सारे के सारे जापानी भाषा के विचार एच भी उमाह यहाँ मानते थे। इसलिए मे मुनिज के यथावा चरले कि मुझे दूध और सनी आदिप है।

चरले, इसके लिए मुझसे चरले का प्रदर्शन करने के लिए उत्तरी तैयारी में लग गया। दामकी बचवान कोयें निक गये

लोग प्रदर्शनी में रको हुई यारी सजे लगे। लेकिन उत्तरी सजे के सजे में नहीं कि सजे के सजे। तजों ने की हु और कपरा देख कर सुखी आदिप की।

पहर एक बात नयी हुई कि पुत्रे यन विचारों ने यन की विचारों और अन्य कर्क करने के लिए सुझाव भी दिए। ऐसी सुझावों मेंने पीट करके रस थे, टाकि अधिक में प्रयोग कायें में सजरी काया उमा सके।

भीषाका सहर यन सगपी ब मागरी है। वहाँ पर ली-सजा की प्रारोप म्पारी ही। ये लोग आम कोयें स ज्वाला-निपलित ला काय करते हैं। हरके से कुछ को पूरे विचारों काय गये हैं, जैसे उमगी कायान मानुमि ही है। दो कोयें काय में अधिक मजल होने के सुझावों

मदद नहीं दे सके। लेकिन एक-दो जापानी कपनी बजारों में मरद देना का बाया किया। भी देवावाकी काय उममें से एक जिहाने मुसरी काय मर्यंगेप रिच और सुधका समय रिचलक मर मरद के लिए आये। माय पुत्र-सगमान के पुत्र अमुराव ही और निषिचन कपनी के रिचिंग विमान के प्रयुक्त हैं। सारे से यनी होने पर भी बहुत सारणी के पड़े हैं। बास सार पर मोड मरद में पुरा पर्वद करते हैं। मारनबावियों को सारी सारसे भास मरद विचारों हैं। मानने सारी कपनी के अंग विभाग की मदद देने के लिए बावदा किया।

इस तरह से मोसका प्रदर्शनी के एक दिन बीत गया और मेरे लिए सारे सुविधाएँ और सुझावों की विवरणसरी जंटे दे गया।

कामवृत्ति और भूख

कामवृत्ति सब कपके पहलू सलर बना चुके और उलके जोडर सुविधों का प्रयेय करत मुके तो मुनिवर्षे मीतर पर्वुन कर मानने लोगों की सगतिनी बनने कई और दूसरे उद्योग पर अधिकार करने के लिए सभयं कपके लगे। दुष्टि से आगे बढ़कर सुझाव दिया सजने के पता मरद में बैठकर मानने लगे रिचलित कर हैं और निरकर लगे।

मुझसे सजके पदमन आता। लोगों के बरदारों में प्रयेय सगती की अधिकारियो को मुनिवर्षे उर सजो हुई मूठ मोस काय।

दामवृत्ति घोसी—

मे घासपी की मूठ वृत्ति हूँ। मानप की सारी रिचलित और पीटरपे मेरी सुविध

शिक्षा-व्यवस्था सरकार-निरपेक्ष हो

पारुचन्द्र भंडारी

प्राचीन काल में भारत में शिक्षा फग नहीं थी। शिक्षा सर्वप्रथम भारत में ही आरम्भ हुई थी। किन्तु राजा लोग कभी भी शिक्षा-व्यवस्था में हस्तक्षेप नहीं करते थे। गृह ही यह निश्चय करते थे कि क्या शिक्षा दी जायेगी और किस प्रकार दी जायेगी। राजसन्तति शिक्षा के लिये सहायता प्रदान करती थी। राजमुचरबी विचारक के लिये गुरु-गृह जाने थे, किन्तु उनके लिये कोई विशेष व्यवस्था नहीं रहती थी। वे सामान्य विद्यार्थियों के साथ ही समान भाव से रहते थे। राजा विद्या के लिये सहायता अवश्य प्रदान करते थे। इस प्रकार, उस समय शिक्षा और शिक्षा-व्यवस्था से परिपूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त थी शिक्षा के क्षेत्र में जनविरोधता रहने के कारण ही भारत में वास्तविक चिन्तन-स्वातंत्र्य और विचार-स्वातंत्र्य का विनोदनी नहीं रहे।

“जिसे संरक्षित भाषा का ज्ञान है, वह जानता है कि हिन्दू-धर्म में चिन्तना विचार-स्वातन्त्र्य है। मैं ऐसा दूसरा धर्म मान्द नहीं हूँ, जिसमें परस्पर-विरोधी विचार हैं। दूसरे धर्मों में एक ही विचार है, लेकिन हिन्दू-धर्म में कथिल, कष्टाद, लैमिनि इत्यादि के विचार परस्पर-विरोध थे। परन्तु कोई नहीं कहता कि वे हिन्दू-धर्म के लक्षण हैं।”

किन्तु आजकल सरकार के सभी देशों में राजसन्तति संबंधी बात गयी है। भारत में भी यही बात है। जो लोग का देला कोई लोभ नहीं है, जहाँ राष्ट्रपति बनना विनायक अथवा प्रतीक नहीं बन रहा है। सर्वत्र मान्य-व्यवस्था इस प्रकार परिचालित हो रही है कि जनता सरकार पर अधिकारिक नियंत्रण होती जा रही है। सरकार लोगों को स्वातन्त्र्यी बनाने के अलावा सरकारवासी बनाने जा रही है। सरकार में नौ ब्राह्मण ब्राह्मण रहना चाहिए।

आज सारा संसार भय भयत है।

जिन देशों के पास पराजित आर्थिक परिस्थिति है, वे भी परतक हैं। भय के भीत बने हैं जिनके पास वे हस्तक्षेप नहीं हैं। मान्दनी व्यवस्था में प्रमुख माना में नहीं है, वे भी मरपीन हैं। सभी सरकारों अपने-अपने देश को अपना वे मन में यह कारणा रीता कर रहे हैं कि जिनमें अधिक महत्त्व प्रदान करने जायेंगे, उनका ही भय कम होगा। किन्तु आर्थिक परतक भी संस्था और परिणाम बनाते के बावजूद भय कम नहीं हो रहा है। फिर भी, जनता को बढ़ावा का रहा है कि जनताओं की उपस्थिति के ही कारण बाधित बनी हुई है। जनता के मन में इस धारणा को बंध देना इसलिए सम्भव हो रहा है कि शिक्षा सरकार के हाथों में आ गयी है। आज संसार के सभी देशों में शिक्षा सरकारों में आ गयी है। बालक-बालिकाओं की जो कुछ शिक्षा का रहा है, वे उसे ही ले रहे हैं। इसी कारण, इतना लोभकत ही निम्न नहीं हो रहा है। जो देना का अधिकार भी सबको है, पर राष्ट्र-सिद्धि का स्वयं में कुछ छोड़ने से लोगों की ही हाथों में है। गणतन्त्र का अस्तित्व नाममात्र के लिए है। शासन-धर्म को कुछ करना, बही लोक-सुख-सुख-सुख जनता में भय कटती जा रही है। सभी विचारकों का धर्म-नारायण गुरु कह रहे हैं। “विद्या का अधिकार सरकार के हाथों में नहीं होना चाहिए। यह तो तानिपों में हाथों में होना चाहिए, क्योंकि यह काम सेवा-न्यायपालना ही होगा।”

इस क्रम-वृद्धि का फल यह हुआ है कि जनता पूरी तरह सरकार-न्यायपालना को गयी है। लोगों में चिन्तना पराक्रम का, यह भी नष्ट हो गया है। अपने एक कभी उतर भी उठना का गयी है। जनता का काम केवल मनसुख दल के मनोनीत लोगों को खेद देना हो गया है। जो वे लिये के बाद लोगों का कर्म-समाप्त हो

गया है। लोगों उनके लिए और कुछ करने को रह ही नहीं जाता। जो कुछ करना ही, वह सरकार ही करती। इस लिए, इस बात में सरकार को याद करने के अलावा कोई उपाय नहीं रह जाता।

इस परिस्थिति से परिणाम पाते का एकमात्र उपाय ही, चिन्तना की शिक्षा के क्षेत्र में स्वातंत्र्य प्रदान है। किन्तु शिक्षा स्वातंत्र्य के अभाव में चिन्तन और विचार-स्वातंत्र्य ठीक छप ले नहीं बन सकते। ऐसी स्थिति में, शिक्षा के लक्ष्यकारी सिद्धांत में रहने के बावजूद, विद्यार्थियों को अपने चिन्तन-स्वातंत्र्य की रक्षा करनी होगी। इसीलिए विनोदनी कहते हैं: “परिपूर्ण स्वातंत्र्य का अधिकार अन्तर जितनी को है, तो सबसे ज्यादा विद्यार्थियों को है। विद्यार्थियों को चिन्तन-स्वातंत्र्य का अपना अधिकार कभी नहीं लौटा चाहिए। हमें अपने चिन्तन-स्वातंत्र्य पर अहं नहीं होने देना चाहिए-स्वतंत्रता का हक मुनिगत रखना चाहिए। विद्यार्थियों का यह अधिकार आज की दुनिया में छोटा जा रहा है। इसलिए वे उन्हें आगार कर देना चाहता है। इन दिनों “बिबिधिकन” अथवा अनुज्ञात्मक के साथ पर विद्यार्थियों के विभागों के शर्मों में डालने की कोशिश की जा रही है।”

ऐसी परिस्थिति में शिक्षा का सरकार की नियंत्रण में पना आना और भी अधिक सिद्ध हो रहा है। शिक्षा ऐसी जो जा रही है कि “सरकार ही सब कुछ है”—यह बात विद्यार्थियों के अस्तित्व में डाली जा रही है। इसलिए, जिस दल की सरकार होगी है, उस दल-विषय के आचार्यों और नीतियों के अनुसार ही शिक्षा का स्वरूप होगा

है। कल्पों विद्यार्थियों की मनोपति उस दल के आचार्यों से प्रभावित हो जाती है। इस समय उपर्युक्त संसार में इसी तरह लोगों की एक विशेष शक्ति में डालने की चेष्टा चल रही है। विनोदनी कहते हैं: “युगिया के सभी देशों की सरकारें उपर्युक्त शिक्षा-व्यवस्था को अपने हाथों में रखने के लिए आग्रही हैं। यह व्यवस्था बहुत ही लक्ष्यनाम है। इसके द्वारा मुक्ति पर भी नियंत्रण (पैनी-डेम) जा जाता है।” इसी कारण विनोदनी बार-बार यह बात करते आ रहे हैं कि आम जन ही संभव हो अपना नहीं, यदि किसी विषय को सरकार के हाथों से मुक्त करना हो, तो सबसे पहले शिक्षा को सरकार के हाथों से मुक्त करने की आवश्यकता है। कम्युनिस्ट सरकार को मन करने के लिए केवल में सब जन-आन्दोलन चल रहा था, वह विनोदनी ने शिक्षा को सरकारों नियंत्रण से मुक्त करने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा था: “इसकी आवश्यकता सर्वाधिक है, यह बात केवल में आम को कुछ ही रहती है, उसके विशेष पर के रहती ही जाती है। किन्तु मुझे ऐसा नहीं लगता कि अब परदेशों की स्थिति से चिन्तन है। अन्य प्रदेशों में भी शिक्षा पर सरकार का कुछ नियंत्रण है। किसी को भी उसके विरुद्ध कुछ करने की विद्या लाना।”

आजकल सरकार को सपना सर्वोपकारी हो गयी है। अतएव सरकारी कार्य संवाचक के लिए सरकार को उपस्थित अधिक संस्था में सर्वोपकारी नियुक्त करने रहते हैं। अतएव सरकार ही अनुभव समझे बड़ी नियुक्त करनेवाली है। ऐसी स्थिति में मन्त्र उठ सकता है कि यदि सरकार में हाथों में शिक्षा का नियंत्रण हो, तो जिस तरह की योग्यता-व्यवस्था कर्मचारियों की उसे आवश्यकता पड़ती है, उसे लोग पाते हैं उसे विशेष अनुविद्युत होगी। किन्तु ऐसी आरंभ का शरण नहीं है, क्योंकि यदि कर्मचारियों नियुक्त करते समय सरकार सभी-देशों की विवेक को ध्यान में रखना लेने की आवश्यकता रहे, तो कोई अनुविद्युत नहीं होगी। साथ ही, सरकारी-संवाचित सब परीक्षा में सभी-देशों के लिए

ऐसा कोई विवेक नहीं होगा कि केवल अनुभव परीक्षा में उत्तीर्ण लोग ही सरकारी के लिए होनेवाली परीक्षा में मान्य होंगे। ऐसा हर्षवर्षता रहने पर ही शिक्षा का समाधिक विकास हो सकेगा। किसी विशेष शिक्षा-धारा को शिक्षा प्रणाली में प्रति सरकार को पदागत नहीं करनी चाहिए। ऐसा होने पर ही विनोदनी शिक्षा-धाराओं को शिक्षा-धाराओं के मुख्य गुण में सर्वत्र में अभाव रूप से निर्देश कर सकेंगी। सरकारी ही शिक्षा-व्यवस्था को आधिक सहायता और अलग-अलग विद्यार्थियों प्रदान करेगी। इस देश में अर्थात् काल में ऐसा ही होगा था। ऐसी स्वतंत्रता रहने पर ही नई लक्ष्य प्रसार के लिए उपयुक्त लोग तैयार होगा।

सरकारी अथवा अ-सरकारी काम से नियुक्ति के लिए स्वतन्त्रता-सिद्धि का विचार-विचार की किसी परीक्षा में उत्तीर्ण होने की शर्त में लगाकर नियुक्ति से पूर्व सरकारी अथवा अ-सरकारी सहायकों के सभी-देशों के अनुविद्युत योग्यता धारकों के लिए परीक्षा लेने की आवश्यकता करनी चाहिए। इस प्रस्ताव के अन्वय में विद्यार्थियों को गयी है कि ऐसा होने पर सभी-देशों की सभी-देशों में शिक्षा की परीक्षा व्यवस्था कर सकना कठिन ही आयाता। इनके अन्तर् में विनोदनी कहते हैं कि परीक्षा शुल्क अधिक रखने पर कोई अनुविद्युत सामर्थ्य नहीं आती। फिर भी, जो लोग सामर्थ्य यह उपयुक्त योग्यता रहे, वे परीक्षा में शामिल नहीं होने पाएंगे, शुल्क अधिक रखने से परीक्षा व्यवस्था कर सकना भी विरोध कठिन ही आयाता। इस सम्बन्ध में विनोदनी ने अन्तर्गत सभी-देशों के अलावा अन्तर्गत देशों के भी और कहते हैं कि हाथों पर उद्योगिक परतक को भी। अनुभव इस विचार-विचार-विचारों के लिए सरकार को अधिक प्रतिनिधि नहीं, किन्तु इस विचार-विचार में जो शक्ति रहे, उसके अन्तर्गत कि विषय को सभी-देशों की परीक्षा में उद्योगिक को समलने की चेष्टा न करे कि सर्वत्र: अज्ञात ही कराना पित्त बर।

* * * * *
सर्वत्र देशों में प्रस्ताव से प्रभावित शिक्षकों की “द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा” नामक पुस्तक का एक अन्वय। पृष्ठ १००, किमत ६६ पैसे।



हिसार में अज्ञोभनीय पोस्टर विरोधी प्रदर्शन

“अज्ञोभनीय पोस्टर हटाओ और श्रावण के ठेके बंद करो।”

यह नारा हिसार के एक युवक बड़े जनसमूह ने पोस्टर विरोधी जुलूस के समय दिया। यह जुलूस २५ फरवरी को जिला सर्वोदय मंडल द्वारा आयोजित किया गया था। मंडल पंजाब में इस दार्शनिक प्रदर्शन का गहरा प्रभाव हुआ और अज्ञोभनीय सिन्ना-पोस्टरों द्वारा होनेवाले सबक विरोधी आतावरण को विधिलक्षित करने में विरिष्ठ योग्य रहा।

श्री कुट्टी की पदयात्रा

श्री कुट्टी जी रिपले ४ वर्षों से बीमार थे। हाल रहे ही जब १२ दिसम्बर १९१० से तमिलनाडु के श्रीरंगम में प्रार्थना का उद्देश्य फीलात मूल रहे हैं। सुदुराई, तिकुल्लुवाली और रामनर जिलों की यात्रा समाप्त कर सब आय श्रीरंगम में प्रवेश कर रहे हैं। वगैरहे अब तक ७५० मील की दूरी तय की तथा १९० शर्तों का निरालम्ब विषय। उन्हें मूदान कार्यक्रमों का काफी सहयोग प्राप्त है तथा इस भाग के लोगो में भी मूदान के प्रति काफी आस्था प्रकट होती प्रतीत हुई है।

उत्तर बंगाल में श्री चारुचन्द्र भंडारी का पदयात्रा कार्यक्रम

बिजोबाजी के बंगाल प्रदेश की यात्रा के सारे क्षेत्र में मूदान कार्यक्रम के लिए बड़ा बंधन आतावरण तैयार हुआ है। बुकबंदार जिले के सुकामयंत्र नाम की जनता में काफी आस्था है इसी उद्देश्य के परिपक्व बंगाल सर्वोदय मंडल के संयोग का फायदा भंडारी ने मूदानगम क्षेत्र के पदयात्रा मंड ११ मार्च के प्रारंभ कर दी

इंदौर में “समाधान समिति” की स्थापना

दिनांक १८ मार्च ११ को म० प्र० सर्वोदय मंडल कार्यलय में श्री अमरनाथ अग्रवाल की अध्यक्षता में बैठक हुई जिसमें कार्यकर्तों के माध्यम से इंदौर शहरों के लिए एक “समाधान समिति” संघटित की गयी। इस समिति को शहर के सेवा-प्रदान प्रतिष्ठित जकों से सहयोग देने का आश्वासन दिया है। यह तब हुआ कि समाधान-समिति के संस्थापक प्रतिनिधायक म० प्र० सर्वोदय मंडल कार्यलय, में भिला करने तथा जो आश्वासनपत्रों के बारे में समाधान चाहेंगे। समिति उस पर विचार कर समाधान करने की कोशिश करेगी।

—सर्वोदय आश्रम, कल्याणपुरी में महिलाओं के लिए ३ दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया जिसमें ५० महिलाओं ने भाग लिया। श्रीमती श्रीमती विरलई तथा श्रीमती कुम्पुन अम्बानाथन प्रशिक्षण की इच्छाओं थी। शिविर में हातकला, गृहविज्ञान आदि का प्रशिक्षण दिया गया।

मेरठ में गांधी विचार केंद्र

मेरठ शहर में डॉ. जे. न. शर्मा जी द्वारा स्थापित एक नया केंद्र स्थापित किया गया है। सर्वोदय मंडल और गांधी स्वराज्य समिति की ओर से शहर क्षेत्र को सर्वोदय कार्य के हेतु सचन कार्य-नीय यानुकर कार्य आरम्भ कर दिया गया है। एक ही तरह विद्यालय की इसी कार्यक्रम के अन्तर्गत बना दिया गया है यह लगभग १०० विद्यार्थी आरम्भ से हाई स्कूल बना एक के होते हैं। स्वामी पदारी के अधि-स्थित सर्वोदय विचारों का भी लोग करामा जाता है। इन सब का धारा व्यव सर्वोदय कार्य में ही पुन किया जाता है।

जिला परिषद का निर्णय

जिला परिषद की जिला पंचायत समितियों के बैठकों में जिला परिषद के सर्वोदय-कार्य के लिए समर्थन देने की सर्वोदय समिति का जिला परिषद के द्वारा स्थापित किया है।

जिले में आमदान की अन्वेषी संस्था में हुए हैं। राजस्वमान का सर्वप्रथम आमदान रही जिले का मोरचा गाँव हुआ। अब तक जिले में कुल २१ आमदान हुए हैं। श्री गाँव २५० परिवारों के हैं, एक १०० का क्षेत्र तब ही परिवारों के नीचे की आधारी के हैं। ३ आमदान १० परिवारों से भी कम होते हैं। कुल १२६२ परिवार आमदान में शामिल हुए हैं। अधिक से अधिक करीब ३७५० एकड़ भूमि बाटे गाँव आमदान में शामिल हुए हैं।

जिले में एक समय १७ लोक बैंक और १२ शांति सेनाक हैं।

इस अंक में

- विश्ववाणी और संयुक्त ग्रह
- अमेरिका पदयात्री
- छात्र दान की धारा प्रवाहित हो
- शिरार पहाड
- पत्रमी की शून्य स्थिति
- नागों में भारतीय सेना
- स्वाभ्यासि छात्र समालोचने से लोगी
- ज्वरान में अंतर चले का प्रदर्शन
- अतिम आत्मी की खोज
- सुरार निरपेक्ष विद्या व्यवस्था
- समाचार

- १ विनोबा
- २ प्रभाकर गाँव
- ३ विनोबा
- ४ विद्यदास
- ५ रामोदरदास
- ६ विद्यदास
- ७ दास पर्यवेक्षक
- ८ अरविंद चंद्रा
- ९ धर्मप्रेम शाली
- १० चारुचन्द्र भंडारी

समाचार सार

—जिला सर्वोदय मंडल (गुर्गाँव) ने ६ अप्रैल से ११ अप्रैल तक सर्वोदय शिक्षण शिविर आरम्भ करा दिया है और उसके लिए आधा सेक अनाथ आश्रमों तथा सेवा समिति रूप में कार्य करने की कोशिश की जा रही है।

—ता० १७ मार्च से ११ मार्च तक एरा गांधी उत्तर प्रदेश राज्य मंत्रालय में श्री शिविर आयोजित हो रहा है।

—मिडियुन (पराकान) में श्रीमती भार्गव के आवासोत्प्रेषण में जिला सर्वोदय मंडल का सम्मेलन हुआ जिसमें जिले में ६ अर्थिक की गाँव-नीय में प्राप्त स्वच्छता दिवस मनाया गया और परताल के पहले मूल योजना का विवरण भी दिया गया।

—यंग शक्यों की महादान के नेतृत्व में ३ मई से १५ जून १९११ तक मंडल परिषद विद्यालय तथा शौच, एक युवा मंडल में भारत दर्शन के साथ-साथ नर निमित्त के लिए कुछ प्राथमिक कार्यक्रम आयोजित होंगे। यात्रा की अवधि ४५ दिनों की होगी हर व्यक्ति के लिए ५०५ रुपये तक का होगा। अधिक जानकारी के लिए मंडल परिषद विद्यालय तथा गांधी मंडल के लिए हलवादी मार्गपुर—२ से सम्पर्क करनी करें।

—तमिलनाडु मंडल पदयात्रा कार्यकाल तभी जिले में चल रही है। श्री यात्रा १६ मई १९११ को अपने अन्तिम रूप में प्रविष्ट हो रही है।

विनोबा जी का पत्र
हरनिना-आश्रम
जिला गाँव (अमर)

श्रीरंगम, म० प्र० सर्वोदय मंडल द्वारा आयोजित मूदान प्रेस, चाराएली में सुदुराई और प्रकाशित। पत्रा: राजपाट, चाराएली-१, चीन नं० ४१९१ एक प्रति: १३ मये १९११

संयम का रास्ता ही श्रेयस्कर है

आभी-आभी हमारे देश में नई बनाफना हुई है। उसको लेकर दबुसी हुई आभरी को शेरनी की दाँव में एक धर फिर कोर फरना है। भी प्रतिमानकी मे इतिम उपाय और अन्तःसंयम के सनावन विचार पर रही अंक में प्रकाशित करने लेल मे कुछ प्रस्ताव टाला है।

पर हमारी दृष्टि मे आभारी की बढ़ोतरी का जो "पुस्त" उदा विधा या रहा है और दुनिया के मित्र राजा जो लखत धरणा या रहा है, उनमें मूल में ही विचार-दोष है। अथवा गायत्री मे कहा था—“हमारी श्रुती का वह उपाय जो नोज कोई आय का सिधोना नहीं है। आने अमरिगत खाले के बीचन में उरने कमी पड़ी हुई आभारी की पीठा का अद्युगम नहीं किया है। ऐसी हालत में कुछ लोगों के मन में प्रारण्य न जाने क्यों से इष्ट छल्य (उर एन्-न) का उदय हुआ है कि अगर सुनिता उपायों मे जनम-प्रमाण पर अंकुश न रखा जायगा, तो दुनिया मिट जायगी।”

आभारी बढ़ने के दर से छोड़ो की सपस भी जोर प्रशुच किया जाय—संयम हर बात में और हर स्थल में पतुप के विचार के लिए आवश्यक है—पर भी दुकरी बाव होतो, पर पैसा न बढ़े इतिम उपायों की ही बात फरना सिधना लख-नाक है, उठना कुछ वेंवक शक्तिप्राप्ती के लेख में मिलता है।

इतिम उपायों के समर्थक जगद्वर मे एहील देते हैं कि संयम की विधा बहारों वनों से मानव को री जाती रही है, पर उठना कोई परिणम नहीं हुआ। हमारी नम्र वाय में यह भाषण और निष्कर्ष गणतो है।

संयम की भावनाओं मे जनमानस में धारी गहरी अने प्रमाणी की और उदीका बह भरीमान कर्मी न मानना बाहरा कि हमारे वनों के शीतल-मान मे दुनिया के कमी "मृदुली हुई आभारी की पीठा का अद्युगम नहीं किया।"

अन को आभारी की अनियमित बढ़ोतरी हम देखते हैं वह संयम के साकजून नहीं हुई है, बल्कि संयम का रास्ता जोड़ देने के हुई है।

-सिद्धराज

जमाना बदल रहा है !

उत्तराखण्ड के शिवोराम जिने का अखेट एक जोय-या गोंप है। वे कहते हैं कि वे को ५-६ छोटी-सी दुगुन लेने के कारण यह बाजार भी है। १ दिनकर को ५०० शर्माय-याय के लिफ्टिमे मे घुमने-घुमने हम वहाँ पहुँच गये। मैं और लामो ग्येद मिरीनी, हम दो साथी थे। वहाँ की छोटी परमिजाना मे खुले हुए सरकारी चरने के कारण मरी हुई थी। और वहाँ रहने का ठिकाना नहीं था। अन्-न में पहाड़ों पर उत का समय निरट करने लगा, हमारी चिन्ता बढ़ने लगी। छोटी दर के लिफ्ट टोयल के बाहर पैदल (पीठ के छोले) रख कर बैठ गये, पर कत रह रहे।

मैं वहाँ से उठ कर बाजार में घुमने लगा। बायपट्टे नहीं पहिचिने बलते। शिवोराम से आने वाली मोटर में होरा, वहाँ नहीं था। मोटर छै-ड के पास ही एक छोटा-सा स्नान घर रहा था और दो-तीन वदरें वहाँ किचन बाजार में मजबूत थे। एक अखेट की राना उगा रहा था। मैंने उरने लीयने के लिए हाथ खड़ा। वाम परलेबुले ५ मिनट मे ही हमारी दोस्ती हो गयी। ये तीनों भाई इष्ट थीं मे उव विचारों मे। हमें भी उन्हीने बयल के बमरें में रहने का न्यता दिया। उन्हीने हमें जगह ही और आय के चारों तरफ मर बैठ गये। मैंने पूछा, "प्रारण्य लाना क्यों बनता है न। बर्नन ले" इन्ही ही। कसके लिए हम दोनो पना ले। "परतु हम को..... अल जानते नहीं।" एक मरह में दिशिचिपते हुए उत्तर दिया।

"हाँ-हाँ शिवारार है न।"—मैंने उन्की बात बुरी करने हुए कहा : "हम इन्हीं भेद भाषों की बुर करारे का छन्देष्ट लेकर तो घुस रहे हैं।" का हम दावा को एक ही बैठी बुर करती है और उलने पारिने के लिए हमें एक ही बैठी रोटी मारने को फिर नए एककारन कर्मी नहीं बन पाते।"

पदिप्यों से अल्पवयस के अविवाह के संवत षाड्ड के विचारार (विचारो दुग्ध

उन्की बात बुरी करने हुए कहा : "हम इन्हीं भेद भाषों की बुर करारे का छन्देष्ट लेकर तो घुस रहे हैं।" का हम दावा को एक ही बैठी बुर करती है और उलने पारिने के लिए हमें एक ही बैठी रोटी मारने को फिर नए एककारन कर्मी नहीं बन पाते।"

पदिप्यों से अल्पवयस के अविवाह के संवत षाड्ड के विचारार (विचारो दुग्ध

को अयशस्वयमी मे मरद्वर में विरभ गति का साथ विना। विरभय को लिफ्ट के साथ कहा—"सुखिये दुष्ट से वनन गाँधीको के भागों पर चल कर बच सकता है।"

को अयशस्वयमी मे मरद्वर में विरभ गति का साथ विना। विरभय को लिफ्ट के साथ कहा—"सुखिये दुष्ट से वनन गाँधीको के भागों पर चल कर बच सकता है।"

१९५६ में सर्वद्वे में आयोजित एडि-वर्ग देवों के सनावराती-समनेन में जगद्वेने

सन् १९३४ में ३०० भाषारों मरेर देव की सनावराती में कविच-समावराती दल का सनावन विधा। सनावन का काम अयशस्व मे अने कथने पर दिया। पार्टी के वरने से अने सनपरद १९५२ तक मे पार्टी के प्रमाण कमी बने रहे। शारे देव में लोक-साहित्यक सनावराती के सावधान पर अयशस्व पठा दिया।

सन् १९४२ की सन-कविच बह गुरु हुई, वह वयवशापी की सनरक ही थे। पर हकीमिनाम हेनुच देल को उन्की सोझाको को कथ फर मे बाहर था गवे और कई महोती सख गुज रह कर भाओलको को तान देते रहे। सन में आहोर देखे होयन पर पकड़े गये। यादना का दौर मुक कर्त की घट्टाओं पर गुजारे से हुआ। हेकर भावशापी की कविचित करने वाली हर प्रभाष की सावराती की पार्टी "किटि मंत्री-परिषद के मुमुक्षु भावराती की दैवक लार्ड के नेत्रुष में

३६६, "राय-सारा के कविसे सनावराती की कोविच फवाको सनावराती सनावराती रायच मरुत अनि की मे सनरकी है, सनुयु सांभ को सावरी, वरने और सावरीर के को सावरी है, हा वर कर्मी।" उमके हा विचारो की सी विवेक के विचारको वर सान भाषक हुआ और मोरर के दोमीन कविच भाषी और सनावराती सनावराती के बनरो मोरर बाने का निवचन दिया। सन् १९५८ में गांधे कार मरी। एक थोर को परिषदी एडिवा के सिंयन देवो मे मरुं के प्रतिदिन मारोती देवो मारोती के घोवरद्वरक ३६६ के मे वचारों को। वर विचारों को सना-विचन वर मे गवने के लिए हद एडि-वयस "मारीम सनरके वि मुमुक्षु" मरुष के विधा मित्र पर देव विवेक के विधान विचारको का सना भाषिणी हुत।

संघ के संगठनात्मक पहलू पर पुनर्विचार हो!

हरिवरदत्त पर्रीस

चेन्नैपुर में हम सब मिल रहे हैं। साहित्यिक के दिक में संबोधन को गति देने के लिए तय-तय के विचार धन रहे होंगे। ऐसे वार्षिक विचारों का आदान-प्रदान हो, इस दृष्टि से सम्बन्धन में धरोकर होने से पूर्व में निक संघ के मौजूद सखन को ही चर्चा बनना।

पुरु में हमने विभिन्न त्वनात्मक संस्थाओं का संगम करने का भरतक प्रयत्न किया। उक्त में कल्याणी की मिली और उन प्रमुख संस्थाओं का एक विशाल संघ बना। इस संघ के संघोदय-आयोजन के नाम से पहले वाली भूदान आदि वाली प्रवृत्तियों को बलाने का विचार उठाया। संघ अपने अपने में स्वयंसेवा संस्था बना। मुख्य के हर देखे में भूदान-समितियों का गठन किया गया। फिर १९५० में हमने विमानमार्क समितियों को तयारी। अंत में संघ और वन के विर अवन की ओर बढ़े। विमान-निर्देशकों के सहारे संघ ने अपने छोटे सफर की प्रक्रिया शुरू किया। विमानों के संघ को मुक्त करने का साहसी प्रयास किया।

“संगठन अर्थात् की कसौटी है, काफ़ू के इस गुण-गानक को बरितार्य करने का हनाक चल है ही। किन्तु मौजूदा पाठ-मंडल से हम अपने आर्थिक अनुदान नहीं रख रहे और इच्छित हमने फिर से संघ को पुनः प्रयास के चक्र में डाला। नीचे के मुझे कुछ प्रतिनिधियों वाली तस्वीर मिली थी रत्न भद्राणी हमने की। जिस प्रकार इतिहास की काल-प्रतिष्ठितों नाम मान की है, जिस और प्रतीक इतिहास की लक्ष्य है, जोक वेष ही हमारे प्राथमिक संघोदय-संगठनों की हार है। जैसे आज के राज्य-संघीय संघोदय जैसे हैं कि मैं तुम्हा हुआ प्रयास का प्रतिनिधि हूँ, जोक वेष ही हमारे संघ के साथी संघोदय के समर्थक हैं, किन्तु सखन ही प्रतिष्ठित न को पकी है, न कसौटी ही।

मेरा नाम सुभाष है कि क्या हम प्रचलित तरीके को छोड़ कर अद्वितीय संगठन का ही एक नया नमूना देना नहीं कर सकते? क्या हमारे लिए भी विचार, संघ का होना के स्तर पर इतिहास संगठन का संघोदय आवश्यक है? प्राथमिक संघोदय-संगठन, मिलान-संघोदय-संगठन, प्रतीक संघोदय-संगठन और फिर ५० भां-५० संघों का संगठन; यहाँ हमने मान मंडल ही बरसे ही, किन्तु संघोदय बहुत ही एक उपरो संगठन का ही अन्वय है। हमने विधान में प्राथमिक संघोदय-संगठनों के जो सखी-सखी-सखी की अन्वय की है, ५० भाग हम बना करते हैं। निम्ना सुनिवार के साथी प्रयास करती की है और इच्छित ही एक संगठन को विधान चारित्र्य संगठन के विर अर्थात् शक्ति का आनिर्भव होना चाहिए, यह हमें ही पता है। परिणाम स्वरूप साहित्य और सौभाग्य-संगठनों से ही नहीं, संघ के विचार, प्रयास व धर्म के संगठन के लोचनीय हूँ। धनकीय संघोदय में सभा की रचनात्मकता है, यह हमारी आने-दिन की परियोजना है और यही प्रक्रिया हमारे संगठन में विचार वक्र हूँ को गयी है। लोक-सेवा को क्लेशों की तरह संघ तय देते हैं, जो क्लेश के समाप्त अधिकतर हम ही हम दरलालता को चम नहीं कर सके हैं।

मौजूदा संघोदय की कुछ सुविधों हमारी

नजर में आती हैं, उनके विचार भी मैं अपने सुभाष चारु हूँ।

सुविधियाँ

(१) देय में प्रचलित राजकीय संगठनों की तरह ही हमने इच्छित किया, प्रयास व प्रारम्भिकी विरके बनकर हैं।

(२) हमारे प्राथमिक संघोदय-संगठनों की पुनिराज सखी-सखी नही चाहिए। इसके बनाने लिकें बनानी संभव के पकी है।

(३) अन्य संगठनों में विर प्रयास कल्याणकी विचार वाले योजना-संगठन की ही तरह के संगठन। मैं तुम्हा व ही और उते अन्वय के बनकर करते हैं, वे अन्वय के कीड़े किची भी संगठन के लिए सखे प्यारक उत्पन्नक होते हैं। हमारे प्राथमिक विचार व प्रयास के संगठन में इस प्रकार के संघों का प्रियेक सखन-संगठन है और उनके सुधार का निगमन की कोई योजना नहीं है।

(४) प्रचलित संगठनों की तरह हमारे विचार व प्रयास आदि संगठन भी औपचारिक ढंग से लिकें किडान, चर्चा या पार्लमन्त बनाने के लिए सना उम्मेदगी में मिलते हैं। यह विधान औचित्य नहीं होगा, न ऐसे स्थानों पर औपचारिक हूँ बन पाया है।

(५) हमारा संगठन आर अद्वितीयक है और अर्थात् का पर्यव प्रयत्न है, तो प्रयास को प्रकट होने के सामाजिक प्रयोग प्राप्त हो सके, ऐसा हमारा उद्योग्यन आर्य नहीं है। पररार प्रयास, निष्पन्न और प्रकाश निर्माण ही, यह सुनिवार्य बात संगठन की परियोजना में से ही कसौटी चाहिए।

(६) आज हमारे अधिकारीय चक्र कच, से साथ ही साथ नहीं रह सके। उभय में प्रयास व प्रकट विकसल है, विर प्रयास रचनात्मक संगठन में। जगत् भर के लोगों पर विचार करने वाले हम अपने साथी पर विचार नहीं करते। किन्तु कुछ का भी इच्छित-परिवर्तन सखन है, इच्छित अपने साहित्यिक के साथ साथ नहीं कर पते।

अतः, हमारे संगठन को सखी व प्रक्रिया में कोई ऐसे विकेन्द्रता का नवीनता

नहीं है, जो प्रचलित संगठनों को दिखदर्यन कर पते और उनके लोगों से मुक्त रख सके।

सुभाष

इसके सुधार के बारे में मेरे विचार सुभाष हैं:

(१) संघ के संगठन को एक बार फिर विस्तारपूर्वक जोड़ दिया जाय। नये लिके के रचना सामाजिक ही। प्राथमिक संघोदय-परिचार बने, बिडे व प्रास का नहीं, किन्तु गौरव संघोदय-परिचार के लिए कोषोदय-परिचार के लिए कोषोदय-परिचार की निष्ठा बरती जानी जाय। किन्तु सखी-सखी उच्छी प्राथमिक वर्त हो। साहित्यिक विवरण करने प्रयास-संगठन; साहित्यिक विवरण करने उच्छी-सखी सखी-सखी और आत्मियेक ढंग पर एक वर साथ करने की विनयी वीर्य ही हो, ऐसे ही सामाजिक रूप से विकने साथ ही सके, उनका एक संघोदय-परिचार। इसकी रचना ऐसी कि संघोदय-परिचार निर्देशक-संघोदय-प्राम-परिचार में यामन की तरह मिल जाय। ऐसे प्रास परिचार के गौरव आर्य वामन की तरह सखी-परिचार में बदलते जायें। इसी वर को आगे बढ़ा कर निष्ठा परिचार तक ले जाया जाय। किन्तु सुविचार में यहाँ अर न हो, अन्वय न हो, परिचार की आवश्यकता न हो, नहीं विचार परिचार की, जग अन्वय की भाषा लिकें भाषा ही रहती है।

संघ ऐसे परिचारों से बने, जहाँ ऐसे परिचारों के साथ संघ का जीवन संभव हो। जैसे इच्छित-परिचार का सुलभ बनाने किन्तु में दरदा हुआ राज्य सुध चल सखा है, जैसे संघ का भी वा प्रयास परिचार की दरदा में रह कर संघ का भार संभव गयता है। विचार व प्रास के संघोदय-संगठनों के गठन की कोई बरकर नहीं है। यह हमारे आर्य को बढ़ाते हैं और सखत से हमारी नजर सुधरी ओर ले जाते हैं।

सुभाष उठाया वा सखा है कि बिले व प्रास के प्रयास व परिचार धरत हीन संभव है। प्रास, बिडे वा कसौटी के किची विवेक मायले व विचार प्रकट कराना होगा तो नबरीक का संघोदय-परिचार विचार प्रकट करेगा। आजपर्यन्त सुधें को नबरीक के पौरव-संघीय संगठन-परिचार लिके कर चर्चा कसके विचार प्रकट करने में लिकें प्रास का विचार के सखीय व किन्तु विचार के किची भी सखीय व प्रकट विचार कर सके। किन्तु हमारे विचार व विचार को नबरीक के लिए बिडे व प्रयास के इच्छित संगठन की अन्वय नहीं होनी चाहिए।

वे परिचार इच्छित सखी में लीन-परार नार नबरीक के परिचारों के साथ विचार-

विचार करने के लिए उनके अपने स्थानों पर सखी-सखी का संघित आयोजन में करेगी। इसी प्रकार अन्वय प्रास संघ के लिए हर परिचार बनना एक वा संघ के अधिक संघिक भी संभव गयता है। अंश आर संघोदय संघ वन कसौटी के सखी-सखी में होंगे। इच्छित के वार्ड-निगमन की हरिडे कुछ सखी-सखी को बना गौरव ही। संघ का यह स्वरूप सुभाष की ‘सखी-सखा’ जैसा हूँ पते। यहाँ सुते हल हल का इच्छित के साथ निष्ठा करना प्रयास है कि सुभाष की सखी-सखी वा विचार प्रयास निकल हो रहा पा, उभय में सखी-सखी संगठन का बगैर चल कर ही सुलभ प्रास हमें मिलता, किन्तु संघ के नये विचारों की तरह सखी-सखी बन हूँ। उच्छी स्थान से विचार-संगठनों के लिके। इस विचार में लिके से प्रयोग हूँ हमें चाहिए।

(२) ऐसे संघिक वाले संघोदय-परिचार ही हमारे कार्यक्रम की सुनिवार ही सखी है। आज हमारी प्रक्रिया में विके की कार्यक्रम हैं, उच्छी सखी-सखी का अन्वय है, यह हर परिचारों के सुध हो सखा है, ऐसे आर संघोदय-परिचार हैं, उच्छी ‘सखी-सखा’ वा संघोदय-परिचारों के साथ संघोदय-परिचार, यहाँ सुनिवार हो सखी है हमारे कार्यक्रमों के जीवन की और कार्यक्रम के विचार-परिचार की।

(३) अन्वय संघोदयों के ‘किन्तु’ सखय होते हैं। जैसे ही हमारे प्राथमिक संघोदय के लिए कोई वर सखा है। और एक प्रयास हर संगठन में अन्वय ही है प्रियेक प्रास विचार वर सखा है, किन्तु कुछ सामाजिक-संघोदयों किन्तु, कुछ सखी-सखी संगठन की हानि सुधुका सखी है। सुधुका रहे भी है, विचार व सखी-सखी का अन्वय है। हम यो सखे सुधार में सखे हूँ वर सखी-सखी में अन्वय सखे को सखे। किन्तु हम प्रयास-सखी की प्रक्रिया को कानने के अन्वय तो मिलने चाहिए न। यह हमें ही संगठन है कि बगैर परिचार की, साथ ही, साथ साथ करें। सखी-सखी के साथ प्रयास विचार-परिचार की साथ ही है। उच्छी को प्रयास विचार-परिचार करने वालों के कोषमें में प्रयास के लिके सखा वरते होते चाहिए। विधान में विचार प्रयास आर विचार-परिचार की साथ ही है। उच्छी के अन्वय सखीय प्रयास सखी की साथ ही करनी होगी। हम किन्तु के नबरीक और किन्तु को बनने का लोच, यही कसौटी ही।

(४) सखी-सखी का प्रवृत्ति स्वरूप वर कर साहित्यिक-सखी-सखी परवृत्ति-सखी नहीं, परिणाम-सखी को सखी-सखी है। सखी-सखी वा सखी के अन्वय में कुछ हानि का परिणाम लोचों की सखी है। यह हमें संगठन ही सखा है, व प्रकट सखी-सखी सखा है, साथ साथ विचार व प्रयास वर करने के साथ साथ सखी के निष्ठा-सखी प्रयास भी सखी-सखी-सखी भी सखी।

नई जनगणना और बढ़ती हुई आवादी

कादिनाथ त्रिवेदी

घाज देव में और बुनिया में लोगों की वस्ती बढ़ती ही जा रही है। अपने देस में १० वर्ष पहले हम कोई ३६ करोड़ लोग, तो अब लगभग ४४ करोड़ हो गये हैं। मतलब यह कि १० वर्ष में हम कोई आठ करोड़ और वड़ गये। अगर बड़ने का यह सिर्जना इसी तरह जारी रहा, तो अगले ५० वर्षों में हमारी वस्ती आज की अपनी वस्ती के मुनाबले दुगुनी से भी ज्यादा बड़ जायेगी, यानी हम १०-२५ करोड़ से भी ज्यादा हो जायेंगे। तो सवाल यह है कि क्या इस तरह वस्ती का वैदिकशास्त्र और वैश्वामय ऋषि वस्ती के बपने द्विष्ट और मन्त्रिय के लिए ठीक है? क्या देस को इसकी तैयारी है कि यह इस बढ़ती हुई वस्ती ने लिए जरूरी सब तरह को भूहलियतें हर आदमी को मुहैया कर सके?

अगर देस को इसकी तैयारी नहीं है, और जातिर ही है कि सचमुच आज हम इसने तैयारी नहीं है कि अपनी वस्ती पर पैरा होकर इस इतना बड़ा इंसान के लिए जरूरी सब तरह का सामान खड़ा कर सके, तो हमें सोचना ही होगा कि अपने देस में हम अपनी वस्ती को कल्प में कैसे रखें? आज को इस बढ़ती हुई आवादी में हमारे देस के नेताओं और हमारी सरकारों को पहले सोच में डाल दिया है और अब पिछले ५ सालों में वे इस बड़ होसिया में लगे हैं कि लोग अपने औसत पर रोक लगायें। परों में बच-बचे-बच बचने बीबा हों, बढ़ती हुई आबादी कुछ फेके, बचे, तो ब्राह्मण का कोई एक बच्चा कम लके और किसान-योगजनों के बचने देस की तरफने बच जो बच उदासमान गया है, उतना सामान देस के हर आदमी को निकल सके।

हलमें कोई देस नहीं है कि ऐसी गरीबी, भुखण्डी, बेकारी, लाचारी और मासमती आज हम देस में है, उसके रहने आबादी की संविधान बढ़ती देस के लिए बहुत ही उत्तरदायक है। देस की अचल संपत्त उतने लोगों की ताकत है। लोगों में भी सात उन्हीं की काम आती है, जो अपने आर में सातार होवे हैं। इंसान को भगवान ने तीन तरह की ताकतें दी हैं—तन की ताकत, मन की ताकत, क्षामा की ताकत। इन तीनों ताकतों के भरा-पूर आदमी ही देस की अचल संपत्त होता है। ऐसी ताकत वाले लोग जिस देस में ज्यादा होते हैं, वही देस बुनिया में आगे बढ़ता है और वह ही बुनिया की चीज में दिक् पास है। हमारी मुनीयत यह है कि उन्हीं ताकतों को जो गुणान हम पर लदी रही, उतने ताकत कम करने में लग, मन और आत्म की ताकतों का लही रिक्त नहीं कर सके। गुणानों की बहाइ से देस बढ़े गरीबी, लाचारी और मासमती से हमें इंसान के नते इंसाना रिदा दिया कि आज उतना हिसार लगाना मुमकिन है। ऐसी हारी, यकी और सिदा बलान में हमें अपने देस में अपना राइ चलाने का भीक मिळा। १५ बर में सब अन्ना तब बचा रहे हैं। अपने आप में हमारे लिए यह इत अन्ना की पड़-पड़त की चीज बनी है। हमने हमारी जिम्मेदारी बनी है। हमारी लखी के लखे चुने हैं। हमारी बरें बर-बुधियों पर दूर चुने हैं। हमें सोचने, काम करने और अपनी हालत अपने हाथों सुधारने पर जोर भी मिला है। हमने बीच साधन योजनाओं बनायी और उन पर काम कर देस में उन्नत किया। पिछले १० सालों में देस ने बरें तरह ने लखी की है। बड़े-बड़े बच-बुधियों खुले हुए हैं। बड़े-बड़े चीज बने हैं। यानी और मिजने की मुविधा बड़ रही है। रेल बनी है, मरें बनी है। डाक-घर, पिन और रेडियो आदि की मुविधाओं का विस्तार हुआ है। उद्योग-धंधे बड़े

पायदा होना का नहीं। नहीं ऐगान हो कि हय बमाने बैठे गबलिय और बन आपे बन्दर। कम औसत देस करने के लिए जो लीके आज हमारे सामने रखे जाते हैं, जो सामान हमें दिया जाता है, जिस तरह का धीमन अपमाने के लिए हमें समझना जाता है और उतने को पायरे बताने जाते हैं, कच उतने लुरे ने यहदार् हैं जोचना बकरी नहीं है। कहीं रही है कि बहरे से एक नरें चीज हमारे सामने आती है, तो डाइट उतने हुभा बार्, उतने अमर में आ जायें, उते अन्ना नो, और इस तरह उतने अन्ना और अन्नी आने वाली औसत का पायदा करने के बहरे हम अपने इंसान को, मन और भाग्या के भारी तुलिय को, और बरारी को दस तरह म्पेत में सैडि रिर पीदियों तक उतने लुरे अहरे के बचन हामे लिए भारी हो बार्। सवाल बहुत ही बरदा है और उतनी ही यहदार् है जोचने नरक है। परिवार-विधोचन का जो तरीका आज देस में चलाना जा रहा है, उतने ही बरदा है कि लोगों में औसत कम पैदा करने की धारना बने और सचमुच औसत कम पैदा भी हो, पर इतने साथ को तरे पन सखत है, यह बह है कि एक बरदा बचाने में बनावटी तरेपों के औसत की पैदाशु को सोचने का सिर्जित बल बच और उते समान में उजब मिल गिय, तो कुछ होे लालों के बह एक पैदा तमम आ बरदा है, बर देस के लोगों में समझना भी भारी राइ आ बार्। वे नीति, सहायता, मानसता, संघर्ष और विवेक से हाथ जो बैठे और उनके तन-मन का सहायन भी इतना बहबस रूप कि उते सहायक, सुधारना बहबस की भारी प-बना। और फिर ऐसे लोको के जीवन से बुधिया, पराक्रम और क्षामा का मान तो इन तरह सजता ही चाये, जैसे गये से रिरे के चींग।

एक राइ के नते हमें यह समझना होगा कि भगवान् ने इंसान को रैशन की तरह मिलि लाने लिये और भोग-इंसान के जरूर अपनी बालका को तुल करने की ही शक्ति नहीं दी है, बल्कि उतने बह मौज दिया है कि वह सहायता से उन्नत उडे. इंसान को और फिर इंसान के नते भी बह भगवान् के नरकीर कर्तु है। इली सहायते से हमारे नते यह बड़ा गण है कि 'पर बकरी बरे, जो नारायण हो ब्या।'

एक राइ के नते हमें यह समझना होगा कि भगवान् ने इंसान को रैशन की तरह मिलि लाने लिये और भोग-इंसान के जरूर अपनी बालका को तुल करने की ही शक्ति नहीं दी है, बल्कि उतने बह मौज दिया है कि वह सहायता से उन्नत उडे. इंसान को और फिर इंसान के नते भी बह भगवान् के नरकीर कर्तु है। इली सहायते से हमारे नते यह बड़ा गण है कि 'पर बकरी बरे, जो नारायण हो ब्या।'

एक राइ के नते हमें यह समझना होगा कि भगवान् ने इंसान को रैशन की तरह मिलि लाने लिये और भोग-इंसान के जरूर अपनी बालका को तुल करने की ही शक्ति नहीं दी है, बल्कि उतने बह मौज दिया है कि वह सहायता से उन्नत उडे. इंसान को और फिर इंसान के नते भी बह भगवान् के नरकीर कर्तु है। इली सहायते से हमारे नते यह बड़ा गण है कि 'पर बकरी बरे, जो नारायण हो ब्या।'

एक राइ के नते हमें यह समझना होगा कि भगवान् ने इंसान को रैशन की तरह मिलि लाने लिये और भोग-इंसान के जरूर अपनी बालका को तुल करने की ही शक्ति नहीं दी है, बल्कि उतने बह मौज दिया है कि वह सहायता से उन्नत उडे. इंसान को और फिर इंसान के नते भी बह भगवान् के नरकीर कर्तु है। इली सहायते से हमारे नते यह बड़ा गण है कि 'पर बकरी बरे, जो नारायण हो ब्या।'

एक देस में दस लाख 'बकरी के बकरी' नर से नारायण बनने वाले लोगों की बनी नहीं रही है। हर बमाने में, हर लीके पर भगवान् की दया से हमारे बीच ऐसे लोग ब्याते रहे हैं, जिन्हें आप लोगों ने अन्दर गाना दे आगे भगवान् की तरह बूझा है। मनुष्य के जोर इंसान चली बने और बर्न दे है। हमारा लाली की हमारा परमा और सहाय भी हमें यही बत रही है। अर अगर अपनी देस लारी बलिती विरलको भूल कर हम भटलने हैं, मानसता से ह कर पसुता की ओर जाने हैं, और फिर पसे से विधान बने का रास्ता बचने दे, और इतमें कोई शक नहीं कि हम देस और बुनिया के लिए नहीं, समुची मानसता के लिए एक बहा लतप लता बचने दे। एक लिए यह जरूरी है कि परिवार नियोजन के बारे में हम अपने दंग से लोचें, बचन न करें। असल को पकड़ कर चले और लारे देस में असल ही चल का और बहा पर जोरदार बाधापाय बनायें।

हमें यह जानना-समझना होगा कि मनुष्य की मानवता भोग से नहीं लान से बढ़ती है। भोग उतनी एक पुर है जरूर, पर भगवान् ने उते लारन दी है कि वह उत पर रोक लगाये। डेरक भोग भोगने का दास्ता बर्नाना का दास्ता है। उतसे न मनुष्य का, न मानवता का, न देस का और न समाज का ही कोई हि कमी टुझा है, न आगे हो सक्ता है। उतमें या उतमें की ब्या हो करनी ही बर्न है। अगर हमें चारे चले की और मानसता भी धरि से लार उतने का कोई इतरदा उतमें बर्न है, तो उतकी दिशा भी के राने चीजे करने में नहीं लुलगी, बल्कि भोग की ब्या में लर कर संघर्ष और सहाय को बीजना या लरब बमाने से ही हमें कि कर आगे बू को और उतमें बर्न है। मनुष्य के जीवन में संघर्षों का बही लान है। संघर्ष ही मनुष्य को मनुष्य बनाते हैं। परिवार नियोजन की बनावटी रीति में संघर्ष और सहाय के पांच की कीरें गुआर बज नतीं आती। मनुष्य की बर्नमें चरे भी है बदाती और पोताती हैं। उतने कारण आज की अपार उन्नी होतरी है, पर कल का बीजना नते बुनाना, ली पीदियों के लिए पड़त भगवान् बह बरदा है। इस और सहाय का यह एक देस गहरे है, जिसे धुलने या बानने से नम भारी प्रुद्रीय में पड़ कती है और अन्ने मानसता से हाथ जोरें हरे लार बरने हो सके हैं। तो अर हम यह देते कि हमारे देस के मानसता का एक लरक में हमें क्या बह रहे है।

जिनका हो, तो भी बचोड़ी लोगों के उकसाई आसक्त रहनाका मुझे तो बिल्कुल अपरिचय था। मुझे तो ज्ञान ही था। उनसे गर्मगर्म उनसे के उतावों द्वारा उत्पन्न विचारन करने के लिए हमजाने की अंतर्दृष्टि को संभव करने की बात समझना मुझे अधिक हीस समझना होता है। हमारी जूनी का वह लोग-हा गोल कोड़े आसक्त का लिंगोना नहीं है। आने अनिगुन करने के चीरन में हमने कभी बड़ी हुई अगवारी की चीर का अनुभव नहीं किया है। ऐसी हालत में कुछ लोगों के मन में एकाग्रता न जाने कबसे हो इस हलचल पर उद्विग्न हुआ है कि अगर इतने उतावों के कल्प-मरण पर अदृष्ट का राज कौनसा, तो कुनित सिद्ध कौनसा ?”

२० आसक्त, २१६० को रबी रिचय पर आने विचार प्रकट करने हुए सभ निवेदन में कहा था :

“हम सभल का एक बहुत बड़ा आसक्त-हिसा रहते हैं। आज ही-दिप, हम एक देवी सम्पत्ता कर दे कि विचित्र बलि-वनी के समान वैश ही न हो और वे विचित्र-भोग में डूब रहे, तो इतने उनक दिवसों में ही कोई अनुभव हासिल होगा ही नहीं। उधे हालत में सारा देव कर्तवीहीन बनगा। समस्त कम पैसा होगी ही लाभ होगा, देहा मान कर वे लोग इतक सम्पत्ता को बढ़ाया है। लेकिन इतने न सिर्फ समस्त पैसा होगा ही, बल्कि शान-कला भी पूर्ण होंगे। मध्य कम होगी, मरान कम होगी त्रेषलिया घटेगी और उधे हालत

में फिर वह पक्षी नहीं वह चाहेगा कि पति पत्नी का ही समान हो। नर आर देवी ब्य-रसा कर डिते कि समस्त पैसा ही न हो, जो फिर क्या बजट है कि समस्त में पति पत्नी का ही सम्पत्ता हो ! जो, हम समते पर नरा गोप्य भाव, तो क्या चलेगा कि पर त्रिना गदप अरुण है ? हमने हमारी नीति विचारी किंशी हय अरुना आध्यात्मिकता विचारी लोभो है, बुद्ध की मया विचारी कम होगी ! ऐसे हय गोप ही नहीं रहे हैं। फिर इतके सामाजिक पद्धत पर भी हयार ध्यान नहीं जा रहा है। रूस और चीन में औदार्य हदतने पर कल दिनावा रहा है, हम पत्तने पर जोर दे रहे हैं ! इतना नहीं क्या होगा ! जो इस सवाल के अपने आत्म-निष्ठ, सामाजिक और नैतिक पद्धत में हैं ! इतक इति के हमारे पूर्वों में जो योगनत हवायी थी, वह ठीक जो ! ब्रह्मचर्यात्म, पृथ्वराभम, कानन्यात्म और सेवनात्म ही उधे योगना को अरुणाने और उरुपी मर्गाद में बीचन विधान के हयें लाभ होगा। आज १८ साल की उमर में घाड़ी होती है और १८ साल की उमर तक पृथ्वराभम करवा है। जो ४० साल तक कुलान पैदा करते रहने की मर्गाद की उमर है। इतके बढ़ते २५ साल की उमर में घाड़ी हो और ४५ साल की उमर में हवी बुधय कानन्यात्म बन जायें, तो कन्याएं पैदा करने के लिए २० साल का एक वैशावा बन जायेगा। इतके कन्यान के नियमन का भी लाभ मिलेगा और आध्यात्मिक

उचितों भी मिलेंगे। अगर वह होना है कि जिन प्र-दियों में श्रमण कम, बुध-पार्थ कम, उनकी औदार्य बढ़ती है। वह अनुभव की बात है कि अमीर देशों में बन्द-रुग्ना कम होती है और गरीब देशों में ज्यादा। बाननरो में देलना हो, तो देश की सवाल नम है और बाननरो की सवाल। बार वह है कि देश में बच्चों की शिक्षा का अरुण सम्पत्ता चाहिये, उनसे अन्धे अन्धे शिक्षे चाहिए। अगर समस्त को अन्धे बुध रहे, तो वह समस्त को सेवा ही होगी। सब निर्माण-कार्यों में बुध निर्माण के बदार अरु निर्माण-नार्थ दुनिया में नहीं है, रूस और ध्यान न देने हुए अगर भाव-विज्ञान योगनात्मन में लिप्त रहे, तो उनमें बच्चे बुद्धि के हयने माता-पुत्र नियंत्रण में ही न के ही प्रचार बुध-गार्थ और ब्रह्मण नहीं कर सोंगे। माता-पिता के विरुद्ध यह बीच राग भी नहीं होगी। उनसे हावों की कोई प्रवृत्त नहीं हो सोंगी। उनसे हीन न त्रेषारिता नहीं रहेगी। हमलियें में यह बहल और समतावा ररवा है कि विचित्र निवेदन की आगरी यह योगना न केवल अन्धे देश के लिए, बल्कि ज्ञानय मात्र के लिए उत्तर-साह है।

“इतके नर भी नी सोच कर देखिये। एक अरुण प्रकट होना चाहती है, अरु उधे गर्म से वा उनसे पहले ही सवाल पर देखें। मान लीजिये, आने एक बड़े अरुणमें की हवा की और एक अरुण बन्दे की हवा थी, तो हयमें अधिक बड़ा अरुण-राय बीजवा हुआ। बच्चे के पैदा होने

पर उधे मर टाटो है या गर्म में आने पर उधे रिशो मारो है, तो आर उत्तर-का भूक पर ही प्रचार करे है। जोनाम आने आना चाहता है और आर उधे आने आने नहीं देते, यहीं रोक देते है। आरमा बाहर आने की कोशिश करती है और आर उधे नहीं आने देते है, तो लोचने रि वह रिना वश और गर्मारे आरमा होता है।”

“किंकर निवेदन की आर भी हत नहीं हीत पर देश के दो बाने मने मद्रा-बुद्धों के वे कोये समते विचार है। उधे सवाल के हय पदार् पर भी गहराई से सोचना ही होगा, नहीं तो आर एक बार भाप रात्र एक फलत और उत्तरनाक राने पर एक वा, तो न केवल हयार कर्तमान रिगरेगा, बल्कि आने कभी बर्त-दिष्टी का मरिष्य गहरे अन्धकार में डूब जायेगा। अरुणत में रात्र का सपना बुध गार्थ ही हय मात में है कि वह परिचय ही परवत पर उधे मर्गाद का सल्लान न पक्षे, बल्कि शाक्त, सारथ मुद्रिय और मुद्रियवित भाव के राह मर्गादों के सारे बाने का अरुणत करने आने सुबार्थ को ही विद्या में मीके और आने की सब प्रचार से सभसे और उरुड बनये। यदि हय वष इतक से परिशर निवेदन की सार देलें, और शक्य बरते ही हयने मरुद नहीं कि उधे देश उधे उधेगा और उधेही उरुपी साक्ष बड़ेगी।”

१६-१६ को अरुणगामी, हरीर-भोगल की सम्पत्ता में मरगादें पावों परिचरित और सद्योवित कर में।

आंध्र में प्राप्त और वितरित भूमि तथा ग्रामदान का लेखा

[जनवरी '६१ तक]

इस वर्ष का सम्मेलन कार्य में हो रहा है, इस निमित्त वर्षों भूदान में प्राप्त, वितरित, अयोग्य और विवरण योग्य भूमि, मायदान के ऋणके विषे जा रहे हैं।

क्रम	जिला	प्राप्त भूमि : एकड़	वितरित-पं-रुपया	वितरित भूमि	आहरता-पं-रुपया	अयोग्य भूमि : एकड़	वितरण योग्य क्षेत्र भूमि : एकड़	मायदान
१	आंध्रप्रदेश	११,२१२	२०४	१,८११	१,१४०	६००	८८१	३
२	हरिद्वार	२१,५२४	१,६१२	१,६११	१,८८१	५६००	१,६०१	१
३	कपीसगर	१,६११	१४६	५,६००	१,६११	१,८००	१,८११	—
४	सम्भल	११,०१३	६४६	१,८८१	१,६११	१,६११	१,८११	२
५	पृथ्वराभम	५१,०५६	५,१८३	१,६११	१,०८१	१,०००	१,६११	२०
६	मरगाद	१,०११	१,१८८	१,६११	१,६११	५०	५,०५०	—
७	सैरक	१,६००	२४१	१,६११	१,६११	१,६००	१,६११	—
८	विशाखापटनम	१,०५६	१,६११	१,६११	१,६११	८११	८११	—
९	वरंगल	१८,०५०	६४६	८,६००	१,६११	६,८००	१,६११	—
१०	अर्शापुर	१,६११	५४६	१,६००	१,०००	१,०००	१,६११	११
११	विशाखापटनम	१,६११	१६१	१६१	—	—	५५५	—
१२	पविचम गोदावरी	१,६११	२०४	१६१	६०	—	१,६११	८
१३	पूर्वी गोदावरी	१,६११	२०४	१,६००	२०	—	१,६११	—
१४	कृष्णा	८,६११	२४	३	—	५,६००	५६०	—
१५	गुंटूर	५,०५६	५३	५२	६०	५,८००	१,६४	४
१६	अनंतपुर	३,८८०	४०५	५००	२०५	—	२,६८०	—
१७	कृष्णा	१,६११	१,८०१	१,६११	१,६११	—	१,६११	६६
१८	कृष्णा	१,०८४	१,६११	—	—	५०	१,०८४	२६
१९	मैसूर	१,०५०	१,०५१	४	४	६,६००	५,६११	—
२०	मैसूर	१,६११	६४१	५५६	३००	५,६००	६,६११	३
कुल		२,४१,६११	१६,६११	१६,६११	१६,६८८	५८,६११	८६,६०१	५८०

मूदान-आन्दोलन के दस वर्ष : एक सिंहावलोकन

१९५१

- १४ अप्रैल, पोचमण्डली में श्री रामचन्द्र रेड्डी से १०० एकड़ का प्रथम मूनिदान प्राप्त (मू-नाति दिवस)।
- १८ अप्रैल से २७ जून, तेलंगाना-पदयात्रा में १२ हजार एकड़ भूमि मिली।
- १२ दिसम्बर, परंप्रथम-नवम्बर से दिल्ली की ओर विनोबाजी की पदयात्रा आरंभ।
- १ नवम्बर, मयूर में ५ लाख एकड़ भूमि-प्राप्ति का संकल्प।

१९५२

- १३ अप्रैल, सेवापुरी-सर्वोदय-सम्मेलन। २५ लाख एकड़ का संकल्प।
- २३ मई, 'मंगरोठ' का पहला ग्रामदान।
- १३ दिसम्बर '५२ से ३३ दिसम्बर '५४ तक बिहार में पदयात्रा।
- २३ नवम्बर, पटना में संप्रतिदान-विचार का उद्भव।

१९५३

- ७-८ मार्च, चांडोल-सम्मेलन। साक्षर-मुक्त, धोपण-विहीन समाज-रचना की धोपणा।

चरखा-सभ का सर्व-सेवा-संघ में विलीनीकरण।

१९५४

- १८-१९-२० अप्रैल, बोधगया-सर्वोदय-सम्मेलन। जीवन-दान की धोपणा।

१९५५

- १ जनवरी में २५ जनवरी तक बंगाल में पद-यात्रा।
- २६ जनवरी से ३० सितम्बर तक उत्कल में पद-यात्रा।
- ७ से ९ मार्च, जगन्नाथपुरी-सर्वोदय-सम्मेलन।
- १ अक्तूबर से १३ मई '५६ तक जाप्र पद-यात्रा।
- २४ दिसम्बर, विजयवाडा-सम्प्रतिदान की समा।

१९५६

- १४ मई, तमिलनाडु-प्रवेश। काशीपुरम्-सम्मेलन। धामोदय की कल्पना।
- २९-२२ नवम्बर, पलनी में जन-मुक्ति और निधि-मुक्ति का निर्णय।

१९५७

- २५ जनवरी, मडुराई जिले में 'तालुका-दान', 'फिरका-दान' प्राप्ति की धोपणा।
- १८ अप्रैल से २३ अगस्त, केरल में पद-यात्रा।
- ९-१० मई कालाडी-सर्वोदय-सम्मेलन।
- ११ जुलाई गाँव-गाँव 'सेवा-सेना', 'प्रामित्त-सेना' प्रस्थापित करने की बहसना।
- २४ अगस्त से २२ मार्च, मंगूर-कनाटक यात्रा।
- २०-२१ सितम्बर, एलवाळ (मंगूर) में तय पदो की प्रथमदान-परिपद्।
- २६-२७ सितम्बर, 'प्रामित्त-सेना' में अर्पित होने के लिए रचनात्मक संस्थाओं से आँगल। निवेदक-निधिर।
- ८-९ नवम्बर, रचनात्मक काम-कर्ता-परिपद्, आरसीफेरे (मंगूर)।

१९५८

- २३ मार्च से २१ सितम्बर तक महाराष्ट्र में पद-यात्रा।
- ३० अप्रैल, श्री गोपबन्धु चौधरी का निधन।
- ८ मई, श्री लक्ष्मीबायू का निधन।
- २९ मई, पदपुर-मन्दिर में विनोबाजी को साव्य सर्वधर्मियों का प्रवेश।
- ३० मई, पदपुर-सर्वोदय-सम्मेलन।
- ८ अगस्त, मक-सेवा-सभ द्वारा बालीनगरी में सर्वजन-आधार का प्रामित्त-हारी निर्णय।
- २२ दिसम्बर में १४ जनवरी तक गुजरात में पद-यात्रा।

१९५९

- १५ जनवरी में २१ मार्च तक राजस्थान में पद-यात्रा।

२७ फरवरी, अजमेर-सर्वोदय-सम्मेलन।

- १ अप्रैल से २३ मई तक पञ्जाब में पद-यात्रा।
- २२ मई, विनोबाजी का कश्मीर-प्रवेश।
- ८ जून, जम्मू में हिन्दुस्तानी बालीमी संघ का सर्व-सेवा-संघ के साव्यसंग।
- २ अक्तूबर, काशी में साधना-केन्द्र का आरम्भ।
- ११-१२ नवम्बर विनोबाजी का अज्ञात संचार, अमृतसर में साहित्य-परिषद्।

१९६०

- १४ जन० से १४ फरवरी, काशी में आर्त्तिक प्रक्रिया पर सहअध्ययन सत्र।
- २० मार्च से २८ मार्च, सेनाग्राम में संघ-अधिवेशन और सर्वोदय-सम्मेलन।
- १८ अप्रैल, विद्यवाणीय वंगलोर का उद्घाटन।
- १०-२२ मई अम्बळ घाटी सेन में धर्मियों का आरमसर्जन।
- २४ जुलाई से २५ अगस्त, इन्दौर में विनोबाजी, विसर्जन-आयन की (स्वाभा)।
- १० जुलाई से ११ सितम्बर, काशी में सर्वोदयनगर-अभियान।
- २९ अक्टूबर से ३ नवम्बर, वंगलोर में सर्व-सेवा-संघ का अधिवेशन।
- ५ नवम्बर को इन्दौर में अयोधनीय पोस्टर-विरोधी अभियान की धुरआन।
- ५ दिसम्बर से २४ दिसम्बर तक उत्तर-प्रदेश की तीसरी बार पदयात्रा।
- १८ दिसम्बर को काशी में प्रथम प्रामित्त-सेना विद्यालय का श्रोगणेत।

१९६१

- २५ दिसम्बर, विनोबाजी की बिहार-पदयात्रा की शुरुआत। 'शान्ति कट्टा, शोध में कट्टा' का नया मंत्र।
- ३० फरवरी, विनोबाजी का बंगाल में प्रवेश।
- ५ मार्च, विनोबाजी का असम में प्रवेश।

श्री जयप्रकाश नारायण की महाराष्ट्र-यात्रा

श्री जयप्रकाशजी सा० २३ से २७ अप्रैल तक पूना में 'निर्गोपित आर्थिक विकास के मार्ग' एवं विपणन पर भारतीय परिषद में भाग लेंगे। सा० २७ को पूना में पूना में सार्वजनिक सभा होगी।

सा० २८ को प्रातः उत्तरी बंगाल, धाम को सातारा	सा० ३ शौरंगबाक, पूना
सा० २९ प्रातः बार्ड, रात को बृहन्मनवर	सा० ४ विपुल, कोल्हापुर
सा० ३० बीरामपुर, बीरामपुर से रात को मनवाड से बराठ-बाराह की ओर	सा० ५-६ बर्नाटक
सा० १ मई प्रातः को बृहन्मनवर, रात को गवरेर	सा० ७ धाम को बर्नाटक प्रांत
सा० २ पाळी, बीड, रात को मुद्राम औरलाबाद में	सा० ७ भासिक, पुणे
	सा० ८ अलाहाबाद जिला
	सा० ९ अमरावती
	सा० १०-११ बर्ना और चंद्रपुर जिला

'निर्गोपित आर्थिक विकास के मार्ग' पर परिसंचार

सा० २३-२४-२५ अक्टूबर को पूना में सर्व-सेवा-संघ और गोपबन्धु रेड्डी-पुत्र और गोपीविश्व इन्फोर्मिड के आवागमन में "आर्थिक निर्गोपित आर्थिक विकास के मार्ग" पर परिसंचार कार्यक्रम होगा, जिसमें सर्वोप जयप्रकाश नारायण, संसद-सदस्य देव, अन्नाभाय, विद्यानंदन वैद्यनाथ मेल्ल, मन्जीराजी देवरा, ए० पी० देवराय, श्री० देवराय, रिचर्ड बैंक के गवर्नर वैद्य देव, डॉ० टी० एन० गणेश आदि भाग लेंगे।

नव सर्जन हो

नव सर्जन हो! नव सर्जन हो! मानवता निज निज विनिमित हो! हर हर शक्ति के तप पर, उद्यो कल्पना विज परप पर, हर जीव के प्रति आदर हो, पूरा आस्था का दहन हो। निज धरना का सर्जन हो। फिर से जीवन फलजित हो, मुक्त हृदय और मुक्त जीव हो। धर्मिय भागी का धनुष्य हो, मेरा पन जन-जन में लय हो। हम सब निज हर लक्ष्य पर हो।

मूदान यज्ञ

साप्ताहिक

मूदान-यज्ञ मूलक सामाजिक प्रधान आधुनिक क्रान्तिकारक आन्दोलन का वाहक

पाराणसी : शुक्रवार

संवादक : विदुषराज इंदौर
२१ अप्रैल '६१

नं० ७ : अंक २९

प्रेम और करुणा के मार्ग से मानवता वचेगी

विनोद

जब से हम असम अर्थ में, भूदान का ही विचार धरता रहे हैं, क्योंकि हमें विश्वास है कि भूदान का विचार कृपा का विचार है और वह विचार लोगों ने एक बार कबूल किया तो सबका भला होगा, क्योंकि हृदय में प्रेम और कृपा पैदा होगी तो जो घटना असम में हुई वह फिर हो ही नहीं सकेगी। इसलिए यही भूदान का करुणामूलक और प्रेम का विचार २० दिन से समाप्त हो चुका है। अभी तक उस युद्ध के अंत का उल्लेख हमने नहीं किया था, क्योंकि हम उन घटनाओं को मूल माना करते हैं। इसलिए अभी तक इतना ही बताते थे कि सबको मिल-जुल कर रहना चाहिए, नहीं तो मारत लड़ते हैं। इतने में लोग धमकते थे। लेकिन आज हम यहाँ आये हैं, तो थोड़ा उल विचार पर कुछ कहेंगे, क्योंकि वह घटना इस गाँव में भी हुई है।

आज मैं सारे गाँव में घूमने गया था। सुनह करीब दो घंटा घूमना हुआ था। प्रसन्न भावों के घर में भी गया था, परिवार के लिए, प्रेम के लिए। बहुत बड़ा भाई घर में नहीं मिले। ये काम पर गये होंगे, वह नहीं मिली। सुबह प्रेम हासिल करने हम नहीं गये, जहाँ बंगाली भाई रहते हैं। उस घर में जो मकान खसत हमारे लिए बनवाया था वहाँ बैठ कर सब मिल कर हमने भजन किया। आज हमारे मन पर बहुत अण्डा परियुक्त हुआ। हमने बहुत प्रेम देकर। जिस भाग में कलनी भाई रहते हैं, वहाँ भी बहुत प्रेम देना और जहाँ बंगाली भाई रहते हैं, वहाँ भी बहुत प्रेम देना। बापल फाटे हुए धुप कुछ जसनी भाइयों के घर में भी गये। फिर भी सब मकानों में नहीं जा सके, क्योंकि इतना समय नहीं था।

हम आये थे इतना बड़ा बाहरी कि हमारे मन में आये लिए स्वागत प्रेम था। ऐसा उल्लेख प्रेम नहीं होता तो इस हमने में प्रेम सब लाल घुमाना कल्पना नहीं होता। यह प्रेम और करुणा ही है, जो हमें प्रेम रही है।

मे इस गाँव बाबा की कृपा चारदा है कि यहाँ बुरी घटना हुई, अब नहीं बुरे की भी नहीं बहनी चाहिए। वहाँ जो पटना बनी, उनमें से बाबाकी बीज नहीं देता है। गाँव के लोग भी, बजान और सरल होते हैं। लेकिन वे जो लोग वहाँ में रहते हैं, बेकार चिनम करते हैं, वे देवी तप-तप की बुझाई देना करते हैं। प्रकृति से सब कुछ ही प्रेम होते हैं, ऐसा नहीं। लेकिन बाबाके देवी लोग होते हैं, निष्काम भक्त होते हैं, वे ही प्रेम देना करणें वा। और वे लोग-हृदय को बाँधने के बरके तोड़ने का ही काम करते हैं। निमित्तों में इन दिनों बहुत तप-तप के भवभाव होते हैं।

अभी बलरपुर में एक बहुत बड़ी घटना हुई। एक लड़की पर एक बजान बसने के अत्याचार किया। लम्बी हिंडू की ओर लक्ष्मी मुकेशमान। इस घटना में हिंदू और मुसलमानों में रंग हुआ। वे रंग आगर और बलरपुर के अलग-अलग के गाँवों में गये और उन वज्र हिंदू और मुसलमानों के रंगे हुए। इन दृश्यों पर भेद कायम नहीं था। निरन्तर अत्याचार किया था, उसे निरापराध किया था। एक महिला का बच्चा मारा था। उनमें किसी एक लड़के में किसी लड़की बीम पर अत्याचार नहीं किया था। लेकिन उन घटना को हिंदू मुसलमानों के रंगे कर रक्ता दे दिया। प्रेम सारे भारत में और पश्चिम में उन घटना का सुन चलर हुआ। पश्चिम में रणपुर में हिंदूओं पर मुसलमानों ने अत्याचार किया। तब ही कोई कारण नहीं, कोई बरकत नहीं थी। वहाँ के

हिंदूओं का दौर नहीं था। बलरपुर में भी यह घटना होने का शरार नहीं था, बरफ़ा नहीं थी। एक महिला पर अत्याचार था। उसकी वज्र हो जाती, एक लड़की। लेकिन इतना पापदा उठा कर नहीं के हिंदूओं ने मुसलमानों को लक्ष्य री।

वे सारे बहकने वाले जोड़े और घातों में होते हैं। अभी हिंदू और मुसलमानों के लगे कर रहे हैं, अभी हिंदूओं को निरापराध, अभी बलरपुर और मलिक, अभी यह जालि और यह जालि, इस तरह हमने पैदा कर रहे हैं, अभी इस भाग को एक भाग में हमें हाने कर रहे हैं। इस प्रकार के अत्याचार करने वाले कुछ लोग अपने देव में हैं। उनके बहकने में अत्यंत देहावी के लोग भी भूत काम करते हैं। हिंदूत्व और पश्चिम के भाग के

गये। इन लोग, लेकिन अब अपने सारों की क्या बरकत थी। लेकिन लगे हुए और लखों हिंदू और मुसलमान इतर से उपर गये और उपर से इतर आये। बहुत बुरे काम उन तक हुए। लखियों मयापी, पर चाले, हुए हुए इतना भीतर गमना नहीं था। आज भी हिंदूत्व में बार सारे बार करोड़ मुसलमान हैं। वष नहीं है और आश की परिस्थिति में अल्पी लख या एक करोड़ में तो कम हिंदू नहीं होने। अब क्या एक मुसलमानों को यहाँ लगे है। और हिंदूओं को नहीं लता है। अलग अलग काम कर रहे हैं, सारे-सारे के अलग गाँव में रहे हैं। जैसे वे रहे हैं, जैसे भी वक्त सके थे। कभी आने। कोई कारण नहीं था। लेकिन एक बुरी इतना पैनी। जुरे दया में अल्पी के हाथ से उरे काम होते हैं। फिर उसका परचाचार देना है। उसे दिमाग से, दिन के लोकोटों कि हमारे हाथों में ऐसा दुःख काम बनो हुआ।

जैसे ही बात यहाँ हुई। वहाँ भी एक दुःख हुआ जाली थी। अब आज लखों वह जोन पूर जाली बाहरे और वह बाहरे बाहरे कि पचासों लखों मम कहीं है, जो बर नहीं है। अगली लोको को बगाली मुसलमानों के अल्पी प्रेम करना चाहिए। उनसे दुःख देते हैं पर लखी चाहिए। लखी मिले लखी लख ही।

नाम देने के लिए इतना देना चाहिए। अभी इस लखों में अलनी और बंगाली, दोनों आये हैं, देवी प्रेम को लखी बार-बार होनी चाहिए। लखियों भी मद्र बननी चाहिए। लखी मद्र देवी है, यह डीक ही है। लेकिन कभी गाँव के लोगों का प्रेम करने का और मद्र करने का अधिकार नहीं है। अपर नहीं है तो गाँव याने बगल होगा। अगर आपल-आपल में प्रेम नहीं लख है तो एक गाँव में रहते कपो हैं। इस गाँव में हिंदू, मुसलमान, अगली, बंगाली हैं, तो एक गाँव का वह गाँव है। जैसे लगे में ताना प्रकर के लख होते हैं जैसे ही अनेक भाग के, बर्न के, जालि के लोग गाँव में है, वह लखी की, गाँव की बात है। आपल आपल में प्रेम होना चाहिए।

मान लीजिये, वज्र चीन और हिंदूत्व लखी लखी लखी ही क्या आपल-आपल में आप लखे रहेंगे। अल्पी बाहरे कि इस तक भारत २५ लख-अल्पी में है। एक धमना या, नभ दिमाग हिंदूत्व और लखे देहों में बीच में लख था। नभ लख (विज्ञान) का जगना है। हारा अल्पी से इतर ही उपर और उपर के परा पर मिननों में लख कने हैं। इसलिए जो काम दिमाग बढ़े करता था, वह अब नहीं करेगा। अब चीन का और हारा लख का अल्पी। लखी लखी लख नहीं है। जो लखे आगे, वह प्रेम का होना चाहिए। लखे मुसलमान नहीं होगा। लखे लखे ही का होगा तो लखे लखे होगा। विज्ञान के बगाने में लखे लखे लखी। वहाँ चीन का लखे नहीं था, वह ही लख है, वहाँ लख का लख, एक गाँव में रहने ही लखी प्रेम

रहे? मेम के प्रेम बढ़ता है, देर से प्रेम बढ़ता है।

हमें अश्लील वस्त्रों भी प्रेम का दर्शन हुआ और वंगाली बस्ती में भी प्रेम का दर्शन हुआ। ये मो भगवान की मस्ति बस्ती हैं और ये भी देखावा की दृष्टि बस्ती हैं। इनके भी बाल-बचपने हैं, उनके भी हैं। दोनों प्रेम क्या चीज है जानते हैं, गीनों बाल-बचपने पर प्रेम करते हैं। इस-लिये दोनों सुलभित जायें, एक-दूसरे को प्यार से गले लगायें, झीरो को चुप झुपी घटना हुई, उसे भूल जायें।

भारत बना पुनर्जन देस है। संवर देव ने लिखा है कि भारत में जन्म पाना भाग्य की बात है। जन्मने संवत् ५ "मन्कि-रत्नाकर" नाम का ग्रंथ लिखा है, उसमें अक्षरान लिखा है—“अप-भारत-भू-प्रसंसा-निरूपणे”। उसमें लिखा है कि भारत में अक्षम पाना बहुत भाग्य की बात है। यही बात सायब देव ने नामपोष में लिखी है। दोनों ने यह नहीं लिखा कि अक्षम में जन्म पाना भाग्य है। हमारे पूर्वजों के अक्षम भाग्यकों ने दिव्य छोटे नहीं थे। आप ही सोचिये, साइर देव क क्षम में सारे देव के साथ संरक्षित रहना सुनिश्चित था। इन दिनों दिव्य भीरी मोहादी का पंच पाँच का रस्ता है। उन दिनों तो छह महीनों के कम समय नहीं लगाया था। उधर जागते में भी संवर देव भारत का नाम लेते हैं और हम इस समयने में छोटे बने रहें तो कैसे होगा? अन् अपार पर परमेश्वर के नाम से अक्षम जायेंगे कि हलके आगे हम मार-भार प्रेम से रहेंगे और जो हृष्ट सुख प्राप्त हुआ उसे भूल जायेंगे।

भूदान की बात को हम दूसरी अक्षम करते हैं, यह यहाँ भी लागू होती है। आज एक भार्द ने हमें अक्षने पर हृदयवा था। हमने उसे कहा कि आप हमें पर पर पुजालें हैं, लेकिन “दान दिव लागे”, देखा हमने अक्षम में कहा। तो भार्द कहने लगे, “हमारे पास बनीन नहीं है।” हमने कहा, बनीन नहीं है तो और भी कुछ होगा। गौर के लिये कुछ-कुछ शिये विना लागना नहीं चाहिये। समाज के लिये दान ही और नाद में लागी। बनीन नहीं है तो बनीन-प्राप्त रह सकेंगे हैं। उसका उपयोग दानित के काम के लिये अक्षमपणा देनी करेगी। उसका उपयोग हमारे घर के लिये नहीं, गौर के लिये नहीं, दुनिया के लिये होगा। यह सर्वोदय-प्राप्त हर घर में रखना चाहिये। मित्रके पास बनीन है, उनको अपना दिव्य लोचना का पंच पाँच, “श्रीये में कदा” दान देना चाहिये। भूमिदानी की भूमि देनी चाहिये। जानने लगे वाला अक्षमन को सजडा है, अक्षमपणा, हिंस्र, हरिनी, बंगाली भी हो सकता है। यह यही देखेंगे कि वह चीन है। हम प्रेम-भार में हम सब एक ही जायेंगे। जो मेम मोहल में पैदा हुआ था, वह यहाँ पैदा होगा। आप जानते हैं कि संवर देव ने मागपत का दक्षम-रक्षय

लिखा है। उनका “गीर्धन योग” भी चलता है। दोनों में कृपा की बात छीला का चर्कन है। बाल-मोषाल पैने इच्छता होते थे, क्या आनंद था, ऊँच-नीच सब एक होते थे, दही, मकलम खाते थे। सब एक-दूसरे पर प्यार करते थे। यह वर्णन लिखा है कि वे मागपत के दक्षम-रक्षय में रिया है। यह आनंद हृष्ट गौर में भी आ सकता है। यह आनंद क्या सिर्फ पढ़ने के लिये

है? सुनने के लिये है या करने के लिये भी है। करने से आनंद होता या सुनने से लय है? लखू का नाम सुनने के लिये है या करने के लिये भी है? ये ही भूदानपन का आनंद यहाँ आ सकता है। यही यहाँ बनना है।

दोहापारा (गोआलपारा)
२३ मार्च, १९२१

बहना। परन्तु भगवान, ...
भगवान बुद्ध ने अंगुलिमाल का हृष्ट पक्ष कर प्रवेशित के सामने परते हुए कहा, यही है अंगुलिमाल ?
प्रवेशित ने आनंद से देखा और आश्चर्यपूर्ण वृथा, “आर्य, आप ही अंगुलिमाल हैं ?”
उसने उत्तर दिया, “हाँ महापारा !”
प्रवेशित ने अत्यंत साकार बोरे हैं। कहा—“आर्य धार्य में नापकी-पुन का आनंद से रहे। मैं आपके मोहन, का मोर भावना का संबंध करूँगा। हृष्टपक्ष की सेवा के लिये तैयार रहूँगा।”
हृष्टका कारण यह था कि भगवान प्रवेशित समझते थे कि वास्तव में धरत बल से भी विवेक परिदृश्यों महर्षि-पक्ष बचन होता है।
उत्तरों में भगवान बुद्ध ने कहा—
“आर्य बर्ध हैं, सेवा है, आपका इच्छा है, जिससे अशांतों की शाप करते हैं, अनुपयोगी को मुक्त करते हैं। जिसकी भी शक्ति से भी, धरत से भी दमन न कर सकें, उनकी भावने विना धरत के, देव दमन कर दिया।”

पाठकों की ओर से

धीमान सत्यापदकी,

३ मार्च १९२१। “भूदान-पत्र” के पाँचवें वृत्त पर “भागियों का भूदानपन होने के साथ-साथ धारण का भी सुचालना हो”, यह लेख पढ़ा। मैंने इस प्रश्न की मांग की। उस लेख को पढ़ना भी पड़ा है। मुझे समझा है कि भागियों ने आनंद-सम्पन्न किया, तो उन लोगों को पुनःकही लिखा चाहिये था, इसकी जरूरत उन्हें पती और क्यों पंच को सदा ही का रही है। क्या इस कल्प-कवी लडाईं है। हृष्ट-कवी रूप अनेक। क्या हमसे मान्यता बढ़ेगी ?

विनोबाजी के यहाँ जाने के बाद वे ही, जब कि भागी भाइयों ने आनंद सम्पन्न किया, उस समय से आज तक जो कुछ हुआ, उस पर सोचा जाना चाहिये।

इस समय में अंगुलिमाल और भगवान बुद्ध की क्या ध्यान देने योग्य है। अंगुलिमाल बोला देव का एक अधिक दायुष है। वह भादमियों को मार-भार कर पनके उलटियों की माता बना कर अपने गले में पहनाया था, ऐसा कहा जाता है। १००० भादमियों को मार कर उनकी जलियों की माता पहनाया, ऐसा उचने वत के लिखा था। वह बहूतों को मार चुका था। जब वह मण्ठी माता की ही माते पाठा का, उधर समय नुद्ध सगलाम यहीं पहुँच गये। अंगुलिमाल ने उन्हें देख कर तिरकारपूर्वक कहा, “अरे, लडा दो रह, काज तेरी ही काय केकर अपना वत पूछ करूँगा।”

भगवान बुद्ध ने कहा, “मे सझा है अंगुलिमाल, तु भी सिव हो जा।” भगवान बुद्ध यों कहते हुए उचके दरप बसुते आ रहे थे। यह देख कर अंगुलिमाल ने आश्चर्य के कहा—“सब्य पुन पजते हुए अपने को सिव कह रहे ही और मुझ परते हृष्ट हैं। कहते ही कि सिव हो जा।”

युद्ध ने कहा, “आरे प्राचियों ने बैर छोड़े देने के कारण ये बात सिवत हैं अंगुलिमाल। तु ऐसा नहीं है।”

उक्त वृत्त हृष्ट था। उचने उषणा के पैरी को बुला की। उचने अक्षने उषणा का निवृत्त धरनों में केंक सिवो और उनका सिवत-पन था।

द्वार को यह सुन हुआ। हृष्टरी दरप रखा प्रवेशित्व सखी सोच में पीछा करते-करते रीं को पुनःसारायों के साथ का पहुँचा। भगवान बुद्ध ने उनको देखा और कारण पूछा। राज ने कहा, “भगवान

अंगुलिमाल डाकू का हृदय-परिवर्तन

हृष्टका कारण यह था कि भगवान प्रवेशित समझते थे कि वास्तव में धरत बल से भी विवेक परिदृश्यों महर्षि-पक्ष बचन होता है।
उत्तरों में भगवान बुद्ध ने कहा—
“आर्य बर्ध हैं, सेवा है, आपका इच्छा है, जिससे अशांतों की शाप करते हैं, अनुपयोगी को मुक्त करते हैं। जिसकी भी शक्ति से भी, धरत से भी दमन न कर सकें, उनकी भावने विना धरत के, देव दमन कर दिया।”

हृष्टके बाद आगे चल कर हृष्टपक्ष महान् भिक्षु कह गया। उधे रई वृत्त बुल भी उठाना पडा। परन्तु उचने त्रिं हिंसा की भावना नहीं आती। उचने निवृत्त की भावना बनावे है यही लीनी बनी सफलता मिली।

यदि वह राजा अंगुलिमाल को बंध देता तो क्या उसकी भावना बनी टाए होती ?
सकशोहटा --- रामजी प्रसाद (पटना)

बुद्ध भगवान ने कहा, “महाराज, यदि अंगुलिमाल बर बचते बर काम छोड़ कर साधु बन पाया हो, यदि वह संघातों के रूप में ही, ठह कर काम करे ?”
महाराज प्रवेशित्व ने कहा, “भगवान, अगर ऐसा ही हो तो उधकर उधका त्पापस करूँगा, वास्तव में लिप्ट निवृत्त करूँगा। बर, भीम, निवृत्त-पदान, औपचित्य आदि के विषय में कुछ हृष्ट हृष्ट हृष्ट की सुविधा हुआ और बने के उचकी रखा

सर्वोदय-पत्र में सातत्य आवश्यक

[अक्षर पर यह अनुभव आता है कि सर्वोदय-पत्र कुछ समय चल कर बर हो जाये है। बसुत्तः सर्वोदय-पत्र का चलना बर और सातत्य पर निर्भर है। अक्षर के आनंदपर अक्ष में विचारपूर्वक काम करने से सर्वोदय-पत्र का कार्य आगे बढ़े है। इसको सतक मोक्ष दिव्ये का रहे २३ मार्च '२१ के ही विषय अक्षरों के पत्र में मिलेगी।

नामपुर के आर्य नगर चैत्र में पाच-छंसा ले उत्तरोत्तर बढ़ी ही है; जनपरी में १९५५ परवरी में १९५५ अथी १८७० है। अथी हृष्ट स्थावित पात्रों में केवल ७ बन्द हुए, जिनमें ५ बाहर चले जाने वालों के हैं। अक्षरपक्ष यह आशा कि सर्वोदय पर विचारपूर्वक और नवप्रतिवृत्त रूप में चलाये, इसके लिये निम्न नाओं का ध्यान रखना पडता है:

साहित्य-सिक्त सतत “श्रम-सेव” में वृत्तों हृष्ट नामगिरियों को अक्षरलिपि (किरी पाच व पुनःसाराय का) पहुँचाता रहे, परिवारों की कुशल-चेष्ट देख रहे और बरसे सम्बन्धी सेवा भी करता रहे। नाम-

रिक्तों के स्नेह-नामर्क के माध्यम से उन परिचार में प्रवेश पाता था और उध-उध में थायिम हो। बीमारी, सगर आदि सुचिन्ताओं में सेवा के लिये धरते रहे। ऐसा होने में पाच चलते हैं, यद्वे हैं और कार्य भी हीनर में लाता है। धरि-धरि सर्वोदय के साधन वृत्त नामगिरि जीवन में प्रवेश पाते हैं।

अब हम “श्रम-सेव” की प्रतिक्रिया में (गरी) के निवासियों की सहायता से रहे, ताकि उनमें परिचय व परलता है और सामुहिक के सिक्त भी लगे। अक्षर का लोचनीय कि निवृत्त के लिये रचना उपयोगी हो सके।

जनाधार का रहस्य

राधा अहू

भाँव में जाकर काम करने की बेटी इच्छा क्यों पैदा हुई ? इसका कारण यह था कि मैं प्रयोग के लिये यहाँ आती थी कि जीवनो ऐसी मुक्ति है, जहाँ पर हम कार्यकर्ता हार जाते हैं ? बीसों हमारे ऐसे मित्राण हैं, जो प्रत्यक्ष व्यवहार में वेमेल हो जाते हैं ? इसमें एक मुख्य प्रश्न जनाधार का भी था, जिसका स्वरूप इस प्रकार हुआ था—पर धर में मौजान करना । मैं देलना चाहती थी कि इसमें क्या मुक्ति है, क्या पूर्वाहार है ?

इसके इस गौण बंगला में आगे अन्धी १०-१२ रोड टूटे हैं। अन्धी तक लाभक हर घर है, जहाँ मैंने भोजन किया, जहाँ मैंने हुके निम्नत्रय किया, जहाँ मैंने उल्लेख के अर्थों में बुलाया, कभी अनेक उस की 'भारती की भों' में कहा, तो कभी हुआ 'पूना वीदी' में, कभी चौदह वर्षों में तो कभी छह वर्ष की सुधी में अधिशास्त्रिका कहा—'सुधी, इस तरह हमारे ही घर पर लायों'। कभी डुमक भाई, कभी दुस्ती बहन, कभी बालक तो कभी हटा, कभी हमारे मित्राण के विभाचकी स्थिति में, तो कभी उपाधीन स्थिति में भी तुनाया और मैं प्रेम से घर-पर लम्बे की जाती थी।

उस दिन खान की मायना के बाद हम 'जम्पल' बंद हुआ है। कुछ भान वाली घर बर्ना बल रही थी। मैंने के एक बूट लम्बे की—'बदन, इस हमारे घर जाने की भारती तो ।'

दूसरे रोड सुन्दर से मूलधार यहाँ हो रही थी, हमने मैं उन घर का ११-१५ वर्ष का बच्चा पानी में छन-छन करता हुआ भाव सुँका और सुन्दर भोजन के लिए इजाजत देना। बर्ना की बारी चाटी थी, हम दोनों कुछ चीज भी गये। प्यार महीने की इस बर्ना में बेहद डर बढ़ा दी थी। उनसे घर के भीतर सुँके ही चीजन हम बीसों की बलदा भाग के बाप और बहन गये। पूरा परिवार भाग के चारों ओर बैठा था। मैंने मोर के देखा, पर आज ही लीज-पेच बर दाटा किया था। इह संभव है बेली की एक पत्ती पर लेखी व अन्ध उँवार किया, सुँके छोटी लीपा, और घर के एक बहरी की मी टोपी करने लगे थे। उनकी छोटी हड्डी लकड़ी में कुछ ही लिया—'थीसू, आर तिराँतें तिले धुआँगायती की बताओ पर भीलान्'। (तुनायो, भाग लेने का बल रडे है । पहले बसाते । वर है ल्हाउनी ।) तब वे गम्भीर व भाव भरे धारों में गोलें—'थेदी । आर एक तो 'भागीपुनिया' का पुत्र पर्व है । फिर आर हमारे घर का विचार लोनाप है, कौनिक आर हमारे घर में 'भागीपुनिया' आनी है । वे निरभर की बहन हैं ।" 'भागीपुनिया' के रथ धरिपाले गीतपुत्री बन्दे में मैं अल्पक संक्षेप से गार हली, और बल बदीती हूँ, आर भी इत पचने की तिपने मुझे अन्ध उँवार की रारा है । पर यह उन्धका जन्द है,

उनके अन्तर की विशालता है, भारतीय संस्कृति का रूप है, मेघ व्यक्तित्व कुज नहीं, न मेघे इतली योग्यता या गुण का निरविकल ।

हाथों की सँतरे हुए इस कालय आभा धरा लेते रहे । इह जन्मन में पूरे परिवार के—पत्नी, पुत्रों तथा पुत्रियों—के सम्बन्ध अन्ते परिवार का इतिहास बलाय, विष प्रचार उनके भाई ने कभीन जागरण की उता दिया, वैधे उन पर एक इजार बने का कर्म उद यथा—और वैधे उन्हीं धर्म में नौकरी बरडे व बाद को घर लोट वर रागिण तुनायो, पर पत्नीया, कर्मों की सादियों की तार तब में घोडे—'हमारे, बल तब हल कर्मों तब तक तुम भी हमारे घर वर (जने के लिए अन्धक आँखे खला, बर इमारत बल बसाह हो जायेग, वर—'... ' आगे के महीने लगे, कले, योश संयंत्र कले—'हमारी रोटी का अन्न भल करण होने का रारा है ।' अगले महीने वे हमारे घर कुछ पैसे रडे तो सरोड भेजे, नहीं तो कभी भूती ही लडी ।' भेजे तिल में एक टोडी उन्ही और मैं तुन र गयी ।

तुना जाने बेटी और लोचनी रही—'मैं तिल लोचनी की लीने की कमाई ले रही हूँ । इह अन्न का कालभन मरे खीरे में से आकर भी लुट की बुद-बुद कालभन, उल पर किठना अन्धकार है । इह अन्न के तिपने वाली शक्ति, यह मानसिकी ही या शक्तिप, किधे तिल चिप टोपी थाधिये । किठ लोचनी के तिपने सम्पूर्णवय है व किठ नम्रता के प्रतिक ही है मैं आर यह नाम करना चाहिये । गरीब का यह अन्न खाकर मैं बेचन न करू तो यह धारण पोते बल जीवन होना ।' हम सभी अन्धक व लडी, अन्धक रूप से पैदी अन्न को खा रहे हैं । तथा मैं मन ही मन विचनत करती हुई दुःखने लगी, आभय (अन्धी आभय, पीलानी) में भोजन के पूर्ण पापी जाने वाली मायना—'दू प्रान्त, किभ अन्ध वे इमारत पोखर हो रारा है, उनकी हय हर्क-अन्धक यल का प्रसाद सलभ कर सलभ कर रहे हैं । हमें यह धारि हैं कि जब तक फिर वे सलभ महीनों में दूरी प्रकर प्रयोग ल्हाय न हो, वर तब हम अन्धक अन्धक के रूप में तिपान न ल ।' तब मैं अन्धे अन्धर दूध पूर्ण बर्नाय के माघ के अन्धक प्रतिक अन्धक बने लगी ।

उपरिन वे मैं जोचती हूँ जान (विनोयानी) का 'आरग' है । पर पर मैं लखो, बर बर यह हमारे अन्धर यह लोचनी माला पावला है, हमें यह धार पादना चाहता है । हमें अन्धक कृपा चाहता है कि अरपीरि कर्मचारियों का वेचन हो वा अविष निधियों का सलदनी के प्रसन्न कलानक हो, यह सब ऐसे गरीब के घर की लुन-पानीने ही कमाई है, जो सल के पुत्र महीने भूते ही रिजा जल्पने की निषकलापूर्ण तैयारी रखता है, यहि उल अन्ध की उल्ले तुल्य कभी भी हमने अन्धे छासने से उल्ले गरीब के निष की हटा दिया व अन्धक सुपादुगार कोरें न होगा । यहि उल अन्धे अन्धक अन्धक का अन्ध उल्ले हुए अपने रदन लहन मैं हमने अविषयानि की थी तो हमारे ऊपर निषकलापत वर कलक लगेगा । इयाय

विचन, इयाय मनन, इयाय जीवन लर का सब उली मे लिये हो । यह सब लार सलने का इयाय प्रयाण हो, तब जीवन का पुत्र आर्य है । यह सब बह हमें बनाना चाहता है । उन गरीबों के घर की आँसों देली प्रत्यक्ष जानकारी रन कर इय उल अन्न की खाँर, और लाने यल का प्रसाद सलभ कर, तब यह प्रसाद हमारे अन्धर अनिषार्य मिला का बल बल देगा, कालि वा अन्धोन्न को सलक बनने की सलन से तुनने वाले हम सलकी बह यह सलगा देना चाहती है रि अलक यह हमाय 'रवभर्' है ।

जनाधार का यह एक अन्धक, नया रहस्य मेरी सलभत में अरपा ।
 बौणा, रो-० पौणु
 तिपीपण्ट (उ-३०)

कार्यकर्ताओं

आत्म-शक्ति की मधुर अनुभूति

मुद्राप्रसाद में आरपी शक्तिपलन देव की लाराण पत्रम में हुए लोनों ने हिंदू-मुस्लिम और गार्थकिक लनों की केरर हूरे गारर को तलाइ तुनानकारों की दुःखनं चारदल्ले संन्द कर दी गयी । बल की बल में अन्ध लोनों के लुनभन के बरर का शानक बालाबलन भग हो गया । मिश्रा लवीपण्ड लण्डन, मुद्राप्रसाद में इस स्थिति पर लीपा ।

नहीं । बल वार करेगा, तुम नहीं मीरेगा । जय उसके पास लुँक की ।' उन दिवस लोनों की शक्तों की अन्धतुना फलके गली में हुए ही गया । अन्धर अन्धक मान लुचनी की लोली की लोली मुझे पानी हूँरें मिनी । उनके बल के निरंर हूँरें बला गया । मैं उनसे बीच अधिक-सुखिले हूँ, रेशा उँगे लारा । मेय हलप मलभलर के गलदर हो रहा था, कौनिक आत्मशक्ति की अन्धतुन का मीटा रथ चलने का पर्व मेरी जीवन में ल्हाय अन्धर था ।

—ललीपण्ड

सर्वोदय-पात्र की देन

सर्वोदय-पात्र की देन का विचार मेरे मन में कलसी सार्थक अन्धकन से लोडे वर लाया । अन्धोय सार्थक का पंचर का कलभ नम्र शक्तिप निषयों के इषार में रहता है, इह सार्थक से प्रत्येक घर में जाकर शक्तियों के सलने लगेके मल्लर ल्हाय सार्थक की बर्ना की गरीब बाल में उनको धारणिक ल्हाय तुलुलने लगे । लेखन पत्र की निषय मुकुती लखनी है, किणु कलती बनने की मन की है । फिर रहती पर-बाल न कले लुल में रडा ही हटा और १९५० से ही तुलुलनी लुँकार को बलन के पचे से ही नमना लुँक निषय । जलमें शक्ति के लोडे लोडे कर्णों ल्हाय शक्तिपलन के द्वारा नाटक एवं प्रहलनों बर कार्यक्रम सलत में ल्हाय लल में से लुन-पण्ड, ललदर-लण्ड, बालदर एवं २४ पचे के लुन-पण्ड का कार्य-

भान रला' गया । नाटक में बर्ना के द्वारा सर्वोदय पात्र के विचार की मूलक सी कर-पायी गयी । सभने के अन्धे-बेले लोय नम-शक्ति होने लगे, उन्हींने सर्वोदय-पात्र ल्हाय लुँक निषय । उल्लर संलन हल सार्थक निषय ली है ही ललदर शक्ति के बर्णों द्वारा एकदुता करवाया है । उसके पचे से अब एक मिश्रा लर को ही परि-बर्णों बालों की तथा रिकियो का मुल्ल ल्हाय चलता था । लेखन बल बर र अन्धर लर के सलने धरों में सर्वोदय-पात्र ल्हाय का अलक निषय निषय और लल में लडी निषय वे होमिगोपिचन ररा की जाती है । बल वर १०४ लरीयो को ल्हा दी का मुकुती है, निषयें ५१५ पुर्ण ल्हाय हल ।

—रायकिणोर निषायी (लोचनीपण्ड)
 आ-सर्वोदय निषय, मुकुती (कैलाशर)

सोनी, पीले, नीले—'सरह-सरह के रंग ! कहीं बचिपत्तौं विदिय रंग ॥ रूपदे, पास पड़नी हूँ, बालों में रिक्तस लसालो हूँ दोनों कपारों में सदा ॥ हो ह्राय ह्राय करके मंजुल हवर में फिलजाली ची—'बच-गणु' ॥ जैसे ही बाबा मजदीक पहुँचे, फेरने लगे, उनके ओंठे-भांसे भेदरे धमक डटे ॥ बाबा ने कहा, 'ये हारा रंग-रिरीओ मुझियाँ हैं !' फिर उनमें से दो-चार फेर डलियों में शबा के हाथ दोनों शानु से पकडे और पदाव तक चली ॥ उधरे दिन बरी हुदुरी में अब शाराय का समय था, साथ कपडे के चढ़ारु दोनों हलत बर निकले ॥ हठीय वा रहे थे, छपतर में नही भाव्य ॥ रगुल के छावने मेंलत था, हरियाली थी ॥ पस धमके से लोग पुर में बाहर बलम-बलम होठों में खडे थे—'बोई पैड़ की छाया में, बोई मुंगुल होया चनेबोले ॥ पास ॥ शबा में मीरान में कदम रखा, शरीर और ॥ लीय इचटदे हुए ॥ शबा के हट्टिगिंटे चडे हुए कपडों की मुंगुल ज्वाला थी ॥ शबा बोले डंड गये धारन सगा कर ॥ एक कपडे को हटारने के पास मुलाया और पदासय विछामा—'छापी छामने, चमार न मुझे, फिर डार ॥' सब हटारि—'ठीक किया काम ॥' हुतर बोई भाता है ॥ करीब एक-दो घंटे उठ घुम में बोई-पदह छपटों को सामन सीपाने का काम किया ॥ पतीने से घर गये थे सब ॥ पर कम्मे सूच थे, और कम्मा छिपाने में उमर ॥ पिछी लकने का पुराबाम उठेक सय पाता था जो बहते थे, 'हूँ, यह योगी हो सफत है !' अमलमला सेन वा मालतीदेवी से हैं किचोये पूछा, 'शबा दसती पुर में जाय क्यों बाहर चले गये थे ?' उत्तरों धाराय जिन—'चार कले ॥'

एक दिन बाबा कहते थे, 'कई बारा में देखाता हूँ, क्या में छोटे-बोटे कम्मे लामने बैठते हैं। उनमें से कई ऐसे होते, जिसकी तालीक मने, दुखतामन मही होया ॥ छोटे-छोटे लकने गरीब के घर में कमाले वाले लोग होये हैं। भुदान-यय जैसे किचिअए चुक दिया ? इहाँ बचपने के लिए ! 'बाउरज्म' की दखनी पेलना हपारै देप में हो रहा है—' कम्मे-कम्मे ठगरी झालें गौली हो गयी ॥

हियालय की गोदी ॥ जिसकी हुई सोमार्थ की पुत्री, पुम विचार वा रही हो ॥ बहु कहेगी, 'सागर से मिलने !' बहते-कहते बहु क्या मही कतरी है ? बिनारे धाने बांके सुपावियों की प्यास सुशांती है, फिर बाहे बह पहर हो वा गाय, हिंदु हो वा मुसलमान, किसी भी भाषा वा हो, किसी भी जाति वा हो ॥ बिलगो ही सुनो की गानी देती हैं ॥ उनके गानी के सहारे रिक्तसे हो बहो में कमल खरी होतो है ॥ फिर भी बहु कहेती हैं कि मैं तो सागर से मिलने जा रही हूँ ॥

कण्ठज्वारी के कपोर एक को सोराष्ट्र के उरीश, बगल तक दमनपूर पात का मय घुम हुआ था ॥ हलम में बाधा सध हुई ॥ वहाँ वा कायंमय रहेगा ॥ देस धारा गया ॥ विनोवा में रुका था, 'मैं वहाँ बहायु होकर गयी, छायापयोगी के उरासक के पाते का रहा हूँ ॥ कण्ठज्वरक मुदान का विचार हीं जाया हूँ ॥ मुदान, छापीर-चार, धामि-डेभर, गई छापीर, यही कायंमय वहाँ रहेगा ॥'

सात बानस हैं, सात-सात सहीने पड़ेके मलम में बाबाजिन-महास हो गया था और कुछ दुःखकरक पडारई वनी थी ॥ गिन गीनों में दौरी पडारई धडी, उगने के बार दौरी में भाव ल विनोवाधी का नाम हुआ है ॥ गौबालमपूर शहर के मजदीक, ८ मील पर दोबालारा नामक गाँव है ॥ वहाँ सात बालिणीयों के घर कानवे गये थे और नुम के अय से मजरीक ॥ वहाँ में और अंगक में लड़की हासरा लिया था ॥ बोरी-रोरे के शराय सादे का रई उषी गरम में कलम बनाई पर फिर से गई शोगडगई खी कर रहे हैं ॥ श्रुतेमार्थी के एक उरतों में से बाँध, चकटने के एक हुदुर कुटी बकामी थी ॥ चकटे पर रहे ही होये हैं—साथ और पाव-पुस ? छोटे-कोमे मोरिणसे, मोज का बागन ओ सौत-लगा, एमक, गिर्मन था ॥

'विनोवा-कुटी' के छामने केठों के बंदन-वार, बचोके के पूल और बंधाल की कला का नमुना, पलना थी ॥ कुटी के बगद, बीच में कान्ना की, जंतक के बंधेन दुख गोकुलवार में रनाये थे, बरक तथा रीपक था ॥ विनोवा का रगणक मूल छिलक थे, कुली को लाल थे, पाय बंधे हुए थे जिवा था ॥ विनोवाकी कुटी के मयदर सब धार-कहनों के छाप डटे ॥ बायों में मयबल का नाम-मयकम किया और एक गीत गाया ॥ कला ब्रह्मण था, 'हमारे कुल की राति, तिया सल हो गयी है और प्रगत हो गयी है, बनीक लला का भावमन हुआ है ॥ क्या कुली है, कुली सखायें और उनके दे परल-पुलत हुदारी झालों के क्रीमणों से लोपने ॥ हमारे पास कौतु कुल नहीं है ॥ 'आशारेई' धारी की आवा सेकर आमी थी कि बाबा का भावमन होश ॥ सब हलत हाहा का सब मिल रहा है ॥ '—ठोलक पर बलि-नगर के वा रहे थे ॥ बाय में वला फला कि वष की की बानने बाभा पडारई बनने का मय करता है ॥ बोरी देर बाति रही ॥ सुप और मयकरीके से मुसुमयम बाजारबक में पाविष बड़ रहा था ॥ बालत वानत और मजरीर भाव से विनोवाधी में पीमी भावाय में भावा—

अडेटा सर्वमृतानी मैकः कथय एव च ॥ निर्मणो निरुत्कारा तासुकु मुमुक्षुणो ॥
 बल-वयव-वयव में से बाठ खोके (गीत, क १२ : १३ से २०) गाया ॥ उगी दिन कपामी शायों के घरों में भी विनोवाकी गये ॥ सुबह १० से १२ तक मने में मुमना हुआ ॥ सब सामिल हो गये थे ॥ कानर अ बाउरज्म था ॥ हलम मने में चन्द महीने पहिले मय छाया था और नेसादुर अरुद हुआ था ॥ उर दिन उरकम नागोनिवाँ नहीं था ॥ छाया की सभ में यकरी, बंजाती, नाई-बूने, बन्ने एक-साथ बैठे थे ॥

बीच में 'बुज्जई' नाम का गाँव था ॥ वो मोमालाका और बोटाई के मीटर के चारले घर है ॥ यह गाँव ही उनमें से एक है, वहाँ पर बघाडि की भाग की गाँव पहुँची थी ॥ उर मने के यगाली गेय विनोवाकी थे जिनके ॥ उनरी बाई विनोवाकी ने सुन ली ॥ विनोवाकी कहते हैं : 'मुझे कल्ला की मारीक करने की जरूरत नहीं है ॥ 'कंउरई' सब पडारई दीजिये ॥ यह चीज मेरे लिये गई नहीं है ॥ अब देत वा विचारन हुआ था, सब भी देवी ही अगडि की भाय मुकरी थी, और आलों सीप बनना-बनना खान छोट कर इतर के उबर और उबर के इय भाये थे ॥ उनके उर बने देते हैं ॥ उनरी देस कले का बोस हल मिलत था ॥

हुदुरई में धार की ब्रमा में जाने हुए बाउ-रुतों की खरनाके देते हुए विनोवाकी ने कहा, 'साद हल गाँव में १२ बज गये थे ॥ कितने ही घरों की भाग लगामी पली—रह देखा ॥ फिर से वहाँ पर बच गये थे ॥ खरकर मयद दे रही है ॥ याने बोरे ? बिचोने कमार, वं तो चकर देते हैं ॥ खरकर के पाव रीत कहीं वे जाय ? ॥ एक ही शोग उरब देते हैं ॥ होयरे देर के ही मयकम बलाय, इतमें कानरका पैता है ? ॥ सारे सारक को यह हुन कर बहुत बरहा गया ॥'

इस सबकी गोमोला करते हुए विनोवाकी ने कहा, 'बहुत सब दलियेने हो रहा है कि देस में मनुष्यों को तालीय श्रेक नही मिल रही है ॥ तालीय में सबको उरती कल सामन ही नहीं है ॥ खरकर 'विपुलूर', नियमों कडवणे नासरी है, एलियेने कोई चर्बेय नहीं छिस्त्रामा पाता है—न अद-दिल, न मुसय, न संकरदेव का संव ॥ यह कलम बास ही कि बजयो मयदर पउते उलय देते विचार बाउरे दे, पर कपडों को पीडि-विश्रा नहीं ही पजी ॥ कपं-कपं का गीचक मही कपडको को काग कोन निभाय डेने बचनों को ? काा-कोई छिस्त-नरी पीडिचर संव छिस्त्राम, उरका मयद होगा ? हुदारी सब पायालों को उलय खरीदते हैं, बहु खोले हैं ॥ संभेने में प्याडरुदिक छादिय है, जमी उरखे वे उरख-उरख का धारिय बंभनी, छप में है ॥ हुदारी भाय में भाये हक नहीं आया है, भाये पायये ॥

यहाँ तक कि मयम की अकली जायसरी, प्याडिने को हड भी अंकीने में मिली है ॥ उलय छादिय खोता न था ॥ और वही संव उलय होशामा न जाय, तो पीर-निगमन के लिये काँच विताय बरगों में दने ? शरदरेन लीर मायबदेव के रं बचों की सीपाने जाते को मयद हो ली काम हुए, ओ पटना हुई, बह नहीं होती ॥ यही छापीय का बहुत बडा दोष है कि उलयमें इतरर ॥ प्रति बडा नहीं होयें ॥ छलमिच्छा और अंधमिच्छा मही होती है ॥ यह तालीय का दोष है ॥ इलियेने में होयें, को सीप मही देता ॥

बाउ-उरकम मही भाई विनोवाकी से मिलते हैं ॥ उनको विनोवाकी कहते हैं कि 'सुम लोग करो मज' की सदा है, उधे उरामेनामा की मिलना है ॥ मर हुदारा देस का, मही हुदारा, यह विचार रखे ॥' अकली चारहों के कही है कि 'कारण कियेका उरकम है ॥ यही की सुदि होय है ॥ देते भायके नेहरी की सोम्य है ॥ यहाँ सुदि भी उवार है ॥ पर सब कर देती हैं ॥ सब मनुष्य कंजुल की दे सखा ॥ ? में बायके बहुत बडा उरक है ॥ कुटी हुआ ॥ सोके में कुछ काम आई हुए ॥ लियेन उधे मय मुल लामने ही भुदान-यय के जेते मरनामना नाम में का जाये ॥ भायके प्रदेय में गीरि, बापाएँ हैं, यह मायका गीरक है ॥

बोरीको की उरम में कलम ने कहा, 'खरकर मनुष्य की परिचितिमें बहुत लय लकता है ॥ दवागु भी परिचिति के उरके बर लकता है ॥ पानी ती डंडा होया ॥ लियेन मयम प्युरे रर रको तो मयरी लोयेया ॥ 'बल' पीलन—'पानी खरकर के रंया है, केगिन मयद बल लकता है ॥ बंने पानी हुयेया लोके जाता ॥ लियेन पने के कर भी जाता है ॥ वरक खरकर मयद भाते ना नहीं है, कारनीले कर जाता ॥ मैंने देखा, एल वियेन में कुछ निरु का काम फिये मने ॥ कियेन दाही की सुदि, दाई का हुदर सोम्य है, फिर भी देती चरमा बडा है ॥ कपोकी देवी हुवा नाती है ॥ शक बाय सब लोके इते मुल नासरी ॥ हमारी मूनि 'सुबलाम मुसुलाम', लियेन उरके ताप-साय हय 'सुसुत भागिनी सुतागिनी' मही बनेने को बह मूनि हलं मुल नहीं देवी, हुको बरागोने ॥ इलियेने हय 'हुमयद भागिनी और हुद-किनी' बनें, जो लकम कल्येन हुदर सर्व बनेया ॥ इलीयिने भुदान रिक्ता है, हमरी मूनि गिये, सब सुदर/किनी, सुमुकर भागिनी बनें, प्रेम से रहें, मयदर बा नाम न ही, देस भाग्य प्रोत बनें ॥

कलम की खरकर ने सुदुरीने को, पीडिनों को मयद देने का बाउरेन निभाय है ॥ उनकी एक पति विनोवाकी के पल मारी है ॥ परंतु जिनके पर बने हैं, देते कोनों की कही-कही विचार

भी कि मधी धनको पूरी मरद नहीं मिल रही है। मोवालयन के एक सकारणी अधिकारी एक विचारविमते में रिजर्वको से मिलने वाले थे। उन्होंने विनोबाजी से कहा कि सरदार की ओर से मरद नहीं आता का नाम बन्द है। मरद होगा। विनोबाजी ने एक मीठ में कहा कि सरदार मरद बर रही है, करेगी, इसमें कोई शक नहीं है। सरकार को यह बरदा है, यह तो बड़ करोगी। लेकिन सरवाल यह कि यहाँ से कौन क्या करेगा? लोगों को भी मरद करोगी यहिसे।

भाभी-बल के कुछ सन्धी गोर गीरे में आते हैं, विनोबा और सखी-बल साहित्य और विचार बर-बर पहुँचाने का काम करते हैं, कहीं-कहीं सत्यान देने का काम होता है। एक गाँव में एक बहू-बाला-मरद-रुह रहे थे—'सरदार का नाम बल में बहुत लोगों के पैर था, आज भी है। बहू-रुह लोगों को साजस बिलकुल पसन्द नहीं था। वे कहे हैं, बाल-बल के बलम हमारी बात सुनें कहीं है?' बहू-रुह भी थे एक मरद-रुह। कहे रहती थी, 'बेटी, मेरा घर जगा, रामान देवारा सब कुछ काम हो गया। वे बच्चों को लेकर हमने जो पढ़ाक और जगल सीखना है, वही भ्रम नहीं थी। अब बालम बाजी भी तो मेरे नाँव के ही एक बाई ने मेरी बरद की। उहाँ के घर की बड़ लखिया है। मेरी बड़ भी सौपकी गई थी। मरद के बारी कर रही है।'

बम्बल में जाकर ह्व मरो !

भीष्महणदत्त भट्ट

बम्बल घाटी की चाना में एक दिन एक ठाकू ११ कामाज विनोबा के मोल-भेरी पजीरत हो रही है।
 'बम्बल घाटे भारे'—'बाबा ने पूजा।
 मोल-भेरी लिए उपर चूली है, इधर धर है।
 मेरी बन्दी डाहू की बेटी है, हकीम साहित्य मुझे तन काशी रहती थी। साहित्य तन आकर मैंने उठे उठको सी के भाग मेव दिया। मैंने उठके कहा, 'तू खली का'।
 बहू-रुह मेरी बात मरद बर पजीरती है।
 विनोबा के हवाते के दुष्टका मिल, पर बल डाहू लोग मुझे मरद करे हैं। कतने कि तुने बड़ मरद किया, दो बच्चों पानी भीनी की पर मैं निराज दिया।
 बाबा—'उठके दो बच्चे भी हैं।'
 मोल—'तौ चाना।'
 बाबा—'मुझे खूबी है कि जहू हारें सग करे हैं। दाम तो ही खली बरदाक जो बरदा है उसे उधनेनाथ मिल बाव है।'
 मोल—'तौ मरद।'
 बाबा—'अब तुम क्या करोगे।'
 मोल—'बन्दा बरूँ बाबा।'
 बाबा—'जाकर बम्बल में तुम रहे।'
 वेला आता है क्या।'
 मोल—'तौ मरद, आता है।'
 बाबा—'तौ गले में भणर बाँध कर नूँते

मरवाना साहित्य मनुष्य को बरदाती ही है।
 विनय गुल बाव है, पर बगलान उठे बाद मरवाना है।' बहू-रुह एक बहू ने बहू,
 'अल्लाह के राज में देर है, मरद नहीं।
 हम सब रहते हैं तो सुख मिलता है।
 बाबाजी आते हैं, तो हमार दिल में ठंडक पहुँची है।'

मोच में एक दिन ११ मोल का लका चरमका था। हर दिनों सुनंदापणम का चरप मो बन्दी हो जाता है, मोर बरदी मो बड़ रहती है। बूज, पूज मोर लकी राह। जाविर के लीन सील अलक जिसे आजकल जिने हूए मोर के भाई-जहन सवातर 'हीरो बोल' का यथोच्चारण करते रहे। विनोबाजी ने पढाव पढ़ाव पहुँचाने पर भी भाषण किया, उठके बहू, 'आज हमें बलम बहू-रुह नहीं हुई, बसोकि उठके में बहू 'हीरो बोल' का नाम-बमरक मुलते बाव है। बहो बहू मरद है, बहो मरद नहीं होना चाहिए। बरद निरंकरन नहीं आती है, जो बमजना चाहिए कि हम तोके के मुजा-लिक मरद मोलते हैं, हूवके के अलक मोलते हैं। मय के हूँ मैं चरणम नहीं चाहिये। साविर बला होगा ? हम बमजने। बरे भाई प्रारथन बाव नहीं होता है, सब लक कीर्त नहीं मरद बरदा है। मोरें चारता है, जुध करता है, तो भी बसित नहीं सीधी चाहिये। निरंकरन के भाई-बहूँ उन लके हैं, नाम-बमरक कर रहे हैं मोर मरद पर रहती है। ऐजा हूव सीखना चाहिये। मारने वाले के हाम जोपकी चाडि देल कर

मध्य प्रदेश का खादी-काम

अब संगठित मध्य प्रदेश में मोलाल धाम, रिपब्लिक प्रदेस तथा मध्य भारत की सन्धिगत हो गये हैं। यह विचार प्रदेस वास्तव में भारत के मध्य भाग में ही स्थित है; जहाँ बम्बल का काफी उत्पादन होता है, जो अधिकतर बरें आदि प्रदेशों को निर्यात होता है। मध्य प्रदेश खादी-आगोयोग पर के आँखों के अनुसार प्रदेश में लगभग २० लाख एकड़ भूमि में ४२ लाख अमल कौत रुई पैदा होती है। खामा हर क्षेत्र में सुनंदाजी की कल्याण पचाँत है, जो अधिकतर भाभी मित्र का रूप प्रयोग में आ रहे हैं। अब उन्नत आन्तर चलेके के मुलम हो जाने के कारण अधिक खूब [मि] मात्रा का बरदा है और निम्नो किलम का खू, जो मिल के खर के मुवाबले का होता है, बारी मात्रा में उपलब्ध बनना का खरदा है, जिसे सुनंदा परत भी करने खोते हैं।

मध्य प्रायत से खतीरी गयी, और १ हात की ४० प्र०, जो खर कि मुल प्रती लगभग १५ खण्व की हुई थी। हल प्रकर खल खन की कामी के खामना खती बरदे के उरिय बन्दी पवती है तो राह ही है कि यदि प्रयान किया जाय तो मध्य-के-मरद बल लातों बन्दी का बाहर के खतीरी जाने वाली काली का अधिकतर भाग प्रदेश में ही उत्पन्न हो सकता है।

प्रायत की उल्लिखित सत्यानों के सम्मुख हल प्रकार खतीरी-उत्पादन के क्षेत्र को विस्तृत करने की काफी इच्छा रहती है। प्रदेस के वयोवृद्ध अनुभवी कार्यकर्ता एव उद्योगी निरन्तरानुसूत कार्यकर्ता, बँदी सन्धिगत रूप से मिल कर मोरनापूर्वक क्षेत्र प्रदेस के उत्पन्न सत्पन्न का अधिन-सम रूप के उद्योग कर तो निरन्तर ही विद्या में बहुत कुछ कलाका प्राप्त की जा सकती है। रहा उपजक, खामना, प्रशिक्षित एव परिष्कृत मोरनाओं का प्रयत्न, जो गाँवों में काँव कर हल कार्य में लगे हो विभिन्न संस्थाओं में एकीकृत आगो-योग म्ययोग द्वारा संचालित निवासनों द्वारा प्रशिक्षित एवं क्षेत्र में कार्य कर रहे अनुभवी कार्यकर्ताओं के अनुसार जो नैतिक बर्ता, छोटे-छोटे विविध आदि के द्वारा प्रशिक्षित करने अधिक उपयोगी बरदाका बा लकवा है एव गाँवों के अधिन सत्पन्न ब्यापित करने स्थानीय कार्यकर्ता को उप-लक्ष्य हो सकती हैं। साय-साय प्रशिक्षण, सकारणी एवं आर्थिक सहायता खतीरी आगो-योग आगोयोग द्वारा अधिक मात्रा में उप-लक्ष्य हो रही है और अधिक भी हो सकती है।

मध्य प्रायत से खतीरी गयी, और १ हात की ४० प्र०, जो खर कि मुल प्रती लगभग १५ खण्व की हुई थी। हल प्रकर खल खन की कामी के खामना खती बरदे के उरिय बन्दी पवती है तो राह ही है कि यदि प्रयान किया जाय तो मध्य-के-मरद बल लातों बन्दी का बाहर के खतीरी जाने वाली काली का अधिकतर भाग प्रदेश में ही उत्पन्न हो सकता है।

एक मध्य प्रायत खतीरी-उत्पादन के द्वारा ही रुई ५६ में १ लाख बरने की खादी एक जावेगे।
 एर-बमरक छोटे-छोटे पहाड, चाल के अने पेठ कोर विरिचन करके के बूच दीवले हैं। हकीमी की मरद काशी हैं, जो बहू-रुह हरी-मरी दीवली हैं। मार्य बावूँ साथ हो रहा है, पर उना के लीन पर भी हकीमना लगी मोलको है। एक दिन बने बंगल थे, अँगो-भीको बरदाती वाली यह बरदे हुए विनोघाटी ने कहा, 'एक मरदाना का, बर बरने के नाम के बरदे होवे थे। अब दन रिनों बावल के जिमे बरदे होते हैं। कुछ दिन के बरदे से जो बरदे बरदे हो जायेंगे और फिर लोग हड़वे कि प्राचीन बरने में जैसे बरने, बरने के बमुरार बँडे बरद करेने, नवदा प्राय, बहू-प्राय शत।'
 दाने में एक गाँव बाबा। बहो के राव लह कुलें हलके मोर-मोर के पुरुने लगे कि साविर विनोबाजी के बरने का करके बहू, 'बेरी वरने दे। ये हमार इस्फाकलक है। हकके दानके बहू-मुरातो कुछ नहीं बनेगी। वे कमी-कमी विनोरे में बहू, 'बेरी वरने में कमी-कमी तो बरनामों में मोर में ललक पहुँचते हैं-बहूवाम में सुते हो पहाड में रिकिनी। कमी कमी कुल का बरदान देल कर बहने हैं, 'बहू देको मू को भी बरदा रहे जो है।' कमी कमी बहने, कुलों के मूने में मूने 'मोम' 'मोम' मुवायो देवा है। प्राय बहू रहे के, 'एक कुलत है। मुवायो में हमार बाबायें 'हीरो, जो हमार भाजनाम में 'मुल' के हमार भाव लीने। मेरे बने में बहू है, बहू 'कुलत बहूनाम' साव रख कर ने मया कर्नाम। साविर कुल को एक ही है।'

पामल में, मुहाँ तो मगा में जाकर कुरो।
 मोल-गलती हुई बाबा सुनते।
 बाबा—'मुवायो लीचन का कि तुम दर का दाना पामे का रहे तो। जो आदिनी सखीर के बचने के लिए अन्ना पामे लक देता है, पर भी मोरें आदमी है। उठके सी मोरें ह-हवालिनाम है। तुमने लकीरके बचने के लिए अन्ना कमी छोड दी, यह तो आदमी का काम नहीं, जानवर का काम है। मोमने की बाल दे कि कमी मया बरने मोम-निरिणल के लिए दीती है। तुमने ऐजा बरने से जो पदल आनाम ही मित्र मय, अनुभवती ही खतीरी थी। मरद देवा भी निना बावता है कि मरदान खीरन में मानजल न रहे, हकीमनिच न रहे। हमदती न रहे, संकम न रहे, अधिक न रहे तो पद मयाय भी क्या।'
 (लेखक की हाल में प्रकाशित 'प्यारे नूँते भादयो' के प्रथम पुणः 'रतने की कच बाव है' पर एक अंग।)

—राजीवचंद्र दुर्गे
 [खतीरी आगोयोग सन्धिगत, भागी]

वारणासी में अशोभनीय-विज्ञापन-अभियान गोष्ठी

दिनांक १८ मार्च, '६१ को सायनाल गांधी-तत्त्व-प्रचार विभाग, वाराणसी और सर्वोदय-मण्डल के सहमिलित प्रयास से टाउनहाल में भारत में चल रहे पोस्टर-आन्दोलन को बढ़ावा देने के लिए डा. सम्पूर्णानन्दजी की अध्यक्षता में एक सार्वजनिक विचार-गोष्ठी हुई, जिसमें उत्तर प्रदेश के सर्वोदयी नेता श्रीवा नगर के विचारकर्ता गिराक कणू एच. जे. आ. दासि-सोना विद्यालय के मार्ग-नहन उपस्थित थे।

बारांसी शहरम परतु हुए उ-म. सर्वोदय मण्डल के अध्यक्ष आ. सुन्दरलाल जी ने नगर में तथा आ. मा. तार पर चल रहे आन्दोलन पर प्रस्ताव जलने हुए कहा कि आइ अशोभनीय विज्ञापनों को हटाने के सम्बन्ध में सारे देश में एक जन-चरित्र की स्फूर्त होनी चाहिए। सभी लोग इन अशोभनीय विज्ञापनों को देख कर अस्वस्थ बनते हैं, सिन्धु मूक दसकों की अशिक्षित सुष्ठु बह नहीं बरसे थे। होता यह है कि जो कुछ विज्ञापन के अन्दर हास में देखा जाता है वह सामाजिक स्मरण बन जाता है और जो कुछ सामने धर कर आता रहता है उसका अक्षर-मात्र पर परेशानी होती है। इनसे ही जब समाज में सब उन्हें संचय दीवार और स्वच्छ विचार की बाध एसी और नागरिकों को हन-मर्द-चिन्तों को हटा देने के लिए प्रेरणा मिलता है। इनसे ही अशोभनीय-विज्ञापनों के अशोभनीय प्रदर्शन न होने का आश्वासन दिया। वहीं से एक बालावस्था बना और सार्वजनिक स्थानों से अशोभनीय विज्ञापन हटाने के लिए। उत्तर प्रदेश में भी पोस्टर विधायक समितियों बनाई और अन्तरीम स्तर के सर्वोदय काम हुआ। वहीं एसी ही अशोभनीय-विज्ञापनों से पीड़ित-श्री अग्रजित रवीशार जी, सिन्धु मूक सचिवों के देना का आश्वासन दिया है।

हमारा कमी दुःखम नहीं रहा है। शरत में भी कहा है कि जो अशोभनीय है, उसमें रंग देना विचार जाय या उपाय कर बना दिया जाय। उसी तरह ही विज्ञापनों को हटाने का भी एक ही हीन विचार गता। शरत में सुस्थल बना लिये हुए रहे-बड़े (के हाट-र) थे। उत्तरा बना अन्तः अक्षर वाली बालों पर रसा तथा लोगों की कुछ हलानुष्ठा मिली।

भी बचाने के लिए कि इन आम हटाने पर कर्णों के लिए। भी हल-हट हुए। विज्ञापनों के नाम से एक सच है। पर कहा है। बारांसी में कई बार एक संघ में कर्णों हुए, सिन्धु एकाच मन्वष अक्षर कुछ नहीं दिखायी पर रहा है। जहाँ भी माना-माना गीतें अक्षर विचार रहे हैं, जहाँ डॉ. सम्पूर्णानन्दजी रहते हैं, वहीं वे चार भागें होनी चाहिए—

- (१) बारांसी नगर, दान-नदी है, घाट घाट व गली-गली, पर्वत-पार, पाठालाल, मन्दिर, मन्दिर-दुखमारा सभी पूरे-पूरे का है।
- (२) पूरे एका-बन्दी हो।
- (३) दुर्भाग्य, विपत्त अक्षर गणन होने नाने, कर्णों अक्षर अक्षर कर्णों पर पड़े।
- (४) मन्दी बरनीयों को हटाना जाय। अक्षरों में एका वा कि देश में प्रथम की सबसे अधिक परत काटी तथा दिनेगी बारांसी की निर्मि एकाच में है। शेष कर्णों को भी कि पूर्ण बना प्रदीप में कहा कि शिवा-वर्तनी के मानुष-चिह्नों के प्रति कभी विचार नहीं हो ही नहीं बनता। लेकिन बहना यह है कि वहीं शिवा के साथ बारांसी वा, विनरों देना कर आना अपने आर उपाय पठनी है, देना मारा नाम प्रदर्शन किया जाय, जिसे देना पर सुन्दर विचार बने ही नहीं। इसे विज्ञानीयों के (की देना बहल-हटि-पु-केयन) कहा है। एका विज्ञापन होना चाहिए।

आपने कल्पित के 'हुमार सम्भव' में शिवा तथा बारांसी बहल के विचार बनने पर अशोभनीय बनते हुए, कहा कि क्या आज बारांसी बहल सारा है कि बाल-बाल मन्दी की-बा के अक्षर बनने वाले थे।

कीन है देना, जो सच-सच को अशोभनीय प्रचारक बहल है। वहीं, यह बात वहीं है कि 'हुमार सम्भव' में बलिष्ठ नगरपाल-वर्तनी को यदि कोई बलानार अपने उपाय से चित्र में उतारेगा, तो वह अशोभनीय अक्षर होगा। यह कालिकाय का विज्ञापनीय की बनी नहीं, बलानार का इति-कर्म होगा। जहाँ कदा की बात आती है, जिस के प्रतिष्ठित बारांसी में जो चित्र विभिन्न स्थानों पर निर्मित मिले हैं, जिनमें धार्मिक मान्यता लम्बी है, कर्णों देना की है, जिनको देना पर विचार कृतित हो जाये। यह आशोभनीय बारांसी कर्णों तथा अशोभनीय अशोभनीय है। उसकी गहराई में अक्षर मण्यो-कृतित हल-योग सच-की बना चाहिए।

की दुर्भाग्यवती दुष्ट (नगर-प्रमुख, बारांसी) ने कहा कि विज्ञापन के अशोभनीय पोस्टर का विज्ञापन सच-सच-बन-रहा है। इनसे अन्तरी अक्षरों का हटा देने के लिए प्रेरणा मिलती है। वहीं अशोभनीय विज्ञापनों के अशोभनीय प्रदर्शन न होने का आश्वासन दिया है। वहीं एसी ही अशोभनीय-विज्ञापनों से पीड़ित-श्री अग्रजित रवीशार जी, सिन्धु मूक सचिवों के देना का आश्वासन दिया है।

अन्त में डा. सम्पूर्णानन्दजी ने एक आन्दोलन शुरू किया। उन्होंने अशोभनीय विज्ञापनों के अशोभनीय प्रदर्शन न होने का आश्वासन दिया है। वहीं एसी ही अशोभनीय-विज्ञापनों से पीड़ित-श्री अग्रजित रवीशार जी, सिन्धु मूक सचिवों के देना का आश्वासन दिया है।

अन्त में डा. सम्पूर्णानन्दजी ने एक आन्दोलन शुरू किया। उन्होंने अशोभनीय विज्ञापनों के अशोभनीय प्रदर्शन न होने का आश्वासन दिया है। वहीं एसी ही अशोभनीय-विज्ञापनों से पीड़ित-श्री अग्रजित रवीशार जी, सिन्धु मूक सचिवों के देना का आश्वासन दिया है।

अन्त में डा. सम्पूर्णानन्दजी ने एक आन्दोलन शुरू किया। उन्होंने अशोभनीय विज्ञापनों के अशोभनीय प्रदर्शन न होने का आश्वासन दिया है। वहीं एसी ही अशोभनीय-विज्ञापनों से पीड़ित-श्री अग्रजित रवीशार जी, सिन्धु मूक सचिवों के देना का आश्वासन दिया है।

अन्त में डा. सम्पूर्णानन्दजी ने एक आन्दोलन शुरू किया। उन्होंने अशोभनीय विज्ञापनों के अशोभनीय प्रदर्शन न होने का आश्वासन दिया है। वहीं एसी ही अशोभनीय-विज्ञापनों से पीड़ित-श्री अग्रजित रवीशार जी, सिन्धु मूक सचिवों के देना का आश्वासन दिया है।

देश के कोने-कोने में 'ग्राम-स्वराज्य दिवस' आयोजित

सर्व देशाचार के प्रहारा के अनुसार ६ से १३ अप्रैल तक बौध-गाँव में 'ग्राम-स्वराज्य दिवस' और अक्टूबर अथवा मया। इन बखतर पर जगद-जगद ग्राम-स्वराज्य दिवस का आयोजन किया गया। इसमें अन्ताराज्य प्रवासी, पदासी, स्वराज्य की आवश्यकता और अन्ताराज्य प्रकाशक द्वारा गया। प्रायः सभी गाँवों में माल्य होता है कि ग्रामस्वराज्य के कार्यक्रमों से गाँवों में उत्साह का नूतन धारा है। विभिन्न प्रकारों से प्राप्त समाचारों का संक्षिप्त विवरण यहाँ दे रहे हैं।

ग्राम स्वराज्यस्य सफल होने के उत्साह-पान में भारतसंगीत (संगीत) संस्थान के प्रधान-स्वराज्य दिवस प्रवचन से प्रभावित गया। शासकविद्या, अक्षयन, बलबनगर, कलदा, मोचनचौर, विरभोजन, धारतोर, गोशरर और वैगरी गाँव के प्राचीनों में ग्राम स्वराज्य के प्रचार पर अक्षय-प्रचारक का संकाय किया। प्राचीनोपनिषत्सिद्धि, बनारसी।

विहार सादो-नामोद्योग सच, हाजीपुर (दरभंगा) के लक्ष्मण कर्मचारी की ओर से गाँवों की विद्याओं की ओर गाँव-गाँव ग्रामस्वराज्य का प्रचार करने निकली। ५५ मील की यात्राभा में एक सप्ताह मुकाम किया। नमोदी के शिव महादेव से रीति-रिवाज में गाँवों-नामों के लिए ओर गाँवों की रीतियों की अन्तर्गत के लिए की गईं। इससे अतिरिक्त ग्राम-स्वराज्य के मुकाम की प्रतिस्थापन कार्य में प्रचारकों की ओर प्रवचन करने और एक से एक गाँव तक ही।

मुजफ्फरपुर के गजद मोह हुए प्रवचन-कार्य में गाँवों में आयोजित सत्र में की अन्ताराज्य प्रचारक साहू ने ग्रामस्वराज्य की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। इसी दिन १५ गाँवों में १६ गाँवों में आयोजित सत्र में की।

बाद्री सदन, हाजीपुर (मुजफ्फरपुर) की ओर से हाजीपुर, देवरी, दुधरा, सोही, बकरी, चौरापुर आदि गाँवों में ग्रामस्वराज्य दिवस मनाया।

भोजपुरीक हाजीपुर समिति एवं बाँदा गाँव, मिलीत (मुजफ्फरपुर) में हाजीपुर राष्ट्रीय हाजमिद, प्रवचन (सूत्र) के कार्यक्रमों में उत्साह के साथ ग्रामस्वराज्य दिवस मनाया।

बिहार प्रवचन समिति, मेघनगरिया में विहार प्रवचन मंडल के संतोषक की सहायक प्रवचन प्रकाशक का सहायक हुआ। इस अवसर पर गाँव गाँवों के कार्य-प्रवचन से गाँवों में उत्साह का नूतन धारा है।

जिला सर्वोदय मंडल, मुजफ्फरपुर में गाँवों में जिले के ६० गाँवों तथा उनमें से प्राप्त सत्र में २० गाँवों में ग्राम-स्वराज्य की प्रवचन कार्य-प्रवचन में शामिल की गईं। जिले के प्रवचन केन्द्र मुजफ्फरपुर में गाँवों-गाँवों की रीतियों के लिए सत्र पर भी प्रवचन प्रवचन कार्य-प्रवचन में शामिल किया।

विहार प्राचीनोपनिषत्सिद्धि के सहायक प्रवचन में ५ अप्रैल की रीति-रिवाज में भी उत्साहका टाकुर और मन्तक-विचारक का संकाय किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया।

सूत्र गाँवों में विचारों और ग्राम-स्वराज्य के कार्यक्रम के अन्ताराज्य प्रवचन कार्य-प्रवचन में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया।

ग्रामसेवा केन्द्र, जलोदी (गोरखपुर) के सहायक प्रवचन में ५ अप्रैल को जलोदी में ग्राम-स्वराज्य सप्ताह प्रवचन कार्य-प्रवचन में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया।

उपग्राम सेवा-संस्थान, एचोवा (कैमूर) के कार्य-प्रवचन में गाँवों में ग्राम-स्वराज्य दिवस के कार्यक्रमों का आयोजन किया।

ग्राम सचिवों (वीनीसाल) में ग्रामस्वराज्य-दिवस के अवसर पर ग्राम-सचिवों में सत्र कर दिया कि ये एक एक गाँव प्रवचन करने में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया।

सर्वोदय मंडल, मोटी (कैमूर) में गाँवों में गाँवों में ग्राम-स्वराज्य दिवस के कार्यक्रमों में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया।

जिला सर्वोदय-मंडल, मुजफ्फरपुर की ओर से जिलाक सहायक के प्रवचन सहायक प्रवचन मनाया, जिनमें विद्यार्थियों की सहायक का दिवस मनाया।

जिला सर्वोदय मंडल, हाजीपुर की ओर से बाँदा गाँवों में विद्यार्थियों की सहायक-प्रवचन कार्य-प्रवचन में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया।

श्री गाँवों सहायक, चौरापुर मंडल (हाजीपुर) के कार्यक्रमों में ग्राम-स्वराज्य दिवस के अवसर पर ग्राम-कार्य-प्रवचन में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया।

गाँवों सहायक विधि, मेक की ओर से ग्राम-स्वराज्य-दिवस मनाया गया।

सर्वोदय सेवा संस्थान, बाँदा प्रवचन (जिला हाजीपुर) की ओर से ग्राम-स्वराज्य दिवस मनाया गया।

मोटी जिला सर्वोदय-मंडल, देवरी की ओर से १३ से २० मई तक ग्राम-स्वराज्य दिवस के कार्यक्रमों में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया।

गाँवों सहायक विधि, मन्तक (मन्तक) की ओर से गाँवों में ग्राम-स्वराज्य दिवस के कार्यक्रमों में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया।

सर्वोदय मंडल, जलोदी प्रवचन करने की ओर से हाजीपुर गाँव में १३ मई तक कार्यक्रम आयोजित हो रहे हैं।

मन्तक विधि, मन्तक (मन्तक) के सहायक प्रवचन में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया।

जिला सर्वोदय मंडल, हाजीपुर में ग्रामस्वराज्य दिवस की कार्य-प्रवचन में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया।

उपग्राम विधि में सहायक प्रवचन में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया।

सर्वोदय मंडल, मोटी (कैमूर) में गाँवों में गाँवों में ग्राम-स्वराज्य दिवस के कार्यक्रमों में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया।

सर्वोदय मंडल, हाजीपुर की ओर से गाँवों में ग्राम-स्वराज्य दिवस के कार्यक्रमों में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया।

(१) २० से ३० मई तक ग्राम-स्वराज्य दिवस में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया।

(२) सर्वोदय मंडल, हाजीपुर की ओर से गाँवों में ग्राम-स्वराज्य दिवस के कार्यक्रमों में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया।

गाँवों सहायक विधि, मन्तक में ग्राम-स्वराज्य दिवस की आवश्यकता में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया।

उपग्राम विधि, मन्तक में ग्राम-स्वराज्य दिवस के कार्यक्रमों में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया।

नगर में सर्वोदय कार्य-प्रवचन की विधि तथा सत्रों में शामिल किया।

गाँवों सहायक विधि, मन्तक में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया।

उपग्राम विधि, मन्तक में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया।

गाँवों सहायक विधि, मन्तक में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया।

सर्वोदय मंडल, हाजीपुर की ओर से गाँवों में ग्राम-स्वराज्य दिवस के कार्यक्रमों में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया।

उपग्राम विधि, मन्तक में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया।

गाँवों सहायक विधि, मन्तक में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया।

उपग्राम विधि, मन्तक में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया।

गाँवों सहायक विधि, मन्तक में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया।

उपग्राम विधि, मन्तक में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया।

गाँवों सहायक विधि, मन्तक में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया। प्रवचन-कार्य में शामिल किया।

ग्राम-स्वराज्य के लिए स्वामी रामानंद तीर्थ का शुभ संकल्प

हृदयराज साहो-समिति ने तत्कालमान में आयोजित रचनात्मक संस्थाओं एवं कार्यकर्ताओं को एक सभा में स्वामी रामानंद तीर्थों ने निम्न संकल्प घोषित किया :
"विद्यते चंद्र दिनों से मे अनेको दूरी दक्षिण प्रान्तात्मक कार्य में ही लगाने का विचार कर रहा था। आज के इत रात्रिमें तत्वाह और धाम-स्वराज्य सत्वाह के शुभ अवसर पर मेरे इस विचार को आह्वित और पर आनंद सामने रख रहा हूँ। इसी संबंध में मत फारवो वाह में मेने हयारे प्रचार मंत्री श्री जगदहलाल नेटूक को पर इतरा यह निन्ती की थी कि मैं इसके बाद किसी चुनाव में छोड़े न होये हुए पूरा समय रचनात्मक कार्य के लिए देना चाहता हूँ। मेरी इन भावनाओं को जहाँसे मान लिया हूँ। इसके बाद मे अपना पूरा समय भूदान, प्राधान्य, छात्री-प्राधोयोग आदि रचनात्मक कार्यों में दे लूंगा। मेरा विश्वास है कि आज की तरह आप सब बहनों का सहयोग मिलता रहेगा।"

—हृदयराज साहो-समिति के तमस केन्द्रों में धाम-स्वराज्य सत्वाह मनाया गया।
कानपुर। सेवा समिती, पंजाब से प्रत्यक्ष सहायता।
अनुदार। वटियावा, चंकिर, मंडिया, महेन्द्रगढ़ और रजपूतगढ़ जिले के विभिन्न केन्द्रों में धाम-स्वराज्य दिवस मनाया गया।

प्रामोदक प्राधम, मगसा बरगु (मेरठ) ने दोन के पर प्रामों में आधम के कार्यकर्ताओं में ९ से १३ अंग्रेज तक परवासा की।

सर्वोच्च गुणवत्ता आधम, "रामरत्न-नगर" बैरगनिया (मुजफ्फरपुर) में आधम के छह गाँवों में धामस्वराज्य दिवस मनाया।

म० प्र० ठाण्डुक हठकारी संघ के हारस श्री योधीराम ने बार जिले में बार गाँवों में परवासा द्वारा प्रचार-विषा।
बल्लभ-नारायणलाल केन्द्र, मगधबिहारे (पूर्व खामरेश); विहार छात्री प्राधोयोग सघ, कपिलेशवा (मुजफ्फरपुर); मारपीय धाम-समाज, बादनी चौक, बिस्ती, प्राधोय रिक्त-मंडल, देवागढ़ (उत्तरपुर); श्री नागा बाबा निर्वाण आधम, आमसक (कानपुर); विहार छात्री-प्राधोयोग संघ, सिधवाला (बरगना); स्वराज्य आधम, गहर मंडार, जनक मंड, कानपुर। इन सत्वाहों में भी अपने आठवाह के क्षेत्र में धामस्वराज्य-दिन मनाया।

प्रामदानी प्रामों का मेला
अंग्रेज के आधिरी सत्वाह में केरवडे में प्रामदानी गाँव के प्रामों का एक दिवस होगा। सिविर के अंत में एक सत्वाह की धाम-स्वराज्य के विचार प्रचार के लिए परवासा की जामेगी। परवासा की समाप्ति विजूर में होगी और वहीं प्रामों के मेले का आयोजन की जम-प्रधानों करेगे।

—राजगिरी जिले की प्रामदान नव-निर्माण समिति की १९ मार्च को हुई सभा में तय हुआ कि पायल बट्टा, वाडावल, सोवलिने, दिवसे और केरवडे में प्रामदानी बना कर काम शिवा जाय।

सर्व सेवा संघ के नये अध्यक्ष : श्री नवकृष्ण चौबरी

म० म० सर्व सेवा संघ का वार्षिक अधिवेशन १३ मार्च से १७ मार्च तक प्रदेय के सर्वोदयपुर (उदुपुर) में संजम हुआ। सदीय के प्रसिद्ध होकर श्री नवकृष्ण चौबरी म. ना. सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष सर्वसम्मति में चुने गये।
संघ के मंत्री श्री पुष्पचंजन जी ने बगलौर-अधिवेशन के अब तक के कार्य का विवर प्रस्तुत किया। मुष्ठी निर्माण बहुरा इतर विधेके अधिवेशन की कार्यवाही पूरी मंत्री को स्वीकृत की गयी।

सफाई-दिवस का समापन

छम्पकन में मधर पर १ अंग्रेज से सफाई-दिवस का आयोजन आनुप्रत्यक्ष मानव श्रम में किया गया। इसका समापन १३ अंग्रेज को श्री बल्लभनारायण द्वारा हुआ। इस दिवस में विभिन्न प्रदेयों के ५१ सिविर(विधे) में मान लिया। सिविर की स्वीकृत श्री इच्छासक पाए न दिया।

नई तालीम समिती

२०-२८ मार्च को छात्री-प्राधोयोग विद्यालय, डिगलखुर (धामधाम) में नई तालीम पर देविनार सर्व सेवा संघ के उद्-मंभी श्री राजगुण्ड श्री अम्यदास म सम्मन हुआ। इसमें प्रारंभ एवं देय के अनेक विचारविर्से में मान लिया। इस देविनार में जाल में नई तालीम की विधि एवं बर्णन में विज्ञान की दृष्टि से के नई तालीम के कार्यकण पर विचार किया गया।

पिप्यौरागढ़ (प्रत्मोड़ा)

जिला सर्वोदय-मंडल के अध्यक्ष श्री बडीरस सतक ब बघी, श्री विद्यानंद बार्वाँ ने २० मार्च से २५ मार्च तक पर-मासा की, शिस में प्राधान्य, धाम-स्वराज्य व धाम की पुस्तकें वरिष को बनाने के मुक विचार विचारों के छात्रों पर ले। सभी गाँवों में विचार समवासा बघे, लोगों ने उडे आगम्य रहिद रीषारवा किया; लगभग १०० पाष दह पाषा में रले गये।

छात्री-प्राधोयोग प्रदानी का उद्घाटन

सर्वोच्च-सम्पन्न के मधर पर छात्री-प्राधोयोग आधम द्वारा आयोजित छात्री-प्राधोयोग प्रदानी का उद्घाटन १३ अंग्रेज को श्री बल्लभनारायण द्वारा हुआ।

हंबौर में विद्यार्थियों के सहस्रभयन सिविर

गांधी-अभ्ययन एवं तत्काल केन्द्र, हंबौर के तत्काल-अधम में १५ मार्च १९११ से इच्छरगिरिदत्त तथा गौड मेरुदत्त हठ के विद्यार्थियों के लिए दल-सह दिवसीय की विधिों का आयोजन विद्यार्थी आधम, गौडला, हंबौर में करने का तय किया गया है। इसके अतिरिक्त छात्राओं के भी दल दिवसीय एक सिविर का आयोजन करनुप्रायाम में करने का निश्चय किया गया है। इसके अतिरिक्त में तीस सिविर-विधिों को प्रवेद्य दिया जा सकेगा।
इन विधिों में मान लेने के इच्छुक मर्द-बहिनो से निवेदन है कि वे अपने आवेदन-पत्र पूरी जानकारी के साथ २० अंग्रेज तक भी भेजे-उत्काम, सर्वोच्च, गांधी अभ्ययन एवं तत्काल-केन्द्र ११२, सोदल्लारगंज, हंबौर शहर के प्ले पर भेजने की व्यवस्था करें।

इस अंक में

प्रेम और कल्याण के मार्ग में मानवता बनेची	१	विशेष
अंगुलिमास शत्रु का हृदय-परिवर्तन	२	प्रामजी प्रसाद
सर्वोदय-मंडल का छात्रवृत्ति	२	विश्व मधवती
सत्वाहों का काम मुक हो	३	विशेष
दुखरा रासना हुई है	३	काना कालेठकर
म० प्र० मूदान-मंडोत्सव के दस वर्ष	४	कनिष्कल अमरवी
नवाचार का रहस्य	५	राधा शूट
कार्यकर्ताओं का मन हो	५	लज्जोदेव, राजगिरी-विद्यार्थी
विश्वोत्सव-मंडल के	६	मुकुण्ठ देवदास
धमल में आकर दूख मरो।	७	कीष्कण्दत कट्टे
म० प्र० एक छात्री-धाम	७	सतीशचंद्र दुवे
धमल की दापरी	८	मुक्तालय
गांधी में सिविर और सम्पन्न	८	—
वाराणसी में श्रीवोन्दीय-विद्यालय	९	—
अधिवान-मोक्षी	९	—
विहार की विच्छेदी	१०	—
"धाम-स्वराज्य दिवस" का आयोजन	११	—
समाचार-सूचनाएँ	१२	—

भूदान-यज्ञ

संस्मरण-समिति का मासिक अंक

इस अंक में

भूदान, शांति-सेना और लोकनीति	१
श्री नवहृदय चौधरी का परिचय	२
सत्यमेव जयते	३
अभिव्यक्ति में राष्ट्रीय प्रस्ताव	५
संजयजी का आचार-व्यवहार पर ध्यान	७
संस्कृति का आलोचना	८
संविधानों की शांति-सेना	९
जयप्रकाश नारायण	९
एकमात्र समाधान	१०
राजनीति और लोकनीति	१५
बिजोला-माधो-वट से	१६
नवाचार-नवाज	१९-२०

वारपत्नी : शुक्रवार संपादक : सिद्धराज बड़वा वर्ष ७ : अंक ३०-३१

भूदान, शांति-सेना और लोकनीति अगले वर्ष के लिए त्रिविध कार्यक्रम

सम्मेलन के अवसर पर सर्व सेवा संघ का निवेदन

सर्व सेवा संघ का अभिव्यक्ति इस बार धाम्य की उस भूमि पर हो रहा है, जहाँ दस साल पहले भूदान-यज्ञ का आरम्भ हुआ था।

भूदान-यज्ञ के अर्थ में देश में अधिसूक्त जाति का एक नया पहलू प्रकट हुआ। गांधीजी की मूल्य की बाद जब देश में निराशा छापी हुई थी, भूदान-यज्ञ ने समोदय की दिशा में एक निश्चित रुतम उठाया और और अपने आन्दोलनों तथा रचनात्मक कार्यों को द्वारा देश में एक लोकप्रतिष्ठ जन्म की थी। स्वराज्य के बाद भूदान ने आर्थिक समता का तथा हिंसक शांति की विरोधी और स्वयंसेवक से निरपेक्ष लोकशासन के निर्माण का रास्ता खोल दिया है।

अधिसूक्त जाति का आर्थिक परिवर्तन का अग्रणी पहलू

स्पष्ट ही भूदान-आन्दोलन को उतनी सफलता नहीं मिली, जितनी अपेक्षा थी। बाँझ भूमि से देसों को पाँच करोड़ एकड़ भूमि प्राप्त करने का पाँच लाख गाँवों के ग्रामदान का जो लक्ष्य था, वह अब तक पूरा नहीं हो सका है। फिर भी इस काम में जितनी शक्ति लगी, उससे हिंसा से जन-सहयोग काफी मिला। दुनिया के इतिहास में अधिसूक्त जाति इतने बड़े आर्थिक परिवर्तन का यह एक अग्रणी उदाहरण है।

सेविन भूदान-ग्रामदान आन्दोलन की सफलता उसके प्रत्यक्ष परिणाम में उतनी नहीं है, जितनी कि लोकशासन पर पड़े, उसके प्रभाव में है। इस आन्दोलन में लोकशासन के लिए अधिसूक्त जाति के नये भावों को बढ़ावा है और इसने कारण केन्द्रित स्वशासन से विकेंद्रित ग्राम-स्वशासन तक जाने की भूमिका बनी है। ग्रामदान के कारण देश में मातृकी और भित्तिगत की बुनियादें बरतने की हवा बनी है और लोक-स्वामित्व के लिये अनुकूलता पैदा हुई है।

किन्तु आर्थिक क्षेत्र में मूल्य-परिवर्तन को दृष्टिकोण की प्राप्ति के लिये पर्याप्त नहीं है। देश में प्रचलित जातिवाद, सम्प्रदायवाद और आराधनात्मक लोक-स्वशासन के निर्माण में बाधक है। सेवाग्राम-सम्मेलन के बाद इस वर्ष देश में कुछ अत्यन्त जोषनीय घटनाएँ घटी हैं, जिनसे राष्ट्र-राज्य साक्षात् दोहा पायेंगे। आत्मिक के दम में प्रायःवाद का और अंध-धर्म आदि स्वभावों में सम्प्रदायवाद का जो

वीर्य प्रदर्शन हुआ वह किसी भी न्यायिक के लिये चिन्तकत्व है। ये घटनाएँ सुचित नहीं हैं कि वहिंसक समाज-रचना से हम सभी बचने में दूर हैं। किन्तु परिस्थिति को कठिनाई जन्मित के लिए प्रेरक होने की चाहिरे। इस प्रकार की घटनाओं का उपाय व्यापक शोध-विद्यया में, पारंपरिक विवेक और शौर्य दृष्टि में और त्याग तथा बलिदान में है। शांति-सेना और

सर्वोदय-पथ आन्दोलन में इन गुणों की प्रबल बल के सम्माननीय हैं।

शांति की आकांक्षा

दुनिया में आज शांति की आकांक्षा नहीं है और उसके लिये प्रयत्न भी हो रहे हैं। इन लक्ष्यों में सत्कार के शांति-सैनियों का ध्यान सहज ही भारत की ओर आकर्षित हुआ है। जैसा यह है कि भारत को अहिंसात्मक प्रयोगों से विरत-शांति के विकास में और जनकी स्थापना में सहयोग मिलेगा। "एन. देविसिंह प्रखरसेनानल" ने अपने गांधीप्राय-अभिव्यक्ति में एक अन्तर्राष्ट्रीय शांति-सेना की अपेक्षा प्रकट की है, जिससे हमारी जिम्मे-दारी बड़ी है।

शम्भू-माटी में हाइड्रोजन का अस्त-सम्पन्न इस वर्ष की एक ऐतिहासिक और अग्रणी घटना है। हाइड्रोजन की समस्या को भूदान और सुनवन्ध की सामान्य समस्या मानना पौर अमान्य अन्वेषक है। उसका समाधान वैज्ञानिक साधनों से ही हो सकता है। जिन्हें हम समाजशास्त्री और बुद्ध मानने हैं, उन पर भी राष्ट्र-प्राणा और सम्मान का कैसा प्रभाव पड़ सकता है, इसका यह एक उल्लेख उदाहरण है। अंतराज्य और पण के प्रतिहार को एक उदात्त और अधिसूक्त जाति का तबेन हमें चम्पक के उदाहरण में निराला है।

आर्थिक और राजनीतिक निरेन्द्रिय शांति-स्थापना के इस कार्य के साथ ही हमारे धर्म में लोक-स्वशासन के लिए आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्र में विकेंद्रितरण के कार्यक्रम को उठा लेना जरूरी है। आर्थिक क्षेत्र में भूमि-दासि और भूमि-विजय के कार्यक्रम पर

- भूदान :**
- जहाँ भूदान-ग्रामिण का वितरण के कार्य-साथ व्यापक प्रयत्न।
 - वहले की रोज भूमि का वितरण पूरा करना।
- शांति-सेना :**
- शांति-सेना के लिये अरांभि और शिला का उदाहरण।
 - जातिवाद, सम्प्रदायवाद, भाषावाद आदि संकुचित भावनाओं का उखाड़ना।
 - नित्य कार्य के दौर पर सर्वोदय-पथ और भूदान-जाति के कार्यक्रमों के लिये लोगों को शांति, प्रेम और बराबरी का शिक्षण।
- लोकनीति :**
- सुयोगों में तबे लोगों द्वारा उम्मीदवार करने के कार्यक्रम का प्रचार।
 - पंचायतों राज के कार्यक्रमों में सक्रिय हिस्सा लेने के लिये व्यापक लोकनिष्ठा।
 - नये सोह के द्वारा आर्थिक निरेन्द्रिय।

श्री नवकृष्ण चौधरी : एक संक्षिप्त परिचय

लखनऊ

मन् १९५५ सितंबर के अंतिम सप्ताह में उड़ीशा में विनोबाजी की पदयात्रा के अंतिम पड़ाव, बुजेंद्री में मैं उनसे मिलने गया था। मुझे कुजेंद्री जागे ही पकानट से बोझा सुतरा चहुं गया। कुजेंद्री भाष्य के एक वचनमें मैं में लेटा हुआ था। हाथ के करीब ६ वने का समय; धीधी भरती लख गयी। बाद में जब धीवें रूलीं तो देखा हूँ कि एक ओर स्त्रीगती मालतीदेवी चौधरी बैठी थी, दूसरी ओर एक राजन बैठे थे। उनकी उमरें पहले से देखा नहीं था। न ऊँचे, न गटे, न दुबले, न मोटे। न बोरे, न काले। साधारण कद, साधारण रूप, साधारण-सा व्यवहार, घोटी और कुर्ता पहने, ऐसक लगाने। ज्यों ही मेरी आँखें खुली तो भाबे पर हाथ रख कर पूछने लगे, "लखनऊ! अब कैसे हो?" उन शब्दों में कितना वास्तव्य भाव था, उनकी मेरी ओर लगी उस दृष्टि में कितना स्नेह, कितना प्रेम मरा था! मेरे भावें पर लगे उनके हाथ में विनोबी सेबा भरी थी! उनके शब्दों का वास्तव्य, उनकी दृष्टि का स्नेह, सेवा भरे उमरे के हार्मों का स्पष्ट जतने सुधार में भी खीलता का अनुभव करने लगा। उस समय मुझे क्या मान्य था कि एक मासकी विज्ञान जैसे रूपने वाले वे हार्मों किन हो गमते हैं। इतना ही मे अनुभव कर रहा था कि मानों मेरे पिताजी बाकर वहाँ बैठ गये। इतने में मालतीदेवी ने कहा—"लखनऊ जानते नहीं? ये 'बापों' हैं!"

'बापों' मैं प्रणाम करने उठने जा रहा था। लेकिन बापों ने उठने नहीं दिया। वो लेटे ही लेटे हाथ जोड़े। 'बापों!' यका नाम तो कासी सुना था, लेकिन उनका इरादा तो वही था सदा था। 'बापों'—दूसरी नाव से सब कार्यकर्ता उनकी सपनी बड़ा और स्नेह भरी मीठी धाराय में संकोषित करते हैं। वे तभी मीठी धाराय से धारा से मिलते। शावर देव-दो छेप्टे हुए होंगे। लेकिन जब उनको माध्यम हुआ कि मैं सुधार से लेता था तो वेकैनी का अनुभव काके का गये वे मेरे पास। तभी तो सब उनको 'बापों' कहते हैं।

एक धार फिर और और किया जाय। उत्साहन के साधन उत्पादक के हाथ में जाने से ही आर्थिक शक्ति का कारम्भ होता है। भूदान के कारण इस प्रकार की प्रत्यक्ष शक्ति का कार्यक्रम हमारे हाथ में आया है। इस मिलसिले में हाल ही विहार में 'योगे में कड़ा' भूमिदान का जो आन्दोलन शुरू हुआ है, वह विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उसके सफल होने पर विहार का सफल पूरा होगा और साथ ही सारे देश में आन्दोलन की शक्ति बढ़ेगी। इस आन्दोलन के कारण भूमिदाताओं को इस और अधिक करने का एक सीम्बल मार्ग हमें मिला है। देता भर में जहाँ भी सम्भव हो, वहाँ इस प्रकार के सौम्यतर मार्ग को उसाहपूर्वक अपनाता हूँ है। सेवाप्राम सम्बन्ध के वाद भूमि-वितरण के कार्यक्रम पर शक्ति लगायी थी। महापद्म राधोब-मण्डल ने अपने वहाँ वितरण-योग सारी भूमि का वितरण रूपके एक सुन्दर मनुना देना के सामने रखा है। इस साल वितरण के दोप काम को पूरा किया जाय।

सादी और रामोयोग के नये मोड़ के वाद प्राम-संबन्ध का जो मार्ग हमारे सामने आया है, उसने लोकशक्ति के निर्माण की एक नई दिशा प्रस्तुत की है। इस साल हमें अपनी शक्ति इस प्रायंजम को पूरा

करने में भी सपानी हैं। अहिंसक शक्ति की प्रथिया शिदागतक होती है। गिवा के द्वारा ही हम लोकमानस का विकास कर सपते हैं। आगामी भाव युवाय लोकशिक्षण का एक अवसर है। सब सेवा सप की नीति सतापावी राजनीति से सदा अलग रहने की है। परन्तु लोकशक्ति की अभिव्यक्ति के हर अवसर से वह लाभ उठाना चाहता है। इस वर्ष उसने चुनाव-सम्बन्धी अपने प्रस्ताव द्वारा उस पिता में एक ठोस कदम उठाया है। चुनाव के सिलसिले में व्यापक लोकशिक्षण द्वारा कुछ निश्चित ब्यवहार-मार्गों का प्रचार करना और जनता को अपने मतदाता-मण्डल द्वारा सम्बन्धित सदे करने को सिखा देना हुनाका कार्यक्रम रहेगा।

योग-विहीन और शासन-मुक्त समाज तक पहुँचने में अभी काफी मजिल तय करनी है। रास्ता आसान नहीं है, किन्तु आज भूदान, शक्ति-सेना और लोक-स्वराज्य का जो त्रिविध कार्यक्रम हमारे सामने है, उसके द्वारा हम इस दिशा में आगे बढ़ सकते हैं। सब सेवा सप राष्ट्र के सभी नागरिकों से यह अपील करता है कि जनशक्ति के निर्माण के इस महान् यत्न में वे अपना योगदान अवश्य दे और इस प्रकार गांधीजी की कल्पना के स्वराज्य को स्थापित करने में सहायक बनें।

उनके व्यक्तित्व परिवार और कार्यकर्ता-परिवार में कोई अंतर नहीं है। उनसे इस विरासत परिवार के सदस्य उन्हें 'बापों' कहते हैं। लेकिन बापों दुनिया उनको भी नवकृष्ण चौधरी के नाम से जानती है। जिस समय उनका दर्शन पहाली बार मुझे हुआ, इस समय वे जौहरा के सुपच मंत्री थे।

नवम्बर के निरंतरर सारे जीवन के बारे में जब एक बार मैंने उनसे कि किया तो वे खुद बोले कि यह भाषा जीवन हवे अपने पीछी वे निरंतरर में गिरा। नवम्बर के पिताजी भी गोखलानन्द चौधरी कटक के एक मसहूर, वकील थे। उनकी प्रथिया राणी थी और बकल्य में देवा भी बतल मिलता था। लेकिन बुद बतु सामान्य, धारा जीवन खिलते थे। वे यह मानते थे कि देवा और प्रथिया मित्रों की श्रम्य कर्ते न हो, लेकिन धारा और निरंतरर जीवन देता से ही श्रम्यन मार्ग का रद बनता है, मगर जब वैसे पिताजी अपनी पत्नी का भी कार्यक्रम करत विमाने के लिए प्रोत्साहन कर्ते न देते। गोखलानन्दजी के वार लमार्ते दुर्गः हो लगे और दो लच्छरिणों की श्रम्यन कर्ते न देते। नवम्बर के वड़े माई थे ही गोखलानन्द चौधरी। दोनों माई पर बदेय-पाल में ही अपने पिताजी की जीवन-दृष्टि का बड़ा प्रभाव रहा। सागी, निर अखल तथा मानवीय भावना, इन दोनों माईयों में कलने-बूझने में उनका देसर्त भाषा नहीं बाल सवा। शुरु कब पीकै से ही अपनी आभर-व्यवहारों की दृष्टि पर लेते थे।

जब नवम्बर १४ वर्ष के थे, तो उनके पिताजी का देहान्त हो गया। उस से नवम्बर के लिए उनके बड़े माई ही मार्गदर्शक रहे। गोखलानन्द जी के निरंतरर थे। उन दिनों एक मसहूर का रिचि भीमलेट होना की बात थी।

जब १९११ का अखरोब आन्दोलन चल से देस भर में गा भी प्रथी गयी। उस भव्य मन-शायरी विचार रखने वाले नवम्बर उनको प्रभावित हुए निरार रह सके थे। २० वर्ष के पिताजी नवम्बर ने अपने उड़े माई को लिखा कि वे पढ़ाई छोड देना चाहते हैं और राष्ट्रीय आन्दोलन में मूद पटना चाहते हैं। गोखलानन्द माई के दम निरार से मूद चुन लुए और उन्होंने लिखा कि मैं अपनी तीसरी छोटेनी की बात बोचते हूँ। उड़े माई ने अक्षिओं की नौकर छोडी और छोटे माई ने अक्षिओं का खुल छोड। राष्ट्रीय आन्दोलन में दोनों मूद गये। उनकी वे उरिय यथवत ने अपने मावी नेकअर्थी को पदचान लिया।

१९२०-२० में नवम्बर 'छात्र-निर्माण' रहे। टीक की शक्ति में

उनकी जीवन-दृष्टि निरार उठी। इतना ही नहीं, उनको जीवन-संगिनी भी मिली। वहाँ भीमती मालतीदेवी के परिचय हुआ। संगीत की शक्ति मूर्ति मालतीदेवी ने अपना संगीत आभार के लिए ही सीमित नहीं रखा। राष्ट्रीय जीवन के संगीत में जो आभरर है, उड़े इतल करे वा भार भी अपने ऊर के लिए।

नवम्बर ने दीप में राष्ट्रीय विचारों में विश्वास का भी काम किया, अपने गाँव में आरर देसी के भी प्रयोग किये। इतने में १९२० में पूरा को सुधार हुई। दोनों माई परिवार सहित वेक लगे। १९२३ में वेक से रिहा होने के बाद देस में उन विचार रखने वालों के संघर्ष में खो रहे। शक्ति-सेनाकटि पाटी की शायरी भी अपने संगीतों। निरार और उड़ीसा में जो विचारों के आन्दोलन कर्ते, उन सगरी मूर्तिपू और मालतीदेवी के नेकदुःखों में भाग्य निरार। १९२६ में नवम्बर राष्ट्रीय विचार समा के सारय भी चुने गये। [दिन पृष्ठ १० पृष्ठ]

भूदान क्या, सुकपार, २८ अप्रैल, ५ मई १९५१

मुद्रावसत्र

उगतुरु में दस दिन

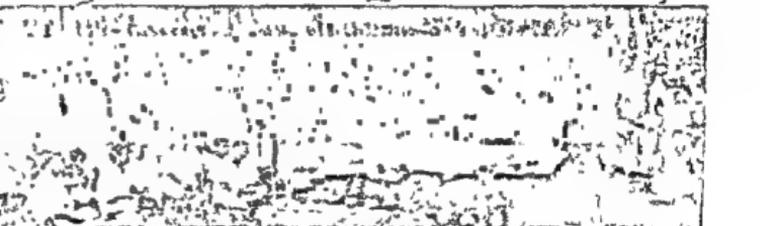
(संक्षिप्त घटना-चक्र)

आंध्र प्रदेश का एक छोटासा गाँव १० दिन के लिए सहासा एक नगर बन गया। हिन्दुस्तान के कोने-कोने से आकर हजारों आदमी वहाँ रहे। उनके रहने के लिए देखते-देखते पत्तूर की बलियों से लाये हुए "भवन" लगे दो गये। हजारों आदमी एकसाथ भोजन कर सकें, ऐसे भोजनालय बांधे हुए। टाकपर, तार पर, बैंक और अस्पताल भी खुल गये। खेलने वालों में भी एक खासी प्लेटफार्म बना कर "मयोंदयपुरम्" के नाम से एक स्टेजान खोल दिया, जहाँ सम्मेलन के दिनों में बाक, एक्सप्रेस आदि सब गाड़ियाँ टहरीं।

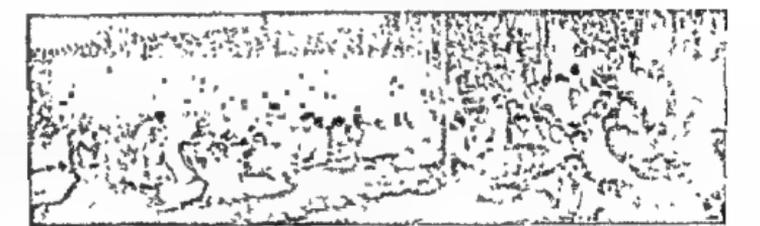
ता० १२ अप्रैल को सर्वोदयपुरम्, उगतुरु में मानो एक नया जीवन शुरु हो गया। तब सेना संप की प्रतीय-समिति भी वहाँ उस दिन वहाँ आरम्भ हुई। प्रतीय-समिति की बैठक में विचारणीय मुख्य विषय समाज-विक ही इस अवसर पर होने वाले संप-प्रतिवेदन और सम्मेलन के कार्यक्रम था।

शराब और कस्तन !

रमोदरनाथ ठाकुर ने बीजा ही, शराब का बन्दूक दोन भर काम करके थक जाता है। हीन्दुस्तान का मजदूर भी दोन भर काम करके थक जाता है। शराब से मजदूर यकान पीतान के लीने ११५ को शराब पीकर हो जाता है। हीन्दुस्तान के मजदूर रात को कौरतन करके हो जाता है। कौरतन से नाम शराब से थकान भीट जाती है। नींदुरा अच्छी जाती है। मरान के मजदूरों ने शराब का साधन बनाना, हीन्दुस्तान के मजदूरों ने कौरतन माना। वह करके रमोदरनाथ ठाकुर ने बुराया, जो शराब का बक दूर हो लखे में, अरन दोन का लख अर्थात् रात में। पर भीन दोनो रमोदरनाथ ठाकुर की कहती दुसरी बात अरन ही रही है। हीन्दुस्तान में नशाखोरी बह रही है। उभासा, लीने मरते अरन में बहुर समन बाता है। बहुर अरन ही रहा है मरते भीनों पर। लीन में जाने का अरन काम और कभी तरह के बीजाता अरन बुराया, मरते हाकन जात है। लख बीरात को देहाई में मजान मरुदु कोन ही करती है। शहर में ही रात के मरुदु के बस एक लीनवा हांग। बीनो का नाम नहीं। रात भनवाग में पीतन के लीने पीता है, कौनो शहर में रात को अर्थकार को भी आग लगाते हैं।



सम्मेलन के कुछ दृश्य



ता० १३ अप्रैल की रात को वहाँ बने सभ्य के साथ वन सेवा सप का अभियान आरम्भ हुआ। अथि सभ्य के लिए एक लाटा, पर सुविधि पूर्वक दग के समाज हुआ 'हाल' तैयार किया गया था, जिसकी सार के वहाँ की छत में वे कहीं-कहीं छन कर भूष आती थी। सप के अग्रज भी बलभ-रवानी के प्रारम्भिक निवेदन के बाद सप के लक्ष्यने पल्लो ही प्रियन नये अग्रज के अनुभव का अग्र्य। सप के नये विधान में सप लोचनेवाँ हाथ निड कर सर्वभूमि के अग्रज के जुने जाने का विषय है। पर दम सर्वगत नुमाय की पटती क्या है, प्रथमी कोर निरिचय परमथ अथि सप नहीं पती है। भी युरापर दे मरुदु ने नये बर के अग्रज में लिए भी नवहृण चौपरी पर नाम वेद निच, अग्रज के भी गोरजी ने उग्रवा समर्थन किया और फिर तो नवीन-हरन हर मत की ओर वे प्रतिनिधियों ने उठ कर प्रस्ताव का सर्वथ निच। इस प्रकार भी नवहृण चौपरी उनकी अग्रजिणी में ही सर्वसमाते के अग्रज जुन लिये गये। "नवहृण" अने

एक साथी के साथ हुई दुर्घटना के कारण सभ्य ने उस दिन नहीं पहुँच सके। वे दूसरे दिन शाम की सर्वोदयपुरम् पहुंचे। तब तक सप की बैठक ही अल्पजुन निरलेखन अग्रज, भी बलभरवानी ने की।

ता० १३ अप्रैल को दो और उल्लेखनीय बातें हुईं—पुरु सम्मेलन के अन्तर पर लखी की गयी विद्यालय लारी सम्मेलीग प्रसक्तो का उद्घाटन और दृश्य सार्व-धिरिष का समारो। प्रसक्तो का उद्घाटन भी सार्वधिरिष का समारोप सत्यसत्तमी ने। इर सात की तरह प्रसक्तो के मुख्य द्वार और सभ्य की उजावट भी अर्थक लेखन ने की थी। सभ्यीय भीनों के किन सभ्य सजवाव की बाय, इस काम में अनिल-मार्ग आदिरे हो गये हैं।

सर्वोदय-सम्मेलनों में जाने वाले जाने हैं कि हर सात सम्मेलन विधिर की सभ्यों का और उले सचक रकने का काम सभ्य-काम के अग्रज सभ्य की हासपता साह अने बिन्ने उदा लेते हैं। इर सात सम्मेलन के तीन-चार हजे पकते हैं

सम्मेलन आई सम्मेलन-सत्य पर पहुँच जाते हैं, विधिर प्रसक्तो के कुछ सभ्यिकों की इच्छा कर लेते हैं, दलभरव दोन सभ्य उले सभ्य-नाम की ताजीन देते हैं, साथ साथ सम्मेलन-सत्य पर सभ्यों की बलभरव पती करते हैं और फिर सभ्यिकों की पर उकमी सम्मेलन के दिनों में सम्मेलन-सात की सभ्यों का काम अनेने विन्ने ले लेती है। इर उग्रार हर सात जुन मये और कुछ जुने स्वचरेक सभ्य-नाम के बावसार होते जाते हैं। इर सात सभ्य-धिरिष ता० २ अप्रैल को छुप दुभा था और ता० १३ अप्रैल की रात को उग्रवा समारोप हुआ। इर अधिक विधिर में नवीन पयाल सभ्यिक सामिठ हुए ये, और आने वाले प्रतिनिधियों की सभ्यता के सच-अभियान और सम्मेलन के दम दिनों में इर दुधरी ने सर्वोदयपुरम् की सभ्यों का साथ काम सभ्यार।

× × ×
अगले तीन दिन यानी ता० १४-१५-१६ अप्रैल का सुलग आदरन सभ्य सेवा सप का अभियान था। हिन्दुस्तान के कौन २१० दिनों में से २२० दिने से सर्व

सोनादुर, १३-४-१९ — बीनोका
विधि-सहित । १०:११:१
स=अ, संयुक्तपर बसंत निवह से।

वेना संघ के लिए प्रतिनिधि निर्वाचित हुए थे। पर सर्व विचार संघ के विधान के अनुसार इन निर्वाचित प्रतिनिधियों के अलावा हरक्रे लोचनसिंह संघ की बैठक में पूरे सदस्य की हस्तियों से भाग ले सकता है। इस वार संघ-अधिवेशन में देश के विभिन्न हिस्सों से करीब ५०० लोग उपस्थित हुए थे। हर दिन प्रतिनिधियों की संख्या बढ़ती ही गयी। संघ के अधिवेशन में मुख्य विषय निम्नलिखित दस पर्यं के काम का शिष्टाचार और अगले साल का कार्यक्रम निर्धारित करने का था। निम्नलिखित माह गोलकान्त, आगमन के विनोदा की उत्तरिणी में सर्व सेवा संघ की प्रथम-समिति की भी बैठक हुई, उसमें विनोदा ने अगले साल कार्यक्रम के बारे में कुछ संकेत किये थे। सम्मेलन के लिए जैसे हुए संदेश में श्री विनोदा ने आधा प्रस्ताव भी की कि एक वार फिर भूदान का भी एक सर्वोद्यम-कार्यक्रम देव घर में बेल बाँटें और 'अन्नक जायंते'। निम्नलिखित आलाम और बजपुर में जो बर-भाई हुईं, उन्होंने खाति-सेना की अधिवास आवासगृहों की और भी दृष्ट कर के उनके ध्यान में लय दिया था। इसके अलावा जयप्रकाशजी के शब्दों में, यह भूदान का वर्ष होने से इस बारे में भी सब को अपनी नीति स्पष्ट करनी थी। इस नीति का उल्लेख भी प्रबंध-समिति के गोलकान्त की अपनी बैठक में किया था। पंचायती राज अर्थात् लोकतांत्रिक रिपब्लिकनरम का जो बड़ा प्रयोग देश में हुआ है, इस बारे में श्री घोषणा आचार्यजी का। इसके अधिवेशन में इन सब विषयों पर अच्छी चर्चा हुई। विभिन्न विषयों पर संघ ने जो प्रस्ताव स्वीकृत किये, वे तथा उन प्रस्तावों के आधार पर सम्मेलन के लिए बनाया गया निम्नलिखित अंक में अग्रज दिखें हैं।

विभाग के आग्र प्रवेश के मंत्री श्री रंगा रेड्डी तथा मंत्रीवर्ग, श्री एम. वें. के. भी सम्मेलन में उपस्थित थे। दोनों ही शक्तियों ने अपने माध्यम में इस बात पर जोर दिया कि पंचायती राज की योजना के पीछे यही आत्मसम्यक्तता का आदर्श है, जो सर्वोद्यम का है, हालाँकि उस आदर्श को लागू कर मूर्त रूप देने में आगमन शक्तियों रही होंगी। दोनों शक्तियों ने कुछ दिनों के वर्ष सेवा संघ और सर्वोद्यम-कार्य-कर्ताओं से सहयोग भी माँगा था।

सम्मेलन की पंजी ब्यूरो-ज्यो नजदीक आ रही थी, ली-जो सर्वोद्यमपुर में देश के कोने-कोने से आने वाले प्रतिनिधियों का ताला-नामना किया था। तां १७ को दिन भर, रात भर एक-दूसरों प्रतिनिधि सर्वोद्यमपुर में पहुँचते रहे। तां १७ की रात को दो-दो-दो बजे करीब निहार के करे जो प्रतिनिधि एकसाथ सर्वोद्यमपुर पहुँचे। तां १७ की राती रात सर्वोद्यमपुर में बहल-बहल की।

तां १८ को रोजा होने से पहले ही बैठकों की रूपरेखा में खाति-सेना-जी-प्रधान-नाति-सेना रेलों के लिए स्वागत-समिति के कार्य भंगन में इकट्ठे हुए। रेली का इष्टन बना प्रभावोत्पादक था। तीन-तीन की कलार में खाति-सेना बहन बड़ा प्रयाग-गीत गाते हुए निकले। खाति-सेनाओं ने सामूहिक धारणा की और मन-यग किया। फिर पर पीला कलार और बाजू पर पीली पट्टी बाँधे हुए खाति-सेनाओं का दल अग्रजोदय के प्रयाग में बरा मन्य माणस हो रहा था।

तां १८ अन्नक का दिन सर्वोद्यम-आन्दोलन के इतिहास में अमर रहेगा। इस वर्ष पहले ही दिन भूदान-आंदोलन

कर्ताओं के लिए मार्गदर्शन रहा। अग्रज के परिचय जैसे शिष्टाचार के नाम को भी शब्द (बाबा चर्माचि-कारि) ने बहुत ही आकर्षण और शान-मद बना दिया। अपने स्वयं विनोद-स्थित बन से दादा ने कहा : "मुझे जो काम सौंपा है, उसकी ज़रूरत मुझे थी, वे-पी० को नहीं। प्रयागजी को

तां १९ को दोनों सम-की कार्यवाही चलती रही। सर्व सेवा के मंत्री श्री पूर्णचन्द्र... विभाग का विचार प्रस्ताव निम्नलिखित था, उसके बाद परिचय-पत्रों के बाद, सेवा संघ में निम्न विषयों पर चर्चा की और जो निर्णय सर्व सेवा कर ने हैं, वे, उनमें से हरक्रे विषय पर लिखे



इस बात की शक्ति थी कि मेरा सम्मान है कि प्रचार करें। वे-पी० के 'परिचय' का मार मुझे और कर उन्होंने मेरा गौरव किया। 'दूरी की किरणों की तरह विभिन्न दूरों वाले वे-पी० के स्वतंत्रता का चिक चरते हुए दादा ने कलकत्ता कि वे-पी० के जीवन की उजाली दिव्यज्ञान में समा-याद की गतिविधि के परिवर्तन का इतिहास है। उन्होंने कहा :

"वे-पी० का सर्वोद्यम-संघ में पदा-व्यय हमारे देश और संसार के इतिहास में एक अनोखी घटना है। वे हमारे देश में समाजवाद के सम्पूर्ण रहे हैं। पर वेनासिंह समाज-वाद को उजाले भारतीय रूप दिया। उन्होंने कहा कि कल्प में तत्प्राचार की प्रेरणा भीतिक शक्तियों से यही हो सकती है। तबसे समाजवाद की स्थापना के लिए ही भीतिक शक्तियों से किसी मूलमूल मानवीय प्रेरणा की ओर कदम बढ़ाना होगा। समाजवाद का यह आधुनिकतम स्वरूप उन्होंने सतार के सामने रखा।"

तां १९ को सर्वे सम्मेलन शुरू होने से पहले एक छोटा-सा, पर मंगल कार्यक्रम सम्मेलन-पदांत में हुआ। वहा का कस्तूर-भोजनाओं के भावों में चल रहे खातिसेना विद्यालय के प्रथम वार का वीक्षान्त समारोह। इसपर चिक और इस अवसर पर किये गये आभारवाचनों के प्राणन का सर-अनवर दिया गया है। सम्मेलन की कार्यवाही के अन्तर्गत तां १९ की दूसरी उजलेश्वरीय घटना थी गिरदाज दंडवा की अग्रज्युक्त में हुई अन्नक भारत कर्मांड-मन्त्र की धार्मिक बैठक थी। इस बैठक में अन्नक मातल सार्व-मंडल का कार्यक्रम बतलन किया गया। श्री अण्णालास पर्यवर्ती अग्रज्यु और श्री बुक्कान साह मंत्री नियुक्त किये गये।

वक्तव्यों में प्रकाश डाल बोधनाम-दान के सदस्य श्री श्रीमान्नायक भी आग्रम के राग्यगाल, श्री श्रीमान्नायक ने भी सम्मेलन में प्रतिनिधि प्रेषित की सम्मोचन किया।

तां २० अन्नक को सरे सम्म-की अन्तिम बैठक थी। इसमें राधिका श्री राजेश बाबू भी उपस्थित रहे। श्री मन्नायक रेड्डी ने आग निवेदन देना कि जाने के बाद भी संसारवासी का एक नारागतित भागण उस विषय पर हुआ आग्र प्रवेश के नीतयान हुमान श्री सर्वोद्यम ने अपनी भावनाओं को कायम-वैद्युत से श्रोताओं को सुन-व दिया। वैद्युत भाषा नहीं समझते, उन्होंने भी उस भागण का पूरा सह-हारा। श्री राजेश बाबू ने अपने भाषण के दौरे में यह घोषणा की कि वे बद गतिने बन अपने पर से मुक्त होने वाले हैं। इसके उपरिष्ठ माणक में प्रयोजन बैठक के भाषणपूर्ण मनन के साथ देखते हीले सम्मेलन की कार्यवाही समाप्त होगी।

तां २० की शाम को एक विश्व-बनसमूह के धारने पहुँचते का शारंग-भाषण हुआ। उन्नत-छोटा-बन-लेकेन आसपस के गाँवों से हजारों के पहुँचते की तुलने के लिए इन्होंने थे। पचास-सत्तर हजार की-सुबहों के स-समूह को करीब आधा बत तक पहुँचने सम्मोचन किया।

तां २० की शाम से ही सर्वोद्यम-शाही होगा शुरू हुआ, पर ले-सालों की अग्र-वर्तिता और अण्णाल-से आते समय दोनों की कारी शुरू हुआ। तां २० अन्नक की शाम को सर्वोद्यम-से उत्तरी और दक्षिण दोनों ओर के समान-रेखानों तक आगर एक-एक कर-गारी छोड़ दी गयी होती तो इस पर आगे हुए क्षेत्रों-वस्तुओं प्रतिनिधि-उस रोज को परेकानी हुई, पर यह है तां २१ की शाम को एक नए ले



सम्मेलन में

तां १७ की मुख्य घटना आग्र प्रदेश का पंचायती राज सम्मेलन था। आग्र प्रदेश सर्वोद्यम-मंडल ने पंचायती राज के सम्बन्धित सरकारी, शैल-सरकारी प्रमुख शक्तियों का यह प्रादेशिक सम्मेलन तां १७-१८ अप्रैल को सर्वोद्यमपुर में आयोजित किया था। श्रीमन् प्रवेश सर्वोद्यम-अग्रज के यह मुक्त बहुत शक्तिविक और उपजुक्त रही। इस सम्मेलन की अध्यक्षता श्री जयप्रकाशजी ने की और संघविधि

का श्रीगणेश हुआ था। इस वर्ष बाद आग्र प्रदेश के एक गाँव में फिर सर्वोद्यम-सम्मेलन आग्र शुरू हो रहा था। सम्मेलन के अन्त्य भी जयप्रकाशजी ने। उन्होंने अपना विरलन माण्य सम्मेलन में पदा। सर्वोद्यम-सम्मेलन में माण्य पदवी भी बीषा था, जब कि अण्णालीय माण्य में देश-विदेश की घटनाओं पर सर्वोद्यम की प्रति से प्रकाश डाल गया था। श्री जय-प्रकाश बाजू का माण्य सर्वोद्यम कार्य-

सर्व सेवा संघ के अंगूठरू अधिवेशन में स्वीकृत प्रस्ताव

[१]

आगामी चुनाव और संघ की नीति

सर्व सेवा संघ की यह मान्यता है कि बहुसंख्य समाज की रचना राजनैतिक शक्ति यानी शासन के जरिये नहीं, बल्कि लोगों के अपने-अधिकार और उनकी संपत्ति और स्वाधीनता के आधार पर ही हो सकती है। अतः सर्व सेवा संघ ने अपनी यह नीति विचार की है कि वह सत्ता-आधिकार की राजनीति में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष किसी प्रकार का हिस्सा नहीं लेगा। मूदान-वायव्यान आंदोलन के विच्छेद वर्षों के अनुभव में राजनीति के स्थान पर लोकनीति की प्रतिष्ठा को इस विचार को और भी मजबूत किया है। सर्वोदय के लिए एक-सकल धार्मिकताओं अथवा लोकोत्सेवकों के लिए यह जरूरी माना गया है कि वे सत्ता की राजनीति और दलगत चरानवों से अलग रहें, क्योंकि किसी एक पक्ष का सहाय्य बन जाने पर या चुनाव में स्वयं लड़ने होने या किसी दूसरे का समर्थन और प्रचार करने से लोकसंघ के सब लोगों का सहयोग और विश्वास ह्रासित कर सबने की तथा उनका हृदय-मर्मिकर्तन कर सबने की पाठता को बना है।

हरद है कि सर्वोदय और लोकनीति के विचार को न्यायक मान्यता मिलने पर प्रशासन, चुनाव आदि की पद्धति आज के संघ को नहीं रहेगी। पर ऐसा नहीं होता जब एक लोकसंघ की रक्षा के लिए, और उसे सही दिशा में ले जाने की दृष्टि से, उन चीजों में परिवर्तन आवश्यक है, ऐसा पिछले वर्षों के हमारे अनुभव से साबित होता है। जहाँ तक प्रशासन का संबंध है, उसके विदेशीकरण को आवश्यकता की ओर मुक्त का ध्यान पड़ा है। यद्यपि पंचासी राज की भी मजबूत योजना में अभी भी कुछ सुनिवार्य परिवर्तन आवश्यक है, किन्तु अभी यह सुझावों को मान है कि आम लोग लोकतांत्रिक व्यवस्था में आम से सघं इसकी कोशिश हो रही है।

लोगों का आग्रह अधिकतर और उनकी शक्ति को अतोमलता से व्यक्त या अभिव्यक्त है। ऐतिहासिक पार्ष्णियों का भी सारण आज बन गया है और विचार प्रसार से आम जनता काग होता है, उस के अंतर्गत लोगों की निज की शक्ति प्राप्त होने में सहाय्य आ गयी है। चुनावों में प्रशासन का अभिचार ही लोगों को प्राप्त है, ऐतिहासिक स्वतंत्र अभिचार समाप्त हो गया है।

आम चुनाव अभिचार है। सर्व सेवा संघ की धार में हर वह सारण आ गया है, कि आम चुनाव की पद्धति के बारे में हमें बेचारी महसूस है जो योजना आदि बनाते लोकसंघ को पालाय में लोकनिष्ठ करने के लिए उसमें आवश्यक सुधार करने चाहिए। इस विच्छेद में संघ के चुनाव नीति लिखे अनुसार है :-

(१) आम चुनावों में राजनैतिक पार्ष्णियों को अपने-अपने अभिचार रखे करनी है। लोगों का आम उन्मीद-परायणों में ही किसी को बोट देने का बहाना है। मसदान के पहले या बाद न कस-के सहाय्य में लोगों का प्रत्यक्ष कोई हिस्सा नहीं होता। लोकसंघ को बल और सविन्य बनाने के लिए यह आवश्यक है कि उन्मीदकारी का चयन लोग स्वयं करें। मसदान केन्द्रों (बुध) के छोड़े छोड़े मामलों में मसदानों के मसदानों (वीरवर्षों को बल) के जरिये हर काम ही करता है। चुनाव के बाद मसदानों और प्रवर्धनियों में शक्ति संघर्ष भी इन मसदान-अर्थव्यवस्था के जरिये बाल्य रखे का सारा है। आगे बढ़ने वाले आम चुनावों के अक्षर पर बल-बल मसदान-मसल बन कर बनकर

स्वयं लकित हो इस विचार का स्वरूप प्रचार करना चाहिए। यह कोशिश भी करनी चाहिए कि सामनैतिक पार्ष्णियों स्वयं इस विचार को मान्य करें।

(२) सब

सक सम्बन्धीक पार्ष्णियों इस विचार को मान्य न करें, उस तक भी वे लक मिल कर कुछ ऐसी अभिचार मसदानों के बारे में एक मस ही सज्जी है, मिलने आने के चुनाव में होनेवाली शक्ति की सुधारों, संघर्षों तथा व्यापक रूप का साराण बन कर ले। उदाहरण के लिए पार्टी बननी और के अलग-अलग काम आगेवित्तन न करने एक ही सब से लक पार्ष्णियों का उन्मीदकारी अपनी-अपनी बात मसदानों के सामने रखें। चुनाव प्रचार में व्यक्तिगत आरोप-अपवादों न ही। उनमें विचारविर्षी तथा नामावित्तों का जनसंघ न हो। चुनावों में बल स्वयं ही। प्रचार के तरीके सज्ज-एक सुझाव ही आदि।

(३) पंचायती राज की योजना के अन्तर्गत पंचायत अभिचारों तथा विषय परिवर्तन आदि संघर्षों की रही है। उनमें तथा वास्तविकता आदि सारण संस्थाओं के चुनाव में संघर्षों (कन्टेस्ट) को बल-बल और चुनाव आद्य सज्जति से करने की कोशिश की जाए। पंचायती राज की वा नगरी की लोक-संस्थाओं का अभिचार का काम जन-सदस्या का और स्वस्थीय व्यवस्था का होता है। ऐसे मामलों में विभिन्न

विचार धारणों की दृष्टि से कोई अधिक मतभेद लोगों की सुधारण नहीं है। अतः बल-बल इन सलाहों के चुनावों में राजनैतिक पार्ष्णियों न रहे।

(४) इस सारण चुनाव में लोकनीति का सारण दालित जनते के स्वरूप प्रचार के साथ साथ कुछ ऐसे क्षेत्रों में बर्तों बल-बल तथा लोगों की मजबूती अनुकूल से बर्तों बल-बल आम चुनावों के सारण उन्मीदकारी का चयन मसदान सारण करें और चुनाव उपर्यं तथा उपर्यं लक-बल की कोशिश करें।

सर्वोदय-सम्मेलन के पूर्व ता. २३ से २७ अप्रैल तक प्र. ० भा. ० सर्व सेवा संघ का अधिवेशन हुआ। अधिवेशन में जो पंच प्रस्ताव स्वीकृत हुए हैं, वे यहाँ विवेक रखे हैं।

राजि और उतका अपना अभिचार प्रसट हो तथा जीवन की आवश्यकताओं की व्यवस्था स्वयं करके वह स्वाधीन तथा स्वावलम्बी बन सके।

धर्म-ऐतिसास-सक की ऐतिसास-ऐतिसास द्वारा अधिचार-अधिकार विच्छेदों की ऐतिसास स्वयं सज्जति, और उतके के सज्जति को वे ही काम करे जायें, किन्तु ऐतिसास द्वारा के लिए सज्जति-सज्जति न हो अथवा सज्जति-सज्जति की दृष्टि से किन्तु बने देन की द्वारा के लिए आवश्यक माना जाय। सज्जति इस प्रकार की किन्तु सज्जति सारण या सज्जति के साथ के लक विच्छेद सारणीय काम सारण आदि सज्जति की सज्जति के सुधर कर दिखे जायें वे सज्जति नहीं होगा। ऐसे कामों के लिए सज्जति से ही सारण-सज्जति के विचार के आधार पर लोक-सज्जति को नई व्यवस्था के लिए बनाया तथा उसे सज्जति पंचायत करवा देना है।

चर उतक जनता की निज की शक्ति प्राप्त नहीं होती, उस तक इस प्रकार के

(५) जहाँ तक मसदान के अधिचार के प्रयोग की बात है ऐसी आद्य और सज्जति है कि हर मासिक अपने स्वतंत्र विके को काम में लेना। सामाजिक की सज्जति, आदि, पंच, संस्था, माया आदि की संघर्षों भागना है प्रभावित होकर अपने बोट या लक का उपयोग नहीं करेगा।

सुधारों से सम्बन्धित इन सारे काम में लोकसंघ की सुविधा मजबूत लोक-सज्जति की होनी चाहिए। लोकसंघ सत्ताकांशी नहीं हो सकता। लोकसंघ बल-बल-मसल को सज्जति कर प्रचार को कर सकता है, लेकिन वह न किसी चुनाव में स्वयं लक होगा, और न किसी भी उन्मीदकारी के समर्थन या सारण में कोई प्रचार करेगा। लोगों को सुधर की शक्ति मिल प्रसार प्रसट हो और उतका सज्जति उपयोग हो ही, यह लोकसंघ की सारणता के लिए आवश्यक है और उस सारण सज्जति को प्रसट करना तथा उसे सही दिशा में लेना यह हर नामाजिक का सज्जति है।

[२]

पंचायती राज की योजना

सर्व सेवा संघ की योजना सारण द्वारा सारण की जा रही है, जिसके अन्तर्गत गांव से लोकसंघ जिले के सारण उतक पंचायत, पंचायत-समिति तथा जिला-परिषद का गठन होकर सज्जति विकसित सज्जति, और एक हक तक प्रशासन के अधिचार दिवें जाये की बात है। इस प्रकार सारण द्वारा प्रशासन के विकेन्द्रीकरण का कार्यक्रम सारण में विच्छेद पड़ा है। सर्वोदय की दृष्टि से जो सज्जति-सज्जति हम चाहते हैं वह भी आदि, सामाजिक और राजनैतिक विकेन्द्रीकरण की ही है। अतः यह है कि गांव-गांव में जनता की अपनी आवश्यकताओं की व्यवस्था स्वयं करके वह स्वाधीन तथा स्वावलम्बी बन सके।

धर्म-ऐतिसास-सक की ऐतिसास-ऐतिसास द्वारा अधिचार-अधिकार विच्छेदों की ऐतिसास स्वयं सज्जति, और उतके के सज्जति को वे ही काम करे जायें, किन्तु ऐतिसास द्वारा के लिए सज्जति-सज्जति न हो अथवा सज्जति-सज्जति की दृष्टि से किन्तु बने देन की द्वारा के लिए आवश्यक माना जाय। सज्जति इस प्रकार की किन्तु सज्जति सारण या सज्जति के साथ के लक विच्छेद सारणीय काम सारण आदि सज्जति की सज्जति के सुधर कर दिखे जायें वे सज्जति नहीं होगा। ऐसे कामों के लिए सज्जति से ही सारण-सज्जति के विचार के आधार पर लोक-सज्जति को नई व्यवस्था के लिए बनाया तथा उसे सज्जति पंचायत करवा देना है।

चर उतक जनता की निज की शक्ति प्राप्त नहीं होती, उस तक इस प्रकार के

निर्णय करें। मानसम, प्राम-यन्त्रण, संभावना-समिति, विज्ञान-परिषद् आदि के निर्माण सर्व-सम्मति या सर्वोत्तम-विधि से होने चाहिए। यह भी जल्दी है कि आज का तीव्रराष्ट्री या दौंचा बदले। विभिन्न सर्वोपर सरकारी प्रयोगशालाओं की विद्युत् विनिर्माण का अतिरिक्त या हो इन पंचांगयती संस्थाओं के या विज्ञान-स्तर पर संगठित पञ्च सर्वान् श्रेय-आयोग की है।

पंचांगयती रात्र के हो कानूनन्य को सख्त करने के लिए यह जल्दी है कि पंचांगयती रात्र की संस्थाओं का निर्वाचन, मठन व कानून-संवादन आदि को दूरी लेते पर हृदीय राजनीति से बचाया जाय। सभी पक्षों को एनएम होकर पंचांगयती रात्र को सख्त बनाने में पूरा सहयोग देना चाहिए। यह भी समझ देना आवश्यक है कि आर्थिक विनिर्देशनारण के बिना केवल शकनैतिक विनिर्देशनारण मफल नहीं रह सकता। गौ-सहजान में परिवार की भावना बगाने और भावना रखने के लिए आर्थिक समता का साधनरण वेदा करना भी जरूरी है। इस दृष्टि से भूमि का सामोतरण एक आवश्यक कदम हो जाता है।

यह जगत शाक है कि पंचांगयती एव का प्रयोग आगर प्राय-दरराज की लड़ी प्रिया में नहीं भोगा गया तो देव की अणु का आस्था को-बलन्य पर से उद्व बाणी। आहिर है कि सर्वोपर-कार्यकर्ता इस सारे कार्यक्रम से उदासीन नहीं रह सकते। और इसलिए यह आवश्यक है कि इस प्रयोग की सर्वोदासीनी को ध्यान में रखते हुए प्राय-दरराज्य के अपने विचार की बनना तक पहुँचाने और उर संकीर्ण कार्यक्रम की अधिक प्रति देने का एरा हल प्रयत्न करें, ताकि गौ-गौष की बनना प्राय-दरराज्य की शक्यता के लिए समर्थ और योग्य हो सके।

लोक-विद्युत् के इस सुनिवार्य कार्यक्रम में न सिर्फ लोगों का, बल्कि पुर कार्य-कर्ताओं का, पंचों, सर्वोपर आदि का तथा सम्बन्धित प्राय-वस्तु कार्य-कारिणी का विद्युत् भी शामिल है। प्रबंध-समिति इस धार में आवश्यक कार्यवाही करे।

नहीं है। बहिर, आधुनिक विद्युत्-राज की दृष्टि से पूर्ण व्यक्तित्व तथा सर्व-अनुशासन के विनाष्ट में इन प्रकार की वैदिक पद्धति बाधक हो है।

सर्वोपेय संघ योजना के इस अंग को रातनाक मानना है तथा इसका विशेष गवाह है। संघ यह भी अद्वय-भर रहता है कि आज विद्युत्-प्रकार हर देश में विज्ञानों के प्रति भी साधु-प्रिया का रहर है यह एक ऐसी चीज है, जो आज तक दुनिया के दूसरे किसी देश में नहीं हुई है और इसके री-नुगम युवाओं पर जो व्यापक होगा, यह समाज के लिए विचित्र रूप

वे शक्तिराज है। रात्र की योजना उच्च विद्युत् शक्ति-विज्ञान-प्रयोग में प्रयोग देने की एक योजना के रूप में अनिवार्य भी जाय, उनमें सर्वोपेय संघ ही नहीं मानना, बहिर इस प्रकार की चीजें आज के एरांगी विद्युत् की बनी मनु है। यह पूरे होती है, ऐसा उलटा मानना है। पर आगे आकर हर योजना को अनुकूल उद्यम के तथाम्य स्वचालकों के लिए अनिवार्य बनाने की जो बहना व्यक्त की गयी है, तथा वैदिक शास्त्रीय का जो इसमें समावेश किया गया है, उर पर से इस राष्ट्रीय वेद्य में 'अनिवार्य वैदिक' भी पूर्णवर्धनी का

उत्तरांतर विकास होता रहे। आवश्यक है कि उत्तरी भागना लक्ष्यपूर्णा भी विकसित तत्पर परिवार लक्ष्य। इसके लिए सर्वोपेय संघ आवश्यक बन जाता है कि इसके निमित्त एक लक्ष्य लेकर एक सारत लक्ष्य के अन्त-अन्त प्रार के विनियम-नियम संघार करने अर्थ-सर्व-समाधि विज्ञानालय, अथवाकी विविध, विज्ञान-मोडी, पदचाना आदि विविध सारत का उपयोग करने के देर पर में लक्ष्य-सम्पन्न को प्राप्त, निमित्त-प्रयत्न को बढाने हुए कार्यकर्ता विनियम-विज्ञान विज्ञान में से प्रार लेते।

अगले सात के लिए प्रार, लोक-मोडि तथा शास्त्रीयता का जो विज्ञान कार्यक्रम उजाय गया है उन युद्ध से यह बहुत जरूरी है कि प्राय-दरराज में सारे कार्यकर्ताओं को एक सारत-समिति विज्ञान-क्रम के अन्तर्गत एक कार्यक्रम के अन्तर्गत तत्पर परिचित कराया जाय। इस की प्रबंध समिति इस देश-समिति कार्यक्रम के लिये 'समुचित कार्य' करे।

[५]

नया मोड़: ग्रामस्वराज्य

आहो गौर रचनात्मक कार्य-अहिसक समाज-रचना की एक गत्यात्मक शक्ति देने और लोगों-गाँवों के लोग अपनी जिम्मेदारी, अपनी मेरवा और अपनी निष्कल-त्मक शक्ति के आधार पर गाँव के स्वयं, शिक्षण और योग्य की जिम्मेदारी उठा लें; साथ ही अपने को एक बड़े समाज और बड़े परिवार के एक मान कर एक सख्त-मातृशिक्षण नामे जागरूक होकर गाँव, समाज और देश में मानवता के लिए नये संदेश-बाहक बन-यह गाँवों का स्वप्न था।

इस सख्त को मूर्त रूप देने के लिए उन्होंने १९४५ में चरला-संघ के सर्व-संस्करण के रूप में सारे रचनात्मक कार्य की नया स्वल्प देवी की बहना देय के सामने रखी। उस बहना को नया जीवन देने के लिए पिछले २० वर्षों से दृष्ट्य विनोदनी शतत प्रयत्न कर रहे हैं। उस प्रयास के फलस्वरूप आज हम भी इस निष्कर्ष पर पहुँच रहे हैं कि सारे रचनात्मक कार्य को नया रूप दिया जाय। चाही-संगीत, सेवा-संग, एका-संग में हम लोग एक ही नैतिक-प्रियम तथा इसके विभिन्न पद्धतियों पर चर्चा करते आये हैं। और अन्त में कीर्त-केन्द्र में हमने निष्कर्ष किया कि खरी तथा रचनात्मक कार्य को नया मोड़ देना, बहिर और सारे काम को मान-दुर्द्धर के रूप में परिणत करना चाहिए। हमें हमन पर यह विश्वास है कि रात्री-आयोग-समिति और सारे देश-समिति के लिए कार्य को मान्य कि रहे। उर सारत खरी-मान-योग आयोग ने भी इस कार्यक्रम की

सूदान का मंत्र लेकर फिर से भारत में अलख जगाइये!

भूदान के दस साल समाप्त हुए। दस वर्षों में सामाजिक कार्य में फिर-फिर से नवीन उत्साह का संचार होता है, यह बात समाज-शास्त्रज्ञ जानते हैं। भूमि-समस्या के परिहार के लिये भूदान के सिवाय कोई रास्ता नहीं रहा है, इतना अब साबित हो चुका है। ऐसी हालात में जहाँ से भूदान-यंगण का जनम हुआ उस आग्ध्र प्रदेश में धन दूसरी मतवा सर्वोदय-सम्मेलन हो रहा है। मैं आशा करता हूँ कि सर्वोदय के सब कार्यकर्ता भूदान का मन्त्र लेकर फिर से नये उत्साह से सारे भारत में अलख जगायेंगे। इससे दूसरा कोई सबेडा में क्या वे सकता है। वास्तव में मेरी पदयात्रा ही सर्वोत्तम सत्येश है।

दीनदत्त शर्मा
जय गणेश

[२]

अनिवार्य राष्ट्रीय सेवा

भारत सरकार की ओर से विश्वार्याओं के लिए अनिवार्य 'राष्ट्रीय सेवा' की एक योजना सोनी जा रही है, जिसके अनुसार उच्च माध्यमिक या इन्टरमीडिएट की परीक्षा पास करने वाले हुए शिक्षार्थियों के लिए कम-से-कम नौ महीने की 'राष्ट्रीय सेवा' अनिवार्य होगी। इस 'राष्ट्रीय सेवा' के दो मुख्य अंग माने गये हैं: एक सैनिक प्रशिक्षण, और दूसरा कम-से-कम चार-पण्टा प्रतिदिन किसी-न-किसी ग्राम-विकास के काम में धारी-श्रम।

सर्वोत्तम इस राष्ट्रीय सेवा का उद्देश्य देश के नौबतवी को वेदनी जीवन से परिचित कराने, उनमें शरीर-श्रम के नामों के प्रति अदर और बलि देना करने, सेवा की भावना भरने तथा अनुशासित जीवन के संस्कार-शक्यता है, यह योजना स्वयं-योग्य है। परन्तु, सेवा संघ की राय में इस योजना में वैदिक शास्त्रीय, हथियार-संस्कार तथा हथियारों के उपयोग के शिक्षण आदि का जो अंश शामिल किया गया है, यह नौबतवी में सेवा या अनुशासन की भावना पैदा करने के लिए बर्तव्य जल्दी

आभाव होता है। सर्वोपेय संघ किसी भी प्रकार की अनिवार्य सेवा का, तत्पर अनिवार्य वैदिक सेवा का, समर्थन नहीं कर सकता। इस प्रकार की किसी अनिवार्य योजना को वह व्यक्ति-सत्तात्म्य के सुनिवार्य के लिए मानता है।

कार्यकर्ता-प्रशिक्षण

सर्वोपेय-विचार को व्यापकता तथा गहराई बढ़ाने के साथ-साथ काम के स्वरूप को भी विस्तार देना है। इस बहली हुई जिम्मेदारी को दब-सानी निभा सकेंगे, जब कि हमारे लोकतन्त्र, शास्त्री-सैनिक तथा जलप-जलयु फर्मों में काम हुए सारे सर्वोदय-कार्यकर्ताओं को वैचारिक-सुनिष्क, वैदिक गहराई तथा कार्य-सतता में

हमारे संगठन का आधार क्या हो ? सजा, कानून या प्रेम ?

हम वर्ग-मनोवृत्ति से दूर रहें

वाद धर्माधिकारी

[11-0-19 अग्रिम को संबोधित] मैं सर्व सेवा सच की सेवा में सच के विधान पर बहुत हूँ। सच का जो नया विधान बना है, उसके अन्त में कुछ कठिनायें हैं। लोकतंत्र का हीन बन सकता है ? लोकतंत्र का अर्थ निष्ठाओं का मानन व करे तो क्या हो ? सर्वतन्त्रिता है। नियम हैं कारण कर्मो-कर्मों काय में रचनाएँ जाती हैं, जसका परिहार क्या हो ?—इसपरि जन विचारार्थीय है। मूल में सच के जाने हुए खतरों के भाषणों से देना लगता था कि हम पुराने इन के सङ्गनों की भाषा में ही सोच रहे हैं। कुछ भाषणों में कार्यकर्ताओं के परस्पर संबन्धों की रचनाएँ भी रचनाएँ ही हैं। एक आदर्श में तो कहा कि 'सुधार' 'कोषधना' आदि हई हैं और इसपरि में सङ्गन में अग्रिम पर आइए हैं । उनको दृष्टि के आदर्श बहु सुतरों की 'कोषधना' का अर्थ था ।

* 'आदर्श' में सर्व सेवा सच के सङ्गनों को याद दिलाया कि सर्व सेवा सच का सङ्गन व तो कोई भी लोकात्मक है, न केवल वैचारिक संस्था है। सर्व सेवा सच जिस उद्देश्य को लेकर बना है, उसे ध्यान में रखते हुए इस सच का एकमात्र आधार परस्पर विश्वास और स्नेह ही हो सकता है। —[11-0]

आज समाजपरि महोदय से मैंने अपनी ओर से बरखाएँ की कि मैं कुछ सोचना चाहता हूँ। मैं लोक-सेवक की नहीं हूँ, शास्त्र-सेवक भी नहीं हूँ, सर्व सेवा सच का परस्पर भी नहीं हूँ। लेकिन जब मैं यह वदल चुन रहा था तो मेरा हृदय मर्यादा स्थिति हो रहा था। इतने बड़े सुध-अर्थन के बाद क्या इसमें से बावणी और विष ही निकलेगा ?

सुनिश्चिता सच है कि सर्व सेवा सच का सहाय क्या है ? उसके पीछे "सर्वकार" क्या है ? सामान्य तौर पर ही तरह के सहाय होते हैं : एक सजा और दूसरा कर्म। दूसरा कानून और विधान का। मेरा अपना यह धारणा पहले से रहा है कि सर्व सेवा सच इन दोनों में से कहीं भी नहीं बैठ सकता और उसे बैठना भी नहीं चाहिए। वह चीनी संस्था नहीं है, न केवल वैचारिक संस्था ही। काम की सहायता के लिए कुछ नियमों की जरूरत होती है, लेकिन उसका अर्थ प्रशासन नहीं है। जगत अस्तित्व-संस्था की कार्यवाही को देखते हैं वहाँ पर हम लोगों को सोचना पड़े, जो हमको यह भी सोच लेना चाहिए कि यह संगठन विकसित वाला नहीं है। यादवस्थायी का अर्थव्यवस्था ही गया है, ऐसा मानना होगा।



सर्वोदय-सम्मेलन के लिए शुभकामना

मैं आशा करता था कि आग्र प्रदेस में होने वाले सर्वोदय-सम्मेलन में मैं उपस्थित हो सकूँगा, पर मुझे शंका है कि मैं वहाँ नहीं जा सकूँगा।

सर्वोदय के नाम पर कहीं जाने वाली कुछ बातों से मैं हमेशा सहमत नहीं हो सका हूँ, लेकिन मैंने सदा जनकी सहाय माना है। वे उस स्थिति का प्रतिनिधित्व करती हैं, जिनसे मुझे कई कारणों में आकर्षित किया है, हालाँकि हमारे बहुत से कामों का उससे मेल नहीं बैठता रहा है। मेरा खयाल है कि सर्वोदय का यह वदल ध्यान देना लायक है। हमारे विचार और हमारे कामों में उससे मेल मिलेगा। भारत में हम कई बड़े-बड़े और उलझे हुए मतलबों का सामना करना पड़ता है। और इन मतलों को सही तरह की कमीतियों पर कठना सहायनी है। सच तोर ये, यह साधारण है कि हम उन सुविधाओं मूल्या को नजर-अन्दाज न करे, जिनका प्रतिनिधित्व सर्वोदय करता नजर आता है।

मैं सर्वोदय-सम्मेलन के लिए अपनी शुभकामनाएँ भेजता हूँ।

नई दिल्ली
१५ अप्रैल, १९६१

—जवाहरलाल नेहरू



मूल चीज है सच करने की। मैं अपना ही उदाहरण देता हूँ। मैं बहुत अन्त में सच करने वाला हूँ कि मैं कभी भी सच नहीं जानता हूँ, चोरी से चीज भ्रम कर दूँ, यह प्रलय जन है। लोकप्रिय पर भी नहीं देखे गए हैं। मैं एक साधारण नागरिक हूँ और आपसे चर्चा में बैठ कर बात करना चाहता हूँ। तो क्या मेरे लिए भी कोई सच है ? मैं ग आर सच करने कि सच तक नूँ इसकी तरह सही से नहीं जानता, इसपर कोई नहीं जानता। क्या मेरी जवाहरलाल की वदल है कि सच तक नूँ अन्त में और नूँ

दार पत्राचार नववा है और कोषधनायन से रचना है, नूँ ये वारि नही हो सकना। क्या मेरी कोषधना आदर्श को बढ़ते हैं कि मेरी विचारों जन तक नूँ नहीं होती है, उन तक नूँ कुछ नहीं लगता। येन अन्त होता है, वह तो यह आन्दोलन देशपरि सच और विश्वास स्थितो का आन्दोलन बन जाएगा।

सच है, तो ईश्वर क्या है ?

मेरे मित्रों, यह केवल आन्दोलनों का आन्दोलन नहीं है। कार्यकर्ताओं और नागरिकों का अन्त की भी काम होगा

चाहिए। इसलिए जो आर्मी मेहनत के प्रतीक जीते हैं, उनके वरगों में मेरा प्रसन्न है। मैं उनका दमन करता हूँ। लेकिन वे मुझे क्या मानते हैं ? मैं उनकी सहाय में आता हूँ कि नहीं ? हाँ, यह सही सच की सत्यता की बात है। अगर आपने परिवार में सही शास्त्रिक होगा जो परिवार होगा, अपनी आन्दोलन सन्तान आन्दोलन में मिल जाएगा, तो उसके साथ भी अरुण सहाय नहीं होगा, इसका क्या मतलब है ?

तो सबसे पहली चीज यह होगी चाहिए कि आप स्थान करते हैं और मैं भीग करता हूँ तो भी मेरे भीग से आपको कभी ईश्वर नहीं हो। आपने (यास) नहीं किया ? जिसमें क्या का आर्थिक स्थान करने के लिए ? आपने अपनी नहीं ? अगर विचारों की लिए सुधार सच नहीं करता है तो उसकी ईश्वर क्यों ? हमारे मन से सर्व-मनोवृत्ति गयी नहीं है।

तो हमारे संगठन का आधार स्नेह होता चाहिए। अपने सच को मैंने बदलना होगा, और अपने पहली सच यह होगी कि नहीं सच और सचिका का अन्त है, वहाँ सुदूर के उत्तर में मुझे आन्दोलन होगा। मेरा खयाल है, तो विश्व की आन्दोलन वाला है।

एक विशाल स्थान करता है, वह आन्दोलन का जन सच है, और हककी भंग के शोके हैं वने हुए पड़े मिल रहे हैं और आन्दोलनो प्रकट के बने हुए भी वे नहीं हैं, उन्हें शेष कर उसके मुँह में पानी का रहा है, जसकी जोड़ें मुँह हो रही हैं। तो सच इतने से विकास होगा ? इसमें से कितन फोड़विला का विकास हो सकता है ? कोष-विचरता यह, है जो विचरता है, हमारे के अन्त में हृदय होती है।

मेरा मेरा मुझे प्यार जानें, मेरा मैंने मुझे प्यार आर्थी करने प्यार रहा है, मेरी मुझे प्यार की सहायों हैं, तो मुझे मरना आता है। पर हमारा कार्य-कर्ता मेरा है कि दृष्टव्यक उनका 'कलक साठ'—मनोवृत्ति—आयी भी नहीं है। ऐसा

मान्यता ही है, और अपने हारे काम को काम-इश्वरों के रूप में सोचने का निश्चय देता है। रचनात्मक संस्थाओं में यह सम-धारी है कि अगर रचनात्मक कार्यों को एक परिष्कारणी सामाजिक रचना भी सचि में परिष्कृत करा है, तो परिष्कार उपाय यही है कि जिनकी गौरी के लोच हुए काम की अन्तना काम बनने पर उठा से और सचि सच अर्थी सचलन से अपने को आनाय करने और सचलन से अपने को लिए लालों सुनारी में और आमनाथिकों में एक अर्थी आना था, उठी तरह गौरी की रचि, गौरी के शोचन और लयायी हूँ को करने में और सचि सचि में प्रारम्भवाय रचि सचि करने के लिए जन-जन का उत्साह है।

सादी आन्दोलन कर्मोसून तथा सचि ऐसा सच की प्रथम-सचि में मेरे सोच की आन्दोलन का रूप देने के लिए वरि देस में ई अप्रैल, १९६१ को 'ग्राम-सचलन दिवस' के रूप में मनाने जाने का आश्वासन किया था और उसके लिए एक रचनात्मक यही गौरी के शोचों द्वारा इतरने जाने के लिए सचि रचि था। यह सुधी की सचि है कि एक आशावाक का इतरने के लिये सचि और देस में सचल-सचल ग्राम-सचलन दिवस तथा सचल-सचलना गया।

सादी-कर्मोसून की योजना है कि वीसरी पत्राचार योजना के दीपन में की देस में ही जन जन सचल-सचल के ही सचलना की सचि सचि ग्रामोद्योग-पयान समान-सचलना को सही कर देने का पूरा प्रयास हो। सादी और रचनात्मक काम में सचि सचि सचल-सचल से यह काम करेगी ही, भूदान तथा अन्य सर्वोदय-काम में सचि सचल-सचल का भी यह कर्तव्य है कि वे सचि सचि के अन्तर्गत इस महान-प्रयोग को सचल-सचलने में सचि सचल-सचल है, सचि भूदान-सचल-सचल कोषोद्योग-पयान में सचि सचल-सचल का साकार रूप मिल सके।

हो जो जिस संगठन या आभार स्नेह होना चाहिये वहाँ आने की अपेक्षा वहाँ 'कथय भारत' में आभार पर ही प्रति होने वाली है, ऐसी व्यवस्था चाहिये, उनका अनुयायी बन जाना चाहिये। कम-से-कम मुझे तो ऐसी परिस्थिति में उनका अनुयायी बनने में विस्तृत श्राव्य नहीं होगी। आप जय गण्डर्भ के साथ होचिये। इस योग्य कर आभार लेगेंगे कि श्रद्धों में मेरी यह दरखास्त है। वरना आप विधान में विनया भी पत्र करेंगे, कुछ नहीं होगा।

द्वाराय की गरी के उन्मीलवार

मैंने कई बार कहा है कि दरारय के गरी के उन्मीलवार निम्न दो थे—कैनेपी और मंगल। राम, लक्ष्मण, माय और शत्रुघ्न में से कोई नहीं। यह मर्यादा है। हमने राजनीति और लोकनीति में यह अन्तर किया है। राजनीति है कैनेपी और मंगल, राजनीति है राम, मरुत। यह इन्हें सत्ता की बात। इसी तरह से जहाँ संघर्ष का प्रश्न है, वहाँ हमारा रुत यह होता चाहिये कि दूसरे को जो मिला है उसके मुझे कम मिले तो कोई हर्ष नहीं। दूसरों को अगर मुझे ज्यादा मिला है, तो मुझे कोई शिकायत नहीं होनी चाहिये।

आज इस बीच को आभार लेगेंगे कि माधव रत्न देवा मैंने बहुत बारी मंगा, वरना जो कैनेपी के लोग, उनके मुझाओं से कुछ नहीं होने वाला है। आज तक दुनिया में देवा कोई मरुत नहीं बना है, जो नाकाफी सन्निह न हुआ हो। उससे अलगा दूरतर कोई आभार भंग्य शोच रहे हैं, तो यह निम्नता का ही ही सकता है। उसे आप कीर्तिमिता या पारिवारिकता यह लैजिये। कीर्तिमिता में 'श्रीमन्मन्त्र-सहोदर-जी' है ही शिवादी तो ही ही नहीं सकृती, लेकिन सरस्वती शान यह है कि दूसरे के मुझ में मुझे दुपुना हल होता है। दूसरे के ऊपर जो श्रेय कर, उसकी दास्यता की देल कर इसे सुखी होती है, मैं हासिल होता हूँ। यह श्रद्धा के कार्यकर्ताओं के मानव की मूल्य शोच होनी चाहिये।

हमें अपने मन की बरतने की जरूरत है। मन को बदलना ही हमने कालि का आभार माना है, पर किन्तु मन बदलने में उसे तुलसीदासजी ने किया था वैसे हम अपना मन साफ करने। तुलसीदासजी ने 'शुद्ध-वचन' से अपना 'भक्त्युद्ध' साफ किया था, हमारे जो साथी हैं उनके घरवाँ को जय से हमारे मन का आश्रय साफ हो सकता है।

● सर्वदेव शंभु के विधान में संतोषजनक काम एक कामेटी के विधुर् कर दिया जाय यह मुझका आशा था। —



मुझे श्रवण बात की सुची है कि मेरे आज सम्मेलन के प्रतिम दिन भी बिचोला पहुँच सका। मेरी यहाँ आने की अनिच्छा नहीं थी, लेकिन इच्छा होते हुए प्रकर की गतिमादर्शा थी।

यहाँ आकर मेरे आप सब पर कोई एहसान नहीं करता; लेकिन इसलिए मैं ही कि आपसे फिर से परिचय हो और उससे मैं लाभान्वित होऊँ। ऐसे सामने आकर मुझे पुरानी बातें याद आ जाती हैं, यह समय और वे दिन मन की आँसू से सामने आ जाते हैं, जिनको पूज्य महात्माजी के समय हम देला करते थे। उस वकान देल के सामने मन्त्रिकलें बहुत ही मगरसो भी हम एक मत एक राय होकर नुद निरद के साथ बढते थे। महात्माजी के नेतृत्व, और उससे भी बढकर उनकी उपपत्ता से हमें विद्वाराय था; और इसलिए उस रास्ते पर चलने में हम नहीं हिलचलते थे; क्योंकि हम जानते थे कि कोई मूल नहीं होगी और होगी भी तो महात्माजी उसे सफ़ा लेंगे।

विक्टोरिया का ही प्रश्न लीजिये। इसमें हमको पढ़ी कटिनाई देलने में मर्गि है। जहाँ एक तरह हम चाहते हैं कि विक्टोरियाको, वहाँ दूसरी तरह हम यह भी देल रहे हैं कि केन्द्रीकरण वसे ओरों से बढता जा रहा है। राजनीति को ही लीजिये। इसमें कोई शक नहीं है कि आज देरा में इस प्रकार की सत्ता बल रही है जो लोगों के मत से अपनी जगह पर पहुँचायी गयी है। पर इसमें भी मैं यह देलता हूँ कि जहाँ-जहाँ इस बात की मर्गिता पलती रहती है कि यह सत्ता केवल व्यक्ति के अधिकार में आ जाय। मेरा इसमें कोई व्यक्ति-विरोध पर श्राव्य नहीं है। मैं इस बीच जो देल रहा हूँ कि आप जनता पर विचारण कम होकर व्यक्ति पर विश्वास बढा रहा है। महात्मा गांधी के दिनों में भी यह बात थी। मगर उस समय हमारा यह विश्वास था कि ये सत्य और बहिस्ता से हट कर कुछ नहीं करेगे और इस कारण किसी को हानि नहीं पहुँचा सकेंगे। आज भी अगर इस तरह के व्यक्ति केन्द्र में हों, जिनमें सत्य और बहिस्ता बूट-बूट कर गयी हो तो कोई मर्ष की बात नहीं है।

चंद महीनों में फुरसत मिलेगी

सम्मेलन में राजेन्द्रप्रसाद का संकेत

“... अभी हाल में सन्त विनोदा बिहार ने गये थे। वहाँ कई सभाओं में उन्होंने बेरा लिफ किया। जो कुछ उन्होंने सुना है, वह सही है। हो सकता है कि चंद महीनों के बाद मुझे फुरसत हो जाय। और ऐसा होने पर—हालाँकि अब मेरी वह शक्ति तो नहीं रही कि आप लोगों के साथ बौद्ध-धूप कर सकूँ, लेकिन एक जगह बैठ कर कुछ कर सकूँगा। विनोदाबाजी का मार्गदर्शन और आप लोगों का सहयोग मिलता रहा तो काम बढता जायगा।”

आज श्राव्य और हिंसा से बचने का रास्ता यह है कि जो चुनते हैं, वे चुने हुए लोगों को फाड़ते रहें; उनका इतनी आग्रह होनी चाहिये। आज सभी जनता पर, कपिल के लोगों के बीच में ही, व्यापक ही जगहों के पदों के लिए तनाव और झगडे जारी हैं! जो कामसे के बाहर हैं, उन लोगों के साथ हो ही है।

जब तक सत्ता हासिल करने की इच्छा है काम होना रहेगा, हम अपना काम नहीं कर सकेंगे। कहने के लिए तो हम सब सत्ता इतनी लिए चाहते हैं कि हम सेवा कर सकें। मगर यह बात सच है, तो कोई इर की बात नहीं है। और बढका कंसला तो हरेक आदमी स्वयं ही कर सकता है कि क्या वह सचमुच सेवा

के लिए सत्ता चाहता है या सत्ता। निरु सेवा करता है? जबतक इस बात की है कि सेवा को आप, लेकिन सत्ता के लिए नहीं; सत्ता भी ही साथ, लेकिन सेवा करने के लिए।

दूसरी बीच मर्गि पैदा करने की है श्रुति है। उसमें भी हम विक्टोरिया चाहते हैं। मगर उसमें भी हम देखते हैं कि कुछ

कुछ केन्द्रीकरण होना आ रहा है और केन्द्रीकरण एक प्रकार के अनिर्णय-कालीनिक है। व्यक्ति इस विषय पर पैदा कुछ चाहते हैं यह उचित ही देला है कि कोई बरग के मना वह काम नहीं हो सक और यदि हम अपने सामने उन आदर्शों को रखेंगे जो उन लोगों के हैं, किन्हीं ए पहले पर पल कर काम किया है, तो ए लिए भी बहुत एका नहीं रह जायगा।

मैं मुझ पर यह है कि मर्ष अग्रिय का कारण मनुष्य के हृदय में है। यह एका कुछ-कुछ चाहता है। यह एक रूप का भी, श्राव्य को फाड़ में नहीं खपेगे न तब शक्ति नहीं हो सकेगी। किन्तु अभी मिलता है, उनका अनिक होना इतना बरा इच्छिये इस छोटे से समय आभार है, और यह सभी हो सकता है, यह मुझ अपने हृदय की श्रिया को फाड़ करे। उनका के केन्द्रीकरण का शर मर्गि फायर यही है। यदि मनुष्य अपने मर्ग के शान्ति के इच्छापूर्वक काम कर सकता है तो वह अनिक हृदय हो सकता है। एक अर्थ यह नहीं है कि हम हमेशा मर्गि में ही रहें। यह तो एक मानविक इच्छा का बात है। उनको कुछ करना चाहिये जो मानविक इच्छा को फाड़ में कर देता है, उसके पास मर्ग के शान्त होते हैं भी यह उनका इच्छा नहीं बनता। और जिनके अन्तर्गत इस मानविक इच्छा की शक्ति नहीं किया उसके पास चाहे विनया इर हो, यह अभाव ही रहेगा, बात नहीं हो सकता। इसी मर्ग की श्रिया के कारण श्राव्य होती है, दो देरों के बीच, जो दो व्यक्ति के बीच का एकलिंग मर्ग ही परशुओं को उन्ना मना नहीं है, लेकिन मर्ग-श्रिया को फाड़ में रहना चाहिये। सर्वोपर का सर्वोपर काम यही होना चाहिये कि यह बात भावना को अपने और हट करे। (सर्वोपर, २०-५-६१)

सर्वे सेवा संप, राजपाठ, काशी 'भूदान' अंग्रेजी साप्ताहिक मूल्य: छह रुपये वार्षिक

सर्वोदय का संदेश आज की

तेरहवें दिवस



दस वर्षों के भूदान-आन्दोलन की उपलब्धियाँ उसकी सारी भूलों और अक्षमताओं के बावजूद निरसन्देह उन्मेषनीय हैं। सामाजिक जीवन के दायरे में उपरने अहिंसा की पद्धति की उपेक्षा है। यह ठीक है कि न तो दसके द्वारा एक ओर देश की भूमि-समस्या जैसा बड़ा प्रश्न हल हो पाया न उसकी तुलना में भूमिहीनो का छोटा मसला ही, पर भूदान ने भूमिहीनों के लिए जो कुछ भी किया और कोई न कर सके। इसी के एक अंग सामदान द्वारा, जिसकी हम भूदान हवीं पृथक् पृथक् का फल हैं, इसने यह स्पष्ट बनाया है कि किस प्रकार देश की विविध परिस्थितियों के संदर्भ में भूमि समस्या हल की जा सकती है।

गम्भीर क्षयपथन के बाद मैं इस निर्णय पर पहुँचता हूँ कि अब तक गाँव

परम्परा के अनुसार अखिल भारतीय सर्वोदय-सम्मेलन के अध्यक्ष से बहुत कुछ बदलने की ज़रूरत पड़ी रही जाती। इससे कुछ विशेष अध्ययनों में तो कोई प्रारम्भिक भाषण ही नहीं किया। अध्यक्ष कोई भी रहे, किन्तु अध्यक्ष सम्मेलन में मुख्य और मार्गदर्शक भाषण की जगह विनोबाजी से रहनी थी और वे उसकी पूर्ति भी करते थे। यही होना भी चाहिए था। उनका मार्गदर्शन न मिलना तो स्वराज्य के बाद भारत में सर्वोदय के लिए अपने आरको प्रति-बन्धन कल्पना असम्भव हो जाता। उस समय सर्वोदय लेडी के साथ सत्ता की राजनीति का विचलन भ्रमता बना आ रहा था और स्व-शासन कार्यक्रम सरकारी विचार-धीनताओं को बुरक के तौर पर रद्द गया था। विनोबाजी यदि उस समय सम्मेलन में आते और वहाँ कार्यक्रम, निर्माण-समिति और साम्प्रदायिक महारण्डों से विद्युत् उनके अद्भुत नेतृत्व का साम हूँ न मिला होता तो यह सब बिचार कि सर्वोदय का भी कोई एक स्वतंत्र और निर्माणकारी कार्यक्रम ही और कहलाता का अर्थ होता जो हाल देना मात्र नहीं, बल्कि नवतन्त्र और सामाजिक बरतने के लिये प्रेम की दायित्व का प्रत्यक्ष उपयोग करना है, अत्यन्त धैर्य और दूर के आदर्श साम बन कर रह जाते।

दुर्भाग्य से गत सम्मेलन में अपनी पश्चिमी के समय हम विनोबाजी का वैयक्तिक मार्गदर्शन नहीं प्राप्त कर पा रहे हैं। इसमें तक नहीं कि साम-वृद्ध कर हमसे दूर रह कर वे हमें स्वयं सोचने के लिए मजबूर कर रहे हैं। यह जिज्ञासक सच अच्छा ही है, क्योंकि नहीं तो उनके जैसे नेता के रहने पर सर्वोदय-विचारकी यह गंगा अतलतोपत्ता शासन की ही प्रभाव मात्र कर सकते बने सामाजिक की अंतर मधुमक्षि में लुप्त हो जाती।

स्ववस्था का मौजूदा तरीका अपने आप में ही अक्षमों एक ऐसी बात है कि जो गाँव में स्वयं-भेद, जाति-भेद, श्रेण्य और सुकृम्यराजी का तथा गाँव-समाज में सम्पत्ति, सुरक्षा व शिक्षा की दृष्टि से भारी विषमता का कारण है। बदरी हुई आधुनिकी के अत्युत्पन्न में देश में भूमिहीनो को दूँ कि वह स्व-व्यक्तिगत मुलाफे का जरिया नहीं रहनी चाहिए। उसको अब सामूहिक हित का साधन बनाना ही होगा, ताकि समस्या गाँव को भोग्य मिल सके। यह सामुदायिक स्वाभिव्य और स्ववस्था से ही सम्भव है। प्रामदान को बढ़ा देना यह है कि उसके द्वारा यह चीज अधिकांश माया में सम्पन्न हो सकी है। इस प्रकार कुछ प्रामदानी गाँवों में न केवल जीवन के भौतिक पहलू से, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक व नैतिक दृष्टि से भी बढ़ा उल्लेखनीय विकास हुआ है।

प्रामदान का कार्यक्रम एकदम रोचक रहता है और रहना चाहिए। ऐसे समय जब कि यह आन्दोलन अपने विस्तार पर था, यकाल में एक कान्फरेन्स हुई थी, जिसमें भारत के राष्ट्रीय, कमिश्न, राज्यपाल तथा प्रजासमाजवादी पार्टी के नेता, प्रामदान मन्त्री और केन्द्र के विशेष मन्त्री, कई शहरों के मुख्य मन्त्री, सर्व विनोबाजी तथा सर्व सेवा संघ के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। साधारण दूर प्रसार की कान्फरेन्स देश में अनेक तंग की यह पढ़ी हो थी। यह सुषुषी की बात हुई कि कान्फरेन्स प्रामदान के सम्बन्ध में एक सर्वमान्य नीति पर सम्मत हुई और कान्फरेन्स की ओर से एक वक्तव्य प्रकाशित किया गया, जिसमें प्रामदान की अर्थात् कथाय गया और देशवासियों का आश्वासन किया गया कि वे इस कार्य में श्रुत सहयोग दें, वक्तव्य में सामुदायिक विचार-धोना प्रामदान-आन्दोलन के बीच सहयोग की अपेक्षा पर भी जोर दिया गया।

अबे इसमें कोई शक नहीं है कि यदि उस वक्तव्य में प्रकट की यथो मायदानों के अनुसूचक काम हुआ होता और सब मिल कर प्रयत्न में लग पाते तो ५ हजार की मायाय देश में ५० हजार प्रामदान हुए होते, और तब बामो अबे हुए श्रुत निवृत्त हो ही उस प्रकल के साथ हो जाते।

पर उसकी उक्ति क्यों इस काम में नहीं लगे थी? साधारण उल्लेख कारण यह था कि उन्मेषक दूर और उनसे नेवाओं का दूर-परिवर्तन की दृष्टि में पक्का विश्वास नहीं था। स्वयं तो यह है कि देश

उन्मेषी अक्षर कहा भी है। उनका विचार तो दृग्गल कानून में है। यदि यह मायला खरी हो तो मैं उन्मेषक नेताओं को यह बताना चाहता हूँ, और सातकर बनने को कि जो अपने को सामाजिकी कहते हैं, कि प्रामदान ने समाजवाद के लिये राजमाजी कोल दिया है। देश के तीनों प्रमुख राजनैतिक दल-कौमिल, प्रजा-समाजवादी तथा कान्फरेन्स में समाजवाद के लिये काम करते के हाथी हैं। देश में कुछ और छोटे-छोटे समाजवादी गिरोह हैं, जो स्वके लिये काम करते हैं। उदात्त यह है कि हमारे कृषि-आन्देय के लिये समाज-वाद का अर्थ क्या है? जो कुछ थोड़ा-सा मुझे स्वयंवाद का शब्द है, उस में मुझे तो श्रेष्ठ एक ही उतर सूझता है। न तो जागीरदार उन्मेष, न भूमि की अधिकांशतः शीमा का निर्वाह और न वास्तुकारों की अपनी फालत की जमीन पर सुविध करना और न भूमि में वा एकीकरण और न लेती वा भोग्य, और न ही कोई यह वा बर, वा स्व मिल कर इस उरर की भूमि-सुधार की बातें, जिन्के लिये कानून बने हैं, अपना बनाने की चर्चा भी जाती है, उदात्तवाद है। इस देश में भूमि पर समाजवाद का केवल एक ही अर्थ है—भूमि का सामुदायिक स्वाभिव्य व स्ववस्था (इस स्ववस्था का मतलब सामूहिक लेती वे नहीं हैं, जो अन्वयाय ऐसी भी हो सकती हैं)। यदि कानून द्वारा ही हमें स्वयं तक पहुँचना है तो ऐसे उररक कानून बनने चाहिये कि जिन्के बरिये भूमि की अधिकांशता स्वव्यक्तिगत प्रामदान के नाम दस्ताविरत हो जाए।

श्रीमती
राजनी
सम
जन-आ
सर्वो
पंचायत
आम चुनाव
यौ
ग्रामीण
चीन और पा

स्थिति का सर्वोत्कृष्ट समाधान है

जयप्रकाशजी का भाषण

कायूट भी बनाया जा सकता है
 ऐसा कहा जा सकता है कि इस प्रकार
 का कायूट सम्भव नहीं है, क्योंकि इसका
 पापक नियोजन होगा। यह छोटी है पर मैं
 तब ऐसा कायूट बनाने जाने की बात नहीं
 करता। और बायो के अलावा यह केन्द्र-
 चीन भी नहीं होगा। फ्लोरोस्कोपी प्रक्रिया
 कायूट बनाने के पूर्व अनिवार्य वैचार करना

आवश्यक है। यह यह विद्वानों की चतुर-
 नैतिक प्रतिबन्धितता काय और संयुक्त रूप
 से वा अन्तः-अन्तः प्रकृति उत्पत्ति है, अन्तः
 व्यापक क्षेत्र विज्ञान का कार्य करना में जो
 बोधे ही समय में देव में देवे कायूट के
 जिनके भी प्रयोग पर अनुसूच कायूट बनाने
 किना जाना बहुत सुविधाजनक होगा। क्योंकि
 ऐसे सुविधानों की संख्या कि जिनके दिनों
 पर भूमि के प्रायोगिकता का प्रतिकूल आकर
 प्रयोग, बहुत छोटी ही रहने वाली है।
 अन्तः इसके प्रायोगिकता की जो हमारी
 बचतना है, उच्चतम मानव उन किनाओं की
 कल्पित वा सत्यितक रूप नहीं है। एक
 ही इस किनाओं को जो उपयोग प्राप्त की
 भूमि में वे हिलेवाया भूमि मिलेगी। बुरे,
 उस रूप भूमि का जो उनके दिग्दर्शक के अन्तः
 होगी, कायूट उनके जिन्हे कुछ बर्तों तक
 प्रायः-सम्बन्ध से लेनी ही उत्पन्न वे सुप्रारम्भ
 दिग्दर्शक की व्यवस्था करेगा। एकजिन्हे परि-
 इस कार्यनाम को भूमिनाओं को रीक से
 समझाया जाते जो बोधों कारण नहीं है कि
 वे एकत्र नियोजन करें। सम्भव रूप पर
 उनको दिग्दर्शक का कार्य कि पर कायूट
 'प्रायः-सम्बन्ध के वर्गीकरण विज्ञान के क्षेत्र में
 आवश्यक है।

मारल क्रियर १
 मैं आज क्या भारत की सामान्य स्थिति
 की ओर आग्रह आग्रह आग्रह है। पर्यट
 में यह नहीं मानता कि स्थिति अयोग्य हो
 गयी है, फिर भी आज और यह बात है अन्तः-
 मध्य ही कि स्थिति विज्ञानजनक बरूत है।
 उनको दिनों ऐसी कुछ प्रस्तावों आने देते
 हैं हुंर हैं, जो हमको चार-चार यह वाद
 दिखते हैं कि अयोग्य प्रस्ताव का पाप
 बहुत बड़े अर्थ में आने आया ही पर
 हुआ है। साधन-भक्ति ने कई बार अन्तः ही
 की मान्यता को दया दिया है। साधन-भक्ति
 और मान्यता को भी प्रायः अन्तः नया
 रूप दिलाया है। इस कारण हमें सामान्य
 मानवीय भावनाओं और विज्ञानकार को भी
 अपने विचारकित दे ही है।

भूमि-समस्या

को चुनौती

क्या है?

नया स्वरूप

राजनीति

प्रधान-स्वराज्य

हमारा दृष्टिकोण

में दोष

आ जायोग वनें

के प्रति हमारा रुख

दिकोण में सर्वोदय-पात्र की जो
 उसका वर्णन सम्मेलन के सामने
 'राज ने मतलाया कि इस क्षेत्र
 से ऊपर सर्वोदय-
 प्रायः एक ही है। सर्वोदय-
 एक उपयोग तैलुगु
 'साम्ययोग' को सर्वोदय-पात्र
 का रहा है। इस प्रकार 'साम्य-
 इतने कुटुम्बों में पहुँच रही है।

एकमात्र तरीका
 सर्वोदय का धर्म, जो प्रेम का संदेश
 है, चासल में बेशक यही एक उत्तरनाक
 स्थिति का सर्वोत्कृष्ट उत्तर है। किन्तु दुर्भाग्य
 से हम अन्तः में भी कम हैं और हमारे प्रेम
 की गहराई भी बहुत गहरी है। अन्तः
 मुझे विश्वास है कि प्रेम की शक्ति के अन्तः-
 रिक कोरों ऐसी शक्ति नहीं है, जो भारत ही
 एक पृष्ठ के, या जो कोरों कि ऐसे समान के,
 जहाँ सब लोग एक समान आदर्श की
 शक्ति के लिए अनुसूचित प्रयत्न करते हैं,
 रूप में पूरा होते। प्रेम ही उन अनुसूचित
 शक्ति का उपयोग करने की योग्यता हमें
 प्राप्त करने है। पर यह भी हमारे समय का
 एक अर्थ ही है। हमें यह भी सीखना है कि
 उस शक्ति का अधिक प्रभावोत्पादक रूप
 से कैसे उपयोग किया जाए। किन्तु हमें
 इस क्षेत्र में हमारे अन्तः ही है। इसको
 अन्तः में करने के लिए उन्हें हमें ही दोष
 छोड़ने बतलवें—(क) शक्ति-पात्र (सर्वोदय-
 पात्र) का प्रसार और प्रसार। (ख) शक्ति-
 सेना का संगठन। शक्ति-पात्र के द्वारा हम
 हर घर में शक्ति के उपयोग को पहुँचा सकते
 हैं। उनके द्वारा प्रेम की शक्ति का यस्ता
 सुयोग करने में बहुत मदद मिलेगी।

शक्ति-सेना पर जोर दे
 शक्ति-सेना का सामान्य स्थिति में अपनी
 सेवा के द्वारा और असाध्य की स्थिति में
 शक्ति-सेना के अन्तः में आकर प्रयत्न
 करने पर अपनी सेवा तक दे देने की वैचार
 के द्वारा प्रेम को शक्ति को मजबूत बनाना
 है। परन्तु अन्तः और अन्तः-रिक दोनों
 शक्ति कर भी उनको केंद्र का अपनी बहुत कम
 है। और फिर शक्ति की का उन्हें सुप्रारम्भ
 करने है, वे बहुत ही बड़े हैं। अन्तः कि
 अन्तः सेना हमें अपनी पूरी शक्ति
 रूपा पर शक्ति-सेना के वहाँ को अपने
 बनाने है।

राज कुंज नाम में लिखे। इनमें साम-
 स्वरूप के अन्तः का एक कार्यनाम था।
 अन्तः विज्ञानकार और पंचवर्षीय
 योजना के दिनों का भी अधिक समझना
 वे अन्तः-सम्बन्ध गया। फिर भी यह सही
 है कि हम आगे-पीछे को उत स्थिति में मिलने
 यह प्रकृ के दिनों में पहुँचा जा, नहीं टिका
 रहे। मेरे राय में यह सामाजिक ही
 था। कोरों की शक्ति तब ही उठा नहीं रह
 सकता। उसको मानव स्वामी ही ही है
 और उस प्रकार को मिटा कर पुनः सामा
 होने के जिन्हे स्वनाम बरही होना है। पानन
 विज्ञान का ऐसा अन्तः-सम्बन्ध है जो लुके है। १८
 अक्टूबर, १९५६ के दिन से, जब कि हमी
 राज्य के शोचन-सर्वोत्कृष्ट प्रयत्न में अन्तः-सम्बन्ध
 का नाम हुआ, आज अन्तः-सम्बन्ध
 के १० वर्षों होते हैं और अब यह देश का
 सच है कि जन आन्दोलन का दृष्टव दौर
 शुरू होने का अन्तः-सम्बन्ध हुआ है।

शक्ति-पात्र विज्ञानकार
 हमारी कुछ ऐसी आदत हो गयी है
 कि हम सब आन्दोलन की बात तो करते हैं
 ही केवल अन्तः-सम्बन्ध अन्तः-सम्बन्ध
 सामान्य, अन्तः-सम्बन्ध के कार्यनाम की
 आदत में ही तो करते हैं। पर भी तो हमें का
 एक कार्यनाम ही तरीका है। उस तो वह है
 कि अन्तः-सम्बन्ध का अन्तः-सम्बन्ध कार्यनाम
 मिल कर अन्तः-सम्बन्ध बनना है। वे जो
 कार्यनाम एक-दूसरे पर आधारित होते हैं
 और एक-दूसरे को हल देते हैं। अन्तः और
 अन्तः-सम्बन्ध दोनों प्रकार के कार्यनामों की अन्तः-सम्बन्ध
 का अन्तः-सम्बन्ध अन्तः-सम्बन्ध ही है। एक
 के बिना दूसरा अन्तः-सम्बन्ध ही बनना।

शक्ति-पात्र हमारे कार्यनाम का महत्त्व-
 पूर्ण अर्थ रहा है और आगे भी रहेगा, पर
 प्रसार पर है कि क्या वह फिर एक अन्तः-
 आन्दोलन का रूप ले सकता है, और वे
 सचता है तो कि प्रसार।

शक्ति-पात्र का संकल्प
 शोभाय के क्षेत्र कि आगे की स्थिति
 है, मेरे प्रेक्षक, विद्वानों में कुछ ऐसी परि-
 स्थितियों बनी हैं कि अन्तः-सम्बन्ध को न केवल
 बर्तमान अन्तः-सम्बन्ध के रूप में अन्तः-सम्बन्ध
 फिर से उठा लेने को प्रोत्साहित किया है,
 बल्कि राष्ट्रिय राजनीतिक के अन्तः-सम्बन्ध
 रिक, से रिश्तक तक हमारे अन्तः-सम्बन्ध प्रसार
 करने की स्थिति को हम निश्चित कर सकते हैं।
 "शक्ति-पात्र में क्या?" का नाम विद्वानों के
 लक्ष्य में एक शक्ति अन्तः-सम्बन्ध अन्तः-सम्बन्ध
 रखता है। आगे-पीछे हम निश्चित कर सकते हैं।
 देश-सामाजिक प्रयत्न का दौड़ना में, यह
 विद्वानों का कि विज्ञान अन्तः-सम्बन्ध
 पर शक्ति करने को उठा था कि यदि
 शक्ति के अन्तः-सम्बन्ध काय ही अन्तः-सम्बन्ध

कि खादो-मामोयोग कमीशन तथा ए-उद्योग बोर्ड, दोनों को मिल कर एक 'मिजाजुला' 'प्रांतीय उद्योग-संघ' बना दिया जाय। राहरी हलकों में आवश्यक-सामान्य रख उद्योग-संघ काम करता रहे। इस संघ का काम होना चाहिए

कोई शांतिपूर्ण विस्फव लोकता मुने अहमतर रखाए है। पुष्पनी विच, ड्रेप और विनल्लय प्यों के लो लोने रहे, यह दोनों देशो के, श्मिया के और निवध्याति और सध्याव के हित में खुश होया।
ये नहों एक वात और बहना चाहव

लोग रोटी और रोजी चाहते हैं और चाहते हैं जानवरों से भिन्न तरीके से जीवन विताना। यह सब आयोजक जनता को कैसे देंगे ? ... उनके लिये योजना और आर्थिक विकास का क्या मतलब है ?

कि मिटनी भी तेजी से हो सके जतनी तेजी से गोनों की मोटाई बंधक इति-व्यवस्था को शंभुलित इति-उद्योग-संघ-व्यवस्था के रूप में परिवर्तित करे। और यह काम इस तरह से हो कि राष्ट्रीय घोषक अपना देश वहाँ न जमा सके और देशवर्ती की आम जनता इस संघ के कामों और लक्ष्यों में प्रत्यक्ष रूप से हिस्सा ले सके। मुझे विश्वास है कि इस प्रकार के प्रांतीय विचार का राहरी क्षेत्र पर भी बहुत अच्छा फल पड़ेगा।

मैं यहाँ उन दो सप्ते अन्तराष्ट्रीय हलकों का बिकर बत देना चाहता हूँ, जिनमें हमारा देश उलझा हुआ है। कन्नड़ के बारे में प्राधिकार में और सीमा के संघर्ष में चीन से हमारा संघर्ष चल रहा है। "वार रेविल्टर्स" के गांधीयाम सम्मेलन के अन्तर पर मैंने भारत और चीन के हलकों का निवदार्थ करने के लिए पच्चीसवले की बात सुनायी थी। इस सुभाष का मन्तव्य और प्रचार वो बहुत हुआ, किन्तु जनता को उसके सम्बन्ध में प्रतिक्रिया बहुत प्रबल नहीं हुई। कुछ हलकों में इतनी आलोचना कर की गयी कि आन्तमण के मामले में मन्तव्यता का प्रश्न ही नहीं उठता। मैं इससे मोह्य आने सहमत हूँ। किन्तु मुझे कहना यह है कि जब निवध भूमि के ऊपर सन्तव है, दोनों दल दल पर अपनी मारिणी बताते हैं और उल्लेख लिए सन्तव देते हैं। आन्तमण बंद कर हम उन मामलों को खत्म नहीं कर सकते। हमारा देनाक यह उभार है कि हमारे पास को सन्तव है जिसे आधार पर जीत हमारी ही होगी। सन्तव है, चीन वाले भी इन्ही प्रकार आने बारे में सोचते हैं। इन्हें मेरी बात और भी सुनवनी होती है। मिनी के भी अपने अधिकांश को छोड़ने की बात नहीं उठती। दोनों देशों के लिए शान्ति और समझौती रानी है कि ये दल प्रश्न पर मन्तव्यता से लिए उन्नी हैं। मन्तव्य एक स्वयं, अनेक स्वयं का कोई संस्था, बैला कि दोनों देशों की सहकारी तब करे, ही अकते है। यह इस सम्बन्ध के बनेले के लिए बत सांघिपूर्ण तपसा रानीकर नहीं होवत है तो दूसर

हूँ कि इस तरह का मामला राजनैतिक पार्षियों के बीच पुनर्वात को सदा दलन्ती का चरण नहीं बनाया जाना चाहिए। इस तरह के नेता एक जगह बैठ कर बारे में कोई सर्वसम्मत नीति खोब निकालें, यह अच्छा होगा। पार्षियों के नेतानकों को हकदस्त करने का अधिक्रम विनोयनी अथवा तब सेव्य शर्त की और से लिखा जा सकता है। मैं यहाँ यह साफ बत देना चाहता हूँ कि इस प्रकार के सहाय-भातिरि की सहाय देवर्ष में प्रचार संघी की धार-स्वतंत्रता को बिची भी प्रचार सीमित करने की पाव नहीं सूझा रहा है। पर यह बात अवश्य है कि यह संघीका हमको कोई प्रामित्य हल निकालने और दल राष्ट्रीय प्रश्न को पक्षीय विचार से ऊपर उठाने में मदद करेगा।

सर्वसेवा संघ की नई प्रबंध समिति के महत्त्वपूर्ण निर्णय

सर्वसेवा संघ की नई प्रबंध समिति की पक्षी बैठक का. २० अप्रैल की शाम को और २१ अप्रैल को सत्रे सवोद्योगपुर में श्री नरद्वण्ड्य चौधरी की अध्यक्षता में हुई।

सर्व सेवा संघ के प्राथमक विभाग की पाव के ता० १९-२०-४२ कार्यो की शर्तों में विभिन्न प्राणों के साहित्यविषयों की एक कमा हुई थी। उनसे यह सुझाया जा कि एक संघ-साहित्य के निर्माण और सम्पादन के काम के लिये एक सम्पादक-संघ नियुक्त किया जाय। संघ की प्रबंध समिति ने इस विचारिक को मान्य करके नीचे लिखे प्रस्ताव द्वारा एक संपादन-संघ नियुक्त किया है।

- संघ-सहित्य-साहित्य के निर्माण के बारे में समझ तब से विचार करके योजना बनाने, संपादन तथा निवधय मापणओं में अनुपचार आदि के काम में सर्वसेवा संघ की प्रशासन-समिति को मदद करने के लिये प्रबंध समिति एक स्वयंसेवक साहित्य संघाचरण बहाल की नियुक्ति करती है, जिनमें निम्नलिखित सदस्य रहेंगे—
- १. श्री श्रीराम शर्मा, कन्नड़
 - २. श्री राधिका शर्मा, कन्नड़
 - ३. श्री प्रमोद दासगुप्त, कन्नड़
 - ४. श्री विद्यानंद दत्तगुप्त, बायडी
 - ५. श्री प्रमोद जोशी, मराठी
 - ६. श्री अरधत मीर, बायडी

मैं हिन्द-व्याक रिपद के सम्बन्ध में अपनी बात बहना चाहता हूँ। आज भी मैं उन्ही पक्षी राय का हूँ, जो १९४० में मेरी थी कि देश के विभाजन का कदम पूर्णतयाण था। पर वर विभाजन हो ही गया तो मेरी यह राय है कि दोनों देश एक-दूसरे की सार्वभौमिक तला और प्रादेशिक स्वतन्त्र की बत करे और पुरानी बाणों को भूलने सुणने मित्रता और सहकार के सिधे सुखों में बंधे कि मित्रते दोनों एक-दूसरे के समीप आये। यह मुझे पका विश्वास है कि दोनों एक-दूसरे के निता टिक नहीं सकते; अन्त में वे एक ही देश के अंग हैं; विभक्त उप-सम्राज्य (सबडिविजन्ट) की संज्ञा देना गलब है।

याम अमलुल गन्तार पों की हाल की निरपत्तारी पारितान की बदली हया का एक अन्त है। किन्ही को भी हलका सुनर हुए निना न रहेगा कि उन जैसे "ईश्वर"

एक गरिब और क्षुधापीड़ित देश में क्या यह अत्यावश्यक नहीं है कि संपत्ति का उत्पादन इस प्रकार से हो कि वह सचि जनता के पास पहुँच सके ?

मक" के लिए इस उम्र में कैदखाने के विचार हलकी और कोई बला नहीं है! मेरे इन शब्दों को धारदर पाचितान के "भीतरी मासव" से हलदर मानना जाय, पर मैं बनी ऐसा मानने को तैयार नहीं हूँ कि पीडित मानवता का प्रश्न किन्हीं राष्ट्रीय

सीमाओं से बंधा हुआ है। हमारे प्रश्न यह है कि हम सवोद्योगी देशों के बीच के संघर्षों के बारे में क्या कर सकते हैं। यह सुद्यु का है कि राजनैतिक तार पर हम चुन नहीं कर सकते, सिवाय व्यापक हलके इत हलके के मामले में टील छोड़ देते हैं कि हमें में को छलदर है,उपय पर तथा हलकता को आशुलीय उपाय पर सोचने की आवश्यक पर बल दे। पर इतना जरूर है कि हमें सामले पर विवेध ध्यान देना चाहिए, इन बलों के संघर्ष में रहना चाहिए, उनका अध्ययन करना चाहिये, हलकों हाटिचोग भी सहायता चाहिये और लोगों को ऐसे मामलों में विहित बना चाहिये।

हम को सवोद्योग-आन्दोलन में है, कि धारदर रखते हैं कि एणों के बीच के शकारी सम्बन्धों के अलथा निर-निग रितों के लीगों को समी सम्बन्ध रहितों के है-

सरकारी तौर पर भी अपने बीच सम्बन्ध स्थापित करने चाहिये। इसका क्या अर्थ है कि हम नित्य प्रति स्वेच्छी के हत का ती बाण करे पर अपने पक्षीके के पाष अन्धे सम्बन्ध स्थापित करने की दिशा में सुध न करे।

सर्वसेवा संघ की नई प्रबंध समिति के महत्त्वपूर्ण निर्णय

निवध, मंडल, पायबन्ध, बामानुजर बलाद और विधीयराय चौधरी हैं। अन्तर में तक समिति अनोरी रिहार्ड पैठ करे, यह तप हुआ है। सर्वसेवा संघ के अन्तर् अधिनियम में दल वर्ष के काम का यह सम्पादन वेध होगा।

बाहिरीक समाज-रचना का सांघिक "सुखी" पत्रिका

- सारी-मासोयोग तथा सवोद्योग-विचार पर विद्वत्पुण्य रचनाएँ।
- सारी-मासोयोग सांघोचरण की देन-स्थानी जनकारी।
- बहिना, सधुधया, मोल के मन्तव, साहित्य-समीक्षा, सधुध-संरचना सांघिकी पुष्प आदि स्थानीय स्तर पर।
- सांघिक सम्पुष्टः हल-कामान पर उपार्थ।

संपादक
धजाप्रसाद साहू: जवाहिरलाल नेन
सार्थिक: मधुव शोण राणे,
एकमिनि: पच्चीस नौ पेरे
—प्राज्ञस्थान सारी-संघ
पो० सारीयाग (अव्युठ)

विद्युल्ले दत्तक का सिंहावलोकन

यूथन-सह-आन्दोलन के लिले दल परों के काम का ऐला-जोला देने और मूलाचरण करने के लिये सर्वसेवा संघ की प्रबंध समिति ने भी पल्लमरवागी के सवोद्योगिक में एक समिति नियुक्त की है। समिति के अन्य सदस्य: ओद्योगराज

हिंसाश्रित राजनीति और प्रेमाश्रित लोकनीति

जिस तरह युद्ध का विकल्प सत्याग्रह है,

उसी तरह नागरिक प्रशासन के लिए भी विकल्प खड़ा करना होगा

शंकरराय देव

[सर्वोच्च-सम्मेलन के अन्ततः वर सर्वे लेया सच की बैठक में आलोचना के विपक्षे बयान के मित्रावरण-मौन और व्यंग्ये साहस के कार्यक्रम के बारे में हुई चर्चा में सत्याग्रह को निर्णय लिखे गये, वे एक निवेदन के रूप में २०-२० अर्थों की सर्वेदे सम्मेलन के युक्तो अधिवेशन में भी सत्याग्रह देखाई-दरारा देना लिखे गये।

निवेदन की प्रतिका और उसके पीछे की इच्छा का विश्लेषण करते हुए श्री शरदरायजी ने एक बड़ा ही प्रेक्षक और उत्प्रेषक भाषण दिया, जिसमें उन्होंने राजनीति और लोकनीति को स्पष्ट ब्याख्या की और दोनों का अन्तर समझाया। जगत के साहस के कार्यक्रम के बारे में, साहस कर जगत् वाले भाग नूतन तथा पुरानी दुःख की योजना के सम्बन्ध में, सर्वे सेवा सम में दूत बार जो निर्णय लिखे हैं, उनके बारे में कई शब्दों ने साक्षात् प्रकट की थी। पर सम्मेलन में जो शरदरायजी का जो भाषण हुआ, उसके अन्तर्गत सारी चीजें बहुत स्पष्ट कर रहीं। इस भाषण का विश्लेषण करते हुए सम्मेलन के अध्यक्ष श्री उपपन्थाजी ने कहा: "हम सुना करते हैं कि कभी-कभी लिखों की योजना पर सरकारी उत्तर आती है। आज मुझे भी शरदरायजी का जो भाषण हुआ, उसको सुनते वरत प्रेक्षक ही लग रहा था। सम्मेलन में भीर उसके पहले संघ के अधिवेशन में जो बर्ताव हुए हैं, उनको सुन कर जो कुछ अन्त में मैं बहुत चलाता था, वह अब सर्वत्र अत्यधिक मान्य हो रहा है।" साथ ही जो सम्प्रदायवादी में यह भाषा और विचार प्रकट किया कि शरदरायजी का भाषण सुनने के बाद "सभी लोकसभ, सर्वोप के सभी कार्यकर्ता निरस्तान और निरस्तोच हो कर अपने-अपने स्थानों की ओर" और अपने सर्व के लिए जो कुछ निर्णय सर्वे सेवा सम में लिया है, "उनको अन्ततः समने के लिए कटिबद्ध होकर सर्वे सम में लगे हो जायेंगे।" शरदरायजी का भाषण वही सिद्धा जा रहा है। —सर्वे]

राजनीति हमेशा कहते हैं कि वे जो सत्य और अहिंसा के प्रयोग कर रहा हैं, वे सनातन तरह हैं, मैं कोई नई चीज देना या बुनियाद के सामने नहीं छा रहा हूँ। इसके बावजूद गांधीजी के जो प्रयोग थे, वे केवल उनके जीवन में नहीं, बल्कि इस देश में एक अतिवारी धार्मिक की चीज बन गये। इसका कारण यह था कि तब ही सनातन थे, लेकिन गांधीजी ने इन तरीकों की जीवन के हर क्षेत्र और परिस्थिति में लागू किया। अर्थव्यवस्था जीवन में जब यह तत्त्व उन्होंने लागू किया तो वह जो प्रक्रिया थी, उसमें सत्य की जो नूतनता है और धार्मिकता है, वह प्रकट हुई। सत्य सनातन है, इसीलिए नित्य नूतन है। भारत में सत्य के सनातन तत्व को पहिचाना, लेकिन उसके नूतनत्व की जितना पहिचानना आवश्यक था, नहीं पहिचाना। इसलिए भारत टिका, लेकिन एक धार्मिकता की समाज के रूप में नहीं टिक सका। गांधीजी में उसमें एक नई जान, नये जीवन का संचार कर दिया।

आज जिस लोकशाही, लोकनीति और लोक-राज्य की हम बातें कर रहे हैं वे भी सनातन और प्राचीन चीजें हैं। हमें इन्कार करने परहने मतान् युद्ध में और वे इन्कार करने परहने इतना वे इसी नीति का पुस्तकार और प्रचार किया था। "बहुजन विहाय, बहुजन सुरायो", वे जो माग्यार युद्ध के राष्ट्र हैं, वे आज के "प्रिस्टेट राज्य आर्क प्रिस्टेट कम्पन" का अनुमान नहीं है। बहु-जन के माने "मेजरिटी-बहुमत-नहीं है। उनके "बहुजन" के मानी सर्वोप, सर्व-कल्याण नहीं है। उनका जो साधन था, वह यह था कि हमें कि इन राष्ट्रों का कार्य "मेजरिटी, मायनरिटी" नहीं था, क्योंकि उन्होंने अपना साधन देना और कल्याण की बताया था। जहाँ मेजरिटी साधन है वहाँ सत्य बहु-सत्य का सत्य देना ही ही नहीं सकता, क्योंकि प्रेम, सत्य विश्वव्यापी है। युद्ध का सत्य यही था, कि लोग आपस में प्रेम, सहानुभव से, कल्याण से सम्बन्धार

रही सत्य। लेकिन अब तक लोग इसकी ठीक तरह के समझ नहीं करे हैं, वह तक उनकी इच्छा ही थी भी उनका कल्याण ही नहीं सकता है। आज भारत में किसी एक व्यक्ति का प्राय नहीं है। इस देश में लोगों का ही शक्ति है, सत्य ही है। लेकिन यह सनातन लोकनीति के अन्ततः पर काम नहीं कर रहा है। इसका कारण यह है कि लोग खुद इन चीजों की ठीक समझ नहीं पाते हैं। इसलिए लोक-तन्त्र, लोक-राज्य होते हुए भी लोगों की हित और हित की प्रति नहीं हो पाती है। हम यह मानते हैं कि हममें अगर किसी चीज की कमी है तो यह लोगों की समझ ही कमी है, किसी पर का दम की कमी नहीं है, कभी-कभी हमें ही हमेशा चर्ची ही। इसलिए अब तक हम नैतिक तर्क से भी ऊपर नहीं उठे, तब तक हमें माननी जीवन की एक शायन की समझा नहीं पड़ेगी। आज यह ही समस्या है कि उनका यह ही तरह के विचार सत्य है। एक

करें। जब लोग आपस में प्रेम से, कल्याण से सम्बन्धार करना शुरू कर देते हैं, तो सही माने में लोकनीति शुरू हो जाती है। आज सर्वे सेवा संघ के संघ पर से यही पुराना संदेश हमें रूप से प्राप्त सुन रहे हैं।

मानव-जीवन की सनातन समस्या हम सब लोगों का सुप बाधते हैं, सनका कल्याण पाहते हैं तो प्रेम का कल्याण के अन्ततः कोई दृष्टि रास्ता ही

[संक्षेप में इस दिन : पृष्ठ ४ का संघ]

गाने छोड़ी गयी तो वह करी-करी खाली हो गयी, जब कि उनसे पहले २५ बंदे हुए हर गाने में लोग खड़कते हुए गये। इस एक घण्टा के अन्ततः इस बार सर्वोप-सम्मेलन की इसका अन्तः के सर्वोप-कार्यक्रमों की कर्तव्य-निष्ठा, उनकी योजना धार्मिक और उनके अन्त-मान के देहात के लोगों और निवास से भी सहयोग मिला, उनका कल्याण दे रही थी। आज सत्यार ने भी सती, ऐसी ही इच्छा के काम में पूरी मदद की। छत्र देहात के एक छोटे से गाँव में दस दिन तक करी १५ हजार आदिमियों के निवास, जीवन और कार्य अलान नहीं था। फिर वह सत्य काम बहुत अच्छी भी करना था। सनातन-धर्मियों के अन्ततः भी प्रसन्नता और धर्म, भी धार्मिक दे रही ने बाल्य कि नगर सत्य करने के लिए उन अन्त पर पारती बुद्धात् २०-२२ मार्च को चलती गयी थी। इस प्रकार यही सत्य के अन्त-अन्त संक्षेप में एक सत्य-पुत्री गयी हुई और मिल गयी। लेकिन सर्वोप के देहात में उन्तः प्रयोग की एक से अधिक कार्यों से विचार करनी पड़ेगी।



सर्वे सेवा सच के अधिवेशन में

विनोद-यात्री-दल से

—शुभम द्रवपते

गोहाटी युनिवर्सिटी में छात्र और छात्राओं के गण विनोदवाजी एक दिन रहे। मुवह की पहली राधा युनिवर्सिटी में लिए थी। व्यवस्थापकों ने तमा भी जो पगह चुकी थी, यह विनोदवाजी के निपात-न्याय के छोटे-से कपातपत्र में थी। सब विद्यालयों कपातपत्र के इन्-मिर्द नीड में खड़े होकर सुनने। इतनी छोटी-सी पगह, गजदोकर-जखीर मकान ! विनोदवाजी ने जूहा, "सगा बाकाश के नीचे मैदान में होगी।" सारा इत्याज्य बदला गया। उत्तम में सुख में कहा, "इसारे हृदय में विचारियों के लिये बहुत अधिक व्याध, प्रेम और प्रिय है। इसलिये हमने इतना समय अपनाकर और हृष्यार इत्याज्य बदलने में पँपाया। हम चाहते हैं कि हम हमारा हृदय विचारियों के सामने खोल दें। ऐसे सुले निपात बाकाश के नीचे सब एकसाथ बैठे तो दिल खुशेगा।"

अन्ने स्वाध्याय के दौरान में विचारियों से कहा, "अभी को अभिनन्दन-पत्र पढ़ा गया, उतमें कहा है कि विद्यार्थी उच्छ्वस्यत सने हैं। देखिन दल खल भी भाव-प्राय में सुखे पद अग्रण नहीं आया। जिन जिन घरों में सुखे पद गया था कि वहाँ के विद्यार्थी उच्छ्वस्यत सने हैं। उन घरों की हमारी कमाई, विचारियों की रास कमाई भी अत्यंत प्यारी से हुई। फिर भी लोग कहते हैं कि उनका भी अनुभव है, यह कहते नहीं हैं। मेरा सम्भव कह दिन का होता है। फिर भी उनमें निश्चय क्या है जो उतमें विचारियों का अनुभव नहीं देखता, सिद्ध का अनुभव देखता है।

भिये अन्ने सहस्र विचार हैं। मैं मानता हूँ कि विचारियों के विभाग पर किसी का प्रभाव नहीं होता चाहिये। विभाग की आगती का उतने पचास अधिक विचारियों को है। उपनिषद् में सम्बन्ध-विधि का बर्णन आया है। बारह गाल कुछ के बाद रहने के बाद बापल कर्मों और पाठक कर्मों तरा गृह करते हैं। उनका उनका हृदय-वेदनक एतेक (दीनत भाषण) होता है-देनो वेदो; हम हमारे विचारों हैं, हम आचार्य हैं; लेकिन उपनिषद् के समाज निदर्श नहीं है। इसलिये हमारे जो सुचरित हैं उनीका अनुकूल करो। हमारे हाथों में दीनकुक काम हुए हैं जो उनका अनुकरण न करो। ऐसी विनयी आगती देनी चाहिये। यह आज नहीं है। कुछ सुनिष में विचारियों के विभागों को वधि में कार्य का रहा है। और पारमेशिष यह भी तकरी अपने समाज बनाते हैं। विचारियों को इन सबके बचना चाहिये और दिग्भक्त कृते रहने चाहिये।

द्वार ११ से प्राणायामों की सम्य हूँ। इन दिनों विनोदजी गोवरी लिपि पर बहुत बोर है रहे हैं। प्राणायामों के नामों उतमें बरी बर्णों छेनी। कठिन में विद्युत का माध्यम मान्यमाया दीनी चाहिये, यह भी चर्चा चली। अद्यत गौरी कि कहते हैं में माध्यम अनेकी है, किन्तु धारकता में शक्ती, बंगारी, हिंदी प्राण मान्यमाया का माध्यम है। विनोदजी ने कहा, "माया के अनुभार प्राण को है, उतका दान आन नहीं उतमें जो दित्त होगी। माया का बर्णों के दिग्भक्त पर बहुत बोर है। अनेकों के लक्ष्य देना कोरे बोल नहीं उतते हैं। मैं सोचता हूँ, तर से कष्टकोटिज भी पण्डित तक अनेकी प्राण में विद्युत पडते हैं। प्रेम उतकी गहराक भाष्य है, इतलिये बन्दी भीर लेते हैं। कर्म, क्रम, नील आदि प देवों में उनको अन्नी भाष्य में विद्युत होता है। एक प्राणायामः नीम में उनको अनेकी शक्ति पडती है।

विनोदवाजी: सुदी साया शीतला एक बाहर है और विद्युत का माध्यम लेना सूची बन है। प्राणायामः दिव्यमान में सुदु-शी माण्डरी है। उनका वाक्य सम्म दित्त ही विनोदजी में बरा, "और रक्षा शय्या अनेकी को मिलता है।" (एक हंस की एकरान्देय गोक हृदयिण्य) सग अनेकी चर्चा आये चली। विनोदजी ने बरा, "मैं समझता हूँ कि हर मंत्र को एक निश्चित दया है। देखिन यह सवाल भाषा का रचना नहीं है। यह दीडलिक भी अनेका परमविक अधिक है।"

गावरी लिपि के बारे में विनोदवाजी ने कहा कि "सूदरि तो हम सोचेंगे तो यह लिपि का काल बहुत ही महत्व का है। आर दीनत लिपि की पत करते हैं। लेकिन आप बहुत जानते हैं। हूँ कि इन्हीं लिपि ने अपने नीमता में इसके लिए पैसे खते हैं कि रोमन लिपि कर्तु जाय, उतमें बहुत तकलीफ है। 'द्विन् दारु' ने उतके सुखे हुए नमूने छपे थे। मेरे पास अपने थे। वह 'कीनेटि' थी। रोमन के साथ उतका कोई सम्बन्ध नहीं था, अपने उतकीक यह थी। उतमें कपाल पण्डा ने दीनत लिपि बतली। मैंने सुने थे गुरुज लक्ष्मी मंगलवाली है। यह रोमन में है। लेकिन इससे वाक्य बहुत लंबा हो जाता है-अभिप्रेत्या रक्षामतु रक्षी। किता जाग्य तो छोया जैसे मल्लवाजी भी खबर् ही होती है।"

शिर विनोदवाजी ने 'पुरुष' पद कर सुनायी और नाचवी लिपि में अपने वाली किरी, कर्म, मर्यादा, ओषधि की मूदान-पवित्रार दीसायी और पद कर सुनायी। गोहाटी घर में प्रिये किता, उर दिन विनोदवाजी ने सने अनुकूल बलगा। चार-चार की बतार में पूरी लेनी चल रही थी। बतार के विचारियों को भी वही 'अनुकूलान्दु-पुत्र'। इतलिये अनेक-अनेक घरों में भीर के वाक्य को अनुभवरय होती है, यह उत। स्थितिगत शीघ्रार

ने कुहार में हाथ में मिट्टी होती है। उत मिट्टी का गणपति बसाना है या विनोद-विन बसाना है—आगे जो क्षात्र-भक्त का सामर्थ्य कुहार रखता है; बंते जो शिवाक राडू को भावने के सत्ते हैं। मुक्ति हमारे हाथ में है, हमारे शक्ति वाक्य बहुतस कीमतेगा। एतारे देश को भावनों में बसाना, संघरायण, रामानुजाचार्य में आगार दिवा।"

अनम प्रदेश के अर्पेदी के सरस्य विनोदजी से मिले। उतमें प्रदेश के गुरुमंथं भी चाहेता था और अनम रींगी भी शामिल हुए थे। "अरिण की मंथ के लिये मैं पत्र पत्रें ले, नरंवाली के मुख दार।" "यका इतिहास बना कर अपने विनोदवाजी ने कहा कि 'मेरा यह भाव है कि हर पत्र में मेरे मित्र हैं। मेरा भावने पडता है कि यह बर्ण सुण करने का है। अगले दिन सुनाय होगा। मैं हर पत्र का कृतज्ञ हूँ, आगती की बतार हूँ कि 'भूयान का काम आर हल बर्ण में पूरा कीजिये। इसके आगेकी सज्जा के पार जाने का मौका मिलेगा। उत कक-केल में माना होता था, उतकी का 'शोषण हनु पारुदस्त्रिण' करते थे। उतके तिर छद्रि होती थी। अब आगेकी केल में किने मेका। इतलिये में आलये बतार हूँ कि आप बराबत कीजिये। प्याग की पयैक बरनी बतारिये। आपनों कुछ देना होगा। उत बतार के मत कावरे। यह बात आर 'दीपराखर' उतमें ही हमारी पत्र आगेके प्रदेश में चल रही है जो बहुत रास बना होगा, छद्रि होती। अगले दल आप सुनाय के लिए लोगों के सामने जायेंगे तो उतमें कुछ लिखा है यह पद्यमाया-दीना और जाने में छोमा होगी। वही तो सफल है यह किता, यह किता, ऐसे सुबर्णवि शीघ्रता के गीत आन पायेंगे।

गोहाटी घर में रहने वाले बंगारी माई विनोदवाजी से मिलने आये थे। उनका कहना था कि अन्नी भाषा के साथ-साथ बंगाली भी देण की शय-माय प्राणी बना। विनोदवाजी ने उतमें सुनने सुनाय रहे-"ओ बुरे पदमार्य हूँ हूँ, उतमें भूत चारपे और बाहिर कर इतलिये कि 'हमने उत बतारोंमें के लेने ह्या कर दी है। अन्नी राज-माया है जो हम अनमों सोचेंगे।" मैट्रिक तक बंगाली में शीघरी भी सुनिये हुए, ऐसी भाग रखिये। अन्नी के साथ बंगाली भी राज-माया ही, रेखा न सोचो।

शारणाथ अन्म गोहाटी घर में ही है। शिर भी अन्म पण्डित एक उंचे टीले पर है। इतलिये घर के पूर ही है, ऐसी उतली उत आश्रम में है। विचार नबर वाली है, उतक भदरे देवों के विचार और बुद्ध दीपका ही नहीं है। सुबरी और नारिक के उंचे देव दधि की रोमा खुशे है।

-आभय के अज्ञान में रंगीन वृत्त मिले
 "रहते हैं।" मित्रता और 'बादल' की
 अमयी घोड़ा एकदम ही उड़ उठता वन्दे
 निरख देना में मन धरती है। अथय
 बरफ़ान ड्रैट का यह सुरत केन्द्र है। इन
 शब्दों को खल प्रेरणा देने का काम अमल-
 प्रभा देती है। निवेद्यनी कहते हैं— "कर्म यों"
 के नाम के लिये अथय में इस एक ही
 नाम मृगतो आये हैं—अमलप्रभा का।¹⁷
 अथ ही शब्दों बरफ़ान ड्रैट की प्रतिनिधि
 का काम भी अनुमल प्रभा वर रही है।
 गीतादी के आभय के दो दिन ताक बहने
 के लिये में। अथ दिन शाम की प्रार्थना-
 सभा भी शब्दों के लिये रकी गयी थी।
 अमल प्रभा की महिमा-कविता की प्रथम
 चतुर्दश श्लोकों में भी। गीतादी
 की शीघ्र लोचन पर आती, अथय के-
 सभाय तथा महिमा-कविता की शब्दों भी
 थीं। इन शब्दों मित्र वर निवेद्यनी का
 स्वागत निचा और कहा कि हम
 सर्वोदय-यात्र का काम उठाएंगी। अथ
 एक ५५० वर्षो-यत्र-यात्र की स्थापना हुई
 । निवेद्यनी ने शब्दों की कहा कि
 "स्वागत में आते रहना का काम आरंभ
 कर सफ़र है।" उल्लेख में लिये आयेको
 आगे आना चाहिये।

दूसरे दिन प्रातःकाल ४ बजे 'द्विधा-
 चाल' का यह आभय के आगमन में हुआ
 और उसके पश्चात् प्रथम ही आभय-कल्याणों
 के आगमन 'बादल' का गुण जोड़ते
 हुए निवेद्यनी ने कहा, "बरफ़ान ड्रैट ने
 अथ कविता देना का काम उठाये का निमित्त
 दिया है। यह काम आध्यात्मिक सुविधा
 के लिये गरी होना। इच्छा मेंने हर पर
 जोर दिया कि शब्दों को ब्रह्म-विद्या में
 परावृत होना चाहिये।

दुसरी विधा बहा-विद्या गरी है।
 बहा-विद्या काचरण की विचार है।
 रीज के जीवन में आरत, प्रेम,
 विश्वास और अज्ञा हो। हम सब
 एक ही हैं—आरत के जोरों का
 ही सहाय है—लेकिन आरत ही सर्वत्र
 एक ही एक ही—लेकिन सब अज्ञा हो
 गये बहा-विद्या का आरम्भ ५३
 वर्ष है।

निर इनके आगे जाना है। सामने कोई
 आकाश, उसमें तो हम ही हैं, यह अनुभूति
 एवम्ब नदी आगे। यह अज्ञान के
 होना। हमका आरम्भ मनुष्य से होता।
 निर वे शारी विचारों का सेना लेते हैं—
 भाव, प्रेम, चोड़ आदि और उनके बाद
 वे शरीरों, जो वास्तविक रूप हमका नहीं
 होते, निर भी हानि कर सकते हैं—बैते
 कोरि, विदुष-इने सभा भी एकत्र बहुरूप
 करती है। इन्के बाद वे शरीरों जो मनुष्य
 को लाते हैं—बैते रेशे हैं, यह अथ
 आभय की धा रेशों। आरम्भ तो
 आरम्भो उरने में। सभे एक आभय से
 ब्रह्मा होना। यहाँ विज्ञान रहते हैं, उनमें
 अनन्य अज्ञान ही, इन एक ही पर
 भवता है, न यह प्रेम शब्द
 का मेंने देना।¹⁸

निवेद्यनी के अक्षर एक सवाल
 पूछा जाता है कि 'आभय विचारों के लिए ही
 ब्रह्मविद्या की बात क्यों करते हैं? क्या
 ब्रह्मविद्या के लिए यह नहीं है?' एक का जिक्र
 उस मायम में करते हुए निवेद्यनी ने
 कहा, "बुरगों में ब्रह्मविद्या को ब्रह्म
 मर दिखाए। ब्रह्मों को उसे सुभावन
 है। बुरगों में स्त्री को आसक्ति का विषय
 बनाया है। बाल बच्चे हिन्दुस्थान के
 आसक्ति में मने रह देता। आसक्ति और
 प्रेम में एक ही। मैं दूध पीता हूँ, पर दूध
 मेंने प्रेम का गियम नहीं है। प्रेम का यर्थ
 है कि हम उस व्यक्ति के लिये लाग वरने
 के लिये तैयार हैं। लिये हम प्रेम करने
 जाते हैं या खाने खाते हैं उसे प्रेम नहीं
 करते। भैरु दिन का विचार ब्रह्मा है।
 तो क्या उल्लास दिन पर प्रेम है? वह
 तो उल्लास प्रेम है। सौं जो भोग-साधन
 बना कर स्वासक्ति का गियम बनाया।
 और दुःख की बात यह है कि जो मैं उसे
 बुरगु लिये। दूधवी और स्त्री के घृणा
 नरने, और उसे वैराग्य बरने। एक तरह
 बर्ण और घृणा के भी त्याग होना है, ऐसा
 बर्ण भागत में आया है। इच्छा में
 बहला ही कि आरत सब जग निचा एगनी
 थी। स्त्री के घृणा बरना, या शब्दों के
 घृणा करना, यह प्रसन्न नहीं होगा।
 तमने परनेभर का दर्शन करना, यह है
 ब्रह्म विद्या।¹⁹

आभय में बरफ़ान-ड्रैट के अमल-
 प्रभा (किलेस) की बर्ना हुई। निवेद्यनी
 ने कहा कि प्रार्थना में भागिता महसूस
 तो शार्थना न करें, या उच्छी ब्रह्म
 हुए प्रजन गाये। प्रार्थना मातृभाषा में
 तो शब्दाय स्वाभाविक होगी। प्रार्थना
 का ही तो भाविक के लिये है।

एक निवेद्यनी कल्याण—'मेरी
 माँ को देवी अमलप्रभा की एक मूर्ति थी।
 उसे मैं उच्छी मूल के बाद आभय में ले
 आया। और बाह्यता की कि उच्छी पूजा
 चले, क्योंकि मेरी माँ सदा उच्छी पूजा
 करती थी। शारमजनी में शब्दाय गायी
 की थी, काशी का ले उच्छे रखा। वह १९१८
 की बात है। उसके बाद १९५८ में मैं
 भूदान यत्र में गयीं गया था। देहा कि
 ५० साल लगभग काही का उच्छे गूदा
 करती रही। यहाँ तक कि बीमार हो या
 सगर में हो तो भी एक दिन भी बह नहीं
 निचा पूजा की नहीं रही। उनमें मुझे कहा
 कि 'भोजन को मीने बर्न कर छोड़ दे, पर
 पूजा एक दिन भी नहीं छोड़ें।' एक तरह
 के मंत्र से जब काम उच्छेती है, तब
 ऐसी निद्रा के उसे सदा रहती है। प्रार्थना
 में निरा प्रयत्न हो आषा तो निर आच्छे।
 अनेकानों मैं जात्र तो मर इच्छेकर
 होना। प्रार्थना में वैद्यकी बरने आना
 चाहिये। नीचे पूरी होनी चाहिये।"²⁰

लेखनी में प्रथम के अक्षर
 की परिशुद्धा के लिये अथय के हैं, निवेद्यनी
 के लिये। उनमें सहायक प्रकट की
 ओर निवेद्यनी को अथय में पदा मिले,
 ऐसी सुनेदा बरनी की।

जन-श्राधारित सर्वोदय-कार्यकर्ता परिवार

सर्वोदय जन-अन्दोलन के, इस पर विचार करने के लिए बरफ़ान मरेण
 (विद्या बुरुद्धपर) में २६, २७ और २८ मार्च को एक कार्यकर्ता-परिवार गुआ।
 विभिन्न विचारों के आगे हुए ३२ कार्यकर्ता स्वयं लामिलिड हुए।
 बर्ना के मूठे में: (१) एक का शब्दीकरण। (२) उरके लिए कार्यक्रम।
 (३) कार्यकर्ता।

लक्ष्य का स्पष्टीकरण
 मातृभाषा मूल्यों पर आधारित समाज
 की स्थापना करना ही हमारा उद्देश्य है।
 पर एक, विद्या अर्थ हय यह लेते हैं कि
 जो हमारी पूर्व के नवदीन है वह है,
 लेखकिका जगाना अथय प्राम-स्वराज्य
 स्थापित करना।

भ्रम स्वराज्य का भी विचार आज किन
 लंग के हम लोग देव के सामने रख रहे हैं
 और उनमें जो आज बर-भारण के प्रकट
 होना चाहिये, उच्छे अर्थिक विद्य
 और स्वयं विद्य भाव-व्यवस्था बह वर
 प्रकट कर सकते हैं। दुखे शब्दों में
 परिवार-मायना पर आधारित प्राम-स्वराज्य
 हमारा लक्ष्य है। इच्छे द्वारा प्रत्येक नागरिक
 को (१) दुःख, (२) शिखर,
 (३) स्वयं की स्वयं सुविधा देनी
 और (४) नगरिक सहयोग देनी।

कार्यक्रम: विद्य की कार्यक्रम की
 वेवसिता उरके लिये आधारित विचार
 पर निर्भर करती है। यदि विचार सार
 नहीं है तो को कार्यक्रम गावि का नहीं
 सक्त है, बदी राहल का भी बन सक्त
 है और बही प्रतिनिधिपरवदी भी बन सक्त
 है। शब्दीकरण कार्यक्रम अथय है और
 कार्यकर्ता वेवसिता है, वेवत इतना ही
 पर्यत नहीं, बल्कि उरके लिये को विचार
 है उसे कभी नहीं छोडना है।

नागरिक विचारों की वरम लीन
 गावों पर हमें लोचना चाहिये।

(१) समलत की सुकर्मस्थता
 शब्दों के बर्ण और वाच पर
 आधारित हमारी सार्वजनिक सुवात, सुकर्म
 बरम का श्राव्य विरलित हुआ है और
 यह हमारे आभय में पर बन पाया है।
 आभय की सार्वजनिक के लक्ष्य में हमें
 समाज की पुनरास्था का सफ़र श्राव्य
 बनना है और यह होगा प्रेम और नर-
 वरके के आधार पर। अथ एक और तो
 प्रेम और शब्दाय का विचार और दूधवी
 और नाउल, दयजनलता का दृष्टिभार
 करना होगा।

(२) समाज-निर्माण
 किनी के लिये कि सगलित वर
 का शब्दाय निने निर निमित्त-कार्य
 नदी कर सकते हैं, यह हमारी मान्यता
 और निरा कभी नहीं है। इसे लेन्या
 होना और लेख प्रशासित स्वा-
 रम्भो बरवर्त जगानी देनी, जो प्रथम
 है-उच्छी जगानी।
 गाव के लिए जो सर्वोदय-योजना
 लभ को प्रदान और शरीरें बर बननी
 हो, पती गाव-परिवार का आधार

बनना। नेवु गां, तारी-बर्माण,
 गांधी-निधि, सार्वार का शब्द की
 रचनात्मक सहायता द्वारा चलानी
 भी योजना लेख-अर्थिक-साधन में
 बाधक है। अतः अरर के मागे हुई
 कविता का बहुरिदार तथा नीचे के
 उमरद्वी हुई कविता की श्रेणीनिद्रा
 करना होगा।

(३) जीवन-वापन
 आज एक ही मनुष्यी पर दुलरे की
 रोटी चलती है। शब्दों अनेक जीवन के
 शब्दों और पवित्र जीवन-साधन मिले,
 इच्छे लिए एक-दूरे का सनल लेखर
 परवर जीवन निताम और परवर रूप
 स्थापित करना होगा।

सुल्ल कार्यक्रम बही होना, को निवेद्यनी
 ने सुशाये हैं: भूदान, धर्म-विधान,
 प्रामदान, शास्त्र-वेदा, सर्वोदय-यात्र
 कविता प्रचार-प्रकाशन आदि।

प्रयोग-मथार का शब्द
 (१) परवाशर-शब्दों और सपर ही।
 अरके को नागरिक भी भूमिका में
 एक बर बनने शब्द और वैश्विक शीमा
 में द्यनी मर्णो, बैते स्वयं का निर
 परिवार।

(२) इच्छे शब्दों हय कि नर
 एक सपर लिये में सहायक जीवन का
 प्रयोग।

हर मार के कार्यक्रम को लेखर
 चलने वाले जन-आधारित कार्यक्रमों
 शब्दों का आच्छे लेख-समर्थक ही
 उनमें सदा का आधार बनना है।
 वे समाज-समय पर आधारित शीघ्रिया सपर
 पर-परिवारों की द्वारा समर्थक हुए
 एक-दूरे की शिरी तथा परिवार की
 सपरश्यों को हय करने की लोच्छे
 बरने।

परिवार के परिवार-समय सम-
 बहुरिदार, आगत, मेक विविध शब्दों-
 बहुरिदार की सपरना हुई।
 विद्या सर्वोदय अथय कार्यक्रम,
 बुरुद्धपर

कानपुर में सहजीवन शिबिर
 १२ मार्च को आरंभ, कानपुर
 में सर्वोदय सहजीवन शिबिर हुआ। उनमें
 २७ कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। इस
 अवसर पर 'समाज-साथी की मर्था और
 नागरिक' हुए विचार पर विचार-अनेक
 भी हुई। गोष्ठी में सपर के अनेक
 विचारों ने धर्य किया।
 मार्च माह में आरंभपर में ३८६ क०
 का शब्दीकरण-विद्य। एक मार में
 अर्थ-विद्य सर्वोदय-योजना की सपर १०५
 के २०० हो गयी।

मूदान यज्ञ

साप्ताहिक

मूदानयज्ञप्रसक्तश्रीमोक्षोपग्रामादिप्रकाशितिकासंदेशद्वाराहक

संपादक : सिद्धराज बहदा
१२ मार्च '६१

वार्तापत्रिका : शुक्रवारा

वर्ष ७ : अंक ३२

स्वीन्द्रवाणी का चिरंतन संदेश

काका कालेलकर



विरचकवि स्वीन्द्र

सचचे कवियों की प्रतिभा की खूबी यही होती है कि वे समस्त जीवन का सम्पूर्ण भाग-लन कर सकते हैं और वह भी जीवनानुभव से सोधे-सोधा लिया हुआ होता है। रविबाबू अपनी इस कवि-प्रतिभा के कारण ही उपनिषद् के महान् ऋषियों के उचनों का गभितार्थ होने इतनी अच्छी तरह समझा सके और भगवान् बुद्ध या पारसियों के धर्मगुरु भगवान् जेरुसलम को वाणी का यमं दुनिया के सामने रख सके।

आज की पीढ़ी कविवर स्वीन्द्रनाथ की जन्म-शताब्दी, उत्सव के आनन्द और उत्कृष्टता-बुद्धि से मना सकती है। लेकिन जिन्होंने कबीन्द्र को प्रत्यक्ष देखा था, उनकी प्राणप्रिय सच्चा यह कह कर उनका देवी सहील दुना था, उनके अरने नाटक लिखते ही साधिया और विवाहियों को पूरे उत्साह के साथ पढ़ सुनाते देखा था और उनके साथ देस के अनेकानेक महत्त्व के सवाली की रचना करने का सम्मान जिन्होंने मिशा था, उनके मन की आज के उत्सव में हासिक होते विवाद की एक छटा छू जायेगी ही।

मोरर का मट्टामुख बुर हुआ था उस अरवे में मने साहित्य निकेतन में जो पाँच-छ महीने मिलाये थे और साहित्यनिकेतन की मुखबरे का सद्-वास पाया था, उसके भीते संस्मरण आन होये है। उसके बाद बीच-बीच में उनसे कई दफा मिले हैं। उनको आशिर में लम्बे १९३७ में कलकत्ता में मिलर था। उस वकल लहूँ दुनिया के सभी धर्मों की एक अन्तराष्ट्रीय परिषद् हुई थी। उसमें एक दिन मे अध्यक्ष था और दूसरे दिन मुखदेव अध्यक्ष थे। उनके उस समय के वक्तव्य से भी मुझे कुछ कुछ ही हुआ था, क्योंकि वृद्धावस्था के कारण उनकी शरीरवर्षि कुछ शुक-सी गयी थी।

अप्यपहल प्रतिभा के उस विरचकवि के जीवन-परिच्छेद जो बहुत थे। लेकिन उनकी विभिन्न मुद्रयथा और साहसीम रूप में कवि की ही थी। शिशु-शास्त्री, देशभक्त, शक्तिर विप्लव, सामान-सौकर और मानसता के उपासक के वीर पर उन्हीं भक्ते तृष उपावि प्राप्त की हो, लेकिन उनकी प्रकल्प-प्रतिभा के सामने बाकी सब बातें गौण हो जाती हैं।

महाकवि के तीर पर भी वे धरना मिराला व्यथिस्व रखने थे। नई कवियों की कविता-सम्पृद्धि-से, बचपन की उमर से और विचार-वीरव से हम कदाभीय हो जाते हैं, लेकिन ऐसे कवि कमी-वमी मानो हमसे फरते हैं कि हमारी कविता की अथवा देस कर हमारे जीवन में हो। ऐसी अथवा की अथवा न कीजियेगा। हमे भी प्राथम्य होता है कि ऐसी उद्योगर प्रतिभा का निवास-स्थान रूपी कवि का जीवन इतना मानसो और परमर क्यों ? जिन लोगो का जीवन उनकी कविता के योग्य होता है वेते कवियों को मने देया है। लेकिन वे इन-मिने हो हैं।

इस तरह स्वीन्द्रनाथ का विरचक करने पर भी अर्थविक पोष का अथवा स्वाभाविक हो जाता है। लेकिन अर्थविक पोष की वरुण कवि के तीर पर है, उसकी अथवा स्वाभाविकता और म.दुयोगो के तीर पर अर्थविक है। स्वीन्द्रनाथ को स्वाभाविकता मन, भागी और धर्म से कवि ही है—आन्तरिक कवि है। उनको अर्थविक देसविक भी उनकी कविता-प्रतिभा में के ही वंश ही है। उनका अर्थविक-जन्म भी, उनकी कवि के तीर पर करने जीवन में जो सामग्र्य और कथकथव के तरह मिले था,

अंतर मम विकसित करो

अंतर मम विकसित करो

अंतरव दे।

निर्मल करो, उज्ज्वल करो

सुन्दर करो दे।

जागृत करो, उज्ज्वल करो

निम्बं करो दे,

योग्य करो, निराला करो

नि-संशय करो दे।

सुख करो दे सबके संग में,

सुख करो दे संघ,

करो संविकल सब-कामों में

शान्त सुखदा उदं !

परशु कथल में, मेरा मन

निरस्तित करो दे !

अंतर मम विकसित करो

अंतरव दे !

—स्वीन्द्रनाथ ठाकुर

उपनं से हो विचार था। उन्होंने शिक्षा-संग में जो मने विचार लिखे और सुन्दर से सुन्दर प्रयोग कर लिखते थे भी कवि के तीर पर उनके अथवे आत्मक लेह पूरे थे। हाल मानत का प्राथ-लय और सामाजिक जीवन में तस्कारी का महत्त्व समझे हुए होने के कारण ही वे शिक्षा के नये-नये प्रयोग कर सके।

हमारे एक देशभक्त के आचर्य के निदधान कवि कीदल से स्वीन्द्रनाथ के बारे में जानवीन करते, उनकी स्वाभिवन एक ही वाक्य में प्ररुड की थी : 'मुझरे देश के अली में स्वीन्द्रनाथ ही एक ऐसे थे, जिन्होंने जीवन के अति उदासीनता नहीं दिखायी, उनका जीवन-दर्शन जीवन-विपुल था था।' मेम और आनन्दनाथ जीवन के यह कवि दुनिया के उद्यमि होकर एकनामके तीरकी का जीवन क्वीकर पररुड करते। उनका जीवन इतना अतुल्य सुन्दर और कलनामान था कि देसप उठमें प्रयेत ही नहीं कर सकना था। उन्होंने हाथ वरुड कर दिया है—वैराग्य साधने मुक्ति से आनन्द मय।

महाकवि व्यास के वचन को रथियान् ने अन्ना जीवन-जन्म बना लिया था—

“मयोयं श्रया-समय एव सेवना”-धार्मिक जीवन की सुरियकि के लिए धर्म, जीवन कथकि के लिए धर्म, और अन्त यथा यदुति ही सुन्दरत साहदर करने के लिए काम—तीनों सुधायो के बीच समग्रत महत्त्व होना चाहिए।

“य ऐकदेवी स तरो जगन्म”-उन तीनों सुधायो में से एक के कथि पना है और अन्य दो की ओ उपाता करना है, यह कथकथ पावर है।

भूक्रांति-दिवस का संदेश

विजयोवा

आज 'ब्रह्मरक्ष' का दिन है। आज का दिन भूदान के लिए मनुष्य का दिन है। इस आन्दोलन को आज दस साल पूरे हुए। यही दिन था दस साल पहले, जब हमको पहला भूदान मिला था। वह दिन हम कभी भूलते नहीं, क्योंकि उस दिन हमको अहिंसा का साक्षात्कार हुआ। हम परवाना करते हुए उस गाँव में पहुँचे, भूदान की बहाना का जन्म तब नहीं हुआ था। तब वहाँ तेलगाना में आतंक हुआ था। कई भूमि के मालिक बालक विधे गये थे। सबको डर था। सरकार की सेना भी बन्दोबस्त को लिए वहाँ पहुँची थी। फरोडो दपयों का सपने सेना को लिए सरकार था होता था। ऐसी हालत में हम बसते थे। वहाँ जाने पर गाँव देर लिया। सारा गाँव घूम करके हरिजन बस्तों में भी जाना पड़ा। तब वहाँ के हरिजनों ने अपने दुर हमारे सामने रखे। उनके पास कुछ व्यवस्था नहीं थी। उनके पास कुछ जमीन भी नहीं थी। उन्होंने हमारे पास जमीन माँगी। हमने कुछ, जितनी जमीन पाएते हो। उन्होंने दिखाव करके बताया, जमीन एक जमीन मिलनी चाहिए। गाँववालों के सामने जब हमने यह बात रखी, तब गाँववालों में से एक भाई ने चढ़े होकरके सो एकड़ का दान दिया।

उस दिन से भूदान का आरम्भ हुआ। दूसरे दिन के हमने भूदान-यात्रा शुरू की गयी थी के लिए। उस दिन से आज तक हमारी दूर दूर यात्रा रही है। हमने जगह-जगह पर सभाएँ दिया कि भूमिहीनों के लिए भूदान ही चाहिए। हमने कुछ जगहों के लिए यह बात पर तक चलेगी। अब तक समाजान इस धरती में बसित सर्राह है, या पर तक यह काम पूरा नहीं होगा। फिर हमने कि कहेले मनुष्य दुःखों को क्या करेगा? ईश्वर इस बात पर हम कभी कोचने नहीं। हम जानते हैं, ईश्वर कब आने देगा, और हम जाने वाले भी आने देते हैं। मनुष्य कब में अन्धता होता है और मरने में भी अन्धता होता है। जब हमने भूदान मानने का निश्चय किया, या हमने यह सोचा कि दूसरे लोग मरते हैं तो कर, नहीं चले तो मरें, दूसरों पर काम करो। ऐसा निश्चय परमेस्वर पर अज्ञा के दिना नहीं हो सकता। यह परमेस्वर पर अज्ञा हमारे अर्थ है। उनके कारण हमने भूदान मानने का निश्चय कर लिया।

यही रहस्य था। पुनरात्म निर्माण का भी करना अपना कि नृसिंहों का कोई ऐतिहासिक या पुनरात्मिक मायका नहीं है। ऐनी-वेत्तानाओं के जननकार में मरना करने वाले और धर्म के नाम पर चलने वाले मरने वाले मायावादी में अधम-आधार के बने वाले हमारे देश के भाई-बहनों के लिये ऐसी घटनाओं को ही रोचने वाली होनी चाहिये। आये दिन तथाकथित वेत्ताना वाद्युओं, पत्नीयों के पाठ-पठनों व्यवहारों तथा पुनः-मेवे मन्दिरों, धर्म-संस्थानों आदि के रक्षकों का भ्रष्टाचार होता है। लेकिन अज्ञान-यज्ञ होता एक वास्तु प्रसार के पीछे के घिसार होते रहते हैं। रोग-मुक्ति, लम्बान-मिच्छा, अक्षय्य कार्य की लालसा, ईश्वरान में पास होने, नीकरी मिलने, धारी होने आदि अनेक इच्छा-आशाओं की पूर्ति के लिये मन्दिरोपमाँगी जाती हैं। धर्म के नाम पर उपाध-मिलने, पाने में पुजारी और उनके मजदूर से इत प्रसार के शर्म-स्पर्शपर का चालकनों में आये दिन के होते रहने वाले रहस्योद्घाटन के बंद भी, चले रहना लोगों की जमान, बला-नता और अन्धकार की चपल लीमा ही पतलता है। यह समाज का बड़ा संकट है। देश और समाजदार लोगों को निर्दिष्ट स्थान देना चाहिये और सही शान, सच्ची शापना तथा सधर्म-मार्ग को आसल करना एकदम को अपना कर्तव्य मानना चाहिये। लोगों का अपना अभिमान को, इसके लिये भी यह वस्तु अच्छी है कि ये जनसत्तारों के मातृक के बंध और सही अज्ञा यज्ञ के पुनारी हैं।

—पृथ्वीचन्द्र अँन

हर कोई निश्चय करे कि हमको देना है। यह सम्पत्ते हुए हम आज एक प्रश्न में आये हैं। हम कर्म के बाद हम क्यों अपना समाज देर रहे हैं। उन साल लकिते ओ गमा हुए भी यौगममरुते में, वहाँ परिवार दान मित्य, वहाँ इतने लोग नहीं थे। लोग कम थे, लेकिन काम बहुत हुआ। मजदूर एक चिनगारी प्रकट हुई। अगर हम नहीं परिवारों को यह देखे ही रह आती। अगर हम सहायते कि यह अभावक से कोई घटना ही गई तो भूदान परवाना का आरम्भ भी नहीं होता।

हर कोई अनेक लक्ष्य आये। भूदान के नाम के लिए सारे भारत में से चार-पाँच हजार लोग मरते के लिए आये। और लोगों की सहायता का था, अपना भूदान हुआ। छह लाख लोगों ने दान दिया। कोई पैसाहीन व्यवस्था करनी दान में मिली। यह कोई छोटी चीज नहीं है। किन्तु इतने से भारत की भूमि-समस्या हल नहीं होगी। उसके लिए और माँग है। हर गाँव में भूमिदान होना चाहिए। हर गाँव में भूमिदान होना चाहिए। और मरने में मिलने भूमिहीन है, यह देना कर उनसे लिए दिशाव करके जमीन प्राप्त करनी चाहिए।

हर गाँववालों को यह काम करना चाहिए। भारत के जमीन काम ही तो वहाँ से काम लेते; यह निश्चयक अर्थ का विचार करें। काम जमीन ही तो काम करना है। अन्धकार जमीन ही तो अज्ञान काम लेते। एक निश्चय करके ही जमीन को विकलाता है। जमीन के पास बला तथाकथित है, जो वह अपने-अपने को अज्ञान बिलम्बेन में मराने के पास उत्तरी संघर्ष बिलम्बेन ही उतना मुक्त नहीं है लक्षता। लेकिन उसके काम को ही, जतने से ज्यादा है। अज्ञान देता है। ही हर मनुष्य को, उनके पास काम-व्यवहार को कुछ है जतने से ही कुछ देना है। जितने पास जमीन काम है तो काम हिलता भूमिहीनों के लिए दिया जायेंगा। जमीन ज्यादा ही तो अज्ञान हिलता भूमिहीनों के दिवा जायेंगा। लेकिन

हर कोई निश्चय करे कि हमको देना है। यह सम्पत्ते हुए हम आज एक प्रश्न में आये हैं। हम कर्म के बाद हम क्यों अपना समाज देर रहे हैं। उन साल लकिते ओ गमा हुए भी यौगममरुते में, वहाँ परिवार दान मित्य, वहाँ इतने लोग नहीं थे। लोग कम थे, लेकिन काम बहुत हुआ। मजदूर एक चिनगारी प्रकट हुई। अगर हम नहीं परिवारों को यह देखे ही रह आती। अगर हम सहायते कि यह अभावक से कोई घटना ही गई तो भूदान परवाना का आरम्भ भी नहीं होता।

हलके परिके जमीन दान में मिली है, लेकिन वह और के लिए मिली है, मरिचियों के लिए मिली है, मरों के लिए मिली है, बचपनों के लिए मिली है। लेकिन मरिचियों के लिए, भूमिहीनों के लिए जमीन मिले, यह नहीं मान है। एक चरके भूमिहीन परिवारों को चाहिए। और यह परिवार को गाँव एकदम बसित इत दिशाव में गाँव करोड़ एकदम जमीन की आवश्यकता है। इसलिए हमने कहा था कि हमको गाँव करोड़ एकदम जमीन चाहिए।

हमको पुत्रों हैं इतको विनते दिन छोटे हैं न कहता हूँ कि पुत्र और मैं घर लोग मिल कर के सुखर लायेंगे तो अच्छी नहीं तो देरी से होगा। लेकिन होगा जरूर। और नहीं होगा तो भी बाय को पसंद नहीं। मजदूर का आश्रयन है कि जो कोई मरुत काँ करेया उसकी दुर्गति नहीं होगी। मरुतवा मरान में दुर्गति नहीं होती है। मजदूर मरुत में, विचि बरुतवा-वृत्त बरुतवा दुर्गति तात मरुतही।

हमने वहाँ दलकैय शरत एक जमीन मिली। उनको से दस लाख टाट जमीन बंट गयी। कड़ी की जमीन परि-परे देतेगी। जो बन्दे जमीन एक दे वर देतेगी। अर नहीं देनी एक मरुत परे है। मरुत नहीं है—पुत्रा लुप्त है। पर टीक है कि गाँव फरिद जमीन छोड़े बात गावरा होती है। लेकिन सच यह है कि काम चले के काम लेना। अभी तक

विना काम भूमि है पर निराशावन्त नहीं, आध्यात्मिक बात है।

जमी तक भारत में जितनी भी पत्ती के बरिये उस बात को क्या जानी जमीनी भी नहीं देती है। बरिये जमीनी है, भूमिहीनों को जमीन मिलनी चाहिए। पी. ए. पी. बन्धुमित्र और जयन्त बरुतवा है कि भूमिहीनों को जमीन मिलनी चाहिए। और सरकार भी वही है। भूमिहीनों को जमीन मिलनी है। लेकिन सतने विन करके भी मरती तक इस बात पर जमीनी भी भूमिहीनों के लिए नहीं है। हम जानते हैं कि हिन्दुस्तान की परामनी पाठियों और परामनी सरकार निक करके ही इस बात मरि है तभी और मरुत से इस लान मिल गयी।

इसलिए वह निराशावन्त है नहीं, लेकिन जलाहर्षक और आध्यात्मिक है। हमारे देश में हमने कभी निराशा का अनुभव नहीं किया। हमने देना कि भूदान में जितना परिभव हमने दिया, उनसे ज्यादा यह परमेस्वर ने हमने दिया। मरुत बीरना जमान करके तो मजदूर बहुत ज्यादा कष्ट देता है। इसका पूरा अनुभव भूदान-यात्रा में आता है। बाय ने और उसके बायियों ने जितनी मेहनत की उसके ज्यादा पर हमने मित्य। यह दिशाव करिये कि वहाँ के दिशने लोगों ने अभी तक दान दिया है। यहकरवा देव वहाँ आये थे तब रो-आदि दिन कुछ मित्य था। अभी हम आये हैं, तो कुछ काम ही रहा है। दस वर्ष में जितने मरुतों ने जितना और लगाया। उस दिशाव के भी काम हुआ, उनका बहुत काम पाठ मित्य। आज के दिन हम मजदूर के पास जितना से प्रार्थना करते हैं कि वे प्रभु, प्रभुने इनको कभी निराश नहीं किया है, जितना काम दिया उन-पत्तारा पत्त ही हम अपने-ही नहीं हते। लेकिन इतने अधिक अधिक है और मरि बायियों को अधिक ध्याओ। जो अभी तक हमारे साथ नहीं हुए, उनको हमने गादी नीके प्रेषण है।

(परमसुख अरुण, १०-११-१९)

सर्वत साहित्य मंडल द्वारा प्रकाशित
अहिंसक चर-चर का मासिक

●
●
●
●
●
●
●
●
●
●

जीवन-साहित्य

संपादक

हरिभाऊ उपाध्याय • यशराज जैन

बहिष्कृत मूल्य: चार रुपये

सहायक साहित्य मंडल, नई दिल्ली

हृदय धरो को एक प्रासिक्य होती है। हर व्यक्ति में कुछ विशेषता है। हर समाज-सम्मेलन, अथवा उसमें कुछ भी जान हो तो, वह अपना विशेष पैगाम देता है। आद्य में जो वेदबद्ध सर्वोदय-सम्मेलन हुआ, उसका क्या पैगाम था ?

जय गद्द पैगाम का एहसास भी आसान तो नहीं है। अनुभूति और संवेदना जैसे अलग-अलग, तबबीर के जैसे अनेक पहलु, जैसे समाज-सम्मेलनों में से अलग-अलग को विभ्र-विभ्र पैगाम मिल सकते हैं।

फिर भी एक लहमा आता है, जब कई दिनों में बक्सर एक ही पूँज होती है। हजारों नकरो में किसी एक थाप एक ही रानी आ बसती है। कई दिनांक मजी-कमी एक वकत एक ही तरह खोबते हैं। सो खाने एकमत हो जाते हैं। इसलिए समाज-सम्मेलनों का अंततः बनें पैगाम ही ही रहता है।

सर्वोदय-सम्मेलन का पैगाम एक सवाल के जवाब में सो निकलता। हजारों लोग सम्मेलन में आये। नजदीक से दूर आये। दूर-दूर से भी छांटते आते आये। छोटे आये, बड़े आये। धानी धनुषध में फल, बेकिंग उमंग से भरे, प्रयान आये, धनुषध से भरे और सारा ही जोरा को समाज से साथे हुए जुगुनो आये। अनेक भास, एक ही रूपा आये, लेकिन एक ही सर्वोदय की लक्ष्यतावाले सैनिकों, हजारों सांख्य-सैनिक, जोषकेबद्ध, सचोदय-सैनिकी भाई-बहिने आये। विनोया नहीं आये, रस आकारों के साथ कोर इसके आबन्द आये।

मेले में हाने, बड़ होक। तिरफे मेला नहीं था, वह भी सब आने ही है। इतकिते को भी और रसत लज्जे से भी आये, एक अमात्र है। काले काले हुए हजारों दिनों के समूह में कीमती हुकान को बन्दे हिनोरें के एही था ? सोर रहे रिवाजों को सखित से कीमती नहीं बचत का रोप था ? छह दिन, सोम फिर वा आकारों एक दिन सभ पड़ने, लाल सभने, हाथ डेउने, साध बाँचने, कष्ट-काम्नाइस करने के साथ संबंड़ी हुकानों के दिनों में क्या बात रूठ गयी ? और उन दिनों में क्या बात चकनसी एही ? इन दिनों और दिनों को यह बात, वह विचार विजु, वह सखित सभ-कोष ही सम्मेलन का पैगाम माना जायगा। ? ही समाजों का वह लज्जा ही सम्मेलन का पैगाम है। सर्वोदय का इस साथ का लक्ष्य है।

कार है कि दिव-दिवालों में अन्धने काले यह सभ खलिक हनते, बिकर दिक्कने हाने और सज्ज रूप पड़े काली यह बात, एते मया, एते कर्म, एते विज्ञान, एते भीषां वषां व बातमाली का कुछ परिणाम प्रकृत करने प्राये। यह बात ही सम्मेलन का पैगाम है। सच अभिनेत ही वो सम्मेलन की हैउर, इनकी वषाओं में जिन्होंने भी भाग लिया, उन सन्तो दिव-दिवा के रोह-रज्जे, उन सन्तो एत अभिवृत्ति रस आदुय हनी थी। बसत बसत पर आखिर भी होती थी, कि विचार हाना ठीक है, एतक अगदिष्य है, लेकिन सखित लक्ष और प्राप्त पयोगी है।

विनोया में होक उदेता मेजा कि अपने वान मया कोई संदेस नहीं है। भूदान का विचार रहेगा है। उनकी पर-कर आने नहीं रहेगा है। लज्जा लज्जी एत से लज्जा संदेस है ही रहें ? सेवे को भी अनुभूति ही रही थी उसी में काली कमाओ की उम्र आ कि संदेस बुद्ध रिरे तो। उनको ही रसत मत कहें। उसे समझे ही हो उन सन्तों की धार्यार्थ का एतक प्रकृते। काले, जोर-बोर से चनी और काले।

सिरे के भाई-बहिने से सेवे के सेवे के नजर में बड़ा कि हारी हुकान सभना तो गाई-निवाये से सामने रख रिण है। विशान को दोन से परिस्थिति सेपाठ करने के साथ स पैगाम को उभार कर, सिम्तन की रसत के तौर पर उभार अखुरी में लिख दिण है कि परिवर्तन के िण आर और अभी तकके स्याद अनु-कृतार है।

से गहर की, सचों और की, दर-दिनांत एक और ही संदेस रहती है। सच भूदान-सच, सुककार, १२ मई १९

धोड़े में क्या बात तो भूदान, काउ-केता और लोकनीति, वे तीन हक वाद सच-अभिनेज सय सम्मेलन में चोपने-विधा-ले, बहल-सचों करने, कार्यक्रम विवर करने कौद के सिद्ध केन्द्र-निजु है।

भूदान एक विचार का, एक बरं कर्म-अभियंत्रण का, पुणने सध्यों की बर-कले व नये मुण्यों की स्वयंका का प्रतीक ही गण्य है। उस वर है इति इति, उस एतों पर वे बसत हते या गति योजी हुई, या उन एतों को लांग, बीच के रिने की यह रिने टीक नहीं आने। सभने यह अनुभव किया। उदे बहल हने भी जल्लत बनने सामी। विनोया में विचार के सिद्ध हने उदेनी को फिर से खने का साथ 'धैरा में कदा' का विचार। दूबरे के में में उन्नाय वनन पर सय पुण्य जुष्ट हो सकना है। हैइन भूदान-सभना के हल और सभने के सखितिक के मुण्यों में बड़ मुल के परिणाम के लिए हल, सिदने में छटे किमु मारी सभावाच बाते, प्रोगाम को काली बाने व बलने बाने की बखल है।

विचार में भूदान का धनी 'धैरा में कदा' आन्वेषिक वा नजर बसवेद ही था है। विभिन्न प्रदेयों के साधियों विचारियों को उदेके सिद्ध आकार है। उस अकार का लक्ष्य था अपना व उन्नाय उदर मिल है। हर प्रेय के साधनिक से प्रदेय हल तक के सधनों को हलने सय दिकी सवे देने की रंटे से विचार करना और निहार सर्वोदय-सज्ज के लक्ष्य कर अन्वेषी सच सभियों को यही बाने के सिद्ध प्रेय बना चाहिए। हर प्रेयार हर प्रेय में भी जरी बेश टीक और सुखनिक उदर सच में सधयण, मौन-मौन से लक्ष्य कर के खरिने हल काउंटेस को एत उरना चाहिए।

आर और की भीतर-बाहर की परि-स्थितियों का लक्ष्य है कि धनी मेवा का कार्य रहे। नष्ट सन्विकल धने। नष्ट सवकार ही। वह हुकान ही और उणक सुखनिक विचार है। धनी-मेवा सच की उदेक, धनी-मेवा के योग-धेय, उनसे बखल सच, आधारी परिस्थितियों के विषयक में उनके लक्ष्य वेगदण, हान्यन्त सभ में उदरध-मन

के सदमें निरिचत व शर कार्यक्रम, सभाधारण परिस्थितियों की सुगम-रानी और सभय पर उन पर काडू करने की वेपारी व प्रकृति, कौद के साधन-निवाय और उत पर सधयार्थ आचरण का और-दोहा बनाना चाहिए।

विद सभान नये मुण्यों को नर लव अही मान लिया है और अन्ते लग से फलत हुमा भय-सुता को कुछ बला का बह है उभने वेतार हीकर भी उठु कार्य नहीं हो सकता।

इहें रक पर और लय-सय ही सेमालते रहने के लँद मगति हो ही भी नहीं लगती, गति कर्म भी लक्ष्य है। यह सीक है कि पुण्यनीति लक्ष्णी के प्रौर अगवृत्ति की परिस्थितियों सभ नहीं हो सकती और सभान नये मुण्यों की सधय-यत को बुर नहीं कर सकता। लीकन नर लव अन्वेषनिक है। अधिकव अर्थ में निचा और परिणाम अलम अलग मल, बलिक सभिया लख है। स्रथि व परिचरन को धरितारंप करने गाली है। इसलिए धारी वरक को लोच-लख को प्रभावित करने वाली बडयार्थ, परिस्थितियों, बीबामार्थ, कार्यक्रम आदि उन पर अमर प्रकृत है, उदों भी नहीं रिणा दे देने की जलज्जे है। यह पवनाती रण का आगामी युवानों के विचलित में हो या सारी-सामे-गौर आर्य के कार्यक्रम में, अपना निगम-कार्य आर्य के प्रगत हो, लीक-लौकन बहों है बही सउते नये हजारों लय की और बड़ने, उठ कर बडने के लिए उदरध करना हीक। नल-नवी की सेमना, उदरधि विवाचाल, उधनी लखना व सधयार्थिता का समाज-धानका जादय होनी चाहिए, ताकि हर काम व परिणाम में हररक अन्ना हक सखित करे, उणक अन्ना विम्व सभने और अनुभव करे कि उचरोलत उदे ही बनने है, उदे ही सुकणता है, उदे तर ही विगणतः या हो बनना है।

हर विचार वा विषय कार्यक्रम से पैगाम के सदमें देत के साधन-सिंघेण, साथ गोर से टोक-सबोती, साधनिक सरोदय-सधनों व उदकी विचर, प्रेय अर्धि कर को इकरारी की अन्ने-आने उदकी की परिस्थिति व अनुकाला और अन्त एतिक, सकार्य, सधनों के अनुभव करों को सउदय कराने-सानी अनुभव। उनेके अनुभव कार्य करने की सधेनी काली चाहिए।

सरकार आचकारी की नापाक आमदनी छोड़े !

भोतीलाल केजरीवाल

पंडित रामचन्द्रम चतुर्वेदी मलयगुजर (सुंदर) ने कलामो पर वर ३० जनवरी से हो 'विशेष' कर रहे हैं। वे सन् १९२१ के अख्योप-आन्दोलन (स्वाधीनता-संग्राम) के बाद जब लम्बे-वर्षों की साकार करने के लिए जो-नाश वे लगे हुए हैं। इनके दिल में इस बात की सीध है कि पुराणोपासकों के युग में राष्ट्र में गांधीजी के नेतृत्व में जो उदय किया था वह अब तक पुराने नहीं हुआ है और गांधीजी का पवित्र नामो-स्मरण करने इच्छित होने वाली इस सरकार ने आचकारी की 'नापाक आमदनी' को अपने सज्जानों में रखा करते रहने पर वृत्तित कार्य छोड़ा नहीं है। बिहार के मालगुजर गहर में 'गांधी-सन्देश' नामक पत्रिका १५ जनवरी १९२१ तक प्रकाशित हुई है, यह, एक तक उसके द्वारा श्री बन्धुकर एवं परम शरीकों से उन्होंने अपना मार्गदर्शकी की काम करते रखा।

पत्रकी १९११ के आरम्भ में कुछे चतुर्वेदीकी वाक्य पत्र मिल, जिसमें उन्होंने इसी मूल्यत किया था कि राष्ट्र की निरोध (सिध-३० जनवरी, १९११ से उन्होंने मालगुजर की बलाही पर आन्दोलन निरोधक का कार्य प्रारम्भ कर दिया है। अतः अन्त प्रमदल-निचारी को उन्होंने एक नव लिख कर आचकारी की दे ही थी कि वे उक्त पत्रन सिध में दिन में ५ बजे से ५ बजे तक साप्ताहिक प्रकाश की सिध से निरोध करते। उन्होंने यह भी लिख दिया था कि जैसे-जैसे उनके समर्थकों को हटाया पड़ता, आपकी जैसे-जैसे उनके इस निरोध-कार्य का समन भी बढ़ता जाएगा।

भी चतुर्वेदीकी का यह पत्र पार मने गहन चुकी और उकार हुआ। जिसे वे यह सोचा कि मागमन प्रथम का यह एक सामयिक उदय मिला है। इसे उन दृष्टिने दिती की पत्रन स्थिति हो आयी,

है। अतः जब हम आचार हो गये हैं, सरकार को अपना पुराना करना चाहिये और आचकारी की नापाक आमदनी को छोड़ने के लिए तैयार हो जाना चाहिये। इससे लोगों का

के रूप आदेशों को क्यों चुनचुटी है! नया देश कर राष्ट्र के पुरुषार्थ और आशा की कृषि-वृद्धि करने है। चरले और भागीदारी को ईश्वर उधार वसन्तसे लिये गांधी के उद्वेगों के विरुद्ध नाव के कर्णों और हृदय प्रियों की कृषि नाच करती है।" यही शाला है कि वह निनीन हाथ स्वामित्व विचरन के पाठ

के रूप में अग्रत मिलने जाने पर भी भारतीय राष्ट्र-संवेदन नहीं हो रहा है। अतः बलात हुए हमारी ही चाँदिये। स्वामित्व-विचरन के हमारे आशयों के साथ ही उद्वेगों के प्रतिपत्ती भी प्रति से हमें कुछ करना ही चाहिये। नया-जोरी के विरुद्ध अभियान चलाना हमारे आदेश्य की उल्लेखना देगा। मीठे धाम में मलयगुजर में आरम्भ किया हुआ यह कार्य एक छोटे से, विम्वु हृदय के रूप में है, जिससे सुदृढ़ आन्दोलन कभी महान् रूप लेगा। देय के शुभचिन्तक चाँदिकर्ताओं को हम और पत्रन दिती चाहिये।

['सचोदक सचार्द' से]

शरावन्दी आन्दोलन के अनुभव

३० जनवरी १९११ ई. अन्ते गौर (मलेपुर, सुौर) में हमने टांग की दृष्टान पर निरोध करना शुरू किया है। इन्हीं मिलने में हमने एक माग-पत्र पर गौर के लोगों के हस्तक्षर सभ्य करवा भी शुरू किया कि मलेपुर के बजाली हुए हम ही आप। इस माँग पत्र पर गौर के सुदिया, अरपच, पुर और पचापत के तस्वनों के भी हस्ताक्षर लिये गये। गौर के एक एक ट. ने भी, जो पीठे सहयोग सचिव भी हो गये हैं, इस पर हस्ताक्षर किये हैं। इस माँग-पत्र पर हस्ताक्षर करने में किसी ने भी यीही भी आग्रह नहीं की, केवल एक व्यक्ति को छीन कर। यह कसब तालने हैं कि समाज का सद्गुण दौलत रखने के लिए पीठ, चतुर्वेदी और शराव भी चाहिये।

उन्ने एही भी पत्र यह है कि गौर के प्रा. वही भी विचरन में हस्तक्षर किये हैं। सुवी अरद में ऐसे इन भाइयों ने कहा कि दृष्टान अन्त इन्हीं चाहिये, जिससे हम निरोध से मिलें, पर अन्ती पीठी तो रीयाने से पत्र बन। किन्तु हम खुद करते हैं, उनकी पैरी जैसी भावना और दूरदर्शिक है।

अन्य के हितकर भी जाने रहनी है। जिन शराव के लोग की शराव पर निरोध करते थे, उनके उच्छ्वस्वों को भी हमने शांतिपूर्ण तौर पर पीठे देखा है। हमारी विरोध के बारे में हमारे गौर में एक मिले-जाल और निरुत्सव पर आभाव हुआ। पीठा हुए है, सजजनक है, सामयिक अनुभव है, यह फिर से लोग सज्जने लगे हैं।

हमारे भाई जो एक साहस-पत्रक विचरन के हाथ पर चढ़ाये हैं। पर अनुभव उच्छ्व आघा। हमारे निरोध-कार्य के करने अधिक प्रसक्त लोग-बारे चार्ड ही हैं। हममें जो बहुत कोषी माने जाते थे वेद होने और वेचन पर उन्हीं हमारे देर भी हुए। मान्य-पीठाओं को अपने ही बात लिख चुके हैं। हमें मिलते मिले है कि कुछ नामी पीठे लाने में बरा है कि साथ जो पीठीय बहुत अन्त कर रहे हैं। एक एक ही पीठाले नरनुपक ने हमसे ही कहा कि उन्हीं पर काली हस्तक्षर, तो हमारी भी उन्हीं में कुछ बनवा है।

पीठे-बाबो ने हमसे कहा कि आघात परे हुए कर नहीं पीठे की कल्पना तो सा से, पर हम अपना पीठ पूरा नहीं कर सके। यह करनी जर हमारी नरक में आयेगी वा इन्की वा भी आयेगी हम अपना शराव रोक नहीं सके। यह काली देरी तो हमारा पीठा सुदृढ़ नहीं सकता। हमारे यह काली तो-बारे। यह एत हमें गांधीजी की जान बूझ आती। २५ अगस्त '१३ के 'हारक' में उन्होंने लिखा था— 'पीठाले को उलाने के लिए उन्के दृष्टाने के पाठ ही शराव की दृष्टान जन वर रहे हम उनसे कुछ कह नहीं सके। यह तो उनी तरह निरुत्सव होगा जैसे कि किसी-किसार करने के ही नहीं, शराव के भी नामने निरारं पीठक कर कर ही बाव और उन्के नहा जाव रहे मत सुना।'

—रामचन्द्रम चतुर्वेदी

बिहार के भूतपूर्व आचकारी मन्त्री श्री जगन्नाथजी चौधरी, जिन्होंने राज्य-सरकार के द्वारा तदावधि लागू नहीं करने के कारण मन्त्रिक से स्वीकार वे दिया था, श्री रामचन्द्रम चतुर्वेदीको को अपने २९ अप्रैल पत्र में लिखते हैं :

"..... जब से आपने बहाली पर विरोधिंग करना शुरू की है, तब से मैं बन्दूक बस लोके में रहा हूँ कि सरकार क्या करने वाली है। 'दूरान-यज्ञ' से समाचार पाया था। अभी तक आपकी बहाली या धन्यवाद नहीं रहे पाया है। कभी क्या कहूँ? हृदय अपना काम करता है। मैं १६ मई १९११ को दृष्टान देते से बाईसा और विरोधिंग करूँगा। भगवान से माँगना करता हूँ कि आपका प्रयास सफल हो।"

अन अनेकी दाव के बन्देदा भरे जमाने में नापाकनी करने की निगार से हम लोग पार एव विदेशी कर्णों की दृष्टानों में विरोधिंग किया करते थे।

मैं बंदूक काफे भी एक सामयिक और साहित्यिक कार्य प्रस्ताव है और मुझे कुरी है कि भी जगजगत् राष्ट्र में भी जो कर्णवीरों को यह निश्चय कर उनके इस कारण का अनुभवना चाहिये है।

है, मुझे कुछ भी है, कर्णिक यह निरोध-कार्य हमें ऐसे अन्तक पर चलन पर रहा है, जब निराह की दुःखना एक ऐसे पालिक के हाथ में है, जो गांधी सेवक का पुत्रान एक निरानान सदस्य एवं वार्धकरी था।

आली हत्या के ३० दिन पहले अगस्त १ जनवरी, १९२८ को दिव्य की आली एक प्रायोजन-समा में आपन करते हुए निमित्तलिख उद्गार धारू में प्रकट किये थे।

"सुसिद्ध सन् १९२० से शराव-बन्दी चाँदिये के कार्यक्रम में स्वामित्व

बहुल वहा की योग्य है। हमारे शिर पर कदा का चढ़ी रहता है।"

स्तनन्ता हमारे देव के लिए ही नहीं, किन्तु सकार के सभी धारित, निरिध और दस्तिये करने के लिए यत्नान लिख चुके हैं। भारत के स्तनन श्रेष्ठों ने बाद सकार के सभी पत्राण-श्रेष्ठों ने केवल आचार्य ही नहीं ली, किन्तु लाल लोक बर लगे ही गये। दुखे देखों की बात तो नहीं कह सकना, किन्तु हमारे देव में हय-बन्तान के साथ ही 'आल' ने भी हमारे दिवने में मदद कर लिया है। अन्तर्गत के साथ एक मन्त्रक सुदृढ़ भी हमें या गयी। देय भी जलता जाव हमनी पत्राण-श्रेष्ठों आघा इन्की सकार-प्रस्तावनी को मणी कि अपने बरने के गते हुए की साव करने के लिए भी यह आये के कुछ नहीं करती। सरकारी अधिकारियों के चरणी में केवल दिवनेन करते अपना देय प्रकट कर देने में ही अधिकार का सावक यह गया है और यह जगह है कि अपना जलान में आनी ली सकार से यह घटने का भी सावक नहीं रहा कि "दे-हमारे ही वीरन तथा धर्मिक से गठित सकार। व. गयी

चम्बल घाटी क्षेत्र में श्री नवकृष्ण चौधरी

सुधारण

अखिल भारत सर्वे सेवा शपथ के नवनिष्ठित अग्रदूत को नवकृष्ण चौधरी का पहला दौर चम्बल घाटी क्षेत्र में हुआ। शपथ पोखरे किसान इन्स्टीट्यूट प्लांट में आयोजित परिवारवाद में जाया लेने के बाद २६ अप्रैल की रात्रि को ग्वालियर आये। वहाँ से दूसरे दिन, २७ अप्रैल को मुराना जिले के करवा बन्साह में आपने अथवा हनुमती नवने चम्बल घाटी क्षेत्र में शान्ति के लिए वृत्तसकलन कार्यक्रमों से लगभग २ घण्टे तक विचार-विनिर्माण किया। आपने कहा कि इस क्षेत्र की परिस्थिति बड़ी जटिल है। यहाँ की समस्या के लिए काफी धैर्य और लगन से काम करना होगा। सामयिकता को कठिनतापूर्वक प्रयास के दुर्बन्धनार को घटानाए सुन कर आपने निता प्रष्ट की और उसके समाधान के लिए उच्च स्तरीय तयार करने के लिए कहा। पर आपका दिक्कत मानना रहा कि यहाँ हल तो जनता के निज के अधिकम से ही संभव है।

रात्रि काड़े आठ रने आपने अन्वह में दिगम्बर बैन मेले के प्रति सम्मेलन की सम्बन्धता की। आपने शपथ इलाहाबाद के भी सुप्रसंग्य भाई भी थे। उनके तथा भी अनुसूचित निराल के भागन के बाद आपने भयनाम महावीर की दिगम्बर मूर्ति को देखते हुए कहा कि आज का सवा मानविकता का जीवन है। उपाधियों के रहित होकर शान्ति कासा और नैक जीवन रिहावे। मैं पत्नी-नील कास सवा माया रने का काम करता रहा हूँ, पर अब मानता हूँ कि शुरू से कुछ होने वाला नहीं है। केवल अल्पकाल देने के लक्ष्यो से काम आगे चलने वाला नहीं है। अतः तो वष मुनना, मिटना-हुलना और बहोई क्या चलता है, यह समझना ही मैं अपना काम मानता हूँ और सभी के दिल इनी स्थिति में विनागा चाहता हूँ।

चम्बल घाटी क्षेत्र के कार्यक्रमों की निम्नता सुनी से स्वीकार कर देने और अन्तर रने चम्बलघाटी क्षेत्र में शामिल होने के पहले अनवर पर प्रसन्नता प्रगट करते हुए कहा, "भरे माता पिता दिव्य हैं, उचितिये लोग कुछ दिव्य करते हैं, पर मेरा परिवार तो मानवता में है। यहाँ जिंदगी में मुझे मानवता का दर्शन होता है। मुझे के साथ मैं अपने को पाता हूँ। महा-वीर तोमर दिगम्बर हैं। दिगम्बर मानव ही क्या मानव है। सुनिगा के विभिन्न देशों में सवा-सवा ही पीढ़क चलने वाले हैं, योरे धर्मस्थलों की पीढ़क अलग, सुलक सभी की अलग, दिव्य ही अलग है। पर इन पीढ़क के अन्तर इन सब केवल मानव हैं, यहाँ दिव्य सुलकअन और ईश्वर का बर्ण होता है। अहिंसा का सिद्धांत अति हीम है। भारतीय सुप्रान सम्प्रदा के इन अहिंसा का मानव-जीवन में स्थान पाते हैं। उसमें एक अहिंसक सम्प्रदा का पित्र निष्ठा है, शिक्षा सम्प्रदा भीमनदीरों की और हठम्य की सुधार है। उसमें किले, युद्ध आदि का और हठम्य के अर्थो यहाँ का बर्ण नाम भी नहीं है। सब के भेद-भाव बहने लगे थे किले और दीवारें बनने लगी। आज कलके हर किले के अन्तर्ग अन्तर में पर नहीं है। इन्हें बनने के लिए देने चाहा आसपास के साथ अपने दिव्य में अहिंसा की बात उठानी होगी। यह बात भारत के लिए ही नहीं, परन्तु दुनिया के लिए भी सवा होती है।"

आपने कहा कि अगर सज जोग मिल कर के जाँते हो विनोजयी जाँते। इस समय नागा डेड में तीन शरिपों काम करती हैं: (१) वहाँ नहीं बनी सरकार, (२) वैदेशीय सरकार और उसकी सेना तथा (३) निजों के मेलुन में काम करने वाले विद्रोही नागा। वे सब मिल कर जाँते सभी विनोजयी उस क्षेत्र में जाँते। इन शरिप के कर्म में हाल ही में हुए केवल सही-समन्वय में लीहट दिवरेद को आपने बंद कर सुझाय और उसकी स्थापना की।

सुझाय समय सार्वजनिक काम में सहे भी सुप्रसंग्य भाई ने भी में हुए के लिए बर्णो ने-बना रहान करमा चलता है। गांधीजी ने जीविके पर रहान किया और अन्तर में उसीके लिए बर्णितन हो गये। हर्षे सप-सप ही करिनामना सुनी पदने। कोई भी काम एक-दो भिन्न में नहीं बनता। सरकार के ही बर्ण विधान हैं, सप-सप के लोग हैं। आज सबके जान-अनजान में जो काल काम हुआ, उसका सवा भीमने ही अपनी सैनारी सुझाये जाहिए।"

वेत के धार ही नवकृष्ण ने आम-सर्गनमयी भागियों की नि-प्रसक पीढ़ी कर रहे बर्णोने से भेट की। उपरमे अज्ञ विवत करूँ बर्णो है, उनका पूरा विमन सुन। एक दर सब अयोग्य परलज्ज न बने पर एक-दक सुप्रदा चलने अपने और एक से कुछने के बाद फिर कोई तथा सुप्रदाय बूट करने आदि की लते सुन कर आदरे बर्णोने से इस सम्बन्ध में एक निरुत्त सचम्य विचार करने का अनुभव किया।

दोपहर बाद आसपास मगर में काम कर रहे सही-समन्वय-कार्यकर्ताओं की बैठक में आपने हुए कार्यक्रम का परिचय प्राप्त किया और उनसे सुने क्षेत्र के न्याय पर प्रसन्नता प्रष्ट की। मूरान-आन्दोलन के दर नने के बाद आज कारी महसूस के साथ लोक काम करने और शासक की बहुत जकसत है।

आपने कहा कि अगर सज जोग मिल कर के जाँते हो विनोजयी जाँते। इस समय नागा डेड में तीन शरिपों काम करती हैं: (१) वहाँ नहीं बनी सरकार, (२) वैदेशीय सरकार और उसकी सेना तथा (३) निजों के मेलुन में काम करने वाले विद्रोही नागा। वे सब मिल कर जाँते सभी विनोजयी उस क्षेत्र में जाँते। इन शरिप के कर्म में हाल ही में हुए केवल सही-समन्वय में लीहट दिवरेद को आपने बंद कर सुझाय और उसकी स्थापना की।

सुझाय समय सार्वजनिक काम में सहे भी सुप्रसंग्य भाई ने भी में हुए के लिए बर्णो ने-बना रहान करमा चलता है। गांधीजी ने जीविके पर रहान किया और अन्तर में उसीके लिए बर्णितन हो गये। हर्षे सप-सप ही करिनामना सुनी पदने। कोई भी काम एक-दो भिन्न में नहीं बनता। सरकार के ही बर्ण विधान हैं, सप-सप के लोग हैं। आज सबके जान-अनजान में जो काल काम हुआ, उसका सवा भीमने ही अपनी सैनारी सुझाये जाहिए।"

वेत के धार ही नवकृष्ण ने आम-सर्गनमयी भागियों की नि-प्रसक पीढ़ी कर रहे बर्णोने से भेट की। उपरमे अज्ञ विवत करूँ बर्णो है, उनका पूरा विमन सुन। एक दर सब अयोग्य परलज्ज न बने पर एक-दक सुप्रदा चलने अपने और एक से कुछने के बाद फिर कोई तथा सुप्रदाय बूट करने आदि की लते सुन कर आदरे बर्णोने से इस सम्बन्ध में एक निरुत्त सचम्य विचार करने का अनुभव किया।

दोपहर बाद आसपास मगर में काम कर रहे सही-समन्वय-कार्यकर्ताओं की बैठक में आपने हुए कार्यक्रम का परिचय प्राप्त किया और उनसे सुने क्षेत्र के न्याय पर प्रसन्नता प्रष्ट की। मूरान-आन्दोलन के दर नने के बाद आज कारी महसूस के साथ लोक काम करने और शासक की बहुत जकसत है।

आपने कहा कि अगर सज जोग मिल कर के जाँते हो विनोजयी जाँते। इस समय नागा डेड में तीन शरिपों काम करती हैं: (१) वहाँ नहीं बनी सरकार, (२) वैदेशीय सरकार और उसकी सेना तथा (३) निजों के मेलुन में काम करने वाले विद्रोही नागा। वे सब मिल कर जाँते सभी विनोजयी उस क्षेत्र में जाँते। इन शरिप के कर्म में हाल ही में हुए केवल सही-समन्वय में लीहट दिवरेद को आपने बंद कर सुझाय और उसकी स्थापना की।

सुझाय समय सार्वजनिक काम में सहे भी सुप्रसंग्य भाई ने भी में हुए के लिए बर्णो ने-बना रहान करमा चलता है। गांधीजी ने जीविके पर रहान किया और अन्तर में उसीके लिए बर्णितन हो गये। हर्षे सप-सप ही करिनामना सुनी पदने। कोई भी काम एक-दो भिन्न में नहीं बनता। सरकार के ही बर्ण विधान हैं, सप-सप के लोग हैं। आज सबके जान-अनजान में जो काल काम हुआ, उसका सवा भीमने ही अपनी सैनारी सुझाये जाहिए।"

वेत के धार ही नवकृष्ण ने आम-सर्गनमयी भागियों की नि-प्रसक पीढ़ी कर रहे बर्णोने से भेट की। उपरमे अज्ञ विवत करूँ बर्णो है, उनका पूरा विमन सुन। एक दर सब अयोग्य परलज्ज न बने पर एक-दक सुप्रदा चलने अपने और एक से कुछने के बाद फिर कोई तथा सुप्रदाय बूट करने आदि की लते सुन कर आदरे बर्णोने से इस सम्बन्ध में एक निरुत्त सचम्य विचार करने का अनुभव किया।

उस दिन रात में जब हम खिलार पर लेटे थे—आकाश स्वच्छ था, तारे चमकते थे। सृष्टि शांत थी। रात में कौची ग्याह्-साड़े ग्याह् बजे नौद खुली, दरवाजे और खिड़कियाँ सड़-सड़ आवाज करती थी और बादलों की जापठ में टक्कर हो रही थी। उसकी आवाज तो ऐसी होती थी मानी पहाड़ बह रहा हो! बिजली तो धाप-धाप में नृत्य की शक्य दिवाली रही। खिड़की के बाहर नाचियल के पेड़ बिजली के उजाले में स्पष्ट देख रहे थे। जोर से बर्षा आरम्भ हुई। उपर वा छत टोका का था। उस पर बारिश हो रही थी, उसकी आवाज में लगता था मानो पत्थर बरस रहे हों। दरवाजे और खिड़कियाँ बंद की और नमक बोध कर फिर से सोने की चप्टा की। पता नहीं, वह आतावरण शांत हुआ। सुबह तीन बजे यौतम की बंटी ने जगाया। बान्वा के कमरे से गीता के 'विश्वरूप-दर्शन' के स्वर सुनायी दे रहे थे। कमरे के बाहर पांव रसा, बिचब था, चन्द्रमा बादलों में छिपा था। ठण्डी हवा थी।

दोस्र बार बने बान्वा के पीछे-पीछे सन्ने चल्ना आरम्भ किया। बादलों का मूल्य फिर से गुरु हुआ। जोर से हवा बहने लगी। चलते-चलते 'दुर्गावर्ष' का पाठ हुआ। बारिश की बूँदें भी बरसने लगी। हदय तो बान्वा के पीछे-पीछे चल रहे थे। आखिर हवा का जोर तो बंधा गया। बाल और यौतम के हाथ के सल्लतेन मुक्त गये। सृष्टि पावन बनी थी। चारों ओर घना अंधेरा था। जिसने ने जगं जलाये, बरस ने बहा—'एकलव्य गहो हे'। 'आज और यौतम के हाथ एकत्र कर बाबा चल रहे थे। बाबा ने हाथ कम्बल ओझा, चारों विस्तारें अग्रचरणवध थी। ऊपर भी सब जला ही जला। सर्वत्र एक ही रंग था—'चन्द्रमा हल।

दोस्र बार ने जैनी अज्ञान में गुरद्वेज का भीत आरम्भ किया—
 भूषण भस्म हे—भोषण करो बभन, त्व भोषण करो हे।
 प्रभु भोषण करो भय, सब दीप करो हे त्व—
 विमिर रात्रि अर्धयात्रा—
 समुच्चैः हव बील बीप हुलीया वरी हे—

घना, गुह्य, गीता सब साथ दे रही थी—'विमिर रात्रि अर्धयात्रा' मानो गीतलद्वी उक्त मेसार्थना के साथ स्वयं कर रही थी। यहाँ वा जोर बढ़ा। गीत गाने हुए स्र आगे बढ़ रहे थे। बंदा मर स्र तख चलने रहे। फिर थोड़े-थोड़े हवा शांत हुई, यहाँ का जोर कम हुआ। पदान पर लुचते तख रिम-रिम बने ही रही थी।

अभी नौगर्भ मिले में गया हो रही है। अलम प्रेक्षा का वह तीव्रता निहा है। इस मिले की विचोला यह है कि अज्ञान के महापुरुष का चरित्र का उन्म-रूपान इस मिले में है। वृद्धि बस यह है कि वह जिस गामीनी के नाम में बहसहा अग्रह रहा है। विनोबाजी हलका विक्र के अर्थ में बोलते हैं, 'एक हीना काली के अन्तर्गत् आदिगण परमत्र करना होना।' ईश्वरदेव का वह जिला है, हलएव आप पर विरोध किमेवारी आती है। पुराने इतिहास को कहानी कब कब सुनायेंगे। यह भूदान, जिहा सेना भी गामीनी का ही काम है। हलमें भी आप अग्रह ही जायेंगे। ईश्वरदेव को आनन्द होगा, देसल निव्य और भय का भावभी बनना होगा।

हलमें ही नौन-वार गौर एंटे वा बड़े मिले हैं। गौर के अलत यहाँ बूढ़े हैं। यहाँ के सानने हीजा का आनन होता है, शाप-मुचण, लिपागीला। अज्ञान में मोनिया गुलन, वा कंच हरर के रंज-रिगो पूल दीरते हैं। आठवे में सुगरी तमा बारिद, कदल, बेला तमन ॥ दो-तीन मार के पंज भी होते हैं। अज्ञान के सानने भी का बर उरके अन्त-अन्त्य किम के ररे नये होने हैं।

जब से यह जिला शुरू हुआ है, जॉसे एफ भंगल हर मरु-नरीय रोज ही देखली है। इम्र प्रभुमें चार बने बाबा हुनकी है। सलने में गौर मिले हैं, उनके यहाँ के सानने मरु-हल तरते हैं। बेंके के पेठ का बरस बरस, उल पर एक ही, एक छोटी-सी दोरकी में चालत और सुगरी, पूर, अनादनी आदि रही जानी है। कुछ गौरों में तो 'दीरावरी' ही

दीरली है। परिवार के स्र छेय विनम्र मुद्रा के खड़े होने हैं—'बायदो नरने-मुलों को गौर में लिचे कटी होती है, बूढ़े-बच्चे सभी बड़े होते हैं। बर के जलने के विनोबाजी गुजले हैं तो सब बहने 'उप-रजि' बरती है।

विनोबाजी करते हैं—'अब जाया निहा है। यहाँ भक्ति-भाव का दर्शन बहुत हो रहा है। हीरघट के हृष्य का सचन यहाँ कम नहीं बाध है। पर एक बात ध्यान में लेनी होगी। 'नाम-धोरा' में एक स्रमने मेरा ध्यान लिखा है। माधव देव बहते हैं—'दिया जोक केवा-रुत वा'—'पूरी सेबा का स्र खीरने'—'इलमें विना-र' यह स्रम विरकुत नया और सुंदर है। इसे आप धारण में ले जायेंगे। भक्तिव हवा में खरा है और तेजस्र नामन पर प्रकट होता है। मैं के लिचे मरिद है, लिचि वेर न हँ के कच सलम। मरिद है, अन्वत्स्र और सेबा है, प्रसन्न। भक्ति अंतर् में अन्वत्स्र है, सेबा प्रकट है।'

मिछले सुलदें मार में यहाँ जो असाहिद हुए भी, उनके पाठ यही अज्ञान के काम के लिचे मारत के विभिन्न प्रदेयों के धार्मिक-नैतिक आये थे। इस मिले में विदमं के भी सुलनजी तथा औगीला की गंगास वनव धार्मिक-नैतिक के नामे मिछले नो महीने के काम बर रही है। ये हीनां कभी बरबका में धाय ही है। यो-यन्म-संवेदन्य से भीमती आघातेनी गी सेटी है। इसके अलया मार के भी उदित नारायणी, उनके दो साथी, कर्नाटक के भी तिगुल-नरुकी साथ हैं। इनमें से बृहन्न से धार्मिक-नैतिक विनोबाजी के आदेश के अनुधार अब यहाँ के छोट-छोटे हैं। इनके काम के बारे में यहाँ सवाधन

सक किया था रहा है। अज्ञान प्रदेय के प्यदी-प्रामो-योग के मनी भी हवाकियाँ रही नौगर्भ मिले के है। ये भी साथ हैं। विनोबाजी उनले कपी-कपी विनोद में बहते हैं—'एक मिले में से हवागे दानवत्र सीकिये और अज्ञान नाम सार्ग कीजिये।' उनगी पकी भीमली बुदेअरीभी ५० आं० कॉन्स्र कमेटी ही क्या विधान-समा की हरतर है। १९५५-५६ के यहाँ के महिलासभ में उन्होंने सलिये पायी है।

विनोबाजी स्रम कापेंकतोंओं को विहार के एलनजी ही गाय्य सुनारते हैं। बहते हैं, 'यहाँ सुने ही गाय्य लीगो ने सलमें में २२ ललत एदरज जमीन दान दी। इलका मलतल बह हुआ कि यहाँ देव ओलव ३६० दानवत्र मिलते हैं। तो कथ्य यहाँ गणवर्ष रहते हैं। विहार में गंगा दे ही यहाँ भी तो मलवुत है। यहाँ के लीग उदार हैं, पर यहाँ के धेय गी कम उदार नहें हैं। यहाँ भी सुने ३६० दानवत्र मिलते चाहिये। मलवुत्र की धारर के सचन दान-वत्स्र बहते दो हैं।

यहाँ के बरकॉर्वां कोचिय करते हैं। एक दिन २०५ दानवत्र उन्होंने हासिल लिचे थे। अज्ञान-ने-यज्ञा एक दिव ६६६ बहस्र दान मिल्य है। १०००५०० कदा दान करीय रोस मिल रहा है। यहाँ का बीना कामस्र और यो-आलएर मिले के बरा है। यहाँ मरु ५ दिने का एक 'पूरा' होता है। और इपर को दान मिल रहा है, वह 'पूरे' में कटे के विहार ने मिल रहा है।

अज्ञान प्रदेय में महिलाओं की बानी अज्ञानी है। स्वागतमें, सगर्भों में उनकी संस्र-व्यक्ति रहती है। अज्ञान प्रदेय ही महिला कर्मिणी भी आचार्यें अग्रह-वन्दर हैं। छोटे-छोटे गौर में भी है। इसलिने विनोबा जी यारी में सुपगत के लिने नो नाम लिने बाते हैं, उनमें महिला-समिती का नाम रहना ही है। ये यत्ने सगोरव-साध की सधना का नाम बर-व-वह कर रही हैं। विनोबाजी बहते हैं, 'अज्ञान में गी महिलाओं से ही बचाव अयेजा है। लिचिन बरतीं को महरन का काम बह करस चाहिये कि जन धारर रने लोते हैं, तन

धारर आरर उनकी रोकन चाहिये। बहते रगे हीं और आप लोग अंतर देते रहतीं तो में इहोना कि यह इतिहा-मरिती नहें, अन्वत्स्र-कर्मिणि है। मरिद का है, शांति के लिचे सगौरव-साध। और तीव्र मरिद का नाम यह बरता चाहिये कि आनरो ऐसी उन्नम हिंदी बीराली चाहिये कि दिखी बापर हिन्दी में अज्ञानन दे सकें, मलवय यह कि बाधु-कर्मिणि दिखिन बरती चाहिये।'

ही-वन्दर दिन पहले अतरतर में तरर थी कि अज्ञानप्रदेय के कर्मिण के सुनने अनेर दिल का र्थ मरुट करके हुए विरव नेरुके नेंहा था कि 'मिले हर बाव का इराद है कि जन बरखुदर और बूढ़े रगे में गेये हुए, तन बह मिछले के लिचे बर्रां कॉन्स्रसल्य मही गला, वा कौं कॉन्स्र-मिहटा सर्मिणे के समने विनोबाजी ने बह, 'ऐरिये, पतिव्रती ने अज्ञान की अज्ञान ही है। इलमें किं कर्मिणवले नहें, हलमें भी बरदनाम हुदें हैं। अब आप पतिव्रती को यह लिखारके कि हम बहने भी धारर आती हैं और फिर बावे कॉन्स्रसल्य आये वा न अर्थ-रंजम बाहर आती हैं और धाने करतीं हैं, दो रोकती हैं।'

एक बहस्र महिलाओं ने विचारकी 'अज्ञानक विद्या में हलना ही है कि वेदियों के जीवन में उरका हीं सलम ही होता है।' विनोबाजी ने इहाय विव-—'आज की विद्या में जो दीर है, उरकी हीं आप बनें। जो बनें नहीं पढ़ते, बर आने पढ़ारते। केने कि बर्रां सने-सन्म नही पढ़ारते हैं, इह आरप पढ़ारते और जग-जगल, गौर-गौर में महिला-सर्मिणीयें बह मरु-नरु करे कि आरर की गिरल में दोर दे और सलरको बने किं बिये दोर हुए करे। यह मरु-नरु पर-रुत नें धाररके के सलम बनें। तन धाररका जानेगी कि यह मरु-नरु की नाम दे। यह लेख-पठारी का बरनाम है। इलने जगत की आवाज सलरक नें पाल पु-नीय तन सलरका को उर सुन-रि-कदर बहने होंगे।'

गौर में गिरल में गिरल सलम हुदें हैं। उन दिने यहाँ हुए बने-बने बरने में हरर दारोमें आननी दान प्रकट की। 'बहते हैं कि इस मिले में अज्ञान है। सुगी की सल दे। लिचिन अज्ञान के भी अनेक अर्थ होते हैं। एक मरु-नरु मरु

सूचन-स्र, शुक्रवार, १२ मई, '९१

आज राधा तो लक्ष्मी प्रथम ध्यान लिगेट
 की वरदा जाते हैं। एक मनुष्य राधा
 हुआ तो परमेस्वर का स्वरूप करता है।
 यह उभारी जायगी वा ही उदगा है। न
 सोना हुआ मनुष्य निर्माते पैदा है। न
 सोना हुआ मनुष्य परमेस्वर का स्वरूप
 करता है और जायगी अनेक स्वार्थ के लिये
 होती है और एक जायगी परमात्म के लिये
 होती है। एक जायगी विद्वान के लिये के
 लिये होती है। इस जगत् में ऐसी जायगी
 काम नहीं होती। गुणवा न जगत् का ही
 है, देहा भी सोमार्थ दृष्ट रही है। अभी
 एक मनुष्य १०० निन्दन में दुर्ग की
 प्रशिक्षण करने परल लक्ष्मी है। गीत-सात
 ही मील ऊपर आकर उतने परे में २३ हजार
 मील यह पुत्र। एक मील राधा ही
 है हस्त के कदा वा कि निहार के एक स्वप्राणी
 को यह पर अपने होल के लिये वाह दिव्य
 कर रही है। और यहाँ के लोग समझते हैं
 कि बाहर के ज्वाणी अम्बन पर हस्त
 करते हैं। फीन पुत्रवा है अपने अम्बन
 की यहाँ तो घर की बात चलती है।
 इतनी ही हस्त कल्पक बना आदित्य। पूजा
 करना चाहिए। उल्लेख न करे।
 "मोक्ष भूतस्य पुत्रस्य भावो मुक्तमस्ति"
 प्रा, मिला, माया, सीधे, परलक्ष्मी के
 अभिमान होते हैं। इसमें कोई बात नहीं है।

"आम ह्येव जय हिरं के जय जगत्"
 एक पुत्र के। यह घर किनोनाजी
 में आगे रहा, "एत साल यहाँ रहे हुए।
 यह पुत्र का हमें बहुत दुःख हुआ था। मेरे
 पुत्र किनोना वा हुआ। यहाँ हुए
 पुत्र को मेरा मायावी, कुछ लोग माने हुए,
 इसका दुःख नहीं हुआ। मने बाबा माया
 है, विश्व करने बाबा रहता है, आमा की
 कुछ नहीं होता है। हुए इस बात का
 दुःख कि ऐसे व्यापक जगत् में कृत्रिम
 क्या कैसे लेनी। ऐसे ही मालोरी की
 परलक्ष्मी ही हाथ में ही काम में की है।
 इसी हाथ में बुरे काम हो गये। दुःख रही
 जगत् का है कि इतनी अभावपत्र हुई यह
 जगत् के यहाँ तो वैसी दिखानी। ऐसे
 भावों की वा में मना ही बरलत परती है
 तो छोटे, सामने, मांसे, वादी, परे रहने के
 ऐसे बुरा जगत् वा होगा। मैं तो वैसी ही।
 इच्छिते हूँ उगना हुए नहीं है।
 और कद दिन का है। ऐतन आमा ही
 हुई बर न मने, हजुबिन न मने,
 व्यापक हाथ आप विन न मने। आप
 अमम मदेप के लोग बाहर जाते ही
 नहीं। उन पर मात में जाना चाहिए, पर
 दिग्गुण पर प्रभाव बल रहे है और
 हीनता चाहिये। आर अमम में वैसी हो
 गये हैं। और जो बाहर से आते हैं उनको
 हीन मानते हैं। आप लोग बाहर बच
 नहीं जाते। आप भाव में जायने, विस्व-
 व्यापक परे समझाते हैं।

ऐसागान नाम के एक छोटे से गाँव में
 जहाँ आमा के भाग के गोले लूँके से और
 केशवामो की केशवामो केशवामो गयो थी-
 यहाँ एक नई लक्ष्मी के दल के दिग्गुण

विनोनाजी के मिले। विनोनाजी में अम्बन
 हुए आर परते हुए दल कि "आपने जैसे
 परलक्ष्मी-विचार में मानने वाले लोग जब
 मने होते हैं, तब घर में कौं बने होते हैं।
 परत के दल को हूँ। वा उनको दल का
 में सहाय्युक्ति है। अगर उनको सहाय्युक्ति
 है तो वे समीपस्थता नहीं है और अगर
 के इच्छाको ही तो वे समीपस्थ विचार को
 रखा नहीं कर सकते हैं। फिर उनको होंगे।
 यहाँ कुछ लोगों में मदर को ही। आमा
 विचार है। लेकिन वह व्यक्तिगत हुए कार्य
 हुआ है। लेकिन सारोदय एक समान है।
 महिमा-भक्ति, लोको साहाय, भारत-सेवक
 लक्ष्मी है, ये सब विचार कर बर के लिये
 होते यहाँ नहीं गये।

अभी वरपर के महर ही है-जगति
 पूरी होती है। यहाँ कुछ लोगों के घर छोटे
 हैं। यह सामान उनको परे में वा है।
 उनको क्यापार होता है और के सामान
 लूँके जाने है-देनी एक ही परलक्ष्मी को
 नहीं बनी घटना हुई ऐजा माना
 जायगा।"

इस दल-नगर के समय बनी-यहाँ
 मानने का दर्शन हुआ है। कुछ लुप्तमान
 भावों के, यहाँ अम्बनी भावों में भी
 कीगारी लोगों को आचार दिया है। रोग-
 वाह गाँव उनमें से एक है।

कहाँ-कहाँ दुःखी, ऐतन बगाली
 भावों के भी विनोनाजी दान मानते हैं।
 करते हैं, "अब बाबा बाबा हुआ है ऐसा
 भाव करते हैं, आप जगत् के आदिम ही
 हैं तो आनेको देना चाहिये। वनी के मने
 ऐतन-जैसे धानी अपने के गीत दल की
 तक दोस्त है, जैसे अपने से भी जो
 दुखों के उनको मदर आनेको करती
 चाहिए।"

जुनी गोपाम नाम के छोटे-से गाँव
 में लोभार के अलक्ष्मी के प्रतिविम्ब
 विनोनाजी के मिले थे। उनके साथ बचा
 करते हुए विनोनाजी के घर।

"विरलक्ष्मी आर नेर लक्ष्मी-दल,
 दृष्ट हूँ बाबरेपते। अगर आप दल-
 पचादी का समयेप करिये तो यहाँ
 आमा (नदी) बनेगी, कौई वर-
 वाह हीर नहीं होगी। आमा की
 विप (वक्र) देखी, जगत्-मिद लक्ष्मी
 होती। निरौन लोगो की लोपथियों को
 आमा लक्ष्मी "अलक्ष्मी" (म्यव
 दुःख) नहीं है। अगर भाव में बाहर
 देखिये, आपको निराली नीची करती
 होगी। आमा पाव कुछ भी नहीं,
 लोका ही बुरा है।"

दूसरे एक लक्ष्मी के जगत् में विनोनाजी
 के बच कि आमा के यह वाच मानने में
 रलनी चाहिए कि इस विचार के हुए में
 "ऐतनिलेखन" की प्रिय-प थीमी (स्ले)
 होती। जगत् जगत् में विचार का आमा ही
 नहीं अलक्ष्मी का उदरक भाव "कैटिक्ट"
 विचार के साथ नहीं रहता वा। फिर यहाँ की
 आमा, ऐतनिलेखन और ही होगा वा।

अ० भा० सर्व सेवा संघ के अल्पक्ष द्वारा नामजद सदस्य

अल्पक्ष द्वारा सर्व सेवा संघ के अल्पक्ष श्री नरहरि चोपरी के सच के विधान व
 निम्नांकनी की धारा ३ (अ) में उल्लेखित निम्नलिखित को सच व सदस्य नामजद
 किया है:-

१. श्री ०० उन्मुख	०० अर्थव्यवस्था विभाग	२२. श्री जी० नरहरि	कार्यवाह
२. श्री आर्यादी आर्यायद्वय	"	२३. श्री रामराम	सचिव
३. श्री पूर्णचन्द्र वैद्य	राजी	२४. श्री आर० अर० वैधान	बादशाह
४. श्री बलभद्रराजी	बगलोर	२५. श्री रामेश्वरी नेहर	नर दिवशी
५. श्री विमल देसाय	नागपुर	२६. श्री विद्योती इंदर	नर दिवशी
६. श्री नाथगण देसाय	राजी	२७. श्री प्यारलक्ष्मी	नर दिवशी
७. श्री जगन्नाथदेव चक्रवर्तुदे	सेनापाम	२८. श्री अमृतमलाम	राज्यपुत्र
८. श्री जगन्नाथ दाम	गौडीया	२९. श्री गौरा बदन	विधायक
९. श्री चक्रवर्तु भगवती	कल्याण	३०. श्री लक्ष्मीनाथ बीस	कल्याण
१०. श्री रामदास गाडक	इन्दौर	३१. श्री रविशंकर महापाम	श्रीधारा
११. श्री भोवृत्तनाथ शिवा	बुरनाल	३२. श्री लालताम भाई	पुत्री
१२. श्री अर० जगन्नाथ	बादशाहपुर	३३. श्री लालचरण मौर	पुत्री
१३. श्री आ० शारदादास जोशी	इन्दौर	३४. श्री रुद्रनाथ श्रीधर बीस	राजी
१४. श्री पद्मचन्द्र	सेनापाम	३५. श्री अणुभावा बरतपत्र	रलनी
१५. श्री पद्मनाभ बरतपत्र	राजी	३६. श्री आनन्दी देवी बरतपत्र	पुत्री
१६. श्री सिद्धनाथ उदुदा	राजी	३७. श्री बरतपत्र भारोकोलर	सेनाप
१७. श्री पद्मचन्द्र	राजी	३८. श्री देवीप्रसाद भाई	सेनाप
१८. श्री राधा अम्बिकावती	राजी	३९. श्री धीरान विचलक्ष्मी	सेनाप
१९. श्री श्रीरुद्र मन्मथराव बलिया (इन्दौर)	५०. श्री रामगुप्ति सिंह	४०. श्री रामचन्द्र मुर	इन्दौर
२०. श्री शिवाचरण चौधरी	बादशाहपुर	४१. श्री रामचन्द्र पद्मवी	मालोरी
२१. श्री एल० आर० सुभाषदास ए० अरुण	इन्दौर	४२. श्री देवेन्द्र गुप्ता	इन्दौर
२२. श्री महेन्द्र बाबरी	बाबरी	४३. श्री देवदास शर्मा	विधायक
२३. श्री बाबूलाल निवाल	आमा	४४. श्री बरतपत्र लक्ष्मी	विधायक
२४. श्री ए० ए० पाठक	नागपुर	४५. श्री एतनिलेखन	राज्यपुत्र
२५. श्री अर० अल्पक्ष	बादशाहपुर	४६. श्री विरलक्ष्मी, ज्योतीशाल (बाबुर)	नर दिवशी
२६. श्री आ० सुवर्णादायक	देवाली	४७. श्री अमृतलाल नानाचरी	नर दिवशी
२७. श्री ज्योती चौधरी	कठक	४८. श्री मारुती लालपत्र	काठकोटी
२८. श्री बालदेवी चौधरी	अणुल	४९. श्री रामचन्द्र	नर दिवशी
२९. श्री लालचरण दाम	शुभरपुर	५०. श्री एतनिलेखन	राज्यपुत्र
३०. श्री जगन्नाथ शिवा	राजी	५१. श्री एतनिलेखन पद्मचरण	पुत्री
३१. श्री कृष्ण भाई	कल्याण	५२. श्री पाणिनाथ विवेकी	पुत्री

सदस्यता कौं हों
 धार ३ (अ) के अनुसार सच की वरलक्ष्मी की निम्नलिखित रहें हैं:-
 (१) जिनके सच के उद्देश्य मान्य हों।
 (२) जो अल्पक्ष ज्योतीशाली हों, अर्थात् हुए के वा पर के कौं दल की प्रमाणित
 लक्ष्मी परलक्ष्मी हों।
 (३) निम्नलिखित नहीं करते हों।
 (४) किसी राजनैतिक पक्ष के सदस्य न हों।

"ऐतनिलेखन" बरता होता वा। आमा
 श्री गौरीदेवी के अलक्ष्मी को परे में वा उरने
 है। एक अलक्ष्मी परिवार यहाँ आवा है।
 उनको तो ऐतनिलेखन में और एक पुत्र
 में पर रही हैं। वे दोनों हुए यहाँ सेवा
 करते हैं। पुत्रने जगत् में यह बरत नहीं
 वा। अलक्ष्मी, इस जगत् में "ऐतनिलेखन"
 ही होगा। ऐतनिलेखन वह भीरे-भीरे होगा। व
 एक जगत् में "ऐतनिलेखन" ही अल्पक्ष
 रलनी चाहिये। मान लीजिये, कल हुए
 किट वा। यह भीया प्रिय है, अलक्ष्मी
 यहाँ अलक्ष्मी रहती है। उस लक्ष्मी में
 ऐतनिलेखन और भी होगा।"

दिववाड़ा में सूत्राजलि

दिवद सचोदभवत्, दिग्गुण व के
 श्रत रिगेट के अनुसार, जिनमें यह घर
 को वर लक्ष्मी-विवद का कार्य हुआ।
 पहली बार वर विनोनाजी दल जिनमें
 मने थे, तब उनको १०० मुद्रियों का दान
 दिया वा। दूसरी बार १२ परती के
 सचोदभवत् में अलक्ष्मी पर ३०० मुद्रियों
 एकपत्र हुई। इसी कुल लक्ष्मी ५००
 १२ परते लेते होगी है। इसका दान दिग्गुण
 आ० भा० सर्व सेवा संघ और उठा
 दिग्गुण प्राणी सचोदभवत् को भेज
 दिया गया।

असम सर्वोदय-मंडल के निर्णय

हा० १५ और १६ अंश के अग्रम तहें लॉरीम-नेत्र निवृत्त में अग्रम सर्वोदय-मंडल का विद्येय अर्थविद्येय विनोदजी के मार्गदर्शन में हुआ।

हा० १५ की कुछ विनोदजी ने सर्वोदय-मंडल के सदस्यों के हाथ परचम करके मंडल के नए हाल के चरित्र की चर्चा की और लॉरीम-नेत्रजी भूदान और प्रामाण्य में मिली हुई जमीन के विवेक की व्यवस्था, पत्नीनेता का शगुन तथा सेवा-कार्य के निष्ठुन कार्य-क्रम को लेकर मांग की परधाना का पूरा काम उद्योग के निष्ठ करके दिया।

विनोदजी के उद्योग के अनुसर हा० १६ अंश से हा० १७ अंश के अग्रम भूमिदान और प्रामाण्य में मिली हुई जमीन स्थानीय जनता और रक्तान्तरण कार्य-क्रमों के साथ अन्य दलानुसू के सहयोग से निवृत्त करने के लिए कार्यक्रम बनाया गया। हर एक महसूल में निश्चित लोगों पर विशेषता दी गई।

भूमिनिवृत्त का संशोधन भी सांख्यिक दृष्टिकोण परीक्षण और १७ अंश की शर्तों को उलटनी जानकारी देने।

उत्तर लॉरीमनेत्र जिले में प्रामाण्य-व्यवस्था के बारे में चर्चा करते हाग के उत्तर-लॉरीमनेत्र में प्रवेश करने के पहले ही जाने कई माह के पहले लगाव से प्रार्थित एक लक्ष में गाँव-गाँव में प्रामाण्य-व्यवस्था का आन्दोलन चलाने का निश्चय किया गया।

इस कार्यक्रम में सभी दलों, स्वयंसेवकों और मुख्य लोगों के प्रतिक्रियापूर्ण पात्र के लिए एक सर्वदलीय सम्मेलन हुआ। सम्मेलन की व्यवस्था भी स्वयंसेवकों, भूमि, भी सोमेश्वर पुत्रक और भी भूदानकार्य ध्यान करीये।

मंडल के प्रथम बार 'भूदान-प्रथम' के बारे में चर्चा करते हाग ही १५ अंश में १९११ माहक बनाने के लिए सकल किया।

मंडल के समितियों के बारे में निर्णय हुआ कि प्राथमिक चिकित्सा समिति के अध्यक्ष भी देवदेव नवा के बेटे श्री स्वयंसेवक दया को मनोनीत किया जाय। प्रामाण्य, नरेंद्र लॉरीम के समाजिक भी नवीन-चक्र परीक्षण किया।

पूरा हाग की परधाना-कार्यक्रम के बारे में चर्चा करते हुए हुआ कि श्रीनेत्रेश्वर शम्भुजी के मार्गदर्शन में हाग की परधाना के पहले प्रकार व पूर्वोदारी के लिए एक टोनी निवृत्तकी।

लिखे अग्रमों के बाद अग्रमों और नरर से आने हुए शक्तिशाली के बीच में जो अनिश्चय हुआ, मनोनिश्चय देना हुआ उसके निराकरण के लिए

श्री अमलनाथ दास, श्री सोमेश्वर शम्भुजी, श्री लीडर वल और श्री नवीन माधवजी को नियुक्त किया।

अर्थविद्येय के साथ सर्वोदय पुत्रक सगुन-समिति की बैठक श्रीमती अमल-प्रसा दास के मार्गदर्शन में हुई। १९११, फरवरी, मंत्र्या आदि के सुझावों के बीच में सर्वोदय-प्रकार चलने के लिये आठ पुत्रक-समिति बनाये जा चुके हुए।

अग्रम शाखा संपी-सिधि के कार्य-क्रमों का एक अर्थविद्येय विनोदजी की उद्वेग्यते में हुआ। अर्थविद्येय में अग्रम सर्वोदय-मंडल, पानी स्मरक निधि और कल्याण स्मरक निधि के १२५ कार्य-क्रमों उल्लिखित थे।

—रचिकान्त

गोदायी

भूदान-भूमि पर अग्रमदान से कृपा

पञ्जाब के त्रिवेन्द्रपुर तालुके के पञ्जाब प्राम में २५ अंश की भूमिनी धरिनी की ओर से नये हुए एक उद्योग्य भी देवदेवजी ओजल हाग हुआ। कुछ वर्ष पहले इस प्राम में श्री देवदेवजी दास भूदान में ही गयी ५० एकड़ जमीन ८ भूमिनी में खेद दी गयी थी। इस अग्रम पर पहले केवल एक ही नृत्तों था, जिसके कारण पूर्ण जमीन को पानी नहीं मिल सकता था। इसलिये पूर्ण नृत्तों के लिए सरदार के ठाकुरों की शहाण्य संगी गयी थी। लेकिन आज वह नहीं मिले तो भूदानी विधानों में अग्र करने यह काम करना बंद किया। श्री शहान और कल्या, इन ही भूमिनी धरिनी ने मजदूरी करने कर्तव्य बना करके एक हजार ५० सयत से यह नृत्त खोला बनाया है। अग्रक के निर्माण की डा० भी सर्वोदय मार्गदर्शन में भेजे अने सर्वेय में विधानों के अग्र की शहाण्य थी।

१	रजिन्द्रनाथ का विधान संशुद्ध	१	हाग कालेण्डर
२	आर्योदय के लिए अर्थ-मंडल का संपन्न कार्य-क्रम	२	—
३	आर्येन्द्र पुत्रक	३	विनोद
४	स्वयंसेवक दया का आर्योदय से सांख्यिक	४	मार्गदर्शन
५	भूदानकारी का चंगुल	५	—
६	पुत्रक-विद्येय का संशुद्ध	६	पूर्वचक्र बैंक
७	सम्मेलन का प्रोग्राम	७	विनोद
८	सांख्यिक तालिका, विद्येय-टोनी, सांख्यिक विनय कर	८	पूर्वचक्र बैंक
९	स्वयंसेवक आगवाही की मांगक आमदनी छोड़े।	९	विनोद
१०	पुत्रक-विद्येय के अनुभव	१०	मार्गदर्शन केन्द्रोत्तर
११	हागक अग्रम कार्य-क्रम कया हो।	११	स्वयंसेवक पुत्रोदारी
१२	विधान के साथ अर्थशास्त्र का संपन्न कार्य-क्रम	१२	कल्याणकर पुत्रो
१३	नवीन-चक्र की भी नृत्त-प्रकार चर्चा	१३	गुणवत्त
१४	विनोद-समिति दल से	१४	पुत्रक देवदेव
१५	संसार-समाचार	१५	—

विहार सर्वोदय पदयात्रा टोली

पञ्जाब से प्रस्थित हुए ११ यानों में विहार प्रांतीय अग्रम सर्वोदय-पदयात्रा टोली द्वारा प्रथम की वैमान्य प्रचार चौकी, श्री जगदीश नारायण, श्री श्रीरामजी केचरीवाल एवं श्री जगदीश के नेतृत्व में २२२ मील की पदयात्रा हुई। इस अवसर पर १७५ दानवर्ग के साथ १५०० कुट्टे का समग्रण किया। भूदान-चक्र ५१ के मासक में। १६८ ५० मील में मिले। ६५१ ६० का साहित्य लिया एवं ६०० ६० की स्वामी मिली। कुल ५८ पात्रक हुए। १६५ ग्रामों से सम्पर्क हुआ। विनोदजी का नाम मंत्र "आन से इच्छुक भोग में बढ़ना" और "पता स्थावर विहार कर दे, इसके बनना में जारी उलाह भया।

टोली भूमि, पटना और गया जिले में घुमनी हुई इन्द्रापीठ जिले के छत्तीस-लित्ता प्राम में प्रवेश करी, वहाँ विहार मार्गदर्शन सर्वोदय-सम्मेलन होने का खबर दे। स्थल रहे यह टोली ५५ अग्रम ५८ से निवृत्त विहार में पदयात्रा कर रही है। स्वर्गीय लक्ष्मी दास की स्मृति में आठ एक डाक हवावी की पदयात्रा हुई।

सामूहिक कटाई और धर्मदान

भीतिवर पदार्थपूरक (प्रतिनिधि विद्येय प्रथम भूदान-मंत्र, विद्येय धर्म) अग्रमों विद्येय में कटार से लिखते हैं: १ से ५ अंश तक सौदीय प्राम में १५ आर्योदय के साथ सार्वदिक कटार की गयी। भोजन परल-साहित्य के पर करने थे। ६ से ९ अंश तक सार्वदिक रूप से सौदीय प्राम में अग्रमदान करते एक मील दूर तक की गयी। सर्वोदय-मंत्र शोध में रहे। एक लोचमिन्स के।

इस अंक में

१	हाग कालेण्डर
२	—
३	विनोद
४	मार्गदर्शन
५	—
६	पूर्वचक्र बैंक
७	विनोद
८	पूर्वचक्र बैंक
९	विनोद
१०	मार्गदर्शन केन्द्रोत्तर
११	स्वयंसेवक पुत्रोदारी
१२	कल्याणकर पुत्रो
१३	गुणवत्त
१४	पुत्रक देवदेव
१५	—

गुजरात सर्वोदय-पदयात्रा

गुजरात प्रदेश में राठ १६ महीनों में श्री हरीप्रभाई शहा के मार्गदर्शन में एक अग्रम पदयात्रा चल रही है। पदयात्रा में श्री जलधर देवदर, सुभद्र शाह, मेखल मारें मांविचा, आशाभाई मरें आरें सेवक भोग-संगण पूरा रहे हैं। पदयात्रा का शुभारंभ १५ महीने से हुआ था। अग्रम-मंत्र विद्येय उलाह करके गुजरात विनोद में पदयात्रा चल रही है। अग्रम २१५० मील की पदयात्रा में १५२ गाँव और ६१ नगर में ठेका बनाया। राठ पीछे ५६ अग्रम, ११ विचार-समिति हुई। ११,०८१ रु. की साहित्य-सिद्धि हुई। 'भूमिदान', 'विद्येय' आदि पत्रों के रूप १२५ प्रार्थक बनारे। २६ अग्रम-मंत्र की पलाये, विद्येय में श्रीरामनाथ की प्रतिमा, से०-हाथपूर्विका का शगुन, भी अर्थविद्येय की साधना, सोमवंश का विद्या और लोचम आदि विद्येय पर चर्चा हुई। ५ एकड़ ५५ गुंडा एकड़ भूदान किया। २१८ एकड़ ३५ गुंडा भूमि का निवृत्त किया गया। १०५ एकड़ भूमिदान की रक किया। १ भूदान, २ सौचित्य और २११ रु. ११ नये तिथि की सेवा-व्यवस्था मिली।

साप्ति-स्वीकार

(१) महादेवभाई की दायरों:

प्रथम लं० (१९१० से १९११): से०-नररेंद्र हा० परिल, अनुचारक-प्रधाना-उद्योग चौकी, इन्द्रापीठ ५५४, मूल रॉप रूप।

(२) कृपासहे० सादामरें नारर, इन्द्रापीठ १९२+२१९; मूल रॉप इन्द्रापीठ नये १६४।

(३) अ० भा० हायें सेवा: संघ-प्रभियेयान विश्वनीडम, बंगलौर विद्येय इन्द्रापीठ १९१, मूल एक रूप।

(४) ह्यरात कारें ही दीवल (अभि०), से० कल्याणकर नारर। इन्द्रापीठ ३२०, मूल एक रूप।

(५) विद्येय विनोदा (सं०) से० अनाकर प्राम, इन्द्रापीठ १५०, मूल एक रूप। नये ३६०

पञ्जाब-ब० भा० हायें सेवा संघ-प्रकारान, राजघाट, हाग।

१५ मई तक विनोदायों का पता: मार्गदर्शन भी चंद्रपर गोस्वामी मंत्री, विनोदा स्वयंसेवक समिति राजपुरा (प्रथम)

रम बात का मुझे कुछ नहीं है। यह शरीर तो बड़े दिन का ही होगा है। लेकिन हमारी शिक्षा कुछ न जने। हम मनुष्यत्व न भंगे, व्यापक भंगे, व्यापक होकर चिंतन करें। इसकी मुझे चिंता है।

आज भारत-वर्ष में ही छोटा-पड़ेगा। विश्व-यात्रा दर्शन होना चाहिये। फिर पुरानी, सही हुई राजनीति जवानों को आकर्षित नहीं करेगी। पुराना संघ नहीं रहेगा, नते 'रूस की तरफ मुँह करते जायना करना कि पश्चिम की तरफ हँद करके। अंगरी में करना है कि संस्कृत में। मग-धान्य अन्नी समझना है कि संस्कृत समझना है या अन्नी? ऐसे संस्कृत विचार रहे तो जैसे होगा। कश्मीर में हलने अन्दल रक्त शरीर में क्या था: "कश्मीर आपके बाप का था, होगा लेकिन अन्नी अर्थात् नहीं है। यह अन्ना है।" यह भूदान का विचार है। आस्ट्रेलिया के एक भाई हमारे पास संक्षेप मासमें छोले। हमने उनसे कहा, "आस्ट्रेलिया में भूदान कलहाएँ।" उन्होंने झुका, "बैले। यहाँ तो भूमि-व्यवस्था नहीं है।" मैंने कहा, "आपके प्रदेश में आज निम्न-योग यह रहे है, उसके इस-युवा अधिक लोग रर सपने है। आप जायान की आभयनन है चीनिये। यह ही गया भूदान का लक्ष्य।" मलबन यही कि आस्ट्रेलिया-विनि आस्ट्रेलिया-वालों का नहीं, यह लारी बुनिया का है। हिंदुस्तान की शारी बुनिया का है। कश्मीर कश्मीर का है, भारत का है और विश्व का भी है। अलग अलग का, भारत का और विश्व का है। अलग अलग में वेगले जिला। पुराना जमाना होता, तो क्या होगा। भूदान के लोग कहते, यह वेगले हमारे बाप का है। और दुन्दुभे प्रदेश के लोग भी कहते कि अन्ना-पुत्र वेगले में बल मरे। लेकिन अन्नी भूदान देना नहीं कर रहा है। यह कहना है—यह वेगले भूदान का भी है और माय का भी है। यह बात अन्ना है कि उठवा राम उस मूल की भी मिलेगा। अन्ना यह कमाना मुक्त करनी का रहा है कि वे-वेगले लोक विचार का होगा।

उस आगामी विचार का अभाव न करने वाले हमारे बवान होने चाहिये। हाथ सफर हाल के बगल में ऐसे पुरुष के कि जिनका अस्तर शरीर भारत पर पड़ता था—साम्राज्य, निर्यात, अस्ति, रवीन्द्रनाथ। अन्ना कौन है पगत में? पंगव में भी अन्ना कौन है। पंगव में हम मराठी में लाल्य हाव-प्रकार और स्वामी-समीची में बने पढ़ते थे। जो हमें लगता था कि छात्रजी भी हमारे हैं। अभी पंगव में हमने कुछ कि आज ऐसा कौन है। इसका मतलब यही हुआ न कि स्वस्थान के बाहर हमें पढ़ करे। स्वस्थान के पढ़ने हमारे सामने अन्ना भला का उद्देश्य था। इन्होंने भारे

भारत के बारे में सोचने थे। अन्ना स्वस्थान के बाद हमें विश्वव्यापी बनना चाहिये। हमारे सामने विश्वव्यापी मिशन होना चाहिये। गांधीजी ने हमनी वंचारी पढ़ते थे ही वी थी। और दलीखी स्वस्थान के बाद 'सर्वोदय' का मंत्र दिया था।

अन्ना हय हमारी पढी का धोखे हैं-पार्टी का उदय होना, यह धोखे हैं। पार्टी में भी रूप होगा है। अन्ना स्वस्थान आया है तो सर्वोदय नहीं, "प्रबोधन" ही बात सोचते हैं। पाषाणता ही सीमा है!

यह दलखि कि स्वस्थान के बाद हम "निबोधन" में लगे हैं। "भिर अन्ना उद्यम री, मुझे लारहल मिले, उका मिले, पद मिले।" पाषाण पदयाथा कल्ला है। चीन में कौशल यलों में भी पदयाथा छल की थी। एक भाई ने कहा, "कौशल की पदयाथा पद-याति ने लिये है।" चौक-गत दिन पदयाथा करके चुनाव के पहले लिये-देना—"मैं तीन दिन बाज के साथ पदयाथा में था, उलपी यह छोडे है। एक दिन हरिपिन वस्ती में शाहू लग्या था, उलपी यह छोडे है। अन्ना हमें दिवट सिद्धा चाहिये।" यह सर्वोदय नहीं, "निबोधन" है। हम चाहते हैं कि इस हबबल के हमारे जयान लार आये। "यह दल यह कल" साथ क्रियव हो गया है।

मे जवानों से बहुत भावा रलता है। आज विश्व-व्यापक उद्देश्य रल कर हल्ला से लकपा यहाँ तो भी में बल कलपा। महिला का हिल्ला यह गीन है। विश्वव्यापक बुद्धि होना, यह प्रमाण है। यह अन्ना बत है कि विश्वव्यापक बुद्धि नहीं महिला ही माली है।

पर लतमें जवानों का कोई रीप नहीं है, लतम का रीप है। आबकल बवान अलगा पढ़ते हैं। उनमें जो लिये है, उनको भेजनायन मानते हैं। जो कुछ उनमें लिये जायेगा वह ली मानेंगे। पाकिस्तान के अभाव में हिंदुस्तान की निरा अन्नी है। पाकिस्तान की निरा अन्नी है। वही लय-लय और जमेरियन में होती है। दोनों देशों के अलगा पढ़-पढ़ने के लिये लिये हैं। उन-उन देशों के पढ़ने वाले बवान उन पर निश्चल कर लेते हैं। गमीर अन्नायन साथ हो गया है। दोनों का ये विश्वव्यापक चिंतन करने की बलत है।

हिंदुस्तान के बवान विश्वव्यापक चिंतन करे, जो हिंदुस्तान बनेगा।
मोहरी, अन्ना
२५-५-६६

भारत सफाई मंडल

श्री अण्णासाहेब पटवर्धन कई सालों से भंगी-मुक्ति की दृष्टि से अनेक कार्यन आयोजित कर देर की जनगो का प्यान उल्लस मोड रहे हैं, यह बात देर से कानी लोग जानते हैं। जब वे गांधी एमारक निधि की भंगी-मुक्ति समिति के अध्यक्ष हैं, तब वे उनके आयोजनों में भारत सफाई मंडल प्रस्तावित करने का भी एक आयोजन था और १९६० के बरसवी में उसकी छुआकट भी हुई। उस मंडल के अध्यक्ष वे ही न सजने हैं, जो कम से कम एक साल के लिए हर रोज नियमित रूप से १५ मिनट सफाई का काम करने का संकल्प करते हैं और प्रतिग-पत्र भर पर भेज देते हैं। मार्च '६१ के अन्त तक सफाई-मंडल के १२२ सदस्य बने थे। श्री अण्णासाहेब उस मंडल अस्थापक-मंत्री थे। मंडल के सदस्यों को यह भी बताया गया था कि वे अपने साथ का विवरण २ अक्टूबर तक 'गांधी-सर्वोदय' के अन्वय पर भेज दिया करे। उनसे अण्णासाहेब अक्टूबर की ६५ सदस्यों के विवरण आये थे, जिसका एक संक्षिप्त उल्लेख 'सफाई-दल' पत्रिका में प्रकाशित किया गया था।

देय में नियम प्रकार कुल १२१ सदस्य बने।

- पञ्जाब-६
- उत्तर प्रदेश-१४
- उत्तरप्रान्त-६
- दिल्ली-२
- गुजरात-७
- बम्बई-५
- मध्य प्रदेश-१०
- उड़ीसा-२
- बंगाल-२
- बिहार-१०
- मैसूर-२
- महाराष्ट्र-६२

पञ्जातर सदस्य लोचकेशक या सर्वो-दय-कार्यकां ही होने के कारण सर्वो-दय-संमेलन के अन्वय पर ही सभा लेने में सुविधा होती है। इतिहास इस बार सर्वो-दयपुर (आ.प्र.) में होने वाले सर्वो-दय-संमेलन के अन्वय पर तां ० १५ अगले को मंडल के सदस्यों की मस्य भी सिद्धांत दस्ता की अल्पकता में हुई। वना में मंडल के लम्बन २५ सदस्य और दस नियम में बरि लने वाले अन्य लम्बन ली सफाई-दलें उपलब्ध थीं। श्री अण्णासाहेब ने मंडल के बाव, कार्य में और बात विवरण के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी। उनके बाद भंगी-मुक्ति व सफाई-मार्गों में दिव-वली करने वाले कुछ सम्मनों में अपने विचार व अनुभव व्यक्त किये। वना में लीपे दिने अनुबर निम्न प्रदेशों के ११ सफाई-दल प्रतिग पत्र भर कर मंडल के सदस्य बने।

- पञ्जाब-२
- राजस्थान-२
- मध्यप्रदेश-६
- बंगाल-२
- आ.प्र.-२
- मैसूर-१
- महाराष्ट्र-१
- बिहार-६
- उत्तर प्रदेश-६
- उड़ीसा-२
- दिल्ली-१
- गुजरात-१
- बम्बई-१

वना में बनील यहाँ होने के बाद एक संक्षिप्त बरणी हुई, जो मंडल के कार्यकर्ता के बारे में विचार करेगी व मंडल के सदस्यों को भंगी-मुक्ति तथा

समिति के सदस्य इस तरह हैं:

- (१) श्री अण्णासाहेब पटवर्धन, अध्यक्ष
- (२) श्री बल्लभदास दाहा, सचिव
- (३) श्री हनुमन्तलाली, सदस्य
- (४) श्री रामोदरदासजी मूंदरा
- (५) श्री कल्याणजी
- (६) श्री चतुर्वर्ण पटक
- (७) श्री प्रभाकरजी

इस प्रकार समिति बन जाने के बाद श्री अण्णासाहेब ने भारत सफाई-मंडल का दिवस श्री इण्णादात दाहा को सुझा कर किया व अन्ना मंडल का कार्यपालक पद में रह लिये पर देगा। सता-१९५ का बिद्वेकसफाई पदल रोड, बम्बई-४

इस समिति की पहली बैठक तां ० २० अगले को सफाई-विचार में श्री अण्णासाहेब की अध्यक्षता में हुई। उसमें पहले 'सफाई-दल' मासिक पत्र चलाने के बारे में बर्णी हुई। तब हुआ कि 'सफाई-दल' मासिक और भी एक वर्ग के लिए बलरा जाय तथा उसके लक्ष्य के लिए गांधी सफाई निधि के मासिक की बाव। इसके अलवा श्री अण्णासाहेब व में पहले वेगयुगी, उत्तर प्रदेश में और बाव में पहले सफाई-विचार का आयोजन करे, यह तब किया गया। उनके बाद विचार के कुछ कार्यकर्ताओं को साथ लल कर उनको लालीन की बावरी। यह समिति आगे लिये-मण्डल लक काम करेगी।

मंडल के सदस्य बने के लिए बम्बई के पते से आवेदन-पत्र भेगये जा सकते हैं।

—भृगुणदास दाहा
श्री
भारत सफाई मंडल

सोकरांतिक समाजवाद

लेखक-श्री अशोक मेहता; प्रकाशक-श्री भा-सर्व सेवा संघ, प्रकाशन, काशी; मूल-२१ रु० ५० नये पैसे।

प्रधान सुलभ के लेखक जाने-जाने लग-व्यक्ति नेता हैं, जिनके विचारों का महल हो सकता है। इनके ये कर्म-भाद और लीक-रुद जो दृष्टिगत बनी हुए आधुनिक विचार पर अन्ना मन्ना प्रकट किया है। जीवनक के प्रति अन्ना अन्ना रर है। यह उद्देश्य तथा उद्देश्य के

साधनों की परिभाषा में अन्ना अन्ना प्रकट करता है। लेखक की अन्ना-र विवरण-पत्र है। अन्ना है, वह सुलभ उन लक्ष्यों के लिये काम की होगी जो सार्वजनिक के लिए चिंतन किया करे।
—सोकरांतिक समाजवाद

नया मोड़ : लक्ष्य, दिशा और योजना : १

वीरेन्द्र मजूमदार

[पिछले ६ अप्रैल को सारे देश में 'शाम-स्वराज्य विफल' माना गया। 'शाम-स्वराज्य' के विचार में एक बार फिर शासकवर्गों और कार्यकर्ताओं में नवरसताह का संसार रियाह है। श्री वीरेन्द्र भाई इसे एक 'शुभ घड़ी' मानते हैं। उनका कहना है कि देश के सभसे स्वभाविक कर्तों को शाम-स्वराज्य की घोषणा को जवान में मानने के लिए मुठ जाना चाहिये। साथ ही उन्होंने आशा की है कि इस अवसर पर हमें अपने लक्ष्य और दिशा का स्पष्ट मान होना चाहिए... क्योंकि कभी-कभी कार्यक्रम के परिणाम तथा शोध सफलता को जल्दता के कारण मूल लक्ष्य के दृष्टि से भोझल हो जाने का खतरा रहता है...'] श्री वीरेन्द्र भाई ने इस विषय का सुझाव और महत्त्व दिखाने के लिये एक छोटा-सा लेख लिखा है, जो हम कृपया प्रकाशित कर रहे हैं।—संपादक]

सादी-जगत में 'नया मोड़' आज एक मन-सा बन गया है। मनुष्य का सम्यक्-चित्त होते-होते हम शाम-स्वराज्य को घोषणा-दिवस तक पहुँच गये हैं। आज कार्यकर्ताओं में उत्साह और उमंग है। सादी के इतिहास में यह एक अत्यन्त युग मण्डो है। हम शाम-स्वराज्य कायम करना चाहते हैं, गाँव का नव-निर्माण करना चाहते हैं और उसे स्वयंपूर्ण बनाना चाहते हैं। एक घन्टे में, गांधी का स्वप्न पूरा करने की दिशा में सादी आज गिरिबल तथा सक्ति कदम उठा रही है। उसाह के इस अवसर पर हमें सादी के मूल लक्ष्य पर निरन्तर नजर रखनी चाहिये, क्योंकि कभी-कभी कार्यक्रम का परिणाम तथा शोध सफलता को जल्दता के कारण मूल लक्ष्य के दृष्टि से भोझल हो जाने का खतरा रहता है।

१९४४ में बाबू जेल से बाहर आये। १९४४ के आन्दोलन में सरकार ने सादी को मेलनापुरा देर दिया था। वह बात उन्हें लगी। वे सादी को स्वराज्य का वास्तु बनाना चाहते थे। उनकी दृष्टि में स्वराज्य का मतलब प्रत्यक्ष तथा स्वतंत्र लोक-शाक्ति की स्थापना थी। वे मानते थे कि सैनिक-शाक्ति पर आधारित राज्य, बेसी कि राज्य-सत्ता होती है, क्या स्वराज्य नहीं है, स्वयंसेवी राज्य मले ही हो। इलीजियम वे कहते थे कि 'सैनिक, अमरीका, अरबी आदि देशों में स्वराज्य नहीं है। अतएव अपने लक्ष्य हमें स्वराज्य के प्रश्न पर ही सफल हो सोंच देना चाहिये।

सादी के नव-संरक्षण की बात के लिएजितने उन्होंने सात कहा वह कि सादी को अपने पैर पर अर्थात् स्वतंत्र लोक-शाक्ति के आधार पर लड़ा रहना है, जिससे कभी वैसा अवसर आने ही राज्य-शाक्ति उत्पन्न हुए शिवाय न हने। जब तक सादी राज्य-निरपेक्ष, स्वयंसेवी-लोक-शाक्ति पर खड़ी नहीं होती है, तब तक वह गांधीजी द्वारा परिचितकृत स्वराज्य की अभिवृत्ति काफ़ी नहीं बन सकती है। इलीजियम उन्होंने इस बात की परामर्श-संघ को कामना-पूर्वी अपने ही बात जाल गाँवों में विकसित करने में है। उनसे अनुसर उसके अग्रज में श्री ब्रह्म-रचना की बात थी, उन्होंने सुनिश्चिती काफ़ी ७ लाख लोकसेवकों को इजाजत में पूर्ण होती थी। जिना देश किसे निरोध शाक्ति का अर्थशास्त्र देय में नहीं हो सकता था। सैनिक-शक्ति वे इस कार्यक्रम का स्वीकार करते गये। वामिश के गाँवों स्वयं की बन्धना बताते हुए, लोकतन्त्र के लिए मजिब्य में संपर्क नहीं होगा, उनका उद्देश्य ही उन्होंने किया। उन्होंने स्पष्ट कहा कि सच्ची लोक-शाही की स्थापना के लिए सैनिक-शाक्ति और मातृशक्ति-शाक्ति के बीच संबंध अविभाज्य है। लोक-शाक्ति को इस संबंध को चुनौती बन स्वीकार करनी ही, तो यह आवश्यक है कि प्रश्न में सैनिक-निरपेक्ष स्वयंशाक्ति का ही संकेत हो।

इसी पूर्ति के लिये वह उच्च समग्र शक्ति को क्लेशे मान्य मानते थे श्री बाबू उनका यह मानना स्वाभाविक भी था। कामेश ने पर्वों के त्याग और उपवास ॥ निरपेक्ष लोक-शाक्ति का निर्माण किया था, उसने देश के विदेशी राज्य को समस्त कर दिया था। अतः गांधीजी के लिये प्रायशः को ही स्वराज्य-प्रति है अगले बरस का वादान मानने की बन्धना करना स्वाभाविक था। आम्बार्दी के आन्दोलन के दौरान गांधीजी मुक्त के धामने यह विचार हमेशा रहता करते थे कि विदेशी-राज्य का निराकरण स्वराज्य-प्रति का प्रथम कदम है। अतः विदेशी राज्य के निराकरण के साथ-साथ स्वराज्य का अवशी बरस उठाने को ब्रह्म-रचना में अपना एक शालक सेनानी के लिये जाननी था। अतः उन्होंने प्रायशः ही उच्च मजिब्य न करते लोक-

शाक्तिक हल निकालने का सारागम अभिधान मान नहीं है, बल्कि मानवीय समस्या के हल के लिये एक क्रान्तिारी स्वयंसेवी-समाज-विकास की स्थापना के लिए प्रवृत्ति अभिधान है। अगले साल प्राचीन-समय में विजोवाजी ने भूदान वर के मूल लक्ष्य की घोषणा की। उन्होंने कहा कि स्वराज्य-शक्ति के लिए स्वतंत्र लोक-शाक्ति का अविभाज्य ही भूदान का लक्ष्य है। यह स्वतंत्र लोक-शाक्ति स्वयंसेवी-समाज-विकास की दिशा-सक्ति की बिरोधी है। इस घोषणा की हृद्य तर्कों का बोधना-वक मानते हैं। अगले मास सर्वेसेवा सच ने उच्च माध्यम में राजनीतिक शासक का एक नया अध्याय प्रस्तुत। संतान राजनीतिक पद्धतियों के मातृशरीर को देल कर को लोक-विचार की खोज में थे, उन्हें इस बक्तन्त्र में एक नई दिशा दील वरती, अतएव वे लोक-शिक्षण-आन्दोलन के प्रति आकर्षित हुए। विजोवाजी का यह बक्तन्त्र, गांधीजी के बरस संघ के नव-संरक्षण तथा कार्यक्रम के नव-बन्धना की बक्तन्त्र का एक शलक से स्वीकारण था। प्रश्न यह है कि विजोवाजी केवल लोक-शाक्ति से निरपेक्ष-व्यक्ति का अभिधान है, इतना मात्र कहते वरत कोई नरे उप-नीति होती क्या? मेरे विचार से ऐसा नहीं होता। उन्होंने स्पष्ट कहा थे वरत 'लोक-शाक्ति की उन्नीति' को सशरी नहीं है। 'एक कर्ष'। इसे समझ देना चाहिये। वैज्ञानिक-शक्ति के कारण राजनीतिक तथा आर्थिक-नित्य-निरीक्षण के प्रवृत्त-संसार में विश्वप्रसार राजनीतिक-अभिधान की समस्या उत्पन्न हो गयी है तथा इति-मुक्त परी आम्बार्दी का यह अर्थों के जागृय से इति-वक्त में जिस प्रकार सुनिश्चित-समाज उठा रही हुई है, वरते समाज्य के लिये स्पष्ट-शक्ति को भी अपने से निरपेक्ष-लोक-शाक्ति के आधार

पर छोटी-छोटी इकाइयों के अभिधान तथा नेतृत्व के विकास की आवश्यकता पैदा हो गयी है। केवल राजनीतिक-अभिधान की समस्या के कारण ही नहीं, बल्कि लोक-शाक्ति आधारित राजनीतिक-लोकतन्त्र पर जब वे नव-व्ययण की निर्मोहनी जाती थीं और राज्य की परिणामा में कल्याणकारी राज्य संस्था भी बढा दी गयी है, तब वे नव-कल्याण की निर्मोहनी, उपलब्ध के शास-निर्माण के लिये भी राज्य की ओर थे। इस निरपेक्ष-शक्ति के संरक्षण की आवश्यकता हो गयी है। क्योंकि स्पष्ट है कि राज्य के पास को दो-धाकियों-पैनीके शाक्ति और कार्य-शक्ति" है, केवल उनके सशरी-वैरों में राज्य-बन्धना-समाज कार्य का शलक सेनान नहीं कर सकता है। चाहे राज्य का स्वयं-परिचरवाही, कर्म-निरोध का शरीर ही तब-वारी अभिधान हो, और चाहे सत्य-मैटवाही सेनान-वैर, जनकल्याण कार्य की सफलता के लिये इस निरपेक्ष-शक्ति को अन्व-व्यक्तता बनको है ही। अतएव निरपेक्ष-माग्यता स्पष्ट-शक्ति आधारित समाज की ही है, उन्हें ही इस शक्ति का संरक्षण करना होगा।

जहाँ तक अर्थनीति का शवाल है, उन-देशों को भी वहाँ आर्थिक-परिचरवाही-मूलक है और यन्नी आम्बार्दी के कारण बेकारी की समस्या है, इति-मूलक-माग्य-योग-प्राप्त अर्थनीति को ही अन्व-व्यक्तता पेशना। इस तरह नव को कहते हैं कि हमें इति-मुक्त-समाजोन्मा-विकास अर्थनीति को अपनाना है, वह सन्वीय के लिये ही चाहे परिचित या अलग-व्यक्त-मोही है। सैनिक-शक्ति द्वारा शासित समाज को भी आज इस प्रकार की अर्थनीति को आवश्यकता है। यही कारण है कि देश के वे नेता जो दण्ड-सन्वीय राजनीति को मानते हैं और गांधी-विचार ॥ नगरालि है या जिसे प्रवृत्ति का पूरा दर्शन है, वे भी हर प्रकार की अर्थनीति का विचार देय और सरकार के सामने रखते हैं। स्पष्ट है कि अगर इस प्रकार की अर्थनीति को चलाया है तो उसके सफल-संचालन के लिये छोटी-छोटी मात्र इकाइयों को लाना बजाना ही होगा, क्योंकि निरपेक्ष-समाज्य के लिये [देख प्रष्ट ११ र्क]

भारत-चीन सीमा-विवाद एवं विश्व-संघ

सहस्रमोक्षारामण भारतीय

चीन-भारत का सीमा-विवाद कुछ के विना नहीं हल किया जा सकता है, इस सम्बन्ध में सर्वोपरि ने विचार-स्रोतों में गर्भोद्भूता ये पचाई हो रही है। अनी सर्वोपरि-मामेलन के सम्बन्धन में भी जवर्ष हाजमी ने भी यह सुझाव दिया है कि "पंच निर्णय" में लिए गए पंच परिचय समरस्य मान कर, उस दिशा में आगे बढ़ना बहाने चाहिए।

कुछ दिन पहले भी संस्करण देखने भी इसी विषय पर "मुद्रान-यज्ञ" में एक लेख लिख कर पन्ड मुद्रान दिने कि यदि कुछ के विकल्प के रूप में हूँ अन्तर्प्रयोग मानने मुद्रानके हों, तो उसके लिए अन्तर्प्रयोग स्तर पर ही प्रयत्न होने चाहिए पर "यथा सम्भव समझने से" और यह सम्भव न हो, तो "नैतिक उचित से अर्थात् समरस्य-सौतिक के उपयोग से वे हल करने चाहिए" एवं यह सत्यप्रामाण्य किरी देव-विरोध की न होकर "सब देवों की जनता की होती चाहिए" इसके लिए उन्होंने "लोक-प्रतिनिधियों के निरक्षर-संघ" की स्थापना का भी सुझाव दिया है।

राजधानी रहने की भी संभावना ही है। अर्थात् भारत के सभी निवास करने वाले देशों में ऐसी चले ही है। पन्डु ने लगे उत्तर पश्चिमी चले नहीं आनी का कर्णों। उत्तर 'पूर्वी' का हैम आवागमन में सब बंद करके देते आने के वेग न करे, वहाँ रुक कर चला नहीं हो सकेगी और बीच आनी ऐसी अंतर्देशीय समाजों के अन्तर्ग ही पडा है।

हम पक्ष के ही पक्ष हैं। एक यह कि निम्न पक्ष लय है। दूसरा यह कि इन सत्ताओं के हल कैसे किया जाए। पहले उरु के सम्बन्ध में निर्णय पक्षों तक तो पुरा सुधी है कि दोनों ने अपने अपने 'आन्तर्देशीय' विचार कर लिये हैं। अन्तः-मुद्रान-स्तर पर हम चला का निश्चयन न करता हो, तो यही विकल्प रह जाता है। प्रथम आन्तर्ग चला बाय, फिर उत्तर पक्ष उरु ही पक्ष को मान्य पक्षों हाथ यह प्रकृत आन्तर्गत होती चाहिए कि किन्हीं पक्ष लय है। यह पक्ष निर्णय से पूर्व ही संभव है। पंच निर्णय की बात पर अभी हल नहीं चला कर रहे हैं। अन्तः प्रथम हल बात की आवश्यकता है कि दोनों पक्षों को मान्य पक्षों हाथ हल दिखती का एवं मान्य बातों का अन्वयण हो पक्ष उत्तर पक्ष का चाहिए हो। पर यह प्रथम उत्तरपक्षों हाथ, पूर्वो के बाद, अनी हाथ ॥

किता आचार एवं पक्ष प्रकृत की भाषणी, हकीम मरिद है, क्योंकि आचारका नीच-भारत के सिवा देव ऐसी हल उप देने में प्रतिनिधियोंके, क्योंकि अन्तर्प्रयोग सत्कार का यह देव अन्तर्ग है कि निराश्रयों के सामर्थ्य में और एक पक्षीय मान न करी जाए। एक तरह तत्परी हाथ अनी यह बात सदाही नहीं चली है।

अब सत्कारों हाथों यह प्रथम साक तीर से नहीं मिला जाता है, तो फिर दूसरा उदाहरण यह रह जाता है कि निर्णय सत्कार के साक्षरिता हलचल दोनों को इसके लिए वास्तव-हल विचार बाय पक्ष उन्हें हल प्रथम के अन्वयण के लिए प्रयत्न को मान्य। ऐसे सम्बन्धन एवं सा-प्रकृतन तो प्रत्यक्ष मान अनी कुछ नहीं होगा, यह सही है, पन्डु मुद्रान के निम्न यह आचारका सुझावों का प्रयत्न दोनों और है होगा, तब इन मन-व्यक्तमान का अन्वयण साक्षर होता। इसे सम्बन्ध

है, अन्वयण एवं सा-प्रकृतन में तो भी साक्षरता प्राप्ति से सुझावने का नाम संशयन होता चले।

भी हाजरासोकी में लोक-प्रतिनिधियों के निष्पन्न की को अन्वयण पक्ष को है, उत्तर का औचित्य एवं सत्कार नहीं प्रकृत होता है, क्योंकि पूरा ऐसी ऐसी एक उपाय होने पर भी हल सत्कारों की प्रतिनिधि है, सत्कार सत्कार नहीं करे सत्कार दत्तना ही चाहिए ॥

दूसरा पक्ष यह है कि एक समस्या को हल कैसे किया जाए। अनी तो चीन ने एक पक्षीय कार्यालयी करके आन्तर्ग द्वारा कुछ मान्य हल-हल कर लिया, पक्षा चीनका है। यह एक पक्षीय कार्यवाही अन्तर्गपक्ष की, क्योंकि भारत दाखिलगी विचारों के लिए प्रयत्न ही जाता। पर अब एक कर्म उदाहरण का सुझाव देकर आगे किता न उदाहरण जा लें, इसकी कार्यवाही को दूसरे पक्ष में हाथ चली जा रही है। इसमें के दूसरे पक्ष का उत्तर को मित्रता नहीं पर समस्या ऐसी ही रह जाती है।

समस्या हल करने के सुझ के विना ही आर्थों हैं—आर्थीय चलाय एवं अन्तर्ग में पंच निर्णय के हाथ है कि वे दोनों ही पक्षों की सहमति से सत्कार हो सकता है। चलाय किन्तु हल तो स्थिति है, क्योंकि अन्तर्गपक्ष सदा ही नहीं जाए है। पंच निर्णय के लिए अन्वयण ही जारी अन्वयण है, क्योंकि अनी चीन सत्कार से एक सम्बन्ध में ऐसी ही और मान नहीं हुए हैं। पन्डु यह प्रथम उदाहरण नहीं है। अन्तः पंच निर्णय मान्य करने का आवश्यकता नहीं पक्षों द्वारा अब हल प्राप्त नहीं होता है, सब तक रूप सुझावों को अन्वय में लाना अन्वयण है। भारत की अन्तर्ग चीन पहले अन्वय करके जाहिर करनी होगी एवं चीन से 'अन्तर्ग' रहना होगा। उत्तर की प्रथम आर्थ सुधी की अनिश्चय या तो अन्तर्ग

हल के उत्तर पक्षों हाथ हो सकता है या भी सत्काराणी हाथ सुझाव हुए लोक-प्रतिनिधियों के चला हाथ। लोक-प्रतिनिधियों के हल की बात अभी चला माने या न माने, वही एक मांग ही सत्कार है, बिना के भी पूरे के विने हुए उत्तरपक्ष कालों का रूप एवं आगे के अन्वयण संशयन का बन होगा। यह रूप अनी अन्तर्ग में स्थितिगत रूप से उत्तरपक्ष पक्षों की भी सत्कारना ले सत्कार है और सत्कार एवं ऐसी भी होती, क्योंकि मान चीन सत्कार ले करनी होगी, न कि चीन के ऐसी न।

इन दोनों प्रविश के अन्वयण आशा है, नैतिक दत्तन अन्तर्ग सत्कार का प्रथम। यह किता सत्कार होगा, अन्तर्ग इन्हीं के उरु के सत्कारों पर अनी ही चलाय करने की आवश्यकता नहीं। उत्तर पक्ष प्रथम अन्वयण उदाहरण है कि वहाँ एक पक्ष भी उत्तरपक्षीय में 'नैतिक सम्बन्ध अन्तर्ग-सत्कार' रहा है, वहाँ दूसरी और "आध्यात्मिक सत्कार" से एक विचार मान्य है। उत्तरपक्ष प्रथम है, सत्कार को केवल नैतिक दत्तन तक ही सीमित मानना। दूसरा सत्कार है कि प्रथम में वह अन्तर्ग की वा सत्कार है, अन्तर्ग देवा भेद या ऐसी सीमा रेखा सीवना इतिव दत्तना, क्योंकि सत्कार अन्तर्ग नैतिक दत्तन की स्थिति के लिए ऐसी सत्कार पर से उत्तर सत्कार का भी, जो आध्यात्मिक एवं वैश्विक मान्य नहीं चली है, सत्कार चला होगा। दोनों सत्कार अन्तर्ग नहीं है। पर आर्थिक 'नैतिक दत्तन' को अब कार्य रूप में परिकल्प करके का प्रथम उत्तरपक्ष होगा, यह किता की महारथ में जाने की सम्भव महत्त्व हुए किता नहीं रहेगी। फिर भी ऐसे क्षेत्र पर यह पक्षी है कि पन्डु ने अन्वयण के दौर पर नैतिक दत्तन-पक्ष सम्बन्ध के अन्तर्ग का पक्ष एवं अन्वयण अन्तर्गपक्षों एवं उत्तरपक्ष में सत्कारे बनाया सत्कार और सत्कार हो सकता है, तो यह लोक-प्रतिनिधियों का पक्ष ही एक लोक-प्रतिनिधियों के सब की सम्बन्धिता एवं सत्कार की सीमा स्थिति हो सकती है, जब उत्तरपक्ष ऐसी ही ऐसी 'अन्तर्ग' का सब हो, क्योंकि सत्कार या तो एक उत्तरपक्ष पर नहीं चले सत्कार है। किसी भी पक्ष की सत्कार अन्तर्ग देव के

लोक-प्रतिनिधियों से अन्तर्ग भी जाहिर कर सकती है। अब तक का 'सत्कार' उत्तरपक्ष को भी सत्कार कर सकता है।

अन्तः 'पंच' का पूर्ण अन्वयण एवं 'अन्तर्ग-सत्कार', पंच निर्णय की 'अन्तर्ग की सत्कार' एवं 'अन्तर्ग' सत्कार नैतिक दत्तन का 'अन्तर्ग' एवं 'अन्तर्ग', वे उत्तर ऐसी चलाय हैं, जो ऐसी 'सत्कार' के हाथ हैं। किने का सत्कार है, सत्कार आन्तर्ग-पक्ष के अन्तर्ग 'सत्कार' के इत्तफ ही नहीं, अन्तर्ग सत्कारों में लिए भी।

अब प्रथम यह उत्तरपक्ष होता है कि ऐसी रूप की स्थानता सत्कार होगा, प्रथम देव के ऐसी प्रतिनिधि सत्कार प्रथम हाथ प्राप्त ही एवं हल संभव का सामान्य अन्तर्गपक्ष बना लया जाए। और भी एक दत्तन हल सत्कार में उत्तरपक्ष है कि नैतिक दत्तन एवं सत्कार की 'सत्कार' देवों, यह तो लोक है, पन्डु देवा सत्कार और सत्कार में ही तो सत्कार होने चलाय नहीं है। अन्तः यह सत्कार का एक सत्कार न हो, सब तक सत्कार का चला रहेगा। किता आचार पर वह सत्कार-पक्ष मानने सुझावों के लिए प्रथम पात्र ले सत्कार। क्योंकि वह सत्कार वह और "अन्तर्गपक्षीय" सत्कार न चले, तब ही केवल "सत्कार-अन्तर्ग" ही पक्ष माने का पक्ष है, किने सत्कार-पक्ष एवं सत्कार न चली, यन्तर्ग यह सत्कारों हाथ सत्कारि भी।

तीसरे, नैतिक दत्तन का सत्कार एवं प्रथम चला रहेगी। अन्तर्ग यह सत्कार चले का मार्ग चीन-सत्कार होगा।

वे यह प्रथम उत्तरपक्ष होते हैं, किने उत्तर की सत्कार-पक्षों के लिए में ले नहीं चला पा रहे हैं। यह चलाय पर चलाय न केवल आन्तर्गपक्ष है, अन्तर्ग मुद्रान का सत्कार देवों की स्थिति से अन्तर्गपक्ष भी है। पन्डु उत्तरपक्ष चले आगे बढ़ा जा सकता है, इसकी भी अन्तर्ग स्थिति हल होकर चली है।

'सर्वोदय'
अंग्रेजी मासिक
संपादन : एन० रामरामाणी
संपादक प्रमुख : साधु-पार संपदे
पता : सर्वोदय मठ, कलकत्ता, लखीर
(म बा सर्व देव संघ)

कार्य-संयोजन में समग्र चिंतन आवश्यक

विनोबा

[२५ जनवरी '६१ को श्री रामप्रभुजी ने परधान में विनोबाजी के सामने निम्न लेख महत्वपूर्ण और बुनियादी प्रस्तुत किये ।

(१) यों तो हृदय-परिवर्तन हमेशा ही होता रहा है। लेकिन चापडे साम्य से हृदय-परिवर्तन की प्रक्रिया समाज के स्तर पर संगठित रूप से प्रवृत्त हो रही है, इसके आगे तीन मुख्य तत्व माने हैं : विचार-प्रसार, निर्माण-कार्य का प्रभाव और परिस्थिति का दबाव। आप किस विन्दु की कल्पना करते हैं, उहाँ पहुँच कर गाँव की समूह-शक्ति प्रकट होगी और वह सामूहिक विषयों से मान-परिचा की दिशा में कदम उठायेगी।

(२) हमारे पूरे कार्यक्रम में कार्यकर्ता का प्रश्न बुनियादी प्रश्न है। उसकी जीविका, उसका शिक्षण, उसका परिवार आदि सभी प्रश्न हैं। जब तक ये समस्याएँ हल नहीं होती, तब तक न उसकी संस्था बढ़ेगी, न शक्ति। कृपाया ध्याये, क्या किया जाय ?

(३) बहिसा की प्रक्रिया में हर कार्य की क्रिये निष्पत्ति अन्तर्स्था में मायुषी के रूप में ही प्रकट होती पाहिये। प्राण ऐसा नहीं हो रहा है। कैसे होगा ? 'बोध में कृदा',—आपके इस नये नारे से क्या कलत्र पड़ेगा ?

भूदान-रिहाल को केन्द्र मान कर पैठी निर्माण-योजना बनायी जाय, जिससे उसके और दादा के बीच सामीप्य पैदा हो ।

विनोबाजी ने इन प्रश्नों पर जो विचार प्रकट किये हैं, वे प्रत्यक्ष कार्यकर्ता के लिये बनती हैं। इन विचारों में विनोबाजी ने अत्यन्त स्पष्टता से आन्दोलन के विभिन्न तंत्रों पर मार्गदर्शन किया है। १० मार्च '६१ के 'मूलन-यत्र' में 'कार्यकर्ताओं के साथ विनोबाजी की चर्चा' इस तीव्रक से इन विषय पर प्रो. उल्लेख विनोबा-सदस्यजी इस की शायद ही कम है। विषय और चर्चा महत्वपूर्ण होने से हृदय-पुनः बहो पूरे रूप में दे रहे हैं।—सम्प्रदाय]

(१)

समाज-परिवर्तन के चार प्रक्रियाएँ

समाज-परिवर्तन की चार प्रक्रियाएँ हैं : (१) हृदय-परिवर्तन, (२) परिस्थिति-परिवर्तन, (३) विचार-परिवर्तन और (४) सेवा-कार्य। हृदय-परिवर्तन ईश्वर करता है। परिस्थिति-परिवर्तन समाज करता है। विचार-परिवर्तन विचारक और विचारक करते हैं और सेवा सेषक करते हैं। हृदय-परिवर्तन करने की प्रवृत्ति ईश्वर से प्राप्त होती है। उसके लिये हृदय में धर्मन-भाव होना चाहिए और हृदय की आध्यात्मिक मुद्रता होनी चाहिए। ईश्वर का नाम हम छँ या न छँ, पर प्रकृत के बिना हृदय-परिवर्तन की संशक्ति नहीं आती। गौतम बुद्ध, नारद, मानक, शैतन्य महाप्रभु आदि हृदय-परिवर्तन करने की शक्ति के उदाहरण हैं।

विचारक परिस्थिति-परिवर्तन की भूमिका देख सकता है। अनुभवी विचारक, प्रतिरोधी विचारक, हर तरह के विचार का अध्ययन करना चाहिये। जो विचार उठी मान्य हो, उस पर अग्रह करना चाहिये और उसे समाज के सामने रखना चाहिये। समाज उसमें से शक्ति प्राप्त करेगा और परिस्थिति के अनुसार अग्रत कदम की कोशिश करेगा। विचारक को समाज के सामने रखते समय साक्षात् परिणाम की अपेक्षा नहीं रखी जा सकती। शुद्ध जीवन की भूमिका में शुद्ध विचार को रख देना ही विचारक का काम है। परिस्थिति-परिवर्तन का काम समाज का है। विचारक के समाज में परिस्थिति-को पढ़ाना पर परिवर्तन करने की शक्ति समाज में होती है। समाज में संश्लेषण की संस्थाएँ होती हैं, जिनसे समाज का जीवन चलता है। परिवर्तन के क्षण में यह संस्था की संस्था होती है कि किसे संस्था की इस समय निवृत्ति उपयोगिता है, किसमें गुण ही गुण हैं, किसमें दोष ही दोष हैं, किसमें गुण-योग होता है। संस्था, धर्म, व्यापार, विद्या आदि सब संस्थाएँ ही हैं। गुणवादी संस्थाओं की रचना चाहिये, दोषवादी संस्थाओं को तोड़ना चाहिये। लेकिन विद्वंसें दोग लो हैं, लेकिन गुण अधिक हैं, उनको दोग बर्दाश्त करने की रणनीति की कोशिश करनी चाहिये। साथ ही दोष-निवारण की कोशिश करनी चाहिये।

कहना, निरुद्ध सुधि, सेवा की योग्यता फिर उभरती है, जो सेवा-नारी करता रहता है। लेखक-परिस्थिति-परिवर्तन की विद्या नहीं होती। जैसे अपनी ही पूर में धार-नदी धीमा प्रवेश करते दोगी की चित्तित्वा साधक करता है, उसी तरह सेवाक समाज में भी सेवा करता रहता है। यह वह नहीं सोचता कि हमने किसकी चित्तित्वा भूला है। जो ऐसी निरन्तरक के भाव जाता है, उसे पर विचार रहता है कि भूल अपना है, लेकिन उसे प्रेम विनोबा, यही लोगो का विचार केन्द्र को प्राप्त होकर रहना चाहिये।

(२)

समाज-परिवर्तन के चार प्रक्रियाएँ

समाज-परिवर्तन की चार प्रक्रियाएँ हैं : (१) हृदय-परिवर्तन, (२) परिस्थिति-परिवर्तन, (३) विचार-परिवर्तन और (४) सेवा-कार्य। हृदय-परिवर्तन ईश्वर करता है। परिस्थिति-परिवर्तन समाज करता है। विचार-परिवर्तन विचारक और विचारक करते हैं और सेवा सेषक करते हैं। हृदय-परिवर्तन करने की प्रवृत्ति ईश्वर से प्राप्त होती है। उसके लिये हृदय में धर्मन-भाव होना चाहिए और हृदय की आध्यात्मिक मुद्रता होनी चाहिए। ईश्वर का नाम हम छँ या न छँ, पर प्रकृत के बिना हृदय-परिवर्तन की संशक्ति नहीं आती। गौतम बुद्ध, नारद, मानक, शैतन्य महाप्रभु आदि हृदय-परिवर्तन करने की शक्ति के उदाहरण हैं।

अभिमत होता है, लेकिन बार के वर्षों में अपने अग्र्यात् के रूप में वह माता-पिता और समाज की सेवा में योग दे सकता है और ऐसी स्थिति में समाज को उन्नत नारा प्रदान करता चाहिये। लेकिन इस पूरे प्रवृत्त में जीवन में उन्नती ही सेवा की अपेक्षा रखे जा सकती है, जिसकी अग्रवृत्त के साथ-साथ बल रहने।

हृदय और समाज-सेवा

अग्रवर्ष-आश्रम की तरह धारणात्मक भी ही दो स्थितिओं होती हैं। एक गृहस्थायत्री सेवा होता है, जो एक या दो सतत से संतोष मानता है, अपनी कामनात्मकता को शासन करने की कोशिश करता है और समाज को कुछ सेवा करना चाहता है। दूसरा सेवा है, जिसका निरन्तर्य जीवन समाज में है, जिसकी संतोष जयिक है और जो बहुत ही बल रहती है। यद्यपि स्थिति के गृहस्थायत्री ऐसे हैं, जिसकी समाज को सेवा होती जा सकती है और उनके लिये अग्रवृत्त जीवन की योजना भी बनानी बल सकती है।

लेकिन दूसरे वर्ग के गृहस्थ हैं जिनमें बड़ी उन्नति है कि वह साधक्य जीवन में रहे और उनमें रहते-रहते समाज और समाजिक कार्य के रूप में जो दान दे सकता है, पर अधिक बल वाले गृहस्थों को पूरे समय का कार्यवाही नहीं मानना चाहिये। मुख्य रूप में ऐसे लोग जब विनाश-संघ में काम करते हैं, तो वे निरन्तर को बहुत कम समय और शक्ति दे पाते हैं। और इन तरह मान्य रहते लोग को गृहस्थों के बीच के कारण के

काम की कार्यकर्ता की शक्ति के अनु-चार होना चाहिये। समाज अधिकार भोजन लेगी के बना होता है, जो प्रायः अपने ही होते हैं। अनाधार्य गुणवत्ता या, दोषमाले छेद कम होते हैं। उसी तरह कार्यकर्ता अधिभार भोजन होते हैं। अनाधार्य कम होते हैं। और उन्नत संस्था के औसत में गिरते हुए उसमें से नकार (शक्ति) करने की बलवत्ता पूरे दो अग्रवृत्त में जो औसत के उच्च ही उन्नती की व्यवहार (टीक) करना चाहिये। औसत बाल औसत के ऊपर से मले ही व्यवहार (टीक) कर ले, लेकिन अग्र गृहस्थ-यत्र, शुक्रवार, १९ मई, '६१

(२)

कार्यकर्ताओं का प्रश्न

कोई भी कार्य, कार्यकर्ता उन्नत केन्द्र-किन्तु होता है। लेकिन कार्य के अग्रवर्ष-संयोजन करने वाले को उसकी योजना समझनी चाहिये। किसी कार्य में किसी भी कार्यकर्ता को उन्नत से कार्य में शक्ति-वत्ता है और कार्यकर्ता का भी हृदय होता है। कार्यकर्ता कार्यकर्ता के लिये ही है या श्रद्धाकर्ता है, मानवली है या संस्थाकी है। अग्रवर्ष की भी दो परिस्थिति-यों होती हैं—(१) उन्नत में बल माता-पिता पर

ग्रामदानी गाँव प्रगति के पथ पर

[महापट्ट प्रदेश में कोल्हापुर जिले के आगरा और चवदाह तहसील तथा रत्नागिरी जिले के बुझाल और सावन्तवाडी तहसील में अधिकांश ग्रामदानी गाँव हैं। ये चारों तहसीलों एकत्रित हैं। महामुं कुरुल मिला कर ३० ग्रामदानी गाँव हैं। वहाँ निर्माणाधीन या विप्रेय समस्ततात्मक रूप देने का महाराष्ट्र के बाह्य-प्रांतीयों ने तथा किया है। उन्नी दृष्टि से आज काम हो रहा है। वहाँ उनमें से कुछ गाँवों के प्रगति का लेखा दे रहे हैं। आगरा है, अन्य प्रदेशों के ग्रामदानी गाँवों में एक रहे बाबाजी जानाकारी प्रदेचीय सर्वोदय-मंडल जेंजेंगे।—सं०]

बिबुल

कोल्हापुर जिले के चंद्रवार तहसील में बिबुल एक असाधारण गाँव बन गया है। देव-नीलम्बरवाडी घाट से यह गाँव कोल्हापुर से ३०-४० मील दूर है। कुछ जमीन २००३ एकड़ है। २९९ एकड़ पत्तल का क्षेत्र है। उनमें से १० एकड़ जमीन नदी के किनारे बसा है। बाढ़ कम होने हैं। उनमें कुछ पत्तल घेर करनी है या पाठ के लिए यह गाँव ही लेनी जाती है। १५० एकड़ पत्तल के फल की जमीन है।

दो लाख रुपये निर्माणकारी की उपस्थिति में इस गाँव का प्रगतिरूप हुआ। बिबुल की जलशक्ति १००० है। आगरापाय कोल्हापुर की रचना की। आरुदेव लेखी रचना पुत्र किया। आपत्ती घटित से भी लेनी की। अत्यन्त बढ़ गया। उसके गाँव का उत्कर्ष भी बढ़ा। गाँव के उत्तर और पश्चिम दिशा में चण्डयना नदी पानी है। उनका पानी काम भी लेनी आता था। लेकिन आज गाँव का अन्धा पानी भीखने का दहन है और १५ एकड़ में गन्ने की फसल होती है।

बह अभाव के गाँव वहाँ से 'डीन' पत्ते कलिया को बह नीचे बहाए उसे अग्नीय और लोहिया और आरुदेव के लक्ष्य भी निर्मित। मशहूर में इस बुधियाजी पाठ का पत्तल प्याज एतदा बरहित।

(३) माधव फँसे बड़े ?

कोल्हापुर की वह दिशा है कि हमारे प्राणों की वह बचोती होनी चाहिए कि उनमें परतल कष्टकों में घाटुरी देना हो। अत्यन्त मनुष्य के बीच माधव नहीं बड़ा को बड़ी न होनी बड़ी भूत है। देना काम बढ़ावित करना चाहिए और करार को कष्टय कर उठे हुए करन की कोषित बरनी चाहिए। भूतान की शांति और भूतान-शान्ति के सम्यक में भी बारी बारा शांति होनी है। अगर बरतन में बात को बरिया के राज हुआ है, तो उनमें से माधव की निगमित होनी ही है। भूतान-बह के प्रगाम में मैं भी शोचना या कि कोई बात है, कोई आशावा।

बह अर्थ में शोचना है कि हमारे निचारा में 'दर-वाट' कोई देनी नहीं, सब 'दर-दर' है और लकने पाठ कुटन कुट लने को है। अर्थ को, भूमि को, दृष्टी सम्पत्ति को या बुद्धि को, सम्यक को मर्यादा बरतनी है और अर्थ के लोचन के ही अभाव का दृष्ट्य और संयत्त होना है। हमारे काम में बहुत नवी परिवर्तन हुए कला देना ही जाती है कि प्रगाम। विन्तन परिणामों में पैसा बह रह जाता है। उद्योग विपन्न के लिये यह लक्ष्य बुझानी है कि हम समुदाय, समाज उद्योगी निरिवाणों, का निर्माण करें, विरोधी का नहीं। हम

हरकट को मनुष्य मानते हैं। राजा, आसना, मन्दिप, बन्दूर आदि मायाओं में नहीं सोचते। अगर हमारे निचारा में से वह सुव्युत्पन्न हुए हो जाए, तो हमारे काम पर हमारी भागी में से ही उत्पन्निया शुरू होती।

आज में शोषे में एक बड़े की गाँव बरता है। गाँव हमारी कन-के-कन हो, बनी सामान्य शक्ति का त्याग कटिक के कारण न हो। एक बड़े की गाँव कन-के-कन है। गाँवों में बड़ी लक्ष्य हो, बह लक्ष्य भी में एक कुटुम्ब राज है और कोल की जमीन है। उनका हस्ता है तो गाँवों में मनुष्य का कार्यकरण पैदा होना और लक्ष्यकारी की नहीं दिशाए प्रकट होती। माधवों की भूमिका में जो भी आसक्ति बल्यया आसना, उन्नी निगमित अनुसूद्ध होती और गाँव की उम्हड़ बरिते बड़े। जहाँ ही उद्यम निर्माण तथा अर्थ है, उद्योग, उद्योग बरानी ही दिने की प्रगति प्रगाम मारत हो। हमें निर्माणी की उत्पत्ति की नाराज नहीं करना है, लक्ष्य पर चलाएरत हमारे बरतने है कि उद्योगी और अधिक देने की शक्ति मनी रहे।

अगर हम आज अणु-अणु पेशानी टंग के बने हैं, मैं बड़े १०६ मील पत्तल। मैं पूर्ण-हस्तानी की बात बरत करत हूँ। गाँवों में बड़ा बनी, गाँवों में बड़ा बनी, बरत नहीं। एक क्षेत्र में और उनमें अर्थ है कि उद्योग करें। पर-पर के समर्थ करें तो कोल्हापुर नहीं कि हमारा काम परिकल्पना में ही और वहाँ के लोचनों में परतल माधवों में बरत हो।

एक ५० मील लंबाई की विस्तृत ग्राम-रचना मंडली" संस्था स्थापित हुई। कोल्हापुरी के उत्तर ५० एकड़ क्षेत्रों की दृष्टि एक इमारत २० की है। गाँव की अधिक तथा सामाजिक हालत मनुष्य ही निरुद्ध थी। उस मंडली का अन्तान उद्योग मारत था। इस आदर्श के पीछे भीकन होना ही १६ २० वा। छात्र-काम नहीं के उत्पन्न थी। डिपार्चरी भी भूमि की नहीं के बरतार थी।

एक १९६२ में दूरे वर्ष के लिए आगराक अन्तान पैदा किया गया। आज उद्यम मनुष्य का भीकन आगरा ही ७० है। १२ बरतण भूमि पर विचारों की व्यवस्था है। प्रगामिक के अंतर्गत नगरपालिका कोल्हापुरी, तथा प्रगामिक, पत्तल मंडली, तथा प्रगामिक, से अंतर्गत प्रगामिक बरत रही है। अन्तक के लिए मंडल तैयार करा, जिनमें २५ गाँवों का अन्तान बरत किया गया है। गाँव के लिए २० हार्थ बरत का इन्वन्, मण्डल, गुरु बरतने की शोचना, लोचन का हल आदि सामान्य सामुदायिक कार्य है।

'शोचने-भरित' की शोचना और एक प्रगामिक मंडली में संभार किया। एक, के १००० बरत, अन्तक के २० मील के २० तथा अन्य गाँवों की छात्राये गये। अन्तक शोचने में कोई भी पैसा नहीं है। बंधुवार्थि शोचना बनानी गयी है। उनमें बरत कन-कन दो पेशारी करने का निर्णय है। कामकुशली, चरण का उत्पन्न-वर्तनी ही शोचने-वार्थि है। माधव के पहले निर्मित बरत काम का ही बरत बरतना का अर्थ होना बरत का काम है।

रावले

मच्छी गाँव का जेल्ल पत्तलों का प्रगामिकार बना है। लो जेल्लों का बरतक पत्तल कुटत है। २५० एकड़ जमीन है। उनमें से ५० एकड़ जमीन कार्य की थी, तो दो माधवों की उत्पन्न नहीं थी। बहुत ही लकने है, पैसा उन बरतने का काम में बने। जमी जमीन उत्पन्न की। पर का बरत हुआ था जो हस्तक किया और जमी को ख्यात बरत दिया। जमीन को सामुदायिक रूप में जोड़ने का निर्णय किया। जमीन पर जोड़ से मेहनत बरतने को अधिक उत्पन्न आसना, बरतने हस्तक पत्तल लेनी पर जमीनी थी। शोचने बरत के शोचने लक्ष्य बनवाने की उत्पन्न बरतें। यह चाय अन्त

दो भवितियों पर शोचन दिया, ताकि अन्त टैंग पैदा में बरत बर करें। पर के बंधु ही देनमात के लिये निर्मित को पर में उत्पन्न पत्तल था, छोटे बच्चों की और देवों का काम भी एक ही पर ही ही किया। अन्तक अन्तक पत्तल लेना पर उत्पन्न। अन्य भी काम बरतने लगे। अन्तक में जमी लोचनों को जाना पत्तल था, अन्तक में पैसाजी बरतार में बने लगे। काफी अन्तक मिलने के लोचने में काम होने लगा। मण्डली के दिनों में होने वाली पत्तल भी मिलानी। ५ एकड़ में गया शोचन। अन्त २० मील के लिये अन्तक पत्तल लेना देना है। एक वर्ष उत्पन्न मिलेगी।

मण्डली के दिनों में एक बड़ा लोचन लेनी पर रही है। शोचन आरुदेव काम में होता है और लेनी में काम दिया जाना है। गाँव में प्रगामिकी है, आगरापर कोल्हापुरी है। उद्योगी माधविकत की लक्ष्य बरतण हुई है।

उत्पन्न दो गाँवों की तरफ धमाली, बरतकोल और सावेवारी में काम हुआ है।

रत्नागिरी जिले में जो ग्रामदान हुए हैं, वे महाराष्ट्र जिलों में ही उत्पन्न हलवों में हैं। १९५५-५६ में महाराष्ट्र में सामुदायिक पत्तल हुए हैं। एक एक जिले में वे बरत बरतना जाती थी, उन तक कुछ माधवों नहीं मिले। १९५६ में जिनोपानी की पत्तलाना हुई, उद्यम एक जिले के बड़े-बड़े गाँवों में प्रगामिक शोचन लक्ष्य को, देना काम अन्तक पत्तल दिया था। प्रत्यक्ष जिनोपानी के उत्पन्न गाँव-बालों में माधविक का विकास हुआ। इस पत्तलाना में और कुछ माधविक मिले। इन गाँवों में एक-दो लाख काम पत्तल। एक शोचने में कल्पन लेने में अन्तक की निर्माणों की पत्तलाना है। उनमें और भी ५ ग्रामदान मिले। कुछ १२ ग्रामदानी गाँवों में काम हुआ है।

अन्तक गाँव बुझाल के पूर्व निर्माण में और कोल्हापुरी तहसील के गाँव मण्डली के १२ गाँव का एक क्षेत्र बना है। जिनोपानी तहसील के गाँव पत्तल लेने में है। अन्तक पत्तल के मण्डली के लक्ष्य गाँव हैं।

बत गाँवों को ३० हजार २० पा करतारी करत किया गया है। 'प्रितल' अन्तक अन्तक निर्माणकर्ता है। बत अन्तक में बत माधवानी गाँवों में काम बरतनी है, जो ग्रामदानी गाँव के निर्माणी और शोचने की लक्ष्य हुई है।

दर गाँवों में १५ पत्तलाने काम बरतें हैं और माधवों में बने गये शोचने लक्ष्य और के लिये बरत रहे हैं। ११ मंडली काम बरतण कोल्हापुरी जिले में है। राजी-शोचनोद्योग का और गाँव के माधविक शोचन का काम बरतने के लिये बरतक

नेत्रुच निर्माण होगा और स्थानिक दफ्तर से काम लेंगे, इस विषय ५ हजार जन-संख्या के क्षेत्र के लिए २५ हजार दिवस के क्षेत्रीय समितियों की स्थापना की गयी है। ४ क्षेत्र-समितियों लगी हैं।

निवचने

ग्रामदानी गाँव में ग्रामदान होने के बाद 'ग्रामसभा' की स्थापना की जाती है, जमीन का विभाजन किया जाता है। सरकारी ग्रामस्वच्छता योजनाएँ बनाने की कोशिश की जाती है। इसमें कर्म गाँवों में विद्येय प्रगति की है। जनसंख्या निवचने गाँव में घोषणाएँ की जाती हैं। लोगों ने मिल कर कार्यवाही और मोद्यय के लिये प्रथम ४ हजार ४० का यत्न करा कर दिया है। इस गाँव में २२ परिवार २२ एकड़ जमीन सामूहिक रीति से जोत रहे हैं। यहाँ की मुख्य फसल चावल है। गर्मी में और मारिच में, पेदी की फसलें यहाँ निर्याती जाती हैं। गाँव की जनसंख्या १५७ है। इस जमीन २५८६ एकड़ ३१ गुज है। पसल में २०७२२ एकड़ है। इस गाँव का उत्पादन एकड़ में तीन गुना बढ़ा है। इस साल १२० नन चावल अधिक हुआ था। पाठ्यालय के लिये गाँव में समाज नहीं थी। गाँव के लोगों ने भ्रमदान से एक छोटी समाज बनायी है। इन्होंने ५ परिवार हैं। एक साल पहले एक हरिनन का घर बल गया, तो गाँव के लोगों ने मिल कर उसे ६ साल भर के लिये काफी धन दे दिया। लोगों की इच्छाओं का खयाल कर यहाँ एक क्लबघर स्थापित किया जा केन्द्र कोष है। इस केन्द्र द्वारा एक बहो-भारतीय फेरा और काठवासी का काम चलता जाता है। इसमें पूरे दिवाली की अतिथिजत जमीन फसल के लालक नहीं है। इसमें एक लक्ष्मी लेडी घर बनाने की योजना बनायी गयी है। इस गाँव के कुछ जानवरों का उचित उपभोग करने के लिये जमानेय शुरू करने का निर्णय लिया गया है।

बिबलसलवाही

इस गाँव में १५० परिवार हैं। जनसंख्या १८८ है। पसल में ६० एकड़ जमीन है। ४३३१ १२ एकड़ जमीन चौंथ बगैरह डाल कर गाँव के लोगों ने काम में लगी है। इस साल २०० मन चावल के अतिरिक्त पैसा करने लगे हैं।

रामगामुलनसूली

यह सर्वांगी ग्रामदानी है। जनसंख्या ४००। जमीन १८७१ एकड़, इसमें से ७७१ एकड़ भूमि में फसल होती है। यहाँ साधन की कमी है। निर्माण-समितियाँ द्वारा पैस लखाने के लिये कर्म दिया गया। लोगों ने लेगे में इस साल अतिरिक्त लेनी करने का तय किया है। गाँव की ग्रामस्वच्छता योजनाएँ स्थापित हुई हैं।

नानेली

मारुटी के मधुपुर साहित्यिक भी १०० परांपरक का यह गाँव है। इस गाँव

की एक बाड़ी का ग्रामदान हुआ है। परिवार संख्या १६ है। १२३-२८ एकड़ जमीन है। गाँव में चार मुखियाँ हैं, उन्हें जमीन दी गयी। २४३५ ६० सरतार की ओर से कर्म दिया गया है। यह योग्य रीति से लैडिया का रहा है। इस वर्ष से बाड़ी छाहुरी कर्म से प्रथम-वर्षीय शुरू हुई है। गाँव का उत्पादन लघुयुगा बढ़ा है। एक अग्रर चराले-पेट भी चलता है। घोषणाएँ की स्थापना हुई है।

चालाबाब

जिले के मजदूर गाँवों में से यह एक है। गाँव के २२ परिवारों में से १८ ने ग्रामदान किया है। विनोबाजी की प्रदर्शना के समय वह ग्रामदान हुआ। इसमें ज्यादा सुधार नहीं हो सका, इसका कारण यह कि इस गाँव के प्यारदार लोग जमाने में हैं। जो लोग गाँव में हैं, उनका और जमाने के लोगों का उल्लास कल्प नहीं ख खलवा, विनाना कि प्रगति के लिये रचना आवश्यक है। तिर भी ओडोला, कर्मदा, बाणेश, पल्लर में काम हो रहा है। गाँव में दो अग्र-केन्द्र चलते हैं। सामूहिक लेडी और लक्ष्मी दृष्टान्त चलने की कोशिश की है। केन्द्रन वह उलतीकल नहीं हुई। बाणेश बाड़ी पर एक ग्रामस्वच्छता योजनाएँ शुरू की। ग्रामस्वच्छता और लालक फसल-समीक्षायोग का काम देखने के लिये एक क्षेत्रीय समिति आयोजित की गयी है। इस समिति ने गाँव के विभाज की दो बाड़ की एक योजना बनायी है।

गोडोल

इस गाँव के ६ परिवारों ने ग्रामदान किया है। केन्द्रन एक ही स्थान पर विद्येय काम हो रहा है। जनसंख्या ६५० है। ६५० परिवार के लोग एक प्लाट में सामूहिक फसल के काम कर रहे हैं। गाँव की छाहुरा-छाल की समाज बनने के लिये लोगों ने भ्रमदान किया। ग्रामदान की घोषणाएँ स्थापित हुई हैं। ग्रामस्वच्छता योजनाएँ की गयी है। एक साल एक अग्रर चलता परिभ्रमदान की शुरू किया गया है। लोगों ने कल्लाकलकन का उल्लास किया है।

ओबलिये

सार्वजनिक दफ्तरों में केन्द्राय-वामक-बाड़ी मार्ग पर यह गाँव आनेकी यात्रे के नमदीह है। विनोबाजी की प्रदर्शना के समय वह गाँव का ग्रामदान हुआ। उक्त जमीन २२०० एकड़ है। इसमें से ११५ एकड़ जमीन चावल के फसल में है। गाँव में ८४ परिवार हैं, जो सभी ग्रामदान में शामिल हैं। जनसंख्या ४५६ है। सामूहिक भाषना गाँव के लोगों में पहले से की है। केन्द्रन यह भाषना ग्रामदान के बाद अधिक विकसित हुई है।

ग्रामदान से पहले १० परिवार भूमि-हीन थे। उन्हें जमीन दी गयी। ग्रामसभा बन गयी। लेडी-सुधार की योजना हुई। २५ एकड़ जमीन लक्ष्मीय रीति से होने

कार्यकर्ताओं की ओर से

मैंने गत वर्ष भी सेवाधाय-समन्वय में पदत्याज द्वारा चुनें कर पूरव बाड़ी की सुदिया पर अपनी भ्रमदानित गाँवित की थी। उन समय अनुभव आपा कि लोकसेवक हो या अन्य चारे कोई भी भावक हो, अपने लक्ष्य की पूर्ण के पहले अपने बीच कर्मज का यत्न न करे और कार्य करता रहे तो निरपथ ही रहने की पूर्ण होती। उनका अनुभवों के आधार पर ही इस वर्ष भी १३ फरवरी १९६१ को कार्यों के लयी परिवर्तन-आर्थिक सुकर्मों के आशीर्वाद एवं लक्ष्याभावाओं के साथ अपने सामी भ्रमदान के साथ ५० मां० खोले-समन्वय उद्गुरुक (आन प्रदेय) की परयाज प्रारम्भ की। सर्वप्रथम विद्येय प्रदेय की १५२ मील की यात्रा ८ दिन में समाप्त की। अनुभव आपा कि माणस-युक्ति व्यापकताय भूमि है। यह शीघ्र एवं विद्येय की भूमि में विद्येय रूप से देखने को मिली। २३ फरवरी को मण्यप्रदेय में हम लोगों का प्रदेय हुआ। महादारीह ग्रामदानी गाँव के लोगों का लक्ष्यक भी हमें मिल्य। यहाँ हमारे आदर्शीय कार्यकर्ता भी चन्द्रप्रभागीनी कुच बणों से रह रहे हैं। सर्वोद्य-समिति उपचयुगी में एक ठोच पूर्ण विभाज के बाद बाबा आर्यम् की और ९ मार्च को मण्य-प्रदेय की २३२ मील की यात्रा समाप्त कर उनीका प्रदेय में प्रदेय किया। इस प्रदेय के लक्ष्य, कलेमी के विद्येयों का विद्येय-वषा यात्र एवं लक्ष्य प्रगत हुआ। कोण-पुट जिले में तो प्रेय कलेमन उन जिले के निरदेक भी विरतानावयी पदनापक ने

काशी से उद्गुरुक पदयात्रा

मैंने गत वर्ष भी सेवाधाय-समन्वय में पदत्याज द्वारा चुनें कर पूरव बाड़ी की सुदिया पर अपनी भ्रमदानित गाँवित की थी। उन समय अनुभव आपा कि लोकसेवक हो या अन्य चारे कोई भी भावक हो, अपने लक्ष्य की पूर्ण के पहले अपने बीच कर्मज का यत्न न करे और कार्य करता रहे तो निरपथ ही रहने की पूर्ण होती। उनका अनुभवों के आधार पर ही इस वर्ष भी १३ फरवरी १९६१ को कार्यों के लयी परिवर्तन-आर्थिक सुकर्मों के आशीर्वाद एवं लक्ष्याभावाओं के साथ अपने सामी भ्रमदान के साथ ५० मां० खोले-समन्वय उद्गुरुक (आन प्रदेय) की परयाज प्रारम्भ की। सर्वप्रथम विद्येय प्रदेय की १५२ मील की यात्रा ८ दिन में समाप्त की। अनुभव आपा कि माणस-युक्ति व्यापकताय भूमि है। यह शीघ्र एवं विद्येय की भूमि में विद्येय रूप से देखने को मिली। २३ फरवरी को मण्यप्रदेय में हम लोगों का प्रदेय हुआ। महादारीह ग्रामदानी गाँव के लोगों का लक्ष्यक भी हमें मिल्य। यहाँ हमारे आदर्शीय कार्यकर्ता भी चन्द्रप्रभागीनी कुच बणों से रह रहे हैं। सर्वोद्य-समिति उपचयुगी में एक ठोच पूर्ण विभाज के बाद बाबा आर्यम् की और ९ मार्च को मण्य-प्रदेय की २३२ मील की यात्रा समाप्त कर उनीका प्रदेय में प्रदेय किया। इस प्रदेय के लक्ष्य, कलेमी के विद्येयों का विद्येय-वषा यात्र एवं लक्ष्य प्रगत हुआ। कोण-पुट जिले में तो प्रेय कलेमन उन जिले के निरदेक भी विरतानावयी पदनापक ने

लगी। हर साल नई जमीन उपभोग में लने की कोशिश की गयी। ४ हजार फीट सड़क गाँववाले ने भ्रमदान से बनवा किया। सरती के दिनों की लेडी के लिए २००० फीट पानी सेवी में लने का मार्ग भ्रमदान से बैवार किया। पर-पर में कलेय लक्ष्य के गहरे बन्ये हैं। गाँव में पारिशाक्त भाषना बढ़ती जा रही है। एक विधान पर गाँवके समय विर पय, तो उल्लर कर दूरे लोगों ने पूर कर दिया। एक ग्रामय केन्द्र से बीमार था, तो अस्पताल में ले बावर उल्लर इलाज किया गया। उल्ला पूर लखे गाँव ने हो किया।

ग्रामसभा के लिए एक मण्यन शुरू कर लिया है। एक छोटा पुस्तकालय भी स्थापन किया है। अग्रर चलता परिभ्रमदान की शुरू किया गया है। गाँव की ही एक बदन लाल्याजी का काम करती हैं। यह-बाड़ी ग्राम-स्वच्छता योजनाएँ विकसित हो चुकी हैं। इन योजनाएँ द्वारा किसानों को कर्म दिया गया और वह फसल भी किया जा रहा है। गाँव के सब लोग सब खेलाहारी के सदस्य हैं। गाँव के विभाज की १५ साल की योजना बनायी गयी है। गाँव के ५० एकड़ जमीन में अग्रर और गाँव के दो ठोच लखाने गये। १०० एकड़ जमीन 'पंडित' करने उपभोग में लने का प्रयत्न किया है। लयाज जिले में महादारीह के पास को बंदिग

का काम हुआ है, यह ६ विधानों में देस किया है। पृच्छा-वृक्ष का भाव विर-का एक भ्रमदान-परिभ्रमदान और हल विद्येय में नई जमीन उपभोग में लने का प्रयोग किया गया। एक चर्मोपयोग-केन्द्र लोखले के लिए पर गौरी का काम हुआ है। गाँव में लेडी के पानी की सुविधा नहीं थी। विभाज-योजना की मदद लेकर एक कुओं में गाँव लिया। गाँव में तीन कोलेयों द्वारा लक्ष्मीक लेडी होती है। यह साल लघुमोक्ष विभाग में जो ५ ग्रामदान हुए, उनमें ग्रामसभा सर्व का काम रहा है और ग्रामस्वच्छता योजनाएँ बनायी है। केन्द्रेय पूर ३०५० मील की यात्रा का एक तीर्थयात्रा का गाँव ग्रामदान में सकी हुआ है। इन दोनों जिलों के ग्रामदानी गाँवों में स्थानिक लोगों का नेत्रुच निर्माण होने के लिए लयी-वर्षीयान की मदद लेकर ग्रामदानी ग्रामसभा कार्यकर्ताओं की मदद माह का एक वर्ष की लयी आश्रम में लिया गया। इस वर्ष का काम १० ग्रामय भादरनों ने लिया ने अग्र-अनने-अनने गाँव में काम करने लगे हैं। ग्रामदानी ग्रामसभा के ५ विद्येय आयोजित, निवचने और कल्लरन में भी हुए। इस साल अग्र-अननी परेवने गाँव में विद्येय चलता था। ग्रामदानी गाँव के ग्रामसंघ ने जो लक्ष्मीक पदयात्रा की तो ७ नये ग्रामदान और

यूरोप-अमेरिका के शांति-समाचार

युद्ध-विरोधियों की पदयात्रा

अमेरिकन युद्ध-विरोधियों का एक बल सैन्यप्रतिष्ठानों से पैदा होकर १००० मील की यात्रा करके मास्को पहुँचा। वहाँ से वह फिनलैंड, स्वीडन, डेनमार्क आदि देशों की यात्रा करके अन्तर्-यूरोपीय प्रयाण करते हुए हींग बंग है। स्वीडन पहुँचते ही वह वहाँ पर जायें-दोलो के सभी सदस्य बहिष्कार के प्रति मान, बचन और धर्म में बंधे हुए हैं। वे युद्ध बन्द करने के लिए भी अपने नियमों का उल्लंघन नहीं कर रहे हैं। इस दौरे की वे यह योजना बनायी है कि वे अपनी यात्रा पूरी करने तक ६,५०० मील का पैदल रास्ता, बंगाल, १९१६ ई० तक पूरा कर लें। यह १ दिसम्बर १९१० को सैन्यप्रतिष्ठानों से पैदा हो चुका था।

इस पर यात्रा कर रहेय दुनिया की निराशासक शक्ति और महिला का सम्बन्ध होता है। यह विरोधियों की तरह इन विचारों का प्रसार माध्यमों में करते हुए धर्म बढ़ाया है। कम्प्यूटिस्ट देशों में भी बलाघ प्रचार उसी प्रकार चल रहा है, जिस तरह मैन-कम्प्यूटिस्ट देशों में। यह देखी जिस देश में जाती है, वहाँ की जनता से बातचीत करती है कि यह अपनी सहाय्य पर पहले निराश्रित होने के लिए और ही और इसके लिए कल्पनापूर्ण समझौते का इन्तजाम न करे।

इस पैदल दौरे को अगले वर्ष अक्टूबर तक चलाया जा रहा है। शुरुआत के दिनों में उनके भी ही एक अच्छे खेपे की शक्ति के लिए दो दो मील प्रतिदिन और आगे बढ़ रहे हैं। इस यात्री-दल की संख्या बढ़ती चली २५ मील प्रतिदिन की है और यह पिछले वर्षों की तुलना में बढ़ गई है। इस यात्री-दल की संख्या बढ़ती चली २५ मील प्रतिदिन की है और यह पिछले वर्षों की तुलना में बढ़ गई है। इस यात्री-दल की संख्या बढ़ती चली २५ मील प्रतिदिन की है और यह पिछले वर्षों की तुलना में बढ़ गई है।

यूरोप की यात्रा में इन यात्री-दल के साथ अन्य धार्मिक-संघों के सदस्य साथ-साथ रहने पर आसिद्धि है। वे युद्ध-विरोधी प्रदर्शनों एवं अन्य ऐसी विचारधाराओं में भाग लेंगे। यदि उन्हें किले से बाहर निकालने में प्रयास करने की आशा नहीं मिले तो वह वहाँ बन्दगी करने प्रसन्न होंगे। इस प्रकार यात्री-दल के दक्षिण अमेरिका और भारत में जाने की योजना अगले वर्ष अक्टूबर की अक्टूबर और यूरोप में दुराचार बाधना।

युद्ध-कार्यालय को चुनौती

हैल्ड में २००० लोगों और १०० मीटराफियों ने इसमें के विरोधकार गोंस में बाहर युद्ध-कार्यालय को चुनौती दी है। मीटराफियों की संख्या बढ़ती चली २५ मील प्रतिदिन की है और यह पिछले वर्षों की तुलना में बढ़ गई है। इस यात्री-दल की संख्या बढ़ती चली २५ मील प्रतिदिन की है और यह पिछले वर्षों की तुलना में बढ़ गई है। इस यात्री-दल की संख्या बढ़ती चली २५ मील प्रतिदिन की है और यह पिछले वर्षों की तुलना में बढ़ गई है।

है। इन इस यात्री-दल के अंदर नैतिक दृष्टि से एक ही धर्म के लोग हैं। वे युद्ध-विरोधी प्रदर्शनों एवं अन्य ऐसी विचारधाराओं में भाग लेंगे। यदि उन्हें किले से बाहर निकालने में प्रयास करने की आशा नहीं मिले तो वह वहाँ बन्दगी करने प्रसन्न होंगे। इस प्रकार यात्री-दल के दक्षिण अमेरिका और भारत में जाने की योजना अगले वर्ष अक्टूबर की अक्टूबर और यूरोप में दुराचार बाधना।

पोलारिस-आणविक पनहुब्बी का विरोध

“पोलारिस” नामक दस मील लंबाई का अणुबल विरोधकारों के विरोध के साथ एक तरफ संकट है, जहाँ निर्माण के विरोध करने में शुरू हो रहा है। मीटराफियों की संख्या बढ़ती चली २५ मील प्रतिदिन की है और यह पिछले वर्षों की तुलना में बढ़ गई है। इस यात्री-दल की संख्या बढ़ती चली २५ मील प्रतिदिन की है और यह पिछले वर्षों की तुलना में बढ़ गई है। इस यात्री-दल की संख्या बढ़ती चली २५ मील प्रतिदिन की है और यह पिछले वर्षों की तुलना में बढ़ गई है।

को प्रत्यक्ष रोक और हथियार का अणुबल करने पर पाया है कि उत्तरीय, आणविक, आणविक या अणुबल विरोधियों में फंडों की संख्या का नेता रॉबर्ट फ्लोर है। इस विरोध में अगले वर्ष अक्टूबर की अक्टूबर और यूरोप में दुराचार बाधना।

स्त्रियों के लिये शांतिसेना विद्यालय

दूसरा सत्र कल्लूरवादाश्रम में कल्लूरवादा शांतिसेना विद्यालय का दूसरा सत्र १५ जुन से कल्लूरवादा, इन्दौर में आरंभ होगा। इस सत्र में माह तक चलेंगे। पहला सत्र जो शांतिसेना केन्द्र, राजवाड़ा, काशी में चला, सर्वोदय-सम्मेलन के अवसर पर संपन्न हुआ था। विद्यालय का संचालन अन्नपूर्णा महाराज, अन्नपूर्णा दास तथा निर्मला देसायों करती हैं। हर प्रातः सर्वोदय-सम्मेलन विद्यालय के लिए दो या तीन बहनों को भेज सकता है। प्रतिवचन-काल में कल्लूरवादा दृष्ट हो या नहीं बहनों को ज्ञानवृत्ति देना। प्रातः सर्वोदय-सम्मेलन बहनों की वाक्य-वचन-पत्र करती और दूसरी कार्यालय (कल्लूरवादाश्रम) को वृत्त में भेजने की हुका करे। नैतिक संचालक, शांतिसेना कार्यालय, सर्वोदय सत्र, राजवाड़ा, काशी में संपन्न हो सकती है।

महात्मा गांधी जीने थे। गांधीजी का नाम नहीं, जीवन के नाम से। उनका अर्थ-अर्थ-अर्थ मानव-जाति के लिए पीली धर्म के उच्च मानव-जाति के ही समान है, जिसमें धर्म की भावना के साथ संयुक्त कर दिया गया है।

फ्रांस के वावा “शान्तिदास”

१९१६ में गिरफ्तार के एक केन्द्र में आकर गांधीजी ने जिने के और उनके बहुत प्रभावित होकर बंगाल चले गये हैं। वहाँ उन्होंने सैना-सैनिकों के अंगुष्ठों का एक दिवस अनुभव काया किया है, जो यूरोप में अपने दान का अर्थ-अर्थ-अर्थ मानव-जाति के लिए पीली धर्म के उच्च मानव-जाति के ही समान है, जिसमें धर्म की भावना के साथ संयुक्त कर दिया गया है।

इस सुनवाई का संचालन इस प्रकार का है, जैसे इसके अर्थ-अर्थ-अर्थ मानव-जाति के लिए पीली धर्म के उच्च मानव-जाति के ही समान है, जिसमें धर्म की भावना के साथ संयुक्त कर दिया गया है। इस सुनवाई का संचालन इस प्रकार का है, जैसे इसके अर्थ-अर्थ-अर्थ मानव-जाति के लिए पीली धर्म के उच्च मानव-जाति के ही समान है, जिसमें धर्म की भावना के साथ संयुक्त कर दिया गया है।

कार्यकर्ताओं के बौद्धिक विकास का प्रश्न

[आपोलन में काम करने वाले कार्यकर्ताओं का बौद्धिक स्तर क्या है, यह एक महत्व का प्रश्न है। सर्व सेवा संघ में भी लिखते 'अनुसूक्त अधिवेशन' में कार्यकर्ताओं के प्रतिक्षण के लक्षण में प्रस्ताव पेश किया है। इसी संबंध में जो इंग्लिश-भाषी में भी प्रकाशित आते हैं जो लिखते एक पत्र में लिखा प्रकट किया है। पत्र का संक्षिप्त अंश 'आपस की बात' में उद्धृत कर रहे हैं।—सं०]

आपोलन के कार्यकर्ताओं के बौद्धिक विचार की व्यक्तता का प्रश्न उठाना ही महत्व का है, बिना ही आपोलन का प्रश्न है। यदि कार्यकर्ताओं का बौद्धिक स्तर नहीं उठता है, तो आपोलन का अधिन अधकारम होगा। अतः अब समय आ गया है, जब कि इसकी सुविधायक योजना ही चाहिए।

यूरोप के अनेक राजपुत्रों के संघ में यह सुनने है कि अधुक्त व्यक्ति पहले लिखत मन्त्र-पर, और बाद में उनका इतना विचार हुआ कि वे प्रथिम राजपुत्र बन गये। क्या हमारे यहाँ भी ऐसा नहीं हो सकता? हाँ, यहाँ राजपुत्र के बरते समाज-सेवाक प्रवृत्ति है। और दरखलत तो सेवा-निष्ठता में जो लोकसेवा है, उन्हींकी बाल-विक राजपुत्र बनना चाहिए, वरत में रहने वाले को नहीं। यह मनसुख तो बहुत बड़ा है, रिश्वत इस दिशा में गाड़ी चलाने की चाहिए।

गत १० वर्षों में जो कार्यकर्ता आये हैं, उनको मोटे तौर पर दो भेगियों में बाँटा जा सकता है। एक तो वे हैं, जिनकी योग्यता सामान्यतः स्नातक के स्तर पर ही उचित अधिक की है। ऐसे लोग नियोजित स्वाध्याय, गोष्ठी, विचार-विमर्श आदि के जरिये अपनी योग्यता स्वयं बढ़ा सकते हैं। दूसरी भेगिता परिचय

है, उनसे मेरा उपाह है कि ऐसे कार्यकर्ताओं की संख्या हलमस ५० की होगी। इनमें वे कार्यकर्ता भी हैं, जो किसी उद्योग से संबंधित हैं, और वे भी हैं, जो प्रगति भाग में संलग्न रहते हैं। इनकी भेगी में वे कार्यकर्ता हैं, जिनकी योग्यता योग्यता वे नीचे की है। ऐसे कार्यकर्ताओं की योग्यता की इच्छा के लिये नियोजित हो गये अध्याय-वर्ग का कार्यक्रम पचाना होगा। इनकी उद्योग कार्य भी बनी है। मैं जोचना है कि ऐसे लोगों के लिये किसी एक स्थान में निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार एक-एक मास के वर्ग चलाये जायें। १० से २५ कार्यकर्ताओं का एक वर्ग एक बार आवे। एक बारा वर्ग में तीन बार आवे। अर्थात् एक मास एक बार अपने कार्य-वृत्त में कार्य और रिश्वत तीन मास के बाद एक मास के लिये आवे। यह मन बारी रहे। पटना ११-३-११

—श्यामसुन्दर प्रसाद

पटना में पोस्टर-प्रदर्शन
 सर्वोदय-मित्र मण्डल, पटना की ओर से ५ अप्रैल को अंग्रेजी छात्रदली के कक्षा-निष्ठ में चर्चा कक्षाएँ में अध्यापनीय चित्र, बैलेट, पोस्टर एवं गाने जाने वाले भद्रदे गानों के विशेष में एक आम सभा हुई। गणतंत्रिय सर्वोदय युवक समिति के संयोजक श्री भुवनेश्वर मिश्र, 'युवन' और सर्वोदय-मित्र-मंडल, पटना के संयोजक डा० अयोध्या प्रसाद ने इस अवसर को सज्जित बनाने के लिए आवेदन किया। साथ ही वर चणोदय-काय रहने के लिए अर्जित की। हजारों छात्रों, अध्यापकों ने सर्वोदय-काय रहने के लिए अर्जित की। हजारों छात्रों, अध्यापकों ने सर्वोदय-काय रहने के लिए अर्जित की।

दिल्ली के भी सी० ए० मेनन के ८ मई '११ के पत्र में लिखते हैं: "दिल्ली में अध्यापनीय पोस्टर-आपोलन शुरू हो गया है। डा० ब मई को डा० सुशील नायर की अध्यक्षता में नारी रज-समिति की एक सभा हुई। आगरा के पंच मई की इस आपोलन के लिए दिल्ली पहुंच गये हैं। इन भाइयों का पूरा सहयोग एक शाम में मिल रहा है। यह आपोलन एक बर-आपोलन का रूप ले रहा है। सर्वोदयी कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त अन्य कार्यकर्ता भी इस कार्य में दिलचस्पी ले रहे हैं।"

महिला सति-सिधिर
 डा० ब मई की चणोली जिले के गोपेयार में महिला सति-सिधिर आओवित किया गया। विचार का उपपादन कुकर्मण्य नीतिपालन में किया। १२ मई को सिधिर सभा हुआ। अचरक के गौनों की ५० बहनों ने इस सिधिर में भाग लिया। इनमें वे कुल बहनों वे सति-सिधिर के निशपथ भी हैं। सिधिर में स्त्री-याक, सति-सिधिर, सर्वोदय-काय आदि विषयों पर चर्चा हुई। इनके अतिरिक्त प्रतिदिन दो बड़े श्लोक में आम कार्य भी किया।

दस अंक में

१	विनोय
२	दुम्हास श्याद
३	विनोय
४	सिद्धयन दहदह
५	सिद्धयन दहदह
६	विनोय
७	स्त्री-निर्वाण कर्मावली
८	विनोय
९	गोविन्द शिदि
१०	गणेश-सुन्दर
११	दीनानाथ 'प्रतीक'
१२	सविदाद
१३	सिद्धयन दहदह

हजारीबाग जिले में भुवनेश्वर
 हजारीबाग जिले के देवारी नाम के विभिन्न ५२ ग्रामों में भुवनेश्वर को कुल १६६० एकड़ भूमि ८१० छात्रावासों में विस्तार की गयी। ८१० भूदान-किसानों में प्रमाण-पर विचार करने का छात्रो २ मई '११ के भुवनेश्वर-दली हजारीबाग के सतपट्ट श्री अयोध्यायण पोस्टर की अपेक्षा हुआ। इनमें देवारी माने के वरी ५५ वर्ग के श्रेण उपस्थित थे। प्रमाण-पर विचार के इस समारोह में प्रसिद्ध विचार आदि शरी देवरी, पण-परिचयक, जिय बन समर-अधिपति, प्रार्थन-वाचकों के सुविधा आदि रासमन व्यक्ति भी उपस्थित थे। इसी अवसर पर योगना सभा विचार मानने का अध्यापन की प्रसन्न विचार कार्यालय की ओर ले हुआ। परिषद में जन-समर-विचार की ओर ले चलने-सिद्धयन गया। भूमि मास करने का संकल्प ले बड़े उदाहर के छात्र संकली सुव का प्रदर्शन भी किया।

शांघीप्राम में पुस्तिका की प्रकाशित
 मादास हुआ कि राजस्थान के टंक लिपि में भूदान में प्राप्त भूमि पर बनने गये गांधीयन कला के हरिकन निरासी पर आचार्य सतीश्वर के विचारों में बड़े संकल्प के पुस्तिका काय सत-सत के आर्य वार विषय गये हैं और यहाँ के प्रसिद्ध केन्द्र के कार्यकर्ताओं के साथ अत्र सत-सत का किया गया। संयोग की बात है कि राजस्थान के राजस्थानी की शोरोरकर व्यास कला काय के दिलचिने में टंक पुस्तिका थे। उनमें टंक लिपि प्राचीन-गामी श्रेण के कार्यकर्ताओं ने पुस्तिका की व्यव-सिधियों का विवरण दिया। उन्होंने ५ एल० पी० को लिपि जॉब और उचित कार्यकारी के लिए सहाय किया। उचित सिधिर में सुचारु हुआ है। किन्तु क्षेत्र की अल्पत पुस्तिका में इन व्यास-सिधियों के कार्य-अल्पत भव-भरी है।

विनोय-पदयात्रा
 डा० ११ मई को विनोय-पदयात्रा में दस जिले की पदयात्रा समाप्त करते डा० १२ को उत्तर लखीमपुर जिले में प्रस्थान किया। डा० २३ को वे उत्तर लखीमपुर पहुंच रहे हैं। डा० २३ तक का पदयात्रा कार्यक्रम एक प्रकार है:—
 मई १९
 मई २०
 मई २१
 मई २२
 मई २३
 उत्तर लखीमपुर
 विनोय-पदयात्रा का पता
 मार्केट—प्राम-निर्माण कार्यालय
 —नार्य लखीमपुर (असम)

श्री जयप्रकाशजी बिहार में

अ० भा० सर्वोदय-सम्मेलन, उंगलुह के अन्तर्गत पर भारत के विभिन्न प्रांतों के प्रमुख कार्यकर्ता श्री जयप्रकाश नारायण के साथ बैठक और विचार में 'श्रीवे में कक्षा हाल हो इकठ्ठा' अधिवेशन की सज्ज बनाने पर विचार हुआ। तब हुआ कि सर्वोदय सेवा के कुछ कार्यकर्तागण तीन-तीन महीने के लिए गिहार आये और अधिवेशन सफल करने में सक्षम होंगे। उन्ही प्रश्न में श्री अंकरावती ने १ से ८ मई तक गया, पटना, दरभंगा, भांग-सुपर और संघाल परगना में दौरा किया। श्री जयप्रकाशजी का कार्यक्रम इस प्रकार है: मई १०-२२ सुंरि, २३ भांग, २४ आलेखन, २५ रौबी, २६ अयोधे-सु, २७ से ११ मई कोहरमा स्टेशन के पास सभा में विचार सर्वोदय-सम्मेलन होगा। २५ मई को गिहार सर्वोदय-सम्मेलन की बैठक, २८-२९ मई को गिहार सर्वोदय-सम्मेलन, ३०-३१ मई को गिहार छात्री-सम्मेलन रूप का कार्यक्रम-सम्मेलन होगा। श्री जयप्रकाशजी नूत-सुणार्द गार तक गिहार में दौरा करेंगे।

अध्यापनीय पोस्टर अभियान

दिलिया (म० ३०) में श्री मधुसूदर गौरवाजी की अध्यक्षता में अध्यापनीय पोस्टर के दिरणक सभा हुई। सभा में श्री मिश्रजी की एक समिति बनायी गयी, जिसके संयोजक श्री हरोशीर दिवानी हैं। यह समिति अध्यापनीय पोस्टरों की इदाने का प्रयत्न करेगी।

कथान सिध का आवाहन करते वाले
 २ मरण सार्द मंडल
 ३ मनुष्य का लक्षण
 ४ कार्यकर्ता क्या करे ?
 ५ मलयपुर का शरावती अधिगम
 ६ तथा मोड : उद्यम, दिशा जो गीनना :
 ७ गार-नरती सीमा-निवादा एवं सिध-सप
 ८ कार्य-संशोधन में समय विधान आवस्यक
 ९ श्यामदती गौव प्रगति के पथ पर
 १० साहित्य-समीक्षा
 ११ विचार-सिधिर स० कर्मावली
 १२ यूरोप-अधिवेशन के साहित्य-समाचार
 १३ गिहार की चिह्नी
 १४ कथन के साथ-साथ जनविज्ञान आवस्यक

तमिलनाडु में सत्याग्रह

विश्व के कुछ वर्षों से तमिलनाडु (मद्रास) प्रदेश के सर्वोदय-कार्यकर्ता यह महसूस करते रहे हैं कि पाम-से-पाम उस प्रदेश के भूदान-आन्दोलन में ऐसी स्थिति है कि जमीन को समझा हल करने के लिए, यानी जमीन पर ले भवितगत भालकियत खत्म होइ इसकी सिद्धि के लिए, फौजद विचार-प्रचार से जागे बढ़कर कोई और कदम उठाना होगा। तमिलनाडु सर्वोदय-मण्डल के यंत्री श्री जन्मनाथु और उनके साथियों का चिन्तन इस दिशा में चल रहा था। वार-वार सम्मानने के वाबजूद भी जो भू-स्वामी ग्राम-दान में शामिल होने को तैयार न हो— जैसे ऐसे अधिकांश में है ही लोग हैं, जो गाँवों की बढ़त-सी पमीन के "मालिक" हैं, लेकिन गाँव से बाहर शहर में रहते हैं और भूजड़ों के जरिए सेती करते हैं—ऐसे लोगों की जमीनों पर गाँवों के भूमिहीन और श्रामदान में शरीक होनेवाले दूसरे भू-स्वामी बनना करते जोतना शक्य है।

इस प्रकार की सीधी कार्रवाई जैसा महत्त्वपूर्ण कदम पूर्य त्रिनीवाजी से और भावसे में अच्छी तरह चर्चा करते ही उठाना जाय, यह स्वाभाविक था, जतः विश्वले चम्पूर में मंगोलार में सर्वे रोषा संघ का जागिरेदान हुआ, जस समय प्रथम-समिति में श्री जगन्नाथु खादि की उपस्थिति में इस-विषय पर काफी साहस्य के धरायें हुईं। सत्याग्रह का स्वरूप सोच्य से अधिकतर ठोस था, उसमें बो-संघर्ष या हिंसा की भावना को स्थान नहीं होना चाहिये, इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए प्रथम-समिति ने तमिलनाडु के साथियों को असहयोग का मार्ग सुझाया। असहयोग का कदम उठाने से पहले जो आवश्यक बातें होनी चाहिये, उनका भी जलेश प्रथम-समिति ने अपने प्रस्ताव में किया था और वृत्ति इस आंदोलन के 'मरचक और प्रेरक श्री त्रिनीवाजी हैं', जस असहयोग जैसा कदम उठाने के पहले उनकी सम्मति प्राप्त कर लेना आवश्यक है, यह ही प्रथम-समिति ने अपने प्रस्ताव में स्पष्ट किया था।

तमिलनाडु के साथियों ने जमीन पर दखल करने के द्वारा असहयोग के इस सुझाव को सर्वप्रकार किया। पर करने की आवश्यकता नहीं है कि हिंसा और बर्षा-संघर्ष की भावना से वे भी उठने ही शुरू हैं, तमिलनाडु की ओर। तमिलनाडु सर्वोदय-मण्डल ने दिवस १९१० की अपनी बैठक में प्रथम-समिति के प्रस्ताव के अनुसार अग्रे कार्रवाई करने का पथ किया और उसके अनुसार अंत तमिलनाडु प्रदेश के कार्यकर्ता स्थापक प्रचार में लगे हुए हैं।

तमिलनाडु के कुछ साथियों ने यह उंका उठानी है कि सत्याग्रह के अन्तर्क कदम के पक्ष में विश्व तरह और तिन श्रेयों के साथ प्रचार किया जा रहा है, यह आन्दोलन की मुख्यतः निम्न के मतिरूप है। प्रथम-समिति ने तिन परिस्थितियों में असहयोग के कदम की स्वीछि दी है—
उठनी शक्य के रूप स्थापक हैं, हल टरि से बंद प्रत्येक पुनः नीचे दिया जा रहा है।

तमिलनाडु के बलदुगड़ सेष में श्री गणी शयन सामूहिक प्रवचन के अनुभव के आधार पर भूमिदानवाही इस सम्झना के हल के लिए ही वागदाननी सत्याग्रह का कदम उठाने जाने का जो विचार बाहिर किया, उस पर सप की प्रथम-समिति ने विस्तार से विचार किया है। प्रथम समिति श्री त्रिनीवाजी के इस धमक्य में बाहिर निचे गये इस विचार के पूर्णतः सहमत हैं—
कि सत्याग्रह का स्वरूप सोचने से हीमलद, सीमलवत होना चाहिये और वं कि श्री भी स्थिति में भावमूलक न होकर प्रेममूलक

होना चाहिये। श्री जगन्नाथु भी इस विचार की पूर्ण स्वीकार करते हैं। उनका एक सुझाव यह है कि भूदाननी भूमि पर काबज करने वाले किसानों की देखरती की रोकने के लिए सत्याग्रह किया जाय। सुझाव सुझाव यह है कि प्रामदानी सेष में वहाँ अधिग्राह्य छोड़े भूमिधारियों ने अपनी भूमि भूदान में दे दी है, वहाँ यदि वंके जमींदार वहाँ समझते और हींशं बाल के प्रयत्न के बाद भी उठने शामिल नहीं होते, तो उस सम्पत्त में सत्याग्रह की कार्रवाई की जाय। वहाँ टरि देखरती की संघर्ष में सत्याग्रह की कार्रवाई की जाने की बात है, जंज मरालद है कि राज्य के उचित कार्रवाई कानी जाने की खकीरियाँ के बाद भी देखरती न रहती ही, वे सत्याग्रह का शुभिक कदम उठाना जाय। उन जमींदारों द्वारा जो स्वयं काबज नहीं करते हैं और श्रामदान में शामिल नहीं होते हैं; उनकी भूमि को श्रामिक नहीं होते हैं, उनकी भूमि को श्रामदान में शामिल विने जाने के प्रत्यय प्रतिकार का भी श्री जगन्नाथु ने जो विचार किया है, उसका स्वल्प नीचे लिखे अनुसार हो सकता है :

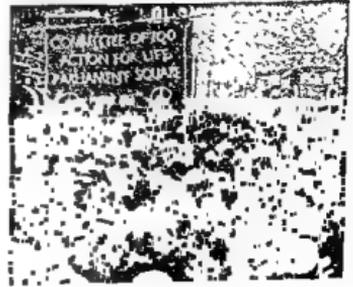
(१) गाँवों में छोड़े छोड़े जमीन के टुकड़े रखनेवाले किसान पहले अपने व्यक्तिगत भूमि-स्वामिकता का विवरण करें, अपना श्राम-परिहार बनायें और अपनी जायत से बढ़ने का साहस करें।
(२) वे लोग अपने श्रामदानी गाँवों के जमींदारों से सम्पर्क करें, उनसे मिलें, उन्हें समझाएँ और भूमि का व्यक्तिगत

स्वामिक छोड़ने के लिए तथा वे गाँव में रहते हों, तो श्राम-परिहार में शामिल होने के लिए उनसे निवेदन करें। उन्हें भाग्य-जन दिया जाय कि भूमि का स्वामिक होने के बाद भी उनसे यथायुक्त चीज-जन को, जब तक वे स्वयं उच्य कम न हों, उपयुक्त पाद शराने में मदद देने का श्राम-परिहार यथावधि अपना विषय रखें।
(३) इस प्रयत्न से नदीवा न निकलता हो, तो गाँववाले जमींदारों की जमीन पर दाबत न करने का अपना संकल्प बाहिर करें और बाहर से उन जमीनों पर सेती करने को लोग आते हों, तो उन्हें भी समझा कर उन्हें न अपने के लिए प्रेरक प्रेरित करें।
(४) इस प्रकार जमींदारों की जमीन पर दाबत न करने के संकल्प से श्राम-परिहार की शान्तिक स्थिति पर जो अन्तर रहता हो, उसे सँभालने का परिहार के रूप में गाँव के सब लोग अपना विषय रखें।

विदेशों में प्रह्लास और शक्ति के प्रयोग

आणविक शक्तों के खिलाफ लंदन में सत्याग्रह

अक्टूबर १९१० में लंदन में आणविक शक्तों के खिलाफ सत्याग्रह करने के लिए १०० लोगों की एक कमेटी बनायी गयी। कमेटी का निर्माण भी शर्म रोख और रेक्टर बफाले टरट की देखरे में हुआ।
पर १८ फरवरी, १९११ को कमेटी ने पहला सत्याग्रह किया। ५ हजार लोगों ने भी रोख और टरट के नेतृत्व में हुरदा मजदूरों के सामने अणविक पराजय का दिखो किया। उसके बाद २९ अप्रैल को फिर एक बार सर्वज्ञ हुआ। इस सर्वज्ञ में सुबिह के बीच ८०० लोगों को गिरफ्तार किया। फिर भी सर्वज्ञ चलाया रहा और लोग सवे पूर्ण अहिंसक रहे। अब कमेटी इस सम्पत्त में और कुछ कार्रवाई करने वाली है।



२९ अप्रैल को आणविक शक्तों के खिलाफ सर्वज्ञ के परिणामों के सम्झना में १०० लोगों को कमेटी द्वारा गिरफ्तार किया गया।

और श्राम-परिहार की समिति उच्च बढ़ाने का अन्य उद्योग-धर्ये उच्च पर परिहार की शान्तिक स्थिति का बनायें।

(५) हींशं प्रचार तिन बाहरवाले को जमीनों की जमीन का काबज होने के लिए न अपने को प्रेरित किया जाय, उनसे परिहार के श्राम-परिहार की सर्वज्ञ उन बाहरवालों के गाँव के निवासी हैं सहायोग केकर श्रामदानी श्राम-परिहार के लोग हैं।

(६) यह सुझाव में असहयोग का कार्यक्रम स्वसफलक न हो, सर्व-सर्वज्ञ न करे तथा इसके दिखान न शुरू करें, तथा बदतर स्थान रखा जाय।

जमींदारों की जमीन पर दाबत करने काबज करने की अनेका असहयोग का एं टरटा अहिंसक के शान्तिक निम्न है और इसमें कर्तव्य के लिए काफी बहा लेना सुझाया है।

सर्व संघा संघ यह सुझाव बना बाहर है कि भूदान, श्रामदान के श्रामदानी आने-हल-नगर-मंम के प्रयत्न और प्रेरक श्री त्रिनीवाजी हैं, अतः उचित देखरती देने या जमींदारों के सह-परिहार के लिए उठाने जानेवाले असहयोग आदि के कदम के लिए विनोदवाजी की सम्मति प्राप्त कर लेना आवश्यक माना जाना चाहिये। श्री जगन्नाथु ने संघ के उद्युक्त हुए हींशं स्वीकार कर अपने कार्यक्रम को उठाने अनुसार बदलने का बाहिर किया है।

—सिद्धांत इत्यादि

नया मोड़ : लक्ष्य, दिशा और योजना : २

चौरेन्द्र भजूमदार

हम देखते हैं कि आज की जागतिक, राजनीतिक व आर्थिक परिस्थिति में दण्ड-निरपेक्ष लोकनीतिक समाजवाद को मानने वाले एवं दण्ड-निरपेक्ष आधुनिक राजनीतिक समाज को मानने वाले, दोनों में विकेंद्रित धर्मनीतिक के कार्यक्रम को समान रूप से मान लिया है।

अतः यह आवश्यक है कि सर्वोद्योग का लक्ष्य रखने वाले रचनात्मक कार्यकर्ता नये मोड़ के अर्थ में अपने लक्ष्य के प्रथम तुर दुष्टि साधक बन सकें। वे पहले लक्ष्य रूप से सोचें कि उनका लक्ष्य क्या है? लक्ष्य दोनों में से कोई भी एक हो सकता है।

(१) सैनिक-शक्ति पर आधारित राजनीतिक लोकतन्त्र की सफलता तथा व्यक्तिगत धनी आधारित प्रथम आर्थिक परिस्थिति के सुधारके के लिये विकेंद्रित कार्य-नीति को चयनाना या—

(२) दण्डनिरपेक्ष, लोकनीतिक समाज की स्थापना के लिये 'सोसैलिक सर्विक' को केन्द्र के रूप में स्वतन्त्र प्राप्त-युद्धाभ्यासों का संगठन करना है।

उपरोक्त दोनों लक्ष्यों के मानने वालों के लिये यद्यपि कार्यक्रम समान होगा, तथापि उत्तरही दिशा, सौधी और योजना भिन्न होगी।

उपरोक्त दोनों लक्ष्यों में से पहले लक्ष्य को तो आज दुनिया के स्वीट-स्वीट सभी गम्भीर विचारार्थान राजनीतिक नेता अपना रहे हैं। गांधीजी के विचार के प्रभावित भारतीय गणतन्त्रवादी नेता ही नहीं, अल्प दुनिया के काली विचारार्थान सत्तावादी विन्तन भी (यहाँ तक कि सोवियत सोवियत राष्ट्र द्वारा दुष्प्रचलने वाले सिविल से लेबर नेता तक सभी अधिनेता भी) वर्तमान परिस्थिति के संदर्भ में इसी दिशा में कमोन्स सेंट्रल-कूट सोचने के लिये कार्य कर रहे हैं। इसी दृष्टिकोण के कारण मित्र-मित्र देशों में मित्र-निष्ठता के अन्तर्गत के कदम भी उठाने का रहे हैं। भारत में तो राज्य की ओर से इस दिशा में काली अधिनेता कदम उठाने का रहे हैं। इसी उद्देश्य में अन्तर्गत के अन्तर्गत तथा लेबर का समर्थन करने के लिये पचास लाख कानून बनाने, सामुदायिक विकास के काम को स्थानीय लोकनिष्ठ के द्वारा सौंपने के लिये आज अनेक कार्यक्रमों द्वारा भी वे नये मोड़ की तरफ बढ़ रहे हैं। जैसे-जैसे वे इस दिशा में लक्ष्य को रहे हैं, जैसे-जैसे वे यह महसूस कर रहे हैं कि बाध्य भारतीय परिस्थिति का सुधारण करने के लिये व्यक्तिगत सामुदायिक अर्थनीतिक को राष्ट्रीय योजना में प्रयुक्त स्थान देना होगा।

इसके लक्ष्य के कि आज नये मोड़ का नारा हर देश में है, अन्तर्गत ही चाहिये; क्योंकि बिनाग एक सुसंगठित पक्ष है।

यद्यपि अनेकों को भी यह ही और चयनाना इसके लिये उत्तर ही है, लेकिन सवाल यह है कि कौन किस दिशा में मुड़ें? यहाँ तक कि लक्ष्य को लक्ष्य ही आधारित आवश्यकता है, यहाँ तो जल्दी ही दुष्टि कर उठाने के मोड़ में उत्तर ही बननी दिशा में मुड़ गये, तो धर्म कर लक्ष्य में काशी कर्तव्य ही सकती

हम देखते हैं कि आज की जागतिक, राजनीतिक व आर्थिक परिस्थिति में दण्ड-निरपेक्ष लोकनीतिक समाजवाद को मानने वाले एवं दण्ड-निरपेक्ष आधुनिक राजनीतिक समाज को मानने वाले, दोनों में विकेंद्रित धर्मनीतिक के कार्यक्रम को समान रूप से मान लिया है।

अतः यह आवश्यक है कि सर्वोद्योग का लक्ष्य रखने वाले रचनात्मक कार्यकर्ता नये मोड़ के अर्थ में अपने लक्ष्य के प्रथम तुर दुष्टि साधक बन सकें। वे पहले लक्ष्य रूप से सोचें कि उनका लक्ष्य क्या है? लक्ष्य दोनों में से कोई भी एक हो सकता है।

(१) सैनिक-शक्ति पर आधारित राजनीतिक लोकतन्त्र की सफलता तथा व्यक्तिगत धनी आधारित प्रथम आर्थिक परिस्थिति के सुधारके के लिये विकेंद्रित कार्य-नीति को चयनाना या—

(२) दण्डनिरपेक्ष, लोकनीतिक समाज की स्थापना के लिये 'सोसैलिक सर्विक' को केन्द्र के रूप में स्वतन्त्र प्राप्त-युद्धाभ्यासों का संगठन करना है।

उपरोक्त दोनों लक्ष्यों के मानने वालों के लिये यद्यपि कार्यक्रम समान होगा, तथापि उत्तरही दिशा, सौधी और योजना भिन्न होगी।

उपरोक्त दोनों लक्ष्यों में से पहले लक्ष्य को तो आज दुनिया के स्वीट-स्वीट सभी गम्भीर विचारार्थान राजनीतिक नेता अपना रहे हैं। गांधीजी के विचार के प्रभावित भारतीय गणतन्त्रवादी नेता ही नहीं, अल्प दुनिया के काली विचारार्थान सत्तावादी विन्तन भी (यहाँ तक कि सोवियत सोवियत राष्ट्र द्वारा दुष्प्रचलने वाले सिविल से लेबर नेता तक सभी अधिनेता भी) वर्तमान परिस्थिति के संदर्भ में इसी दिशा में कमोन्स सेंट्रल-कूट सोचने के लिये कार्य कर रहे हैं। इसी दृष्टिकोण के कारण मित्र-मित्र देशों में मित्र-निष्ठता के अन्तर्गत के कदम भी उठाने का रहे हैं। भारत में तो राज्य की ओर से इस दिशा में काली अधिनेता कदम उठाने का रहे हैं। इसी उद्देश्य में अन्तर्गत के अन्तर्गत तथा लेबर का समर्थन करने के लिये पचास लाख कानून बनाने, सामुदायिक विकास के काम को स्थानीय लोकनिष्ठ के द्वारा सौंपने के लिये आज अनेक कार्यक्रमों द्वारा भी वे नये मोड़ की तरफ बढ़ रहे हैं। जैसे-जैसे वे इस दिशा में लक्ष्य को रहे हैं, जैसे-जैसे वे यह महसूस कर रहे हैं कि बाध्य भारतीय परिस्थिति का सुधारण करने के लिये व्यक्तिगत सामुदायिक अर्थनीतिक को राष्ट्रीय योजना में प्रयुक्त स्थान देना होगा।

इसके लक्ष्य के कि आज नये मोड़ का नारा हर देश में है, अन्तर्गत ही चाहिये; क्योंकि बिनाग एक सुसंगठित पक्ष है।

यद्यपि अनेकों को भी यह ही और चयनाना इसके लिये उत्तर ही है, लेकिन सवाल यह है कि कौन किस दिशा में मुड़ें? यहाँ तक कि लक्ष्य को लक्ष्य ही आधारित आवश्यकता है, यहाँ तो जल्दी ही दुष्टि कर उठाने के मोड़ में उत्तर ही बननी दिशा में मुड़ गये, तो धर्म कर लक्ष्य में काशी कर्तव्य ही सकती

सामोहन के अन्तर पर हमने सत्तावादी कार्यक्रमों के साथ 'सिक्कटन' लक्ष्य की बात की है। लेकिन प्रान्तीय धर्म-रचना में इस लक्ष्य का स्थान नहीं है। एक पक्ष पर हमारी धारणा यह होती चाहिये। नहीं तो हम दिखावा ही एक-एक करके के प्रति चन्चल के अन्तर्गत करिये।

प्रान्तीय की स्वरूप-रचना के लिये नीति-निष्ठिक के सभी लक्ष्यों का उल्लेख ही इच्छा रखना आवश्यक होगा है। अर्थात् प्रान्तीय के लिये तो यह और भी बल्वी ही जाता है, क्योंकि उसकी प्रथम ही स्थापना के आधार पर निर्दिष्ट है। हम गौरीजी के नेतृत्व में आगामी वा यथामुक्त लक्ष्य था, तब भी अन्तर्गत ही प्रतिक्रिया के लिये कार्यक्रम में अन्तर्गत राज्य के अन्तर्गत दिशा में प्रान्तीय की तथा मनीषण की जिम्मेदारी देने की नीति अपनायी थी। किन्तु अन्तर्गत के लिये यह कार्यक्रम बहुत महत्वपूर्ण ही होता था और कारण का कि वह एकमात्र नहीं तो बल्कि एकमात्र सुसंगठित कार्यक्रम है। लेकिन प्रान्तीय के नेता इस बात का हमेशा ध्यान रहे कि यह एक सामाजिक ही है तथा और महत्वपूर्ण भी ही है, किन्तु दुःख, यहाँ नहीं है। कि प्रान्तीय के लक्ष्य समर्थन तथा स्थापना के कार्य की सुविधा की मर्यादा करने के अन्तर्गत मौलिक काम ही ही सुधारा प्रदान करें, यहाँ के नेता विचार समता तथा मनीषण की निश्चिन्ता पर पूर्ण ध्यान देते हुए भी, प्रान्तीय सत्तन तथा स्थापना के काम को अपना अवलोकन मानते हैं। उस समय हम अन्तर्गत में भारत सुधारण चाहते हैं। फिर भी अन्तर्गत के अन्तर्गत स्थापना-शक्ति के लिये तो प्रान्तीयिक तथा अन्तर्गत उत्तर था, उसके हम पूर्ण सहकार करते हैं। प्रान्तीयिक प्रान्तीय के लिये राजनीतिक के अन्तर्गत लोकनीतिक के अन्तर्गत प्रान्तीय की नीति प्रान्तीय है, यह कि भी भारत छोड़ने का नारा नहीं लाती है। अन्तर्गत आज की प्रान्तीय के अन्तर्गत प्रान्तीय की दिशा में प्रान्तीय प्रान्तीय का तत्प दिखाएँ, प्रान्तीय के लक्ष्य-पूर्विक के लिए न केवल उत्तर था लक्ष्य ही आवश्यक है, बल्कि आज की परिस्थिति में नई प्रान्तीय की अनिश्चयता का कर उन स्थितियों को प्रभावित करने की भी आवश्यकता है। और हमारे नेता यह आवश्यक नहीं है। कि अन्तर्गत का नारा दण्ड-निरपेक्ष राजनीतिक को मानने वाले के सामने लक्ष्य-रचना के लिये प्रान्तीय में आगामी प्रान्तीय का सुधारण रचना और उनका स्थापना प्रचार करना, आन्दोलन के नेताओं का स्थायी-सोवियत की नीति, स्टेड कोर्ट आदि की स्थापना स्वीकार करना आदि कार्यक्रम

[सब तरह के प्रबलित आश्रमों से भिन्न इन्दौर को सर्वोदयनगर बनाने हेतु इन्दौर में 'विद्वन्मन आश्रम' विनोबाजी ने बनाया। इन्दौर से गोहाटी जाते वकन वे लोग मैं जितने साधक लाये, उनमें से गये। यहाँ पर विनोबाजी के प्रवचन से 'आध्य-यात्रा' का विवरण और फिर आश्रमों से जनकी क्या अपेक्षा है, यह विद्या जा रहा है। — सं०]

इन्दौर से गोहाटी : आश्रमों की यात्रा

इन्दौर से यहाँ तक हमारी यात्रा चली। उसमें हम एक आश्रम से दूसरे आश्रम में गये। इन्दौर में हमने 'विद्वन्मन-आश्रम' की स्थापना की। वहाँ विविध नाम लगा सक्ते। विनोबा यह सुझाए नहीं—अपनी सव आसक्तियों का विवरण करना। हमने वहाँ कहा कि आश्रम वाले रहने में काम करेंगे और रहने वाले आश्रम में रहेंगे। इस तरह रहने और आश्रम के बीच अरुंड देना-देना चलाना। यों कह कर हम वहाँ से निकले। उनके बाद बैलुल में एक सुन्दर आश्रम है, यहाँ गये। यहाँ नरें जायकी भी शाला है, उसे सत्य में रत कर कार्यकर्ताओं में भूदान का नाम किया।

उत्तरे बाद हम करारी आये। वहाँ अमी शांतिपूर्ण विद्यालय चल रहा है। साधना-केन्द्र भी वहाँ। वहाँ साधक साधना करते हैं। भूदान-परिषद् वहाँ से निकलती है। बाहर के साथ सम्पूर्ण रख कर वाणी-नगरी सर्वोदय-नगरी ज्ये, यह प्रयोग वहाँ चल रहा।

उत्तरे बाद कोयंबा में समन्वय-आश्रम में गये। हिन्दुस्थान के फरारों में एक दे वेदान्त भी था, जो संतों में चलायी और दूसरी है देवा की, कल्याण की। एक के प्रतिनिधि—उपनिषद्, वेद, गीता है और दूसरी के प्रतिनिधि गौतम बुद्ध हैं। वेदाङ्ग और अहिंसा का समन्वय भाव से लिए बहुत बचकी है। उस एरि से वह आश्रम बनाया है। उस आश्रम के जरिये सारे एशिया से सम्पूर्ण रख सकते हैं। वहाँ एशिया से बौद्ध आते हैं और भाद्र के लिए हिन्दू भी वहाँ जाते हैं। वहाँ खेती है, गाँव में भी काम करते हैं और साधक साधना करते हैं।

उत्तरे बाद जयप्रकाशजी के आश्रम सोल्लेदेवर में गये थे। वहाँ अज्ञान-भ्रमण बहुत से मनान बनाने हैं। सो-देव ती लोग रहते हैं, प्रामोचोग के लिए वहाँ योगना बनायी है। योगप्रवृत्त और ध्यानप्रवृत्त समाज बनाने की कोशिश होगी।

उत्तरे बाद हम लायोभास में गये। लायोभास धीरेन्द्रयार का स्थान था। अब वहाँ राममूर्ती नाम करते हैं। राम-वन्दना के लिए नरें सालीय पर साध प्रयोग वहाँ हो रहा है। बलिया (पूर्विया) में धीरेन्द्रयार का कोनाभार और अन्धकार का चीजन देना। बनना बुद्ध चीजन गोंय बालों पर निर्भर है। उसी किले में रानीपुर आश्रम है। वहाँ वैश्याय बानू का नाम चलता है। बहुत सारे नाम हैं, भूदान-योगदान का प्रयोग दानर बंदी है। उत्तरे बाद हम गंगाल में आये। यहाँ एक [?] आश्रम है जलपारंगुली में। एक हड्ड प्रवृत्त वहाँ रहते हैं। उत्तरे बाद हम वहाँ शारिण्या आश्रम, गोहाटी आये हैं। इस एरि से १५ वर्ष इन्दौर के केन्द्र वहाँ उड़ एक के लए एक आश्रम में समाप्त निवास हुआ है। इच्छे वाची देवने और कहने को मिल।

एक है—उरीर पचाव है, लेखि विन एक है। १३ मिल कर वि-सादर में कें। इस प्रकार के लोग परिभाष में होते हैं। लेकिन हमारे विम में भी नहीं होती है। ऐसी तरह्यों में अत्युत्तम साधना हो, साधारण आनन्दमय हो। अब में सत्य कहता हूँ, सब मेरा मतलब अनुभव से नहीं, सत-समाज में है। सत समाज बनान चाहिये। अक्सर सतनों का बहुत बड़ी प्रवर्ध होता है, बाहुओं वा आण-आल में बनता है। उनमें भार-का होता है।

अब यहाँ पर साध रहते हैं। जब है, इन्दौर उजना चलता है। जहाँ के सतुद अ-मुक्ति के कारण बल्ले हैं और उतमें से एक हो जाते हैं। लेकिन सतुदों में पर-सा विचार [?] कर्त आया तो वहाँ प्रवर्ध हो जाते हैं। मतमें तो में समझौता करने की शक्ति होती चाहिये।

सीरीर शक्ति है—अज्ञान को फिन (शामना) करने की। पचाव वा सी सतुदों का समाज होता है। सतनों एक शक्ति होती है। अन्दर-अन्दर को हागडा चलता है, उतमें शक्ति सीम होती है। समुद्र दारण को समान को 'फिन' कर सकते हैं। अपने को बुद्ध बल्ले विना सतनों सतुदों से समुद्र को आगे ले जाना चाहिये। ऐसी विधि शक्ति से जप्य वी कार्यकर्ता होगी, यह 'हायदेव शान्त सैरत', समाज को जोड़ने वाला तथोक्त सतन सत सत है।

ऐसी विधि शक्ति विकसित होगी चाहिये। उनी समाज को बदलने साधक हम कर्ते। नरें तो सुनिवासी शक्ति के बाल में अद्यतन साधक होगी। यह शक्ति विकसित हो, ऐसी कोशिश हो। (गोहाटी, ११-११-११)

तो यह भी साधक रहता है। उरीर पर हम कन्ना रहें। पर-पर सीमा पर वतने हैं तो अज्ञान है, निम्न की नरें है, देना मानना होगा। उरीर का उन्नत उपदेश को कर्ते, इस इति से उरीर पर कन्ना रहें तो साधक वीरें विचार हमारे निच में नहीं आयेगा। तद-सदक के जाने-बिने में, भोग-विगत में, अन्धकार पदुने में विच की शक्ति विकसित होती है। रिज सतन बाम का मोना आता है, वी उतका उपयोग नहीं होता है।

मैं दूर साध से दूर रहा हूँ। पचावों काम करता हूँ, लेकिन भूदान न जो सुकर सत्य है, वह नरुद्धम नहीं होता है। यह काम होता ही है। पचा-सेना की स्थापना हो, पर-पर के साथ सम्पूर्ण हो। इस-एरि को-भी शक्ति विच में है, नर काम देती है।

रुम्ति के शक्ति काम हो, पर उतका ठीक उपयोग हम कर्ते ले नरुद्धम को सत्य है। और हमारी रुम्त के अन्धकार [?] उतका ठीक उपयोग होना चाहिये। नरें नहीं आती, सोने-दे, ले-सद-सद के

आश्रमों में चारित्र्य निर्माण हो, नये सामने के साधक कार्यकर्ता तैयार हों। हमके लिये सीन शक्तियों होगी चाहिये। सेवा को प्रकार की होती है—एक सेवा वह है, जो निम हाल में साराथी प्रकृत होती है, उसे सन्तुल्य से उपजाती है। हम दूसरी प्रकार की सेवा कर रहे हैं, जिससे समाज में आनन्दमय रक्त होगा। जमाने के साधक समाज-विकसित होगा। मनुष्य को बितना काम करना पड़ता है, वह उरीर के जरिये करना पड़ता है। यह उरीर सेवा के लिये साधन है। हमारी जमान से सेवा को रें बन्द न निकले, जिससे किसी के दिल को पीठ पड़ेंगे। जो चीज करना उचित है, वही करे और जो चीज करना है वही करे। हमारी आँखें ऐसी चीज न देखें, जो देना अनुचित है। इस प्रकार के इन्दियों पर बाधू रहना होगा।

इन्दिय-निम्न बाने इन्दियों पर बाधू सारी की शक्ति। सतुद का इतना गीत में रिया है। जहाँ सतुद होता है, वहाँ वह अपनी इन्दियों अन्दर सींच देता है और जहाँ सतुद नहीं होता है, वहाँ लोग सेवा है। हम सतुद इन्दियों पर हमें नियंत्रण रहना चाहिये। सो-दे को बाधू में होंगे

शान्ति-सेना का प्रयाण गीत !

शांति सैन्य देख आज शान्ति-मान गा रहा।
'सत्य-प्रेम-कल्याण' गंध दिग्दर्शन छा रहा।
सतन की विजय।
हू, अंध-सत्य, मिथ्या की ही शार है।
परा नहीं, कल्याण सही सनको वहाँ नरें ?
सतनों बनना सच माना जनको कोन नरें ?
साथ की विजय।

प्रेम से ही आज सौध भी परासत है।
पानि, सप्रदाय, धर्म, रंग-भेद मिट गये।
प्राण, भाषा, राष्ट्र के भी संघ मर्ने नट गये।
साथ की विजय।
निराश्रय मानवी का जान पर्व है।
—नारायण वेताई

भूदान-समाज, सुप्रकाश, २९ अक्टू ११

सत्याग्रह : एक चिंतन

दादा धर्माधिकारी

सत्याग्रह यह समाज है। इस समाज का बीजा पद महत्त्व का है, यह व्याकरण का विषय नहीं है। हम 'सत्य' पद को महत्त्व देते हैं या 'आग्रह' पद को, इस पर सत्याग्रह की सामाजिक जीवन की भूमिका अवलंबित है। 'आग्रह' को महत्त्व दें, तो 'सत्य' गौण हो जाता है और सत्याग्रह का हेतु, वाद्यय योर परिणाम विलगुल बरकर जाता है। 'सत्य' को महत्त्व देने पर 'आग्रह' का कोई मूल्य नहीं रहता। आग्रह छूटा जाता है और साथ का आविष्करण मनुष्य को बर्तित में और जीवन में उत्तरोत्तर अधिक मात्रा में होता जाता है।

इसका अर्थ यह है कि सत्याग्रह पर फिरो में विभूति का या व्यक्ति का सिक्का (सुद्ध) नहीं लगा सकता। सत्याग्रह राष्ट्र का प्रयोग सर्वप्रथम गांधीजी ने किया। गांधीजी को उसका प्रथम द्रष्टा, बख्त होने का सम्मान मिला। लेकिन सत्याग्रह पर गांधीजी का अधिकार नहीं था कि विनोबाजी का उत्तराधिकार नहीं है। सत्याग्रह का मतलब 'गांधी-आग्रह' अथवा 'विनोबा आग्रह' नहीं है। इसलिए 'गांधीजी का सत्याग्रह' और 'विनोबाजी का सत्याग्रह' इस तरह का भेद करके निरर्थक वाद उपस्थित करने वालों से इतनी ही प्राणता है कि इस तरह के 'गांधी' और 'विनोबा' धापको ही सुधारक हों। उनको आप बखरने की देवालय में बालुखी प्रतिप्रतिपत्त कौनिये! पर 'सत्य' को दो औरों के लिये मुक्त करने कीजिये।

आजकल के सत्याग्रह का प्रयोग

'सत्याग्रह' प्रेममूलक व सत्यनिष्ठ होने के राज्य पर मनुष्यों के बीच लेह और सत्य निर्माण करने का साधन है; कैर निर्माण करने का इधियार नहीं है। इसलिए सत्याग्रह का उर या भाक म्प्राथम्यता किनी की भी म प्रकल्प्य हो। योही भाक अथवा आदर्युक द्दवध को महत्त्व होगा। 'अगर आज हम क्या देर रहे हैं!' 'अगर आप हमारी बात नहीं मानिये, तो हम सत्याग्रह करते हैं!' -इस तरह धमकी में जाती है। इसके पीछे दृष्ट्य यह रहती है कि प्रतीती परमा काय, वह दाला वा नुअ अथवा दश काय। अर्थात् सत्याग्रह कृने का परमाणु करने का, उसको इधाय बढना माय्य करने के लिए मन्नरू करने का अमेग द्वाक है; सत्य परा देने का और सत्प्राथ बढ़ाने का पविन धायन नहीं है, इस तरह का निचार इसके पीछे है। इसका परिणाम यह हुआ कि हर समय होने वाले विभिन्न सत्याग्रह के कारण समाज में घातितरापणता और सत्याग्रहता का विचार होने के बरके असाति, अदृष्टिगुण और अमयवध बढ़ रही है। इसमें देचार गानी और निनोबा कर्दों हैं। साथ यह है कि अनेक धर्मों की धार डेक बरके के लिए हम पडी बालुखा के साथ उनके नाम का उल्लेख करते हैं।

रती। यह भारे भारत की पीड है। उसे साथ मारत रंती को रप देना पारहेगा, वही रूप उरगा होगा। हिन्दी धेर के लेखों को जो बढना है, बढते रहे। उसे मानने के लिए कोई पाप नहीं है। पल्लु रन काय को हिन्दी के विरोध का अघार बनना केरल बधानेजनी है। सध्दतमहि हिन्दी के अडेनी वेरत है, यह फिनाम अममन तक है। दधमभन दल एंकी को यह बढना म्पिनाता को मारें और हूँद एंने। उरं तो अंभे मंभे मंभे और कंभे काएद है, यह हम परले बर ही जुने है।

सत्यवद् वह कि हर एक प्रसंग पर होने वाले सत्याग्रह के कारण अति-धर्म के मन में सद्भाव या म्प्रा-निष्ठा निर्माण न हो, सब को सारे बालनरपण में घातितरापण, निर्वरता और म्प्रावस्था बढाने काएद है। योी उरक म्प्रावस्था के म्प्रावध को सत्या-ग्रह कृना या सेना। म्प्रावध यह हिंसकक प्रतिकार का निशाव सरोका सिद्ध होगा।

इस दिनों होने वाले इमार अघिकार सत्याग्रह शही म्प्राव के होते हैं।

सोकितंत्र का धर्म

प्रातिनिधिक लोचन के आधार के जो सत्प्राव जाती है, वह लोक संपति के ही बनी होती है, देहल सेकते हैं। अथवा लोचनार्थक म्प्रावराती अथमम होंगे। अरुणत से जुने गये प्रतिनिधि अमर लोक-मन के सच्चे प्रतिनिधि हों, तो बहमत्त से जुने जाने वाली को नजली प्रतिनिधि और रौंगी प्रतिनिधि मानना उचित नहीं होगा। यह म्प्रागामिद लेव नहीं है। अन्य प्रांतों में बहमत्त से जुने गये प्रतिनिधि अमर सच्चे हैं, तो केरल में बहमत्त में रहने वाले 'म्यामराती' भी सच्चे प्रतिनिधि ही हैं। इधारे द्वाध लोच-सत्प्राव कर प्रिकेवर्तुव जुने गये प्रतिनिधि भी गल्ल बगारद करने लगे, तो उनके विवधक सत्प्राव करने का म्प्राव सेगों पर आ सजद है। ऐतिन्न जर धर अरर केमा म्प्राव आना है, तो मतदान के परे में ही बुच म्प्राव और बहव वडी गळी हुई, सेना बानना बडेग।

मतदाताधर्मों के साथ और गुनाह

सुरक्ष, सेध अथवा रर से मतदान बढना गल्ल है। लोकतंत्र की दृष्टि में यह गळीया का अम्यवधान नहीं है। यह तो गुनाह का पाप है। यह सेकबदारी और न्यायिक सारा की असावध का म्प्राव है।

जो मारतक रिती के म्प्रावत से नोन में केंब कद, या इराने-समकाने से घबडा कर मतदान कर सक्ते हैं, उनको सत्याग्रह कृने का ह्म है, ऐसा मानने का मतलब है, सत्याग्रह में 'सत्य' को ह्मयरा के लिए छुट्टी देना।

लोचन में सत्याग्रह को आवसक और महत्त्वपूर्ण रण्य है। ऐतिन्न मिनोरी मतदान का पविन ह्म कने म्प्रावरी का सत्य भी लोच या मय के मारण छोडने में कौंर दिक्कत नहीं होती है, ऐसे लोनों की दृष्टि से सत्याग्रह का मतलब है-अप्याकी का 'समोरी गुम्य' म्प्राव करने का साधन, अन्यायगतिरा का एरवान शय। उनके सत्याग्रह से न बीर-मति का विचार होता है और न धम्य का मर भी कम होता है।

एक व्यक्ति के हाथ में सत्ता और शक्ति हो और वह अरर दुधरी पर अपनी ताकत लादता है, तो हम ऐसे म्प्रावरा को सत्याग्रह या बुच बहते हैं। उसी म्प्राव से विनकी संल्य, वल अथवा बालुल, इसमें के दुध की म्प्राव हो, उन बहुरूपरकों द्वारा अरुणत बखों पर अपनी ताकत खरना भी उरुम ही है। यह बुधमरांरं भी तातासाती बर ही परव है। इसलिये

बहुबहुरूप अथवा बहमत्त वाले अरुणतपरों के म्प्रातिक और विरनेअम्य बर्ती की सत्प्रावकी से अरुणत बखें हों, यदा अरुणतबखों को अतिम समय पर सत्याग्रह का आभय देना पडता है। ऐतिन्न यदा भी अरुणतबख सत्याग्रह या बर्तिक अनी बात भी अरेल मय की, अनेम सत्याग्रह सत्यय की अरेल सेकहित भी अरेल सत्प्राव की अरेल मय की दजल अरिद बरता हो, समी बह म्प्रावद म्प्राव-कस्यामधरी और लेरमर्गि के ररुधम के लिए पेरक सिद्ध होगा।

सत्याग्र प्रतिकार में भी धम्य का तेव होना बखरवक है। ऐतिन्न बुधमत्त। सत्प्राव-पात्र, लेलला, देसका मरिपुल नहीं होना चाहिए। देहल होगा, कमी बह म्प्राव-मुद बाना ब्येग; समी उरके द्वारा पर-रुन का रिवाज होगा। सत्याग्रह के धम्य की परर को वेव करने के लिए निरेपु सत्प्राव का अरेल म्प्राव का पानी देना होगा। अर्थात् सत्याग्रह विना म्प्राव-पर और सत्प्रावनेही नोन, डाना ही बर

मदाना होगा। विनोबाजी ने सत्याग्रह का धर्म 'गौण, लोचन, लोकतंत्र' इन विधेयों के किया है।

मित्र परिचितिक के संदर्भ में गांधीजी के समय मित्र परिचितिकों की सत्ता को उरार रंजना था। उनके धम्य समाज-रचना का म्प्राव शुरू होने वाला था। हम लोग मित्र और ह्मयरी बन गये थे। प्रतिकार कोई मार्ग नहीं पत रखा था। मने तमप्राव और बहव देने की बुधि ही गांधीजी के सत्याग्रह के अनी हिन्म मनीहृति और बहव देने की बुधि लिए विनोबा अरुणत मिये, उरना इमे लम उराना, राकी वर गांधीजी के पुममय देह के साथ म्प्राव म्प्रावत दुध। ऐतिन्न इरने पर भी उर मरर इमारे किये गये सत्याग्रह से इरुमिद के बने म्प्रावरापण म्प्रागामिद और लोकतंत्र युक्त वेव निर्माण हुआ। गांधीजी का गांधीजी के म्प्राव अरुणतपरिद हिंसकपणता का आरोप कौंर म्प्रावत है नहीं देना बने। सत्याग्रह के अनी म्प्राव में भी रिती भी अरेल को अपनी बान का लतल नहीं मान देना था।

प्रतिकारी के मन में अनी म्प्राव प्रिकता का म्प्राव निर्माण कृना ही सत्याग्रह का लतल सत्प्राव है।

आज हमें सत्याग्रह, म्प्रातिक और म्प्रातिक लोचरं और लोकतंत्र की म्प्राविका बरती है। म्प्रातिकों में सत्याग्रह के रूप ही पररद निरुचान और म्प्रावमय निर्माण करना है, म्प्रावक म्प्राव देसक का पौरा और संवर्धन करना है। ऐसे म्प्राव में सत्याग्रह का म्प्राव बहव सत्प्राव है और अना-ग्रह बुधि से सत्प्राव सेवार्ण म्प्रावता करना आवसक है। म्प्रातिक, सत्याग्रह और म्प्राव निरुचान सत्प्राव के लिए या रिन संरंजे के लिए सत्याग्रह के मार्ग को अरुणत के परुते अरर का सत्याग्रह भी म्प्रावदो के परे में नहीं सोरेंगे तो अरुणत होगा। [म्प्राव म्प्राव 'म्याना' से]

"नई तालीम"

विद्या विद्यार्थी सब सेवा संघ का म्प्राव

- विद्या के विद्यार्थी
- विद्या की पदति
- विद्या-केरती हैं। म्प्रावराती
- विद्या में म्प्रावनिष्कम इरती
- विद्या और बहृणा

विद्या में सत्प्राव म्प्रावक प्रलो पर म्प्राव इरनेम राकी म्प्रातिक बरिदर।

"नई तालीम"

सत्प्राव

देरी प्रशाद और सत्प्रावक पण : म्प्राव म्प्राव संघ सेवा संघ का म्प्राव (बर्ती)

बराध

जीप बनाम वैलगाड़ी

सालमर्ण धर्मा

[सामुदायिक विकास-मन्त्रालय से प्रकाशित होने वाले मासिक "कुसुम" के वर्षक के अंग में उपरोक्त चर्चा का लेख प्रकाशित हुआ है। लेखक का यह विचार तो सही है कि "जन्तना बन बन कर" ही जन्तना से सम्पर्क भलीभांति हो सकता है। 'बी० डी० ओ०' के पास जीप रहे या न रहे, इसको व्यावहारिकता पर सोचना चाहिए, पर इसमें देह नहीं कि सामुदायिक विकास के काम में कल्प हुए छोटे-बड़े कार्यकर्ता जहाँ तक हो सके वहाँ तक काम जतना हो उपलब्ध साधनों का ही उपयोग करने से वे ज्यादा फायदा तानित होंगे।—सं०]

प्रत्येक विकास कार्य को विचार-कार्यों के लिए सरकार की ओर से एक जीप ही जाती है। जीप देकर सरकार यही आशा करती है कि विकास कार्य में तेजी से प्रगति होगी। परन्तु अनुभव के आधार पर यहना पता है कि यही से विकास-कार्यों की प्रगति की ओर कदापि अग्रसर नहीं किया जा सकता है। व्यवहारिक रूप में विचार-कार्यों को जीप देने से निम्नलिखित समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।

जन-सम्पर्क में बाधा

जीप जन-सम्पर्क में बाधा पहुँचाती है। जनता से सम्पर्क सभी किया जा सकता है, वह सम्पर्कता जनता बना ही हो पाय। किसी भी प्रकार की विनिम्नता होने पर जनता का नहीं बना जा सकता है। जीप पर, पुष्कल विमान पर या हाथी पर खरार होकर जन-सम्पर्क करने पर जनता और कार्यकर्ताओं में अन्तर पैदा होना स्वाभाविक ही है। उनको सम्पर्क के अभाव में जन-सहयोग नहीं मिल पाता है।

बी० डी० ओ० कीर विस्तार अधिकारी अधिकांश जगहों में बी० डी० ओ० और विस्तार अधिकारियों में इनके कुछ पक्का रहता है। एकटा कुछ कार्य जीप से। प्रत्येक विस्तार अधिकारी जीप चाहता है और यह सचम भी नहीं होता कि प्रत्येक को जीप से भ्रमण कराना पड़े। होता नहीं है कि जिस को जीप ही जाती है वह तो कुछ ही न हो, परन्तु बाकी सब कुछ छोड़ देते हैं और हमारी आराम-सुख जीप लम्बे-दूरी की परिचर कर देते हैं। सहकारिता का सिद्धान्त "एक सन्तुष्टि और सब एक के लिए" छोड़ करनकारियों द्वारा ही लिखित हो जाता है।

जिला अधिकारी और जीप

अधिकारियों जिला अधिकारियों के पास जीप नहीं होती और सभी को राज्य का दौरा करना पड़ता है। मित्र-मित्र विभागों के कम-से-कम १०-आठार से प्रति मास सत्र पर जीप करने ही हैं और किसी-किसी दिन तो या उलठे अधिक अधिकारी भी या उलठे हैं। अनेक यही बाधा है कि मुझे जीप मिल जाय। ऐसी हालत में जिले की नई मिल पाती वह राज्य से अलग-थलग करने सकता है। यही बाधा विकास-कार्य के अन्य धर्मकारियों पर भी लागू होती है। यही नहीं जीप ही मुख्य सत्र पर देने के प्रश्न को भी उठ कर मनमुटाव होने रहते हैं।

जनता और जीप

कृषि सामुदायिक विकास-कार्यक्रम बनाया का कार्यकर्ता, रक्षित न करनी

उच्चतम, प्रतिभाशाली एवं समन्वित कार्यकार या विचार-कार्यकर्ता को किसी विशेष अवसर पर मोटर सरीली लीज-गामी वाहन की आवश्यकता पड़ती है, जो वह सके पहले बी० डी० ओ० साहब या ही दार लटकाया है। परन्तु होने के कारण उसे जीप नहीं उपलब्ध हो पाती है और परन्तु यह विचार-कार्यों के अलग-थलग हुए रह जाता है।

बी० डी० ओ० कीर पर निकलते हैं जो जीप पर बैठ कर कार्यालय से सीधे गाँवित स्थान पर ही सके लगाते हैं। पचास मीटर की रफ्तार के अन्ते गुरते हैं चकने वाले गाँव के लोग जीप की धूल के ही दर्शन कर पाते हैं और जीप से ही सत्र अधिकारी के सम्पर्क से वंचित रह जाते हैं।

जीप के द्वारा जर बी० डी० ओ० दौड़ा करते हैं जो वह स्वाभाविक ही है कि अधिविचार और सिद्धे लोग उनसे मिलने में विक्षोभित हैं। ऐसी हालत में बी० डी० ओ० से केवल वही लोग मिलते हैं, जो चालक और चढ़ा होते हैं। ऐसे ही कन्द लोगों द्वारा वह नहीं की परिचरितियों का पाया उगारते हैं, विरुद्धे वास्तविक परिचरितियों के, यह नहीं जानाया जा सकता है। इस प्रकार से देव का बहुदुष्करक बन विचार-कार्यकर्ता से अनजान होने के कारण देव की उत्पत्ति नहीं कर सकता है।

जीप पर-कर टोख-लेत, और अधिविचार स्थानों पर पहुँच ही नहीं पाती है। जहाँ पहुँचती भी है, वही परेजाती से था जगहों की जनसंख्या के और अधिकांश अधिकारी नग के लोग होने जागरूक नहीं होते कि उन्हें जीप के मनने या मिगने का ध्यान रहे। नतीजा यह होता है कि जीप हमेशा वर्क-पार में ही जाती रहती है। अन्ततः यह देखना पड़ता है कि नहीं जीप कार्य-कार्यों को ही उरार हो जाती है; उलठे शर्तों धमकाय का माय होता है।

और भी कई सड़कों से जीप का दुपयोग होता है। किसी विकासकर्ता

बी० डी० ओ० के कारों बचने की आती है, उलठे दूरी-चौगुनी गिरायों जीप का दुपयोग करने की आती है।

वैलगाड़ी के लाभ

ऐसी हालत में मेरे विचार कि विचार सत्रों में जीप का प्रयोग करके देव देव चाँदिए और उनको बगल एक अच्छे विकास के वैलगाड़ी बी० डी० ओ० को उपलब्ध करानी चाहिए। वैलगाड़ी से निम्न सचदे होंगे—

- बी० डी० ओ० या कोई भी विकास-अधिकारी जब वैलगाड़ी से खेत का दौरा करेंगे तो वह मायाक समजगत आदि, विस्तार, साद-बीज सत्र

- जो और रातों में प्रत्येक गाँव के प्रत्येक आदमी से मिल सकते हैं। कृषि अधिकांश सामीय देहक या वैलगाड़ी पर ही यात्रा करते हैं, अतः वह बी० डी० ओ० को वैलगाड़ी पर किसानों की योजनाओं में देव अन्तर ही आरंभित होंगे और बी० डी० ओ० को उन्हें पोजेवने की आवश्यकता न होगी।
- स्थाप तथा अधिविचारों का आपकी सहायता खाना होगा और सहायता की भावना पैदा होगी।
- सही समय का बसाव होगा।

आर्यी तहसील की सामूहिक पदयात्रा

भूदान-प्रति के नाम को गति देने के लिए वर्षों जिले के आर्यी तहसील को चुन गया। इस समय की परिस्थिति पहले की परिस्थिति की अपेक्षा अलग निम्न थी। पहले ही अधिक परिवर्तन में (५०० एकड़) भूदान प्राप्त हुआ था। प्राप्त भूमि में से काफी भूमि विकसित हो चुकी थी। कार्यकर्ताओं के वर्षों जिले के बाहर चले जाने के कारण तीन सत्र उठ उठ क्षेत्र में कोई गया ही नहीं था। इसीलिए यह भी लाल-पत्नी देव गयी थी कि भूदान-आंदोलन हमेशा के लिए टप हो गया। इसके कारण कुछ दायकों के मन में फिर से लोग भी भावना लिए उनसे उन्होंने कहा कि आशाओं की भूमि का कच्चा नहीं दिया, तो कहीं उठे भाग दिया गया। कुछ आशाओं में भूदान में ही हुई अमीन बेच कर पाँच बी, हजार रुपये प्राप्त कर लिये थे, तो कुछ से अलग-थग में कहा था कि दिया हुआ धान नामकर है।

इस सके कारण उलठे राता भी निरालासी बन गये थे और कई आशाओं को नहीं के कुछ भी सचम प्राप्त न होने से चपरा गये थे। १९५७ के आंदोलन का नेतृत्व काम होने से जनता भी सुख नहीं थी और इस सचमें इन दिनों होने वाली घाटी-भारत के पूरुपाय में भी कार्य में काफी विचलित पैदा की थी। अन्य किलों में भी चपराशाली अने वाले थे, रक्षित हमेशा की तरह बारर के कार्यकर्ता भी यहाँ की पदयात्रा में नहीं आ सकते थे। ऐसी वास्तविक प्रतिष्ठु परिस्थिति में इस समय सामूहिक पदयात्रा का कार्यक्रम अधोनिष्ठ किया गया। पदयात्रा-समिति के अधो-निष्ठ कार्यक्रमों के आयोजन होने के लिए-जन से इस पदयात्रा में कुछ जन आयी।

इस अवस्था में दो टोलियों पदयात्रा करने निकलीं। ६० गाँवों में उन्होंने काम किया। पहले तो दाता-आदाताओं की उपस्थिति और संतुष्टि से ही कार्यकर्ताओं का मुताकत हुआ। हर जगह सर-सर पैदा देव कि आदोलन बढ़ गया था, सत्तिक कार्यकर्ताओं के साथ साथ भी पहुँचती में तो गठक-गठक भी पैदा करते का। काम करना था। सर्वप्रथम पूरुष नाता का कि-अन की भूदान देव। गंत-वारा कमाएँ होने लीं। सत्र में काफी माय में लोग इकट्ठे होते थे। वातावरण में जाय अने लगी। हारे हुए किले पर पुनः विचार प्राप्त होती रही। मन्-सत्र यह कि दाताओं के द्वारा कच्चा माय

न होने वाली बेयान, आदाताओं को हर्षा-वादी अन्त, नामरू दान की और केशु हुई जमीन फिर से प्राप्त होने लगी। सत्र-सत्र नया भूदान भी मिल। पहले भूदान देने वाले दाताओं में भी नहीं-कहीं भूदान भूमि थी।

इस कोने से बचल में १० दाताओं से ११५ एकड़ भूदान-प्रति हुई और उनी समय १४५ एकड़ भूमि का ५८ परिचरों में विस्तार भी हुआ।

इस परिचरों में इच्छा के आदाता काम सुलाने की सुविधा भी इस समय गयी थी, कई दाताओं ने उलठे काम उठाया। तहसील और आर्यी में भी विचरि हुए, उलठे समाप्ति के समय गाँव-गाँव में भी कृषि कार्य पर-पर में ही थी।

पदयात्रा की समाप्ति आर्यी दार में भी जयपराशाली की उपस्थिति में हुई। १९५६ की भी कृषि की जयपराशाली को बिले को और से पैदा की गयी। १९५९ में अने वाली "पारु-सम-पदायत्री" के अन्तर पर बर्न दिने को "सर्वोपर-निष्ठा" बनाने का विचार किया सर्वोपर सत्रार को मोर ही प्रवृत्त किया गया। भी चपराशाली में ह्या विचार की मुक्ति करने वाला देव देव का आर्यी-चौर रूप में भाग्य किया।

आर्यी तहसील में प्राप्त नये भूदान का अधो-निष्ठ प्रत्येक गाँव की भूदान में कम ही दिखाएँ देता है। केवल ६० गाँवों में प्राप्त दान को ही देव देव, तो पर-दोस काम हुआ, देव ही बना करेगा।

सर्व सेवा संघ-प्रकाशन, राजघाट, काशी स्थायी ग्राहक योजना

अहित मारत सर्व सेवा संघ लिखते हैं कि सर्व सेवा संघों के अंतर्गत-नाहित सुख मूल्य में प्रकाशित कर रहा है। अतः हमने सर्व सेवा संघों के अंतर्गत-नाहित सुख मूल्य में प्रकाशित कर रहा है। अतः हमने सर्व सेवा संघों के अंतर्गत-नाहित सुख मूल्य में प्रकाशित कर रहा है।

हमारे पास बरग मोंग आती रही है कि सर्वोदय-साहित्य सुख मूल्य में प्रकाशित कर रहा है। अतः हमने सर्व सेवा संघों के अंतर्गत-नाहित सुख मूल्य में प्रकाशित कर रहा है। अतः हमने सर्व सेवा संघों के अंतर्गत-नाहित सुख मूल्य में प्रकाशित कर रहा है।

इस योजना के नियम इस प्रकार हैं

(1) स्थायी सदस्यता का प्रवेश-शुल्क १ रु० होगा।

(२) स्थायी सदस्यों की 'भूदान-जग' हिन्दी, 'भूदान' अंग्रेजी, 'भूदान तद्दोष' उर्दू या 'महं साहित्य' (हिन्दी साहित्य) में से किसी भी पत्रिका के ग्राहक बनने पर एक पत्रिका के रूप में १ रु० की छूट प्रथम वर्ष में दी जाएगी।

(३) उत्पन्न पत्रों पत्रिकाओं में से किसी भी एक पत्रिका के मीटिंग्स ग्राहकों को प्रेषण प्रकाशित करने की आवश्यकता नहीं रहेगी। केवल ग्राहक-नागर और वेदिका रुक भेजने पर वे स्थायी ग्राहक मान लिए जायेंगे।

(४) स्थायी ग्राहकों को ५ रु० वेदिका जमा करना होगा। श्रावण में निर्धारित मूल्य से कम मूल्य की सुल्लेख देने पर दिया हुआ कर्जागत या की. पी. सी. डी. कर आने से उत्पन्न सचं आदि को रकम इस धन में से जमा कर ली जाएगी। किसी प्रकार का भ्रमना न होने पर वेदिका की रकम हस्तगत-समाप्ति पर वापस कर दी जाएगी।

(५) हमारी अस्था है कि सर्व द्वारा प्रकाशित हर नई किताब स्थायी ग्राहकों के पास पहुँचे। किन्तु ग्राहकों की अपनी दृष्टि के अनुसार खपत करने के लिए रु०-१५ रु० की किताबें सर्व सेवा संघ-प्रकाशन, काशी से जमा आवश्यक होगा।

(६) नव-प्रकाशित साहित्य की सूचना 'भूदान-जग' में महीने के प्रथम सप्ताह में निकाली जाएगी। इसके अत्यंत स्थायी ग्राहकों को पत्र द्वारा भी नये प्रकाशनों की सूचना तथा समय हर इच्छे महीने दी जाती रहेगी।

(७) सर्व सेवा संघ-प्रकाशन काशी से प्रकाशित पत्रों स्थायी ग्राहकों को २५ प्रतिशत छूट मिला दिया जाएगा। प्रकाशित करने का समय, विषय आदि सर्व-ग्राहकों के निम्ने होगा।

(८) जो स्थायी ग्राहक प्रकाशन १५ रु० जमा कर देंगे, उन्हें विना की. पी. सी. विना रजिस्ट्री के फिलॉसोफी में भी का लक्ष्मी। इन्हें वाक-व्यय पत्र भी प्राप्त होगा। की. पी. सी. रजिस्ट्री से ही साहित्य संग्रहना हो तो एक रकम पर अधिक ग्राहक होने से और प्रकाशन संग्रह के बाक-मूल्य में कुछ छूट होगी। अधिक साहित्य संग्रहना, हो तो रकमे से भी संग्रहना जा सकता है। आगे-पछे की सभी अधिक कचत हमें है।

(९) हर माह की २५ तारीख को साहित्य पत्रों के जमा भवित। ग्राहकों को फिलॉसोफी का प्रथम करने उभरी सूचना हमें १५ वा. तक भेज देनी होगी।

(१०) इन नियमों में अनुसूचक से वेद-व्यय की आवश्यकता महसूस हो तो वह किया जा सकेगा। इसकी सूचना भूदान-नाहितों द्वारा दी जाएगी। अस्था है, बाक-मूल्य इस योजना का काम उठावों और भिन्नता को भी इस के लिये प्रेषित करेंगे।

-राधाकृष्ण बजाज
संस्थापक

अ. मा. सर्व सेवा संघ-प्रकाशन

इस अंक में

सर्वोदय-आन्दोलन के लिए आर्थिक मदद	१
विद्यार्थक बनने-आन्दोलन को	१
तत्कालीन में सर्वोदय	२
आन्द-दर आदि कर्म	३
विधायक	३
नया मोड-रचना, दिया और योजना। २	४
नियमों के सम्बन्ध में विद्यार्थक के विचार	५
आशयों में चारित्र्य निर्माण हो	६
मातापिता प्रायः पर सखट : १	६
सलाहक : एक विद्वान	७
एक व्यक्ति के संस्कार की कहानी	८
वीर श्रद्धा विद्यापीठी	९
संकायत-विरुद्ध के महत्त्वपूर्ण प्रकाश	१०
सहाय-समाचार	११-१२

विहार का पाँचवाँ सर्वोदय सम्मेलन

आगामी २८ और २९ मई '६१ को विहार का पाँचवाँ सर्वोदय सम्मेलन काशीनाग किले के अजयनत-सुमरीविला में होने जा रहा है। सम्मेलन में सर्वोदय सम्प्रदाय, नारायण, धर्मदत्त मन्मथार, श्वभवावद गान्ध, रामदेव ठाकुर, देवनाथ प्रसाद चौधरी आदि नेतृत्वों के अलावा लगभग २००० लोकप्रियक सामिक होने वाले हैं। विहार विधान सभा एवं विहार विधान परिषद के लगभग १०० विधायकों, विहार के सभी संघर्ष करकों, अधिकारियों, उपनिधियों तथा लगभग २० रचनात्मक संस्थाओं से प्रतिनिधियों को सम्मेलन में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया है। ता० १-११-६१ मई को पाँचवाँ सर्वोदय सम्मेलन के स्थान पर 'विहार सर्वोदय-सम्मेलन' संघ तथा अन्य विद्या-संस्था-सम्मेलन समितियों के सदस्यों को भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया है। मोटः छात्रों विद्यालय इन्हें अपने दे प्रेक्षक वहाँ स्वयं दे गया है वहाँ १० मील पूरा कीटना देकर निकट है।

निःशुल्क प्राकृतिक चिकित्सा और शिक्षण-शिविर

३० मई, '६१ से ५ जून, '६१ तक

प्रो.माधवराव में विद्योत्त विचारियों और शिक्षकों के लिए स्थानीय 'प्राकृतिक चिकित्सा-केन्द्र, ग्राम कलक (इलाहाबाद) बागमती मेम. जोशियर प्राकृतिक चिकित्सा-पत्रिका-संस्था का अमृतपुरी प्रयोग एवं प्रशिक्षण-शिविर, सुप्रसिद्ध डाक्टर कर्तव्य पाठेय की देखरेख में चल रहा।

पेट की मालिश, नाभि-पथिका, स्तूप एवं श्वसन योगिक स्थानों तथा अन्य विषयों द्वारा प्राकृतिक चिकित्सा को लोक करने की विधि सहित प्राकृतिक चिकित्सा, योग-सुधार, कुशल, शूल-प्रलापन, नील, नेत्र और योगासनों के अतिरिक्त वल व्यायाम, दवा-चिकित्सा तथा 'साध्य' शाप की कलकें द्वारा पेट के सभी रोग और चर्मा, लिंग, श्रोत्र, शोथ, गठिया, मधुमेह, रक्तचाप, हिस्टीरिया, प्रसू आदि अनेक दुस्स्थाय विचारियों का हलक किया जाएगा और इन विषयों की शिक्षा भी दी जाएगी। उपचार तथा उपाय बताने का और प्रशिक्षण का कार्य शुरू नहीं रहेगा। इस निःशुल्क योजना में प्रवेश फेब्रु ३० मई से १० जून '६१ तक ही होगा वर ही होगा। मिलने का समय प्रायः ५

संघ के अध्यक्ष का दौरा

सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष, श्री महाशय चौधरी सर्वोदय-सम्मेलन से लौटते हुए पूर्व में सर्व सेवा संघ तथा गोखले इन्स्टीट्यूट द्वारा सम्पन्नित तथा से संतोषित आर्थिक नियोजन परिषदवाद में तथा मित्र, सुभा, अग्रवा होते हुए ता० ३० अप्रैल को सर्व सेवा संघ के प्रधान केन्द्र लुधिये। काशी में पंच दिन रहने के बाद इलाहाबाद होते हुए भी महाशय कलक गये। प्रकाशन में ता० १ मई को प्रेक्ष-शुल्क में उन्होंने सम्मेलन और सर्व सेवा संघ की वर्षाओं में विचारों के बारे में प्रकाश डाला। ता० ७ मई को अपने कलक लुधिये। वहाँ से अंग्रेज होकर जाकर ता० १० को सुधार कलक आये। ता० १२ की शाम को इलाहाबाद में आम सभा हुई, जिसमें सभी पार्टियों के लोग उपस्थित थे। सभा में श्री महाशय ने कतिपय वधा पठे तथा विचार की मौजूदा परिस्थिति, भारत के जनजन को दवा-निग्रह कैसे बनाया जाए, इस संघ में कैसे सेवा का की नीति आदि विचारों पर भाषण के बाद वहाँ एक धरा तक प्रसन्न हुए।

रोहतक का काला कानून

सुछ महीनों पहले जब पंजाब-असफलर ने अपने घरों की विनाश-समाप्ति में उस राज्य का महकिया पैदा किया था, जिसके अंतर्गत वे 'लोककल्याण के कामों के लिए' उनका से मजदूर बनाम करार थे, पर 'मजदूर-यंत्र' ने उनका सतत विरोध किया था। काम अन्ततः-अन्तः और लोककल्याण का ही प्रयोग हो, उसके स्थिति भी मजदूरर ही के काम करना सिद्धान्तः रह्य और अर्थव्यतिकर हो।

अभी पिछले सप्ताह पंजाब के रोहतक जिले में वहाँ के विधायक ने उस कानून के अन्तर्गत कुछ निष्कारण कि शोखण करों के लगाकर सड़क की उन्नत तक के सब सड़क लोगों की पाँच दिन तक घर के पाल वाले साथ पर मिट्टी डालने का काम करना है, जिसके दूरे के पिछले साल रोहतक में भारी प्रादुर्भाव भी। मजदूरों के जिन सड़क के लोगों के लिए यह कुछ निष्कारण गया था, उनमें करीब शंकर ही ऐसे व्यक्ति हैं। पर पहले दिन शिब ५५ आदमी काम के लिये आये, और दूसरे दिन ६२। असलगत में प्रकाशित कानून पर के अनुसार जिले के अधिकांश कानून की पावनी कराने पर तुले हुए हैं। इस कानून के उल्लंघन पर कचरा की तक हमलिया की व्यवस्था है।

इस कानून को न मानने में रोहतक के लोगों का भारी आन्दोलन था, परदे देकराजी की भावना हो, चाहे—रैला कि अमरगरी में कहा गया—वहाँ के आगामी स्थितिपक पुनर्गठ के गिरावले में राजनैतिक पार्थिवी का आच्छेद संघर्ष का प्रकाश हो, इतने कोरे संदेश नहीं है कि पंजाब सरकार का यह कानून नैतिकता, जनतन्त्र का समर्थन किरी भी बलवती, पर याचित नहीं कहा जा सकता। आचार्य की लखन में हिस्सा लेने वाले वैकन-द्वारा आदमी किसी बिना है। उन तकने याद होगा कि जिस तरह अनेकी राज के ब्रह्मने मे साक्ष करते देखाओं और रिवाजों में 'भारत' के रिवाज हम लोग रहे हैं और मुझों के हैं। 'लोक-व्यवस्था' के नाम पर और लोगों के 'प्रतिनिधियों' द्वारा मान्यता दीहल कानून की दुहाई दी गई रही, इस प्रकार लोगों के बेकार लेना सर्वप्रथम अनुचित और अर्थव्यतिकर है। क्या पंजाब-असफलर रोहतक के सचारी से सख्त लेगी।

जिन कानून के स्थिति लोगों की अच्छी भावना की पावनी या सख्त आच्छेद का मामों के लिए भी लोगों को प्रेरण देने के बजाय असफलर के नेता कानून, दस या द्वादश इन्किया देकरा ही के लिये है, यह बोचने पर्याप्त बात है। इन्होंने दो ही परिष्कार में सख्त सख्त—या लामादाही अपेक्षे का समर्थन विच्छेदत होना। इस तरह कानून के दल पर लोगों के काम पर लेना

अभाव नहीं है, यह रोहतक के अनुभव के समता में या जाना चाहिये। अगर इस तरह कानून का मनवाना है तो उसके पीछे विशाल दमनक चाहिए। अगर कानून का कालन लोगों से नहीं करण का रखा तो एक और तो कानून की साथ लतम होगी और दुधरी और साथ और परमर्ष भी मानवाना के लक्ष पर काम करण तकने का रास्ता भी बन्द हो जाएगा।

हमें इस बात की गहराई में जाना चाहिए कि उनको अपने हित में होते हुए भी रोहतक के लोगों ने यह काम करने से क्यों इन्कार किया। असलगत में अभी उत्तर के असुधार कई लोगों ने कहा करण है कि 'यह सखार का काम है, हम क्यों अपना कर दुखते हैं। यह दुखी बात है कि जन सखार देवद्वारों के यह काम करणोंको उलना लखें लोगों की मेहनत में ही, अर्थात् उन पर लाने जाने वाले देकर से ही अपने पाल रहे। पर सरकारसलकी और परतकसन की यह भावना दिनों दिन बढ़ती जा रही है, इतनी जिम्मेवारी भी उन्हीं लोगों पर है, और 'कल्याणकारी' राज्य का रचना देखते हैं और इस काम कानून के लक्ष पर का लेना चाहते हैं।

राजा-महाराजाओं के महल

आजकी के इतके बाद जितनी सुख-व्या और पुरी के साथ लालकालिक रिवाजों और लखामों का प्रमण लख सखर परले मे लक्ष रिवाज बढ़ लया इतिहास की एक लिखल्य और मखर-गर्भ परना रहीं। अभी १५ पर्य भी पूरे नहीं हुए, इतिहास जैसी-यही ५० से ऊपर रिवाजों में बंद हुआ था। एक छोटे-से शौच के भी आधे दुबड़े जिले छोटे 'राज्य' से देकर देदारक और कजारी के बड़े-बड़े अलग राज्य इस देश में थे। भारत की रैशिडलिन, सारहादिक और मान्यिक एकदा की शुष्कमि में यह राजनैतिक दुबड़े जिले आध्यात्मिक थे, यह इसी पर से सिद्ध होता है कि हालोकि उनको समता हुए देकर-वैदिक रूप भी नहीं हुए, लेकिन अधिकांश लोगों को आज उनके इस अस्तित्व की याद भी नहीं है।

इस काम को संभव करने में और वहाँ के मान-मान लालकीन राजाओं को उर्रगोरी देकर और 'निजी-संपत्ति' के नाम पर लख-चोटी में का बावदारी उस समय दे दी गयी थी। एक शोका समकार के अनुसार अग्रा पञ्जाब में सुहाव रिवाज है कि जो सिद्धे पञ्जाबमखल्य अपने मखल्य का वाकदाद बेचना-चाहे उन्हें उचित मुद्रानाम देकर वे दमल्ले अदिर दमल्ले भी थायें। वे दमल्ले फिर सखारी वसने, असखल्ले, रकुनी अदि के काम में ही जा शकती हैं।

सब पुराण जायें तो बड़े बड़े-बड़े मखल्य, मान-गयीये अदि राजाओं की 'निजी संपत्ति' किरी कल्प में नहीं थे। वल्ल-रिवाज को कानून बना साथ तब तो सारी रिवाजों, और रिवाजों में बने जाने खेग भी, राजा-महाराजाओं की 'निजी संपत्ति' ही थे। 'निजी संपत्ति' के रूप में एक या अधिक-से-अधिक दो-चार मखल्य का इमाल्ले राजाओं के लिए छोटे देना उचित ही था। लेकिन सखल्य बड़े बुद्ध बदी रिवाजों में जिस तरह शीघो-पचावी मखल्य, मान-गयीये, जमीन और सखद-सखल्य की सखल्ले रिवाजों से इतने बड़े राजाओं में अपने नाम लिखा ही, यह एक तरह से उस सार प्रमण को छाति के साथ खमेदने की संकेत ही था। कोई भी नहीं समझता था कि वे सब उनकी 'निजी संपत्ति' हैं।

आज इन 'राजा-महाराजाओं' को यह मखल्य होता का रहा है कि वे दमल्ले और बड़े-बड़े मखल्य उनके लिए वाटे का लोटा लासिक हो रहे हैं। उस समय तो वे समयसे वे कि जो कुछ हाथ लगे बड़े से देना और अधिकांश-अधिक की मोग फलना परी दुस्मिनी का काम है। भविष्य की व्यापक उनके हित में है। पर अन वे बड़े-बड़े मखल्य उनके लिए मख सखल्ले हो रहे हैं। सामान्य योर पर उन मखल्ले का कोई सखारी भी नहीं मिच्छा और उपमोगी भी शीघें इमाल्ले का एक परिचार नहीं बक करे। इतने तो और, उनको सखरें, सार-सखल्य, मखल्य और सखारी भी अर अखर होती जा रही है। व्यक्ति-बतु मान-करी के आधार पर इस कह सकते हैं कि इस प्रकार के शीघे मखल्य, मान-गयीये और सखल्ले अपने मोग-यौक, रिवाज आदि के लिए ऐसी-ऐसी जगहों पर इन राजाओं वे बनाये थे, जहाँ आज मखल्य-मख पीदक और लोचकियों के सिवा कोई बरली भी नहीं है।

सिवाय का लखना किरी भी जाने में राजा की 'निजी संपत्ति' नहीं होता, चाहे अखल्य न होने के कारण कोई राजा उनका सखल्ले उपमोग भले ही परे। राज्य के सखल्ले से बनी हुई एक जासदारी को 'निजी संपत्ति' के लो पर बर राजा-महाराजाओं के पास छोटा दिया गया, यह सखल्ले का सब किरी नया तो आज विश प्रसार प्रेषासार मखल्य रूप से देना हुआ है, उले लखल्य वे लखे हुए भीतम भी कई मीयों पर मखल्ले से मखार देनी पड़ेनी, इतमें लखे नहीं। मखल्ले मखल्ले मुनाराखोरी और शंख लखल्ले का इतना मखल्ले अदि मखल्ले मख मया है कि राजा लोगों की इस 'निजी संपत्ति' को लखल्ले की मखल्ले लखल्ले ही, लेकिन कोई उन्हें इस का

के लिए प्रेरण देने की महल्ले नहीं कर कि ऐसे-सदाराये एन दुगानी दमल्ले की जनोपयोगी कामों के लिए राष्ट्र को समर्थन कर दें, जो चीयें उन्हीं-उन्हीं 'बमर' के नहीं बनायें, आज जो बड़े उन्हीं में नहीं आ रही है और किनीका छा सुपण और कुपितत राजना भी उन्हीं लिए संभर नहीं है—ऐसी-नीयों न जनहित के लिए सखल्ले करने के राज महाराजाओं के लिए एक पथ दो काम होने—पुनरी मखली का प्रारंभिक उन्को और भागों के लिए राष्ट्र की इच्छासक उनको हासिल होगी।

अमेरिका में फिर सत्याग्रह

छा बरस पहले अमेरिका के सविष्य राज्य अलाबामा की राजधानी मंडगुपी में वहाँ के मखल्ले बल-सिद्धार लखाम में सारी दुनिया का ध्यान आकृषित किया था। अमेरिका के सविष्य राज्य में 'मखल्ले' लोगों के प्रति रंग-भेद का सत प्राधान्य है। अमेरिका एक जासदारी राष्ट्र है किन वन वे महानाम प्रयास निजने में दुगानी की प्रया को खतम करने लीये लोगों को आबाद किया और उन्हें अमेरिकन नागरिक के साथ बराबरी का अधिकार दिए, वर के अमेरिका का उदार बनना और बहुत ही तक वहाँ की सखल्ले सखल्ले, रंगभेद के विषयक लखी है, पर सविष्य राज्य में अभी भी नीयो लोगों के प्रति भी का लोच वनने के लारे नागरिक जीवन में वहाँ का लोच कायम है। बाले और गेणों की बलिष्य भी अलग अलग है, नीये लोगों की बलिष्य में कले लोच, लख नहीं लखे। सिनेमा, होखल, वेदोरी, सार्वजनिक सार-कमीके अदि बगदों में गेणो और बल्ले के लिए अलग-अलग स्थान हैं, देणों और वहाँ में भी वे लख वहाँ बैठ लखे। लखी से रंग भेद के खिलाफ एक १९५५ में कानून-सखी एक बल्ले तक मखल्ले के नीये लोगों में अपने नेता वल्ले मखल्ले लखल्ले रिवा के लोच—भरने लोच-सखल्ले के दिनों में दिखल्ले लखल्ले वे-नेदुख मखल्ले वली का बलिष्य किया। बाल लख लख लखल्ले-द्वारा नीयो सुख और बल्ले लीयें अपने वाच पर पैदल आते और जाते थे। एक भी नीयो ने दख बरल्ले-मखल्ले नहीं किया। आखिरकार लखी विषय हुई और वहाँ में रंगभेद सख-कानूनी कवर दिया गया, सार्वजनिक सखल्ले परिषयति कानून के शार भी पुरी लखी बरली।

पिछले सप्ताह उसी प्रखल्ले मखल्ले सखर में रंगभेद के प्रमण को लखर निर दमले लोगों की ओर से बड़े देलने पर दिखल्ले सखल्ले हुए। १९५५ में एक वर्ष तक वे लखल्ले लख, सखल्ले नीयो [एक छोट १२ पर]

भारतीय विकास की समस्याओं पर कुछ विचार

—ई० एफ० गुप्तावर

[सर्वे तथा संघ के तत्वावधान में गांधी विद्या स्थान की स्थापना कागो में हुई है। गांधीजी के दृष्टिकोण के अनुसार हात संघों में अर्थशास्त्र, राजनीति, वस्तु-शास्त्र एवं समाजशास्त्र पर शोध-कार्य करने का विचार है। परन्तु विद्या-स्थान केवल शोध-कार्य ही नहीं करेगा; बल्कि विभिन्न क्षेत्रों में जो प्रयोग एवं विकास-कार्य चल रहे हैं, उनके साथ उसका जगजगत् सम्बन्ध भी रहेगा।]

अभी हाल में विद्या-स्थान के शोध-कार्यक्रम पर पूना से एक पत्रिकाका हुआ था। इस पत्रिकाके में जो गुप्तावर से अनुरोध किया गया था कि वह अपने विचार से हमें सामाजिक करें। यहाँ दिया हुआ लेख उनके विचारों को स्पष्ट करता है। कहने की आवश्यकता नहीं है कि उनका दृष्टिकोण सर्वोपरि के दृष्टिकोण से बहुत निकट-जुगत है। प्रस्तुत लेख में एशियाई देशों की और साथ ही भारत की विद्यार्थ-समाजों के विचारों में जो कुछ करने की एक नई दिशा दी जा सकती है।

जो गुप्तावर स्वयं एक अच्छे अर्थशास्त्री की ओर आर्थिक विकास को वह रिपोर्ट-रिपोर्ट के संदर्भ में नहीं देखते हैं। आर्थिक बहुराज्यवाद का राष्ट्रीय बोधकोश में अर्थ-शास्त्रकार है। कुछ समय तक वेमर सरकार के भी अर्थ-शास्त्रकार रह चुके हैं। वर्षों के अपने जीवन-काल में उन्होंने "एक बौद्ध राष्ट्र में अर्थशास्त्र" शीर्षक लेख लिखा था। इस लेख को बाद में भी अर्थशास्त्रकारों में अपनी पुस्तिका "भारतीय राजनीति की जीवन-रचना" के नाम में परिचित करने में दिखा है।

गांधी विद्या-स्थान के अध्यक्ष श्री चंकरराव देव ने भी गुप्तावर के विचार प्रस्तावित करते हुए विभिन्न रचनात्मक एवं शैक्षणिक संस्थाओं में निवेदन किया है। कि दोषोक्तत्व में रचित करने वाले शोध-कार्यकर्ताओं का सहयोग प्रदान करें, जिससे विद्या-स्थान का काम भी बाले बढ़ेगा और उनके मतों में संस्थाएँ भी सामाजिक होंगी। —सं०—

सही अर्थों के प्रमाण के फेर में न पड़कर, हम यह कहना चाहें कि भारत दो भागों में बँटा हुआ है। 1. "औद्योगिक रूप से अत्यन्त विकसित कुछ क्षेत्र" (मेट्रोपॉलिटन एरिया), जिनमें समूची आजादी के पन्द्रह प्रतिशत लोग रहने हैं और यह बड़ी "ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था" या "अविकसित अर्थ-व्यवस्था", जिसमें ५ लाख से अधिक गाँव, हजारों विभिन्न आकार के नगर तथा जावादी के पृथ्वीस प्रतिशत लोग सम्मिलित हैं। मेरा सुझाव है कि इन दोनों भागों के एक-दूसरे पर पढ़ने वाले प्रभाव एक प्रतिक्रियाओं का सम्मिलित अध्ययन होना चाहिए।

ऐसा अहसास होता है कि एक नाम दूसरे पर पातक अवर डाल रहा है। औद्योगिक रूप से अत्यन्त विकसित क्षेत्रों के उन्नत उद्योग "ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था" के गैर-रूपि उत्पादनों को लक्ष्य कर रहे हैं। फलतः जमीन को छोड़कर "औद्योगिक क्षेत्रों" में भागों के कारण अत्याधुनिक समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं, जिनका हल किसी भी प्रकार के औद्योगिकरण द्वारा नहीं हो पा रहा है।

इसलिए राष्ट्रीय धार्मिक नियोजन का मुख्य लक्ष्य यह होना चाहिए कि उसके द्वारा जो रही इस तरह की पारस्परिक विनाश की प्रक्रिया रोकनी जाय। इसका मतलब यह है कि ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था में गैर-रूपि उत्पादनों पर, जो उद्योग-प्रधान क्षेत्रों की क्षतिपूर्ति होके के कारण उत्पन्न हो रहे हैं, रोक लगायी जाय और ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था में जनक विकास किया जाय।

किया है। यह सुनिश्चित पति तो वास्तविकताओं के लिए भी सम्झनी है कि यह वास्तविकता, समुदाय, पर आधारित किसी भी प्रकार के संकुचित विचारों में उत्पन्न हैं। देश में सर्वत्र शांति रहे, वहाँ हिन्द, और भारतीय का आधारी रूपों न ही, यह ध्यान रखना और इनके लिये कोशिश करना हर नागरिक का कर्तव्य है और इसलिए हर व्यक्ति को, अपने-अपने हितों के धारण में ही नहीं, शांति बनाये रखने का जिम्मा उठाना चाहिए। मुसलमान लोग अधिकांश स्थानों में अल्पसंख्यक हैं। वे अपनी निज की सुरक्षा के लिए संकुचित विचार से देखे, तब भी वास्तविकता के सामने पूरे दिल और पूरी सतर्कता के साथ दिखा देना उनके लिये आवश्यक है। यह खैर की बात है कि विश्व प्रकार देश के सामान्य जीवन से मुसलमान आब एक तरह से अलग हैं, उन्हीं तरह वास्तविकता आन्दोलनों के साथ भी उनका संबंध नगण्य है।

हम अग्रसर करते हैं कि दिल्ली में होने वाला मुस्लिम-सम्मेलन उत्तर भारतीय बड़े मुस्लिमों की सातों पर गहराई में विचार करेगा और सम्मेलन में भाग लेने वाले नेता दूरदर्शिता से काम लेंगे। इन सुनिश्चित बातों की ओर मुस्लिम जनता का ध्यान आकर्षित करेंगे।

केवल रूषि के विनाश का उद्देश्य पर्याप्त नहीं है। मेरी ऐसी मान्यता है कि ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था की बढ़ती हुई गरीबी, जिसमें जापानी का पचासी प्रतिशत निवास करता है, मुख्यतः गैर-रूपि उत्पादनों के क्रमिक विनाश के कारण है तथा इसके कारण ही लोगों का सार्वजनिक पवन हुआ है, जिसके फलस्वरूप रूषि का ही हास हुआ है। एकमात्र रूषि मानव जीवन का अविनाश नहीं हो सकती। मानव जीवन उसी समय पहावित होय जब तक का सम्पूर्ण क्रमिक प्रसार के औद्योगिक कोशलों से हो गया वह साम्यपरवर्ती संघर्ष नगरीयों से छाये हुए सार्वजनिक प्रभावों से अनुपस्थित होता रहे।

आधुनिक उद्योग औद्योगिक रूप से निराले क्षेत्रों में फैलने लगे जा रहे हैं। यह ही कल्पना के दूरों को प्रेरणा प्रदान है। वहीं पर पहले से ही अर्थिक-रूप से अर्थिक उद्योग हैं, वहाँ पर नये उद्योगों को रोचना अस्मान जान पड़ता है। यह प्रयोग करे अलग में दिखाई पड़ती है। इन्फ्लेड में उन सारे उद्योगों को छोड़ कर जो स्थान विशेष से उत्पन्न हैं, जिनके लिये स्थान विशेष पर ही रहने में सुविधा है, सभी उद्योग उद्यम में स्थापित हैं। इसका परिणाम यह हुआ है कि औद्योगिक शक्ति का सा गरीबी अर्थिक उद्यम के आसपास रेंप गया है, जिससे उद्यम विस्तार को मील के घेरे में दो गया है। अमेरिका में तीन हज़ार केन्द्र बढ़ते हुए दिखाई दे रहे हैं, जिनको एक नया नाम "मैगनेटोपॉलिस" दिया गया है। एक पूर्वी सड़ती तट पर जो वाणिज्य के सेक्टर तक फैला हुआ है, दूसरा सिन्धुओं के

[२] दूरों की जो उन्नत ही लक्ष्य के लिए नगरीयों में कुछ उन्नत आकार हो, जिससे निवास अपने अतिरिक्त अर्थ में बढ़ते नगरीय पदार्थों और केन्द्र अपनी अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति देना पड़ेगी है। इसका अर्थ यह है कि गाँव जो जनसंख्या नगरीयों के दबाव में कम हो। वेदा कि इंग्लैण्ड, अमेरिका या बर्मी में है। अन्यथा अन्न का व्यापक नियंत्रण-व्यवस्था हो। और वृत्ति उत्पन्न परिस्थितियों निरले ही उपलब्ध होती है, इसलिए

यह एक सामान्य नियम है। ग्रामीण समुदाय उन्नी समय समुदाय हो सकते हैं, जब कि वे गैर-रूपि उत्पादन करें, ताकि बड़े हुए अन्न को शहरीयों में बहलने के कारण, उनकी उन्मोचन सामर्थियों की बकरतें नहीं पूरी हो सकें।

अगर उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान पर लागू किया जाय तो यह तरह ही जाता है कि जब तक औद्योगिक रूप से विकसित क्षेत्रों के बाहर, गैर-रूपि उत्पादनों को सारे ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था में बढ़ावा नहीं दिया जाय, तब तक भारतीय के ८५ प्रतिशत लोगों के लिए एक सार्वजनिक जीवन-रक्षा की भी उन्मोचन नहीं की जा सकती। इसका कारण यह है कि [२] भारतीय की जो उन्नत अर्थिक व्यवस्था नहीं है और न अधिक होने की सम्भावना ही है; क्योंकि जमीन और अर्थिक का अन्तगत अक्षुब्ध नहीं है। [२] गाँवों और शहरों की आजादी में, देश समानुवृत्त है कि यदि किसान अधिक से अधिक अतिरिक्त अन्न बढ़ाते हैं तथा वे तथा केन्द्रों से बहलने के लिए तथा सके तो भी नगरीयों के बाजार दमने बढ़े नहीं होंगे कि सभी किसानों को उन्नी सार्वजनिक शक्ति होगी।

ग्रामीण औद्योगिक रूप से विकसित क्षेत्रों में तेजी से औद्योगिक विचारों-कारण एक प्रतीत होगा है कि "ग्रामीण अर्थ" में इन्फ्लेड रही है तथा कि भारत के ८५ प्रतिशत लोगों के लिए उन्नी उत्पन्न-रक्षा पीदा है, क्योंकि हर तरह के विचारों के भारत ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था के

आश्वास और तीव्र अर्थ-व्यवस्था में केन्द्रित है। मेक्सिको में आयोजनों (खानदों) का ही शोध हुआ है कि अतिरिक्त "निर्वाह" अपने आप मेक्सिको नगर से मील का उन्नी सार्थी और हो रहे हैं; जब कि गैर-रूपि उत्पादन बढ़ते जा रहे हैं। इस तरह के विचार धनी मुद्दों पर अक्षुब्ध हैं। परन्तु यही देशों के अर्थिक क्षेत्रों के लिए तो ये निहायत-सम्पत्तियों हैं। यह बात स्पष्ट रूप से समझ लेनी चाहिये कि किसी विशेष परिस्थितियों में ही किसी बड़े समझ के लोग वृत्ति पर निर्भर रह कर अच्छी तरह जीवन-रक्षा कर सकते हैं।

[२] बार कि इति भी फैदावर प्रतिष्ठा कि वृत्त अर्थिक हो, जो प्रायः सम्भव है, अतः तब ही भारतीय और जमीन का अन्तगत बहुत उन्नी न हो।

नया मोड़ : लक्ष्य, दिशा और योजना : ३

पीरेन्द्र मजूमदार

सन् १९४४ में गांधीजी जब चरखा-संग्रह का नव-संस्करण करना चाहते थे, तो उन्होंने स्वावलम्बन को बिलोको अपनाते का संकेत किया था। उन्होंने कहा कि चरखा-संग्रह के कार्यक्रमों देहातो में जाकर बँटें, ग्रामीण जन से एकत्र हों। गाँव के अन्दर ही अपने पुरापर्यंत तथा जनता के प्रेम के सहारे अपना गुजारा करे और समग्र ग्राम-संवाह द्वारा ग्राम-राजिनी को इकाई कायम करे। सप्टिकल से चरखा-संग्रह तक के गुजारे को लिए कुछ दिन तक प्रले हो आर्थिक सहायता करे। जो लोग उन दिनों की चर्चाओं में शामिल थे, उन्हें मालूम है कि कल्पना यही थी कि प्रत्येक यह इकाई निवसित होकर तादी-ग्रामोद्योग, नई तालीम आदि कार्यक्रमों को अपने ऊपर उठा लें और चरखा-संग्रह जैसी संस्थाएं मुख्य हो जायें। उनके संयोजन में भी विवेकीकरण की कल्पना थी थी, लेकिन अब वह जिला इकाई तक भी। इतना जल्दी भी है, क्योंकि ग्राम-स्तर की इकाइयों का उद्भव तथा संगठन जिला-स्तर के कार्यक्रमों ही कर सकते हैं। प्रांतीयता या अखिल भारतीय केन्द्र से वह काम नहीं हो सकता, क्योंकि उनका सम्पर्क देहातो से नहीं रहता है।

गांधीजी के निपटन के बाद १९४८ में अखिल भारत चरखा-संग्रह के चरखा-संग्रह के अमल का संकल्प किया तो उन्होंने भी करीब-न करीब इसी दिशा की बात कही। दो साल तक वे प्रयाणों के विवेकीकरण के प्रयाण में लगे रहे। फिर १९५० के प्रारम्भ में बिल्हे-स्तर तक विवेकीकरण कर जब ग्राम इकाई बनाने पर ध्यान दिया गया तो दोनों रस्तों को अपनाते जा निरवय किया। गांधीजी के चले जाने के बाद चरखा-संग्रह प्रस्ताव में जो निराशा छापी हुई थी, उसको देखते हुए दिया में यह पकड़ बनाना व्यावहारिक लगा, क्योंकि गांधीजी के व्यक्तिगत प्रचार से ही नववयान स्वावलम्बन का संकल्प उभरना भी है और बैठ सकते थे, इस समय उभरने वाले थे परिस्थिति ऐसी नहीं थी। अतएव चरखा-संग्रह के विवेकीकरण की दिशा तथा इकाई-मण्डल प्रकृति से स्वावलम्बन की दिशा, दोनों को अपनाते जा निरवय किया और उच्च समय की परिस्थिति के अनुसार काम आगे बढ़ा। आज जब फिर से नये मोड़ की बात कही जा रही है, तो आज की परिस्थिति में जो पकड़ बना रहा है, उसको ध्यान में रख कर ही नया संयोजन करने की जरूरत है। सन् १९५० में विवेकीकरण प्रकृति से सही ढंग पर ग्राम-स्तरों अपनाते भी परिस्थिति आज से अधिक अनुकूल थी और स्वावलम्बन-प्रकृति से ग्राम-इकाईयों को खड़ा करने के काम के लिए सन् १९५० के आज की परिस्थिति अधिक अनुकूल है। सन् १९५० में चरखा-संग्रह की संकल्पना की दिशा में उतना प्रयत्न नहीं हो पाया था। उस समय आजादी के लिए युवाजी सेवा की परम्परा देहातो में कुछ बाधी थी। विवेकीकरण के काम को निरवार से अपनाते के लिए शोग देहातो में मिलते थे। अतः सही निरवय का उच्च समय इतना अभाव नहीं था, जितना आज है। आज देहातो में जो कुछ भी बर्तमान शोग सब हुए हैं, वे पचासीवी शोग के होकर के बाला तथा पिता-योजना की इकाईयों के कारण युवाजी भावनाओं को लो लुके हैं। गाँव में स्वार्थ, ईर्ष्या और होशियारी भरपूर हो गयी है।

इस समय जैसे ही हम विवेकीकरण की बात करे कर अपने काम को सीपने जते हैं, इसी प्रकार के शोग धामने आते हैं, क्योंकि इस सीपने की प्रक्रिया में स्वामि की प्रेरणा से आर्थिक दृष्टि की दृष्टि की प्रेरणा अर्थात् मिलती है। १९५० के मुकाबले में विवेकीकरण के लिये यह परिस्थिति मिलती है। दूसरी तरफ विवेकीकरण द्वारा प्रवृत्त भूदान आन्दोलन के फलस्वरूप आज गाँव में स्वयंस्वयं का नई प्रेरणा उत्पन्न हुई है। ग्राम-स्तर के फलस्वरूप ग्राम-स्तर-संग्रह का नया विचार तथा नया संकल्प विकसित हुआ है। स्वावलम्बन प्रकृति से विकसित के लिए १९५० के मुकाबले में यह परिस्थिति अधिक अनुकूल है। अतएव अगर हम फिर से चरखा-संग्रह का संकल्प करते हैं, तो अंगन की परिस्थिति में तात्त्विक और व्यावहारिक, दोनों दृष्टियों से सही कदम चली होगा कि हम विवेकीकरण की दिशा को छोड़ कर स्वावलम्बन की दिशा को अपनायें।

अब प्रश्न यह है कि अपने लक्ष्य की पूर्ति में स्वावलम्बन की दिशा का संयोजन किस तरह हो, जिससे निरपेक्ष स्वयं-इकाईयों का विकास हो सके।

पहली बात यह है कि हमारे प्रचार की दिशा विवेकीकरण न होकर स्वावलम्बन की होनी चाहिये। हम यह न भ्रम है कि

के लोभ में से ही ग्राम-स्तर-संग्रह के संगठन का ग्रामन प्राप्त करना होगा। इसके लिये मुख्यतः दो शोषः एक विवेकीकरण होगी और दूसरी सामाजिक प्रक्रिया। विवेकीकरण में स्वावलम्बन का संगठन और सामाजिक प्रक्रिया में स्वामी या प्रमोडोरा का संगठन करना होगा। स्वावलम्बन-योजना के बारे में चर्चा-संग्रहों में चर्चा-संग्रह अथ तक तरह हो चुकी है। चर्चा-संग्रह या ग्राम-संग्रह के लिये गाँव में ग्राम-स्तर-संग्रह के निर्माण के प्रचार करने की जरूरत है। इस निर्माण के लिये स्वयं-संग्रह के रूप में जो एक एक मन अनजान में से एक सेर का दान करे। दाता पिता और मजदूर, दोनों हैं। किसान अपनी भूमि से प्राप्त अन्न का हिस्सा देने और मजदूर मजदूरी से प्राप्त अन्न का हिस्सा। नगर मजदूरी वालों को एक रुपये में से एक पुराना पैसा देना चाहिये। इस प्रकार स्वावलम्बन का धर्मोत्तरे से ग्राम-निर्माण की बुनियादी कोष का संग्रह होगा चाहे सामाजिक प्रक्रिया में ऐसा भी कोई कार्यक्रम उठाना चाहिये, बिल्हे सामाजिकों में सामाजिक प्रवृत्त का विकास हो।

ग्राम के निर्माण में धनवान का संगठन इसके लिए जरूरत व उत्प्रेषक कार्यक्रम है। कार्यकर्ताओं की ग्राम-स्तर-संग्रह के वातावरण-निर्माण के लिये स्वयं व परस्पर की साधना में उत्प्रेषक कार्यकर्ता के साथ एक गहराई का कार्यक्रम भी उठाना चाहिये और वह प्रचार का कार्यक्रम है। यह एक शीघ्र में एक बहुधा बर्तमान भावने का है।

इस प्रकार के व्यापक अभियान के फलस्वरूप जितनी इकाईयों में कुछ ठोस नतीजा मिलेगा, प्रारम्भ में उन्हीं इकाईयों को आगे के सर्वांगीण विकास के लक्ष्य-संग्रह कार्यक्रम चलेने के लिए प्रेरणा चाहिये और उनकी संख्या बढ़ाने के लिए चर्चा-इकाईयों में फोडित चलेनी देनी चाहिये। दो संकल्प है कि यह प्रक्रिया में शुरू में जितनी इकाईयों का हम संगठन करना चाहते हैं उससे कम इकाईयों मिलें। लेकिन उसके लिये कार्यकर्ताओं को पचासवें की जरूरत नहीं है।

हाएक पैर का एक स्वयं-संग्रह है। निर्माण-कार्य का यह स्वयं-संग्रह ही उसकी बुनियाद को जितना समर्थन होगा कर

स्थापनाओं को विवेकीकरण करके ग्राम-इकाईयों के रूप में लौटना है। हमें यह करना चाहिये कि ग्राम-इकाईयों को विकसित करके उनके लक्ष्य-ग्राम-स्तर-संग्रह की सारी प्रवृत्तियों का संगठन तथा विकास करना है। इसके लक्ष्य-संग्रह के लिए प्रथमतः बहुत अच्छी तरह दुर्कें। देश भर में ग्राम-स्तर-संग्रह की घोषणा का अभियान सही दिशा में एक महत्पूर्ण कदम हुआ है। इसके लक्ष्य-संग्रह के लिये, उसी छोटे से हमें आगे बढ़ना चाहिये। अब देश के जो स्वावलम्बन केन्द्र हैं, उनको ग्राम-स्तर-संग्रह की घोषणा के अमल के लिए प्रयास रूप से ग्राम-स्तर-संग्रह-समितिओं का संगठन करना चाहिये। ऐसे संगठन के लिये लक्ष्यों निर्धारित नहीं करना चाहिये। हम दूसरी इकाईयों का संग्रह करके, इस लक्ष्य-निर्धारण स्वावलम्बन-प्रकृति का स्वयं नहीं है। यह प्रक्रिया विवेकीकरण की है। विवेकीकरण की योजना में स्वयं-संग्रह निर्धारित करना व्यावहारिक हो जात है, क्योंकि उसका अभिप्रेत व कर्तव्य केन्द्र की जरूरत से होता है। स्वावलम्बन प्रकृति में इकाईयों की संख्या का निर्धारण नहीं हो सकता, क्योंकि उन्हीं इकाईयों निर्धारित नहीं हो सकती हैं। उसे स्वयं-निर्धारण की जरूरत नहीं है। इसलिए उसका कोई कार्यक्रम नहीं बन सकता। मान

- (१) प्रवृत्तः गाँव के जंत वषा दिने प्राये, उसके कोरी से कर चले आदि समसामर्थों के लिये प्रयास कर का संगठन। यह संगठन पीरे-पीरे गाँव को साहित्य-रसा के लिये, साहित्य-संग्रह का काम कर लेंगे।
 - (२) घोषणा: प्रवृत्त तथा सार बनाने का कार्यक्रम सेठी-सुधार के लिये निर्माण की कार्यशाला तथा बहस-बातचीतकार्यक्रम और श्रावणोत्सव का संकल्प।
 - (३) जितना: दार्शनिक-संगठन, साक्षात्कार आदि का कार्यक्रम। ग्राम-स्तर, बहिला समिति, बाला सला यादिका संगठन।
- अब संकल्प यह है कि उपरोक्त कार्य-क्रमों के लिये प्रारम्भिक साधनों की प्राप्ति किस आधार पर हो। यह वैयक्तिक अभिप्रेत के आधार से हो या निरपेक्ष जन-सहित के आधार से हो। युवाजी में शक्ति के शोध हो है: अथ का या शक्ति का। वैयक्तिक शक्ति का आधार अथ का है और शक्ति का चरमा स्वयं और प्रेम से विकसित है। अतः अगर वैयक्तिक-सहित शक्ति का अभिप्रेत यह है तो हमें स्वयं और प्रेम

क्या 'आत्म-समर्पण' एक नाटक-मात्र था ?

काशिनाराय त्रिवेदी

"चन्दल घाटी में डाकुओं का आत्म-समर्पण इस वर्ष की एक ऐतिहासिक और अपूर्व घटना है। डाकुओं की समस्या को सुधारने और सुप्रबन्ध को सामान्य समस्या मानना धीरे-धीरे अज्ञान और अविवेक है। उसका समाधान नैतिक साधनों से ही हो सकता है। जिन्हें हम समाज-द्रोही और दुष्ट मानते हैं, उन पर भी सद्भावना और सज्जनता का बीजा प्रभाव पड़ सकता है, इसका यह एक उम्मेदवर्क उदाहरण है। अन्धराध और पाप के प्रतिबन्धों के एक उदार और अहिंसात्मक पद्धति का संकेत हमें चन्दल के उदाहरण में मिलता है।"

[येदर्थें सर्वोदय सम्बन्ध के निवेदन से]

८ मई, '६१ की 'नई दुनिया' में प्रेस-ट्रस्ट आफ इण्डिया द्वारा प्रसारित एक संवाद पढ़ने को मिला। ७ मई को रायपुर में मध्य प्रदेश के कार्यवाहक आई० सी० पी० भी इन्टरवीव सिद्ध जोहर ने एक पत्रकार-परिपत्र में गिराव-क्षेत्र की डाकु-समस्या पर अपने विचार प्रकट करते हुए यह कहा बताया जाता है कि "धर्म के दान-वीर्य क्षेत्रों की हाल ही की घटनाएँ यह प्रकट नहीं करती कि शत वर्षों का धर्म विनोद भाषे की इस क्षेत्र की यात्रा का डाकुओं पर कोई प्रभाव पड़ा है।" पत्रकारों से श्री जोहर ने यह भी कहा बताया जाता है कि "अब इस बात की पुष्टि हो चुकी है कि डा. मानसिंह के लड़के वही सोलहर सिंह के प्राण बचाने के लिए डाकुओं से आर्षावें भागे के सामने आत्म-समर्पण किया था। भारत में मानसिंह की पत्नी ने अपने पति के विरोध के कारण डाकुओं से आत्म-समर्पण के लिए कहा था, ताकि उसके पुत्र के प्राण बचाये जा सकें।

मध्य प्रदेश के बान्साहक आई० सी० पी० भी इन्टरवीव सिद्ध जोहर ने ७ मई को पत्रकारों के सामने जो कुछ कहा है, अगर यह सच है, तो उसके एक बार फिर यह सिद्ध हुआ है कि मध्य प्रदेश का शासन और उसके विभिन्न अधिकारी मानव-जीवन के शासन और स्वस्थ नस्लों के प्रति विवशनी हीन मानना रखते हैं और विचि तदा अक्षय की स्व और स्वतः की अक्षय का चोला खताना में अपनी मनी-गत्रा मात्र रह रहे हैं। मानव समाज में शासकीय मूल्यों के भिन्न कोई मानवीय मूल्य भी अपना अस्तित्व रखते हैं और ये शासकीय मूल्यों से नहीं काटिफ मानव होते हैं, हड़का धोना भी अत हमारे राज्य के पुलिस-अधिकारियों को और शासन की दृष्टि-नृषि का निर्धारण करने वाले हमारे मंत्रित्ववर्ग को होता, तो मानवी मूल्यों का धीरे-धीरे अक्षय करने वाले ऐसे ब्यापन उनको एक के को की निष्क ही न पाते। निष्क आज हमारा दुर्भाग्य यह है कि कदने की हम अपने देश में लोकतन्त्रात्मक शासन चला रहे हैं, पर अक्षय में यह शासन न हो-सामतात्मक है और न उसके पेटे जीवन का कोर रख्य मान ही है। स्वतंत्र-नीचर-सहरी शासन व्यवस्था पर हानी है।

हमारे धार्मिक आई० सी० पी० मले यह आई० सी० पी० के चम्बर-घाटी क्षेत्र में निजोह की पदचक्रा का उल्लेख के डाकु-समाज पर कोई शास्त्री प्रभाव नहीं पड़ा और मले ने यह भी कहे का दुस्ता-हव चर्च कि उन क्षेत्र में निजोह डाकुओं ने निजोह की के संभूद अपने दृष्टियाँ रहित आत्म-समर्पण किया था, वह महज एक नाटक था, बिना धर-सत्त्वता डाकु मानसिंह की पत्नी ने अपने पुत्र तभी-ही-दर 'हि की बचाने के लिए किया था और भले ही यह समय ही कि कानूनी

शासनी के बीच इन नाटक के पक्ष में ऐसे कोई प्रमाण भी इच्छते हुए ही और उनको प्यार में रख कर ही हमारे धार्मिक आई० सी० पी० ने अपना यह मान लिया है, फिर भी हमें यह कहे हुए अक्षय नहीं होता कि आत्म-समर्पण का यह नाटक भी अपने आप में ही इस बात की मानवता के लिए एक ज्ञान प्रमाण था और लोक-दृष्टय में से उदा प्रमाण की पापता की मिदना अत्र त्रिही के वष की बात नहीं रही है। कोई भी विचारशील व्यक्ति इन बात से इन्कार नहीं कर सकता। विन अधिकारियों को आज आत्म-समर्पण का यह प्रमाण महज एक 'मादक' मान्य होता है, उनके इस दुनिया से निरा हो जाने के बाद बहुत समय है कि ही दो को क्यों के परचाल उठाई के वचन इस प्रयोग की पाप मात्रा, मानवता, समृद्ध और लोकतन्त्रात्मक-प्रतिता से प्रभावित होकर इसके गुण माते हुए फनी न अचान। महान् घटनाओं का टीक मूल्यांकन सुद बुद्धि से और आण्ट-दृष्टि से न कभी हुआ है और न हो सकता है।

मानव हर छोटे बड़े प्रमाण पर गांधीजी के नाम राम और उनके जीवन-विदाओं की उदाहरण देता खला है, निष्क स्व उसे गांधीजी के छोले पर चलने को कहा जाता है, तो वह निर्लेख भाव से गल्ले-झोले लगाता है और मात्रा प्रभाव की बहने-बाजियों करके यह सिद्ध करता है कि गांधीजी के प्रति और उचित और अक्षय के प्रति उसकी निष्ठा विवशनी उखली और छिपती है! यदि हमारे शासन के मजि-मडल में गांधीजी के जीवन-मूल्यों को प्रसन्ने की भी होती तब तक और भावना होती, और उन जीवन-मूल्यों के प्रति सदा आ-रक्षक रह कर शासन में और समाज में उन्दे बर्तिष्ठ करने की उखरी उख

आकाश देती, तो क्या डाकु-क्षेत्र में और क्या शासन के लिये लोकजीवन के अन्य क्षेत्रों में आज विचि तदा ही अक्षयता और अनास्था आज पाई जाती है, यह बतानी न पाई जाती। गांधीजी ने देश के लिए निष्क रचना का यत्न देता था, उस स्वतन्त्रता के रक्षण पर आज देश के शासन में और लोकजीवन में व्यतिरिक्त, दलों और वक्ताधीन की स्वच्छता का ही शोचाला दिशाएँ पठाई है। जीवन के और अक्षय के शोध पर आज शासन के और लोकजीवन के विभिन्न क्षेत्रों में निष्क निर्लेख और निरक्षय दुर्लभ-वहार हो रहा है, उसके फलाल देश की मानवता का शरण परिधि ही अक्षयप्रमाण होता का रहा है। ऐसी विधि परिधिपति में शासन और समाज के सामने जीवन के उदात्त मूल्यों की पुन्य-प्राप्ति करनी बाले निजोह-मैले महान् ज्योतिर्वर्ष के अक्षय का संसा-द करने और उसके लो प्रेरण महज करने के बरले स्व हमारा शासन-वर्षी जननी नीच पर ही हमल करने की उखल हो जाता है, तो करता अक्षय से एक लोदी आह दिखलही है, अन गहरी खया से पर जाता है और मनुष्य की दुस्ता के इष्ट दर्शन से रिशर हो उखला है। अपने स्वार्थ, अपने पद-अधिकार, अपनी प्रतिष्ठा और अपनी स्वतः के मद में पूर होकर मनुष्य व्याज तक न जाने विरले निष्क अपने की लोदि करता चल जाता है। क्या विमान अक्षयता में भी मनुष्य-चर अक्षय ही सुदुर्लभ और पारलता से उखर उखर को छोडने और जीने की कोई श्रेष्ठ कर्म मिलेगी ही नहीं!

मध्य प्रदेश की और भारतवर्ष की कला का यह भारी दुर्भाग्य ही है कि अपनी स्वच्छता के फल में उखरी मानवता की सुशोभित और प्रतीता करने वाले संत पुष्यों की निर्णय, निष्कल और स्वतः सेवा का लोदी मूल्यांकन करने में समाज और शासन के बन्धन लोग इस लोदी स्वच्छता में और सारी दुनिया के सामने अपने को हीन और हाथशरद बनाते हैं।

कैला कि तेद्वेन सर्वोदय सम्बन्ध के निवेदन में कहा मय है, "डाकुओं की समस्या को सुधारने और सुप्रबन्ध की सामान्य समस्या मानना अज्ञान और अविवेक है", यदि इस समस्या

का इस तद हल करना हमल होता, तो मिले लो-लो को बने के विभिन्न शासनों द्वारा किये गये सन्-उत्पन्न स्वस्थनी प्रकृतों और क्षेत्रों के यह समस्त फली की तद हो चुकी होगी। निष्क हम सच अच्छी तद जानते हैं कि देशों का स्वयं करने और शैली, हानी की बलि देने का मानव-संहार के उभने-उभ अक्षय शासनी और शासनों का अज्ञान-उपयोग करने रहने पर भी आज तद स्व-समस्त का कोई समाधान प्रस्तुत नहीं हो सकता है। उल्लेख हावत और हाविकत यह है कि निजोह क्षेत्र में का इमान करते मने-मैले गैले यह घटने के और भिदने के लो-बहुता क्या और नावा करों में अक्षय प्रसार से प्रकट होता गया। कुछ डाकु भी का डाकुओं के कुछ छोटे-बड़े मले मिले की जान। मार कर, पत्रक पर लेम में खल कर का पीनी पर लटका कर अक्षय कोई यह समस्ता है कि उसके शास में डाकु-समस्या के हल का कोई सच आ-गाथा है, तो हमारे पचाल में उभने-वेन-जद मूड और आत्मप्रवचन-वर्षी दुष्ट को ही ही नहीं मानता। विचि तदा यह से सने हाथों की लुट से धोना समस्त नहीं है, उसी तरह डाकुओं की अक्षय स्वार्थों की सुल्लि और पीन की वेष बही जाने बाली हल्यार्थों द्वारा समाज नहीं विधा-जा सकता। अगर हमारा यह सच लोदी है, और हम मानते हैं, तो हमें यह करने में बरा भी सकोच नहीं होता कि मध्य प्रदेश के अक्षि-मजल से, उनके सुल्लि-विमान ने और मध्य प्रदेश के जगदक्ष नागरिकों ने निजोह के समुल्ल दुष्ट डाकुओं के आल समरण की नैतिक और और आस्थात्मक महत्त्व को बनेल, अक्षय-गणना और टीका करने न वेवल अपनी स्वच्छता का परिचय दिया है, तबि एक बहुत बड़ा मानव-द्रोह और समाज-द्रोह भी किया है और एक मानव-समर्पण की गति को सुदृष्टि करते अपने ही पेट पर कुहादी मारी है। इन बातों हैं कि देश प्रचल पर प्राय में एक बार अन कर लुदी चर्चा हो जाय और अधिकारियों द्वारा स्वयं-अक्षय को बुद्धि-भ्रम खलने का प्रयास होता है, उनके मूड को ही बन्द दिया जाता। कोई भी स्वच्छता और स्वच्छता नागरिक उदात्त भव है निजोह के अक्षयों की ऐसी हीनतापूर्ण अवगमना और टीका को सदन नहीं कर सकता। इन बातों हैं कि मल और देश के बन्धन और स्वदुष्ट नागरिक मानवता को सुनीती देने वाले इस प्रवर्ग के प्रति जागरूक हो और उनके निरक्षण में अपनी सारी प्राम-प्रतिक्रिया लवें करें।

रहा है और मनुष्य के सामने विपश्यन पैदा कर रहा है कि या तो मुलाम बनो या मन पर काबू पाओ। जैसे टट में डिट्टेने वाला आदमी मिल्कल आलमी हो, तो भी पर छोड़ कर चंद्र निरचल है, क्योंकि पाहूर घूष है। नती तो वह अंतर ही रहता। आलमी मनुष्य पूर एगने पर नडेग, सामन प्रडेगण—भूल ने उले लखार निया। भगवान ने उन पर बल-तार निया। गने भगवान ने भूर बर रूप लिया और नाम करवाया। तो हम जग्मे में मन पर काबू गये निन चरान नहीं। कमी-कमी लोग हमके मरते है कि यह हमने नहीं आशय बनाया, यहाँ जंगल था तो संसे कडिया, जमीन उर-रुजग था, उले अफ्रीकी बनानी, मिडिग प्रेस बनाया, कागज बनाया। बड़े योग, कम-रिम में ऐसे परामन तो उन्होंने कितने ही विणे है—हवार-हवार मील कचे जंगल तोड़े है, हमनी उँके-उँके मकान बनवाये है—दुमलिके हम भी ऐसा बनाये तो पीने पंते। हम एव बताये कि भारत में हमने देला कम मवादा है कि उन पर कितो का हसन ही नहीं बकता।

हम तख मन बनाने के लिये हमें ईंधन या लारुन भरेकना। हम आदमी भी हैं और बड भी हैं, हमलिये हमें जो धरेकना उले कर्षक हीगी और फलेकने में देती हीगी, केकन यह हमें भरेकना जरूर।

नॉर्ष लखारदुप में अशम के प्रमुख कार्यकर्ता इकट्ठे हुए हैं। वार परिषद का भी बौर चला है। एक दिन कांठलांओके भिनोवाजी ने कहा: "अशम के ४ जिले तलन करके हमने हर पौंचवे जिले में प्रवेच निया है। वार जिले में आपकी अशम हो गया। अगर पौंचवे जिले में आपनी परीक्षा हीगी। तो महीने में कानी अनुसूच जातागण वैदा हुआ है। पर तख काम नहीं बना है। बूझा गलत होने में उरा समय छाया है। एक बार तुलगा तो सध बर परिणाम होता है। निहार में, ओरीशा में, महाराष्ट्र में, कमिलनाड में यही हुआ। एक जिले में बौर चला तो बरि प्रस पर अरठ होल गया। केकिन उल जिले में बौर लखने के शुरू में थोडा कम चल जात है। थोडे दिन जिले में आप नोरीष कीजिये और देखिये। हमारा 'बाउरल' करो या 'पकनी', हम तैयार है। बालन का बर मत छोड़ो। मैगरेलियन ने आरिगया पर कलश करने के लिये आलस परंत को लाने का तप किया। उसके पहले कडिनी में यह रास्ता नहीं लिया था। उसके हवारों केमन नही। पर एक बार उलेने आलस परंत को लंपा और आरिडिय एडरुम उलेके हाप में आया। कैके वारि में हम यहाँ पतह हासिल करते है, तो मारे प्रात में पयह हीगी।"

दल-बालू दिन हो गये बख्त ना दर्शन नहीं हो रहा है। दिन में और रात में या तो बरिग होती है या तो आनख बरिणे में मेघ के ब्यास रहता है। मीनों की सहायता में नहाते हुए वेन बालू हो

रही है। उकर वे बर्षा ना खान और नीचे कीचट। कीचट में चलेक समर हर कदम पर आसानी रखती पजती है, लाकि जहाँ परे न मिलते। एक दिन तो इतना कीचट और देसी पिलले वापी पगपंडी की कि चलेकेचलेके बर सांघियों ने पखती को प्रेमप्रिगन दिया, या प्रथम किया। भिनोवाजी कहते है, "दुन दिनो हमारी बाबा बुतु आनन्द में हो रही है। उकर वे बर्षा की धार और जमीन पर ब्यामखन की घारा बर रही है।" "कीचट में पाजने के पौन को मालिय होतो है", ऐला उजना कहता है। भक को दर चीज में प्रगु ना दर्शन होता है।

इसलिये वारिष की सहाय धारा में भी उजको ईंधन का सदा महगुण होता है। एक दिन सन्तान-मय बर जोदर

वारिष हो रही थी और जोदर हवा चल रही थी, ललटेन के प्रथम में वापी भिनोवाजी के लरिषा के पाव डेते थे। वार हवा के साथ वेद बेरोते थे हम रहे थे और अदर वेद-यंत्र का पाठ हो रहा था। लारुन, रस-यंत्र—बौर बेरे से ताटी बकती थी—

बलन हनु रंखो
श्रीय हनु रंखो।
वापिभ्यु चरतो हेमनः
शिशिर हनु रंखः।
"बल रमणीय है, श्रीय रमणीय है, वार, उदर, हेमन, शिशिर, नर रमणीय है।"
बहर भूतलभार बर्षा, अंदर भक्ति की धारा की बर्षा, तृषाभय वरिडुओ का रगलत बालगवचन ले हो रहा था।

भारतीय संस्कृति का स्वरूप

नानाभाई भट्ट

[देश के सुप्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री और मुजरात के बयोबुद्ध कोसलेके की मानाप्रसिद्ध भट्ट से 'बृहदायक' के पाठक परिचित हूँ ही। पिछले साल उनके जीवन के ८० वर्ष पूर्ण होने पर उनका सांस्कृतिक अभिनंदन भी किया गया था। हाल में 'धारावाही पद्यों पद्यों' नाम के एक पुस्तक प्रकाशित हुई, जो प्रयोत्तर के रूप में है। साहित्यिक प्रमू मुजरात के प्रसिद्ध विचारक भी स्वामी आर्यभट्ट ने पुछे हैं और भी नानाभाई ने अपने बीमारों के विचारों पर बड़े-बड़े इन प्रश्नों के उत्तर लिखवाये हैं। हिन्दी में यह पुस्तक अखिल भारत सर्वे-सर्व-भरतवासी बकरी ही प्रकाशित करने बाला है। यहाँ उन पुस्तक से एक संक्षेप दिख का रहा है। —सं०]

प्रश्न : हम समझे यह है कि भारतीय संस्कृति प्रागप्रधान संस्कृति है और नगर तो भारतीय धरौर पर उठे हुए कुछ विने-बुने फोड़ो के समान है। इस विचार को थोड़े विस्तार से समझाये।

उत्तर : हमारी संस्कृति प्रागप्रधान संस्कृति है, ऐसा कहने के बादले यह कहना कथिक सही मान्य होवा है कि हमारी संस्कृति आर्यभय-अर्यभय संस्कृति है। भारत की संस्कृति का उद्गम हमारे श्वभि-मुनियों के आश्रमों में हुआ और उसी के मुख्य-मुक्त अंगों को हमारे देश के परिजातकों, धारपावों, उलके अनुयायियों, साधु-संतों और यही संस्कृति के रंग में रंगे हुए छोटे-बड़े बनेक स्त्री-मुदुधों ने डेट गीयों के जीवन तक फैलाया।

इस संस्कृति के पर-दो लक्षण विशेष रूप से गिनाये जा सकते हैं। उनमें पहला यह है कि इस संस्कृति का स्त भोग की और नहीं, बरिष सधम ही और था। यही कारण है कि वार पुष्पायों में से दो वैदिक पुष्पायों का—'अर्य' और 'धाम'—श्रा-शेवन कदा कर्म के बानीन बर कर जले की एक परम्पर हमारे देश में सजी हुई; और आज के उल ब्यामों में भी, जब कि हमारी संस्कृति कोशली-वी हो गयी है, हमारी आश बलन भोग की और धृष्ण की ही से देखती है और संथम अथवा स्वयं के लिए कथिक आर-पाव रखती है। संथम के स्त में श्वचित संस्कृति का यह अथ आज भी अपनी अविपयता में नहीं अपने गीतों में तो दिखारें पया है, किन्तु अनेक कारणों से हमारे धारों में अज हलका दर्शन दुर्लभ हो गया है।

'संस्कृति का देश ही दुसरा अंग हमारी देश भवना ही है कि हम सब एक भावना की ही संभव हैं और आरिष भगवान् की सेवा अकल में तो भगवान् के बलारों की ही सेवा यानी जमी चाहिए।

सच है कि आज बाल-मौत और लूत-अनुवृत्त के अलख बीध के नीचे यह भवना बुधि उलद रग गयी है; फिर भी गीतवाली के अलष के मधवार में सब प्रकार की मानकता हमें अपने गीतों में आज भी कडि ही दद उल देकने की मिलती है।

गीत की हद में से गुजले नाके शिबी भी अतिथि को गौर के लोय कमी भूला नहीं जाने देते। गीतों में आज भी हम यह देखते है कि विता में मने पर यो बालक भिषाकर दो योते है, उन्हें उजगी

मों के साथ गीत के निरट सफरी छपारलो ही हैं, पर यदि गीत में उले देते कोई सगे छपनी भी ही हुए, ते गीत के दुनरे लोय उले रोनीयों-वे लोय बर उजरा पालन-योग करते हैं और इते वे अजना धर्म धमवाते हैं।

आज भी गीत के लोय चरुतों पर पकियों को दाना गुजाने हैं और एक लख अरन-बने ही वे पकियों की गुनिया के लोय अपने लोयल्य का भिगव करते हैं, उले बनाये रहते हैं और रनी रीति से वे पकियों के प्रति अपनी आमीयता को बूनी चलेते हैं। आज भी गीतों में बड़े-बूतों की लार-गलाल का नाम देते बरि उलके द्वारा सन-गनुवृत्त किया जाता है। अज के इस अलख में भी गीतों के नार, तेले, गुनार, चमार अपने हुनार बर्षों का लख गीत को देते है और गीत की जनर भी अपनी बल्लक का एक अश अज ब्लादे के रूप में उठे देती है।

हम प्रकार परलर-वकलमन पर दिगी हुई अर्थ-व्यवस्था, पारसकिक मानक पर दिगी हुई सनास्कृत्यनवा और आरु की एकता पर राडे हुए मन्दिर, ठाडुवा औरि सब हमारी संस्कृति के गडे हुए अंग बने हैं, फिर भी उनमें प्राणों की केरें बलन मौजूद है। संस्कृति के इन अंगों को बगाना, हमने दली-दली भी लरिगी वैरा हो गयी है, उलके हुए करके संस्कृति के लख रूप को सामने लया और कलु के प्रमाह के अनुभव मने गुग के वो आ-बनक लखन है, उलके उजनी संस्कृति के साथ तुनकर उममें से भारत की नई संस्कृति को बला बनना, आज के मान-सेवक का काम है।

हम कल्येन की दुर्ति के लिए मलैक श्रावयेरक को मानत की प्राचीन मनुषि का 'बचन निराचरुंर कला बरिषि और उलके मूल में विदमान संस्कृति की आत्मा को अलवर रत कर मने हुए, के-विचारकर विज्ञान के हलारों की उले साथ रूष देना चाहिए।

यदि हमें यह सध करना है, तो हम देखने गीती को बने से अजह, देते ही मारी रहते है सधने। आज के गीतों में नवे प्राणों का सचार करने के लिए हमें अज्ञान, गरीबी, अनारुण्य और अरं-कारिता भारि को पैदानिक हडि के सहारे प्रकल उरुपयें द्वारा हलाना ही होगा।

नवयुग के मयणेकष का यही कर्तव्य है।

'संवोदय'
अंग्रेजी मासिक
संपादक : एन० रामस्वामी
वारिषक शुल्क : साडे चार रुपये
पता : सनोच-मुजरातमन, नंजीर
(अ. मा. सर्वे सेवा कष)
मुजरात-पठ, शुक्रवार, २ जून, '११

अर्थ-संग्रह का यह अभियान !



विहार की चिट्ठी

१५ जून से शुरू होने वाले अर्थ संग्रह सभ के प्रस्तावित छह सप्ताही अर्ध-सप्ताह-अभियान की कुछ प्रती प्थान देने कीय हैं।

इन विशेषताओं के कारण मैं मरुने के कुछ धर्म होने की शुभकच्छ है। उल्लेख योग्यता में कमी रह जाने, नवरी प्थान उल्लेख में जो पाणे और उम्मी की वाणी केन न (जिन्हे का भी प्थान है।

पहले ज्ञान को यह है कि वह अभियान समित्त अवधि का है। सिर्फ देह मरुने का यह वाक्य नहीं है। इमलिए उदाहरण में प्रथिवा छोड़ पूरी शक्ति और तस्वला से देह काभी को इस समय में प्थाना चाहिए। इस अवधि का, अर्थात् अर्थ-अर्थिक समय और हर शक्ति, कार्यकर्ता न सर्वोदय प्रयोग का पूरा हित विचार करे। इसके निमित्त और भी समय में समर्पण होना चाहिए। इसरी काय प्थान-ले-पुस्तक लेखों में पाठ इस काम में पूर्ववत् की हित कर अर्थात् में सात तौर से होनी चाहिए। इसमें सर्वप्रथम है, जो निष्ठाट बन भी शामिल है। किसी को छोड़ना नहीं है।

सोमरी बाट, अर्थात् नकल, अपने काम व कर्ण की जानकारी देना तथा प्रणवक विचार की शक्ति कार्यकर्ता में भी उल्लेख, लेखन मुद्रण काम अर्थात् सहायका मात करना होना चाहिए। इस अर्थात् में सर्वोदय अर्थ प्रणव है। प्रथम कालेन-अर्थ और लोक-विचार विज्ञान को जो, किया गया।

सौधी बात जो जिनान, इस अवधि में ही हित मिलने होने वाली पहली और आधुनिकी मुद्रण-काल में है, उसे समन्वय के साथ समर्थ देकर ले जाना, यह सर्वोदय का कार्य है। यदि कार्य माना जाना चाहिए। अर्थिक देह करने की इमानापूर्णा भी योग्य हो दे तो वह प्रमाणिक प्रणव करना चाहिए। इस करने को विवेक आधार व अर्थवादी, यह इस नये विवेक का यह भी प्रेम व हठवना से लेना चाहिए।

पौचवीं बात, हमने कुछ जन्म ही कहा है। निमित्त और निमित्त कुछ चला को लक्ष्य है, उदाहरण ३० ११(१) अर्थिक का, पत्रकारिता या कम अर्थिक अर्थ का चला। समर्थित को सफल है। किसी प्रमाण, किसी विचार की किसी व्यक्ति विचार के हिते अर्थात् दान ही कहा है, उदाहरणमा। भूमि निरसन के काम के किसी अनुकूलन का अर्थ प्रमाणनी भूदान की हिते अर्थिक सहायका या अनुकूलन का प्रमाणिका या निवार के हिते अनुकूलन का। यह वहा सहाय-नेहा का अर्थ, उल्लेख में से कुछ भी हो सकता है, इस प्रमाणों की ही सरता है। इस प्रमाण हर अभियान में जो कुछ विल प्रकार से और किस भी रूप में दिया जाय, वह देना चाहिए।

एक ही अर्थ का राजा की बात का भी यहाँ उल्लेख कर दिया जाय।

प्रथम उक्त सप्ताह है कि निमित्त मुद्रिक के विचारों के बाद यह सप्ताह दृष्ट है क्या है

उपरोक्त के अनुसार इस आशुचिन के सभ की प्रति अभी प्थान: नहीं कर एक रहे हैं। यह अभी दिवस हैं हमें मरुने करनी चाहिए।

सवाल यह है कि कुछ प्रमाणवादी व्यक्ति कुछ विशेष व्यक्ति के पाठ जानकर कुछ विशेष अर्थप्रद करें, क्या उल्लेख नाम चलाना जाय? क्या माना जाय कि निमित्त-मुद्रिक के विचारों के अनुसार पूरी तस्वीर नहीं देती, इसलिए वही करना ठीक है? बीच की अवधि में यह प्रमाण विचार अर्थ-अर्थिक से क्या निमित्त-मुद्रिक के विचार को वास्तविक करने के इस अर्थिक नकल मुद्रिके ?

अन्वय यह यह है कि निमित्त अर्थ-समय की एकत्र देह मरुने के अभियान में अर्थिक समर्थ कायक लगा कर रहे हैं, कम कम के पाठ शक्ति देकर मुद्रिकों, जो निमित्त-मुद्रिक के अर्थ और आधुनिकी विचार की अर्थ में जाने की अर्थिक अनुकूलन देना हीनी, परिष्कारित करने और परापूर्वक से ही दिव्यत मुद्रिकों, उनको हितकर दूर होनी।

निर यह प्थान में रता जाय कि जन्म में निमित्त जन्म भी शामिल है तथा एक कार्यपी की होणे में वही प्रमाणवादी कार्यकर्ता भी बाहर नहीं है, उधर उनके द्वारा भी इस अवधि में स्वयं शक्ति लगाये जाय। पर वही भी 'प्रारंभ दान महापुण्य' की जत ही सामने रहे।

दूसरी प्रमाण देह अभियान में संपन्न दान, सर्वोदय-पत्र, सहायक आदि बंदिता नहीं है। पहली मंथ को संपत्तिजन की भी मले ही हो। पर मात्र यही न ही और न वही भटना जाय। धीरे धीरे मुक्त व निमित्त को से निमित्त होना है। संपत्तिजन, सर्वोदय-पत्र आदि का आधार ही देना है, यह लेखों की साथ कहा जाय। हमारे हिते को साथ ही ले, लेख भी जाये कि उन्हें संपत्तिजन देना है, सर्वोदय-पत्र रखने हैं। पर यही को कुछ काम उल्लेख की और संपत्ति निमित्त होनी जो कुछ निमित्त व संपत्ति अर्थ-संग्रह के दारुने में उल्लेख जाने भी जो विचार की है, उससे मुक्त होना चाहिए।

उम्मी है, हर अभियान की यह अवधिगत वगैरे साफ होगी और इस सीमित अवधि का हर उदाहरण प्रयोगी द्वारा निमित्त-मन तथा ही जानत से उल्लेख विचार जायगा।

—पूण्यवर्द्ध जैन
काशी,
२५-५-६१

१५ मई '६१ के विचार में 'चित्त में कट्टा' के आधार पर एक नया भूदान-अभियान शुरू हुआ है। त्यागमा आठ वर्ष पूर्व जब विनोदजी भूदान सभ का सदेश देकर वहाँ आये थे, जो विचार से देर लक्षण एकत्र भूमि प्राप्त करने का मन्त्र दिया था। विनोदजी की उपस्थिति में ही प्रथम एकत्र भूमि प्राप्त करने की प्रतीति हो चुकी थी। इसके बाद भूमि प्राप्ति के बजाय, प्राप्त भूमि के निरसन में ही सारी रक्ति लगानी पड़ी। अक्टूबर ३२ काय एकत्र का सफल प्रयास रहा था। इस बार २५ दिवस '६० को जब विनोदजी अपनी अन्तम-वाचा के पत्र पर यहाँ पधारे, तो उन्होंने विहार वालों को इस अर्थुदे संकट की वाद दिखानी, और उनकी प्रति के लिए एक नया मा भी बताया। उन्होंने कहा कि अगर विहार का प्रत्येक छोटा गरा भूमिदान अपनी क्षमता का सीमा तक (प्रति सीमा में एक बट्टा) दे दे, तो लगभग १२ लाख भूमि इकट्ठी हो सकती है, और विहार का मुक्त सहायक भी प्राप्त हो सकता है। विहार में प्रवेश करने की विनियोग में इस नये रूप का उद्घोष किया और उल्लेख में यह शुरु कर दी। अतः सात दिवस देर नये उद्घोष से शुरू होने लगे।

दानप पाठी और सायबजी एक के कार्य-कर्ताओं का भी सहयोग प्राप्त हुआ। विहार सत्कार के विचारों में भी सी-एन-नारायण सिंह तथा कल्याण मन्दी श्रीमंल परचमान शायी का सहयोग मन्दी श्रीमंल नारायण सिंह तथा कल्याण मन्दी श्रीमंल परचमान शायी का सहयोग मन्दी श्रीमंल नारायण सिंह और पूर्णियाँ जिले के कार्यकर्ता में प्राप्त हुआ। मुजफ्फरपुर में भूदान-अभियान के हितचिन्ते में जो सार्वजनिक सभा हुई, उसकी अध्यक्षता भी श्री शर्मा ने ही की।

रामनाथक सहायों की ओर से सर्वोपेय प्रणव, कीपरी, रामदेव

राजपुर, मन्दी प्रणव काठू और सधाम-शुहराप्रणव

विहार में नया भूदान-अभियान

मार्च के अंत में इस सप्ति की ठीक हुई, जिसमें यह निर्णय किया गया कि १५ मई '६१ के 'चित्त में कट्टा' के आधार पर एक नया संपत्ति अभियान चलाना जाय। निमित्त के सत्कारों के हस्ता-हस्त देने के लिए, एक अर्थात् प्रयास की गयी।

समिति के विचारानुसार १५ मई '६१ को गद्य जिले के भूदान-अभियान का शुभारंभ हुआ। जो सहायक विचार और सहायक का उद्घाटन किया और सहायक २० मई तक विहार के विभिन्न जिलों की जाया की। गण, पटना, छपरा, मुजफ्फरपुर, मोतीबाई, दारभंगा, सहाय, पूर्णियाँ, भागलपुर जैसे जिले के प्रधान नये तथा सहायक परलान जिले के वास्तुकार नगर में उनकी सहायक भूदान अभियान के हितचिन्ते में हुईं। यह सीमा तथा का हितचिन्ते के नए प्रधान नये विभिन्न जिलों और सहायकों के प्रधान नये विचारों में सहायकों को गीया, और इस कार्यक्रम में सक्ती सार्वजनिक शक्ति लगायी जा सकेगी। वहीं उल्लेख से अर्थिक नगरी में, वहाँ भी सहायक की गये, एक सार्वजनिक कार्यकर्ता-सभा का आयोजन हुआ। इस सभाओं में जायती पर कल्याण और प्रजासहायकारी पत्र के कार्यकर्ता ही शामिल हुए। वहाँ वहाँ

के अलावा जिले जिले के हीरों सर्वोदय, भूदान एवं सारी कार्यकर्ताओं ने इस अभियान को साथ बनाते ही भरमक कोषाधिक की। हर जिले की कार्यकर्ता सभा में २००-२५० सहायक और सार्वजनिक कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। प्रायः वे विभिन्न जिलों में होने वाले उप-प्रधानों की सहायता में वैसे रहने के कारण कुछ जिलों में सार्वजनिक कार्य-कर्ताओं की संख्या अपेक्षाकृत बहुत कम रही। सहायक सहायकों में, सर्वोदय के सहायक कार्य में लगे हुए सहायकों के अलावा अनेक सहायक और सहायक परिवार के लोगों का सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ।

सायबको सभा के अध्यक्ष हर गण एक सार्वजनिक सभा भी हुईं। उपस्थिति की हिति से मुजफ्फरपुर, दरभंगा, पूर्णियाँ, भागलपुर, पटना आदि नगरी की सहायक अन्वयी हुईं।

श्री सहायकरी में दो सहायक हर गण हुए। एक सहायक कार्यकर्ताओं की सभा में हुआ और दूसरा सार्वजनिक सभा में। सार्वजनिक में संपत्ति देने नये सहायक अर्थवादी अर्थिक गमरी और विचारोत्प्रेरक में। सार्वजनिक सभाओं में हिते नये सहायकों का सार भी उल्लेख जा रहा। अपने भाषण में उन्होंने भूदान-आन्दोलन के माँगि गरी एवं सहायक

३० भा० सर्व सेवा संघ-प्रकाशन

पदस्थों का विरोध करने हुए 'लोक-रक्षण' के द्विपक्षीय विचारों को व्यक्त की। लोगों ने हर जाह बंदे पैसों से उनकी शक्ति मजबूत करने के विचारों को समझने की कोशिश की।

हृदय में जो कार्यक्रम समर्थक हैं, वे बंदे हटने से सहमत नहीं। पार्टी लोगों ने अपनी पक्षि के मुवाविक बंधों में प्रकाश के आधार पर व्यवस्था करने की योजनाएँ बनायीं। जिन लोगों में एकिच-वार कार्यक्रमों उपलब्ध थे, अभी उन्हें ही रह अभियान के लिए चुना गया। प्रत्येक विवे में (जहाँ संघ-सदस्यी गये) एक सर्वोदय विद्या भूदान-यात्रि समिति भी गठित की गयी, जिसके उपाध्यक्ष में आने का कार्यक्रम चलाने का निश्चय हुआ। समिति के सभी सदस्यों के लिए लोहे में बन्दूक के विद्या के अगली बर्तन का रिस्का देना व्यक्तिगत माना गया। कार्यकर्ताओं में अपनी अगली का आवश्यक रिस्का देने की योजना की थी।

जिन विद्वानों में और संघ-सदस्यी की यात्रा हुई है, वहाँ के सार्वजनिक वाता-परण में एक इल्लुशन शुरू हुई है। लोगों की यह यात्रा का कि भूदान समस्त हो गया, बंदेको छोड़ी है, और यह विचारक बगने लगा है कि बानरजी की ज्वाल एक बार फिर वहाँ से चपकने वाली है।

'नई तालीम' का 'रवीन्द्र रातवापिकी विरोधांक'

'नई तालीम' गणित पर का बंद अंक रवीन्द्रनाथ की दवापिकी के अक्षर पर प्रकाशित किया गया है। इस अंक में रवीन्द्रनाथ के विद्या-विषयक विचारों को व्यक्त-रिक्त ढंग से संक्षेप गमा। बुद्धिजी प्रतिभा-समय रविन्द्र एक अच्छे शिक्षा-रक्षकी भी थे। 'विद्ये-नारीती' प्राविनि-के-न, जिसकी बरतना विद्या की समस्त संरक्षकों के समर्थन-प्राप्त के रूप में की गयी है, उनका विद्या-विषयक विचारों की प्रयोग-रक्षकी है। यह अंक की हुआ कि इस अक्षर पर नई तालीम बगने ने उनके विद्या विषयक विचारों पर विरोधांक निकाल कर भर्त्सनात्मक अर्थित की। इसमें रविन्द्र के कुछ के लिखे हुए लेख भी हैं और उनके विचारों पर अन्य उनके निकट रक्षकी-वर्गों के भी कुछ लेख हैं। साथ में शुद्धेन सम्प्रदायी कसारा भी हैं। रविन्द्र की कुछ उच्च कोटि की कविताएँ भी लिखी हैं-मै-दी गयी हैं। अन्त में शुद्धेन के विद्या विषयक काव्यिक भी जानकारी एक ली परिशिष्ट के रूप में दी गयी, जिससे हर व्यक्ति उनके विद्या-सम्बन्धी विचारों पर गहराई से अनुभव करना चाहे तो कर सके हैं। अंक जानकारी की हटि से उनका और संवर्धनीय है। इनमें कुछ विचार भी विवे गये हैं।

मार्शल १९६०

- (१) महादेव यादों की यादों : महादेव देवगढ़ १)००
- (२) लोक-रक्षण : चक्रवर्तन देव ०)२५
- (३) लोक-रक्षण : जयप्रकाश नारायण ०)५०
- (४) Swaraj for the People : Jai Prakash Narayan. १)००
- (५) Thoughts on Assam Disturbances १)००
- (६) Decentralized Economic Order. ०)५०
- (७) Report of the Study Team to Yugoslavia. १)००

मई १९६० :

नये प्रकाशन

- (१) सर्वोदय-सम्मेलन का संदेश ०)२५
- (२) Vinoba—Man & Message by Suresh Ran. १)००

संशोधित एवं परिष्कृत संस्करण

- (१) आत्मज्ञान और विकास : विनोद १)००
- (२) शरीर : जयप्रकाशी १)००

जून १९६० में प्रकाशित होने वाली पुस्तकें

- (१) विविधित अभ्यन्त १)००
- (२) के-ए-ए-ए (हिन्दी) १)००
- (३) प्रावि-वेदा (अंग्रेजी) : विनोद १)००
- (४) हाक प्रकाश (दसों के लिए सचिव) १)००
- (५) राजकीय में गौच बंद : चक्रवर्तन देव १)००
- (६) इति के साथ प्रथम चार : परमेस्वरी प्रकाश गुप्त १)००
- (७) द्वापार कर्त्तव्य (सर्वोदय-सम्मेलन का अन्वयिक भाषण) १)००

—जयप्रकाश नारायण

- (८) गीता प्रवचन (बंगल : जगदीप (हिन्दी) १)००
- (९) मजुधेर (प्राविठ विक्रित) १)००
- (१०) Science & self knowledge : Vinoba. (Revised & Enlarged edition) १)००

—प्रसिद्ध भारत सर्व सेवा संघ-प्रकाशन, राजपाट, फरारी

श्री नवदृष्ट्य चौधरी काव्यों में

सर्व सेवा संघ के अल्प ली नवदृष्ट्य चौधरी का० १३ अक्षर को कापी पहूनेने और का० २१ की दोहरा संक कापी में ररी। उनके पहले का० १ नृत को वे विरोधकी से प्रकले के लिए सक्षम जा रहे हैं।

सम्पादन-मंडल की बैठक

सर्व सेवा संघ द्वारा निकल सर्वोदय-साहित्य-सम्पादन-समय की पहली बैठक का० १५-१६ अक्षर को कापी में होगी। संघ के अल्प ली नवदृष्ट्य चौधरी की बैठक में उपस्थित रहेंगे।

इस अंक में

- १ कटव और दूरस्थ के सर्वोदयवाक साहित्यिक प्रकाशक : एक दशक का भारत युधि और बच चक्रवर्तन सुप्रिथ-सम्मेलन के नेताओं के भारतीय विद्यार्थी सम्प्रदायी पर कुछ विचार नवा मोर : सच, विद्या और मोरना : ३
- 'दाम-बल' का स्थान नवा 'आत्मसंयम' साधन-भाष का १
- किन्तुवा की परंपरा से भारतीय संरक्षित का सक्षम अर्थ-संवाह का यह अभिप्राय १
- विद्यार की विधि ११
- सच्यवा-परनाय १२
- विनोद १
- चक्रवर्तन देव २
- विनोद ३
- चक्रवर्तन देव ४
- ई० एक० सक्षम ५
- वीरय नारायण ६
- विनोदी देव ७
- चक्रवर्तन देव ८
- कुमुद देवपाठ ९
- जगदीप १०
- सच्यवा ११
- १२

गोरखपुर में सर्वोदय-विचार

- गोरखपुर शहर में विवे के भूदान, कर्त्तव्य एवं लारी-आमोयोग के कार्य-संघों के एक एक पंचदशकीय विचार, १८ से २३ जून तक होना निर्दिष्ट हुआ है।
- विचार को संचाली रहे रही है। आज है, गोरखपुर के पंचोदी जिलों के भी भूदान सर्वोदयी कार्य-संघों भाग लेंगे।
- विचार का आचार्य-संघ ०)५०
- समा सम्पादन की द्वारा प्रकाशित ररी। श्री फरिल आरं, श्री कला भारं और प्रमुल लोग विचार में भाग लेंगे।
- विचार-संघ ०)२५
- विचार-संघ १)००
- आचार्य रामगुर्विती १८ से २१ तक एवं द्वारा प्रकाशित-ररी २१ से २३ तक ररी।

सप्ताहिक घटना-वक्

[१३ व १४ पृष्ठ]

लोगों की ओर से शरणी अर्थिज्ञ का सक्षम किया गया—केवल दूरस्थ हटि से, बरिच बचन और मन से भी। इसका साथ ही शारीर किंग और उनके साथियों को है। इस बार भी मोरे लोगों के आग्रहण और विवेक हलके के बावजूद नीलो ने हर कुछ-धीरे-धीरे और भावि के साथ रहा है, उचित मोरे की ओर चुकनों से रंगभेद का विरोध करने वाले मोरी तथा उनका साथ देने वाले मोरे लोगों की भी मार, पीडा, धात्यों को मोरे टैक्नीकालों ने अरताल के जाने से हुनार किया, शहर की गोरी पुलिस में नीलो लोगों के संरक्षण में जानबूझ कर किनाकरकी की। यह सब कुछ हुआ, पर नीलो लोग शान और अर्थिज्ञ रहे।

का १५ बार संघ-सम्मेलन में विवे के एक नये और प्रथम लक्ष्यवाक की श्रवण और हो रही है। अमेरिका की केंद्रीय सरकार और दक्षिणी राज्यों की राज्य-सरकारों के बीच भी इस प्रश्न को लेकर एक विचार-समा हो गया है, जिसके परिणाम रूपांगी हो सकते हैं। रंगभेद का विरोध करने वाली की रक्ष करने के लिए केनेडी की केंद्रीय सरकार ने अखतना में अपनी पुलिस पैनी, लेखन अखतना राज्य के सचिव ने केंद्रीय सरकार को बेतामी की कि वे शरणी के अग्रण-वेन के मामले में दक्षल न से और केंद्रीय पुलिस को काम नहीं करते दिया गया। दूसरे कुछ राज्यों ने अग्रणवा के सचिवर का समर्थन किया है। उनका पारसी मार्गिन् रूपांग किंग और नीलो अग्रण रंगभेद के अन्वय का मुकामल बनने के लिए कठिन्द है। अगले कुछ दिनों में अग्रणवा से आने वाले शरणीयों की बंद-दुनिया उलटना उ देखेंगे।

—सिद्धांत

साप्ताहिक घटना-चक्र : एक दृष्टिपात

यह सैनिक-शिक्षा !

एक चुनौती

माल सरकार ने तय किया है कि निम्न-निम्न प्रश्नों में हिन्दुस्तान की सेना के लिए अल्पे अल्पे अस्त्र तैयार करने की दृष्टि से सैनिक-शिक्षा छोड़े जाये, जिनमें छोटी उम्र से ही बालकों को प्रशिक्षण दिया जाय और अल्पे अल्पे अस्त्रों और अस्त्र-प्रकारों की शारीरिक उम्र देी जाय। योशना के अनुग्राहक इन स्थलों में १ पाठकी उम्र के बच्चों का प्रवेश किया जायगा और ८ वर्ष तक वे इन शालाओं में शिक्षा पायेंगे। उक्त शब्द उन्की सैनिक शालाओं के लिए के सैनिक कालों में का उक्तेंगे।

जब तक देश में सेना की आवश्यकता है, जब तक उते अल्पे सैनिक और अल्पे अस्त्र चाहिये, वह स्वाभाविक है। सैनिक शाला "सैनिक-शाला" की जो योशना सरकार ने बनायी है, उनमें दो-एक बातें ऐसी हैं, जो सम्मोहना से विचार करने योग्य हैं।

सैनिक-शाला के लिए विशेष प्रकार की योग्यता और शालीन की आवश्यकता हो सकती है, यह ठीक है। सैनिक-शाला के अन्तर्गत भी जीवन के पहले बच्चों में ऐसे विविध काम हैं, जिनके लिए विशेष शालीन और योग्यता की आवश्यकता है। साफ़, स्वच्छ, इत्मीनियर सभी की अपनो-अपने काम की दृष्टि से विशेष प्रकार की शिक्षा की जरूरत होती है और यह मैं उसका इंतजाम भी होता है। पर सेना में जाने वाले के लिए इस तरह बचपन से ही जो आशा शिक्षण का इंतजाम किया गया है, यह उचित नहीं मान्य होना। उपरने बच्चों में ही शिक्षण का काम एक विशेष भाव से सुदृढ़ या। बच्चियों का यह कर्तव्य माना जाय कि वे समाज के रक्षण की जिम्मेदारी वहन करें, इसके लिए शक्ति के उपयोग में दक्षता हासिल करने के लिए उन्हें शालीन भी लेनी पडती थी, लेकिन तब भी उन्हें इस प्रकार समाज से अलग रख कर शालीन देने की योजना नहीं थी। एक और अनुग्राहक, अर्जुन और अक्षयधामा की ही शुरू से शिक्षा पाते थे। उनमें मरुभार, समाज विद्रो, न्यायप्रियता, वफादारी, सत्य के प्रति आस्था इत्यादि गुणों का समाज रूप से विकास करने का लक्ष्य रखा था। यह सही है कि उन दिनों व्याज की तरह बालकों का टोलनहीं पीटा जाता था, पर अनन्तरीय कहे जाने वाले युग में एक विपदाई में इन सामान्य बच्चुओं के अभाव हुआम की शालीन, मूला, सुदृढ़ता आदि गुणों (1) का विकास आवश्यक माना जाय, ताकि वे "अस्त्र" रह कर अपना धर्म बजा सकें। उपरने जमाने का सैनिक शाला का काम एक नागरिक शिक्षा के जोर पर निर्माणा था, आज का सैनिक शालाई हुए नौकर के रूप में काम करता है। इसके लिए धनान्य

नागरिकों से भिन्न उक्तके शिक्षण की आवश्यकता महसूस की जाती है। हिन्दुस्तान को युद्ध जैसे विरों से सोचने का अवसर मिले है, लेकिन दुर्भाग्य से यह भी युगकी पिछी-पिछायी स्थितियों और परिस्थतियों से अपने को मुक्त नहीं कर पा रहा है।

दुसरी बात इन सैनिक-शालाओं के सचों को है। योशना में क्याया गया है कि इस शाला के अन्तर्गत् में १६०० से ज्यादा बर १००० धन्ये तक सचों होगा। उक्तके अन्तर्गत वर्तन हीन की रूपया पोषाक आदि का अल्प खर्च होगा। इस तरह हर बालक के पीछे फटी-फटी दो की रु. हर माह खर्च आयेगा। कैसा सुकृत्य के मूक लेबक क्या शिक्षा-यात्री भी युवावस्थाक इतने ही ही अरु में अल्प प्रशासित लेल में रखा गया है, "हमारे इन नौबतानों को सौर सैनिक बनने की शालीन देने की अपेक्षा छात्र-शाला-प्रकारों में के शिक्षण प्रकृत्यायों कैसी शालीन देने की जरूरत है।"

प्रकाश का युग या

अंधकार का

आज का युग की अंधकार छान और प्रकाश का युग कहा जाता है। उपरने जमाने की छोय अंधकार का युग कहे थे। उपरने जमाने में को कुछ भी होता रहा हो, उस तरह में हम नहीं पंते, लेकिन आज के इस प्रकाश के युग में भी विश्व मानव की घटनाएँ सुनिय में हो रही हैं, वे सम्बन्धित सुचारु हैं। अन्धकार के अंधीय प्रवेश में दुर्भाग्य की साक्षात्प्राप्ति की प्रवेश के जो दमनक चर हो है, वह स्वभाव-तित है। अभी कुछ ही दिनों पहले विश्व भर दिग्भ्रम के इन्कारों से कलेश्याम के समाचार आते थे, उन्ही प्रकार अभीय में भी वहाँ की भाविक की जाति को खल-मादुर चरने के अणल ज्ये का रहे हैं, ऐसा मायका होय है। अभी दुर्लभ को कोई नहीं कहा सकता, लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि अभी-परासों द्वारा आरम्भ की गीत के प्राद उत्तरी गने हैं किंइ इच्छिदि कि उन्हीने पुर्तगाल के दमन के सिद्धक अन्तर्गत उतयी।

उत्तर दक्षिणी कोरिया में पिछले दिनों को उच्छेक हुआ और जेना ने साधन अपने हाथ में लिया, उन्हीने भी अन्तर्गत रिशेयों के अनुग्राह उच्छेककारियों और शुकों की सहायक सेवीं ह्यार आदिमियों को निरस्तार किया है। आज की ये सत्य कहलने वाली सरायों और प्रहृ कश्क प्रकार के कहे और अन्धकाराध्य प्रारण्यो दक्षिण के पक्षों में जोउते चले जा रहे हैं, यह बन्धीयता से सोचने का विषय है।

अल्प अस्त्रक १५ वारे में जान्ता बनाने का उच्छेक रूप से विचार कर रही है कि रिमान में सन् १९६५ तक राज के फारसर्ग में योशनी की जगह राष्ट्र की भाषा को स्थान देने की जो बात है, उसमें परिवर्तन किया जाय। विधान बनाने समय, आन्धवी की पटली उमर्ग में हम सोचों ने बहुत ऊँचे-ऊँचे सपने देखे थे और बड़े-बड़े संकल्प लिये थे। विधान में हमने जादिर किया कि हम इस देश के छात्रकालीने नेतागण रहेंगे, इस देश में बेगार को नहीं खोया, इस देश में अंधियों के जमाने की शिद्वी भाग्य की जगह हिन्दी और अन्ध प्रातीय भाषाओं में शार कालोपर और शिक्षण चलेगा, हम वर के अन्तर्-अन्तर् इस देश में हर एक बालक-बालिका के लिए शिक्षणक प्राथमिक शिक्षण का प्रथम होगा इत्यादि। अन्ध एक-एक कहे करते रहे थे अपने दूर रहे हैं और उन वारों को हम सोचते जा रहे हैं। कौशियों के नाबन्धु भी आर्यी किची कण्ड को पूरा न कर सके, वह समाज का चक्रा है, उसमें रोग भी नहीं है, लेकिन क्या हम कर सकते हैं कि शिक्षे के

एक प्रेरणादायी बलिदान !

पटना इस सप्ताह की वही, कुछ उपरनी है, जो सच बाप देर के आत हुए हैं, पर वह जादिर कलजी के कि सुनिय की गतिविधि से अनभिज्ञ, हमारी गति की नाचों से भी विवे कोई संरोकार नहीं, ऐसी एक अयोग्य, अनपद बलिदान के हृदय में भी उपरुई के शिक्षक कैसी तीव्र प्रगत्या प्रवेश हो सकती है। कैसे आत्महत्या सम्बन्ध-योग्य बात नहीं है, लेकिन विश्व मानविक लक्ष में वह बलिदान थी, उसमें अक्षीय विश्व आत्मरक्षा नहीं, बल्कि आदिच्छ प्रविहार और बलिदान का उत्तम नमूना कहा जायगा। हमारे साथी शारी-क्यों के धन्यता को नहीं भेजा है, यह इस प्रकार है।

"मार्ग" अहोंने में प्रथम अन्तर्गत के श्राव लेते पर होते हैं। किसान के पास बंसे का समाज होता है, उनपर विज्ञता नहीं। इन युवावस्था के दिनों में "युवावस्था

युगों में हमने इन सच पाठों के कि ईमानदारी के साथ बोधिया की। आन्धवी के प्राथमिक दिनों में जो उमर्ग और जोय होयों के दिग्ग में था, उक्तके शाला निर्दिष्ट स्थाय बले लोग रहे हुए थे ज्यों-ज्यों स्थाय बीत रहा है, हर वं में निर्दिष्ट स्थायबाडे अपना शिर उँच कर रहे हैं और एहू के द्रुम संकल्यों के बर में सजी-सजी शायरों कानि कर रहे हैं। उपरुणी और अंधीय मर्ग को हमने का प्रश्न इसके ज्वलत उदाहरण हैं। अन्धकार, विज्ञान आदि प्रचार के साथ भी निर्दिष्ट अभिप्राय सच छोडने हैं, हम में होने के दूर भीयों के शिक्षण शालावर्ग की बन्नाया का रहा है। एहू के नेताओं में इन बातों के बारे में दक्षता नहीं है। एहू को एक शिक्षित रिशक भी और के जाने वाली कौसी शक्ति नहीं रही है, ऐसा लगता है। एहू की शालावर्ग निकने होय में है, वे अपने द्रुम शालों की होय में फँडे हुए हैं। एहू के शिक्षकवर्ग के लिए यह शारी बाते एक विपदा के रूप में लखी हैं।

"सिंहकरोति पाप" ॥ अनुदात द्रुम मर्गक सचें श्रेत ने फलत कोरी ॥ साह लेते हैं। इसी प्रति कृतोती गीत के जो विधान-हमारे लक्ष के एक अनुदात का लक्ष काट कर ले गये। सचके की शोच-बन्धीयता पत्नी की यह बात हो गयी। उसने ऐसे कोरी के मज का दोहन बनाने से ह्यारक किया। उक्तको शार-नीर, बलकया गया होगा। विपदा होय, उसने जोखन तो तैयार किया। पर कुछ उच्च मर्ग ने बडा भोजन प्रहृय करणा उपरुणक नहीं हमका। शक्ति और शूर को भोजन कल बनें के बच कर में दक्षता मिलने पर इन्त, कलके पत्नी के भोजन शाला गले में फाली लगा कर अपने पार्थिव शरीर को समाजक कर दिया है।

"आहार और पोषण"

लेखक-सोपेनमाई फेल, प्रद्यक्षक-अलिख मारल सेव वा सं-प्रकाशन, नागरी, मुम्बै : ५० नये सिरे।

आहार-विज्ञान पर शाल और सुवेच उग के नथोक्तयन में लिखी गयी यह पुस्तक प्रलेक व्यक्तिक के पदने लक्ष्यक है। इसके मोदे में अन्धकार संक्षी अन्ध शान प्राप्त हो जायता है। सुक्ष्म में एक प्रकार की आदिमिक रोचकर, सर्वभोज्य शकल्य और वैज्ञानिक विचारक है। शान-युवा संक्षी सर्वोच्च का इच्छेक

हमें बहुत अल्पे उग से समझा दिया गया है। जोये स्वाध्याय संक्षी मर्गों के दे देने से पुस्तक की उपयोगिता और बढ़ गयी है। पदों और विचार कर प्राप्त कर पा रहे हैं। कलके एक सल एहू है। संगीत उप-योगी सुक्ष्म हैं। इसका शान आन-कण्डक है।

—सम्मेलन पत्रिका, प्रयाग

पंचायती राज बनाम ग्राम-स्वराज्य

आर्थिक विकेन्द्रिकरण का प्रश्न

पूर्णचन्द्र जैन

पंचायती राज की स्थापना के नन्दन राजस्थान और जाप्र प्रदेश में उठाने गये हैं। अन्य प्रदेशों में भी पंचायती राज कायम हो, ऐसा केंद्रीय व राज्य-सरकारों का लक्ष्य है। सामान्यतः यह धारणा है कि अगले कुछ चुनावों के पूर्व तारे देश में पंचायती राज का ढांचा सड़ा कर दिया जायगा। यह श्रुति है कि इस बारे में कोई खास मतभेद किसी ओर से भी नहीं है।

यह भी आशावादी देश के कई एक अच्छे माने-माने लोगों की है कि "पंचायती राज" में गांधी-विनोबा की फलनवा का "ग्राम-स्वराज्य" साकार हो। इन लोगों में पक्ष और सत्ता की राजनीति को समय से पिछड़ी हुई मान कर उसे छोड़ देने वाले व्यक्ति हैं जो वैसे भी लोग हैं, जो उस राजनीति में आज भी मूल निरवस्था करते और उसके सूत्र-संचालकों में अपना स्थान रखते हैं।

इस प्रश्न को दो-तीन बुनियादी सवाल विचारणीय हैं। वेह को आज़ादी के बाद पंचायती राज का विचार जिन लोगों ने देश के सामने रखा और उसका स्वरूप स्थिर करते हुए उसका ढांचा सड़ा करने की दिशा में जिन लोगों ने कदम उठाया, उनही इस सम्बन्ध की भावना, आकांक्षा व कल्पना तथा की ओर क्या है? पंचायती नियुक्तियों के तौरों का जो चित्र आज़ादी के बाद रेखांकन करते थे, वही क्या इन लोगों की कल्पना में की है? उस ढांचे के लिए जो कानून प्राक्तन बना है, उसमें ही वह चित्र बनता। वाक्या या अभी यह उल रिहा का एक नमूना मान लें, उस तुरे चित्र के लिए इस ढांचे व कानून में बुनियादी कुछ कुछ मोड़ना, सशोधन ही सफल है?

यह न मानने का कोई कारण नहीं है कि पंचायती राज के विचार के प्रवर्तकों की संघर्ष भी देश में गांधी का भी ग्राम-स्वराज्य कायम करने की ही है। अर्थात् सना विनोबा के हाथ में है, जो भी सलुत सवा गांधी की कल्पना व चाहते हैं, इन्हें हाँक करने की जरूरत नहीं होती चाहिए। लेकिन पंचायती राज का जो कानून है, उसकी रचना और उसका षड्यन्त्र इस आशय के (किना अनुकूल अभी तक हुआ है, जोना दिखायी देता है या हो रहा है, यह अभी के पमान नहीं दिया जायगा तो इच्छा और आशा के विपरीत परिणाम सामने आने का खतरा है। इयात मानना है कि इसमें अभी के शासकानी बदले की जरूरत है। सरकारी से नये हुए लोग खर करें। लेकिन अधिक आवश्यकता शोध-मानव को सचामिदुल वा सवा पर निर्भर करने की क्षमता के मुक्त करने की है।

पंचायती राज के विचार का अमल तिल प्रसार हो कि क्या वा सही अर्थ में विकेन्द्रिकरण हो सके, लोगों का अर्थव्यवस्था अभिन्न अर्थ है, वे मध्यम वर्ग के कि उन्हें ही कुछ करना है और उन पर जिम्मेवारी धारणी है, इस बारे में सर्वे सवा संघ व उद्योग प्रवर्तकों ने सज्ज-सज्ज पर अधिमान्य प्रकट किया है। पंचायती-ग्रामोद्योगों में, देश की मध्यम वर्गीयों के रूप में, विकास को आवश्यकता और ग्राम-स्वराज्य के बारे में भी पूरा विचार, तथा नया ढांचा बनाने का सर्गनीय कार्य-मन, संघ द्वारा सम्भव-सम्भव पर सामने लाया गया है।

आज योंग उठते लगी है कि पंचायती राज के तौरों के अन्तर्गत भी पंचायती, पंचायत-समितियों और विवर-परिचरें कनी हैं, उन्हें ही सहायी-ग्रामोद्योग आदि का कार्य भी नियुक्त किया जाय। इयात ही में अर्थात् सार्वभौम पंचायती रिचर का

अभिधेयन वायुमें पंचायती राज-संस्था के एक प्रकल सर्ववैक और उसकी मीयुता दमियों का स्पष्ट उभेय कले सवैदीय विचारक भी कल्पनावा नाएयन भी अनुकूलता में हुआ था। उस समय उभयपक्ष के मुख्य मंत्री भी योवनल्लु सुजायिया ने उरुयुक्त विचार अपने भागन में बाँटिए किया और सर्वे देवा संघ का प्यान उल और आकार्यिक किया था।

दरबन्दा इन्हें भी दो हो ही नहीं सकती कि यदि ग्राम-स्वराज्य को सर्गीय सज्ज बनाना है और तले सवैय लेय-स्वराज्य का लेल आधार मान कर वही सवोयना करनी है तो प्रावधारियों को सवा व सार्गनों के उपयोग का पूरा, सुलु अवसर मिलना चाहिए। सर्वे देवा संघ का सहायी-ग्रामोद्योग आदि विवरक को नया ढांचा, स्वयंसेवकी इयातों के निर्माण का, कार्यक्रम है उरुमें यह निहित ही है कि आर्थिक व सामाजिक विकास का विकास योजनाओं के मुदर के हाथ में हो। संघ को यह भी मानना है कि आर्थिक विकास की इस प्रकार की विकेन्द्रिक उभेय नहीं लेनी और नहीं आरुत में आयेगी तो एके के बाद दुर्गी पंचायतीय योजनाओं के देल वा लेल समय रिचान नहीं हो सकेंगा। उनके विरुद्ध देल में ग्रावणिक न्याय व समानता की स्थापना की सुलु विस्मया व वेतंगवणी रदने तथा निहित सवाओं के पठिकाणी होल व यों रिचरे के एरुणी विकास की परिस्थितियों उणुल-उणुल सज्जुत होती आयेगी।

एक ही के यदि सवा का अर्थ-स्वर पर विकेन्द्रिकरण अभिधेय है और आर्थिक विकास यहीं के लोगों द्वारा ही आरुत है, तो सहायी-ग्रामोद्योग आदि कार्य भी संवेदीय भी पंचायती राय के लेन के बिना ही होनी चाहिए। सुप्रकत सवाल

यही है कि सवा वा सही उभेय विकेन्द्रिकरण हो रहा है या नहीं और लेनताधिक विकेन्द्रिकरण के पठस्वरूप स्वतंत्र लोक-यकि का निर्माण हो रहा है या नहीं? अभी यह सवा सवा दील रहा है और यही-कहीं उणुल प्रत्युक्त कल सामने आया है कि सवा के विकेन्द्रिकरण की एयन केन्द्रीय सवा ले, और सवायुक्त पक्ष को नम्युल व निरकुल बनाने में इस पंचायत राय की इयातों का इस्तेमाल हो रहा है।

को राजनीतिक विचारधारणाले पंचायत आदि संस्थाओं को इस उपयोग (वा इस्तेमाल) की लेक समझते हैं और केन्द्रीय सवातन को लेनताधिक विकेन्द्रिकरण वा पंचायती राय की स्थापना के लिए कानी मानते हैं, उनसे कुछ कहना नहीं है। वे एक सवा के सवैय वैली ही राजनीतिक विचारधारणाले अ नुमाणी हैं, सिधमें विकेन्द्रिकारी की स्थापना के लिए एक थर सर्वथा कर्न के अधिनायकत्व की स्थापना को अनिवार्यतः आवश्यक माना गया है।

सवैय ही वह सवा पंचायती राय की स्थापना वा लेनताधिक विकेन्द्रिकरण के पक्ष पक्ष को समर्थन करने और पक्ष के केन्द्रीय, प्रादेशिक आदि सवातों की सज्ज को कल न करनी की प्रकट वा प्रकट इति काम बनती है, सवा सवा सवा का सलु विक विकेन्द्रिकरण और ग्राम-स्वराज्य की स्थापना आधाया-मुमुयु है। वह सवैय ही है।

इसके परिणाम का समय भी दूर नहीं रहा है। आधुनी युवाओं में स्पष्ट ही कयेया कि उभेयारतों के चयन, उनके निर्वाचन, चुनाव के बाद उनके रीति व कार्य-सज्ज के निर्माण आदि का सर्गनीय के लोगों अर्थव्यवस्थागत कार्यों को विना मोका दिया जाता है। किन्तु उन्हें उनके लिए कुछ मिलती है। सर्वे देवा संघ ने सवैय-अर्थव्यवस्था आदि का विचार सामने रखा हर इन्हें लिए प्रकल कार्यक्रम दिया है। पंचायतों, पंचायत-समितियों आदि के सवैयों व कार्यक्रमों का यदि पले दया किसी भी रूप में उपयोग किया सवा तो पंचायतीय सवैय की वह इयातों सज्ज-सज्जुत सवैयिक रिचरक व दिसन सज्ज बनाने की है। सवा ले, कि हा सवैय दिसन के सवायिक वा आर्थिक किसी भी प्रकार के विकास के लिए उभेय-सज्जुत सवा, वा सज्ज सवैय दिसन काना अर्थव्यव

स्था। विकास-कार्यक्रमों में उनका आज को पूरा उलगाया वा सविन सवा नहीं है। यही रिचर अधिक आरुत हो नयेगी। आज सहायी-ग्रामोद्योग की सवैय राजनीतिक पठरुंदी से बहुत सुलु बननी हैं। उनका भी पठरुल बनाने में सलु मिले, ऐसी कीचिप कानी-कानी कही कही होती रही है। फिर भी सामान्यतः इस सवैय के वे सवा पानी हैं। लेकिन ग्राम-स्वराज्य स्थापना के प्रयोग में पंचायती राय की मीयुता इयातों पंचायती राय के कानी वा सही नहीं उरुती वा उल प्रकल इरुणीय कल लिये जाने का सलु सज्ज सवा रहता है, सवा सवा उरु सवैय सवैय सवैय आदि का कार्य व उरु ही योयवार्थ नियुक्त कर देना सवा के विकेन्द्रिकरण की सर्ग आर्थिक विकेन्द्रिकरण को भी अनिवार्यता सवैय में सवा देना होगा।

उरुके अलगाव अज्ज कानेले में सवैय के विकेन्द्रिकरण के बारे में और सवैय सवैय के पंचायती राय की स्थापना के विवर में बिदानी एकमतता है, सवैय की सवैय सहायी-ग्रामोद्योग कार्यक्रम व विकेन्द्रिकरण सज्ज सवैय के बारे में नहीं है। वे भी सर्ग देल की आधारी के बाद सवैय और ग्रामोद्योगों की सवा को अनिवार्यतः सिध ही दुरी और सवायिक-कार्य मानते हैं। उरु लेल योयवार्थ-निवारण की इति से इरुल योयवार्थ सवैय बनते हैं। वे भी सर्ग विनोबा की भाँति इले सवैय विकेन्द्रिकारी और सवैय के अधिनायक सवैयमान आरुत-विचारक की सवा के लिये आर्थिक विकेन्द्रिकरण वा ग्राम-स्वराज्य के विवर को आधाया-सज्ज में नहीं आधीयत बनने। सवा सवैय दिसन-दिसन कानी सवैय-अधिपत्य सवैय में ही, वा आर्थिक वा सवैय विकास के नाम पर सवैय-ग्रामोद्योग आदि के कार्य को परीयन-कार्य में ले मुदले वाले पंचायती राय की सवैयों को नियुक्त करती है कवदानी न कवदानी ही दुर्किमान होती है।

पंचायती राय की विनियम इयातों के अने उरुत, उरु मनी, ही सवैय-सवैय सवैय-सवैय की पठरुल सवैय के बाद उनही सवैयों में आरुत-विचारक कार्यक्रम करने की उरुत, सवैय, सवैय के दिसन व प्रयोग में न करने की उरुत सवैय, संवृत्त में न हो जाने की उरुत सवैय-सवैय सवैय को एक सवैय सवैय कर ही की-उरु उरु आर्थिक विकेन्द्रिकरण का निर्माण व अधर बनाना चाहिए।

नया मोड़ : लक्ष्य, दिशा और योजना : ४

धोरेंद्र मजूमदार

[यह पीरैड यार्ड की लंबाई का अंतिम किस्त है। जहाँ तक आपने गये मोड़ों का स्वागत करते हुए उसके स्वयं और दिशा पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि तबत मोड़ना ही विचार करना है, जो न केवल संशय-मूलित से निम्न हो, अपितु वह हिता-मूलित की विशेषता भी होनी चाहिये। हमारी दिशा स्वावलम्बन की है, न कि विकेंद्रीकरण की, क्योंकि स्वावलम्बन में स्वयं और स्वयं का स्वयं विचार होता है। इस लेख में आपने कार्य-दिशे के लिये योजना प्रस्तुत की है। प्रायः-स्वराज्य समितिओं की संतति हो, उनके कार्य की रूपरेखा क्या हो, कार्य-कार्यों को कैसे प्रगतिगत किया जाय प्रायः बहुलपूर्ण मुद्दों पर प्रकाश डाला गया है।—सं०]

हमने स्वावलम्बन की दिशा की आवश्यकता शासननिरपेक्ष समाज की रचना की उद्यम-मूलित की लिये अनिवार्य है, ऐसा कहा है। लेकिन अगर गहराई से विचार किया जाय तो मालूम होगा कि दृष्ट-यन्त्र पर आधारीत राजनैतिक लोकतंत्र की सफलता के लिये भी इसी दिशा की अपनाना अधिक आवश्यक होगा। भारत की परिस्थिति विशेष रूप से जिम्मेदार है। इस देश में अभी भी सामन्तवादी मनोभावना मर चुकी है। गैर की कार्य-विपणन तथा श्रेयभेद की दृष्टि से सामन्तवादी मनोवृत्ति अब बुझ जाती है तो लोकतंत्र के लिये प्रतिकूल परिस्थिति हो जाती है। उसके ऊपर यकीन की मिलिकत अत्यन्त अल्पसंख्यक लोगों के हाथ में होने से मोड़ से लोगों के पास दायण और निर्दलन की अपार शक्ति पहले से ही मौजूद है। इस परिस्थिति के रहते हुए बिना किसी पूर्ववैयारो के उन्हें ऊपर से ही राजनैतिक और जायिक सत्ता सौंप देते हैं तो यह सत्ता भी उसी शक्ति के बन्ध में जाकर उन्हें और पराक्रमी बना देती है। फलस्वरूप इस प्रक्रिया से लोकतंत्र का रास्ता साफ न करने हम अपने हाथों से अविषयतावादी की मजबूत ऐजेन्सी खड़ी कर देते हैं।

इस तथ्य की पुष्टि देना के राजनैतिक विकेंद्रीकरण के अनुभव से भी हो रही है। पिछले दिनों में उच्च प्रवेशीय विधान-सभा में वहाँ के एलमन्त्री ने कहा है कि राज्य के अन्तर्गत में व्यापक दृष्टि का एक मुख्य विचार संधायक राज के चुनाव हैं और नई देशी के २३ अमेज के खर से वास्तु होता है कि साधुदुषिक विकास तथा सत्कर्मिता नई भी एल० ने० दे ने सेवा-संस्थाओं के सम्मेलन में प्राथम्य दृष्ट करे हुए कहा कि जिन राज्यों में संघायक राज लागू हैं, वहाँ का अनुभव यह बताया है कि सत्ता के व्यापक विकेंद्रीकरण के बजाय पंचायतों के प्रणाली के हाथों में सत्ता केन्द्रित होती जा रही है। अतएव बिना किसी राजनैतिक तथा सामाजिक क्रान्ति के विचार रखते हुए भी केवल लोकतंत्र के अधिष्ठान के लिए ही ऊपर से विकेंद्रीकरण की प्रक्रिया शुरु करने से पहले जनता के आन्तरिक स्वतंत्र शक्ति के संगठन का आन्दोलन आवश्यक है। अतः संक्षेप चाहे जो हो, इष्ट यही है कि इस कुछ दिनों के साथ शुरु में स्वावलम्बनी पद्धति से जनता में स्वयंसेवापूर्ण प्रकृति करके ही विकेंद्रीकरण के कार्यक्रम का शीघ्रतापूर्वक हो।

अतएव इति इति से यह आवश्यक है कि उपरोक्त योजना के अनुसार एक बार देश में आम-स्वराज्य समितियों के संगठन का 'ग्राह्य' देकर योग्य इच्छाओं को पुनः किया जाय। फिर उपर्युक्त समिति और कर्मचारी कार्यों का संयोजन हो। स्वावलम्बन संस्थाएँ तथा कार्यकर्ता किस उद्देश्य के द्वारा अन्तः-योजना को बढ़ाने में लगे थे और आग सामन्तवादी शोषण के काम में लगे हैं, उन्हीं उद्देश्य के अन्तः-स्वराज्य समितियों के प्राथमिक कार्यक्रम के संगठन में ला जायें तो हममें लक्ष्य नहीं कि एक-दो घाट के अन्दर ही उतरे ही योग्य इच्छाएँ निश्चित जायेंगी, मिलने वा लक्ष्यक हम प्रकृति करते हैं।

इच्छाओं को बुनने के बाद सामन्तवादी की प्राथमिक विन्देशों के कार्यों के संगठन की कुछ प्रगति हो जाने पर संघायतों के व्यापारिक काम की विन्देशों की भी-भी-भी उन्नत पर ही आ सकती है। तब तक उनका परिस्थिति भी इन विन्देशों के उदय के लिये स्वाभाविक अनुकूल होगी। कुछ सामन्तवादी कार्यों निश्चित रहेंगे। उनमें कुछ संगठन की अदल भी यह सामग्री तथा प्रयोगों कादि के बरिये गौर की अन्तः शक्ति से बनी कुछ पूर्वी भी इच्छा ही जायेगी। इस प्रक्रिया में दो-चार साल के अन्दर ही सामन्तवादी समितियों मजबूती के साथ हमारे लिये काम की विन्देशों उदाहरण हैं। अब प्रश्न यह है कि स्वराज्य संस्था तथा कार्यकर्ता को स्वराज्यकारी कार्य में मोड़ से विचार-योजनाओं के साथ भी निश्चयतः सहकार करने का विचार है, उसका स्वयं क्या हो? पहले तबतका यह चारिये कि इति सहकार्य में स्वराज्य संस्थाओं की हीनियत महत्त्वों (को-ऑपरेटिव) साथ-ही

भी होने चाहिये, न कि आधाता (सकी-शेअर) संस्थाओं की। सिद्धान्त यह चाहिये कि हम स्वयं स्वयं के अनुसरण अपने ही बुद्धयुक्त तथा स्वतंत्र और निश्चय जनता के आधार पर कार्य करें। सरकार अपने स्वयं के अनुसरण स्वराज्य के आधार पर कार्य करें और सामान कार्यकर्ता के बल में होयें में जनता का एकाग्र हो। हमारी संयोजना ऐसी होनी चाहिये कि विचार-योजनाएँ सामान्य रूप से बन देहता की जैसी मदद करती हैं, उसी रूप में और अनुभव में हमारी पूर्वी हुई इच्छाओं में भी मदद मिले और उनके अनुभवों का आर्गुमन्त करें। अब ऐसी मदद के उपयोग लीन प्रकार के हो सकते हैं :

- (१) भ्रष्टाचारी उपयोग। (२) उचित उपयोग और (३) अर्थदायक उपयोग।
- भ्रष्टाचारी उपयोग का न्यून देनी भी जरूरत नहीं है। आज तौर ही लोग उचित उपयोग का अन्तः यह समझते हैं कि जिस

काम के लिये विना सचन शिक्ता है, उसे पूरा वा पूरा उसी काम में रण्य देना। और कुछ जगहों में देना होता ही है। विकेंद्रित कार्यकर्ताओं को तीव्र प्रवृत्ति की उद्योगिता का मार्गदर्शन करना चाहिये। अर्थात् विना सचन करार की ओर से उल्लेख है, उन सचन पर गौर का सामूहिक स्वाय और पुरस्कारों को कर विचार-योजना शर परिस्थित रूप के परिणाम से स्वास्त परिष्कार में काम कर देना तथा गौर के अंतो को हितकर-विचार के काम में पूर्ण साम्यिकता रखते हैं अन्तर्गतिक प्रेरक तथा उचित मार्गदर्शन करना। इससे लिये सामान्य रूप रखनी होगी कि इच्छा ही इच्छा प्रायिक का अभिमान तथा नेतृत्व प्रमत्त-स्वराज्य समिति शुरु करे। वे उनके लिये कार्यकर्ता से अन्तः करे।

उपरोक्त अन्वयों के बीच में पारी व प्रायोगिक के लेन-देन के अन्तःकार में शिक्ता वा बहु-वैयार की सलाहें उन्हीं वर से चारिये उन्हीं ही साथ सम्भव करें। जिस उद्देश्य के अन्तः रख रही हैं। साथ-साथ अपने काम के साथ सामन्तवादी समिति के केवक को ध्यानिक कर उन्हें आगे के लिये उन्हीं भी देती रहे।

अब प्रश्न यह है कि सामन्तवादी समितियों के 'ग्राह्य' के संयोजन की रूप-रेखा क्या हो। इस लेख में कि यह काम केवल मरणात्मक कार्यकर्ताओं के अंतो ही नहीं चलेगा। हर क्षेत्र में मिलने भी कार्यकर्ता सम्बन्ध साथ इस विचार के प्रति

सहाय्युक्ति रखने। बाँटे मिले ही उनका समेलन सुलभा चाहिये बितने सभी वृत्त और निष्पक्ष वैयक शामिल हो सके।

सम्बन्ध में अपने स्वयं की संघ के साथ कर उन्हें में चुन कर एक सामन्तवादी संयोजन समिति का संगठन करने की जरूरत है। क्योंकि यह कर्ता चाहिये कि लिये में से कुछ लोग देते मिले, जो निष्पक्ष तथा भी माफना रखी है और विन्देशों के साथ संयोजन के काम में लगे देने को तैयार हैं। ऐसी ही व्यक्ति व समितियों के संयोजक हों। संघ के प्रायः कर्ता उनकी उदाहरण में हमेशा मौजूद रहें। इस समिति द्वारा देश के गाँव-गाँव में विचार-पुष्पा करना होगा। संघ की सत्ता से उन्हीं आभारपूर्ण शक्ति तथा दृष्टी साम्य की स्वरुपा करती होगी। समिति के काम में सामान्य रूप के लिये लिये में बन-आधारित शक्ति के सामन्तवादी का संगठन करना चाहिये, जिसे लिये हमने ऊपर बताया है कि स्वराज्य-वाय, धर्मगौर, अनुसरण आदि कर्ता का संगठन करना चाहिये।

इसी समिति के मातहत कार्यकर्ताओं की विचार-विद्युत की स्वराज्य संस्थाओं की भी-भी-भी चारिये। उनमें कुछ निम्न-लिखित प्रकार हो सकते हैं :

- (१) स्वयं-स्वयं व अपने कार्यकर्ता तथा स्वामीय लिये की विचार-योजना का आयोजन।
- (२) साहित्य-प्रचार के लिये एवं तथा शोषण का विचार।
- (३) कर्म-की-की विचार-योजनाओं में नौकरानों को निष्पक्ष हित कर वने का आदान करना चाहिये, जिनके लिये सलाहों की ओर से परिणामिक की योग्य भी वा सकती है।
- (४) वैयक के कार्यकर्ता तथा उदाहरण निष्पक्ष गाँव-गाँव में सम्बन्ध तथा बन-सम्बन्ध का आयोजन कर विन्देश लिये में आदान देने का आयोजन करें। इस प्रकार की सलाहें, सभी साम्यिक बन्ने मरिदगों, पर्ये लिये सुवर्ण तथा स्वयं की आभार-आय होनी चाहिये।

सैनिक-शालाओं की योजना

जुगतदायक दवे

[५] सर्व नेमा तप तथा दूरी की सखाओं की ओर से उत्तरोत्तर कार्यक्रम के लिये विभिन्न पदसूत्रों पर अनेक तरीके से मान्य स्थित कर कार्यक्रमों को देना चाहिये, ताकि सुगम रूप में वे उनमें से सामग्री ले सकें और भीरु शीर अनुभव, निरन्तर तथा अभ्यन्त के आधार पर अपना विचार प्रकट करने की शक्ति हासिल कर सकें ।

[६] इनके लिये हेतु अर्ध-मैत्रिक प्रथम की नदी लेना चाहिये, इतिहासिक प्रश्नों की भी लेना चाहिये; शक्ति सम्पन्न-मैत्रिक प्रश्नों को प्रसार की सुविधाएँ मान्यता चाहिये । यह स्पष्ट है कि जब हम साम्यवादीय समाज की बात करते हैं, तो उस समाज का बोधा क्या होगा, उसका इतिहास क्या होगा के सामने होना चाहिये । हम दिखा में अपने पास कुछ सामग्री है और कुछ सामग्री तो खराब बची रहनी । शासन प्रणाली में भी उपन्यास पाठनी है "जगत की सहायता" पर भी विचार करना चाहिये, उसे विभिन्न भाषाओं में तथा विभिन्न स्तर के लोगों के सम्मर्पण में हासिल करके-पुस्तकों में शक्तिपूर्ण प्रश्नों की सम्कलन है । देशी बुद्धिवादी राष्ट्रीय तथा विदेशीय के विचारों में से भी विचार की जा सकती है । आज के वर्गोत्पन्न के दृष्टि से विचारों से भी विचारवत्त की सम्बन्ध बनी चाहिये ।

उत्प्रेक्षक कार्यक्रम के उदाहरण सखाओं के कार्यक्रमों के लिये कुछ ठोस प्रसिद्धि की व्यवस्था भी करनी होगी ।

यह कुछ निम्नलिखित प्रकार का हो सकता है :-

[१] साम्याय योजना : १९९ मार के लिये कुछ कार्यक्रमों और पुस्तकों की सूची कार्यक्रमों के सम्बन्ध के लिये बनानी चाहिये । ६ माह के अन्त में उनकी प्रिन्सिपल और पुस्तकों में से प्रसारण बनाने चाहिये । कार्यक्रमों उत्पन्न करने, अन्तः-अन्तः स्थापन पर से लिख कर भेजें । उत्तर लिखने में वे आपनी बाधा तथा सुझावों से १५ दिना के अन्त में । उत्तर में जवाब का समय १५ दिना का अन्त में ही हो सकता है । देशी पत्रिका और मासिक प्रकाशित करना चाहिये और भाषापरकता पर भी प्रमाण-पत्र भी देना चाहिये ।

[२] उत्तरोत्तर स्थिति परीक्षा के अन्तर्गत प्रश्न का सूत्रीय स्तर पर गीतियों से विचार करने की शक्ति की भी परीक्षा की जा सकती है, ताकि उसका नतीजा भी लिखित परीक्षा के नतीजे के साथ सामिल किया जा सके ।

[३] ऐसे बुने हुए कार्यक्रमों को जो हमें के काम में नेतृत्व देने लग्य हों, उन्हें २ या ३ माह तक का परिचयान लिख विचार विमोचन का आयोजन करने देना चाहिये । ऐसा परिचयान विमोचन "सर्व" के रूप में न होकर विमोचन के माध्यम में "मान्य" हकारों के काम की दिग्दर्श

दारी देखर लेन में होना चाहिये । बीच-बीच में २ या ४ बार १५-१५ दिन के लिये उन्हें विमोचन में सुख कर विभिन्न पदसूत्रों का गहराई में विमोचन दिया जाय ।

[४] उत्तरोत्तर विमोचन के विद्यमान के प्रसिद्धता में विभिन्न जनों में काफी समय देने वाले जेप्रीण कोसवतानो ने भी पुनः कर सामिल करना चाहिये । ऐसे लोगों को सामिल कर कक्षा चाहिये, जब विद्यालय का काम कम से-कम सारक कर चल गया हो और वे नीचबान कम से-कम एक सार के अन्तर्गत वेन में निर्मातित रूप से इकाई के सम्बन्ध में छोड़े हुए हों ।

हम प्रसार के स्वरूप रूप से कार्य करनी के का प्रसिद्धि करके रखने से ही वे नये मोड के तरी स्वरूप और दिशा में उत्पन्न प्रश्न कर सकते हैं ।

जब हम करते हैं कि इच्छापूर्वक की आनन्द-मानस ही साधक इच्छा करता होगा, तो इसका मतलब यह नहीं है कि सम्बन्ध-सम्बन्ध सन्धियों को कभी भी सम्बन्ध-सम्बन्ध साधकों की सहायता न करे जाय । उसका मतलब इतना ही है कि जब तक वे स्वयं और साम्यवादी प्रसारण के आधार पर सामग्री की उन्नत सुविधात्मक रूप हों तथा कुछ सुविधात्मक कार्यक्रमों का तालकाल के साथ वे सामग्री, तब तक के लिये देशी सुविधात्मक स्थापित करनी चाहिये । बहुमत की सम्बन्धित विमोचन के अनुपगत में प्रसारण इकाई की परिचालनी करनी चाहिये ।

मात्र लोग प्रश्न करते हैं कि ऐसे कार्य में लिये कार्यकर्ता क्यों से आयेगे ? जिस समय मासिकी के १५५ में नव उत्पन्न न की धरुं करी ही उत्पन्न समय का-नूनी तथा अन्य कार्यक्रमों में भी यही समझ किया जा । मासिकी में जवानों में यही बात या कि कार्यकर्ता यही होंगे, जो अब तक थे । उनका कहना ठीक ही था । कार्य में कार्य को विचारते हैं । देश में लिये हुए पत्रिका ५० हकार का कार्यकर्ता हैं । उनमें से विभिन्न विचार-रहित तथा शक्ति कार्यकर्ता के लिये अन्तःसम्बन्ध की ओर, उन्हें पुनः कर उनको नये मोड का काम लेना चाहिये और उत्तरोत्तर तरीके से उन्हें परिचयान की व्यवस्था करनी चाहिये । उनमें से कुछ सखा होंगे, कुछ कुछ नदी होंगे । कुछ नये कार्यकर्ता भी इस विचार और तरी के सामिल होते रहेंगे । अधिक जवान को कार्यकर्ता में से प्रारम्भ में खरी तथा साम्यवादी के काम में मदद नहीं वे और न विचार-विचार के अभावकी थे । फिर भी हमने पिछले ५-६ माह के उत्पन्न जवान परसे की प्रगति तथा उत्पन्न न दिग्दर्श के काम में उत्तरोत्तर विमोचन किया है । वह सब कार्यकर्ता नये अन्त और उन्होंने काम

इस अनुष्ठान में चुनने लीके ही सैनिक-शाला या उत्तरी लाइम की दृष्टि युवा की और इच्छापूर्वक चीज को नहीं है तथा मासिक के मास में एक प्रकार की साधक विमोचन आयोजन के न विचारों की एक तरफ रखें तो भी सरकार की ओर से चाहू होने वाले सैनिक-शाला पर को सोच-समूह बनाने अभाव में आया है, उसको पद कर आशर्भ होता है कि भारत के वास्तु उद्योगियों की सैनिक लाइम के स्तर की बनना सम्भव चुनिये वे विमोचन के माध्यम से ।

पट्टी बात तो यह है कि इन शालाओं में इच्छापूर्वक विचारों का सार्वजनिक रूप से १६०० से २००० रूप्ये तक पा होगा । इनके अलावा २०० रूपया पोशाक आदि का अतिरिक्त वर्षा-समय तक को देना होगा । सर्व के इन आँकड़ों को देखते हुए हमारे नीचबानों को भी सैनिक सम्बन्धों को सार्वजनिक रूप से देना चाहिये । आज हमारे देश में सुविधायक समाज ही गया है, फिर सुविधायक के बारे में हमारी परम्परा में को बदलना है, वह आज की सम्बन्धता है । और कुछ नहीं तो सुविधायक को सार्वजनिक, वेबल, सन्धियों, उप-सम्बन्धों और जीवन से अलग होना चाहिये और इस प्रकार के सुझावों का उत्पन्न विचारों, देशी साहित्य की योजना उनके लिये होनी चाहिये । हमारे देश के सैनिकों को राख्युमार्ग की व्यवस्था ही वहाँ की साहित्य सम्बन्धित जीवन में पाग पोशाक बनाना तो विश्व प्रसार करने का रोना अपनी नारदीय पोशाक और अन्तःकार-आयुर्विज्ञान में सम्बन्ध कर लारी इतना लो डेटे वे, उसी प्रकार इन नये सैनिक और सैनिकों के हाथ ही आयेगे । आज भी भारतीय सेना में पोशाक, शीत और गीली की आरुतिपूर्ण, हार और कुण्डल आदि से जवाने उनको ही हृदय और दिन में वचन कर कपी से सार लंबाये रखने सखा ही तरह की दृष्टि अन्तर्गत सुख पापी है । सामाजिक प्रगति के सार्वजनिक शक्ति में भी यह हीनतापूर्ण अन्तर्गत दिग्दर्शित रहनी का रही है । हम नगराष्ट्रिक नेतृत्वों का बन्ध दुःखाना चाहते हैं कि विद्यमान के सैनिक का आर्युर्विज्ञान स्तर में बने हुए राख्युमार्ग कर नहीं हो सकता, परन्तु अनेक युवा और जवानों के ज्ञान-बुद्धि, मैतन्त्रीय और सहाय्य जीवन की बलि और जवानों के सैनिक के लिए सहाय्य, उच्छेद विमोचन और विदेशी युद्ध भीरु का होना चाहिये ।

इन सैनिक-शालाओं की बनाना में दूरीय शास्त्राद वाद यह है कि बालकों को बनान से ही सामान्य प्रगति से और देश के सामान्य जीवन से अलग करके सैनिक जीवन के लिए उन्हें तैयार करने का विचार उत्पन्न निर्दिष्ट मान्य होता है । अंगियों के सैनिक-शास्त्र में इस प्रकार का विचार अच्छा था । वे अन्तर्गत विचारों को सामान्य प्रगति से अलग, अन्तःसम्बन्धों और उत्पन्न तथा एक अलग ही भावों के बनाने में विचार करते थे-जब करके विद्यमान में को उनके सैनिक रहते थे, उनके बारे में उनकी यही कल्पना थी । सैरि-साराण है कि इस प्रकार के सैनिक-शास्त्र को सैरि-साराण से राहों न भी नव गमनीयता मान कर छोड़ दिया है । सैनिकों को बनान से ही अन्तःसम्बन्ध के सैनिकों को बनान में एतना उत्पन्न नहीं है । बनान में भी लेना में जाने वाले या न जाने वाले सभी कार्यको या रहन-सहन पर प्रकाश का कीर्ती ही करता है । सामान्य शालाओं में ही भी पोशाक उन्नत के सैनिक शालाओं को पुनः करके उन्हें निर्दिष्ट सैनिक विमोचन देना चाहिये ।

इन सैनिक शालाओं की योजना में शीतल दीय यह है कि उनका शिक्षण अनेकी माध्यम के बरिये होगा, देशा निर्धार किया गया है । इन लोग बन विमोचन में एक-दूसरे से सम्बन्धित बरक करते हैं, जो करते-अन्तर्गत यकीन और कार्यकर्ता की सहाय्य करते हैं । यह दुःखाना है । यथा हमारे बुद्धिमान नेतृत्वों की अन्तर्गत भाषा को सैनिक की भाषा समझते हैं ।

आज के सैनिकों से देशी सैनिक प्रारण्य है । सैनिक विद्यालय की योजना अन्तर्गत में हमने भी बने-उत्पन्न योजना कि वे विदेशी, विदेशी, शक्ति और परिचय-समय देते सितम्भ-साहित्य की सहाय्य हैं । यह देश के विद्यालय पर-उत्पन्न सरोधन ही ही सैरि-साराण के विद्यालयों की व्यवस्था है ।

एक अन्तःसम्बन्धित और लेखक को सैनिकों के सुझाव यह रहना चाहता है कि सैनिक-शास्त्रों को यह योजना मल्लक बुद्धि से मान्य-साराण और शिक्षण-शास्त्र के उत्पन्न विद्यालयों के विद्यमान हैं ।

योजना का हृदय अन्तर्गत में वीरों के उत्पन्न करने का ही तो उच्च योजना में से सबसे विमोचन उत्पन्न की परिचयान विमोचन बना है । स्वयम् आश्रम, वेदकी (निरय हला)

गिला । वे ही कार्यकर्ता नये काम को भी सैरि-साराण और देशी के सुझाव देते विमोचन को नये मोड के सार्वजनिक नई-नई शीत नई करके हैं ।

उत्तरोत्तर योजना दिखा-सूचक जवान है । वह सैनिक व देश के लेखकों को अपनी-अपनी परिचयान शक्ति के अनुपगत सितम्भ योजना बना लेनी होगी ।

[समाप्त]

भारतीय भाषाओं पर संकट : २

रामाचार

वंसे हमारा यह काम है कि हम भी केवल नौकरशाही के चक्कर ही हिन्दी-बिरोधी और अंग्रेजी-पक्ष में। अब तो हिन्दी के विरोधियों को परिधि और भी विस्तृत हो गयी है। अनेक राजनीतिक भी ईशानदारी से इसके विरोधी बन गये हैं। इतमें सबसे उद्युत हमारे भाषासुद्ध बुजुर्ग राजाजी हैं। एक समय था, सब राजाजी हिन्दी के सबसे धुरंधर समर्थक थे। उन्होंने कहा था कि यदि शासन करने वाले लोगों को जनता के जीवित सम्पर्क से बलाय दूर कर स्वयं निर्जीव नहीं हो जाना है, तो उन्हें हिन्दी को अखिल भारतीय स्तर पर अपनाया होना, क्योंकि सर्वज्ञाचार के लिये सभी भारतीय भाषाओं में से यही एकमात्र सर्वसुलभ भाषा हो सकती है। आज देश का दुर्भाग्य है कि उनके जैसा तपस्वी देवमल अभेजी का इतना बड़ा समर्थक बन गया है।

परन्तु जैसा हमने पहले ही बयान किया है, इस व्यापक विरोध का प्रारम्भ नौकरशाही की स्वार्थ-भावना एवं उनके भिन्न-विन्नताओं में है। उन्होंने कोराव से स्वयं पीछे रह कर राजनीतियों को बने कर दिया है। अहिन्दी भाषा-पक्षी जनताधारण हिन्दी-बिरोधी नहीं है, इतना एक बहुत बड़ा प्रमाण हिन्दी विरोध में भी है। वे पिछले कुछ और सुखी ही दृष्टि में हिन्दुत्व-भ्रमभी छोड़ें हुए भी अहिन्दी लोकप्रिय हिन्दी क्षेत्रों में हैं, प्रायः उतनी ही लोकप्रिय वे अहिन्दी क्षेत्रों में भी हैं। इन्होंने यह भी जानिये होता है कि वे हिन्दी भाषा आधारित वे संस्था भी खोलें हैं। इस दृष्टि से जब अक्टू १४-१५ बरोट इलाकों की खण ही नहीं है, तबिक यहाँ २० बरोट लोगो के लिए भी यह व्यवहारः सुगम है। वे लोग पढ़-लिख नहीं पाते, यह कोई महानुभाव दलील नहीं है, क्योंकि भारतवर्ष में पढ़े-लिखों की संख्या ही निकाई है। सारी भाषाओं को मिला कर देखने से भी कुछ पढ़े-लिखे १० प्रतिशत के अधिक नहीं हैं। अंग्रेजी जानने वाले तो १ प्रतिशत ही हैं। यह साठ फाउंड (समय) इन चन्द सुदृष्टी मर. लोगों का पैदा किया हुआ है। यही सुदृष्ट परिचित विद्या के माध्यम को ठेकर भी है। एक तो यह विद्या पढ़ाने का इच्छा है और हमारे बच्चों को हैवान बना रही है, दूसरे हलका माध्यम अहिन्दी भाषा को के काण्ड विचारियों के लिए वह अल्पविक्र भ्रमक है। हर्ष, नौकरशाही के साहचर्यों के लिए अक्षर यह मात्र-रूप नहीं है। इनके घर का सतत सातमान व्योमजीय होता है, रसम-सहन केरा ही, घर की व्यवस्था अंग्रेजी-वस्त्र से पूर्ण और माया तो उनकी अंग्रेजी ही है।

साप्ताहिक बच्चों के अंग्रेजी में जोतले हैं और उन्हें अंग्रेजी ही सोचने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। इतिहास उन बच्चों को स्कूल में भी यथेष्ट सहूलियत होती है। पर इनकी सहायता तो प्रायः नगण्य होती है। परिणामः इन बच्चे-के-सिद्धों के बच्चों की शिक्षा के लिए अविश्वस्य होना के बच्चों को यही कठिनाई का सामना करना पड़ता है। यह विद्यार्थी सभी राज्यों में मिलेगा। यहाँ भी हिन्दी भाषा-पक्षी और अहिन्दी भाषा-पक्षी राज्यों में कोई अन्तर नहीं है। एक तो यह है कि नौकरशाही में अपनी एक विरिद्ध संस्कृति ही प्रचलित कर दी है, जिसका मेहरबान अंग्रेजी भाषा है। यह संस्कृति मर नहीं है। अंग्रेजों के समय से ही पत्नी आधी है। परन्तु पहले समाज का यह अंग्रेजी के जाने के साथ-साथ और ही रही है। लेकिन नौकरशाही के साथ सम्बन्ध होते ही यह विद्यार्थी ही गयी और अब तो इनके चेहरे में उसके टाटा टार वेज में यैज का निरमोह होता है। छोड़ हमारा सदा शिक्षित वर्ग इस अस्वाभाविक एवं माया-मूक्यता से सर्वथा हीन संस्था का विचार करे है। यही सब है कि अंग्रेजी खोलने वाले का इस देश में सर्वत्र अधिक प्रभाव होता है। केवल वे ही माध्यम जानते बासी में हीन भाव बना जाता है। यह छोटी प्रक्रिया मिल कर हमारे देश की विद्यार्थ-प्रवृत्ति में परिवर्तन नहीं होने देती और न ही उपरान्त माध्यम मरने देती है। इस तरह वेच के अक्षर १५ पंथे हुए हैं, जो सीधी-पट्टी बच्चों को यैज-भाषा बनाते का रहे हैं। राष्ट्रपति का धन भी इस विजय स्वयंसेवा का विचार बन गया है और इतने भाषावाद के मर्षक-रक्षक की उभय दिशा है।

अब हिन्दी की बचत हिन्दुत्वानी नाम दिया होता, जो अधिक उल्लुख होता। सम्भव है कि उपा हाउस में मौज्जा हाउस उल्लेख प्रति अधिक हम्पटरी रत छकते। लेकिन यह कुछ जगजग ही ईशानदारी का चरित्राचरि यही है कि देवनागरी लिपि में हिन्दी यद्युभाषा के रूप में विधान में स्वीकार हो जाने के बाद भारत के विद्या-मंत्रियों को उभे सत्कारी चरित्र में हल्लेमल करने के सम्भव में कुछ से ही आश्चर्य कम उतना चाहिए। परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया। १० बचतहाउस नेदक पर मौज्जा हाउस का बहुत प्रभाव था। अतः मौज्जा हाउस की नीति अदि के बारे में उनसे कोई कुछ नहीं कहा सकता था। इनके अलावा परिचर नेदक स्वयं भी तो अंग्रेजी पक्ष में। उन्हें भी एक टाटा से अंग्रेजी ही ही प्रवृत्ति होती है। हिन्दी तो उन्हें उतनी ही आती है, जितनी बचत में लोकप्रियता कायम रखने के लिए आवश्यक है। इनके अन्तर्गत नौकरशाही भी अनेक-पक्ष तो हिन्दी के विरोध में जाने ही जाती थी। अतः वे सारे संयोग अपरत दुर्भाग्य ऐसे मिल गये कि अंग्रेजी का प्रयुक्त न सिर्फ कायम रहा, बल्कि बढ़ता गया। भारतवर्ष के दुर्भाग्य के लिए पक्ष नहीं आकर न कितने प्लेबेट लक्ष कर रहे थे। परिणतः इस इष्ट भवानक विधि के सामने अब सदे हुए हैं।

अतः अब प्रश्न है कि किया क्या जाय। केवली राजभाषा का चयन इस समय इतना विचारमत्त बना दिया गया है कि उनमें नर में हिन्दी के उधार देना और भी सुधी विधि पैदा कर देना। उधर यह गांठि से विचार करने के लिए उल्लुखता प्रवृत्ति नहीं है। अतः अब लेख में हिन्दी के साथ अंग्रेजी को अंग्रेजी सुधी ही देखना होगा। उल्लुख समय आने पर अंग्रेजी को छोड़ने-उपेके सुधी देने का प्रयत्न किया जायगा, यही आशा करके भी का पवनी है। परन्तु राज्यों के लक्ष के देवीय भाषाओं में का सम्बन्ध कर देने में अनेक भी दौल बरहान नहीं करनी

चाहिए। हमारे राजनेता मात्र अंग्रेजी-पक्षी बनें कठोर और भाषण देने के बजाय इतना काम ही करवा दें, तो देश का पति वेना हो जायगा। इस सम्भव में केवली भाषाओं की अपारमिता ही सुधार देना नौकरशाही के हाथों में खेला होगा, जो लोग अंग्रेजी के अत्याय विरोधी और भाषा में सोच ही नहीं पाते, वे ही ऐसे देवीय सुधी खोलें देते हैं। पिछले १५ बरों की दीर्घकाल में भी वे लोग अंग्रेजी के अक्षर कम और भाषा उतनी ही बानी हैं, जितनी स्वल्पता प्राप्त होने के काम आने थे। उन्होंने कभी यह प्रयत्न नहीं किया कि कुछ काल बाद उन्हें अंग्रेजी को छोड़ कर केवली भाषाओं में जाने का प्रयत्न करें। अतः अद्य भाषाओं की क्षमता के बारे में संशयहील होने की मनोदृष्टि को ही बरतनेवाली है, जो अब नहीं बचने देनी चाहिए। यही माध्यम में रखने की बात है। केवली भाषा को उधरभाषा के रूप में स्वीकार कर लेते हैं। बाद ऐसा न हो कि वह निरपच अक्षर में न लया जाय, तब कि अक्षर-रक्षक होने में आता है। नौकरशाही का यही ही हल्लेमल है कि किया हुआ निरपच कायम में ही रहे, अक्षर में न आने पाये। इस मोर के भी सावधान रहना पर्याप्त नहीं है। यहाँ देना न हो कि जो परिचित हिन्दी के लिए पैदा कर दी गयी है, यही केवली भाषाओं में के लिए भी पैदा कर दी जाय। प्रयत्न पैदा ही बन रहा है। समय रहते पैतने का स्वभाव हमारे नेताओं का नहीं है। अतः सही-पक्षी को भी इस और अपनी अधिक-के-अधिक बलि मराने चाहिए।

विद्या के माध्यम के परिवर्तन के बारे में भी विचार नहीं होना चाहिए। अनेक राज्य में यहाँ की केवली भाषा को निरक्षर यह माध्यम बना दिया है। इस सम्बन्ध में अनेक महानुभाव, मौज्जा और नौकरशाही, बरही-बरही बनें बरत रहे हैं। कभी उतना का बचल उठाते हैं, कभी केवली और सत्कारी लिपि ही उभे कहते हैं। वेते ईशानदारी के साथ हमारी भाषाओं को उल्लेख का बचल उठाते हैं, कभी केवली और सत्कारी लिपि ही उभे कहते हैं। जितनी बानी आती है। अतः अतः बलाय जाती है, बत कि अंग्रेजी में दाद सख से कुछ अधिक है। केवली में हिन्दी के अधिक प्रथ मिलेगी। फिर भी अंग्रेजी-पक्ष उतनी-सी बनी कर रहे हैं। किन्तु यह विचारों के अक्षर तो

सर्वोदय-पात्र का विनियोग : विनोवा द्वारा स्पष्टीकरण

[राजस्थान से निवृत्त वाले 'शमराज' साप्ताहिक के ता० ७ मई के अंक में जैसलमेर जिले के सर्वोदय-पात्र नाम के बारे में एक तस्वीर की जानकारी छपी थी। एक व्यक्ति को प्रयत्न से कुछ तरह जिले के कई गाँवों में सर्वोदय-पात्र का काम हुआ, उसका स्वरूपित करने उस तस्वीर से होता था। सर्वोदय-पात्र द्वारा संगठित बनन या पैसे का किन कामों में उपयोग किया गया, इसका उल्लेख भी उगम में था। उस तस्वीर पर मैं विनोवा ने 'शमराज' के संपादक को पत्र लिख कर कार्यप्रतिष्ठानों का ध्यान इस ओर खीना है कि सर्वोदय-पात्र का क्या उद्देश्य और फल-फल है तथा उसका विनियोग किन कामों में होना चाहिए !

'शमराज' में प्रकाशित जैसलमेर के सर्वोदय-पात्र के नाम का व्यौरा तथा विनोवा का पत्र हम नीचे दे रहे हैं।—सं०]

जैसलमेर जिले में सर्वोदय-पात्र कार्य

"संत हर्षोदासिद पिछले एक वर्ष से आदिवासी क्षेत्र में सेवा कार्य कर रहे हैं, और बहुत दूर-दूर गाँवों में प्रयत्न करते सर्वोदय-पात्र की व्यवस्था लोगों को समझा रहे हैं। आदिवासीयत्री (देवी) के मन्दिर का जीर्णोद्धार भी करवा रहे हैं और इस द्वारा अपने के कर्तव्य का चरम उन्होंने प्रदर्शित करने लगे हैं। सर्वोदय-पात्रों का विना-जोरा तथा अथक किम प्रयास उसका विनियोग किया गया, उसकी तस्वीर निम्न प्रकार है :—

गाँव	तस्वीर	कुल परिवार	सर्वोदय-पात्र	विनियोग	निष्पत्ति
भादरिया (पोरम)	१८	६८	१०	बच्चों को शिक्षण-साधन दिलवाये गये।	कुल अनाज १२॥ मन होगा।
केरू (जैसलमेर)	७०	७०	७०	रापें नहीं किया।	अनाज की किले के ६.१५० जमा हैं।
सोडारकी (पोरम)	८०	३२	३२	मुलतहालय के निवासीयों में वितरण भी कराया जाता है।	(१) कुल अनाज मन ६॥ हुआ है। (२) अनाज कुल ७० पाए हैं।
धारम	७०	७०	७०	रापें नहीं किया।	कुल अनाज मन ८ बरत एकजित हुआ है।
खटी	१००	७३	७३	रापें नहीं किया।	कुल अनाज कुल मन ११ हुआ, जिसके १.८८॥ हैं।
पौखिया	१००	७०	७०	पक्षियों को डाला जाता है।	कुल अनाज मन ६॥ हुआ है।
नवावल	८०	५०	५०	अमी एक सहायक नहीं गया।	
गिरन	१०००	२५	२५		
सोडारकी (जैसलमेर)	१००	२०	२०		
दुपु	७०	२०	२०		
सोडारकी (पोरम)	१००	२०	२०		

यह पिछले छ महीने का प्रयास है और वैश्व संघ द्वारा प्रकृतिक के द्वारा है। गाँवी-वाल-मिदर जैसलमेर के १२५ विधायी नियम ही विधातय में रहे गये पात्र में बात आने है, जिसका विनियोग करने था है। पंचायत समिति जैसलमेर अपने प्रत्येक स्कूल में सर्वोदय-पात्र रखवाने के लिए प्रयत्नशील है।

—अभयानन्द मण्डेडवरी

विनियोग के सम्वन्ध में विनोवाजी की सूचना

'शमराज' के ७ मई अंक में जैसलमेर-पोरम तस्वीरों में जो सर्वोदय-पात्र का काम चल रहा है, उसके बारे में सुदूर जानकारी भी है। जिले के संत हर्षोदासिद ने इसका सुव्यवस्थित काम किया, देश कर लोभी हुई।

इसमें सर्वोदय-पात्र के विनियोग के बारे में कुछ सुझावों का पत्र आता है। प्रबन्धों की तात्पर्य, पुस्तकालय, पक्षियों का बोका-निर्वाह यह सभी बातें कम-से-कम प्रकृति ही हैं। लेकिन सर्वोदय-पात्र का उद्देश्य उससे नहीं समझा। सर्वोदय-पात्र की योजना वाणिज्य-सोसायटी के अन्तर्गत है। वाणिज्य के माध्यम से विचार को यह जोड़-समझा है। उसका उपयोग वाणिज्य-सोसायटी का विभाग, सोसायटी और इन्डस्ट्रिय में करना चाहिए। अमी तस्वीर-कालेजी में उसके लिए वाणिज्य ही नाम सुझाया है, अर्थात् वह नाम में भी प्रयत्न करना है। क्योंकि उसके उसके विनियोग के बारे में स्वयं स्पष्ट नहीं जाती है। बाका बकात हैं सर्वोदय-पात्र, जो सर्वोदय-पात्र का आयोजन करते हैं, इस बात का स्वागत नहीं है।

दार्जिलिंग वायस, मोदीवादी (आराम) १० मई, १९६१

—विनोवा का जय जय

डाकू-समस्या एवं श्री जौहर का वक्तव्य

[पिछले दिनों मध्य प्रदेश के राज्याध्यक्ष इन्दरदेव जनरल श्री जौहर ने जो वक्तव्य दिया था, उस पर पिछले अंक में श्री काशिनाथजी विनोवी ने क्या आशयपूर्ण भावक भाषा का? लेख में अपनी विवेचना प्रकट की। यहाँ पर बानुपुर में निरन्तर जारी साप्ताहिक 'लक्ष्मण' में जो अपने विचार प्रकट किये हैं, वे रहे हैं।—सं०]

मध्य प्रदेश के पुलिस-विभाग के निदेशक जनरल श्री एलम जी गद्दी उनके रचना पर भी जौहर जीक तरह से चला रहे हैं, ऐसा उनके ताजे प्रकल्प के पक्ष स्पष्ट है। श्री जौहर तो भी राजनीति से भी आगे जाकर बताते हैं कि श्री इन्दरदेवजी की मुक्ति के लिए ही डाकूओं में अन्त-मार्गण किया था। ऐसी भीर न जाने क्या-क्या तर्क उठाने चक्रे हैं।

पर डाकूओं में आत्मन्याय-विनोवाजी के सम्बन्ध कर्णों किया, उसका डेटू (सोदीय) देनेका नाम अभी तक तो-निर्वाह नहीं है, सरने अने-अने तर्क ही हैं, परन्तु एक तथ्य स्पष्ट है कि 'वारे' भीत की लडा भी कर्णों न मिले, आत्म-समर्पण करना है, यह परिणाम जो उप-आत्मन्याय का स्पष्ट ही था। इस परिणाम से ही डेटू जाना जा सकता है। अमी मुकदमे चल रहे हैं एवं वहाँ वाणि-मैत्रियों द्वारा भी काम चल रहे हैं, उनका सुभाषण करने पर उद्यम तथा भी चलता है कि जो भी दुभा है, उसका किन्तु अप्रत्यक्ष अक्षर वातावरण पर पडा है। कई लोगों ने हथियारों के दारुवें 'विप्लव' नहीं करपे, कर्णों ने डाकू-निर्वाहों में तर्किय बाध कर दी, कर्णों ने सेव्यासी डाकूओं के पराजनों की मदद की, ये सारे प्राम परिणाम नहीं आ सकते थे, यदि आत्म-समर्पण में 'छत्र' होता। सर्वोदय-पात्रों के एवं पुलिस-कर्मों के संग्रह समझ बनता में होती है। यह सब बुद्धि के स्पष्ट-सोदा परिधान देती है। वहाँ की बनता ने मन ही मन चमत्ता लिया है कि जो नाम पुलिस ने नहीं किया, वह उप-आत्म-समर्पण ने किया है।

यह स्पष्ट समझने तक नहीं हुई, इस बात का, एवं साथ ही पुलिस के मार्ग में बाधाएँ अने का।

'शमराज' हत करके ही वहाँ से हटवाया, ऐसा काम कभी निगम ने नहीं किया था। अन्त-मार्गण में ऐसे भी, जब तक कि उस मार्ग का अन्त-मार्ग स्पष्ट न करे। कुछ सर्वोदय-पात्र उद्यम अन्त-मार्ग में अने भी हैं, मगर पुलिस ही उनको बाध कर रही है। यवादी में पूरी बात ही स्पष्ट ही जाती है या अती तकनीकी ही जाती है।

एक बात हमारी समझ में नहीं आती कि पुलिस के सम्बन्ध बाधें से आयी है न जो विनोवा ने, न सर्वोदय-पात्रों ने नभी ही सकारा के यह डेटू है कि ये अपना अभियान स्पष्ट कर दें। उनका अभियान जाहूँ भी है। उन वक्त कर्णों से आयी है।

सुख बात यह है कि पुलिस-विभाग के गिरा और भी कोई बरिण डाकू-समस्या के हल में किये हुये-मार्ग किया जा सकता है या नहीं।

श्री जौहर ने एक बात अन्त-मार्ग के मार्गों की यह सी है। उन्होंने कहा है कि विनोवाजी यदि और वहाँ बने, तो फिर वह समस्या हल करना मुश्किल होगा।

श्री जौहर ने अपने ही पूर्व स्टेटमेंट को 'काउन्सिलर' किया है। उन्होंने ही स्वीकार किया है कि विनोवाजी के द्वारा कुछ ही सकता था (यदि वे नहीं करते), याने विनोवाजी के द्वारा कुछ भी नहीं हुआ, यह आरोप उन्होंने ही स्वीकार कर दिया। कर्णों कि विनोवाजी वहाँ रहे, कुछ किया, उस भी कुछ किया। हमने तो आगे की आशा भी जौहर ने प्रकट की। अन्त-मार्ग और वहाँ एने की बात, जो कर्णों कि क्या विनोवाजी निम्नगी मर वहाँ रहते। और सुरा म सारा के न रहे, श्री अन्त-मार्ग इति वे बीच होनी चाहिए वह यदि वह मार्ग तर्क-सोदा ही, तो उन पर काम होना चाहिए। अन्त-मार्ग का अन्त-मार्ग केवलेकों का है यह स्पष्ट है, पर सकारा एवं पुलिस की हस्तों ही मदद पर अनुपपन्न को लेना ही चाहिए।

उत्तर प्रदेश में स्वयं अभियान से कुछ प्रयोग भी किये हैं एवं 'कुले' के लखे किये हैं। उनी उद्यम समाजवाद्यन से राज्यों ने जाता है कि हज्ज एवं अन्त-मार्ग में समझ का हज्ज-पुत्रा-कर्मों वरीयों से अन्त-मार्ग का विचार भी खेड-खेड आती है। कर्म मध्य प्रदेश में ऐसा नहीं हो सकता।

श्री जौहर एक अने हथियारकों के हमारी विनोवा है कि वे एक समस्या की बज में बनते उद्यम तस्वीर के अन्त-मार्ग कर एवं प्रकृतिक सूरीय से ही अन्त-मार्ग-समस्या हल करने का आग्रह न रख कर दुनो भी मार्ग लोवें।

महाराष्ट्र में ग्रामदानी गाँवों के

ग्रामीणों का शिचिर और सामूहिक पदयात्रा

राजगिरी-लोहापुर विद्ये की चार सहस्रों की ग्रामदानी गाँवों के ८० व्यक्तियों ने भागवत क्षेत्र के वेरदेव गाँव में ता. २२-२३ मार्च को हुए शिचिर में भाग लिया। वेरदेव गाँव का ग्रामदायक सिद्धे चर्च हुआ था। शिचिर के लिए ११ ग्रामदानी गाँवों से १०००० की सहायक आयुक्त नीतों और भ्रम के रूप में मिली। पहले दिन श्री गणेशदान विद्ये भागदानी के शिचि शिचिर में आये थे। उस दिन विचारधर्मियों ने अपने गाँव की बानगीरी और अपने कार्य का परिचय दिया। दूसरे दिन गाँव की विधि-रुक्मलाओं पर चर्चा हुई। ता. २३ को दोपहर की भागदानी क्षेत्र के ग्रामीणों का सम्मेलन हुआ। शिचिर के साथ ही श्वशी-सामोचोप और अरर चारवे की मोदी की प्रगति की हुई।

ता. २४ से २८ अप्रैल तक विचारधर्मियों की चार सत्रियों ने क्षेत्र के चारों ओर के गाँवों में पदयात्राओं की। ऐसी पदयात्राओं द्वारा ग्रामीणों को प्रत्यक्ष विचार ही मिलता ही है, बल्कि दूसरे गाँववालों को प्रभावित और प्रेरित करके विचार की समझदाया जाता है। पदयात्रा में कुलका, सर्पतवाड़ी के विचारों की धरीक हुए थे।

दो नये ग्रामदायक प्रान्त पदयात्रा में सार्वतन्त्रादी सहस्रों के धारणी, जलसंपत्ता ५०० और हुडासी, जलसंपत्ता ३०० इन दो गाँवों ने ग्रामसंकल्प आदि किया। ता. २९ अप्रैल की भी ग्रामदायक की उपस्थिति में ग्रामदानी गाँव सिद्धे में

पदयात्रा की समाप्ति हुई। श्री चण्डिकाबायी ने उस क्षेत्र के ग्रामदानी गाँवों की प्रगति के लिए समाधान प्रयत्न करते हुए चर्चा के सभी, दो गाँवों की प्रगति और प्रगति के लिए आवाहन किया। उन्होंने कहा : 'समाधान का, सर्वोपकार का विचार प्रत्यक्ष रूप में हम लोगों में प्रगतिशील गाँवों में प्रकट किया है। जो लोग अपने को कुल-कुल करके हैं, वे आदर्श समाज-रचना नहीं कर सकते। देश के लोग सर्वोपकार के ही अपना सर्वोपकार विचार कर सकते हैं, न कि स्वार्थों के। और यह बात वे जल्दी समझ सकते हैं, एगलियुट समाधान का विचार उन्हें बँधता है। उस पत्र अगर यह कार्यक्रम अपना लें, तो देश में महान् प्रगति ही सकती है।'

सिवनी जिला सर्वोदय-कार्यालय की ओर से श्री सत्यनारायण शर्मा ने १९६०-६१ का आय-व्यय विवरण प्रकाश किया।

क्र. नं.	आय	क्र. नं.	व्यय
५१००८	सिद्धे चर्च की धारणी रकम	१०१०००	विनीशारी की विद्ये की ओर से वापर भेंट
५००२२	ग्र.अ. सर्वोदय मंडल से विनीशारी की दो ग्रीक भेंट का किराया का हिसाब।	११२००५	विनीशारी की धारणा में बनवना तथा अन्य लक्ष्य
१०१०००	विनीशारी की विद्ये के ३३ व्यक्तियों द्वारा भेंट	११००१८	अभियंता, कार्यकर्ता भोजन
१२२०००	साधनगत, सामुदायिक	११५००६	प्रवास
५५०६५	सर्वोदय-पत्र के	५२०००	स्टेशनरी
११३०००	सुवाबिल से	२२०००	गोलेट
१०००००	हरिनन्द क्षेत्र सच को जनपद सच, सिवनी के छात्रावास से मिल	१५००५	साथी-सम-व्यय
		१००५	कार्यकर्ता का छठवाँ दिवस प्राप्त की
		१२०५०	सुवाबिल का छठवाँ दिवस करके सेवा सच की
		७०६०	सर्वोदय-पत्र का छठवाँ दिवस प्राप्त की
		७०६०	सर्वोदय-पत्र का छठवाँ दिवस एवं सेवा सच को
		३०००	प्रचार-कार्य
		१११-११	कार्यालय में नन्द धारा
		कुल ११३१५-७५	

कुल ११३१५-७५

जिला सर्वोदय-कार्यालय का कार्य-विवरण : एक नजर में

१००	एकत्र भूदान मात	३३२	एकत्र भूदान विवरण
१५०	ग्रामिणों द्वारा लिखित पत्र	२	आर्थिक सर्वोदय-मंडल
३००	सर्वोदय-पत्र	२	ग्राम-स्वास्थ्य-कार्य
१०	सिद्धे-शिचिर	५१	जनसभाएँ
१०	सोच-सोच	१५	सर्वोदय-पत्र
८	सर्वोदय-पत्रिण गाँवों में	२०००	६० का साहित्य-संग्रह
५	हरिनन्द के लिए सुभा की निर्माण में मदद	१२	हरिनन्द-समाज

भूदान-पत्र, शुक्रवार, ९ जून '६१

रंग-भेद के खिलाफ लड़ने वाले धर्मरीकी सत्याग्रहियों का सर्वे सेवा संघ द्वारा समर्थन

राष्ट्रपति केनेडी के रुख की सराहना

सर्वे सेवा संघ के अध्यक्ष श्री नवकृष्ण चौधरी ने अमेरिकन नीचे नेता पार्सी मार्टिन ल्यूथर किंग को एक बार भेजा है, जिसमें रंग-भेद के सामाजिक अत्याचार के खिलाफ उन्होंने अमरीकी में, सातह्र वर्षों के दृष्टिकोण दर्शाए हैं, जो अत्यन्त चला रख है, उसकी सराहना की गायनी की है। श्री नवकृष्ण ने मार्टिन ल्यूथर किंग को आभारन दिया है, कि अत्याचार के प्रतिगर्क की इस लड़ाई में हिन्दुस्थान ने सर्वोप-कारणियों की सहानुभूति उनके साथ है।

सर्वे के अध्यक्ष ने भारत में स्थित अमरीकी राजदूत को भी एक बार भेजा है, जिसमें यह आग्रह प्रकट की है कि अमरीका के दृष्टिकोण राज्यों के अधिकारियों और जनता को अनुचित हालत हो, जिसके चर्चा नीचे सामाजिकों के साथ भी भेदभाव बाधा का प्रार है, यह बन्दी की समाप्त हो। अमेरिकन राष्ट्रपति केनेडी और उनकी कैबिनेट सरकार ने इस मामले में रंग भेद के खिलाफ सत्याग्रह करने वालों के प्रति सहानुभूति और उनका विचार प्रकट करने के लिए प्रकाशित किया है, जो इस अवसर पर भेजा है, उसका सर्वे सेवा संघ की ओर से अभिनन्दन किया है।

अक्राणी-अक्कलकुवा ग्रामदानी क्षेत्र की प्रगति

सातपुर सर्वोदय-मंडल, धर्मगौर (महाराष्ट्र) के माचों माह के कार्य-विवरण के अनुसार ५ मार्च को सर्वगों में श्री देवनागरी आने और उन्होंने सर्वोदय-मंडल के कार्य के बारे में जानकारी प्रकट की। निम्नप्रमाण में कार्यकर्ताओं की सहायता से किरान खेती के बीच प्राथमिक भाव से देवार करके है। इस गाँव में एक बाण्डू ग्राम सच की धारणी को रोक करक बनाने का कार्य बन-दान बाण्डू ही रहै है। कार्यकर्ताओं ने अपने-अपने क्षेत्र के ३२ गाँवों का दौरा करके ग्रामसभाओं द्वारा लोगों को जनता के भावों और सर्वोदय-पत्र का महान् समझाया है।

नीचे दिये गाँवों में इस तरह कार्य हुआ है :

गाँव	सर्वोदय-पत्र	अन्या-भांडार
निमागण	१५	२१
सूरज	१०	५०१०
बनवत्या	२१	२
दोवला	५८	६

मोलापी क्षेत्र के ११ गाँवों में २५० सर्वोदय-पत्र हैं, २५ गाँवों में १२५ अन्या अत्याच है। बगाना क्षेत्र में १८ सर्वोदय-पत्र और ५ गाँवों के भागों में १०८ अन्या अत्याच है। गाँव की लड़ाई ५९५३ है, और १ कुटी है। कुल १५ वन १० क्षेत्र-लेकलानी में सेवा सच। मनुजकली-मण्डल की ५ पेटियों

श्री जयप्रकाशजी का कार्यक्रम

ता. ४ से १० जून सोबोदेव, ११ से १३ जून धारा जिला, १४-१५; १६ जून बुधवार जिला, १६-१७-१८ जून चण्णप जिला, १९-२०-२१-२२-२३-२४-२५-२६-२७-२८-२९-३० जून ३ जुलाई बुधियाँ जिला। २-३-४ जुलाई भाण्डुर जिला, ५-६-७-८-९-१०-११-१२-१३-१४-१५-१६-१७-१८-१९-२०-२१-२२-२३-२४-२५-२६-२७-२८-२९-३० जुलाई बुधियाँ जिला।

श्री अण्णसाहब सहस्रसूचों का कार्यक्रम

ता. ४-५-६-७-८ जून अण्णवी महाल क्षेत्र, परगना; ता. ८ से १० जून लाली-आण्णवी-कमीशर, परगना; ता. ११-१२ जून लाली-परगना, सोडापूर, भाण्डुर; ता. १३-१४-१५-१६-१७-१८-१९-२०-२१-२२-२३-२४-२५-२६-२७-२८-२९-३० जून लाली-परगना, रैदरनगर; ता. २० से २५ जून लाली-परगना।



महाराष्ट्र प्रदेश के संचित समाचार

● २०-२१ मई और १ जून की वलेंट-एट, आंग्ल और मेसंज कमिश्नरियों के निमित्त भिजे के कार्यकर्ताओं की एक गोष्ठी स्थान मुंबई, कुचर रोड पे ७ मील पर होगी। इसमें सर्वोदय-संस्थान प्रति जन-आंदोलन में से हटने, इसके विभिन्न पक्षों पर चर्चा होगी।

● पंजाब राज्य खादी का प्रयोग-मंडल की ओर से आयोगों द्वारा लेख-उद्योग के कार्यकर्ताओं की बैठक में प्रचार के विचार-मंथनी और मंडल के अध्यक्ष डा० श्री गोपी-चंद मारवाड़े के प्राथमिक लेख-उद्योग की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए खादी अन्वेषी बोर्डों का संघर्ष कर जनता को स्थापित-लेख उद्योग करने की कोशिश कार्यकर्ताओं की हजमी चाहिए। साथ ही आयोगों १९०-६१ के उद्देश्य में २२ प्रतिशत की हद पर समाधान स्वीकृत किया।

● पंजाब खादी-आयोग की विभिन्न संस्थाओं और पंजाब राज्य खादी-आयोगों मंडल के कार्यकर्ताओं के बीच पंजाब में भाग्य करती हुए उ० प्र० के मूल्यांकन की विभिन्नता-प्राप्त धर्मों के विस्तार से तथा मोड के बारे में चर्चा की।

● विचार-विकास-संघ की ओर से खादी-संघ की एक प्रस्ताव, जिसमें विज्ञान-कर्मिक और आदातों में भाग लिया। तब हुआ कि सर्वोदय-संस्थान प्रचार-कार्य के लिए एक 'सर्वोदय-मंडल' तैयार किया गया।

● विचार-कार्य-आयोग एक मञ्च-दिशि में स्व० श्री लक्ष्मीबाई का स्मृति-दिशि श्री शक्तिचंद्र शाह की अप्रवृत्ता में मनाया गया। एकाग्र और प्राग्गता के साथ संघर्ष में कार्यकर्ताओं ने लक्ष्मीबाई को अत्यन्त अर्पित की।

● कितोराजी की जन्म-कमीश्र माया के अवसर पर कानिया, जिला कन्नड़ में विश्व आभ्रम की समितीय रक्षी गयी थी, वह आभ्रम बन कर पुता हो गया, जिसकी गांधी-ज्योती के अवसर पर गतों के निवा-सियों में तप किया है कि आपस के झगड़ों का निपटारा गाँव में ही करेंगे, कचहरी में नहीं जायेंगे। साथ ही ३३ परिवारों ने संकल्प किया कि वे शकरी लीटी करेंगे।

● श्री नयदुष्कर्म चौधरी का कार्यक्रम

५ जून से १० जून तक कितोराजी के साथ अरम में परवना में रहेंगे। ११ जून को मोहाडी के निकल कर १३ जून को रात को काशी पहुँचेंगे। १४ और १५ जून को काशी में रहेंगे और १५ जून को साहित्य संगठन समिति की बैठक में भाग लेंगे। १७ और १८ जून को हरदा में अन्ध प्रदेश के सर्वोदय-सम्मेलन में भाग लेकर २० जून को अगुल पहुँचेंगे।

रजमिरी जिले के सभाओं वलेंट के २१ गाँवों में सरकारी भूमि एक टाल की धर्म पर किसानों को बेचने के लिए दी जाती थी। इस भूमि पर कर्म नहीं मिल सकता। जिसे ही अन्य युवा भी उद्यम नहीं कर सकते। जहाँ बराबर यह क्षेत्र विच्छेद हुआ है। किसानों की इन समस्याओं की चर्चा करने के लिए शिरावाले के मुख्य उम्मेदवार का आयोजन हुआ। सम्मेलन के अध्यक्ष श्री मोहिंदरज सिंघे हैं। सम्मेलन में बोचरे प्रस्ताव में कहा गया है कि सरदार इस क्षेत्र की पत्नी जमीन प्राप्तता, लोहाडी या प्राथमिक-व्यवस्था को बीच की मालिकों की भाग कर देकर इस क्षेत्र के किसानों में प्रायदान के विचार को अपना कर बंधार वे धीने हा जो संकल्प किया है, उसमें स्थापना करे।

सरकार के वधवार के यह समस्या इस तरह और जनमत संग्रहित करने के लिए २१ गाँवों के १५ मुखिया व्यक्तियों की एक समिति नियुक्त की गयी। समिति के अंभी श्री विजय गरकर चुने गये हैं।

सर्वोदय-पत्र

सर्वोदय-विम मंडल, आयोग, जना-पुर द्वारा संकल्पित ११५ सर्वोदय-पत्रों के अंशक ग्राह्य में ८२ रु. ५५ प. के मिले। जिसकी जमा १५ न. र. थी। तब यह तरह हुआ: छात्र-वैदिक कार्यकर्ता को सहायता की १० रु.। सर्व-वय सेवा को प्रकाश दिया ६३ रु. ५५ न. र.। एक वीथर की दवा में १२ रु. ६७ न. र.। एक बहन की मरद में ५ रु. ५० न. र.। एक बहन की धारी में 'पिता-प्रवचन' मुद्रण १० २५ न. र. में ५८ रु. में सर्व हुआ। अंभी योग ८८ न. र. बना है। नागरिकों से सहयोग रूप में २२ रु. मिले, जो खादी-वैदिक को सहायता में दिये।

इस श्रृंखला में

- १ संघ का मुकामला दान से ही हो सकता है
- २ साहित्यिक घटना-वृक: एक दृष्टिकोण
- ३ साहित्यिकों के लिए मिलितता व्यवस्थापक विधियाँ
- ४ पंचायती राज नामा प्रवचन-प्रधान नये मोड के संघर्ष में कुछ स्थीकता
- ५ नया मोड: स्वयं, दिशा और योजना: ५
- ६ वैदिक-शास्त्रों की योजना
- ७ भारतीय भाषाओं पर संकट: २
- ८ मद्रास-विभाजन पर कबू के विचार
- ९ सर्वोदय-वाचक विविधता
- १० दाम्पत्यसत्ता एवं भी जेकर का कल्याण
- ११ सौन्दर्य-सूचनार

शावर मिले के मोटे गाँव के बमर्ई शहर में रहते थे। वे लोगों की एक छात्रा २ अग्रिक को बमर्ई में हुई। उन्हें प्राम-स्वयंभू का विचार मयदाया गया। तथा वे तप हुआ कि छात्राएँ १३ से मोटे प्राम-स्वयंभू लोहाडी के मोर की १० की के लिए ५०० रु. दिये जायें। बमर्ई के कुछ लोग गाँव के काम की ओर प्रवृत्त हैं और कोर नेत्र-नवीयरी की विभिन्न प्रगति-कार्य और प्रयोगों को समझें हैं।

मोचे और सुरेण्डर इन बच्चों के १५० एकाग्र भूमि का 'संघ' का प्रकाश हुआ तथा गया। मांगाराम में प्राम-स्वयंभू मंडल और जना-संघर्ष के लिए नया मंडल बनाया जायेंगे।

डांग शिरवाले प्राथमिक-विचार के कार्य की ओर की गयी।

कुशाडी, काचोबदे, डांग शिरवाले, लापलीयल, हादी इन तीनों की प्राम-स्वयंभू का तप किया गया।

कुडवा जिले में मिटली और शारोदे, जो गाँवों में पूरी वास्तुका हो और अंतर बराल चले, देखी योजना की गयी है। दोहाडी और शारोदे कु० गाँव की प्राम-स्वयंभू लोहाडीमें एक्स्टेंड कर दी गयी।

यहाँ एक नई समस्या उत्पन्न हुई है कि योजना सर्व-व्यवस्था के कारण को गाँव वाली में गये हैं, वहाँ के विचारों-विचारों के साथ वे आये हैं। आदिवासी विम कार्यकर्ता को खुले मोरों में, उन स्थिति-मालिकों में अच्छी क्रियल प्राप्त होने के कारण यह भूमि विचारों को बेच ही, इस्तिफा और १०० आदिवासी भूमिगत हो गये हैं। इस समस्या का हल देते हैं, इसके बारे में स्थानीय कार्यकर्ता चौक रहे हैं।

डांगो जिले के क्षेत्र में मराठवाड़े स्थान पर हर हाव के अनुसर १ से १० अमील तक आदिवासियों का धार्मिक मेला हुआ।

उद्यमों (राजी-आयोधी) का स्वयं और प्रार्थनी का आयोजन करने से काम प्रयास हुआ। १२ अंतर चले हुए हुए। उन पर १५ आदिवासी काम करते हैं।

बगद-बगद चलने वाले अंतर परिय-माल्यर अमील माह में समाप्त हुए। जन-पर चरते दिये गये। कुण (रजमिरी) में निर्माण-समिति का लोहाडी उत्पन्न-कैर चल रहा है। केन्द्र में १२५ गाँवों पर लोहाडी तैयार हुई।

निचवे सामदाजी गाँव में गली का धान की पतल एक प्लाट में समाहित करपति हो गयी। ५५ पतल बना हुआ। कर्म वास्तु करने में उसका उपयोग करेंगे। निचवे ६ गाँवों के लिए साम-मंडल शुरू करने का तप हुआ। लोहाडी बरामिग लोहाडी के लिए पत्नी जमीन बरामिग के मिली है।

दोहापुर जिले के सातोबादी सामदाजी गाँव में पाठशाळा की प्रकाश और कुर्मा, गाँवों का काम चल रहा है। कुर्मा गाँवों के लिए सर्व-विचार से १००० मिले।

अंग्रेजी 'सर्वोदय' का संयुक्तता

सर्वोदय प्रचारक, संतोरे (द. भा.) से प्रकाशित होने वाले 'सर्वोदय' अंग्रेजी मासिक १५ मील के बहने के कारण यह काम नहीं मिल सकता (जुने) से बूरे सहाई में सर्व-जल का संयुक्त अंग्रेजी प्रकाशित होगा।

गुजरात सर्वोदय-व्यवस्था

भारत का सर्वोदय गाँव-गाँव पहुँचाने की हद के एकाग्रता में प्रकाश १७ गाँवों के एक प्रवचन सतल चल रही है। श्री हरीश व्यास को एक उत्साही और अग्रव्यवस्था कार्यकर्ता हैं, वे तथा उनके साथ-साथ तीन-चार और गाँवों को प्र-वाता करते हैं। ता० ६ मई को एक प्रवचन-व्यवस्था में लोहाडी की जिले में प्रकाश किया। ता० १८ मई तक का उनका कार्यक्रम रायकोट जिले में था। ता० १९ मई से १ जून तक परवना अन्वेषी ११६ में जेलों, उसके बाद १० जून से १४ जुलाई तक सागरज जिले में।

विनीता का कार्यक्रम

अग्रत के गाँव लोहापुर जिले में। विनीताजी का कार्यक्रम २२ मई से २ जून तक इस तरह रहा: ता. २२ मई नार्थ लोहापुर शहर, २३ कान्यारती केय, २४ विजिवाडी, २५ विजवाडी, २६ पानी गाँव, २७ आबाद, २८ बाहाडर पुक, २९ उज्जयपुर, ३० नार्थ लोहापुर डाउन, ३१ लोहाडी केय। १ जून को लोहापुर और २ जून लोहा अंशल में परवना का कार्यक्रम रहा।

श्रीकुम्हार चंद्र, ४० मा० सर्वे सेवा, धारास्थी में सुविधा और प्रकाशित। वारा: राजपट, बारास्थी-६, फोन नं० ४३९३
 विज्ञापक की हसी प्रतियाँ १०,०००। इत अंश की हसी प्रतियाँ १,०००।
 एक अंश: ११ नये पैसे।

विनोय के साथ दो दिन

है। अथर्वस्यता है विद्युत् के क्षेत्र को वीजुटिक भावनाओं और मातेदारियों के संघर्ष एवं पुनीत करने की। एष्य-सुख-विद्युत् और भीम का परिणम परस्पर-आरोग्य और भय में होता है। स्त्री और पुरुष एक-दूसरे के पहले बने हैं। इस परदेह की ही वे प्रमथ्य हैं मानते हैं। एष्य-दुष्टरे वे उत्तरे और बचने रहने के इस स्वरकार को एष्यभर या फिजर मानना दोनों के लिए अग्र्य है। स्त्री और पुरुष दोनों के अपने-अपने विशिष्ट गुणों का और शक्तियों का विकास सुख-विद्युत् से होगा। परन्तु दोनों की सामान्य भावना का विकास, स्वर्गीयत्व और सहविद्युत् से ही होता है। स्वर्गीयत्व में मर्णादा है, संघर्ष है, एष्य-दुष्टरे के संघर्ष में स्वर्गीय है; स्वर्गीय यहाँ स्वर्ग, स्वर्गता और भय के लिए अस्तर नहीं है। स्वर्गीयत्व के क्षेत्र में मर्णादा का प्रतिपाद या संरक्षण प्राप्त से नहीं हो पाता, कीटुभिन्न सम्पत्ति से ही होता है। यही शास्त्राचार या स्वर्गीयता कहलाती है।

कीटुभिन्नता में प्राथमिक सम्पत्ति मीठा है, संस्कारकर्म संघर्ष सुख होते हैं। निता-पुत्र, भार-मार्द मिश्र-भिन्न पुत्र स्वच्छि है। परन्तु कीटुभिन्न स्वच्छि से कात्या उनमें प्राथमिक विचार और सन्धि, मन्त्र आदि द्रुम माने जाते हैं, भ्रमण नहीं। उन्नी मकार की और पुत्र के नैसर्गिक भेद और शास्त्रादि मातृत्व-पुत्रत्व, मरिणीयत्व-व्युत्पत्ति की नीमल भावनाओं में परिवर्त हो जाती है। यदि सुख-विद्युत् और विद्यापीठ कीटुविकर्ष भावनाओं और स्वच्छि को समाजस्थायी मानने में अग्रसर न हुए तो विषयविद्यालय विषयव्युत्पन्न के पवित्र प्रयोगीयों तथा स्वशास्त्रीय नहीं होते। यहाँ न विद्या होगी, न संस्कृति, न स्वर्गीयता और न धार्मिकता।"

जून के आरम्भ में ये-सीन दिनों के लिए अष्टाश में विनोय के पास हो आया। उसमें हिमावत और दक्षिण में प्रवृत्त, बीच में नदियों की बहों से बना हुआ स्व-सम्भ प्रदेश। उस दिन प्राम को उत्तर क्लेशगुरु करने में विनोय के पास पहुँचा, तब पता चलने कि देवर मर्द उनसे मिलने के लिए अनेक दूर थे। विनोय के सह यात्रियों ने खबर दी कि उन सब लोगों ने भी देहातों में जाने का बुद्धम मिल चुका है। "तीन महीने के आग लेने आराम में घूम रहे हैं, लेकिन 'असमिप्य' भाषा नहीं जानते, वह कैसे चलेंगे? आप भी आइ देहातों में निरुल चादरे और देहातियों से असमिप्य में लेजने की कोशिस कीजिये।" मैं जब पहुँचा तब यानी दल में चन्द्र-पदल थी। कल से वे अपनी असमिप्य आचमामने वाले थे।

"भायान, चन्द्रमानी रहने हो भारी" - हर अरुधी की व्यतिक्रम सम्यक् रहने वाली असमिप्य बचने न पड़ा। सम्पत्ति तिर्यों के राज्य का श्रेयस्व स्वयत्वा जाता है। स्वचन्द्रमक क्षेत्र में तो अब भी आश्रम में तिर्यों का राज्य ही है। असम-प्रया का स्वचन्द्रमक स्वचन्द्रमक कायों के किच पद-पर नभर नहीं आया! और असम्यक्ता के साथ उलटी पीज भी है। पातुन्या पीपटी कमी विनोयकी के साथ बह कर पदचारा की आन्तरिक व्यवस्था सम्हालती हैं, तो कमी शरपिण्य आश्रम में आगर प्रामेतिपि विद्यालय तथा कल्पना प्रभाक विधि का दस्तर सम्हालती हैं। बेचमना भावली पी की-क-पुत्र किच कोने में मर्द विनती! विनोय ने अपनी उठे बहाली प्रियायों के पुनःसंके के क्रम को जिम्मेवारी दी है। इन संके पीछे इन लोगों के काम की एक-एक लक्ष्मी को दूर जाने काही मिश्रमान बहनों की मन्त्रि-मेला लगी है।

विनोया अग्रकल दो म्ने उठते हैं और तीन बने चल पडते हैं। प्रयत्ना राते ली ही होती है। मैं जिनसे दिन या, उतने दिन प्राजा के समय नहीं होती रही। लेकिन बर्षों के शासन प्राजा के समय में स्वर्गीय नहीं हुई।

देख मर्द और विनोय की बातें पद-प्राय में भी फरती रहनीं। जान पडता था कि देवर मर्द किरी घाल विषय को

उत्तर बहोय से मिलने नहीं आने थे। परन्तु वितुय दिनों के भेद नहीं हुई थी और अपने-अपने देश में रहने दिनों में भी कितनी ही नई सम्पत्तियों खरी हो चुकी थीं; इन सम्पत्तियों के निषय में विनोय के क्या विचार हैं तथा मन्त्रियों के सम्पत्तय में उनका निषय क्या बला है, वह जानने के लिए अक्षर-देकर मर्द इर प्रकृर आ जाते हैं। उनकी चाटी बलों की जानकारी देना मेरे लिए ठीक नहीं होगा। लेकिन इतरा तो जरूर बह सकता हूँ कि आश्रम की सम्पत्तय के संशय में विनोय के विचार अब सह बारी साक बन चुके हैं और उन्होंने उलकी चर्चों भी की। आश्रम की राज्यभाव असमिप्य रहे, मिला स्वर तक बगाली वा अग्नीय की पूरी सुविधा हो, आम महकामा में आंग संके के बदल कर असमिप्य भाषा कले की जो गुस्ताख रही गयी है, वह हटा दी जाय और बगल में स्वचय विद्युत् की पूरी सुविधा हो, यह सुचय विनोय पहले ही बंगाले और अगामी नेताओं के मराने तक उतने थे। उनके उस सुचाव के बारे में दर-उत्तरे नहीं दिखाया गया। फिर कचार बिसे में हिा हुआ और अब भय भी, वतिलखी के किच निवेरसे विधान वाच स्वलोप व्यक कर रहे हैं, उस निवेदन में भी उपरोक्त सुचावों को मान्यता देने के अलगा और क्या है? इस बीच फंगव के अंगरारी ने विनोय के रिजय

को आन्वीलन-वा चलयवा, वह किताब लिजय और अदूरर्यां वा, इदमश्रप्रमाय है। क्लेशगुरु मिले वा जो भाग प्रवृत्त के उत्तर में, उठे उत्तर क्लेशगुरु बहते हैं? शांते तीन लख लक्ष्मी के उस प्रदेश को विनोय ने अपनी अपना प्रयोग-स्वेष बनाया है। पहले भी पूजन आदी-लन में आश्रम में दक्ष प्रदेश में चले अधिक सफला मिली थी, आज भी वहाँ बारी सफला मिलने की गुंजाब खरी रही है। यहाँ के कर्मों के देवर पर दो-तीनों के भी प्रमाति हुआ: एक तो बर्षों बर्षों का आमविपचाय और दूसरी, प्रामनेकी भी अय। अक्षर विनोय (जिसे ब्रिले में होते हैं), उस ब्रिले के कार्यकर्ता प्राजा का दृष्ट लेभ अत्युत्तर बर्षों है। लेकिन इन कार्यकर्ताओं को यहाँ मदान-यकी सफला की आशा है। इकीलिए छेडे-भेड़े कार्यकर्ताओं भूमि-भाति के बाम के लिए दृष्ट गये हैं। विनोय के साथ इन दिनों प्राणी श्वाक विधि के भी विक्रम प्राणी ही है। लोचर भूभूयें, होमिस्वरकी, मणिक् शास्त्रीय आदि तब सुख कार्य-कर्ता तो आन्वीलन के प्रचार के लिए गोंब में फैल गये थे। भारत के भावनेकों में अक्षा तो एक बगल दीख पडती है, लेकिन आश्रम के प्रांनों में तो अक्षा सुते होती, उसमें अक्षा के साथ-साथ विचार को सफराने की इच्छा भी थी। इस प्रकार कार्यकर्ताओं का आम-विपचार और प्रामनेकी की अक्षा का मेल होगा तो आश्रम में कुछ अल्प परिणम दीख सके हैं। भूदान और आश्रम का पुनर्यत्न, तो यहाँ ही हूँ। उत्रा है।

विनोय ने मुझे कहा, "अगस्त को यह बरस हो कि मेरी पदव्याका का मावरी किता है। मैंने देस का हर दिरना पूरा कर देस लिया है और हर जगद की सम्पत्तियों को जान किया है। इतना पूरा हो बर्षों का सफर है। बर्षों के कार्यकर्ताओं के लिए प्रतिपाद बर्षों हैं। यहाँ सो मैं अपना यहाँ बंठ हूँ।"

[पृष्ठ 3, कालम न का वीप]

माने में सम्पत्ति-दान निष्कार ही एक कदम आगे की चीज है। इस अभिप्राय के निरुत्थित में भी सम्पत्तय हो तो हम लोगों के सम्पत्ति दान के रूप में स्वयंपदा लेने की कोशिस करें। पर सम्पत्ति दान के विचार को मान्य बने उतने अक्षरर दे सकने की किरी की उपासी न हो तो स्वयंपदा के रूप में जो जितना दे, उतना दे लें। अर्ध-संशय के श्रेयदा अभिप्राय में मास्किन्न-निवर्जन का भीर प्रतीतिपि का विचार नहीं है, वह उरी है, लेकिन अनाचार की बहोटी घर तो वह उरी जनारथ है। स्वमे घडा नरी होनी चादिरे। यह अभिमान पुपने घरीके का चंदा नहीं है, पैग नह हो वाय यह मन्था भी नहीं है और न उचे पैग होने देता चादिरे।

पंढरपुर की ऐतिहासिक घटना

तीन वर्ष पहले सन् १९५८ के सन्तोष-सम्बन्ध के अक्षर पर उक्त सुनल एकादशी को पंढरपुर में एक महकर्मियों पटना हुई थी। उस दिन भी विनोय ने कुछ दि-दि-दि सुविधियों के साथ पंढरपुर के प्रसिद्ध "मिठल मर्द" में प्राथम किता और मन्त्रि के व्यवस्थापकों की ओर से यह बोधना की गयी कि "दरुप का मन्त्रि-मान्यभाव के लिए अब सुख है। स्वतन्त्र भाव के इतिहास में इस घटना को महत्व का स्थान मिलेगा। यह घटना नेत्रय एक प्रयोगीय नई वा, बन्दि-नेत्र स्वभाव और नये मान्य के निर्माण की दिशा में सम्भव-बृह कर उतना या एक कदम था, देखा कहा वा सकता है।

तीन वर्ष पहले उस घटना का स्मरण सका चापन रहने की इति से

महापुत्र सन्तोष-सम्बन्ध ने इस सुक्त सुनल एकादशी (शु- २८ जून, १९५९) को पंढरपुर में एक लेख ना आचोचन किया है। महापुत्र के अनमन्यत्व की अन्त्या-साधन पदवर्जन इस समय शोचनीय जिते में परप्राजा कर रहे हैं। उनके उठ मिले की पदव्याकी सम्पत्ति उभी दिना, अर्थात् ता-२८ जून को पंढरपुर में होगी। महापुत्र सन्तोष-सम्बन्ध के अन्त्य की शु-२८ अगस्तिलेने प्रायशः कल्प शन्तोष-सर्वकार्यकों को भी उस दिन पंढरपुर में एकत्र होने का निम्नेशन दिया है, जिसे वे मिल कर यह विचार कर सकें कि तीन वर्ष पहले को सर्वप्रथम समाचार की प्रवेति यहाँ प्रकट हुई, यह किच प्रचार और अधिक तेवरकी हो।

-सिद्धराय दहडा

मैंने उनसे पूछा, "लेकिन कौन से बरस है किता में आर्य मान्यते ली बगल बाते प्रमाति तक ही न ?" उन्होंने कहा, "ऐसा बर्षों है हम विधान के अन्वये में मिले हैं, मरद चाहें तो हुआई बहाम्ब से उक्त कर कहूँ तो वा सक्ते हैं और फिर वहाँ पुपुने परदेहारी परप्राजा फिर एक हो सकती है। लेकिन हूँ कोई नुवातें तो सही। बैसे तो देवगरी संसार नहीं है कि विधानय को भीर प्राकर स्वशास्त्रीय करने तक की हो। यहाँ तो हम हिन्दुत्वता के बने में आ गये हैं। यहाँ मैं आये हूँ। जामें? या परदेस वा परलोक।"

आन्वीलन के बारे में विनोय बारी उल्लाहित बान पड़े। आवाज उठाने अनना प्यान फिर वे भूमि के प्रदन पर निरेण किया, वे हमें तो विधिवा-अन्धा सगा।

सैनिक अथवा सेवक और नागरिक ?

कादिनाम त्रिवेदी

गुरुदेव, गामी और विरोधा की प्रचार जीवन-साधना से जिस देना भी भूमि का बच-बच सुशोभित और प्रतापि कहुवा है, जिस देना ने राम-रूप और नृत्त-अहोरात्र के समय से लेकर आज की घड़ी तक जीवन में तप, त्याग, समय, सेवा और सत्य, प्रेम तथा कष्टमा जैसे सदगुणों को स्वामना को जैसा माना दिया है, उसी देना में जीवन के नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को प्रोत्साहित की सीधा करने और मानवता का स्वरूप करने वाले मोक्षित गुणों को बढ़ावा देने का काम जोर-शोर से अभी बढ़ाया जा रहा है, इस हृदय व्यक्तों लोकजीवन की एक भारी जिम्मेवना ही मानते हैं। जब सारा समार पुकार-पुकार कर कह रहा है कि अणुप्रत्यक्षों को इस युग में बच न तो चरित्रात्मको नर कोई उपयोग रह गया है और न भौतिक जीवन का ही कोई महत्त्व बच है, तब हम अपने यहाँ अपनी नई पीढ़ी को अनुशासन और लोकसेवा के पाठ सिखाने के काम पर जगह-जगह सैनिक विद्यालयों और पट्टाविद्यालयों की रचना करने में लगे हैं और इस बात की घोषणा कर रहे हैं कि हमारे विद्यालयों, महाविद्यालयों और निरवधिवालयों में पढ़ने वाले न केवल समो छात्रों को, बल्कि छात्राओं को भी अनिवार्य रूप से भौतिक-विद्या को ज्ञाप्य। हमारी विपरीत युद्ध का इसमें अधिक गुप्त प्रयोग और बड़ा सफल है ?

माना कि हुनिया के लोकजीवन में एक समय ऐसा था, जब सैनिक-विद्या मानव-समाज की मुद्रा के लिए साधारणकानी जाती थी। उस जमाने में एक हृदय तक वह उपयोगी भी सिद्ध हुई थी, किन्तु आज जब कि हुनिया के लोकजीवन का सारत शून्य में ही बदल गया है, और बड़ी भौती से क्षान-क्षान में चरित्रात्मक जा रहा है, वच भी-वचसत सारत पुनर्जी हुनिया की पीछे-पीछे को पकड़ कर हम अपने यहाँ अपने नई पीढ़ी को सैनिकवाद के वातावरण में तैयार करें, इसमें हमें कोई हुक नजर नहीं आती। हमारे सामने आज असल सवाल यह है कि हम अपने लोकजीवन की रक्षा के लिए लोकजीवन में किन गुणों और जिन मूल्यों को प्रतिष्ठित करना चाहते हैं ? क्या सैनिकता से ज्यवक सैनिक-गुणों से हम अपने देस के कठोर नागरिकों को बनने अपने प्रति दिन के व्यवहार में निर्भय, निरशंक, सुप्रतिष्ठ और आत्म-निर्भर बना देंगे ? क्या जीवन में शशाभीनता की लक्षक प्राप्तिक के लिए आज की हुनिया में शस्त्रास्त्रों पर टिकी हुई सैनिकता का कोई उपयोग है ? हमारे तम विचार में आज की हुनिया के लिए आज सैनिकता का कोई उपयोग नहीं रह गया है। सैनिकता के साथ जो मानस और वातावरण जुड़ा रहता है, वह देस में और हुनिया में आगरिकता के विकास के लिए बहुत ही पाक है। इसलिए आज के अपने लोकजीवन में हमारी शक्ति और हमारे साधनों का अधिक-उत्प्रेक्षित उपयोग नागरिकता के विकास में और उसकी व्यापक सिद्धि में होना चाहिए।

आज के समाज और समार का मूल्य आधार नागरिक का अपना जीवन माना जाना चाहिए। नागरिकता को पूरा कर या पुनः कर सैनिकता के चरित्र में अपने हृदय, जन और समार का उपयोग करने से हम अपनी प्रति का विचार नहीं कर सकते। हमारे विचार में आध्यात्मिकता ही मानवता की की-सी-की-सी सिद्धि है। जब से या बाहर के हटा हुआ या बाहर हुआ अनुशासन मानवता के अपने विकास का योग्य न कभी हुआ है और न कभी हो सकेगा। यदि हमने अपने देस में शासन और समाज दोनों की मूल्य अथवा लक्षक सधर्म के तद्वत सैनिकता को बढ़ाने और वेदाने का कार्यक्रम उठा लिया, जैसा कि हम उठाने का रहे हैं, तो हमें यह बहुरे पद पर भी सरोच नहीं होना कि अपने देस कार्य के इस देस के नागरिक जीवन को गरीब बनना पड़ेगा और साथ, प्रेम, करुणा तथा त्याग और नीति पर आधारित त्रिक समता-योग्य समारवासी लोकजीवन की रचना का समार आज हम देस रहे हैं, वह कभी सिद्ध ही हो न सकेगा।

जब सारी हुनिया के विचारक आज एक कर के यह कह रहे हैं कि एकता ही ही है और सैनिकता के दिन हद बुद्धे हैं और सब प्रयोग के छोड़-कर ही सारी पट्टा-पुकार की छात्रों में बैठ कर उनी सन्नी-रता से अन्तर्गोचर वैमान पर निर्याती करना ही पाने सोच रहे हैं, उसकी दिशा में अपना दिल-दिमाग तैयार करने की कोशिश में लगे हैं, तब हम अपने देस में नरे निरति के लोकजीवन को सैनिकता की दिश में अपने की कामे कोयें और लोकजीवन में अपने, हमने बहुकर उद्देश्य-विचार और बड़ा ही यशदा है। हमारा विचार मत और विचारण के लिए आज के लोकजीवन मारण की सैनिकता ही उठनी आनकता नती है, जिनकी आवश्यकता लोकजीवन-प्रियुग और भी-कैसे पराक्रम नागरिकों की है। यही कारण है कि राजस्थान गांधीजी ने अपने अंतिम क्षणों में देस के नागरिकों को लोकसेवक ही तद्वत करने और

से लेकर विचारविमल्य तक विचार प्रकाश की लोकनेत्र के संस्कारों का निचय होता रहता और इस प्रकार समाज तथा शासन को लोकनेत्र की रधि और धृति रखने वाले अनुभवों तथा शान्ति लोक-सेवकों का एक दल देश के भेजे-भेजे में तैयार मिलता और उसकी राक्षि तथा सहायक से नवनिर्माण के स्परे काम देखे-देखने लोकोहित में निद्र हो जाते। हमारे गज निवार में आज भी हम अपनी विद्युत् मूल की सुधार कर आगे बढ़ने का फैसला करें, तो उसके देश की अर्थवित्तीय स्थिति ही होगी। हममें विदानी देर होगी, उतनी ही देखा जा रही विकास रचना और देश की सम्यक्त तथा शक्ति का दुष्प्रयोग होता रहेगा।

एक तरह हान अपने देश में लोकतंत्र की और समाजवादी की शक्ति करते हैं और दूसरी तरह अपनी नानाविध योजनाओं द्वारा देश में सामाजिक और आर्थिक विपन्नता को बढ़ाने वाले बनते हैं और देश की वृद्धि करते जाते हैं। शासन का समर्थन, पोषण और शास्त्रात्मक रूप से उसे लोक-आर्थिक में अपनी नई प्रतिष्ठा लक्ष्य करते हैं। फिर इनके अपने निहित स्वार्थ को पकड़ने हैं और वे समाज और शासन को अपने निचरित रूप की दिशा में आगे बढ़ने से रोक्ते हैं। इनके निमित्त वे देश में मानव-शक्ति का योग्य और उच्चतर के बने-जाने लोक को रोक्ते हैं और उनको क्षयक तथा सहायक के सामने नई-नई समस्याओं के पहाड़-के रुहे हो जाते हैं। परिणय वह होता है कि देश अपने स्वयं के दूर भटक जाता है और उसके शक्ति तथा शान्ति का निविद्योग समाज के विकास में बाधक शक्तियों के संकटन में होने लगता है।

गांधी-विचार और गांधी जीवन-दर्शन के प्रति प्रभावित रह कर काम करने वाले शासन के आज कोई यह अर्थशास्त्र नहीं रखेंगे कि वह कुछ ही या कुछ हजार मिनटों को हीयार करने के लिए ऐसी नित्यक शक्तियों लोले और खलने, विनमें देश के आर्थिक लोको को पुनः बनाये के राजकुमारों की-सी शासन से रखा जाने और इस तरह समाज में उनका एक आत्म बल पैदा किया जाये। नई ऐतिहासिक-शास्त्रों के लिए जो योजना हाल ही की है, उनमें भली-भाँति होने वाले निष्कर्षों पर प्रति विचार्यों दो से दार् हवाय तथा शास्त्रात्मक उर्ध्व करने की आवश्यकता ही गयी है। इस आवश्यकता के चलते इन विचारकों से जो ऐतिहासिक निष्कर्षों, वे देश के कोटि-कोटि लोगों के साथ समरस होकर बनें जाते तो निश्चि प्रकाश हो ही न सके। उनकी तो अपनी एक अलग रात बनेगी और विचार अन्तर्गत करने के त्याग और पुनरागम का कोई बल काम वे नकवित् ही कर पायेंगे। इस तरह समाज में दूसरी ही महत्त्व और समाज पर बनें जाते लोगों का एक ऐसा दल संभव होगा, जो लोक-जीवन में मानवता के स्वयं मूर्ध्ने का

नगरों में सर्वोदय-कार्य श्रोभल न हो

पूर्णचन्द्र जैन

नगरों के कार्यक्रम के बारे में विनोबोवी समय-समय पर विचार देते रहें। भूदान पत्र-पत्रिकाओं में इनकी चर्चा नजर आती रही है। इन्दौर में कापी दिन रह कर विनोबोवी ने नगर-नगरों में निरन्तर नगरों में कोई खास कार्यक्रम व्यव चलावा नहीं रिलवा है। बहो दे, बहो भी कुछ वेग उनमें आया हो, ऐसा प्रतीत नहीं होता।

विदुत्वात्मक के समाज का बहुत बला असा गौण-देहात्म में रहता है। इसलिये यहाँ अधिक समय, शक्ति शक्तिवादी सेवकों की लगे वह सामाजिक और अवसरक है। लेकिन जन समाज अधिक मात्र में होने पर भी यह नहुन-समाज नगरों से और उनमें बैठे जा उनसे संबंधित लोगों में ही प्रभावित है। यह विचार सिद्धि का भी उल्लेख हो, गौनों के चर्च-वार्त्त को रोक्ने के लिये भी उस पर खतरा कर रही नगरों की गलत गतिविधि और स्थिति के सुधार के लिये उनमें बैठ कर काम किये जाने की बहुत जरूरत है।

निर रोकड़ों माई-बहिन्ना शर्चोदय-विचार में असा तरह सार्व और उस निमित्त जारी समय तक लगाने वाले रहे भी हैं, जो गौनों में बहुत कम जाते-आते हैं। नगर ही उनके कार्य-क्षेत्र हैं। यहाँ के जीवन में उनका स्थान है। इन शान्तिपूर्ण को गौनों के समाज-परिचरने के काम में योग-दान की दृष्टि से भी अपने समय-क्षेत्र में तोस व शासनपूर्ण काम चलते रहना चाहिये। इस तरह नगरों में स्वयं नगरों के लिये, व्यापक सेवा-कार्य समाज के लिये और बहो रहने वाले शान्तिपूर्ण में सजीवता व सक्रियता के लिये शान्ति-विनोबो के अपने को शासन करते वाले काम के उगत विरोध करने की जरूरत है।

कुछ मिश्रों को ऐसा रण कि हाल ही में हुए देवेंद्रे शर्चोदय-सम्मेलन के समय उपमे कार्यक्रम विनयको प्रस्ताव स्वीकार किये, उनमें नगरों से संबंधित कुछ नहीं था। (हीये नगरों से संबंधित नहीं, पर देश की नमक की भलत पर आधारित सा-प्रस्ताव बनकर है। नमक टीक देती गयी, विनय कुछ टीक हुआ और उपचार टीक उठाया गया तो नगर उसके स्थित रहे जा उन्हें सुला दिया गया, वह नहीं मानना चाहिये।

नगरों में शान्ति पहलू काम तो यहाँ के उल्लेख-उल्लेख, तत्त अभाव और व्यय जीवन की निरपेक्ष-से विधिगत और उच्च-विनो-

बोध ही न होने देना। देश के और दुनिया के ऐतिहासिक-जीवन के साथ जो माना गजार के अन्त-जगत् और दुष्कार शक्ति से कुछ चले आये हैं, उनसे बच कर उनीं वाले कोई नया ऐतिहासिक समाज इस रीति से हम देश में रखा जा-सकये, इसकी भी कोई सम्भावना आज तो ग्राह्य नहीं होती। इसलिये हम यह बहुत अवसरक प्रतीत होता है कि देश के जीवन-मरुत्त से सम्भव रहने वाले इस गहन प्रनय पर उदय-याम के विचार किया जाना चाहिये और ऐसी कोई योजना बन्नी चाहिये, जिससे हम अपने देश में आज सेवकों और समर्थन आभारियों के भ्रम-मूढ एक स्वयं समाज शान्ति कर सकें।

से-उच्चैः परिलिखी में पैदागील तथा विरव बनाने जाने का है। नगर शिक्षा और संस्थापिका के क्षेत्र समे जाते हैं। लेकिन छोटी-छोटी बातों को लेकर जो कल्ल और दंगों के रूप में बहो विरोध होते हैं उनसे नागरिकता, नगरों की शिक्षा व सुलंकारिता पर चन्द सुधों में कुछ पड़ जाती है। इसलिये पहलू काम बहो प्रति-रुधना का है। अभाव की परिदृश्यितों के निवारण का समय अवन, विस्तारक लवों पर कल विनयनी और उन्हे बलने की ची-मान से कोषिय तथा अभावित वृद्ध ही पड़े तो बानि देकर भी उन्हे लक्ष्य और बहो-की-बहो रीति से ही लक्ष्य तथा विद्युत्, नगरों की आवाज की, कल की और स्थिति को देखते लिये समय की भी आवश्यकता है।

परिस्थिति की इस संभव और इसके निमित्त बलरी और पर किये जाने वाले संस्कार के बिना शर्चोदय-सम्मेलन शासन विचार ही सचपा है। इस और शान्तिपूर्ण में का, शासन और के नगरों के पने क्षेत्र में रहने वाले शर्चोदय-सम्मेलनों का स्थान न शिक्षा-शास्त्र नहीं है। शर्चोदय-सम्मेलन अच्छे संसार-वाक्ये, अविश का विचारक अगाने और उगत संस्कार का शीघ्र-सादा, विन्यु प्रभावशाली लवों को बलनी है। यह अभाव और सुनिश्चित रूप से उदात्त तथा बढ़ाया जाना चाहिये।

सीधरा वहाँ विद्युत् विचार-सुधार का है। शर्चोदयियों का दिनाय विनय दुस्स होग और मरुत्त मरुत्तों को जबर क विनोनी बन्नी वे धुंटे, उननी बन्नी बन्नी, समाज पर व्यापक अमर होगा और धरर के कुछ सन्तुष्टे गौनों के सन्तुष्टे के टेटों का रात रहने लगे। नगर-जुद्ध वे जन का पर हो सकला है और मान की ब्याव है। लेकिन आज तो वह गलत विद्युत्-पद्धति व गलत सामाजिक लवों के कारण पुद्धि और विचार जन का सुधोय भी रचना के लिये निवृत्त बना हुआ है। इसे बलने के लिये शर्चोदय-सम्मेलन व शास्त्र के व्यापक आभार तथा शिक्षा, योगी रणैह के लिये विचार-विमर्श का कार्य सुधार-सुधर्षण व विचार-सुधर्षण तथा

निमित्त नागरिकों। संस्थाओं आदि में चलना चाहिये। इसके द्वारा सहज ही लोकनीति की चर्चा पैदायी जा सकती है। युवान आदि जो आधार-समाज का रॉया बन सकता है और प्राथमिक शिक्षा का सहायक है, नगरों तथा नगर-वाशियों के प्राथमिक अभाव लवों आभार गौनों के निद्र-उत्त, सहायकों, धननिद्र और धनीनी जीवन का प्रेमी बनने का प्रयोग कर सकता है। इसकी-अलो की अनादी में से कुछ लोग भी इस प्रयोग से निरुक्त हके तो फिर चाहे वे धरर में रहें, या गौनों में जाकर धनी रमायें, समाज पर कुछ स्थानी छाप व प्रभाव अवश्य पड़ेगा।

श्रीयो कार-बाहों से सेवा की वृद्धि से पूर-वो कार्य-स्थानिक परिस्थिति, सैवारी और शक्ति के अभाव-रहित स्थाने जाते-आते। अथित कार्यक्रम लेने से पर्याप्त शक्ति को लवों के कारण, कोई भी कार्य यथाशी गृही हो पायेगा, जहाँ काम कर जलौनीय शोकर-निवारण, शास्त्र-बन्नी, शर्चोदय-सम्मेलन में एक या दो को विना जाना चाहिये। शर्चोदय-सम्मेलन अमरक एक भूमिका व बातावरण बनने के बाद ही नगर के एक लोचन बल्ल का शोष में लेना ठीक होगा।

इस प्रकार इस शर-सम्मेलन के समय भूदान, शास्त्र-समाज और लोकनीति का जो निमित्त कार्यक्रम रूप में लामो रखा पर शोचपा, उसमें ही ही नगरों के कार्यक्रम का शोष हो सकला है उल्लेखनीय है। नगरों की अमरक परिस्थिति और पैदागील में ही, असा पर ही भूदान-सम्मेलन के अमरक कार्य की एक शोचनीय व शास्त्र-समाज का शोष व सामाजिक, शान्ति-निक, या शररी संशुकी के विचारों के कार्यक्रम के लिये अमरक व सहायक बन अवश्य लेयोग। अमरक-पद्धति यही है कि नगरों के सामी साक्षर, शैर और आत्म-विश्वास के लव दूरी के मानन की बला नगरों में लव जायें और निवृत्त या गौनों में ही जाति हो सकला है, इस अवसरकी के कारण नगरों के काम की विद्युत्-विचार के शोचक न होने दें।

अन्न-पूर्णा खेती

व्यावसायिक कार्य-शास्त्रियों का आरोप है कि भूदान-आन्दोलन के फलस्वरूप भूमि धनतुल्य और अभावकारी युक्तियों में घट जायेगी, जो कि एतद् के लिए कटिबद्ध है। इस की रोकथाम के पक्षों का ध्यान देने के लिये विभिन्न भारत भर में गुरुवार सुबह ही बुद्धि-योग रचना की है। उनका ध्यान-दाओं के ५-७ एकड़ के क्षेत्रों में निराला होना सामाजिक ही है। इन्हें छोटे क्षेत्रों की उनही यद् टीका तथ्यों पर ध्यातिर नहीं जान पड़ती है। शीघ्र के दिवाय से ही उन लोगों ने ऐसा मान लिया जान पड़ता है। वस्तुस्थिति का हान बंधोयों द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। यह कष्ट-ही बर्षों से निराला (जिज्ञा होरांगवाद्) है। इस तथ्य को जानने के प्रयोग ग्राम-मेका समिति, वरौट-निदाका के वक्तावधान में 'मिड-सराजल' और अन्य प्रवृत्त गांधी मारक लिपि की सहायता से किये जा रहे हैं।

दृष्टि नीति : भारतीय दृष्टि की यही नीति समुचित होती है। दृष्टि प्रथिा साठ-नार-उत्पादन को हीनी वाजिये, न कि प्रथिा राया बमाले की। उदाहरणार्थ, बोटनिरि यें बहन पाटनरी सादक अपनी भूमि पर पाय लया कर उपादा राया प्रायत नर सजाती है, पर वे बायनर रहों हैं यथाय की, जो नि राउड के निचे आरयन है।

किमान की समुचित भोजन को मांग बुने कराना उनको सेना का मूक भेज होना चाहिये। इनके अन्तर्गत इनके लद् १९५१ में बंध एतद् दृष्टि-संघ की योजना बचाई की। इनमें एक ही कायल के लिद् एक बोगी केंच आरयन के, इतलिद् दृष्टि के सब बंध से बचने माने एक में है। समुदाय विचारों के लिद् एतद् का उच्योय किया जाता का।

नया मीर : लद् ५६ में अर्जित भयल सर्व ठेका रूप के सौजन्य से इसे बचाय की दृष्टि का अयन करने का आरयन प्राप्त हुआ। इनके एक नई प्रिय (१) अर्जित प्राप्त हुई। शीघ्र एतद् राय की नि अधिका बना। इनके एक एक की कयन सेना के लिद् बारी कया में अन्तर चाहिये। वीन-आय अन्तर प्रस निच चाहिये। वेनायन में दो नये वर्तमान प्रयोगी हैं। भी बरौट-बोटरी परी अयन है।

इसके बचने के लिद् और परिवार को एक के आधार पर लेती करने के लिद् एक-दूसरे एक-दूसरे परीन ह्या। एक अन्तरक अयन १-२५ एकड़ क्षेत्र की एक अयन-युक्त इति-वेना बनायी। विचारों के निचे एतद् के अयन रिखी का यन कया। इनके क्षेत्र की आरयनपदा नहीं परी। उनके अयन पर परिवार की दृष्ट की मान पूरी करने के लिद् दो नये परी। इन एतद् में सेना मील और पाय घन उपायित भूय एतद् के निचे परीन हुआ।

सेना की एक-दूसरे घंर की इ-युक्ति की इत्योय एक उपायन के एतद् बचायी गयी। इनके से ही प्रथम अयन ठेका लुं कि माने (१) परी में प्रिय पर रहे हैं। इन लद्, दुम-खटा और मौसमी एत एक नर-दुम दृष्ट अयन से कयाय गये। इन के अयन की कयल के एतद् की विनायी का यन रहे।

एतद् एतद् ३३ एतद् में विमल किया गया। ११ एतद् लद् नल माने से निचे विचारों नाथे और पाटनरी बनायी। घंर में 'मिड-सराजल' के विचारों की अयन में एत बरौट-सर्ती एतद् एक कठ के लु कयाये नाथे के विचार के पाती का उपायन किये से दोनों और के लु की की कयाय लया कर दिया गया। एतद्-सर्ती की एतद् के बीच में अयन की कयल बनायी है।

अयन किया गया। लिग् की एतद् एतद् बुने लुली, एतम्न दो एतद् प्रिय एतद् परी है।

इतिम एतद् का उच्योय एक एतद् में किया गया। सामान्य नीति इनका उच्योय नहीं करने की है। अन्तर, मोकसी इत्योय की लुदी ही एतद् की गयी।

कारों के एतद् : इस बार लोग नहीं एतद् कर रहे हैं। हमारे एक बानयन माने हैं, कर्म में लयान से आह नहीं किया है। मेरी लकी और लकी कयन घाटने में लदाया करती है, अयनपरी नर-युगी है। कयायों महा विचार की दृष्टि-कया में लयन लेती है। एक कयन-युक्त हमारे लया है, विचारों सेना की विभेदारी है, पर उते बारी कर्म में अयन लयन देते एतद् है। एक बयन-वेनी-कर्म के कये लयन १००० इति।

उत्तर, सेना और विचार के लिद् के लु एतद् के निचे, एतद् का लयन कया गया २५ ६० हुआ।

उत्पन्न	कीमत
(१) गहुँ १५ मन	२२१
(२) अयनपरी १२ मन	१०
(३) पाय १५ मन	७१
(४) विचार-कट लुदी १६	
(५) विचार ४ मन	२६

मार्दा-श्रायोद्योग प्रशिक्षण के लिद् पाठन-पुस्तकें

एतद्-बहीयन की अर्ध के लु-यन किया गया है कि एतद् सामोयन विचारों में कयने का इतिमन अयन लुकी के लिद् उते नीच निच निचने पर पाटन-पुस्तों की आरयनपदा है :-

- (१) श्रायोद्योग अयन (सामाजिक और आर्थिक)
 - (२) अयन-कट विचार और विचार लयन योयन का मो-दुदा एतद् और दृष्ट भूमि आदि।
 - (३) इति उपाय विचार (एतद् इत-सर्ती) इत्ययन।
 - (४) वीरी और आर्थिक उच्योय अयने में उपायित कयने का विचार।
 - (५) एतदी और उपायों के क्षेत्र में लु-दारी अयन।
 - (६) गांधी की लु-यन विचारित एत-यामक विचार, उत-के मेकान, सामाजिक और आर्थिक आदि।
 - (७) एतदी आन्दोलन।
 - (८) एतदी-आर्थिक कमीशन के अयनमें आनेवाले प्रयोगीय।
- इत-सर्ती पर कि-सेने लु-यन के लिग् का प्रकाशित की है, प्रयेक प्रकाशन की दो प्रियों में अयनक, अयन-यनियन, एतदी-आर्थिक कमीशन, एतद् एतद् ५६२, बयन-कट के वी कयने, एतद् आह लया है। इन विचारों पर लये लिग् के लिग् एतद् का के लेक-करी उच्योय कर-यन-पदायन पर है।



बिहार की चिन्ती

श्री शंकररावजी और जयप्रकाशजी के महत्त्वपूर्ण दौरे

विहार का पाँचवाँ सर्वोदय सम्मेलन

स्वादी-कार्यकर्ताओं का सम्मेलन

मई-महीना विहार में सर्वोदय-आवेलन की दृष्टि से बड़ा ही हलचलपूर्ण रहा । १ मई से १० मई तक 'दीप में चट्टा' के आधार पर हुए किये गये भूदान-अभिमान के सिलसिले में श्री शंकरराव देव की यात्रा विहार के उस जिले में हुई । इसी सिलसिले में २२ मई से २६ मई तक श्री जयप्रकाश नारायण की यात्रा मुंगेर, साहावाबा, पलामू, रांची और सिधुभूमि जिले में हुई । २२ मई को भूपर नगर से उनकी यात्रा शुरू हुई । भूपर के बाद आरा, शारदनाग, रांची और जमशेदपुर जैसे नगरो में वे गये, और सभी जगह उनकी विराट जनसमावेष्टें हुईं । केवल जमशेदपुर में स्वामीय मजदूर-यूनियनों के जापसी सबजो से उत्पन्न तनाव भी स्थिति के कारण सार्वजनिक बना नहीं हो पायी । सार्वजनिक समारोहों में हजारों की संख्या में नागरिक-साथकर परदे-रिपे, बुद्धिवादी नागरिक श्री जयप्रकाशजी के विचारों को सुनने के लिए इकट्ठे हुए । जयप्रकाशजी के व्यक्तित्व और सर्वोदय-विचार के प्रति जनता का नया आकर्षण इन समारोहों की मार्फत प्रकट हुआ ।

इन सार्वजनिक समारोहों के अतिरिक्त हर नगर में शान्तिपूर्ण समारोह भी हुईं, जिनमें राजनीतिज्ञ पहले के कार्यकर्ता वही रहस्यवादी में आये । प्राथमिक, प्रमा-समाजवादी, रस्तन और शास्त्राचार्य पार्टी के कार्यकर्ताओं ने इन समारोहों में ज्वाला दिव्यपत्नी श्री और भूदान-प्रति के कार्यक्रम में सहयोग देने का प्रयत्न किया । क्याकर परिवार के कार्यकर्ताओं ने भी काफी उत्साह दिखाया ।

इन सार्वजनिक समारोहों में भूदान-प्रति के कार्यक्रम को उत्सव बनाके के लिए योजना-बद्ध बनायी गयी और उन्हें कार्यक्रमित करने के लिए विद्या स्तर पर भूदान प्रति समितियों का गठन किया गया । इस अवसर पर अनेक प्रमुख कार्यक्रमों में तथा कुछ बड़े भूमिदानों में भी अपनी भूमि का दीनार्थ हिल्ला समर्पित करने का उत्सव आयोजित किया । भूदान-कार्य को उत्सव बनाने में निम्नित शारदनाग में लगभग ६००-७०० की बौद्धी भी जयप्रकाशजी की मदद की गयी ।

प्रत्येक सार्वजनिक समारोह में व्यवस्थापकी समिति का कार्य-सूची बन कर तैयार की जाती है और जनता का उत्साह होकर उनकी बातों को सुनी जाती है । लोक-विचार का हलके-देखकर और कारगर ढंग और बना ही सकता है ।

जयप्रकाशजी की इस यात्रा में विहार भूदान-सर्व प्रति के नयी भी वैधानिक प्रस्ताव कीपटी आरम्भ से अंत तक हुई । इनके अलावा भी सलहलिव स्वामी, मजदूर, विहार प्राथमिक पंचायत परिवार, श्री मीना वासना दासी, कल्याण-मजदूर, विहार, कालिदास-मजदूर की हज़ार बल्लभ संस्था तथा प्रमा समाजवादी नेता श्री रामानंद तिवारी का भी सहयोग प्राप्त हो मान्य हुआ ।

२८ और २९ मई को विहार का पाँचवाँ सर्वोदय सम्मेलन सम्पन्न हुआ । सर्वोदय सम्मेलन शारदनाग जिले के अन्तर्गत छपरी जिले में सम्पन्न हुआ । विहार के प्रमुख राजनयनिक विचारक और सादी मानव-योग समीपन के अध्यक्ष भी बनकर प्रस्ताव सादर ने सम्मेलन की अध्यक्षता की । सम्मेलन १००० लोक-सेवाक समिति में शरीक हुए । विहार सरकार के विचार-समिती श्री दीनारायण मिश्र भी सम्मेलन के अन्तिम दिन परामर्श और अपने विचारों से प्रतिनिधियों को समा-विनित किया ।

सम्मेलन २८ मई को प्रातःकाल शुरू हुआ । सर्वप्रथम विहार सर्वोदय-सदस्य के

सचिव श्री रामानन्द प्रसाद ने प्रतिनिधियों के समक्ष अपना विस्तृत प्रतिवेदन उपस्थित किया । यह प्रतिवेदन केवल विहार में सर्वोदय प्रसिधियों का सार्विक प्रतिवेदन नहीं, बल्कि विगत दश वर्षों के सर्वोदय आन्दोलन की प्रगति का विश्लेषण तथा, विद्यती निष्कर्षों का लेटा-गोसा आँखों में, बर्तित के गतिविधि कदमों में किया गया था । अध्यक्ष श्री अनुमोल से प्रतिवेदन के साथ में अनेक प्रतिनिधियों ने अपने विचार प्रकट किये । उनमें

विहार सर्वोदय-सम्मेलन का निवेदन

राज्य के बाद देश निर्माण की अवस्था से गुजर रहा है । इस खंडहर के आधार पर एक नये स्वामित्व के निर्माण के प्रयत्न में लगे हैं । इस नये स्वामित्व में व्यक्ति की स्वतन्त्रता प्रतिष्ठित होगी और सामाजिक न्याय प्रतिष्ठित होगा । इस प्रकार के स्वामित्व के निर्माण में, कुछ वर्षों बाद ही प्रारम्भ हो रहा है । उपरान्त के लिए आर्थिक विरतता, दलगत राजनीति को दूरित तथा थापना, धर्म और प्रदेय सम्पत्ती संकुचित और ओझड़े आर केशी रक्षारण के रूपों हैं । मत दब गये हैं । भूदान-आन्दोलन इस आर्थिक विरतता को प्रेम और कष्टन के रास्ते से हलक करने का प्रयत्न कर रहा है । और भूदान का अर्थ है भूदान, प्रामर्यन, संपत्तिदान, अर्थात् स्वामित्व की मिश्रिकता का रोषपूर्ण विचरन । लोकनीति का विचार दलगत राजनीति के निराकरण का एक विचारक साधन है । धर्मनिरपेक्ष का कार्य-रेषण ही एक स्वतन्त्रता का उपाय है । परन्तु हमें प्रकट करना चाहिये कि इन लोगों की आशयों में अब तक जो प्रयत्न हुआ है, और विगतों कावला मिली है, उनसे क्याथा से उल्लेख की हमारी व्यक्तिगत मते ही बड़ी है, लेकिन हमारा अर्थ भी समझने के रूप में शीघ्र है । अतः उन तीनों विचारों में हमारी तीव्रता भी प्रकट करनी चाहिये ।

इस सम्मेलन में विश्व सन्दर्भ में हम लोग एकजुट हैं, उसमें तीव्र चर्चाएँ बरस पान में आती हैं । पहले, भूदान-आन्दोलन के प्रायः दश वर्षों के बाद हम निर्दोशीतनी की विचार-समाज और शीघ्र में चट्टा दान के लिये उत्साह अवधान । दूसरी, आत्मानों काय चुनाव और उत्तरा की पंचायती राज योजना । तीसरी, प्राम, धर्म और प्रदेय के नाम पर चलेवाली बर्दे-दरनाक चरनाएँ । इस परिस्थिति का समाधान अन्य विचारों के लोभ किन प्रकार के अर्थों में बन्द करने से ही संभव है । लेकिन हमसे लिये तो उम्मा एक ही दुर्लभित मार्ग है-भूदान, लोकनीति और शासितेया का मार्ग । अतः अन्ततः हमें इस संकेतों को शरीर लिये लोकनीति का प्रयत्न करना चाहिये ।

(१) शीघ्र-चट्टा आधार पर भूदान-प्रति एवं विचार और प्रकृत दान की योजनी का विचार । (२) शासितेया का स्वतन्त्र और धार्मिकता का प्रसार । (३) लोकनीति के विचार का प्रसार ।

विचारवादी भी कि इस प्रतिवेदन में आशयों की उल्लेखों का तो उल्लेख है, लेकिन उल्लेखी विचारवादी भी चर्चा नहीं है । यानी, प्राय में यानी विचार नर आया है, इसकी तो चर्चा है; लेकिन प्राय का विचार भाग रिक्त है, इसकी ओर संकेत नहीं है । प्रतिनिधियों की यह विचारण बहुत-कुछ आश्चर्य थी । प्रतिवेदन के पीछे दृष्टिकोण था कि सर्वोदय-प्रति एक 'नये संकेत' पर प्रदेय गयी है, जहाँ से वह आने का मार्ग देखा है । मजल को दूरी के नवान, नये संकेत की लोक पर उम्मा ओर उम्मा दिया गया था । इसके बाव-कुछ प्रतिवेदन को अपने परदे दिया और मान्य किया ।

सम्मेलन में मुख्यतः पाँच विचारों पर चर्चा हुई है :
(१) शीघ्र-चट्टा के आधार पर नये भूदान की प्राति और युवाजी प्राति की विचारण ।
(२) धर्म-स्वामित्व ।
(३) लोकनीति ।
(४) साधन ।
(५) अधोनीति-विचारण ।

प्राम-स्वामित्व के अन्तिम प्रामदान, धर्म-स्वामित्व, लोकनीति, नये मोह, नर-कालीन आदि विचारों पर भी चर्चा हुई । इसी प्रकार लोकनीति की धूमिली में भारत उत्तरा की पंचायती राज योजना तथा आत्मानों चुनाव के लक्ष्य में सर्वे तथा सब द्वारा स्वीकृत-स्वामित्व पर विचार हुआ और संगठन के लक्ष्य में, सर्वोदय-सर्व पर शासितेया के गठन पर चर्चा गया । अधोनीति-विचारण के सिलसिले में अधोनीति विचारों, विचारणों, गौरी एवं साहित्य के निष्कारण के प्रयत्न पर भी चर्चा हुई । प्रत्येक विचार पर चर्चा करने के लिए एक चर्चा-समिति गठित किया गया था और प्रत्येक चर्चा-समिति के अलावा प्राम संकेतक थे । इन सभी चर्चा-समिती की अध्यक्ष-अध्यक्ष बैठकें हुईं और अन्तिम विचारों पर गौरी परचोरी हुईं । अंत में परचोरी के निष्कर्ष प्रतिनिधियों के समक्ष उपस्थित किये गये और वे सर्वसम्मति से स्वीकृत किये गये ।

अन्तिम सर्वोदय में विहार सर्वोदय-सम्मेलन के सर्वोदय ने सम्मेलन का एक 'निवेदन' तैयार किया, जो सर्वसम्मति से मान्य किया गया ।

सम्मेलन के अवसर पर दो सार्वजनिक समारोह हुए । पहले दिन की रात में भी अत्यन्तवा नारायण का एक अत्यन्त सार्वजनिक एवं ओजस्वी आयोजन हुआ । दूसरे दिन को समा में सम्मेलन के अध्यक्ष का भाषण हुआ । विहार के निवासी-समिती भी दीनारायण मिश्र तथा श्री कल्याण मिश्रों के भाषण भी इस अवसर पर हुए ।

तारीख २०-२१ मई को छपरी-जिले में ही विहार के सादी-संकेतों पर सार्वजनिक सम्मेलन विहार सादी-समिती । योग संकेत के समापनी श्री रामदेव ठाकुर

भूदान-सदस्य, शुक्रवार, १६-जून, '५१

मतदाता अपना उम्मीदवार खड़ा करें, न कि खुद खड़े उम्मीदवार को मत दें

भारत-युवक आन्दोलन ने अपना पहला दसक पूरा कर रहा है। मैं हुए अल्पमत भारत सर्वोदय-सम्मेलन संयुक्त, आन्ध्र में अमीन बांगने और बाँटने से आगे बढ़कर यह भी महसूस किया कि यह सब समय का गया है, अब उम्मीदवारों के बारे में गहराई से विचार करना चाहिए और लोकतंत्र वास्तव में लोकहित बने, इसका प्रयत्न करना चाहिए।

हूए अल्पमत भारत सर्वोदय-सम्मेलन संयुक्त, आन्ध्र में अमीन बांगने और बाँटने से आगे बढ़कर यह भी महसूस किया कि यह सब समय का गया है, अब उम्मीदवारों के बारे में गहराई से विचार करना चाहिए और लोकतंत्र वास्तव में लोकहित बने, इसका प्रयत्न करना चाहिए।

उत्पन्न है स्वीकृत चुनाव विषयक प्रस्ताव का एक अविभाज्य युवावर्ग। उन्हें देने के ना किसी प्रकार का मत प्रकट करने में नहीं है। सर्वोदय विचार के लिए, जून में बंधन लोकहितको ही तो एक थापना है कि सर्वोदय-समाज की रचना धार्मिक-कला यादी साधन के अध्याय के नहीं, बल्कि इस देश में रहने वाले ५४ करोड़ लोगों के अध्ये अधिपत्य, संगठित रूप के अन्तर्गत ही परती होने वाली जनकी शक्ति से होगी। आखिर यह वाक्य सिद्धी एक व्यक्ति के जाबू से को जोगी नहीं। यह तो समाज में को जाबूरुं कति सिद्धी है, उसके जगने से होगी। अब तक धारणा-मुक्त समाज का अपना लक्ष्य नहीं होना, ता वह भारतीय लोकतंत्र को बड़ी रीति में ही के जाने भी दखि से चुनाव में खड़े होने वाले उम्मीदवारों को बदलि में परिवर्तन करने की आवश्यकता आज सर्वोदय-विचारक अनुभव कर रहे हैं।

रत्ताओं का कोई दिखना नहीं रहना, इच्छित लोकतंत्र स्थापित हो गया है। उधे साहित बनाने के लिये यह आवश्यक है कि उम्मीदवारों का चयन मतदाता स्वयं करें।

मतदाता उम्मीदवार कैसे चुनें ?

मतदान-केन्द्रों के छोटे-छोटे चुनें में मतदाताओं के मतदान बना कर, यह काम हो सकता है। विधान सभा के लिए अगमन ५४ हजार से १ लाख तक लोकसभा के लिए ५ लाख से ५ लाख की जनसंख्या का क्षेत्र उम्मीदवार का मतदान-क्षेत्र होता है। उसमें एक मतदाताओं को किसी एक जाति को अपना नहीं होता, बल्कि उनके कई मतदान-क्षेत्र होते हैं, जहाँ वे आजाती के आधार अपना मत दाखी हैं। तो वैसे वे मतदान केन्द्र तक आते हैं, उन्हीं एक मतदान-क्षेत्र के रूप में अपने क्षेत्र के सभी मतदाताओं का एक मतदान-मण्डल मानकर वह भी मत कर दे कि कौन उम्मीदवार एक श्रेणी चाहिए। फिर अगलों के बीच अपने क्षेत्रों का वोट का संचालन होता है, न कि पार्टीओं द्वारा वोट देने वाले उम्मीदवारों में यह प्रकल्प दे कि कौन कम कुल दे का कौन पार्टी कम कुल दे।

बुराई के मतिकार के लिये एकाकी पुरुषार्थ

भावनगर में शककर की चोर-बाजारी के विरोध में श्री आरमारण भाई का एकाकी सत्याग्रह आज फिरोजपुर बर्ष से लगातार अविरत रूप से चलता आ रहा है। चोरबाजारी में जिन व्यक्तियों का हाथ माना जाता है, उनके घर, दुकान और दफ्तरो के सामने सबेरे से शाम तक मगधन-मालापूर्वक तलत आत्माराम भाई फिलते रहते हैं और शाम को विदा लेते समय थाली बना कर हजरत को याद दिलाते हैं कि "मनु ह्याको हमारी मूल स्वीकार करने की शक्ति है।" विच्छले १७ महीने से सत्याग्रह का यह स्वल्प चलता आ रहा है। भाग से यह सत्याग्रह एक नये अध्याय में प्रवेश कर रहा है। अब आरमारण भाई ने सत्याग्रह को अतिम साधन, उपाय का अवलम्बन करने का उद्य किया है और यह जाहिर किया है कि जो मिय इस चोर-बाजारी के काम में लिप्त हैं, वे जब तक इस काम से प्रान्त की हुई अतिरिक्त एकम धापस समाज को नहीं दे देते, तब तक उपायवात चालू रहेंगा। इस प्रकार उन्होंने आमराणात उपायवात का आरम्भ १०२२ में ही किया है।

अभी चुनाव में राजनीतिक सब अन्त-अन्त उम्मीदवार खड़े करते हैं। फिर एही उम्मीदवारों को मत देने भर का काम मतदाताओं का रह जाता है। अब यह प्रकल्प है कि मतदाता ही स्वयं उम्मीदवार खड़ा करें। राजनीतिक सबेरे द्वारा खड़े किने गये लोग उन्हीं राजनीतिक बर्णों की उम्मीद की विचार में रहते हैं। युवकों के बाद मतदाताओं का दुःख-दर्द पढ़ने कोई नहीं आता। आज मतदान के पहले का दर्द में लोकतंत्र के संचालन में मत-

एक उम्मीदवार के पूरे मतदान-क्षेत्र में इस तरह के कई मतदाता-मण्डल के उम्मीदवार आस में मिल कर 'सुभाष' के बजाय 'ममता' का हवाला दे, अर्थात् उम्मीदवार स्वयं रत्ता नहीं दे, अर्थात् विलम्ब को सुनना चाहते हैं, उनसे धारणा करें। इस तरह अन्तरे लोगों के बीच, निरुद्ध लोगों के बीच, निरुद्ध लोगों के बीच यह भी हो सकता है कि चुनाव की तीरख ही न आवे, या फिर कभी, रिजल्ट के-लिये के बीच ही हो। अभी की कभी खली नहीं देखी कि मिले देखो बही कर रहा है। मैं शकें शोषण है, मुझे शोष दो। उम्मीदवार को यह शोष भी दे पड़ना रहता है, आपका शोष मुझे मिलना चाहिए, क्योंकि और सब मूर्ख खड़े हैं। चुनाव-समाजों में एक उम्मीदवार द्वारा दूने उम्मीदवार की बुझावों का इतिहास उधेके गणराजों से लेकर लडकों तक बनाया जाता है और दूसर उन्नी ही ओर खड़े से उन्पर कर्तव्य बधायता है। यह एक दृष्टि पर अन्तरे होता है।

मतदान-मण्डलों द्वारा उम्मीदवार निर्धारित होने के बाद नासायन पर निवो-जन पत्र उन् उम्मीदवार के लिए अन्तरे की ओर से दायित्व होता है। मण्डल ही उधका प्रचार-प्रसार कर्तव्यी खर्च वहन करेगा। उम्मीदवार खड़ी आने में अन्तरे का प्रति-निधि होगा और पुने जाने के बाद भी सब जनसत्ता का आन लेगा। — गुञ्जकारण

आज समाज में चोर-बाजारी, घूसखोरी, रिश्वत इत्यादि बुराईयों व्यापक रूप से चल रही हैं। सराफ समाज उनसे पीड़ित है और इसका दुःख भी सर्वत्र व्यक्त हो रहा है। साराफ समाज-सुधार ही इस परिस्थिति के लिए अर्थव्यवस्था पर परोक्ष रूप से विचारें, परन्तु इसका अतिकार किस तरह से करना और इस बुराई में से किस तरह मुक्त होना, यह सार्वजन्य उत्पत्थ की सुझाव के बाहर की बात नहीं है। देश-हित का विचार करने वाले विचारक विचार को बनेक प्रकार से करते हैं, परन्तु तबका प्रत्यक्ष कर्तव्य अपने विचारक तत्पर हैं, पूरव विनोदजी जैसे थोड़े से लोगों को छोड़ कर कहीं भी होता हुआ नजर नहीं आता।

यह सब तो अर्थव्यवस्था के अनुदार ही समाज में चलता रहता है। बुराई का मत देना भी है कि समाज-परिवर्तन के लिए ही चोर-बन्दगी और सत्कार्यक कर लें, ऐसा कोई तानाशाह चाहिए।

ऐसे विचार मत आन समाज में प्रचलित हैं। परिणामतः समाज की बुराईयों को निरुद्ध करने के लिए कोई प्रतिकारमय कति खरी नहीं होती है और उन्पर बुराईयों की नजर भी गरी रहती जाती है। एक सन रचनात्मक कार्यों में परिश्रम का भाव्य और शूरवी तर्क प्रतिकारमय प्रयत्नों का अभाव। परिणामतः समाज जहाँ है, वहाँ का वहाँ चला है। ऐसी परिस्थिति में आरम्भ किना हुआ भी आत्माराम भाई का एकाकी पुरुषार्थ हम सबका ध्यान खींचता है।

धार्मिक बुराईयों के निवारण के लिए अनेक मार्ग हो सकते हैं, और उन मार्गों के विषय में मतदाता ही ठकवा है। लेकिन वे बुराईयों विन्ती चाहिए, यह बात तो सर्वगत है। ऐसे एक सामाजिक अनिष्ट को दूर करने के लिए भी आत्माराम भाई ने सुधारम अरम्भ किया है। इनमें एक विच की तरफ, उनकी तरफ और जीवन आहुति देकर भी समाज परिवर्तन के लिए उत्तरता, वे एक प्रकट होती हैं। वे हम शकें कि से गमदर विचार और समझ के निर्धारण के लिए सक्रिय पुरुषार्थ की मांग कर रहा है।

एक आशा करते हैं कि इस प्रकट प्रति हर कोई आला होकर अपनी शक्ति, सहाय्यता इतम लगाये।
अनवरण (वीरधर) — गुञ्जराती 'मूमियु' से

की आवश्यकता है—आज। इस सम्मेलन का मुख्य विचारणीय विषय माना शोष और श्रेष्ठीकरण था। इस विषय पर गहरी चर्चा हुई। श्री उपकाराना सारण्य का एक अत्यन्त विचारोन्मत्त व्याख्यान इस अवसर पर हुआ। उनके व्याख्यान के शारी-कार्यकर्ताओं के मतिकार के लिए एक नई लुटक और विचलन के लिए एक नई दिशा मिली।

बर्णों की शक्ति से वे हीनी सम्मेलन रहे कला रहे।

इस सम्मेलन के आयोजन का मुख्य भेद इष्टरीयम दिना सर्वोदय-मण्डल के नीयतन सेवकको भी व्यापारमण्डल तथा उनके इष्टरीयम साधनों को है, किन्तु अपेक्ष प्रभावों और शारद के सब पर ही इष्टरीयम मिले हैं यह आयोजन समर्थ हो सका। शुभरी त्रिपुणी की बनना ने सार्व-रत सम्मेलनों का सर्वो बहन किया, किन्तु इस आयोजन में भारतीय काल, प्रजा-समाजवादी और स्वतंत्र पार्टी के बर्ण-कर्ताओं का शक्ति शक्योय प्राप्त हुआ।

— सविधानन्द

क्षण-क्षण और पैसे-पैसे के लिए जवाबदेह

संस्था के आधार पर प्रसार का अंश का आधार बन पायेगा।

पूर्णचन्द्र जन

मैं तो हर उम्र-प्राप्त व्यक्ति को, जो समाज के बीच रहता है, अपने आपको अपने हर क्षण और अपने पैसे-पैसे के हिसाब के लिए जिम्मेदार तथा जवाबदेह मानना चाहिए। सामान्य वृद्ध-श्रापी व विधन जो मनुष्य-समुदाय बन गया है, उसका अंश होने मात्र में ही यह जिम्मेदारी उस पर आ जाती है। लेकिन जिसने अपने आपको स्वच्छाष्ट्रिक समाज को समर्पित कर दिया है, वह तो इस जिम्मेदारी से बिल्कुल बच ही नहीं सकता। सार्वजनिक कार्यकर्ता जो अपने आपको मानता है, उससे उसके जीवन के हर क्षण का और उसकी कमाई के हर पैसे का कोई ब्योरा पूछे, या न पूछे, उसकी वैश्रायी वह सच देने की हर समय होनी चाहिए।

अपने सार्वजनिक कार्यकर्ता या सेवक की भेद में बहुत खेप आते हैं। शराबी अधिकारी व कर्मचारी भी लोकसेवा की श्रेणी में हैं, लेकिन उनसे यह अभिप्राय नहीं है। सार्वजनिक संस्था आदि वे संस्थाएँ होती हैं जहाँ अभिप्राय है। इनमें ही सर्वोदय या गांधी-विचारधारा के कार्यकर्ताओं पर नजर हल चिन्तन के अन्तर्गत अधिक है।

अक्सर इस प्रकार विचार-विचार रखते, छात्री लिखते, उस विचार व अपने रोज-मरत के काम-काज को वाहिर करने परेश की नात आती है तो सवाल उठाना जाता है कि इस प्रकार क्या बर्तक पर पाँच नहीं की जाती है? किन्तु अपने निज के या परिवार भर के विशिष्ट मात्र के स्वयंसेवक की समर्पणा में अपने आपको बाँध लिया है और पूरा जीवन छिपने समाज को दे दिया है, उल्लेख कर का और श्रेष्ठ कर क्या विचार प्रेरणा? उसे क्या विचार रखता है।

असल में जिस उल्लेख आ जाती का जिद उल्लेख आ भरती है, जब कि देना मान होता है कि कोई जवाब नसब करने वाली व्यक्ति का संस्था है और कार्यकर्ता या सेवक को वह जवाब देना है, उसकी संस्था कर्मती है या उसके लिए वैचारिक रचना है, वह कर्मती की पारकी, या अधिकारी के भारण, जो भी वास्तव प्रतिक्रिया होती है कि सेवक के स्वाभिमान को टेल सजाती है, वह बचावदेह होने में देखती समझता है।

इसे इत पर्यट से समझना और असल में क्या जाना जाना है कि ओर अपना की माँग या अपेक्षा करे पाये, फिर चाहे वह संगठन हो या व्यक्ति को के लिये ही रहल है। संगठन या व्यक्ति को अपने देवक या श्रापी व विचारधारा करना चाहिए और हर सभी व सेवक की अपना सेवनामका, अपना विचार-विचार रिची के भी निर्देश और रिमार्क के लिए खुला रहना चाहिए। सार्वजनिक कार्यकर्ता, पाठ तीरे सर्वोदय-क्षेत्र के सेवक की जीवन-शैली को ऐसी होनी चाहिए कि उसे हर कोई, किसी भी रूप देल सके और उल्लेख पर कुछ भी टिप्पणी कर सके।

साह है कि कार्यकर्ता की ऐसी वैश्रायी होगी, उसका जीवन हर प्रकार का वाहिर दिखने लगेगा तो वह ही उल्लेख हर पैसे और हर क्षण की प्रामाणिकता बन पायेगी, वैशा जीवन न बना हो और वैसा आदत न हो पाये, वह सक दुनिया बनाना मोगी, उस पर दौलत के बस-दुखका ही रहेगी। सार्वजनिक जीवन में शरी पर के निपट और तालक का उप ब्यवर्त होता है।

कार्यकर्ता के पास संस्था के कामकाज का कुछ जिम्मा हो तो दिनाच (जिनाच वगैरह) के सम्भार में सकल बचावदेह और सार-धान करने की अधिक जरूरत हो जाती है। संस्था के साथ कार्यकर्ता, सिमोचन स्थिति से निपटित दिनाच, रिपोर्ट बनवने की माँग कर सकते हैं, संस्था में अपने लिए निष्पक्ष ही रहने हैं तथा समाज भी उल्लेख माँग कर सकता है।

जैसे सार्वजनिक कार्यकर्ताओं में जो छोटे-बड़े प्रेमी सेवकों के लिए उनी प्रसार विभिन्न संस्थाओं व संगठनों में भी सर्वोदय विचारधारा के संस्थाओं के लिए ऐसे विषय में अधिक सहज और निष्पक्षीय रखने की जरूरत है।

वे संस्थाएँ सादी आदि के कार्यक्रम से संबंधित हैं अथवा प्रदान प्रदान आदि के परामर्श, रज ठमी को दिशा (जिनाच) के अन्व-डेट रखते, उसका निपटित निरीक्षण करते, उस सचको सार्वजनिक ठौर पर प्रकाशित करने कीशरह का एक बुनियादी कर्तव्य मानना चाहिए। संस्था में यह सब चीजें रहना, महज यह दे देना बाप तो, औप्यं यही है और तरीका भी यही हो सकता है कि उन सचका का हर कार्यकर्ता अपने लिए भी ऐसी जिम्मेदारी की समझे तथा जवाबदेह होने में कोई हीनता न अनुभव करे।

श्री-श्री लोकसेवकों, जिनाच सर्वोदय-मदलों वगैरह के दिनाच, रिपोर्ट रिपोर्ट व उनके कार्यविचार की अनिपटिता आदि के बारे में कुछ सुझावों में आ जाता है। कुछ प्रदेय, जिनाच आदि संगठन अपना दिनाच व कार्य-विचार प्रतिक्रिया प्रकाशित करते हैं। यह अच्छा है। हर प्राथमिक जिनाच या प्रदेय-संगठन को यह बचना चाहिए। लोकसेवक, प्राथमिकिक वगैरह स्थितिगत भी यह वाहिर करे तो बहुत उपयुक्त है, लेकिन स्थितिगत ऐसा वे वाहिर करे, या न करे, संगठन, संस्था का जिम्मा उनके पास ही जो उसका प्रशासन जो बर्तक करना चाहिए।

इसमें भी साह है कि निरी औपचारिकता की प्रति वे सार्थ नहीं होग, बल्कि उसके आदिप व सुपार नदुगी। ऐसे और हर क्षण के उपयोग का चौपट देना एक आदत से दारिद्र्य होया स ही यह कर्तव्य

व अधिकारी की कठ-मन्त्र में रहने की एतन रणनीतिक कार्यक्रम व स्थिति या

प्रदान पत्र-परिचारों एवं सेवा एवं के प्रदान के और प्रदेयों में भी कर-जवाब निश्चयी हैं। सामिक, विषय संबंधित सर्वोदय-मदलों और स्वयंसेवक तीरे के संबंधित कार्यकर्ताओं को चाहिए कि इनमें व अपने क्षेत्र के पत्र में इस प्रकार, हो सके तो अपने भी, लेकिन संस्था के कामकाज व दिनाच की रिपोर्ट तो बरत ही समय-समय पर वाहिर करे, इस प्रकार हर पैसे व हर क्षण के लिए जवाबदेह होने के कार्यकर्ता और संस्था दोनों की ही शक्ति रहेगी।

सर्वोदय-पात्र का एक व्यवस्थित प्रयोग

सर्वोदय-पात्र के कार्यक्रम के पीछे जीवन में संस्कारों को स्थायी निर्माण की जो दोष-दृष्टि है, वह धीरे-धीरे लोगों का ध्यान आकृष्ट कर रही है, और कई बचल लोगों ने अपने-अपने मुहलों या क्षेत्र में सर्वोदय-पात्र का व्यवस्थित कार्यक्रम चला लिया है। सर्वोदय-पात्र से होने वाले संबंध के उपयोग के बारे में बकर विरोध भयान दिखे जाने की आवश्यकता है, जिसके बारे में पिछले अंक में प्रकाशित एक पत्र में विनोबा ने सतरे किया है।

भार्यनगर, बानपुर में सर्वोदय-पात्र का व्यवस्थित कार्यक्रम पिछले कई महीनों से चल रहा है, जिसकी जानकारी 'भूदान-मंत्र' में दी गयी है। बायनगर के मिर्नों में एक सर्वोदय-मिन-मण्डल की स्थापना की है और हर महीने सर्वोदय-पात्र को आय-भ्यय का विवरण वे पात्र रखते बाते खब परिवारों को भेजते हैं। नीचे उलकी ओर से हाल में ही प्राप्त सामासात्मिक-विवरण दिया जा रहा है :

सर्वोदय-पात्र-परिवारों की सेवा में—

सर्वोदय-पात्र का आर्य-व्यय विवरण
अप्रैल १९६१

व्यय	₹-₹-₹	सर्वे बारा	₹-₹-₹
खिला बारा	००-१५	१. सामिक-सैनिक कार्यकर्ता की सहायता	५०-००
अप्रैल '६१ का संकलन	८२-१५	२. सं-भा-० सर्वे सेवा संघ की सहायता (सर्वोदय मासिक संस्था-हनु)	११-०५
(१९१ परिवारों का)		३. सेवक बारा में— एक बीमार रहल की बर्षा ४० १२-६५, एक रहल को मरत ४० ५-५०, एक रहल की श्रापी में 'गिता प्रवचन' गेट ४० १-२५	१८-१२
		५. साधन-साधना	००-८८
		५. गेट जमा	८१-००
कुल जमा	८१-०६	कुल सर्वे	८१-००
साधारण से सहायता	२२-००	सामिक-सैनिक की सहायता	२२-००

आवश्यक नोट—

- १—दिनाच का पूरा विवरण वेष्ट-कार्यालय में देल सकते हैं और इस सम्बन्ध में अपने सुझाव दे दे सकते हैं।
- २—कृपया अपने घर का सर्वोदय-पात्र बनाना या पैसे सहित अपने मातलों द्वारा मासिक विवरण हा-० ५ मूल को प्राप्त-८ बजे गांधी-विचार केन्द्र भेजने का प्रयत्न करे। इस सम्बन्ध पर एक 'साल-मोली' का भी आयोजन किया गया है।

सर्वोदय मित्र-मण्डल, गांधी-विचार-केन्द्र, आर्यनगर, बानपुर

पाठक दोहोने कि हल महीने सर्वोप-
पाठो से होने वाले संवाद का मोरोराग
विधात हल रूप से जस्टिस सभ परिवारों
को पहुंचाया जाता है। परों में लोगों को
पद भी अनुभव दे दी गयी है कि वे हिस्सा
का पूरा विवरण केन्द्र से बालीय में देख
सकते हैं। लोगों को प्रभाव भी मोंगे गये
है। सिधे महीने की जानकारी लोगों तक
पहुंचाने के अलावा एक वर्ष का मंड भी
उपलब्ध है कि वास्तु महीने के संवाद को
केन्द्र पर पहुंचा देने का प्रयोग भी इसके
बतिये दिलाया गया है। सर्वोप-पाठ में
अन्या राजक के द्वारा उलगाया चाय,
वेला मुखात निमोन ने दिया है, उसी के
बाद-साथ अन्य वर के संशोधन पाठ में
सहायती अन्या या सके बास्कर की वे जकर
द्वारे में किमी केनरीय स्थान पर अना
करें, यह भी उनके सकारों को हट्ट करने में
उपयोगी सावित होगा। वर्ष के बाहिर
होने है कि संवाद के दिन 'शुभ-योगी' वर
आशुभ भी नैस पर दिया गया है।

सर्वोप-पाठ, उसके संवाद और उसके
विशेषों का वह द्वारा संवर्धित कार्यक्रम
अनुक्रमणिका है। अन्तर रशो प्रकार 'सिधिय'
अनुक्रमणिका का प्रसारण भी होती रही वर
सर्वोप-पाठ के जो अनेक ह्मने रखी है,
वह पूरी हो सकती है, अन्वया भी अन्य
भी कराए है कि सर्वोप-पाठ बखरी ही 'दान-
दक्षिण' की एक सङ्घि में परिवर्त हो
कराया। अन्वया है, अन्य रूप में काम
लिये सके कार्यकों की सहायक के हल
प्रयोग से काम उदायोगी और उनके अल्पे
केच में हल प्रयोग को बोंके सिधिय प्रवर्धना
प्रवर्धनी ही को उलगी जानकारी का
'भूदान-पाठ' के बतिये हल लोगों तक भी
पहुंचाये।
—सहायक

उपचारकी विधि और अस्वीकार्य एक
मिलि रखा है। एक ह्मने माताओं में
उलके स्थापना के लिए सरे हैं, वह उचित
है क्या? आत मुनिगा हलीक निकट
आ रही है कि लोगों को एक-दूखे के
महायत, सहाय और उपकरण की जानकारी
सकने सहायक के लिए भी अस्वीकार्य
हो गया है—उदाहरण दिस, वर घणों के प्रति
सहायक और मानव विज्ञान के लिए
को यह आवश्यक है ही। उसी प्रकार
हल-सहज के बारे में ही अनुचित वा
दसि आज को सारी परिस्थिति के मेल
नहीं लाती। हल-सहज के तरीकों में भी
आधुनिक प्रमान और प्रसर उदाहरण
अव्यक्त आवश्यक है।

नेतिक मूल्यों की अवहेलना

आम की राजनीति किच तरह तुले-
आम अणुस्वाधिया को मासक देखी है
उसी उलको बढ़ाया देती है, इसका एक
उदाहरण उदाहरण रैसल की हाल की घटना
के सिखता है। नैस के निरुले चुनावों में
साम्प्रदायिकों के लिलका कायक, प्रमा-
समान्यकारी पार्टी और मुस्लिम लीग वे
मिल कर एक कोर्ष बनाया था। चुनाव में
कोर्रों की जीत होने के बाद यह परों
के बीचों-बीच का बसना आया तो यह सब
ह्मना कि मुस्लिम लीग के प्रतिनिधि को
विधान-सभा का अध्यक्ष बनाया जाय।
अभी कुछ दिव पहले मुस्लिम लीग के वे
प्रतिनिधि को नेसक विधान-सभा के अध्यक्ष
है, उसकी सूलु की आने के निर यह सलाक
लगा हुआ कि विधान-सभा का अध्यक्ष
की ही है। हल पर मुस्लिम लीग के प्रति-
निधि को अध्यक्षत्व देने में फालो की
हिचक थी, क्योंकि उलगी देय में निर
के लक्ष्य हूँ सहायक मनोत्रुधि के लिलका
कायक ने ही सारे सुलए आवाज
उदायोगी को और हलएक मुस्लिम लीग को
उदायोगी देने में उले खेरका रीने का
सलका था। पर उल यह ही रर वा कि
अन्तर रशो की मुस्लिम लीग को सलए
भी उल सब को साम्प्रदायिकों के लिलका
को सलुत मोची है, वह हूट बायाक
और उलके मोचों की सलरा के भय होने
का ललस भी लउर को बायगा। फलकरवा
यह लक्ष्य निष्करीय ही कि मुस्लिम लीग
सिखनों काय कलगा पावे, वह अन्तर दास
होने के पहले मुस्लिम लीग से हलकर देरे ही
कायक उलका संभव करयेगी। इसके अलावा
बढ़ी की मुस्लिम लीग के एक प्रमाण करल
ही मुहम्मद कायक ने सभी को दिन
के प्रमाण लीग से हलीक दिया और ये
केलकों प्राणविक होने के पहले कायक दे
केल की विधान-सभा के अध्यक्ष उन
लिये मोची होने।

राजनीति का सलल ही अस्वीकार्य-
वादिता है, लेकिन एउ तरह प्रमा-प्रमा-
पाठ करने के बाय कामेन उलर सीधे-
सीधे मुस्लिम लीग के प्रतिनिधि को रीकरा
कर लेती को वम । कम दियानकारी के लल
की तो सलु होती। जो यलकि सल लह
मुस्लिम लीग का एक प्रमाण सलर
वैते सलल ही गया वह सामान्य कलस
के परे की बात है। या तो उलके मुस्लिम लीग
के सलरस होने के कोर्रों ललल माने नहीं
ये और अन्तर के जो लिण हलरोग देवर अलए
हो जाने के कोर्रों माने नहीं हैं। सलएन में
हामने एउ कलानी पदी थी कि एक मही
अमने उवा की पीछे देवर उधरण से वा
सिख, लेकिन अनेकौ उवा से बा
कि उा प्रवता वा कि उले हलम
दियोग, लेकिन अनेकौ उवा से बा कि
उल हल एउ मासिक को पीछा दे सकने
हो तो सलरें को नहीं दोगे, इसका क्या
अरेका? भी सोहम्मद कील मुस्लिम लीग
को पीछा देकर तो वहाँ से नहीं हटें हैं, एउ
मुस्लिम लीग, कायेक उवा प्रमा-प्रमा-
पाठी घली उले मिल कर नकर एक लह

वे दिन देखाते लोगों की आँसू में धूल
होने की कोशिश की है। इतने लिये
हल करे बायक वा और क्या नतीजा
निकाला जाय? एउ तरह तुलेआम अण-
सुधारिया को धनात कर ह्मने दूख के
वेना सार्वजनिक जीवन में मिन दूखों को
प्रोत्साहन दे रहे हैं, वा ये उद्योग सारउ
के समय मुलके के लिए उलात सावित नहीं
हो सकते। ये नैसक मुल और अलएर
कायक दे नैसक वेने हैं, न अन्वया वा
सकते हैं। उनका पररण सिधे-सहायों
घणों के कारण अलएक है। हट्ट होती
है। नैसिक मुल ही बायक रर
करने हैं, नन हर लीखी उलेकर उन
सकारों को हट्ट गली जाय। आत सल
नैसिक के नाम पर सामजनिक चीजन में
किच तरह तुलेआम नैसिक मूल्यों की
अवहेलना की जाती है और उनका जान-
बुख का योगदानपूर्ण योग्य कायक है, वह
एक तरह से आने वाली पीढ़ियों के ही
नहीं, बलिक भीसूवर समक के प्रति भी,
श्रीहर और सधनीय अलएक माना जाना
चाहिये।

—मिथुनराज कड्डा

चम्बल घाटी की डायरी

सीतल अलिय आस-सर्वगणकारी उखेव हूरे
अयोधर अभियोग में भी
५ मई, '६१ को गिला वेला-नर भी सलए
अली की अलगल से निरोग सुलए
हुमा। उल पर अब अल कोर्रें ललएन
न होने के वह ५ मई की दास को
गिण्ट गिला सवेले के उखर दिया गया।
अब वह राजमोतार और भीरुणा
की उल सुल से नैक जीवन गिला
हुमा। सलए उल घाटन में उल वर
लिलके उलएक उलियोग से निरोग सुलने
की अर्धक ललएकल हादों-कोर्रों में की है,
विशयो देरी भी वे ० एम ० आनद करेगी।
अभी सुनवाई छल नहीं हुई है।

आस-सर्वगणकारी बतियों में लखी
और प्रभु को प्रोठ कर अलए वर वर
मरेका ललएन द्वारा सुनरें बल कर
अल उलर प्रेरा सलएन द्वारा अलए में
हल-
दने कल रहे हैं। अल एक सुकुरवा
इलाक में आया है, किमी मोहलएन
और सुनि-
लिह अभियुग है।

आस-सर्वगणकारी बावी सुमपलक
और अलएकिह के परितरारवाले को उलके
सिलेरी अलकी मोची लखी में लने नहीं
पाहते हैं। उनकी भी अलए आदि भी और
में न लरें, एला उनका कलमा वा। हलके
बलाय परलर गीलि उलएन करने का
मकल कर रहा है और कोमिया हल वा
की है कि उलके परितरारवाले सलए
अनेक अब वे सेली करे और दो एक सल-
लेनिक बढी उलर लीएक दिजने और
उलकी घलर में हने। हल पर गोंब लोके
कुल वेवर हैं। बढी सल के उले
हालियेनिक प्रवसलही है।

अब आस-सर्वगणकारी सलियों के
परिचारे से भी उलए सलकं जाये है।
त्रिनदों के कलमदान आदि उलएक
कलरें हैं वह वा लखी को सुल आदि
सलासल सलिक की आलएकलवा हो उलकी
आनकारी ली वा रही है। हलके लिये

भी उलएकिह, भी सुनेरर मारं और
भी ललएकिह देय में आ रहे हैं।

सुनीया बिले के सलएकल नगर में
साल १५ मई, '६१ को एक अलएकल
के अलए अलएकल वर मकान-मालिक
हाण लिलके करे वर मनु सुनकर हुमा,
जो उल
वम एउ सलएक के लीए बयान से वर
गल, वर हल से अलएकल के सुनि में
सिलेरी कलने उला नगर के निरावियों
की सलर कर मकान-मालिक को सुकान
पर हलएक कर देवे व हूँ नगर का सलमकल
गिण्टुए को भाग। एले समक सलमकल
के लरर भी लखीमनर नियर ने बढी
के प्रमानणकार के सलएक-सलएक
के अलएक और निरावियों को सलत कर
वय नलएकलकों की सहायकल प्राप्त कर
१९ मई को सलमकरण घलल किय।

सलिलि के उलावणल्य बावे के
२२ मई को परलया सुल हुई। सल नी
अनानी मारं, अना मलएक, दयानंद
सुनुयरी, मलएक मारं आम सलएके से
पीठ वल कर सलिलि के प्रमान सलएकल
गिण्ट वलने हैं। मारं में भी लखीमनर,
सुनेरर मारं और ललएकिह भी सलम-
कल हने हैं।
—सुधाकर

साम्प्रदायिक घटना-चक्र...

[६४ र बा ०]
रमाम सलियों की अलए है, जो हलएर ने
उने ही है ? उलके कल कि "सुखलमानों
की सलएक से हिलएलन की सलएक
अलएक में बडे, दुलकी कोमिया कर और
मिना में बडे मिना मलएक के खल-सलएक
की सलमान सले हूट अले सलएक लेड
दिस कले सिधियान में सलपी के सार
रह सकते हैं और अलम निकाल कर
लगे हैं, यह दिला कर हिलएलन के
एउ नलएकल सिलेवल उलए होने का दाय
सलिये हैं ?"

बनों तल "इलामी सिलण" के लिउ
अलम हलू का मलठनी का सलात है,
आत यह आत धर्मनक सली होती है कि
हलमलानों का धर्मनक सलएक सलएक का
यात उं सलली सिलि में है। हलमलानों का
यह सलएक सलमलिक के लिउ के सलएक
को उलके मलएक की उलएक वा लगे हैं,
पर आत ही उनके लिउ में हल उा की सलने
लसक है कि आत सल उलने अरपी
धर्मिक सलएक और सलएकल को उं

इन्दौर में पुनः अशोमनीय पोस्टर पोते तथा फाड़े गये

इन्दौर में २ अज्ञ को प्रसन्नान कृष्णपुर मित्र सेवाशाली के पास नदी की ओर लगे बसंत विभवर्ष छिपिटेड द्वारा प्रदर्शित "रेवती समाज" फिल्म के एक अशोमनीय और गंदे पोस्टर को निश्चित अवधि के भीतर उधरे मालिक द्वारा न हटाये जाने पर गन्दकों "क्षीरी कार्यालय" द्वारा उठे इत्याना पत्र।

इन्दौर नगर सर्वोच्च न्यायालय में २ अज्ञ की प्रत्यागुप पोस्टर-निर्माण उपस्थिति को विच्छेद दिनों उपरत पोस्टर को अशोमनीय जाहिर किया था। तत्पश्चात् उक्त मालिक ने लिखित पत्र द्वारा संबंधित अशोमनीय पोस्टर को गंदक से हटाया गया और प्रदर्शन को स्थान में रखने हुए कार्यालयिक स्थान पर उक्त प्रदर्शन को भी हटा दिया किंतु अज्ञ की भी। परन्तु पेट है कि पोस्टर-मालिक ने उक्त पर कोई ध्यान नहीं दिया और इस प्रकार इन्दौर में विने-पोस्टर प्रदर्शन में जो बीच में घालना आया भी, उक्त भाग गया। इसलिए ४८ घण्टे की पूर्वपना देकर मजदूर द्वारा कार्यभारिक स्थानीय पर प्रदर्शित अशोमनीय पोस्टरों को पोतने और फाड़ने की "क्षीरी कार्यालय" बनती रही। इसकी ध्वजना संगठित परवर्ती अधिका-रियों को पहले ही भेज दी गयी थी।

मंडल ने इस बात पर भी आश्चर्य और रोद प्रकट किया है कि वर्तमान अशोमनीय पोस्टर नगर-निगम की स्वीकृति के बाद लगाया गया था।

"क्षीरी कार्यालय" द्वारा पोस्टर-जम्मा इन के अनवरत पर नागरिकों के अधिकृत नगर में सर्वोदय-कार्य के प्रयुक्त भी धारा-भारि नारक, भी हेन्रिडुमार प्रम, भी पुकारा रूपको, भी तात्कालिक प्रिण्टर तथा अन्य सर्वोदय कार्यकर्ता और उद्योग-व्यवसायी को प्रदर्शन के प्रयुक्त भी हेन्रिडुमार प्रम ने अशोमनीय पोस्टर अविधान में निहित अर्थपूर्ण पर प्रकाशित।

श्री मोहन परीक्ष जापान में

श्री श्री-मोहनजी प्रयोग-कमिति, अहमदाबाद के प्रति श्रीमान् द्वारा विभाग के संतोषक श्री मोहन परीक्ष प्रम के पहले सहाय में श्री-श्रीमान् के अत्यन्त के लिए ध्यान गये है। जापान में वे तीन महीने रहेंगे। जापान के प्रयास में सर्वोदय-विचारों के आदान-प्रदान की दृष्टि से मोहनमार्ग ने जापान में कुछ समय पूर्व स्थापित सर्वोदय-मण्डल को भी समर्थ किया है।

नोरखपुर का सर्वोदय-विचार समिति

नोरखपुर में १८ से २१ अज्ञ तक होने वाले सर्वोदय विचार विचार आर्थिक चरमार्थ अनिश्चित रूप एक के लिए स्थापित कर दिया गया है।

विहार में कार्यकर्ता-प्रशिक्षण-शिविर

विहार में 'प्रिय मे कट्य' के कार्यक्रम की वजह से और एक सप्ताह में कार्य-कर्ताओं के प्रशिक्षण के दिहाय के हर बिले में तीन-तीन दिन के शिविर चलने का विच्छेद प्राचीन सर्वोदय-सम्मेलन के अवसर पर तय किया गया है। यह विचार-शिविर का १८ जुलाई से शुरू होने। योजना देखी बनानी गयी है कि दश शिविर में पहले दिन श्री चक्रवर्तन देव, दूसरे दिन श्री बोरेंडमार्द और तीसरे दिन श्री दादा बर्मा विचारों का शिविरियों का मार्ग-दर्शन मिले। प्रशिक्षण में विषय भूदान, सामदान, साम-संरक्षण, लोक-नीति, चुनाव, संघात राज आदि रहेंगे। हर शिविर में बिले के लेखकेवक, अन्य परामर्शक, कार्यकर्ता, पत्राचारों के प्रमुख, राजनैतिक पक्षों के कार्यकर्ता तथा अन्य सामाजिक कार्यकर्ता, कुछ मिल कर १०० तक शिविरियों रहेंगे। विचार-शिविरों की यह शृंखला सा. १८ जुलाई से शुरू होगी का ५ अगस्त को समाप्त होगी।

इन्दौर में अ० भा० मंगी-मुक्ति परिसंवाद

म. ३० हरिजन लेबर संघ के तत्पश्चात् इन्दौर में २५ अज्ञ से आयोजित किने का रहे अ० भा० मंगी-मुक्ति परिसंवाद एवं कार्यकर्ता-शिविर का उद्घाटन कार्य के मुख्य मंत्री डा० भी देवतनयाय काट्य करेंगे। शिविर एवं परिसंवाद एक सप्ताह तक गोविन्दनम सेक्टरिया टेकनायनरिड इस्टीमेट के छात्रावास में चलेंगा, जिसमें मेहसूरों की अत्यन्त कल्याण, विर पर मैत्र होने की प्रथा समाप्त करने तथा मेहसूर महिलाओं को जल्द एक शिवित करने की समयावधि पर विशेष रूप से विचार होगा। कार्यकर्ता-प्रशिक्षण में विहार, महाराष्ट्र, पंजाब, गुजरात तथा दिल्ली आदि स्थानों के करीब ५० कार्यकर्ता मंगी-मुक्ति आन्दोलन को अधिक प्रभावशाली बनाने के उद्योगी सुझावों पर विचार करेंगे। परिसंवाद में भाग लेने हेतु महाप्राण के हस्ताक्षर सर्वोदय-सेवक भी अत्यावश्यक पदचरन, भी विद्योती हरि, सार्व-सहायक भी इच्छाकर दादा, आदिवासी कमिन्स भी भीकत भाई, प्रो० एन० ए०० मक-भाजी एवं बचरों के अत्यन्त-विचार के स्वस्थ-विचार तथा केवरीय और प्रयोग अधिका-रियों के अने की सभायना है। इन्दौर में परिसंवाद का आयोजन यहाँ पहले किने गये काम की दृष्टि में रहते हुए किया जा रहा है। विहार प्रांति के अने बाले कार्यकर्ता उच्च नगरपालिका तथा इन्दौर नगर-निगम के कार्यकर्ता, मेहसूरों की कार्य-दिवाओं तथा जीवन-दाताओं का भी अनुरोध करते हैं।

इस अंक में

- १ निवोध
- २ विद्याप डून्दा
- ३ विनीत
- ४ शिवरतन दहसू
- ५ राजा परमेश्वरी
- ६ नायकन देवार्थ
- ७ कथामय विवेकी
- ८ पूर्वचरत जैन
- ९ जनकपालन-श्रीपरी
- १० सूर्यचन्द
- ११ सुबसारा
- १२ —
- १३ —
- १४ —
- १५ —
- १६ —
- १७ —
- १८ —
- १९ —
- २० —
- २१ —
- २२ —

समाचार-सार

● भनबाद बिले
बिले के पत्र विनिमा-मालिकों के नाम पर मैं निवेदन किया है कि वे अने विनेमा-मालिकों में अशोमनीय दौलत लगायें।

● विवरन अशोमनीय, इन्दौर में
स्वाक निधि के स्थानीय के उपायकाम में दीर्घकालीन नि अत्यन्त विचार १५ से २२ मई तक लगाया गया।

● गांधी स्मारक निधि प्रेषण
३० की ओर से किया गया।
१५ के १९ मई तक एक शिविर चलें।
शिविर में विद्योती देव बिले के भूदान कार्यकर्ता, कामरेक्टर, संघातकारों के उत्तर एवं विचारियों ने भाग लिया। शिविर में उद्योग-अभियन्ता में स्वीकृत प्रस्ताव पत्र बर्मा हुए। अमदान में एक कार्यकर्ता की नीची भी लोदी गयी है।

महाकोषाल क्षेत्र में प्रायत, विचारित भूमि

सम्पूर्ण भूदान में मंडल महा-कोषाल द्वारा सर्वोदय-कार्य पर जानकारी के अनुसार अतिल ११ अज्ञ तक महा-कोषाल क्षेत्र की २० तहसीलों में भूदान के प्रथम ३,१,९२३-२३ एकड़ भूमि, ११,९४८ भूमिद्वारा परिकर में विचारित की जा चुकी है।

क्षेत्र में अज्ञ तक १,१०,९०५-१९ एकड़ भूदान ४४,८२५ दाताओं द्वारा प्राप्त हुआ है। इतने से विचारित भूमि के अन्तर्गत १०,८८९-१० एकड़ भूमि विचारित की जाकर भूदान के अयोग्य साधित हुई। १,९२३-२३ एकड़ भूमि विचारित के अयोग्य होने से विचारित नहीं की जा सकी। मरण के पूर्व अधिका-रि भूमि विचारण के कारण किने जा रहे हैं, किन्तु भूमिदान-परिचारी को आभीरिका का कारण उल्लेख हो सके।

विहार सर्वोदय-मंडल की नये संयोगक

विहार सर्वोदय-मंडल की एक बैठक भी अत्यन्त सारथक नारायण की अध्यक्षता में हुई, जिसमें श्री स्याम दाजु ने अध्यक्षता की। डॉ० सर्वोदय-मंडल के संबोधन किया गया। उनकी एक हस्ता पर सर्वोदय में सुविधा दिने के हेतु कार्यकर्ताओं की समनारायण विहार सर्वोदय मंडल के संबोधन हुए गये। श्री स्याम दाजु मंडल के संबोधन के दृष्टि शिवित छह महीने के काम कर रहे हैं। इन्हें १९५४ में कार्य विनोयको भी सर्वोदय-मंडल का संबोधन मिला था।

विनोयानो का पत्ता

मार्केट : प्राम-निर्माण कार्यालय
नाथं सागीमुर (मसम)

राष्ट्रीय एकता का सवाल

नवदृष्ट्य चोषयो

[मंगल ११, १२, १३ और १४ जून को होमावावाट जिले के रुमनाडा गाँव में मध्य प्रदेश का चोप सर्वोदय-सम्मेलन सम्पन्न हुआ। यथित भारत सर्व सेवा श्रम के अन्वेषार्थी नवदृष्ट्य चोषयो ने सम्मेलन में अपने वक्ष्यपीय भाषण में कहा कि राष्ट्र की वर्तमान संकटजनक स्थिति का मुकामला जामुद लोहकामिनी ही कर सकती है। उनके भाषण के मुख्य अंश नीचे दिये जा रहे हैं, -स०]

आज देश की स्थिति बड़ी संकटजनक है। राष्ट्र की एकता डिकन-मिना हो रही है। स्वतन्त्र आया, देश में लोकतन्त्र बना है, किन्तु लोकशक्ति जामुद नहीं हुई। सम्प्रदाय, जाति, भाषा और धर्म के शक्त से बंध रहे हैं। आजादी के पहले के तत्त्व अपने दोगिमत दायरे में थे। इनमें होना या प्रतिस्पर्द्धा इतनी तीव्र और व्यापक नहीं थी, किन्तु आज वे प्रेमभाव बढ़ाने वाले तत्त्व व्यापक रूप में प्रकट हो रहे हैं, उनकी परिधि, उनका दायरा बढ़ता जा रहा है।

एक आसने में अविधि चारस में होना और प्रतिबिम्बिता कम करने का काम करनी को। सन कालियों के काम-धंधे बँटें हुए थे। इससे आपस की दौड़ कम हो जाया करती थी। यह योजना अच्छी ही थी; ऐसा हमारा कहना नहीं है, किन्तु होना कम होनी थी, इतनी ही बात मुख्य थी। आज स्थिति विशिष्ट विचरित बन गयी है। आज जाति बड़े दायरे में, पूरे देश के स्वर पर चरना संलग्न करने लगी है। अर्थात् इसने अखिल भारतीय स्वर प्रदत्त नहीं किया है, किन्तु उसके आसार सत्त दिखते हैं। स्वतन्त्र के बाद ऐसी हालत क्यों बनी है? यह एक गम्भीर विचार का विषय है। स्वतन्त्र के बाद राष्ट्र की एकता मजबूत होने पायिय और भेद के निम्नत्व बचने, उनको विज्ञान होना बाध्य था। यह सच इतिहास ही रहा है कि लोकजीविता का विकास नहीं हो सका है। जनता में जागृति नहीं बढ़ सकी है। वर्तमान राजनीतिक चुनाव-चरण में जातिवाद और साम्प्रदायिकता को न केवल प्रत्यक्ष प्रोत्सा, किन्तु अप्रत्यक्ष प्रोत्सा देकर की। देश में चुनाव बालि और साम्प्रदायिक के आधार पर लड़े जाने लगे हैं।

नगराज्य का ही सवाल हीनिये। हमारे प्रतिबिम्बित में कोणन के दिवस सारे देश में नजदीकी करीये। कुछ फरदम भी बनाने, किन्तु क्या हुआ। वही अमल नहीं हो पा रहा है। अन्धकारी के बाद ऐसा लगता है कि हम को गये और अब वन नींद सुलझे है तो फिर उपर ही-चार प्रस्ताव कर देते हैं और फिर सो जाते हैं। इनसे क्या जनता की इच्छा उपलब्धे बानी है?

आज ही आजादी के तैर ही दूर वाली के बाद, दो पचपत्तिय चोपनाओ के शुरू होने के बाद भी, देश की दिवस गरीबी प्यो कि यो नगरम है। लोको का जीवन 'बिगी एक्सीटन्स रिबन्ट' है। किसी तरह जीवन गुजर-सक रहे हैं। लोग किन्ती अलगाव और दखनीय अवस्था में रहते हैं, इकाय नहीं किया जा सकता है। गरीबी के कारण लोग अपने छोटे-छोटे इन्में के अग्रम विवन्ते हैं। श्रम के दोनवर शक्तियों के जीवन और मन पर क्या असर पड़ेगा और नया श्रम रहे जोगा। यह उन चषक हम बंध कर होच्ये हैं। हम संस्कार को, उनके प्रतिबिम्बित को गरीबी देखें और पंच-चालित के बाद उनमें से किसी को मोद दे देते हैं। जातिवाद क्या सो रहा है? यह श्रेय विवन्ते है। सत्त दृष्ट दृष्ट हुआ। अन्धकार को दूर, आत्मम में जो चर रहा है, पचन और लज्जितवाद में

जो कुछ हो रहा है, एचसे यह ही ताकत दृष्ट रही है।

एक तरफ राष्ट्र की एकता लहर में है, दूसरी ओर गरीबी की हालत बढ़ के बदतर होती का रही है। अर्थात् 'भूमिहीन मजदूरों' की हालत को बचने बानी दूसरी रिपोर्ट प्रकाशित हुई है। पंच साल पहले पदनी रिपोर्ट प्रकाशित हुई थी। दीनी रिपोर्टों को देखने से स्पष्ट होता है कि भूमिहीनों की हालत सुधरने के बजाय, अ्याद लराय हुई है। 'भूमिहीन प्रोब्लम' की बीजना के चर्चे गरीबों को लग नहीं पहुँचता है, इसके लिये एक जगिफ कानयो गयी है। तुने दे, देश की औद्योगिक आयुती ४० प्रतिशत बढ़ी है, किन्तु बंधुओं गये, इस राग को बचने के लिये कमेटी बनी है। हमको संलग्न देने के लिये निवेद्यों के निवेद्यन आये है और संलग्न देते हैं। किन्तु हमारी क्या बतया चादिय, इतनी संख्या नहीं हो पा रही है।

सर्वदा का समाज क्यों है? विनको ह्वे अपने प्रतिबिम्बित करते हैं, वे संस्कार मन जाते हैं। चुनाव जोखने में निम्न के जनता के सम्माने किम्बत और संख्याव से बात नहीं कर सकते हैं, अगर संख्या और संख्या बंधुओं, जो चुनाव हारने का अस्तर रह्या। प्रतिबिम्बित अन्तःसांख्यिक सर्वाथ देनो

है। प्रेम के सामने भेद भी भूख जाते हैं। आज संसीम दूरतिय के क्या मन्त्र ही सरना है, यह प्रेम है। स्वतन्त्र के देन कर, अनी क्या भला होनेवाला है, कल्ल प्रेम है। आज लोग साम्प्रदायिक लाम प्रेम के चरणे शेष पर कम और देखें हैं। तीध-पत्नी की प्रतिबिम्बित मिहारे में हुई, बहो पर निरलराय सुलभामो पर अत्यन्त किच गया ही हालत देल कर आदरालालमी ने कहा, अगर लोग यह बंध नहीं करे तो वे क्या इच्छा पड़ेगा। किन्तु गरीबी ने कहा, अगर लोग बागलन नहीं छड़ेगे तो मैं आत्मण अन्तन करके दे दे जाय गूँगा। यह विम्वत गायी में कैनी आची है इनलिने के उर्गे पचाय में बौद नहीं प्राप्त करना है। चुनाव में राई होनेकी इच्छा नही हो बसकी है कि वे लोगों को लम्बी क्या करे। इसलिये तुने जामे बाले प्रतिबिम्बित अन्तर मारकर बन जाते हैं।

वही प्रतिबिम्बित आपर बन जाते हैं, जनता के सामने विम्वत के बात नहीं कर सकते हैं, बहो हमारा काम है। हमें जनता के सामने ही स्थिति रखनी है।

सर्वोदय आंदोलन में दो प्रकार के लोग है। कुछ लोग देखें हैं, जो लत है, बाथक है, दूसरे लोग देखें हैं, जो साम्प्रदायिक जातिवाद है, सराठी है। सराठी के प्रति देख में आकर है, अन्ध है, किन्तु लोग उनके विचारों को अन्त में नहीं हाते हैं और यह कह कर हासले है कि वे लोग बर-बरा रहक हैं। अगर हमारे देश साम्प्रदायिकता को अन्त में और कुछ काम करते हैं तो साम्प्रदायिक आने लोको को कलता है कि ह्व आंदोलन में हमारे लिये नया है।

आज देश पर में लोकोपिय में विश्वास अन्विगत के लोकतन्त्रक अन्वेषार्थी बंध सतत कर काम कर रहे हैं, किन्तु कोई धरक और लोफन नहीं बनती है। स्वतन्त्र संस्थाक है कि जने में रहने वाले पंच-दत्त-पट्टर पार्षदों अन्तः गार्वरारा अन्वेषार्थी कर, सर्वोदय परिवार बनगये। अन्वेषार्थी शिशुगुण कर नहीं रहते हैं जो जनता पर अन्ध नहीं बतया है। आज का समाज साम्प्रदायिकता और साम्प्रदायिक सुधारों के का अन्तम है। साम्प्रदायिकता-बल देने को लोकोपिय के अन्वेषार्थी के प्रयोग-नेत्र होने पायिय।

सामूहिक अहींसा का निर्माण

हींदूधरतान का आध्यात्मिक विकास की संस्कृति पर श्रेय ही पश्चात्तम के सौजन्य का रंग बना, लगे ही अन्तमें अंक मया वीचर मोदमाय हुआ, अनी हम सामूहिक अहींसा कहते हैं। हींदूधरतान के आध्यात्मिक वीचर और पश्चात्तम के सौजन्य के संयोग से हुआ है। हमें आध्यात्म का संरक्षण होना है, वही हमारा जीवन में अन्वेषार्थी परमाणु में अहींसा का ही बाती है। और असे यह सामूहिक नहो ही पाते थे, क्योकी साम्प्रदायिक के कारण आज मानव-प्रमाण के काल्पनिक कीवना संरक्ष हो गया है। जीवन का अन्तमें अहींसा ही अहींसा, अहींसा ही अहींसा के भी श्रेय परबोधको, स्वकृती के पदे ही हाते। कींदू आज भी साम्प्रदायिक होता है यह कथक स्वकृतीयो के वीच रहे गरीब रहता, बर्कनी साम्प्रदायिक ही मजदूरी है। अंक साम्प्रदायिक के साथ तथा अंक समाज का ही अन्तमें समाज के साथ सम-परक मौर संघर्ष हुआ करता है। अहींसा, पश्चात्तम के सौजन्य और हींदूधरतान के अन्वेषार्थी के संयोग से सामूहिक अहींसा का आनीदमाय हुआ और हमें अहींसा का अन्वेषार्थी परमाणु किया। आज पूरव की बारी आधी की यह पश्चात्तम का सामूहिक अहींसा का वीचर पट्टेबाय।

१९५०-२०-२०-५३ — जीतिवा
1) विधि-संकेत : 1 = 1 ; 1 = 2
स = ८, संयुक्तपर हांत विह से।

भूदान नैतिक मूल्यों की स्थापना का आंदोलन है

शंकरराम देव

[विहार में बोधो में कट्टा प्रस्त करने का जो आंदोलन शुरू हुआ है, उस विस्तारित में प्रत्येक जिले में सारे कार्यकर्ता मिल कर एक त्रिभाजितिक बनते हैं और उसके द्वारा भूदान (बोधो में कट्टा) प्रस्त करने का काम चलता जाता है। इन समितियों में न केवल समाज-कार्यकर्ता हैं, बल्कि विभिन्न राजनैतिक पक्षों के कार्यकर्ता और राज्य समाज-सेवक भी शामिल हैं—जैसे कांग्रेस, समाजवादी, साम्यवादी, भाजक सेवक समाज, हरिजन सेवक संघ आदि। इनमें से सब लोगों में सुनो के अपना सहयोग देना कसूर किया, पर एक-दो अल्प कुछ लोगों ने अपने समय की कमी की बात की। उनको संशय भी कि भूदान के इस आन्दोलन के लिये वे किन्ता क्या समय दे सकते हैं। इस संदर्भ में जो संवाद-वार्ताओं ने अभी हाथ के जरने बिजुर के बारे में जो कहूँ, वह यहाँ दिया जा रहा है।—सं०]

स्वराज्य-प्रान्ति के एक दसाक समाज ह्योकर द्वारा ब्यारम हुआ है। दस वर्षों का एक काल-सख्य (साक्षर) सतम हुआ। २७ साल के आंदोलन के बाद ब्याजादी का लक्ष्य सिद्ध हुआ। अब दूसरा लक्ष्य हमारे सामने आया। कार्यकर्ता कुछ बनें, ऐसा लगता है। यथावत वाद-व्यामाविक है। पर यवनों का यह मतलब नहीं कि हमारा काम नहीं चलता दिमा में हुआ। हमें निराश नहीं होना है। यथावत के बाद ब्यारम और ब्यारम के बाद फिर जोय। अब हमने ब्यारम लिया है। समय पर बोध और पति अपने आप आयेंगे ही।

केनिन काय का काम डुरलत वे नहीं होता है। डुरलत के कले में लखत है। आराम अलग बोध है, डुरलत अलग। हम अपने काम के डुरलत पाकर इस काम में लगे हैं, ऐसा जो चोखत है, वे यही भी देखते कि उन्हें अपने काम से कभी डुरलत मिल ही नहीं लगती। सभी अपने-अपने किसी-न-किसी काम में लगे हैं। स्वराज्य स्थित, तो देश के निर्माण का काम शुरू हुआ। इस अपने-अपने देश के देश को बनाने में लगे हैं। सबकी अपनी-अपनी योजना है, अपनी-अपनी दिशा है।

आज सचराष्ट्र लोग और समाज-केनर सब यह सहस्य करते हैं कि देश के निर्माण के काम में सामान्य जनता की लगन, बोध और सहयोग विजना मिलना चाहिए, उनका नहीं मिल पा रहा है। पर यह क्यों!

इसका कारण यह है कि जनता को ऐसा नहीं बताया है कि यह जो कुछ काम ही रहा है, वह उनके भले के लिये ही रहा है। वे समझते हैं कि वे जितने सेवक हैं, वे सब अपने ही किसी-न-किसी स्वार्थ के कारण यह काम करते हैं। कार्यकर्ताओं का अपना-अपना मूढ़ बना हुआ है। वे आपस में लड़ते-लगाएँ रहते हैं। उनमें बहो बोर एकदूसरा का एक राय नहीं हो पाती है। इतने जनता को ही लगता है कि इस सारे काम में इन कार्यकर्ताओं का अपना लगन है, इसका कुछ नहीं।

कार्यकर्ताओं की विपत्त पहले से अब अच्छी ही है। स्वराज्य के आरंभिक के समय कार्यकर्ता जिस तरह देश का कर जनता की सेवा करते थे, वही हम आज नहीं दिखाएँ देता है। कार्यकर्ता का जीवन-साथ उस समय से आज बरु ही अच्छा है, मले ही कार्यकर्ता को इससे लगेन न हो और वे यह मानते हैं कि "राज्य ही कर रहे हैं।" किन्तु आज जनता से अधिक उंचा जीवन-कार होने से जनता यह नहीं समझ पा रही है कि वे लोग हमारे भले के लिये काम करते हैं।

सारे कामों में वे जो ओर सुल मया है, उसे दूर करने, बेस-काच को घुस और निर्मित बनने की कुछ राफिक यह भूदान-आंदोलन है, क्योंकि इस आंदोलन के नेता, निर्माण के बारे में जनता में अज्ञ है। वे अज्ञ नैतिक धर्म का प्रयोग कर रहे हैं। वे अज्ञ आशय की नहीं निर्माण है। फिर भी हम यह कहना चाहते हैं कि

नहीं है, पूरी अनुपस्थिति नहीं है कि वह संस्था ही है। इसका अभाव तो सबको पता है। पर उसी स्थिति का प्रत्यक्ष अनुभव सब कर रहा है। इस काम को हम किन्ता समझें, इसमें अपना विजना योग दे, इसका उत्तर सभी हमारे दिल में आयेगा, जब हम इस समस्या को समझें। यह सभी मानते हैं कि वह नैतिक धर्मिक यह भूदान-आंदोलन में। न केवल हमारे देश के निवासजन, परन्तु विदेशी विचार-धर्म लोग भी यह मानते हैं। उनको लगता है कि सर्वोपर एक नई जीवन-व्यवस्था है। सबको यहाँ से मले ही मद क्यों न हो, पर प्रकाश दिखाए। समय पर यह प्रकाश धरे बग को एक दिन उज्जल कर लयगा।

कहाँ किसी भी भूमि भिरी आदि विचार नगण नहीं है, फिर भी इस आंदोलन की दृष्टि से यह योग ही है। इसके पीछे जो नैतिकता उज्जल महान तप है। समाज के सुल और शांति की स्थापना के लिये हमने लड़ी को आजमाया। लड़ी से देश ही बंध, देश ही पण्य। वह विकल्प लालि हो गयी। आज के बमाल में वह एक गणनी जनन माना जाता है। फिर हमने कानून को आकार दिया। यह भी अत्यंत शक्तिपूर्ण, क्योंकि कानून वे बर्तन का बंदबान धरने हो पाये, पर फलतः-फलत निर्माण नहीं होता। कानून अभाव-व्यवस्था है। जो वात नहीं, पर वह बुरी नहीं है, अगस्त्य है। कानून बनते हैं, और अज्ञ जनता भी बहुत सोचता है। जिन्होंने उल्लंघन बनाकर होता है। कानून को भी बहुत स्वरदा है, पर समाज में लेह-उपार नहीं हो पाये है। सोचने के बिना मुरा घटित करो। भूदान-आंदोलन के कारण, भूदान के विषयमातुर मूर्तिमत् की प्रकृति के कारण लेह पैदा होता है। गांधीजी ने कहा कि फिर का जो नहीं है, वही समाज का सर्वोपर और समाजिक जीवन में वही लेह और बंधन पैदा करने का, मनुष्य जीवन में नैतिक आधार लगे का प्रत्यक्ष हम आने-रुन से हैं। वही समाजिक पथ मुनाक के निदान में अध्येत-मामने रहे

होते हैं, किन्तु भूदान के काम में एक-दूसरे से कभी-कभी मित्र कर काम करते ही लयार हैं।

अगर कुछ धर्मिक के दुपदे किने जाते हैं, अभाव का आधार लिया जाता है और लड़ी से सारे लयदे बनते हैं। हर एक लयने को लखन कहता है, लुके की दुर्बन। पर यह भी ओर कि का भेद ही मिल जाना चाहिये। लकीर्य में न भूद है, न नाम। यहाँ नैतिकता है। बुद्धिवादी बुद्धि का जो कोई बंध नहीं है। यहाँ सब मिल कर काम कर सकते हैं। ऐसे काम के लिये विजना सम्य दिया जाए। प्रत्यक्ष है कि प्राथमिकता लिकनी है। नैतिकता को या ओर लीको भी। अतः सब आया है कि नैतिकता और नैतिक मूल्यों को ही प्राथमिकता देनी होगी।

अब ध्यानर नहीं भोगेंगे, प्राति-यव लेंगे। प्राति और विचार को भी राजनीति बनाना चाहिये। आज वह चरान्ती है, इलीकिले हाथ बना रहा हुआ है। अपने दादा को भारता को बनाने दे देना। आज में लेह के निरपेक्ष है। इस दादा और अदादा बने हो भेर करे, फिर उरने एक को, ऐसा मित्रता को भर करना होगा। समय देना अयेगा कि यह प्राति-पक्ष का भी निर्माण लखन हो पायेगा। वह निर्माण भी बहुत आयेगा, तब ही नैतिकता ही बहुत लगेगी। अतः अतः-अतः लल्लोकरे।" नारी और बानी ही चानी हो तो फिर लुओं और लारी को क्या काम। केतरी, रीसरी लारी लकी सम-स्वामी का समाज में वाले सूर्य फलने लगे देशी विपत्त आती चाहिये।

एक बात और है। आप अपने को नैतिक मान कर लें और लने से समझ कर लें तो काम नहीं पड़ेगा। जिसे नाम पर आम काम कर रहे हैं, उनको भी जनता चाहिये कि अगर नैतिक और उनका काम कर रहे हैं। लकीर्य और अधिकांश कामों को भी धर्मिक लकीर्ये का उभरे साथ नैतिक धर्मिक की लेखन रहेगी।

विनोबा की जन्म-गंगा में

लेखिका : डॉ॰ रमनाजी दरवार, प्रकाशक : रमन प्रकाशन, ७ दारुवाण मार्ग, नई दिल्ली। शुभ-संख्या २१७, मूल्य दस रुपये।

यह पुस्तक लेखिका की दायरी है, या ८ फरवरी १९५३ में प्रथम होकर १। मार्च १९५३ को समाप्त होती है। इस अर्धसैमी लेखिका को विनोबाजी के साथ रहने का सुयोग प्राप्त हुआ। किन्तु देना-पाना से यह पुस्तक खुलू बरती प्रकाशित हो जानी चाहिए थी, जो अब आठ साठ सत्र प्रकाशित हुई। फिर जो यह पुस्तक का अन्तमा सुना गया, क्योंकि इस दायरी में विनोबाजी ने उन विना का वर्णन है, जो वे भीमार के और चारोंफले में आश्रम कर रहे थे। इस दायरी के पत्रों पर विनोबा के निर्दिष्ट नियमों पर प्रकाश करने से विचार, विनोबाजी की प्रशंसा और उनका रचना, जीवन के विविध अंग का दृष्टिकोण का सीधी सीधी अनेक तस्वीरें प्रस्तुत हैं। पुस्तक में इनके साथ विनोबा का दृष्टिकोण जीवन-वर्तन और परिधि में चारोंफले एवम्-समोच्च के आश्रम पर दिने गये कुछ व्याख्यान भी हैं। इस पुस्तक के प्रकाशन के विनोबाजी के सहायक साहित्य में एक सौदो हुई का शिर छूट जाती है।

—मनोरंजकभूषार

आचार्य विनोबा (बंगला)

लेखक : विष्णुशंकर शर्मण्ड, प्रकाशक : शर्मण्ड प्रकाशन समिति (पश्चिम बंगाल), सी. ५२ कालेज रोड, आर्बट, कलकत्ता १२। मूल्य २ रुपये।

विनोबाजी की प्रेरणादायक जीवन-कथा में अनेक साहित्यकारों को इस पुस्तक के इन महान् सुयोग का जीवन-वर्तन सिंगने ही धारित्वित किया है। बंगला में भी विष्णुशंकर शर्मण्ड यह पुस्तक इसी परम्परा का अंगीकृतक नमूना है। लेखक द्वारा साहित्य जगत में उपस्थित है तथा बंगला में प्रभुशंकर के प्रकाश के लिए उन्होंने काफी प्रयास किया है। उनके हाथ लिखे गये सभी शब्दावली को पुस्तक का भाग्य में एक विधि प्रदान है। विष्णुशंकरजी ने केवल अनुसूचकों की प्रकाशित पुस्तकों की बहा-युता से ही विनोबाजी का यह जीवन-वर्तन नहीं किया है। अपितु उन्होंने विनोबाजी के दो भार, कलकत्ताजी तथा विनाजी भागों में निरुद्ध कर उनसे करे में ऐसी बर्तन प्रदान की को विचारित किया है, जो अब नए सर्वकारों को प्रदान नहीं की। इसके अतिरिक्त उन्होंने काफी परिश्रम किया है दार्जिलिंग नमूना, जो खुदर विचार, भी बाराजी मोने, भी गोपालपुर बाने, भी दकोबा दमाने दायर विनोबाजी के परिश्रम भावियों और अनुयायियों से मिल

वर एवं सेवाभाव, मासवादी तथा पंचवार दायर, जिन स्थानों के साथ विनोबाजी का परिश्रम सम्बन्ध रहा है, उन स्थानों का प्रमाण करके अधिक-से अधिक व्यापकित रूप संश्लिष्ट किया है। इस प्रकार वे जी-गुहा पुस्तक में विनोबाजी के सम्बन्ध में उपलब्ध जानकारी की गयी है। इस पुस्तक को विनोबाजी के जीवन-वर्तनों में एक और दृष्टि से अवलोकन करना संभव है। समाजसेवा पुस्तक में उनका चरित्रक पाठों का साहित्य-वर्तन तथा अवयव प्रकाशना का भी वर्णन है। भी विनोबाजी भागों में सारी पाठ्यलिपि पढ़ कर प्रत्यक्ष-विनोबाजी की दृष्टि से उपरमों कुछ सुधार प्रकाशित है और साहित्य, जिन अन्तर्गत प्रकाशना लिखी है। लेखक की भाषा तथा शैली अत्यन्त रोचक है। आशा है, इस पुस्तक को पुस्तक का सुयोग प्राप्त होगा जो भी अनुयायन होगा, ताकि साहित्य चर्चा की सारी भाषाओं के पाठकों के लिए इस पुस्तक के एक महान् साहित्यिक का सह-उत्पन्न जीवन-वर्तन उपलब्ध हो सके।

—दिल्लेबाकुमार

हनुमान राष्ट्रीय शिक्षण

लेखक—बाबुराज माराठी
प्रकाशक—डॉ॰ भा॰ लखे तथा प्रकाशन, राजवाड़ा, काशी।
शुभ-संख्या ५१२, मूल्य तीन रुपये।
पूर्वजन्म शिक्षण आन्दोलन के सिद्ध देश के सभी नेतृत्वगत बहुत पहले से अपने विचार-प्रकाश करती आगे है। कबीर (वीर) देश के जो उनसे कोसलेखन को बहुत पहले प्रकाश कर दिया था। शर्मण्डका मासिकी में भी उसकी व्याख्या को निरुद्ध किया था और उनका सत्य कथन का कि वह शिक्षण-वर्तन एवम् के लिये कभी हितकर नहीं है। आज के समाज २४ घण्टे पहले से भी उन्होंने देश के शिक्षण-वर्तनों की एक सभा सुलामी की और तीन दिन के विचार-विनिमय के बाद प्रिन्ट प्रिन्ट प्रकाशकों को दृष्टिदिष्ट की थी, वह उस समय 'गर्भा शिक्षण-वर्तन' के नाम से प्रकाश हुई थी।
उपरोक्त प्रकाशकार के लिये शिक्षण-वर्तनी साहित्यी रूप की सहायता भी मिली थी। अर्थात् नमूना दायरी में इस क्षेत्र में भी काफी क्रिया बह कभी सुलामी नहीं था सफल।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने अपने विचार-वर्तन विचारों से उपस्थित किया है। राष्ट्रीय शिक्षण की ऐतिहासिक दृष्टिकोण में लेखक नई (उपनिवार) तथैव्य तक के विभिन्न विचारों को व्यक्तित्व प्रस्तुत किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षण और नई साहित्य के विभिन्न वर्तनों पर प्रकाश दाला गया है।

विज्ञान और विज्ञान-वर्तनी राष्ट्रीय शिक्षण के सम्बन्ध में विचारक चलते जाते व्यक्तियों के लिये यह एक माननीय पुस्तक प्रिन्ट होगी।

मानवता की नवदृष्टि

लेखक : रिचार्डि ए ओरोकिन, अनुवादक—भीष्मदेव मज, प्रकाशक—उत्कृष्ट प्रकाशक १०५, मूल्य रु २-५० न. वे।

चार्डि यह सत्कार अनेक शू भागों में बंध हुआ है, प्रत्येक देश का मानव समाज अपनी भाषा, अपनी रचना-रचना, अपने धर्म, अपनी सांस्कृतिक प्रथाओं के द्वारा जिन का जीवन होता है, निरनुद्धि यदि भाष-की बहुराई में जाया जाए, तो यह एव ही जाता है कि सजीव और सभी जात में मानव, मानव-सम्बन्ध और मानव की सम्बन्धों एक ओर हो। मानव-मानव में कोई भेद नहीं है। इसलिए जो व्यक्ति बर्तन-कला उठ कर कोसलेखन है, उसके कामने केवल एक देश का एक समाज की सम्बन्धों की उपस्थित नहीं होती और न वह उनसे समाज की बात कोसलेखन है। प्रत्येक सम्पूर्ण समाज-मानव को एक शर्तों मान कर बसाता है और उसकी सम्बन्धों का श्यायी एक उपस्थित कला चाहता है। यही कारण है कि जो महान् व्यक्ति हुए हैं वे आज विनोबाजी है वे समाज के प्रवर्तकों को बड़े व्यापक रूप में लिये हैं।

मानव समाज की गुरु समझाओं को इस करने के लिये सम्यक-व्यय पर विचारों में उन सम्बन्धों को उल्लेख-पुस्तक कर देखने का प्रथम विचार है और किसी निर्णय पर सुनिश्चय का प्रयत्न किया है।

इसी विचारों में वे एक ही एक पुस्तक के लेखक डॉ॰ ओरोकिन। इस के एक प्रकाशक शोरी को चीन का चीन बह है, जो उदाया नहीं। साहित्य की नीर में यह पुस्तक, जैसी में उनका जीवन बीजा, काँपी उपस्थित-एवम् बचा, काँपी उपस्थित कराना एक कोष-प्रदान बन कर भाव विनोबाजी द्वारा अन्तरेखन में जीवन विचार है। उपरका निमित्त भाव है कि पुस्तक और कालिका, साहित्य और कृत-वर्तनी विचार को साहित्य प्रदान कर दर्शनी है। इस सत्कार की अन्तर्गत में एक सभा ही तो सत्य, प्रेम और कल्याण के पुनर्दान मार्ग से हो।

डॉ॰ ओरोकिन के विचार भारतीय परम्परा के बहुत निकट आ जाते हैं। यही जो सम्पन्न उद्यम ने कहा था, आज के युग में महात्मा आनीने न कहा है। सर्वे विचार सत्य के प्रकृत से मूल पुस्तक का हिन्दी अनुवाद सुख्य हो रहा है। इस पुस्तक द्वारा यह पक्ष ही समझा जा सकेगा कि उन महान् व्यक्तियों के, जो साहित्य, देश-कल्याण से ऊपर उठ गये—एक-से ही किनारे हैं। इस प्रकार की पुस्तकों का जितना प्रसार होया जाता है उतना सत्य, प्रेम और कल्याण के प्रति बढ़ेगी।

इस सुन्दर पुस्तक का प्रकाशन बहुत

ही सामर्थ्य है। अनुवादक और प्रकाशक दोनों ही प्रकार के पात्र हैं।

साहित्य का धर्म

लेखक—अनेक प्रकाशक : उत्कृष्ट प्रकाशक ८१, मूल्य ५० नो पैसे।
भी विनोबाजी अपनी पदनाम के विचारों में जिन विन प्रेम में सुनिश्च, वहाँ के साहित्यकारों से मिलते रहे, उनके बर्तन करते रहे। इन प्रवर्तकों का विरल समाचार-पत्रों में निकलना रहा है। सर्व शैव सत्य ने इन साहित्यकारों में ही प्रवर्तकों का समझ 'साहित्यियों' के नामक उपलब्ध में प्रकाशित किया है।

मार्च १९५३ में, अन्तर्गत से एक अन्तरेखन भारतीय साहित्यकार परिषद बुलाई गई। विनोबाजी की उपस्थिति में यह साहित्यिक समारोह हुआ और इस अवसर पर विभिन्न प्रवर्तकों के अनेक हुए प्रिन्ट साहित्यकारों ने अपने-अपने विचार सामने रखे।

प्रस्तुत पुस्तक में ऐसे सम्बन्धित २२ साहित्यकारों के विचारों की समझित किया गया है। आचार्य विनोबा ने 'साहित्य का धर्म' विचार पर अपने मनोनिश्चय विचार रखे। इस पुस्तक का प्रथम लेख 'साहित्य का धर्म' ही है, और लेख का भाग्य लेखक पुस्तक का नाम 'साहित्य का धर्म' रखा गया है।

साहित्यकार का साहित्य बहुत ऊँचा होता है। साहित्यकारों को लेखनी में असीम शिक्षा मिली रहती है। समस्त साहित्यकार युग को सम्मिलित करते अनेक हैं इसलिए यह पक्ष आवश्यक है कि साहित्य का धर्म क्या है, साहित्यकार का कर्तव्य क्या है, यह अन्वेषी तरह समझ लिया जाए।

प्रस्तुत पुस्तक में मजबूत शैव्य लेखक समर्थन हुए हैं। साहित्य और उनके उपस्थित को समझने में यह पुस्तक बहुत दूर तक सहायक हो सकेगी है। मार्ग में साहित्यकार नए सत्ता एवं नए एक सुन्दर उपस्थितो उपस्थित का प्रकाशन किया है।

—राजेश्वर दयाल त्रिपाठी

['उपस्थित' धर्म से]

'भूमि-क्रांति'

हिन्दी साप्ताहिक

चारिण शुरुक : चार रूपका

पता : म प्र सर्वोदय-मंडल

११२, रंगेश्वरमार्ग

दिल्ली (मध्य प्रदेश)

मध्यप्रदेश का चौथा सर्वोदय-सम्मेलन

मध्य प्रदेश का चौथा सर्वोदय-सम्मेलन होरांगगाद जिले की हराद दरगाह में सम्पन्न होने में अगिला भारत सर्वोदय संघ के अध्यक्ष श्री नारायण चौधरी और महापुरुष श्री दत्तत्रयदास शंभू की अध्यक्षता में २०-११, २२, २३ और २४ जून को सम्पन्न हुआ। दोसे पूरे सम्मेलन की अध्यक्षता श्री नारायण चौधरी करने वाले थे, किन्तु उन्हें विनोदजी के मिलने के दिने अन्ततयात अन्ततयात पत्र और २३ जून के पहले कमलाता पहुँचना अनुमति मिली थी। मध्य प्रदेश के राष्ट्रिय में श्री दत्तत्रयदास शंभू के प्रायश्चित्त की विराट तक के दिने ये सम्मेलन ही अध्यक्षता करें।

कमलाता गौरी की आठवीं बहिन देवदरानी की है। सम्मेलन के निमित्त सारी देवारियों और अन्ततयात गौरी की ओर से श्री महापुरुष नारायण देव की। गौरीदासों ने अपने भ्रम से एक सुन्दर पत्राल बनाया और होरांग गाद में ६ बंगला तक का खसला दुरुस्त किया। महापुरुष भाग्य-मुखाता था, होरांग पर पराम्यस्य की चौपाइयों एक सतों के पथन लिये थे।

१४ जून की दोपहर को वनरास्तागत करते हुए होरांगगाद जिले के लोकसेवक श्री हरिदास मंडल ने बताया कि जिले में करीब ८ हजार एकड़ जमीन मिली है और दो सौ हजार एकड़ जमीन प्राप्त हुई है। २५, २६, २७ तक जिले में काम चल रहा है। उधर से गाद की विराम आया, वह रिजर्व निरोध की पदाथर से एक बार हुआ, किन्तु तिर भी विराम प्ले कर लो कायम है।

मध्यप्रदेश सर्वोदय-संघ के संजी श्री रौपचन्द्र तैल ने कार्य-विवरण प्रस्तुत करती हुए बताया कि प्रदेश में भूदान की विचार हल तरह है:

प्रायत जमीन एकड़ों में	१,९७,७६२
हाताओं की संख्या	५७,५९४
मित्र हाथों के भूदान विस्तार	८,९७२
वितरित भूमि एकड़ों में	१,११,९०८
भारता-भारतक लक्ष्य	१,१,११४
वितरित-अन्वेष्य भूमि	१,१,०६०
वितरण में लिए पत्र	१,१,१११
प्रायश्चित्त गति	१४०

सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए श्री दत्तत्रयदास शंभू ने देश की परिस्थितियों का विचार करते हुए कहा कि आज की परिस्थितियों राष्ट्रीय दृष्टि की सुनौती है रही है। अन्ततयात-अन्ततयात नये रूप में देश के सामने मजबूत बन आया है। इस योजनाओं के बावजूद गरीबों और बेकारों की संख्या कमिती होगी। ४० प्रतिशत भाग बढ़ी, किन्तु देश के रोजी मरी है। देश में निरक्षरता का स्तर भी निरन्तर बढ़ रहा है।

में नहीं सोचेंगे, उन तक देने-निने लोग कुछ नहीं कर सकेंगे।

अतः श्री शंभू ने वार्ता-संज्ञाओं से कहा कि यह प्रश्न है कि अब भूदान में जमीन नहीं मिलेगी। पिछले साल-वैकाल जिले में और हर साल नये जिले में भूदान प्रायश्चित्त का सामूहिक सम्मिलन हुआ। उधर से अन्ततयात नन्वारा सहायता मिली है। वर कायम था गवा है कि केवल कार्य-संज्ञाओं की पदाथर न हो, किन्तु लोक-पदाथरानी, विधेय नन्वारा-आदात और अन्य सामूहिक योग भी अन्ततयात है। हमें लोनों में गौरी के स्तर पर काम करने वाले कार्य-संज्ञाओं की भी प्रायश्चित्त होगा। उनके दिने इस क्षेत्र-सेवक की उप चोंच न खरूफ करे। इस तरह अन्ततयात आयोजन करिये, तो लोक-सेवक आयत होगी और हमारा काम सफल होगा।

सम्मेलन में मध्यप्रदेश के करीब ६० कार्य-संज्ञाओं ने भाग लिया और प्रायश्चित्त तक मुक्त दृष्टि से गौरी के युक्त माता-पुरुष में आंदोलन के विभिन्न विषयों पर गहराई से विचार किया। कार्य-संज्ञाओं ने ३० टोलियों में बैठ कर निम्न विषयों पर विचार किया:

- (१) भूदान, वितरण और नई जमीन की प्रायश्चित्त।
- (२) सामाजिक लोनों में निमित्त-कार्य।
- (३) रचनात्मक सरयाओं का सम्मिलन।
- (४) राष्ट्रीय-सेवा का प्रादेशिक समन्वय-कार्यकारी की समस्त।
- (५) अर्थ-संज्ञा सम्मिलन।
- (६) प्रायश्चित्त समन्वय।
- (७) रोजी-सेवा का सर्वोदय-संज्ञा-सम्मिलन।

२४ तक की दोपहर को विर कार्य-संज्ञाओं संयुक्त रूप से मिले और दिन पूरे पर चर्चा हुई, उन पर सामूहिक रूप से विचार किया गया। गौरी और अन्ततयात के दिने करती संज्ञाओं में आये थे, इन्होंने श्री नारायणचौधरी की-पक्ष में दिनेयों को लेती के संक्षेप में अपने-अपने के अनु-

भाषा सम्मिलन रही अन्त में दिने चर रहा है।

उधर से वेदना प्रकट करते हुए कहा कि 'अन्ततयात पर देश हितकारी है, वह कहां का रहा है! अन्त में आये लोक-सेवकों के आन्दोलन पर जोर दिया और कहा कि अब सामाजिक सामूहिक लया और पुराणों के अन्ततयात रहता है। २०-२५ लोक सेवक जिन में काम करते हुए प्रायश्चित्त कायम करें। अन्ततयात मिले हुए कायम करते हैं, तो उधरना अन्ततयात सत्य पर पड़ेगा। सामाजिक सर्वोदय-संज्ञा अन्ततयात का प्रयोग-नेत्र हो सकता है।

२४ का ० की प्रायः सब टोलियों के निष्कर्ष सुनाये गये। उन कार्य-संज्ञाओं मध्यक करते हैं कि कार्य-संज्ञाओं की चर्चा की समर्थता की दृष्टि से हुए किन्ती विवेचन काम में पूरी सफल स्थानी चाहिये। एक सत्य सच सच, सब सच सच सच। मध्य प्रदेश सर्वोदय-संघ के अध्यक्ष श्री रघुनाथ दत्त ने प्रस्तावित विवेचन पर विचार करते हुए कहा कि हरेक आन्दोलन में

आन्दोलन आदि हैं, हमें विचार नहीं होना है। अपने कार्य-संज्ञाओं से विवेचन किया कि अर्थ-संज्ञा सम्मिलन में पूरी चर्चा स्थानी चाहिये। अन्त में श्री नारायण देव कहा कि दिने-संज्ञा के सामने तो उधर प्रायश्चित्त-विचार के साथ-साथ निरक्षरता और अन्ततयात चर्चा की स्थानी। इन प्रश्नों पर हमें बनना तो चाहिए वगैरै सब बसा देना होगा। निष्कर्ष-संज्ञा मान्य बन कर बनती में चर्चा, तो बनना बात सुनी है।

श्री रघुनाथ दत्त की विवेच १० मिनटों के मध्यप्रदेश में अन्ततयात भूदान सहायता का प्रचार करते हैं, वार-संज्ञा दिन पढ़ें रहे। ये सुन्दर सच सच की इच्छा करते सर्वोदय और भूदान के गीत गीतारते रहे। श्री रघुनाथ दत्त के वार्ता-संज्ञा के रूप में गरीब उत्साह उत्पन्न हुआ।

सम्मेलन में सर्वोदय सच की लोक-गीतों के प्रस्ताव ब वरतक पारी की समस्त के बारे में परिचय-संज्ञा सर्वोदय मजबूत आयोजित कर, यह निश्चय हुआ।

उद्दिष्ट प्रादेशिक सर्वोदय-सम्मेलन

उद्दिष्ट प्रादेशिक सर्वोदय-सम्मेलन २५-२६ जून की दोपहर प्रसार चौक की अध्यक्षता में केन्द्र-संज्ञा में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में करीब दो सौ के अधिक लोक-सेवकों ने भाग लिया।

सम्मेलन ने सर्वोदय सच के सुनाय सच पंचायती राज के साथ में दिने गये प्रस्तावों का स्वागत किया। पंचायती के दिने सम्मेलन में और अन्ततयात अधिपति की गौरी की गरी और सच प्रकट किया कि पंचायती को धन-संज्ञा के अन्ततयात सच काय और सुनाय सर्व-सम्पत्ति हो ही।

सम्मेलन ने प्रायः में भूमि समस्त को हल करने और सुनौती की दया सुनायने की वैधानिक तरीकों की अन्ततयात की और स्थान अन्ततयात करते हुए कहा कि अन्ततयात भूदान-संज्ञा पर पुनः जोर दिया जा रहा है। किन्तु सर्वोदय-संज्ञा के बावजूद कि भूदान-संज्ञा के सन्ततयात-पूर्व में जोर देनाये और २४ दिने दिने में विचार-संज्ञा पर चर्चा करें।

सर्वोदय संघ द्वारा २५ जून से ३१ जून तक चलने वाले अर्थ-संज्ञा सम्मिलन में पूरी चर्चा समाप्ति प्रायः कार्य-संज्ञा के प्रवृत्त के दिने दृष्ट कार्य-संज्ञा बनाया गया।

सर्वोदय-सम्मेलन के साथ उद्दिष्ट में आदि-संज्ञाओं के बीच काम करने वाले संज्ञा नारायण मंडल का प्रायश्चित्त सम्मिलन की प्रायश्चित्त कार्य-संज्ञा में सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन में रचनात्मक कार्य में नया धोख लाने के दिने विचार किया और सच किया कि पंचायती नये भूदान के प्रायश्चित्त पर अन्ततयात करण सच सच है। इन सम्मेलन में अन्ततयात अर्थ-संज्ञा-संज्ञा पर दिना गया और कार्य-संज्ञाओं से अपेक्षा की गयी कि उधर-संज्ञा के अन्ततयात-पूर्व में जोर देनाये और २४ दिने दिने की मध्य, वहां मजबूत के कार्य-संज्ञा भन्ती पूरी कर दें।

यह युग राजा, सिपाही, संत और साहूकार नहीं,

साधारण मनुष्य का है -दादा चर्माधिकारी

सब लोग आज एक घड़ी विचित्र परिस्थिति में पड़े हुए हैं। किसी को सतोंप नहीं है। आज ऐसा लालम हो रहा है कि चारों तरफ से आदमी पर मृत्योचक ही मृत्योचक आ रही है। क्या इसका कोई उपाय है? सोना यह था कि अंग्रेजों के चले जाने के बाद कैम्पबेल बदल आयेगी, लेकिन हमारे सोचने में गलती थी कि हर बुरई राज्य में होती है, अतः यह आशा ही गयी थी कि हर अच्छी बात राज्य करेगा, क्योंकि पहले जो कुछ करते थे श्रेष्ठ करते थे, मुमक करके थे। परन्तु सब कुछ अपने आप ठीक कैसे होगा? मनुष्य को अपने आप कुछ नहीं मिलता। मनुष्य को तो हो हाथ इसीलिए विवेक है कि बिना कुछ किये उसे कुछ मिले।

मनुष्य को दो चीजें ईश्वर ने दी हैं, एक बखल और दूसरी दाय। बखल की, दुनिया को समझने के लिए। दाय दिये दुनिया को बदलने के लिए।

अब तक दुनिया को राजा, सल या योद्धा बदलता था, अब वे दिन लख गये। अब राजा नहीं रहे। अब जमाना राजा का नहीं रहा, यह जमाना सिपाही का भी नहीं रहा। पहले कोई बहादुर सिपाही कलत का और राज्य कायम कर लेता था। आज कोई सिपाही बहादुर के ढाल पर अपना राज्य कायम नहीं कर सकता। कोई सल भी शत्रु और बना बलकार करता है। पहले किसी को शासमान पर उठने देना सम्भव होता था। अब सम्भव, कुछ तो चाहें शासमान में उठते हैं। गांधी और विनोबा में और दूसरे सत्तों में ऊँच यह है कि वे रहते हैं, हमारे बलकार से नहीं, दुश्मन दुश्मन से दुनिया बरलेगी।

दुनिया को साधारण इन्सान बदलेगा यह आज का अर्थवादी है। आज के युग में भगवान साधारण मनुष्य बन कर आये हैं।

पुरुष जमाने में राम का आशुप मरत था। आज का आशुप सुदरिन चरक था। परशुराम की दुश्मनी थी। वे राम दुनिया की भारने के हथियार थे, जिन्होंने के औजार नहीं थे। साधारण मनुष्य के बना औजार होंगे। इस युग की तीन पार्टियों में इन्सान उभरा दिया है। इनके हाथों में कीलते निगान हैं। कामेल के हाथों में परखा है, लखत और लख बना हुआ नहीं है। समानवादी और समाजवादी दोनों के हाथों पर हथ और पहिया बना हुआ है। कम्युनिस्टों के डंडे पर क्या बना हुआ है? उनके हाथ पर तो कोई डंडा नहीं बना हुआ है? भाष्य किसी कम्युनिस्ट से पूछेंगे, क्या तुम डंडे की इजत बढाना चाहते हो? वह जवाब देगा, 'को डंडे की इजत बढाना चाहता है, वह कम्युनिज नहीं, पाणिज दे।' दुनिया में ऐसा कोई कम्युनिस्ट नहीं हो सकता, जो लखत और डंडे की इजत बढाना चाहता है। उनमें अपने हाथ पर हथिया और हथिया रखा है। अब लखतारी की बात होती तो यहाँ हिन्दुस्तान में कम-के-कम इन्सान की गला तो रख दी लेता। वे उस काम करने के औजार हैं, रज्जवें से हथियार नहीं हैं।

हम काम करने के औजारों की इजत बढाना चाहते हैं, लखत के हथियारों की इजत को धमकाना चाहते हैं, यह काम ही है। शत्रु बलन सिपाही की नहीं होगी, जिनके हाथ में हथिया-दण्डियाँ, बलता-रज्जवें और हथियार हैं। वे ही मंहतन बलत हैं, जन्तों इन्सान होंगे। मुसलमन की नहीं, काम करने में ही इन्सानियत है।

हम बर्दानाप्य गये थे, जो देखा कि कुछ लोगों को 'कड़ी' पर मजदूर के का रये थे। एक जगह पर कुछ मजदूर समारू पीने हुए अपने में बाँट कर रहे थे। 'समसार 'ग्यु' किन्ती माली है।' हम लखत गये कि इनका मतलब पीर पूर दोये जाने वाले यानियों से हैं। इस लखत चाहे कोई पाखी पर बैठा हो, चाहे अभी पर है, दोनों पकें नहीं हैं। दोनों को चार ही आदमी दोते हैं। हम ऐसी दुनिया चाहते हैं, जिनमें न पाखियों होंगी और अर्धियों भी कम होंगी। यह दुनिया को हम बनायेंगे। सभोचन का मतलब है राजा, सिपाही, कल और साहूकार किसी की दुस्मता नहीं होगी, दुस्मत लखकी होंगी, जो मेहनत करते हैं।

आज की दुनिया में जो मेहनत करते हैं, वह भूख पाता है, उसको सूर्य रोटी के भी लखे पड़ते हैं। जिन्हें पाठ माल्युए और दवा है, उसकी भूख लखने के लिए भी बूणी पाना पड़ता है। भूख लोग करते हैं, यह सब भगवान की भासा है। पर क्या ऐसा भी भगवान हो सकता है? हमारी भगवान में अडा है, वह ऐसी गलत दुनिया क्यों बनायेगा। आज की दुनिया भागवान की नहीं, सैलान की करती है। जिन्हें चीज की इजत है, उसको नहीं मिलती। जो लखत है, उसे मिलती है। यह गलत रज्जवत है। यह पूँजीवाद का इजाम है। इच्छी बदलना है। तो क्या होगा? जिसकी बखल है उसको चीज मिलेगी, जो सहीरत है उसे नहीं मिलेगी। भूरे की अब और जिन्हें हाथ हैं उसे भान लिखा चाँदिए और काम करने को इजत मिलेगी चाँदिए। आज देखाकर चीजों का होना है, ईश्वर की दुनिया पर डंडे है। सहीर नहीं होंगी चाँदिए, बखल होंगी चाँदिए।

अब सवाल उठता है कि यदि चीज सहीरने वाले को नहीं मिलेगी, तो क्या छीनेने वाले को मिलेगी? छीनेने वाले को भी नहीं मिलेगी। अगर छीनेने वाले को मिज चाँदी है, तो हम बनों के वहाँ रह जाते हैं। आज चीज पड़े वाले को मिजकी है, तो कुछ उडे वाले को मिलेगी। पैसा गय, उडा अया। साधारण मनुष्य कहीं का नहीं रहा। हम कम्युनिज भादि पुन नहीं जाते, पर जो आज पड़े वाले का सुहावता है, कल उडे वाले का सुहावता चाँयेगा। इलएर रिता को चाँदिए, सहीर नहीं है, जो उडे की इजत बढाना चाहता है, वह सहीरतारी नहीं है। सहीर सहीर नहीं कर सकता है।

हम ऐसी दुनिया चाहते हैं, जिस दुनिया में कोई दुखान आने को वेना नहीं, दुखरे को सहीरने का मोका किसी मनुष्य को नहीं होगा। आज मनुष्य रिक्ता है, जिन्हें पल को पीन है, उडे वह बाजार में बेचनी पडती है। अरक, मेहनत, रिक्ता, सीनी बाजार में विकती हैं। भगवान का मजद रिक्ता है, पला-मृत रिक्ता है, और अन्य में भगवान भी रिक्ता है। आज वाले चारे का गाना रिक्ता है, नाचने वाले का नाच रिक्ता है, कचवान का कू रिक्ता है, प्रोनेर साहब को रिक्ताये रिक्ता है, बाकर सी चरवरी रिक्ता है, पुदेविल की पूरा रिक्ता है और पाँत की भागवत-क्या रिक्ता है। बहाँ सारी चीजें बाजार में रिक्ता हैं, कच उडे फोरे दुस्मन बढेगा। मनुष्य जिस दिन बाजार में बैठे जाते है, सारी दुनिया मोना बाजार में जाती है। इवाँय्य इन च-काम को बलना बखरी है। चीज बलेगा। अण। लेकिन आगे तो पुन रिक्ता है।

राजा में की कोर उडे पैदा होना है। लेकिन आज ता राजा उडे नहीं, मति-मिथियों का साहब है। अतिमिथि बढता भी कोर उडे पैदा होना है। येकरन म मय भोजन्य का पुन नहीं, जनन का पुन होता है।

एक दिन में नेटर में अपने एक एम० ए० ए० मिय के लख का राा था। खेप उडे लख मालिनी दे रहे थे, तो मैंने पूछा- 'आपका यह एम० एल०एम० आख कबो तो?' उडा उतर था- 'हमने मेट दिने थे, लेकिन हमारा मेट सहीरत था।'

मिठका बोट सहीर लिया जा सकता है, उसका भगवान चरीदा का मजरा है, अपना इजत खेने वाली सी मिठकी मजरा है, उनका ही मजरा बोट बनेने वाला नागरिक है। इन्हें लिये पर-पर जाकर सभासारे। जो बोट मंगने वाले है, वह सभासारे का इहकार नहीं है। यह हम भी नहीं ररेगे। हमें तो भासमें मेहरानी चाँदिए, आसकी सोहन चाँदिए, बोट नहीं चाँदिए। हम सभासारा नहीं हैं कि जो नागरिक बोट को कीमत बढें जायता, उत पर मजरा कला जाता है और चालखान लोग उतका पैठ पर सचारी करते। हम सौलतनद के गुलाम नहीं होंगे, दुस्मत के गुलाम भी नहीं होंगे।

अर में पार्थियमेट का सदर्न युवा गया तो रिक्ता जाने की इतनी बखरी है कि मैंने मिलने भी नहीं का सखा। मैं मिलने स्टेशन पर भासी और पूछने सगी, 'यह तु कया हो गया, जो पर भी नहीं आ सका।'

मैंने कहा, 'पार्थियमेट का सदर्न युवा गया है, कल डेक में आना है।' मैंने न पहा, 'को क्या बोट मँग कर ना है, इन किनी के दरारें पर एक पैला मँगने नहीं गये, व दुस्मत को मोल मँगने गया। और कलना पया होगा, मैं अच्छा आदमी हूँ और जो तेरे मुकाबले में है वह तुज आदमी है, मैं पैदा हूँ और मैं पैदा हूँ।'

जो हरएक से जाकर है कि तुने मालिक बनाओ, उनसे क्या सचदू कौन है। युवाप में मवदाता के बोट का नीलगन होना है। हम शेली में नहीं बैठते। अब उम्मीदार कोई नहीं होंगे, मतिमिथि होंगे। रामराय में राम, लखतन, परड, राजन; राम में काई उम्मीदार नहीं है। अगर हो तो यह राम-राय नहीं हराम-राय होता। वे कौन उडे धैर्यी को समझाने की जरूरत है।

अर को दुनिया बदलेगी, राय में बदलेगी; लेकिन उनमें बोट के तरे। जिनके बोट रिक्ता है, जो उडे वाले के तरे हैं वे तरे के गुलाम रहेंगे, वा वेने म रिक्ता हैं वे पैदाशाली के गुलाम रहेंगे। ये स्थान-मजदूर का राज्य नहीं लख गये।

हमारे देश में खने की पैदायी भूष है। भूल का जमान भय है, पर-रचना नहीं है। यदि हमने पैदाशाली के बालनेने बोल रिक्ता, तो क्या लख की सगद लेने के शोके मंगने। अब हर आदमी लख पायेगा है। अगर अण एलता हो, तो स्थान का क्या हो। मिथु, साहब, बर्तन, मजदूर हरएक 'चाँदिए कि मैं बखार मजदूर सिने, लेकिन अब लख मिने। रिक्ता पर स्थान

लोकस्वराज्य और लोकनीति पर श्री नववावू के विचार

स्वर्णम्

अभी-अभी जून के पहले सप्ताह में उड़ीसा में मध्यराज्य चुनाव हुए हैं। चुनाव के पहले चुनाव लड़ने वाले विविध राजनीतिक पक्षों और उम्मीदवारों ने अपना प्रचार बहुत जोर-जोर से किया। चुनाव में प्रत्यक्ष भाग नहीं लेने वाले सर्वोपेक्षी कार्यकर्ताओं की ओर से उस समय अपने विचारों का प्रचार हुआ। जब लोगों ने चुनाव कि सर्वोदयवालों की चुनाव-सभा होगी तो उनको बहुत आश्चर्य हुआ। लेकिन जब उन्होंने सभा में भाग लिया और भाषण सुने तो उनको अन्तः लजा।

अगले महीने में सर्वोदयपुरम् आंध्र में जो सर्वोदय-सम्मेलन हुआ, उसमें अगले साल के लिये तीन मुख्य कार्यक्रम लोगों को सामने रखे गये। उनमें लोक-स्वराज्य और लोकनीति का प्रचार भी मुख्य अंग है। १९५२ में देश में आम चुनाव होनेवाले हैं। अभी तक जो दो सत्र चुनाव हुए हैं, उनके आधार पर यह महसूस हो रहा है कि जब तक लोक-सिद्धान्त का कार्य बड़े पैमाने पर न किया जाय, तब तक कालिग मताधिकार-मात्र से जनतन्त्र टिकने वाला नहीं है। शासक वर्गिक दृष्टि से चिहने हुए देशों में मताधिकार का किन्ता डुकल्पना होना है और किस तरह से श्रायिक, सामाजिक और राजनीतिक द्वायों में व्याकर लोगों को अपने विचारों के प्रिहाक भी अपना मत देना पड़ रहा है, यह हम देख ही रहे हैं। ऐसी स्थिति में चुनाव के समय लोक-सिद्धान्त का कार्य पटना किसी भी जनहित-आंदोलन के लिए सहूल ही है।

सर्वोदयपुरम् का सम्मेलन होने ही उड़ीसा में चुनाव आ गये, तो समय कम बचने पर भी उड़ीसा के सर्वोदय-कार्यकर्ताओं ने तब विचार कि चुनाव के समय अन्धी शक्ति के अनुदार योग ही रही लोक-सिद्धान्त का कार्य शुरू करें। सर्वोदय अंग के अन्वय और उड़ीसा के भूतपूर्व मुख्य मन्त्री भी नववावू चौधरी ने चुनाव पर सर्वोदय विचार का प्रचार करने का भार उठाया।

मैं महीने में उड़ीसा में कटक, केडोसर, सुरी, देवनल और पौडार में भी नववावू की आम सभाएँ हुईं। उनमें अपने बहुत विस्तार से जनतन्त्र के बारे में, मार्क्सवादी के कर्तव्यों के बारे में, भारत के मन्त्रिय के बारे में और जनप्रतिनिधियों के कर्तव्यों के बारे में सभासदाय।

भी नववावू ने अपने भाषण में कहा : "आज हमारे देश में विश्व देश के चुनाव का प्रचार हो रहा है, उसके फौरन स्वरूप यातायात बन नहीं पाता है। इतना ही नहीं, दिन-नियम बरबाद का जनतन्त्र से निश्चय उठना आ रहा है। इसलिए जनता को यह सोचना चाहिए कि किस तरह इस स्थिति को ठीक किया जाय। आज अत्या-अत्या राजनीतिक पक्ष और उन्नीसवार को चुनाव के प्रचार में लगे हैं, उनके प्रचार और भाषणों में तो मुख्य विषय मिली हैं : एक, आमउद्वि और दूसरी, प्रतिनिधि। जब कोई व्यक्ति अपनी स्थिति करता है, तो लोग उसको ज्यादा महत्त्व नहीं देते हैं, उसे छुन कर टाल देते हैं। उच्चतर पन्था मान्य नहीं पसन्द है। इसलिए आमसमुत्ति के नीचे उन्दा उन्दा नहीं है।

पर जो प्रतिनिधि बनती है, उसी के हमारे देश का राष्ट्र सामाजिक जीवन चलने में बड़ रहा है। जब लोक पक्ष दूसरे सब पक्षों की निरा करता है, प्रत्येक जनतावादी अपने बलाया दूसरे सब साथी उन्नीस-पक्षों की निरा करता है, तब लोक निरा ही लोगों के सामने आती है।

इस परस्पर-निरा का जनता पर ज्यादा प्रभाव पड़ रहा है। लोग उन्ना रहे हैं कि एक तरह से सब निरिद्ध हैं। तो आज सामाजिक जंग में, निरुद्ध सर्वजनिक कार्यकर्ता काय बरने हैं, वे सब परस्पर निरा के कारण जनता की आँखों में एक निरिद्ध बर्ण-

न गये हैं। रहते जनता की शक्ति पर आर्या नहीं बय रही है। यह खुब बड़ा सतर्क है, क्योंकि सर्वजनिक कार्य-कर्ताओं में बय जनता का विश्वास नहीं रहता है, तो यह यह समझती है कि इन सब चीयों को ठीक करने के लिए एक सामाजिक भी, अधिना-अधर ही बनना है। इसलिए अब नव-अधर पर अन्तर-साम आदमी को केन्द्र पड़े-लिने वीही तक, अब कहते हैं कि हमारे देश में भी अन्वयुक्त सेवा, नास्ति सेवा फौरन आदमी चाहिए, सभी देश की समस्तपेठे ठीक ही सपत्ती है। इस तरह की भी भावना पैदा रही है, वह न देख के लिए अन्धी है, न जनतन्त्र के लिए अन्धी है और न सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए ही नहीं, सामाजिक है, क्योंकि जब एक बार अधिना-अधर ही आ जाती है, तब तब सामाजिक कार्य-स्मृति ही जनता है और फिर सामाजिक कार्यकर्ताओं में का मन्त्रिय ही अन्वयारण हो गया है। इसलिए राजनीतिक पक्षों को और सामाजिक कार्यकर्ताओं को अपने दित में भी प्रतिनिधि बननी है। इस दृष्टि से-बन देखते हैं, तो विनोदजी को यह कहते हैं यह समीप ही दृष्टि से जो सब हम आपसे धामने पेश करते हैं, यह अधि-प्रतिपा का कर्तव्य माननीय नहीं है। यह हमारे देश-काल-नीति की नहीं है। निनोदजी कहते हैं, मान्य भी मान्य को खर हीने दो। अब का समाज जीवन मान्य-नीति-बन्धन नहीं है। इसलिए उसकी मान्यनीति बनाने की हमारी कोशिश है।"

अध्याकार के बारे में विस्तार करने हुए भी नववावू ने कहा :

"हमारे देश में जो अध्याकार (र-पन्) पैदा है, उसकी मिशने के लिए भी अब हम सोचते हैं, तो चुनाव के लक्ष्य में कमी करने की बात आती है। वा में मुख्य मंत्री था और कामेश्वर की कार्य-कारिणी समिति का अध्यक्ष था, वह अध्याकार के कार्यों की बीच करते अध्याकार मिशने के लिए कुछ उपाय सुझाने की दृष्टि से कामेश्वर की तरफ के एक कमेटी बनायी गयी। उस कमेटी के सामने अपने विचार रखने हुए मैंने दो बर्ते बर्ती। चुनाव के लक्ष्य के लिए पार्टी को निरि पड़नी पती है, उसमें भाग्य तपीसा भयनाया जाय। दूसरी बात, चुनाव का सर्वोदय कम कर दिया जाय। आजकल पार्टियों को निरि बलक जाती है, उनमें अन्धकार राह का दित मुख्यता जाय है।

अन्ने अनुदय की एक बात आने सामने रखी। विधान-सभा में भी रहने करे में जारी चर्चाएँ हुईं, इसलिए यह बाहिर बर्ती में बर्ते आर्यति नहीं। जब मैं मुख्य मंत्री था, तब वीही याने के पत्तों के टेके देने के बारे में मैंने कुछ परिवर्तन किया। उस पर तुल्य कामें वाले ही भाषण हो गये। तो टेहा-परी साय-सत्य अपने का होता था, उसको दस पदद लख अपने में सरकार की तरफ से दिया जाता था और फिर वे टेहेदार पार्टी को तुल्य पद दे देते थे। अब मैंने सामने यह चीज आयी, तो फिर मैंने कहा, तब पत्तों के टेकों का नीलाम किया जाय, तर्क अधिना-अधिक पन्ना सरभर भो मिले। तो पहले बर्ती दस फरदद लख सभा सरकार को मिले थे, अब नीलाम के कारण सरकार को साठ लख करे मिलने ल्ये। लेकिन इस पद्धति का अपने ही लोगों ने विरोध किया और मुख्य कहा कि जब नीलाम भी पददिक मिली, वीही के पत्तों के टेहेदार पार्टी को कम नहीं देते।

इस तरह के सब कमी देना जाय, तो पार्टी के लिए पन्ना पददका करने के लिए हम राष्ट्रीय दित को मूक करते हैं। यह बात केवल कांग्रेस की ही नहीं, सब पक्ष देते ही हैं। मित्रको मुझ 'परमिंट' बौरर नहीं मिले हैं, वे विरोधी पक्षों को देश देते हैं और सरकार पक्ष की फेल पादसभाओं में लेख देने के लिये उनसे कहते हैं। इस तरह सब पक्ष अपनी निधि बलक करने में नाबालक होतीसा अपनाते हैं, जो तुल्य अपने आम में अध्याकार का तरीका है। तुल्य अध्याकार करते हुए उन्ने अध्याकार को कैसे बचा सकते हैं!

नुवाय के जो इतने लक्ष्य बड़ गये हैं, इतने चुनाव में मांग देने बाल्य मन्त्रिय तुल्य कर आने के लिए हवाएँ खुले खर्च करता है, तब तुल्य बाले के बाय अपने पर के लक्ष्य उठा कर लक्ष्य किया हुआ पैसा प्राप्त करने का प्रयत्न भी करता है।

इसलिए देश में ये पद्धि अध्याकार को दूर करना है, तो तब प्रायिनों को अर्थ-संभव की दृष्टि से आमसिद्धि करना चाहिए और बायक तरीके अपनाये चाहिए। चुनाव का सर्वोदय कम करना चाहिए।

हमारे देश में अध्याकार का और एक सुधार देना है। बपरासी से लेकर मनी एक जनक अनेक मिश और रिहोदार-पर अन्धका रहने के लिए के वनके लिए तुल्य कर। तब अपने मिश और रिहोदारों को सुध करने के लिये उद्भाव्य से ही जो काम किये जाते हैं, वे अध्याकार हो जाते हैं। इसलिए यदि जनता को हमें अपने देश में उन्नत चलना हो तो हमें अपने मन्त्रियों में परिवर्तन करना पड़ेगा। जनता को यह सोचना है कि कौन व्यक्ति किसी पर पर पठना है, तो उनसे नाबालक बयवता नहीं उठाना चाहिए। अगर उसके परबल उठाने को कोशिश करते हैं, तो वह अध्याकार को बलाया देना ही होता है। इसलिए चुनाव में भी अपना बोट बेचना जनतन्त्र से लक्ष्य कर देना है, यह अन्धी तरह से समझ लेना चाहिए। एक-दो के लक्ष्य के लिए बर्ती बोट बन्दे देते हैं, बर्ती बोटो से खरीदे हुए प्रतिनिधि का सकारा अपने लक्ष्य में लिए आमसिद्धि करते हैं, तो उनमें हम फिर तरह गली निगालें। इसलिए अध्याकार को मिशने के लिए सब

कार्य पर कथित होनी चाहिए और तुल्य के सम्य पर धारी विचार करना चाहिए।"

हमारे देश में क्या सभारंगता के बारे में भी नवजात है क्या :

"आज देश में मानसिक, प्रवेक्षण, कालिकादि आदि की जो सजीवता का मर रही है, उनमें हमारे देश के बच्चे बड़े बच्चे की उपर नहीं उठ पा रहे हैं। न बच्चे हुए भी उनको बड़े बच्चों में पुनरुत्थान करना पड़ा है। आज जो हमारी जो तुल्य-सम्यक्ति है, उनके कारण बड़े-बड़े नैतिक की भी एक छूटने के कारण के तुल्य-सम्यक्ति के पुनरुत्थान करना पड़ा है। तो बच्चों की वनना अपने जेब तक सीमित होचली है। उनमें मान्यते देश और विदेश के बड़े-बड़े प्रयोग नहीं रहने। अतः जेब में, अपनी शक्ति में और अपने स्वार्थ की जो समयावधि होती है, बच्चों को जो उठा उठा कधी उठ लेना पड़ता है माना जाता है।"

इसलिए तुल्य में बच्चे आने के लिए किनारा भी बना आदमी क्यों न हो, उस जेब को भी खोल, हनार्य होई, मने ही-व दृष्टक के अद्विष्ट में क्यों न हो, उनको उठा उठा पड़ा है।"

हम तरह से सरकार को बाहर हमारे कल्पने-के-एक-एक-उस-छोटे-द्वारे-के-स्वायं और सर्वांगता के विचार बन जाने हैं। सम्यक के नेता बन कर सर्वांगता के विशेष में बच्चे होकर है उठते हैं। इस कारण हमारे जनप्रतिनिधि सर्वांगता के उपर उठ नहीं पाते हैं। दूसरी ओर निरंतर ईश्वर जनता के विरुद्ध विचार उनके आसने पर नहीं बचते हैं। इस तरह के कारण बन जाते हैं और राष्ट्रीयता को बंधा देने में अनमन्य हो जाते हैं।"

इन चीजों को एक तब हम नहीं सोचते और इन पर विचार नहीं करते, वन तक केवल जन प्रतिनिधियों को निरुद्ध करने से अनेक परंपरा नहीं होनेवाले हैं। आज हमारे देश में इतनी लोकोत्ता नष्ट नहीं है कि लोग आपस में मिले भी नहीं। आज जनप्रतिनिधि और नेता एक दूसरे के निकटवर्ती विचार रखते हुए भी आपस में मिलने में अनेक अन्तरों को हल करने के लिए सोचते हैं। उनको भावना हो गयी है कि एक-दूसरे की निरुद्ध करने के लिए नही, सहायिका बनने के हैं और उनमें लिए कोई उल्लास निःसंकोच पड़ेगा।"

उसी तरह से हमारे देश में भाव के जो साक्ष्य होते हैं, प्रयोगों के जो भाग्य होते हैं, कालियों को जो भाग्य है, उनका हल ही-व के लिए आवश्यक में मिलना और सोचना चाहिए। यह सब तब हम नहीं समझते, हम जनप्रतिनिधि को बंधा नहीं करके। सामूहिक कल्याण में प्रवृत्ता करवाना है, यह हमको अपनी तरह समझना चाहिए।"

आज जनता के नाम पर जो चलता है, उल्लेख वोट देने के विचार बनाता है और कोई दिशा नहीं। पार्टियों अपने उन्मीलन तथा कलियों हैं, उन्हें मैं के निम्नी एक को वोट देना पड़ता है। यह सच्चा जनता नहीं है।"

सच्चा जनता यह है, जिसमें नक्सा खुद अपने प्रतिनिधि तुने। जनता और प्रतिनिधि के बीच में कोई कबाहट न हो, इसलिए हम सर्वोपरि वाले प्रवृत्तावादी नहीं माना आये के सामने रहते हैं और उनमें के प्रतिनिधि तुने की बात करते हैं। यह सब प्रयत्न पर महात्मा प्रतिनिधि के रूप में समझित हो जाये, तो फिर वे खुद अपने प्रतिनिधि थे, तो जनता पर सच्चा जनता बन सकता है और प्रतिनिधि जनता का ही प्रतिनिधि बन जाते हैं।"

योग यह सच है कि हमने बड़े-बड़े काम हम नहीं कर सके हैं। तो फिर इस भाव लेते-छोटे-कामों से ही हो सकती है। आज अन्त-अन्त उन्मीलन और अन्त-अन्त पार्टी अपनी-अपनी प्रवृत्त-समर्थक अन्त-अन्त का बना रहे हैं। इससे लोगों पर सच्चा आरती है और खुद पैसा लाने को रहा है। हमला ही नहीं, यह से बढ़कर खुद अपने नाम दिखाने के लिए प्रचार करने का कोशिस कर रहा है। इन सबके अन्त तुल्य को तुल्य हमला जाते तो हमें यह करना चाहिए कि

हर एक और एक ही दल का भी एक गाँव में उनकी सम्यक उन्मीलन चार-अपनी-अपनी बात एक ही मंच पर के बने, तो लोगों को सहीकत बात ही साच सुनने का मौका मिलना है और उठते हीन हीन कवा बदले हैं, इसको तुल्य-सम्यक्ति के समझने का भी मौका मिलना है।"

अगर हम तरह ही, तो यह सच्चे लोग विद्युत का नाम होगा। दूसरी बात, उनमें तुल्य का लक्ष्य भी खुद बन जाता है, लेगी की प्रेरणा की कम होती है। सब उन्मीलन का है। यह कोलने से प्रवृत्त निरुद्ध काम हो जायेगी और लेख का वातावरण रहेगा। अन्त तुल्य में हम हमने भी नहीं कर सके हैं, तो राष्ट्रीय जाति-स्य ना तुल्य ही नहीं कर सकते।"

छोटे छोटे बच्चों को तुल्य के प्रचार में लक्ष्य कर आवश्यक बच्चों के दिशा में बचपन से ही उन्मीलन देप की आवश्यकता रख करनी है। इसलिए सब पार्टियों यह तब करें कि छोटे-छोटे बच्चों को तुल्य के प्रचार में नहीं लगायें। वे जो समर्थक हैं, वना-अन्त हम पाठ्य नहीं बने, तो यह एक शूद्र ही नहीं कर सकते और जनता की चारम नहीं रख लेंगे।"

इस तरह ही नवजात में उन्मीलन तुल्य के सम्यक लक्ष्य उठा कर ले-विद्युत का कार्य किया। भूखूरी मरुत

देश की पन्द्रह लाख कतिनों के संगठन से हो

हम खादी को जिन्दा रख सकते हैं

३० ना० सट्टनपुत्रे

प्र (यदि हम देश की पन्द्रह लाख कतिनों को संगठित कर खादी-कार्य को आगे बढाने में मागेदार बनाने में सक्षम हो सकें तो दुनिया की कोई ऐसी शक्ति नहीं है, जो खादी के विचार को रोक सके।) आज मजदूर-वर्ग की जो सुविधाएँ मिली हैं, उनका मू-कारण नहीं है कि वे संगठित हैं और अपने अधिकारों के प्रति जागृत हो गये हैं। प्रथी प्रकार यदि देश की पन्द्रह लाख कतिनों को भी उन ही शक्ति का भाग कराया जाये और वे संगठित रूप में अपने अधिकारों के पास करने के लिये आना-उठाने को उनके अधिकारों से उन्हें जगित नहीं किया जा सकता है।"

आज एक खादी के कार्य में रिपला नहीं आयेगी। उनका मूला कारण यह है कि सब एक एक देश को पन्द्रह लाख कतिनों को संगठित नहीं कर पाये। इसीलिये वी-वरी सत्यार्थ का यह कथन है कि वे खादी-कार्य में कतिनों को मागेदार बनाये और उनका मूला संगठन बनाये और उनमें यह जाति पैदा करें कि खादी-कार्य उनके मूल पर चल रहा है। इससे एक और लाभ यह होगा कि दुर्घटना का कार्यकर्ताओं के बच्चों पर जो बोझ है वह हलक होना और उनमें साथ पन्द्रह लाख कतिनों की कार्य करेगी।"

खादी के काम को सरकार के मूल पर हमें जिन हल तक चखना था, उब वह एक हम खुद खुद हैं। खादी-कार्यकर्ता व कतिनों यदि एक कथन बना कर काम करने तो एक टा-सुर की सत्य बना कर भी यह कार्य किया जा सकता है।"

खादी के उत्थान के साथ-साथ अपनी विधि व 'कालिंदी' बहाने भी और भी विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। यदि खादी की तुल्य में कालिंदी में तुल्य हुआ तो उन्मीलन-कार्य व अन्य सत्यार्थों में '४०' विद्युत एक खादी की दशा हो सकती है। 'कालिंदी' में तुल्य करने

के साथ-साथ खादी की विशेष, इस और भी प्रचार रख जाने चाहिये। हमने जिसे हमें एक प्रतिशुल्काओं के मागे देना ही की परामर्श की अभ्यन्त करना चाहिये और जिस प्रकार उन्होंने गत वर्ष लगे में रिवाज, कालिंदी, वोट खादी में तुल्य किया है, उनमें अपनी आमदनी को दुगुनी हुई है, साथ ही सैल्युट भी बढ़ाई जनता में काफी लोकप्रिय हुई हैं। यदि हम सैल्युट की बढाव की रिवाज, कालिंदी में प्रगति कर दें, तो भी हम यह समझें कि काफी तुल्य किया है।"

गणितमान में विरिद्ध-अचार पर काफी प्रयोग हुए हैं। बच्चों पर यह वर्षों से १५ सखारों बन गयी और हा-म-म एक कतिन बच्चों की खादी का उदाहरण होने लगा। वहाँ तो सखे वही रिपोरड यह है कि पर पर में लोग खादी पसन्दे हैं। इस प्रकार लगभग ५० ६० लाख बच्चों की खादी की सखे बनी ही खादी है। इसमें अधिक बच्चों २००-२५० कार्य-वर्गों में पैदा हुए।"

यह सब गौरव बच्चों में उत्थान नहीं होगा, तब तक हम देश में नहीं जाति हमें में सखे नहीं हो सकते। इसलिए हमें यह सतत प्रयास करना चाहिए कि छोटे बर मजदूर को जो मजदूरी मिलती है, उसमें मजदूरी को खादी-योगियों में मिलनी ही चाहिए। हमारे देश में आज तक कालि-कारी प्रयोग चल रहा है, विशेष के द्वारा हम समूचे देश में सत्यार्थ उन्मीलन करने जा रहे हैं। ऐसे सखे बनाने के लिए खादी-योगियों के कार्यकर्ताओं पर पूरा जबाबदारी है। उन्हें गाँव गाँव में पंचायत पत्र के अन्तर्ग अर्थ समझना चाहिए, क्योंकि पंचायत पत्र खादी-योगियों के मूल पर ही सखे होने चाहिये है। इस अन्तर्गत की माता बनाने में हमें अनेक पंचायतों का अन्तर्गत करना पड़ेगा। पंचायत बन्दिगावों के मजदूर भी हमें आगे बढाना है। हम तुल्य ही रिवाज करना है।"

• इन्हीं में हुए म. प्र. और उत्तरप्रान्त खादी-वर्कशो के संवेदन में किये गये प्रयास हैं।"

पूरी कड़ी या पंक्ति है—'आर्य थे हरिभजन को, ओटन लगे कपास।' कपास का ओटना वैसे कोई निरर्थक काम नहीं है। बहन-उद्योग में कपास ओटने की जिया काफी महत्व का स्थान रखती है। पर हरिभजन के मुखावले उसे निरर्थक माना गया। 'ओटन लगे कपास' के स्थान पर यदि 'धोवन लागे तास' कर दिया जाय, तो वही अधिक सार्थक होगा, यद्यपि तास के खेल में मगन या मस्त हो जाने वाले खिलाड़ी इस संशोधन पर माराज हो सकते हैं।

इसत मलख कवि की इस छक्ति का इतना ही है कि अपने ध्येय को छोड़ कर किसी ऐसे काम में पड़ जाना, जिसका ध्येय के सामने भी मूल्य न हो, बिलकुल निरर्थक है, और हानिकारक भी, यद्यपि बुद्धि को पुष्पाभिराकर चतुर्पई से यह साबित करने का प्रयत्न किया जा सकता है कि जिस काम को निरर्थक माना या कहा जाता है, वह भी ध्येय की पूर्ति में सहायक होता है। ऐसे तथ्याकृत सहायक-रूप काम को छागे चल कर ध्येय का जबरदस्त साधन मान लिया जाता है, और कर्मा-कमी तो वह साथ-से भी अधिक मूल्यवान कहा जाता है।

अनेक धर्म-मंत्रों और धर्मों का इतिहास इनके सामने मौजूद है। एक महादुष्टवर्ग दुनिया में आकर लख की रीज करता है। अपने समान की परिस्थितियों के उपश्रुत वह दुष्ट नियम भी बना देता है। भक्ति-मान्यता के कुछ लोग उनके उन्मत्तों को ओर बिच जाते हैं, और उनके अनुयायी भी बन जाते हैं। उनका विद्याभोग को वे माने के लिए वे अपना एक संघ बना लेते हैं। संघ के लीदेरों में उच्च महादुष्टवर्ग की विद्याभोग को लेते और जगत् का वे उद्योग करते हैं। उन्मत्त द्वारा की गयी लख की रीज का रंग हर धीरे-धीरे चकले लगाता है। उनके नाम पर लख को अन्त-अन्त बाधे रखने के लिए फिर दुनिया की हरि से नर-नरे नियम और उन्मत्तवम रहे जाते हैं। उन्मत्त मुहाबे त्याग और अन्तमर्ग की राह करने के लिए समझाई संवद भी जाती है, जब और अन्तमर्ग संवधि चढ़ने लगती है। लख उन्मत्त की रखा के लिए दिष्ट हुज नाम करने चलते हैं, जो उच्च महादुष्टवर्ग द्वारा की गयी लख की रीज के विषुद्ध उन्मत्ते होते हैं।

मुक्त निचार का उद्गम किया गया, उसे भनयादा आकार दिया गया, और उधे रचानि किया गया स्वर्ण सिंहासन पर। उन्मत्त ररररारी के लिए वीररीदा, रररर परदेदार लिखु छिबे गये। उन्मत्त दुभा यह कि विचार का देवता गाकर ही गया और बाकी रह गया वह हरमन्शिधर और उनके परदेदार। दिन किली ने ओं नं दुगी भरी, यह बोल उदा-गत के विरले ही मानी आगोने, हररर उन्मत्त ही दुष्ट रहेगा। पर विन्दो जान-मान भर ओं पद रखने में पर आन्तर आला ही, ये कर्मों अन्त के प्रभाव पर ध्यान रहे लीं। उन्मत्तें अपना कपस का ओटना या साप का लेटना ररर के भजन से प्रारंभ नहीं माना, उन्मत्ते गाय उन्मत्ते पूरा मेल भी डिया गिया है।

यों कपास ओटना—भार उन्मत्तें सारई और गरारई में उठार जाते थे, उन्हें 'अन्तमर्ग रररररर' के रूप में कभी जीवन भर भजना-भजा भला रहा, और दाह-मलने से मुनिया का काम किया। कपास भी ओटना होगा। ररररर री गंठी रा। नाम-रने दे देकर करने लीं।

धर्मदान में व्यापार किया और धनका वा घरा कपलई वा था। और गोपी भी वे आंखियों को बर करता था। कौन बहणा या उर लने हरि वा भवन नहीं किया था। ओठने, पुठने, कलने और पुठने वाले इन बहू-रने हरि-भजने से हर परी और हर बर हरि का बखन किया, हरि वा स्थान लवाय। उनके जीवन की हरदेक जिया हरिस्थ वन गयी थी। हरिक साधन साध में समा गया था। याना का हरिक साधन अस्थि मखिल बन गया था। कौन बहू करने वा मानने की गलती करेगा कि उनका कपास का ओटना अलंबव और निरर्थक रा।

करीर में कपडे पुने। हाट-बाजार में आकर धान बेणे भी था। यह धुनारा और बेचना निराले ही दंग का रहा। जमुयई का घन खरेक ही ररनी में रीथ नहीं तथा। उन्मत्ते उन जमुयई के साधनने में माया की ही पुष्पन में डाल दिया, और साक लुट गया। गोपी ने रीथ-नेमन नहीं करा, बलि एक एक तर में देष की मन आस्था उलने देली, और उन्मत्त पाये पर थे यह भूलत पर राम का राम उठार लने का ध्यान प्रतिगुण लगाता था। दूर से देखने वालों की लगा कि मरपाई और मरदलियां इन अनेक ध्येयवालों को रींम कर रींम। पर वे कलई रींमने वाले थे, जो हर परी ध्येय वा हरपाभे और आभर्षों को कौंच के टुकड़ों की तरह लोठ रींमने के लिए ठीकार रहने थे।

संघ धर्मदा बनिपा था। ग्यापर बरता था। पर उन्मत्त व्यापार अलत में लख-नाम का था। वह गाथा है:

"हस साय नाम के ध्यररररः
हबने लासा साय बनी बा,
दुरल लख रररररः"

धनिहारिन एक-रुनें, तीन-तीन चार-चार गाये, एक-पर-रुक, लनी के भरी फिर पर रने हुए आ रही है। लंकेधो के काग करती है, फिर हिलती है, ली-वी और उन्मत्तें जमीन पर रर ररनी है, बर काय मन्मत कि ररु भी चूक जाती. गाथों से छठके, कन्तों-कन्त उन्मत्त लकी-भनी गाथों पर लं छा गहुया है। कास की निपाई उन्मत्त ररररर ध्यान घटा नहीं बरती। गाथने केवल उन्मत्त घरे हरे, बरी उन्मत्त हरिस्थ बन दे।

करीर और की-री-रुनें में 'लाप वा सेल' ने लडी, पर नीचर वा लेखे ही कोई दूसरे लेखे को देखे ही गींये, पर अन्त लेखे तो उन्मत्त बर था, बिसे फिर की लकी लमा बर लेखे था। गोपी ने भी, मुफरान और रींम तो वरर ही, लेल लेखे। तीन गोपीयों पर फिर की लकी लमा की। ये सारे लेल हरिभजन और हरिस्थान के ही विधि बन थे। मन्मत यह कि हरि धिये पर रनेत्रिच हो, जो फिर कौई लाना मदू नाथ नहीं कि 'आर्य थे हरिभजन की ओटन लगे कपास।' बर देखा नहीं होगा और उन्मत्त ही रररर, लख वा नाम लेनू, एक-दिया आकर है, तब पेश-बनी भी यह उन्मत्तें उठार, अन्तर अन्तर के नाम लगे हों, बार-बार आती है कि 'उन्मत्त रल की खीये, बिसे के लिए पर दे बिसेले, मुक्त बरार कन्त-वन्तर रररने में लग गये।'

कपस उपर की यह सिवाल इध रचनात्मक कार्य-धर्मों की नेदी ही वेलावनी नहीं दे रही है। इस रररने, जब मरदलरने से देखें कि बिसे नाम का लेला और रद्वार बदन लिया गया है, वह अन्तर से बरतीं बने के गुन्गरे की तरह लो नहीं है और उधे

आनमररंगा की फुडों से जो पुत्र दिया गया, वह हवा उनके अन्त तक मर रहने वाली है।

हर लगाता है, ररिहास के उन पर्षों को देख कर, जिनमें लिखा है कि जिनमें बने को छोड़ दिया उनका ब्रह्म और वेद बल टुट नहीं तथा। अन्तर का रल रल गया, वा निर रडा हो क्या। वदना भी पेशना तुग नहीं, अन्तर मूल के साथ एक रहता काम रखे, हर डाल और हर पर्ष में बग कि वह अन्तर का रल लल्ल-लल्लकता दिखाई दे।

कदाई और पुनारई अन्तर संयत्त बर रही है, आर्थिक मरदर की वेलावनी पर अन्तर यह लगी है और उलके अन्तर के जीवन-रधनन का वह रलल्लकता बा रहा है, जो अरिहा-सकि का लोस माना जात था, तब उन्मत्तें प्रायश्चित की गिनती रकीके के साथ ही रचनात्मक कार्यों में भी बर सकती है। वही म्याय दुनियावरी सिवाल न नई लाती और हरिभजन और हरिभजे उनें बागों की वेला-प्रस्थितियों पर हलू होती है। रचनात्मक प्रस्थितियों के महाराज भी है, एक डाल और एक-एक जली में उठ वर ओर अरिहा का दररन हली प्रादिये, शिखरी प्रादिये गोपी ने अपने जीवन का उतरन पर उलक और विनोय भरी हृथियों की हसिलि लख रहा है।

रेलगा होना और जवरी हो कि बर देता होता होगा कि बिसे हर प्रायश्चित कहे हैं और जिने कलाय मानने हैं, वह वही लडी रररता हुआ कर भजना बने वाली वरु लो मरी है। अन्तर उता था, लो मन्मत ने वर को जिस मुन्तररे बदनन में रलत ररर है, उधे उका बर खेक रलत होग, हाकि उका उन्मत्तें ध्यान आनी पान रिया का करे।

राजनिति का जूना उतार कर सर्वोदय-मंदिर में आओ

स्वराज्यवादि के बर गोपीजी के शारी अलल-अलला राजनैतिक प्रयत्नों में बंटे गये। कडेस उन्मत्ते हैं। एक राजनैतिक प्रयत्न है। सर्वोय सर्वोदय-सुरा नामाज है। हम सभी पदचाद को चरने दें कि रररारे काम में आरये। एक-वर-हय उन्म लोनों की बरने दें कि ह्य वर मरिद वे जाते हैं, तब लो बरर निरलत के जाते हों। वरों नाम-सर्वोदय-मंदिर हों। और बर बररर मरिद के बरर आते हों, तब लुध पदर लेने हों। राजनैतिक यह जला है। ह्य लोय बर सर्वोदय के मरिद हैं। मन्मते, लर पर लल बरर रा दो। सर्वोदय के मरिद में ध्यान का नाम-सर्वोदय चले।

सर्वोदय है। वह नाम-सर्वोदय चले एक अन्त लुत्ता वी में गा रही। वह सर्वोदय का काम एक मरिद का नाम है। वरों हम लने चालो को बररने हैं, लेखिन उन्मत्तें अन्मत्तें लो बरररर लने हूंगे। बरों ध्यान के काम के लिए जायों वरों कडेपुयके कडेय की वाउ नहीं करेगे, ली. धर. ली. गाथे ली. ररर. ली. का वाउ नहीं करेगे। ये आनी-धरनी घटी की वाउ करेगे तो बुरं बरर-उन्मत्तें। लेख उनवरी बर लुनिगी नहीं, रलत ररेगी नहीं। ररररर आर ये अन्त कडेपुयके लो बर मररररर का काम करने के लिए बरनेगे, तब आनी घटी का नाम नहीं लीं। (विद्योतीहरि, ११५, ११)

वह अन्त के बन्मने का नाम-

महाराष्ट्र-समाचार

महाराष्ट्र राज्य के मुख्य 'मंरी' श्री सचदेवराव पटेलना ने १ मई को श्री विनोबाजी के जन-गौरव, मागोदे को भेंट दी। विनोबाजी के विचार के अनुसार समाजोपेकी प्रगति पर, ऐसी प्रशंसा करनेके प्रकट की।

सागरी जिले के दिवरे गौरव में २ से ७ मई तक 'कनकचरार सभा' स्थापना गया। सचदेव, पंचादत राज्य, सुप्रसिद्ध सैली, सखद आदि विषयो पर विविध वचनो के माग हुए।

होरा नेत्र में टाप दिया हुआ एक सख का नाम 'मोक्ष' नामके अमल में धारणे। गौरव में कुल २० अंतर चलेके चल रहे हैं। गौरव में ५ अंतर चलेके चल रहे हैं। गौरव में २० अंतर चलेके चल रहे हैं। गौरव में २० अंतर चलेके चल रहे हैं। गौरव में २० अंतर चलेके चल रहे हैं।

कोशंबपुर जिले के प्राधानी गौरव, विजु में श्री अणुनाथ बाबू आयेये, उक्त समय देवालय के एक अनुष्ठान कादिश कार्य-कारण को रक्षित मेगने में पक्ष से मुक्त होकर विजु में काम करने का वचन दिया। वे रात को मौर सैली को पढ़ाने हैं। सैली के विचार-कार्य में मदद कर रहे हैं।

बनगौरव मोक्ष गौरव में १० अंतर चलेके ५ मिसाल चलेके चलने का वचन दिया गया।

लतामिठी जिले के नेकर गौरव में 'हीन मेयक कम्पौट' सार के ५ डेर विचार किये हैं। एक बार मंडल की स्थापना की और छोले करने के लिये आदेशों एक की गयी। कुछ लोग चापानी लेती के प्रयोग कर रहे हैं।

सावबल क्षेत्र के गौरव का '७वे' निगा जालिया। कुडाल गौरव के उत्पत्ति-कर्म में ४० कर्मचारी सहायी गये।

निवसे आम में निवसे, इच्छली और गोटीस, इन तीन गौरव के लिए प्रारम्भकार हुए। किता का रहा है। कनकल गौरव के एक कामीज को धर्मयोगी हीराने के लिए देवचन भेजा।

राजग इच्छली गौरव में साधुवायिक लेगी के लिए सार्वे धार मन वीर दिव्य गया। गोटीस में ११ स्रियार साधुवायिक लेती के लिए ८ पकड़ श्रुति विचार कर रहे हैं।

लतामिठी जिले सचदेव मंडल की वारिष्क समा २३ से २७ मई तक कुडाल में हुई। आगामी एक सार की कार्य-योजना विचार की गयी। समा के दिनों में २४ मई को उक्त क्षेत्र में ध्यान के धारण सुरु किये गये। कार्यकर्ताओं ने परे पर परे हुए वेड आदि सदाने में मदद की। १ जून से १५ जुलाई तक जिले में निवसे प्रकृष्ट कर रहे हैं। इन्हीं दिनों विजु सचदेव और प्रामदान नवनिर्माण-समिति की बैठक हुई। अन्न विचारों के लिए चार सार का एक नये वाचक गौरव में चलेगा।

साकगौरव क्षेत्र में ३ सारसे काम करने वाले एक प्रमुख कार्यकर्ता श्री राम गलेकर विहार में 'श्रीश्री कटपट्ट' आदेशक में कार्य करने के लिए गये।

अन्नचरनगर जिले में श्री सं. प्र. दिवोलेकर ने सार गौरवों में १०० कर्मो-र-प्राप्त रहे। उनको सथायो बनाने की घोषणा करी है। प्राय-व-साध्य, महिष्-मंडल, सुवर्ण के सचो-र-विष-मंडल गौरव-गौरव श्री अर्थ-मंडल के 'नये मोड' के सचदेव के अनुसार हुए हैं, ऐस प्रपल श्री दिवोलेकर कर रहे हैं।

विनोबा-पदयागा में प्राप्त दान

आगत में सा ०५ मई के २० मई तक गौरवलाय, चाणूर, नगौर, दरग और नारवें सचदेव जिले में ७२ पत्रार्थ पर करीब ५५२ मील की विनोबाजी की पदयागा हुई।

इस आगमें में कुल २१०० सारामें से लगभग ५०,२१६ कटुला भूमिदान ११५ सारामों के ५१४४० संवत्मान, ४५ सारामों के ८,८१८० अक्षित दान मिले। ११,०८० सचदेव-गौरवों की स्थापना की गयी। ७२ लोकवेदक और १० साहित्यिक से। अक्षयिभ भावा का २१,१५६ रू का और अन्य साहित्य भागों का १४,५१२ रू का सचदेव-साहित्य मिले। श्रम-सचदेवों के ८९ सारक गये।

हरण जिले में ४ मौर नारवें सचदेव-पुर जिले में ११, कुप १७ प्रामदान पदयागा के सचदेवना मिले।

इस संक में

- १ विनोबा
- २ —
- ३ विनोबा
- ४ सचदेव देव
- ५ दासधर्मविहारी
- ६ शं० 'संघा'
- ७ लखन
- ८ श्री शं० सचदेव
- ९ विनोबी हरि
- १० —
- ११ विवासागर
- १२-१२ —

मंगी-मुक्ति परिसंवाद एवं शिविर संघन उन्नत साधनों एवं सफाई की विकसित पद्धतियों के संबंध में निर्णय

२५ से २२ जून तक इन्दौर में अखिल भारत हरितन वैद्यक संघ द्वारा अखिल ७ दिवसीय अखिल भारतीय मंगी-मुक्ति परिसंवाद एवं अखिलभारतीय संघन हुआ। इस शिविर में देश के विभिन्न भागों-गुजरात, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार और मध्यप्रदेश-के लगभग ५०० कार्यकर्ताओं ने भाग लिया था। शिविर का संचालन भारत सरकार की मंगी-मुक्ति समिति के अध्यक्ष श्री. श्री एम. आर. सचदेव अध्यक्ष राजस्थान में किया।

इस सार दिवसीय शिविर में मेसर्स की कार्य-र-कार्यों और जीवन-र-कार्यों में सुधार करने, मंगी-कार्यों को सार के आधार पर करने की प्रथा समाप्त करने एवं सिर पर मेसर्स करने को प्रथा को समाप्त करने के संबंध में विचार-विमर्श किया गया।

शिविर में श्री एल० एम० श्रीवास्त, कश्मिरन, आदिम व अनुसुचित जाति भास करार; श्री विनोबी हरि, अन्नचरन, अ०भा० हरिनन वैद्यक सच; डा० कैलाश-नाथ साहट्ट, मुम्बई, प्र० प्र० सावबल; श्री मदनचरन श्री इन्डोर, उज्जैन-मंडी, सच प्रदेश तथा श्री कुलासुर साद सचदेव-विदेकर एवं अन्य प्राण अखिलियों ने भाग लिया।

आधिकारिक इन्दौर नगर-विभाग एवं उच्च नगरपालिका द्वारा भूमयले गये सारों के उन्नत साधनों एवं विकसित पद्धतियों का निरीक्षण करने गये।

परिसंवाद में शिवार विमर्श कर विभिन्न कार्य वच की गये।

- (१) मंगी के सारों में सिरु हलवाकारियों का उपयोग किया जाय, ताकि भारत पर बसे सिर पर संघ कोने को प्रकाश कर उन्नत बन हो सके।
- (२) हरिजनों एवं सहाई-कार्यों के प्रति समाज के दृष्टिकोण में परिवर्तन करार एवं सले सकार हरिजनों की विचार-विमर्श में परिवर्तन करार।

(३) ऐसी सहाई-पद्धति का मासिक-रिपो बना जाना चाहिए, जिससे मंगी-कार्यकों को सलाह सख सख प्राप्त हो सके और शिक्षक सख सख, सख से सहेलन करने कृतियों में संचन सचन पर पहुँचा सके।

उज्जली में लोकगीत-शिविर

महाराष्ट्र सचदेव-मंडल की ओर से सा ० ११ जुलाई १९११ से उज्जयिनी-जिले द्वारा के विचार-विचार आगम में १० दिवसीय शिविर हुआ है। शिविर में आगम-कार्य पत्राधिकारियों के 'लेक्चर' हुए विचार पर प्रचलन होते। महाराष्ट्र के प्रमुख भूदान तथा सचदेव-कार्यों का शिविर में उपस्थित रहे। शिविर में देवना भावदान का कार्यक्रम रहेगा।

साधु-धर्मोपदेश विद्यालय, माचला तथा सत्र प्रारम्भ

साधु-धर्मोपदेश विद्यालय, माचला का 'साधु-धर्मोपदेश' अन्वय-सत्र का आगामी दिनों सत्र २५ जुलाई १९११ को आरम्भ होगा। तीर्थानुष्ठान का उक्त सत्रक विद्या के १८ लाख और करार की उक्त सत्रे सार-दान अन्वय-आवेदन-रूप ३० जून १९११ तक मिलने पर पर भेजे। म. प्र. की सचदेव-सचदेव-सचदेव-अखिली और से अधिवाचकियों की सचदेव। आवेदन-रूप २५ मई से ३१ मई तक परे पर प्राप्त हो सकेगा।

विद्यालय में आने वाले सचदेव-मंडल सार्वधिक जीवन, सार्वी, सचिन सचदेव-स्वाचरणी, सचदेव, उक्तसमय विषय-सख जीवन, सामीज्य वातावरण में तिजने की वेपारी रहे।

सुने हुए अधिवाचकियों की ५५ करने अधिक साधुश्री को सारणी। विचार-कारण देव का होगा। विचार-कारण के लिए सच सचदेव करें।

साधु-धर्मोपदेश विद्यालय, माचला सत्र-माचला, इन्दौर (म. प्र.)

विनोबाजी का पत्रा:

सार्गत: आम निमाग सचदेव सं० सार्ग सचदेवपुर (आगत)

मूढानयन

साप्ताहिक

मूढानयन मूलक आर्यायन अध्यात्मिक विचारों का प्रतिपादन करने वाला है।

संपादक : सिद्धराम बटवाल

७ जुलाई '३१

वाराणसी : शुक्रवार

पृष्ठ ७। अंक ४०

क्रांति आराम से नहीं, कठिन तपस्या से होगी

विनोद

हमारी पाना के मन में हम नहीं जाते हैं, वहाँ के लिए जाते हैं, तो उन प्रवेश की भाव शीघ्रता हमारा धर्म होता है। मैं निम निम वेदर वेद में पहुँचा, उन्नी दिन तपस्य का अध्ययन हुआ किया, बिनाये वहाँ जाँचों को आकर्षण ही हुआ और आन्तर भी, क्योंकि इतिहास जाने वाले अनेकों से काम चला लेते हैं। मैंने यह भी देखा कि एक मनुष्य तपस्यका ही हिन्दी विद्या के लिए मद्रास में दो साल रहा और हिन्दी निपटा कर, लौकिक भोजने निगा करिष्ये रोज। यह चमत्कार जोने आराम की बद हो गयी। हमारे लक्ष्यों की, शीघ्र के लिए नहीं, बकिर काँ के लिए, इन प्रवेश को साधन-प्रवर्धन, लीला का विचार, क्योंकि हम के लिए नहीं आते हैं। वहाँ के कार्यवाहों हमारे साथ रह कर हिन्दी सीखें, यह भी आवश्यक है। मैं चाहता हूँ कि यहाँ के कार्यवाहों अथवा हिन्दी विद्या और साक्षरक एतों की बहनें अथवा हिन्दी सीख कर जो अरत के साक्षर काम करें। वहाँ की बहनें निम तपस्य विस्मय से नाम कतौ हैं, उर तपस्य नाम कले बारी बहुत योही रहने दुनरे प्रान्तों में दिखाएँ देते हैं। इनकिएर ये रहने दुनरे मानों में जायेंगी तो हलका अरर ब्यारा होगा।

पाना के आराम में हमारी वैदी छलत भी, पानी-पानी वैदी ही आज है। इस बात पहले कारे वेद में मूढान की एक ही भीतिग होली की और आराम भी पाना-पाना ही ही होनी, लोको लोग सरर सरर के कामों में लगे हैं और हमें भी उन कामों की सीमा बताते हैं। हम भी मानते हैं कि ये कारे काम आवश्यक है, लेकिन हम तो मानते हैं कि विज्ञान का काम करने आवश्यक है—बहुत सरर एक का काम है और बाकी कारे काम सरर ही के हैं।

वेदों लोग विज्ञान कामों की बात करते हैं, वे साक्षर अथवा काम हैं, लेकिन अक्षरता काम एक बात है और जमाने का काम, मूढान-परिवर्तन का काम दूसरी बात है।

मैं चाहता हूँ कि मेरे साथ जो लोग हैं, वे भी अलग अलग लोको में जायें और काम करें। हिन्दीमें हमारे लोको अध्ययन हुए हैं, वे गौरी गौरी जायें और विचार समालोचने। मैं अपनी लोको को विनियमित करने लगी बिके में मेजना चाहता हूँ। आज यहाँ पर साक्षात्कार भी ऐसा है कि साक्षर के साथी दूर-दूर के लोको में जायें तो अथवा अरर होगा। वहाँ से लोकागामी में प्रवेश किया जा। अपने साथ शीघ्रक समझिक को सरर कर, बाकी सबको उठोने काम के लिए भेज दिया था। लगी सरर हमारे साथी भी जायें। हमें के लिए लगे अध्ययन शीघ्र लेनी चाहिए।

इन दिनों मेरे मन में बहुत कुछ चल रहा है। मैंने लक्ष्मण कारिष्ये कि साक्षात्कार से नहीं लगे होनी है। उनके लिए कर करने चाहिए। आज देख मैंने पाना बराम नहीं है कि हम एक हलका करके काम करयेंगे। जयप्रकाशजी जैसे बड़े बड़े का रहे। हुआ तो अररता में पैसा हलका हुआ, लेकिन दुनरे कारिष्यों सब

इस चलने की निप रहा है, इसलिए दुनिया भर की सफल प्राप्त करने—जो चलने वाला है नहीं—के प्रयास लोको हमिल किया गया तो लगी तपस्य हलका हो गयी। इसके लिए उदाहरण उन्कोने दिया है कि विनोद अपने चारों को समझे के लोको से बाँक लिया, उनके लिए लगी भूमि चमड़े से ढक गयी। कौन अरर वैदी योबना बनाये कि लगी जमीन चमड़े से ढक बाय, साकि अपने पैरों की लकले न हो, तो यह योबना बनने वाली नहीं है। इसके बजाय अपने पैरों में लूँ पहनें तो लगी जमीन ढक बायगी।

यह दुक्ति लोकोपयोगी को सब बाय ही लोकोप का काम होगा। उसके बजाय अरर यदि हम यह सोचें कि दुनिया भर का अपना हलका करने से काम होगा तो इस अमाने में यह ठमर नहीं है—लोक-पद, भा कि भावनी सररार है, तर लोग आपनी वैदिक नहीं देनी। सररार आपनी नहीं होती तो आप अपना हलका कर सकते थे, लेकिन आज लोग कहे कि सररार के कौनों नहीं आगले लो। हम तो सररार को देख देते हैं और कारे काम सररार के पैरों से ही चलते हैं। आज लोको में यह प्रगति नहीं है कि वे लुकर-बलुकर हान दें। परन्तु हमें शान प्रगति पढ़ानी है। हम किसी के पर गये तो पर हमें लुको से लिखावत है। हमारे भोजन के लिए अपने लोको में कराना, लेकिन पर हमें ही क्या नहीं दे सकता है। लुकोपर हमें अलग तपस्य, मद्रासके, लोकोप-प्राय आदि काम करने होंगे। इस ध्यान में दुनारी लक्ष्मण कठिन होने वाली है।

मैं चाहता हूँ कि अलग के काम-कर्मों लक्ष्मण लोकोपनिमित्त में प्राय भर के अथवा कारिष्यों प्रवेश; इसके लिए इन बिके के लोको लगे अलग से मद्र हलका करे और यह निम सकती है। इतना हम करें तो छाएर हमारा धर्म लुकर बनना।

[पत्रक : आज्ञा, नाम लक्ष्मण, पृष्ठ २५-६९]

कठिन हलका होगा कि हमारे कार्यवाहों अरर दुनरे कामों में जायें पारों तो वहाँ पर उन्ने अध्ययन निम सकता है। इस तरह एक गाँव अध्ययन होता है और दूसरी लोको लक्ष्मण का अध्ययन, पूरा लक्ष्मण भी नहीं मिलेगा। गौरी-गौरी साक्षर लक्ष्मण हलका करता होय। ऐसी हलका में यह शक कर कि हमारे साथी दुनरे काम में लगे लगे हैं और हम ऐसे ही रह गये हैं, हमारे मन में लक्ष्मण को लक्ष्मण ही पेश हो सकता है और काम अरर करिष्ये हो जाता है। लक्ष्मण लुकर ही सररार चीज है। हमारे मन में लुकर का लुकर होना चाहिए कि हम जपसा कर रहे हैं, यह अथवा है। और दुनरे साथी दुनरे काम में लगे हैं, वे काम-कले लगे हैं, हलका उनका लोकोपयोगी हुआ है, यह भी अथवा है। हमारा लोको हमारे लिए लोकोपयोगी है और लुकर साथी दुनरे काम में लगे हैं तो हमें लुको ही है। अरर हमारे मन में अलक्ष्मण हा तो हम लुको के नहीं लगे। लोकोपयोगी तो लोको ही नहीं लगे।

अलग के लोको साक्षर देख ने मिलत है : दुनिया को साक्षर शास्त्र-प्राय, सबक-संपत्ति जाना तर हरिष्कल रहे लोकोपयोगी साक्षात्कार। परम-निमित्त पाने लुकर परछा दायिष्य-प्रियो लोको लोको सवे मुनि चमत्कारी लोको लोको। मैं न माने, लोको का तर दुनरी। दुनिया को सर करिष्ये उन्नी लोको लुको, बिशेष मन में लोको है। उन्ने हरि-अर्थ

देश के लिए एक सर्वमान्य आचार-संहिता हो

राष्ट्रपति डा. राजेन्द्रप्रसाद का संकेत

देश में आज सैन्य अशांति और तनाव का वातावरण छाया हुआ है। यहाँ जनाय धर्म-सम्पदाय, चेतन अथवा भाव को लेकर है, और यहाँ आर्थिक-सामाजिक मसलों को लेकर है। समाज दिन प्रतिदिन गिरावट होगी आ रही है। राष्ट्रीय एकता छिन्न-भिन्न होती आ रही है। देश को आबाद हुए २३-१४ वर्ष बीत गये, किन्तु देश में एक ओर यहाँ सन्तरी और देहादी अपने निम्न रूप में कायम है, वहीं दूसरे में सभ्यतायुक्त नये विवेक से खम हो रहा है। देश के राजनीतिक पक्षों से अपेक्षा थी कि ये सन्तरी एकता के मसल को महत्व देंगे, किन्तु पिछले अठारह वर्षों से वे ऐसा नहीं करते हैं। वे सिद्धांत अन्तर्गत यह मानते हैं कि राजनीतिक दल तथा प्रायः तथा अन्य युद्ध स्वार्थों के सामने देश की एकता के मसल को गवर-अंदाज करने लगे हैं। मसलें हुए जातिवाद और धार्मिक-राजनीति की राजनीतिक दलों और चुनावों ने पुनर्जीवन दिया है।

कोय्हाकोल थाने में जंगल-कर्मचारियों द्वारा अत्याचार

जनता द्वारा नियुक्त जांच-समिति का प्रतिवेदन

प्रायः जो कुछ दिन पहले सभ्य-आक्रम, कोय्हाकोल की ओर के कौआकोल थाने का सामाजिक, आर्थिक सर्वेक्षण किया गया था। उस सर्वेक्षण के कारण स्थानीय जंगल विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारियों की कुछ गलत कार्यवाहियों का पता चला था। बाद में स्थानीय लोगों द्वारा भी इस बात की सूचित होती गयी। स्थानीय कुछ जननीतिक व सामाजिक कार्यकर्ताओं ने भी प्राम-निर्माण मंत्रालय, कोय्हाकोल का पत्रानुसार विभाग के कर्मचारियों द्वारा दाने की बचत पर दोष-सूचक बहुरूप प्रेषण की ओर आकर्षित किया। इस विषय में प्राम-निर्माण मंत्रालय के मंत्री ने स्वच्छता मंत्रालय के प्रतिनिधियों को एक पत्रा आश्रम में भेजा। समा में गाँव के प्रतिनिधियों की उपस्थिति बहुत ज्यादा थी। लगभग एक हजार लोगों ने समा में भाग लिया। कुछ लोगों ने अपने घर आये पये सुझावों का वर्णन किया। यह देख कर कि संकेतों तक आधुनिकी सुझावों को मताने के लिए आग्रह है, समा को यह निर्णय लेने के लिए ध्यान दिया प.। कि समा द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों की जांच-समिति, जातकारी एवं प्रमाण-संग्रह के लिए बनायी जाए। पत्र-सम्बन्धनी स्पष्टिकनी की समिति का गठन हुआ।

जांच-समिति ने २ जून से अपना काम शुरू किया। समिति का पहला प्रतिवेदन ६ जून को प्रकाशित किया गया। इस प्रतिवेदन में सरकार का पत्रानुसार विभाग के कर्मचारियों द्वारा की जाने वाली अत्याचारों की ओर लक्ष्य दिया गया। पहले प्रतिवेदन में ६३ बुरे पत्रानुसार दिये गये थे। फिर भी समिति को कुछ बदल और मिलने गये, इसलिए ता. १७ जून को दूसरा प्रतिवेदन प्रकाशित किया गया। इसमें सुझावों की संख्या २३ से बढ़कर २१ हो गयी। इन सुझावों में से कुछ सुझावों को समा में प्रकाशित कर रहे हैं।

जंगल के अत्याचार के गाँवों के लोगों को खेती, घर बनाने के लिए तथा बलाचन के लिए एकत्रितों मिलने की कोई सुविधा नहीं है।

दुर्भाग्यवश की अतिथि मिन गाँवों को प्राप्त है, उन्हें समय पर दूध नहीं दिये जाते हैं। अन्न एक स्थान के पूर्ण रूप में सिर्फ एक बुरा दिया गया। कुछ से अतिथि गाँवों के कृषकानुसार पत्रानुसार फले के पूर्ण रूप में से अधिराज आवस्यक रण-धियों जंगल के कर्मचारियों द्वारा कटवा दी जाती है।

कुछ कर्मचारी अपने सुझावों के लिए जगल कटवा डेते हैं और उसका कुछ आरपेक मर्यादा बनता पर लगा देते हैं।

यहाँ सरकार की अतिथि को दूध का लेना दिया जाता है, ये अतिथि स्थानीय जनता को लक्ष्य नहीं देते हैं अथवा निवेशित स्वस्थानीय मूल्य से पार-पौंच युवा अधिक लाभ मंगाने हैं।

पिछले कई वर्षों से विनोद और सर्व सेवक समा में देश का पत्रानुसार इस धरती की ओर दिये गए और इस संकेत-निर्माण के लिये पत्रानुसार लोकनीतिक पर जोर दिया, पिछले देश में एही अर्थ में समा लोकनीतिक स्थापित हो सके। इसके प्राथमिक कर्म के लिए सर्व सेवा मण ने विनोद २१५९ में पत्रानुसार-अतिथिजन में देश के लक्ष्य राजनीतिक स्थलों का सर्वमान्य आचार-संहिता बनाने के लिये आह्वान किया। इस संबंध में मंत्री सेवा संन ने कुछ लेख सुझाव भी दिये थे। जननीतिक क्षेत्रों में इस विचार का सफल होना, किन्तु राजनीतिक पक्षों की उपस्थिति से यह विचार अमली रूप धारण नहीं कर सका। इस अवधि में देश में अशांति और तनाव की स्थिति बढ़ती ही गयी है। पिछले दिनों महाशय के राजनीतिक क्षेत्रों के प्रतिनिधि और कुछ निष्पक्ष राजनीतिक कार्यकर्ताओं ने महाशय के राजनीतिक क्षेत्रों के लिये सर्वसम्मत आचार-संहिता मांग कर देश के सामने एक अन्धका उदाहरण रखा।

अभी-अभी किन्तु २ जून के बाद देश के राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद ने एकत्रितों में देश के लिये जननीतिक आचार-संहिता पर जोर दिया है। पिछनी बंगाल के सुझावों की डा. विधानसभ्य रूप के अर्थवैदिक जन्म-समाप्ति के अन्तर्गत पर राष्ट्रपति ने अर्थ-मन्त्रय के सूचना कहा है—

“नेताओं को ही नहीं, समय राष्ट्र को विचार कर सहा के लिये एक आचार-संहिता बना लेनी चाहिए, जिसके अन्तर्गत सभ्यता प्रशासक, राजनीतिक दल और सामान्य जनता अपने मसलों को निवारण के लिये आचरण करें।

महाशय देश पिछले तेरह-बीसवें वर्षों से स्वतंत्र है। फिर भी हम इस बात का दाखल नहीं कर सकते हैं कि हम विदेशी पक्षों के बीच एकता और सामंजस्य प्रस्थापित करने में सफल हो सके हैं, जिससे समुचित राष्ट्रीय भावना का विकास हो सके। राष्ट्रीय भावना के समुचित रूप में विकसित होने के लिये प्रशासक की संशोधन सुझावों का—बाह्य से भाषाजन्म ही, लोकजन्म ही, धर्म अथवा समाजवादाजन्म ही आ अर्थजन्म ही—लेना ही जाता है। अतः इस मसल को गंभीरता से विचार कर हल करना है, जिससे देश को एकता मिले, स्वतंत्रता हो, देश के प्रति भी आशात्मक हुआ जा सके। मने करने का यह महत्त्व नहीं है कि इस संबंध में कोई स्पष्ट निर्धारित नीति नहीं है। किन्तु अब कठिनतापूर्वक अन्तर्गत आ रही है और पत्रानुसार ही हो रहे हैं, स्थिति का विचार करना कलता आवश्यक प्रतीत हो रहा है। जो ता. हमें कई आचार-संहिता का विकास करना होगा, यह चले आ रहे लगेको का निवेशनी को सहायनीकरण सुधार कर बनना होगा।

महाशय अन्तः सहायक है कि भारत जैसे बहुभाषी और बहुजातीय देश में समाजों के अतिथि सहायका का डा. एही है कि समाजी राष्ट्रीयता और पार-स्वार्थक सहिष्णुता ही सहायका का विकास किया जाय। यदि लोग अतिथि नहीं अपना सकते हैं तो अर्थक स्थल में, जो सुलभ-नी समाजों अपने आप हल हो जायें।

हमें विश्वास है कि राष्ट्रपति के इस संकेत पर देश के लक्ष्य राजनीतिक दल, प्रशासक और अन्य सार्वजनिक संस्थाएँ ध्यान देंगी और युक्त, अर्थ आम सुझाव समितीके, उनसे पहले सम्पूर्ण देश के लिए सर्वसम्मत, सर्वमान्य आचार-संहिता बना ली जाए, जिससे राष्ट्र में अर्थक स्थलस्थलों और मसलों के निवारण के लिए अशांति और तनाव की स्थिति न बन सके।

(१) कर्मचारी स्थानीय जनता अधि-कारियों एवं कर्मचारियों द्वारा जनता पर पत्रानुसार बने तथा चयने जाने वाले सुझावों को निरास करने उपाय लिख जाय।

(२) जंगल जनता के अन्तर्गत निवेशित के अन्तर्गत स्थानीय जनता की सुविधा के लिए उचित स्वस्थानीय बनाय।

समिति सरकार को विचार दिलाती है कि वर्तमान परिस्थिति में जनता और जंगल का स्वस्थान सुझावों में निवेशित।

हमें उम्मीद है कि निवारकों सरकार इस सुझावों पर गौर करने और तत्काल कारणीय कर्मचारियों द्वारा जो सुझाव अन्तर्गत हो रहा है, उसे मंजूर कर दिया जायेगा।

—संवादाक

श्रुदानयन्त्र

लोकनीति : एक विवेचन

दादा परमार्थिकारी

लोकनीति असल में उस नीति का नाम है, जो नागरिकों के परस्पर-संबंधों का नियमन करती है। इसमें एक श्रवण यह है कि इसके लिए किसी बाह्य सत्ता की ध्वायधुक्तता न हो। 'सत्ता' शब्द का प्रयोग दो धर्मों में किया जाता है। एक 'पात्र' के और दूसरा 'पर्याय' के। इन दोनों धर्मों में 'सत्ता' शब्द का प्रयोग करते हैं। 'पर्याय' का मतलब है प्रमाणप्रत व्यक्ति या संस्था। कोई ऐसी व्यक्ति या संस्था तटस्थ भी हो और शक्तिशाली और प्रभावशाली भी हो, जो हमारा नियंत्रण करती है, ऐसे बाह्य नियंत्रण या बाह्य नियमन को नहीं श्राव्यमानता नहीं होती, वही लोकनीति होती है। जिस धर्म में इस बाह्य नियंत्रण और नियमन का श्राव्यधुक्तता रहेगी, उस धर्म में राजनीति या राज्यनीति का प्राहुध्य होगा और उस अधम में लोकनीति क्षोण होगी।

भौतिक सत्ता गाँव में, नैतिक सत्ता केंद्र में

इस गाँव-गाँव में परंपरागत सत्ता चाहते हैं। इस चाहते हैं की सारी सत्ता गाँव के हाथ में रहे। स्थानीय सरकार का काम गाँव पर हस्तगत बनाना नहीं होगा, बल्की यह गाँव की संके का का घुस्ती हाँक से संभूध परसदासौध बना रहे। स्थानीय तरह दीक्षुडों की सरकार का यह काम नहीं होगा की स्थान पर हस्तगत बनाने, बल्की यह हाँक की स्थानों के बीच संभूध बना रहे। तीनों नूधों सरकार हाँक, हस्तगत हाँक बलक वस स्वायत्त काम, हाँकने का काम रहेगा; इन हस्तगत का हाँक। सत्ता गाँव गाँव में रहेगी। सारी भौतिक सत्ता गाँवों में और केंद्रों में नैतिकता, वरीवरदीक्षुड सौध आर्घ्यें, जीवने सत्ता बलकी। केकाँन धारणों यह माना जाता है की भौतिक सत्ता सदासदात्क का दीक्षुडों में रहे।

कीर्ण में तो बाहरी हक की भौतिक सत्ता गाँवों में ही रहनी चाहिये। स्थानीय और नूधुद की सत्ता बली; केंद्रकी के सत्ता बनाने के कार्यक में। भौतिक सत्ता कीर्ण के धर्मों में नहीं रहे आनी। यह तो बलधे भाव परंपरागत हाँक है। स्वयंश्रीधरों की भौतिकता परंपरागत हाँक है, वं अपने आप नूधुध सरकार में माने के सामक बनने। अतः सत्ता सदासदात्क बलकी, लोग परंपरे से मानने। परंतु असल सत्ता तो गाँवों में ही रहेगी।

—बीनेबा

विविध-संवे . 1 : 1 : 1 = 2
स = स, संघपात्र हलं चिह्न से।

आरभ में ही इस पर्याय को समझ लेना आवश्यक है। यह धर्म ही लोकनीति की कि उन्में सपठिन पात्र 'आर्घ्य' अर्थात् 'पर्याय' का समझ लेना ही चाहिए। राज्य की आवश्यकता अमल में शुरू है, वह इस नियमन और नियंत्रण के लिए हुई है। लोगों की सपठिन नियंत्रण-सपठिन को ही राज्य मान लिया गया। लोगों ने अपनी मति को सपठिन किया और विचारित? नियंत्रण ही लिए। इन लोगों ने राज्य नाम दिया। उसने बाद प्रोच-व्यवस्था का नियंत्रण करना, सुध-सुविधाओं का प्रयत्न और व्यवस्था करना और इसके लिए मान्यता सदासदात्क का सपठिन करना, ये ही सारी आवश्यकताएँ राज्य पर आ गयी। इन सब चीन्हे-पीन्हे राज्य समाजव्यापी बनने की तरफ बलवाने लगा। लोक-व्यवस्था का आरंभ और लोगों की सुध-सुविधाओं का प्रयत्न अतः राज्य को करना पड़ना तो राज्य-सत्ता लोक-जीवन में अधिकारिध प्रवेश करती बली जायगी। यह व्यवस्थाकारी राज्यवाद 'वेनवेनरिज्म' कहलाता है। इसमें एक बोध आ जाता है और वह बोध यह है कि सारा जीवन सदासदात्क ही बना है, सत्ता-ध्वान सपठिन ही जाता है।

यदि यह कि क्या होता है? वही नियंत्रण करता है, सुध सुविधाओं की व्यवस्था और लोक का श्रमण करता है वही पर को दीख आता है, वह लोग वह आता है कि राज्य का प्रयत्न लोक जीवन में नियंत्रण के लिए होता है। याने सत्ता का नियंत्रण के लिए, आर्घ्य के नियंत्रण के लिए, पर दीख परते पर में आता है।

दूसरे पक्ष में यह धर्म आता है कि राज्य का नियंत्रण मझे ही कम होता पया जाए, केवल जीवन का उपयोग-व्यवस्थाक बनाया जाना चाहिए। आत नगर राज्य का नियंत्रण कम करने काय, को राज्य का प्रयत्न लोक जीवन में कम होना पया जाए, केवल लोक-जीवन सत्ता प्रयास केना।

यदि यह में तथियानामक बनाता है, यदि संभव बनने की न बने औध दूसरे पक्ष में सदासदात्क बना कर आता है। अनेकी में परते यह पर माने है 'अर्ध-व्यवस्थानि' और दूसरे पक्ष का नाम है 'द्विर्ध-व्यवस्थानि'।

द्विध और समाज

लोकनीति में लोक मूल है। अंतिम लका, मान्य व्यवस्था लोक है और लोक उदक का बर्ष है सदासदात्क। सदासदात्क का महत्व है, केवल इसे सदासदात्क और तसे सदासदात्क-जीवन को समुद्व करने के लिए है। अर्ध-व्यवस्था के अंतिम के निकारते लिए है।

द्विध लोकनीति में हम पर नहीं मानते कि लोक उदक उदक है, एक उदक का एक अर्ध है, एक अर्धपर है। 'अर्धविक्रि विभी आत ब्यापार' में समाज उपरि है, सुध उपर्य अर्धपर है। इससे वही सदासदात्क बनाय थी या अर्धिक-जीवन में जो धम नियंत्रण होता था, इन सारी सदासदात्क अर्धपर

कम जाता है। यद्यपि सत्ता स्वधि नहीं रहता। इसका महत्ता यह है कि

व्यक्ति की विभक्ति ही और बलवान की विभक्ति ही और दोनों अपने मल में सधु है। सुध-पत्र : सुध-नियंत्रण।

व्यक्ति 'वैश्वर्य' वही है, एक सुधु वही है, अतः सत्ता ही। व्यक्ति को सत्ता है, सत्ता है और सत्ता ही सत्ता है, तपस है।

समाजवादी का बोध

समाजवाद में जो प्रमुख दीख यह वह सदासदात्क का था। अर्धोंके सुधुवक की दृष्टि में मानती। फिर आत उपर सदासदात्क की वात और ही दीखे-सुधुविधि, सुध, किशुल, आरभ, मनुष्यों का सुधियत, किशुल का सुधियत का और सौध संभान का समिति ही—सुधुवक को समाज की दृष्टि में वा वदक माना गया। व्यक्ति को एक अध माना गया।

यह लोकनीति से निरी अर्धपर सुधुवक नहीं है। व्यक्ति और समाज में घेरे विरोधी नहीं है। व्यक्ति का नियंत्रण मन्वीय में ही होता है, समाज में ही होता है। व्यक्ति के व्यवस्था का नियंत्रण दूसरे के साथ भी ही रहते में होता है। द्विध लोकनीति में नियंत्रण नहीं है।

विरोध का आधार है। जब समाजिक और मन्वीय के हित में मन्वीय की व्यवस्था वह जाती है। द्विध सदासदात्क और सुधुवकाद में मन्वीय है।

इस मनुष्य को बाह्य श्रमण और श्रमण की नहीं लेना चाहती है। मनुष्य और श्रमण में सदासदात्क होती है, यद्युक्त मनुष्य है। मनुष्य ही नही बली, यह ही रोने नहीं करेगा, करना भी नहीं चाहिए। केवल सदासदात्क श्रमण में सदासदात्क सुधुल होती है और नरवद 'व्यक्तिमत्त' है। सदासदात्क में व्यक्ति की विधिता नहीं होती। कुशलता में अपनी अर्धपर्यक्त की सुधुवक में दृष्टि तरफ ध्यान दिया जाता है। यह कोन है? यह पोषकमैय है। यह कोन है? यह सुध, कर्तानी है। यह कोन है? यह सुधु है। केतन पर हम व कुली, ए ही कुली है। अतः उदक कोरें नाम नहीं है। कुली की सौध नहीं चुपारता—द गाने माई, ए कोरें अर्ध है। सदासदात्क है 'वैश्वर्य' आधार है। मनुष्य का जो अर्धपर है, यह सुधु हो जाता है और उदक व्यवस्था गीय ही पाता है।

वही समाज में मनुष्य की मन्वीयता की व्यवस्था, अर्धतर सदासदात्क का मन्वीय बनाता है, वही लोकनीति का हास होता है। लोकनीति में ही व्यक्ति का नियंत्रण सदासदात्क है और नियंत्रण से तपस सुधियत-नियंत्रण, धम नियंत्रण, सुध-नियंत्रण, काम नियंत्रण; मनुष्य का मन्वीय केवल मनुष्य के माने है। वही लोकनीति में वह सदासदात्क का ही सामक नहीं है। यह मन्वीय में सदासदात्क है। ए सदासदात्क अर्ध सदासदात्क है।

तो तब मिल कर भी साथ है। यह समाजशास्त्र में जागरण-भक्ता के हितारे से जाने वाला विचार है।

आध्यात्मिकता भी अस्पष्टता नहीं है, लेकिन आध्यात्मिकता एक पन्था देने वाला यह विचार है। मनुष्य का मंगल मनुष्य के नाते निरपेक्ष महत्व है। हर मनुष्य अपने में समृद्ध है। इश्टिलिए हर मनुष्य के एक एक मत है। लोकतंत्र में समुदाय के मतों को नहीं गिना जाता, योद्धा 'प्लेनटिबल' नहीं गिने जाते हैं। और वहाँ गिने जाते हैं, वहाँ उनसे अंश में लोकतंत्र शिथिल हो जाता है। पार्लैमेंट में पार्टी है, पक्ष है। लेकिन मरदाना पक्ष कभी नहीं करता। और मरदाना अगर पक्ष नहीं तो वह अनपेक्षित होगा। असाहसिकता की मन्त्रि-मन्त्र है। असाहसिकता का प्रवेश पक्ष है। क्रमिक पक्ष सत्कारण है। लेकिन पार्लैमेंट में उठ कर सत्कारणभी अगर वह नहीं कि मेरी मैजिस्टी और पार्टी का यह मत है, तो 'पक्ष' कहीगा कि यह मनन कोई पक्ष नहीं पहा-जानता। पक्षों के लिए जगह है, चुनाव में उन्मोदकता छोड़े करते हैं; लेकिन संविधान और पार्लैमेंट में मरदाना का नहीं एक सत्य है, पक्ष मरदाना नहीं कर सकता। साधुनात्मिक मरदाना ऐतिहासिक नहीं है। इच्छा महत्व यह हुआ कि एक के लिए दूसरा मनुष्य मत नहीं दे सकता। एक का अपना मत है। हुजूम में वेदा बाप की आशा मानता है। वेदों सौ-बाप की आशा मानती है। भार-भन एक-दूसरे की आशा मानते हैं, लेकिन नागरिक के नाते मरदाना सब व्यक्ति के नाते करते हैं। नागरिक की स्थिति से तो मरदाना होता है, यह हरेक अलग-अलग एक व्यक्ति के नाते करता है।

नागरिकता और कौटुंबिकता

नागरिकता और कौटुंबिकता, विरोध नहीं है। नागरिकता में कौटुंबिकता का विकास होना चाहिए। नागरिकता वागे सदस्यता, कौटुंबिकता से लगन और समृद्ध होनी चाहिए। अन्त कौटुंबिकता में कौनसे गुण हैं? नागरिकता में कौनसा गुण है, यह ही सदस्यता-नागरिकता माने लोकतांत्रिक नागरिकता है। इसका प्रयत्न स्वरूप यह है कि हर व्यक्ति का निरपेक्ष महत्व है, व्यक्ति के नाते। जैसे अनाथान में हर व्यक्ति मोक्ष का अधिकारी है, हर व्यक्ति परमात्मस्वरूप है, उसी तरह से लोकतंत्र में लोक की समुण मुक्ति नागरिक है। हा व्यक्ति अपने में लोक की, समग्र की समुण मुक्ति है। विगुण नहीं या निराउ दुष्ट समाज हो सकता है, लेकिन निराउ दुष्ट से अंग व्यक्ति नहीं है। विराट पुराण का पर्वण 'पुरुष-सूक्त' में आता है। साधु इसका मुँह है, बाहु हस्तें स्तिय हैं, अधिं हसगी

वैश्व है और पैर हस्ते दृष्ट है। इन सद्गुण महत्व है। लेकिन कोई हाथ में खुले तो नहीं पतिनीय। और पैर में डोपी तो नहीं छायापेण। इश्टिलिए जो लोग समाज को निराउ दुष्ट मानते हैं और व्यक्ति को उसका अर्थव्यय मानते हैं, उन व्यक्तियों के लिए व्यक्ति गौण हो जाता है। अर्थ विमानन अर्थव्यय है, लेकिन धर्म-विमानन का अर्थ यह होता है कि मनुष्य का अर्थव्यय मनुष्य से अधिक महत्व का हो जाता है, तो उसमें व्यक्ति का विचार नहीं होता। व्यक्ति का निरपेक्ष मूल्य नहीं होता। यह नागरिकता का प्रयत्न जल्द है-लोकतांत्रिक नागरिकता का।

कौटुंबिकता का प्राथमिक प्रयत्न स्वरूप क्या है? हुजूम में समर्पण है, अपनी अंशता का उत्तरण है। आज का हुजूम दुर्यय है। क्योंकि अर्थ के हुजूम में समर्पण और उत्तरण की मान्यता की अनेका एक-संघ और विचार-संघ का ही महत्व अधिक है। एक-संघ और विचार-संघ आत्म के हुजूम का आधार है। इश्टिलिए आज में स्वेच्छा के लिए कोई स्थान नहीं रह गया है। हुजूम मनुष्य का अपना स्वयं-निर्मित नहीं है, स्वेच्छ-निर्मित नहीं है। दूसरी संस्थाएँ मनुष्य को स्वयं-निर्मित हैं, स्वेच्छ-निर्मित है तो दूसरी संस्थाओं में सदस्यता आ गयी है।

हुजूम में सदस्यता नहीं है, फलतः आधार उसका देण है कि वह मनुष्य के अपने हाथ में नहीं है। तो कौटुंबिकता में जो उत्तरण की मान्यता है, जो पारस्परिकता है, उस पारस्परिकता का विस्तार हम नागरिकता के क्षेत्र में करना चाहते हैं और नागरिकता में व्यक्ति का जो निरपेक्ष महत्व है, उसका प्रवेश हुजूम में करना चाहते हैं; क्योंकि उत्तरण में स्वेच्छा है। उत्तरण में अगर स्वेच्छा और अधिकान न हो, तो उसमें निर दमन आ जाता है और दमन का ही अन्तिम अर्थ है हत्या। एक तरह से व्यक्ति का स्वर होता है, यह सत्य में भी होता है, हुजूम में भी होता है, अगर उत्तरण अधिकान और स्वेच्छा प्रेरित न हो। उत्तरण की यह ही प्रेरणा है, यह नागरिकता का मुख्य स्वरूप है। उत्तरण और समर्पण कौटुंबिकता का मुख्य स्वरूप है।

आ इन दोनों का समुच्चय होना चाहिए। इन दोनों का संयोग होना, इन दोनों का सम्मनन नहीं होगा। अन्तर्गत में नागरिक के व्यक्तिगत के ये दो 'उत्तरण-स्वतंत्र', आध्यात्म होने चाहिए।

● शांति-विचार, क्रांति में दिने गये जा २३ जून ६१ के प्रबन्ध से। जो अमलें अंक में।

कार्यकर्ताओं के लिए

आत्म-निरीक्षण की आवश्यकता

एक साथी कार्यकर्ता वेदना भरे शब्दों में लिखते हैं:

"हम लोग अक्सर कहा करते हैं कि कार्यकर्ताओं में अपना यत्ना छोड़ दिया है और गांधी के विपरीत चल रहे हैं। इसके अलावा, हम लोग चुनाव में लड़े नहीं होते, इसके लिए योग्य गर्व भी अनुपम करते हैं। लेकिन सुते तो आनन्दल सा-र यही लगता है कि हम भी दूसरों से बहुत ऊँचे धाराएँ चल रहे हैं। यदि उनमें से अधिराज वाली को धोखा दे रहे हैं, तो हममें से भी अधिराज गांधी और विनोबा बोसों को धोखा दे रहे हैं।

हम बात तो ब्राह्मि ही की करते हैं, लेकिन हमारे काम निपटार दिया में ख रहे हैं।

दादी-मायाचौकों के हाथ नहीं तेजी के साथ हाथ में लिये जा रहे हैं। राज्य से मद्र परक इहली-सहली में भ्रमन खड़े हो रहे हैं; संस्थाओं के लिए बंधे आ रही हैं, सुन्दर-सुन्दर भवनों का निर्माण हो रहा है।

अधिष्ठान-अधिक आराधन मरदाना हैं, इच्छा की पराठि नहीं चित्ता रहती है। हर स्वयंस्थाओं के लिए बंधे उसी प्रकार हाथि रहती है, जैसे राजा महाराजाओं के लिए पहले घोड़े हर समय तैयार रखे रहते थे। दूसरी और कर्तारियों और नुनकर्यों की स्थिति में कोई सात अन्तर नहीं आया है। वे उसी प्रकार मते और भूते हैं, जैसे मिल के मजदूर होते हैं।

विनोबा दस वर्ष से अरोज उसी प्रकार वृद्ध रहे हैं, जैसे मृत्यु होता है और हम लोग एने हुए हैं भयनी-भयनी संस्थाएँ पानी के हैं। वेआण विनोबा गांधी की ही तरह समझ रहा है कि ये लोग ब्राह्मि के शास्त्र होंगे। हम भोज्य कृषि की बात करते हैं और आत्म-संतोष के लिए कर्म-कर्मों उन कर्मों में मद्र भी दे दिया करते हैं, लेकिन हममें से अधिकांश मुनि-धर्मों के मोह में इस कदर फँस गये हैं कि कालि की गत हथ में ही है।

आत्म-संतोष के लिए बार-बार संतोष-नार, समा-सम्भेदन आदि करते रहते हैं, निरपेक्षता है कि सत्योद्य का काम हो रहा है, लेकिन गांधी तो कहाँ भी वहाँ पर रही हुई है।

—संपादक

पंचायती राज बनाम धाम-स्वराज्य

दिनांक ९ जून, १९६१ के "भूदान पत्र" में भी पूर्णचन्द्र क्षेत्र का लेख "पंचायती राज बनाम धाम-स्वराज्य" पढ़ा। अन्य प्रेरितों के विषय में तो मैं अधिक कुछ नहीं जानता; किन्तु उत्तर प्रदेश के गाँवों में पंचायती की निर्माण पद संस्थाएँ अब विधि इतनी अधिक दीयेपूरे हैं कि उनमें न तो गाँवों का कोई आत्मविकार हित हो रहा है और न हम गांधी-विनोबा की स्वराज्य का आरंभ हो सके हैं। प्रत्येक पंचायत-क्षेत्र में सत्य दृष्टमन्त्री है। कम-से-कम दो-दो दल पन गये हैं और उनमें से एक सत्ताष्ट पक्ष का समर्थन अर्पण है। पंचायत के चुनावों की तेजवर मिल कर्तव्य-नहीं हल्य वा कौशधरी होती ही रहती है, गाँवों की शक्ति नष्ट हो गयी है, सुदृष्टमन्त्री पक्ष रही है और अन्त्येक राजनीतिक वेतना पते आर्षण का जीवन प्रति लुप्त खतरे में रहता है।

—रामकुमार मिश्र

पंचायतों के चुनाव और उनकी कार्य-प्रणाली आदि के बारे में कई अर्थ से इस प्रकार की बातें सुनने को मिलती हैं। देश के राजनीतिक नेताओं को इस विषय पर समझौता से सोचना चाहिए, क्योंकि अगर परिस्थिति इसी प्रकार नियन्त्रित रही तो पंचायती राज, यानी 'स्वराज्य', पर से लोगों की अज्ञा उठ जायगी और उनका मानव लाभापूर्णा का स्वागत करने के लिए अनुत्सुक भेगा। अहाँ साहू सहोदर-पार्षदाओं का समय है, उन्हें धाम-स्वराज्य की दृष्टि से प्रेरित विचार का परामर्श देते ही बचा रहना ही है। पंचायती राज के संदर्भ में इस प्रकार के लोक विज्ञान का महत्त्व और भी बढ़ जाये है।

—सं०

भारत में क्या देखा, क्या समझा ?

विमलेन्द्र झा

[सुधी मित्रदेव पावती पिठले वरं मायोबाय में हुए अन्तराष्ट्रीय युद्धनिरोधक सच को सम्मेलन में भाग लेने के लिए बनाइया ही बीर से प्रतिनिधि के रूप में भारत जायेगी। वे अंग्रेजों के विरुद्ध निरन्तर, वनाड में मनायी भी हुई। माओजी और मोलमेज परिषद के लिये लन्दन गये थे और तिगम के हाथ में शरीर बली में सेवा करने काज करवा में ठहरे थे, तब से नती मेरा-नार्थ में लिए आगी हुई थी। वहाँ उनको चार माह तक वापु ने महवास का लाभ मिला था, जिसका उनके जीवन पर अहित प्रभाव पडा। सन् 1937-38 में भी भारत आकर वे माओजी से मिले थे। 1938 में भारत में हुए विद्वत्-दानि परिषद में भाग लेने में लिए वे दूसरी बार बहरी आयेगी थी। उस कि बार जब युद्धनिरोधक सच काम में उन के निमित्त उनका पढ़ी आगमन हुआ तो वे दोनों बय-जगह पुन कर सर्वोरय-सम्बन्धीवा का नानद्वीय से अन्धकार किया। प्रस्तुत लेख में माओजी पावती ने अपने मीठे सम्मेलन बढोलेने की नोटिसिंग की है।]

दस साल बाद, जब मैं फिर भारत-घाटी को मुझे लाना बढोई-पडोई-परिवर्तन हो गये होंगे, काही तरकीबी भी हुई होगी। परन्तु पहले तो मुझे निराशा ही हुई। देखा कि लोग पहले की भाँति ही रहित हैं। जिसमें यही प्रचार काशी संताना में पूरा रहे ही और चारों तरफ बेकारी के सिद्ध दिखाई देने हैं। परन्तु मुझे सबसे अधिक निराशा तो उन बंधुबन्धु नोजबानों की चारों से हुई, जिनके देहों की ओर मोटरों में सेठे बानवीत होयी। वे कहने—“हमारे नेताओं ने हमारे देहा को बजा बोला दिया है। शासन में संघर्ष अज्ञातार फैला हुआ है।” वे प्राय-तरकारी अर्थवादी ही होते थे। कोई कर्तो की बन्ती करने बाधा होना को कोई लगान की बन्ती करने बाधा होना। छोटी-छोटी अन्धकार पाने पाने लोग, शायद सच्ये वे नी वल अज्ञातार में हाम चलाते थे।

आली निराशा हुए जाने की इच्छा से मैं उन बंधु बहुरि काकाभार कापेलर के पास गयी और उनसे पूछा कि भारत में यह क्या हो रहा है। उन्होंने कहा, “यहाँ पर अज्ञातार है, यह लगी बात है। गलत चलाए में बीज अज्ञातार इन सुपर के बनी है। अज्ञातार अज्ञातार को कहिए कि हर शक्ति का रक्षा की सत्य देखा होना है, बहा अज्ञातार पैदा हो जाता है। उन्होंने मुझे पबन्ती अज्ञातार की बाधा डाली और कहा, “इस को शासन-कार्य में अभी नही है, पर हमारे नेता महान हैं, उनके आगेदर्शन में अनुभव वे हम सील रहे हैं।”

मुझे नहीं रहा गया और मैंने कहा—“पर नेहरू जी अब बूढ़े ही चले। उनके बाद हम देश को कीन बसायेगा।” रानी गरीब अज्ञा को भारत की आली बीर है, और देहा अज्ञातार-जान बादा हृदय आदमी है कर्तो।”

उन काकाभार से, जिन देश में विरोधकाइ मेहता, गोपीर, सिष्क और मायी की भाँति बसातारण को भी लगन दिया; वहीं हृदय अज्ञातारण के बाद भी उधरी बागडोर उठाये बादा कीर्तु उल्ल बकर बादा लता बर देगा।”

उनकी इस अज्ञा में मेरी निराशा को भाग दिया। अज्ञा भी भारत की सदान निरपत्त में अज्ञा हो गयी। अपने गरीब बाते पाने की मेरे बँड दिया और भूरा-बाज को मुँगीनी बरगदारी में से निरुक्त कर नका अज्ञातार और बुर प्रचार कर रहे नहीन भारत के दर्शन के लिए मैं निकले पति।

उन्हें पहले से मायोबाय गयी। गौरी में चल रहे रचनात्मक कामों का प्रसिद्धक मीठ दिया था रहा है, देहा यह एक प्रसिद्ध कैर है। देहा से मित्रदेव पावती की यज्ञता की सेवा में लिए निन्दनी अज्ञातार शरीर जीवन बर दिया है, ऐसे अनेक सुत्रों के मैं मुँगी मिली और उनसे चर्चा-की। यहाँ छोटी-छोटी की निरी बलि-बाज की आनन्द गयी। निराशा मान-हासिक बुद्धि के साथ अपने देश के आर्यों की निराशा, आतप्य, स्वच्छता और समाज-अज्ञातार का मैं हाम कि प्रचार मद्र कर कने ही, हदमी निराशा में पर रहे में। यह काम निराशा महान है और ठहरे कि

विमल के साथ उठा दिया होने की अज्ञातार गला उद्योग रहे हैं। अतः वह कने 2000 बरगदारी के से-गो-ब-ब-ग की रचनाता बर मुँगे हैं। गदिल्ल अज्ञातार हैं, अज्ञातार प्राण होना। ही अज्ञातार-निचार की सनता है और हाथ-हाथ अज्ञातार और मानता भी कने हैं, कैदा कि पूरे केमों में ही रहा है।

अब मैं हल देश के विहा होने की चकारी बर रही है और मुझे उन स मिनों की अज्ञातारों की याद आ रही है, जिनके मैं हल यज्ञा में निदि था गयी। हमने से कुछ ब्यक्ति और अज्ञातार सर-काणी और उज्ञा अज्ञातार लखनवाड़ी भी हैं। मुझे और कौन पर निदिनी देवता प्राण अज्ञातार “कोषायती भाग कोषायती” और “सर्विल निरिल इन्दनेरनल” के मिनों की भी याद आ रही है, जिनमें मैं भी निरि यज्ञा सुभर है। उनका लया जीवन देहात की सेवा में ही बीदा है। इन गुणप्राता से उनको प्रामाणी की भीरिका तथा आभासीतार बकाली की एक दिग प्रण कर ही है। वे प्रामाणी के बीच रह कर उनको हाम मकार सेवा कर रहे हैं, जिनसे प्रामाणी के आभासिबदल और बसिनी मान बद्र कर उनको लखनवाड़ी का भी निराशा हो। अज्ञानी बीरत प्रकति और अज्ञानजन बर लगीका निरि होने पर भी भी रचनात हल प्रामाणी के विरि (विद्युत् काय) बीरत निराशा लेते हैं, अज्ञातार की निराशा करते हैं रहे हैं। लेती में उनको मद्र बरते हैं और प्रामाणीको बर हासिच्छु अज्ञातार उन्में दर उर से योग अज्ञाने का प्रयत्न कर रहे हैं। देहा से कहा देहि कि अज्ञानी ही सनात अज्ञाने पबन्ती-के में देश बरते। भी वे-यज्ञ मातों हल उदरिका का अपने जीवन में प्रयत्न अज्ञातार कर रहे हैं।

को देना जाय तो ऐसी रचनात्मक सेवा का लेके योग निरन्धरे बढू हो रहे हैं। परन्तु अज्ञातारिण का अज्ञानेयन भीरिये। अनेक बार हल मुँगी बर सेवकों से इतिहास के उल्लेख प्रभाव को बरल दिया है। प्राणिय देहे नेवनों को देना कर निर आगा से बर बादा है। माओजी के संदेश का मुद्र कर तो अनेक नोजबान भारत में हल अज्ञातार और शक्ति निराशा की प्र-विशों में अज्ञातार हैं, उनसे निर कर मुँगे का मुद्र कर तो अनेक देहि अज्ञातार के कैवल एक माओ-गुँगी में ही है, यही बात नहीं है। हर गौरी पर मुँगे हमारे देहा,

मैंने प्रतिपत्तिर्वि में से पूछा, “आप यहाँ किछ देह से आती हैं?” इन पर उनके जवाब अज्ञातार अलग थे। किसी ने कहा, “परिहार को मद्र पडोयने का इच्छा देकर आती हूँ।” किसी ने कहा, “देह को हलये सेवा देगी। किसी ने कहा, “इसमें सान निरिणा, पैरिह।”

मेरा सभे अधिक प्रामाणी अनुभव वो भी निरिणा की भाँति और भूरात आन्दो-उत्त का रहा। उन विरि से सुचरिात में रचनाता कर रहे थे। मुझ का बका। अज्ञातार अज्ञातार से बसा होना था। यज्ञा उन-अज्ञातार, नीचा ऊँचा और पूरा हल। मैंने देहा कि अज्ञानेयन की माओजी भीम गयी है। अज्ञानेयन बकर निरिणा और उनसे हासिच्छु का बका अज्ञातार सचाय होना है। पूराप्रामाणी के देह बन कर अज्ञानेयन की शक्ति को बाँटी है और अज्ञानेयन में लुप्त होना है। परन्तु यह तो कमी-नगातार की बात है। इन्दरी सेवकों की सभा तो एक विद्युत् अज्ञातार है। अज्ञानेयन उरिरे चार बने उठ कर अज्ञानेयन, बहरे बल में दन बर एक अज्ञानेयन रहे गौर हैं। अज्ञातार अज्ञानेयन की नवे निरातर सचाय कर अज्ञानेयन के लिए गयी कदम, अज्ञानेयन नहीं है। उनको यह अज्ञातार अज्ञानेयन देव कर मेरे दिव में बका अज्ञातार पैदा हो गया।

इन्दरी के दिव-अज्ञानेयन आरम और यहाँ के मुद्रान-परिष्कारों को देहा कर पैदा यह अज्ञातार और गी बनु गया। “दण और कला के रानर” की रचनाता के लिए निरिणा द्वारा गुना गया यह पदना गगन है। पर यहाँ निरिणा का कैवल ब्यक्तित्व नहीं। अज्ञातार का यातायना में ही हासिच्छु अज्ञातार आने-आने-आने-आने होना है। किसी की चर्चा का अज्ञातार अज्ञातार ही होना। इन्दरी इन्दरी अज्ञातार देवे होना है। परन्तु अज्ञानेयन का कर्तो-अज्ञानेयन के एक अज्ञानेयन हल वे बलिभक्तिगत चम गुनोती की ओर उन पर बाते गये हल मद्र भी अज्ञातार जीवन-नार्थ सचाय कर

एक सुत्रों उदरन से मैंने पूछा, “अज्ञानेयन में आपने किस बात की चर्चा सबसे अधिक उदरकी है।” उन्होंने कहा, “समाज की शासना में नानक जयें वाली है।” मेरा उदरन है कि अज्ञानेयन की सचाय सेवा का बादा होना है। रिण सचाय को यापद इन्दरी इन्दरी कमी नहीं रहेगी।

“पञ्चा तस्स न वड्ढति”

वियोगी हरि

पूरो पवित्र है—“मंसानि तस्स वड्ढन्ति, पञ्चा तस्स न वड्ढति” यह भगवान् बुद्ध का कथन है, और ‘धम्मपद’ में से लिया गया है। अर्थ है, मांस तो उसके बढ़ रहे हैं, पर उसकी प्रज्ञा नहीं बढ़ रही है।

घरि रंक और मांस वे बना है। ये या तो घटते हैं, या बढ़ते हैं। मांस को प्रकृतपूर्वक भी बढ़ाया जाता है। वजन बढ़ाने के लिए भौतिक-भौतिक के उपाय किये जाते हैं। तराजू पर घरी को सम्य सम्य पर तोला जाता है। तोलेते पड़े जमाने में भी थे, पर वेचल ‘मुल्लवान’ के समथ। घरी की तोल के बदलन आनख से देखकर चोरी-चोना उठ दान में दिया जाता था। एक सुदयन जवाहरदास का भी कुछ साल पहले सुनने में आया था। तराजू बन्द चलाती है कि दो-चारों ठेर या आधा ठेर वजन भा घरी का बढ़ गया है, तर नयी सुधी होती है। मांस बढ़ाने के लिए दवाओं का सेवन होता है, स्थान-परिवर्तन किया जाता है और विदेश-गजारों भी।

घरर अत्र बढन घटाने की तरफ भी ध्यान गया है। मांस और चर्बी का बहुत अधिक बढ जाना थब अनेक रोगों का कारण गमसा गया, तर थुदि में शरट छँट कर अन्तिम स्थी। मांस घरी की चर्बी पनरि मरिठे। मबर यह तर हुआ, बर मांस-पुत्रि में खरते की घंटी बजा सी। कान खड़े हुए। पञ्चाहट भी हुँद, तर प्रताया गया कि अय-अंग का को मांस पल-पल होने लगा है, उते घटाने और कपने का इलाज होना ही चाधिपे। आहार की मात्रा कम की गयी। मरुण सचिकरुण रभो का परियाय बरना पडा, और भाठोंन या चोथे दिन तराजू पर चढ कर अर्ध-आना कि वजन रिठने गेठ कब हुआ है। कापी वकलीक उठानी पडी, पर चार वृषण नहीं या। खरते की घंटी को बज चुकी थी। समय पर बैठ कर यह न किया होता, तो बड़े हुए मांस के बने-बने खँदे खुर दो गिरे ही, खरें बँके की भी गिरा देते। “गीत-मन्थन” में विनोचनी ने कहा है कि “मनुष्य को इतनी ही बैलगा है कि घरी का पचन क्रिय बरह जाये। वह इलीची पिन्ता बरता दीलदा है कि जमीन पर की मिट्टी उठ पर उमके घरी पर बैठे थिपक बाथे, मिट्टी के छोड़े उमके घरी पर बैठे पुन जाये। आरिठ ररुका मतलब क्या कि घरी पर इतनी अधिक मिट्टी चढा दी जाती बाये, इतना पचन बढना सिधा जाये कि घरी उरका शीत ही न रह सके।”

सुख भगवान् ने किसी के पल-पल

करते हुए देखे ही अनाशयक आशचर्य को बढ कर माया की होती। मांसघरी भी हुआ होगा कि उसकी प्रज्ञा क्यों नहीं बढ़ रही है। घरी का पैलाप होता जा रहा है, पर विचार कुछ भी प्रगति नहीं कर रहा है। वह कैसी माद है कि प्रज्ञा के वृद्धि हो जाये पर भी, विचार में जादवा आ जाये पर भी, मनुष्य अपने घरी के बढ़ाव और पैलाप पर सुधियों बना रहा है। यह सत्य कहाँ है? कौन उठे ‘र’ में स्थित करेगा? वह तो पूर्विका ‘परस्थ’ है, ‘र’ में स्थित है—उठमें, को उठका ‘अपना’ नहीं, बरिठ उठते उठना पाठक है। ऐसे अनाशुतिक बढ़ाव के पोले में कौन बावर चँगा? किन्तु कन चलेगा, तन के देखे केवल पर।

जीवन का ऊँचा आनन्द तो सभी है, कन्वी स्वस्थता सभी है, सब प्रज्ञा की वृद्धि ही, विचारों का प्रतिक्रिया विकास ही है, तब-तब ही हर कृष्ण प्रकल्प होता है कि स्व-स्थता की ओर जीवन प्रगति कर रहा है, न, थिठके लिए घरीरुकी रंभ परमेष्ठिन ने दिया है। बढ वंभ चले-नयेदी स्थिते-स्थिते ही अपनी निर्दिष्ट उपवेक्षित किद करेगा। अपने रमाभाविक बचन पर खीरे के माती-भापी बैकार दुकमें को यदि उमाने लाद किया, तो वह अपनी उपयोषिता को उली दिन सक्रम करेगा। फिर ऐसी बेकार श्रुति को वह अपनी श्रुति की गमदा माने ही क्यों?

इसे उन श्रुतों पर भी धरया जा सकता है, जिन्होंने मोतिक चरमदा को तो बँहलान बढ़ा दिया है, पर विचार विनक

वृद्धि हो गया है। अतः सभी रिधा में वह एक ही पया आगे नहीं बढ़ रहा है। मनुष्य करे ऐसे राट्टों की, जहाँ सत्त्वभित्त मोतिक चरमदा में मनुष्य को नई-नई क्षात्ररुपका मोर उतनी सतत वृद्धि की स्वर्ण-जोती है। फिर वे तब तक ऐसा बकड़ दिया है कि वह शीत बरह नहीं जाया प रहा है, तरल-भरल के घब्र जहाँ उसके घरीर-घर को बेलाय बरता जा रहा है। रिठ उठका नई विचार बरता जा रहा है, मोर विचार में भाविणार की बाकरु लया रहे है, बर संशेय और प्राणित का स्थान जैसे थिलकुल पोलाव ही गया है।

बहों के मानव ने मोटे मोटे हाथ और पैर बुर-बुर पैर पैर रहा है, पर मन उठकर इतना छोटा हो गया है कि विरचय और उदात्ता के लिए उठमें तलिक भी उीर नहीं रहा। देखे पशुओं के बरपने का कुछ थिठाना भी है, को अलीय मोतिक वृद्धि के पल पर जीना तान कर दावा करते हैं कि दुनिया में थिठ की समथ और अलय को सुधय बनाने की उममें भरपूर थिठके है। देखे राह अरनी आल थिठ की रसथ की देखकर सर्व-संशारक अल घबों का निर्माण और लचय करते आ रहे हैं। इव प्रभर उनके अंग-आंग का मास बढ़ता ही जाता है। पर क्या उनहीं प्रज्ञा भी बढ़ रही है? क्या उनके सम्य विचार भी कुछ प्रगति कर रहे हैं? क्या देखे राह अरनी अर्थ में ‘स्वयं’ बने आ सकते हैं?

ये राह निर्धार-कीरण के उर्रथ में आव कृटिनिर्गुण समेलन कर रहे हैं। धादिष भा मनन लाग करना चाहेते हैं, अविश्वास और संशय को सुविषयद पर। खरते की घंटी बज उठी है, इलीपि बढ़ा हुआ कुछ मास बचन कर देना चाहेते हैं। को उपवेक्षित उनके घरीर पर जोंनों की लदद थुर रहे थे, उनको, मोहातकिके रहते हुए भी, उदार-उदार कर कटपुर्क रँक रहे हैं। ऐसा उठोंने ले-पय से नहीं किया। वजन ब घटाना अनिवाय हो गया था। यदि पहले ही संशय की आनना दी होती, तो वह अपनी जीवन आय स्वाभाविक और स्वयं कोष का प्रयत्न होने पर बड़े हुए वजन को घटा कर इत्यत हो जाना एक नरक है, और आरथ्य की

आस्थय में दूनहीं का थिठ-नायन करते हुए तब द्वारा घरीर को टप बना देना थिलकुल दूनरी जाते हैं। उम वृष्टता में, उर एरम ररस्थय में तेजस तथा नड बरता है, और कानि म फीर अन्तर नहीं पकता। अनाशयक मोतिक चरमदा के अभाव में दुर्गठरिता हुआ घरीर भी सल-लय, थिठे और अभावकले से सुक-पूण समुद्र और रररथ बरहा आ सकता है। यह दूनरी के उपाए ले-लेकर भा मींग-मींग कर वजन को नहीं बढ़ाना चाहेगा। देकार मास को न दया उर बह अपनी प्रज्ञा को ही बन्पेगा।

विषय घमों और निषाचक कार्यों पर भी ऊपर की माया को बस पदा तकने हैं। किसी भी धर्म के आदिकाल को देखें, तो उसका रूप विद्युद और वेदकी देलने में आता है। वयनि उरका तब वह घोवा-ला रुत होता है, सथानि उर रूप में हादी ता-सथाना और विद्युदिक वनीरुत होकर रहती है। लेकिन न बह अर्थ अरि उरका का भावण बाकर दुनिया में पैलदा है, उर घरीर-सथानि को स्थणय थिठे होते हुए भी, उसकी विद्युदिक और थिठेरुणी होने छरते हैं। आदिकाल में जहाँ राज-मुकुट और रल-कोष धर्म के सामने उरका है, तहाँ उरके सथापथिठ बढ़ाव और पैलाय के दिनें में देखी भी एक पगी आ जाती है। धर्म ब उल्ले धर्म की राज-मुकुट और रल-भंगुण के भावी देव्युत्पत्तिक छकना पुरता है। धर्म का अर्थ तब बढ़ जाता है और मड संस्था की राजसत्ता की अधीनता अस्थि-युक्त करती पवती है, कर्णिक तब धर्म न। मास अनाशयक रूप में बढ़ जाता है और उरमें निश्चित प्रज्ञा अल्पत क्षीण हो जाती है।

विषयक कार्यों को भी, पैलाय की दृष्टय में, देखी ही पुर्णित होती है। लोकाय की उपेक्षा करके बर विषय-यक क्षां व राज सता और ररन-शेय का आशय पा जाता है, तब मले ही ऊपर के उरकी घरीर-सथानि बरी हुई देखने में आये, पर उरकी देव-यकि प्रज्ञा वृद्धि हो जाती है, विचार पयु और बढ हो जाता है। न बाहेते हुए भी वे पातक चरमरु में रंभ जाते हैं। पल्लः स्वस्थय उरना नर हो जाता है।

एषा उ प्रथति तर खरते की घरी बजातो है। उते पुन कर अदिम समय भी वे भेत था सकने है। बडा हुआ नेकार मास रंभ कर प्रज्ञा को बढ़ाने का, धैर्यक विचार करने का पुशुर्धर के स्थाने पर बने उर की भी दिता विचारों है।

दिल्ली में अशोभनीय पोस्टर एवं अश्लील साहित्य के खिलाफ आन्दोलन

दिल्ली के महीनों के दिनों में अशोभनीय पोस्टरों के वितरण आदोष्य जोर पकड़ रहा है। सर्वप्रथम आंगण के पाँच कार्यकर्ता दिल्ली आये थे। इन कार्यकर्ताओं ने स्थानीय कार्यकर्ताओं से यहयोग से ५ मई से ८ मई तक दिल्ली के विभिन्न भूखण्डों में अशोभनीय पोस्टरों के संबंध में 'पत्र' किया। साथ ही घर-घर बाहर लोगों से इस संबंध में चर्चाएँ की और दिल्ली में अशोभनीय पोस्टरों के खिलाफ आंदोलन छेड़ने के लिए सभ्यति प्राप्त की।

लोगों की सम्मति प्राप्त करने के बाद दूरियागव को सभ्यता चेतना कर घर घर और दूरान-दूरान से अशोभनीय चित्र एवं पैकेट निकाले गये तथा उनी क्रम के दौभाग में सड़ों के सिनेमा-घरों के मालिकों से भी शंकाएँ किया गया। कुछ सिनेमा-मालिकों ने ऐसा करने से इन्कार किया, सो उनको ५८ रुपये की दूरियागव देकर उसकी प्रतिबिम्बियों स्थानीय अभियानियों को दे दी गयी। सिनेमा-मालिक ने मोहल्ल के २२ घंटे पूर्व ही अशोभनीय पोस्टर हटा लिये। इतना परियाम यह हुआ कि अन्य सिनेमाघरों ने अपने पचास प्रतिशत अशोभनीय पोस्टरों को हटवा ही हटा दिया। इन्हीं प्रकार पचास सन्ना रहा। एक सिनेमा-घर पर अशोभनीय पोस्टर लगा था। कारी संपर्क करने के पापुत्र पहल से पोस्टर नहीं हटाया गया, तो २३ मई को घाय को कार्यकर्ताओं की टोली सन्नाग्रह के लिए जुलूस के रूप में वहाँ गयी। पन्द्रहवक सिनेमा-घर के मैनेजर ने चार दिन की मोहल्ल मांगी और उसने सभ्य के पहले पोस्टर हटा लिया।

सो ३ मई को दिल्ली की पब्लिक छात्रसंघों ने नारी द्वा-सभ्यति की ओर से एक सभा आयोजित हुई, जिसमें पाँच सदस्यों का एक निर्णायक मंडल नियुक्त किया गया।

इस अभियान के विस्तारित में पहाड़-गंज, खडर, बरोल गा, कनाट चौर, चांदनी चौक आदि क्षेत्रों में जनसम्पर्क किया गया। छात्रगण की चौराहों पर प्रचार-सभाएँ की गयीं और वहाँ-वहाँ के अशोभनीय कैबिनेट निकाले गये। पहाड़-गंज में सर्वोदय-घर भी रहने लगे। दूरियागव में मुखल्ल के निवासी भी प्रचार विद्यार्थी ने कानी उलाह दिखाना एक कार्यक्रमों में सहयोग दिया।

इस अवधि में दो-तीन बार डिनेमा के अशोभनीय पोस्टर हटाये गये।

सर्वोदय कर्मचारीयों ने दिल्ली नगर के छोटे छोटे चित्र बना कर सडकन द्वारा इस आंदोलन को आगे बढ़ाने का तप किया है। सहयोगी मित्रों की प्रतिबिम्बियों बनाते का का नारी की चल रहा है। जस्त तौर से विनेमा-घरों से अशोभनीय पोस्टर निकालने के बजाय को नागरिक अपनी इच्छान या घर पर विनेमाघरों की अशोभनीय पोस्टर लगाने देते हैं, उनको सन्नाया जाता है कि सादाचरण में अशोभनीयता बढ़ाने के कार्य में भरे अशोभनीय पोस्टर लगा कर सहयोग न दें। इस तप का अन्त प्रकाश पर रहा है। कई दुकानों और होटलों से अशोभनीय पोस्टर हटा लिये गये हैं। इसका यह परिणाम हो रहा है कि दिल्ली में अप पहले जितने अशोभनीय पोस्टर अधिक नहीं बनाये और लाये जा रहे हैं। निनेमा पोस्टरों के साथ-साथ अश्लील साहित्य की मित्रों की सन्नाया की और भी स्यान दिया जा रहा है। एक 'सर्व'

रख कर वहाँ से वितरित करते हैं। कार्य-कर्ताओं ने कैबिनेट के निर्माणमें वे भी संपर्क किया। उनमें से अधिपतर निर्माताओं ने विधास दियया कि आरुद्र अशोभनीय कैबिनेट नहीं बनाये।

इस अभियान के साथ-साथ दिल्ली नगर के पाकों में सधर ईर, इतवा प्रथम कार्यकर्ता प्रति रविचार को वहाँ अने वाली बनता को सन्नाया कर लोक-विधास द्वारा करते हैं। कार्यकर्ता सन्नायाते ही के लोग पाकों में इच्छित आते हैं कि उनको सुनी हया और शाक-सुखा स्यान

मिले। इच्छित पाकों में आने कालों के बादिए कि काने-वीने की चीजों से हीने वाली गंदगी को इच्छ-उत्तर न डाक न निर्मित स्थान पर रहे हुए सारा-सर्व में डाके।

सिन्हाल दिल्ली में सात कार्यकर्ता काम कर रहे हैं। इनमें सर्वेभी दरभारि-पाहल, भासिंह वमा, दयकिशन वंश, राधेशल्लभार् और कीरदसिंह, ये पाँच कार्यकर्ता आंगण के हैं। दिल्ली के भी ही मेनन और भी सदान 'विरक' हैं। पूरे सदन काम करने वाले इन तात भारुई के अन्नाया आधिक सभ्य देने वाले कारी सहयोगी मित्र हैं। साथ ही उत्तर मंडल और पदार्थ से कुछ और कार्यकर्ता दिये पहुँचने वाले हैं।

—सो० ए० मेनन, दिल्ली

सर्व सेवा संघ के नये प्रकाशन

जून मास में सर्व

- (१) पञ्चलोक में पाँच वर्ष, मूल्य १-००
- (२) सर्वोदय और शासनका सन्नाय, मूल्य १-००

प्रकाशित पुस्तकें

- (३) दामि-वेना (अग्नेयी), मूल्य १-००
- (४) अष्टाङ्गीय अभियोग, नयनकाच भारावण, मूल्य ०-२१

जुलाई में प्रकाशित होनेवाली पुस्तकें

- (१) कलशयैवो तुरुसन्धरको
- (२) द्वाभी की नासक, दुस (बीवनी)
- (३) विप्रेक्षित अर्थव
- (४) सप्तुदिक प्रार्थना
- (५) विवरकाति के प्रयोग
- (६) संघ अधिपतय की विप्रेट
- (७) नन्दर अभियान
- (८) मग्नेह (आदिक विरुला)
- (९) चौराजुट में आम-विरास का प्रयोग
- (१०) इति के साथ पठांत चार
- (११) गीता-सम्बन्ध (बधुल : नारायि विरि)
- (१२) शास्त्र एवम् रेवेन्डुलिङ : विनोत (नया परिचरित सन्नाय)

इस श्रृंख में

- १ विनीव
- २ डा० रजनेद्रप्रसाद
- ३ निनीव
- ४ दादा धर्मविद्यारी
- ५ मिन्टो प्रपन्नी
- ६ विन्डो हीरि
- ७ निनासगर
- ८ नासक देवार्थ
- ९ न्योसम्बन्ध विरा
- १० सुदसम्भ
- ११ सुरेश सय
- १२-१२

केरल में सर्वोदय-विचार शिबिर

केरल प्रांतीय-सन्नाय निधि की ओर से सिन्धोलेन शिबि में चैथीबाला में सर्व मास में दो सन्नाया का सर्वोदय-विचार शिबिर आयोजित किया गया, जिसमें केरल के विपक्ष, सन्नायावेदी सध्याओं के प्रतिनिधि और कलाज के विद्यार्थियों ने भाग लिया। शिबिर के निरवित कार्यक्रमों के अन्तया आ-पान के देहाती में सर्वोदय सन्नाय, सन्नाय भारत अभियान और पद्यायनों में निर्दोष्य युवाय पर केंद्र दिया गया। शिबि सभ्यति के कथीय चार को सन्नाय देहातीय के वलें सन्नाय रहे।

में पता चलता है कि पाँचवीं चौक, छत्रघाट, देवली रोड, फतेहपुर आदि क्षेत्रों में लगभग २३०० विनेमा ऐसे हैं, जो अश्लील साहित्य बेचते हैं। इन विनेमाओं को सन्नायाया गया। परिणामतः कारी विनेमाओं ने अश्लील साहित्य बेचना बंद कर दिया और बेचनेवालों की संख्या कम हो गयी है। 'सर्व' के दौभाग में यह भी माहस हुआ कि लगभग २० विनेमा बगल बदल-बदल कर साहित्य बेचते हैं। यह भी पता चला कि कितने प्रकाशक अश्लील साहित्य प्रकाशित करने में तैयार हैं। एक प्रकाशक के अधिक सर प्रकाशक दिल्ली और मद्रास के होते हैं। स्थानीय प्रकाशकों से न न कार्यकर्ताओं ने संपर्क किया तो उन प्रकाशकों ने विरुदास दियया कि भविष्य में ऐसा साहित्य प्रकाशित नहीं करेंगे और ऐसा साहित्य बाहर भेजना अभी से बंद कर देते हैं। कुछ प्रकाशक ऐसे हैं, जिनका न कहीं भंडार है, न वहाँ दुकान है। दिल्ली में छाट्टी की गुमटी बना कर छोटी छोटी शिबियों में योग सा स्याक

प्रतिव्यारण से नहीं, तपस्या से होती है देश के लिए सर्वोदय आचार-चरिता को मौक्तिक सत्ता योग में, मैत्रिक सत्ता केन्द्र में लेखनीयतः एक विवेचन कार्यकर्ताओं की ओर से भारत में सत्ता देना, सत्ता सन्नाया ! "पन्ना सत्ता नदुट्टि" शिबिर में दामि-वेना शक्ति विधास का पदल सत्र पाठकी की चिट्ठी पंजाब की दायरी तमिलनाडु का प्रादेशिक सम्बोलेन सन्नायाय-सन्नायाय

सरकार का तंत्र व्यापक भ्रष्टाचार को रोकने में असमर्थ नेहरूजी तंत्र मुक्त हों ताकि वे देश को भ्रष्टाचार से मुक्त कर सकें

सिद्धराज ढड्डा

'शामराज' के ता० २१ जून अंक में श्री गोकुलमार्जुन मट्ट ने भ्रष्टाचार को रोकने, दूसरे प्रश्न की चर्चा उठाई है। भ्रष्टाचार से मतलब कलेज प्रमुखों या प्रोफेसर्स की नहीं है, न अब बहुत दूर तक सीमित ही रहा है। शिक्षा, न्याय, राजनीति, व्यापार अर्थात् जीवन के हर क्षेत्र में, भ्रष्टाचार (अर्थव्यवस्था) व्यापार विद्युत कुशल बस्तियों में बहुत तेजी से साप बड़ा है। सारे राष्ट्रीय जीवन में-विशेषकर सार्वजनिक संस्थाएँ भी शामिल हैं—एक प्रकार की नैतिक विभिन्नता आगई है और व्यवहार में जब तक पुत्रों बूझों तथा पर्यायों को कायम रखना, अर्थव्यवस्था लोगों के लिए मुश्किल हो रहा है। इस परिस्थिति से सब लोग असंत हो गये हैं क्योंकि कोई भी अपने आपकी सुरक्षित महसूस नहीं करता। भ्रष्टाचार का जाल इतना फैल गया है कि उसका उपाय भी किसी को आसानी से सूझ नहीं रहा।

यह स्थिति निस्सन्देह विनाशजनक है, पर सबसे बड़ी विन्नाही बात तो यह है कि राष्ट्र के आज तो सर्वसाम्य नेदा परिष्ठत जवाहरलाल हैं, वे परिस्थिति की गम्भीरता को महसूस करते मजदूर नहीं धाते। आज देश में बड़ी एक व्यवस्था है, जो चाहे जो इस नाम की दिखा प्रस्तुत करके हैं पर यहाँ से सुदृढ स्वरचना के तन्त्र से सम्बन्धित हैं वसिष्ठ उससे लिए निम्नोद्देश्य भी हैं इसलिये परिस्थिति को स्थिराकर करके उसका हल्लाज करने के यत्नचर्यन्तर उन्हें इसका भ्रष्टाचार ही कारण प्रस्ता है। विधि को यह विश्वस्यमा ही है जिस व्यवस्था की सुदृढ की ईमानदारी और सचाई के बारे किसी को सुझे नहीं है, उसे आज भ्रष्टाचार की शक्ति बनना प्रस्ता है। सरथ के सहारे ही बसल प्रताप सकता है, मुख्य के सहारे ही माप सखा रह सकता है। इस बात का अत्यन्त भ्रमण आज परिष्ठतजी रूपसे जाचरएसे पेश कर रहे हैं।

मंहीरता से सोचने व खुली चर्चा का समय

गोकुलमार्जुन ने सफल उदाहरण है कि हर परिस्थिति का उदाहरण है कि व्यापार। मन-नीयता में सजा और उसे खेलेल पर करने वाले हर भ्रष्टाचार को रोकने के लिए है। हर एक दिन में आज यह सवाल उठता है, पर वाला किसी को सुत नहीं पडा है। लेकिन अब इस बारे में अत्यन्त गम्भीरता से सोचने और खुले चर्चा करने का समय आया है। इस मामले में और अधिक दूर गुरु के लिये प्रयास समिति ही लक्ष्य है।

(१) राष्ट्र के गोकुलमार्जुन नैतिक व्यवस्था को रोकने के लिए पहले बात को सही मासुम होनी है, यह एक ही विचार नेहरू की सरकार की विभिन्नरी के मुक्त होकर बाहर आना चाहिए, जिससे उनकी प्रकृतिही भावना और प्रभाव का उपरोक्त भ्रष्टाचार का प्रभाव करने के यत्नचर्य, उसके विनाश के लिये ही हो सके। इस बारे में नेहरूजी के विचारों की जानकारी टुट गई कि वे इसे पकड़ नहीं करते और यह मानते हैं कि सरकार में हरकत उनके धर्म ही वे राष्ट्र की नीका को हलियत दिखाने में हो सकते हैं, इस सार्वजनिक रूप में इस प्रकार को फिर उनके तथा लोगों के सामने रखना आवश्यक समझते हैं। हमारा निरन्तर प्रयत्न है कि—

सरकार का तंत्र सब व्यापक भ्रष्टाचार को रोकने में असमर्थ है, बसिष्ठ चर्चा आज उसको प्रोत्साहित करने बाल, सभी बड़ा जर्जिया बना हुआ है। नेहरूजी भारत सरकार की भ्रष्टाचार को रोकने के लिए आवश्यक हो तो सरकारों में बका, मुक्तजन कर सकते हैं।

जनताईक विचारों को कायम रखना (२) जनता की सौदें टुटने के बाद भ्रष्टाचार को रोकने की संश्लिष्ट करने अनैतिक व्यापक के शिलालयन-संश्लिष्ट बनना दुष्ट आचरणक रूप में। नेहरूजी

के अनुसार है कि उन्हें देते ही हुके भी इस विषय सही को वे अवरर प्रकृत हैं।

नेवैधार्थक काम के साथ प्रेम व सहयोग की भावना बढ़ानी भी जरूरी है। (४) यह प्यार में रचना चाहिए उपरोक्त विषयों की देख बलता की शक्ति प्रकृत है, उसका व्यपकी अन्वय प्रकृत है कि विचारोंका कार्यण के प्रभाव जनता में अवरर उदयोग, देन नारीयों की मानता को विस्तारित है मान परिचार के लक्ष्य की ओर बढ़ने के साथ काम में करण कार्यण आवश्यक और उपरोक्त प्रकृत के आधार पर शैथिल्य लक्ष्य रूपसे है कि लक्ष्य है कि राष्ट्र सुदृढ करने स्वरएार में वे अर्थता को हट करके, तथा एक दुष्ट के अर्थव्यवस्था के और प्रगतिजनक और उदयोग के छोटे छोटे कार्जयन में लीज बनाना चाहिए।

कुछ बातें सुनकर पूरी शक्ति

(१) सुनकर उदाहरण यह है कि जनता की शक्ति को बचाओ और संश्लिष्ट है कि व्यापार। इसके लिए जनता के दोबारा के जीवन को दुबेशाने एक या दो-तीन बाने दुबेशाने और अन्वय का सुधारक (एक व्यापक के लिए लक्ष्य की शक्ति को बचाओ और उनके प्रभाव को ठेकर दोबारा प्रभाव और अन्वय का सुधारक (एक विचार पर अवरर छोटे वे छोटे गौर एक और सही के छोटे-छोटे हैं वसिष्ठ एक पूरे-प्यार है)। यद्य-यद्य के उद्योग की सौदें लीज सौदें, लोटा आदि के विवरण पर प्रकृत, तथा अवरर बंदी कर सखत। जनता

भंगी-मुक्ति और सामाजिक समता

मानव-मानव के बीच के श्रमिय-येद-नि-अण और समता की स्थापना के लिये अवर मानव-भेदविधि की आवश्यकता है। आज एक तरह का आर्थव्यवस्था, जो दुष्टी और अंधकार है। वे दोनों श्रमियों समान के लिये सारलता है। रहे हुए लिये जिस मानव-नीयता अर्थव्यवस्था है। अन्वय मान में आर्थव्यवस्था के साथ-साथ जनता का भी होना अनिवार्य है। समान में फेरे कौना नहीं है, कोई नीचा नहीं है। मानवीय लक्षणव्यवस्था में समान के लिए उद्योगों के सुधार करने को, और जो उद्योगों में अर्थव्यवस्था में। श्रमिय मान 'धर्म अर्थव्यवस्था' दिखाते देखते हैं। हमारा प्रकृत करण यह है कि कई मानव-उद्योगों को बर्नो को कि जनता अन्वयवस्था है, फिर भी नीचे आने नये हैं। और कई नानै, किनयी न्याय करलत भी नहीं है, वे कौने माने गये हैं, और दुष्टमें वे सामाजिक विमलताएँ निर्माण हुईं, उच्च-नीच के भेद को। नंदयी शक करने का महल बर कर्नो हीन बना गया है। यह कर्नो लोचनेवालों को हीन और प्रथिज माना गया है। आज मद्रदी की सभार का नाम को कर रहे हैं, वे अरली स्वरुपीय कर रहे हैं, ऐला मानना रोक नहीं है। यह वो उनको लक्ष्य है। लक्ष्य में तो यह बराय भ्रमणकी की पूष के भी अर्थिक परिधि है, निरा यह सामाजिकमार्जुनक होना चाहिए। यदि कोई अवररदीय वे हुके के पास यह काम करवाना चाहें, तो उनका प्रकार भी करना चाहिए। इस सामाजिक विमलता को हट करके लिये विचारकजन लोगों को देवे कि काम लोच्य पूर्वक धर्मिय मान कर करने चाहिए।

—अण्य पद्यार्जन

के अनुसार है कि उन्हें देते ही हुके भी इस विषय सही को वे अवरर प्रकृत हैं।
नेवैधार्थक काम के साथ प्रेम व सहयोग की भावना बढ़ानी भी जरूरी है।
(४) यह प्यार में रचना चाहिए उपरोक्त विषयों की देख बलता की शक्ति प्रकृत है, उसका व्यपकी अन्वय प्रकृत है कि विचारोंका कार्यण के प्रभाव जनता में अवरर उदयोग, देन नारीयों की मानता को विस्तारित है मान परिचार के लक्ष्य की ओर बढ़ने के साथ काम में करण कार्यण आवश्यक और उपरोक्त प्रकृत के आधार पर शैथिल्य लक्ष्य रूपसे है कि लक्ष्य है कि राष्ट्र सुदृढ करने स्वरएार में वे अर्थता को हट करके, तथा एक दुष्ट के अर्थव्यवस्था के और प्रगतिजनक और उदयोग के छोटे छोटे कार्जयन में लीज बनाना चाहिए।
कुछ बातें सुनकर पूरी शक्ति
(१) सुनकर उदाहरण यह है कि जनता की शक्ति को बचाओ और संश्लिष्ट है कि व्यापार। इसके लिए जनता के दोबारा के जीवन को दुबेशाने एक या दो-तीन बाने दुबेशाने और अन्वय का सुधारक (एक व्यापक के लिए लक्ष्य की शक्ति को बचाओ और उनके प्रभाव को ठेकर दोबारा प्रभाव और अन्वय का सुधारक (एक विचार पर अवरर छोटे वे छोटे गौर एक और सही के छोटे-छोटे हैं वसिष्ठ एक पूरे-प्यार है)। यद्य-यद्य के उद्योग की सौदें लीज सौदें, लोटा आदि के विवरण पर प्रकृत, तथा अवरर बंदी कर सखत। जनता
भंगी-मुक्ति और सामाजिक समता
मानव-मानव के बीच के श्रमिय-येद-नि-अण और समता की स्थापना के लिये अवर मानव-भेदविधि की आवश्यकता है। आज एक तरह का आर्थव्यवस्था, जो दुष्टी और अंधकार है। वे दोनों श्रमियों समान के लिये सारलता है। रहे हुए लिये जिस मानव-नीयता अर्थव्यवस्था है। अन्वय मान में आर्थव्यवस्था के साथ-साथ जनता का भी होना अनिवार्य है। समान में फेरे कौना नहीं है, कोई नीचा नहीं है। मानवीय लक्षणव्यवस्था में समान के लिए उद्योगों के सुधार करने को, और जो उद्योगों में अर्थव्यवस्था में। श्रमिय मान 'धर्म अर्थव्यवस्था' दिखाते देखते हैं। हमारा प्रकृत करण यह है कि कई मानव-उद्योगों को बर्नो को कि जनता अन्वयवस्था है, फिर भी नीचे आने नये हैं। और कई नानै, किनयी न्याय करलत भी नहीं है, वे कौने माने गये हैं, और दुष्टमें वे सामाजिक विमलताएँ निर्माण हुईं, उच्च-नीच के भेद को। नंदयी शक करने का महल बर कर्नो हीन बना गया है। यह कर्नो लोचनेवालों को हीन और प्रथिज माना गया है। आज मद्रदी की सभार का नाम को कर रहे हैं, वे अरली स्वरुपीय कर रहे हैं, ऐला मानना रोक नहीं है। यह वो उनको लक्ष्य है। लक्ष्य में तो यह बराय भ्रमणकी की पूष के भी अर्थिक परिधि है, निरा यह सामाजिकमार्जुनक होना चाहिए। यदि कोई अवररदीय वे हुके के पास यह काम करवाना चाहें, तो उनका प्रकार भी करना चाहिए। इस सामाजिक विमलता को हट करके लिये विचारकजन लोगों को देवे कि काम लोच्य पूर्वक धर्मिय मान कर करने चाहिए।
—अण्य पद्यार्जन
के अनुसार है कि उन्हें देते ही हुके भी इस विषय सही को वे अवरर प्रकृत हैं।
नेवैधार्थक काम के साथ प्रेम व सहयोग की भावना बढ़ानी भी जरूरी है।
(४) यह प्यार में रचना चाहिए उपरोक्त विषयों की देख बलता की शक्ति प्रकृत है, उसका व्यपकी अन्वय प्रकृत है कि विचारोंका कार्यण के प्रभाव जनता में अवरर उदयोग, देन नारीयों की मानता को विस्तारित है मान परिचार के लक्ष्य की ओर बढ़ने के साथ काम में करण कार्यण आवश्यक और उपरोक्त प्रकृत के आधार पर शैथिल्य लक्ष्य रूपसे है कि लक्ष्य है कि राष्ट्र सुदृढ करने स्वरएार में वे अर्थता को हट करके, तथा एक दुष्ट के अर्थव्यवस्था के और प्रगतिजनक और उदयोग के छोटे छोटे कार्जयन में लीज बनाना चाहिए।
कुछ बातें सुनकर पूरी शक्ति
(१) सुनकर उदाहरण यह है कि जनता की शक्ति को बचाओ और संश्लिष्ट है कि व्यापार। इसके लिए जनता के दोबारा के जीवन को दुबेशाने एक या दो-तीन बाने दुबेशाने और अन्वय का सुधारक (एक व्यापक के लिए लक्ष्य की शक्ति को बचाओ और उनके प्रभाव को ठेकर दोबारा प्रभाव और अन्वय का सुधारक (एक विचार पर अवरर छोटे वे छोटे गौर एक और सही के छोटे-छोटे हैं वसिष्ठ एक पूरे-प्यार है)। यद्य-यद्य के उद्योग की सौदें लीज सौदें, लोटा आदि के विवरण पर प्रकृत, तथा अवरर बंदी कर सखत। जनता

लोकनीति संबंधी लोक-शिक्षण का कार्यक्रम

पूर्णचंद्र जैन

तेरहवें सर्वोद्यम-सम्मेलन बीर उरु समय हुई संघ-व्यवस्था की चर्चाओं के फलस्वरूप सर्वोद्यम-समाज निर्माण संबंधी जो कार्यक्रम देय के सामने रखा गया, उसमें सही लोकनीति के प्रति देश की जनता को जागृत करना, उस लोकनीति का देशवासियों को उत्तरोत्तर अधिक ज्ञान कराना और उसके लिए हर संभव विचार तथा धर्म के लोगों को सजग व सक्रिय करना एक मुख्य ध्येय है।

सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र के जीवन्त मुद्दों में बुनियादी या जड़-वस्तु परिवर्तनों के-लिए जिस प्रकार मुद्दान-समाधान अंतर्दोलन व श्रमाधार-समाचार के प्रयोग आदि को सतत चलते रहने की ध्येयसूचना है, उसी प्रकार उस गहरे परिवर्तन के लिए ही जन-जीवन को आज जो नया-काम घटनाएँ, क्रिया-प्रक्रियाएँ, योजनाएँ संस्थाएँ नहीं करती, बल्कि उस सामान्य जीवन-धारा में उथल-पुथल तक पैदा कर देती हैं। उनके बारे में सतत कुछ करना, उन्हें बलपूर्वक मोड़ देने के लिए प्रयत्नशील रहना भी बहुत जरूरी है।

छिपी हुई नहीं थी। कलात्मक भाषा या नहीं था। तो निम्न समाज ओद्योग नहीं हो सके थे, यही मुख्य कारण था। चरम परिस्थानों में बंगला और असमिया ओद्योग ही गये थे। लेकिन उष्ण मौसम भाग बुर नहीं हुआ था। शिक्षा का बल तो था ही।

समाजभेद में भाषा के संबंध का रूप लिया। और पाठ्यक्रम का कोई एक रूप देना है तो उसी रूप में सब जगह पर फैलाना है।

भारत के हजारों बरस के बाद इतिहास के भाषा के कारण कोई इच्छा ही नहीं हुई थी।

मुद्रा भाषात्मक जैसे धर्म-सुधारक और लोकसेवक अपना धारा काम लोगों की भाषा में ही करते थे। धर्मकारों ने और आचार्यों ने जब संस्कृत का ठेका लिया तब सत्रों में अपना धारा काम लोक-भाषा में चला कर संस्कृत का इस्तेमाल छोड़ने से ही किया।

विविधनायक सामान्य कोई छोटा रत्न नहीं था। उसमें कमी भाषा या श्रावण देना नहीं हुआ।

भारतीय प्रचारक समाज देखते, भारत के जोड़-पड़-दर नहीं, किन्तु बालीय पैदा-लिय विभाग किये जाते और समय-समय पर 'बॉय स्कूल', 'दस बर विभागों के अनुसूच्य' 'सिंह' बनाये जाते तो यह धारा काम चल ही नहीं होता। हमें समझना चाहिए कि समाज के स्थापना प्राप्ति है। बड़े-एक-दुनाने की महाशक्तियाँ प्रभा में नहीं हैं। छोटे-छोटे एक-दुनाने के लिए राजी खुशी से परस्पर सहयोग कर सकते हैं। अरुण प्रारंभ में, बंगला में स्थी विहार में, महाराष्ट्र में और पंजाब में आज जो महत्त्व 'सोमोसिद्धि' बंद रहा है, उसका ध्यान आप-ही-आप हो जाता।

छोटे-छोटे एक-दुनाने अगर विचार किये और उनको जरूरत मिलाना स्वयत्तता दी जाती और उनसे बड़ा स्वायत्तता कि अर्थ आप खुशी से बड़े-एक-दुनाने पर उभरें हैं, तो कोई समस्या ही पैदा नहीं होता।

हम तो स्थिति मानते हैं। भारतीय जनमानस को स्थिति में समझने के कारण ही आज के युवक-सर्वतोर्ण में बहुत से शक्य हो मोल लिये हैं और देश को बमशील किया है।

एक सख्त कल्प और उस संबंधी बुनियादी तथ्यादी का कार्यक्रम एक चीज है; साथ ही अक्षरगत कुछ सुझाव या विचार घटना होती है, तो उसे लक्ष्य व तरफत के साथ कलात्मक सहायता का कार्यक्रम भी पैदा ही महत्त्व की दृष्टि की है। और, एक प्रकार को चारों तरफ चल रहा है, उसी तरह के नये-नये लोगों की जो क्रियाएँ हो रही हैं, उन्हें प्रमाणात्मक करना और सतत उन्हें नई दिशा की ओर उन्मुख व गतिशील करना भी उपर्युक्त दो के किसी प्रकार बल-सहय, आनंद-सहय या उपयोग का कार्यक्रम नहीं है। बल्कि इन सबका एकमात्र निष्कर्ष-मुक्त संयोग ही असली और टिकाऊ परिवर्तन माने जा का कार्यक्रम हो सकता है, यह कहना भी गलत या अधिक नहीं होगा।

भूदान-समाधान, साहित्य-सेना और लोकनीति सम्बन्धी कार्यक्रम की विचारों को इसी रूप में समझना और परिष्कार करना होगा।

आज पश्चिम के प्रभाव के चलते के समझने, अथवा हमारे देश के पिछड़ जाने, धर्मका गतिशील रहने, या अधिक-विकसित रह जाने, या जरा-बहु जाने से कहिये, एक प्रकार-सोती की स्थिति में वे हमारा देश गुजर रहा है। गांधी जैसी हस्ती के चौथारें दाखलिके के स्थापक और लीजें नेतृत्व के सानुद्ध हमारे देश के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक नव-निर्माण या पुनर्जीवन में हमारी अपनी देन का छाप नहीं बन पा रही है। गांधी की जो देन मिली, उसकी जो छाप पड़ी और बिछाया सचों व छोड़ा दुनिया आज अनुभव कर रही है, वह भी मानें, हमें कार्यक्रम नहीं रख पा रहे हैं, उसे अधिक गहरी और स्थायी बनाने की शक्त तो दूर है। कमी-कमी यह भागे बढ़ती महसूस होती है। भूदान-समाधान के विचारों में उभरे कलर आगे बढ़ाना है। लेकिन पिछड़ा रंग धुलक होता जाय, उठता जाय और विचारों की उठाने के साथ प्रत्यक्ष जीवन व नकशा पिछड़ा जाय वा बन्द बनता जाय, यह लोचलस्यन सब के ज्यादा जिवनीय है।

हल प्रति वे देते तो सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक धन तरफ का जीवन कुछ पूर्वी-मध्यम का मिश्रित, धर्म का क्रम और पश्चिम का अधिक, मुख्य स्वरूप बन गया मादर देता है। समता, सद्गता और स्वतंत्रता का सबसे अधिक किस्त रूप आज के लोकतंत्र में अंगुलुत्तरण से बन सकता है। यही यही रही तो एक-दिन हमारी आनेवाली पीढ़ी को यह करना होगा कि "न बुद्धा ही मित्य न विनाशके सत्त्व" - "सीन और दुनिया-दोनों से भरो।"

आज देश को तीन कार्य-सर्वाधिक बूने ताके हैं, सिधे-कोई भी विचार-धारा

चाल दर-मुकर नहीं कर सकता। दर-मुकर करने से उनका स्वरूप ही खंडित होगा वा अधूरा तो अवश्य ही रहे जायगा। सर्वोद्यम का आदर्श रहे, उनका चाहे विदानी मही जाय, उसे दर-मुकर करने टिक नहीं छेकना। इस समय देश के जन-जीवन की प्रभावित करनेवाले वे तीन कार्य का ध्येय-कर्म, जो दरिवागुही मयाह-स्वरूप ही रहे जा सकते हैं, वे हैं-पंचायती राय का कार्यक्रम, तृतीय पंचायती योजना और आगामी आम चुनाव।

एक आदर्श के कार्यक्रम में हमारी मुख्यतः यकि स्थानों के साथ देश को बूने पाते हैं कार्य के लिए भी उल्लेख या उदासीनता न करत कर इनके संस्पर्ध के कुप्रभाव के और इनके बहाव वे बचाते वा कार्यक्रम भी हमें अपनाया होगा। उत्ती प्रति वे आगामी चुनाव व पंचायती राज्य के सम्बन्ध में सब का हृदिचोय रख किया गया और जनता के क्या अर्थ-हल दे रहा है, यह कहा गया। पंचायती योजना के सम्बन्ध में भी संव विचार-विचारों कराने रहा और अपना अभिप्राय वाहिर कराने रहा। देश के आर्थिक पुनर्जीवन का मूल आधार क्या होगा वाहिर, सारी-श्रमयोगीय वा उस अर्थ-सचना में निरतन महत्त्व का स्थान हो, हमारी पंचायती योजनाओं को कित्त दिया में योजना वाहिर, सब उनके बारे में संघ-स्तर पर देता रहा है।

आज की संसदीय लोकशाही की विहतिमें पश्चिम में सारा वाहिर हो चुकी है। और यह सख्त ही है कि इतने-उत्तरे लोकतंत्र की स्थापना नहीं हो सकती। फिर भी तथ्य यह है कि उस लोकशाही को देश-देश में अपनाया गया है। उसी के आधार पर हर बॉचने वाल चुनाव होते

हैं। स्थिति में बुनियादी तौर पर कुछ परिवर्तन नहीं होता और चुनावों की नई नई प्रकृति नहीं अपनाती जाती, तब भी चुनावों के मीरुता पातक दोनों वे देश की जनता को सहायक बनाने का प्रयत्न किया जाता बरती है। तब का आम चुनाव-सम्बन्धी प्रभाव देश को हल प्रति वे आगाह करता है और उसी के अनुसार लोगों आम चुनावों के स्वरूप व्यापक तरीके से उसे वास्तविक बनाने की आवश्यकता है।

देश में लोकतंत्र का सही चुनावों को सच्चा हॉका यह होगा, जितमें स्वयत्तता या धारण-सहय एक उभोय, संचित, आम-शक्ति के अर्थ-मही होगा और बिकर, प्रोद्योग आदि सत्रों को लेते हुए पूरे राष्ट्र तक की वास्तविकता। सिधे-कोई यह ध्येय-कर्म ही एक दुनिया की हकदार का महाराष्ट्र और बन जायगी। मान-सुधार ही एक दुनिया की हकदार का महाराष्ट्र बना बन जायगी। ध्येय-कर्म, राष्ट्र-सुधार और विध-सुधार का यह स्वरूप बनना अभी दूर की बात है। लेकिन हिन्दुस्तान की प्रथम-पंचायती तौर राष्ट्र की देली महत्त्वपूर्ण हकदारों के रूप में स्थापित करना ही, ठेका कि उन्हे पंचायती राज की कल्पना में विहित होना चाहिए, तथा उसी आधार-सहितको वे हलका संगठन होना चाहिए, तो आज और अभी इच्छा के-अर्थ-प्रति जननी वाहिर तथा उर प्रचार की परवर्द्ध स्थापित की जानी चाहिए।

संघ, धारा-समा, पंचायत, इन सबमें पुरही दुष्प्रभाव बहात करने निर्वाचन का संगठन की बजट नहीं है। आम चुनावों के उद्यम में लोकनीति संबंधी लोक-शिक्षण-कार्यक्रम आज हल संघ-व-धारा-समा के निर्वाचनों को महत्त्व व सतत प्रभु आदि के देती से अधिक के-अर्थ-प्रति जननी वाहिर तथा वा सकता है। यह करने वा होना चाहिए। उन्मीरदार पैदा लखे हो वा लखी विचार, उन्हे काम-कार, जीवन, अभियान कर रहे हो में क्या भाग-संघ-धारा, एक मत-समा अर्थात् सत्ता-विचार का किंच प्रसार प्रयोग करे, तब का पश्चिम परिवर्तन, मालेभन वा धर्म, जाति, धर्म आदि के सन्तुष्टि सभ्य में देते बने, सदां सत के पश्चिम अधिका पर सोउ होती हो, सदां उसके उपयोग ही न लिये जाते के अधिकार को बैसे सामने किया जायें, मत-सदा सचों बैसे सभ्य हो और अपने क्षेत्र के हित और अपने प्रतिनिधि के चुनाव कर रहे के बारे में किंच लख हवीं अंगे बरकर छोचें व काम करे, इन सबके

[देश टूर ११ ११]

हम कहाँ और किसके पीछे चले ?

शंकरराव देव

जून की पहली तारीख के पन्द्रह तारीख तक मैं दक्षिण भारत के चारों ओरों में नया मोड़, नया इस्कार और इति-उद्योगप्रधान नये सभ्यता की घोषणा करता था। अन्त में मैंने मित्र-स्वर्ग के लोगों में प्रचार करने के लिए ब्रह्म खाया था। उन दिनों उज्ज्वल के मन्थनकी-नुना ही रहे थे। उज्ज्वल आदि। अब तक बना होता है और क्या परिणाम आता है, यह जानने की सज्जद ही विज्ञाना मेरे मन में थी। इसलिये रोस अवसर बनकर पड़ता था।

मुजबत समाज युद्ध, परिणाम शीघ्र ही हुआ। साम्प्रदायिक लोग और अस्मत्क अधिकारी ही इस उच्चतम विभव (रिपब्लिकन विचार) की दुरानी बजा रहे थे। एक तरह से वह स्वामित्व ही था। आगारी के बाद वह बख्त ही चुनाव था, जिसमें उज्ज्वल में एक दलभित्त दल को नियंत्रणक सबकुच मिले और उज्ज्वल के भीतर के लिए एक स्थायी सरकार (गिवाज) बनने की वषाः इस दलित से देते तो उज्ज्वल की बज्जत के इति-युक्त, क्रोडक के इति, मिले पर निर्णयकक कुमुद मिल, वह सुखी आ विभव ही है।

मैं भी इस विभव के बारे में सोचता रहा। मेरे मन में इस पर कुछ चिन्तन भी बसता रहा। जब 'दि हिन्दू' दैनिक का १४ युद्ध का एक भेदा था, उसे देखकर ही उसमें सात यो-लीन आगहिं पर मेरी नजर पड़ी। उससे मुझे क्या फलका क्या और मैं एक प्रकार से बेचैन हो गया। उसमें उज्ज्वल के चुनाव का विस्तारण प्रकाश था।

उज्ज्वल में कुल ८५ हाथ ५२ हजार के कुल अधिक सदस्य हैं। उनमें से ११ हाथ २२ हजार के करीब सदस्यों में से गज्जाना भी आया है। यानि केवल एकतरफा ११५ प्रतिशत सदस्यों में मत देने के अपने प्रभावकक हक का उपन्यय किया। यह भी ११ हाथ २२ हजार लोगों ने मत दिया, उनमें से लगभग १२ हजार ४० हजार लोगों ने कांग्रेस की अपना मत दिया। यानी जो कुल सदस्यों में से ११५ प्रतिशत ने मतदान किया, उनमें से लगभग ४० प्रतिशत ने कांग्रेस की अपना मत दिया, यानी करीब करीब ३० के कुल ही कांग्रेस और कुल सदस्यों में ही दलित से ही मत तोड़ चुके लोगों ने ही कांग्रेस को मत दिया। यह है कांग्रेस की प्रवृत्त विभव (रिपब्लिकन विचार)। यह कल्पवृक्ष है। अब भी यानी ११५ प्रतिशत मत मत कांग्रेस के निरादर को, ये भी बहार हिली में हिल गये हैं। गज्जत परिष्कृत को ६ हाथ ४८ हजार, मना-बोधादित पार्टी को २ हाथ १५ हजार, कृष्णमिदद पार्टी को २ हाथ १३ हजार और एकतरफा उद्योगकारों को ४ हाथ ४५ हजार मत मिले हैं। (यही केवल यहाँ ही और इहाँ के ही आकांक्षे इति, जो था आकांक्षा कहा दिया है।) यही केविकिक कामगार दो हाथ मत भेदकर साक्षात् हुए।

इस देर में अन्ध की हालत में प्रवृत्त-तथीय चुनावों में 'प्रभावकारी' किश दलित निर-उज्ज्वल ही जाता है, इसका यह पक्ष प्रभावक और दुरवस्थाक मनग्य है। देसी परिधिजि में उज्ज्वल का 'प्रभावकारी' या 'प्रभावकारी' चुनावों के कारण किश विभिन्नका का गया है। अधिनियम के परिष्कृतक एकतरफा से भी मतानि साधकता, देते आशीर्वाद से वे के प्रभावित हो सकेंगे और परवृत्तक और धन-धन के साथ अपने विचार का काम देते तक सकेंगे। इस पर विचार और सभ्यते मेरे मन में धक हुआ।

हमें में 'दि हिन्दू' पत्र के उली अक्ष में जो संपादक विले है, उसे पढ़ने का मेरा संभव और भी तीव्र हुआ। उस दिन के संपादक विले का नाम देते तक सकेंगे। इस पर विचार और सभ्यते मेरे मन में धक हुआ।

हमें में 'दि हिन्दू' पत्र के उली अक्ष में जो संपादक विले है, उसे पढ़ने का मेरा संभव और भी तीव्र हुआ। उस दिन के संपादक विले का नाम देते तक सकेंगे। इस पर विचार और सभ्यते मेरे मन में धक हुआ।

लखना में इस गरीब भारतीय के जिसे कहते हैं। वेते, 'ग्रेडि मिरर' और उन-दके साथ के पत्नी की पुत्री देव ही करीब ५५ वर्ष की है। इस पर से हम अज्ञान कला तकने हैं कि वे अन्धकारों में रिक्तनी लडी क्षर्णत लाते हैं। हम लोगों के बिना तो वह सगोलिय ऑर्गन (एशियामिगुल रिंग) मेला ही है।

हमें कोई तान्त्रिक नहीं, यदि हमें देव ही लोकशाही और वहीं की विचार का आधार-समाजता के विभाषनी होय इस परिधिजि में उन दुखों के पदरों की देर पर विचित हुए ही। हमारे इस गरीब देव में भी समाज-परीय समाज में धृक्कामद समाज-पत्र, उन पर पूर्वीशतियों की भाषाकिबत और मध्य म्याय, वे तीनों बाले उल्ले की ही लागू होना हुमा ही होता है। यह न होता तो ही आभार-ही होता। क्योंकि हम ही हम माल्मे के पापकार देवों का ही अनुकरण कर रहे हैं।

यौन एक चीज आप अन्याई ही कहते। चीन है तो वह पूर्वी की सैनी पत्नी है, यही निरम का निरम है। अन्ध का मनागोपनी नागरिक विचार और आचार में आपने जो सक्षम साक्षात् है और अपनी-अपनी कक्षाता में अक्ष रहते हैं। लेकिन यह वैदी ही बात है कि कोई अक्षे विशे दक्षतर कक्षे नये की मसुा पटीयदा है और अन्ध में सफल भी और स्वाभ्य की हाति ही लोक-केता है।

लेकिन यही विचित यह है कि अन्ध के स्वाम के विचारों में आचारों का कर देने वाले हैं। नागरिक सभ्यता है कि वे देते हैं, वेर कक्षत में वे कीर्तन युक्त कर करते हुए हैं। यही कारण है कि कक्षत का सभ्यतासम नागरिक कक्षती और भौतिक स्वतन्त्रता को तो देता है और काम की सभ्यताय तकनी स्वतन्त्रता के कक्षत में सभ्यते विद्यो सक्षत है। स्वयं नागरिक इतना सक्षती होने हुए भी, अज्ञानक उने समस नहीं पाता और इमीतिव उसका विरकरण नहीं कर पाता।

यही परिधिजि लोकशाही पदधि का अनुकरण, हमने विद्ये 'अभिनेत्र नीय-माना वधावाः' (उत्ते अपे को अंगे कें कर रहा है) उली नीति किड। यह है। फिर भी हमें उली का अनुकरण कर रहे हैं, उलीय अपना विचार और कक्षत मान रहे हैं, उलीय केकर अज्ञान गौल अनुभव करते हैं।

के संपादक विले में, कुल दिन पढ़ते दिल्ली में आयोजित सुष्म समेलन के समय में लिख था। उनका तीर्णक 'सर्वसम्पन्न और राष्ट्र' (रिपब्लिकन एजन्डेस) उस लेख में संपादक मोदीय ने लिखा है: 'समुद्रक यह क्षमि, समुद्रक और लेख को रहे शांति समसा है और वह सम्पत्ता सधिये सध पर समुद्रक पर लोगों-प्राये थे रिशती क्षमि या अंग के क्यो न हो—की स्वनात्मक शक्ति की जात करने से ही इस ही सम्पत्ती है। दिस्वी समेलन का यह सुभाषण करी दिया का एक लेख है, जिसमें समससससा के नेताओं के यह अधीत को री शयी है कि वे मिडक पर रिस्काही स्तर पर साध के सम्पत्त्य और स्वयं के विवि प्रणाल करे।'।

अब मैंने यह पढ़ा तो मुझे स्वनात्मक कारणक के बारे में गाभीरी की एक कक्षयत उक्ति का स्मरण हुआ। गाभीरी ने कहा था कि 'आरे राष्ट्र की शक्ति को साक्षात् करके प्राथमिक करने का शुभ स्वनात्मक कार्यण में ही है। इन स्वनात्मक कार्यणों की पूर्ण ही सम्पत्ता स्वराज्य है।'।

'दि हिन्दू' पत्र का उर्णक उदाल पदने पर मेरे मन में यह समझ उदल कि इस देर में स्वनात्मक कार्यण के यतिवै राष्ट्रनिर्माण के काम में आरे दश प्रवृत्तक-वक्ष की प्रवृत्ताने से काइ सके देते जिसे आज की युवाय-पदधि या आज की धन-वित्त लोकशाही पदधि है। अनुकूल ही। मैं ने भी नवाय दित कि

नागरिक लोकशाही के कुल ऐवं सुभ की है, निम्नका हरी समादर करना चाहिए, किन्ते अस्मत्करी भी चरिदर साक्षिण काउर को उस पदधि का यहि हम कर्ना का लो मन्करण करणे, तो वह हृदारे को के जिने निस्मया एक सवरे की जोर ही होने।

आज की नागरिक लोकशाही पदधि में एक नयी संवली है, जिने केवल लोकशाही के जो सही मूल्य हैं और निरने कारण से अन्ध सारी राष्ट्र-पदधिको के

लोकनीति : एक विवेचन

• दादा परमाधिकारी

पिछले दिनों मासिक विद्यालय में श्री दादा परमाधिकारी ने अपने एक भाषण में लोकनीति का संक्षेपण विवेचन किया था । वन भंड में उसका एक अंश हम दे रहे हैं । जो वन भंड हम यहाँ दे रहे हैं । -संक्षे

लोकतंत्र में तीन चीजें आती हैं, जिसे हम परस्पर शुभ व्यवहार, सद्भावना कहते हैं : (१) उत्तरदायित्व, (२) कर्तव्य और (३) मर्यादा । उत्तरदायित्व का अर्थ है, मैं अपने मले-बुरे कामों के लिए जिम्मेदार हूँ । मैं अपने मले-बुरे कामों के लिए किसके प्रति जिम्मेदार हूँ ? धर्म कहता है, ईश्वर के प्रति । समाजवादी और साम्यवादी कहता है, समाज के प्रति और राज्य के प्रति । संस्थावादी कहता है, संस्था के प्रति । बुद्धवादी कहता है, बुद्ध के प्रति । वैदिक लोग तन कहता है, एक दूतरे के प्रति ।

बुद्धत्व में जो पारस्परिकता है, उस पारस्परिकता का अनुवाद जब हम नागरिकता की परिभाषा में करते हैं, तब उसका अर्थ होता है, परस्पर उत्तरदायित्व । उत्तरदायित्व है, लेकिन परस्पर है (रिस्पेक्टिवल रिस्पान्सिबिलिटी) । हम और आप एक-दूसरे की तरफ से जिम्मेदार हैं, एक-दूसरे के प्रति उत्तरदायी हैं और सब मिल कर सत्य के प्रति उत्तरदायी हैं । तो इसमें से सदाचार अपने आप निष्पन्न होता है । जहाँ व्यक्ति एक-दूसरे की तरफ से जिम्मेदार नहीं है, किसी व्यवस्था वस्तु के प्रति जिम्मेदार है-वह अव्यक्त वस्तु चाहे संस्था हो, चाहे संगठन हो, चाहे समाज हो-तो यहाँ 'एकमुट्ठा हनुमान फेंकट' आ जाता है । एक मानव-जात सत्ता आ जाती है । ऐसी अनंत सत्ताएँ लोगों ने मानी । साम्यवादियों ने इतिहास को इस प्रकार की सत्ता माना, उनको लगभग ईश्वर का स्वान्त दे दिया । हम पिछले वादय सत्ता को नहीं मानते । मनुष्य को हमने मानवता का, सामाजिकता का समुच्च रूप मान लिया है ।

अब इस नियम का अर्थ पठन नहीं है, 'एग्जिस्टेंसियल' नहीं है, 'गर्भमेंट' नहीं है । इस नियम का अर्थ है 'रेस्पेक्ट' । मैं अपने आचरण को मोटा हूँ, परिष्कृत करता हूँ, इसे उपरदायित्व कहते हैं । लेकिन किसे दिया मैं मोटा हूँ ? दूसरे के साथ और मैं ही दिसा मैं । क्यों ? क्योंकि हम दोनों को मिल कर एक-दूसरे के व्यक्ति का विकास करना है । इसलिए दोनों का सहयोग होगा । और दोनों का सहयोग होगा, इसलिए मुझे अपने आचरण में कुछ परिवर्तन करना होगा और उसको अपने आचरण में कुछ परिवर्तन करना होगा । यह आचरण मैं जो पारस्परिक अनुभूति आती है, इसमें है कर्तव्य नियम होता है, जिसे आप अधिकार कहते हैं ।

अधिकार का मतलब है, जो कुछ मैं पा सकता हूँ । मुझे जो कुछ पाने की प्राप्ति कानून ने दी है, सामाजिक नियमों ने दी है, उसे अधिकार कहते हैं ।

अधिकार मनुष्यों को बाँटता है, अधिकार मनुष्यों को अलग-अलग कर देता है । कर्तव्य मनुष्यों को मिलाता है; क्योंकि सत्य एक-दूसरे के अनुभूति अपने जीवन बनाने का प्रयास है । मैं अपना जीवन 'आपके अनुभूति बनाना चाहता हूँ और आप अपना जीवन मेरे अनुभूति बनाना चाहते हैं, दोनों एक दूसरे के व्यक्ति के विकास में सहयोगी होना चाहते हैं । इसमें से कर्तव्य नियम होता है । अधिकार में संघर्ष है, कर्तव्य में सहयोग है । कर्तव्य भी जब अधिकार बन जाता है, तो संघर्ष पंदा होता है ।

उस तक कर्तव्य भी मनुष्य का अधिकार बन जाता है । यह काम करना मेरा अधिकार है, यह काम करना आपका अधिकार है । तो वहाँ कर्तव्य अधिकार में बदल जाता है, वहाँ कर्तव्य के अन्तर्गत भी रहता है । मर्यादा पैदा होता है । इसे 'दायित्व' का अर्थ मनुष्य, करते हैं ।

तीसरी चीज है, मर्यादा । इसके लिए मुझे अपनी स्वतंत्रता का शोच करना पड़ता है, इसे अपनी स्वतंत्रता सीमित करनी पड़ती है । तो स्वतंत्र के मनुष्य अपनी स्वतंत्रता को धर सीमित करता है, तब उसे मर्यादा कहते हैं ।

मर्यादा सम्पन्न संस्कृति का प्रथम लक्षण है, जो नरों अर्थात् स्वतंत्रता है । जो नरों स्वतंत्रता है वह केवल अपनी स्वतंत्रता के पर्याप्त नहीं है । मेरे मन में जो आचार और स्वतंत्रता का भाव है, उसके अर्थ में अधिकार कहते हैं ।

मेरे मन में आपके लिए दायित्व है, मुझसे है तो यह जो लोग और आदर है, यह मेरी उत्तरदायित्व को अपने आपमोचित कर देता है । मुझे पता भी नहीं होता है मैं अपनी आदर पर रोक लगाता हूँ । उल्टे मुझे यह अनुभव होता है कि मैं अपनी स्वतंत्रता का विकास कर रहा हूँ; क्योंकि उल्टे मेरे मुझे आदर की अनुभूति होती है ।

स्वतंत्रता का विकास उत्तरी मनुष्य करता है, उसकी उत्तरी स्वतंत्रता बनती है, क्योंकि यह उत्तरी स्वतंत्रता से है, उसमें स्वतंत्रता भी है ।

राज्य की आजा के लिए, कानून के पालने के लिए या आपकी स्वतंत्रता के अन्तर्गत के लिए मैं अपनी स्वतंत्रता का बलिदान नहीं कर रहा हूँ । आपके चरणों में मैं अपनी स्वतंत्रता इसलिए दान दे रहा हूँ कि मुझे मुझे आनन्द होता है । यह सामाजिकता, समाजवाद, राज्यवाद और व्यक्तिवाद की समस्तता को हल करने का असली उपाय है ।

असली परिणाम क्या हो ? दो मनुष्य

के व्यवहार में राज्य का हस्तक्षेप कम-से-कम हो ।

दो मनुष्यों के व्यवहार में राज्य का प्रवेश नहीं अधिकार होता है, यहाँ प्रवेश-नीति का विकास होता है । मनुष्यों के परस्पर-व्यवहार में यहाँ राज्य का प्रवेश मनुष्यता होता है, यहाँ लोकनीति का विकास होता है ।

इसके लिए राज्य का प्रवेश और हस्तक्षेप मनुष्यता होता चाहिए । अभी वो हस्तक्षेप परदेसी हुआ, उसमें मुख्य प्रश्न यह था कि आप तबोवन में राज्य का हस्तक्षेप किना चाहते हैं ? समस्याओं के समाधान में राज्य का हस्तक्षेप किना हो ? जब हमने यह प्रश्न विवेचित राज्य-व्यवहार का हस्तक्षेप हवाई लिए निरिद्ध नहीं है, तो उन अर्थवादियों को यह सुन कर पुनः-पुनः हमें आनन्द हुआ कि अन्त में कहीं-न-कहीं ये लोग राज्य-व्यवहार का हस्तक्षेप स्वीकार करते हैं । इसलिए अर्थवाद है कि अर्थवाद विवेचित नहीं है और विवेचित अर्थ-व्यवहार में जो व्यवस्था होगी, वह अत में समुद्र-केंद्रित होगी । इसकी दृष्टि, इसका प्रश्न कोई-न-कोई समझ होगा । अभी हम यहाँ तक आये हैं ।

लोकनीति में अगर हम यह कहते हैं कि हमें हर मनुष्य को राज अलग-अलग देनी, तो उसमें शोचनर क्या किया ? कोई भी जब अपना मत व्यक्त करने लगे तो उसमें व्यवस्था, सुव्यवस्था और तब, ये चीजें नहीं होने चाहिए । ये चीजें व्यवस्था को कदाचित् करते हैं, भंग करते हैं । उसके अन्तर्गत मनुष्य धर्मिष्ठ हैं । यह उन्मीद-वादी हो रहे हैं, जब हमारे पीछे बस गया है । अब हमें हम यह बड़े कि प्रश्न पोट-नहीं देंगे, जो भीतर जो बाधा, नाश हो जायगा । हमें तब नहीं दें, सुव्यवस्था है । इस प्रकार इसमें संकट में बस दिया जाता है । इसके बचने के लिये

सुख मतलब की मुक्ति निम्न है । ऐसा मतलब है, जिसमें पान में चले कि अपने किछो मत दिया है । यह एक प्रकार का मार्ग था । वा इसके को स्वतंत्र स्वतंत्र का अधिकार है, तो फिर एक-दूसरे के सामने अभिव्यक्त करने की आदत होती चाहिए । अन्यथा नागरिकों में आदर का विकास नहीं होगा ।

कोकतम में लोक-शासन क्या है ? लोक-शासन का मतलब है कि एक-दूसरे के सामाजिक मत-अर्थों के लिए राज, आदर होगा चाहिए । अगर ऐसा नहीं होता है तो बुद्धि-व्यवस्था और विचार-व्यवस्था, ये चीजें अर्थ नहीं रहते । इसलिए मत राज प्रकट हो । मतलब मतलब मत होगा, जब उन्मीदवादी नहीं होगी उन्मीदवादी 'क्रिस्टेड' है, और क्रिस्टेड क्रिस्टेड । क्या का । अर्थ एक मनुष्य क्या-कौड़ी है, इतना ही हमारे मत में विद्या का यह पैदा होता है । इसके लिए आप देनी है, यह कर मांग देना, यह कर है । या इसके विचार आन, हमको मोटा देना है, उसके हम कहते हैं, यह लोग है । या फिर इसके विचार हमको अपनी धर्म देनी है, यह हमको लोही है । ये लोही अवादा कारण नहीं नहीं होने चाहिए ।

इसके लिए आवश्यकता इस बात की है कि प्रतिनिधित्व हो, लेकिन उन्मीदवादी न हो । इसके लिए क्या बदलनी होगी । प्रश्न यह बदलनी होगी कि काम जितने सीपना है, लोग उसको बुझने और अपनी मर्जी से काम सीपना चाहेंगे । लोग व्यक्तिगत व्यवहार में यह करते हैं । सामुदायिक व्यवहार में भी यह सीपना होगा ।

तब व्यवस्था उत्तरी हो जायगी । उसको नाम स्वीकार करने में संकोच होगा, क्योंकि यह अपने को विनिवार मानेगा । अपने आप मतलबपना उदो हो जायगी । मतलबपना है से चुनावदा आदी है । जो मत पानना करता है, वह लोग और मत का प्रयोग करता है । और वहाँ लोग और मत काय न दे, वहाँ अपने मत से काम करता है, अपने दुःख, पारित्य का उपयोग करता है । इन लोही सुधारों को दूर करने के लिए उपाय यह है कि उन्मीदवादी न हो, मतलबपना न हो । मतलबपना में लोक-शासन का पोल हो जाता है मतों

क्या आवश्यकताओं को बढ़ाते रहना संस्कृति का लक्षण है ?

नातामाई भट्ट

[भूदान-यज्ञ' के पाठक स्वामी बानंद और श्री नातामाई भट्ट के प्रबन्धोत्तर से परिचित होंगे। यहाँ पर हम स्वामी बानंद के "क्या" का यह मानते हैं कि जीवन की आवश्यकताओं को बढ़ाते से सम्बन्ध अथवा संबंधित आगे बढ़ती है ?" इस प्रश्न का श्री नातामाई द्वारा दिया हुआ उत्तर दे रहे हैं। —सं०]

मेरे विचार में यह स्पष्टाण्ड त्रिभुज प्रामाण्य है कि जीवन की आवश्यकताओं बढ़ाने से सम्बन्ध अथवा संबंधित आगे बढ़ती है। जीवन की आवश्यकताओं का अर्थ क्या है? मानवों जीवन को बढ़ाते हैं के लिए तो उसकी शारीरिक आवश्यकताओं, मानसिक आवश्यकताओं, सांस्कृतिक आवश्यकताओं, सामाजिक आवश्यकताओं और इतनी तरह आध्यात्मिक आवश्यकताओं का भी एकवचन यानी समग्र दृष्टि से विचार करना चाहिए।

आय जीवन की विभिन्न आवश्यकताओं के बारे में बूझ रहे हैं, उनमें तो अत्युत्पत्ती शारीरिक आवश्यकताओं का विचार ही मुख्य मान्य होता है। लेकिन मनुष्य केवल पशु-सदृश आवश्यकताओं से ही अपने जीवन को सफल नहीं कर सकता। आज हम जीवन की आवश्यकताओं को बढ़ाने का जो विचार करते लगे हैं, उसके मूल में पवित्र के आगे बढ़े हुए देवों के साथ हमारे सम्बन्ध का ध्यान मुराब है। हमें कोई सन्देह नहीं कि पश्चिमी देवों की बनवा को जो पौरिक आधार मिला है, जैसे मोटे और महीन कपों का उपयोग वे करते हैं, जिस तरह के औद्योगिक या लघु उद्योगों में प्रयुक्त होवे हैं और उनके बालकों को शिक्षा-सम्पन्न को अनुद्वन्द्वपूर्ण सुख हैं, उन सबकी तुलना में, उन-उन पाठों की दृष्टि से, हमें जैसी अनुद्वन्द्वपूर्ण सुख हैं, वे हमें अत्यन्त कम प्राप्त होती हैं।

हमें यह भी बूझना चाहिए कि हमारे गरीब लोगों में आज किस तरह की देवारी मान्य है, उन्हें सार में यह महीन किस तरह आगे पेट और अल्पनी हालत में रहना चाहते हैं, जिस तरह वार लोगों के लिए उन्हें मान-सुखी और सुखाभिनी प्राप्त एक नहीं मिलती, कठिन-के-कठिन हीमारी के समय भी जैसे उन्हें कर्तों से फिरी का सहारा नहीं मिलता और जीवन को उन्नत बनाने के लिए उन्हें जिस तरह का जीवन-निष्ठाण्ड मिला है, यह भी मिल नहीं पाता, यह सब बेमिाला है और हमें कोई सन्देह नहीं कि हर कोई यह पौरिक कि गरीबों के ये अभाव बुर ही और जल्दी-जल्दी बुर ही है। लेकिन अगर हर सारी परिस्थिति से उन्नत उठना ही, तो हम लोगों को पक्षपात मिल कर महान उपचारों के लिए तैयार होना होगा।

अगर हम बूझ सकते हैं कि हमारे गरीबों में आज किस तरह की देवारी मान्य है, उन्हें सार में यह महीन किस तरह आगे पेट और अल्पनी हालत में रहना चाहते हैं, जिस तरह वार लोगों के लिए उन्हें मान-सुखी और सुखाभिनी प्राप्त एक नहीं मिलती, कठिन-के-कठिन हीमारी के समय भी जैसे उन्हें कर्तों से फिरी का सहारा नहीं मिलता और जीवन को उन्नत बनाने के लिए उन्हें जिस तरह का जीवन-निष्ठाण्ड मिला है, यह भी मिल नहीं पाता, यह सब बेमिाला है और हमें कोई सन्देह नहीं कि हर कोई यह पौरिक कि गरीबों के ये अभाव बुर ही और जल्दी-जल्दी बुर ही है। लेकिन अगर हर सारी परिस्थिति से उन्नत उठना ही, तो हम लोगों को पक्षपात मिल कर महान उपचारों के लिए तैयार होना होगा।

आय बूझ सकते हैं कि हमारे गरीबों में आज किस तरह की देवारी मान्य है, उन्हें सार में यह महीन किस तरह आगे पेट और अल्पनी हालत में रहना चाहते हैं, जिस तरह वार लोगों के लिए उन्हें मान-सुखी और सुखाभिनी प्राप्त एक नहीं मिलती, कठिन-के-कठिन हीमारी के समय भी जैसे उन्हें कर्तों से फिरी का सहारा नहीं मिलता और जीवन को उन्नत बनाने के लिए उन्हें जिस तरह का जीवन-निष्ठाण्ड मिला है, यह भी मिल नहीं पाता, यह सब बेमिाला है और हमें कोई सन्देह नहीं कि हर कोई यह पौरिक कि गरीबों के ये अभाव बुर ही और जल्दी-जल्दी बुर ही है। लेकिन अगर हर सारी परिस्थिति से उन्नत उठना ही, तो हम लोगों को पक्षपात मिल कर महान उपचारों के लिए तैयार होना होगा।

आय बूझ सकते हैं कि हमारे गरीबों में आज किस तरह की देवारी मान्य है, उन्हें सार में यह महीन किस तरह आगे पेट और अल्पनी हालत में रहना चाहते हैं, जिस तरह वार लोगों के लिए उन्हें मान-सुखी और सुखाभिनी प्राप्त एक नहीं मिलती, कठिन-के-कठिन हीमारी के समय भी जैसे उन्हें कर्तों से फिरी का सहारा नहीं मिलता और जीवन को उन्नत बनाने के लिए उन्हें जिस तरह का जीवन-निष्ठाण्ड मिला है, यह भी मिल नहीं पाता, यह सब बेमिाला है और हमें कोई सन्देह नहीं कि हर कोई यह पौरिक कि गरीबों के ये अभाव बुर ही और जल्दी-जल्दी बुर ही है। लेकिन अगर हर सारी परिस्थिति से उन्नत उठना ही, तो हम लोगों को पक्षपात मिल कर महान उपचारों के लिए तैयार होना होगा।

आय बूझ सकते हैं कि हमारे गरीबों में आज किस तरह की देवारी मान्य है, उन्हें सार में यह महीन किस तरह आगे पेट और अल्पनी हालत में रहना चाहते हैं, जिस तरह वार लोगों के लिए उन्हें मान-सुखी और सुखाभिनी प्राप्त एक नहीं मिलती, कठिन-के-कठिन हीमारी के समय भी जैसे उन्हें कर्तों से फिरी का सहारा नहीं मिलता और जीवन को उन्नत बनाने के लिए उन्हें जिस तरह का जीवन-निष्ठाण्ड मिला है, यह भी मिल नहीं पाता, यह सब बेमिाला है और हमें कोई सन्देह नहीं कि हर कोई यह पौरिक कि गरीबों के ये अभाव बुर ही और जल्दी-जल्दी बुर ही है। लेकिन अगर हर सारी परिस्थिति से उन्नत उठना ही, तो हम लोगों को पक्षपात मिल कर महान उपचारों के लिए तैयार होना होगा।

आय बूझ सकते हैं कि हमारे गरीबों में आज किस तरह की देवारी मान्य है, उन्हें सार में यह महीन किस तरह आगे पेट और अल्पनी हालत में रहना चाहते हैं, जिस तरह वार लोगों के लिए उन्हें मान-सुखी और सुखाभिनी प्राप्त एक नहीं मिलती, कठिन-के-कठिन हीमारी के समय भी जैसे उन्हें कर्तों से फिरी का सहारा नहीं मिलता और जीवन को उन्नत बनाने के लिए उन्हें जिस तरह का जीवन-निष्ठाण्ड मिला है, यह भी मिल नहीं पाता, यह सब बेमिाला है और हमें कोई सन्देह नहीं कि हर कोई यह पौरिक कि गरीबों के ये अभाव बुर ही और जल्दी-जल्दी बुर ही है। लेकिन अगर हर सारी परिस्थिति से उन्नत उठना ही, तो हम लोगों को पक्षपात मिल कर महान उपचारों के लिए तैयार होना होगा।

मनुष्यता के प्रहरी

सिद्धेश्वर प्रसाद चौधरी 'भ्रंज'

गुजर भाई ऊपर से बितने काते थे, अंदर से उन्होंने ही साफ और पाक। कानों की स्थान तक अपना कर्ण भी फटाफट, जो शरारत निभी खुद गुजर भाई के हाथों लाते रहती। ऊपर का शंका सिद्ध, विषय से देखिये ऊपर से ही क्षेत्र की तरह दिखायी पड़ती। आँसू पर चमकी और उलझ करके के भीतर सूर्यियों के जाने में गिंती हुईं जाली जाली तुलियों, पत्तों में समथी गुजर भाई के जैसे दरिया-दरिया का एक अन्तःसा दे रही थी। हर क्षण हल्ला-मुक्कफता येहर लिये गुजर भाई हर व्यक्ति का आदर करते हुए बिलामी पगने। शीतल-दालत कुत्ता चालाक, पर जब कभी उलकी-नीं हवाही की डोपी पड़ने तो रामा काट्टून बन जाते। गुजर भाई हिन्दुओं के हीन जात-धर्म के विरुद्धि में छद्र दिन्दी, जिसमें रामायण की चौबटियों और हस्तु के बन्ने रिपते खल्लों का पुट भी पड़ा, दोसरा हल्लोयल करते और मनुष्यता के शीर्ष में बन शोलेय लकी चौबटियों लकी तो कलमें घरीयल के चन्द लक्ष्मी में गिरी मोलनी-मुखा से कम नहीं लगते। ऐसे मोहो पर हिन्दू और मुसलमान, दोनों गिरफ्त की ओर से गुजर भाई की खोज होती, जो ब्रह्मे की सभा ठके। देहातो में अजला को अपने भाग्यो से आवर्तित कर कंठ ऐसे बना यज्ञ-नदा ही मिले हैं। कही बाराण या नि तक ब्रेक एक आप गाँव से लोग आकर आपने दरवाजे निरुत्सवमान हो जाते।

कि मेरी हेतुगुद होने तक हमारे परिवार में हम कहीं प्रतिष्ठित रात की कला के सम्य एक छोटी-छूट सिपाक था। सुते अचणी हल्ला गार है कि मेरी गिन्दी में एक बार हम लकठे और देकर हल्ला था कि मेरी खाना की कथा के बाद शीघी पर देते हो पैसे जो भी पड़ेगे, उन्हीं की ही हल्ला-चन्दी हरे हर देना लाती हैं। और लकठे हमय वृक्ष हम सुन्नी के साथ हल्ला निग्रम पर उठे रहे। हमें उठे रहना था। सिद्ध भी अपने जीवन में मेरे कभी, सिद्धि प्रकार की हीनता का अनुभव नहीं किया। छद्र पर मेरे विचारलय के एक विद्युत् के मेरु सिखा हल्ला माफ करणे की बात आमदूरक करी और भाग्य-अन्वय पर मेरे गिन्दी में हल्ला-चन्दी के लिए तुझे एक पदक भी दिया। किन्तु गिन्दी में उठ पठन पर हल्ला-चन्दी बने से लाल हल्लाकर कर दिया। उन्हीं में कहा "अगर हमें खाने की डोपी मिलती है, तो पढ़ने के लिए पीठ भी बची न मिले।" तुझे देना लगाया है, मानो अपने पिताजी की हल्ला हल्ला की भीने अपने जीवन के साथ कल्ला लिया है। और "अच्छ हल्ला पूरा निम्न" का भी निवार अन्न समान में हल्ला हल्ला का रहा है, उन्में भीने कनी हल्ला नहीं लेती। पल्लव हल्ला में पल्लव हुआ, तो सुन्नी बह मनीषु हल्ला कि जीवन की चीन्य सीते से पुत्र कले बल्ला आहार से भी कल्ला आहार बनता और देहा करके भी अपने को और अपने भाई-सहोदर को हल्ला प्रकार के हीने आहार से मुक्त करने सिद्ध मनुष्य दुःखार्थ बना ही मेरे लिए और मेरे देश के अर्थियत मनुष्यो के लिए कर्तव्य कर रहे।

आज जो दिन-प्रतिदिन मेरा वह विचारत कर्तव्य हो रहा था माना है कि हल्ला-चन्दी का समाज-आवस्था अचरी को अर्थिक समीर बनती है, जो अर्थिक को अर्थिक गरीब बना देता है। इस भावना को निरामने बिना जीवन-धरम को अन्न उन्में की हल्ला-चन्दी बना, दुःखने खानने के बिना बंशुल राग की तरह मुझे भाग्यो से सामा काम को हल्ला बंशा है।

गुजर भाई एक अवसर की बुद्धिय में लिफ्ट बन्धों को पढ़ाका करते। पही आगला हल्ला कथा या और वह भया आवाज कर रहे, वहाँ से आगले कथा चला आ रहा था। कथे आगली आन से और अप बन्धों की। निता त्रिती हल्ला देव मय के बन्धों की पढ़ने में गुजर भाई अपने आगरी मुह जाते। डीठ गने कथे आपके बन्धो से लिफ्ट रहते। लेल ही लेल में बन्धुनी बने लीन आते। आगके पढ़ने आर पी कंठ बन्धे नीचबन होकर ननी किन्दी के साथ बुद्धिय के बर्न चौधरी पर चल रहे हैं और आगकी देखते ही अन्ना के विरु लता लेते हैं। देहा का गुजर भाई वा गदर प्रभावपूर्ण स्थिति।

गुजर भाई के लक्ष्य में ऐसा भी बनना था कि चन्द्र बलामी में उनके गौर, नया नगर में उठे खाने के लक्ष्य से ठेकर बनारसले लत को पढ़ कर लेल में बन्द कर दिया था और जाने के साथ लिखा गाऊ छद्र मनीषो वहाँ का लालन माल लालते रहे। कथा मालिक कि वहाँ से कोई सिद्धान्त का समाना आये। अमानक एक रात को हैरती हल्ला के अभाव में नया नगर मेरी डालिमें से वेद लिख मय, कन्धी में हल्ला-चन्दी के गौर का यज्ञ करन मनुष्यता हो गया। लोग हीने गुजर भाई के पास आने और बने लगे—पैसा, दुम वहाँ से निकल आये। हल लक्ष्य मुगत लेने को मुगतल होमा। दुम लक्ष्य आगेयो तो मुक्त का वाया गायदा होमा। आगिर गीयो के बन्धु लक्ष्य करले वह गुजर भाई घर छेन्ने दो वहाँ हो गये। पल्लो की और अर्द्ध बन्धो से लेते हुए गीले—सिद्धान्त की अम्या, सिद्धि छोडन गये। मैं अपनी वादराध, सिद्धान्त को छोड़े जाता हूँ। रहे अचणी तालिन लिख कर लमाम बनना। आगर सिद्धा रात तो रि आवाज होकर ही मुक्ते मिलेगा, गुप्तामी का समान लेकर नहीं। अन्ध, अर्द्धात्मा! यह कले हुए गुजर भाई रानी अमानत के लोमों में विर कर जो छद्र हल्ला को अन्न कर लता ही रहे। हल्ला-चन्दी के लोम कभी हीने बन्धे—गुजर भाई, आओ लक्ष्य बड़े गदरित हैं। सिद्धान्त की अर्थिक गरीब को हल्ला कर पूरा करेते। केनाही बन से हल्ला-चन्दी में फल्ले गिन्दीने लिख पेशगी से वाट-बौह रही होगी। सिद्धान्त अन्न चालय होकर लक्ष्य में पूरल हुआ। अन्न, बन देलो लल लक्ष्मी ही शीर कि कदमर करले रहते हैं। आगला भी सैधा सिद्ध है।

यह हल्ला कर गुजर भाई की अन्ने खल्ल हो आती। मनुष्य गले से दोहा उन्दी—मेरे मारे, अन्नकर गौर मुझे लेते।

हिमालय का आकर्षण क्यों ?

हमें वहाँ आनन्द देगा है कि हम हिमालय की लक्ष्मी में जा रहे हैं। हमने हिमालय के नाम से ही घर छोडन था। उन्में बहुत साल हो गये। पितृलक्ष्य सात हुए। अन्न हल्ला कथय रहे, लल हमने लक्ष्य भी छोडन, पर भी अन्ने और हिमालय के लिए निकल पड़े। बीच में कले दिव हल्ला काली में उठे रहे। उन्में से हमको हिमालय में जाना था। हिमालय हल्ला मोती की केश पुरुष गये और लल से अर्थियत तक उन्में के पास रहे। उन्में लल हल्ला के लक्ष्य के लिए निकल पड़े। उन्में पहिले ही हल्ला वेगा ही करते थे, लेकिन यह कहना है कर।

हमको कोई फल्ल, वेड, बल देलने की हल्ला-चन्दी थी। हमको सिद्धान्त के लिए आदर हल्ला-चन्दी कि वहाँ अर्थियत-गरीब ने लक्ष्य के लिए ही। हमको हिमालय में जाने की हल्ला भी आनन्द के लिए है। लेकिन हल्ला मोती के पूरल गये। पही आन का पूरा लक्ष्य हमको मिल गये। अन्न हल्ला वहाँ कले है।

के समानार से पही भी लक्ष्मी वेदा होये लगी और उन्में प्रयत्न हल्ला रक्षाना-चन्द्र के लो-सारे गौर में उठे खाने। दोनों और से लक्ष्मी में लेल मालिय होने लगी लक्ष्य-मालय पर निम्न में वहाँ से पूरे रहने के कारण का लम गये है, गनी लक्ष्मी में हल्ला वाने लगे।

एक दिन एक मोलवान दीवता हुआ अन्न गुजर भाई के पास लल हो गया और कल्ल लक्ष्य में वेगा—आगर हल्ला गौर को छेद्र कर लेते वहाँ पल्लने। वहाँ के हिन्दू आपकी मातु लालना पारते हैं।

गुजर भाई ने निता त्रिती चणदरुड के उन्नर दिया—ती कथा है, पल्ले हल्ला मर्दग। आगिर मैने भी तो पक्ष दिन मलता ही होगा। आगर मेरे मारे लल आन लगी हो नाप तो आन को हल्ला हल्ला।

आपी लल कर तक, पारी और सगला। अन्ने लल में हो लक्ष्य हल्ला-चन्दी का हल्ला पक्ष हल्ला बुद्धिय में मनेत्र कर गयी। अन्नकर गुजर भाई की अर्थियत लक्ष्मी और अन्ने लामने हो बुद्धियो को लक्ष्मी में बनना ललु लीने देव कर कले लक्ष्य हल्ला में लोड उठे—मेरे भाईयो, लोच न करी। अन्न-वे लक्ष्य अमानत लल्ल लोमों। यह हल्ला लोम हल्ला लामने है। हल्ला अन्ने पक्षी पुरी से लोच कर हल्ला लक्ष्य हल्ला ही। वहाँ तो कर है। पर से कोई कल्ल नाली को हल्ला-चन्दी है। हल्ला अन्न देर न करे, नन्दीक अन्न मेरे पल्ले।

हल्ला मेरे भाभा से मनेत्र होकर हल्ला लल्ला हल्ला पूरु क हल्ला-चन्दी के गौर पर लिख लेते और अर्थियत में बल्ल पल्लने लगे। गुजर भाई उन्में लीने हल्ला लल्ले हुए वीर लला कर लल्ल उन्ने की शीघ्रता करणे लगे।

हिमालय का आकर्षण क्यों ?

हमें वहाँ आनन्द देगा है कि हम हिमालय की लक्ष्मी में जा रहे हैं। हमने हिमालय के नाम से ही घर छोडन था। उन्में बहुत साल हो गये। पितृलक्ष्य सात हुए। अन्न हल्ला कथय रहे, लल हमने लक्ष्य भी छोडन, पर भी अन्ने और हिमालय के लिए निकल पड़े। बीच में कले दिव हल्ला काली में उठे रहे। उन्में से हमको हिमालय में जाना था। हिमालय हल्ला मोती की केश पुरुष गये और लल से अर्थियत तक उन्में के पास रहे। उन्में लल हल्ला के लक्ष्य के लिए निकल पड़े। उन्में पहिले ही हल्ला वेगा ही करते थे, लेकिन यह कहना है कर।

हमको कोई फल्ल, वेड, बल देलने की हल्ला-चन्दी थी। हमको सिद्धान्त के लिए आदर हल्ला-चन्दी कि वहाँ अर्थियत-गरीब ने लक्ष्य के लिए ही। हमको हिमालय में जाने की हल्ला भी आनन्द के लिए है। लेकिन हल्ला मोती के पूरल गये। पही आन का पूरा लक्ष्य हमको मिल गये। अन्न हल्ला वहाँ कले है।

विश्वविद्यालयों में शिक्षा का माध्यम हिन्दी हो

एन० भगवती

(हिन्दू विश्वविद्यालय नासों के रूप कुलपति और भारत के सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश श्री एन० भगवती ने मुजरात मुनिवासिटी के विद्यार्थियों के समक्ष जो भाषण दिया है, उसके मुख्य अंश यहाँ दिये जा रहे हैं। —संपादक)

देश के सवियान ने हारएक नागरिक के लिए एक ही नागरिकता और एक ही राष्ट्रभाषा-देशनागरी लिपिबाली हिंदी भाषा-की व्यवस्था की है। प्राचीनवाद का झगड़ा इस बात के 'वीर्य' में नये उपस्थित होता है, यह समझ में नहीं आता ? मुनिवासिटी की पक्षाधो में शिक्षण का माध्यम प्रादेशिक भाषा न होकर राष्ट्रीय भाषा होना चाहिए। यहाँ तकके लिए हिलावह है। अनेको हमेंया के लिए कायम रहेगी, ऐसा तो चायद कोई नहीं चाहेंगा। हमेंया के लिए अनेकी कायम रखना वाक्य भी नहीं है और यह राष्ट्रीय हित में भी नहीं है। इसलिए माध्यम राष्ट्रभाषा को ही मानना चाहिए। विद्यान ने देश के हारएक नागरिक को समानता और समान एक दिने है, जितने राष्ट्रभाषा का हक भी एक ही। हमारे इन तपकर्मित भाषा-वासियो को भाषा का उन्माद पैदा करके, यह हक छीन लेने का कोई अधिकार नहीं है।

कहा जाता है कि हर प्रांत की अपनी-अपनी अक्षा संरक्षित है। यह बतली सही नहीं है। समय भारत की एक ही संस्कृति है और आधार-विचार की भी साधना है, नाथ उसकी अभिन्निक ही अन्त्या-अन्त्या तरीके से होती है।

विद्यार्थियों में शिक्षण के माध्यम का प्रश्न देश के प्रादेशिक प्रश्न नहीं है, या कि देश के विचारविचार के अन्धकारियों का नहीं है, किन्हे अधिकतर प्रादेशिक कामेशों के अन्धत्व का प्रेम के सुदृढ़ बन्धक प्रभावित करते हैं। इस प्रश्न का सर्वथ सारी प्रजा वे है। अतः शिक्षण के माध्यम में परिवर्तन का प्रश्न सारल दलीले या भावनाओं द्वारा हल करने के बजाय इस प्रश्न के साथ निरन्तर व्यापार करने हैं, ऐसे विचारशील नागरिक और विद्यार्थियों का उनमें शिक्षा होना चाहिए।

माध्यम में परिवर्तन का काम बहुत धीरज और हाव से करने का काम है। इस काम में ५० वर्ष का समय चाहिए। विद्यार्थियों के और समाज के दिग्ग में उनसे समय की शक्ति रहनी चाहिए। यह अनथि यज्ञ के हलिहल में बहुत शर्मी नहीं मानी बनेगी।

अगर प्रादेशिक भाषा को शिक्षण के माध्यम के रूप में अपनाया जायेगा, तो आचारप्रणाली व्यवहार का संघर्ष वैसी कोई ही प्रणाली नहीं रहेगी। प्रादेशिक भाषा में शिक्षण प्रारंभ करने वाले विद्यार्थी को दूसरे प्रांतीय में नौकरों मिलना तो इतिक्रम होगा ही, लेकिन उसके अन्ते प्रांत में भी यह औद्योगिक का व्यापारिक क्षेत्र में आकांक्षी वे काम पा लेंगे, उनमें भी शीघ्र ही। कारण व्यापार तो आरिद्र व्यवहार है और उद्योगिता, श्रमजीवी है। विद्यार्थी जब शिक्षण प्राप्त कर लेते हैं, तब व्यवहार की साधनीक पतली पर पौर स्थिति उन उले गन्तव्य होगा कि ऐसा कोई शक्य नहीं है, जो वे मानकर कि मुझारी या अन्ध

प्रश्न भी अटक चायगा, अन्य प्रदेशों के सुविमान मन्तव्यों का काम लेने वे शिक्षण चैन पचित ही चायेगा तथा उन्ध अधिकारी भी अपने राज्य के शिक्षा बजेटों उन्धों में काम नहीं कर सके। राजनीतिक लोग जो वे करे प्रश्न राक्षे करते हैं, ऐसे समय में हम किसी की मदद नहीं कर सके।

राज्य-सुधारका भाषेगी भी रिपोर्ट के बाद देश में भाषावाद के नाम पर जो कुछ हुआ है, वह तो अन्ध-अन्ध नहीं होगा। लेकिन भाषावाद का अर्थ देश में और अधिक न फैले, ऐसे कदम हमें अपनी वे उठाने चाहिए। मैं विद्यार्थियों के कदम पालना है कि उन्ध अन्ध में सुनिश्चित रिपोर्ट में एक उद्यम की हैतियत से केने का मौका मिले तो जित्त केने, अन्ध-अन्ध का वैश्व तकाद हमने वे कोई कुछ भी करे, परन्तु उन्धे सामल्य बनता या विद्यार्थियों का हित सोच-समझ कर ही समझ के लिए जो बात विशेष लाभदायक हो उठे उसी के पक्ष में अपना मल निर्णय के साथ स्पष्ट करना चाहिए।

असम में विनोवा के साथ

रामभाऊ म्हतकर

"देशो, अर तब सम्यक वे तुम लोगों के लिए काफी खर्च किया है। पिछले दिना, संजम किच, उपचार दिने, इतके आने समाज के और लेते ही लेते रहना शक नहीं है। अर तब करना चाहिए कि सेवा देते। लेने की बात नही सोचते।" भाव ने धातों के शिलजिले में कहा। पल्ले हुए राखे में वावरीत हो रही थी।

मिने अनुभवित दृष्टिने के लिए विर दिहाया। उधेद्वय का विचार सारिले द्वारा अन्धता तक पहुँचने का हम मित्रों ने जो तप किया था, उसमें निरी तरह ही दिग्दर्शन में आ गये, दिग् दृष्टि वे बाव इतने निमित्त बना कर हमें स्वयं का मान छप रहे थे। बाद में आज भी परिस्थिति स्पष्ट में लेते हुए उन्होंने कहा :
"भूतकाल-आन्धक्य अर अरं परा है। पहले छुट में हमारी एकमात्र पदचाल चलती थी। अर तुल देश में ५-६ काएरों पन्ती होतीं। सगे-द्व अन्धताजिन को यह का पानी था, वह अन नहीं रहा। अधिक, सामाजिक या युधि की समस्या हल करने का साम्य समझ कर जो हमें शारीक दृष्टि थे, वेअ नहीं रहे। नेत्र अकार्य नेत्र सुनिश्चित ही को भी भिंने रहे। छुट निमित्त बन का छोटा-का प्रयास अर इन शर्मा में 'बरे रहना' था। हमें जो अन्धता दिने रहना था।"

की काली-काली छाया वर पदा, रफ, रोड, नदी-नाले हार कर विविध वी एक वेग से अती गी, तर मानों बहती रं, "आवागमन के साधन नाथे उन्धों में बहुत कम हैं। हलकी रिकायत मत करे, विचार इन्धेन-उन्धे नहीं चाहते, तू, इवार्ड-अन्धता उठे नहीं चाहिए। चाँद उठे लगन।"

बादलों के विद्या हीलेनेवाले मल उन्नी अन्ध मान वर पक्ष रहे हैं, विचार पैदा रहे हैं। इधर सर्वत्र पानी ही पान है। हाथ वेद हाथ लोटा नहीं कि बर गया हुआ। वेर तो अन्धत्व है। अन्ध गया बहुत अन्धता है। नदी नाथे का स्नान करना बरा कठिन हो जाता है। यहाँ कहीं पानी विर हल कि बाँ सँव वही जाती है बाँक। बाँक मल कुल लेगी, पर पला नहीं लाने देती। उच दिन सुबह नायिया थी, बीचद हो गया था, हल कारण पानी नथे पान न सके। राखे में नौक की बात चल पनी थी-ओर मल, वह कि एक उन्ध पार करके नथे बाघ आगे गदे तो उनके पैर पर दो बाँक।

मनोविज्ञान

दोनावा दश वर्षी विद्यु-उत्सवनाम बाद बाघ कार्कशों का काँ लो रहे हैं। उसमें नौकरिक सुधार के की तरफ उनका ध्यान कम हीला। मनमहूर का रूप पाएक कर सके की दाखत रत्नेवाली सुदि की दाख अतन देने की फिर बाव को प्यदा शीती। मगदध भक्ति का दाख उन के कार्कशों के दिग्ग में शीर हुने थे। एक दिन कार्कशों के वग में उन्होंने मर।

"मनोरिषयमात करने के लिए अनेक प्रयत्न होते रहते हैं। मन की उत्पन्न न करते उठे दाखने की कोविध पाली रहती है वा उसवे पर माने की बात भी जाती है। मन की वे अन्धताएँ हैं उनका सुवि विगत हमें बनना चाहिए।"

बच्चार्कशों मरुण करे

बचन में उम उमम रहका स्यारा विरल नहीं शीला। कारुण्य प्राप्त करने के लिए रामेणुण, समीपण हवा दिरे। अर हलकण्य भा विरला। उठवे अन्ध होने के लिए उन्धण का उन्धे अन्धे में ही माना चाहिए। मगध भी अने पर यह समझ हो गयी। और समझ अरकन की पुत्र नहीं बरला। दाख सुने दिन सुने में बर रहे थे, "दिनी पीर को सामना शीला है, जो उन्धों को अन्धत्वपरी है, उन्धे युवक मरन करना पडेते हैं। मनोबल के लिए वह जरूरी है। हल कारों की करो समय पंद हल अन्धत्वपरी ही दूर हो उन्धे शीर है। मुने भाएण लो ललला। मीरक दश की भोज वह पयअर कुल उन्धे है।"

(१० प्रे० २७, इंदौर)

बाराबंदी के लिए सत्याग्रह

होई, बिना दिवार में प्रयोगनीय पोस्टर और धारा के विना, सर्वोदय-संस्थ, राष्ट्रीय स्मारक निधि, प्रचारकों और प्रचारकों के लिए ७ रुपये तक एक चित्रा, कुल निराला और रात को ८ से आठगिनत तक और, जिसमें जर्मनीय पोस्टर और प्रचार के खिलाफ प्रस्ताव प्राप्त हुआ।

होई, बिना दिवार में सर्वोदय-संस्थ, राष्ट्रीय स्मारक निधि के कार्य-कर्ताओं की एक बैठक में सर्वोदय-आयोग के विनिमय परतों पर चर्चा हुई। तब हुआ कि प्रचारकी रात को समझने के लिए मॉरगोरी में समर्थ की कार्य। साथ ही यह भी तय किया कि दिन में रात में प्रचार के डेके, उन मामलोंवालों के देना यह करने के लिए प्रस्ताव प्राप्त करने जायें और भारतीय सरकार के पास भेजे जायें। अगर डेके नहीं किये जाते हैं, तो सत्याग्रह भी किया जाय।

अ० भा० महाबंदी सम्मेलन

दिनांक २-२१ सितम्बर को अखिल भारतीय महाबंदी सम्मेलन होगा। सम्मेलन का उद्देश्य भारत के विचरणीय मोरारजी देसाई वगैरे और अल्पसंख्यक प्रजासत्ता के धारकों की एक, सफल बनाने के लिए। सम्मेलन का आयोजन दिल्ली महाबंदी समिति द्वारा किया जा रहा है।

श्री पूर्णचंद्र जैन का वीरा

श्री वैरा संघ के सभी श्री पूर्णचंद्र जैन द्वारा कुछ रुपये प्रवाह के बाद काशी लीडे। इस बीच कुछ से उन्हे यह कार्य रहा और कुछ समय सर्वोदय कार्य और कार्य में लगा। साधारण की दो तीन खादीसामोयोग संस्थाओं के क्षेत्र में बाहर वहाँ के काम को उन्हे देखा और उनके संबंधित मदत की क्षमाओं में भाग लिया। नई दिल्ली में शं की नई दायीय सम्पत्ति समिति, मोठवा समिति की बैठकों में भाग लिया। सफल धारों के प्रति सेना कार्य, सर्वोदय पोस्टरों आदि सेना के संबंध में तथा भूदान-सम्पदान सम्यक रूपों में सामुदायिक विचारक महासभा और श्री वैरा संघ के परस्पर सहयोग के कार्यक्रम के बारे में संबंधित व्यक्तियों के विचार विनिमय किया।

विनोबाजी का पत्र :

मार्गः माम-निर्माण कार्यलय पो० कार्यालयमुर (आलाय)

फिरोजपुर में अशोमनीय पोस्टर-आंदोलन

पंचाब के फिरोजपुर नगर में अशोमनीय पोस्टर, चित्र, बैज्ञानिक, अज्ञेयता गानों के खिलाफ मुहिम शुरू करने के लिए ३० मई को एक बैठक आयोजित की गयी, जिसमें विभिन्न राजनीतिक दल, पब्लिक संस्था एवं अन्य समाज-सेवी संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

दैनिक में यह तय किया गया कि सिनेमा के प्रचार करने के लिए जो अश्लील चित्र चुनते हैं, उसकी लोकप्रियता का उत्तर। उसके अत्यन्त नाटक का कथन में जो नाच-गाने होते हैं, उसमें अश्लीलता पर प्रतिबंध लगाया जाय। साथ ही दस रुपये के बाद नगर में लखउद स्टेशन पर तपोयोग न किया जाय। दूसरे प्रस्ताव में शिक्षण-संस्थाओं के अधिकारियों से अश्लील की नहीं कि शिक्षण-संस्थाओं के दलनच पर अशोमनीय नाटक और अश्लील गानों पर प्रतिबंध लगायें। एक और प्रस्ताव में आम जनता से अश्लील की गयी कि स्वयं अपने घरों और बच्चों पर अशोमनीय पोस्टर, चित्र न लगायें तथा विवाहादि

समारोहों में अश्लील गानों के रिवाज न बनायें।

इस सम्मन्ध में कार्यकर्ताओं का एक दल विद्यार्थियों से मिल्य। विद्यार्थियों ने आश्चर्यजनक दिवा कि सिनेमा-प्रचार में बचने वाले अश्लील गानों के लिए अनुमति देते नहीं दी जाती है। अगर विद्यार्थी पानी गयी, तो कहीं कार्रवाई की जायेगी। साथ ही यह भी आश्चर्यजनक दिवा कि अगर जनता के आग्रह में सख्त पत्रदा है तो रात के दस बजे के बाद खजलीघरी का उपायों पर दया का चरण।

३० जून को स्थानीय एक सिनेमा-मालिक ने अपने वहाँ एके अशोमनीय पोस्टर हटा दिया।

ग्रामदानी गाँवों की प्रगति

नागौर जिले में आज तक के नौ भूदान में भूमि प्राप्त हुई थी, उनका विवरण तो जारी असे पूर्व ही हुआ है, किन्तु अब तक जिनके गाँवों में भूदान के कि संकेत किया था, उनमें ४० खजानपुर, रावलीखण्डपुर, भीरुगुणपुर, गिरोजपुर, सुखवाली, पीथोखर व चंकीया की वहाँ के ग्रामदान-अधिकार के अंतर्गत ग्रामों के लिये परामर्श भरे गये हैं, जिनमें से भीरुगुणपुर, गिरोजपुर व भीरुगुणपुर गाँवों की ग्रामदान-योग्य विचारण हो चुकी है तथा प्राप्त सम्पत्तियों को स्थानान्तरण-संबंधी प्रस्ताव राज्य सरकार को भेजे गये गये हैं। ये गाँवों में तहसील द्वारा स्थान पर भेज कर कार्यवाही की जा रही है।

उन्नी खाँची-आयकता शिविर

नागौर जिला खादी-सामोयोग का, नागौर की ओर से एक संस्था में कार्य करने वाले करीब २५ उन्नी खाँची-कार्यों का ३० जून ११ मई, ११ को एक के अल्पक भी वीरगुणपुर स्थानीय इलाक़े में एक शिविर हुआ। शिविर में राजस्थान खादी सामोयोग बोर्ड के सख्त श्री भैरवरावजी अम्बाला ने प्रवचन से भाग लिया। उक्त शिविर में शिविर आकाशवाणी में कार्यगत कार्यवाही में उन्नी खाँची-कार्यों की समझौता पर विचार करने हुए बालक के पूर्व तय प्रारण से जन विचारित रूप-कार्य-द्वारा कार्य को सफल एवं सफल रूप से करने का तर किया।

—श्री प्रभाकर धार (संबोधक-मंडार बिदा सर्वोदय-संस्थ) लिखते हैं कि अल्पक का वषणस्थानी के हातागत अर्थ-संग्रह का अन्तिम अन्ति-अन्ति सारा-पत्र के कुछ दिनों में सम्पन्न हुआ। उन्नी में भंगरा विद्युत् अग्रगण्य रहा। फिर भी लोक समर्थ की जारी अथवा कुछ धारणों में है और हमने-के-एक एक स्थानीयों के पास दस अखिल भारतीय अर्थ-संग्रह में वृष्टा बना, वह कार्यवाही में तय किया है।

—फिरोजपुर जिले के श्री वरारो-द्वारा गोपाल और श्री हरिचन्द्र ने पब्लिकता दायित्व के गाँवों की परामर्श को और एक स्थानीय परामर्श में भूमि दिवस की।

साहित्य-विद्यालय का दूसरा सत्र

'भूदान-यज्ञ' के लिए के अंत में कक्षा के द्वारा छात्रों का साहित्य-विद्यालय का आयोजन ११ मई का होगा। कक्षा ४ व ५ माय तक पठेगा। वर्ष की प्रारम्भ १५ अगस्त से होनेवाला है।

वैद्यनाथ धाम में मौन जुलूस

दिनांक १६ सितम्बर केनाथ धाम, देवघर में सा० १० मून को जाय वैद्यनाथजी के मंदिर से एक मौन जुलूस निकल्य, जो विभिन्न मण्डियों से और मुस्लिमों के पूजाय हुआ मंदिर आकर सत्र में परिलो हो गया। जुलूस में अशोमनीय पोस्टर, चित्र भी हटाने, बड़े गाने न बनाने आदि के नारे लिए कर प्रदर्शन किया गया।

इसका अन्तः प्रभाव जनता पर रहा। सत्र में जुलूस की अनेक महिलाओं की संस्था अधिक थी। सत्र में भारत सरकार, विहार राज्य सरकार, स्थानीय नगरपालिका, सिनेमा-मालिक, दूकानदार और आम नागरिकों से विभिन्न प्रस्तावों द्वारा अश्लील की गयी कि शासनको पवित्र बनाने रखने के लिए सत्र प्रचार की अशोमनीयता का अंत किया जाय।

चुनाव में दूरप्रदायिक व जातिगत प्रचार न हो ?

सखनऊ के राजनीतिक वर्तों का निवेदन

सखनऊ के विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं ने गांधी सरकार विधि की ओर के अनैतिक नमा के एक संघ पर एक होकर निर्णय किया कि अगामी आम चुनाव में कोई भी दल सामुदायिक अथवा जातिगत प्रचार न करे। सत्र की अल्पक विचारकता के अनुसार जो आत्मराम मोहनदेव कर रहे हैं।

इस अंक में

१	'शुभ्रा' और 'अन्धकार' का सखल दृष्टि है	१	निवेदन
२	सरपटी तथा अजयपुर नदी विद्या सफाता	२	विद्यया
३	विद्या सफाता, लला सफाता	३	विनोय
४	विद्या सफाता, लला सफाता	४	काय सफाता
५	विद्या सफाता, लला सफाता	५	विद्यया
६	विद्या सफाता, लला सफाता	६	पूर्वचंद्र जैन
७	विद्या सफाता, लला सफाता	७	संस्कृत
८	विद्या सफाता, लला सफाता	८	दाय चर्चा-विद्यया
९	विद्या सफाता, लला सफाता	९	संस्कृत-विद्यया
१०	विद्या सफाता, लला सफाता	१०	विद्यया
११	विद्या सफाता, लला सफाता	११	विद्यया
१२	विद्या सफाता, लला सफाता	१२	विद्यया
१३	विद्या सफाता, लला सफाता	१३	विद्यया
१४	विद्या सफाता, लला सफाता	१४	विद्यया
१५	विद्या सफाता, लला सफाता	१५	विद्यया
१६	विद्या सफाता, लला सफाता	१६	विद्यया
१७	विद्या सफाता, लला सफाता	१७	विद्यया
१८	विद्या सफाता, लला सफाता	१८	विद्यया
१९	विद्या सफाता, लला सफाता	१९	विद्यया
२०	विद्या सफाता, लला सफाता	२०	विद्यया
२१	विद्या सफाता, लला सफाता	२१	विद्यया
२२	विद्या सफाता, लला सफाता	२२	विद्यया

साप्ताहिक घटना चक्र

सामुदायिक विकास-सम्मेलन से

भारत सरकार के सामुदायिक विकास-सम्मेलन की ओर जिस रुझान देखा-बाट में सामुदायिक विकास संबंधी विचार-धारा के विकास-सम्मेलन हो रहा है। इसी प्रकार के विकास-अधिकारी और विज्ञान-मगीण इस सम्मेलन के लिए वहाँ एकत्र हो रहे हैं।

सम्मेलन में चर्चा का एक मुख्य विषय यह है कि ग्रामस्था को विधान के अन्तर्गत कानूनी स्वरूप दिया जाय। पंचायती राज की जो योजना देश में लागू की जा रही है, उनमें "पंचायत" को प्राथमिक ही करने छोटी-छुटियाँ इहाँई माना गया है। वास्तव में यह स्थान ग्राम-सभा का होना चाहिए, न कि गाँव के लोगों द्वारा जुने हुए १०-१२ व्यक्तियों की पंचायत का। स्व-शासन का स्वरूप की सुनिपादी इहाँई में हर छी-उत्पन्न हो रहिना रूप से दिहना लेने का मौका मिहना चाहिए। पंचायती राज की योजना की संघटना बहुत कुछ इस बात

पर निर्भर है। जुने हुए लोगों की छोटी-टी समिति के रूप में जो पंचायतें हैं, उनमें हाथ में कुछ करना देने में ही अन्धध और अज्ञान्यार कर खराब क्षापर बना रहेगा। सर्व लेना रूप और सर्वोपय-कार्य-तंत्रों की ओर से यह बात सुन से ही बँधी और प्रात्येक संस्थाओं के स्थान में लायी गयी है और यह संतोष का विषय है कि केन्द्रीय विकास मंत्री के अनुदार श्री-नरदीन १० प्रांतों में ग्राम-सभा को बनाने में शासन के एक अंग के रूप में स्वीकार कर दिहना गया है। हालाँकि वे गाँव के अग्रद-सर्व के सालना थकट पर बहल करने का और उच्च स्वीकार करने का अधिकार पूरे गाँव की समझ का ही होना चाहिए। पंचायत का नाम ग्राम-सभा के निर्णयों के अनुसार काम को चलाने का है। ग्रामस्था को उच्च उचित स्थान प्रदान करना, न कि पंचायती राज, बल्कि सामुदायिक विकास के बारे में काम की संस्था के लिए भी आवश्यक है। हमें आशा है कि देर-देराने का सामुदायिक विकास-सम्मेलन इस बारे में अनुसूच निर्णय लेगा।

पंचायती राज और सामुदायिक विकास-योजनाओं की संख्या के लिए ग्रामस्था को मान्यता दी जाने के अलावा दो और महत्व की बातें हैं, जो आवश्यक हैं। किनो-साथी ने और सर्व सेवा सचने कार-बार इन बातों पर जोर दिया है। पहली बात तो यह है कि काम-के नाम को के रख पर पंचायतों के जो चुनाव हैं, उनमें राजनीतिक पार्टियों की दखल नहीं देना चाहिए, अर्थात् पंचायतों के चुनाव पक्ष के आधार पर नहीं रहने चाहिए। अभी भी कुछ पार्टियों ने चाहिए और पर तो ऐसा ऐलान कर रहा है कि पंचायतों के चुनावों में पार्टी के तौर पर वे भाग नहीं लेगी, लेकिन व्यवहार में इसका अन्त ही नहीं रहा है। दूसरी बात, जो उम्मीदी भी अन्तरी है, यह यह कि ग्रामस्थाओं और पंचायतों के निर्णय बहु-मत-अवस्था के आधार पर नहीं, बल्कि सर्वसम्मति से हों, और परम्परा और जायज-न्याय में अन्तरी बदल करना चाहिए। पंचायती राज का प्रयोग देश के मध्य-पक्ष ही रहने से सम्भव एक महत्व का प्रयोग है। उम्मीदी संस्था और अन्तरीय लोगों के ही परिणाम सुनने के लिए बहुत दूर-दामी और सुनिपादी होने वाले हैं। इसलिए देश के सम ही विचार-धारा का यह फलन है कि वे अपने वा अपने क्षेत्रों के हीमिंत स्थायी के बनाय हुए प्रश्न की ओर साक्ष्य दिव ही रहने से देखे और सम मिल कर ऐसी परम्पराएँ और ऐसी पर्यवर्तनी स्वीकार करें, जिससे क्षेत्र-वैय का यह व्यापक और बहुमूर्ति प्रयोग रहने उभरे।

भारत सरकार फैसला करे

१-ता १० जुलाई को "उत्तरी क्षेत्र की भावमिल" के अध्यक्ष-पद से लेते हुए भारत सरकार के अध्यक्ष, श्री जल-बाहुदुर शास्त्री ने अगली नेता माल्टर तारासिंह को यह आश्वासन दिया है कि अगर वे पंचायती राज के प्रश्न पर अगले आम चुनाव लड़ें तो भारत सरकार इस प्रश्न पर बनना भी जो राय प्राप्त होगी, उन्हीं तक करेगी। पंचायती राज के प्रश्न की छेदर विच्छेद करी-सर्व से देश का नावा-करण सुभय हो रहा है। विल एक बहा-दुर चौधरी और उच्च कौम में किसी ब्यापक अन्तरीय का होना सामाजिक ही लोगों के मन में अर्थात् बँध कर रहा है। भाषाधार प्राची की रचना के प्रश्न पर देश के एक से अधिक क्षेत्रों में सम्य-समय पर अन्तरीय उठता रहा है और सुभाष्य से भारत-उत्पन्न से लक्ष्मी अन्तरीयों के जर्म में अब तक बुद्धि-व्या-पूर्ण नीति नहीं अपनायी है। पिछले कुछ वर्षों का इतिहास जाहिर करता है कि अगर भारत सरकार ने इन प्रश्नों पर निर्णय-पूर्वक सभी नीति सुन ले ही अपनायी होती तो इन वर्षों में जो व्यर्थ का अन्तरीय देश के कई हिस्सों में हुआ, वह न होता।

पंचायती राज के प्रश्न का हल भी एक तरह से भारत सरकार ने अब तक समय पर ही छोड़ रखा है। शासक उन्कर ब्यापक है कि समय अपने आप उस मन का हल कर देगा। पर भी स्वयं-बाहुदुर के यहक-पद से यह बात संतोष होता है कि आभित्तरक भारत सरकार ने इस नीति को छोड़ा है और पंचायती राज के प्रश्न का हल किल प्रसार किया जाय, उन्के बारे में यह भी कुछ चोख रही है।

एक तरह से भी शास्त्रीजी का यह सुझाव कि पंचायती राज का प्रश्न चुनाव के मैदान में तय हो, लेखक-श्री-वसति के अनुसूच और उचित मान्य होता है। पर अभी यह प्रश्न के सौचने पर लगाता है कि देश के मीयूदर बालावर्ष में देशे मानानसक प्रश्न को चुनाव के मैदान में न देना शासक उन्करे। राखी नहीं होगा। आपसी मन-मुटाव और देश रहने उन्करा यह सकता है। हालाँकि माल्टर तारासिंह ने और स्व-पक्षे-माल्टर ने भी अभी अपने ताबज बयानों में इस बात का संभवतः निरा है कि पंचायती राज की मीयू के फील्डों में धार्मिक चरण है या कि सिल-धन बनाने की कल्पना है, पर सुभाष्य से पंचायती राज का प्रश्न कि-सि-सिल प्रश्न बन गया है। पंचायत में विलों और विच्छेदों की संख्या भी श्री-नरदीन ऐसी समझते हैं कि चुनाव में इस प्रश्न का निर्णय प्रश्न के शुभ-सौच या स्व-मान्य के आधार पर होकर

धार्मिक आधार पर होने का संभव है, जो संभव लोगों के लिए भी अधिकतर हो सकता है। हमारी राय में इस प्रश्न को इस तरह सुनाय के मैदान में न बँध कर भारत सरकार को मजबूती के साथ इतर था उन्करे-अभी भी उन्करे-पक्ष ही और जैसा वह मुक्त के लिए उचित समझती हो—स्वयं उन्करा फैसला करना चाहिए।

पहला काम पहले

वर्षों का मौसम शुरू होने के साथ साथ बाढ़ का मौसम भी शुरू हो गया। बैरल, मीर, मद्रास और उड़ीसा में बाढ़ के कारण जन-जन-उत्पन्न आदि की बहुत बड़ी क्षति हुई है। लखनऊ में भाषा-पूरना का है। नरदीन के एक भाग के इस क्षति से पूरा भारत की संकट उन्करे-पक्ष हो गया था। परंतु बाढ़ भी अन्तरीय-पक्ष हो गया। उन्कर भारत में तो अभी भी की शुरूआत ही हुई है। वर्षों में हर साल नहीं न-कहीं मीयूदा बाढ़ आती रहती है। हर साल वर्षों के मौसम में वर्षों-न-कहीं हर प्रकार बाढ़ें आती हैं और क्षति होती रहती है। वर्षों की सम्पत्ति और बँधकी जायें नष्ट होती हैं। इहाँ-उन्करों स्पष्टि-वेक-पूरना और बैरल को बँधकी है, वर्षों नष्ट ही जाती हैं। फिर देश-निदेश से उन्करा-यता का बँध शुरू होता है। दो-तीन नहीं है कि बँधकर का मीयूदा समता हो जाता है, और बँधकर का एक विर-अपनी सामान्य गति से चलने लगता है। कभी-कभी विन्-मैदार लोग भी बँधते हुए जुने गये हैं कि विच्छेदना जैसे बँध में यह हर होता रहता स्वामाजिक है।

पर यह निर्मित रूप से बँधा या बँधा है कि पिछले सालों में देश में जो बाढ़ का प्रयोग रहा है, वह सामाजिक या सामान्य नहीं है। अपने व्यक्तिगत अन्तरी-अन्तरी के। बाढ़ का नाम सुनने में नहीं आता था, उनमें भी बाढ़ें शुरू हुई हैं।

बातचल में विच्छेद स्व-नरदीन, उनमें जो बाढ़ का प्रयोग रहा है, उसके मुख्य कारणों में धार्मिक-व्यक्तिगत से बँधते बाढ़ का नाम आने और देश, सबक, बांध इत्यादि के निर्माण में सिल-सिल में नदी-नालों के सामाजिक प्रवाह में सतत बाढ़ मानना, से कारण मुख्य है।

बाढ़ बाँटों की ओर सरकार द्वारा नियुक्त की गयी बाढ़-निर्माण समिति ने भी दो साल पहले ही अपनी रिपोर्ट में प्यान आशा-पूरना किया था। पर इस संकेत आशा-पूरना आने वाली हर निर्णय के बावजूद देश परित्येकी का सुझाव करते ही संश्लिप्त प्रश्न कोई हुआ भी, ऐयान नरदीन नहीं भवता। मीयू दो हर साल बाढ़ के बाद कुछ-न-कुछ छोटे-मोटे उन्करा, किने वाते हैं, पर हमारा मतलब उन

[देश अगले अंक में]

टिप्पणियाँ

शिकनगरी टिपि

नीपूकाम सेवा की मीसातलें

भगवान् स्वराज्यप्राप्त्य का एरवास हनुमत् से लेकर राम तक भ्रष्ट रहता रहता है। भगवान् सोमो की कौतिल से बा हीरो है, राहु, से नहई सफरते ही नो सोनी सेबा कर रहा है। अंतो पूरा को नोएकाम सेबा कहते है। कीस एरकार की नोएकाम सेबा करन के सोमो के मनुएव-रह है।

महाएना गीरो ने बाहीरो हाल तक स्वराज्य के सोमो सतत काम कीया। भगवत् कीरोही सेतो स्वराज्य के सोमो ने बातो से। जब स्वराज्य हुआ, तें देहहो से और हर सबे शहर से सोमो हुआ। पर भूम समय से सोमोबाही से देहहो रह है, दुप्राणी के आरु सोमो के काम से हगं हुआ से। स्वराज्य माने पर नुएहोने कीमो की पद अमने हाथ से नहई सोमो। सोही तरह भगवान् कूपो म कंस का वप कीया और हारा राज्य मुनक हाथ से ना गय।

कि, कूपण छद्म राजा नहई बन। हांक मनुष्यशोडक स्वराज्य के सोमो सतत एरवत्न करतो रहे। केकोन जब भूम से एला गया की स्वराज्य प्राणो के बाए बाए कीमता पद सोमो, तें नुएहोने कहा, स्वराज्य-प्राणो के बाद पद सोमो मरा काम नहई। से या तो बंदो का अणुयम करंगा या गनीस का अणुयमक मनुआ। नोहीका नाम है नोएकाम सेबा। अंतो सोमो मरे नोएकाम सेबा नोव कीही मनुएव-रह के हाथ से हीरो है, भूमो नुएहोने हमापान सोरो देपरी का अणुयम हांग ह।

-बीनोबा

सामाजिक संकट-निवारण के लिये सामाजिक शक्ति कैसे प्रकट हो ?

इसी संकट में अल्प राष्ट्रीय एका (एनएन) नेपाल इन्डियन के विपण पर भी विपणनी का एक लेख प्रकाशित हुआ है। राष्ट्रीय संघर्षाली की विधि के लिए भी विपणनी से कुछ उल्लान दिने है। साथ ही अल्प में यह भी कहा है कि देश की परिस्थिति इस तरह खूब गयी है कि सामान्य उपचारों से उसका निराकरण होना फलित है, उसके लिए किसी 'सुझावना का परिधान' आवश्यक है। भी विपणनी दुपने और अल्पनी बन सकत है। अमी-अमी बानी असे तक से आलस में शक्ति-रक्षणना और सेवा-कार्य करके लीते है। कर्नाट-महाएव के बीच को सोमो-निवाय प्राण है, उन करी परिस्थिति से भी उनका निकट का उपन है। उनके बैठे निम्नोदर कर्णको को भी ऐसा लगय है कि परिस्थिति सामान्य रूप के दारते से बाहर गयी गयी है, यह गमनीयता से सोचने की बात है। अल्प देश के बहुत से लोगों को देखा मरहम होता है। रिचले धक में (पृष्ठ २) प्रयाचार के विषय में लिखते हुए इसी बात की ओर हमने लेख किया था।

विहार सरकार का आश्चर्यजनक कदम !

पटना से निचले वाले दैनिक 'आर्वा-पति' (विष्णु) के सां १५ जून के अंक में विहार सरकार की सोसलरी कमीषी नोति के बारे में जो समाचार प्रकाशित हुआ है, वह अगर सही है तो आश्चर्यजनक है। उस पत्र में यह कहा गया है कि विहार सरकार इस बात पर विचार कर रही है कि पहाय की मुक्तियों के डेके गैर-दरिद्रों के हाथ से ठेकर करके ल नेवल इतिवनी के लिए उपलब्ध रखे जाएं।

विहार सरकार अगर सचमुच सचय के डेके नेवल इतिवनी के लिए उपलब्ध करने के प्रयत्न पर गम्भीरता से विचार कर रही है, तो उसका कायप कहा है, यह इवनी समझ में नहीं आया। क्यहा पाल तो वही हो सकता है कि वह परिचयों को यह दिखाना चाहती है कि उसे, यानी सरकार को इतिवनी वा विषय पसल है और वह उनके लिए आयुवनी का एक अन्ध बलिना मुक्ति कर देना चाहती है। पहाय का ठेका गैर-दरिद्रों के हाथ

में रहे वा इतिवनी के, उसका मुनगा होने में से किनके बात बाय, दूय करे में हमे सोई दिखलती नहीं है। हम तो चाहते हैं कि पहाय का व्यवहार भी वही हो। किसी की याचय पीते की आरुत इतिवनी की नहीं हो तो हमान की ओर से उसकी मुव एवाय शिदधी नाय—जैते अरतालों में कामना दमाएँ प्राप्त देने का इस्त्राम होत है—पर धारण को मुनारे का सायप इतिवनी न मनायी जाय। किसी भी समन की मुनकि का सोपन बनाना अन्वरीगाता उठ धरनन को कड़ाघ देना है, क्योकि जिसे मुनगा निम्बना हीगा, वह अपने मुनकि के लिए उठ इवनी की देनना चाहेगा। आम घटाप-बरी के मार्ग में जो एनके वही बराबरी है, वह यही कि अन्व की लवली को पूँके धारण के इवरायन से कटी-अरणी बरायों की कामनरी होती है, क्योकि वे लव हो जते जोनेके के लिए केवार नहीं है।

इतिवनी के प्रति अ्यार विहार सरकार को हमदर्ती दिखलती है जो उनके इवरे अनेक एनके हो करणे है। घटाप की मनाय कामनरी उनके लिए उपलब्ध होय कर एक एवरे के दिहाय सरकार इतिवनी के नाम की कसतिवनी कर रही है। किसी भी एक विषय में जो घटाप का व्यवहार सोच दिया जाता है, तो मना-बरी के विवणन एक शरि के सोरो एंग का निहित स्वार्थ खग हो जाता है और हर तरह मनायनी के मार्ग में एक और कसपक पैदा हो जाती है। घटाप में अ्यार सबसे कड़ा मुकाम किसी का हो रहा है तो वह इतिवनी का। मानीकी उनकी अनवोदय की नीति के अंतुधर पहले इतिवनी की ही घटापलेरी से दूर हजाना खरीके वे। अगर 'आमोरी' में जो सकार छोटी है, वह एक से जो विहार सरकार टीक मानीकी ही एवना के विपरीत काम पर रही है। इन अथवा करते है, और मानीकी को करते है, कि उपरोक्त एवत ली नहीं है और विहार सरकार देवी सोई बात नहीं सोच रही है।

-सिद्धांत

दक्षिण अमेरिका में सर्वोदय-पात्र

सर्वोदय (सर्वोपाय) दक्षिण अमेरिका से एक भाई लिखते है :
 "महो वर वह निम्नकर महीने में सर्वोदय-कार्यकार्यों का एक समेकन हुआ। प्रतापलाल डी कोलोम्बेटर की एक परधाना हुई। सम्मेलन में सर्वोदय पर प्यारी हुई। अल्प-अल्प सोम में चत १२ विचारों का आदान-अदान हुआ। सर्वोदय को एवकार का कार्य भी माराम हुआ है। इवो महीने एक अल्प देवली सोम से हुआ सम्मेलन होने ला रहा है। एही के देवलय में अधिकतर भारत जायें हुए सोमों की लवली है। निचले साल के एक बरे मंग में बेचार रहते हैं। उनके पास सोई मरेदु ज्योग्य यही है। बेकारी के कारण जो सारा मरि अल्पने में बड़ लते है।"

-सिद्धांत

[सिष्ठे दिनों अक्षम के मोर्चाव व तैयार बिडे में कुठ विचारों विभिन्न धर्मों में विनोदनी की पद्यना में रहे । ये वह जानने की उल्लुख में कि हम खेप भूदान-आरोग्य में देते होइ दे सकते हैं । विनोदनी में जन्मे लिख एक "पद्यी कार्यक्रम बनाया । प्रो० सुभी समीरण दास ने विनोदनी की सज्ज की उनकी चर्चाओं में संकलित किया, जो मूल अक्षमता में प्रकाशित हो चुकी है । कार्यक्रम यद्यपि व्याधाम के विचारियों के लिए भी है, किन्तु हिन्दुस्तान के वच छात्र हस्तेश्वरी मोति खम उठा सकते हैं । - [२]

(१) कम-से-कम एक घंटा प्रतिदिन शरीर-परिचर्य करना चाहिए और इस एक घंटे में शरीर-परिचर्य से जो व्यस्तनी करता हो, उसे सर्वोपरि के कार्यक्रम के विचार के लिए समर्पित कर सकते हैं । उदाहरणतः अगर एक विद्यार्थी एक घंटा योग करता है, तो वह कम-से-कम आठाने में एक घण्टा बना सकता है । सर्वोपरि के कार्यक्रम के लिए इस रहस्य को समर्पित करने से ही फायदे हो सकते हैं । परिचर्य को महत्त्व बढ़ा लोएगा और साथ ही समाज को श्रवण सुष्ठु-न-सुष्ठु हैन को उसे श्रवण ही जायेगी ।

(२) विद्यार्थी को चाहिए कि घुड़घुड़ो के बरत शासनात्मक के विचारों में जाने और बहू वर सकार्य उपस्था ऐसी ही अन्य सामाजिक विचारों को ।

(३) विद्यार्थी सत्यप को कि अपने से निवृत्त बर्न, ध्याय, जालि श्रवणा पंच को विचार हूले श्रवित को अपने विम

नानों ।) एक हिन्दू विद्यार्थी का मुक्तिसे दोस्त होना चाहिए और इसी प्रकार एक सामाजिक विद्यार्थी का एक बंगाली विद्यार्थी मित्र होना चाहिए । इस प्रकार अपने से विभिन्न सम्प्रदायों के साथ मित्रता करने से इस प्रकार के नेत्र-भावों का सात्व होना का श्रेष्ठ प्रभाव हो जायेगा ।

(४) विद्यार्थियों को चाहिए कि वे अपनी हिन्दी सीखें । ऐसा करने से वे हिन्दुस्तान के जित किसे लोग भी जायेंगे, वहाँ अपने विचार अपनी शक्ति प्रकट कर सकेंगे । अन्य भाषाओं के साथ संबंध बनाने का यह एक श्रेष्ठत माध्यम है ।

(५) विद्यार्थियों को चाहिए कि सुष्ठु-साम आधा घंटा कस्तक करें । "कस्तकी सीमा और जाली जगना" जीवन का सुष्ठु रूप । घंटों कात भर करने से वहाँ आनन्द बेहतर है, श्राय सुष्ठु में कुछ बढ़े पवना ।

विनोवा के विचार

मनुष्य का मन व्यक्तित्व होता है और बुद्धि समाजिक, क्योंकि वह समाज में निराल होता है और मनुष्य को समझ मिलने है । इसलिए मानव व्यक्तिगत मन का आधार होकर सामूहिक बुद्धि का आधार लेगा, तभी वह सच विज्ञान-युग में मन के क्षम मन भी टकराने नहीं होगी । विचारों का पदार्थ से मनो की टकराने होती है, विज्ञान-युग में उचित नहीं । इस युग में जो भी संपर्क होगा, वह मन मयाजक बना लेगा, क्योंकि आज ऐसे दास्यस्त वेदा हुए हैं, जिन्हें मानव पकड नहीं सकता, बल्कि वही उनको पकड में आ जाये है । हिसा में पहले जो रत्न गडि भी, वह अब इन राज्यों के पीछे लेके के बाद नहीं रहती है, अब वह मन प्र में प्रकट हुई है । इस हालत में विचारों का प्रयत्न स्वल्प नहीं चल सकता ।

अब सत्यायुह करणागुण्य होना चाहिए । लाने होटी है, वेसे ही किसी बनाह सत्यायुह पुन होने की बात हुनवे ही सको भयद, यह भी बकरी के कि उलके लिए हमारे मन में प्रेम और करण हो । हमारी इति से करण्य पेटनी चाहिए । इस युग में सत्यायुह का स्वल्प इस प्रकार होना चाहिए कि "सत्यायुह" छत्र तुनने भाव से लकको सुधी मसुष्टु हो । सत्यायुह की यही कमीटी होगी । जैसे किसी वा वासुधय तुनवे ही लकको सुधी प्रतीत हो ।

सत्ता का विभाजन हो

सुष्ठुपण्य के बाद इस देश में "बिकेनर स्टेट" का मारण किया गया । इस "बिकेनर स्टेट" का अर्थ है, अधिक-से-अधिक सत्ता कुछ लोगों के हाथ में खेरी और वे लोगों पर सार धीवन नियमित करेगे । पूरे देश के पाँच अलग देशाओं की योजना दिल्ली में खेरी । जीवन के विनोद अंग-अंग हैं, सभी विचारों में दिल्ली में बात चल होगी । अभाव में बक-बक सुचारु हों, चादियों किट टंग से हों, भारत में सुष्ठु-अनुष्ठु मेरु केसे विद्याया वाय, देश में कीवरी चिकित्सा पदार्थ खारुण को भाय, हिन्दुस्तान में किस भाग का प्रचलन हो, विनोवा किट टंग से बले आदि जीवन के सभी विचारों में दिल्ली में योजना तय होगी । अगर हम हदनी अधिक सत्ता केन्द्र को सौते हैं, तो सारा जन-सुष्ठुपण्य पराधीन हो जाये है, अभाव बन जाता है । इसलिए दिल्ली की सत्ता ही बन होगी चाहिए ।

हर एक को बिदनी अल्प को बल्लत है, उदनी अल्प रत्नेसर में बाँटे ही और अब वह खीर-सुख में धुप करता है । अगर उलने सारी अल्प का प्रभाव अपने पाव रखा होता, तो वह पनीन-पनीन हो जाता । पल्लु उलने मनुष्य और प्राणियों को बुद्धि दे ही । इसवे वह इतना लक्ष्य रखता है कि कुछ लोग कहते हैं कि वह दे ही नहीं । सर्वोपरि सत्ता का यही लक्ष्य है कि उलक सामूहिक विभाजन होय है । सर्वोपरि सत्ता

बरी होती है, बिचने शर में हमें सफा हो कि कोई सत्ता चलवा दे या नहीं । हमें भी यह शंका होगी चाहिए कि दिल्ली में कोई राज्य चलय रहा है या नहीं । भरने गौं का मरोचनार हो हम ही हैलने की मरोचनार सहा हल परमेवारीय सफा का अनुष्ठुपण्य करने बालों होगी चाहिए । उलने बदले में शरीर-की-नारी सहा हल केन्द्र के हाथ में सार देते हैं । अतः हमें आहोरे कि केन्द्र पर हमारा प्रभाव पने

शक्ति का स्रोत हृदय में

सुष्ठुपण्य प्राप्त हुए विनोद शाह होयने, निर भी लोग कहते हैं कि सरकार ने यह नहीं किया, यह नहीं किया । मैं उनवे पूछता हूँ कि अगर सर्वोपरि का सुष्ठुपण्य । अगर शरते हैं, तो क्या अगर यह चाहते हैं कि अपने गौं की शारीक का इतनात्म सरकार करे, आपने गौं की सहाई सरकार करे । आपने गौं के सारे काम सरकार करे । आदर सरकार क्या चीज है ?

जो काम परमेस्वर नहीं कर सकता, क्या वह सरकार कर सकती ? परमेस्वर चाहिए देखा है, पर विरिं बारिप से फलक नहीं उगती, पाठ उग सकती है । जब क्रिजान परिमन्न करता है, बरती पर अमना पचीना गलगा है, तभी फलक उगती है । इस तरह जब परमेस्वर ही फलक नहीं उगा सकता, तो क्या सरकार उगा सकती है ?

रोड़ सकता है ? हवी तरह आपको निवृत्त समय वह छोपना कि धन और भरतो दुवरे के पाठ घुँचने में ही हत्यार करणाग और मंगल है, तो घुँचाने में आरंभ हाय कोन रोड़ने पाय है ? यह सब समझने की बात है ।

साहित्य-परिचय

विनोवा का सान्निध्य

पुठ-सुष्ठुपण्य १२००, मूल्य दो बाय, प्रकाशक-करणाया माथी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट, बसुष्टुपण्य, इन्दौर (म० प्र०) ।

सिष्ठे शाह विनोवाजी ने अपनी सवत चलने वाली-यात्रा को गंग कर इन्दौर । एक भदानी सरोदयनगर बने है । सिष्ठे यात्रा । उलके इन्दौर जाने का एक प्रमुत्त आवर्णन यह नी था कि इन्दौर के नवरीक माया फरुष्टुय के नाम से बगाना हुआ एक केन्द्र है,

यहाँ से सारे भारत में फरुष्टुय का वाम चलयता जाता है । इन्दौर-प्रवास के बाद २५ अगस्त से ३१ अगस्त तक विनोदक फरुष्टुय-यात्रा में रहे । इस अवसर पर सवत के विभिन्न फरुष्टुय-यत्रियों में भाग करने वाली सुष्ठु प्रमुत्त बरने भी फरुष्टुय-यात्रा भागी थीं । विनोद ने विविध प्रशंसा को लेकर यहाँ पर २२ अगस्त दिने थे । सिष्ठे शर के गीय में सान्निध्य सार खो-दुष्टियों-बर्दियों, भो, पाथी, सुष्टु, मे, य, सुष्टु, सुया-पर प्रतिदिन प्रकचन किने । यह सुधी नी बात है कि फरुष्टुय टस्ट के

कार्यकर्ताओं में विनोवा के साहित्य का जो ध्यान उदयना था, वह "विनोवा का साहित्य" पुस्तिका में प्रकाशित कर अन्य लोगों को भी अल्पसुष्ठुय के उद्यम दिखार । सुलक अर्थव है । इसमें प्रबन्तों के अलावा संमरण, विचारमंजन और आगे के लिने पने सुवर्ध भी दिने गये । देश की हर बापल परिचर्य के लिए यह सुष्ठुपण्य उपरोगी है । विनोदः महिल-सामाजिक कार्यकर्ताओं को यह सुष्ठुपण्य उदयन पदनी चाहिए । जैसे आज भी वे संवगापारण पाठकों में अन्य कार्यकर्ताओं के लिए भी सुष्ठुपण्य उपरोगी है ।

-मणोरु कुमार

राष्ट्रीय एकता और भाषाओं की समस्या

पं० सुन्दरलाल

[भाषा देश में राष्ट्रियों की समस्या का प्रथम घनत्व के रूप में उभरा है। भाषा का यह प्रबल सम्बन्ध बलत लयालों और रिश्ताओं से पैदा हुआ है। एशिया मुस्लिम-सालतों में भाषा की समस्या पर गहराई से विचार किया है। भाषा साधन है, न कि साध्य। न कोई भाषा परिवर्तित है और न कोई अस्तित्व है। भाषा का कोई रूप स्थायी नहीं है, वह निरन्तर परिवर्तनशील है। भाषाओं के आदान-प्रदान से मानवीय संस्कृति का स्तर उंचा उठता है और महाभाषाओं में इनकी से मानवता की सुनिवार हितमें लायी है। इस संबंध में अमर हंस आचार्य के प्रबल की शब्दों, जो हमारा विचारधारा हैं कि देश भाषाओं के अभाव, अन्धता देश में व्याप्त कराया जा यह उपाय राष्ट्रिय एकता की घनत्व है ही रहा है, देश इतने विचार-विनिर्दिष्ट हो जायगा; सुन्दरलालों का यह लेख दिल्ली से प्रकाशित 'राज्य लेखक' के 'राष्ट्रीय एकता विचारों', मूल्य ११.६१ से साधारण रूप से प्राप्त किया जा रहा है। —सुन्दरलाल]

अनुभव और समाज के जीवन में कोई-कोई समय ऐसे घमभीर आ जाते हैं कि किसी भी जादूओं के लिये बाबू से यह कह सकना कि परिस्थिति का बदला ही हलका है, बहुत ही मुश्किल हो जाता है। हमें आपकी सबसे दोष लेने का हक है, बिना सबकी मुन लेने के बाद कन्त में हर आदमी को अपने कर्तव्य का फलता या तो अपनी अन्तरात्मा की आवाज के अनुसार खुद बचना चाहिए और वा अपने सर्व-स्वीकृत नतीजा भी बनाया के अनुकूल।

हमें भाषा या क्लान के संघर्ष पर पहले उभरी निगाह से कुछ विचार कर लेना चाहिए। पहली बात हमें यह समझ लेनी चाहिए कि भाषा कोई साध्य नहीं है, वह केवल एक साधन ही। कोई भाषा इन्सानी जिनगी का साध्य नहीं होती। वह जिसकी सहायता एक पूँजे के का केवल एक परिवारा होती है। हस्त्य यह है। क हम अपने विचार या भाषा देकर-दूसरे तक पहुंचा सकते। अहाँ जिस परिस्थिति में जो भाषा इस काम के लिए अधिक सुविधाजनक हो, वही उस समय सबसे उपयुक्त और सफल है। भाषा कोई देवी नहीं है, जिसे हम खुद बना कर पूजे। वह हमारे कपड़ों, हमारे हाथ की लकड़ों, हमारे परों और हमारे धारों दिन की बरतने की चीजों की तरह केवल एक हथियार है, जो जिस समय काम दे पाये।

विभिन्न भाषाओं की स्थिति दूसरी यह है कि तुलना की कोई भाषा ऐसी नहीं है, जिसके भी अन्तर कर शब्द और सुझावों अनेक दूसरी भाषाओं के न लिये हों। प्रकृत राजनीति के स्थायक, मरे एक दिन १० भाषायंत्र विचारकर्म में अपनी एक सुरतक में दिए गए हैं कि शब्दों की भाषा के अन्तर सैकड़ों शब्द उस समय की किसी और सुनीरे भाषाओं के लिये हुए हैं। एक ओर संस्कृत विद्वानों ने एक बार लिखा था कि संस्कृत संवर्धित-शब्दों में अनेक शब्द अपनी के लिये हुए मिले हैं। एक बार कायकल लकी डोगी लिखी कहते हैं, उसके अधिक गंगा-जमुनी के प्रायः ही तुलिया की शब्दों द्वारा बनाया है। हमारा 'वर्ण' और 'शब्दों' दोनों दुर्बल हैं। 'हल्का' शुद्ध आगे है। 'अन्तः', 'अन्तः', 'दुर्बल' और 'कलापक' का इतना ही। आजकल के 'पद्म', 'कोट', 'पद्म', 'पार्श्व', 'पुष्प', 'टिप्पण', 'पिंड', 'किन्तु' इत्यादि उन शब्दों में हैं। एक बड़े दामे तक यह गंगा-जमुनी में ही हम भाषा का शब्दों में निराला है। इस गंगा-जमुनी-पद्म को शब्दों की कोशिका कायक के प्रकृत को आधारक, वेद को वागधान, और टिप्पण को प्रयोगक बहान न केवल भाषा का सहायक बनाए, बल्कि जनता की कठिनाईयों को भी स्वयं में दूर देता और पालन करता। बाबियों भाषा की एकदम की उनी आग किसी भी विप्लव-जुले को उठा लेता, आपको उनमें लम्बा बह कर एक के अनेक रूप तुलिया की दूसरी भाषाओं और विशेषकर भारतीय भाषाओं के मिले।

तुलिया की भाषाएँ इस तरह एक-दूसरे के शब्द और सुझावों लेकर अपने को भी प्राप्त करती रही हैं और साथ-साथ मानव-जातों के उन भावों रखने की ओर भी संकेत करती रहीं हैं, जिस समय पर पहुँच कर हुए दिन लखी बहान-एकता की एक निराली-मुक्त संस्कृति का वास्तव-संस्कृति को साधन बनने का शुभ-संभव देखा रहे है।

दूसरी बात यह है कि तुलिया की ओर हमारे लाने हैं। एक, किंचित भाषा का बहुरी भाषाओं में अधिक परिवर्तन प्राप्त आता और शुद्ध, अन्ध-अन्ध लोके के लिए एक भाषा को अपनी भाषा, और दूसरी भाषाओं को पर-अन्ध समझता।

हम एक समय से आँप खद नहीं कर सकते कि तुलिया में इस समय अनेक धर्म बरबर हैं। हर पक्ष वालों के अपने-अपने धार्मिक ग्रन्थ हैं। वे ग्रन्थ दुर्बली और पर अन्ध भाषाओं में हैं।

तुलियाओं के अधिकतर ग्रन्थ संस्कृत भाषा में हैं। कैथियों के ग्रन्थ में, बौद्धों के पदों में 'पारुषीयों के केन्दु पाणी' माध्मनी इतनी में, मुस्लिमों और ईसाईयों के इतनी में, सुद्धलानों के इतनी में, शिखियों के अधिकतर पबानी में, इत्यादि। किसी भी धर्म को भाषा करने जाना जो सुद्धलानों का देश में पैदा हुआ, दुर्बली और पर उन्ने उठ देय की लीने में ही उठ सकता है। एक बार अनेक समय का उच्छेद दिख, जो इन धर्म धर्मों और उच्छ धर्म धर्मों में भाषा की निराला होये हुए भी एक ही की धन के साथ चमक रहा है। यह भी स्वाभाविक है कि हर धर्म वाले अपने निराला में वह भाषा ही लिये वाप परिवर्तित है, जिसके उच्छ धर्म के धायक करने वाले सुद्धलानों से उच्छ सान्त-तन्त का उच्छेद दिख। उच्छ विचारों भाषा से गेन और लयाव होना भी स्वाभाविक है। किन्तु हम लें हर धर्म वाले की हल भाषा का आकर करना चाहिए, लें ज्ञान ही हल का भी धन में रखना चाहिए कि अधिक स्वाभाविक रूप में तुलिया की कोई भाषा किसी दूसरी भाषा से अधिक पवित्र नहीं है।

भाषा की इतनी पवित्र नहीं है। यह भाषाएँ धरती के अन्ध-अन्ध शब्दों में अन्ध-अन्ध शब्दों में एक ही के नियमों के अनुसार पनी हैं और उच्छ धर्म-मान्य की हरि में जो हल सबसे एक सान्त परतरीय, मल्लहल वा ईश्वर है, उच्छ एक संस्कृत है।

भाषा की इतनी पवित्र नहीं है। यह भाषाएँ धरती के अन्ध-अन्ध शब्दों में अन्ध-अन्ध शब्दों में एक ही के नियमों के अनुसार पनी हैं और उच्छ धर्म-मान्य की हरि में जो हल सबसे एक सान्त परतरीय, मल्लहल वा ईश्वर है, उच्छ एक संस्कृत है। भाषा की इतनी पवित्र नहीं है। यह भाषाएँ धरती के अन्ध-अन्ध शब्दों में अन्ध-अन्ध शब्दों में एक ही के नियमों के अनुसार पनी हैं और उच्छ धर्म-मान्य की हरि में जो हल सबसे एक सान्त परतरीय, मल्लहल वा ईश्वर है, उच्छ एक संस्कृत है।

तीसरी बात यह है कि तुलिया की ओर हमारे लाने हैं। एक, किंचित भाषा का बहुरी भाषाओं में अधिक परिवर्तन प्राप्त आता और शुद्ध, अन्ध-अन्ध लोके के लिए एक भाषा को अपनी भाषा, और दूसरी भाषाओं को पर-अन्ध समझता।

हम एक समय से आँप खद नहीं कर सकते कि तुलिया में इस समय अनेक धर्म बरबर हैं। हर पक्ष वालों के अपने-अपने धार्मिक ग्रन्थ हैं। वे ग्रन्थ दुर्बली और पर अन्ध भाषाओं में हैं।

तुलियाओं के अधिकतर ग्रन्थ संस्कृत भाषा में हैं। कैथियों के ग्रन्थ में, बौद्धों के पदों में 'पारुषीयों के केन्दु पाणी' माध्मनी इतनी में, मुस्लिमों और ईसाईयों के इतनी में, सुद्धलानों के इतनी में, शिखियों के अधिकतर पबानी में, इत्यादि। किसी भी धर्म को भाषा करने जाना जो सुद्धलानों का देश में पैदा हुआ, दुर्बली और पर उन्ने उठ देय की लीने में ही उठ सकता है। एक बार अनेक समय का उच्छेद दिख, जो इन धर्म धर्मों और उच्छ धर्म धर्मों में भाषा की निराला होये हुए भी एक ही की धन के साथ चमक रहा है। यह भी स्वाभाविक है कि हर धर्म वाले अपने निराला में वह भाषा ही लिये वाप परिवर्तित है, जिसके उच्छ धर्म के धायक करने वाले सुद्धलानों से उच्छ सान्त-तन्त का उच्छेद दिख। उच्छ विचारों भाषा से गेन और लयाव होना भी स्वाभाविक है। किन्तु हम लें हर धर्म वाले की हल भाषा का आकर करना चाहिए, लें ज्ञान ही हल का भी धन में रखना चाहिए कि अधिक स्वाभाविक रूप में तुलिया की कोई भाषा किसी दूसरी भाषा से अधिक पवित्र नहीं है।

भाषा की इतनी पवित्र नहीं है। यह भाषाएँ धरती के अन्ध-अन्ध शब्दों में अन्ध-अन्ध शब्दों में एक ही के नियमों के अनुसार पनी हैं और उच्छ धर्म-मान्य की हरि में जो हल सबसे एक सान्त परतरीय, मल्लहल वा ईश्वर है, उच्छ एक संस्कृत है।

हम क्या चाहते हैं और क्या करना चाहिए ?

रमावल्लभ चतुर्वेदी

इस वर्ष की ३० नववरी से हम अपने गाँव की कलाली पर 'पिकेटिंग' कर रहे हैं। पिकेटिंग यानी घरना या बिनोवा के घन्टो में निरोधन करना। कलाली से बोझा हट कर एक सुभते की जगह पर खड़े होकर कलाली में पारवा या पाना पीने जाने वालों से हाथ जोड़ कर विनय करते हैं कि भगवान का नाम लेकर नश पाना छोड़ दो। इससे धन, धर्म, इज्जत, बाल-बच्चे, देव, समाज सब चौपट होते हैं। इसलिए सचटो मलाई के लिये नश पाना छोड़ो। बहुत से धर्मपरायण श्रमिक विनय मुनते ही छोड़ जाते हैं। कुछ बोझी-सो बात कर लोते हैं। पर कुछ ऐसे भी होते हैं, जो किसी भी हथवाड़ बिये बिना पीते ही हैं। ऐसे लोगों को हम प्रनामविनयुक्त हाथ सेते हैं।

पीय-नीच में हम धारा देने वाले काल्ड से भी हाथ जोड़ कर निरोधन करते हैं कि यह दारुण का पेय है, इसे छोड़ दो। दुनिया की बहर मिलना छोड़ दो। यह देना देव, समाज और मानव-दोषी है। हमने काल्ड-रुपेया से भी हाथ जोड़ कर निरोधन किया कि अण्डरलोरी स्ट्राना नैतिक और बालूनी छी से भी आपदा काम नहीं है। आपदा काय है इस बलु का नाबाचर व्यापार रोचना।

सन्धी बात यह है कि हमारी विनय न सो पीने वाले या देने वाले मुनते हैं और न बलाधी-अपहर ही। सब दिखाने से दुरु से हमारे सामने नहीं पते, यह दुसरी बात है। वे लोग हमारी बाल मुनते ऐसी आशा भी हमें कभी करना चाहिए, क्योंकि

ओ हमारी सफार कला रहे है, ओ सपारा के मकनीत माने बाते है, जिनके बारे में भान मिल जाता है कि वे सपारा के सत्थेय प्रतिक्रिया हैं, ओ गांधीजी के साथ उल्लंघन में ओर उनके कार्रवा होने का दावा करते हैं, ओर मान भी उनके काम नाम की दुहाई देते हैं, वे भी हमारी विनय नहीं मुनते हैं। मुनना तो दूर रहा वच भी उत्तर नहीं देते।

सब एक कलली कायम रहेगी, तब तक पीने वालों को यह दुहायी ही रहेगी। और तब तक नहीं चाहें नर भी पीने वाले पीते ही रहेंगे। पीना उनसे छूट नहीं सकता। दुहाइन सौल कर पीने वालों की उदाय देना कि सब पीओ, उस अयोधी कलवात को चरितार्थ करना है, विलंबा अर्थ है "बोदे के अंगे गांधी रखवा।" इसलिए गांधीजी ने २५-५३ के 'हरिनय' में एकदम सही लिखा था कि "अब तक रायच बांधपी की रायच पीने की इच्छा नहीं नहीं, बल्कि सुविधा भी देवा रहेगा, तब तक सुधारणों को सफाई मिलना एगाम्य अर्थम है।"

श्रद्धालु अगर देव से शयसक्तोरी मिटाती हो तो हमें सब्ज काम मानूँ से नशापन्दी करनी ही होगी। यही गांधीजी को भी याद है।
"बहुत से लोग हमें विकारप्रद करते हैं कि बलाधी वच धना देकर हम सत्कार को नीचा दिखाना चाहते हैं। हम इस बात से पूरी तरह दूर रह करते हैं। गांधीजी का काम करने वाला किसी को नीचा

दिखाने का काम कर ही नहीं सकता। गांधी-विचार का मानने वाला अपने घाउ को भी सँदे कीर्त उपवर्णित 'चाउ ही' नीचा दिखाने नहीं चाहता। वह अपने उस अर्थपूर्ण का भी समान चाहता है। हमने लिखा के कुछ सभो को एक वच में दिखाना भी कि नशापन्दी करने में मान (पेरिटर) बाचक न हो, क्योंकि इस मानते है कि नशापन्दी करने से ही सफार को प्रस्ता बढ़ेगी। "हवाले की नायक आमदानी" से सज्जा करने वाले सरदार का निर दिन-दिन नीचे गिरता है। हम चाहते है कि सरकार का विर अँसा हो, उनको प्रस्ता बढ़े। हसीलिये-गणक्य में परी दुई सरकार को शिष के नाते क्या रहे है कि यह पूरी नशापन्दी कर डाले।
स्वभाव होने के हो संघ बाद एक

आरत में अंधेरी शयच बाव था। आरत में भी आदि विचार उसी रायच की शयच केर रायचक चलते थे, पर २५५० की २६ की जनवरी से हम सर्वदंग स्वतंत्र हैं। अब हम किसी रायच के आंधी नहीं रहे। हमारा एक अधिपति है। हम उसी के आंधी रहे। अग्रणी, मंत्री और सभी विचारक उसी अधिपति की सपराधी की शयच सेते हैं। वेहते कहा जाता था कि रायच की दृष्टा ही कामू रहे। पर अब धनूना ही हमारा रायचकेर है।

हमारे अधिपति के विदेशवासक मित्राल को ५० भी धारा में लिखा है कि "The State shall endeavor to hang about prohibition of the consumption except for medicinal purposes of intoxicating drinks and drugs which are injurious to health"-अर्थात् "स्वरायच के लिये हानि-प्रद नशीबे से ओ प्रवृत्तों का दस के अधिपति अन्य उपयोग शय रोचना है।"
हम चाहते हैं कि हमारे देव की सत्कार संविधान की दूध पियन इच्छा का समान करे और पूरी नशापन्दी अपने अर्थम करे। हम यह भी मानते हैं कि जो

सत्कार संविधान की दूध सार के अग्रक नहीं कर रही है, वे संविधान का मानन और अपराध कर रही है। हम चाहते है कि सत्कार संविधान के अग्रक चले।

भारत की केंद्रीय और विहार सरकार ने भी अपनी-अपनी एक नशापन्दी कमेटी बना ही है। इन कमेटीयों का निर्माण कर सरकारों ने क्या-क्या को बनी ओपिब मीरि को इच्छा किया है? पर हमें यह बल रहो है अनीति की दृष्ट पर ही। हम चाहते है कि सत्कार अपनी सौपी नीति के अग्रक चले और पूरी नशापन्दी के लिये हदयगत करे। इसलिए हम चाहते है कि विहार सरकार 'मानवप्रदण पदवि के काम करे।

लार्ड माउण्टबेटन ने ओपिब लिख किया कि अपरेड १९४५ की १५ की अगली को भारत छोड़ दोगे। उसी साल की अमेरि राय के लय में उन्होंने भारत छोड़ भी दिया। ओपणा के दिन वे चकर आस्ता के बीच के लिये उन्होंने एक कार्यक्रम सत्ता-हस्तांतरण का काम पूरा करने के लिये बना लिया था। इस बारे में विहार सरकार नशापन्दी के लिये एक पत्रह अगलाही तारीख घोषित कर दे ओर सत्कारों को लिये आरंभ कर भी बना ले कि एक-दूसरे अधिपति हलाकी-हलाकी सचे को दूकानें दुईनी। नरें दूकानें सुलने का ही सवाल भी नहीं होगा। वच सरकार को बने-सान नही करना चाहते। उसके लिये अनुविषय भी देना करना नहीं चाहते। बलविय हम सुल को तारीख सरकार पर ओर नहीं देते है। सरकार को निवनी बाते उसनी और मुनासिब सुलव देने को हम तयार है। हम हदना ही चाहते हैं कि पूरी नशापन्दी की कियेय दोगेले और अंतरीय काल के फायदेम की ओपणा बंद होकर करे। और तो मल्य काम बंद करने आ रही है, उसके निरपरा की सूचना के ओर पर दोगेरी की बलाही डुरल दोगे है।

हमें आशा है, सभी सुदृढ धरमन और सरकार भी हमारी माँग का ओपिब स्वीकार करेगी।

यह युग जनता का युग है, जिते जनतंत्र का युग या जनसुधारित का जनता का युग बनते हैं। आज हर सामो को इत बात का हक है- चाहे वह पूरा हो या धनपू कि वह सामन के सब सामतों की समतो, उन पर अपनी राय कायम करे और अपनी राय का इच्छा करे। हर सामको को हक है कि वह देत भी करवाहरीयों और ध्याया-सतो को कारे-शाधुयों को समत संके; यह तमो हो सकता है, जब हर अर्थव के अर्थव ऊहो तक समथ हो के तारीख का काम, मानन का काम और सत्कारों काय, सब का ही मुकामी आता है।

इस उल्ल को आम सही दुनिया के देसी ने मान रहा है। आजकल भारत की सरकार और हमारा विधान भी इसे स्वीकार कर चुके हैं।

एक बात यह अलग नहीं कि किसी सौध या सचे के लोग सपानी दुकानों माना के कलाया कोई चुकरी माना न लीये, या चुकरी मानाओं के कार्टिक सभानों और उन्हें छोड़ने के कामासिक, वैधानिक या सामनेय पापयों के होने अपाये पूर लें।

कैलाश एक हिन्दी को ही राष्ट्रीय भावा किताब का मुल्य कारण यह है कि देश की सुभसिल आवाजी का सवने बडा भोग रिचो कोलता है और इसके सोमने और समामे वाले देस के हर हिस्से में ब्रह्मात्म से मिल जाते हैं। हिन्दी राष्ट्र-भाषा बन जाने से साथ सामाजिक भी की-बुद्धि न होगी, ऐसा समाना भूष को और पगसुध है। अन्य प्रांतों की एकता भी बड़ी में बालेने में यह हिन्दी लक्षिय का काम करेगी यह निश्चित है।

मलयपुर का सत्याग्रह

मलयपुर (दुर्ग) के भी समाजकामनी सुविध करते हैं। "२० दुहाई से नशापन्दी आन्दोलन की एकदम के लिये एक उप-सम-स्य ५१ दिनों के लिये होने वाला था। परलु मिचो के आहवे से उसकी तिथि आगे बढ़ाने के लिये सोचा-या रहा है। लिये निश्चित होने पर 'भूदान-स्य' की माँग पर आएको सूचना ही बायपी। यह किन्ही के निरोध में भूख-हडताल नहीं है। देव के नमा पूर हो और ठका नमा इस दुहाई की सार किये, इसके लिये यह एक लयक है। इस बल के दरएव सती को नेवल पॉव दिनों का उपवास प्रायःप्रायःक बना है। इस बल में उन्डि होना चाहने वाले भारं हमसे संर्क करते भी दया करे।"

नियोजन और बढ़ती हुई गरीबी

सुरेश राम

मोठे दिन हुए लंबा के एक नवयुवक सामाजिक कार्यकर्ता से मुलाकात हुई। उन्होंने कहा—“हम बचपनी गये थे, लेकिन वहाँ लोगों का दुख व गरीबी देख कर हमसे दिन भर खाना नहीं खाया गया। फिर हम आपके इलाहाबाद आये। वहाँ भी वही के जैसा हाल है। यहाँ हमने खाना तो खाया, क्योंकि बिना खाने कितने दिन रह सकते हैं? अगर हमारी समस्या नहीं आता है कि आपके यहाँ नियोजन के वाक्य उतारना दाखिल करके चल रहा है।”

इतना यह कर उन्होंने अपनी गोल मुँह ली। और फिर बोले—“आपके साथ में प्रमाणन राय है, लोकवादी है। लेकिन अगर यह गरीबी कभी रहेगी, तो क्या यह लोकवादी दिखेगी?”

यह श्रम कर हमने इतना ही कहा—“आप जो कर रहे हैं, वह विद्रुह सब है और यह हमारे सामने एक बहुत बड़ा सवाल है। बड़े भागे सख्त की स्थिति है।”

कोई इमारत देखने में विपत्ती ही थायदा आ लुपत कर्मों न हो, उल्टी मलबूटी लकड़ी और भी गारदों और पोशाकियाँ न निर्भर करती है। अगर यह भी बचपनी और कलसी है तो कुछ ही अंश के अन्दर देखते-देखते सारा किल्ल हट जाएगा। इसी तरह

जिसी देश की उन्नति और विकास का अंश नहीं की जायगा, बड़े-बड़े तगदोर, बाजारों, बसों, होटलों और गाँवघरों की बचक-बचक से नहीं हो सकता; बौद्धिक बर्ग के हुए देहात में उठने वाले जनशक्ति-पेना कोर्णों में उठाने और रणधर्म से कोर्ण अंशालोक का पता चलाना। जिन मजदूरी करने वाले कोर्णों-करोड़ों मार-मर्दानों की मेहनत से हमें और खरे हुए

और है छात्री सामोयोग के कार्य को बाँध दिया में मोहन व संगठित करने में सफल हो सके। जिला, जैसीय तथा प्रांतीय स्तर पर विचार-गोष्ठियों, विचार शक्ति को अग्रसर हुए सर्व में उन्नत होती रहे, यह अति वाजनीय प्रतीत होता है।

पंजाब प्रांत में छात्रों, कृषके माछ तथा निकासी व उद्यमी व्यक्तियों की कीर्ती कभी मद्धुल नहीं होती है।

कान्ती-यमोतोयो को म्प-समाच-कर्म के सतप के रूप में संगठित व व्यवस्थित किया जाय, ऐसी दृष्टि को अपनाये जाने की ओर अधिक आवश्यकता प्रतीत होती है। छात्री के कार्य का मूल्यांकन मात्र उत्पादन और शिक्षा के बढ़ते हुए माँकुर्णों मात्र से नोकर करते नहीं करना होगा, वरन् हमें देखात होगा कि छात्री बहुत सख्त कामों को हावी बन गयी है, हाँ सख्त छात्री कामों, सतत और सहयोग की प्रतीक बनो है और वही सब हमारे जीवन में अविश्व, मंत्र और प्रयोग की भावना को जन्म दे कर सकेगी। इस दृष्टिकोण को सामने रख कर ही हम छात्री का सही मूल्यांकन कर सकते हैं।

को लाने को अत्याच नगरीय सेवा है और कपरा व पर प्रियता है, ये ही हमारे देश के अग्रगण्य हैं। इस स्वयंसे प्रारण के मध्य मध्य की नींव है। लेकिन ऐसे अग्रवर्ग और युवा भी बाव है कि अपने इन गारमों की रक्षा संभालने के बजाय और गिबली खा रही है। हाल ही में प्रकाशित रोशियर मजदूरी की नीचे-मथिलि की रिपोर्टों के देख कर रोंपटे लकड़े हो आते हैं। यह रिपोर्टें सुन ही मजदूरों और कार्मिक है।

भूमिहीनों की दुर्दशा

उद्योगों कायदा गना है कि देश में कुल आठ करोड़ परिवार हैं, जिनमें एक करोड़ को कुछ फल भी छात्री में रहते हैं और बाँधे हुए गरीबों के कुछ ऊपर देताओं में। इन लाखों के करोड़ में देहू करोड़ परिवार ऐसे हैं, जिनके पास बसित भर भी जमीन पेशी नहीं है। उनमें अकाल भी दुखों की बमोना पर हैं। वे पलटन भूमिहीन और निराधार हैं। इस भी कुछ आमादी की दृष्टि के विचार करें तो सारे में उन्नत-मान तीन लाख इनकी तागदोर है।

बाहिर है कि इन भूमिहीन मार-मर्दानों के पल्ले के बल पर इन खकों रोटी मिल रही है। अगर इनकी हालत क्या है? उस छात्रीय रिपोर्टें का अंश है कि वहाँ १९५०-५१ में इनकी औसत सालाना आय कमी ६० १०५.०० थी, वहाँ १९५१-५२ में केवल ६० १५० रु. बढ़ गयी १५१ रुपे पैसे रोच, पाँच अगने से भी कम। देखने की बात यह है कि कुछ देश की प्रति व्यक्ति औसत आय कमी ६० २१६.५० है, मार इनकी है ६० १५५.५० यानी लगभग एक तिहाई मात्र।

बुर और गहरे उल्लेख तो पचा चलता है कि हालत वही थायदा मयानक है। ‘भूमिहीन नमूदा यदों’ ने कुछ दिन पहले एक जॉर्नल की भी। परिणामस्वरूप उनको भी अतिरिक्त प्रकाशित किन्हीं हैं, वे अत्यन्त विश्वसनीय हैं। उनके अनुसार

देश के दो करोड़ लोगों की औसत आय कमी ५२ है।

चार करोड़ लोगों की औसत आय कमी लगभग ५० है।

एक करोड़ लोगों की औसत आय कमी लगभग ५० है।

आठ करोड़ लोगों की औसत आय कमी लगभग ५० है।

दस करोड़ लोगों की औसत आय कमी लगभग ५० है।

और देश के औसत करोड़ लोगों की औसत आय कमी लगभग ५० है।

यह है उन्नत विधा। भूमिहीन-भूमि चान कहर-देहात छात्री आमादी को लेते हैं तो अपने बीच करोड़ मार-मर्दान ऐसे हैं, जिनकी आठ अगने रोच भी मशीन नहीं होते। ऊपर से यह रिपोर्टें सुन तो छात्रीय मजदूरों और कार्मिकों की लेखवादी और वहाँ का समाजवाद।

बढ़ती हुई गरीबी

देश के नियोजन को दृष्ट रख दो गये। इस दौरान में देश की कुल आय-दानी बढ़ी है। तरफ-तरफ के फल-फारातने छो और रस पूरा रहे हैं। लेकिन हमारे रोशियर मजदूर मारदों की हालत काय-के बहार रोती वा रही रिपोर्टें हैं। उस रिपोर्टें में १९५०-५१ में ४०५ दिन काम मिल जाय था, उसके सुधारके में १९५१-५२ में केवल २१० दिन काम मिल। यानी ५३५ दिन से बढ़कर १२८ दिन हो गयी।

दुखी नीच यह रिपोर्टें कि यदि मजदूरों की मजदूरी का नियाम अग्र १९५०-५१ में १०० था, तो १९५१-५२ में ८८ रह गया। दो आना सख्त विषयद आ गयी। इस तरह मजदूरी कम हो रही है। विस्तार में मजदूरी का अर्थ यह है—

औसत मजदूरी

१९५०-५१ में १९६६-५७ में

सर्द मजदूरी १०५ रु. से ९६ रु. से

औसत मजदूरी १८ रु. से १६ रु. से

छकक मजदूरी ७० रु. से ५३ रु. से

यह है नियोजन का कमाल।

कर्मों भी बढ़ रही हैं।

बुर चीजों के मध्य रहेंगे और कम करने वाले की मजदूरी शिरेषी तो उन पर कर्म का बन्दना सामाजिक ही है। चर्ची चीज इस रिपोर्टें में भी बतायी गयी है। उसका अर्थवा है कि १९५०-५१ में वहाँ ४४.५० प्रतिशत पर कर्मियों पर, वहाँ १९५६-५७ में ६३.५० प्रतिशत पर कर्म-

दार हो गये। और औसत कर्म बने ४० से बढ़ कर ६८ हो गया। और कुछ कर्म आशी कपडे कपडे से बढ़कर अग्रम देहू भी कपडे बने हो गया।

विल देश में साठ प्रतिशत से अधिक घर कर्म से लदे हैं, यह कभी सोची कबल से छात्री क्या है? हमारा देश भाग्यदा नहर है, लेकिन ये अर्द्धक्री शोच रहे हैं कि गुलाब घरों का मयार देय है।

सखते ज्यादा दिल दूरने वाली यह इस रिपोर्टें में यह है कि उन्नत लायने कम उन्नत में मजदूरी करने वाले छात्री की तागदोर वहाँ १९५०-५१ में ५.५ प्रतिशत थी, १९५६-५७ में ७.७ प्रतिशत हो गयी। उन्नत गुनी थायदा। ऐसी हालत में यह कैसे रिप्टी कूल में जा सकेंगे, कैसे कोई शालीय भेजे। इनके विचारों का काय कला हमारी गरीबी का प्रयाग उन्नत नहीं तो क्या है?

क्या जन्मा बड़ी है हमने निरोक मजदूरों के पाछ इस विधि का। छात्रा के उन्नत निरा का सवाल रख-रह कर हमें बाद आता है कि क्या यह जरूरत गरीबी के आगे कोई लोकवादी अतिरिक्त काम एक किच सकेगी? जिस हमारे की सुविधाएँ दोलती होती जा रही हैं, उनमें उन्नत की अधिक को किताब ही कर्मों न सगा ले, यह कितने दिन दूर सकेगी।

साधधान!

तोछरी योजना का मरविधा वेगार ही चुका है। उन्नत का आकार अर्थव्यवस्था ही का रही है, लेकिन उन्नत आशी अर्थव्यवस्था को अगर नवरअवस्था बिना काय तो-नीक नहीं होगा। जिनके छात्री में इस्फूर्ति की भागदोर है, उन्हें सब साधधान ही बनाय जायें।

देश के मजदूरी वर कोर्णों के दिन कर्म कोर्णों को मिशरो के साथ यह किचकाय सब क्यों हो सकेगा। क्या वही सतानाया है? यह भी बिगिधत क्यों होगा पचा अजना के घोषण का बायबाय अजोयन है? नहीं, गरीब, यह सतानाया हरविज नहीं है। यह तो ‘विश्वव्यापक’ चल रहा है। सतानाया मयार बाहलें हैं तो उन्नत निरोक उन्नत में नहीं, नीचे से, एकसम नीचे से करता होगा।

दुखी की, अपने ही मार-मर्दानों की वल-उन्नत कर हम सब तक उन्नत रह सकेंगे? अभी प्यार दे नहीं हुई है। इन का कार्य तो अग्रवा है और नियोजन ही इस रिखा को मर-मर्दानों में रहते हैं।

साम्प्रदायिक तत्त्वों से सावधान रहने की आवश्यकता

उत्तर प्रदेश शांति-सेना समिति की बैठक

उत्तर प्रदेश शांति-सेना समिति की एक बैठक में, जो ४ और ५ जुलाई को लगनऊ में हुई, देश की और विशेषकर इस प्रदेश की वर्तमान स्थिति पर विचार-विमर्श के विचार किया गया। समिति ने हाल की राजनीतिक घटनाओं और साम्प्रदायिक हलकों पर अपनी विनता प्रकट की। उसने इस सम्बन्ध में एक प्रस्ताव भी पारित किया है, जिसमें राजनीतिक पक्षों से सावधान रहने की अपील की है, और कहा है कि वे साम्प्रदायिक तथ्या जातीय द्विष्टों का समर्थन न करें, वरना स्थिति पहले के बाबू के बाहर जा सकती है, और उससे भयानक परिणाम उठाने का भी डर है। यह प्रस्ताव इस प्रकार है :

“उत्तर प्रदेश शांति सेना समिति की यह बैठक देश की और विशेषकर इस प्रांत की हाल की राजनीतिक घटनाओं और साम्प्रदायिक स्थितियों पर अपनी विनता प्रकट करती है। आज सामाजिक और राजनीतिक स्थिति अत्यन्त विचित्र हो रही है, और

आंध्र प्रदेश में श्री शंकरराय देव का दौरा

हाल ही में 'शंकर मोक्ष' की समग्र योजना का नवीन संस्करण मुंबई हुए भी संस्करण देश में दक्षिण भारत में व्याप्त हो रहा है। वेल्थ, एलिसाबेथ और नवीन प्रकट में अपने दौरा पूरा किया और १३ जून को आंध्र प्रांत में आये।

आंध्र प्रांत में कल्याण विद्या, जो आंध्रवासी लोगों का केन्द्र माना जाता है, वहाँ १५० आचार्य मिले हैं और वहाँ 'कांठ' का प्रसारण नाम स्वयंसेवक के एक प्रयोग करने के रूप में किया गया है, वहाँ १५ जून के प्रमुख सम्मानित कार्यकर्ता तथा विद्यार्थी नवीन-संस्करण के सभी की भी, शंकरदेवजी ने खादी, भूदान तथा सामाजिक कार्यकर्ताओं के एक 'सिंघार' का आयोजन किया था। समाज सेवा की कार्यकर्ताओं में 'शंकरदेव' के नाम का प्रयोग है।

इस विषय में आंध्रवासीों को नया धर्म का संदेश देते हुए डॉ. अणुपराय देव ने कहा, “आज की बार कार्यकर्ता वैश्विक स्तर पर अथवा भूदान आंदोलन द्वारा ही नये नये कामों को आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। अन्त ही इनको पूर्ण प्रायोजन का संसाधन देकर ही नये नये कामों को आगे बढ़ाने में सफल हो सकते हैं। नौबतों के पहले प्रकाश होगा कि क्या ही के सब लोग मिल कर अपनी सामर्थ्यवश के बारे में सोचने को सक्षम हैं, तो सम्पूर्ण ही तरह की संस्थाओं के लिए आर्थिक सहायता हम ही कर सकते हैं। इसके अलावा वैश्विक आन्दोलन के बारे में आप सोचने में तो आपसे हमारा प्रयास है।”

श्री शंकरराय देव ने वहाँ के मानवानी लोगों का निर्देश किया। आंध्र प्रदेश सर्वोदय मंडल के संतोषक श्री प्रकाशराजी, खादी-समीक्षण के सोनल वारुणकर भी रायचन्द्रजी, आंध्र प्रदेश नवविचार-समिति के सभी और—२६ नाम आंध्र की यात्रा में आने का साथ रहे।

१५ जून को वहाँ के प्रमुख समिति के सम्मानित डॉ. शंकर देव (आंध्र) सर्वोदय मंडल की एक सभा का आयोजन किया गया। श्री शंकरराय देव ने सर्वोदय-संस्था के प्रति दृष्टि, “आंध्र प्रदेश सर्वोदय संस्था में विनता सर्वोदय आंध्र, एक संवत् प्रकाश के साथ में आंध्र आंध्र है। आंध्र संस्था का यह संकल्पना है, जो

सर्वोच्च मानवता तथा साम्प्रदायिक कृपा के उभारने को प्रयत्न कर रहा प्रकट योजना का साथ भी नये नये है। फिर आंध्रवासी युवाओं ने उसे और भी बढ़ाकर बना दिया है, क्योंकि सम्पूर्ण आंध्रवासी बाहर बाहर है कि विभिन्न स्तरों के द्वारा अपना विचार फैलाये।

इस पर मानवात्मा साहित्यिक अर्थों के एक अर्थ के निर्माण आगे के सम्पूर्ण सम्बन्ध स्वीकार और विचारों के नतीजे हो गये हैं। राष्ट्रीय मनोविज्ञान के प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने हाल में दिल्ली में राष्ट्रीय परामर्श के उद्देश्य से एक परिषद की। समार की नवीन-संस्करण वहाँ एक निर्णय उभरने मुक्ति का प्राथमिकता का बन गया। और फिर इनने दिव्य साम्प्रदायिकता की पुन उभार किया और एक नये आन्दोलन उभरने लगे गयी। यह है कि हमारे बीच ऐसे तग, साम्प्रदायिक तथा साहित्यिक स्तरों की उभार है, सिन्धुओं में और सुदूर-प्रान्तों में भी, जो इस तरह के लोगों का अपने मतलब से लिए सुदूर-प्रान्तों में है। इन सब सुदूर प्रान्तों में, मसलों में एक वैसी स्थिति पैदा होने का डर है, जिसके बहुत पाठक परिणाम हो सकते हैं।

इस उद्देश्य में शांति-सेना समिति सम्पूर्ण करती है कि इसे बहुत आग्रहपूर्वक ही करता है। समिति के प्रतिष्ठित अर्थों के प्रतिष्ठित पद्धति में विचारण करने वाले सब राजनीतिक पक्षों से समिति का अनुशीलन है कि वे शांतिमान रहे और प्रकट वा परोक्ष रूप से साम्प्रदायिक अन्तर्गत जातीय अन्धीयताओं को बढ़ाना न दे, जहाँ तो यह ही स्थिति पर छापी होकर उन्हें उनके बाबू के बाहर कर देंगी, और इसके द्वारा प्रका-

शक्ति आर्थिक व मूल्यों की सजा के लिए शोध करने करती है। समिति की जनन से निम्न है कि साम्प्रदायिक पर निर्दिष्ट स्तरों के बच होकर भयानक अंतर्गत नये दोरे और विचार के साथ रहे, आदि मानवीय मूल्य सुदूर-प्रान्तों में। अन्त में सर्वोदय-प्रान्त-कार्यों और शांति-समिति के समिति का आग्रह है कि इस सम्बन्ध में बूने तरह चौकसे रहे, लगान और निष्ठा से इन तरह बचाने के लिए, अन्त में इन सुदूर-प्रान्तों और सुदूर-प्रान्तों के बीच अन्तर्गत और सुदूर-प्रान्तों के बीच अन्तर्गत के लिए अन्तों को विचार रहें।

शांति-सेना समिति में प्रस्ताव में यह भी प्रकट होता है कि शांति-सेना और सर्वोदय का सम्पूर्ण लक्ष्य शांति पैदा करने का है। यह शांति दृष्टि शांति और राज-शांति, दोनों से मिलनी चाहिए। इस तीसरी शांति के द्वारा ही लोग अपनी समस्याओं को सुदूर ही शांतिमान और अन्तर्गत इन से हल कर सकते हैं। शांति को यह देल कर दुःख दुःख का रचनात्मक कार्यकर्ताओं में एक प्रकट दिशा आ रही है कि वे सरकारी सुदूर-प्रान्तों अपना संपत्तियों का अन्तर्गत छोड़ें और अपने को सरकारी मंत्रित कार्यकर्ता में हल लेते हैं। वे कार्यक्रम सुदूर दृष्टि एक सम्बन्धित को होते हैं, लेकिन जनता में अन्त पैदा होकर ही और अन्तर्गत तीसरी शांति को सब भी नहीं मिलता है। इस शांति शांति-सेना पर विशेष किन्हीं तरीकों आ जाती है कि वे वहाँ प्रकटों के प्रति शांतिमान रहे और विनोदों के नये नये कार्य में आने वाली रहे।

आगे के काम के सम्बन्ध में शांति सेना समिति ने निर्णय किया कि आन्त के शांति-समिति को एक नये आचार्य ११ लिटरमन्त १९६१ को 'विनोद वसन्त' के अन्तर्गत पर प्रकाश में की जाए। अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत शांति-सेना सचालक भी प्रकट व जनोदयी करेंगे। प्राय में निर्माण शांति पर शांति पैदा विचार करने का भी तय किया गया।

(छठे भाग में)

उपरोक्त के नतीजे हैं। इसका प्रकट नये के कारणों को दूर करने से है। देश के सम्बन्धित विचारण एक सुदूर अर्थ पर होना चाहिए कि इस प्रकार एक सभ्य सभ्य सभ्य है होनेवाली विचारण सृष्टि के जो स्तर के लिए देश में भी बढ़ किने जायें।

एक और देश में सम्पत्ति को बढ़ाने का प्रयत्न करना रहे, लेकिन इसके तरीकों से उत्कर्ष को शांति होनी चाहती है, अन्त में अन्तर्गत का अन्तर्गत विचारण को विकास में बारी प्रकट विचारण में बढ़ने वाले हैं। अन्त

सामान्य बुद्धि तो यह कहती है कि निर्दिष्ट योजना का काम करने होना चाहिए।

मोसम का खिलवाड़

सामान्य का एक लक्षण यह है कि अभी हमारे महीने के शुरू में, जो अन्तर्गत के लिए अन्तर्गत के दिन हैं, उन्हीं हवाओं का प्रवेश होना आता कि एकजो गये और हवाओं अन्तर्गत आदि पत्र हलकों के साथ मर गये। आरम्भ की तरह मसलों की नवी-काली अपना अन्तर्गत की देती है।

—सिद्धांत

रायपुर का पोस्टर-विरोधी अभियान

[गत २ जुलाई को रायपुर में अधोमनीय पोस्टरों के खिलाफ जो सत्याग्रह किया गया, उसमें विनोद-स्वयंसेवियों ने सक्रिय विरोध किया। परिणामस्वरूप वातावरण में तनाव था यथा और दैनिक समाचार-पत्रों में कुछ मलटल एवं अतिराजित सचनों प्रकाशित हुई हैं। यहाँ हम सर्वोदय-मंडल, रायपुर के सर्वोदय द्वारा प्राप्त अधिवृत्त विवरण का सार दे रहे हैं, ताकि यहाँ स्थानीय माध्यम हो सकें।]

अभी पिछले दिनों ३० जून '११ को रायपुर में जनता द्वारा पूर्व निर्मित अधोमनीय नागरिक विरोधक समिति ने शहर में चार रंगे एक फ्लिक के पोस्टर को अधोमनीय नगर दिया। निर्वाणक समिति के दूर पीछे का पूर्ण समर्थन नगर के अनेक महिला-सदस्यों ने दिया। सर्वप्रथम २० प्र० सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष श्री रामानंद ठोंडेर और स्थानीय सर्वोदय-मंडल के सचिव श्री हरप्रसाद अग्रवाल ने विनोद-स्वयंसेवियों के और विरोध नेत्र से उक्त विरोधक के मांडिक से संघर्ष किया तथा उनको हमसाथ कि वे उक्त पोस्टर को हटा दें। किन्तु उन्होंने ऐसा करने से इंकार किया।

परिणामस्वरूप सर्वोदय-मंडल ने २४ घंटे की अवधि में अंतर पोस्टर नहीं हटाना है, उस लाभाह्न कि। चाहेगा, ऐसी प्रस्ताव दी। इस प्रस्ताव की प्रतिक्रिया विनोद-स्वयंसेवियों, बुद्धिम विचार आदि की वी गयी। यहलोक विरोध के मांडिक पोस्टर हटाने को विचार है, किन्तु वह फ्लिक के विपरीत के रूप में ही मानने से इंकार किया। २ जुलाई को भी वने कुछ से दो बने श्रुतक एक साराइय कले सम्बन्धी घोषणा लाउन्डरीकर द्वारा नगर में की गयी। शहर के २०० सर्वोदय-मंडल के सम्बन्ध में रामानंद ठोंडेर के मार्गदर्शन में सत्याग्रही अत्या निकाल, विनोद के द्वारा हटाए गए अग्रवाल, कैपूर भूषण, विनोद कृष्ण से नन्द के सर्वोदय को माल प्रसाद श्रीवास्तव, गल के २५ सर्वोदय और हरप्रसादशिरा, नगर महिला-मंडल की संवेदिना श्रीमती स्वस्वती शर्मा, प्राणगणरा महिला-मंडल की उपसमिति श्रीमती लक्ष्मी कुमारी मिश्रा, श्रीमती हुन्ती नी, लक्ष्मी लक्ष्मी श्री अनादी चरण इन्द्र, नगर के तत्काल मन्त्री मिश्राभाय चरण, उपर्युक्त स्वयंसेवकी श्री धर्माचार शिराजी जैसे प्रतिष्ठित लोग शामिल थे।

सत्याग्रह प्रारम्भ होने के पूर्व विभिन्न संस्थाओं की ओर से भी रामानंद ठोंडेर को शिष्टक समा कर कार्रवाई आदि की गयी। कुछ के बाद बुद्धिम-मंडल की संघर्ष लोच उठा उक्त अधोमनीय पोस्टर को भी हटोनी ने वाद कर सत्याग्रह का आरम्भ किया। फिर कुछ आगे बढ़ा। मालवीय रोड पर विनोद-मंडल का प्रमुख नेत्र शिष्टक माफेंट है। यहाँ पर साहज पर लगे अधोमनीय पोस्टर को बाहिल पोख गया। कुछ आगे बढ़ता गया। साथ में जनता की संस्था भी बढ़ती गयी। साराइ चीफ में दो वनाम होकर पर कुछल रुका। यहाँ पर भी हटोनी ने दूर होकर के मांडिक को धार्मिक रूप से ध्वस्त कर दिया, क्योंकि उन्होंने दूर रायपोल अधोमनीय पोस्टर एक दिन पूरा ही रखा किया था। यहाँ पर विनोद-स्वयंसेवकों के एक प्रतिनिधि भी, जो हुन्ती रोड लगे थे, तब उनको धका दिया और

धुल किया। इन परदे देने वाले के पूरे से अरण की बू आ रही थी। बंदरूपण मोहल्ले के एक मित्र, किन्हीं दुईवी को बचाने का प्रयत्न किया, उसको विनोद-स्वयंसेवियों ने घायली बहक बुद्धिम-मंडल विस्तार करवाया, जिसे बाद में डाक्टर-सिंहल्ले द्वारा निरोध छोटा गया। इसके बाद सत्याग्रहियों वा पर दिखती कल्या अधोमनीय-विरोधी नारे लगाते हुए चरण छोटा।

काशी में सफाई-मजदूरों की हड़ताल

गत २ जुलाई के काशी में सफाई-मजदूरों में हुई थी बड़ाने और महें-बाई मास करने के लिए हड़ताल का। काशी में लगभग दारू हजार मजदूर हैं। हड़ताल को हटाने के चाल रही है। इस समय काशी और आसपास के क्षेत्र में ही का प्रकोप है। इस कारण हड़ताल में विपत्ति नहीं सफाई करने की संभावना थी, किन्तु नागरिकों ने उस प्रकार की संकीचण छोड़ कर अपने-आपने मोहल्लों में सफाई करना प्रारंभ कर दिया।

संयोग को तब है कि एही दिनों २४ जून से १० जून तक से सफाई में भी-शुक्ति शिष्टक चला था और उन्के कुछ बंदरू से ६ जुलाई तक साफवाही करने की संभावना थी। यहाँ पर शिष्टक और बच। शिष्टक के दिनों में हड़ताल रुक, यतः शिष्टकियों और उनके साथ 'स्वच्छ काशी अभियान' के सफाई, 'स्वच्छ शेरक' रूप, गांधी आश्रम, गांधी स्मारक निर्मा, सर्व शेरक और अदि संस्थाओं के कार्रवाईओं ने शहर

की सफाई में नागरिकों को सहयोग दिया। शिष्टकियों ने शिष्टक रोड से सार्वजनिक घोषणाओं की सफाई पर ध्यान दिया। सफाई, मजदूरों, मजदूरों, दामात, अदि स्थानों के १०० मंदानों और १०० नाना-भाषाओं की सफाई साक्षीय संकेत की गयी।

श्री अत्यासह्य पदचक्र ने एक संकल्पना:

"अधोमनीय-नारी करो सफाई साक्षी-मनी भार-मनी।"
 "मानव-मानव एक सत्ता सफाई में बुना एक सत्ता।"
 "विना कर रहना, कलना या बाले हर कलना, धर्म हूना।"
 "सफाई में बुना एक सत्ता हूय तब हूँ मनु-सत्ता।"

दो धरों के लिए काशी में भी-शुक्ति का नाम करने के लिए दूर पोष मजदूरों ने नाम दिये हैं: (१) श्री गजलक्ष्मी, (२) श्री सत्यवती, (३) श्री कामेश्वरदास, (४) श्री भी-शुक्ति शिष्टक और (५) श्री रामचन्द्र शिष्टक। इनके अलावा सफाया केन्द्र, काशी के भी-शुक्ति मंदिर में भी अत्यासह्य पदचक्रों को चरण दिया कि।

"हजार तब दो काशी में सफाई के लिए समय नहीं निकाल सका था, पर अत्यंत धृष्टतामय के प्रेरण प्राप्त काशी में भी-शुक्ति के लिए साक्ष्य निरूपण समय दिया करनी।" हड़ताल जारी है। नगर-आशाशिरा में हड़तालियों को हड़ताल और उनके शिष्टक-स्वयंसेवकों के नाम डरक किया। शहर में धारा १४४ लगा दी गयी है। ता० १५ को सफाई-मजदूरों १४४ धारा का पैग चला करके कुछल निवाला। परिणामस्वरूप ६५० सफाई-मजदूर शिष्टक हुए। इनमें छोटे-छोटे सहित शिष्टकों में एक। शिष्टक न बड़ों की संस्था लागत एक हजार चला बड़ गयी है। शिष्टक ने तथा मोह किया। इस संकेत यह चाहे हैं कि हड़ताल शिष्टकों के लक्ष्य हो जाने।

—अलखनारायण,

हस्त अंक में

सत्याग्रह की नीमाता १
 सत्याग्रहिक पत्र-नामके २
 निष्काय लेख की मिसलके ३
 टिप्पणियों ४
 विरोध के विचार ५
 श्रुद्धि पत्रका और अधोमनीय की समस्या ६
 धारा-१-४ के लिए संचय कला चाहिए ७
 ध्वज मानव के सारी के कार्य पर थक टाँट ८
 सत्याग्रह-उत्तरक शक्ति की कहानी ९
 निरोधन और बहती हुई गयी- १०
 प्रस्तावना का शिष्टकान दी यह को बच सकता है ११
 अत्यासह्य-व्यनाएँ १२

१ राधा परमाश्रमिणी,
 २ सिद्धचर
 ३ विनोद
 ४ सिद्धचर
 ५ विनोद
 ६ सुन्दरलाल
 ७ रामचन्द्र चतुर्वेदी
 ८ लखीचन्द्र दुई
 ९ श्री-अधुना माल-कल्याण
 १० सुदेश राय
 ११ विनोद मायक
 १२ १-१२

मैत्री, विनोद सर्वोदय-मंडल, धारागढ़

बड़ोदा में सर्वोदय-शिष्टक

गुजरात सर्वोदय-मंडल के तलाबपत्र में दिनांक ९ से १२ जुलाई तक गुजरात सर्वोदय के सर्वोदय-कार्यकर्ताओं का एक सर्वोदय-सचिव शिष्टक चरण हुआ। इस अन्तर में भी सारा परमाश्रमिणी का भार्यद्वान् उपलब्धनीय है। ११ जुलाई को भी परमाश्रमिणी की अल्पकाल में मादेशिक गुजरात सर्वोदय-सम्मेलन भी हुआ।

[चिन्तित अंक में बताया है सत्याग्रह उद्यम कि साध्याय जीवन का नियम है जवना प्रतिहार की पद्धति है, और जवना विना कि सत्याग्रह जीवन को विकसित का साधन है और अतिकार है, तो केवल मूल्य ही प्रतिहार है, न कि पुराई करने वाले के साथ । यह सत्याग्रह ही मूल प्रथम है । इसी बात को समझते हुए आपने बताया कि सत्याग्रह न धर्म-मुक्त ही बोर न मुक्त का पर्याय ही है । सत्याग्रह तो कौटुंबिक व्यवस्था है और कृत व्यवस्था का आधार प्रेम ही अन्तर्भावित है । इसलिये सत्याग्रह को अतिव्यक्ति प्रकृत प्रकृतत्वपूर्ण की है, उद्यम की है ।

इस अंक में सत्याग्रह का अर्थ विवेचन करते हुए बताया कि सत्याग्रह प्रतिकार, उद्यम, उपव्रत, उपशम होता क्या जाता है, जब कि सत्याग्रह सोम्य, तीव्र, तीव्र, तीव्र, तीव्र जाता है । इसलिये सत्याग्रह की धर्मको नहीं हो सकती, सत्याग्रह में सत्याग्रह में सत्याग्रह में परमार्थ का जो रिया जाता था। धर्मिय और सत्याग्रह सत्याग्रह-सत्यता को प्रकृत-प्रकृत नहीं करता है, बल्कि उन नियमों की स्थापना करता क्या जाता है, जो सत्याग्रह के अन्तिम अन्तर्भाव हैं। अन्त में आपने इस सत्याग्रह पर विवेचन किया कि क्या सत्याग्रह, अत्यन्त के विरुद्ध सत्याग्रह कर सकता है और सामूहिक सत्याग्रह और व्यक्तिगत सत्याग्रह में क्या अंतर है ?

समस्त प्रतिहार और अतिकार सत्याग्रह की सीमांसा में एक मुख्य अर्थ यह ही है कि जिस के कार्ययुक्त होने के लिये वह उसकी दार्ढ्य है कि जिस का अत्यन्त मुक्त होना चाहिये और वह विपरीत ही होती चाहिये । एक ही बार ही उस बात ही बननी चाहिये । दूसरे बार की आवश्यकता नहीं होती चाहिये ।

सत्याग्रह में हम प्रकार को वास्तव्यता नहीं हो सकती है । सत्याग्रह में जो काल मर्पण होती है, उद्यम उद्वेग इत्यादि की होता है कि एक बार में ही अपने हृदय-परिवर्तन का प्रभाव करता है, अगर भाव नहीं हुआ तो उद्यम प्रकार के द्वारा उद्यम का प्रयोग दूसरी बार करेगा ।

फल-सत्याग्रह का साधन

इस को सत्य की फल-सत्याग्रहों में श्रुत अंतर्गत है । एक फल-सत्याग्रह आरम्भ अर्थ करने की है और दूसरी फल-सत्याग्रह आरंभ जीवन का शिवाय करने की है । प्रथम शिवाय उद्यम हीमा, सत्याग्रह उद्यम प्रभावकारी होता । सत्याग्रह प्रतिहार में प्रेम की संकल्पना की आवश्यकता नहीं है । जिस का बोध भी अभाव विद्या उद्यम होता, उद्यम प्रतिहार में शिवाय होता । प्रेम उद्यम आरंभ नहीं है, वह कोमल साध है । प्रेम कोमल कोमलता के साथ चलता है । विद्ये लिये हमारे मन में प्रेम हो, उद्यमे प्रति हम कभी उद्यम नहीं हो सकते ।

सत्याग्रह का स्वयं

इसलिये सत्याग्रह प्रतिहार के लिये हमें एक मूल बतने हैं कि वह उद्यम, उपव्रत, उपशम होता क्या जाता है और सत्याग्रह सोम्य, तीव्र, तीव्र और तीव्र होता क्या जाता है । सत्याग्रह प्रतिहार को मनुष्य बना लेना चाहता है । तो स्वयं और सत्याग्रह के स्वयं, प्रेम हीमा में निरता अंतर्गत है । सत्याग्रह का स्वयं बतने ही को बतलाने और स्पष्ट होना चाहिये ।

इसलिये सत्याग्रह की धर्मको नहीं हो सकती ।

सत्याग्रह में शारीरिकता कम है सत्याग्रह प्रतिहार में शारीरिक कुशलता और स्वयं निरुपलता का महत्व अधिक होता है । सत्याग्रह में मनोवृत्ति की प्रकृता और बुद्धि की शिवाय का महत्व अधिक होता है । इसलिये सत्याग्रह में भी शक्ति है वह विद्य की और बुद्धि की शक्ति है । दोनों में शक्ति का अन्वयन ही अन्वय-अन्वय ही जाता है । इसलिये सत्याग्रह में शारीरिकता कम है । स्वयं पर शारीरिकता श्रम में परिश्रमिक अर्थ में रख रहा है । शारीरिकता में अभाव, संशय भी आ जाती है । सत्याग्रह में अभाव और श्रमना न महत्त्व कम हो जाता है । शैक्षणिक की दृष्टि से सत्याग्रह का महत्व है । किन्तु रचना अन्वय है, उनसे लिये प्रतिहार का अन्वय साधन महत्त्व कम है । लेकिन श्रम । हम उनसे प्राप्त हुए और बुद्धि का बल है, किन्तु श्रम हीमा और विद्या का शक्ति ही, वेले अन्वय-संकट जैसा के लिये सत्याग्रह-स्वयं रक्षा का नहीं, श्रम-रक्षा का साधन है ।

सत्याग्रह की धर्मको नहीं हो सकती ।

इस सत्याग्रह में श्रमको नहीं हो सकती ।

इस सत्याग्रह में श्रमको नहीं हो सकती ।

इस सत्याग्रह में श्रमको नहीं हो सकती ।

इस सत्याग्रह में श्रमको नहीं हो सकती ।

एक प्रयोग है । इसलिये प्रतिकार की वह किम्वदन्ती नहीं है कि हमें क्या, बल्कि हम ही उद्ये प्रयोग है । यह सत्याग्रह की दूसरी मर्पण है ।

सत्याग्रह और समाज-व्यवस्था

सत्याग्रह की सीमांसा में ही दूसरी ही मर्पण है और यह है कि सत्याग्रह सत्याग्रह-व्यवस्था की नष्ट नहीं करता । अन्त अन्त समाज-व्यवस्था अन्वयारी हो, अन्वय-मूलक हो, कोमल-मूलक हो, दंभ-मूलक हो, तो अन्वय की समाज-व्यवस्था का वह अन्त रहता । लेकिन शिवाय । शारायिक समाज-व्यवस्था की मर्पणों की स्थापना के लिये । इसलिये सत्याग्रह में सामाजिक मर्पण का अर्थ नहीं होता । संशय से ही सामाजिक मर्पण के विरुद्ध एकमत से ही कोई कार्य करना होता है, तो वह कार्य वैधानिक भले ही हो, लेकिन सामाजिक दृष्टि से शुद्ध नहीं होता । प्रेम उद्यम कार्य ही पवित्र नहीं मानेंगे ।

सामूहिक सत्याग्रह और शिवाय

इसी प्रकार सत्याग्रह की श्रम-अर्थ करता है, अन्वय-अन्वय करता है, तो पहले ऐसे कार्य ही अन्वय करता है जो शारायिक नहीं है । लेकिन श्रमको नहीं वा वह अन्वय करता है और शारी की-शारी समाज-व्यवस्था का उद्ये अन्त करना होता है, इस भी वह उन नियमों की स्थापना करता क्या जाता है, जो नियम समाज के अन्तिम अन्तर्भाव हैं ।

सत्याग्रह और श्रम

इस सत्याग्रह में श्रमको नहीं हो सकती ।

इस सत्याग्रह में श्रमको नहीं हो सकती ।

शांति-सैनिक मे. ज. यदुनाथ सिंह

माण्ड्य कुमार

[पिछले साल 'भूदान-यज्ञ' के तहत ब्यापार की बनी यदुनाथ विनोदजी के साथ हदौरे-यात्रा में थे। उस वक़्त वेजट अफ़्क भी यदुनाथ सिंह का देहावसाव हुआ। उसरी प्रथम पुष्पतिथि, २ भारत के विगत यह समारंभ हम यहाँ थदापूर्वक दे रहे हैं। —स०]

पिछले साल अफ़्क की दूसरी हदौरे को जब बाहर से आकर देखा तो विनोदजी के कदमों में एकदम सन्नदा छाया झुका था। सोच पेशों बैठे हुए थे, आंनों की प्रशंसा कर रहे हैं। हूँ बाहरपयें हुआ, क्योंकि वह प्रार्थना का समय नहीं था। इनके में थक सादे ने कहा कि आपने मेरा ही कि नहीं, यदुनाथ सिंहजी का देहान्त हो गया। सुन कर मैं स्तब्ध रह गया!

× × ×

चमल घाटी में प्रेम और शांति के अविधान के घर विनोद उन दिनों हदौरे में थे। अफ़्क घाटी के आधुनिकता की घटना विदुत्वावत का ही नहीं, दुनिया का स्थान आकारित कर चुकी थी।

द्विपान में अहिंसा के चरणों में आत्म-समर्पण विराट, और वह भी स्वेच्छा में। जनरली '६० के दशक में विनोदा कर्मीर में पटनाया कर रहे थे और वहाँ से उनको हदौरे जाना था। निम्न रूप में और देश के विविधता की वे विनोदा से प्रीतिभा की कि वे बरलत घाटी के राहों से हदौरे जायें। "ही बरलत है, अपने आने से कुछ राहत लेगी।" को मिले।" कर्मीर की पहचाना की



विनोदा से पचाँ करतें हुए ही यदुनाथ सिंह

सभामें में दिया था। हदुर उपरैत और द्वारा अविगत सुलक 'चमल के बेहरी' में है।

मेरे हदकव्योता नहीं रहा है कि अवि-दुनाथ के कोन-कोन र्वक मिले, क्योंकि अविदुल लुके रहते थे। कोई भी व्यक्ति ब्याकर उनसे बात कर लेता था।

घाम में दुलित-अधिकारियों में रोनाका कोन कोन अधिकारी बनेर काय रहते थे, उन उरके नाम भी नहीं जानता। सिने की विचरनाय सिंह की देखा है व वे दुलित-अधिकारी हैं। ही-आर्य-की-भी होले व भी कर्मीर की थे। और लेखों के नाम भी नहीं जानता।

दुलित अधिकारी कुछ ही बर्षों में रहते थे व कुछ दुलिया कुलिन की नहीं थे।

अविदुलनाथ दुलित की हदारी पर भी यदुनाथ सिंह के साथ निम्न केल की गये थे। १८ मई १९५० को वेजट, १९ मई को फ़ोटा, २० मई को हदुरा २१ की जेदीतपुर व २२ मई को वे निम्न पहुँचे थे। २२ मई को काय को अवि-दुल निम्न उरके गये थे। वे पौनों स्थान निम्न मिले हैं। निम्न अरकर वे ४८-५० मील थे।

को फिर मेरे सुलक में दिते हैं, उन्हें सिने राय नहीं जानार है। उन समय के कई बर्षों में विच प्रगतिवत हुए हैं व उनका उपरैत ने पर मेरे पर व हीने में अमी नहीं कर उरता।

यदुनाथ ने भी भीविनोद के समक अवसर वहीकर निगा है। हदकी के साथ प्रथमा बाया था, निम्न पर उरका 'बाकी' था, यह उसे हाव नहीं है। ताबू में वह साथ रहा, उससे मेरा वह निम्न नहीं है कि प्रथमा कव्यी था 'बाकी' था।

मेरी को माणवीत अविदुल १, २ व ३ हुई, वह अवसर के साथ भी नहीं थी। को हाँते हुई, वे हाथपर मैं ही हाँते में रहता था, अविदुल ने किसी समयसे मैं वहा दिया तो अविदुल पर। हदकी ने कहा था कि गाँव पर मेरी बागीर है।

अविदुल ने यह नहीं कहा कि मैं गाँव में रहता हूँ व फिर क्या करता हूँ। निर-बागियों ने आत्म-समर्पण किया था, उनमें से कुछ ने राक भी समर्पित किये थे। उनका अविदुल अरकर वे रहते हैं। मेरी सुलक का कर्तिक 'अफ़्क के मेरों में' है, किउ उरकर ताकयें पर नहीं है कि विन बागियों ने आत्म-समर्पण किया वे मेरों में रहते थे।

अविदुलों ने विवर वर ऐसा नहीं कहा कि हम हदकी व यदुनाथ हैं।

अफ़्क के मेरों में : जागियों का आत्म समर्पण : लेनक-भी की गुणदर मरु, महाअफ़्क-अफ़्क आरक वर्य देना काय प्रथाम, हाकवक, काकी। हद ४८०, ५५५ (अविदुल १), अविदुल ३)

अफ़्क उन दिनों मेर वरलत यदुनाथ सिंह कर रहे थे। वे कर्मीर और बम्बू पलिक कर्तिक अविदुल के वे अरकम थे। उनके पहले उनको हदुरा पति के प्रथम अविदुल-अविदुल होने का बीरत मिल चुका था और हाथे पहले उस कर्मीर में पति अरकम के कर्कटियों

बहरत हाथ व हूँ आरभो थे, मित्रों हूँ प्रेम के समस्तता कि मुम लोग गावत राते पर चले गये हों। व हद ठीको हते बीर वरयें विने पर पवतावत करी। उनको हाव हूँ जेव गयो और हदमें तक हद निगा कि हूँ यह हदक रावता होने देंगे। उरके पहले ही हमने कर्मीर कोना भी नहीं था कि मित्रों ने हमारी बहुर करी हमारे हाँते में तोचि उरारो।

यही भारत का कि हाव वरन हदक आर के विनोद ने, रामने समर्पित हुए। यही बात भी यदुनाथ सिंह ने १९ मई को तादे चार बने प्रेम कानरैल में इत जदो में प्रकट की : "दिय हदक आरक-रुप अरक। वे देव वरकरें देस हाँक, नॉद आँकी देअर आरक" "वह मानक-कव्य का गेन है। इहाँमें मे कडल हिय राह, बरिक्त अपने हदक भी समर्पित कर दिने है।" यह है हदकी में आत्मसमर्पण के पंथे यदुनाथ सिंहजी की तराया।

विनोद ने २२ मई को निम्न में आत्म-समर्पण समितियों के समस्तता में कहा, 'घामों के ताक्यों को समस्तता हदकी हूँ कर्मीर को। दुलित की बरुलक में कुछ हदक वरकम कर दिने हूँ तो कुछ तने पैरा भी हदक दिने हूँ। आत्म-समर्पण हदक हिय के समर्पित कर्मीर भी यह वरलता हदक नहीं कर तरता। इससे वरलतक ही अरक वरक जायेंगे। वरलकी एक ही वहा है कि गाँव भी एक वरलकी और वरलक रवता के बरलता हाँक लेना बनता। हमारे वरलत यदुनाथ सिंह तो पहले सैनिक थे। वहाँ हदकी के लिए 'अविदुल-अरक' भी मिल बहुरा है। अब वे हमारे शांति-सैनिक बन गये हैं। विना हाव निय वे वरुको से मिलने जाते हूँ और प्रेम की बला समस्तता हूँ। आरक-समर्पणकर्तों को भी उनको ताहू शांति-सैनिक बन कर गाँव-गाँव में शांति की स्थापना करनी काहिए। कदा! वरक रहता है, वहाँ शांति नहीं रहती। यह प्रेम की ही शक्ति है कि बागियों ने अपने बाग्यों का समर्पण किया।"

और हावतने वरक के प्रथम अवि-दुल होने के नाते २३ मई १० को हदक मेरक कर उनका समस्तता विनोद कर्मीर में विराट।

"आप उत्तम मानव वराने के काम में अरकर रहे रहे हैं। आपने उदरैतों की पूर्ण वरलता की बाधता बरलत हूँ। आपके प्रति यदुनाथनाथ और वरलता प्रकट रहता हूँ।"

× × ×

हम लोग हदौरे में दिने वरलकी पुषप की शर कोर रहे थे। वे विनोद ने मिलने के लिए अरकम के प्रथम हावत में हदौरे आने जाते थे, निम्न मिली की सुठ अरी की बहुरा था। वे तो नहीं आते, निम्न अरकर वे २ अरकर को हदक काय आया कि वे वरक के हदक पते गये।

(२९ हदक १२ पर)

“पहले आप” या “पहले हम” ?

—रघुकुल तिलक

[याज देव मंत्रों के लिए जो आस्थापायी बंध रही हैं, उससे अन्ततः के मन में छत्र पंथा हो गया है कि कब भी हमारे लिए सेवा और त्याग का काम पड़े तो, वे आज सत्ता और दुर्गतों के लिए ब्रह्मसभ में जा रहे हैं। श्री रघुकुल तिलक एक पुराने और पब-निवृत्त ताफ्तारी अधिकाारी हैं। उन्होंने आज की दश परिसरिता का कुरार विचार अपनी विमिश्रित संज्ञा में किया है। उनका बहुमूल्य विचारों के लिए जो दुःखाना नहीं है, किन्तु सही विधि का बर्णन करना है, जिससे समय रहते मनो, समाज-सेवाक और समय सार्वजनिक संस्थाओं में काम करने वाले नेता सबल जायें और “पहले आप” को नीति भी अपनायें। इससे उनके प्रति आम जनता में आदर और विद्वान् पंदा होगा और साथ ही सार्वजनिक जीवन का स्तर भी उंचा उठेगा। —सं.]

लक्षणक का तब-रघुकुल मगहूर है। हर बात में “पहले आप !” दो विधि यदि रेल-यात्रा पर जाते हों तो डिब्बे में पहले कौन बैठे, यही निम्न्य नहीं हो पाता। दोनों झुन-झुक कर बड़े अदब से कहेंगे, “पहले आप !” यहाँ तक की गाड़ी छूट जायगी और ये दोनों स्टेशन पर ही खड़े रह जायेंगे ! इस प्रकार का व्यवहार कमी-कमी हास्यजनक हो जाता है, किन्तु इसके पीछे जो परम्परागत धीरु छिपा है, वह ध्यान देने योग्य है।

साधारण व्यवहार में हम देखते हैं कि यदि दो या अधिक व्यक्ति परस्पर हैं और कोई पाने की चीज खाने सामने आये या किसी स्थान में प्रवेश करना हो अथवा किसी अन्य प्रकार की निम्न्य प्रश्न करने का प्रश्न उठे, “पहले आप !” ऐसे मौकों पर गतिरीय इतिहास नहीं होता कि जो व्यक्ति उग्र या स्वतंत्र में बड़ा होता है, वह पहले करने की वैयार हो जाता है और दूसरे किसी प्रकार का अनौचित्य नहीं माना जाता। गार्बाल देहों में भी ऐसे मौकों पर “अपहरत यू” — “आरके वाद” — “नहा जाता है।

ऐसे व्यवहार से क्या प्रकट होता है ? यही कि हम अपने सामाजिक आचरण में एक महान् क्षम को स्वीकार करते हैं कि हमें अपने ही पहले दूसरों का सम्मान करना चाहिए; अधिकार से पहले कर्तव्य की ओर ध्यान देना उचित तथा नोभनेय है। किन्तु मानव जीवन के अनेक दृष्टान्तुल्य क्षणों के लिये यह क्षम की सहाय आचरण तथा छोटी-छोटी मांगय शक्तों तक सीमित रह गया है। यहाँ हमारे स्वार्थ को देख लेंगे कि अपना आस्तन में कुछ स्थान करने का अवसर आ जाता है, यहाँ हम “पहले आप” न कह कर निसकौम्य “पहले हम” कहने लगते हैं और देख कर हमें और उनके अनुमान आचरण करने में न कोई अनौचित्य देखते हैं, न किसी प्रकार की क्षमा का अनुभव करते हैं।

राजनीतिक क्षेत्र को ही है। जब पार्टी “दिक्क” या किसी उर्ध्व पद को लेने का प्रश्न उठता है, तो क्या हम स्वयं भर के लिए भी सोचते हैं कि दूसरों को पहले मौक़ देना चाहिये ? ऐसा ही आपदा ही होता है कि जिस स्थान की दुर्गमिलने की संभावना है, उसके लिए इतने अधिक योग्य तथा उद्युक्त व्यक्ति नहीं सामने आते, तो भी मैं “पहले हम” या “पहले आप” करने की बात नहीं सोचता, केवल “पहले मैं” ही सोचता हूँ। ऐसे मौकों पर हम यह भी नहीं सोचते कि “कमी हम, कमी आप” के लिये यही सोचते हैं कि “पहले हम और हमें क्या हम !” यही कारण है कि क्रांति-अपहरत भी संवीर्य देती अन्वये दक्ष बर्गें ब्रह्मण के विषय में यह कहने के लिए धारा हुए कि वहाँ कोई गर्मिहा से शोचनी ही नहीं।

कहा जायगा कि राजनीति में “पहले आप” के आधार पर नैवे अमल हो सकता है ? यहाँ तो योग्य और अनुपययी लोगों की जरूरत है। क्या हम विरुद्व व्यवहार और अहंकार-ने नाम पर अपना स्थान निरुधमे आधारियों के लिए छोड़ दें ? पहली शल तो यह कि जब किसी पद के

लिए प्रतिस्पर्धिता होती है, तो प्रायः सम-बन्ध व्यक्तियों के बीच ही होती है और दूसरों के बीच एक-दूसरे के लिए स्थान छोड़ने का प्रश्न उठ सकता है। ऐसे व्यक्तियों के बीच शोषण, अनुभव आदि का अन्तर तो होगा ही, किन्तु स्वनाम्य अन्तर ध्यायद् ही कमी होता है कि एक को निरुधमा कहा जा सके और दूसरे को शोषण।

दूसरे, कौन किस पद के लिए कहाँ तक उद्युक्त है, इसका निर्णय दूसरों पर छोड़ना ही सही लोकनीति है। यदि आप ही किसी पदविरोध के लिए सर्वथा उद्युक्त हैं तो आपकी हत्या न करते हुए भी आपदा और ही नून लिये जायें और इस प्रकार देख ही हानि न हो।

किन्तु दूसरों के लिए स्थान छोड़ने की वैयार देना क्या वर्तमान परिस्थिति में यह उचित क्या आदर्श नहीं है, जिस पर साधारणतः अमल नहीं हो सकता ? यदि गाम्भीरी हमारे बीच न हुए होते तो ऐसा शोषणा ध्यायद् चीरक होता। क्या हमने नहीं देखा कि गाम्भीरी ने कमी किसी पद के लिये इच्छा रखी थी और स्वयं दूसरों की जग्ये बढ़ायी ? इलीकाम है कि गाम्भीरी के जीवित रहते क्रांति में पद प्रतिस्पर्धिता तथा मर्मविद्वान् के लिये वे अपने पीछे ऐसे अनेक कर्मठ नेता और चेहरे, जिन्होंने स्वयंसे के बाद देश का ध्यान संभाल लिया। हमें तो दरदक्ष गाम्भीरी नहीं हो सकता, किन्तु आज तो उनके पदविधों पर चलने का प्रयत्न ही छूटता आ रहा है।

व्यावहारिक दृष्टि से मैं “पहले आप” की नीति चाहे की नीति नहीं हूँ।

द्वितीय और परी के प्रति अनात्मक भाव रखने में सार्वजनिक जीवन का स्तर उन्नीचा उठेगा। साथ ही जो लोग हम नीति को अपनायें, उनके प्रति जनसाधारण के मन में प्रेम, आदर

और विद्वान् का भाव जगोगा। अनुभव कल्पयेगा कि इच्छा मूल्य तथा महत्व किसी भी पद के महत्त्व से क्या नहीं है। यदि हम ऐसे के पीछे दौड़ना बन्द कर दें तो पर स्वयं हमारे पीछे दौड़ने लगेंगे। स्थान सजाय पर में आदर की वस्तु है, किन्तु इस देश में विरोध रूप से योगी को योगी के बना माना गया है और संघर्षी को उद्वेग धामा से उँचा आत्म निरुद्व है। आज मंत्रियों के प्रति जनता के मन में प्रेम और आदर का भाव नहीं है; इसके को मुख्य कारण है। एक तो हमारे कमी एक बार दुर्गम पद संकट बनने इच्छा से उनके छोड़ना नहीं चाहते।

कारण ही समझ लेते हैं कि हमसे अधिक योग्य व्यक्ति इस दुर्गम के लिए दूसरा नहीं है। तथा कि विद्यालय का प्रस्ताव है, वरन्तः कर्मचारियों के लिये हमारे मंत्री भी यदि अपने लिये रितावरण नहीं (पर-निवृत्ति) का कोई विचार बना लें तो इतने सारी का साथ होगा। साथ ही जहाँ कुछ लोग सदा बराबर मन्त्री बने हैं और कुछ बराबर संस्था में काम करते हैं, यहाँ इन दोनों के बीच एक प्रकार का “प्रतिस्पर्धिता-प्रदानावहली का बन्ध-व्यापिण्य हो जाता है। एक ही व्यक्ति कुछ समय तक बनी रहें और कुछ समय दूसरों के लिये स्थान छोड़ कर संस्था का काम करें।

यही बात विधान-सभाओं और संसद के सदस्यों पर लागू हो सकती है। इसके ही मूल्य सार्वभौम के वाद है, उनके ही हीना तथा ईर्ष्या का माय परत नहीं होगा और मन्त्रियों के लिये यह स्वनाम्य प्रतिक्रिया हो जायेगी कि वे अपनी दुर्गमियों के विरुक्त बने। एक दूसरे को हम हमारे कमी छे करते हैं कि विना संशय और अकृत्य से अधिक लुब्धताओं का उपयोग करते हैं, जो जनसाधारण को प्रान्त नहीं हों।

दुर्गमियों को उनके काम के लिये बन्धी हो सकती हैं, वे तो उन्नीचे और नीचे। किन्तु यह नहीं बन्धी है कि हमारे मन्त्री को-वे-मन्त्री में हैं, जिनके लक्षण और स्वभाव पर हमें बस सार्वजनिक

है। बाप का स्वयं का विचारण में मयन, जिसमें आकलन राष्ट्रपति रहते हैं, को संभाव्यता या विज्ञान-पर बना विचार और राष्ट्रपति एक “दुर्गम” में हैं; यदि इस भाषना से काम हुआ होता है हमारे मन्त्री आज भी आदर और प्रेम के पात्र बने रहते। मैंने एक बार अपने एक मन्त्री मित्र से, जो बार में एक प्रदेश के मुख्य मन्त्री हुए, कहा कि यदि गाम्भीरी अपने काम छोड़ते पदम कर और शोषणी में रह कर बचल सको है, तो आप लोगों को इस सब अकारण की क्यों बहल पकती है ? वे बोले कि गाम्भीरी है दृग के आदर्श की सहाय बल सक्ती है, किन्तु शासन का काम नहीं चल सकता।

यही आत्म मनोहित के कारण अज्ञ जनता और मन्त्रियों के बीच एक दृढ़ बन्धन उत्पन्न हो गया है।

परिम से हमें “क्यू” की प्रथा मिली है। यदि हम रेल और सिनेमा में दिक्क (परिदेने के लिये) नहीं, बल्कि बीच के सभी क्षेत्रों में अपने-अपने स्थान के लिये “क्यू” में खड़ा होना सीखें, अर्थात् धीरज से प्रतीक्ष करें और प्रत्यक्षा से अपना प्राथम्य प्रकट करें और “क्यू” तोड़ कर आगे बढ़ने की कोशिस न करें, तब हमारे सामाजिक तथा राजनीतिक जीवन में निरुधम ही छील, स्वयंता और अन्वयेय का संघर्ष रहेगा।

समीक्षा

“गाम्भीरी” : लेखक-विक्रम वेदक प्रकाशक : अखिल भारत सर्व सेवा सम्प्रदाय, रायचूर, मद्रास; मुद्रक : अमरा । अस्तु पुस्तक विक्रम वेदक की अनेकी पुस्तिका “गाम्भीरी” देख ए “अच्छ रिपोल्युनरिटी” का निर्देश अनुवाद है। शीघ्रता चन्द्रकल्या मिश्र ने गाम्भीरी विचार-धारा का भारतीयों के लिये अनुवाद किया है। अतः पुस्तक की मिति-कता यहाँ उल्लिख नहीं हुई है। पुस्तक में गाम्भीरी के महान् अद्विष्टक मन्त्रीवर्ग प्रति-कोषण की यही शोषणा और शरास से सशर के सामने खड़ा गया है। सार्वजनिक-प्रत्येक प्रेमी के लिए पुस्तक पठनीय है। दुर्गमियों लक्षण और स्वभाव का वर्णन के द्वारा गाम्भीरी दुनिया में बिग नरन अद्विष्टक मन्त्री की रचना करा करते थे उनको दूर ही सार हर्षी हम पुस्तिका में ही गयी है।

पाठकों की ओर से

वाढ़ के खतरे का इलाज छोटे तालाब, छोटे वाँव, खेतों की मेंढ़

[पिछले अंक में हमने वाढ़ के खतरों के बारे में लिखा था। हमारे एक साथी पाठक ने भी वाढ़ के खतरों की ओर ध्यान दिना, हमारा हृदय आगे से हमारे दिमको भरी खोले होगी; फिर भी विचारों की समाप्ता है।—स.०]

प्रतिवार की बाढ़ें आती हैं और करोड़ों की सम्पदा नष्ट होती है। कई लोग मरते हैं। इससे बचाव के उपाय होनी हैं, रेसिको भाग्य होतें हैं, गदागदा-न चले जाते हैं। योन्नती उत्थारण अंगर एव भीमन बोट पर अन्धी धान-पौधा जलाती हैं। मित्र ने एक अस्वामी हैं। आशराम, योन्नार अनाम आदि तो शेवमर के नाम हैं। यत्न में वाढ़ आती, करोड़ों की योन्नता बनी। यह करेते, यह करेते कड़ मकई, शेवना पाड़ले में कर। उड़ीमा ॥ वाढ़ आरी नगानोती की योन्नता दे दी गयी—कोड़े मारे बापों। आरिषर ने मर कयें।

हस्तयन्त्र के वाढ़ करे बोन नेने, योन्नार बनी। किन्तु वाढ़ सब अस्वामी के खेतों के खतरों के मुक नही निभो। "वाढ़ के खतर मार ही रहे।" हमारा सारने यह नही कि वासन ने कुज भी प्रयत्न नही किया। किया अस्वय, किन्तु जिन हात्सले के अन्धारे में उलख राम ने रहके हात्सि अर्धिक हुए।

बांध। येते सुदून न आये, जह कि अस्वामी एव ईमानदारी के अभाव में अस्वामी निरम के काज-नामान के बने अस्विक तीर्थ मारदा मंगल, वापुल, हीर-कुज, शमोरेर बाती, दुःखदा आदि अन्धी हीरा मार तोड़ कर निरकल पड़े अन्धी हीरा कल भाग्य कर प्रलयनारी निरक ही आर। सुगुणर ने देरु कल रशन कुल-कुल ही बापेना, हमारी सभी अस्व-स्वयदा नीयत हो बापेना।

वाढ़ का उपाय हमारे देश में ही नहीं, पड़ोसी चीन और बांग्ला तथा अन्य देशों में भी है। किन्तु उन्धने योन्नताइ काज किया, प्रयत्न अन्ध की योन्नताइ देनी पडी। आज के वाढ़ के खतरों के उपायग मुभव हो गये। हमारे योन्नता-निर्मला भाव का सुपानन तो कहे ही गये। छोटी-छोटी योन्नताई उनको सुहायी बनीं, उते वे अस्वय और हात्सिद मानते हैं। एक सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्री के शब्दों में : "यदि हात्सन ने बनी योन्नताओं पर निरामा गप हो रही है, उठका योन्नता अस्व ही छोटी योन्नता भी पर एवय किचा जाता, तो अपने हात्सों से ही हमने निरकल दुःखा होना कि अन्ध के भासने में राशराम अर जाला और बांधों के पारतों से मुक्ति मिल जाती और न दुःखा ही पडता।"

यह सब बर्न के अन्धारे हैं, यह यदि गीतों में धरे धीरे उलख-उपय ॥ एक ही जाला, वो कयेंकर तदिलो भी अस्वयवारी बाढ़ आती और भुजल होना। हमारे बूढ़ों ने दो करकों के वाज-होरा नीयने का उपाय किया था। एक तो सिवाई और दूसरे, वाढ़ के खतरों के और भूयें के बढाने के उपाय। दुसरे हैं कि आज हर मोर के हाताओं की पाते दुःख-दुःख गयी है, उनमें सेने होने लगी है। एक एक नये तालाब निर्माण में हात्सों का एवय होने पर

भी बूढ़ पानी नहीं। दुधरी और निवैर स्वाभों के हात्सिद में तालाबों के भूमि का रहे अस्व उपायों। अर्थात् सिधारे। मयैव गौव में तालाब की एक अन्ध उख पर एते आग, वासुन आदि के हल आग भी छाती दे रहे हैं कि बरों ताल वा। किन्तु आग के दुःख बरानी बढने के अलावा कल बर तबो है।

हात्स का यह पन्थ है कि देण मर में पौव हात्स हात्स बढाने का विद्याल

सकुरा उखर बांधों के खतरों का मुकामल करने की योन्नता आये और वही यी योन्नताओं का मोह छोड़े, अस्वय एव दिन ऐसा आयेगा, उन चारों ओर पानी ही पानी होगा और हम अस्वहाव स्थिति में राड़े रहेंगे।

सूख धपन बार-बार उठता है कि वाढ़ के खिरे चैन के निगाहों उने में जाबर रहे। अस्वयवे के कई गौवों में बरुं आये, किन्तु ही हात्स के बार भी आर उने पर यान माना के लिए भूमि एव अन्ध चरुपाक जलत को नहीं मिल पायी। इतका एव अर्थ गयी है कि हमारे नेत और हात्स का वास्तविक अस्वय में निराव रतने ही, स्थयी उपायों में नहीं। एक एव निरन्तर ने अन्धी एव बरुंन जगाए। उनमें जड़ के दोषों का ही मता नहीं

मिदा, ऐसा क्या था। जलन में पर स्थिति बनी उन्धाराद है।

देश के हात्सने आर कर खतरे हैं; हीमरका का, आनि-पौति का, मातयका का, भागवत का, किन्तु उन सने पर हात्स है अम से भी लगे पानी का ओर हात्सिद का मोह न रगाने का। काज। आर गुगुणर निनाग को का मान कर हम हात्सिद-निरमन को प्रथिया का ओर हात्सिद का प्रयान से देश के निर्माण में जुटे होंते, तो फिर कोई खतरे हमारे लिये भयकर नहीं होंते। देण आर भागनापक एका-एक का उपाय करे हर हर दिन से ताल ओर हात्सज ही होना।

हैं कि हात्स है कि अर हीनद-वर्णों के बाना में अस्वहाव जलता की सुझारों की मनक पड़ेगी नीर

बनों-बनी महारवाजकी योन्नताओं के रवान पर छोटी-छोटी सुगल योन्नताओं का तोरण सबके बहूपाय के उपायों का उखर कि बिचा बापेना।

इन्दी, —जगन्नाथ सेटिया

चम्पल घाटी की डायरी

लोकमान, कन्हई, तेजसिंह, मोहरचन और बरु, हाईकोले से बरी. १ जुलाई, '६० की मध्यरात्रे हाईकोले की ग्यालिक बेंच के ग्यालपीठ भी पी० आर० हार्नो में निगड के जिला देणन बर भी अस्वयवारी की अस्वयवे से ११ जनवरी, '६१ की गजुपुरा डकैती काज में ताप-नात बर्न के बरायवाव सभको अखीर में पूर कर दिया।

विद्यमान ग्यालपीठ ने अपने निर्गम में शरावी गवाहों की अतिरिक्त और प्रायक डकैतों हुए एक सभ्यसिद्ध अभियुक्तों की बरु किया। बचाव पद की ओर से भी ने ए००० आनन्द एखोनेर, ग्यालियर ने देखी थी।

परेतुआ-दुर्धाराज्य की सेना बसिद दुहा। एन सभ्य अन्धारी में शारी पिपापान, रामदरक, बरुनिद और भूतसिध पर तीन सुकने चल रहे थे, सिधमें एक उखपुर डकैती बहले ॥ सेणन बसिद ही गयी थी। अर वेण दोनी परेतुआ-दुर्धाराज्य और देण पुलिन-मुद भेद, ७ जुलाई '६१ की परेतुआ-दुहा काज देणन बसिद ही गयी और देण पुलिन-मुदमें गौरीन २० जुलाई, '६१ पडी है।

६ जुलाई, '६१ की परेतुआ दुहा-काज में पुलिन की ओर से वेण रिने गये पकडों में एक गवाह शीम्य गोलुव ने आधमसमंभकनारी विद्यालय की दिनाबद के सभ्य में बरु रिने तो पना इन्साई नेपुलर के अन्धे पर उख अति सुख की बघाना था। उनको के हातने पर कीने डेक में उलके उख हाथ रतता था। उखे एव भी सत्त बरु कि दिनासकन न कलन पर पुलिन ने मारने की पकडी दी थी।

सोहीटी में आधम-स्वाधान चम्पल घाटी घाति सभित उखरपूर-रुप दूद, निरा अस्वय के सभ्यताओं अम मोदीने केन्द्र बनना आरम्य ही गया है। अन्धी हात्स का कर एक कल-कुल काँपडी बन गयी है। उख काँपडों

यह रहे सते हैं। यह गौव आस्वय-पौकली बागी हायदवात और बरुसिदि हा है।

भी काशरीनाथ निवेदी का हागयन म० ३० तयोप सभेण, बरुवाय के बाहरी नाशोनाथ निवेदी के ब्रध अरक (उखर), सुखर और सक्क्याद में तीन-तीन दिन के लेवपय धिनिरी में पचा-पचा-पचा, लेखनीसि, धान सवरा-क, वासि-रेना आदि विपरी पर लख भाग में ग्युधरपूरी विचार प्रकट थिये।

आस्व-मन्थन-डायरी सम्पान सिध के भाई वी शशी मन्थन

आधमसमंभकनारी बागी अन्धयानविद के छोटे भाई की उखरवाय की शारी में निग-उना की उखरवाय थी, पर ११ जून '६१ को यह अन्धयान के गस्तुवर बिले के उखरवाय गाने के उन्धरत अम्य सन्धीने में हात्स-उखर हो गयी। परतिये में हात्सने के उखर-कल काँपडों की उँरसिद और चम्पल घाटी घाति-सभित के काँपडों की अन्धनी गार्ड उखरवाय रहे। गवाउ घुँकने के परते बरु की स्थिति अस्वयल रहे, इत हात्स के शीमुर उखी-मारा के ही सुगल-सिध व चम्पल घाटी घाति-सभित के भी चरुपडि गये और उन्धने आस्वयव अस्वयव थी।

छुपयात मेवाराज मारा गया

हात्सिद अरुण के वाद सेर उखरपुन द्युवर में लेखनने से अपने हात्सिद सभित आस्वयवर्ण कर सिध की अन्धी मेवाराज ने हात्स कर दिया का और यह मेवाराज मारा गया दिने के बार आर० में सवरा उखने के सिध एक अस्वत गमरक भी हात्सिद के हाए उली की उखरवाय का गया। सुझार का आस्वित परिचाम देना ही होना है।

दुर्ना बिले के मारा खीरुप में अस्वयवर्णिक के सुनाव पहाटी होने के सिध २६ मई '६१ को बरुं हात्सिद बिले के मरुण पहाटी की एउ डेडक आस्वित की गयी। डेडक में हाई सेवा सप के सुना-प्रस्ताव के अर्थ में उखर हात्स को हरीकर निचा कि नगरपालिका के सुनागों में खड़े होने का उन्धी-पार पहाटी और इत दिशा में अस्वयव पयन करने का उपाय किया। इत हात्स के काँपडों की उखनी-बद देर उखने उखर अन्धरपूरी थिये।

हात्सि-स्वाधान की विद्या में

—आम सैलर में दो दणों में आस्विक हात्सने के हात्स नहीं का हात्सयान निगुण बनना वा हात्स था। हाई के मरुण अस्विकनों की रकडा कर बिले के अन्ध विचारपौक लोगों के हात्सने से दोनो दणों को अस्विक में हात्सिदिक रहने की प्रतिज्ञा करायी गयी।

—आम शीरी दुःख और शीरी सु

गुजरात सर्वोदय-सम्मेलन का निवेदन

[१४ जुलाई को यज्ञेया में गुजरात सर्वोदय-सम्मेलन का दसवाँ अधिवेशन था दादा धर्माधिकारी को अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ । उसमें कई महत्त्वपूर्ण प्रश्नों पर विचार हुआ है । सम्मेलन का निवेदन यहाँ दे रहे हैं । -सं०]

दशम गुजरात सर्वोदय सम्मेलन इतिहास की एक ऐसी घड़ी में हो रहा है, जब कि प्रत्येक विचारधारा नागरिक के लिए गहरे विचार की आवश्यकता है। आधुनिक विज्ञान के कारण पृथ्वी आज छोटी हो गयी है; विश्व की छोटी-बड़ी सभी समस्याएँ समस्त जनवर्ग की समस्याएँ बन रही हैं और एक मनुष्य के हृदय का अन्तर अन्त्यय सभी मानवों के चीतन पर पड़ रहा है। ऐसे समय हमें अपनी सभी प्रवृत्तियों के बारे में जागृताधी से विचार करना चाहिए, जिससे हमारा प्रत्येक कदम मानवता के विकास का योगदान दे सके।

विश्व आज अविच्छिन्नता की प्रयास पर खड़ा है। वस्तु के मुक्त अंतर महाद्वारण विश्व जाति तथा स्वतंत्रि बनने के लिये प्रयत्नशील है; पर दूसरी ओर छठार के कॉलेज-कॉलेज में हिंसा की विचारधाराओं भी उठाती दिखाई दे रही हैं। ऐसे समय में हमें अपनी परिस्थिति का समग्र आकलन करते विषय-वार्ता की दिशा में, चाहे मोक्ष ही धरी, निश्चित आचरण करना चाहिए।

छठार की इस परिस्थिति का अन्तर हमारे लिए और गुजरात पर भी पड़ता है। जब कि देश में एक तरफ मूढ़ान-आमदान और अन्य तन्त्रात्मक कार्यक्रमों द्वारा अहिंसात्मक सफलता के आर्थिक समता लाने का प्रयत्न जा रहा है; जब कि विप्रेन्द्रित राज्यशास्त्र द्वारा सामान्य मानव के उत्कर्ष के लिये सामान्य मानव के सुधारण से लोक-स्वतंत्र्य लाने का प्रयत्न हो रहा है, वही दूसरी ओर आदिवासी, अल्पसंख्यक, भाषाबाध, राजबाध तथा अत्यान्त संकीर्ण विचारों के कारण राष्ट्र की एकता को ही मनो धक्का पहुँच रहा है। इन अनिष्टों का समाधान गुजरात पर भी पड़े निता देना नही।

सहित एतत् समय का पया है, जब कि राष्ट्रीय को समितिक को अहिंसा-विम्वर करने वाली तम प्रकार की संकुचितताओं में। सामने देना का सम्पूर्ण सुधारण योजनापूर्वक लगाना आवश्यक हो गया है।

गाँव-वासीयों के आरपी क्रांति, अन्तोन्य और मान-सम्मान की लक्ष्य परतार दाढ़ न करने तक की विधिति देना न ही सुविचार्ये हैं। हमें उनको समताया कि परस्पर-प्रेम से ही मिलन-वैद्यक देना हमारा सामान्य सम्भव है। यह दाढ़ कई उदाहरणों और उनके द्वारा उनके पर पर समतानि से अन्तः अन्तर हुआ और यह जेय अत्र आनभ में दोनो लगे हैं।

चन्वन्त धाटी प्रति समिति, दाढ़ के लानावधान में बाह में चलने वाली सुविचार्ये दाढ़ की धीनीला के लिये द्ये से आये अत्याचारी की एक विचार-नीधी का आचोचन समिति-न्यायल पर भी अनीचन पाठक की अपत्याचन में हुआ। लगभग ५० अत्याचारी ने परस्पर विचार-विनिमय पर द्ये में नाधि-स्थानान धा सक्रम किया। ऐसा एक प्रत्याची भी पाठ हुआ है।

—गुजरात

राष्ट्रीय एकता का अर्थ यह बदामि नहीं है कि आज की परिस्थिति को देखते-देखते न्याये तम जाय। आज की परिस्थिति में तो भेद-भाव की जड़ों के उन्मूलन के संभव में ही राष्ट्रीय एकता का संभव निहित है। हमें अहिंसा-विम्वर करने वाले कार्य करने पर ही अन्तः अन्तर हो तो यह हमारी आर्थिक असमानता है।

जब तक देश में आज वैसी अमीरी-परीबी का भेद मौजूद है, जब तक राष्ट्र-निर्माण का बोरे भी कार्यन्वय होता नहीं बनाया जा सकेगा, जिससे देश की अविचार्यत गरीब जनता की सुधारण की प्रेरण्य प्राप्त हो सके।

आज के वातावरण में हमारी यह आर्थिक असमानता पढ़ते जाने के आसार नजर आते हैं। उसको समाप्त करके, हमें समस्त की नीच डाननी चाहिए। जब तक स्वाभिम्वर के मूर्खों में परिपूर्ण न होगा, आर्थिक समता की बात देती ही रहे, जेते देव के ऊपर बिकनी मिश्री का लोच करना। मूढ़ान एवं आदिवा-यज्ञ से सुविधि के स्वाभिम्वर-विसर्जन-स्वाम्यगी नये मूर्खों की स्थानता हुई और इससे आर्थिक समिति के आरम्भ की दृष्टिसे निराशा हात हुई है। भूमि के स्वाभिम्वर-विसर्जन के साथ-साथ राष्ट्र के छोटे-छोटे-अवस्थितियों को भी रोचनगा, अन्तःविचार्यत और परस्पर मिलते-जुलते उद्योगों का विकास आर्थिक समता की दिशा में दूसरा कदम है। आज छात्री-आयोयोनों द्वारा आम-नगराज्य और उद्योग-उद्योग के नाम पर समस्त बड़े उद्योगों में अन्तःदूर, दरारीदूर तथा अन्तःस्थलों की संभितिविधित-विशेषता का विचार प्रकट हुआ है; उस दिशा में भी आगे बढ़ना बहुत जरूरी है।

गुजरात राज्य पंचायती राज की दिशा में गतिशील है और यह सम्येन इच्छत स्वागत करे हुए बंध आचार रखता है कि इच्छे राष्ट्रीय एकता को योग्य प्राप्त होगा।

विषयगत पर नागरिक पंचायती राज गरीबी के शोषण का साधन बन सकता है; अतः इससे विचार्यतक रहना होगा। पंचायती स्वराज की राजनीतिक पार्ष्णी की प्रत्यक्षण पुर्ये गये तो हवाये नहीं की दार्जि देह के आरसी शक्तिन में समात्त होने का खतरा भी हमारे सामने

है। हमें चाहिए कि पंचायती के चुनावों में बहुमत के नाम पर ह्य नाच-नाच में पार्ष्णीयों न होने दें, बल्कि उक्तके बढते खर्च-सागत चुनावों की परम्परा को पुनर्जीवित कर मात्र भूमि की धार के अनुसूच्य भवोन को-सहाटी के निर्माण में सहाय्य दें।

राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से आगामी आय चुनाव बहुव महत्त्वपूर्ण हैं। उक्त समय हमें अपनी संकुचितताओं का प्रदर्शन न करते हुयी बात का प्यान रखना होगा कि देश की विविधताओं के मध्य भी देश की एकता सुदृष्टित रहे तथा हमारी संस्कृति एवं हमारा धार्मिक-प्रेम ही प्रकट हो।

सर्वोदय-सम्मेलन का यह निष्कर्ष, मत है कि आज चुनावों के समय पालन करने के लिए कुछ आचार-धर्मवर्थाएँ मन्व्य तप की जानी चाहिए। चुनाव में अन्न लेने वाली और अन्न में रहकर तब पाठियों और स्वस्थियों को भी हार-भीत की अन्तःस राज्य के गौरव को प्रदानना देनी चाहिए तथा

असम सर्वोदय-मंडल

असम सर्वोदय-मंडल की कार्यकारिणी समिति की एक बैठक भी बिनोबाजी की उपस्थिति में १ और ४ जुलाई को कलकत्तारी और मजुब में हुई। बिनोबाजी ने कुछ विचार विम्वरों पर बखर देकर मार्गदर्शन किया। बैठक में सर्वोदय के अंत में निम्न प्रकार निर्धारित किये गये।

असम में धमी तक कुछ देर २२० से आधिक मासदान हुआ है। उन वर्गों में निर्माण-नार्थ करने के लिये एक आर्थिक समिति बनानी गयी। इस समिति में अलग विधान-सभा के सुवच भनी, पंचायत और सामूहिक उन्नत परिष्कारना मंत्री, अन्तः छात्री-बोर्ड, सेवा-समिति, कल्-रा समिति, रायी समिति, नगर सेवा समिति आदि के प्रतिनिधि खरल बने हैं। तब कुछ कि नाथे खलीगपुर क्षेत्र का निर्माण कार्य भी अन्तःस सुधों और प्रचार-नार्थ भी योग्यतर वाचनी करेगे। कार्यन्वयता के कारण अर्थ-समर्थ अधिवान का काम अभी पूरा नहीं कर पाये, दृष्टिविदित १३१३ तक यह काम किया जायेगा। इसके लिये योजना बनायी गयी है। यह-बड़े उद्योगों में अर्थ-समर्थ का आयोचन किया जा रहा है।

अर्थ-सेवा रूप के चुनाव संबंधी प्रस्ताव और पंचायती राज के बारे में चर्चा हुई। महासत्ताओं में लोक-विज्ञान की दृष्टि। उन्नत प्रचार किया जायेगा। नाथे खलीगपुर क्षेत्र में इच्छत प्रयोग करने की निर्देशकारी भी योग्यतर वाचनी की लीनी गयी। फते क्षेत्र के सर्वोदय-मंडल ने भी अपने क्षेत्र में प्रयोग करने की निर्देश

जानके लिए इतापूर्वक आचार-मन्वितों का पालन करना चाहिए। यदि चर्चा किसी पार्टी के द्वारा मन्वये क्षेत्र में हो तो वह पार्टी स्वयं उक्त विम्वर करे।

मुनाब के समय मन्वितारों को अनिवार्यताओं का विचार सही न बन कर उन्नत सर्वोदय-सम्मेलन रूप से प्रकट चाहिए। सर्वोदयपुरम् (आन प्रदेश) में सम्पन्न अन्तःस भारत सर्वोदय-सम्मेलन द्वारा प्रकट मार्ग-दर्शन के अनुसार मुनाब में जहाँ बड़े धीय वातावरण दिखाई पड़े वहाँ 'मठदास परिवारों' को स्थानगत हो, द्रो मोलानन देना चाहिए। मुनाब समाज होने के बाद आचार-सम्पन पर 'जागरुक समितियों' (विचित्र समिति) कार्य कर सकें; ऐसा प्रयास में किया जाना चाहिए।

इतिहास के देखे मोड़ में गांधीजी ने गुजरात को सम्युक्त आचार द्वारा राष्ट्रीय एकता और विचारधारा के लिये उदात्त उदाहरण उपस्थित करना चाहिए। आत्म-स्वतंत्र्य के हवाते आर्यो में इच्छत प्रकट है उदाहरण को पूरा कर दिवाने की दृष्टि संभवानुसार है। इसके लिये आवश्यक है जनता तथा लोकसेवाओं के विचार्यत प्रकट पार्थों की। सम्मेलन का विचार्यत है कि उदात्त इच्छत प्रकट के धार्मिक तथा विचार्यत सुधारणों के कार्य में जोड़े नहीं रहेंगे।

गवो उठा ला है। पंचायती राज भी नीचाना का भी प्रचार किया का तप हुआ। 'नया मोक्ष' के बारे में भी चर्चा हुई। तप हुआ कि सरकारी, कला बरती, देश, जापुत्र, बखोर, पण्डु, नाली, नैस्य और वृत्त के प्रभावानी क्षेत्र में 'नया मोक्ष' के प्रयोग किये जायें। नाथे खलीगपुर, जहाँ १५० से अधिक मासदान हुए हैं, यहाँ लीन-कमी देन की भी देह के विचार्यत चर्चने का तप हुआ है।

छठार की अद्यतिन के बारे में भी निर्देशकारी की सहाय्य के अनुसार वही मान परिस्थिति का अध्ययन करने के लिये धार्मिक-नैतिक भी सम्यकन कदम और शिष्टार के भी सौतारण धर्मों को बढी देभने का तप हुआ। मोरेस्वर क्षेत्र का अध्ययन करने का नाम सर्वोदय मंडल के सदस्यों की दृष्टिकान्त छिन्दे की शीया।

हलेके अलावा बैठक में मंडल की नियमानुवरी, संशोचन, देवक, सर्वोदय-पत्र सगठन, साहित्य-मंचार और भूमि-वितरण के बारे में चर्चा हुई। १४ जेठ में भारत के सर्वोदय के अत्याचत कुछ लोक-सेवा की उपस्थिति में है।

—रविशंकर सन्दिह्ये, सदस्यी असम सर्वोदय-मंडल, गुजरात

बिहार का सीलिंग

बिहार विधान-सभा के ५ असात होने वाले सभ्य में भूमि की 'सीलिंग' पर विचार होगा। योजना-आयोग ने भूमि को भूमि के लिये पर्वत ने परिवार के वाले ३० एकड़ 'सीलिंग' निर्धारित करने का है। इसे बिहार के १९५९ में 'सीलिंग' मिल के अनुसार ३० एकड़ सीलिंग प्रति व्यक्ति के लिये रखा गया है।

नशाबंदी-सम्मेलन

अखिल भारतीय नशाबंदी सम्मेलन दिल्ली में आयोजित किया जा रहा है। २ सितम्बर '६१ को इस सम्मेलन का उद्घाटन विजयवाडी भीमोदारी देसाई करेंगे और सम्मेलन के अध्यक्ष अशोक राय के रहने भी एम० अकादमिकल होंगे। यह सम्मेलन दिल्ली नशाबंदी समिति द्वारा बुलाया गया है। इस अवसर पर नशाबंदी के लक्ष्य में एक संघर्षीय पुस्तक 'नशाबंदी बंदेबा' के भी प्रकाशन किया जाने की योजना है।

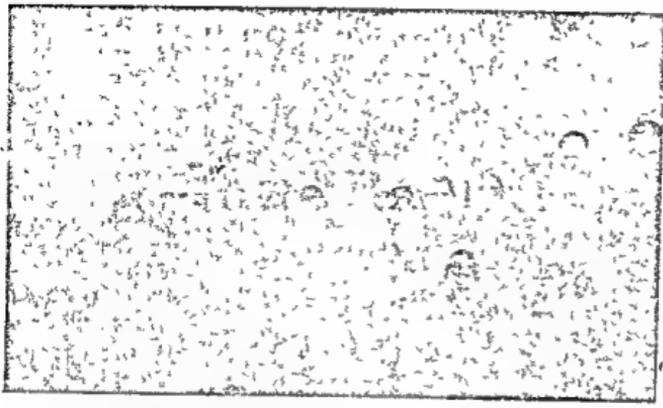
नशाबंदी-सम्मेलन में इस आयोग को व्यापक रूप प्रदान करने के लिये अखिल भारतीय संघर्षीय आयोग में अतिरिक्त कई विचारणीय विषय हैं, जैसे मॉरिंग क्लबों की बंद करना, नशीले विद्रोह दृष्टि जनमत विचार करने की दृष्टि से भारत व्यापी योजना बनाना और समस्त राज्य में नशाबंदी द्वारा करने के लिये पर्याप्त के व्ययपत्र बनाना।

भारत जिले में सर्वोदय-यात्रा

घाहाघार (आप) जिने की दुर्घटना कौमल-वस्था के दुर्घटना प्रथम प्रथम करते हैं कि मेरठ में ४४४, रंगभट्टी में ५५, वेणगर में ५५, बरबोडा में ३० और मनोहरपुर में ५५, इस तरह ३१३ सर्वोदय-यात्रा चल रहे है। १९ परगना, '६१ से १० जुल, '६१ तक इन यात्रों के अनाज-विषयी है २१३० ७३ नये पैके संकलित हुए। बरबोडा और मनोहरपुर के पाठों का अन्न अभी नहीं बिका है। इसका छटा तिहा ३३० ३५ न० है। सर्वोदय-यात्रा को मेरठ। दो भागों के लिये 'भूदान-यत्र' पत्रिका संग्रह के लिए १२ १५वां पत्र भेजा गया। सर्वोदय-यात्रा बनाने के लिए ९ २५ न० नये पैके लब्ध हुआ। दोष १५९ २२ न० १८ नये पैके का पत्रा भेजा है, उक्त पत्रायोग शुरुआत किया जाएगा।

हमारे आगामी विद्योपांक

आगामी १ सितम्बर का 'भूदान-यत्र' का अंक 'संघर्ष-बंदी विद्योपांक' होगा। विनोय के सम्पादन के निमित्त ८ सितम्बर को निकलने वाले अंक 'भूमि-कर्म' विद्योपांक होगा।



करनाल जिला सर्वोदय मंडल की ओर से ३ जुलाई '६१ को अयोध्यायिता के विरोध में विभिन्न संस्थाओं के कार्यकर्ता बंदी लगभग एक हजार भारी-बकरी के पानीपत शहर में निकाले गये बिराला जुलूस का एक दृश्य।

पूना की बाढ़ में सहायता

मराठार के पूना शहर में समीप के बांध टूटने से जो अमत्यागत बाढ़ आयी, उससे शहर का काफी जन-निवास का प्रकलान हुआ। अन्य लोगों की तरह महा यज्ञ के जो सर्वोदय-कार्यकर्ता भी बाढ़-पीड़ितों के सहायतायें पूना गये हैं।

बिहार में 'बाँचे में कटौत'

आंदोलन
विनोयजी के आग्रह "बाँचे में कटौत भूमिगत दो" के लिये मराठार के दो कार्यकर्ताओं, भी नामासेठ सिंधी और मालोय चाम्बो ने बिहार के अंचल पर गया क्षेत्र में अपनी दो मास की परवाना में प्रमथान में साकपुर गौरी तथा ३५०० पट्टा भूमि प्राप्त की। वहाँ १० गाँवों में पर्यटन करने गये काशी पहुंचे हैं।

राष्ट्रपति भवन में सर्वोदय-यात्रा

सर्व सेवा संघ के प्रधान कार्यालय में 'राष्ट्रपति भवन' के सर्वोदय-यात्रा का दान २०० रु प्राप्त हुआ है। यह वर्ष और बड़ा मास कर है। सर्वोदय-विद्योपांक में निश के प्रतीक स्वरूप राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने अपने यहाँ "सर्वोदय-यात्रा" पत्रा है। प्रायः दशनाओं के अनुसार सभी राज्यों में सर्वोदय-यात्रा अधिसाधिक संख्या में रहे जा रहे हैं।

कानपुर में सर्वोदय-यात्रा

आर्यनगर, कानपुर के ११० सर्वोदय-यात्रा का सफल सर्व माह में ७५ रु ८३ नये पैके हुआ। सिन्धी कारी ८८ नये पैके थी। कुल रु० ७६-७९ नये पैके जमा हुए।

उत्तरा पचासोय विनियोग किया गया। नागरिकों के ३० रु० सहयोग रूप में मिले, जिसका आतिथेयिक को सहायता रूप में उपयोग किया गया।

हनुवती की मजदूर वस्ती में सर्वोदय-यात्रा

हनुवती के मजदूर बस्ती के क्षेत्र में जून माह में १०८ परों से व्ययगत संघर्ष स्थापित किया गया। १६६ नये सर्वोदय-यात्रा स्थापित किये गये। २०५ पाठों से ६८ रु० ८० न० ५० नकद एवं अनाज के रूप में समग्र हुआ। भूदान-पत्रों की ८६ प्रतियाँ प्रति सप्ताह भेजी जाती रही।

मे० ज० यदुनाथ सिंह

(दृष्ट ७ का दोष)

हमे यदुनाथ सिन्धी के दर्शन नहीं हुए। उनके भौतिक दर्शन की समझ दिल में ही रह गयी।

निनोय ने २ अगस्त को इस पटना की जिक्र नहीं किया। ये अभी विचार में दूरे हुए-वे ज्ञान थे, किन्तु ३ अगस्त को प्रातः ६ नये उन्होंने हनुवती के सर्वोदय मित्रों की एक समार में कहा :

"मेरा कुल का कुल काम मेरे साथी ही करते हैं। एक बने सबर सुनी कि मेकर नमरल यदुनाथ सिंह बने गये। निज-मुरेना का सारा-का-सारा काम उनके आचार पर था। उन्होंने बहुत बड़ा पराक्रम किया। कल्पना से एक योजना बनायी और टिकस के साथ काम किया। मृत्यु कर' लोक करने की जरूरत नहीं होती है। मैं मानता हूँ कि जिनका परीर से उन्होंने काम किया, उससे ज्यादा ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यकता मृत्यु से सरमा नहीं पहुँचता है, किन्तु कल समझा मुँहा। कल हमको लगा कि हमारी ताकत कम हुई है। ये मैं होते तो निज-मुरेना का यह काम हरमिन नहीं हो सकता था।"

इस अंक में

१	विनोय
२	सिद्धांत
३	निर्देश
३	सिद्धांत, सम्पीडक
५	दास चाम्पियारी
५	बापूदाय बंदीवार
६	भोहरणदाय मद्र
७	सम्पीडक
८	गुरुदास
९	सम्पादन के लिये
९	गुरुदास
१०	—
११-१२	—

तरुण पीढ़ी को प्राणवान और स्वस्थ बनाने में नेतृत्व करें

फिल्म-उद्योगपतियों को विनोद का सहाय

[पिछले कुछ महीनों में फिल्म-नेतृत्व बोर्ड भारतीय तथा विदेशी फिल्मों को ठीक तौर से देखकर बनने से बचाने लग रहा है। इस बात से फिल्म-उद्योगपतियों में एक तरफ तो हलचल मचो है और यहाँमें फिल्म-नेतृत्व बोर्ड तथा सेंट्रल मूविया-कॉन्ट्रोलिंग बोर्ड का बोलबाला-सा पडा गया है।]

अभी हाल ही में श्री विनोदजी का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ। उन्होंने बोझना-नवीयन के सरपंच, श्री धीमन्प्रसादरायजी को इस संबंध में एक पत्र लिख कर अपने राय जाहिर की है। विनोदजी के एत महारथुनमें पत्र को हम योंच उद्धृत कर रहे हैं। —सं०]

"आप जानते हैं, हमारे दो महीने से हमारी यात्रा मिलबुल देहान में चल रही है, जहाँ प्रामुदान की अच्छी हवा निर्माण हुई है और उस काम में मेरा मगूल है। इस हालत में त्रिनेमा कंग्रेज के बारे में जानने का और धोलने का मौका हमारे मुझे नहीं मिलता। पर घुसने कसबाघर कुछ मिलते हैं, उससे पता चला, जितना आरक्य पत्र में जिक्र आया कि सरकार के निर्देश पर फ़िल्मों का पहले से कुछ अच्छा सेन्सरिंग हो रहा है, जिसके विरुद्ध फिल्म-उद्योगपतियों ने एक विद्रोह-ना चढाया है।

मुझे इस सबब से दुःख हुआ। मैंने कई दफ़ा कहा है कि फिल्म-उद्योग के विकास में मैंहीं हूँ, बल्कि अगर उसका ठीक नियंत्रण और आयोजन किया जाय तो मनोरंजन का और विधाया नर वह अच्छा जरिया हो सकता है। जैसा रविनम में लिखा है,

हर उद्योग के सामने लोकहित का एक ध्येय होना चाहिए। उसके ध्येय-मार्ग उचित सुझाने का स्थान हो सकता है। लोकहित को धरक ध्यान दिये बिना और लोकहित प्रत्यक्ष ही रहो हो उसकी परवाह किये बिना, बेचल सुनाने की दृष्टि से ऐसा धंधा उद्योगपति करने आये, वह सार्थक के इस ध्येय में बसस है।

इतना ही नहीं, अगर ऐसा ही रचैया रहा तो लोकमानस पर इतना व्यापक असर डालने वाला यह धंधा प्राइवेट सेक्टर में रहने देना ही सतर्नाक माना जायगा। आप यह जानते हैं कि प्राइवेट सेक्टर के विकास नहीं हैं, बल्कि प्राइवेट सेक्टर को ही सही अवकाश होना, साथ-साथ पब्लिक-सेक्टर को भी सही फौसदी अवकाश होगा, और दोनों मिल कर ही सौ सही होगा, ऐसा हमारा सर्वोदय का मकिल है। १०० × १०० = १००० यह मकिल किती यूनिवर्सिटी में मान्य नहीं किया है, जो हमने मान्य किया है।

ऐसी हालत में त्रिनेमा इंस्टीट्यूट को प्राइवेट सेक्टर में रखना चाहिए या नहीं रखना चाहिए यहाँ तक सोचने की नीयत है, यह सोचनीय बात होगी।

बोझना-नवीयन क्या, अद्योनीयन क्या, इन विषय में कोई पश्चिमायुस विचार में नहीं रहता, बल्कि वैसाविक रूप से सोचना चाहिए, यही मेरा कायडू रहा है। यह मेरे तब साथी जानते हैं, बल्कि भंडे पोस्टलों के लिखाफ मुझे सहायक करना पड़ा, यह मेरे लिए एक सम्बन्धक बात थी। पर आचार होकर मुझे वह करना पडा।

पोस्टर्स तो बालरिच रोग का एक बाहरी चिह्न मात्र है। पोस्टर्स के नियंत्रण के साथ सटाप विनेमा, गन्दे शाने आदि का भी सेन्सरिंग करना ही था।

इस तरह सरकार ध्यान दें रही है, इसकी मुझे खुशी है। मैंने त्रिनेमा-उद्योगपतियों से प्राणना है कि वे भी इसमें सहयोग की वृत्ति रखें और देस की तरुण पीढ़ी को प्राणवान और स्वस्थ बनाने में नेतृत्व करें।"

असम-यात्रा
१९-५-६१

विनोदजी
२५-५-६१

फिल्म-व्यवसायियों सामाजिक जिम्मेदारी

अभी हाल ही में बम्बई में फिल्म-व्यवसायियों की एक सभा में बंगले हुए: केरिया घटना-बन्दी का-केवलर ने अपने भाषणों को ध्यान के दृष्टि उन्हीं जिम्मेदारी की याद दियी थी। उन्होंने फिल्म-व्यवसायियों को इत फि वे जि-धामर के भांग है और फिर धमर है आधार पर उनका काय धमरघर चले है, उनही आकाशवाणी और उनके नेतृत्व भारतों की बनाये रखने के दृष्टि उन्हीं को जिम्मेदारी है, उन्हीं उन्हीं नती मूना चाहिए।

देहिनी और डेलीमिन हावर्डी की तरह, बकि उनसे भी बड़कर, त्रिनेमा की फिल्मों में जन-मुद्राया की मानकिस विधियों पर अवर डालने काय एक बर-दल साफ है। उन घुसने दिनों की याद करते पर "पीडमरानों के काय को रायन करने के लिए" फिल्मों नहीं की, बौर किना भी फिर डने, पर त्रिनेमा की भां जन-नीयन से इत्याय नहीं आ-सकता। उसे इताने की आभारकता भी नहीं है, बल्कि आभारकता इस बात की है कि हम त्रिनेमा आर्यों की सामाजिक धीयन में उपराना चाहिए हैं, उन्हीं मुँगे के लिए उन्हीं उद्योगों है। यह आभारक-

एक नया गृह-उद्योग पेन्सिल-उद्योग

अभी तक देस में ठोरे घर-उद्योग और मायोद्योग के रिजर्व-घोष-पर बहुत कम ध्यान दिया गया है। युरपी की बात है कि देशभूत ही कम अनुसंधान-धायन में केवल १०० लाखों की रूची के छुट होने के लिए पेन्सिल-उद्योग पर धीयन किया है। २९ हजार की 'मिड ट्रस्ट' को बनाया जा रहा है, यह एक प्रयत्न है।

"नई दिग्गज, १९ सुलार" देशभूत की कम अनुसंधान धायन में यहीद्योग के बन्धनरूप रूप से देखित बनाने के लिए कुछ उरुषे औजार तैयार करने हैं।

इन औजारों में एक काय रदा है और तीन औजार लकड़ों को गौल करने के लिए, उन्हीं वैशिक की धायन में धायन के लिए

आपने धायन करने के लिए हैं। इनके अतिरिक्त एक केम [बॉय] और एक करीयर की रच है। इन सबकी नीयत एक ही रूपे है।

बताया गया है कि वैशिक बनाने की करी किया एक ही आर्यमें कर के ककरा है। उन्धरकर का सारं गुणस [१५४] पीछे आ से १२० तक परेगा।

के लोग इसे धीराना चारें उन्हें अनुसंधान धायन इतल धीयनमें प्रयत्न करवा है, वा को देलवा चारें दिहायक भी बाव है।

मारस में इस वनव प्रति वरं एक धयत इत्य वैशिकों की ककरल करती है। धिदा के शिदार के साथ मीन औरभी बड़ लच्छी है।

यद्यपि नवीयनी पैकटियों वैशिक बनाने के ककर में लगी हुई हैं, तथापी घर-उद्योग के अन्धवैशिक देखे विशाल की चरनी गुंवारर है।"

हमें उम्मीद है कि अनुसंधान-धायन काय मुक्त प्रयत्नकी की सुधिया का देस के नीयवान मार-बन्धे धाम उरुयमें और धाय ही करकर के खेरल करते हैं कि यह एक घर-उद्योग को परीय करल प्रदान करे।

—मथोन्द्रकुमार

साप्ताहिक घटना-चक्र

अली कालाबिक जिम्मेदारी की धायन और उरुके अनुसंधान काय धायन है। कैला कि त्रिनेमा में गिडले काय इरवीर में फिल्म-व्यवसायियों को धीयनर करी हुए उरुई याद दिहायक था, वे सार भी धायर है। उन्हीं की धाय-रुषे है, नीयवान लकड़-उरुकिरों हैं, त्रिनेमा की में वे बरर बड़ पाठो हीर किने अरुषे नायिक बनें। उनके भी धाय में मी-बन्धे और रलिया हैं, त्रिनेमा काय अरर के कमी आभोर-आभोर के लिए खुद त्रिनेमा देखने आरु लोभी त्रिनेमा देरतना करन नहीं करी। पर आरु धुनिकर यह है कि इतने नीयन में एक तरह का देत निरुषे हो गया है। यहाँ हमारा धयनर संकेत आवा है, यहाँ हम यह चाहते हैं कि धायन में अन्धवैशिक है, यहाँ लोग हमारे साथ अन्धवैशिक का स्वकारर करें और लोपों में वैशिकता तथा सामाजिक जिम्मेदारी धायन रहे। हम अपने ध्येयकाय और धायनरुषे जीवन में कुछ दर कर ल गुणों का अन्ध-रुषे भी करते हैं, केरिया चक्रों स्वकारण का, 'धमरने का' खयाल आवा है, यहाँ हम इन सब रातों की उरुल करी हैं। अरुसे में मिलावट करने काय यह कमी नहीं चाहिये कि उन्हीं की मिलावट का लिने, और भी में मिलावट करने काय यह नहीं चाहिये कि अपने धीयन उरुके के लिए [दोष घुट १२ पर]

श्री धीरेन्द्र भाई का क्रान्तिकारी प्रयोग

ति ० न० आश्रय

[गिठली २३ जुलाई '६१ को संकररावजी धीरेन्द्र भाई के सर्वनाशकार के प्रयोग-स्वल्प, बलिदा गौर वगैरे थे । साथ में छावी-प्राचीनोद्योग प्राम-स्वराज्य समिति] को ति. न. आश्रय भी थे । उन्होंने धीरेन्द्र भाई के क्रांतिकारी प्रयोग का वर्णन अपने एक पत्र में किया है । यहाँ हम उस पत्र के मूल्यभंग दे रहे हैं । -सं०]

वाल ता० २३ जुलाई को दिन भर हम बरिगाँव में रहे । आजकल वृद्ध धीरेन्द्र भाई के साथ केवल एक साथी, श्री विजय भाई हैं, जो गोरापुर(रानीवाड़ी) हैं। उनका कमी भी नहीं है। दूसरे एक साथी भी नरेन्द्र भाई इस समय अपने लयबद्ध के लिये इलहाबाद में हैं। अन्य दस चार ही लोगों का छोटा-सा धीरेन्द्र भाई का परिवार है। छोटे छोटे के साथ धीरेन्द्र भाई हँसते-रोते रहते हैं। आज तक धीरेन्द्र भाई को मैंने दूसरी ही हवा में देखा था। आज गोद में बसे को लिये, उधे दिलख-आजी रिवाजे हुए, उनके साथ हुनारी बौली कोले हुए और उधे उठाने चले गिरे उधे देखा जो घाबलीकि मर्हा का स्वरूप हो आया । हुदुप में तय और हुच को संभरे देखा वह बाल्सीकि बिल बजो थे । धीरेन्द्र भाई प्रकर क्रांतिकारी तो हैं ही, पर यहाँ आ गिने देखा कि धीरेन्द्र भाई एक बालक रिवा का नाम भी है।

मैंने बाल्सीकि के साथ टालना की वो रहकर आचय यह हरिगज नहीं कि धीरेन्द्र भाई भी बाल्सीकि की तरह ही कौर रमणीय आसक्त बना कर बैठे हैं।

धीरेन्द्र भाई का निवास बीच-गाँव में एक छोटी-सी झोपड़ी है। झोपड़ी यानी बिलकुल 'झोपड़ी'। बाँस की दीवार, मिट्टी का आगम, पत का छपर और वेही दूटे-फूटे, पटे-पुराने सामान । यह सेवक ठो बिलकुल अपने स्वामी बँछा ही रह रहा है।

धीरेन्द्र भाई का वह निवाच और वह जीवन देख कर भी संकररावजी की माँगीनी और सेनासाम का आसक्त भाव आया : "गाँबीजी खुद चाहते थे कि वे गाँव में बाहर गाँववालों की ही तरह रहें। लेकिन संदंभ और छहकार के कारण वे अन्तरीम की बात पर पूरा-पूरा अमल नहीं कर सके। लेकिन धीरेन्द्र भाई ने अब गाँबीजी का वह अन्तरु करम उठवाया है। ये न केवल गाँव के बीच रहे हैं, पलटन पूर्वतम प्राचीन बन गये हैं। प्राचीनों ने साथ परकरा होने का वीरता के साथ प्रयत्न कर रहे हैं।"

बलिगाँव में धीरेन्द्र भाई का जो काम चल रहा है, उसे एक-दूसरे में उर्ध्वी के धारदी में से देखा जा सकता है कि

"सांस्कृतिक सेवा जनतापरिहार हो, कार्यकर्ता ब्रह्मापरिहार हो और सामाज्य में धीरेन्द्र भाई के जरिये प्राम-सिद्ध हो।"

कार्यकर्ताओं पर जीवन पूर्वतम सभा-परिहार रहे, यह धीरेन्द्र भाई का नियम ही है। जब वे इस गाँव में आये, तब इधी घाँव पर आये थे कि कम-से-कम ३०-२५ एकड़ जमीन पर सामूहिक खेती होनी चाहिये। जो आज लगभग ६० एकड़ जमीन पर सामूहिक खेती हो रही है। अब तक कार्यकर्ता जो इहाँ काम करते थे और गाँव के निवास के अनुप्राण परकल को ही दिखा दन्की मिट्टा था, वह लेने थे। पर 'कार्यकर्ता की

जमीन इतनी घामिष्ठ नहीं जाय और माग-दाजी भी जो मानना है, वह इस प्रकार स्वयं निश्चित और निश्चय हो है। यह प्रकृति स्वभाव है कि भूमि पर यह साठ प्रयोग करने वाले और भूमि, दोनों गाँव से कोई गिर नरते हैं, गाँव की ही भूमि पर गाँव-हरे बरतें यह प्रयोग करते हैं। इसका जो भी अपटा परिश्रम आता है, उधे सर्व गाँव वाले ही उपभोग करते हैं।

इस सभापरिहार जीवन प्रयोग की एक और लक्ष्य यह है कि कार्यकर्ताओं की अपनी जमीन पर ४० एकड़ हैं, फिर भी वृद्ध यह सामूहिक खेती के साथ ही पठ्य है, इन्होंने सामूहिक खेती की पत्रक के रिवाज को जो नियम है, लक्ष्य कार्यकर्ताओं की जमीन पर भी लागू होगा। आज वह नियम यह है कि सामूहिक खेती के लिये मिट्टीने अपनी भूमि दी है, उनको उस जमीन की जमीन का ३० प्रतिशत हिस्सा मिलेगा, अर्थात् जो ६० प्रतिशत मिलेगा और बाकी ३० प्रतिशत भूमि-सुधार के लिये सुविधा रहेगा। कबना न होगा कि बिलने भूमि भी दी और भ्रम भी किया है, उधे ३० प्रतिशत हिस्सा मिलेगा। कार्यकर्ता भी इही नियम के अनुसार अपना हिस्सा लेंगे।

धीरेन्द्र भाई सारे गाँव को 'सभा-आरणी' कहते हैं। जो तित्तब देव ही, वह सारे गाँव ही, जो देवा है, गाँव ही ब्रह्माण्य है।

पर इतने बड़े समूह को एकत्र करके विचार देना समय नहीं है। इन्होंने एकही योजना है कि सारे विचारों को केन्द्र के प्राथक संसदीय विचार के लिये भी वे लोगों की अभाव-मन्त्रा छोटी बोलियाँ में छोड़ जायँ और प्रत्येक खेती के सा-करना एक कार्यकर्ता हो जायँ। बाँकेन, काम लें, बहाँ पर इतना ही अन्तरीम अन्तरीम काम करती लीं और उन कामों के माध्यम से ही उनको विचारों भी निवाच जाय, ऐसी हरि रतय कर कार्यकर्ता चलेगें। जो भी हुड उल्लास होता है, उधर 'पुनि' किम का सफा है।

अ आराम में १०-१० साल के पूँ उम्र के बच्चों को हरदोने हाथ में लिपे है। इन्होंने लिये अलग वे ही बीजा बनाने लिपे हैं। वे बच्चे तब चार घंटे बाँ सामूहिक रूप के काम करते हैं। निश्चय, पैसाधार का काम करते हैं। आर हली और मकई की धमकी हालत में है। कौड़े पत्र गये, इन्होंने जो लुक्काम हुमाँ को हुमाँ, पर मेहनत का पत्र प्रत्यक्ष दिखाते हैं। काम करते-करते ही हुमाँ गलित गिलाना, मास गिलाना, रामलक्ष्मी आदि बरतय बनाय चलता है। यह काम आज विजय भाई ही देख रहे हैं। इस वर्ष १९-२५ लउके हैं। यहाँ काम करने के बाद आने-आने परे हैं। जाकर पर का जो भी काम हो, वह ये करते हैं। पर के हम में भी हने नहीं होता है, आभनीय गिहरी भी मिली है और हुमाँ-व्याज प्रकृत, चर्या का कार्यक्रम भी रहता है।

यह आभ्ये । इही ठाठ आने गाँव के बड़ों को लिये । उनका रिवाज भी इही तरह चलेगा । उन लक्ष्यों भूतान थस, शुक्रवार, ४ अगस्त, '६१

धीरेन्द्र भाई का पक्का विचार है कि समाज का निवृत्त, अर्थिक विचार और समाज सुधार आदि कार्यक्रम और सेवाकार्यें सभी सचन होय, चय नरके लय कार्यकर्ता का जीवन स्वयं होय। इन्होंने न केवल सफ़रता मिलेगी, बल्कि उधमें तेज आगम।

इसे रहकले हुए धीरेन्द्र भाई निनोद में बढते हैं कि पुनः यमाने में लोच जहाँ मिठा लेते थे, वहाँ ये सारा भी है सभने थे; पर आज हम मिठा लेते हैं, लेकिन चाप देने की रफिक रहे जुके हैं। आज संदंभ

सर्वोदय का धीमी गति से बढ़नेवाला ज्वार

जी० रामचन्द्र

सर्वोदय के बारे में कम-से-कम एक बात स्पष्ट है कि वह गांधीजी के विद्वान्तां और कार्यकर्ताओं का प्रतिनिधित्व करने वाले राष्ट्र के रूप में विप्लवादि प्रयोग में आने लगा है। सर्वोदय अच्छा हो, बुरा हो, या दोनों ही न हो, लेकिन इस शब्द से जिन बाधाओं और विचारों का संबंध मिला है, वह अन्य किसी दूसरे की अपेक्षा गांधी के ज्यादा निष्पक्ष है। इस बात के कारण सर्वोदय का एक विशेष महत्व है और वह एक बड़ी पुनर्जागरण के रूप में हमारे सामने उपस्थित होता है। गांधीजी की हर बात के पीछे प्राविण्यारी तत्व था, फिर भी उनके विचारों और उनके कामों को उपहास, उपेक्षा, अज्ञान, विरोध, स्वीकृति, फिर निषेध और फिर स्वीकृति इत्यादि अवस्थाओं में से गुजरना पड़ा है। उनका इतना ऊँचा व्यक्तित्व होते हुए भी वे इन सब अनिर्वाय अवस्थाओं में से गुजरने की परेशानी से बच नहीं सके। सर्वोदय को भी विनाश के इस कालवे रास्ते से गुजरना होगा। ऐसा लगता है कि सर्वोदय उपेक्षा और उपहास की अवस्थाओं को तो अब पार कर चुका है; अब उसकी आलोचना का काल है, जो एक अच्छी चीज है। यह विचार अब धीरे-धीरे लोगों के मनों में घट रहा है। सर्वोदय को लोकप्रिय बनाने का श्रेय अन्य लोगों की अपेक्षा विनोद और जयप्रकाश को सबसे अधिक है।

भूदान-मामदान आन्दोलन में गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रम में एक नया अध्याय जोड़ा और सनादय को जनता की नजरों के सामने ला दिया। आधिपत्य के क्षेत्र में आदिवासियों तरह काम कर सकती है, उसका एक आश्चर्यजनक सच्युत दुनिया को मिला। लेकिन विनोद को कोई भी एक राजनीतिज्ञ के रूप में नहीं देखता, हालांकि कहा जा सकता है कि वे बहुत बुनियादी और गहरी राजनीति हैं—लोकतंत्रिक ही राजनीति हैं—लेख रहे हैं। इसके विपरीत जयप्रकाश सर्वोदय की राजनीति के बौद्धिक प्रवर्तक हैं। ज्यों-ज्यों वे सच की राजनीति में घूब रहे हैं, त्यों-त्यों वे सर्वोदय की राजनीति में व्यथा महसूस करते हैं। ये हमेशा से एक राजनीतिज्ञ रहे हैं और आज पहले से भी ज्यादा वे राजनीतिज्ञ हैं। यह उनकी प्रवृत्ति ही है, क्योंकि आज का युग राजनीति का ही युग है और एक प्रथिमाशाली तथा प्रत्यक्ष राजनैतिक प्रवृत्ति के निम्न सर्वोदय आगे नहीं बढ़ सकेगा। नेहरूजी के प्रारम्भिक दिनों की तरह जयप्रकाश के व्यक्तित्व के पीछे भी एक तरह की गुप्तता रही है और वह भी सब तरह की व्यक्तिगत और नैतिक विषयों और चर्चाओं से ऊपर रही है। और हिन्दुस्तान के अन्य किसी नेता की अपेक्षा जिस तरह नेहरूजी ने समाजवाद को बिना किसी प्रकार की गांधी-गान्धारी मान्यताओं से लोगों के सामने रखा, उसी तरह जयप्रकाश सर्वोदय को एक निरापेक्षी और खुले सिद्धांत के रूप में प्रतिपादन कर रहे हैं।

हुजूर दिना पहले आनंद में जो तेरहवाँ अखिल भारतीय सर्वोदय-सम्मेलन हुआ था, उसके अग्रणीय भागण में अग्रणीय भागण में सर्वोदय का उसके विभिन्न पक्षों में व्यवस्थित और पूरा चित्र हमारे सामने पेश किया है, जैसा उन्होंने पहले करते नहीं किया था। इस कार्यक्रम में उनके विचार एक निश्चित और छोटे हुए रूप में हमारे सामने होने का आनंद मैं मिला है। पर अच्छी बात है कि हिन्दुस्तान के और दुनिया के भीतर सन्दर्भ में सर्वोदय का इस तरह से स्पष्ट चित्र हमारे सामने हो, क्योंकि इतने लोगों ने इतनी तरह से सर्वोदय को हमारे सामने पेश किया है—जैसा कि समाजवाद के बारे में हुआ है—कि लोगों का उत्पन्न में पर माना स्वाभाविक है। अब हमारे सामने एक ऐसी चीज है, जिसके आधार पर आलोचकों और प्रशंसकों, दोनों को ही एक निश्चित आधार मिला है।

सर्वोदय की घोषणा करनेवाली नव-प्रजापति की व्यापक विस्तृत व्यापक रोदन तो नहीं है, लेकिन उसके बहुत नवकीर्त है। हमारे देश के अराधनों और पक्ष-वि-काओं में उनके एक अग्रणीय भागण के बहुत कम और बहुत-से भीड़े अग्र-प्रभावित दिने हैं, समाजवादी आलोचनाएँ ही उस पर कहीं-कहीं नहीं हुई हैं। इस पर वे हमारे देश में चल रही एक अजीब परिस्थिति का भाव होता है। नये-नये पदों के, और उनमें बचने वाले नये-नये लोगों के हुए, रोमांच के बचन और पदनाओं के प्रवाह के नीचे, उस दुर्भाग्य में भरोँ हमारा बहु-संरक्षक देवारी समाज जाता है, एक क्रांति की माग में हिन्दु-स्तान के भिन्न भिन्न भागों में सर्वोदय-आदिप्य प्रभावित हो रहा है और पैठ रहा है। हिन्दुस्तान के विभिन्न दिनों में अग्र-विप्लवों के पाठ निष्कर्ष, उक्ति-प्रमाण, पत्र-पत्रिकाओं और पत्रों के अधि-धरि-धरि लोगों में चलत शब्दों का सन्दर्भ पड़ रहा है। प्रारंभ-प्रारंभ के दिनों में केन्द्रों

में ही होते हैं, जिनकी कि नये-नये अल-चरों में और पदों में अर ही ही एक-दूसरी नहीं आती। हमारा विविधतात्मक चुनाव कायम कर रहे हैं और भागी और विनीत का नाम और उनका सन्दर्भ एक बात फिर लोगों के पास पहुँचा रहे हैं। अतः यह सम्भव है कि जयप्रकाश के अग्रणीय भागण की जो पद्यों में कोई चर्चा न हो, लेकिन गाँव-गाँव और छोटे पद्यों में इस सम्भवतः, उसके कड़ी तालका लोगों के पास यह पहुँचा है।

सर्वोदय सम्मेलन में जयप्रकाश ना-रयण ने जो निष्पत्ति पेश किया है, उसमें कई बुनियादी बातें सामने आती हैं। उसमें से कुछ की चर्चा यहाँ करना प्राथमिक होगा।

पहली बात जो यह सब नजर आती है कि सर्वोदय अन्त राजनीति से बनकर नर का घुमा बनकर साम नहीं रहा है, हालाँकि यह सच को राजनीति में दखल नहीं दे रहा है, पर वह नीचे उभार-बचन की उव

बादों तक पहुँच रहा है, "जहाँ अन्तःतक, दीन और दुःखी" रहते हैं। जिस का पर इसमें फल होगा, उस हद तक वह जनता का सम्बन्ध प्राप्त कर सकेगा। यह टेड बुनियादी राजनीति है।

सर्वोदय का लोच-राहित्य पर नहीं, बल्कि लोक-राहित्य पर है, शासन या शासनिक कार्यों पर नहीं, लेकिन लोगों पर और लोगों के कर्तव्य पर है। राज्य-राहित्य तो लोक-राहित्य का ही प्रतिबिम्ब है और जो लोक-राहित्य की उपेक्षा करके राज्य-राहित्य के शीतें बोर रहे हैं, वे छाया को ही बहने के कीर्तित्व कर रहे हैं। अन्ततः न राजनीति की यही बसतित्व है।

सर्वोदय को आधिपत्य पर आलोच्य परिस्थिति के अनुसार लोक-राहित्य का विचार करने का उद्यम प्रयत्न करे। इसमें कई बहल की बातें परिलक्ष्य होती हैं। सर्वोदय को बहो-दोष का बचन करने वाले थोड़े से व्यक्तियों या समुदायों तक सीमित नहीं रचना चाहिए। उसकी परिधि अन्त-आन्दोलन में हीनी चाहिए, अर्थात् लोगों के लिए और लोगों के आन्दोलन में; अन्ततः अन्त-तक सिर्फ यह नहीं है कि विविध नेत्रों में, बल्कि साम्य तक रहा है, उनको सभको परस्पर जोड़ दिया जाये, बल्कि एकत्र महत्व यह है कि आम जनता को जो सवाल लूटते हैं, वे हाथ में लिये जायें, जिनके लोक-सत्तात्मक के लिये देश भर में एकजवाब

एक सर्वसामान्य कार्यक्रम में सबको लगाया जा सके और इसके अतिरिक्त का अनुभव कर सके।

लोक-राहित्य पैदा करने के लिये लोक-विद्युत लगाकर ही एक अग्रणीय भागण करनी है। अन्ततः लोक-विद्युत के लोकात्मक और राज्य-व्यापी पैमाने पर किया जाने वाला लोक-विद्युत का अग्रणीय आन्दोलन बनना ही अग्रणीय पर सकता है। आज यह नहीं हो रहा है और वह अच्छी-बुरी होना चाहिए।

लोक-विद्युत के देश-व्यापी पाठ के मानवीय-वादन प्राति-सैनिक हो सकते हैं, अतः प्राति-सैनिक की व्यापक रूप में और पूरी तौर से संगठित करना चाहिए, प्राति-सैनिक लोक-राहित्य को एकजिन्त करने का सफल बन सके। प्राति-सैनिक के बिना लोक-विद्युत प्रकट नहीं हो सकती और अतः उसके बिना सर्वोदय भी नहीं हो सकता।

पंचायती राज का काम, चाहे वह किसी के भी सत्ता-पथन में शुरू हुआ हो और चल रहा हो, हर एक को उठा लेना चाहिए। सबकी पाहिले कि इस चीज को हम प्राथम्य चीज की एक अग्रणीय के रूप में बतल दें। पंचायती राज एक-दूसरे साधन मिलते हैं, जिनके अतिरिक्त लोक-विद्युत प्राति के प्राथमिक बड़े बहल बड़ा सकते हैं।

राष्ट्रीय जीवन का आभोजन सर्वोदय-विचार के विपरीत चीज नहीं है, बल्कि उसका एक हिस्सा है। यह कहना महत्व है कि सर्वोदय और राष्ट्रीय विद्युत पर-दर-दर विरोधी है।

आज सरकार के सत्ता-पथन में जो नियोजन चल रहा है, उसमें क्रांति अन्त-तक है, उसकी दिशा भी कुछ हद तक गलत है और परमाण्वस्तर पर विनोदना धारा-विनोद के हुए हुए है।

सर्वोदय के अनुसार योजना नीचे से होनी चाहिए और बड़े और छोटे, दोनों पैमानों के उद्योग तथा एक-दूसरे को उत्पन्न करने वाले विकसित होने चाहिए। हिन्दुस्तान की परिस्थिति में छोटे उद्योग केवल बड़े उद्योगों के पूरक के रूप में केवल राष्ट्रीय तौर से नहीं, बल्कि राष्ट्रीय उत्पादन की

साथी और मित्रों को रणांगण में आने का निमंत्रण

गोविंद रेड्डी

[श्री गोविंद रेड्डी हम सर्वोदय-कार्यकर्ताओं हैं। सभी मानें में एक सच्चे और सुलभें हुए किसान हैं। बहुतों के बर्णों से मुझे दिलीरहितगम से होती के संघर्ष में 'रिसर्व'—सुसंयोजन—कर रहे हैं। सर्वोदय के संग से रिसर्व कैसी भी जागी जासिए, उससे मेरे एक भाई हैं। यहाँ पर उम्मेदों से हमको सर्वोदय की दृष्टि से होती में उन्नत बनाने के लिए रणांगण में आने का केवल निमंत्रण दिया है, बाकिसे वह स्वर्ग में सहाय-प्रार्थने के लिए चलत हैं। धरारा दे, रचनात्मक साथियों—प्रकारों-संगे उन्के अनुभवों का पूरा-पूर आत्मबोध।—सूत्र]

देराज में दो पंचायतों को खोजना, काम हुआ तो भी हम जान के बारे में आत्मनिर्भर नहीं हो सके। निश्चाल देव की पैदावार ५ करोड़ टन है। मगर १० से १५ करोड़ अमेरिकन डॉलर के बराबर १० लाख मीट्रिक टन में, १० लाख टन कावल देना ही हुआ है। देने की शक्ति, आर्थिकता, बर्णों में भी कम है। तीसरी योजना-काल में प्रति पर १२५ करोड़ डॉलर तर्ज करने वाले १० करोड़ टन अन्न उपजान करने का एकर रखा है। किम रकम में दूसरे उद्योगों का विकास हो रहा है, क्या कृषि-उद्योग का विकास नहीं हो रहा है। उपारणनीय विमान के समय प्रथम में ६०० कारखाने थे, अब १३०० कारखाने हैं। १२-१३ साल में ६ गुना बढ़े। उन्को पदार्थ में मार का जाल बिजा हुआ है। मंगे से, विद्युत् प्रविद्युत् आवा आवा है तो भी मैंगे ही एकर ८११ चीज होवारे हैं। प्रति मिनिट के लिये विद्युत् का बहुत प्रबंध कराया, देराज में ६५ १०० मील की दूरी पर रणजान लवद का बंद कारखाना खोलाया, हर दिने में प्रति महाशक्तिजन रचना करना शुरू रहे हैं।

इस के अतिरिक्त जो नए अधिक आय की बकराएँ हैं। आय के बिना सब मुक्ति पत्तों का विज्ञान करना बर्णों है। आज स्कूल-कालेज में मिलने मिलान बर्णों निकालें हैं, वे लोग ५ काम नहीं हैं। नीकेर, गणना और उद्योग ५ अधिकार हैं। वे उन्नत कृषि कार्य निर्यं हैं। वे भी सहायता से दिन बारी हैं। अन्ततः विज्ञान वर्ग के कृषि-कार्य बरतना देना

होना-शायीय योजना के एक निश्चित और महारानी और के तीर पर हैं।

जातीयों के द्वारा यह कि भारत-सर्वोदय-कार्यकर्ता महारानी को सही राह पर उम्मेदों की देवा को निक मारना काम लिये। इस बात की तरफ हमें माओवादी से बचना देना चाहिए। आज प्रजासत्ताओं के सामने अनेक तरह के संघर्ष और चुनौतियों कायी हैं। गयी हैं। लोकतन्त्र में और प्रजासत्ता विधान-समाजों में उन्नत कार्य निश्चित करने के उन्मादीयों को ही हमें उनका कोई काम नहीं है। उनसे विधि से काम ही है कि वे सार्वभौमिक पाठों में और उन्नत से अनेक नये चुनौतियों कायी हैं कि वे किसी एक को या दूसरे को अपना मत देते हैं। मुझे मानिये कि वे ही अन्ततः आय का अपने प्रीतिपत्तों पर कोई निरन्तर नहीं रहता, उनसे सम्पर्क ही रहता है। अब बन्धनशायी में वह मुहाज रखा है कि उन्मादीयों की सार के लिये ही यह मुझे हुए प्रयत्नोपयोग के द्वारा सम्पर्क ही रहता है कि अन्ततः सम्पर्क बनाने चाहिए। अब एक बड़े महारानी का और कारी सम्पर्कजानों काया बारीक है।

अन्त में सर्वोदय को मारने में लिये हैं और तब तन्त्र-सहाय के लिये हैं। बर्णों पर सुविधा बर्णों पर नहीं है। दूसरी सृष्टि-रचना संघर्ष से-रणांगण-अन्तःसृष्टि के रूप में रखा है, बर्णों में सर्वोदय का उद्देश्य नहीं के आगम की होर, एक पर दूसरे पर उन्नत और दिने की तरफ आने का है। सर्वोदय के रूप में 'सर्वोदय' नहीं, 'सर्व कार्य' रखा हुआ है।

अब हमारे लिये किम उन्के कर्तव्यों का निश्चय किया है, उनमें से एक को देना नहीं है, किने हमें हम के एक एकरे में उन्नत और-सम्पर्क, विज्ञान में, जो आज भी सभी को बंद करता है और

तन्त्र हर साल ८०० करो से ६५०० करो तक लगाया चढ़े हैं। उन्मुक्त से होती प्रजासत्ता विद्युत् बननी होगी, किने देशकी वगत सर-रखा से आगम हो, विज्ञान जनना बुद्धि के एकर कर आगम रहे, सभी उन्नत प्रजासत्ता गरीब और गणतन्त्र हो सकनी है। आज एक समय छोटी सेवी का विरोध चलता है। उनको भी कोई कार्य के आँकड़ों के देना सही है।

देराज में १५ दिने में ही लगभग-प्रति-प्रति को भी रखा है। स्वर्ग-हृदि-नारी बनेको ही इन्तान एन्के जाने कायी और विद्युत् आगम पूरा बर्ण, एकरे की उन्नत-रचना के साथ उन्के हैं। नीके के १२ मुंकी काय-प्रति भी देनी होगी। १५ करो डॉ, सभी एक काम की आगम बनाने का। पर-सम्पर्क हीके के साथ अन्तर् में ही। बर्णों पर मेजरम अन्तर् में ही।

- (१) ३० अक्टूबर '६१ तक पंच-सम्पर्क की शक्ति लोटी है।
- (२) आगम की आगम और एकर।
- (३) अन्तर् में रिसर्व।
- (४) बर्णान किन्ती हीके है।
- (५) एन्तःसृष्टि का आगम।
- (६) सभी की सुविधा और सहाय।
- (७) आज नये हीके है।
- (८) हर पत्त की पैदावार ही एक किन्ती है।
- (९) काम करने वाले किने हीके है।
- (१०) एकर पर प्रबंध किने है।
- (११) काम पर है हीके किने है।
- (१२) कया का लान किने, सार्वभौम का रहे गार से किन्ती हीके है।
- (१३) अन्तर् में सहाय का बंद किन्ती हीके है।

गोविंद रेड्डी, वरदार, पौर मुनगी, सार्वभौम-सुधार विज्ञान को संघर्ष, राति।

"सर्वोदय"

(सहायता-संगीत)

महारानी: श्री सगमभारती देवार्जि
(सर्वोदय) संग-संगीत "सर्वोदय"
एकी से उन्नत मारणा-रणी
सर्वोदय बना आउ करने
का १५ अगस्त, १९६१ में एन्तःसृष्टि
का रा है।

एन्तःसृष्टि का एकर
सहायकार, "सर्वोदय",
१०, सार्वभौम-सुधार,
अन्तःसृष्टि-१३

क्वेकर्स : शांति-उपासकों का समुदाय : १

● गाराणन देसाई

['भ्रूतन-यज्ञ' के घातक 'क्वेकर्स' समुदाय से परिचित हैं ही। मलय और अहिंसा के द्वारा समाज में शांति से स्थापना में विरतमान करने वाला यह समुदाय समाज-विचार के कच्ची मिट्ट है। यहाँ पर हम ही नारायण देसाई द्वारा लिखे गये क्वेकर्स समुदाय के ऐतिहासिक विवेचन का पुनर्गठन दे रहे हैं। -सम्पादक]

संसार के शान्ति-उपासकों के बीच 'क्वेकर्स' का स्थान अग्रगण्य है। आज जब विज्ञान ने विश्व को अमृतपूर्व ढंग में छोटा बना दिया है और सारी मानव जाति को निगल जाने वाले वित्त नये सत्त्वात्मक बना रहा है, तब सारे शान्तिप्रेमियों का मर्त्यम् है कि वे आज एक-दूसरे को जितना जानते हैं, उससे अधिक जानें। इतना ही नहीं, उन्हें सह-विचार करना होगा, एकसाथ मिल कर विश्वशांति के लिए नये-नये मार्ग सोचने होंगे। मत तीन शताब्दियों से जिस संस्थापक जीवन के प्रयोग किये हैं, प्रस्तुत लेख में उसके बारे में थोड़ी-सी उपयोगी जानकारी देने का प्रयत्न किया गया है।

ईसाई लोगों के एक संस्थापक को (जिसे 'संस्थापक' कहना भी बड़ा किराया बनाया होगा) उसकी हीनी उदयने वालों ने 'शेफरड' (यात्रे करने वाले) यह नाम दिया। ईश्वर के इच्छाम के लिए मीन प्रार्थना करने वाले इस संस्थापक के निम्न ही प्राथमिक लक्षण हैं ईश्वर इच्छाम के इतने अभिरुत होते थे कि उनका अंग-अंग काँप उठता था। इनके घरों में वैवाचन महाप्रार्थना आदि को हर तरह की अनुपस्थिति हो चुकी है। जब कभी नये लक्षण का दर्शन होता है, तो इत्यार अंग-अंग अत्यधिक उठता है। और यही सौदा था क्वेकर्स का। यह अत्यन्त साधारण लोगों को भी हुआ होगा। इन लोगों को भी इसी तरह क्वेकर्समान स्थिति में देर लोगों ने कह दिया 'ये तो शेफरड (कौल-पाल) हैं।'

किंगडोमी ने इस नाम पर जो विचार व्यक्त किये हैं, वे पत्थनीय हैं। वे कहते हैं-

'क्वेकर्स' याने 'किंग'। किंग में 'किंग' बाहुल्य है, जिसका अर्थ होता है, तामी, प्रशासक होने का। इसका दूसरा अर्थ 'कॉन्' है और 'अभिलक्षण' यह भी एक अर्थ है। वे लोगों अर्थ 'किंग' याने में समावे हुए हैं। तीनों अर्थों में 'क्वेकर्स' हैं।

ईश्वर की आज्ञा, उसका अनुभव और उसके प्रभाव से घन उपासक होता है। इस अनुभूति को स्थायी रूप में रखकर तदनुसार मानव समाज को आगे ले जाने के लिए मानव को सक्षम का रूप देना है, धर्म-संस्था उन्नी में से बनती है। इतिहास में कई बार देला गया है कि मानव की अनुभूति विस्तारशील बनाने के लिए जिस संस्था का गठन किया जाता है, वही संस्था आगे चल कर उस अनुभूति का दम घुटाने वाली और उसकी प्रगति में रोड़ा बन जाती है। ऐसे अवसर पर धर्म के नवतत्त्वात्त की आवश्यकता उठ पारी हो जाती है। 'क्वेकर्स' विचारधारा ईश्वर धर्म के नवतत्त्वात्त की प्रेरणा की प्रथमप्रति है। सृष्टिप्रसूत ईश्वर-विचारों में अग्री हुई नरता का परिमार्जन प्रथम मार्टिन लूथर के नेतृत्व में प्रोटेस्टेंट विचारधारा ने किया। ईश्वर का इच्छाम पार्थ की मार्ग ही प्राप्त होता है, इस विचारधारा की तरह 'क्वेकर्स' में वे, यही सही है, इस विचारधारा ने के टी। क्वेकर-विचारधारा ने प्रोटेस्टेंट विचारधारा का भी नवतत्त्वात्त कर दिया। उसने किसी भी तरह का अस्मित अभिप्राय नहीं माना। रहना ही नहीं, किसी धर्मग्रन्थ का भी अस्मित अभिप्राय नहीं माना। 'वी मार्लर विद्वान'-जो ईसा अन्तर में निवास करता है, उन्नी के सम्बन्धना भी उसने अस्मित प्रमाण माना।

वे क्वेकर्स १७ वीं सदी के मध्य फाल में इंग्लैण्ड के उत्तरी भाग में स्थापित हुआ। जितने ही लोग यॉर्क-गॉस एरर पर मरिद्वी एवं निर्यापणों में आ रूप को ईसा का जो सत्येय दम मात्म प्रस्ता, उसे अनुमाने थे। ईश्वर और मानव के बीच सीधारी क्रिती तथा की इतनी जो उन्होंने बहादुरी के साथ चुनौती दी। मूक प्रार्थना में उन्हें जो अनुभूति हुई, उसे उन्होंने सख और सचोद माया में लोगों के-सामने रखा। इस तरह के धर्मोद्वेगको में बाजें क्वेकर्स प्रथम थीं। उनको यार्गी में लक्ष्य की अनुभूति थी, सुल्लन्दन था और जो तत्परता के कारण उनल आधिक प्रतीतार है। वे नहीं पंहुंके, इन्होंने अपने मर्यादकों को उदरगा था बाहुता को मिया दिया। इन्होंने के कारण क्वेकर भी ब्रह्मा है, करता है, यह परपत्र चली, जो तीन शताब्दियों के माद आब भी उतनी ही रूप टरती है।

अग्रिमिक क्वेकर्स में 'विलियम पेन' का नाम सर्वाधिक प्रसिद्ध है। यह में इनके परिवार के नाम पर अमेरिका के एक राज्य को 'पेनसिल्वेनिया' नाम प्राप्त हुआ। विलियम पेन का प्रथिल अस्तन्त प्रथिम-काशी था। इनकी 'नो वॉर नो टाउन्स' नामक पुस्तक क्वेकर विचारधारा की सर्व-श्रेष्ठ पुस्तकों में से एक है। इसके कारण क्वेकर-विचारधारा अमेरिका पहुँची और फिर यह २०० वर्ष से दोनों देशों में इतरता सामन्थय विकास होकर रह गई है। यूरोप के अन्य देशों, फेडरैटिव आदि में भी क्वेकर का प्रसार में पड़े हुए है। १८ वीं सदी के अन्त के पहले एक यूरोपीय सुनिप की अन्वेष्टा नई दुनिया में क्वेकर्स की दली काशी बढ़ गयी है।

अग्रम में एक सदी क्वेकर्स के लिए की प्रवृत्तियों में बीती। अपने विचारों से चिन्तित रहने के कारण वेज बना उनसे लिए स्याथमिक शक्त हो गयी। फिर उन

करने के एकमात्र आचार के कारण इन्होंने क्वेकर्स में ऐसी भीमक श्रेष्ठता बना ली। इसमें वे क्वेकर्स पदवी, सैन्य में जाने की न्यूनता मार दी। क्वेकर्स ने बेले में लिटी-सी भीमारीयों काटी। इतनी ही के की वातनाओं के कारण मृत्यु को धार में चले गये।

धार्मिक शताब्दी को इस तरह से क्वेकर्स का उन्मूलन चारित्र्य मारा। वे चारित्र्य ही आज उन्मूलन विभुदुद का प्राणि पूर्वक सामना करते भी उचित प्रयत्न कर रहे हैं। यही सत्यता ने उस समय की बनता के इच्छाम में क्वेकर्स के लिए आदिश्री स्थापन किया था।

बाजें क्वेकर एक सुन्दर प्रथम का वर्णन करते हुए करते हैं, 'मैं एक सफेदकर है केल में था, तो एक मित्र (डेकर 'किंगडो' या मित्र बने जाते हैं और उनके सखन का नाम 'सौदागी' आरक केन्द्र है। वे मित्र सखा है।) इन्हीं मॉडर्न अतिविक-कॉमिसेल के पाठ पहुँचे और मेरी बान, अपने की केल में रख कर मुझे सुबहाने की उठाते अपने देवारी यालुपी। क्वेकर्स पर हतार हतार अन्तर दुःख कि उनसे अपने देवारीयों को सख कर कहा, 'परि मैं देखी स्थिति में यह जाता तो आरम में क्वेकर देवारा करने को प्रस्तुत होता है। अन्तर ही उनसे उक्त मित्र ही बात मानी और कहा कि क्वेकराणी होने के बाद संभव नहीं। फिर भी इस घटना के पीछे जो सत्य था, उसकी उप पर धरती सार पारी।'

केल जाने की क्वेकर्स की हृत्ति मानी के परबदार मरिद्वर का बह दखली है। विलियम ब्रुडरवी ने अपनी हृत्ति का भी निम्नलिखित वर्णन किया है, उसमें 'बुधमन' शब्द इस विधा काय, तो हारी भाषा ऐसी लगती है, मानो मारीयों की श्रेष्ठ रहे ही।

'मानो, मैं मास में प्रतीत कर रहा है, इस तरह वेद में आता था। मैं अपने बुधमन के बहाम कि आरम यहाँ आरम दिन रखता चारुते हों, एवं। जेउ में मैं आभास की प्रवण के पीर पला। मुझे प्रथमपी मणी पेशियों और बजाती को मैं रलमालर की तरह मानता। विरलन ईश्वर के नाम पर मैं छिडे रिजर्व उदरता; ईश्वर ईश्वर दार निमांरित समने से अधिक वे कभी भी मुझे नहीं लगी रह सकते हैं।

उसके बाद वे क्वेकर-अन्तरीकृत समाज एक सत्ताशील एक टंटा पारा। क्रिस्तु ।।। धार्मिकता का उरोग्य उक्त संस्थापक और विचारों को सुन्दर करने में मूढता। क्वेकर्स के संतान के विषय में रिजर्व विचार आगे किंचा जायगा। ।।। क्वेकर्स के दरमियान से विचार इतने हद अने कि

दियों के बीच भी आब की तरह सखल और सुनिपानयक नहीं थे। बाजें यॉर्क एरर अपनी पवित्रा में दिया हुआ एक केल का वर्णन भीमक कर मूर्तिमान विच तथा करने में पयास है।

'क्वेकर्स को हमें अपने घोड़ों और सुद मन्थने लिए प्रति सखाद ७-७ मिलियन देने पडते थे। हमने घोड़ों को बाहर छोड़ कर ७ मिलियन रचवारे। इस पर केकर्स ने हम पर बहुत सुलम किया। हमें 'क्रेमडेल' में मेष दिया। यह जगह अत्यन्त गंदी और दुर्गन्धपूर्ण थी। पहले वहाँ पौंसि की सवा देवे के सब सुनिपों को रखा जाता था। यह जगह इतनी दुर्गन्धपूर्ण थी कि उनके बारे में कहा जाता था कि इसमें पौंसि का आरपी बराबरी ही किता बापल लौट करवा है। वहाँ सरे हुए सैकड़ों का संख्याना बणों बाद भी वहाँ पारा रहता। इतिहास पानी और पैसाज के मरी गड्डियों सैकड़ों बग हम में जिनने ही स्थानीय पर सुन्दे सख परे हुए जाता। केकर्स हमें उसे धार करने नहीं देता और न सोने के लिए रिलार था स्थी पाठ का ही उरोग्य कर देना था। धार भी धार के कितने ही विष हम सोचों के लिए मोगकरी और धार के आते। दुर्गन्ध वरने के लिए हम लोग बोडी पास सुनवारे। चोर बहारे फिर पर रहते थे। और केकर्स का बमरा उरक के पाठ था। मैंने जैल कर बलापी तो उसका उन्नी केकर्स के कनरे तक पहुँचा। पत्थनरूप यह इतना निगद उर कि उनसे पैदियों के पाठाने से रिजर्व पर उरक रित्ये। इस लोग उरवे इतने रिजर्व गये कि एक-दुसरे के या अपने धरिरी को भी हू नहीं सकते थे। इस कारण दुर्गन्ध बह गयी। उसके और पूरु के कारण हम लोगों का हम सुन्दे स्थान। अभी तक हमारे पैरों तले ही मंदरी भी, केकर्स आर को बहारे फिर पर और तार धरिरी पर भी यह निरक गयी। इसके अन्त्यवा भ 'आल, युवाच, युवा' सैसी कभी न सुनी हुई गालियों की बीडार भी मराला था। इस लोग वररों देड को सखने हीन थे, इतिहास सारी सत सखे-सखे ही रह गये।'

वेउ के बर्नन यह सखु हद उदरता रण इच्छीएर रिचय मया कि हम सखल से ।।। वेउ-यातना केवल इरान्ता-युवा के स्यापदियों ने ही नहीं चुनयी; बकि अपने सख को निर्मो कवा के साथ प्रकट

हिमालय का देश—असम !

वह असम, जहाँ प्रकृति हजार-हजार हवाओं से अपना सौन्दर्य लुटाती है !

वह असम, जहाँ मानव का भोला मन अद्वितीय जीवन जीता है और मानवता की स्वरूप-रचना का प्रतीक बन कर हममें आज के भ्रमानक नृदिवादी, किन्तु दमो मानव से विचिकित्सा पैदा कर देता है। वह असम, जहाँ लोगों के भोलेपन को तथा निरद्वल जीवन को कुछ समझदार लोगों ने शोषण का साधन बना दिया है। असम, जहाँ की भूमि कहीं को 'सर्ब' नहीं है, यानी समान नहीं है, आज विनोवा की यात्रा-भूमि यानी हुई है। मैं यह रहा हूँ, गाड़ी दोड़ो चली जा रही है और इससे पहले कि सदेह विनोवा के पास पहुँचूँ, मेरा मन-मस्तिष्क विनोवा के साथ यात्रा भी करने लगा है।

असम एक दुर्गम प्रदेश है, जहाँ पहुँचना असम नहीं है। अनेक कठिनाइयों और रास्ते को दिक्कतों से लड़ कर ही असम पहुँचा जा सकता है। उक्त प्रारंभ २० मील को अमनोपन से हुआ। अमनोपन प्रत्युत के किनारे का आरिणी स्थान है। यहाँ से भारतीयों को बार करके गोहाटी जाया जाता है। मैं स्टेशन पर उतरा कि उस पार मेरा ब्राह्मण स्टीमर का बुका था। अब वा तो मैं सुदुरी मेरे के लिए कई घंटे दूनकरा करूँ वा प्रत्युत की वेववती बाराओं से सरता हुआ किसी छोटी नाव के बरिसे ही पार पहुँचने का दततत भोले है। फिर सवाल यह भी तो था कि इस बस पार में कौन उस पार जाने को तैयार होगा ? मैं इसी प्रयोग में विस्तित प्रेरणा कात वा; प्रत्युतकर कर रहा था कि कुछ लोग (मसलत) चलने के लिए तैयार हो गये।

प्रत्युत का गंगा अपनी पूरी ज्वानी पर वा। भारत की वह विद्यालयत नदी अपनी अपार जल-मयि के बीच मुझे हिलोरे दे रही थी। पर सख की सख्त भी यात्रा करने का मुझे अभ्यास मिलेगा, मेरी कलना भी नहीं थी। भय, शहद, नयनीला और उच्छ्रता ने मेरे सारे मानस को हिला डाला। पसंभी-नी, छो-छो बह कर छोटी-टी नाव के पार वा मैं बार-बार अपना सद्गुण लो बैठती थी, किन्तु मसलतों के साथ न मे आधा का र्शन बलये रला। और मैं उस पार पहुँच गया।

अस में पाण्डु की घाटी पर वा। यह असम की घाटी, जहाँ अनेक तरह के पेड़ों के समूह लगे हैं, जिनमें, अनेक तरह की भायार्य यानी बस कुछ विविध, वन कुछ अमल हैं। मैं पाण्डु से बस हाव गोहाटी आया और गोहाटी के २,५०० मील की दल-नाम करके निनोवा की वा वर पहुँचा। रास्ता अपनी प्राकृतिक छटा से मन मोह रहा था। दोनों ओर हरे-भरे चार के काण्डे पाले हुए गडदर के दे थे। ऊँचे-ऊँचे सुपारी के पेड़ अथवातन को धूम में भासत कर रहे थे। ऊँची-नीची पहाटियों को बन के ऊँची-नीची शिपिती की अभिव्यक्त कर रही थी।

हम 'मामूली टापू' में पहुँचे थे। हम यानी मैं और तुमझारी हैं। वे गोहाटी से साथ को शिपि से और मेरे असम-यात्रा की आरिण तक अग्रुभ रहे। यह स्थान प्रत्युत के दो हवाओं के बीच सुपारी के और अमना-ग के बा-बल है।

निनोवा की इस क्षेत्र में निना किसी पहले से निर्धारित कार्यक्रम के मुक्त विचरण कर रहे हैं। कभी दो मील, कभी तीन मील, इस तरह छोटे-छोटे पनाब होते हैं। लोगों को यही सरल भाव में छोटे-छोटे उदाहरण देकर निनोवा की आमदान तथा स्वबोनी जीवन की कल्पना समझाते हैं। पर दिन-दिनों में निनोवाजी हाव दिने जाने वाले छोटे और सरल दृष्टान्तों का एकत्रण ही दो बहुत ही सुन्दर वाद-मार्गिण एवं प्री-शुद्धिवाय का निनोवा को सरता है। निनोवा के मुँह से एक श्चरि भी पॉडि रान की मधुर धारा बहती रहती है। और यहाँ के भोले-मले लोग मुँह बावे उडवा आसवाय

बरादान समतल कर देना मन से प्रसन्न होते हैं। स्थानीय उत्कर्षकों के श्रम, भोजन और कांडा मास का देने लगे हैं। शिपि-सादे लोग आज वन-जुग के श्रेष्ठ अभिगमों से बचे हुए हैं। यहाँ के लो मबदूरी करवा ही क्य कर समझते हैं। इसलिए पूरे प्रदेश में ५०० मी. ओं मिटर की गहराई के ही मबदूरी खाए हुए हैं। सरकारी नौकरियों में अधिकांशतः रान हैं और उद्योग, व्यवहार वर अभिगम, सुनराती और भारतीय अधिकांश हैं।

यहाँ के लोग वाद के आने बने का बहुत आदर करते हैं। उन्हें देर और उपलिख देते हैं। किन्तु यहाँ पॉडि, कर्षणि कमाने के लिए आते हैं, उनसे इस तरह आलिख और देम वा अन्युत्कृष्ट क्पाणिक बन उडवाते हैं। इसीलिए अर भी-भी अरभी लोग वाद के लोगों से तरफ्त में बने लगे हैं। और उडवा सराते लोरे कि ये वादर वाले हमें छटने के लिए आते हैं।

यहाँ की भाषा-मन्सा के अर लोको को ही मसत नहीं है। राजनितिक रक्तों के लोको में मस मन्सा को अमर राजनितिक स्वार्थ साधन बचाने को कोरिणत की है। इस प्रकार मैं असम में आगना रह ही, रह कर यहाँ के जीवन का र्शन कर रला। यह देर देता देर है, जहाँ हर कर अर को भी वाहता है। इसीलिए निनोवा की मैं अपनी यात्रा के दिनों पर की प्रतिषण नहीं लगाया। और असम से आगे का तथा किपर जाना है, इसे शिपि को कोई विचार प्रकट नहीं किया।

निनोवाजी बहते हैं कि सब लक तो अस्तम एक किनारे पर वा किन्तु बर्न, धीन, शिखत, नैला आरि को शिनामों के कारण यह सुविधा का केव नम है।

इसलिए अर बहुत हीर ही है। इस प्रदेश का शिनाम होने काय है। इसलिए यहाँ के लोगों को शिनाम होना चाहिए, शि-शिपिती को समझना चाहिए और छोटे-छोटे दृष्टान्तों से उतर उड कर देर और ही छिटे के आने बहद मन्सा वादिप।

प्रति अर को मानना है। इसीलिए यानों के प्रति देखने वा उनका नवरिया बहुत ही ऊँचा है। गरी मन्वरण में गरी का प्रत्युत ही है। किन्तु-यात्रा एवं यानी-दल की मन्वरण भी यहाँ की बहने ही समारती है। तुभी अममय्या बरन के नेकूल में यहाँ की बहने में बहुत ही म्पारिषत और आर्य्य दग के सारे प्रत्युत का उच्छ्रितव्य अपने उपर शिपि है। यानी दल के साथ की वादिप-निनी भी वे ही बहने रहती है।

मैं तथा के साथ तीन दिन रहा। सरेर वाद के ही यहाँ प्रनाय पैल बाव है। पूर्वी किनारे पर होने के कारण इस क्षेत्र में यहाँ के र्शन बहती होती है। इसलिए चार बने एकदम वने हो जाता है। नाम में बहुत ही कम सापी है। बरात बर होती है। इसलिए विनोवा प्राति वा पूर आनंद लेते हुए चलते हैं। बहर समाचार में अनेक ही और के विनोवा की पूर्ण उदासीन हैं। अपने म्पारकन भी बहर मेरना उरवोंने बंद करवा दिया है। ही-वाकि 'ओ देर वर और भोले माके लोको के बीच अरने को पाकर निनोवा अत्यव प्रसन्न और मस्त हीर पत्रे हैं। अब निनोवा की प्रहा, पानी, आवाच और हरिपाले मन भर कर मिल जाय, तब वे सरे रंगर को भूष वर प्रहति में और उस माप-पत्र के अपने आल-वालाकार में र्शन हो जाते हैं। उली वा दानिन दल दिनों होता है। यहाँ के लोग भी पूर्णतः प्रहति पर निर्भर हैं। पाठ-कूल और उडवी के परल्लो मरानों को देर कर लावते हैं कि यहाँ के लोगों पर प्राति की शिबती क्य है। मिदें यहाँ से कोरें वास्ता नहीं, ऐसे यहाँ के पहाडी लोग भूमि पर मान शिखर देते हैं और भी कुछ पैदा होय है, उसे प्रहति वा

एक सिरे पर कंठे हुए लोग निनोवा मेर-मेरा करते रहते हैं और दूसरे सिरे पर कंठे हुए लोग ह्येका हेर-हेरा करते रहते हैं। को मेर-मेरा करते हैं, वे निहायत स्वार्थ वाले होते जाते हैं और हेर-मेरा करने वाले ईश्वरतापी तर्बवा उडासी बन जाते हैं। आज मेरा और मेरा में सामन्स्य कंडान की जलदर है। इतलिय व 'मेरा' बहो व 'मेरा' बहो, 'मेरा' बहो और यह प्राधान्य के बरिये होगा। यह कालस्य देव है। गोहाटी के परामय्या भरिसे वे केकर आम बनवा के दृष्टान्तों तक देर सामस्य देर की कल्पना महल्ल, की भडा के रूप में प्रकट होती है। बहुत से लोगों को सामस्य देव के बारे में बहुत प्रचार के भय हैं। उन्पारें यह है कि यहाँ के लोगों में छी जाति के प्रति आम्हदा वा हीनता की म्पाना नहीं है, प्रतिक समार में यानी वा र्शन-बहुत ही अधिक है। यानी की सर्वप्रथम है। किन्तु खाल और के यह बात म्पान में ररने भी है कि यहाँ के लोगों का बरिड बहुत ऊँचा है। यहाँ के लोगों में गरी के

नया मोड़ और कार्यकर्ता

असम : नये मोड़ का काम करने ली एक और योग्यतापके कार्यकर्ता बनी है। शिला तो बही है कि हममें यह दायि बनी है। उत्तर : यह साथ बेलक का प्रश्न है। कार्यकर्ता हमरे पास को है, उनसे उरि है 'वा यहाँ, इतलिय मन्स' को स्वर्ण कर्ण के बर ही पड चलेगा। शिबोवारी लें, चाम अरम परें तो अनुभव भी आगना और वे ही कार्यकर्ता समुप भी शक्ति होंगे। उणवद के साथ और उणव के साथ काम में उडने की बरस्य है।

साप्ताहिक घटना-सूचक

[१२ २ का रोप]

बन यह बाजार मे दया हउये होय यह मिलानवद वाली मिले । बनगती धी के कारणमे का मासिक मी सुदु तो 'मरुद' की री रानना एकरा करेगा । तिस्र बनाने वाला तिस्र बनाने बचन आनी बिमेरारी मरुदय नरी करेगा, रेडिन अगर उखे नीचेन बन हउये-कउथियो उखे साथ उखुगुगुग ब्यवहार करे हो यह उ से एमद नही करेगा और आज की सिद्धा-माली और कूल-कालेनी को कौथिया । रेले के दफन में डैर कर को एर देता है, उके साथ सार कनी मुठिच की ब्यादगी होगी तो यह एलुके में ब्यात भडाधार के तिस्र मारण ॥ ३ ॥ उ डालेगा । मतलब यह कि बरौ तिस्र का संघ बनता है, बरौ हर आदमी यह पारता है कि कुल आदमी उके साथ रमानगरा के देण आवे और उसे भेराडा न दे, पर हल्लों की पीला न देने की और अना काम रमानगरा के करने की बिमेरारी उव पर भी है, इका उके मान वरु गरी होगा । हमे यह समझा पादिह कि क्याकिध जीवन एक डेही बाव है, बिके लाने-बाने एक-दुवरे के तिले हुए हैं और एक का अरु हल्ले पर होता है । हय खुद अगर अपने ब्यवहार में हमारो सामाजिक डिमेरारी की नती पदानाने के तो नय मिलिह है कि अनाग-गला यह उखड कर हमारे ही जीवन की दुखदान नूँयेपानी ।

तिस्र बनानेवाले अक्षर आनी बिमेरारी को तिस्रमें देवनागरी पर धार देते हैं । ये वह धरौत देते हैं कि अगर वे अपनी तिस्रमें न उख 'बाली हुद' बौने न दे हो खान लैी तिस्र देवने ही नही आवेगी और यह तिस्र चलैगी नही । पर यह धरौत तिस्रनी लखर है, यह तिस्र-निर्माता धुर भी बनाने हैं । लच तो यह है कि तिस्र-निर्माता ब्याद-से-ब्याद हुनाच कमाने के लिए उल्लेखर देगी तिस्रें बनते हैं, जो लोगो के बिकारो को उल्लेखर करे । तिस्र-निर्माताओं के रोम और रज हके के कारण ही हिन्दुस्थानी तिस्रों का स्तर तिलउ उके में उल्लेखर सिध है । इहनी बिमेरारी तिस्र देवने वालें पर कालना तिस्रें आनी बिमेरारी के बनने की बलकर है ।

हम यह जानने हैं कि तिस्र-निर्माताओं में मी-कैसे कि हर बाने में-अच्छे लोग मी-बूद हैं । यह मी लकी है कि बरौ बरौ में इच्छा न होने हुए भी माधयस की परिनिर्माणो लोगो को अखुद प्रकर, का काम करने के लिए मबरू कर देती

हैं । पर कोई भी समारत आदमी इध दहील हो आउ लेखर आनी बिमेरारी के मुक नही हो सकत । समान के ही एक अंग होने के जते तिस्र निर्माताओं ने यह अवेगा रतना अखुधिय नही होगा कि ये खुद अपनी ओर से परल करे और तिस्रों के स्तर के जेका करने के लिए आचरण कइय उठाये ।

ये सुद भी ऐगान न करे और सरकार की ओर से अगर 'अपेयित' की ओर कइयै से अमल में हउने के नियम बनाये जायेंतो उनका विरोध करे, ये दोनों बावें बरुदाय उचित नही होगी । आज आम तौर से लोगो की यह सिधाकप है कि केमलकेरौं आने काय में कानी दिखरै बर-उरें और उरें तिस्रों पर बिनना विन-बन करे और धारिद, उकता वे नही करते । एरुतिद सरकार अगर केमलकेरौं के पदुद और नियमों को और एषाडा कइती है तो एक तरह से यह बनना की मांग का ॥ आगर बर रही है । किश्री मी ब्यवसाय का ब्यवहार के अमल में सिधुउ लुपी लुट किरी को नही हो सकत । सामाजिक हले की हरि के इध बरुदाय को निर्निधर करने का समान को अपेक्षा है । होना यह पादिह कि ब्याजनी लोग सुद आनी बिमेरारी को मरुदय कर और ऐगान काम न करे, जो समान-हले के विरोध में बाल हो । तिउके दिनों 'धोरत-आन्दोलन' के तिले-उरें में अकेरें तिस्र-निर्माताओं की निर्माताओं ने उख उरुवे की डीक स्तर में लिया है और उरुवे मरुदयग दिवा है बरौ, गुउ लोगो और अरुताओं ने उका मरौत उवाने की बाधिच की है । तिस्र-बरुदायवाले को पादिह कि मरुदय उन लोगो का विरोध का मरौत करने के उन लोगो का दशागत करे, जो उनके सिध के नावे उनमें आनी बिमेरारी की बाद दिलने की बाधिच करते हैं ।

-सिद्धयत

असम में ११०

ग्रामदान

अर तक असम में ग्रामदानों की संख्या २२० से ऊपर हो चुकी है । रेते गों में निर्माण-कार्य के लिए अमल खरौ-द्व गमल, गौहाटी की दो विधेर पैडेंके तिनोबाकी सन्धिपय में तिउके दिनों कथलबायी और गुनुगु में दुरै । उनमें कथल निर्माण-कार्य के लिए काय-निर्माणों के बनाने का निरचय किया गया । कजर के अघान क्षेत्र में वर्तमान परिधिपति का मरुदय करने के लिए दो धान्ति उरिउक की बरुगवन्द बरुमा और भी सीताबला धरौं दिवार मेने गये हैं । अमल खरौ-द्व गमल के खरौमी भी रीगाल उरिउके गौरीवर अंखत में अघान्ति के कार्यों का अमरुदय करे ।

विनोबा-पदवाधा समाचार

आचार्य विनोबा २० सुबह ई के इकुभ-खाना सचिवनिबन में पदवाधा कररें हैं । अमल के धार तिस्रों के उरुदय गत १२ मरु को विनोबाजी ने उकर लखीमपुर क्षेत्र में लेखर किया और अर तक वे उठ बेच के १५ में वे १० सचिवनिबनी को पद-वाधा कर चुके हैं । लखीमपुर के २० मीक गुर ऊरुपूरी में उरें ११ गों मरुगुमन में तिउ । अर तक बरौ विनोबाकी के ३१ पदान लगे हैं तथा उरें ५० के अधिक गोंब ग्रामदान में प्राप्त हो चुके हैं । रचों के फारप उव देण में पररुण अमल दुरक है और कनी-कनी तो विरोधनी को सुठनी के उरर पानी में बरुना पता है ।

लोर के धारैरुप में विनोबाजी ने बरुवों की कइती भी ल्ये और उरें गीला का पाठ पढ़या । लोर को उरुवने वचन

क्षेत्र-योजना के लिए पंदेद विरु हलामपुर के लिए उरुवने । में यदी कहा कि "यह मरेल रेगा है, के मरौ-मौति विकसित किया जा सके, बरौकि यहा तथाकथित आनुदिह लण्य का मरेल नही हुमा है । उरुन लरुनं ग्राम-ररगम की हरि वे लरिच को तथा अमल के समान-लेखियों को बनाना के भाग को उरुत बनने में उरु बाना पादिह और तब यरौ हुनगरा भारौं की प्रतिडा हो सकती है ।"

प्रथम सन्निधि की बैठक अरिउक भात लवं देवा लरु ई प्रलय-एरिदि बैठक दिनक ११ और १२ अगल १९५१ सुबह के प्रथम कने, लण, उचबाद, काटी में होगी । अनी विरुवों के साथ उरुमें संघ के लीचलर उरुवण, बरौ-नीबना और उरुवण में सुनिवाी सालीम विद्याल की मरुति एव लीक-रिचलर के लिए लीक-नीधि मरुदि व विचार होगा ।

भूदान और ग्रामदान के क्षेत्रों में ई के निर्माण के लिए मरुत के बरुके के ररु रावा के कुच बन-बायी विधेर स्तर के लवं-देवा-संघ को मरुत दुरै है ।

रामदुतारे बरौ

कुशावत बागी कने के मरुई रामदुतारे को आरुण के सुधरिउक लेण्ड वरु भी आरुतात अमरुद ने अरिचों के मुक कर दिव है । विद्यान म्यावापीउ ने ररु-दुल्लरे के पाठ आचार्य विनोबा, लरुनी मरुद बनल पदुतुण सिध और उक मरेण के मू० पू० सुदामनी भी लरुवैरुद के रचों के आचार पर यह ललबाय कि बरु का विरोध के बागी रामगमन के तिनोबाजी को आरुतमरण कर देने के लिए मरुतनी पीला था । २० जनवरी को एरुदुबरे की रीपियार रउने के काल गिरुल्लारो दुरै, थीतमा नीचनी अरुल्ल ने १८ मरुने के परिभन-मरुदावा का दण्ड दिया था ।

सनाधार-सार

-अलेखदु में १८ जुलार को जिउे खरौद-मंखर की वेरुड दुरै, तिस्रों लवं किया गया कि भी गंगारकी धान्ती लवं समाक नये और धाय ही यह भी लु-कि-या कि एरुति-केम का संघदान इक बनाया जाय ।

-डेपुतरी में १६ जुलार को धान-सहायक सिधल-रिधर का इमरुमें की संकरुद देव ने किया । यह सिधर उ० ३० लखी और प्रामोचोम-नीउे हार आरुचिउत हुआ । कौड का विचार है कि चाद-विधीय रंभ में उरुय में १५० मीक-हकारौं पाद की जायें ।

दुत अंक नं

सर्वोदय की मुद्रिका	१	विनोबा
भूदान-परिचयनों के बहक बनये	१	नव-लण्य मरुद
आरुतिद पदना-वउक	१	सिद्धयत, सीध-इण्डुवार
तिस्र-मरुदानी धान दे	२	विनोब
आरुति-केम और लुचिय बरु	३	॥
रिपुवैरुद	३	सिद्धयत
भी धरिउत मरुई का मान्यतायी प्रमोण	५	सि० २० आवेण
हमारी मुद्रिका और मायना	५	राउत मरुतिपारौ
सर्वोदय का पीवी बति के बरुने लाल ववार	६	भी० रामबदरु
साथी लोरों को सुगमय में बाने का निर्मंखर	६	नोपिद ररुकी
कनेचरें : धानि उरुवचरों का सुगुनय	८	नाउचय देवार्
क्या हय कसुभुच लेती ही उरुव बरुदना चाहते हैं ?	९	सिद्धयत
अमल में विनोबाजी के साथ	१०	सिधुणुवति
अमागी आम पुनाच में फने-से-म रउना करे	११	—
समाचार-सजनायें	१२	—

के लिये परिचित नहीं हुई है। इस तरह हम देखते हैं कि चारों तरफ लोकशाही है। गले में फंदा कलता जा रहा है।

सर्व सेवा संघ का लोकनीति, लोकशिक्षण का कार्यक्रम • पूर्वाचरण १

सर्व सेवा संघ यहिसक समाज की रचना के लिये राजनीति के स्थान पर लोकनीति की स्थापना को अपने कार्यक्रम का एक मुख्य अंग मानता है, इसीलिये संघ के सर्वोपर्यपुरम्-अर्थव्यवस्था में आगामी चुनाव और पनायती राज योजना के संदर्भ में संघ ने नीति स्पष्ट की और कार्यक्रम निर्धारित किया।

लोगों का अधिकतम सुख हो और लोकशक्ति में भेदभाव करने की एवज से संगठित और सक्रिय हो सके, इस उद्देश्य से संघ के कार्यक्रम सम्बन्धी निम्न कुछ सुझाव हैं :-

आज हमारे देश में सरकारों का प्यार देव बात की ओर रखा हो, ऐसा नहीं दिखता है। आज जो देश के निर्माण के स्वयं हो रहे हैं, वे यहाँ की जनता के लिये एक प्रकार से नये छात्रों हैं। लेकिन इन विचारों के आधार पर यह निर्माण की इमारत खड़ी की जा रही है, वे विचार पुष्टि और सीधे हैं। इतलिये हम कमजोर बुनियाद पर खड़ी की जा रही यह इमारत कब तक आगे बढ़े सकेगी नहीं। देश के राजनैतिक पक्ष जनता के आस्थावर, समाजवाद आदि के न्याय में उलगा मत (वोट) प्राप्त है। लेकिन वे सारे वाद एकत्र लायित हो गये हैं। देश सारों के देश में लोकशाहीरकने,पावली नहीं है

- (१) राजनैतिक पार्टियों एकवक्त होकर ऐसी आचार-मर्यादा स्वीकार करें, जिससे आम के चुनावों में होने वाली कुछ-कुछ त्रुटियों का हो सके। इससे लिये निम्न वा एऐम हो अन्य कार्यक्रम उदायना चाहिये।
- (२) पार्टियों अपने उम्मीदवारों के लिये एक स्थान पर अलग-अलग छात्रों न आयोजित करते हो की संभव वे अपने-अपने घोषणापत्र, कार्यक्रम, उम्मीदवार वगैरह की वाद मतदाताओं के सामने लें।

पर खुशी की बात है कि आज संघाचर राज्य इस देश में कायम हो रहा है; कुछ शक्तों में हो भी चुका है। लोकशाही के खरी विकास के लिये कुछ आशा का स्थान बन रहा है। वहीं माने में पचासवा राज-को-रह देश में-कायम करने के प्रयास होगे जो उठमें यूपिक केंद्रीकरण की नियम कर, स्पष्टिक-स्थान और शास्त्रीयता के स्थापना करने की बात बीच रूप में उठमें विद्यमान है। मगर एक बात है। वह यह कि इन पचासवों को लता परिशिरी की जा रही है।

के लिये वे स्वतंत्र रहे और उनकी पूर्ण थी व्यवस्था करने के लिये आवश्यक सत्ता और संपत्ति उनको मिले वहीं सही पचासवा स्थाप है। इसने वर में जनता को सफलता दीमा और उन्हें इसके लिये तैयार कराया हो। किन्तु यह तो एक नया विचार है।

सोमों अ, पाठकर देश के सुविश्लिष लोगों का प्यान इस तरह से हो बना चाहिये ना, देते नहीं बात है।

एक तरफ पचासवा काम कायम करने की बात कही जाती है और दूसरी तरफ चुनाव भेदिता वा खरीा वहीं चुनाव सेना बाहर है। इतक अंतर विरोध न राजनैतिक पक्षों को दिलाता है, न सिद्धि वर की है।

इस चुनाव-प्रदेश में वे कमी भी न जनता का लक्ष्योन्मुख और स्पष्टिक-स्थापन पुनः स्थापित होने काय है, न खरी लोकशाही कायम होने वाली है। इसीलिये देश सेवा संघ का सुझाव है कि मतदाताओं के छोटे-छोटे संघ बनने चाहिये और उनको अपना प्रतिनिधि स्वयं चुनाव चाहिये। जनता की कृति को राजनैतिक पक्षों के निकटगु नही बनना चाहिये। इन राजनैतिक पक्षों के ही कारण लोह-लोहादारी पनप नहीं पाती है। अतः उन पक्षों पर नियंत्रण रखना जरूरी है।

अनकर लोग कहते है कि गाँव में यूपिक चुनाव अधिक है, अतः लता सारी की सारी सौधने में लतरा है। लेकिन हमारी समझ में नहीं। आज कि गाँव में बरि वृद्ध हो, तो खामों और कंत्र में लक्ष्यम कहां से आयेंगे? वे पूंजु को अग्र हकी हकी हकी से फल उत्तकों कहां पाया होगा? राज्यों और केंद्रों में याँ के ही तो प्रतिनिधि हूँ न ? आज प्रथम यह है कि मात में लोकशाही की जाती अजेगी, सुतेगी। पंचायत देसों में लोकशाही के निर्माण प्रयत्नों और शक्ति विकास के लिये जारी समय मिले। परहमारे पाठ खण्य नहीं है। हमें भी तीव्रता के साथ पचासवीं खरी लोकशाही का नया और छाति-कावे करय उतारना होगा। इस दिशा में पंचायत का कदम हमें बहुत मदद वा फलदा है।

अर्थात् वे प्रतिनिधि क्या काम करें और क्या न करें, इस बारे में जनता को सारी मतदाता-समूहों को निर्णय करना चाहिये। जनता का यह नीति अस्तित्वात करेगी, तभी उनका स्वतंत्र और सार्वभौमिक उनको प्राप्त निकल सकेगा और सही लोकशाही केक बनाने के लिये न पूर कर जनता का और जनता द्वारा क्यायग आने वाला राज्य असेगी।

पचासवा राज्य का अधिकार यह है कि लोग राजनीतिक बने, अर्थात् जनरलों के बारे में सुर सोचने

भारत को आन विदेशों से करोड़ों रुपयों की मदद मिल रही है; यह क्यों ? सक्की आभरदा की चिंता खी है। भारत के खनने आया है। भारत के आनपाव भी देखिये। बमों, इन्जेने-शिया, पाकिस्तान, फकी लोकशाही नहीं है। पाकिस्तान में वो वैशिक खरा ही स्थापित हो गया है, बमों और इन्जेनेरिया में भी डेमेन्ट्री नहीं है। वह 'गाँवेंड उयो-अरी' है।

भारतीय लोकशाही का जो संविधान बना है, इस सब बातों है, वह पहिलम की लोकशाही की ही कलम है। संसद के भिन्न-भिन्न शकों में लोकशाही थी, संसद-वर्कों के विधान के जो भी लौक अर्थी थी, उलको होइका फके, जिस तरह शि-दिरी सिचनो है इतनी ही जाती है, उस तरह हमारा संविधान बनना गया है। पहिलम में ही खरी लोकशाही को प्रथम ख्या है और एक के बाद एक लाख लोकशाही बना जा रहा है और चारों तरफ लोकशाही हो, वहीं वह अस्त हो रही है तो यहाँ भारत आकर बह अस्त नहीं होगी, इतका क्या भरोसा ? उले वहाँ अस्त होने न देने के लिये हमने बीसवीं शतावनी करती है।

इंकोड में खल बहूँक खेले कते व्यविन भी लतरकर के विच्छ भावां बनना करते का रहे हैं। जनता की सुनने वाला कहीं-कोई नहीं है। जनता का जल साहय, साधार होय गयी है। कहीं जनता को सांभ-भीम शक्ति-संघन रहा और कहीं बहुत भान अमनो जाबक तल सुना नहीं जा रही है। लता सार्वनी-मल केसक मान मान का रहे गया है। बहो अलस में गुम ही गया है।

पर देखना यह है कि वह गया कहां ? पहिलम के इस प्रयास के दो दुःख विदात हैं-एक कि हमारे और जनता का शांती-मल; प्रयास के वे दो दुःखदुःख हैं। लेकिन पहिलम में लोकशाही का तिलके २-३ कदमों के लिये तरह का विकास हुआ है, उभी का परिणाम यह आया है कि ये दिनों दुःखदुःख कर-कर-कर घर गये हैं।

लोकशाही की यह प्रिया आज बर रही है कि जनता अपने प्रतिनिधियों के पाव अपना सार्वभौमिक और देनी है। अतः आम और खरा (बंकर और पाव) प्रतिनिधियों को 'डिस्ट्रीट' कर दिया है, और दिया है। देश के सारे कठोरों में जनता की बुद्ध बढ़ी नहीं है। इसी कारण लोकशाही का पतन हो रहा है।

अतः लोकशाही को सुवर्धित करना है तो शक्ति-राजपण और सार्व भौमिक का सुवर्धित बनना होगा। राजनैतिक और शक्ति कला को प्रतिनिधियों के हाथ से अपने हाथ में लेना होगा।

(२) चुनाव संबंधी प्रश्न में व्यक्तिगत आरोप-प्रत्यारोप न हो, मार, छेद, विकृति-पत्र, छात्राचार-पत्रों में छेद विष्णुको समी में कौरी प्रका को व्यक्तिगत छेद-प्रकोश में होने देने का प्रयास किया जाये।

(३) विधायिका तथा नागरिकों का चुनाव संबंधी किसी कार्य में उपरोक्त न हो।

(४) रिक्त, मर, प्रलोभन आदि के अभाव प्रशासक तिलकुल काम में न लिये जायें।

(५) सर्व काग किंचा जाय।

(६) पचासवीं राज की योजना के अन्तर्गत जो पंचायत-अतिथियों तथा विल-परिषदों गठित हो रही है, उनके द्वारा नगरपालिका का अर्थ स्थापक संस्थाओं के चुनावों में पंचायतिय चुनाव हो, अर्थात् राजनैतिक पार्टियों अपने उम्मीदवार लके करके चुनाव न लें। पचासवा संघर्ष में राज्य काय और चुनाव संबंधितता या आमजनमति से वरने की कीर्ति काय ही पाय।

(७) चुनावों में उपरोक्त प्रकार के क्षेत्रनीति का तल दक्षित बने के स्थापक प्रथम के आचार-काय कुछ दिहे देवी में, कहां मिलके मयों में, भ्रान्त, सामान्य व खरी-वके के अन्य खण्य कार्य के कारण कालक्रम तथा लोगों की मनोवृत्ति अलग रहे, वहाँ भगते आम चुनावों के जन मतदाता-मंडल बनाने और 'हाउ-हाउ' उम्मीदवारों का बदन मतदाता लक्ष्य करें और चुनाव स्वयं पचासवा दिने, दुई ही कीर्ति काय ही पाय।

उपरोक्त कार्यक्रम को लेकर लोकशाही संबंधी लोकशिक्षण के कार्य और इतरक सोचोचना की जाने की आवश्यक है। आगामी चुनाव बहुत बड़े परदे में समम होगे, इसलिये अर आचार-व्यवही से जरूरी समी प्रदेशों में इस लक्ष्य में चर्चा हो जानी चाहिये।

सर्वे को स्वरहितययोग्यता के लिये निम्न सुझाव :-

(१) मरघ में एक लक्ष्यों को अपना दो-दो अतिक्रम की समति उप-द्वैत में विजित पर्वों के और सार्वभौमिक क्षेत्र के सुवर्धन-मूलक स्विचमें से उरंगे हक के अर्थ-सांभरके वर-वर्धन-विचारधारा, वैश्वीकरण वा सीटी कावेरिटी करे और उनमें आधार-मर्यादा का पनपिरा हा किंचा पाय। यह कार्य में मदद की जायति में हो पाय।

(२) उपरोक्त पावनपों के हीटन में वा उनके चह अरित-भासी-खरी स्वर-पी विजित पर्वों के और सार्वभौमिक क्षेत्र में

बापू के सपने का गाँव और समाज

• मनुबहन गांधी

[सूची मनुबहन गांधी की लिखी गुजरती डायरी का एक महत्वपूर्ण अंश "विहार पछी दिल्ली" के नाम से अभी प्रकाशित हुआ है। मनुबहन ने इस डायरी में उन दिनों बापू की दिनचर्या का और उसके चिन्तन-मन्थन का जो प्रामाणिक विवरण दिया है, उसके हमारे स्वराज्य के उप-काल की विकट परिस्थिति का बड़ा ही मार्मिक, उच्चोच्च और हृदयस्पर्शी चित्र खड़ा होता है। स्वराज्य-प्राप्त भारत के गाँव और समाज के विषय में उन दिनों बापू किस तरह सोचते थे, क्या-क्या उनके सपने और प्रतीक्य थे, इसका ठीक जन्मानुसृत इस डायरी के पन्ने-पत्रों में मिलता है। इस डायरी में २७ मई, ४७ की बापू की दिनचर्या का वर्णन करते हुए मनुबहन ने उस दिन दोपहर को बापू से मिलने काये आये हुए मार्दे-बहनों के साथ की उनकी चर्चा का जो विवरण दिया है, नीचे उसका थोड़ा-थोड़ा विवेदी द्वारा किया गया अनुवाद हम अपने पाठकों के लिए दे रहे हैं। इस चर्चा में बापू ने जिस उलटवटा से अपनी भावनाएँ व्यक्त की हैं, वह हम सबको अभी हम स्वतन्त्रता की चौदवीं वर्षगांठ मनाने का रहे हैं, ऐसी घड़ों में जीवन की सही दिशा की ओर प्रेरित और उन्मुख कर सकें, जो निरचय ही उससे बेदा की, मानवता की बड़ी सेवा होगी। —००।

दोपहर को बापू मार्दे बहन आये। उनके सामने अपना दिल उल्लेखी हुए बापू की ने कहा:—

"देख के दुकड़े हैं, इसकी कल्पना ही बँगेने वाली है। आज हमें एक होकर एक और ध्यान देना चाहिए कि दुकड़े न हों और फिर भी अर्थों को जाना है, तो सब सोचें कि वे किस तरह धार्मिकपूर्ण तरीके से बरकर धरके जायें। बापू एक ही वाक्य ही मुला बरदा है, लेकिन मैं दुकड़े अर्थों के हागों में हूँ, नहीं मुझे सुनी तरह बरदा है। हम भारी-भारोपी के हागों में भारदारों की बन्धो होनी चाहिए। क्या हममें इतनी भी शक्ति नहीं है कि हम अपने हागों के सूर निपटा के? इतिहास मुझे सलाह है कि हमारी अविद्या सबकों की अविद्या नहीं थी, परन्तु उसमें उल्लेख नहीं है। लेकिन मैंने वह भूत मुझे आज सुझाई है। अगर हम भारी-भारों के अपने हागों में अर्थों को निचबंद बनायें, तो हम अपने इतिहास को, जो इतना उन्मत्त रहा है, बदलित कर दें। इस कारण मैंने मार्गना में भी यह अर्थ निकाला कि अगर हम आप न रह सकें, तो राक्षसी-सुरी के बकर अर्थ हो जायेंगे, लेकिन हममें किसी भी भी दस-दहाई हर्षें सुला नहीं बनेगी। यह इतिहास में अगर बाइबल के सामने भी लम्बे वाला हूँ। ये बाइबल बहुत महोच है। वे किसी के काम निगाह नहीं करेंगे, पर बर्तने अपने मन की। अद्यतन इतमें हम एकत्री परीक्षा है। आज यह न पूरे कि हममें अतिनी हिम्मत है और अतिनी कुचक्रता है, उस सकला अन्धम अनेके हाई माउण्टेन हल समर के रहे हैं। जनाना दोस्त के जाना अन्धम अन्धम अन्धम के अन्धम-रिक्तिकोपी का लार्ड बायल हमारे लिये खतरनाक नहीं है, क्योंकि हम उनकी नीति से मशीनीत लिये परिवचन है।

दुई यह अन्धम खला है कि आप सब समाज में एक-सा जीवन सार खमा करने की कोशिश कर रहे हैं। मैं भी यही करना चाहता हूँ। लेकिन आज लम्बे परदा काम यह है कि हम सब एक ही बायें और देव की मरार्दे के खला वे जो यह है, उसे ध्यान में रख कर बनता जो स्वन्तारक काम में खला है, क्योंकि हमारी जनता १५० वारों के सुलाम रही है, लेकिन अब हमें उसे दुबारे से देवा-कला है। मैंने इस बात से पूरी तरह सहमत नहीं है कि वेबल खल हाय में आने से ही जनता विचार होगी, अपना यह कि सरल के आने से बहुत सुछ हो सकेगा। अन्धम, खला के हाय में आने से ही अन्धम अन्धम अपना दूर होगा। पर हमें तो जनता के बीच बैठ कर जोस काम करना है।

आप मुझे अपना एक उल्लेखन मानते हैं और स्वेच्छा से मेरे साथ आते हैं, तो मैं तो आपकी एक ही परदा हूँगा कि आप और समाजवादी लोग चाहते हैं, तो उनका एक ही रास्ता है और वह यह है कि आप तरीक कल्पना से बीच में ही जाकर बँटिए और तीव्र कर जीवन निगाह। तीव्र

बातों के जीवन का साथ अपने जीवन को सुना-मिला करिए, उनके साथ छन्दे में रहकर जीविए, अपने किसी जीवन में भी बायों में बैठा होने वाली चीजों का ही उद्योग करिए, बायों की निरालता निगाह, अनुभवता का नाम कीजिए और किसी को आपें बकाइए।

मैं तो आपसे यहाँ तक पहुँगा कि आप मॉरों के साथ ऐसा करीब सम्बन्ध तथा कोभिने कि आपमें से कोई अविद्यारि हो और विचार करना चाहते हैं, तो वह मॉरों की कल्पना से ही विचार करे और कोई रही हो, तो वह अपने लिये मॉर का ही पर पद-दर-दर। अगर कोई आपसे खला पूछे, तो आप उसे यही खला दीजिये। यदि रस प्रकाश अगर अपने जीवन की आदर्श बनायें और फिर तरह विचार कर चित्र दीखें, उनी तरह जनता अपना परदर्श जीवन प्रविद्य देवेगी, तो उसका प्रभाव सारे देव पर परेगा और देश स्वच्छी बनेगा।

सबामे एक ही हाय में आयेगी, पर खलिय किसी एक बाद की वाच की नहीं है। उनका सिद्धांत समाज में सम-आच देव करना है ही। अन्धम ही उदमें

कुछ विचिन्ता आयी है। उसे कबूल करते हुए भी मैं आपको वह विचारत दिख सका हूँ कि अगर आपके कार्यकर्ता मॉरों के डार के लिये कार्यक्रम बनायें और उस योजना को सिर्फ लागू कर न रख कर अमठ में लयेंगे, तो कोसल के खला-कद होने पर भी उनके स्वस्थीय आपकी अपने लक्ष्य और जोस साथ में अन्धम रह न कर सकेंगे। यही नहीं, बल्कि बहादुर-दक्ष को आपको धम्पवाद देते हुए धरेंगे ही नहीं।

लेकिन मुझे यह कदवी दुख हुआ होता है कि अगर आप यह धन न करते बायों को उन्मत्त नहीं, हवायें करवाते हैं। दूसरी तरह साम्यवादिता के हागके बल रहे हैं। आप सच विचारते हैं, विचार हैं। आप वे क्यूँ नहीं सोच पाते कि येव कल से नुपुलान विचार होता है। अर्थों के लियेक यह खलाई डीक थी, क्योंकि हमें उन्हें निचालना था। लेकिन आज आपको लिये निचालना है।

आप अपने ही विचारविषयों के विषयक सुझाईं छेड़ कर क्या प्रयास उद-बायें? आपको तो अपना दिल उबार बना कर देव के उद्योग में आपकी खला बरदा है। अगर लतापीयों का कोई कसूर हो, तो आप अपने काम से रहने बाली अन्धता को अपने हाय में कोभिने। अपने शान, कोसल, सुख-सुम, रचनात्मक काम और उद्योगात्मक का साथ उद-बायें ही हैं। जनता को अपने जीवन से इस प्रकार के लक्ष्यो निगाह कोभिने। आपके सारे काम जनता में हित में होने चाहिए। मही में जनता के उच्छेदे पर, जनतास करने पर आप को इसे सुलाम से भी बड़ी मुसीबत का हल हो करवायें। इतने परसे कि क्या-क्या विचार कर सारा अपना, हर्षे जने रचनात्मक कार्यों को जीवन-बदलित करे पायिए।

मैं सिर्फ आपको ही यह बात नहीं कह रहा हूँ। आप सब मार्दे-बहन सब

हैं, इसलिए मैंने अपना दिल अपने सामने खोल कर दे दिया है। लेकिन यही बात कोसलवायें पर भी खूबी है। इतलिये क्या सोचेंगे और सब राखेंगे, यही उर समर आपसे ही मुला कर, बा-इसबा छेड़ कर बना, लारी और मार्दोपोगो की हथी हीरने-विचारने की विचार हो जायेंगे। एक बात है अर्थेक जायें और दूसरी तरह वे अर्थेक ही रह लिये के साथ नचबने लिये, जो मुझे निश्चय है कि पॉस लार्डों में यह देव अधिया में सबके आगे होगा।

मैं बापूकी बोले। चले का दे रहे हैं। कोई एक मार्दे-बहन के हैं। वे सब बाइबल में इतनी शक्ति और मार्गीत हाई हुई थी कि सूर्य के गिरेने पर उसकी आवाज भी सुनाई पर जायें। अर्थेक एक एतम करने के बाद बापूकी मैं पूछा, "कदरे, अब किसी को कोई खला पुराना है।"

किसी ने कोई खला सुनाई नहीं। पूछने-बैसा था मॉरों का। बापूकी ने उदमें सही और जोस बायें कदरे है कि उनके विरोध में बापू ही कोई दर्शन ही वा रहे।

अधिर एक भारें ने एक सपाठ पूरा "अन्धरे डार में नचोने, हाय उधोनी का जो विकास हो रहा है, आप उसका विरोध क्यों करते हैं?"

बापूकी। "मशीनों की बरत, के विचार, मोर, हायें बाइबल और लुई देवेकें-कीमें बँगाये गए मशीनों। लेकिन अगर मशीनों से आस पील काय, मशीनों के कपरा बनाया जाय, मशीनों से जनमें बोती बायें, तो मैं इस लक्ष्य का विरोध ही करूँगा। मशीन के आने के कारण भाय हममें कोई खल नहीं रहा, मशीनों उनी सारे 'विद्यमिन' नर हो जाते हैं। हमें कानियाबाय में ही दुबारे खल में नरुम भी नहीं है। बहने नरुदे से पुनी पर का खली थी। उनके से विर पर लाली-बली के बाटन होते थे, बायों के लिये मशीनों से मुँची गयी सुधार 'बोसल' होती थी। लुई देव का समर लक्ष्य था, इतलिये लुई की दर्यें-बने बहने के हाथों पर मशीन थी, और उर तरह उदमें 'जनवा' यनी पूरे-खला का साथ निराल का। उदरुली, का समर तो निगाह ही था। बहने देवे खले उद में जनवा बायें लुई खली पील 'बली' लीं। नमनों में इन्ध-मार्क के भवनी भी होते थे। जीवन कोसल के अन्ध-निरोध मही सार मशीन की बल का विचार देव का और बरतन भी होती थी। फिर पूर परी-बायें लुई काय के लाले वा। इन्ध उद दिनों लुई पील का आस आरकल 'पेना' की दीवारों को बड़ी वा रही है, जनका तो सार नाम भी नहीं जानते हैं। ऐसे निगाह देव से और विचार परदार में, यदों अनेक बरत लीं।

और काम को आगे बढ़ना चाहिए ।
 मन्मा में उठी दिन बाग बीच-बीच में कुछ वाक्य अमरिगा में दोतेये ।
 अमरिग में बसाया कि—'बाम भाव हूँ
 लाजिब । चिन्तो आधवार-रु देवा मरुद ।
 देव देवा मरुद मित्रने काम भावने
 करके हारो । (काम अथवा रोग का लो, कर्त्तव्य सेवेसी जवान है । जवानों को अन्धी तरह से काम करना चाहिये ।)
 हलके बर जग नाम भावने से लिये प्रकृत हो हुए थे, तो और हो गैरों के लोग बर्त आये और बर्तों की भी काम लगाये काम भी काही में हुई । जग विचार में केनेये ख्ये—'हो सादियों, बड़ मक्षण ।'
 एक दिन बाम ने 'लोल' हास्यरस के धरनों का लेखन करना लिया । उस समय बाम ऐसे हवा रहे थे कि मनो में मन्मथन श्रुति संशय विद्या-अमरिग में हाथीन लीपा रहे हैं—
 मेरा मीतनामस हन ज्ये
 भीतलकामसहाम् ।
 मेरे सखनसो विरत देव
 बीन जनाप वा तिलम् ।
 हल हलके को बीरों पर लिख कर धारो में दारोते थे । अर्ध और भावकर संशय में ही समझते थे । पूरा करके बाबा के पीठो-उपे पीन गीला ना लोके कोला था । कलम लेने तक बाम सादियों बर कर धारो में बीच सुनने थे । अन्य में सर्वोदय के साथ उत्तम कर्मण बर कर कलम लतम किया ।
 एत दिनों बाब के कई लोग बाम से मिलने आये । श्री देसमार्थ ३० वर्ष को बाबा से मिलने दुर्गापुर

वी ए. आर सी. सी. के बाद लिये आये । एक दिन बाब रहे । ३१ वर्ष की सुख ९ भीत पदयाप में लय थे । बाद में भी नापयप देवाई बाबी से खरि केना विद्यालय के बारे में बातचीत करने आये थे । २-३ दिन साथ रह कर काय लये । 'लोल' अवत में जग पदयाप चल रही थी, दर भी नव बाम् आये । सर्वोदय लोके के अथक बनने के बाद भी नव बाम् पल्लि आर आये थे । श्री दुर्गापुरकी भी ४९ दिन साथ रह कर कण्ट लोटे । ९ आरते को भीमभारायण बाबा से मिलने आये थे । दो दिन रह कर वापस दिवा लोटे । अथक बन यहाँ लूट गरिख हो रही है ।

बाब के ४६ दिन के अथिक वा बाधकम गयी जला । बाबा एहदम छोटे छोटे गैरों में चल रही है । कभी बारिख के कारण धरनों से दूट जाने या सखर हो जाने से नहीं कहना पडता है या धारो को बन्दना पडता है । फिर भी बाबा जसाह से चल रही है । बाब से मिलने वाले भी आते रहते हैं ।
 स्थानिक वारिधतियों के बारे में साथ बर बर कहते हैं कि स्थानिक कारिणों यदि अपने गौर का काम संभारते तो काम अथो बहिया । 'लोल' अवत में कुछ अन्धे-अन्धे वारिधतों निकले हैं और स्थानिक वारिधतियों में प्रमदान के काम को बूल करने की विमोचनी उडारी है । 'लोल'

बैतक के स्थानिक वारिधतियों में से हार-सुल के प्रथम सिद्धक पर उठारी है । मन्म उनके उभार को देन बर करती है कि—
 'बह धमनाम ना गरार है । ऐसे उलटती मन्म गौर गौर में निरले हो काम बूल करती हारो ।' 'लूल' के प्रथम सिद्धक का नाम है 'मैम लोल' । बाब वही गे कि—
 'दुनाम नाम ही 'मैम' है । ये उहाँ नहीं मिले । सध में या धरों में तो कले ही है ।' (ये मन्मदान के लखार है ।) और उनसे बने हैं, 'जुनो हलके लिये समय देना पडता । और ल्हाभी, काम हो बाधना ।'
 आखिरी दिन सुख बर बराल भाते एक सुल के बाम सुनने पर बाम बने लये—
 'एत स्थान में मैम मैम हो गये । सुखी बाह है और गौर बा मरपी भी है । बर्तों गौर बा केन्द्र नम टकता है और पेशा भी ।'
 बाब आने के बाद इन दिनों में कुछ ५० गौर मन्मदान में मिले । १० खेले में ३५ धार रहे ।
 'लोल' के धारों दिन तीन बने ही बाब निकल गये । धाराबाब के विचारों और सिद्धक मत्र खन्ने खो दि आर हवात बर स्थान पगली-पगली खोला । लेखन बलया हलारि हो पारना मन्मक और दुष्काम । उपनिषद के मन्मों के साथ साथ हय बय आगे बड़े ।

भारत के कृषि-मन्त्री को निमन्त्रण

[यदि मन्त्री में एक बहकन हाल में दिया बा कि अब प्रातः अन्ध निम्न करने की शक्ति में है । उन्होंने यह भी बताया कि भारत हर सात अरिधिका से ४० लाख टन अनाज लखने के लिए चाहते हैं । बाबल से सुदुष्कर धारों की एक कुचि निबाराही । बनावडा, आधेकिया, बर्तों आदि देव से बीन बने वैमने लर अनाज लखे रहते हैं । ये देव अमरिगा के अनाज लखीर कर चीन भेजे, लकि भारत अरती कर्मण से सुदुष्कर या कर । बर्तों पर हम खेती और देवता के बारे में दिन-धन खेकने वाले हूवि विद्योग भा देही ने बलुचिति देवने के लिये भारत के हवि मन्त्री को निमन्त्रण दिया, यह वहाँ से रहे हैं । —स]

लौकी की उतार की लमना किन बगर की जा रही है, भौंसे विष प्रार्थ गारो में हारुटे होकर मनी मरोदय के पास लुबू रहे हैं, उन ऑफिसों के लर से बीकना जामना, अनाज निरिध के बारे में खेचना आदि विचार चलते हैं ।
 भीकना के कोणुपुट बिले में जनकी ५४ के में बरहा हैं । पर खेती की उतार की लमना बले वाय अमरिगा कभी अनाज ही देना देता नहीं । में बगर बलक के कर्म देवता में ही रहता है । देव भर में उतार को लमना करने साथ लखती है । अथक प्रातः में भी मन् ५४ के लखर विरिखण करता आना है, वरुत से पदवारी पर में कि-उडे आँकने अती है ।

से आखिरी दिन में दलत हैं । भारत में कहीं-न कहीं हीन आदिवासी हैं । बर्तों तो होक देव रहा हैं, अन्य प्राती में भी देवत, १ करोड बरना के किन प्रथम अमनी जन को श्रुति पर टिका रही है । यह हय भारत के लिये कर्म की बात है । १५ २० लोग बाबल या आटा कडा कर उनमें २-३ खेर पनी निखल बर दिन भर एक म्मिक गुलाब करता है । कले के लिए १५ २० लोग बाबल का आटा कभी-कभी मिश्रण भी अथकम है, वैसी विधि में सखरी कड-मूयों पर बीनन चलता है । गुल हो बाब भर १-२ खेर प्रात ही भी बाबत है । पर बाबर के दहीन भी नही होती । स्वतः देव में हलके बड़े लमना को लामा-विक लर हलुमिणो के बधिख लर इर अनाज, बाब, कडवा आदि के लिए बिदेय में बाबर दूँदना कर्त्त म्मारे-चित है । मन्, जुनार, अनाज, लिलखर में बर्तों का हयन देवने लखक दूँदना है । बर्तों-उती को में लमना मन्मदान देवत हैं कि बर्तों

नहीं है ।
 कृषि-मन्त्री मरोदरवी में और एक बहकन दिया कि भारत में भी बाबन वैम्य मग्गल देव देना चाहिये । देव में मग्गल को दूट देकर, बड़ी हुई आखिरी डेक कर, लर अनाज और बाबर निरिध करने उस पिले के खरते देव की उतारि करने बा बर से खेनी लेने ।

—मोनिन्द देवी
 बाम-गराड, पो-सुदुपुर
 विला-कोरुण्ड, मेरिशा

पूना की बुखदायी घटना

पूना के सर्वोदय-कारिणों भी भीराम चिन्मोहर आने वष में मिलते हैं ।
 'पूना में हलके के बायल बलुब सुदुलतारक बाबा हैं । हमाय भी बर बर मन्म । कुछ क्षान्त लेलनाय बाना बाबी बा, हल बलुब बर मया । म्मारापु देव कष, मन्मनिधन, 'सामना', धारकष, बरपनीकी का निभी सुकम लखीर सुकष लर, सुदुलतार म्मारे लमा, एत कष हयरीर सखनी मो बा मन्मो दुष्काम लुब है और हलके का सुकाम कृषि लखल हो लखल बा है । म्मारापु सर्वोदय-मन्म का एक विचार-विमर्श उखी बाबन में हीने बाबल था । बर पूना में हय मन्मी आते हैं और देव हर घटे भीनी की मदद करने बा बाब, ल्मारापु लखरी का काम भी लमना-मन्म लरपनी और भी म्मार्क-लुब लखने हय लेनी के मेन्म में 'बिन्-बिन्' बराल लखीर धारिणों और धारि-लेखक बर रहे हैं । श्री-मन्मी और में हो उत दिन से ही बर्तों हैं ।'

कृषि-निर्माण को दान का विनियोग

अ० मा० लखी-बनारस के मन्मी श्री सुबोचन्द्र देव ने कबन भूदान भी मन्मदान लेष में कृषि-निर्माण के लिए प्रात दान के विनियोग के लिए एक मन्मिक निरुलण है । उनमें निम्न बाबो की लरत प्मार्ग देन का कलेत किया है :

(१) इहाँ भूदान मन्मदान के किनी मन्म देष में, अरुण-काई कई गौरों का लखरी है, बरतों बाबो बाबा । यह लख देव देष भर में एर-ही का अधिक हो लपने है ।

(२) इहाँ देवी जमीन में सुदुषारी आँ, बर्तों अलखी के अन्य मीन का सखनी का अनाज हो ।

(३) जमीन बलुब अथक बरवले या बरानवादी न हो, कर्त्तके उनमें कबल होने बरह में बलुब अथक लखरी हो लखरी है ।

(४) पानी को लख भी गुन अधिक लेनी न ह, कर्त्तके बलुब लखरी बने लने में जो लकी बराना हो लखरी है ।

(५) इहाँ देवी बरह लखरी, बर्तों के बरानमन अथक से-अथक लेनें ही लख मन्म देव ।

और काम को आगे बढ़ाना चाहिए।
"सुना मैं उसी दिन रात बीच-बीच में
मे वृत्त थाकर अग्रगण्य में दोहने में।
आदि में बताया कि—"पाम माल इन
लक्षित। विपत्तियां आरम्भ-वत्क ही मांछते।
उपर देकर माण्डु रिणाम काम मांछते
करिहवाये। (पाम अग्रणी होना चाहिए,
कर्मिक सेवेदार नजाम है। जवामों को)
अच्छी तरह से काम करना चाहिए।")
इतने बाद नारा वापस आने के लिये
माण्डु ही हुए, जो ओर ही गंगा के लिये
बढ़ी आये और बर्षों की भी प्रामत्ताएँ
काया भी सार्की में हुईं। नारा विनोद
में गोलने छो—"धो धारिणों, एक
प्राण।"

एक दिन सभा में 'लोको' द्वारा वृत्त
के लक्षों का संक्षेप बर्णन किया। उस
समय दादा देते हुए रहे थे कि सानो
एक माण्डु जूरे संक्षेप विद्या-मन्त्र
में सक्षम होता रहे है—

मे अतिनामप्रसन्न येन
श्रीविकल्पमसंशयः ।
नेन सज्जनस्यै विधि देव
धीन बनाय च विद्वत् ॥
इन श्लोकों की शीर्ष पर लिख कर
छात्रों में दौड़ाते थे। अन्य अनेक प्राण
संक्षेप में ही अज्ञानों में। पूरा कला
शक्ति के पीछे से ही वेद 'लोको' पर क्लेशक
होता था। सहाय होने तक सभा
छात्रों की बात कर छात्रों के बीच फैलने
में। अन्त में सर्वोपर के काम उलका
साधन का कर बलाहक लगान किया।
इन दिनों साहब के कई लोग
बाबा से मिलने आये। भी बैरकवाले
३० मई को बाबा से मिलने सुनाए

नी ए. आर्न सी. सी. के बाद लीये
आये। एक दिन बाबा रहे। ११ मई को
मुद्रा ६ मीत प्रदवापन में लभ मे।
बाद में भी नारापण देनाई जाओसे जयति
काम विपत्तय के बारे में बातचलने
नली आये थे। २-३ दिन बाप एर
पर बापन गये। "लोको" अन्त में चर
प्रवचन बोल रही थी, वर भी नन बापु
आये। सर्व-संक्षेप के अन्त्य बन्दे के
बाद भी नन बापु पदवी बारी हो आये थे।
भी मुद्राकर्मवी भी ४२ दिन बाप
एर कर कल्प लीये। ६ लक्षों को
श्रीमन्नामप्रसन्न श्राव से मिलने आये थे।
दो दिन एर कर बापन दिखा लीये।
आजकल वहाँ लुप्त बरिहट हो रही है।

बाप के ४-६ दिनों में अधिक वा
नारापण नहीं बसा। यात्रा एकरम
छोटे छोटे गाँवों में चल रही है। कभी
बापन के वचन सखों में हट आने का
रवण हो जाने से बर्षों तक बना पदता
दे व गाँवों की बरला पत्रा है। फिर
भी यात्रा उल्लाह से चल रही है। बाबा
से मिलने वाले भी आते रहते हैं।
रखानिक कार्यकारियों के बारे में बाबा
बाद-बाद करते हैं कि रखाकिक कार्यजों
बारे अपने गाँव का काम संभालते तो काम
बढ़ते बड़ेगा। "लोको" अन्त में वृत्त अन्को-
अन्को नाराकॉल निकले हैं और रखाकिक
कार्यकारियों ने कामपण के काम की
रूप करने की विन्योषारी उलारी है। 'लोको'

अन्त के रखाकिक कार्यकारियों में से दादा-
रूप के प्रधान विपत्तक बने उलारी है। बाबा
उनके उलाह को देव कर बढ़ते हैं कि—
"एक रामदास का मन्दाप है। देते उलारी
माण्डु गण-गो-व में निकले तो वाम वरु
कस्ती होगा।" वृत्त के प्रधान विपत्तक
का नाम है 'शिम वर'। काम करने में
कि—"दुना नाम ही 'शिम वर' है। वे बर्षों
बर्ष मिलते हैं, सभा में या लक्षों में तो
बढ़ते हैं कि—"ये मासदास के लक्षार
हैं।" और उलाह करते हैं, "मुसरो इतके
लिये समय देना पड़ेगा। और लक्षारों,
काम हो बाँधेगा।"

आदिदिन मुद्रा पूरा कर बापन आये
बक वृत्त के लक्ष पुत्रों पर बाबा बढ़ने
छो—"इस लक्ष में मेव शिम हो गया।
पुली बगहे है और गीव का नाम भी
है। वहाँ गाँव का केन्द्र बन सकता है और
बनेगा ही।"

भारत के कृषि-मंत्री को निमन्त्रण

[श्रीमती ने एक बचल डाल में दिया था कि क्या भारत अनाज प्रिकॉल
करने की शक्ति में है। उन्होंने यह भी बताया कि भारत हूँ भारत अमेरिका ॥
५० लाख टन अनाज सतरेके के लिए बाध्य है। बाबूसाके सुदृष्टताप को भी एक
कृषि विचारों। कनाडा, आस्ट्रेलिया, जहाँ आदि देस के चीन बड़े पैमाने पर अनाज
पसिंद रहे हैं। ये देस अमेरिका से अनाज खरीद कर चीन में, कृषि भारत अनाज
साधन के सुदृष्टताप का एक। वहाँ पर हम लेवी और देखाते हैं वेर में दिन-पल
होकरने कामे कृषि विनोदर को देवुने में बहुरिपत्तिये देवने के लिये भारत के हरि मयी को
को निमन्त्रण दिया, यह वहाँ से रहे है। —सू.]

देशों की उन्नत की गणना किम प्रकार की जा रही है, और किम प्रकार
पहले में इच्छते होकर मयी योहर के पाप वृत्त रहे हैं, उन औरों के काम से
रोचना बनाना, अन्तर्गत विचारों से चारे में रोचना आदि विचार बलते हैं।
अमेरिका के कोरपुत्र विदे में जनपति ५६ से में रखाते हैं। पर लीपी की उन्नत
की गणना करने बाबा अग्रगणी कर्म आया हो शैल देखा रही हैं। में बाबाए वरक
के समय देखाते में ही देखा है। देप भर में उन्नत की गणना करने बाबा पदवारी है।
अन्त बाबू में भी कर ५५ से इच्छते विपरीतप करवा आया है, बहुत से पदवारी
पर में वैज्ञानिक औरोंके सती हैं।

से आदिवासी क्षेत्र में देखा है। भारत में कृषिय ३ करोड़ लोक आदिवासी
हैं। वहाँ तो देस देस रहा है, अन्य प्रातों में भी देखा, ३ करोड़ जनता से किम
मगर अपनी जान की मुक्ति कर दिगा रहती है। यह देश भारत के लिए एक ही
बात है। १५२० लीय बाबूक वा आबा पत्र कर उन्नत २-३ वेर वाली सिमा
बाद निर एक एक युवाए करवा है। कृषियों के लिए १९२० लीय
पाकल का आया कभी-कभी मिलना भी अत्यन्त है, वैसी स्थिति में जनता कर-मुक्त
कर जीवन चलता है। सुते तो हाल मर १-२ वेर मरत हो भी जाता है। पर
बाबा के दर्शन भी नहीं होते। कलाए देस में इतने बड़े उल्लाह को सामा-
जिक ७० बहुलियों में बर्षल एर कर अन्तक, धारा, कना आदि के लिए
निदान में बाबा ईदुका बना साधने-सती है। सू, सुदर, अन्तक, सिमरन में बर्षों

बाबा अपने से कर देन दिनों में
कुल ४० गाँव क्षामदान में मिले। १०
मौजों में ३५ पणन रहे।
"लोको" के मातों दिन लीन होने ही
समा निरुक्त बने। छात्रावास के निजार्थी
और विपत्तक वा बढ़ने छो कि आज
द्वारा यह स्थान लक्ष-प्राणी होया।
लेकिन कला सुमरिण ही बनेगा अन्त
और सुकाम। उल्लाहके के इच्छते से साध-
काय हम सब आगे बढ़ें।

कृषि-निर्माण के दान का विनियोग

५० मां सर्वश्रेष्ठ लक्ष के अन्ती
की पूर्णतः देन में कला भूगोली-मासदासी
जेम में रूप निर्माण के लिए प्रात दान के
विनियोग के लिए एक करिण निवास्त है।
उत्तम निदान बाबों की तप प्रदान देने का
बर्षन किया है।

(१) कृषि भूदान मासदास के किमि
कथन क्षेत्र में, औरों बर्षों बर्षों
का लक्ष हो, बर्षों पर कलाके बाते।
पर कथन क्षेत्र देश भर में एक ही वा
अधिक हो सन्ने हैं।

(२) कृषि देवी अन्नान में सुदराने
बाते, बर्षों आनकीके के अन्य माप वा
कालको का अनाज हो।

(३) कृषि वृत्त अर्थिक पणार्थी
का चरानवादी न हा, कर्मिक उन्नत
पत्र लेवने वरिद ॥ वृत्त अर्थिक
कर्म को करवा है।

(४) पत्नी की लक्ष भी मुद्रा
अर्थिक नीति न हा, कर्मिक सुदृष्टता
कृषि सन्ने में ती लक्ष पत्रा को
सकता है।

(५) कृषि देवी उन्नत बने, जहाँ से
वचनपत्र अर्थिक-अर्थिक उन्नतों की
लक्ष निर लगे।

पुना की दुखदायी घटना

पुना के सर्वोपर-नारापणों की भीराए
विपत्तियोंक अन्ते यह में मिलते है।
"पुना में सबू के कारण बहुत
दुःखालोके घटना हुई है। लोणच भी एक
बड़ बसा। हूँ कामान लेणचनी पत्र
साधी वा, यह पूरा हड़ गया। महात्मा देवा
संप, कर्णल, 'शायन', यशदाह
पदार्थकी का निजी मुकम शरीय मुद्राणा
स्य, शत्रुमाप प्रचार लना, इन सब
द्वारात सहायों कर-करी सुकाम हुआ
है और हरएक का सुदमान करिण लान
वो काम करे का है। महात्मा सर्वोपर-
माल का एक विचार किंकर उल्लेख बापन
में होने दास्य वा। यह मुद्रा में ह्य अनी
सने है और देस हर देस लोगों की मदद
करने का काम, कलाएक कार्य का काम
भी अत्यन्तपर पदार्थक और भी अर्थ-
साधन बन्दे इन दोनों के नेत्रण में
कर-वरीय वजत सर्वोपर कार्यकार्य और
साधने-सती कर रहे हैं। ही-माहली
और में तो उन्नत निर से ही बर्षे है।"

मही है।
कृषि-मयी सर्वोपरिने ने और एक बचल दिया कि भारत में भी जायन
बेलन गंधक बंध होया चाहिए। देस में सर्वोपर की वृत्त देखा, कर्षुं कृषि
आजारी हो कर, लव अन्तक और बाबा सिमरन करने उन्नत से के लक्षरे देस की
उन्नत करने का रात से कोचने होये।

—गोविन्द मुद्रा
माम-नरवत्, पो-मुद्रापुर
विज्ञा-कोरपुत्र, भारिना

[मान २२ सुधारों को बिहार की भाषा के विचारकों ने भी संशयित अधिकारियों ने जो मंत्रिजिम्मेदारी जताई, यह नहीं मान नहीं है। आज सबका ऐसा ही हो रहा है। इसके विषे तीन जिम्मेदार हैं, इस पर जो संशयकारकों के विचार पड़ेंगे। —सो०]

पहले से भी धनदातृ से यह तय था कि हम साहित्यिक और मजिस्ट्री भाट के रास्ते से जाने में और दली हिलाव से भाग्यलुकर, साहित्यिक और सुधारकों को पत्र लिखे थे। लेकिन कदापि ने जो टिंक करना, नर सपने के रास्ते से नर रास। मुसलमान में टी. टी. ई. ने जत की नि दूरी का जो परक होगा, उसका चार्ज हमसे छे ले। वहाँ उसने कहा कि आगे नहीं करवा देना !

फिर हमने पढ़ने में पुला, तो टी. टी. ई. ने कहा कि 'पुस्तकालय से पुस्तक घर आर ही चलाये कि पुस्तक में फलाना उत्तर है; क्योंकि हमसे थाव हउरी लरलरले से जानकारी है। 'पुस्तकालय में आकर पुता तो हम मित्र सखा रखने के बाट (चुकि वर चीन पर कियी अपने मित्र से निजी शारी के संबंध में बातें नर रखा था।) हमसे कहा, मैं अभी 'पयल हूँ, न नहीं नर छुडवा। 'बातें नर समर हो गय, अतः हम नहीं से निकल पडे। राते मे गाड़ी में ही एक टी. टी. ई. आय, तो उलठे कहा।

'उत्तरे बताव दिया कि अगले स्टेशन के बाव नरे टी. टी. ई. आयेगे; उलठे फरपा डेना। नया स्टेशन आया, कोई टी. टी. ई. नहीं मिल। सोकारा तक कोई नहीं मिल। मोनार्ग में गी नहीं मिल। जो मित्र वह मोनार्ग के साथ जाने शारा टी. टी. ई. नहीं था, हलफिए उत्तरे सच टिंक फलाना फकर कर दिया। फिर फरक में भी नहीं हुआ। इधी तरह राते के डेठ बने हम साहित्यिक पड़े। वहाँ लीमान्य वे टी. टी. ई. मिला और यह भी राती के साथ चलने शारा ही मिला। उससे बाव की जो भरी मनका के साथ उलठे कहा कि 'आप तो सुहाव ५-५५ की गाड़ी में मजिस्ट्री आगिने, और तब तक यहीं रहने। मैं तो गाड़ी के साथ जा रहा हूँ, जो पछी के नाउ से बनवा था।'

उत में वहाँ के बाव के पास गया। वह कुछ सिद्धा था। लेकिन हम से ही बीर। कदा-आर तुलक की गाड़ी से आगिने; ही सुहाव नर दूर।' हम तब मर लीये रहे। सुहा गाड़ी में सामान रात कर उलठे पास था। संयोग से बाव यही था, जो रात को देना था। उसने १-४ मिनिट टिंक हाप में केकर इकर-उकर देखने राते के बाव कहा कि 'इधी टिंक के बाव है। 'माइलेज में कोई टारा अंतर नहीं है। रात को ही आगिने मिल कर जाने के बाव जने देना था। तिय पर यह बराम था कि हाँ टिंक के स्टेशन में होगा वा अंतिम स्टेशन पर। आग-टिंक ही कर साये। राते में मदि कोई पुता है तो किये वही बता दे।' पुन मिला कर अंत तक भी फिधी ने यह मदी देना, न रिपा। सब हम आगिरी स्टेशन केबाहर। उतरे ती वहाँ कई टिंक देखने काल आया नहीं, एक गाड़ी। वही गाड़ी में वरक कर हम ली-पराय चले आये।

भी धारवासी की यह बात बहुत की सुनी मी कि चनीक आरनी अन्ना कुन दूध पर दालना लगा है। वहाँ वट दूर आकर से देना और सच पर मात धाम कर आता और वहाँ हम उलठे वीठे पड़े रहे। टी. टी. वर दखला गता। तब ही हम ती सोकु के, चलेय

को निबाने की भी उलठे बुति नहीं है। साविकनिक कर्मचारियों की सेवा नर यह स्वरूप उकर से निरापव दिलाता है, पर देता को कलाई और सत्तामिक संस्कार की बुकि से मरु भयकर है, इतने संयोग था। वही रात, रातगतर से मयानी दुर तक को, नर-पया की है। रातगतर से मयानीदुर मुनिठ के १५-५० मील दूर है। जीठ से जीठे आये तो 'उमय डेट' धंटे का रास्ता है। इल जिले से लारकर इल रहने से राजकीय वहाँ नहीं चलती है। काली माइलट वसे ही है। कतिदर से इकर आने काली बह अतिम वर थी, जिसमें हम लोग चडे। इल सत हा पूर्णियों में परद १५ मिनिट का बताये थे। पर वह वहाँ अरमा ५० मिनिट तक रुकी थी। बाकिरों में ही कौरी मरफकें मरहात था (अंग्रेज के नावे में क्या जाता है) कि आर २० मिनिट 'केट' है। आपस में इल टेट होने के बाजली ही भी चर्चा के करते रहे और इधी उलठे रहे। ५० मिनिट के बाद वत वा पाना दुर, तब नरे की यह बात थी कि वर के अन्तर दे-दुए किये लोग ये, उनलें उमयम दुाने लोग राये थे। रात ही गयी थी, अपेय का गया था। इल में उलठ की थी मी दम इलवा था। तिय पर वर और। कदावा न होगा कि धीयं पर को वैडे थे, वे भी बाकिरव सीटी पर २ की जगह ३ वैडे थे। ५० सीटी की वर थी। पर अर उमयम ५०-५५ से फिरी कदर कम लोग नहीं थे। कुछ लोग तो ऊपर टाय पर भी टेट हुए थे।

वा इल सीट की कद कर पर चल लते, वर 'कण्ट्रक्टर का पैला उतारने का धाव दूध हुआ। वही बाकिरों से उलठकर पर-ठी की गाड़ी के अन्तर यह इकर-उकर चल-ठी की वही उलठ था। फिर भी अर-पया राते हुए थे अन्ना केदने दूर हुआ। फिर वहाँ काली बीर में अने कुमय पर उलठे, वही उलठे पैला देता। अन्तर येने सेवों के साथ सेने के यमके में 'कण्ट्रक्टर' की सीपाकानी दूध को काली, कुन-क पासी की अने कुमय पर आ चुके होते। —इलटिए गाड़ी की रोक कर मयल

पैला ही लक हुए हैं। सापन, मन्थ के लुक को निरे वर कर परस बनाने के सापन कर में हैं। पैला मित्र जाय तो कम, जिसे और बात की परवाह नहीं। कपन, जलता भी लक (५) प्रबंधों का ही गयो हैं। हर समय बह कांठे, बागने, बाती रोने, निकालने, मार-नीली को करोगे, वेसे ही रोने-पीठेकी, लोचन मयन्या में दूर ही कुछ बुवाबाजक परिवर्तन 'एनेलकट' कर लेने की व न बनता को इल्टि है, न बलता त् अपना कथय सपना ही।

समय की रजारी की विग को किने को नहीं है। छुट्टी-धी बात को केर-क-आप-धप धंटे तक भी लीच राते में नर रह नाय, तो भी इतं नहीं। नर, चालकों को बिला है, न जलता को भी घाकरवासी की दूध काया कर कायी कुल बना। हमारे धार-केन कर्ताओं के लिए कामिजि कियेना म्वाक है, इल संयोग में गोले दूध दावा-व हा कि 'असल में यह लक अंगीरिण का नाम है। हमारे धारे पुतने के और धार लूट गये, लेकिन नवे लीरों और कर्ता को ली हा। अने अने को लीरों के ली नहीं है। हमने अभी वर लीरों की नहीं है। कर्ता को वर भी बाकिर, लीरारी भी बाकिर, हमारे धारवा भी बाकिर में इलान नरान का ही तरह लवतुम भी होना बाकिर। यह लीरों का वर, लेकिन इलर सही उयोग करे का लीर और कलर ही लोणे मे, नर आता।'

दात ने निजने में कहा कि 'अन्तर का यह भी एक नमुना है। सरकारी सरगना में को भी लीर है वे, पर वहाँ काली परपया भी (कल अंत ल), उर काली मयन्या में मानचता लीर को बाकी है, फिर भी अरानकता से तो नया का कलता है। इमार उलठ तो है माप प्रबंध म्वाक के पाते। लेकिन जत तक उते अंगिने मी, उलठे वरक कालु को भी छोड़। वही अरानकता के विर दूध और, बाव नहीं।' (दर-व के)

धर्म की अफोम शराव से बेहतर है!

जिनका उदर के साथ शराव है, जो पीने में लयवी कर लेते हैं और मने-योदे होने पर भी मयान का राय लेते हैं, वे पीने दूध को ही हैं। आगे देव के चारे पापर रूदनयन्य दारुने के का से कि पीने का मरुत। तब धर्म कथं बरक नर आता है, तो मयन मियने के लिए रात को शराव पीता है और शिनुलान का मरुत दिन भर की बरान मियने को भी मयान का मयन करते हैं। इनी मयन होने नाके की समरुत-अइल-उनी मनी बाकनी का मयन करती कालें हैं। इने कई दल लेवों में अने होर गये हुए हुए मयन। वे मने मयन मुनिरा का मुन दूध मिश्रुल मयन को हैं।

इमरुतिनी में क्या कि अंगिय है। टिक है, रहे अंगिय वती; केन पर न मूले कि अन्धों और धराय पीकर मयन मियने नाके की समरुत से अन्तर का निक, मयन करने काले की समरुत मयन है। —यिवाली

पूना की वादपीडित रचनात्मक संस्थाओं को खादी-कार्यकर्ताओं की सहायता

गांधी-जयन्ती के अवसर पर खादी-विक्री की विशेष व्यवस्था

पूना रोड में २० जुलाई को भोजन, २० मं और विचार रात्री एवं रचनात्मक कार्यकर्ताओं के सम्मेलन के अवसर पर निम्न संस्थाओं में पूना में माघ दूहने के जो मंत्रण-निधि आनी और अनाज-विक्रय आन-मार्ग की जो हाजि हुई, उन्हीं सहायगी रचनात्मक संस्थाओं को मदद दी।

खादी-मासव्यवस्था समिति में अपनी बैठक में पूना रोड में निम्न प्रस्ताव के सं-समति से पास किया है :

- | | |
|---|-------|
| संस्था का नाम | रुपये |
| (१) विशार खादी ग्रामोद्योग संघ, मुजसपरपुर | ५००० |
| (२) 'श्रममाली' परिवार | १०१ |
| (३) सुगेर विद्या रचनात्मक समिति | २५१ |
| (४) खादी केन्द्रित रचनात्मक, नरसिंहपुर | ५०१ |
| (५) तिलक मैदान, खादी केन्द्रित रचनात्मक, मुजसपरपुर | १०१ |
| (६) श्रमोद्योग सर्वोदय संघ क्षेत्र, दरभंगा | १०१ |
| (७) सर्वोदय आश्रम, रावनीपल्ला | ५०१ |
| (८) सर्वोदय आश्रम, शारदाबाद (भुवनेश्वर) | १०१ |
| (९) स्वतंत्र आश्रम, कानपुर | २००१ |
| (१०) श्रम-निर्माण मण्डल, राय | ५०१ |
| (११) श्रम संघ, लखनऊ | १०१ |
| (१२) विद्या सुधन क्षेत्र परिवार, पैजाबाद | ५०१ |
| (१३) विद्या सनन क्षेत्र परिवार, बाराणसी | १०१ |
| (१४) ग्रामोद्योग प्रवृत्त, उदुपूरनगर | २५१ |
| (१५) खादी-ग्रामोद्योग समिति, नैनीताल | २००१ |
| (१६) गणेश सेवा आश्रम, नवलख (कानपुर) | २५१ |
| (१७) ग्रामोद्योग आश्रम, नगल (मैल) | १०१ |
| (१८) ग्राम स्वावलम्बी विद्यालय, रणौली, नरसिंहदेवनगर (कैलाबाद) | २५१ |
| (१९) नवनिर्माण संघ, उदुपूरनगर (राजस्थान) | २५१ |
| (२०) औद्योगिक सहयोगी समिति, तिमोय (मुजसपरपुर) | १०१ |

"प्रति वर्ष हम 'गांधी-जयन्ती' को 'बरदान-जयन्ती' के रूप मानते आ रहे हैं। इसे मानने का हमारा एक अधिक-से-अधिक खादी विक्री का दृष्टि और उन्मुख स्वरूप खादी-दुष्करी नेचने का रहा है। दुष्करी-विक्री में भी हम अब एक सीमा पर आ चुके हैं। एक समय था, जब हम कोष पर खादी रस कर पर-पर बिजो करते थे। उल्टे हमारे समर्थ अधिक-से-अधिक लोगों के साथ हो जाता था। इस वर्ष अब खादी-विक्रय के नया मोड़ देख रहे हैं, जो 'बरदान-जयन्ती' मनाये का नाम भी नये दृष्टि से बदला जा रहा है। जैसे तो 'गांधी-जयन्ती' मनाये का समारोह सारे देश में, स्कूल, कॉलेज, मंदिर, प्र-बंधालय आदि सभी जगह होता है। इस वर्ष भी उसी का माध्यम केरु खादी-विक्री के व्यापक प्रचार की योजना बन चुकी है। ग्राम-पंचायत, इच्छ, कॉलेज, स्कूल, विद्या पी-बद तथा आश्रम बनता इन सबके बीच खादी-विक्री के व्यापक प्रचार की योजना के रूप में 'गांधी-जयन्ती' मनाये का कार्यक्रम आरंभित किया जाय। इस अंग से उन्गी वैधायी शुरू कर दें और ग्राम-पंचायत से लेकर विद्या-परिषद तक दृष्टि का लक्ष्य बन करने का प्रयत्न सभी से करें प्रचार और प्रसार दिया हो। इस प्रयत्न के अर्थ में कुछ खादी खादी, प्रयुक्त विद्यापीठ आने इत्यादी का एक पैठ लायी है। गाँव-गाँव में घर-घर की और घर-घर में विचार-प्रचार हो। 'गांधी-जयन्ती' के समारोह में जो भी आयें, खादी करत पद्वन कर ही आयें। इन बातों का व्यापक प्रचार लोगों में अमरि से करें। इस प्रकार से न केवल खादी की विक्री बढ़ेगी, बल्कि अधिक-से-अधिक लोगों के साथ हमारा सम्पर्क बढ़ेगा।"

अर्थ-संग्रह अभियान की प्रगति

दिलोक वृत्त १९६१ के १७ जुलाई १९६१ तक विभिन्न प्रांतों व जिलों के १०१ संग्रहकों के पास १०-१० रसीदों का ३७५५ तथा २५-२५ रसीदों वाली १८११, इस प्रकार कुल ५,११० रसीदें इकट्ठी-बिकरिहीं तथा २५-२५ रसीदों वाली ५४५५ रसीदें इकट्ठी-बिकरिहीं गयीं जा चुकी हैं। फिर भी बहुत रसीदों से और खादी-विक्री को बढ़ा आनी है। तबसे स्वच्छ है कि अधिक-से-अधिक संग्रहकों के आगे आने हैं। अनेक संग्रहकों द्वारा विद्या-सर्वोदय-संस्थानों के रूप आयें हैं कि 'हम अभियान की अगति बढ़ानी जाय।

सम्मेलन में देश की अन्य रचनात्मक संस्थाओं से लगीली की गयीं कि वे इस आशय में दिल जोस कर सन्धी, महापुरुष सेवा संघ, ७२० सदाशिव पेठ, पूना २ को मदद भेजें।

नशा-बंदी के लिए जगह-जगह उपवास

श्री रामाचरण चतुर्वेदीजी के मध्य निषेध-आंदोलन के समर्थन में पूर्वियों जिले के १६ कार्यकर्ताओं ने २० जुलाई को दिन भर हा उपवास रला और रात्री दिन घाम की प्रार्थना-सभा में श्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी ने शराब-बंदी-आंदोलन के औचित्य पर प्रकाश डाला।

विद्या सर्वोदय-मंडल, सुगेर के एक घर में अतुलार विशा भूदान पर कार्यक्रम, शोषण संघ, अन्य रचनात्मक संस्थाओं के कार्यकर्ता और कुछ विद्यार्थियों ने २० जुलाई को उपवास किया और विशार के मुख्य अंगी को एक निवेदन किया कि वे बिचार के माध्यम से शरीर मस्केलरु की कक्षाओं को शोध कर दें।

२० जुलाई को देवरन में घाम सेवा-नाथजी के संविद में एक प्रार्थना-सभा आयोजित हुई। सभामें नगर के कुछ प्रभार लोग और पंडे उपस्थित थे। इस अवसर की मोती बाई ने शराब-बंदी पर धारणात्मक भाषण दिया। अन्त में निम्न पंक्ति का सनन में दोहराया गया—'हमि भाग्यवान, हे संघट दास, विषयकों को खुदकुद दें। हे अभावन, भासल लुकाए नया भी नासक आमदनी छोड़ें।' इस सनन सभामें निना रात्री मने थे। मोती दास ने निना रात्री मने थे। उदरें शरतवला। उध दिन भूदान कार्य-

अवसत	१० संग्रहकों ने २७५० रु०	प्राप्त	दाता-संख्या	प्राप्त रसीदें
२८ न० १००	की अगवरी रात्री	अपचा	१७	२५५५
	राताओं की रसीदें आदि भेज कर लिपा है	बंगाल (कमकथा)		
	कि उन्मुख प्रयास खादी दे तथा अन्य जिलों	दिल्ली	२	१३१
	भी बढ़ सीध ही भेजेंगे। उन्हें बहुत अच्छे	बम्बई	१	१११
	परिणाम ही आशा है।	विहार	१	१११
	अनेक दशाओं की रकमें सीधे प्रदान	बम्बई	२	१३१
	कार्यक्रम में भी आकर सम्यक हुई है।			
	दिलोक २७-७-६१ तक संग्रह २०००			
	रुपये अपने संग्रह-अभियान के साथ लाते			
	में आस हो चुके हैं।			
	बिना भारत सर्व सेवा संघ, प्रधान			
	केन्द्र, रायबाद, राजी में नूतन १११ रुपये			
	वार्षिक स्वाहावा देने वाले दशाओं में			
	दिलोक २७-७-६१ तक प्राप्त 'सर्व-वर्गीय			
	सहायता' का निषेध यहाँ देखें है—			

कुल ७१ - ५१११

इसके अतिरिक्त भी पंचवर्षीय सहायता पत्र एवं रकमें कुछ खादी प्रसार, कलकत्ता में एकत्रित हुई तथा भी रही है।

—सर्वोदय-संग्रह खादी-विक्री का सनन सभा में निना रात्री मने थे। मोती दास ने निना रात्री मने थे। उदरें शरतवला। उध दिन भूदान कार्य-

सामाचार-सार

—मल्लनूर के खादी-समिति के अर्थ-संग्रह संघी एक बैठक में भी गोपुरल मारें भूट में नदी कि आस कर आठन-संग्रहकों नदी है पाठन जायें।

—कल्याणपुर में ९ जुलाई को लोक-विद्यालय सर्वोदय-विचार कक्षीयन समिति में कानपुर के भी विनय अगवरी और

भारतीय बुद्धिजीवियों का उत्तरदायित्व

उ० न० वेबर

मेरा यह लेख पाठकों को सायद न्यतिमत तथा सामाजिक नैतिकता पर एक निबंध ही समझा जायेगा । मे यह भी जानता हूँ कि इसे पढ़ कर वे मुझे पुराणपथी अथवा धर्मान्धि भी समझ लें, फिर भी अखिली पोस्टर्स के विरोध में विनोबाजी ने जो आन्दोलन शुरू किया है, उसकी विजय प्रभाव समाचार-पत्रों में लिखती उदाई जा रही है, और उसका मजाक किया जा रहा है, उस पर मैं अपने हृदय की वेदना और दुःख प्रकट करने योग्य नहीं रह सकता ।

हमें यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि विनोबाजी न तो निरपेक्ष व्यक्ति ही है और न उपरपथी ही । उनकी प्रत्येक बात में विज्ञान तथा मानसशास्त्र का तत्व रहता है । वे न तो किसी के साथ पक्षपात करते हैं और न उनमें किसी भी प्रकार की सहकारिता है । सम्भवतः वे ही एक ऐसे भारतीय हैं, जो विश्व की परिस्थितियों के अनुसार व्यवहार करने में सक्षम हैं । वे किसी भी भाँति प्रयत्नशील नहीं हैं ।

भारतीय स्वातंत्र्य की लड़ाई में वे सदैव प्रथम पंक्ति में रहे हैं । हम व्यक्ति-कांता व्यक्तियों की अपेक्षा वे व्यक्ति-विद्वान तथा ज्ञानकार हैं । अतएव भारतीय बुद्धिजीवियों का यह कर्तव्य है कि विनोबाजी को कुछ कहते हैं, उसको समझने का वे प्रयास करें । सायद हम पूर्णतया उनको साथ सहमत न हो सके, परन्तु उनका हमारे हित के लिए सम्पूर्ण समर्पण ही हमसे अपेक्षा करता है कि हम उनके विचारों को सम्मानपूर्वक सुनें !

इस प्रश्न पर कई दृष्टिकोणों से विचार किया जा सकता है ।

सावधानी के संकेत बिन्दु

यह शायद है कि मानव-परिहार अधिमान्य है । यह भी शायद है कि हमके सभी सदस्यों को या तो साथ ठहरना होगा या फिर एकछाय जुग बाना पड़ेगा । विश्व के सभी राष्ट्रों की निकटता बढ़ने तथा दिन-प्रतिदिन की मानवीय प्रगति के कारण आज यह और भी अधिक शायद बन गया है, परन्तु हमें यह नहीं भ्रमाना चाहिए कि इस मानव-परिहार की अपनी कई बाँटें हैं । वे कौंसे इस परिहार से हर भाग के इतिहास और संस्कृति में मिल सकते हैं । यह कोई वैदिक घटना नहीं है । बाह्य बर्तनी जीवन है, बाह्य अधुन्य विद्यमान होगा ही । जिस प्रकार हम लोग अपने पीढ़ी-आनेवाली संतति को खतरों की घाटाओं से बचाने के लिए, कई सावधान करनेवाले कड़े-बड़े प्रकाश स्तम्भ छोड़ जाना चाहते हैं, उसी प्रकार हमारे पूर्वजों की बाह्येदित वा ध्यान रख कर हमें आशा है उनके के लिए कुछ संकेत-चिह्न छोड़ गये हैं । उन्होंने अपने जीवन के अनुभवों से कुछ छोड़ा था । वे चाहते थे कि हम लोग फिर कुछ ही हमें गर्वित्व नहीं करें, किन्तु वे हर चुके थे और कोई ऐसा गंदा कदम न उठावें, जो हमें परतार कर दें ।

विनोबाजी तो केवल हमारी वृत्तु सम्पत्ति-बन्धी विचारों को ही निरालय कर हमारे सामने पेश कर रहे हैं । वे निवार भारतीय संस्कृति और इतिहास की बातें ही । मानव परिहार इन बातों के ही लौकिक आधार तथा दृष्टि है, व्यक्ति, योग्यता, कीर्ति तथा और भी मूल्य मान्य मान्य के लिए हम निर्धारित करते हैं, वे स्वकीय काया प्राप्त ही रहे हैं । इन बात से स्व-स्वत नहीं तथा वा सकता है कि हमें कुछ

राजिचारक साथ भी हो सकते हैं । उन लोगों ने ही हमसे संपर्क शोधन, दुःसाहस स्वार्थ तथा अन्य कई ऐसे ही अनिष्ट विचार उपलब्ध किये हैं । परन्तु हम हमारी एक मानवीय वरपण को केवल इसलिये ही नष्ट नहीं कर सकते कि इसका कुछ अंश ही हमें मिले । उनमें से विद्वत् अंश ही हम संस्कारपूर्ण हटा सकते हैं ।

नवीन मूल्यों के प्रति अग्रभक्ति

भारतीय बुद्धिजीवियों का एक भाग आज वा तो पाश्चात्य लोकतन्त्रिक संरचना की ओर आग्रह होकर अपना पूर्व के साम्यवादी विचारों से प्रभावित होकर जीवन के संधारणपर नवीन मूल्यों के प्रति स्वयं को समर्पित कर चुका है । जीवन का वह तरीका भी ठीक ही सकता है । परन्तु उन्हें फायदा नहीं कि इन भारतीय हमारा अपना तरीका ही नहीं अपनाते, जो हमारी अपनी संस्कृति पर आधारित है, जिसकी जड़ें अधिक गूढ़, उपादेय, लचीली और समर्थ हैं ।

जो भारतीय बहाने हैं कि आज की संरचना के बदले में अपनी चोख को ही छोड़ देना चाहिए, मानस में नवीन लोक-अर्थशास्त्र को जानता ही नहीं है ।

प्रकृति की सारी योजना सपूर्ण होती है । उनमें कोई चीज बेकार नहीं होती । इस-लिये वेतनामान बुद्धिजीवी मानते हैं कि चीज का गहरा अध्ययन करना चाहिए, परन्तु यदि बुद्धिजीवी समानता में ही अन्त-प्रत्यय जाता है, तो हम समानता को कभी नहीं प्राप्त कर सकते । यह प्रकृति की योजना के विरुद्ध है । प्रकृति में यहाँ अन्त-प्रत्यय ही नहीं पर भी निश्चयता का भी अन्त नहीं है ।

हमें खुलना नहीं चाहिए कि यह जो जीवन का नया तरीका ब्रह्माण्ड वा रहा है, इसे अभी अपनी नीचपण शिद कलना लेना है । निःसन्देह हमकी कुछ बातें ऊपर उठकर अचली हैं, परन्तु दूसरी कई बातें ऊपर से कितनी अच्छी प्रतीत होती हैं, वास्तव में वे ऐसी नहीं हैं । वे वह अपूर्ण ही हैं, उनमें कई भ्रंश हैं । कई अचली बातें खपता हैं । उनके स्थान पर कुछ ही हैं । और कई बहुत बुद्धुलदानी पूर्वकार्य उनमें हैं, जो कि प्रायः हर नये काम में होती हैं । अभी तो यह नहीं चोख है; फिर भी उनमें कुछ ऐसी बातें हैं, जो उनके लिए आवश्यक हैं । आधुनिकता और परिपक्वता पर्याप्तवाची शब्द नहीं हैं । अग्रह-शीलता, दम, दुःसाहस आदि को कुछ हम देख रहे हैं, वह हमारी प्रगति की अनेक अपूर्णता हैं, न ही स्वल्प है । जिन लोगों ने आधुनिक जीवन के नये तरीके को अपनाया है, उनमें भी अनेक आवश्यक शील उनके बारे में स्थिति है और वे अपने नवाच के तरीकों की खोज में रुके हुए हैं ।

हलके अनेक गुणधर्मों में से जो एक बात इन लोगों को अधिक संकित कर रही है, वह यह है कि जीवन के इन तरीके में जो अमीय दुःख और अग्रहित दुःख उत्पन्न कर रही हैं, उनका क्या होगा ? जीवन के इन नवीन मूल्यों में से क्या छोड़ना जाना चाहिए और क्या स्वीकार करना चाहिए, यह तो सभी कह जा सकते हैं, न कि यह पूर्णतया प्राप्त कर ले । जो हिन्दुस्तानी जिन्दगी के इन तरीकों को अपीकार करने को अचिर हो रहे हैं, उन्हें अभी अपने आपको नया रोचना चाहिए । यह तक जो शब्द वास्तव में उपयोगी तथा लीने योग्य हैं, ओह आलसर्त के लिये आवश्यक हैं—जैसे (१) धम (२) विराम और (३) कर्म विज्ञान-को ठीक तरह से ग्रहण कर सकते हैं । और अधिक स्पष्ट करें । भारतीय संस्कृति और जीवन के विशिष्ट अंश को नष्ट करने की भूल यदि हम करे तो उसके इन्धारी इतिहास ही होगी । भारतीय समाज कभी अमीय तुल्यता को नष्ट करना पण्ड्य नहीं करेगा । भारतीय बुद्धिजीवी भी वहीं गलती करेंगे, जो दुःखों में भी हैं । हर

देव की जनता ही अपनी एक मात्र होती है और विशिष्टता है इन देवों होता है । उन कीर्तियों ने हम देवों कीर्तियों के महाक को पूरी तरह ही समझा था ।

प्राथमिक प्रवृत्तियों से ऊपर उठने की आवश्यकता

वस्तुतः नवयुग भी एक नवयुग है । उसमें प्रवृत्तियों की लगे प्रवृत्तियों भूख, काम, मग और हलक समानता है कि विद्यमान है । भारतीय ही नहीं, परन्तु अन्य सभी देशों के मनुष्य इन बातों में लगे भौतिक समझते हैं कि जीवन के इन मूल्य मूल्य पर रह कर विकास नहीं का सकते । यदि मनुष्य अपना आर्थिक विकास करना चाहता है, तो उसे इन मूल्य सामान्य प्रवृत्तियों के ऊपर उठना होगा, नहीं तो फिर वह निया प्रभु बना खेता । हमारे पूर्वजों ने अनेक परिश्रम करते-करते निम्न प्रवृत्तियों से ऊपर उठने का प्रयत्न किया और निराला । उन्होंने अपने-अपना पाप कटा और परामर्श और स्वयं से अलग रखा । अतएव तो सभी के लिए अवसर था । अथवा, शिक्षा, स्वनिवार, चोरी, मर्यादा सभी व्यक्तिगत प्रायः परिधिगत उल्लेख ही समझे गये । वे लगे-चिन्ती पाण्डु-गुलाह के रूप में प्रभावित नहीं की गयी । जिन्होंने भारतीय इतिहास का अध्ययन किया है, वे जानते हैं कि वे भी पाँच रत्न हैं, जिन्हें भारतीय समाज के निर्माताओं ने कई ऋणित्वियों के संघर्ष में भी बचाये रखा ।

विनोबा, जयप्रकाश और देवीयों प्रभाव-प्रकार के नये परिधिगत विनोबा हैं, इन्होंने कोरें इतरा नहीं किया । परन्तु यह हमारा कर्तव्य नहीं है कि इनके द्वारा ही गोदा पिछा छोड़ी के मालतकर पर वैश प्रयास आदर्य है, इतरका भी विचार किया जाय । जिस प्रकार हम भारतीय कल्याण को विहा देते, वे ही भारत का भविष्य की भी जोगा । यह बात विलुक्त सत्य और प्रकट है । विनोबाजी को भविष्य की चिन्ता है । क्या हम मनुष्य को ही कोरें-वीर्य मास को खतरों में डालती हैं, इतरकी पिता अन्धको नहीं होती । क्या मास का अध्ययन निर्धारित करने की विशेषता 'वैश्व आर्थिक' के उद्देश्यों और विज्ञान-दाताओं के हाथों में और ही बानी चाहिए ।

भारत भारतवर्ष के नायकों को खाने है । एक तो यह कि भारत अपनी

खेती का सही और वैज्ञानिक तरीका : एक तुलनात्मक अध्ययन

['भूमि-प्रधान' के ता. ४४ अक्टूबर १९११ के अंक में हमने "हाथियों और बिकों के रणनात्मक में कानों का नियंत्रण", शीर्षक से भी देखी का लेख प्रकाशित किया था, उसमें उन्होंने छोटी और बड़े प्रमाणों को छोटी पर बर्तों को भी, यहाँ हम जमीनों को कलम से तुलनात्मक ढाँचे प्रस्तुत कर रहे हैं। -२०]

बड़े प्रमाणों को भूमि-प्रधान खेती का तरीका

अमेरिका में भी ए. १८ २५४ से ४८० कुंतल तक गेहूँ पैदा होता है। ५०० आरम्भ आठ महीने का काम करते १०,००० मनुष्यों के लिये आठ पर बा आठ अन्नक कर देते हैं। ऐसी भी उन्मत्त की है कि एक आरम्भ के २० दिन के अन्त से इतना गेहूँ पैदा होता है कि उसका आठ विभागों पर २५० आरम्भों को आठ पर खाने के लिये जमीनें हो सकाए।

यह बल शारीरिक श्रम की बहुत बचत करने में काम आया गया। उन वर्षों में मैदानों में जोतना, पसल काटना, धान जुड़ नौजी वगैरे हो जाते हैं। वर्षों का हल-उपर हीटना नहीं होता, समय नष्ट नहीं किया जाता। लाल बाम कपास की तरह बने बंधाये तरीके पर होता है।

जो जमीन का उपयोग करता है, वह उसे उपारोने को भी छोड़ नहीं रहता। जमीन जितना उपजा सकता है, उसकी पैदावार उसमें ही देने के बाद वह भी ही छोड़ दी जाती है। फिर मरु जमीन भी तलाश होती है और कुछ दिन में वह भी उसी तरह 'छाड़' बना दी जाती है, जिसमें बोरों कीज बाद में नहीं देना हो पवती है।

धम-प्रधान खेती का तरीका

धम-प्रधान छोटी छोटी मनुष्य जाति के लिये क्या कर सकती है, हमने कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं।

उत्तर भारत के प्रिन्स धम-प्रधान खेती के द्वारा निम्नलिखित रूप से १० एकर ११४८ से ११९२ एकड़ तक गेहूँ पैदा कर रहे हैं।

२७ एकड़ (१६०'x२०') जमीन खेती करने में ८ आरम्भों लगते हैं। काम-कमी १२ से १५ घंटे तक काम करते हैं। २७ एकड़ जमीन का लगान १०० पीर, लाल राईडने में १०० पीर, मसूरियों का ६०० पीर, आठ-समान वर ६०० पीर।

पंचपात्र

- १० एकड़ मासूर
- २० एकड़ प्याव-भूषी
- ५००० टोपरी टमाटर
- ५००० एरबेस अक्टो फल
- २५५ अन्नक पैदा करते हैं

२७ एकड़ में १९३ टन फल और फलभूषी उत्पन्न करते हैं, अपूर्ण की एकड़ ४४ टन से कुछ अधिक।

१९३ टन पैदा करने के लिये १००० दिन लगते हैं।

● कुल = २१ सेर टन = २८ सेर

'निमगव्हाण' ग्रामदाती गाँव प्रगति के पथ पर

निमगव्हाण, मर्मदा के किनारे का भयभीत गाँव का एक छोटा-सा गाँव है। यह एक से १५ मील दूर है। दुर्गम राहों से ही यहाँ कोई आ सकता है। तीन साल पूर्व विरोधवालों के आगमन से ग्रामदाती के समय इस गाँव में आरम्भ किया था। ग्रामदाती का अर्थ हाथक समाज घोड़ा था और ब्रह्म अग्रिम थी। वहाँ के निवासियों ने किसी-किसी को बनकर धारिण में उनके हित के लिए पैदा करने मुझ ही नहीं था। और अब तो ग्रामदाती विरोधवालों के दृष्टि में दूर।

ग्रामदाती कीज के तीन भाग बाद यह भी वहाँ गया और लोगों के बाद कि वहाँ आरम्भ करने के लिए केन्द्र कायम करेंगे, तो के ग्रामदाती का बाद शुरू हो गये थे। उनके समय कुछ कि कार्यक्रम भी रहेगा तो हमारी पंजीन चीन के साथ, बर्निकी उत्तरा रिज्मा अग्रिम था कि जमान का अधिपति उनमें शेरार देता था और वजल था, कलम के गाँव का विचार करने लेता था, लेकिन गाँव में इतिहास कायम ही कभी रहा हो। वेतमों का यही मनुष्य इनके सामने था। इसलिए हमारे विरोधवालों के शेरक आकर देते जाती क्या करेंगे? इसलिए उन्होंने हमारी बात सुनी अनेकसुनी कर दी।

जब कुछ दिनों बाद एक शायकता कायम वहाँ टट ही गया और लेख करने लगा, तो हमारी उदात्तता का धन विपणन का परिणाम अनुकूल में हुआ। इस बीच वहाँ के मनुष्य का समाज भीतर परा और एक आठ एकड़ उनके द्वारा के लिए आगमियों के मनुष्य केन्द्र, ग्रामदाती में हमारे निगम में ही उदरगया था। वहाँ सबकी सहभाग्य से उनके सहाय समाज हुए और ऐसे पैदा हुए।

एक बीच कुछ समयपर वहाँ के कार्यवाही भी अग्र केन्द्र पर आता गया और भी वस्तु को जमाने नाम के दूरों कार्यवाही को वहाँ मेला गया। पहले तो जन्म की बातें शुरू कीं तो समाज ही नहीं दिया। और वहाँ भी हमारे दम का फल भी शुरू करना नहीं आती थी। मसूरी यानी क्या वह पत्रा हुआ वह किमान उत्तरक अधिपति जन्मकाम कीते देता है और आदिवासियों की नैपथ्य में वे लगे लगे को लक करने काये मनुष्य ही थे। इसलिए इन विचारों उत्तर से सीधे उत्तरी छोटी में आया करता साम्राज्य किया। दूर आठ पत्रा किमान का काम करता था और शुरू के शिरु नौजी कार्यों के कुछ वहाँ आँसू था। यानी के दिनों में करने का यानी देतेकर योड़े के पैदा पैदा किने थे। ये भी उभरे गये

-ठाकुरदास बंग

आनेवाली सतृप्ति को खरब और सतृप्ति कायरी बनाये रहने के लिए बर्निकी बर्निकी में लकाम बर्निकी में, कुछ लकाम में लकाम बर्निकी आरंभ की, उन्हें लोगों की लकाम के हवाले कर दे, जो प्रथम ही लकाम बर्निकी किन्तु ही मुँह-काम बना लकाम के, पत्रा अने अने लकामों, देना ही और आने वाली पीढ़ियों को निमित्त कर के पुत्रों में आगमि के किमानों चाहते हैं कि कुछ लकाम निमित्त कर कि एक बना करे। एक ऐसी समाज-आवस्था को बनाए कर कि एक बना कर कि किन्तु लकामें वहाँ और मनुष्य हैं या दूनी लकाम-मनुष्य को अनेकमें किमिनो कोरें सुनिवार ही नहीं है। हमें उनका कलम है दुर्गमों के द्वारा अग्र के लकाम के लकामों का अर्थ और कर अग्र-मनुष्य को या विरोध शुरू कर लकाम को कि आनेवाली लकाम-मनुष्य को अनेकमें है। आठ लकामों (मर्मदा एव-वही-वही) वही लकामें पत्रा साम्राज्य प्राणियों को प्रथम करे या उन प्राणियों को अनेकमें को हमें उस किमान से ऊपर उठती है। आठ लकामों को किमान की ओर ले जाती है और अन्त में हमें लकाम बना है अनुकूल बनाना को, या ऐसे बनाना को जो कि प्रथम कर के मनुष्य है और जो मनुष्य के लिए ठेक और दूर नीच हाल रहा है। (अपेनी के)

वर्ष सेवा संघ, रामपाट, कर्मी
'मृदान'
 प्रेसिडेंट साहायिक
 संपादक : सिद्धांत दत्त
 मूल्य : दूर रुपये बार्निक

एक लकामों के मनुष्य के अनेकमें प्रथम एक शीर्षक में मनुष्य के किमान, जो मनुष्य अनेकमें से नहीं हो पाता। किन्तु लकामों में जो अनेकमें लकामें शुरू हैं, वह लकामें मनुष्य को मनुष्य एक अनेकमें का विषय बन गया है।

ऐसा क्यों हुआ ?

मोतीनाल फेजरीवाल

विदार राय के एक जिले के अन्तर्गत मयदेवपुर नामक एक ग्राम है। उसमें पाँच को परिवार रहते हैं। इसमें एक धनी परिवार के पास ख्यमन हाथ लौ सीपा जमीन है। पन्द्रहवीं शताब्दी के पास एक धीमा से लेकर उन्नीसवीं शताब्दी तक जमीन है। ख्यमन वही पाँच को परिवार भूमिहीन हैं; किन्तु वे अधिहास नववीं के एक घर में दैनिक मजदूरी करते जाते हैं। अपने वे कम वेतन पर मजदूरी हैं। मयदेवपुर के घात जो बीजे के चोतरात एक भारी की जानदार इमारत रात में बिजली से चमकना पड़ती हुई अपने अन्तर्गत राती हुई रोती रहते ज्ञानिये हुए शोषणियों की मानो मजदूरी करती है। एक अज्ञातलिखित ने मालिक रचनीय पंचमाल के मुखिया है। इनके बड़े बड़े सहोदर रचनीय कर्मिसे के पदाभिप्राय आगामी लुनाय के लिए कर्मिसे की विनय करने के उन्मोदक रहे हैं।

एक क्षेत्र में निवोताची के आदेश-मुशार बीजा में कड़ा आन्दोलन को सफल करने के लिए कार्यकर्ताओं ने सफल सेन बनाया। पहली शुरुवात का वह दिन था। लाहोर-अंगार के कार्यकर्ताओं ने नी भूतान-नरपत्तौलोमी की एक टोली को मयदेवपुरी लम्बा कर के प्रेम से विदा किया। सत्रसे पहले वह टोली अन्तर्गत पहुँची। अनी आठ वही है कि यह टोली नारे लगाती हुई उसक प्राम पहुँची; और पहुँच गयी उन्मौ बड़े मोतारके के इतरांगे पर, कर्मिसे पंचायत के मुखिया का वह घर था। पाती का प्याला तो कुपके के पास ही जाया है, तो फिर जमीन की प्याली भूमिहीनों के प्रतिनिधियों की यह टोली जमीन वाले के पास फेंकी नहीं जाती। पाती की डेने भी

मौदिग के लिए अनुपक है, कारण इस्का मुख बा उदेर ईशर के निम्न सेवना (अप-रंहर के निम्न + आसन = बैठना) है। उच्चतन सेवो की साणी में उच्चतल शास्त्र मामीरं को उंच उठाने वाले होने नादिपि।

काम की समर्थ, ओलारदी ब्याक मैपुल (मिष-समाज) अपने काम के बारे में और आस-पास की इतिहास के बारे में निरूप करते हैं। इस समाज में एकमात्र प्रशासिका एक कल्लो होता है, जिसका काम उन निगमों को जोड़ देना होता है। मन-गजना नहीं होती। समा उपरिपत में कर्मचर के नियम भी, दिग्ग हलके में कल्लु समर्थगि से थर्वा भी जाती है। बहुमत तत्त्वः इस्मय पर दयाल नहीं जायता। यदि एकमत न हुआ, तो कोई नियंत्रण नहीं किया जाता—यदि अन्य महत्त्व के मामलों के बारे में, जिनके बारे में निगम करते वे लिए ज्ञात करने की कोई रास व्यवस्था नहीं होती, उनके बारे में संपूर्ण सन्तुष्टि होने तक प्रतीता करने की जरूरत नहीं आती जाती। कुछ स्थल पर अन्तिम परिणाम सोरि बंधन के रूप में नहीं आता है। कई बार तो संघर्ष गया और अकलित ही परिणाम होता है, जो निम्न माते के समर्थन से आता है। मान्य हास एकी भेदक और संप्रवारी साकि की घरल बाकर मनीय प्रस वरने

उन्होंने सद्भावनी भी कर लिया था। टोटी की सामुहिक आत्म-सुक्ति ही रहते थे जब मैं विचारने लगा, तो उन लोगों के दास प्रसिद्धि की गयी उपेक्षा, अन्धकारप्रताप, उदासीनता या अमर व्यवहार के प्रति मुझे घोरन पानी हुआ। मैंने देखा कि हमारी उस संघर्ष में संघर्षीय-उप आनना को पालन करने के लिए प्रयत्नशील व्यक्ति का अभाव है, किन्तु प्रचार भाषी करने ने और निवोता करते हैं। फिदी के पास चलना या सकली नहीं कि यह काल नाथ। "यूथन वर" परिवार का भूतान-साहित्य नहीं था कि विषयो पढ़ा जाय और दो-बारा ऐसे भी थे, किन्तुने हय भूतान नहीं किया था।

मेघ कपाल है कि वह परभावता, जो उसके हृदय में समान रूप से स्थित है, हमारी पवित्र म्यनना का अड को बाँचे

तो शौन चरे, टोली को पैड पर स्थान करने की इच्छावत भी सुरियामी ने और शोषक टिकट पाने वाले उन्मीशर उनके सहोदर ने नहीं ही। टोली का फिर काल हुआ, वह चर्चा स्थले की आवश्यकता नहीं। सत-साहाय्याओं का कथन है कि अपनी कल्पना या अक्षमता का कारण अन्त में लोको। संघर्ष-आंदोलन को साफल्य मुक्ति भी दिया है। यह सोचने की बात है कि मुक्तिवादी धर्म उनके सहोदर ने क्या व्यवहार क्यों किया। मैं भी उस गौर में उस टोली की मदद के लिए उन सभ्य पढ़ाया, जब टोली के आरंभ एक अद्वि की कर्मची सोपनी में बैठ कर आचार्य रह गये थे। दोहर की भूप देव भी और एसीड कर

की इस रीति को मानिक नहीं, सफल करता था सकता है—युक्ति से दोनों समर्थ में आलापिक ही। बहुत बार यह धीरे धीरे निरालि होती है, काल नातिक रूपता की अन्तःजावन-निर्वास धीरे-धीरे (धीमा) ही हुआ करता है। कल्प और ऐक्य नी लोचन परत लनी और फलित होती है। इसमें प्रेम और लक्ष्मिना आवरसक होती है। किन्तु सिद्धि पाने के बाद समता में आता है कि वही कार्यकर्ता। गवर्नर में उल्लेख वाले के लिये पत्राग लेने सम्भव है, कारण हमारे अस्तित्व की मददगर् में तो केस की छासलों की तरह हम सभी एकदमी हैं। अथवा दूसरी ही उपमा देनी हो तो, एक एक ही है और उनके प्रभाव की और हम जैसे-जैसे उगते रहते हैं, वही वैसे एक-दूसरे के अधिक निम्न आते हैं।

कल घोषण की वह नाम सुवि ही अवि-रस समर्थनी की नीव डाल सकती है। इसके बिना हमारे समर्थों में—धिर वह राजनैतिक हो, सामाजिक हो या रचनात्मक हो—रजोपुत्र का संघर्ष का जाल है। यदि समर्थन को अहितक बनाया है, तो उन्मौ सत्य की घोष, निर्दोषारिता और ईश्वरप्राप्त्य का साक्षिक अर्थक जगता संवेना—वह केचरों से लोनेस का सक्ते बना पाठ है। (समाप्त)

उन्होंने सद्भावनी भी कर लिया था। टोटी की सामुहिक आत्म-सुक्ति ही रहते थे जब मैं विचारने लगा, तो उन लोगों के दास प्रसिद्धि की गयी उपेक्षा, अन्धकारप्रताप, उदासीनता या अमर व्यवहार के प्रति मुझे घोरन पानी हुआ। मैंने देखा कि हमारी उस संघर्ष में संघर्षीय-उप आनना को पालन करने के लिए प्रयत्नशील व्यक्ति का अभाव है, किन्तु प्रचार भाषी करने ने और निवोता करते हैं। फिदी के पास चलना या सकली नहीं कि यह काल नाथ। "यूथन वर" परिवार का भूतान-साहित्य नहीं था कि विषयो पढ़ा जाय और दो-बारा ऐसे भी थे, किन्तुने हय भूतान नहीं किया था।

मेघ कपाल है कि वह परभावता, जो उसके हृदय में समान रूप से स्थित है, हमारी पवित्र म्यनना का अड को बाँचे

मृत्यु : महामित्र

काविशर ने एक सुन्दर विस्मय लिखा है, अन्ध-विस्मय। एक भारी ने सुने कहा कि "किता मुन्दर विस्मय है बा। तो मैंने पूछा, इधे जौनस कोर है, क्या बहारे तो।" तो उन्होंने कहा कि वह इतना सुन्दर है कि तुम कर् आँला से एहदम आँसु बहने लगते हैं।" मैंने कहा : "मान लीबिय, कोर कल्लु न गया और उतनी में को विस्मय कल्लु है, तो क्या उन्में काविशर के विस्मय से कल्लु होतौ है। उबे देत कर क्या हमारी आँसु नहीं आते। फिर काविशर की रीति क्या क्या रही।"

काविशर को विवेकता तो बह भी, जो उस गौर की नती सुकली है, वह बेवारी को मुन-रिगीय के हुसल में सम्य हो जाती है। पर काविशर को सुकली है। मरच प्रकृतिः सररीरंषां विकृतिर्मांशित-प्रयुक्ते र्मुष्णः। अर्धो मरल की बीजन की निरुक्ति मानने के द्वारा होता है, जो मुस की जीवन में होता ही है, फिर भी उनका अन्तःकरण मरल पर किया जाता है। उदाहरण, एक मनुष्य तुल के पीरिल है और वह उसके मुस होने की कोशिश पर रहा है। लेकिन सच तुल को मियाने की सावधान्य न होकर में उल्लेख न करने में है। उस दुःख से जो मुक्ति दिलाने वाला है, वह तो उनका साधनिय मृत्यु है। निम्न मृत्यु पर तुल-मृग्यी होने का सन्धी भी प्रयोग किया जाता है कि ऐसा उगाता है, मानो जोर को छोड़ कर साहस्य को ही पौंटी पर बटा दिया गया।

अल कोरि आसि नहीं है। वह तो तुल से मुक्त करने वाली मृत्यु है। मृत्यु के समय जो तुल है, वह जीवन के देगों के परिणामस्वरूप हुआ है। इसलिए जीवन तो उसके दुःखों से सुखों की सामर्थ्य मृत्यु को छोड़ और फिदी में नहीं है। संकल जीवन को मृत्यु ऐसी विस्मय स्थिति में पहुँचा देता है कि बाद में उसे न मृत होला है और न उन्मौ। आसर्षर है कि देने महात्मिन् को भी मृत्यु अर्थक जाता है। मृत्यु आती है, तो हम विस्मयक बन जाते हैं या नहीं, इच्छा हम अर्थक कर देते हैं। बह प्रयोग के यह है कि उस मृत मनुष्य को नलते है और फिर देते

रहता है। महात्मिन् मृत्यु मृत्युः एव सा-मर्त्यं एव तुम् अममय है, जैसी विजयी भडा होता है, न वैसा ही होता है। ही सत्रा है कि वे सभी लोगों ने भूमिदान गिना होला, सं संघर्ष की उच मानना के अर्थ देते होते, और सभी सुत करते वते हैं। तो वह परभावता मुद्रियाजी एक उन सहोदर के हृदय में उठ कर उन लोगों में प्रेरणा करता कि परमर, वे आन्तु भडास और निम्न है। देते, स आगन्तुम की भी भडा से आगामी को। अथवा या अथवा का भी प्रसद हुआ, उनका पालन प्रियतम का हमात निम्न न होना और पना प्रियतम जान, वन और जमीन प्र मोर है।

हैं कि वह देह सहज होती है या नहीं। तुल होती है या नहीं। लेकिन को छोड़ करवो नही होता दोस्त, इसलिए हम समर करते हैं कि वह विस्मय ही गया। इस तरह वह अपने मुस से मुनी नहीं होता, वह तो हमने देत लिया। लेकिन वह अपने मुस में दुःखी होता है या नहीं, यह देखने के लिए हम मृत्यु प्रयोग करते हैं। अममय अन्ध-विस्मय करते हैं और देखते हैं कि अन्तिम के सार्थ से वह दुःखी तो नहीं होता। इसके अर्थों फिर पर विचार तक नहीं देती जाती। उन सिद्ध होला है कि वह परिष्कृत विस्मय प्रक हो गया। पक्का निरवक हो जाता है कि निम्न तुल के ही इले मृत्यु ने 'मृत्यु' अनुद्विगमना सुखे। विगतवृत्तः की स्थिति में मृत्यु कल्लु है। देवी परम पीयसि मात कल्लु कल्लु महात्मिन् को ही हम मृत्यु करें, तो क्या वह उचित है।

—विनोता

वस्ता साहित्य मंडल द्वारा प्रकाशित
 अधिकृत गण-रचना का साक्षिक

●
जीवन-साहित्य
 संपादक

हरिनाथ उपाध्याय । मधुनाथ लैन
 साक्षिक मूल्य : बार रुपये
 कल्ला संवेना मंडल, नई दिल्ली

पानीपत में अशोभनीयता-निवारण आंदोलन

२-३ जुलाई '६१ को कदवाल जिले के मंडल की ओर से अथ वसंतारो के सहयोग से अशोभनीय पेंसल की प्रदर्शन, अस्पृश्यता की लक्षण, मंदिरपुर आदि के विरुद्ध विरह आंदोलन किया गया। पहले चरखे के प्रमुख लोगों के मिल कर विचार समझाया गया। २ जुलाई को शाम को प्रमुख व्यक्तियों की सभा में ७ सदस्यों की एक समिति बनायी गयी, जिसका संकेतिक वागीपत के मंगलकोषी श्री सुंदरचन्द्र गुप्त को बनाया गया। २ जुलाई को रात को सादरी-माधेरीय विचारक, कमांडला की ओर से "चाँद-केशवा" पत्रकारी नाटक तथा अश्लील स्टा निवारण संबंधी प्रयास किये गए।

३ जुलाई को एक विचारक दुर्धन काम को सादे वार से प्रचार सादरी आश्रम कदवाल के १० भोगविलासियों विरुद्ध, अस्पृश्य, वरुण सोरोदय मंडल के मंगलकोषी में, निष्ठा विहम में विचारक शरणाभो के सभी कार्यकर्ताओं में अस्वाभाविकता का लिए। सादरी के सहायक एक हजार सात विचारक शरणाभो में भी एक जुद्ध में भाग लिया। इसमें अशोभनीयता विरोधी नारे लगाये गये। यह जुद्ध कर्मांतल शरणाभो के सभी जुद्ध वाजारों के होता हुआ कर्मांतल चार मंडल का मकर तथा कर्मांतल घाम के सतल जेके किला घाउर पर कर्मांतल हुआ। जुद्ध की विरोध भाव यह रही कि किसी लार्ने-विचारक तथा वा दुर्धन पर कोई अश्लील चोटों की वरिद्ध दिवारों की देना वा, तो सादरीयपदों की भी मिला पर मकर-निवासी हरर उनको हरा लिये।

रात को किला घाउर पर भी सुंदर-चन्द्र की गुप्त की अध्यक्षता में एक भाग हुआ। उनमें निम्न लिखित प्रस्ताव पसरा गया, निम्न पर भाग चलने में लोग सब 'अथ वसंतार' कर कर शरीरित प्रदर्श की।

प्रस्ताव
 वाणीय-निवासीयों की यह शरणांश्रित सभा आदिपत मारल सर्वे देवा सच की ओर से उठाये गये हर मंत्रिक अलगाय के अन्तर्गत के पूरी तरह हटाने में। बाबा हर देव के सौते-कीमती में पैर हरे प्रचारकार के नैतिक पक्ष वा नून फारस अशोभनीय प्रदर्शन, मंगलकोषी, अशोभनीय शरीरिय व मंगलकोषी है। समय की मार है कि हम समय में मंगलकोषी देवी हर दुर्धन का विरोध करें।

हमके समय हम निरपच करते हैं वि-२. देवी हिमाली की, ओर कर्मांतल के शरिय निर्माण में बाधक हैं, हम प्रोग्रामन नहीं देंगे।

३. देवी मांने, मीलों का, ओर मंगे विचारों का प्रदर्शन करते हैं, सुणी कर्मांतल व निवार सादरी आदि में माना बरामा ह्द कर देंगे।

४. अशोभनीय चित्रों वा सचनों, सभारा तथा परों में अज्ञान कर कर देंगे और इनके स्थान पर विचारकजन विचारों को बरार देंगे।

५. हमारे डेज के नैतिक पक्ष वा दुर्धन मारल नरणाओं है। समाज सुधार के लिये हमें भी समाज से हम विचार करे।

पानीपत नगर में कदवाल जिले सर्वोदय-सर्वोदय की ओर से अथ वसंतार के सहयोग से अशोभनीय पेंसल की प्रदर्शन, अस्पृश्यता की लक्षण, मंदिरपुर आदि के विरुद्ध विरह आंदोलन किया गया। पहले चरखे के प्रमुख लोगों के मिल कर विचार समझाया गया। २ जुलाई को शाम को प्रमुख व्यक्तियों की सभा में ७ सदस्यों की एक समिति बनायी गयी, जिसका संकेतिक वागीपत के मंगलकोषी श्री सुंदरचन्द्र गुप्त को बनाया गया। २ जुलाई को रात को सादरी-माधेरीय विचारक, कमांडला की ओर से "चाँद-केशवा" पत्रकारी नाटक तथा अश्लील स्टा निवारण संबंधी प्रयास किये गए।

३ जुलाई को एक विचारक दुर्धन काम को सादे वार से प्रचार सादरी आश्रम कदवाल के १० भोगविलासियों विरुद्ध, अस्पृश्य, वरुण सोरोदय मंडल के मंगलकोषी में, निष्ठा विहम में विचारक शरणाभो के सभी कार्यकर्ताओं में अस्वाभाविकता का लिए। सादरी के सहायक एक हजार सात विचारक शरणाभो में भी एक जुद्ध में भाग लिया। इसमें अशोभनीयता विरोधी नारे लगाये गये। यह जुद्ध कर्मांतल शरणाभो के सभी जुद्ध वाजारों के होता हुआ कर्मांतल चार मंडल का मकर तथा कर्मांतल घाम के सतल जेके किला घाउर पर कर्मांतल हुआ। जुद्ध की विरोध भाव यह रही कि किसी लार्ने-विचारक तथा वा दुर्धन पर कोई अश्लील चोटों की वरिद्ध दिवारों की देना वा, तो सादरीयपदों की भी मिला पर मकर-निवासी हरर उनको हरा लिये।

रात को किला घाउर पर भी सुंदर-चन्द्र की गुप्त की अध्यक्षता में एक भाग हुआ। उनमें निम्न लिखित प्रस्ताव पसरा गया, निम्न पर भाग चलने में लोग सब 'अथ वसंतार' कर कर शरीरित प्रदर्श की।

छत्तीसगढ़ संसारीय कार्यकर्ता संगोष्ठी
 ३० जुलाई को सायनाल ३ उभे-काल-समाज वाकालाजल राधुपुर में श्री हरिदत्त प्रकाशजी शुक्ल, प्रतिनिधि अं००० वरुं देवा सच, जिलाधुर की अध्यक्षता में छत्तीसगढ़ के विचारक मिलों के आठे हुए कोठेकल एक सरोधन-निर्वासी की बैठक हुई, जिसमें सभी सारणांश्रितों ने, अस्पृश्य अ-म-प्र० शरणांश्रित, शरणांश्रित, सभाजी सरोधन हुं, शरीरललको घामों, हुं, अमिदविहारी हुं, प्रामाणीय सुंदर-चन्द्राजी अलगाय, इमताद अलगाय, वरुणमूल, सुनीकर, सुनीकर, दोतलक शरीरल, सचमुद्र, भी अमगतयभाद प्रेम, वाचयक क अश्लील अ-म-प्र० सरोधरी निम्न अतिरिक्त हैं। श्री वासनांश्रितों ने सर्व-प्रथम सरोधरी की आकांक्षा पर वरुण-अश्लीलको की अदवा पर प्रस्ताव पसरा। जिनका ह्द की भी आकांक्षा पर वरुण-अश्लीलको की अदवा पर प्रस्ताव पसरा। जिनका ह्द की भी आकांक्षा पर वरुण-अश्लीलको की अदवा पर प्रस्ताव पसरा।

- (१) सारणांश्रित बैठक अथ किलों में वाचक एक वा मंगल कार्यकर्ता-सर्वोदय विचारक की ह्द से की गया।
- (२) प्रतिनिधि कार्य को प्रथमवा देते हुए सायनांश्रित सर्वोदय-सरोधन एक सभागी की सरोध अतिरिक्त भूमि का विरोध कर देते का निर्णय किया गया।
- (३) राधुपुर नगर में अशोभनीय विचारक अन्वयन-कार्य का सारणांश्रित स्तर पर किया जाने।
- (४) राधुपुर, हुं और जिलाधुर जिले के सारणांश्रित को सरोधन सचन कार्य के लिए जुना गया। मंगलकोषी मंडल और फवाकन पर से निवारों का लोक-सिद्धि कार्य समर्थित रीति से किया गया।

दुर्धनगढ़ धामवाक सरोधक
 छत्तीसगढ़ अस्पृश्यता विरोधी सरोधरी, राधुपुर

सर्वोदय-सर्वोदय की ओर से अथ वसंतार के सहयोग से अशोभनीय पेंसल की प्रदर्शन, अस्पृश्यता की लक्षण, मंदिरपुर आदि के विरुद्ध विरह आंदोलन किया गया। पहले चरखे के प्रमुख लोगों के मिल कर विचार समझाया गया। २ जुलाई को शाम को प्रमुख व्यक्तियों की सभा में ७ सदस्यों की एक समिति बनायी गयी, जिसका संकेतिक वागीपत के मंगलकोषी श्री सुंदरचन्द्र गुप्त को बनाया गया। २ जुलाई को रात को सादरी-माधेरीय विचारक, कमांडला की ओर से "चाँद-केशवा" पत्रकारी नाटक तथा अश्लील स्टा निवारण संबंधी प्रयास किये गए।

३ जुलाई को एक विचारक दुर्धन काम को सादे वार से प्रचार सादरी आश्रम कदवाल के १० भोगविलासियों विरुद्ध, अस्पृश्य, वरुण सोरोदय मंडल के मंगलकोषी में, निष्ठा विहम में विचारक शरणाभो के सभी कार्यकर्ताओं में अस्वाभाविकता का लिए। सादरी के सहायक एक हजार सात विचारक शरणाभो में भी एक जुद्ध में भाग लिया। इसमें अशोभनीयता विरोधी नारे लगाये गये। यह जुद्ध कर्मांतल शरणाभो के सभी जुद्ध वाजारों के होता हुआ कर्मांतल चार मंडल का मकर तथा कर्मांतल घाम के सतल जेके किला घाउर पर कर्मांतल हुआ। जुद्ध की विरोध भाव यह रही कि किसी लार्ने-विचारक तथा वा दुर्धन पर कोई अश्लील चोटों की वरिद्ध दिवारों की देना वा, तो सादरीयपदों की भी मिला पर मकर-निवासी हरर उनको हरा लिये।

रात को किला घाउर पर भी सुंदर-चन्द्र की गुप्त की अध्यक्षता में एक भाग हुआ। उनमें निम्न लिखित प्रस्ताव पसरा गया, निम्न पर भाग चलने में लोग सब 'अथ वसंतार' कर कर शरीरित प्रदर्श की।

रायपुर में अशोभनीयता-विरोधी धिवस
 ३० जुलाई की रात को राधुपुर में अशोभनीयता-विरोधी धिवस ४ वने मंगलकोषी का सभाजल पुनर्हाल से छत्तीसगढ़ जिला के आठे सरोधरी मिलों के साथ मंगे वरुण-सरोधरी कार्य को सत्नी किले वरुण हुआ। मंगल के दुर्धन सरोधरी के एकल हुआ पुरानी दुर्धन सरोधर स्थित हनुमान मंदिर के वाचक वरुण और आठे सभा के हर में परिभाष की गया।

विचारक मिलों के सुविधिक सर्वोदय-सर्वोदय विचारक हर कर्मांतल अश्लील-अश्लीलको की ह्दल के सभा की अध्यक्ष की। सर्व-प्रथम श्री वासनांश्रित ने, अस्पृश्य अ-म-प्र० शरणांश्रित मंडल से अशोभनीयता विरोधी दिक्क की आकांक्षा पर प्रस्ताव पसरा देते हुए अशोभनीयता की अश्लील की।

सर्वप्रथम श्री वासनांश्रित ने अपने विचारक मिलों में प्रथम सरोधरी वरुण पर प्रस्ताव पसरा देते हुए सरोधरी को, वासनांश्रित सरोधरी की अध्यक्षता किया कि वे आठे के सभा में अश्लील मिलों के प्रति कल स्तर पर सरोधरी से विचार करें और सरोधरी की वैदिक सच को भी उठाये सच हर सभा अश्ल कर दें। दिक्क के सरोधरी को सुविधिक पर कल स्तर करने वाले हुए निष्ठी सारणांश्रितों के द्वारा प्रथमिक नारी वाचि का अथवा करने वाले अश्लील, मंगे, वाचक कोठों को रोके और पहिनास करें।

उत्तरे सभाजल सारणांश्रितों के कर्मांतल का पाठ करते हुए श्रीमती वरुण-सरोधरी हुंने जेके प्रस्ताव की अशोभनीयता विरोधी की और सभा का प्यान आकर्षित करते हुए देवा अन्वयन की ओर वाचक होने का सभाजल को वाचक किया।

श्री कमल मंगलक सरोधरी, मंगे विचारक अश्लील-अश्लीलको द्वारा सारणांश्रित मंगे वरुण-अश्लीलको की वैदिक

विचार आदि में सारणांश्रित आदि पर मंगे विचारक मंगे हुंने तो वरुण-अश्लीलको दिक्क दिक्क सरोधरी। प्रुठ सभाजल पहले सरोधरी सरोधरी वरुण में प्रति-निष्ठि करने को सरोधरी सरोधरी व, सरोधरी अश्लीलको सरोधरी मंगल पुनर्हाल हुंने, प्रैठिठि आठे वरुण निम्नता के सारणांश्रित कर करते हैं। हमें आठे वरुण में अश्लील को बनाया है। हमें अशोभनीयता के सरोधरी मंगे वरुण अश्लीलको को सरोध वरुण आदि वरुण और सरोधरी, सरोधरी, मंगलकोषी के मंगे वरुण व मंगे मंगल कर देने चाहिये।

मंगल की निम्न निम्न सरोधरी के पुठ विचारक अश्लीलको में वरुण मंगलक का सरोधर किला और आठे के निम्न सरोधरी होने का पचन दिया। इत प्रस्ताव सभाजल वरुण आठे के मंगल के समाप्त करें।

—निष्ठा विचारक निरंतरक कदवाल जिला सर्वोदय मंडल, कदवाल

अशोभनीयता-विरोधी धिवस ४ वने मंगलकोषी का सभाजल पुनर्हाल से छत्तीसगढ़ जिला के आठे सरोधरी मिलों के साथ मंगे वरुण-सरोधरी कार्य को सत्नी किले वरुण हुआ। मंगल के दुर्धन सरोधरी के एकल हुआ पुरानी दुर्धन सरोधर स्थित हनुमान मंदिर के वाचक वरुण और आठे सभा के हर में परिभाष की गया।

विचारक मिलों के सुविधिक सर्वोदय-सर्वोदय विचारक हर कर्मांतल अश्लील-अश्लीलको की ह्दल के सभा की अध्यक्ष की। सर्व-प्रथम श्री वासनांश्रित ने, अस्पृश्य अ-म-प्र० शरणांश्रित मंडल से अशोभनीयता विरोधी दिक्क की आकांक्षा पर प्रस्ताव पसरा देते हुए अशोभनीयता की अश्लील की।

'श्रुति-कांति'

हिन्दी साप्ताहिक

सार्थिक घुट ६ * वर सभ्या

पता - म ॥ सर्वोदय-मंडल

११२, नैनेहल्लानज

इन्दौर नगर (अथ पेंसल)

शान्ति-स्थापना के प्रयत्न से हिंसात्मक दुधर्टना उल्टी

२५ जुलाई '६९ को भाग महरा (जिला नरवल) में दो दल लड़ी, भाके तथा दम्पनों के साथ उपस्थित थे। एक दल ०.२२ एच एच पर चरदरती कब्जा करने की तैयारी में था और दूसरा उसे कब्जा न करने देने के लिए।

ई सार्वकाल द्वारा अपने घर आ रहा था। रात में इस प्रकार के जमाव को देख कर एक भारी से उठ पैदा कि वह जमाव पैदा है। गाँव के एक टाकुर छोटे सिंह ने मेरी कार्डिनल रोक कर कहा कि मेरा गोग करवा होना ना रहा है, उसे बनाया है।

उमके धमने आकर उन्हें समझाने की भीयदा घर रहा था। मैंने कहा, परिसर ही भाला मेरे सड़ने में नारा कर ही लावे यह कहेंगे। जब मैं सारथरी आगे जाने नहीं हुआ। उन्होंने कहा, तो मेरा कैदला आप ही कर दीजिए। मैंने उनसे वोट, कैदल तथा से लगी होना, चालू होकर पोंच आरपी भी वेंडें और वो से कैदल करें, दोनों व्यक्ति की मानना चाहिए। वे मान गये। मीड हटा दी गयी। पंडितजी चाहते थे कि स्वयं प्रशासन चारे और लेते, किन्तु लेते दे दें। एक टाकुर साहब, जो दुधरे गाँव के थे, उन्होंने बहा, आपने स्वयं प्रयाग के लिए दिया है, न कि किसी भी शैकी के सामना छोड़ने के लिए। अपना स्वयं मन प्रयाग के लीजिए और हमका खतम भीजिए। मन प्रयाग के ५५५ ६० मेरे पास क्या किया गया और उपर के स्वयं का रक। २० जुलाई '६९ की 'सी. ओ.' (चक्रवर्ती अधिपरी) के वर्षी समीक्षा कक्षा हुआ और स्वयं पीठवर्ती को दे दिया गया। दोनों व्यक्ति जानन्द चले गये।—प्रमुनाप्रसाद, अमृतसिंह जिहा तर्षोप-अंशक, नरवलसाह

नगर-शुभर की पूर्वनिर्धारित गुप्त का फरमा है कि इन तीनों यथावत् सभी भाग्य हैं, पर भोग करने की पद्धति उरीक नहीं है। इनके बावजूद भी महापारलिम्न राजकीय व्यवस्था परंपरा के अनुसार ही चलेगी। प्रदोषण भ्रष्टाचार के पाग के मजूरी मंगा रहे हैं, निजसे दूनकर भोगें पुनः पूरी भी जा सकेंगी। तथे वती बात यह है कि यहाँ यथावत् परिस्थिति भी अन-वृद्ध देखे ही सकिये गीन है, जैसे लेने-डू-लाए के समान। जो कल लेने-साहूकार, चर-पंडित निरोप करते थे साइ दुने में, आज वे ही भिन्न-होने भी सार करते हीने हैं। और भावने ज्ये ही काम दे दोकर, मंदिर, दूरान आदि का भिमे है, ये ही यह भी बनना ही काम है। सब तो हर वीर-पवीर दूधन के बादवासी दूरान पर अतिरिक्त

सामानों के अलग शाद, पूजा, भी दिव्य रही है।

इसवादी भी लेने हुए हैं, महापारलिम्न को तनी हुई है। भागे-बालेनी में बदलते करते समय गुले परतन इन छात्रोंमें हैं आन यह आवाज सुनते वतनी है कि अब हम लोग भले स्थितिगत कृ-पला के नाम पर लोगों से कुछ लेन-लोणी की तरफ दिवा करों, सब के मलावा झोरही भी सत लेन, अब हम लोग महापारलिम्न के लो-पन कर सकाई नहीं करेंगे। मन ही मन मैंने कहा—अन्या देख, भगवान् यह आनाय आन इन दिनों ही हुए थे, निरं कला थापा।

—पलकनारायण, लीकक स्वच्छ काशी अविधान-समिति, काशी

खादी-कमीशन ध्यान दें

[की बरेदबाई एक पिठवासान कार्यकर्ता हैं। उनको यह देख कर बेचारा कि किस प्रकार लारी की कुलाभ-अकार का सामन बनना या देकर है। हम जनों करते हैं कि यह सब भाषणों में भूत्वाधिकारियों के सामने भी बिना हुआ होगा। इस की बरेदबाई से पूरी सत्त्व लहलह है कि लारी इस प्रकार की सफल राजनीति है। दूर होनी चाहिए। आर्य हैं, असाध्य इत बात की पूरी जोत-जोत करीना। संबंध में पंडित कावर्धनी करवा।—सं०]

जुलाई के प्रथम वसंत में आने भारी वे मिलने में दिखी गया था। भारी के छोटे लड़के ने खादी-कमीशन द्वारा सवालित "जादी भवन" से पारीही सुधर्तनी पढ़ती थी। तो सुधर्तनी की देव कर दुधर्तनी वीरक गया, क्योंकि उस पर को उग या वह आभार में ही खाले बाव्य था। मैं तोर से उस बच्चे की सुधर्तनी को देर रहा था, क्या जगस गया कि मैं क्या देर रहा हूँ। उन्होंने प्रत्य-क "बाबाजी, आन इतनी भी नहीं पढ़ सकते। जानने हैं, दूर पर क्या लिखा है।" इतना कह कर वह गया अपनी सुधर्तनी पर

छिपे छापी की नौर। पढ़ कर हलने क्या, "बाद हमारा कर्त वृत्त, बंस कीजी के बावने में।"

खादी-कमीशन का एक तरफ ही छिपे छाप एक पाठी का प्रकाश बना कर लड़कों में। खादी-कमीशन एक तरफ से सरकारी संस्था ही है, सरकारी संस्था न ही हो तो छापी पढ़ने वाले को लगू लोग हैं, और लारी एक प्रकार की सफल गंगरी से दूर होनी ही चाहिए। आचार्य कल्पेश्वर स्वच्छ इध पर आन रहे। बलिदा, नरेंद्र भारी

दोनों व्यक्तियों को एक जगह बुल कर हगदा हल कराने के लिए वातचीत शुरू की थी कि एक व्यक्ति ने राजाराम पर लाली चाल की। अच्छाई यह हुई कि लाली छुपने में लग जाने से नीचे बैठे हुए राजाराम को नहीं लगी। भगवत हल हो गयी। दोनों और के अमाने-कामने मोच-बन्दी हो गयी। मैं निरन भाग कर बीच में पहुँचा। लाली दोनों को घात करने में सफल करने लगा। वहाँ के एक गिबुक तथा एक और भारी हमारे हाथ बचने में आ गये और लाली कतिनाई से दोनों लाली को पीछे हटाया।

उसी समय १० एल्वलाली भी घर से माला लेकर आने। वे जोश में थे।

सहज भंगी-मुक्ति की दिशा में

२ जुलाई '६९ से बाकी में सवाई-मज-दूर मिश्री की अमनी मीनों को लेकर हलाला खल रही है।

बास १४५ बना दी गयी थी। इह-कालिणी द्वारा घाट-भंगा के अतिरिक्त भी गिरफ्तारियों हुईं। हगाम डेट हवार मज-दूर धातियन लतीने के गिरफ्तार कर भिजे गये। गापी मोंग कर बुटने नी लेने, किन्तु काम पर आने की प्रयत्न: हस्तालिपी की मीनों लकाला लतीने के कारण, हगाम बुल रल। हवार सवाई-मजदूरी में वे अपने काम पर आने लगे। नई अमली मो शुक्र है, निजमें स्वयंभू के लिए निरोध सुनिषा व वेतन आदि का मन पीठित है। बाहर से भी मजदूर लाकर काम करा वचने का प्रयत्न जारी है।

वीर-वीर में सार्वजनिक संस्थाएँ, मिला सौदर्य गट, गंधी स्मारक निधि, गांधी आश्रम, सई सेवा संघ, हडिजन् सेवक संघ आदि का सविन मार्ग-दर्शन भी चलता ही रहता है।

मूल्य-निर्धारण का प्रश्न

भारत के रणनीति भी एस० कै० पाटिल ने पिछले दिनों एक भाषण देते हुए परा था कि अनाज की कमी की समस्या को तो हल करना इतना कठिन नहीं, बितना कठिन अनाज की अतिरिक्त भी समस्या को हल करना है। उन्होंने यह भी कहा कि आज हमारी समस्या अविधान की समस्या होने जा रही है। कने का भाव्य यह था कि वरि अनाज आनवश्यक है अधिक पैदा हुआ भी अनाज के मूल्य कम हो जायेंगे और रखे वने की अर्थ-यत्नस्था वे संकट उत्पन्न हो जायेंगे। पहले की अनेक बार सरकार यह पोषण पर पुनी है कि अनाज के मूल्य एक निश्चित स्तर से कम नहीं होने दिने जायेंगे। सत्य-अन्य पर अनेक राजनीतिज्ञ इतक रख बात का उदाया करते हैं कि अनाज के उत्पादन की प्रेरणा मिले। जनता पहना यह भी है कि सरकार ने

गन्ने के निम्नतम मूल्य निर्धारित करने एक उदाहरण उपस्थित किया है। इस पर अनाज का दूधण कम न निर्धारित था। यस्तु: अनाज या अन्य कृषि प्रदार्थों के मूल्य निर्धारित करने में बड़ी भारी कठि-पना है कि किमान को उ: मूल्य के पर उधरी फल मिलती है। उन छिपे में उले अपने परिहार का फालत-पीण करना पड़ता है। यह वर उ: मूल्य का माल स्वयं अपनी फलत पर डाले तो अनाज इतना महंगा हो जाय कि कई गार्स पर भरवट मजदूर उत्पन्न हो जायें। दूगरी और उसे भी मूल्य मान में वरिषा जा सकता। इसका उपाय केवल एक ही कि विधान में यह वेतन देकर है। जो साथे-गोमों और वरि-पदों के मूल्य में उनी नाम मिला पाहिने। तनी यह अनाज के मूल्य पुष्ट कम रख कर भी अना-बीधन निर्वाह कर लेंगे।—नरेंद्र भारी

सर्वोदय-साहित्य के पाठकों के लिए स्थायी ग्राहक योजना

अखिल भारत सर्वोदय संघ के पास सत्तर सौ से अधिक स्थायी पढ़ी है कि सर्वोदय-साहित्य में दिलचस्पी रखने वाले मित्रों को संघ के नवीन प्रकाशनों की योजना समय-समय पर मिलनी चाहिए। जानकारी के अभाव में अक्सर वे नवीन साहित्य के अल्पमूल्य से परिचित रह जाते हैं। अल्पमूल्य से भीषे मिलने अतएव एक "स्थायी ग्राहक योजना" चलाई गई है।

[१] स्थायी सदस्यता का प्रवेश-द्वारक १ रुप होगा।

[२] स्थायी सदस्यों को 'भूदान-पत्र' हिन्दी, 'भूदान' अंग्रेजी, 'भूदान-सहरीक' उर्दू या 'नई तालीम' (हिन्दी मासिक) में से किसी पत्रिका के प्राहक पत्रने पर एक पत्रिका के चन्दे में १ रुप की छुट्ट प्रदान वर्ष में दी जाएगी।

[३] छात्रों को छात्री पत्र-पत्रिकाओं में से किसी भी एक पत्र के मौजूदा प्राहकों को प्रवेश-द्वारक देने की आवश्यकता नहीं है। छात्री, हिन्दी मासिक-अभ्यन्तर और पेशवाई इकम भेजने पर स्थायी ग्राहक मान लिये जायेंगे।

[४] स्थायी ग्राहकों को वार २० पेशवाई जमा करना होगा। जाल में निर्धारित मूल्य से कम मूल्य की सुलभके जेने पर दिया हुआ कमीशन, या बी० सी० डी० टाइट कर आने। उनके लखें आदि की रकम, इस पत्र में से जमा कर दी जाएगी। किसी प्रकार का कत्याना न होने पर पेशवाई की रकम बदलतया जमागि पर वापस कर दी जाएगी।

[५] हमारी अपेक्षा है कि संघ द्वारा प्राणित हर नवीन विचार स्थायी ग्राहकों के पास पहुंचे। फिर भी ग्राहकों को अपनी इच्छा के अनुसार पत्र करने साल में कम से कम १५ रुप की विचारों सर्वोदय संघ-प्रकाशन, काको से जना आवश्यक होगा।

[६] स्थायी ग्राहकों को नये प्रकाशनों की सूचना समय-समय हर सूचने मिलनी ही जाती रहेगी।

[७] लखें सेवा संघ प्रकाशन काको से मुफ्तके लेते पर स्थायी ग्राहकों की २५ प्रतिशत कमीशन दिया जायेंगा। सुनके भेजने का व्यय, पैकिंग आदि लखें ग्राहकों के जिम्मे होगा।

[८] संघ द्वारा प्रकाशित साहित्य का मूल्य कम होने से कारण प्रदत्त सुलभके संगीने वाली से काफ लखें प्राप्त मूल्य के अनुपात में अधिक पत्राई है, यह स्थान में रहतना चाहिए। जो स्थायी ग्राहक प्रदत्त-काम १५ रुप कम कर देंगे, उन्हें निना बी० सी० या बिना प्रवेश-द्वारके के प्रिन्ट से मेनी वा सकेगी। हममें डाक-व्यय कम हो जायेंगा। बी० सी० या रजिस्ट्री से ही साहित्य भेजनामा हो तो एक रुपय पर अधिक प्राहक होने से और परभाव नमाने से डाक व्यय में कुछ बचत होगी।

अधिक साहित्य मगाना हो तो देव से भी मंगवाया जा सकता है। मार्ग-व्यय की सके अधिक बचत हममें है।

[९] हर माह की २५ तारीख को साहित्य पत्रों के भेजा जायेंगा। प्रवेशकों विचारों का पत्रन करके उठनी चपना हमें १५ तारीख तक भेजने देनी होगी।

[१०] इन नियमों में अनुसरण से वेर-बदल की आवश्यकता महसूस हो तो यह किया जा सकेगा। इसकी सूचना भूदान पत्र-पत्रिकाओं द्वारा दी जाएगी। अतएव ही, पाठक स्वयं ही सूचना का काम उठायेंगे और किसी को भी इससे लिखे प्रेरित करेंगे।

—संचालक

ब० भा० सर्वोदय-संघ-अकाशक

विनोबा पदयात्रा

आचार्य राजा धर्मपिनायी, श्री विठ्ठल-राव, श्री पूर्णचन्द्रजी और श्री कल्याण-मेहता विनोबा से मिलने अग्रसर गये थे। श० १ अगत से ४ अगत तक विनोबा के साथ रहे। एतदुपलक्षे मिलने पूरे सत्र के कामदानी की संतानना है। जना-सिक्काक पूरा आगत महीना पद-यात्रा वायं सलीमपुर मिले में ही पयेगी। श्रीविनोबाजी का स्वास्थ्य अग्रभ है। साथ में श्री म्हादेवी मार्व, नवरेश मार्व, बामराम और गजिनी मरुन है। अग्रम सलीमपुर मेल के कार्यकर्ता आरं-बहन, श्री अमरप्रभा दाव, श्री खोस्वर मूरवीं भी साथ हैं।

इस अंक में

विज्ञान-मूल में अग्रजाल १०
जन्ती नचाव खेचवच की माग है सर्वोदय : विनोबाल का शेष "बाल कान्ता" रह दो
मासतीय बुद्धि-विचारों का उत्तराधिकारी लेती का सही और वैज्ञानिक तरीका विनोबायाग प्रायद्वीपीयों अग्रो किपय पर विचार-संकलन
कनेने चर्चा-उत्तरनों का सनुपुनः ३
देवा कचो दुःख है
कार्यकर्ताओं की ओर से
कल की रीत साधना की योजना-कार-रूपनाएँ

१	राजा धर्मपिनायी
२	विनोबा
३	विनोबा
३	विनोबा
४	उ० न० टेरु
५	गोविंद देवजी
५	जगदत्ताल बप
५	विनोबा
५	नारायण देवराव
६	मोतीलाल केवरीलाल
१०	—
११	दलीप-सहाय्य मासतीय
१२	—

-सिद्धराय

पूना चहर के रचनात्मक संस्थाओं से

मिलने वाली पूना चहर पर अनागत को निर्मित आयी, यह अनागत की चहर से कुछ मील ऊपर वाली चर जॉन स्ट्रूट नामे ॥ चहर में जो बड़ आर्य, उच्च अक्षर कवी-कवीच एक छात्र लोगों पर हुआ। सीमाय से जाने तो कम गयीं, ऐतद पूना चहर के जोगों का और बढी की संस्थाओं का आर्थिक नुकसान बहुत बरदास्त हुआ। पूना में महापुरुष सेवा संघ, साधना संघ, समय सेवा, सुखम सुखमल भक्ति केंद्र सर्वजनिक संस्थाएँ, जो 'सविचार पत्र' में भी, यह विचार गूँठ में आने से उभर गयीं नुकसान हुआ। पूना की इन रचनात्मक संस्थाओं का नुकसान कुछ मिल कर करीब २५ लाख रुपये का हुआ होगा, देखा अनुमान है।

पूना चहर के लोगों की इस विपत्ति में देण भर में बसंतपुरसे भी सविचार सेवा की है और देण भर से ही लोगों ने दित जोर कर अपनी बलिबित सहायता पूना की संस्थाओं की सहायता की है। मरु की प्रकृता का मरु दर्शन और उसकी उपयोगिता देखे जोगों पर श्रमय नबर आयी है। यह सुधी की बात है की पूना की संस्थाओं के नुकसान में दिसा संतानना अना एक विविध कर्तव्य महसूस किया है। अग्री हाल में पूना रोज (विचार) से लखें सेवा संघ की छात्री-मासोयोगी समिति की बैठक हुई थी, यहाँ पर एतद्विषय प्रभाव, राजवधान, शिक्षा, विचार, उन्नत प्रबंध आदि की जयदी-संस्थाओं के कार्यकर्ताओं ने महापुरुष सेवा संघ और पूना की अन्य रचनात्मक संस्थाओं की मदद के लिये बतिये १२ हजार रुपय सहायता के रूप में भेजने का आदि किया है। इसी प्रकार साधना संघ के 'जयदी भवन' में भी महापुरुष सेवा संघ को एक हजार रुपय की रकम भेजी है। रकम के परिषय का उदना मरुच मरी है, विनोबा इस बात का कि रचनात्मक संस्थाओं ने यह महसूस किया कि देण के लिये भी साथ में कोई विचार आ पड़े तो उलमें मदद करना, जाल तीरे से सर्वजनिक संस्थाओं के नुकसान में हाय संतानना, उन्नत कर्तव्य है। इस आशय करे हैं कि सरोक संस्थाओं की तरफ देण को अन्य रचनात्मक संस्थाओं की अरदी मदद महापुरुष सेवा संघ की भेजेगी।

साधना केंद्र, काशी में सर्वसेवा संघ की बैठक

आजकल सर्व-सेवा-संघ के प्रधान केन्द्र, साधना केंद्र में सर्व-सेवा-संघ की विभिन्न उपसमितियों की बैठकें चल रही हैं। अनी तत प्रकाशन-समिति, वाणी विज्ञान-स्थान, साहित्य-सेना मंत्रक देण लखें माग-संस्थायक समिति की ही उपसमितियों की बैठकें हो चुकी हैं। आर्यके हायमें अत पुंखुबने तत प्रबंध समिति की बैठक भी सम्पन्न हो चुकी है। अतएव देण व समितियों एवं मंत्रक समिति के निर्णय देण अरुके अक में है सकेगी। बीप में देण की सुविधें आने के कारण यह अक समय के पूर्व निरायण आ रहा है।—स०

समा-याचना

ता० २८ सुलभके 'भूदान-पत्र' में पृष्ठ ८ पर श्री युद्धलाल सिक्का का लेख प्रकाशित हुआ है। लेख के मायमें श्री युद्धलाल का परिचय "पर निरुल सत्परी अपिचारी" के वीर पर दिया गया है। 'साधना' में श्री युद्धलाल लिख एक उपने सायंजनिक कार्यकर्ता रहे हैं। आचार्य की सहाय के समय वे तत देण की सुलभ सेवा से और कर्ता संघ उदार मरुच विज्ञान सत्रके सहक रहे। काशी-विनोबा संघ के सहायक-कार्य में बर मुझे हैं। इस प्रकार उनका अभिप्राय जीवन सर्वजनिक सेवा और राष्ट्रीय कार्य में ही होगी। सत्परी पर पर तो वे पिछले कुछ वर्षों में भी रहे थे। उनका अग्र परियच दिया गया, उरुके लिख सहायगायीं हैं।

मूल-गुणार

मेरा ही गलती से इली अक में युद्ध-संस्था के ३ वार 'विनोबा पदयात्रा-पत्र' के नारायण 'कुनि' छपरा है। वेमें सविचारक अनी में सुदुरती रो गयी है, फिर भी कुछ संकी में यह गलती रह गयी है। जिनके हाय में देना अक पत्र, वे कृपया मूल सुधार करें।—

विज्ञान-युग में अध्यात्म : २

—वादा धर्माधिकारी

गंगा जल के विषय में एक वैज्ञानिक बहंगा कि यह तो पानी है, दो वायु के संयोजन से यह बन पा है, इसके स्नान करोगे तो स्नान वगैरे। इसे पीयैंगे तो आपकी प्यास साबित होगी; जब कि कवि या इतनी और देखने या भिन्न दृष्टिबिन्दु होता है। इसे हम संस्कार करते हैं, संस्कार क्या करता है? वह सृष्टि को साथ हमारा संबंध स्थापित करता है।

यह कहना सरल है कि पर-पर में ईश्वर न्यात है। परन्तु इसकी प्रतीति कब होती है? जब इस सृष्टि की परतु-भाज जीवन की विमृति बन जाती है, तब ऐसी प्रतीति स्फुट होती है। यह कुछ जड़ पदार्थों की पूजा नहीं है। मनुष्य को भी जब हम परमेधर का समुच्च स्वरूप कहते हैं, तब उसे छोड़े देवता नहीं बनाते। परन्तु समग्र सृष्टि जीवन की विमृति है, यह प्रतीति यदि इस विज्ञान-युग में नहीं हो जाये विज्ञान द्वारा जैसे-जैसे अधिभूमिक शक्ति प्राप्त हो जायेगी, जैसे-जैसे जीवन का हास होना लायका। ध्याकांक्षा बढ़तनी होने के कारण चाहे वह कभी समाप्त न हो, पर मनुष्य की प्रेरणा-शक्ति और विकास की सामर्थ्य शक्ति कम होती जायेगी।

आज इस बात की वृत्त जकड़ते हैं कि मनुष्य परमाणुन के जीवन के विमृति समर्थ है। ऐसा होना तभी मनुष्य के सुद-परिणाम को उत्पन्न करवाने वाले के समान समर्थता और देश भक्ताना वह नहीं करेगा। मायी वृं हो गये के लिए रात्री का छिटा-का प्यारा काम में लाता। गनी का जलयोग करने में भी इतनी कल्पनी। कोरें दूला तो मामूली बचान दे देते कि कर्म दुष्टपथीय मज करी, जिससे कनी का अनुभव नहीं करता पड़े। परंतु इसके पीछे गहन, साहसिक इच्छाशक्ति है कि मनुष्य के सुद-परिणाम में यष्टु का भरमान है और यष्टु के अयमान में मनुष्य की अक्षमता है।

इसलिए बसुनाम जीवन की विमृति है। इसके उपरोक्त का अतिरिक्त उपरोक्त में इतनी समर्थता है। इस प्रकार बसुनाम वह जीवन की विमृति बन जाती है, तब वह केवल मानिक संशोचन नहीं रहती, पर जीवन का सत्योचन बन जाती है। विज्ञान-युग में इस बात की वृत्त बढ़तनी है।

विज्ञान हमें इतना ही समर्थता कि धात्री में कोयल, गैल, वैरील परिवर्तन माना में है और प्राकृतिक संशोचन का अधिवासी जलयोग करने के धात्री का सत्य युक्त जागर। परंतु इतने मात्र से मनुष्य की मानसिक प्रेरणा का निराल नहीं होता। विज्ञान जब हमें ऐसा समर्थता कि जो वायु ऐसे गुण-गुण बेती है, इसमें और हममें सुकृष्णता सामर्थ्य है, तब वह मनुष्य मनुष्य नहीं रह कर जीवन की विमृति बन जायेगी। यह मेरी बुद्धि में विज्ञान-युग का अक्षमता है।

परिष्कृत मान से भ्रालोकिता होना चाहिए

इस एक मनुष्यों का है। पेरियर में क्या है कि मनुष्य की सृष्टि का वह मोर्चा-भंग हम के अन्तर्गत होना चाहिए। केवल परिष्कृत से जान प्राप्त नहीं होता। बुद्धि प्राप्त होना नहीं है, अनुभव निराल है। अनुभव जान नहीं। जिसे मनुष्य होना, उसे जान भी होता है, वह बुद्धि का सम

है। अनुभव, गुणवत्ता वह अलग बसते हैं और वह कर्म से पैदा होती है; जब कि अनुभव कर्मकय नहीं है। तभी पेरियर ने कहा कि मान का भ्रालोकिता यम में माना चाहिए; तब एक मनुष्य का परिष्कृत सुतेर मनुष्य का स्थिति नहीं बनता। मान एक का यम हुकरे के हाथ का साधन बनता है। उसके जोषण ही लगता है। जब यम में मान लिखेना तब उसमें ऐसी शक्ति जायेगी कि वह विषय नहीं होना। यम भी मानयोग जीवन का एक सत्य होना।

वदते हैं कि मनुष्य को प्राणतीत होना चाहिए। यह कायतीकत क्या है? इसे मैं पूरे सत्य नहीं समझता, पर इतना समझता हूँ कि जब तक मैं मनुष्य का जलयोग जीवन के विचार में लिख करता हूँ, तब तक वह मेरे जीवन का उपाग, साधन और उपकरण बन कर रहता है, वह यम में उतना उपरोक्त करता है, तब वह काळ कर्म का जीवन का मनुष्य बनता है।

इसी प्रकार परिष्कृत यदि जान से भ्रालोकिता नहीं हो, तो वह भंग एक की उन्नीतिता का साधन बनता है और दूसरे के उन्नीतिता की विचार बन जाता है। जो परिष्कृत मेरे और अन्य के जीवन का विचार करता है, वह सत्य उपागत है। विष्कृत में मैं ऐसा नहीं बहूना कि परमाणु की मयमान के गति किरी की अपरिचित हो सकती है, दुष्टपथ से छोड़ देते हैं। नाम के साथ नहीं कर्म मनुष्य नहीं। अथ भी जीवन का सत्य मानें, जीवन की विमृति मानें। मम को यदि इस प्रकार विमृति मानें तो आज की एक मनुष्य की समर्थता का निरालक ही लगता है।

धम की मानयोग प्रेरणा

विज्ञान, समाजवाद, साम्बाद सबके सामने आज समर्थता है कि धम की प्रेरणा नहीं के आगेगी। जनसंख्या की समर्थता के अर्थवदन के अन्त में इन विमृति पर पुरे कि अधिभूमिक का पाने के यह प्रेरणा नहीं निक सकती। यम हैं रान का सत्य का नरक का आदित्य लगता है। दुष्टपथ होने का यह नरक

सकती है। परंतु उतने मात्र में मम की मानयोग प्रेरणा नहीं आती। तो यह पक्षों के आगेगी? इस प्रश्न का उत्तर विज्ञान के पास नहीं। इसका उत्तर इस चीज में है कि जिसे परिष्कृत से और जिस विचार से मनुष्य का जीवन साधन बनता है वह साम्बादिक प्रक्रिया है, जीवन की विमृति है। अम पर जीवन की विमृति बन जाता है, तब नाम के लिए किरी का री प्रेरणा की आवश्यकता नहीं। मम मनुष्य का समापन बन जाता है। मम यह है कि किस संस्कार से उस समापन का निराग होता है? अम मनुष्य के जीवन-निरालक के लिए आवश्यक है।

परंतु उतने मात्र में मम की मानयोग प्रेरणा नहीं आती। तो यह पक्षों के आगेगी? इस प्रश्न का उत्तर विज्ञान के पास नहीं। इसका उत्तर इस चीज में है कि जिसे परिष्कृत से और जिस विचार से मनुष्य का जीवन साधन बनता है वह साम्बादिक प्रक्रिया है, जीवन की विमृति है। अम पर जीवन की विमृति बन जाता है, तब नाम के लिए किरी का री प्रेरणा की आवश्यकता नहीं। मम मनुष्य का समापन बन जाता है। मम यह है कि किस संस्कार से उस समापन का निराग होता है? अम मनुष्य के जीवन-निरालक के लिए आवश्यक है।

विज्ञान जीवन

बनकर मैं हमें वदते हैं कि 'वैष्णवता विनया है' दूसरा वह हीरक कि 'वैष्णव वही म राश्य विच रहता है'।

गंधी की अनेक समर्थता का उत्तर अधिक स्वरूप से और जिनो का उत्तर तो पहले से रोचक नहीं है। तो का समर्थता का शिवत मागी-विनोय की अनेक अधिक स्वरूप होना? राक्षसता भी आज दुनिया में विनोय है उतनी पहले कभी नहीं थी। वदते हैं कि अमेरिका में मस्की, अन्तर और चूरे नहीं हैं और स्वरूप का तो साम्बादिक विचार ही नहीं, साहसिक का तो मनुष्य बन है और वैष्णव से तो वैष्णवता कर दिया गया है। इतनी स्वच्छता होने का भी परिष्कृत प्रतीति नहीं। इतने ही अक्षमता है, दुष्टपथ परिसरा अद्विष्ट है, ऐसा कोई नहीं समर्थ। इस को दोनों में अक्षमता है।

विज्ञान ने हमें आधुनिक स्वच्छता मनुष्य कर दी है, दोनों पर अधुन विज्ञान स्व की है और विमृति का मम गुण-सुविधा प्रदान की है। परंतु स्वच्छता से परिष्कृत नहीं मानी, स्वच्छता से स्वच्छता नहीं हुई और गुण-सुविधा से प्रदान नहीं किया। ऐसा क्यों? इसका उत्तर विज्ञान के पास नहीं, इस सत्य में यह जीवन है। इसका उत्तर कि स्वच्छता से विज्ञान है, वदते मानमानों के एक की मरिचि।

जीवन के प्रति आदर

अनेक युग की महान् विमृति अनेक हीरक ने जीवन के प्रति आदर मन्त्र दिया। यह आदर उगत है सृष्टि का आदर है, जिसमें पश्य अ मानव-जीवन के प्रति है। मनुष्य की वन जीवन की प्रशिक्षा से आती है। इने मनुष्य के जीवन का समान नहीं है। व समानता हमने कायम में स्थापित की। मागी-निरालक का मानव-निरालक का मम बनने वाले को भी मरिचि भी क्या भी किरी बसना का मनुष्य करते बलि को भी मरिचि की सजा। प्रलेख मनुष्य को इने एक-एक मज दिया है। इने ही मनुष्यता का ही विचार किया गया है। मनुष्यता का ही विचार का आधार क्या है? मानयोग जीवन की एकता ही मनुष्यता का आधार है।

मैं वदते हैं कि हर से गुणी और इने के गुण हैं। गुणी होता है। इने के हान मेरे जीवन का साधन उपकरण है, जो साथ मेरा जीवन दकन होता है, इने देते एकता की मरिचि होती है। मैं इने की आदता ही नहीं, इने में आदर रखता ही मानने लगता हूँ। वेदादि संस्कार में इने अक्षमता का निरालक करते हैं।

जीवन की ऐसी एकता को मरिचि विज्ञान नहीं कर सकता। विज्ञान से आदर का जीवन परमाणु-परमाणु का ही गुण है का एक एकमात्र तोर बन सकता है। विज्ञान अतिरिक्त में विज्ञान का सकता है; परंतु वह भयानक मनुष्य के परमाणु नहीं कर सकता।

जीवन की एकता की प्रतीति विज्ञान नहीं कर सकता। परंतु मनुष्य के बीच अक्षमता है। किरी अक्षमता का गुण ही का म गुणी होता है, फिर चाहे वह अक्षमता के प्रिय अक्षमता ही। यह एक अनुभव है, विज्ञान नहीं।

मम मरिचि से ही विज्ञान विचार होता है कि एक मनुष्य का दूसरे मनुष्य के जीवन में साधक होना चाहिए। मनुष्य मनुष्य के बीच अक्षमता के जीवन के विचार के लिए मरिचि होना चाहिए। उदाहरिता एक अधिभूमिक और अधिभूमिक विज्ञान का निरालक है, परंतु इने देते मनुष्य के समापन के मनुष्यता मम का अर्थ है।

अनेक का मनुष्य की साधन की विमृति ही मनुष्यता है। मम मनुष्यता विमृति ही मनुष्यता है। मम मनुष्यता विमृति ही मनुष्यता है। मम मनुष्यता विमृति ही मनुष्यता है।

[१०]

भारतीय राष्ट्रीय एकता का विघटन कैसे रुके!

संकट-निवारण के लिए सामाजिक शक्ति प्रकट हो

अश्वमेध वाजपेयी

भारत में राष्ट्रीय एकता का विघटन कहीं ठेकी चे हो रहा है। ऐसा लगता है कि यदि शीघ्र इतका कोई प्रतिकार न हुआ तो प्रायः देश छिन्न-भिन्न, टुकड़े-टुकड़े जोर समाप्त हो जायेगा। इसके लिए हमें सबसे पहले यह जानना चाहिए कि वे विघटनकारी तत्व कौनसे हैं? हमारे देश में राष्ट्रीय और धर्मोत्थी में अमानक कलर है। करोड़ों की संख्या में लोग भूते, नीले और बैकार हैं—इन्हीं की धर्मों के सामने बन्द झुकी सर लोग भाग्य, प्येसारी और विहासिता का जीवन स्पष्ट प्रदर्शनपूर्वक निता रहे हैं। देश में पूँजीवारी अर्थ-रचना का साम्राज्य है, जिसकी वजह से एक-दूसरे के खिलाफ मतान्तरन-आत घोर घोर वल रही है। विदेशों से आया हुया कर्ज का रूपया सरकारी पंचवर्षीय योजनाओं के रूप में फैल कर इस धार्मिक स्पर्धा को और भी अधिक तीव्र बनना रहा है। राष्ट्र की राजनैतिक व्यवस्था की अर्थ-व्यवस्था से कम नहीं, अथिपु इससे कहीं अधिक भयंकर हो गयी है।

राष्ट्र के राजनैतिक और कला के लिए हो—एन सोनो लखों के ईर्या, ड्रेच, कद्दाम, सङ्गाई-संगरे, गीत-गीत और धर-धर सक पहुंचा विवे है। इसके बन्ध तौरका स्वरूप है, देश की इच्छा हुई जनसंख्या। हमारे देश में गरवी हो, बेकारी है, असाह धीर पिपकायन है, धार्मिक है, बहुत से धर्म हैं, उनमें अंत-मोच का भाष है। जनता-व्यौर बनविष्णित भी हमारे देश के विघटन में बहुत मदद कर रही है। पाकिस्तान में हमारा विभाज्य, भारत-चीन सीमा-विवाद तथा अन्य प्रकार के राजनैतिक और दूर-मौलिक विवाह भारत की आंतरिक दृष्ट के कारण हो रहे हैं।

ये नरे शारा राष्ट्रीय संगठन पर प्रिया और प्रतिष्ठा करते हुए देश को मजबूत विघटन की ओर बढ़ाये लिये आ रहे हैं। इनमें राष्ट्र की सैना को उधारी दी, धारी युविया की अनेक शोध इकाये का अर्थ उपाय कर देना, कर्मों कि भाष गीत के एक नर में असा लगी सा शरि गाँव में आगे पहिले का संकट उपलब्ध हो लवका है। जैसे ही इस विधान के युग में सब कि धारी युविय पालो की रायी है, तब एक राष्ट्र में असा लगेगी को धारी युविया में परिवर्तित।

हमारे देश में सांख्यिक उपद्रव, धार्मिक और धनता लगी हो सकती है, अब यहाँ न कोई भूरा हो, न कोई मीठा और न कोई। आस्य विघात के लिए और आस्यवर्क धार्मिक समस्त करवाकों को निना किसी पैरदास में, निना किसी मण्डली पकेकी के, उनी प्रकार सहज रूप से निवृत्त तक लेने स्प्राके को पानो। मानव-विज्ञान से हमारा हातने उठने समय और सहानीमुनी विज्ञान-साधन का, सामाजिक, धार्मिक, मानविक और आध्यात्मिक—ये हैं। अब सत्य की धूनि के लिए ही हमारे सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक और आध्यात्मिक इतमाय में न जाँदिए। विदने ही हम एक स्वरूप के निर्णय हैं, यस्ता ही अधिक मानन-समान उठी, दान्य, धर्म्य और सव्य हो। इनके भिन्न देश का निघटन कर नहीं सकत, समार में वास्तविक प्राप्ति हो नहीं सकती।

इसे फिर बलवत है, अब भी मनुष्य सामाजिक जनसंख्या में आत्मनय परिवर्तन की, मगन प्राप्ति को। यह प्राप्ति, यह परिवर्तन अद्वैतत्व तक ही हो होगा, अर्थात् यह राष्ट्र के लिए ही हो सकत है। इस प्राप्ति का निरादरी समाज का साधन सामाजिक होना और उसका अर्थ होगा स्वायत्त। अर्थशास्त्र में और सामाजिक में निरव

अन्य एकता का स्पष्ट उल्लेख करने से होगा। इसके दर्शन से जन-आगत होगा, मनुष्यें मानव समाज आग्रह होगा। इन्हे समाज शक्ति विभाग होगा, समाज-धार्मिक के निर्माण के रात होगी। अधिका में धार्मिक और धार्मिक असा-असा नहीं है—एकडे के ही पादक है। धार्मिक उद्योग को धार्मिक साध आयेगी।

विनोबा के मेसुव में हम लोग दूर चल के इसी समाज-धार्मिक के कारण के लिए लगे हैं। भूदान के द्वारा हमने सबसे पहले धार्मिक मूल को ठेकर छोडी हुई जन शक्ति को अमाने का प्रयास किया। अमरी में सव्यता भी मिनी-विदुशी हमने धार्मिक दर्शनी, उनसे कुछे अधिक कहलक किया। हमें नर-नरों तक दिवाई थी। यद्यपि हम एक और परिवर्णित का अमान्य करते हुए चर्च का कार्य दिते। अपने में वे सर पूर्ण है। इनके सम्यक् प्रयोग से समाज-मौल दृष्ट सकत है। किन्तु दुर्भाग्य से हमारी कमजोरी कहीं बहल से उनमें हम पूर्ण उपलब्ध से कहीं दूर लगे। अब परिवर्णित के योगे में पर कर देय का निवृत्त अर्थों बलवत रहा है।

राष्ट्र के आत्म के सम्बन्ध में केवल धार्मिक-सैना कार्य ही जन-मानस को जागृत कर सकत है, सामाजिक मार्गीक को जनको बनेने धार्मिक का भाव कर सकत है, उसको सव्य धार्मिक के विषये बाध्य कर सकत है, देश को विघटन से बचा सकत है।

आज देश में विभिन्न प्रकार की चकट के मानव समाज में अर्थात् संघर्ष हो रहा है, वे जनैति विरोध का एक छोटी हैं। असाय में धार्मिक, अमान्य भी तब अन्त हो सकत है, देश तक से संघर्ष और

दुखी तक से बचाकर लड़ी-धार्म और मोली-क्यों बरती है और उन विरोधों को दबा दिया जाता है। योगे समय के लिए यह विरोध दब तो जाते है—भार-का और समरे दब जाते हैं, किन्तु इसके बाद आग फिर भीतर-भीतर उठाने लगती है। यह दृष्टा अती भयानक है, क्योंकि बच्चा तथा देव और अधिक पैदा है।

आजमान में ऐसे विरोध हो रहे हैं, संसार विरोधी की ओर तेजी से बढ़ रहा है। क्या हम इस विरोधी को ठेकर सकते हैं? क्या हम पर्यवशीर लक्षों के बीच पर कर उनका धार्मिक धर्म तोक नवते हैं? क्या धर्म ठेकर कर ऊने हालक वह कर अपने महले पर विचार करने को सबदूर कर सकते हैं? आया हम से ही काम कर लते हैं तो ऊनी हत्यारे हाथ रहेगी। हम धर्मों करने वालों के करे-बेदिए हम लोक उद्योग को हम दुधारी बीच आये, इन्हें रोचेंगे, उन्में अनेकी जीवे न होनी न देंगे। इस प्रयास में यदि हमें मजता भी पत्र को स्नेहपूर्वक, हँवेंगे पुए, सर्वभद्रविराट भी होर देंगे, लेडिन हम अपने प्राणों के रहते किसी को आरण में लवने न देंगे। लेडिन लाई रोचने का हमारा मह-का क्राप्ति यह नहीं कि उस प्राण के हल होने में हम किसी प्रकार सायक हों। हम केवल धार्मिक साधन रलना चाहते हैं, और अपको शास्त्रिक उप मलते हो हल करने में आसयवक साधन वास्तव्य बनाये लो का प्रयास करने चाहते हैं। एखलिए स्वामी पचा जगत् बरत का आस्यव्यवने देड कर मलते को हल करे। इस प्रयास से मलते धान्त वास्तव्य में हल होगा।

महान् कार्यों में छोटे कार्यकर्ताओं का योग

इस मार्गीक के चरम विषय थे। ये कोई लानी पुरष नहीं थे, लेडिन अमान्य के और उनी के दंड पर ईसा मर्षद की वाणी को ठेकर उन्ही काम किया और लो जगत् में उनकी वाणी पहुँचानी। इतिहास बताता है कि समार में निने मजान् कार्ण दूरे थे, वे लते छोटे-छोटे कार्यकर्ताओं के हाथों ही हुए हैं। छोटे-छोटे कार्यकर्ता काम कर रहे हैं। वे जाने भी करे लगे। आजमान में उनही सार उनी हाके अनेकी, फिर भी वे इतिहास पुस्तक करे करे ही लगे। इस काय करने के निने प्रेरण की आवश्यकता है।

[विनोबा परशुराम धारणी में]

—विनोबा

हड़ताल के समय जनता का कर्तव्य :

काशी की हड़ताल : एक प्रकट चिंतन

शंकरराव बेव

कुछ दिन पहले यहाँ में गयी जायको की हड़ताल हुई थी। घुस में ही 'भगी' घट के ताबज्ज में एक बात स्पष्ट कर दूं, ताकि जनता भंगी, भंगी इस मन्द के बारे में कोई गलतफहमी न कर लें। यहाँ 'भगी' घट का प्रयोग मैंने जातिवाक्य के रूप में नहीं किया है। भंगी-नाम यहाँ से ही मेरा मतलब है। कस्बार कुछ रुठ गये अन्तः नहीं लगते हैं। फिर भी समझने और समझाने में तुल्यता हो, इसलिए मतलब उन यहाँ के प्रयोग करना पड़ता है। मेरी दृष्टि से 'भगी' घट भी भारतीय समाज में ऐसा ही घट है।

भंगियों की यह हड़ताल कैसे शुरू हुई, क्यों शुरू हुई और उसकी समाप्ति कैसे हुई आदि कुछ-बोनों की चर्चा करना इस लेख का विषय नहीं है। भंगियों की बात की कि उन्होंने हड़ताल के दिनों में सायना-क्रेज में भी व्यवसायवादी पटवर्षम एक प्रती-मुक्ति-निर्गम किया तब से। यह निर्दिष्ट है २०-२५ मार्च शुरु हो गए। जो व्यापकाहल के लिए यह एक प्रथम विषय है। इसलिए यह सामाजिक या कि उन्होंने इस हड़ताल को न्यायपूर्ण विपदा का प्रथम विषय और सर्व श्रेष्ठ शोषण का। इस तरह ध्यान देने के लिए प्रेरित किया। साथ ही काशी की जनता भी कल्पना करने योग्य विधानों की प्रेरणा थी। फलस्वरूप प्रसन्नता की घण्टी कि काशी के विभिन्न स्तर के नागरिकों ने धार्मिक वास्तु में कल्पने-कारण के रूप में स्वयं तत्कार का फल किया और इस प्रकार शोषण का सर्व श्रेष्ठ प्रतिकार प्रत्यक्ष किया।

गिर भी सामान्यतया नृति जनता में सौहार्द-भंग के विभिन्न अर्थों के विचार का अभाव है, लोक नृति का अभाव है, लोकजिक का अभाव नहीं है और सामाजिक अभाव शुरू नहीं होता है, इसलिए ऐसे हड़ताले के मौजूब का जनता फिर प्रचार लावार हो जाती है और उनके फलस्वरूप उदर भी उदरानी बसा का जाती है, उदरान टुट प्रकट विद्वान इस लेख में करने का प्रयत्न है।

जन काही रमानीय करता-न एरुधायी और उनके कर्मकारियों के बीच, सरकारी (प्रशासन और शैक्षणिक) और उनके कर्मकारियों के बीच, गिरानी-कर्मियों और उनके मजदूरों के बीच शिशु बंधन बनकर रहता है और उनका परिवार मंडी हड़ताल में होता है, उन काय और प्रकृत नए उदरानी दे कि हड़ताल के समय में जनता नहीं है, बल्कि यह तब तक और मजदूर के बीच का संबंध है।

इसलिए सामान्य लोग मजदूर नहीं करते हैं कि बस उन हड़तालों का प्रभाव वृत्तन बन कर अपने कालन न हो तो उनके प्रति उत्साहपूर्वक रह जाते हैं या फिर मुस्कान प्रथ व प्रथम कालन हो लें, प्रमाण, सामान्य और कस्बारी के बंधन बप रहते हैं और काम और प्र सिवामन और प्रिया बनने रहते हैं।

भंगिय का शोषण को 'दस्ता', निरंगन या निर्दोष के रूप में (प्रोडियरी) करते हैं, उनका बंधन होता है। उदरको छोड़ दे। लेकिन कस्बारी सामाजिक या सामाजिक विपदा तुल्यते के लिए वे लोग को हड़ताल करते हैं, वे अपहरण मौजूब को शान्त में प्रकृत करते हैं। उन हड़तालों का स्वरूप अपहरण, धमन-प्रति, भोगल की आकाश, सुदी बुद्धि, धमन के घटे बन करने या काम के शोषण और परिचालित हैं। घुसर करने का होता है। इस मौजूब से कि वृत्त का परिवार अंगुलीगत बनान पर आर्थिक मादर बुद्धि में ही रोना है और वे ही हड़ताल को रोकने का सामान्य उदरान के लिए बाल एक उदरान नहीं ही। यहाँ है कि हड़ताल की शोषण की दृष्टि से जनता पर कर मादर बढ़ेगा। यह को प्राम सिवत का सिवत है, काही

के शोषण की हड़ताल हुके उदरान परिचालित के शंभ व सावधानी प्रमाण-पाठिका के प्रमाण (मिस्टर) का जो कस्बारी प्रमाणित हुआ था, उनके अंत में यही प्रकृत ही यानी थी। अपने कस्बारी में बंधन बने थे 'सावधानी' की आर्थिक विपदा थी वे ही नहीं है और न वाराणसी की जनता की विपदा ही यानी है। उस पर अर्थिक कस्बारी वामु प्र अंशान्तक भी आर्थिक विपदा टिक ही बा लगे, पाकि न्याय-वर्ग-व्यवस्था की नई सुधारण-प्रमाण का का शक है।' ऐसे कस्बारी के धारण भी परिचय अधिवारी लोग हैं, उनका प्रमाण और लोकप्रियता बढ़ती ही है। लेकिन ऐसे परिचय अधिवारियों का यह कर्तव्य है कि ऐसे मौजूब पर जनता को सही परिचयिता या अंत देकर उसे प्रभावित करें।

जिस मामला की हेतुवित सेवक की, पूरा-पूरा और धार्मिक मेहनतगाराने देने की नहीं है, उतका कर्तव्य और धर्म है कि वह सेवक के बहिये काम लेने का मोह छोड़ दे, बल्कि स्वयं काम करना सीख लें और कर लें; क्योंकि यह अशुभ है कि कस्बारी सेवा के सिधे बहू नोकर हो लें, पर उनको काम मेंतन पर या बुरी दशा में रह कर काम करने की प्रवृत्त करे।

कर्मों के शोषण को रोकने है और उनको प्रवृत्ताने ऐसे मोहों पर ही होती है। मजदूरों के उदर कस्बारी का लालच नहीं तो वह नहीं हो सकता है कि कस्बारी-काम के अर्थव्यवस्था को नई सुधारण के अर्थव्यवस्था की आवश्यकता नहीं है। ऐसा बंधन कस्बारी को, मैं समझता हूँ, मजदूरों की उदर ठक ही

मानेंगे। उन कस्बारी का काल अर्थ यह है कि कस्बारी-कर्मकारियों को नई सुधारण देना आवश्यक तो है, पर उनको देने के बजाय पर अधिवार मादर रोग और धारण की वजह यह अर्थ, आम की परिचय में, यह नहीं पर छोड़ी। यानी नई सुधारण प्राप्त करना कस्बारी-कर्मकारियों को हक है और उनमें आवश्यक भी है, जो भी सावधानी की जनता की गतीरी के कारण उन कर्मकारियों को उदर हक और आवश्यकता के पथित वृत्तन प्रकृत है।

अब जन यह है कि आवश्यकता और हक के अन्तर्गत उदरें अधिवार होने की उन कर्मकारियों के अभाव रखना पर पथित रहने की उन्हें अन्तर कालन सदा नहीं वा अभाव है।

आज का लोक-दान बहुत पापलव हो गया है। इसका एक प्रमाण यह है कि जनता प्रमाणित कस्बारी की गतीरी और भी वृत्तन से काम घुस पर कर छोड़ी

यहाँ सेवा प्रयोग को बंधन बन के सेवा को प्रमाणन है। (वे कि कस्बारी को यह हड़ताल सिवत है) के लिए नया देना के लिए देना हो, तुल्यता काय नहीं है।

एक आर्थिक विषय के रूप में, के प्रकृत है। पर यह एक विपदा नहीं है। लोकप्रिय और हड़ताल अधिवार प्रकृत प्रमाणित पर है। यह एक समस्या वा अन्तर्गत परकृत नहीं है। उन और रोगों की प्रति बंधन वृत्त ही है।

आज भी लोकप्रियता में प्रमाणन, सवधान-व्यवस्था और अधिवार आर्थिक संशोधन की को प्रकृत नहीं है। वे तापी अधिवार-उदरान सामाजिकता का रोग प्रकृत है। कस्बारी-व्यवस्था तुल्यता शोषण प्रमाणन प्रकृत हो पाये।

मुस्कान, (हृत्) को शोषण-वादी भी विपदा और हक के लिए ही जनता है। टिकी की है। रोगी धारण को देना है। जो वरत बनने को देना आवश्यक है। आज भी लोकप्रियता की यह भी न और बंधन बंधन बंधन है, उनका वरत कालन यह ही जनता में आने है। जो वाम घुसरी के रूप में ही प्रमाणन प्रमाणित वरत की कस्बारी को देना है। (सिन्धुलोक आर कस्बारी प्रमाणन अधिवार)। लोकप्रिय की प्रमाणन कस्बारी को शोषण है। लोकप्रिय और उदरान के शोषण, नृति धार्मिक और सामाजिक के नृति कस्बारी को शोषण और जनता को नृति अधिवार है। अधिवार प्रमाणन की कस्बारी को शोषण है। लोकप्रिय और उदरान के शोषण, नृति धार्मिक और सामाजिक के नृति कस्बारी को शोषण है। लोकप्रिय और उदरान के शोषण, नृति धार्मिक और सामाजिक के नृति कस्बारी को शोषण है। लोकप्रिय और उदरान के शोषण, नृति धार्मिक और सामाजिक के नृति कस्बारी को शोषण है।

है, और जनता भी शोषण, पर नहीं बनती है, उनको बनने के लिए उनके एक प्रमाणन के साथ कर देना है। उदरान नोकर-व्यवस्था है कि कस्बारी-काम के अर्थव्यवस्था को नई सुधारण के अर्थव्यवस्था की आवश्यकता नहीं है। ऐसा बंधन कस्बारी को, मैं समझता हूँ, मजदूरों की उदर ठक ही है, और जनता भी शोषण, पर नहीं बनती है, उनको बनने के लिए उनके एक प्रमाणन के साथ कर देना है। उदरान नोकर-व्यवस्था है कि कस्बारी-काम के अर्थव्यवस्था को नई सुधारण के अर्थव्यवस्था की आवश्यकता नहीं है। ऐसा बंधन कस्बारी को, मैं समझता हूँ, मजदूरों की उदर ठक ही

गुजरात का सर्वोदय-सम्मेलन और विचार-शिविर

“दादा की अध्यक्षता में गुजरात का सर्वोदय-सम्मेलन हो रहा है, यह सुधी की बात है। दाड़े साल पहले गुजरात की यात्रा में जनता का जो दिव्य-मन्त्र दर्शन मुझे हुआ, उसका विरमरण मुझे बर्षों नहीं हो सकता। गांधीजी ने जो विचार-शीख बोधा है, वह खोबरूप में फिजवा महार भगा है, वह मेने उस समय अपनी आंखों से देख लिया। सर्वोदय सिद्ध होने वाला ही है। हमिमणों के माफिक हमारी मानना होनी चाहिये। “जहाँ असूय फल-पूजान, जत-जसूमभि स्व्यात्”-विज्ञान के जमाने में एक जमान में भी शत-जन्म हो जाते हैं।”

गुजरात सर्वोदय-सम्मेलन के अन्तर्गत्त पर विनोबाजी ने उपयुक्त रूपसे मेह कर गुजरात की जनता के प्रति अपनी श्रद्धा एवं विश्वास प्रकट किया है, साध-साध प्रेम हाथफालों की मानना हो और श्रद्धा को भी समझ लिया है। तथा इस कार्य में लगान लगे हुए कार्यकर्ताओं को विमान की गतिरिपटा का दर्शन कराया है।

१३ अगस्त '६१ का बह दिन का, जब कौडीर में श्री दादा भगवत्पिकारी की अध्यक्षता में गुजरात का दसवाँ सर्वोदय-सम्मेलन संपन्न हो रहा था। प्रवेश के करीब २०० कार्यकर्ता और गृहण के भी करीब १०० प्रतिष्ठित नागरिक दादा की भागी हुनने के लिये एकत्र हुए थे।

दादा ने सतत प्रवचन में हम लोगों की भूमिका और मानना का स्पष्ट दर्शन कराया। इसारी आकाशवाणी, अनेकार्थी और मन्वाचरों के प्रति प्रेम लीना। कार्यकर्ता की उत्पत्तन को स्पष्टाते हुए बड़ा ही हमारी शक्ति शीमिह है, लेकिन जो कुछ शक्ति है, उसको अपने कार्यक्रमों में शामिल करने के ही यह शक्ति बढ़ सकती है। निजोग का प्रयोग लोकपाल को नीय समायुक्त बनाये जाये। शिष्ट मानी की निराल खोन चल्ती थी, देवे ही भाग विचारों की लोक चाल रही है। लोकपाल के निर्माण के लिये योग्य सधन भी लोक कर रहे हैं। हम उनसे ही, गिरने है, उसके होने हैं, झोकें राने हैं, निपटार हो रहे हैं, फिर भी उसी भाव से बलने का हमने प्रयत्न किया है।

हम उत्तर भारत के दूर दूर के प्रेते हुए रिम मन्त्र दर्शनगुल सन्देश और दादा की मन्त्र-छाया में सम्मेलन का अर्थसंयुक्त।

सम्मेलन के आरम्भ में गंगात्री भजन हुआ। भजन के पवित्र वातावरण में श्री गुरु बदन ने पुस्तकीय व्यक्तिगत, गुजरात और गुजरात के सामाजिक व्यक्तियों के संदेश का वाचन किया। संदेश वाचन के बाद गुजरात सर्वोदय मन्त्र के मधुपन को प्रारम्भ करने में सकना सहायत किया। अनेक विचारों के उन्नीय एते ही गुजरात के प्रथम से उन्नीय आगतिक परिवर्तन के शोधन के विना कोई संसा नहीं रहे, हम सत पर आनी श्रद्धा प्रकट हो और गुजरात के कार्य ही शक्तिपि का परंपरन किया।

गुजरात में कुल मिला कर ६५,०७९ एकत्र भूमि प्राप्त हुई है। ४६,०७९ एकत्र भूमि का वितरण हुआ है। १४२ हजारनाम हुए हैं और ५९ लाख-वितरण के सम्बन्ध हुए हैं। १२७ साम्बन्धिक, ७५ शालि-वितरण किये गये हैं। आज गुजरात में कुल ४०० लोकसेवक हैं। ९५ प्राथमिक स्कूल-समय-समय में, सत-प्रकारण से ५४ विचार-सम्मेलन हुए हैं और अब तक १,५०,७७९ स्वयं की साहित्य-विधो हुई है।

हमारा प्रवचन के शत दादा का मंगल प्रवचन हुआ।

आभासी गुजरात की नीसत बच रही है, गुजरात में पञ्चायत रूप का मुक्त हो रहा है। समेतन ऐसी ही विपति में हो रहा था, हमारेपत्त उसके संदर्भ में ही सम्मेलन की तब पर्याप्त करी। गुजरातमार्गों में, बन्वमार्ग बदले में परिवर्तनको ही मान्यतन दिया। श्री हमने बहोता में क्या कि अयोध्या की सीता बहनी चाहिये और गा ही हार्ने फालों की सीतास के काम में लग जाये का अनुभव किया।

रोहटार की पीठ में अलाम में बहन के बाद गुजरात सम्बोधन मंत्र का निर्देशन भी अक्षयभारत ने पदा और उत पर विवेचन भी किया। मारागण्डादे ने उत पर अर्थ प्रकाश डाला। बाद में श्री हर-दिल्लखचन ने अंतर्गत्त की आगतिक परिवर्तन में शक्ति तथा की आवश्यकता और भारत में शांतिना का क्या भाग हुआ है, उतका निक किया। श्री लोकाभासे ने पकाउत राज्य के गरी में अपने विचार प्रेष किये। श्री हरिद्वारभासे ने गुजरात की आचार-मार्गदर्शकों की और उत पर अपने विचार स्पष्ट किये। श्री गुजरात में श्री गुजरात का क्या फलें, जन्व को और आचारों की क्या मर्गदर्शक रालनी चाहिये, उतका अपने सख चाणी में विवेचन किया।

गुजरात के प्रमुख कार्यकर्ता सन्धी समतासद्व, श्रीविद्यार्थी, श्रीतना श्रीका, विल्लुभारमारे आदि सम्मेलन में उपस्थित रहे। चर्चाओं को सन्देश में नीचे दे रहे हैं।

(१) गांधी जी शक्ति की निम्न शिव बरने शारी अत प्रकार की सज्जनताओं के छायेने सम्य अनुभव प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिये।
(२) राष्ट्रीय एकता के लिये आर्थिक समायना आवश्यक है। रतना ही नहीं,

उसके विना पाय नहीं है, ऐसा विचार स्पष्ट हुआ।

(३) आर्थिक समायन की दृष्टि से स्वाभाविक वितरन के साथ साथ साधन नागरिक के लिये भी उपेक्षणी, आर्थिक-साधन और जायति दे देते उद्योग, लादी-मायोयोग भी दिया में प्रारम्भ-समय का क्या भोग, और उद्योग-विकास के रूप में सम्मिलित निश्चितन के विचारों के प्रति जगो बहने की चलता है। इस विचार के प्रति अन्तः प्रथम उत्पन्न गया।

(४) पञ्चायत राज्य का स्थापन हुआ। लेकिन राष्ट्रीय एकता को धोखे से, इन दृष्टि से यह बन्द नडाना साथ देना प्रयत्नन किया गया।

(५) आगाही भजन गुजरात में हमारी सत्पति, बरपणा, धारो और प्रेम प्रकट हो, देश का प्रयत्न बनाने में तब प्रयत्न करें। लोकश्रद्धा के हत अन्तर्गत्त को साथ के बाने नहीं देने का अनुभव किया गया।

(६) गुजरात के उत्पत्तन में उन्मी-द्वारा, पञ्च जनता और अलखारों को क्या करना चाहिये, इनकी सवनीस में “आचार-मार्गदा” शोधित की गयी।

अहमदाबाद और रावीर की अन्तर्गत अन्वराचन मगर में श्री दादा भगवत्पिकारी ने अपने विचारों को “अभि-नीति से बहने भी ही कि मेरे बाल कुछ करने का नहीं है, खालस देविक बने लेखने रहे और मैं वह लेख देकर का आनन्द बाई। फिर भी गुजरात के कार्यकर्ताओं ने उनको उन्मी-सम्बन्ध में ही गुजरात में अधिक के लिये माध्यमा दिया, और दादा ने स्वैच्छक उत्पत्ता सहीकर किया।

सन् १९६१ के २२ अगस्त तक विचार का आयोजन करभने में हुआ। प्रारंभिन ही अक्षयचन हुए। विचारविधियों के अन्तर्गत बाद के करीब १०००० नागरिक भी उपस्थित रहे।

निम्नलिखित विषयों पर भी दादा ने अपनी निश्चित शैली में प्रवचन किये। (१) सर्वोदय के अर्थ में नागरिक परिचित, (२) लोकशाही और उन्मान, (३) मावरीय दृष्टि के अर्थ तथोचन, (४) सामलसम्य और विधा-माफिक, (५) निमान-सुय में अन्वयन, (६) समाज परिवर्तन और अहिंसक संघर्षन, (७) राष्ट्रीय एकता।

अन्वयन-माग्य के अन्तर्गत प्रतिष्ठित सुदाह १०-१५ से लेकर ११-४५ बने तक और दोषहर की ३ से ५ बने तक कार्य-कर्ताओं का मित्र रात, विनमी “मि और आदोलन” “महातम” और “मावी अन्व-यन”, इन विषयों पर गहरी चर्चाई हुई। कार्यकर्ताओं ने “मि और आदोलन” पर बनेली बक अपनी अद्भुत अन्दा प्रकट की। “शिर भी हम लोग गुजरात नदी नहीं कर पा रहे हैं, जो कुछ करते हैं, इनसे उत्साह बरतना नहीं है, जो भी हिंस और विचार के उतक पर अपने पालना चाहिये”, इस बात पर सभ बत्ताभी ने जोर दिया।

संगठन की चर्चा गुजरात की परि-स्थितियों को ध्यान में रत कर गयी। गुजरात का प्रदेशीय संगठन होने की शरथ के साथ साथ नेत्रीकरण की विधा में चर्चा आयेगा, ऐसी बेसावनी के कर भी निश्चि और निश्चि ने हयगत हो निश्चित करने का भी मत स्पष्ट किया। प्रदेशीय संगठन को निश्चित गिने निना विशा संगठन नेतव-गुक्त बने और आर्थिक कार्यक्रम विपक्ष विमोघारी सहाके, ऐसा सोचा गया। छोटे-छोटे सभ कार्यकर्ता अर्थिक निम्नोदारी में सहभाग्य होने और सन्धन स्वाभिवि-कता से कार्य-संभोग का सुनिश्च है, इस दृष्टि से आयोजन करने का जोषा गया।

भावी कार्यक्रम के बारे में कानि चर्चाई हुई। अनेक विचार सामने आये। रिश्त-धारी, अन्वराचरोंकी से हेरक भागी-सीता, सर्वोदय-यात्रा, पद-साथ, भूमि-वितरण आदि रूप षण्ट पर विचार हुआ।

कार्यक्रम के बारे में निम्न बातें लोकी गयीं।

(१) कौडीर नागर-कार्य सामूहिक शक्ति से चलना।

(२) गुजरात सर्वोदय-सम्मेलन, जो डेढ़ साल से सतत चल रही है, उसकी पूर्ण सफलता हेतु।

(३) विचार के लिये एक और बाबा ११ मिलन से शुरू करना और आगाही सम्मेलन तक भूमि-वितरण का काम पूर्ण करना।

(४) सर्वोदय-मन्त्र, सपनि-दान, स्वभाविक, सुपान और मित्र सहायक के अन्तर्गत अर्थ-संभियन का कार्यक्रम ही अग्रतल तक चलना।

(५) “सुपान” पर के साहस बनाने और साहित्य निश्चि के लिये विदेशी सहायक करना।

अब मैं भी गुजरातमार्गों और भी दादा के प्रवचन के बाद कार्यकर्ताओं का मिलन समेत हुआ। एक मिलन में अन्दा का सत मिलन, विचारों को बढ़ाए हुए हैं। हम सत विचार, समेतन विचार-विशय का सत करने में उत्सुक रहे।
—अन्वली मोरी, का. ५
गुजरात सर्वोदय-सम्मेलन, १३ अग

विहार की चिट्ठी

श्री जयप्रकाश नारायण के मार्ग-दर्शन में विहार सर्वोदय-मंडल के जिला-अध्यक्ष, मधौ एवं संयोजक तथा जिला-भू-साहित्य समिति के संयोजक और विशेष आमंत्रितों की २० जून की बैठक के निर्णयानुसार 'बीघा में कट्टा' जमाना समन रूप से विहार राज्य के मुजफ्फरपुर, दरभंगा, सहरसा, पूर्णिया, मुंगेर, संचाल परगना एवं गया जिले में मूट किया गया।

संयमन तो कार्यकर्ताओं ने अभियान को सफल बनाने के लिए बड़ी मुस्तैदी से काम शुरू किया और मुजफ्फरपुर जिले के दुमरा, बगवाहा एवं रीवा, तीन प्रखंडों में तीन; दरभंगा जिले के महाशुद्धि स्वदेशियन के समर्थकपुर, उजियारपुर, किरानपुर, एवं बरवाणपुर, चार प्रखंडों में चार; सहरसा जिले के आलमनगर, मुस्तैयंग, किरान-गंज और बीना, चार प्रखंडों में चार; पूर्णिया जिले के बरदार, बनमानी, रूपौर, मनारपुर, धमदाहा, पाँच प्रखंडों में पाँच; संचाल परगना के जमानापुर, तातवाँ, परगना, रागहल एतदोत्तर प्रखंडों में पाँच; मुंगेर जिले के परगना, रूंगवाहा, रणवली-सुरप एवं झरौल, चार प्रखंडों में चार एवं गया जिले के पौरा, पकौलीपुराँ जाला में दो; इस तरह कुल २० जिलेयों वंचे में कट्टा जमीन की मीमां कते निहाल पड़ी।

प्रथम स्तर के नेताओं में भी अल्पाधिकार-ने अधिकार के समुह अन्वेषण को सफल बनाने में दिया। परगना जिले के तोरह कार्यकर्ता मंगल परगना में, चारण जिले के तीन एक सारा जिले के चार कार्यकर्ता मुजफ्फरपुर में, दरभंगा के पाँच कार्यकर्ता सहरसा में, मागसुर के कार्यकर्ता पूर्णिया में, झाझाहा के दो कार्यकर्ता मुंगेर में एवं धमदाहा के पाँच कार्यकर्ता गया जिले में देवु महीने के लिए बीघा-कट्टा अभियान को सफल बनाने में सुरुत थे।

दाम-व्यवहार के द्विविधा, सफल एवं अन्य पराधिकारियों ने अभियान को सफल बनाने में काफी सहायता दिया।

राजनीतिक स्तर के नेताओं ने जो निम्नानुकी को असम जाते समय विहार की यात्रा पर प्रयत्न सफल के नये संस्कार 'बीघे में कट्टा' द्वारा ११ लाख एकड़ जमीन एकट्टा करने में स्रिय सहयोग देने का आश्वासन दिया था; लेकिन असम चुनाव के नजदीक होने एवं अन्य कारणों से आश्वासन पूरा करने में असमर्थ रहे।

कहीं-कहीं कुछ राजनीतिक कार्यकर्ताओं एवं अन्य समाज सेवकों ने आदि के समय देकर बीघे-कट्टा की मीमां भूमिदाताओं के जलमें सहायता दी है।

पूर्वजों जिले की समाज समी दसनात्मक संस्थाओं ने अपने कार्यकर्ताओं में वे बीघे-कट्टा का जे लोभ में एक कार्यकर्ता गुरु असम देकर भूदान मीमां के लिए दे दिया। सादी-आमोयों संघ, हिरा ने भी साप्ताहिक सुश्री विचार के अर्थिक सहाय देकर दिन और अपना कारोगर बंद कर 'बीघे में कट्टा' अभियान में मेजने का निरंतर किया। १२ प्रकार अभियान की सहा ही उत्साह एत स-न से शुरू हुआ। लेकिन जलमें के मीमां, देवा आदि महा-मारी एवं कार्यकर्ताओं की पराश्रय की कमी तथा कार्यकर्ताओं के बीमार पड़ जाने के कारण २० जिलेयों की जगह केवल २१ जे जिलेयों काम पर रही है। अंचल जिलेयों

ही गौनों में सफल काम कर लगी। इन जिलेयों में लगभग २०० कार्यकर्ता प्रचार ही रहे।

अभियान की सफलता के लिए पंचा-शत १, महाशुद्धि से २, गुजरात से २, रा-स्थान से २ एवं उज्जैन से १ कार्यकर्ता विहार में आने एवं मित्र-मित्र जिलेयों में शामिल हो गये। सारण जिले के तामपुर एवं मागसुर जिले के जे-जी भी स्वामीय कार्यकर्ताओं में भूदान-नार्यं शुरू किया है। एक तरह तो देहा वैसी महाशुद्धि योग-गोम में अपना अट्टा जमावे पैठी गयी, सुश्री तक अभियान में जो कार्यकर्ता बाबा की दिने आश्वासन को पूरा करने में किना नाम की पराज करे बीघे-कट्टा की मीमां में लगे थे। कई कार्यकर्ताओं की देहा के प्रकृत हो गये, लेकिन भागवान की इच्छा से उपचार के बाद बच गये।

श्री जयप्रकाश नारायण ने भी ११ और १२ जुलाई की दरभंगा जिले के दूध रोड एवं ४ अनाउ से ६ अमल तक मुंगेर जिले के परगना, रूंगवाहा एवं कट्टा यात्रा का दौरा किया। उपरोक्त अवसर पर दूध रोड की जनता ने ४१-०१ रुपये की मैली एवं ६८४ दानपत्र द्वारा ३९२२ कट्टा जमीन तथा आभापुर क्षेत्र की जनता ने १००१ रुपये की मैली एवं १०१६ कट्टा ६ धूर जमीन और सर्वोदय मुजफ्फरपुर, आभापुर की ओर से ११ रुपये की मैली दी। इस प्रकार दूध क्षेत्र के ४२२८ कट्टा जमीन एवं ५११२ रुपये की मैली सर्वोदय-नार्यं के लिए ली गयी।

मुंगेर जिले के परगना जलल के १४ बाँतों से ५६ दानपत्र द्वारा १००३ कट्टा १५ धूर एवं चण्डा यात्रा से ३० दानपत्र द्वारा १२०६ कट्टा जमीन वर्ष-प्रकाशी की गयी।

४ अगस्त को परगना जाने सफल सादरपुर बमाल जेने स्टेशन पर स्थानीय एक विचारक के धर्मों में सर्वोदय कार्य के लिए प्रतीति रुपये पैठोम नरे पैठो की स्थानीय जयप्रकाश नारायण को दी चयन स्टेशन

पर ही इमारतों की सफाई में उपस्थित होकर "जयप्रकाश का जीवन-दान, सफल करणा जयप्रकाश", "बीघे में कट्टा, दान दो इकट्टा" आदि नार्यं से स्थापन किया।

निर्मित पत्रित के अनुसार कार्यकर्ताओं की पूर्व-चरती डोली भूमिदाताओं से मिल कर 'बीघे में कट्टा' अभियान के उद्देश्य एवं कार्ययन स्थानों का काम करवा दे तथा मुजफ्फर डोली के आने की सुचना देती है। मुंगेर डोली दानपत्र भरणे के कार्य के साथ-साथ आम सभा एवं 'पंचकल सार-बंध' द्वारा सर्वोदय विचार पर प्रकाश सारने का प्रयास करती है। आसपास रहे कार्यकर्ता एवं मुजफ्फर डोली के किरी का-रवण नर्यं मित्रने वाले भूमिदाताओं से मिलने का प्रयास अन्वेषण डोली करती है। इन प्रकार कार्य-बंध शक स्थलों में भूदान एवं बीघे में कट्टा का नारा तथा विचार पर-पर गूदने लगा।

अभियान शुरू होने के पहले हम लोगों ने विदित कीजनी मिलने की आशा की थी, उतनी जमीन तो प्राप्त नहीं हो सकी; लेकिन प्राप्त करलिन में ऐसा स्थला है कि भूदान का अंतर लिए वे जमाने पर जमीन मिल सकती है। भूदान-आन्दोलन के प्रारंभ में जो साहायक था, जैसा साहायक तो रिहाजु की नहीं है, लेकिन यदि प्रयास किया जाय तो १२ लाख के रूपकर दे निकट आ सकते है। १५ जून को मुजफ्फरपुर की आम सभा के बाद १९ जून के १० जुलाई तक अपने दैरे का कार्ययन भी जयप्रकाश नारायण ने स्थापित किया तो कुछ कार्यकर्ताओं ने दे रहे पत्रक नहीं किया; क्योंकि बहुत स्थलों में जनवी तथा का प्रचार कर दिया गया था। लेकिन कुछ दिनों के काम के अनुसार के बाद अर वे

गौतम धाम में सर्वोदय-विचार केंद्र

नागौर जिले के गौतम में सर्वोदय-विचार केंद्र की स्थापना की गयी। १०-११ जुलाई को श्री ज्योतिषर स्थानी में किशन मजूर-सम्मेलन सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में विचार मीमां एकमत से रही गयी।

(१) पहले की विचारक जलनील की जमाने और इन तरहील (मेडवा) की जमाने समान होते हुए भी सारस कर में बना अंतर है, जेने दान समाल किया जाय।

(२) स्थानीय पंचायत द्वारा जलनील या धामोयों सहायों पर जो कर लगाया जा रहा है वा सहायता नया है, जेने बीघा सहायता जाय।

नी ऐसा अनुभव करते हैं कि यदि भी जय-प्रकाश नारायण की अपने दौर के नती स्थापित करने और बीघे-कट्टे अन्वेषण को सफल रूप से चलायें का निर्णय नहीं होता तो जो बीघे-कट्टे सफलता इन अंर मिली है, वह भी नहीं मिली। अन्वेषण की सफलता एवं अन्य स्थानों के आशावादीयों पटना में प्रचारित कर १२ पटना के दैनिक और साप्ताहिक समाचारों में प्रकाशित कर बना रही हवने; प्रदान किया है।

नरानन्दो-कांडोलन

विहार सर्वोदय मंडल की महाशुद्धि जमाने में विहार में भूदान की के विचार के प्रचार एवं सारण की दृष्टान उतने का आशुगोचर मुजफ्फरपुर है और सर्वोदय मुंगेर जिले के जगदीयाने के सादरपुर मा-की कलाती को हवने का आशुगोचर सारण, उज्जैन एवं विदिशा द्वारा एक कर दिया है। ६ अगस्त को श्री जयप्रकाश नारायण ने महाशुद्धि की कलाती पर विदिशा जिले और नरानन्दो के महाशुद्धि एवं जल में हीने वाली दानि पर प्रकाश आला।

श्री विदोयारों एवं श्री जयप्रकाश नारायण के निर्देशानुसार 'बीघे में कट्टा' अभियान की सफल बनाने के लिए अन्वेषण पीरार-विदेयी कार्ययन एवं दानि वेदा विचारित कार्ययन स्थापित कर दिया गया था। अन्वेषण और विशेष प्रार्थना नहीं हुई।

सर्वोदय-नाम

पटना नगर-विभाग के जेवों में लगभग १०० धानियाय रहे गये है, जिनमें से लगभग १०० धान चारु है। इन धान के निचले महीने में ३ जन १० लाख चावल, ८ टेर आटा, १३ मने पैठे एवं ३ टेर अन्य अनाज मिश्र है।

भूमि-तरण कार्य

'बीघे में कट्टा' अभियान में जो जमीन मिली है, उसे बाहर ही आनी उन्पर मुजफ्फर सारण लेती करने वाले भूमिदाताओं से दे रहे हैं। पहले से निर्मित जमीन का सं-कार करने के लिए मुंगेर जिले में ११ कार्यकर्ता के ज-भू-वितरण कार्य में लगे हैं।

—राजमवल मिंट

- (३) भूमि की कुल सफाया और उतने अन्वेषण धाम पंचायत पर कामाओं को गौर दिखे जयों।
- (४) जमाने गौतम की जमाने तथा विचार को और देवु ही सफे नरे लेवने हुए वहाँ की मायात्मक धारण को सारण दे करनी में परिवर्तित किया जाय।

गद्वाल सर्वोदय-मण्डल की बैठक

१६ जुलाई '६१ को स्थान चम्बोली में गद्वाल सर्वोदय मण्डल की बैठक उत्तरांचल प्रांत सेवा में पठारती सुन्दरप्रिय बटुणा की अध्यक्षता में हुई। बैठक में संलग्न सम्पत्ति कई विषय हुए।

(१) गद्वाल सर्वोदय-मण्डल के अध्यक्ष भीमगुप्त व मंत्री चण्डीप्रसाद भट्ट जुते थे।
 (२) अखिल भारत सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष सुभाष "सर्वोदय अभियान" ट्रेड मालि से शाब्दिक रूप में चलने को निश्चय किया गया।
 (३) भूमिपुत्री द्वारा नलये गये शासकीय आन्दोलन को विरोधकी है उदर आने तक सर्वोदय के अन्य प्रमुख कार्यकों की भीति शासकीय के पक्ष में लेखन करना करने वा प्रवक्त करने वा निश्चय हुआ।
 (४) चम्बोली गद्वाल में प्राय-दूरदर्शी में सतत कार्य की विभेदारी भी आत्म-विश्व टिठ को ही गयो।
 (५) चम्बोली में 'रील नियंत्रित' का काम प्राथमिक रूप से जोरामन्द, कर्तरी नागपुर व इच्छालता कोटहार में समाये जाये।
 (६) शोधमठ में कार्य कर रही अमित मन्वकी सचिव की सामग्रीहवी के सर्वोदय में कार्य करते हुए सचिवि के लिए चम्बोली-गोपबन्ध मोटर मार्ग पर कार्य लेने के लिए सामंजसिक निर्माण विभाग से अनु रोह किया जाय।
 (७) पीठी गद्वाल में भी मानविह दायकी और चम्बोली गद्वाल में भी आत्मविश्व टिठ गद्वाल मन्वक निवृत्त है। गद्वाल में कार्य सुभाष वन के बन्दने के लिए प्रदोशीय भूदान वन सचिवि से एक कार्यता को निवृत्त करने की प्रार्थना की गयी।
 -चण्डीप्रसाद भट्ट, मंत्री
 सुन्दर-प्रसाद, चम्बोली, गद्वाल

बनोसद चण्डे ५, निर्भूम चण्डा १, पोखरा वर १९, शिव शीष वर ६, 'गोपुरी' शीष वर २, नाथियाँ १२। व्यवसा १०५ रुपये का सीमेड तथा २५ रुपये का वाऊ का भार की गयी ईमारत-निधि में उठाय। शेर 'ईड' आदि गोंडसतों ने दी। अथा अर्थ विधिपरिधि का दण काय भय गोंडसतों का मा।

सयुक्त जिले में सर्वोदय-आंदोलन

सर्वोदय आश्रम, सादाबाद (वि-अरुड) के सेवक सादाबाद, अरुण, सरोत, अरुण आदि ग्रामों में सर्वोदय-मार्ग योजना चले रही है तथा अरुण के कार्यकर्ता अग्रगण्यन रहे हैं। म्याज जनवरी '६१ के मस '६१ तक वा मासिक विवरण निम्न प्रकार है।

मास	सर्वोदय-मार्ग	सचिवगण के
१९६१	के सहाय	मास रुपये
	क. न.दे.	
जनवरी	२०-११	५८
फरवरी	११-२२	५६
मार्च	२२-१५	५२
अप्रैल	१६-०२	५८
मई	२३-०६	५८
जून	१६-१५	५६
	कुल ६५५ ११	४०८

उपरोक्त सहायता फण्डों में उठाना मात्र, ७५२ व ५७ न. वे. सर्व सेवा सघ को भेजा जा चुका है, और शेष अपने जिले के सर्वोदय-कार्य एवं कार्यकर्ता निर्वाह में खर्च होता है।

मास ग्ज-जुलाई में 'भूदान-वक्त' के २० वार्षिक शाक ले रहे। 'भूदान-वक्त' के ६० अरु कुट्टर क्षेत्र खो रहे।
 ग्ज-जुलाई में ३ वारिषों में ५-१७ शीष मूमि विविध वी गी है। अर्ध-संवह वा कार्य जिले भर में चल रहा है।

संयाल परम्पना में भूदान-प्राप्तदानी की स्थिति

संयाल परम्पना जिले में २, ०१२ ग्रामों में १८,२२२ दानवनों में जग १,९५२,२३२ एकड़ भूमि वन में मिली है। उनमें से ८७९ ग्रामों में ५,८२६ किसानों के वीर १,९६२ एकड़ भूमि विवरण की गयी है। इस जिले में ७८ प्रामदान मिले हैं, उनमें से ११ ग्रामों में भूमि का विवरण किया गया है। सब ग्रामों में निर्माण-कार्य चल रहा है।
 ४८१२ भूदान किसानों में से, १०५३ भूदान किसानों को ३,५२,००० तथा पुनर्वसु सक्षिप्त के दिया गया।

भूदान-आन्दोलन-सम्बन्धी पत्र-पत्रिकाएँ

'११ सितम्बर से २ नवम्बर तक पत्र पत्रिकाओं के शाहक बनाने सर्वोदय साहित्य प्रचार वगैरे विषयों का क्रम चलने वाला है। उस संदर्भ में हम देश भर में भूदान से संबंधित पत्र पत्रिकाओं की जानकारी यहाँ दे रहे हैं।

नम	नाम	नाम तथा पता	मुद्रक
१-	हिंदी	भूदान-वक्त (साप्ताहिक) रायबाद, पारानगी	६)
२-	०	आत्मपत्र (साप्ताहिक) फिरोज निवास, सखपुर	५)
३	०	नयी तालीम (मासिक) सर्व-सेवा-सद, ठेकाग्राम	५)
४	०	भूमिपति (साप्ताहिक) ११२ लोकप्रियता, इन्दौर	८)
५	०	भूदान-सद्वर्तीक (पत्रिका) राजबाद, पारानगी	३)
६	०	सर्वोदय विचार-पत्रिका (पत्रिका) फाल्गुन (पूर्व संकाय)	१)
७	अंग्रेजी	भूदान (साप्ताहिक) रायबाद, पारानगी	६)
८-	०	धर्मोदर (मासिक) अति रायपुर, सखौर (प्रसार)	५॥)
९	गुजराती	भूमिपत्र (द्वयसाहिक) सखपुर, बनौर	१)
१०-	सराठी	शासकीय (साप्ताहिक) गोपुरी, बन्ना	५)
११	सिंधी	पट्टी माल (पत्रिका) शेरा १३, बरौरी (कच्छ)	१)
१२	पंजाबी	भूदान (पत्रिका) कालार (पूर्व संकाय)	१॥)
१३	बंगाल	भूदान-वक्त (साप्ताहिक) पी-२२, कौनय स्ट्रीट मॉकट, कलकत्ता-१२	६)
१४-	बेनुगु	साम्बन्धेगु (साप्ताहिक) अमित अरुणदा, सेनापी वि-१ गुंडुर	६)
१५-	तमिल	सर्वोदय (पत्रिका) २२, श्रीनिवासपुर, इन्दौर	६)
१६	०	सर्वोदय (साप्ताहिक) शादी बजार, रतन बाबा, प्रसार ३	६)
१७-	समवायिक	भूदान सहाय (साप्ताहिक) कौली गीर	५॥)
१८-	कन्नड़	भूदान (पत्रिका) वासनाय पेठ, बैंगलूर	५)
१९-	उड़िया	सामवेक (द्वयसाहित्य) बालपुरा, कटक	५)
२०-	असमी	भूदान-वक्त (पत्रिका) पान बाबा, गुवाहाटी	३)

विज्ञान-मार्ग में अध्ययन

ईश्वर पर शक्ति। को कुछ कला-कला है, वह ईश्वर कला-कला है। इसलिए देहे हल की कोरें तथा वे ही वह ईश्वर को होनी चाहिए। दुर्घटना में कहा कि बंधा प्रकृतिकर्म तथा परेसि-मीतर वैद-वैद यह वैश्व बनता है वेद बनता है, जो फिर तथा सुते छिड़िए।

वैज्ञानिक समाजवादी ने कहा कि वैज्ञानिक नियम पर शक्ति-कलाही है। इतना ही जगत् एतितान अरु बंध और में इतिमान (आधेय) का विवर हो गया। तो फिर क्या होने भी हो तो एतितान को ही, सुते किताबिए।

सौम्य मत ऐसा है कि मान्य यदि हृदयवर्धित हो तो कोरें सुदरें नही तो बकरी। अथर्ववेद-उद्योग विवेक-मार्ग काय पर शक्ति गयी। इस प्रकार में यदि भगवान, नियति का चयन के अर्थमें रतुं तो कभी पा-सुख्य उनके होते। उनमें हुए आशय ने कहा कि मेरे कथन पर मान्य को उलट दिए दे गय, व आशयों है।

यह मनुष्य की वैज्ञानिकता है, ऐसा ईश्वरयोग-मनुष्य स्वयं अपने योग्य नहीं। मनुष्य को अपने कर्मों की विभेदारी स्वयं देखकर देना चाहिए। यह मनुष्य का विज्ञान बुरे पर नहीं जान सकते। यह विभेदारी किंकर्षण। अध्यात्म उदर देना कि प्रथम अपने अन्ते-अन्ते कर्मों से नियंत्रित के साथ बहने जो उनके विभेदारी

हो। जिन व्यक्तिओं के साथ, विश्व समाज के साथ हृदय बंधे हो, उनके प्रति छायापरी विभेदारी है। यह विभेदारी हृदयी नहीं की सकती।

मनुष्य की यह मूलभूत स्वतन्त्रता है। वल मूलभूत स्वतन्त्रता का बांधार मनुष्य की एकता और वलके मनुष्य के विचार इनका कुछ नहीं हो सकता। यह मनुष्य की एकता का विचार है। यही अध्यात्म कह-लता है। इसका अध्यात्म रतु स्वतन्त्र समने है। सम-ने-कन इत्यादि हृदय काय वा है। सम-ने-कन उदर का है, इतने परे है। कदाचित् उनके उदर हृदयी धारता प्रकृत गतौ। (अर्थ-शक्ति, हल १-१-५-६१ का भाग, वलक ॥ अथर्व। गुणवती के अनुवादक ॥ ५० अर्थ-हृदय काय)

इन्दौर में वाइ-भौतिकी के सहयोगात्मक

देश में सफल अर्थी प्रगति-परी बार्दी ॥ विज्ञान की सहायता में माद जुलाई '६१ में इन्दौर में स्थानीय सर्वोदय-वर्ग के एतितान प्रचारक वा उद्यम आन 'अथर्व मयी सहायता-योग' में ११६ सभा ६ नये क्षेत्र में गये।
 सर्वोदय-वर्गों की सहायता सर्वोद-आन्दोलन के लिए सर्वोदय-वर्ग के रूप में की गयी है।

संगी-सुक्ति शिविर के सुपरिणाम

पूर्वनिश्चय के अनुसार ११ जून '६१ से १० जून '६१ तक उत्तर प्रदेश माधी शाकक विधि के अन्तर्गत वन में से वाउरी प्रो-६ में अध्यात्म के शास्त्र शास्त्रों में ५ प्रो-६ के मान्य कर भी सुभाषण काय ने प्रदेश में अनेक हृदय की सहायता-वर्ग, उदर प्रदेश-परी शास्त्र-विचारण के बीच सहायता, एक निवृत्त तथा वादी अरु अ-प्रधान ॥ दो कार्यकर्ताओं के अन्तर्गत स्वतन्त्र के मन्व-व स्वतन्त्र विचारण के सुपरिणामी को उदर अरु अ-भौ-शुक्ति कार्य-विधि का आन्वेषण किया गया।
 शिविर के दौरान में निम्न निष्कर्ष कार्य हुए। शीष-गोपबन्ध ८, पीर गोट्ट १३, स्वान-वर १५, शोध-वर्ग स्वान वर ५, सर्वन मास्की के स्थान १५,

तमिलनाडु में वेदखली के खिलाफ सत्याग्रह प्रारम्भ

देवनागरी देश की सामान्य लिपि हो

११० कार्यकर्ता गिरफ्तार : सत्याग्रह जारी

वेदखली के विरोध में १६ अगस्त को प्रातः मडुराई से २५ मील दूर, मेन्वर तालुका के मुचीरलदीपट्टी गाँव में भूदान-कार्यकर्ताओं द्वारा एक किसान को वेदखली के विरोध में सत्याग्रह किया गया। तबसे मिलती है कि ५५-५५ कार्यकर्ताओं को दो दोतियों को गिरफ्तार भी कर लिया गया है।

२० जगत् को 'ग्रेस ट्रस्ट' को जो समारोह दिया, वह हम दैनिक 'आज' से यहाँ दे रहे हैं :—

"मदुराई, २० अगस्त : कम यहाँ से प्रायः २५ मील दूर जिले के मेन्वर तालुका स्थित मुचीरलदीपट्टी गाँव में एक अल्पक भूदानों के लेखों में 'भूदान-कार्यकर्ता' हुए हैं और उन्होंने लेखों में साह, पानी कालन एवं बोको कालन की कठनीय सहायता कर दी। अल्पक भूदानों में कार्यान्वयन को लेखों में वेदखल कर दिया था, जिसके विरोध में १५५ कार्य 'सत्याग्रह' के रूप में किया था।

भूदान-कार्यकर्ता आगतक के ७ गैरों के आये थे। पुलिस ने इन सबको गिरफ्तार कर लिया। कार्यकर्ताओं द्वारा लगा रहे थे—'सत्य सत्ता जो जीते-थीये', 'भामदान हमारा लक्ष्य है' आदि।

वेदखलाह भूदान आन्दोलन के संघोचक श्री एस० जगन्नाथन ने कहा— 'हमारी 'सत्य' कार्यकर्ताओं को आधुनिक विनोय भवने वा भारतीयों का मत है।

अल्पक भूदानियों के हैं। बीच ५० एकड़ रेत भूदान में रचित है।

भी जगन्नाथन का कहना है—'पूर्विक मुचीरलदीपट्टी के प्रायों में अपने ५० एकड़ समूहों रेत राम कर दिये, अल्पक गाँव 'भूदान' हो गया है। इसमें सारा भूदान भूदानियों ने पारी हो है, जो किसानों को वेदखल कर लेव पर कब्जा कर रहे हैं। वे भी वेदखलियों के कने हैं (जिसे ही वह 'कणमह' डेज गय है। ऐसे कनेक सत्याग्रह कर सकते हैं। लेख में पाद शब्दान, केने के नुवी में वनी लुंवाना, पनक की कजनी आदि एव सब की योगक है कि किसानों ने अपनी कसब पर पुनः कब्जा कर लिया है।'

समुच्च मंत्रियों को राय

— एलन मंत्रियों का सम्मेलन, जो जिसे १२ अगस्त को समाप्त हुआ, उनमें एक महत्त्वपूर्ण विचार पर एकजिह प्रदर्शित गयी कि समस्त भारतीय भाषाओं के लिए एक सामान्य लिपि अपनायी जाए। सर्वप्रथम लिपि में केवल देवनागरी लिपि ऐसी है, जो राष्ट्रिय बन सकती है। दूसरे मंत्रियों का विचार रहा कि सामान्य लिपि में केवल देवनागरी ही, वरन् यह लिपि में भारतीय भाषाओं में 'सत्य' एक सारक सम्पूर्ण रूप बन गयी और एव प्रकार देख्य-साधन में भी सुदृढ़ सहायक होगी।

शान्ति-सेना मण्डल के निर्णय

गत १२-१२ अगस्त को अल्पक भारत शांति-सेना मंडल की बैठक शबवाट, काशी में हुई। मण्डल की निर्णय यहाँ दे रहे हैं:

(१) भारत की राष्ट्रीय एकता के लिए अल्पक वातावरण बनाने की दृष्टि से भारतीयों के लिए एक शांति की प्रवृत्ति कायम की जाए और एक प्रवृत्ति में करोड़ों भारतीय नागरिक यह 'सत्य' कि 'भारत' में, जन-समूहों, शांतिपूर्ण सत्ता संघर्षों के बीच के सत्य शांतिपूर्ण तरीके में विवादों को शांतिपूर्वक रूप से समाप्त करने का प्रयत्न करना। मण्डल ने अपने महाशहीत-सैनिकों में वा भारत में (जिसे भी हितों में हितों की प्रकृति की धारणीय शक्ति का उपयोग नहीं करेगा)।

शांति की प्रवृत्ति को अल्पक सत्य को राष्ट्र के लिए मित्र नेताओं की सुमति प्राप्त होने के बाद दिया जायगा।

(२) सामान्य लोक-सेवाओं के रूप में शांति-सेनाओं के दैनिक कार्यक्रम में निम्नी विधियों शामिल करें:

- (अ) वे अपने हर्द-निर्द की प्रजा के सचक रहें तथा उनके प्रजाओं को समर्थें।
- (ब) अपने पदों के आतिथ्य-विधियों के विशेष ध्यान करें।
- (क) अपने हर्द-निर्द के लोगों के वे अनिष्ट लोगों की उन्हें आगहारी करें।
- (२) शांति-सेना-संघटन का प्रयत्न कापीलम शबवाट, काशी में रहेगा तथा उसकी एक प्रातः कक्षा-प्रमाण, हरीरों में रहेगी। —नारायण देवाय

अंभा० सर्व सेवा संघ प्रवेश समिति के निर्णय

गत ११-१४ अगस्त को अं० भा० सर्व सेवा संघ की प्रथम संवित्त की बैठक सत्यवाट, काशी में हुई। प्रथम संवित्त में इस बार जिन विषयों के सम्बन्ध में निर्णय हुए उनमें से कुछ-कुछ नीचे दिये हैं।

(१) आचार-संहिता

(अ) अ. भा. राजनीतिक पक्षों के द्वारा एक सर्वोत्तम आचार-संहिता नाम्य की जाए, एव दृष्टि से मित्रता प्रदर्शनों के स्तर पर ही कोटिबन्ध की जाए।

(आ) आचार-संहिता का सर्वप्रथम प्रवृत्ति सर्व सेवा संघ की धीरे। प्रत्युत किया जाए।

(इ) सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष एवं राजनीतिक पक्षों के केंद्रीय प्रवृत्ति-कारियों के इस संबंध में समर्थ करेंगे।

(ई) हर प्रदेश में लोकनीतिक शिक्षण के लिए शिक्षकों का आयोजन किया जाए।

(उ) मत्स्य-संघर्ष के गठन के संबंध में एक पुस्तिका सर्व सेवा संघ की ओर से प्रकाशित प्रकाशित की जाए और एव संबंध में स्थानीय लोगों का सक्रियता रहे।

(२) पंचायती राज

(अ) पंचायती राज के कानून हर प्रांत में बन रहे हैं। उन कानूनों के बनने में कुछ संशोधन पेश करने ही को प्रदेश के कार्यकर्ता उन सम्बन्ध में भी ५०-५० पटोल से समर्थ करें।

उपरोक्त उल्लेख कर रहा है और भूदान की संभावनाएँ बनी हैं। अब तक करीब ४० हजार कट्टर भूमि दान में मिली है और कृषी सारी दुल्ह बँट भी गयी है।

प्रत्युत कार्यकर्ता पंचद-व्यह दिन का विहार वा अपना धर्मयम भी बन्द ही बनाने का रहे हैं।

(४) अर्थ-संग्रह : प्रदेशों की माग के अनुसार अर्थसंग्रह की सिध्दत दिसम्बर १९४१ तक बढ़ाने का तय किया गया।

(५) गिरफ्तार १९४१ में हर्द- में जिस सम्बन्ध में कानून-संशोधन (निःशस्त्रीकरण-समस्याओं) होने आ रहा है, जिनमें पूर्व और पश्चिम के देशों के प्रतिनिधि दिसा कर रहे हैं। एव सम्मेलन के सम्बन्धों में विनोयों का भी नाम है। एव सम्मेलन की जगजगत्-जनों एवं देश संघ की ओर से हिलाने आये।

—पटौतार दास्ताने

हस्त अंक नं०	
१	विनीय
२	दारा पत्राधिकार
३	विनीय
४	"
५	नवदश वाक्येकी
६	नवदश दिनांक
६	खरखर देव
८	पञ्चांगनाम शह

मूदानयन

साप्ताहिक

मूदानयन मूलकें प्रामोद्योरी प्रभात अहिक प्रवर्तित काश्यादिप्रवाहकी

जय तक राज्य शराबों को शराब पीने की इजाजत हो नहीं, बल्कि सुविधा भी देता रहेगा, तब तक सुधारकों को सफलता मिलना लगभग अशक्य है। —महात्मा गांधी
‘हरिवन’ २५-९-२०

संस्थापक : सिद्धराज बड़हा
१ सितम्बर १९१९

वारसम्पी : मुकुन्दर

वर्ष ७ : अंक ४८

देश में सम्पूर्ण नशावन्दी हो सरकार शराब की नापाक आमदनी का मोह छोड़े

महात्मा गांधी

[भारत को आजादी मिलने के बाद, काबू से राष्ट्रीय समस्याओं पर समय-समय पर धन देने बिना ‘हरिवन’ पत्रों के माध्यम से रहे। नशा-वन्दी पर काबू देने के लिए जोर दिया। अन्वययोग-आन्दोलन के वरत नशाब की दुकानों पर विरेटिंग भी किया गया था। काबू ने आजादों मात होने के लीन सन्नाह बाद, ८ सितम्बर १९४० को सख्त देन व सरकार को ही, यह आज भी अवैध-युक्ति प्रतीता में है। —संस्थापक]

जय लोग मूलमते और नगरेण के बिनारे लखे ही, तब शराब-नगरेण वरिष्ठ के बारे में सोचा भी नहीं जा सकता। शराब और अफीम पीने वाले लोग पैसा तो बरबाद करते ही हैं, साथ ही अपने आग पर बाबू को छो देते हैं। मद्य के अन्तर में आदमी न करने लायक काम भी कर बैठते हैं। इसलिए हर तरह से बिचारे हुए मसीही बोजों का पालना और पीना बन्द होना ही चाहिए।

हम निकले कानून पास करने ही इस दुर्घटना को खतम नहीं कर सकते। तय्यार करने वाले पार्ले वहाँ से मसीही बीजों लाकर लायें-पीयेंगे। इनके बनाने वाले और बेचने वाले बाला बाजार बन्द करने के लिए पृथक्च संसार नहीं होंगे। इसलिए नीचे की सलाह बातें एष साय की जानी चाहिए :

- (१) जस्टी कायदा बनाया जाय,
- (२) लोगों को नशे की दुर्घटना समझावी जाय,
- (३) मद्य की दुकानों पर ही सरकार को पीने की निर्णय बीजों की दुकानें बन्द करनी चाहिए। और यहाँ किागों, बखारों और खेल के रूपों में मन-मदलाय के निर्णय साधन रखने चाहिए।

(४) शराब, अफीम वगैरह बेचने से जो आमदनी हो, वह सब लोगों को नशीली बीजों न बचकने की बात समझाने में खर्चे की जानी चाहिए।

(५) मसीही बीजों की किाी से होने वाली आमदनी को राज्य के पैसे की किा में या अन्ना के भाव्य। पड़वाने वाले हमरे कामों में खर्चे करना बन्द पाए है।

सरकार को ऐसी आमदनी राप्-निर्माण के कामों में खर्च करने का साधन छोड़ना ही

नशावन्दी पर जल्द-से-जल्द अमल हो

[दिल्ली में २-२ सितम्बर को बलिष्ठ भारत नशावन्दी-आन्दोलन हो रहा है। सम्मेलन के लिमें विनोबाजी ने जो संदेश दिया, वह यहाँ दिया जा रहा है। —सं०]

नशावन्दी के बारे में सोचने के लिए अखिल भारतीय सम्मेलन बुलाया जा रहा है, यह खुशी की बात है। स्वराज्य के १४ साल बीत गये। अब तो इसका जल्द-से-अमल अमल होना चाहिए। इंडियन-कॉन्ग्रेस का नशा छोड़ कर और कोई भी नशा भारतीय जनता जानती नहीं। अं इस सम्मेलन को सफलता चाहता हूँ। —विनोबा

चाहिए। अनुभव यह बताता है कि नशीली बीजों का खान-पान छोड़ने वाले को जो फायदा होता है, उसे सारी प्रजा का फायदा समझना चाहिए। अन्तर हम इस दुर्घटना को जड़ से खत्म कर दें तो हमें राज्य की आमदनी बढ़ाने के दूसरे बहुत से रास्ते और साधन आजादी से मिल जायेंगे।

(दिल्ली वाले हुए, रेल में, ८-९-४०)

काशी : शराब और सरकार !

विनोबा

जय २५ सितम्बर, १९० को विनोबाजी ने, इतरी बार आठ लाख पाठ मसीही परवादा के निमन्त्रितों काशी में शराब किा : अब कल काशी की मसीही आम तब में नशाबन्दी के सभ्य में को बिचारे मन्द निये में, यह यहाँ है रहे है को बान आठ लाख पट्टे ही हुयने बताया की, यह यह है कि नशी की शराबन्दी होनी चाहिए। मायूस नहीं क्या मामा है कि मसी तक वह काम नहीं हुआ है। अब मुझे बह रहे है कि यहाँ को-कोन जिलों में शराबन्दी की है, लेकिन यहाँ हम मसीही नहीं हो रहे है, इसलिए अब हम सोच रहे है कि क्या पूरे प्रान्त में करने से परास्वी होंगे ? अबक से पट्टे से खीयी है, अब पैसे खोने की बात ! मैंने कहा, बरे भंवा, नशी में हम खान करने बाद पर करते है, तो बिनापट्टी शराब की हुकम हमें रिखती है ! मसियों से बात करना है, तो सहानुभूति दिखाने है और कहते हैं, ‘हाँ देखेंगे, सीचेंगे !’ मसी का ऐसा ही मन्द होता है।

‘परने’ ऐसा धन्द नहीं निकलता है, अडर एनिटव कतिउरेगन, ऐसा ही चाय उनका होगा। ऐसा तरह सब तक होगा, पर तक आर और हय मिल कर नहीं जायेंगे।

इसलिए यहाँ के सब सभ्यतों, सर्वोदय-सेवक, नागरिक सब मिल कर यह प्रचार करें कि सर्वोदय-सेवक बनाने के लिए पहला काम यह होना चाहिए। सरकार को बिन्बाह होया कि लोग चारने है और फिर सरकार-हिम्मत बनेगी। साक्षर के शराब-बन्दी तो गारे भारत में ही होनी चाहिए। उनमें लिए सरकार ने एक नयेडी मुकरर की है। यह कहती है कि हिन्दुस्तान में लोग पहले आठ लाख मीलन शराब पीते में, अब पीने आठ लाख मीलन पीने है याने पाठ लाख मीलन बन्द कर देई है ! पीरे-पीरे और नय

एक व्यक्ति के संकल्प और पुरुषार्थ की कहानी

मलयपुर का शराव-वंदी आंदोलन

मुद्देवर एवंग्रन्थान ने कहा है कि जब तेरी पुकार पर कोई सचि साध नहीं दे, तो 'एकला चल।' श्री रमावल्लभ चतुर्वेदी इनमें एक ताजे उदाहरण हैं। श्री रमावल्लभजी ना चणव-वंदी पर जो एषाजी अभिमान बना, यह सब धीरे-धीरे सबका सामर्थ्य प्राप्त कर रहा है और बिहार के नई प्रतिष्ठित लोगों में मलयपुर (जिला सुपेठ, बिहार) नाकर चणव-वंदी के लिए 'पुकेटिंग' निचा है।

इस अभियान की कल्पना रमावल्लभजी को इस बात से हुई कि बापू की निधन-तिथि, ३० जनवरी केते मनायी जाय। मलयपुर, जो कि रमावल्लभजी का गाँव है, यहाँ रातों से काफ़ी वहाही मची हुई है। मलयपुर की चलाती नदी है, वह सुसुंदर नामक सुसज्जानों का सुन्दर है। इस बलाही से जनका नैतिक पतन बहुत हुआ है। ये मजने घरों में बेरबाहुति भी कराने लगे हैं। पाल में ही दूध का बोडिंग हाउस भी है।

श्री रमावल्लभजी जैसे बालक बालिका की आत्मा इस इन को खराब नहीं कर सके। ३० जनवरी से अर तक लगातार 'पुकेटिंग' चल रहा है, प्रत्येक-प्रतिदिन प्रकाश है। बीच-बीच में गीत आकर इस काम में हाथ जोड़ने रहते हैं। ३० जनवरी से रमावल्लभजी ने एक मोंग-पत्र पर गाँव के लोगों के हस्ताक्षर संग्रह करना प्रारंभ कर दिया। इस मोंग पत्र में यह मोंग थी कि मलयपुर की संरक्षित यहाँ से हटा दी जाए। हस्ताक्षर करने वालों में गाँव के दुर्गिण्य, ब्राह्मण, पंच और पंचायत के सरल भी शामिल हैं। मोंग के एक एक पत्र में भी, जो नए में खराबी प्रकृत भी हो गये हैं, मोंग-पत्र पर हस्ताक्षर किये। सा. ४ अक्टूबर से श्री रमावल्लभजी ने एक नया 'पंच-सत्तापत्र' प्रारंभ किया है। ये दोह एक शेरवार्ड विहार के सुपुत्र मजी को लिखते हैं, जिसमें

शराव-वंदी के चरे में गांधीजी के कुछ भाषण उद्धृत करते हैं और अंत में मलयपुर से शराव को हटाकर उखाड़ देने की प्रार्थना करते हैं। कल्याण के लड़े श्री रमावल्लभजी का सुपुत्र सुदा यह है कि भारत के सविधान की ४७ वीं खंड में जो लिखा है,

कोथेस और शराव-वंदी

म कोथल राजनीतिक चर में, वलिक नैतिक चर में भी सचनिचय को लिए कोथेस चकनमक है। यह वह एक टिकाऊ चर कि सरकार की तरफ से प्रत्यक्ष में किया है तो हूँ। टिकाऊ चर में यहाँ सब चरके कि लूट लूटकर प्रत्यक्ष भी टिकाऊ चर गये हैं। चरान चोने की मल मीरप्रतनी को चरणी जा रही है और यहाँ तक कि चरानों में जो भी यह आरत कंच रही है। बरि हूँ इस चरार्द्र को मरुत करणा है, तो इसके विरुद्ध प्रत्यक्ष जनमण संतार करवा है।

'शराव के लिए शनिप्रद, मशीले येन और चूदियों का रचा के अतिरिक्त

उपयोग चरन रोकेना।'—उस पर सरकारें अमल करें। उनका कहना है कि बा कि भारतीय संविधान, भारत सरकार, सत्ता-पाठी राजनीतिक, राज-क्रांति और मारे-तिक शरारत, एक शंभू में चर-निर्णयों के लिए मजबूत है, जो विहार में शराव-वंदी चरों नहीं तो है। उनका कथन है कि सत्कार वह काम पूरा करने में बहुत कोई विरक्त मरुत, कस्ती ही तो चर-नैतिक-मण वह हल मी चरें कि इस काम के लिए इतना बर दे कि मरुत-मि लम तम चरम भर में पूरे शराव-वंदी हो जायेंगी। इस काम को पूरा करने में जिना सनन लेना वह उचित और आवश्यक

नैतिक चर में भी सचनिचय को लिए कोथेस चकनमक है। यह वह एक टिकाऊ चर कि सरकार की तरफ से प्रत्यक्ष में किया है तो हूँ। टिकाऊ चर में यहाँ सब चरके कि लूट लूटकर प्रत्यक्ष भी टिकाऊ चर गये हैं। चरान चोने की मल मीरप्रतनी को चरणी जा रही है और यहाँ तक कि चरानों में जो भी यह आरत कंच रही है। बरि हूँ इस चरार्द्र को मरुत करणा है, तो इसके विरुद्ध प्रत्यक्ष जनमण संतार करवा है।

जाने—२, ४, ५ वषों—इह ले-के और उस अवधि में काम पूरा हो जाय, इसको अपनी घोषणा और बायेंक मोंपित करे। चुरे शराव-वंदी के इरादे हैं। लूट कर मलयपुर की कस्बाली सुपुत्र मरुत करे है। विहार के मरुत-लेखक भी मोली-सलमी केचरीचल में अपना अभिय सार्थने अभियान के प्रायिक रिती में ही की जिथा। उठी मारा विहार के मरुत-वंदी भी अपनी कैचक में मलयपुर के अभियान की अभिय सार्थने करे बा निर्णय किया।

शराव-वंदी को लिए पिकेटिंग मत वर्ष चरण भिजे के प्रा-पंचायत, शरावुर ने सर्वतममति से प्रस्ताव पास कर सरकार से शरण, सारी एवं माने की दुःखन पंचायत-लेख से उठ लेने का निर्देश किया था। शराव मी तक शराव की दुकान बल ही अमी है। इतिहास ६ अगस्त '६३ से शराव को दुकान पर 'पुकेटिंग' जारी है।

शराव-वंदी को लिए पिकेटिंग मत वर्ष चरण भिजे के प्रा-पंचायत, शरावुर ने सर्वतममति से प्रस्ताव पास कर सरकार से शरण, सारी एवं माने की दुःखन पंचायत-लेख से उठ लेने का निर्देश किया था। शराव मी तक शराव की दुकान बल ही अमी है। इतिहास ६ अगस्त '६३ से शराव को दुकान पर 'पुकेटिंग' जारी है।

विहार के मलय मंत्री को मलयजी द्वारा कसाली बंद करने से लिए चर किने गये। ६ अगस्त की भी वचनक्राम मलय दिन भर मलयपुर रहे। शाम को ४ बजे तक बलाही पर उन्होंने 'पुकेटिंग' किया। कसाली पर अधिक भी होने से चर के मीरान में उनके भाग का इत्यमन सवाल किया गया। बंदी चोने से के अने भाग में भी वचनक्रामजी ने कहा:

'शराव देना में विहार की एक सर-कार को तरक से है। शरीर-पुत्र का भी विकास को रहा है। लेखन जिन्ने लिए मलय चोने का विकास को रहा है, मलय भारतीयों को चरु बनना का रहा है। हल हल की रमावल्लभ चतुर्वेदीजी के सविधान का सार्थने करने वाले हैं।' मोंग के सुप्रिया की हस्त-लिखित चर उन्होंने 'पेडा कि आर अली' भाव के प्रस्ताव पास करके सरकार को लिखे कि हमें मोंग की दुकान नहीं चाहिए। सरकार की यह सुकान ही होना।

१ अगस्त को विहार में शराव-वंदी 'पुकेटिंग' हुआ। पिकेटिंग का अच्छा जमा पत्र। एक बगल एक चुरे विरक्त मरुत भी अपने सचिचो को पंच-मरुत कर कसाली पर जाने से रोना। उनका कथन था: 'मंच लोगों का हटना मानन पाविये।'

श्री रमावल्लभजी का 'पंच-मनाव-वंदी' भी चल रहा है। १० अगस्त के पत्र में उन्होंने लिखा है कि कस्ती-पुकेटिंग जारी है। अर्थात् शराव मंत्री को ही लिखे गये हैं, किन्तु अठारवारी (उक्त न देने वाले) सुपुत्र मजी ने अपनी एक कीर्ति बचाने नहीं दिया।

शराव-वंदी को लिए पिकेटिंग की जिथा, अमन और शराव-वंदी मीरकप ही न बंदन मलयपुर में, बिलकुल मलयपुर और भारत में चरुणें शराव-वंदी कसाली, ऐसी उमीद है; कर्ण-कि हल और निष्कन भाव से की यशी तसवा कमी इस नहीं जाती।

इस हल प्रकाश सुपुत्रार्थ करने वाले सुपुत्र का हल है। अभिनन्दन कर रहे और शाब्दों में कि ये शीम ही अपने चरुणें मलयपुर को प्राप्त करें।

—पण्डितगुप्त

होगी। लेकिन देखिये, महात्मा भीमक युद्ध में इसी सारण्य ने कहा था, 'पुण्य कार्य में झुस्ताने हैं, तो पाप जोर करता है। मंद मति से पुण्य करते हैं, तो शीत मति से पाप होता है।' यहाँ मया मरी है, यहाँ सस्कुत विषय-विद्यालय है एवं विद्या के जय प्रस्ताव मंत्र भी है। ऐसे सुन्दर स्थान कहाँ है, यहाँ शराव क्यों चलनी चाहिए?

सरकार: महापातकी

१. शास्त्रों में मजबूतपातक बताया है:

- (१) जिसने विद्वानों पर सेहत कर सुवर्ण-इच्छा किया, उसको जो चोरी करेगा, वह पापी है।
- (२) जो शराव पीने चाहा है, वह भी पापी है।
- (३) व्यवहार और शुक्रानों के साथ स्वभिचार करने वाला महापापी है।
- (४) क्रोध-हत्या करने वाला, मज्जानों की हत्या करने वाला भी महापापी है।

ये चार महापातक बताये हैं और पाँचवाँ यह बताया है कि (५) इन चारों के साथ जो व्यवहार करेगा, वह पाँचवाँ महापातकी है। इनके आधार पर राज बलने वाला कौन है? शराव को आमदनी पर राज करने वाला कौन रहा जायगा? मरे प्यारे भाइयो, ये सब शब्द में नहीं बोल रहा हूँ, धारण बोल रहा है।

शास्त्रों का जो भाष्य भी, क्योंकि ऐसी शास्त्रों की कमी नहीं है, बिन का उद्यम करना धोरे की सहाय बनाता ही है। 'भौतिक निर्माण' का नाम जो रहाने में लिए है।

ये नगरों के लिए अथ कानों के अधिरिक्त मध्यमिष के लिए भी कार्यक्रम बनाया। यह कार्यक्रम इस प्रकार है :-

(१) नगर की सारी सामाजिक, सांस्कृतिक, सैनिक तथा अन्य संस्थाओं की भी एक समिति बने, जो आन्दोलन का समिति का धारा चलाये। उस दूरदूरी यागि में संस्थाओं का प्रतिनिधित्व उन संस्थाओं के प्रतिनिधि करें। इसके अधिरिक्त जो भी सामरिक संस्था से इस कार्य में सहित उद्योग करें, वे इस समिति को सहित करते रहकर बन सकते हैं। यह संस्थाएँ एक कर्म के लिए रहेगीं। दूसरे कर्म पुनः स्थापित करना पड़ेगा।

(२) उद्योग बाने चाहे कर्म की पूर्णतया धरा, छात्रों के पुनः-आशिक्षण तथा सम्बन्धित अधिचारियों को देना।

(३) इन बुद्धिमत्तों के अनुरोध करना कि वे अपनी दूरानों बहाने न चलायें।

(४) उन दूरानों के सामने उपायों करना तथा उनको बंद कराने के लिए प्रस्ताव चला सकना।

(५) उन मोदरनों में नगर और मोदरनों के संगठन लोगों के द्वारा धारा-सामग्री चीनी आदि के अनुरोध करना कि वे धाराय सारी धाराय में रहें, इसकी अतीस निराशा, दूरानों को बंद करने के बन्ध में बहाल कराना और उन्को अधिकतर धारायनी अधिचारियों और धाराय के माननीय नेताओं के पास भेजना।

(६) इन सब प्रस्तावों के बाद सम्पन्न, स्थान तथा स्थितियों की सामाजिक स्थिति पर करते धाराय निरी के धमय कीने सारो को मानने की शक्ति करना।

(७) उन मानने पर उनके धारायों पर डेट बनाना। इस प्रकार उनमें दौलतियों में बंद कर बुद्धन के सामने डेट बनाना।

(८) धारा ही धारा की बुद्धन बनाने चाहे टेरेदरों को दूरानों बंद करने के लिए सम्मानाना।

नशादीरी देना काम नहीं है, जो एक दिन में हो जाय। जिनके वे लोगों के संस्कार पड़े हैं। दूरों मिदाना है, नये संस्कार खोजना है। जो सुने हो सुने, मीठों सारो के मादक पदार्थों के डेडन के ब्यादि बन गये हैं, उन्हें बदलने में शीक कर देना एक नामान काम नहीं है। शक्ति शीका एक असाध्य भी कल्यार्थ को अन्तःपुष्टक नहीं है। फिर भी पूर्ण अवस्थान नहीं है। तो भी जो दुःख को दुःख, अपने साथी पीड़ों दूरी बने, नयी वन बन जाय। यह सुविधाएँ होगी, मध्यम के उरकारों की ओर। यह अवस्थान नहीं है कि एक बुद्धों बंद एक बार समाप्त वे बल्लुल के समाप्त को जाय तो फिर दुःख समाप्त में आये ही। पर उस कार्य में धमय के उद्योग भी अवस्थान नहीं है। समाप्त कार्य नाम है, सामाजिक कार्यकर्ता अपना कार्य नहीं और उरकार को भी समाप्त कार्य करना चाहिए।

[सर्वनाशो मद्रिका क लखखदाते धारमः एष्ट ४ का संघ]

वनों में थे हैं। बतावने में क्या करूँ।
ये हैं हमारे मातृ की देवियों। पति के धाने पर न खाती हैं, उनमें नींद ही आती है। पुत्र सम्राट् करते हैं, धराय पीठे हैं, लेकिन उनही जिनों पुत्राय परदरक कर लेंगे हैं। बहाने पर मीने देखा है कि पुत्र पति का कठिन परिश्रम करो है, कुम्भीणी दिन हैं, पर-उनकी गाड़ी बमार्द काम को मद्रिकलय में अकर रसाद कर देते हैं। कुछ ही अन्त यानी तथा बनी को भिन्न बना है। लेकिन फिर भी वह उरक करती हैं। आरिण इस तरह से कब तक चलता रहेगा। उनको चाहिये कि वे अपने पति के बंद कि इन आदतों को छोड़ दें। और अगर उनका बहाना पुत्र न मयें तो कल्या चाहिये कि नव बंध देवी आरुप नयन नहीं छोड़ेंगे, धर उरक हम मोहन नहीं करेंगीं।

इस समय में जो लोग अमेरिका वा अरारण देते हैं, वह सर्वथा अनुचित है। अमेरिका में धरायभृती का प्रयोग अशुभ हुआ, इसलिये यह बन्दी नहीं

गये थे कि इसकी के पद के नीचे बहा-हलक हो रहा था। खुले आम धाराय वन रही थी और आठ-दस मील से खरीने गाले आये थे। कुछ ही रहे थे, कुछ भी मोरवें नहीं के लगे-लगे डग डग पर भी ओर चले वा रहे थे। यह पुन धराय वीरर अथे सुद बोलया वग वा। उही हो जाने से अन्तःपुष्टी भिन्न भिन्न गयी, किन्तु उरको पत्नी उरक रह डरने से सम्भालने की शक्ति पर रही थी। कुछ लम्बे उरके भूती नवरी के उर रहे थे।

हमारी सरकार ने धरायभृती की नीति अपनायी, लेकिन खरीने के किन्ती धाराय बनती है, उरवी शक्ति सिधे रासकीय नवचारियों के लक्षणों के होते हैं, इसका अद्यमान किन्ती भी नगर में बाहर धराया जा सकता है। इन अरक प्रदेय की ही बात कर्त न लें। उरक धाराय की उरके श्वादा वन धरायन में और विदेशी धराय की लक्षण में हैं। प्रदेय के दिन २३ तिळों में धारायको का नियम लागू हुआ है, बहानों भी

रिचयों और धाराय-बन्दी

पचीस साल पहले की बात है, जब भी चल रही थी कि धाराय की बुद्धन पर रिफोर्टिग करने का बन्ध हुआतमान किया जाय। किन्ती में कुछ सुझाया, तो किन्ती ने कुछ। गांधीजी ने सुझाया कि यह काम रिचयों का होना चाहिए। लोग सुनते रह गये कि गांधीजी का जो बोल गये। जहाँ विडुल्लुल बन्दीविमान् कोय जाते हैं और सब प्रकार का गुपु बर्तन चलता है, ऐसे लोगों को योव रिचयों बना करनीं। लेकिन गांधीजी ने कहा कि यहाँ पर रिचयों ही काम करनीं। जो सबवे गिरे हुए लोग हैं, उनके शिक्षक हमारे पास जो ऊँची-को-ऊँची मैटिक शक्ति है, बही ओही जानी चाहिए। जबके अनुसार रिचयों बहाने गयी और उन्होंने जो काम किया, वह सारे भारत ने देखा।

(१८९२, २१-२५ ५८)

-विनोबा

कि वह यहाँ भी अरकल होना। यहाँ की और यहाँ की परिस्थिति में बर्धन-आर-धाराय का अरार है। यहाँ की परम्परा, लोक प्रथि और सामाजिक लोक प्रथि यहाँ से निग है। कुछ धार्मिकारियों के शलाकाएँ पर अधिरिक्त में अद्ययन का विरोध हुआ, किन्तु सर्वथा निरिद करे की प्रथि ही यहाँ के सत्यतथ में किन्ती की नहीं होती। इसके निरिरीत धाराय में धराय कमी भी प्रतिष्ठित नहीं माने गयी है।

गिरजपुर भिने में सारो और म्योदुरः को वे स्थान तो बन्धान हैं ही, किन्तु देरुध नौन के धराय धरों और धरियों में धराय की बस लक्षण नहीं है। इस म्योदुरवे के ओर रहे थे। नगर के मन्दर एक मद्रिकलय के धाराय के मन्द की ग्रीठ देह कर हमने धारायों के पूजा। दो मिगट धराय यहाँ रहे यह कर हमने भीरलताएँ धा द्येन किया।
अभी सुचित है। यह पचीस ही अमे

नियमोद्ययित आरयों को गिना जाय तो पररप लोग ही अधिक्त सिने। क्या धराय इत और के लखदुव कीन नहीं नूर रही है।
बहाने इस विषय पर विचार करना चाहिए कि पुत्रोने रिपकड कम्पु के अलिध बना कर कर्म पीठे हैं। धाराय उरके शिष्ट सम्पत्ता यह है कि पुत्रत के समय क्या करें। पत्नीयन वे उरका कर अननी रिक्ता को भूलेने और धराय को पोसा देने का ही उनका प्रयाय होना होगा। जो दिन पर यह कर नूर हो जो दें, पर आने पर बन्धों की म्बिदियरद, पत्नी को भूललहर के विचार होवे, उन्हें जीवन माल्यकर लघाते है। वे पर भी परेधानी दुनिश पर मिशाना बाने हैं। उन कथा उनका जिन दूरतों के लिए धराया नहीं बन जाता है। आरु माने को समाप्त-सुधारक रहनेने बानों के लिए यह दूरकी होती है।

नगर सरकार ऐसे बन्धन उदासियों, दुःखों हमे दहा है, क्योंकि उरके निमाताओं का धराय नहीं करनी बरदा है। अभी गेरुट में एक भूतारों उपमरी से बानें उरुं। मीने कडा कि अपनी ओर से सरकारी उरुं में उरक गण दिखाने में वे बहयगे हैं। उनका उरक वा कि समाज-सेवियों को सरकार का सुँद नहीं ताकना चाहिए, समाज का परिवर्तन विचारों के कर दो और फिर सनी। दूरान सुखी रहेगी तो भी क्या होगा, लोग सारा नय जिने। उरुंनेने यह भी कहा कि मद्रिकियेककाल बहयु भी विद्या जाय, सरुती भी की जाय, तो पीने चाहे पीने रहेगे, आय उरुं रोक नहीं करुते हैं—अत तक कि विचारों को नहीं रोप बनने। इसवे धरायबन्दी नहीं होगी, अलतरा सरकारी धाराय का पादा अरकल होगा।

भूतारों उपमरी मोहोदय में यह भी कहा कि यदि सारे देश में मध्यमिष हो गया, तो विदेशों से लखे-पिरे न जाने दिनाती धाराय में धाराय देश में आ जायेगी और उरका पैसा मरुल बगाह चला जायेगा।

उनका बहाना टीक है और यह बह धर होता रहेगा, इन समाज सरपाटी बहुर मोटा रहेगा और यदि इस बात की समा-ज ही, तो क्या हम यह विचारव न करे कि देश के यही बरादार म्बरी एक दिन निरेधियों को आसमित कर देंगे और हम सब जिग पुष्पक हो जायेंगे। धराये म्बरीयों पर बदि इतना विश्वास नहीं है कि वे देश के प्रति धराय हैं तो उरके धराय रहने की धार है तथा उनका उरुधित प्रमथ भी होना चाहिए।

गांधीजी ने धराय भी दूरानों बन्द करवाने के लिए दूरानों के सामने थले रिचयाने थे। वह रिचयी उरकारकी, अत अपनी ही उरकार के सामने भी हम बन्दी करे, जो कमी अरुंनेने के विरुद्ध किया गया था, तो क्या यह उरिध होगा है। ऐसी रिचिय आये, यह अन्ती बात नहीं है।

पर हमें सामाजिक कार्यकर्ताओं को भी कुछ धाराय चाहिए, इस बात के इरकार नहीं कर सकते हैं। धाराय केन्द्र, काशी में दिसम्बर, '१० में बन गिनोराभी आये थे, तो १६ से १९ जारिध चर रिचयानों के जो शक्तिय में उरुंनेनेने-अभिधान के कार्यक्रम पर विचार करने के लिए बैठकें होती रही। उरक प्रदेय और मध्य प्रदेय के कार्यकर्ताओं के अधिरिक्त दिहाके में भी कुछ कार्यकर्ताओं ने भी उन बैठकों में भाग लिया। बैठकों के बाद तीन सरुत्यों की एक समिति बनी थी, जिसका एक सदस्य भी था। उस समिति

राष्ट्रीय समरसता का सवाल

तिसम्पा नायक

[२१ जुलाई के 'भ्रान्त-यत्न' में 'राष्ट्रीय समरसता' पर श्री सिम्प्रा नायक के विचार प्रकथित हुए थे। उक्त अंक में एसी विचार पर संपादक द्वारा टिप्पणी भी निकली थी। हमें सुखी है कि श्री सिम्प्रा नायक ने इस विषय पर फिर से एक पत्र में कुछ विचार प्रकट किये हैं, जो हम यहाँ दे रहे हैं।—संपादक]

(१) धार्मिक-नैतिक का जीवन व्यप्याप्तक तृति से प्रेरित एक अत्यन्त सेवास्य यत्न है, ऐसी चेष्टा करते-न करते ही देहात्म होने में ही उसके जीवन का सारण्य है और आध्यात्मिक ही, ऐसा ही वा वाय, तब अन्तमा बलिदान देना उच्यते अथ ही प्रवृत्त है। अर्थात् आध्यात्मिक मीरे पर अन्तमा (इतर वाद) की प्रेरण के अन्तमा बलिदान धार्मिक-नैतिक के जीवन की अन्तमा बलिदान है।

महात्माजी के अन्तमा बलिदान का परिणाम आध्यात्मिक में इस आत्म बलिदान है। इस अर्थ में भी उन्होंने नोभ्यात्मिकी में एक कार्यक्रम आरम्भ किया था। अपने योद्धे हो साधियों की देना प्रियाक काम के केन्द्र होके थे, उनके हस्तक प्रार्थना-प्रवचन में उन्होंने राष्ट्रीय समरसता के बारे में अनेक उक्ति के दिखाने किया। लेकिन उनमें भी 'विचल' (दर्शन) था, यह हमें रिश्ते में नहीं था। इच्छित उनके बलिदान के पश्चात् इस बारे में—कि अन्तमा भोक्ति काम पुनर्गणित था था, यह हमने किया। लेकिन तैत्तिक पुनर्गणित के लिए हमने ध्यान नहीं दिया। इसके विरुद्ध में ही जो पर लेना नहीं लगाता, किन्तु एक सत्यविष्ट हृदि से और

किष्क मित्रियिष्क (आत्मवियिष्क) की उक्ति से जो लता है, यह क्या रहा है। महात्माजी की म्यानवा ही ऐसी थी, कि हम हमारी संतुष्टि दृष्टि की बजाइये उनके दर्शन वा और उसके मद्दत का आरम्भ नहीं कर रहे हैं। आज हम कुछ कुछ प्रवचन पर वाच्य हुए हैं।

महात्माजी ने कहा था कि नया विद्वान्त्वान् और धार्मिकत्वान् राशरी दृष्टि के अन्तमा अन्तमा उच्यते, जो भी माइत निर्मौलिक दृष्टि से ही नहीं, लेकिन सत्यविष्ट दृष्टि से, हृदि के, हार्द के (एट हार्द) भी एट है। इस बात को हमको हमारे उच्यते से हार्द पर करवा चाहिए।

आज वर्णन भारत में वही पर एटोय सुलभावान् आई है, जो भी हमने विद्वान्त्वान् (राशरीभाग) के बारे में उच्यति कि आरम्भ होय दिया। उच्यते आरम्भ ही सत्यवा ही सत्य ही भोक्त हो गयी।

महाराष्ट्र सर्वोदय-मंडल और नवनिर्माण-समितिके निर्णय

महाराष्ट्र सर्वोदय-मंडल की २१ सन्मिति, मिला-संयोगों और निर्णयों बलिष्ट की बैठक युवा में २५ जुलाई '११ को मंडल के अध्यक्ष श्री आर० के० पंडितजी की अध्यक्षता में हुई।

भूमि-मालिकों के लिए आगामी तीन महीनों में परदापरत की जरूरतों। सितामन् में और बिले में और अन्तर में मातृपुर बिले में परदापरत होनी।

नवम्बर, दिसम्बर '११ और जनवरी '१२ में अपने-आपने बिले में लोचनीयिका का प्रचार किया जायेगा।

महात्मी-अन्तमा-पुत्रा आगामी तीन के काम के बारे में नियुक्त समिति द्वारा कि दे गये का दर्शन की वाचना ही होगी। उच्यते पर चर्चा करते तब कुछ गलत कि आरम्भवा सर्वोदय-मंडल के बारे में भी वाच्योपदेश सुनना नहीं के बारे में एक योजना आयेगी।

विहार के 'धरमे' कर्त्ता' का प्रवचन की सफल आगते के लिए महाराष्ट्र से चार आरम्भकों भेजे हैं। और उच्यते कार्यक्रमों विहार में भेजे जायेंगे।

उत्तरीय विहारे में तब तब यह में दूरान और चर्चा के कारण कुछ सुकमान हुआ है। अतः चर्चा के सर्वोदय-मंडल की उचित आर्थिक सहायता आवश्यक है।

महाराष्ट्र में सत्योदय-मंडल 'वैतिलीय' के बारे में चर्चा हुई। और कर्त्ताय भूमिदान कर्त्ता ही, जो बहू-सुदय हस्तक में दाम्निन को वाच्य, ऐसी एक योजना प्रवृत्त की गयी। और भी सन्मिति समरसता के बारे में भी आर० के० पंडित करवाके परदापरत करेंगे। अतः भूमि

(१) महात्माजी के अन्तमा बलिदान पर हम विचल करें। उनकी धार्मिकता भी हमारा पर हम गादु विचल करें और उसके अन्तमा में—देर से ही नहीं नहीं—अन्तमा ही हम कायेंत हों, तब राशरी नहीं मरेगा। मनुष्य नव-चेष्टा उनमें प्रवृत्त होगी।

आचार्य एक बात ही कह पर पर सत्य पर समत वरता है। अन्तमा बलिदान यह कुछ 'निचयिष्क' का 'आलोचिष्क'—आर० के० पंडितजी द्वारा—नहीं है; धार्मिक देना के कार्यक्रम का एक नैतिक विचार है; सन्मिति मीरे पर वरिष्क-दान में धार्मिक-नैतिक का काम लात होगा।

आध्यात्मिक दृष्टि, सत्यत्व सेवात्मक वक्त, धर्म आध्यात्मिक में प्रवृत्त-वृत्त जगति, अन्तमा पुनरे ही वाच्य, सन्मिति मीरे पर अन्तमा बलिदान-वृत्त धार्मिक-नैतिक जीवन का नया है।

देते बलिदान है, वैसा कि मीरे के ही दृष्टि के सत्य पर दृष्टि में परिष्कित ही वाच्य दे वैसा ही पूरा का होगा, न कि वाच्य पुत्र होगा। ऊपर की पंक्तियों में अन्तमा विचारदोष होने की सम्भावना रहती है। मेरी मेल प्रार्थना है कि जो सुचित उनमें है, उन्तरी बहत् मेल ध्यान अन्तमा किया जाये; इच्छते मुझे मेरे विचल में पोषण मिलेगा।

(१) आज भारत के लोग उनके देश के सारण्य प्रवृत्त से विचल रहे हैं, भारत है, उन्तरी बलिष्क प्रभा कायेंत ही और अन्तमा विचल हुए में होगी।

युवा के बारे में विचल, उच्यते अन्तमा बलिष्क के बारे में चर्चा और युवा से भी निर्दोषता का ध्यान धार्मिक-नैतिक के विचार का एक आरंभ होना चाहिए।

यह ऐसे अन्तमा इन्तमा—धार्मिक-नैतिकों में—और उनके सारण्य के अन्तमा बलिष्क प्रवृत्त हैं, उच्यते ही हम अन्तमा के वाच्य की रक्षा करने में, सारण्य की रचना में सन्मिति करें। मनुष्य के उच्यते की वाच्यता नहीं स्वतंत्र है।

(२) गांधीजी ने अपनी एक भी दृष्टि ऐसी नहीं की, किन्तु एक ही चर्चा—यह 'मिष्टानासक' (इतिहास प्रवचन) के सारण्य में आगम्य अन्तमा की अन्तमा बलिष्क विचार, उच्यते उन्तरी बलिष्क विधि की भी अन्तमा बलिष्क के अन्तमा नहीं करना चाहिए। लेकिन विचल मीरे पर वाच्य काम करके जो कामों के लिए सन्मिति अन्तमा काम में सहायता चाहिए।

मनुष्य महात्माजी की प्रवृत्त ही होगी, किन्तु एक ही चर्चा-प्रवृत्त, अन्तमा-निष्क, अन्तमा बलिष्क है। इच्छते चर्चा प्रवृत्त में एक विचल-स सारण्य हुआ।

महाराष्ट्र मंडल के समेलन का आयोजन २१ अक्टूबर के मीरे पर के प्रवचन सहाय में करने का तय हुआ।

सर्वोदय मित्र-मंडल

यस की बैठक में भी अन्तमा बलिष्क परदापरत के सर्वोदय मित्र मंडल की अन्तमा में चर्चा के मीरे पर विचार प्रवृत्त होगी।

(१) प्राथमिक सर्वोदय मित्र-मंडल—जोयव-भूमि की योजना, भूमि-मालिक, अन्तमा बलिष्क धार्मिक विचार के सारण्य के बारे में चर्चा १८ अक्टूबर के मीरे पर उच्यते अन्तमा पुनर्गणित-प्रवचन में, देते देन पर १८ के १५ अन्तमा का प्राथमिक सर्वोदय मित्र-मंडल प्रवचन था। यह अन्तमा अन्तमा में के सारण्य में एक विचल पुत्र है।

(२) सर्वोदय सर्वोदय मित्र-मंडल—सर्वोदय सारण्य देते देते ३० के १०० परदापरत का १५ के २० प्राथमिक सर्वोदय मित्र-मंडल का एक चर्चा सर्वोदय मित्र-मंडल अन्तमा बलिष्क। प्राथमिक मंडल के निचल एक चर्चा सर्वोदय मित्र-मंडल के अन्तमा बलिष्क।

(३) सर्वोदय सन्मिति—देना सर्वोदय-मंडल अन्तमा में के एक चर्चा प्रवृत्त

श्री शीतल ठाकुर "गुरुजी" की याद में !

कार्यकर्ताओं

ट्रेन-डफेती !

अभी-अभी सर्वेद आश्रम, रातीसरा, भवन निर्माण विभाग के दरबारादर वे मैंने ही कर रहे थे कि आदिने में एक बिट्टी दी। बिट्टी की प्यारी ही थोक में लिखा था : "भाई गीता! हम दोनों को १५ अगस्त की रात में छोड़ चले गये।" सब समझे रह गये।

विगत १ अगस्त को अब भी वैदनाथ गुरु हमारे गाँव आये थे; जो उनके स्वागत खातिर ही पूरी बस रात ही शीतल-ठाकुर "गुरुजी" ने ही की थी। ११ बजे रात में वे वैदनाथ बाबू के आने के लिये उस मूलशाला परगने में भी गये। मैं एकदम बाटो रहे। मुझे भी वैदनाथ गुरु को गाँव के निरा करके हमारे वे अपने गाँव की कुल-बरे भरी बस सुजाने में रहते मन में कि वैदनाथ बाबू को अजब कैसा आनन्द देना पना कि खड़ी-सामोयोग मन-पन ही और वे "भान-रुधिर" को बना यहाँ पाए करने की व्यवस्था की जायगी।

११ अगस्त को अभावक से दीवार पड़े और दो दिनों तक उनके मुँह से आवाज तक नहीं निकली। मृत्यु के समय आठवीं अवस्था ५० वर्ष की थी।

१९२५ में ही गुरुजी कायेग में विधीन-गिरी बन में पाय बन रहे और कई बार देव भी गये। १९५९ में उनका वृत्त समाप्त "भूदान-भूदान प्रामोदीगोपराजन अहिंसक समाजसचना के कामों में लगा।

सदासा मिले के गौर-गौर में धुनने के साथ ही यश और दुर्गति मिले के कई भागों में जो गुरुजी ने विनोय के लक्ष्य को रीतया। विगत वर्ष वैदनाथ निर्माण के काम का अन्तगम लेने के लिए रातीसरा में ४ बहनें रहे और गौर बाबा उठते-उठते उस दिना में काम करने की योजना बनायी, जिसका अन्तिम प्रशासन वैदनाथ बाबू द्वारा शान-रुधिर बहने के ही रीतिरिति के रूप में किया। गौर के भूदान किसानों, व्याप-व्यापारों, हलिकों, दलियों, वृत्त के विद्यार्थी एवं अन्य, एतन्नामक कार्यक्रमों की उपस्था हर दर हर काम के लिये मिलता था। "देवनाथ बनगणाल" के वे दरबारादर होते हुए भी पूरे सदासा मिले में भूदान-नाम के लिये समय देते रहे।

गुरुजी पहले ग्ने, निम्न उनको विनो-गठ आग्य को प्राप्त देने की कार्यवाही के रूप की हैं-उनकी मे-द-विषय, कर्म-विषय, जीवन-दान, प्रावि-वैदिक के रूप में उपलब्ध हो किवा उषो जलदेवता केनी यादि।

—दीनानाथ "प्रबोध"

मैंने बात १ अगस्त को वैदनाथ के रिटर्न नं० ५२१५ द्वारा गई बस में यात्रा की। उस दिन मेरे जीवन में एक तरह की क्रांती को देखने का समय आया। सबसे पहले क्रांति-वे ने जीवन को रोटी से बनाया था। रोटी रोटी के का लोखों का पैसा देखते लगे। जब सदासा लिया, देग लिया कि इनके पास देते हैं, तो मैंने देग का पैसा तो अपने पास रखे थे ही, पैसा देखने की गलत से लोखों को इनमें बाँटे गये। वे इनका और उनके पैसे, रोटी-माँस-माँस पर फिर बाण्ड लेते लगे।

बहुत योग-विचार कर देखते थे मैंने पूरा कि भाई, बेटे की ये भी यह सामान भी अपने रूप-विषय और उनके पैसे ही धरे रहें हैं, यह अच्छी बात नहीं। मेरी बात को अनसुनी कर मारपीट करी ही रही थी कि इनके मैं मार पाये गये मार्यों में वे एक ने अपने छोटे से मारने वाले के एक को छोटा मार, वह देखते हैं के एक ने मेरी मार देना और मरना कि हली दलित के वे ने इन कामें दिव्य मारी। यह समझना कि मेरे भी अंत के ऊपर भी यहाँ दार-वेदरी द्वारा मार पाया आँत बर्बा, पर एतु को पाय पर बर्बा। पुनः मैंने उठते ही रोने का प्रयत्न किया। इस बार मेरे निर और मार पर बारी बंद आगी। इनके मैं ने मनोव्ययय होठन पूँजी और बाहू पाय निकले।

देखने पर मेरे पाव को देख मीठ उठत गयी। एक ही-० ही-भाई ने मुझे की-आर-० की-के बाने-देर के पाय पूँजीया। बाने-आर अपने मुँही को परत लिखने को कह कर बल गया। एतु लिखने की को समझा की, वह ६६ आगल के "आर" दिनाक में छात्र जुड़ी है। देले-अवगत

१२-८-५१

और कार्यवाही, ऐसे ही सब कार्यवाही को एक कार्यवाही समिति सर्व-सम्मिलित के नियुक्त करेगी।

(४) मण्डलों का कार्य : वे मण्डल अपने-अपने क्षेत्र में सर्वोपरि का प्रकार करेंगे। कार्यवाही समिति विश्व सर्वोपरि-मण्डल को प्रचारक की नियुक्ति, उदाहरण जीवन-वेदान और कार्यवाही आदि के सम्बन्ध में सहाय करें।

(५) विश्व-सर्वोपरि अपने क्षेत्र में इस तरह के सर्वोपरि मण्डल बना कर उसकी जानकारी मण्डल सर्वोपरि-संकेत को भेजें।

भी अन्व-शास्त्र परदर्शन द्वारा सुशांती गयी उपरुक्त सर्वोपरि-मण्डल की योजना सर्वोपरि की गयी। भी आभासाश्रम ने विचार-मूलाक सबी-द्व-पान और अन्य दान के रूप में "पीसा पत्र" हस्तगत करने की योजना रखी, जो सर्वोपरि की गयी।

प्रामदान-नवनिर्माण समिति

महाशय आमदान नवनिर्माण समिति 'रिजिस्टर्ड' होने के बाद उसकी पहली सभा २१ अगस्त '६१ की सुना में भी आर-० के-० पालिक की अध्यक्षता में हुई।

शु-० के निर्माण-समिति के 'प्रारिष्ठ' दिने गये दिहाय का आद-समय पत्रक

और आर्थिक स्थिति का पत्रक संभार किया गया।

भी आर-० के-० पालिक ने कहा, "भान-दानी गौरी में विद्यो को प्रचार को प्रचार-गत योजना नहीं। सम्पूर्ण संकेत, संकेत और आर-० के-० पालिक की बुद्धि लेने वाली योजनाओं को अन्त में लेना चाहिए।"

सनागिरी मिले की और अन्व-शास्त्र मण्डल क्षेत्र के कार्य की, जो रिपोर्ट प्रकाशित की गयी, उसकी समझाई करके ही गयी। मद्रास के निर्माण कार्य को पूरी रिपोर्टें दुरुसी समय में तैयार की जायगी।

सब कुशा कि पंडित-बनदा धाम-विचार को अगर विचारण की अनुपति हो और परिवार की स्थिति उचित हो तो वे हजार ५० तक का कर्ज धवीयक दे लेंगे। मद्रास में ५८ मालसवय लेला-दिगों रीजिस्टर्ड हो चुकी हैं। एतु एक फिरोज-मन्ने की योजना बनेगी।

पामागितादे क्षेत्र की योजना के लिए सुविधा मिले की बचक कर की रकम में ६५०० ५० परें दिया जायेगा।

निर्माण-कार्य में छात्री-सामोयोग स्थापन की ओर से १८ और गांधी कलाक-निधि की उद्घाटन से छ कार्यकर्ता काम कर रहे हैं।

भी एकदमय मलय और भी सद्दर्श सम्मेलन को निर्माण-समिति के सदस्य बना लिया गया।

विनोवा-साहित्य

११ सितम्बर से २ अक्टूबर तक सर्वोपरि-साहित्य और पत्र-विभागों के प्राहक बनाते का अधिवेशन-समय चलने वाला है। उस सत्रिकाल में विनोवा की हिन्दी पुस्तकों की सूची हम यहाँ दे रहे हैं। यह साहित्य सर्व सेवा सप्त प्रकाशन, राजवाट, काशी में सत्य-समय पर प्रकाशित किया है।

पुस्तक-नाम	र. न. र.	पुस्तक-नाम	र. न. र.
गीता-सत्यवत १, २, ५, अन्वद	१५०	सर्वोपरि (केवल सत्रिक)	१५०
गीता-सत्यवत (संस्कृत)	३००	साहित्यिक से (मया संस्करण)	१००
शिवान विचार	२५०	साहित्य शास्त्र	०५०
आत्मसत्य और विश्वास	१००	निकोय	०५०
सर्वोपरि-विचार सत्य-सत्य	१००	सत्यसत्य	०५०
केलीगीति	२००	सुविधा से आत्मसत्य	०५०
सामयन	१००	नय जगत	०५०
मोहनल का पैसा	१००	सर्वोपरि-सत्य	०५०
की शक्ति	१००	सर्वोपरि के आधार	०५०
भूदान-योग (सत्रिक) प्रवेक	१५०	एक वनी और नेत्र वनी	०५०
आन्दोलन-विनोदिका	०.५५	गौर के लिए आदि-सर्वोपरि-मना	०५०
काम्य-केन्द्र	०.५५	शाम-नाम : एक विनोद	०५०
कार्यकर्ता क्या करें ?	०.५०	अयोधनीय पोस्टर्ड	०५०
कार्यकर्ता गायेय	०.५०		

तमिलनाडु में वेदखली के खिलाफ किया गया प्रथम सत्याग्रह सफल

दोनों पक्षों में समझौता

मूदान-यज्ञ और वेदखली मिटाना

एक ही काम है

तमिलनाडु के बटलागुडू सर्वोदय-मण्डल के भंडी श्री नटराजन् ने सूचित किया है कि वेदखली के विरोध में १५ अगस्त को प्रातः मद्रुपट्टे से २५ मील दूर मंदूर तालुका के मुयोखलीपट्टी नामक ग्रामदानी गाँव में एक किसान को वेदखली के विरोध में जो सत्याग्रह शुरू किया गया था, वह सफल हो गया है। दोनों पक्षों में समझौता हो गया है। विस्तृत समाचारों की प्रतीक्षा है।

१५ अगस्त को ५२ व्यक्ति गिर-फ्तार हुए, जिनमें ५ महिलाएँ भी थी। अगले दिन २० अगस्त को ६१ व्यक्ति पकड़े गये, जिनमें २ वृद्ध महिलाएँ भी सम्मिलित हैं। २३ अगस्त तक १८५ व्यक्ति गिरफ्तार हुए हैं। तमिलनाडु सर्वोदय मण्डल कार्यालय के श्री बी. वासुदेवय्य तथा बटलागुडू के सुप्रसिद्ध

मूदानरामों श्री १० कलश समाधिनी की सरथापरियों में से थे। श्री वासुदेवय्य तथा अन्य मद्रुपट्टे कार्यकर्त्ता आम्बोट्टन का संचालन कर रहे थे। २१ अगस्त को सरथापरियों पर छाठी चार्ज किया गया।

श्री श्री-श्री भी ठार द्वारा सूचना मिली कि ६ दिनों के बाद सत्याग्रह सफल हो गया है।

हिन्दुस्तान में वेदखलियाँ बढ़ रही हैं। इसमें मूदान का कोई बंदर नहीं है। किन्तु लोगों के मन में छाँट पैदा हुआ है कि 'कोई कानून बनाया, न मालूम क्या कानून बनाया और क्या होगा?' इसी उसके परिणामस्वरूप वेदखलियाँ शुरू हुई हैं। मूदान-यज्ञ के लिए प्रथम 'हिन्मीकारण' छात्रों हैं, क्योंकि मूदान से हम उन पर बसरा नहीं डाल सकते। इसलिए हमने मूदान में यह कार्यक्रम मान लिया है कि जिन किसी ने दूसरे को बेरख किया हो और परिणामस्वरूप वह भूमिहीन बन गया हो, जो हम भूमि बलों के पास पहुँचने और उनसे धर्मोत्पत्ति करने की क्षमता प्राप्त हो जायें, उसके लिए हम वह जमीन उसीको दे देंगे, जो वेदखली से छारू के जमीन हुआ है। इससे आपसे जो एक मत्त का काम हुआ, वह दुहर हो जायेगा और उसके अज्ञान पावनता भी पैदा होगी, जगत भी बनेगा। इस तरह हम लोगों को समझाते हैं कि हमें, फिर भी कोई दूसरा इसका परिणाम नहीं हुआ। वन सुखे भूमिहीनों से कहना पड़ा कि 'तुम अपनी जमीन पर बटे रहो। अगर तुम्हारा मानना सही है कि तुम वन जमीन पर बने-बुट सारा से काम करते हो, तो सत्य पर बटे रहो—बादें मातृक जो भी करे।' इससे भूमिहीनों को उदासीन हो सकते हैं। मूदान-यज्ञ और वेदखली मिटाना, दोनों मिला कर एक ही काम है। उक्तों सुनिवार पर हमें काम काम होता है।

(मद्रुपुत्र, उड़ीसा, १५-५-५०)

—विनोवा

विनोवा पदयात्रा-वृत्त

विनोवा की ८ अगस्त से १४ अगस्त तक की पदयात्रा रूठ ठर गई थी। इस बीच कुल १६ पादयात्रा मिले।

तारीख	पंजाब	प्रामदान-आदि
८	श्रीधर	—
१०	जोरहटा	५
१०	पेठुजना	१
११	भाहीगाँव	—
१२	मुद्रुवा	५
१३	बटरोहनी	—
१४	नैडुडी	७

मद्रुपट्टे के सर्वोदय-कार्यकर्त्ता श्री चर्तन नामोत्तम और उनमें से पत्नी कुमुदेवई विनोवा की से मिलने के लिए आये थे। आप 'बोहर' हाल से महाराष्ट्र में प्राम-दियन समिति के सदस्य हैं। बाद दिन शाम में रूठ कर आपसे बयानें गये।

समय-प्रमाण, सौंपण का सुबालक भी हात्कीजी सुप्रुषोणी एक सहाय के लिए यान में थे। १५ अगस्त को आपसे सौंपण गया। 'शुद्धपुत्र' से

मद्यनिषेध लागू करने वाले राज्यों का घाटा पूरा किया जायगा

नयी दिल्ली २७ अगस्त : योजना-आयोग के सदस्य श्री भीमलामरण ने एक वर्षों केआयु के भारत सरकार और योजना आयोग ने राज्य-सरकारों को सुविष्ट कर दिया है कि वृद्धि पर वही योजना में मद्यनिषेध लागू करने की विधि में उन्हें जो घाटा होगा, उसे पूरा किया जायगा।

प्रस्तावित अखिल भारतीय मद्यनिषेध सम्मेलन के विवेकित में आयोजित मद्य-निषेध प्रदर्शनों का फल नहीं सुनायमान करते हुए आपसे कहा कि योजना आयोग ने सम्पन्न राज्य सरकारों के पास इस भावपत्र का पर भेज दिया है।

बैतुल जिले में पदयात्रा

बैतुल जिले की अंतर्गत बलौली में १५ अगस्त तक मूदान-पदयात्रा हुई। पदयात्रा में ५३ एकड़ मूदान मिले। ५७ एकड़ का भूमि-विहार किया गया। पदयात्रियों में श्री आनंदराव लोखेदेव-४०५, ६०१, श्री ७०७, सदानन्द, श्री आनंदराव भात्री, श्री नरमदासराव बारन, डॉ० भीमराव विश्वा एवं अणुप्रकाश सर्वोदय विद्यालय, बरगड़के के बर भात्री ने भाग लिया। कुछ भूमिधारियों ने पदयात्रा में भी प्रतिष्ठ की।

रघुनाथराव का आभारदान

माथी श्यामरक निधि (मिज़ार छात्रों) के माग-वेक-केन्द्र, तुलगापुर, जि० धनरा के कार्यकर्त्ताओं ने आभारदान के केन्द्र के तमने २०१ शंटे लम्बी, २० शंटे चौड़ी तथा १ शंटे ऊँची चकक का निर्माण किया। इसी केन्द्र के तमना से ४ बरकरें द्वारा २२ बरकरें मूल मिली। तीन बरकरें पात्र पर रहे हैं।

हिन्दूजट में साहित्य-प्रमियान

श.० २३ ८ अगस्त तक अगम के विममडू कार में बरौदर-अगम की ओर के साहित्य-सहाय मनाया गया। सहाय मनाये का उद्देश्य सर्वोदय-साहित्य और सर्वोदय-विचारों का प्रसार था। साप साथ ही एक उपनयन विनोवा की वरौ की यात्रा को पूर्वीवेपरी के लिए भी हुआ। कार में पुस्तकों के दो 'खाल' रूपाये थे। इसके अलावा साहित्य-अचारों ने बर-बर में बाकर लोपो को साहित्य और विचारों से परिचित किया। इस साहित्य-विनि १७०० रु. की हुई। इस काम में सर्वोदय-कार्यकर्त्ताओं के अलावा स्थानीय कारके के ५२ भार्-बदनों ने सहयोग दिया। लोगों की ओर से भी बहुत उत्साहपूर्वक सहयोग हुआ।

—वाकरनाम सादर सुंग ने ३ अगस्त को सामोपोया प्रमियान-केन्द्र, सामानि में सा.के १२७ रू. भगाने।

रामदयाल और बदनसिंह सुषुत

नामी माई श्री रामदयाल और नदन सिंह, किन्होंने विनोवा की आयु-समरंग किया था, बरहपुर हात्काइ केर में अदालत से एक किये गये।

इस संक में

- देश में संघर्ष घण्टाबन्धी हो १
- कायी : सधन और लकराल २
- मन्थपुर का सरानबंदी मागेलेन ३
- मातृकेतव मिताने के चर्कित का मद्रक बदेगा ४
- सधरकली क्यों नहीं रहे रोती ५
- प्रयति की दिया ५
- सर्वनारी मंदिर के लक्षनके कदम ! ५
- साति-सैक की कर्मभूमि ५
- साति-सैक का पहलू कदम : आत्मनिर्माण ५
- सुधार का तरीका ६
- नयाकन्दी : क्यों और कैसे ! ७
- शुद्धी समारम्भ का सारा ७
- समाचार सञ्चालन १०, ११, १२

'दादा' के कुछ संस्मरण

विनोद मानते हैं कि ईश्वर ने उनके पास से चुनरी सेना नहीं बरामद होती थी "पीनार" ही दिखाई होती तो भी वे अपने ही शक्तिमान मानते। सराठी और संस्कृत भाषा के विद्वान् "पीनार" के साहित्यिक गुणों पर सुभद्र हैं। उत्तर भारत की अधिकांश भाषाओं में गीता के पद्यमयी अन्वय वाद सुने हैं। पर "पीनार" में जो आश्चर्य, रहस्य और शुद्धता का जो वैभव है, ऐसा दूसरे किसी भाषान्तर में नहीं देखें। सराठी भाषियों में उत्तरी लोकप्रियता भी अत्यन्त रूप से। अतः तब "पीनार" की चार भाषाएँ देकर प्रतियोगिता चुनी है। जो आर्यात्वी में प्रथमतः बरने स्वयं गापीली के पास से किसी ओरिजनल पद्य के गीत का। ७२ वर्ष की उम्र में विद्यार्थी के रूप में गापीली उम्र समय बंगाली भाषा सीखते थे। उन्होंने बंगाली में लिखकर लक्ष्य किया।

'आमार जीवन के आमार पायी'

विनोद को भी यह शक्य अवधारणा नहीं थी। उनका जीवन ही उनकी बाणी है, और उनकी बाणी से उनका जीवन ही टपकता है।

इस बादरुपी मातृ की आरम्भ की उत्पत्ति कठोर थी। दिन के ११ घण्टा का नियंत्रित दिनार, पत्थरी के घरभोर हो जाय, हठका परिणाम, दुर्गम शक्तियों को भी मात करे, ऐसी अभाव्य की हथौड़ी; ये उनकी आरम्भिक संस्था के लक्षण थे। उनके आरम्भ-काल के साहित्य में भी यह वैचरित्यता थी और साधकता योही कठोर की शक्ति का लक्षण है। महापुरुष के प्रतिष्ठित वचन का मं० पीनार के शब्दों में कहें तो

जबको भाषा में विकृत थी, लेकिन यह विद्याम विधी जंभी सलत को जीवन के प्रौढ-काल में यह विद्याम प्रौढकी यह सलत बन गयी।

२१ वर्ष की उम्र में लिखी हुई "उपनिषद् की का अन्वयार्थ" पुस्तक ही उनकी आरम्भ हस्त है। तो इस बात का क्याल हमको आश्चर्य है। उनमें प्रसार है, वेग है, कैफियत लाने लाने बाणियों से सौली कलह बन गयी है। नमूने के तौर पर एक ही वाक्य लीजिए।

"सूर्य-किशोर को नमस्ते के लिए अर्धाचन्द्र में उभै उठनेवाले चंद्रसूर्य की एक पांडुल पक्षी ने पीन को चोंचते को हरक लींच कर को प्रेमल करमा न स्वर्ग को प्रथवी के साथ मिखा देती है, सौच पक्षी के तप के निष्का हृदय ज्वाला हुआ है, ऐसे कथन पक्षी के पवित्र शोक से शोक मंदन को प्रेमल कदम भूतकाल को गतिपथ काल के साथ जोड़ देती है, सारी के कर में शीशी की लाम रखती को प्रेमल कंधेवा बा को पेशन के साथ बाँधती है; जो सार्वभौमिक बलिष्ठा मनुष्य का स्या-सुखि के साथ संवीच करने के लिए महापुण्य है योग-विद्या में नमो ह्ये अष्टादि के चरित्र देव ह्ये दिनार द्वारा सीन सुगती है; "तुका मने जें जें

[विनोदाजी के जीवन के बारे में जो साहित्य मिलता है, यह व्यक्तिगत गापीली के व्यवसाय में आने के बाद का है, उनके बचपन और आरम्भ में आने के पहले के जीवन के बारे में जानकारी बहुत कम है। हमें सुझा है कि इन पर एक विनोदाजी के छोटे भाई श्री बालक्रीडाजी द्वारा लिखित कि संस्मरण दे रहे हैं, जो उन्होंने हमारी प्रार्थना पर लिखे रूप से लिखा है — संसार]

बचपन में अपना अवस्था को अटारहत्त वर्ष में विनोदा आजकल की तरह चन्द्रमा को प्रथम भोजन नहीं करने शुरू के समाप्त बहुत प्रचलन है। पर पर उनका प्रायः उय से भोजन था। बड़ों के साथ बीजते में कभी नहीं देखा। केवल माता से जें बीजते हैं। उनके बित्त में माता के प्रति बहुत आकर्षण था। बचपन से ही उनका स्वभाव है। माता उन्हें 'विन्ना' कहकर पुकारती और हम उन्हें 'दादा' कहते थे। माता के बित्त में जो उनके नियम बहुत वादर था।

ते। तें में बटे का वृत्त" —उसने मैं सो-जो सिखा दे, यह-हमें मेरे जेन ही रिखा दे, ऐसी हृदय-निष्पन्न-वक्तु उद्गार के जे जे पक्षियों को पियली है; प्रयोगी के लक्ष्य प्राणिक की मित्र गोर में नमो को सुगती है, जो निष्कर रूप अर्ध-रूप रक्षित विनय को एकत्र बनने के लिए सब वस्तुओं को प्रथमद्वारा बनाकर आर्यात्वी के अन्वय प्रयोग में चन्द्रमा को प्रथवी के चारों ओर घूमी का चरने के चारों ओर और घूमने के चारों ओर और प्रथ को ही स्वर्गपिण्ड की हीर के फिनी के चारों ओर सुगती है; चन्द्र-दरपन के गण्ड के चन्द्र की लक्ष्य उदाया है, जोरे को पुनः के साथ मिलवा दे। जो अमर आशा गुरु को जीवन के साथ जोड़ने के लिए सचली मुण्डी के चरित्र को चन्द्रनी की तरह पिघली है, सती को पति के साथ विद्या पर चन्द्रने के लिए प्रेरित करती है। राज-वीर को रक्षण से प्रमाने नहीं देती, जो आर्यात्वीक समाजकालका प्रसिद्ध चरित्र के मुँह के नैसर्ग-रुग्ण इच्छामु, विष्णुसूक्त एकः—एन प्रथमाया जोनी को जोड़ कर अर्ध-रूप नीच की रूपका नहीं रखता—ऐसे पर्याय निष्ठ के लोह गुरु उद्गार निष्कृष्टा कर उपनिषद् आदि दिव्य साहित्य के रूप में हमारे उद्धार के लिए अन्वयार लेती हैं।—पक्षी है वैदिक क विचार स्वरूप की गाय दगी हुई, हृदया युवाकी, संप्रतिष्ठागीनी, विविध नाम-रूप की वैवा-भूत से उजा, साहित्यरूपिणी, जो एही-लक्ष्य दिग्गमनी है। अर्ध-वीर्य-निष्पन्न की) कथा मानी जाने वाली देवी उमा अफस्य अतिथि।"

महापुरुष के एक श्रुतक विनोद ने "उपनिषदों का अन्वयार्थ" पढ़ने के बाद विनोदाजी को इस आशय पर एक पत्र लिखा कि मैं तब हीन था मैं उपनिषदों के लक्ष्य में प्राणिक हुए लक्ष्यमा सती कथने में पड़े हैं, लेकिन इसकी विनोद गहराई नहीं करी भी नहीं देली।

"उपनिषदों का अन्वयार्थ" "महा-राष्ट्रधर्म" नाम के पत्र में हर पक्षवाटे प्रकट हुआ है। इस पत्र का अन्वयार्थ विनोदाजी करते से और लक्ष्यमा अन्वयारी ही पहले लायादि और पीछे गतिपथ का मैं ने "महापुरुष धर्म" चरते थे। प्रथम रूप में

विनोदाजी राजी को चर प्रायः देरी से आते। थने लोचन ही रात को देते से आते। इसलिए उनके आग्रह को काएण मॉ उनकी पाली वैचार रखती थी। परंतु विनोदाजी के देरी से आने के कारण मॉ उनकी राह देराली हुई देती रहने लगी; क्योंकि दोषों की पाली वैचार रचना ब्रह्मस्य था। इस ११ लोचन जल्दी भोजन कर लेते थे। माता के मुँह से चक्रार निकलते—'विन्ना कभी तक आया नहीं।'

विनोदाजी के आते ही माता बने आदर से उनका चाली स्काइर उनके लक्ष्य रखती। उनके देरी से आने के कारण यह देखने हुए बैठे रहना माता के लिए कुछ उचितक देव था। पर माता ने उनके लिए उन्हें कभी कुछ कहा ही, ऐसा हमें स्वल्प नम है। ये माता के केवल रचना की कला कि उम्र पर वैचरित्य होती है तो दादा को सली साना आने आने के लिए कभी नहीं बरती। परन्तु माता के विषय में उनके विषय में जो प्रवाद आदर

इस काल के उनके लेखों और उनके बाद के गोरे से और लेखों का समर "मयुचर" नाम के पुस्तक का मैं प्रकट हुआ है। आर "भूतल-नर" में परिचय पत्र के रूप में जो विचार प्रकट हुए हैं, उनमें से बहुतों की उर बरसिने के देखने वाले विनोद भी पटक को रन पुस्तक में मिल जाचणी। दान और स्वाग को योग्यता, सारी के अर्ध-व्यार आदि का विश्लेषण विनोदा ने तप भी विचर कर में किया है। लोचन-विचार के लिए अंध में हाक बने का कथने जाने विनोद का निष्पन्न विनोद वरलता से हुए पुस्तक में किया है, ऐसा पहले कदाय दूसरे किसी ने नहीं किया होगा। महापुरुष, महावैद्यार्थी, नरहरिणी है ह्यारि स्वर्न साहित्य-रक्षिक योग्यमा अन्वयार्थ में थे।

परन्तु अनिश्चित चरुस्य को इतना कलित करने को चन्द्रमा विनोदा ने ही काले, पूरा कला का कलत है। "मयुचर" के हृद पुस्तक पर छोटे-छोटे प्रबंध, पार्थिक कटाश और उच्च ह्यारुकर तथा को भी कवि विनोद गौरव मान्य करे, ऐसे पद्य-पाठों सेमने को मिलती हैं। विनोदों का अर्ध-व्यार-विचार में, कलित विनोदों प्रकट के दिव्य साहित्य में अन्वय कथन ही जो प्रथम-पुस्तक—को ही चर काल दे सके, ऐसी पुस्तक "मयुचर" है।

मात्र वा, उनके कारण माता द्वारा नाम को सली भोजन करने आने के लिए हमें कुछ कहा ही, ऐसा हमें स्वल्प नम है।

× × ×

हृद को पवित्र के लिए चरने के लिए दादा निकल कर बरने न काले चरने में धरत से गाठी बरत कर चरने में। पत्र लिखकर पर अन्वयार्थ नहीं से; के कारण माता की उम्र भी बित्त में लगी। पर चर के सत हीन बात है। उनमें नम विचारित ही हुए। माता को ने हृद मकर समाने ली—हृद, यहि ऐसा मानने ल्या कथने कि हृदय यह कथन नहीं था तो हृद हीन अन्वयार्थ नहीं होगा। माता में उनके बाली जाने के समाचार विने और कुछ महीन बाद अन्वयार्थ के कोचर अन्वयार्थ में प्रिष्ठ होने की उम्र भी मिली। हृद है पर छोचने के बाद मेरे सन में उमरनी हृद हृद हीन मेरा क्या कर्तव्य है। चर, के पर छोचने के बाद हमें पर कथी रहने पाविए। ह्यारि विचार आने लगे। अत में हीन पर जोचकर आरम्भ में आने का निष्कर्ष लिखा। एक विनोद के चरित्र के अन्वयार्थ बाद सक गाठी लिखने में दिव्य एक लया किय एक दिन पर पर किसी के बने विना चरवांरत के समन पर ही दीवता-दीवता टेशन गया। अन्वयार्थ में उमर पर राजी को सार्वभौमिक विचार देते आरंभ उर उमय १२ वर्ष की थी। रात को एक चक्रुते पर होना और प्रातःकाली उठने बने कोचर अन्वयार्थ की यह पुष्पा-गुष्पा लक्ष्य लगे। आरम्भ में पुरुषों की लक्ष्य प्रथम इमान रावत से भेट हुई। उनमें ही गापीली लक्ष्य कर प्रथम मकरक किया। विनोदाजी के बारे पुष्पाक भवने पर पता चल

श्री बालक्रीडाजी अन्वयार्थ में विनोदा को दादा कहते हैं,

पक्ष स्वीकृत मर्यादाओं का पालन करते हैं या नहीं। यह आदि है कि इस प्रकार ही स्वीकृत मर्यादाओं का पालन स्वेच्छ से ही हो सकता है। एकराज जब आरम्भ में चला करते तब राजनीतिक पक्ष किन्हीं बातों पर सम्बन्धित हो आते हैं तब फिर उन बातों का पालन स्वेच्छ से करना मुश्किल नहीं होता था। यह पक्षी है कि चुनाव के दौरान में, और जीतने की पुन में, ऐसे कई प्रश्न आते हैं जिन इन मर्यादाओं के उल्लंघन का प्रयोग राजनीतिक ही उनके सामने खड़ा हो जाता है, पर 'बाहरी' कोई भी व्यक्ति या व्यक्ति जैसे समय उपर के नियंत्रण से इन मर्यादाओं का पालन नहीं कर सकता। अन्तर्गतवा वायव्य जनमत ही सार्वजनिक जीवन की मर्यादाओं के पालन का आधार ही रहता है। अतः आधार-मर्यादा स्वीकार करते के साथ-साथ सार्वजनिक पक्षों का और सार्वजनिक क्षेत्र में काम करने वाले अन्य तब लोग 'जा बिना' सर्वोपरि कार्य-कर्ता शामिल हो गए कर्तव्य है कि वे इन स्वीकृत मर्यादाओं और नियमों का अधिक से अधिक ध्यान प्रदान करें और जनमत को उसके पक्ष में बाधित करें ताकि देश में एक सार्वजनिक नियमो हो, जिसके उल्लंघन मर्यादाओं का उल्लंघन करने और सार्वजनिक जीवन के स्तर को नीचे गिराने की कोही दिग्गमन न कर सके।

पंचायतीराज

भारत भारत पहले, सितम्बर १९५० में पंचायत की संरचना परियोजना में एकत्र हुए लोगों ने एकत्रित वे यह सुझावा का कि सार्वजनिक विकास-संयोजन और प्राधान्य-आधारित में प्रयोग होना चाहिए। इस विचारों के आधार पर भारत-सरकार और सर्व सेवा सच के प्रतिनिधियों में वर्षों होकर हुए चर्चों के उद्देश्य और कार्यक्रम के बारे में कुछ बातें सच हुई थीं। सां १९ अगस्त को दिल्ली में फिर से सर्व सेवा सच के प्रतिनिधियों की एक विचार-संवादा के प्रतिनिधियों की एक बैठक हुई। सर्व सेवा सच की ओर से इस बैठक में जनकमल नाटयण, चक्रवर्ती राज, अन्नाभाई सहायदेव, पीकुल्लाई मंडू आदि उपस्थित थे।

वैलजन्म की विचारों के अनुसार विचार-आन्दोलन और प्राधान्य-आधारित का परस्पर सहयोग प्रामाण्यी सुचो तक सीमित था। पर इस बीच पंचायतीराज का जो नया प्रयोग हुआ कि गया है, उसके स्तर में इस सहयोग का क्षेत्र-कमी-कमी बनने-प्राप्ति भारत तक फैल जाता है, इस बात की ओर संकेत करते हुए भी वे न केवल सर्व सेवा सच के पंचायतीराज के प्रयोग को ध्यान नमाने में योग देने की व्यतीक की। विचार योजना के उद्देश्य और सहयोग के कार्यक्रम के बारे में पहले दोनों आँसु को तब स्वीकार दिने गये थे, उनकी फिर

से प्रति करते हुए, तथा में यह सर्वगत रूप-सिद्ध कि पंचायतीराज के स्तरों में योग-सिद्ध का कार्यक्रम सर्व सेवा सच के अपने उद्देश्य का ही ही ही महानुभूति है। सर्व सेवा सच के प्रतिनिधियों ने इस बात की ओर ध्यान आकर्षित किया कि

न लिखें पंचायतीराज के अन्वेषण सामर्थ्य के लिए, बल्कि लोगों में उसके लिये उत्साह पैदा करने के लिए और यह जरूरी है कि सामाजिक व्यवस्था, प्राप्त करने जातीयिक के लिए पर्याप्त काम मिलने का आशय को संसर्गक हक है, ऐसे सुनिश्चिता बातों की प्रति होना आवश्यक है।

उक्त प्रश्नों में कमीन के लगान की आवश्यकता पंचायतों को सुभूत करने का तब किंचा का पुत्र है। प्रश्नों में इस बात पर क्यों दिया गया कि लगान की आवश्यकता पूरी की पूरी पंचायतों को और देने की बातें-बाहरी सच प्रश्नों में पंचायतीराज को जारी चाहिए। तथा में इस विचारों को ही इतराया कि जब सम्पूर्ण क्षेत्रों को सर्वर पहुँचाने के लिए एक प्रकल्प में लगान का और विचार एक 'उत्कृष्ट पत्र' में समा किया गया।

सर्व सेवा सच की ओर से यह भी सुझावा गया कि विकास-विभाग के प्रयोग-क्षेत्रों के अन्तर्गत प्राधान्यी क्षेत्रों में, सच-कार की हस्त-प्रतिनिधियों को आर्थिक मदद पहुँचाने के लिए केन्द्रित सरकार की ओर से एक विशेष निधि स्थापित की जानी चाहिए।

उक्त प्रश्नों में पंचायतीराज का अर्थ यह था जो होना था अर्थात्, उल्लेख यह चाहिए कि अर्थ-पंचायतीराज की सहायता के लिए आम लोगों को, पंचायतों अर्थात् उनके प्रतिनिधियों का और सच-कार की कार्य-कार्य का पंचायतीराज के उद्देश्य और हर वर्ग के अपने-अपने कर्तव्य तथा अधिकार आदि के बारे में शिक्षण का कार्यक्रम बनाने आवश्यक है। लोक-शिक्षण के इस कार्यक्रम के महत्त्व पर जोर देते हुए विकास-मन्त्री, श्री डे ने सर्व सेवा सच के इस काम में अपनी व्यक्ति-जानि और सहयोग देने का निश्चिन्त किया। जिस प्रकार आज के देश के कड़े-कड़े सच-कार की क्षमता बढिये-नये गये हैं, उभी प्रकार पंचायतीराज के कार्यक्रम में लोगों के अन्तर ही को क्षमता बढिये-नये या पर्ये हैं, उनकी ओर ध्यान आकर्षित करने में मदद देते हैं। दूसरे प्रश्नों में, पंचायतीराज में सम्पूर्ण क्षेत्र के 'पंचायतीराज के महत्त्व को स्वर धारित है। श्री डे ने यह भी स्वीकार किया कि सहयोगी समाज की स्थापना के लिये और उद्योगों के विकेन्द्रित करने के लिये पंचायतीराज निर्णयक है, तथा सदस्यी क्षेत्रों और प्राधान्यी क्षेत्रों के विकास के आधार पर सुविधा-योग्यता-प्रदान के प्रयोग के लिए प्रामाण्यी क्षेत्र अधिक उपयुक्त हैं।

सर्व सेवा सच का और सर्वोद्योग-कार्य-कार्योक्त का मुख्य उद्देश्य यह है कि लोगों की क्षमता अधिक जागृत हो और उनकी इस जागृत शक्ति के तब पर से अपना सारा काम-काज स्वयं ठा ठा लें, अर्थात् लोक-स्वराज्य की स्थापना हो। यह विकास भी नीचे से हो, सभी सेवा लोक-स्वराज्य हो। पंचायतीराज की शुद्धता यह है कि सच-कार ने ही हो, पर इस प्रकार नीचे से लोक-स्वराज्य की स्थापना होने की बात प्रामाणिक सीधी है। पंचायतीराज लोक-राज में परिणत हो, इस काम में सर्वोद्योग-कार्य-कार्योक्त को पूरी शक्ति-संगती चाहिए। अन्तर्गत लोक-शिक्षण ही इस परिणत की कुंजी है।

तीसरी पंचवर्षीय योजना

सभी कुछ दिनों पहले तीसरी पंचवर्षीय योजना सरकार की ओर से रोज-रमा। पंच की गयी और स्वीकृत हुई। उस समूची योजना के प्रामाण्यी परिणतों के बारे में विचार से लिखने की आवश्यकता है, पर अभी केवल उनके एक पक्ष ही और हम च्यान आकर्षित करने चाहते हैं। इस योजना में देशी के विकास और-उत्पन्न उत्पादन बढ़ाने पर जारी जोर दिया गया है और इस विचारों में विचार-प्रधान काम करना रोचक, संभव लगाने तथा पर्याप्त मात्रा में स्टाद आदि के उत्पादन का विकल्प दिया गया है।

विद्युत् की क्षमता के लिए जारी आवश्यक सामग्री और सार्वजनिक उद्योग-कार्य, पर अन्तर्गत काम करने-वाले को जले करने की प्रेरणा न हो तो यह सारा आयोजन व्यर्थ हो सकता है। आज हमारी अर्थ-व्यवस्था योजनाओं का बड़ी हाक है। ऐसे ही तो बनी नहीं है, पर केवल पैसा कम करने-वाले व्यक्ति को प्रेरणा नहीं दे सकता।

देशी के विकास में आज को बड़ी रुकावट है, उनमें से एक पक्ष की क्षमता के बारे में है। हर कार-सहायता अर्थात् मातृ का पैसा लगाकर उसकी विविधी-भोगत उद्योगों के लिये उनके अपने लिए सच निश्चित सुझावा शामिल रहते हैं। देशी की उद्यम की विविधी-भोगत आम उद्योग-कार्य-कार्य-कार्य के हाथ में नहीं है। कुछ लोग कहते हैं और समझते हैं कि सरकार देशी की उद्यम की न्यूनता कोष तब कर

पावस रूप में विनोदा

श्रेय पयोधि से स्नेह खिये यह, बाबा बहादुर होकर आयो। हित, मद्र, लोग के धारण से, जन्ता जन-मानस मुक्त करायो। सुख का धोप गंभीर हुआ, प्रत्येक प्रदेश में को छहदरयो। सच पे मुख शीतलता बरसवत, भावे पंचरमाम को रूप बनयो।

देशी सच कुछ ठीक हो आयना। सभी शय में यह कार्य नहीं है। यह उक्त अन्त उद्यम को बढाने, न बढाने के नियंत्रण की शक्ति विभाग को उत्तरण नहीं होवे। इस तक कोई बाहरी नियम उभरी मद्र नहीं कर सकता। इसका महत्त्व यह है कि अगर हम देशी की तरफको चाहते तो हमें सम्पूर्ण प्राम-जीवन की पुनर्जा पर ध्यान देना होगा। अगर हम लोगो को हमारी सारी योजनाओं की सुविधाद मानते हैं, नैरा कि लोक-राज की स्थापना में हमारे ये काम गया, तो देशी के विकास में तो भी आबारी सामाजिक का आर्थिक व्यवस्था बाधक हो, उसे बदलने की क्या इच्छा है? क्या गांवों के पुनर्जावन को प्रामाण्यी क्षेत्र के पुनर्जावन से अलग नहीं है, हम हमारी योजनाओं की सुविधा मानने को छोड़ देंगे? विचारों, आर, कर्मों बीच तथा लोक-सुधार की सच योजनाओं में से एक आवश्यक है, पर एक ही सुविधाद के लिये न सच विचार है।

बर्मा सरकार का प्रतिगामी कदम

बर्मा की सरकार ने एक वादत पा करके बौद्ध धर्म को अपने देश के सम्पूर्ण का स्थापन दिया है। बर्मा के प्रधान मंत्री, श्री उ नू एक अन्वेष-कार्य के प्रतिनिधित्व बर्मा हैं। पर उनकी इस सौची इति में बर्मा में बहुत सहायतापूर्वक लोक-राज है। यह सही है कि बर्मा की अर्थ-व्यवस्था बौद्ध धर्मोपस्थापना है। फिर भी, बाहरी क्षेत्रों संस्था में ही 'बर्मा' न हो बाहरी ईसाई, उद्योगान आदि नहीं हैं। राज्य का अन्वेष नागरिक के जीवन से गहरा सच आँस है। उक्त किन्हीं सार्वजनिक-विद्येय से संघ जाना, बावजूत पूरी सच-रक्षा है, उस संघ में बाबा पहुँचा सकता है। अन्वेष-कार्य संस्था का संगठन का सच पालन करते हैं तब भी बाब अपने अन्वेष-कार्य से गिर जाया है देशी आन्व तक के सुनिश्च को उस धर्मों के हस्तित्व का अन्वेष है। पर इसके आगे बढ़कर बर्मा सार्वजनिक का सच कुछ जाता है सच तो बर्मा और भी विद्युत हो जाता है। बर्मा क्षेत्रों गहन सच का संस्था के रूप में या सार्व-सच का साथ बर्मा विकास रचना अर्थ-व्यवस्था भी, और विकास रक्षा तो हाथ हुआ होना प्रति का नियम है। अन्तः सच को सर्व के हित की दृष्टि से भी बर्मा सरकार का महत्त्व कदम ही उद्योगित लगता है। इन सब दृष्टियों से लोगो हुए बर्मा सरकार का कदम हमें प्रतिक्रामी मान्य होता है।

विहार-यात्रा-“वीधे में कट्टा”

[१]

“पुनन्दव हरिः ३३ । भूदान प्रालिप्त में लय जायें और अपनी पुरी शक्ति ध्याजमायें ।”

बाबा विनोदा का यह संदेश सर्वसिद्ध-सम्मेलन को मिला। “वीधे में कट्टा” आन्दोलन बिहार में बारम्भ होनेवाला था और उसमें सहयोग देने के लिए प्रान्तों को वकील की बर्षी थी। गुजरात से दो कार्यकर्ता दो महीने के लिए जून १५ से आयेंगे, ऐसा आह्वित हुआ था। उसके अनुसार [यो हर्षकान्त बोस (जि० नूत) और श्री रतनमाई झा (जि० सावरकडा)] हम दो कार्यकर्ता इस आन्दोलन में बरीक होने के लिए बिहार की ओर रवाना हो गये।

बिहार में २० जून से ८ जुलाई तक आंदोलन में प्रचार कार्य किया। हमने गया जिले के परिया-मुकाम और शेरपाटी शाने में गया की। तीन दिनों में से परिया आने में धरी-धरी दर देहात में जो भी मिले २० बने या जो भी मिले। गुजरात से दो कार्यकर्ता भी परिया आये और उहाँ केन्द्र से इन्सिस्टेंट के गोंयों में अनुसूचक के अनुगार कार्यक्रम बनता रहता था।

इस यात्रा के दरम्यान अनुसूचक के अनुगार धरणी-मोटी-मोटी दोली में आना, कमी सार्विक रूप में आना, कमी पहले से कार्यक्रम बना कर आना, जो कमी गोंय के लोग तब काले उधर दिन आना होता था। भाषा में वीधे में कट्टा आभियान के बारे में ही बात करते थे। फिर भी प्रारम्भिक चरण का चित्र भी उनके सामने हम रखते और इवीलियट यह कार्यक्रम उद्यम प्रथम चीजान है, ऐसा बतते थे।

लोगों द्वारा हमारी यात्रा और बिचार का अग्रदूत बगद डीक तरह से स्वागत होता था और दान भी मिलता था। “वीधे में कट्टा” का प्रारम्भ आनेवाला है, उद्यम अक्षर भी कुछ था, पर इतना नहीं था कि लोग दान देने लगे। अन्तर्गत दान का भी इस दिशा में सहयोग जारी अवर करता था। इस तरह यह निश्चय परीक्षण-एक हद ईसा नमाने में बहाकर बने थे।

इस कार्यक्रम में शामिल होने के कारण जो कुछ अनुभव हुआ, इन्हें हमारी अक्षा बूझी है। १ दिग्गमर तक बिहार में इसी तरह हम प्रचार-कार्य करते रहेगा उद्यम होता ऐसा भी लगता है। पर गुजरात की भी भूमि-विचार-कार्य की निम्नपाटी थी है, इन्हियट नामक लीट है। महा-मोक्षे लीने के अनुगार से गुजरात देना उचित नहीं है, फिर भी भाषाकार्य कुछ उद्यम है और है।

(१) अग्रिक कार्यक्रम सात्वत-पूर्वक चलाना जायें तो यह आंदोलन फलदा हो सकता है, कमी बिहार की कट्टा में दान का संस्कार है, देहा दर्शन देते हुआ है।

(२) चीजदारक कोर लगाने की इति से अग्रिक ३ अक्षरम निश्चय की गयी है, यह अच्छा ही है। फिर भी १२ लाख एकर भूमि मिलेगी या नहीं यह तो बाजार-परल पर निर्भर है। दान लीनेके लिए मिल गये, तो भी एक एक स्वामिन विध्वंसन उद्योग रूप से न हो जायें, तब तक यह कार्यक्रम छिड़ना नहीं चाहिए। इन्हें “कट्टा” ही भी आना है। इन्हियट यह कार्यक्रम से दिग्गमर के बाद भी चलते ही रहना चाहिए।

(१) लीने के मजदूरों की लीने में लीने की जाती है, यह के नाम पर कर देने का अभियान चाहिए।

(२) लीने के मजदूरों की लीने में लीने को सुरक्षित नहीं है, निश्चय नहीं है, यह भी उनके नाम पर देने की बात करनी चाहिए।

इस लगे भूमिदान का वास्तविक चरण, नया भूदान भी मिलेगा, फिर भी होगा। फिर भी भूमिदान का एक दर्शन नहीं हो सकता; यह हो लोग लीने है।

फिर से नाम प्राप्ति है कि यह हमने एक उद्यम है, लक्ष्यहीन, इतिवृत्त न माने लिये है।

इस आंदोलन के कारण भूदान के नये अभियान में सहयोग देने का हमें अक्षर-मिलत और बिहार के कार्यकर्ता, इन्हें लीने का भी मजदूर उद्यम मिलेगा यह हमारे लिये अनुभव भी की गयीं लीने लीने है। मजदूर लीने के और भी मजदूर और सात्वत का गुण हम लीने लीने है।

इत्यादि-अक्षर, वेडली, हर्षकान्त बोस, जि० एल (गुजरात)-रतनमाई झा

योग्य के लिए जाने का कार्यक्रम बनाना चाहिए।

(८) बड़े बनीनवाले और बहुत धन भी मोजूद है। हर एक जिले में इन सब भूमिदाता-गणों का धिखिर या संभोजन करना चाहिए और देव के प्रसिद्ध, अन्तर्धीय-मिताओं, लीने के साथ विचार-नवायें करनी चाहिए। निर्माण के नाम में देव का यह नया कार्यक्रम-निर्वाहन (वीधा-नट्टा नहीं) क्या ही हो सकता है, उलकी योजना, चर्चा करनी चाहिए। विद्यमान का आरम्भ है, फिर भी नीधे दिया कार्यक्रम वीधे में कट्टा के अथवा जोध का सकता है :

[२]

उत्साहपूर्वक प्रसंग

“आज सुबह से यहाँ का वातावरण कुछ और ही बंधां बनकर रहा है, टोली के प्रवेश के साथ ही साथ वज्र, बूझे, मीजवान बाहुर निकल पड़े, नाचो की लो घूम ही चली हैं और ऐसा लगता है कि इस बहुर टोली में लीने रंजत ही बदल दी। और जगहों में घर-घर जाकर वीधे में कट्टा का नाम पोचना पड़ता था। ली, बिचार कर रहे हैं, घर में माणिक (बड़े भाई या पिता या लक्ष्मण) नहीं है। आयेंगे तब ही सौच के सिद्धांत, ऐसे डीले, सुस्त जवाब भी मिलते थे। लेकिन यहाँ पर स्वयंस्फूर्ति रिलीने है। हमारे उत्साह को अनेक मुना बडा दिया इस गान ने तो।”

में शेरकडवा कोरी बाले भी सुबह प्रसार के साथ भैरे आखिरी पद्य पर गया, तब राजस्वान के भैरे साथ भरे भैरेय स्वात विरको अलख पद्याग्र-टोली के मायक, भी प्रथम सङ्ग अपना पावें बखल कर गये हैं। ये बहुर ही प्रसन्न हिले लीने सहज भाव से ऊपर के उद्गार निकालते लगे; कर्वाँकि बखर कोरी, वास्तुदेव उद्यम लीने स्वामी का इत्यम अनुभव उद्यम गारत का।

इस बगद घर गारत का समा आरम्भ हुई, विस्तर के साथ-साथ मायक हुए और दान के एलन होने लगे, तब मुक रहने वाले को लला कि वे कुछ लो रहे हैं, इलीलिये वे गी दान भी पोष्य करते लगे। लीने आगे आने लगे। लोरे में स्वत एक गाता ने अपने लडके के साथ कहलया कि अपने भी कट्टा लिखा लो वेडा। बाबो, इय, दान देने में भी उय रह जायें।

इस तरह की भावना लेकर वह नया अग्रय, तब भी मरीधे भी भी बहा, “जो मरीधे एक एलन हाव्य फपवते रहे, मजदूर यद्य, शुक्रवार, ८ सितम्बर, १९६१

जिनकी पुण्य-तिथि हमें कर्मयोग का संदेश सुनाती है

९ सितम्बर ५२, मंगलवार की सुषमा के ६-४४ पर श्री किशोरलालमाई अपना पंचभौतिक शरीर त्याग कर घट-घट वासी बने, और सूची यह कि घंटा भर पूरे ५ बजे शाम तक वे कर्मरत रहे। प्रभु की यह नैसी माया है कि मनुष्य जो चाहता है वह नहीं होता। यद्यपि किशोरलालमाई नहीं चाहते थे कि काम करते-करते ही उनका प्राण निकले, बल्कि उनकी इच्छा थी कि अथ काम से निवृत्त होकर एवं जीवन बिताने एवं मनन में वितानें; तथापि प्रभु की इच्छा ऐसी नहीं थी कि वे निवृत्त-जीवन वा उपभोग करें। वह सकते हैं कि अंतिम क्षण तक उन्होंने प्रभु या बापू का काम किया। जोयें भी उसी लिए, मरे भी उसी लिए।

बापू को सपन तथा पुण्य के फलरूप यह देस आवाह दूखा। इस आदि-सक जंग में तो वे पूरे जूके ही थे, साधु ही आर्थिक एवं सामाजिक क्षेत्र में देखा-व्यापी शुद्ध आदिशासनक क्रांति बना हो, इसका चरदर बितन बापू के जाने के बाद से बराबर उनके मन में चलता रहा। उनका सुभे नजदीक से अध्ययन करने का लोभाय मिला था। और जब विनोबा को भूदान-पत्र चारम हुआ, तो उन्होंने इस आदिंसक क्रांति का ऊकट समर्थन प्रदान किया। समर्थन ही नहीं आत्मिक सहयोग भी उन्होंने अंत तक विनोबाजी को प्रदान किया। समर्थन ऐसा, कि विनोबा को छोड़कर सायब ही इनके समान लागाना तथा पूरी हार्दिकता के साथ किसी दूसरे विचारक और विचरक ने उस समय इस क्रांति का समर्थन किया हो। विनोबा को भूदान पर उनका पूरा विश्वास ही नहीं अपितु भरोसा भी था। सभी को उन्होंने कहा था : "आर्थिक एवं सामाजिक क्षेत्र में देखाव्यापी शुद्ध आदिशासनक क्रांति को सफल बनाने का एकमात्र यही मार्ग है। इस क्रांतिकारी कार्यक्रम के अंदर देस की समाज समस्याओं का आदिंसक हल और देस की समाज धर्म्य आकांक्षाओं को सिद्धि निदिह है।"

रोम्या रोमन ने सप-सोप की उपमा के दुष्मा करते हुए कहा है कि सत्य-सोपकों की विधि प्यार खाने वाली की होती है—विश्व प्रकाश कि प्यार खाते हुए आँसों में आँसू आ जाते हैं और जान कनकनने लगते हैं, उसी तरह किशोरलालमाई ने किसी कोई सुरब्ध नहीं की, बरिह सत्य-सोपक को मौति निरंतर निवृत्त होने रहे। और विनय को कभी नहीं छोड़ा। लेकिन कुछ क्षण के पूर्ण विनम्रता द्वारा अच्छे-अच्छे और बड़े-बड़े का दिमाग दिखाने थ्यते रहे। इच्छादिप देते थे सबके निम्र भी बने रहे।

अध्याक एवं गहन बितन उनकी अस्मिता बमार्थ थी। और सुदमनी के मास पूँसी पर उन्होंने कोई मायावाह अथवा भ्रमपार भी नहीं देखाया, बल्कि विनोबे को कुत्र भी उन्हें मिला उसे उन्होंने मझी मौति बनाया और उन सुदमनी के श्रेण को पूरी तरह स्वीकार करते उसे अपनी सदा के रूप में, और मलाई-सुपई की पूरी निमोदारी छुद उठाकर उसे समाज के शान्मे एक नवीन माविहारी विचार एवं बसुके के रूप में पेश किया। और निरभिमान काम करते हुए निरंतर वे अपने अंदर यह भावना बनाये रखे कि जान या अनजान मैं भी किसी के साथ उनके अपाय न हो सके। बापू की हत्या के बाद 'हरिजन' पत्रों के बंद हो जाने पर उन्होंने हली कसौटी के 'मगनना भरोसे' उनके संवादन का काम अपने सलक कंधे पर उठाया था।

बैठते और हाथ में इस तरह लेगती थे जैसे जैसे लुभ भर पूरे उन्हें कुछ दुखा ही न हो, उन पर कुछ नीहा ही न हो।

मत्त तथा म्याव का जिनके जीवन में आयाद होता है, वं शरीर से थके ही दुर्बल हो, म्यावि पीड़ित हो, और उनका शरीर दाम-निम्र सभरुणोप बेचना एवं यातनाएं सहन करता प्यता हो, फिर भी उनकी आत्मा इतनी सबल होती है कि मयापय तथा मत्तव का प्रतिकार करने में शारीरि-म्यावि या कर्मभारी कभी भी उनके शायक नहीं होती। प्रति-बुद्ध शारीरि-क विरि, पयुता बा परममन्य उनकी आत्मा के सफल को कभी भी बरन नहीं सकता।

पेग और म्यावि तो युवावाह से ही उनके मित्र बने थे। इसलिए थंका उठी कि ये इस कठिन निमोदारी की पूरी उत्तरता के साथ कदाचित ही संभल सके। किशु अत्यफाल में ही अपनी शक्ति-समता से उन्होंने सवार की शक्ति कर दिया, जो युवा ही शक्ति को भी छपा देनेवाला मानित हुआ। प्रतिदिन और निरंतर शारीरि-क इतना रहता था कि देखने वाले तब बसना जाते थे। साथ लेने के लिए हर घंटी देखाओं के साथ सधाम करना पड़ता और उसके बावत नृहने-नृहने परकें उठते ही जाया। सिमट कर बैठ नाते और पेग का आक्रमण हलका होते ही शिर देखे उठ

वसी तो विनोबाजी ने एक दिन कहा था : "किशोरलाल माई के संघ विचने प्ये हैं, पंच-पञ्चकार देला है, चर्चार्थ विचने सुनी हैं, बह दो उरें जानते ही हैं, लेकिन उरवे भी अधिक बह आदनी उरें जानता है, विचने परोप-पार के लिए उनको अपना शरीर शिखते देला है। उनके हृदय के परिशुद्ध गुण इतने आकर्षक थे कि विश्व प्रकाश हृद में डाले ही विभी के इच्छने के विरय में जान और प्रेम दोनों एक साथ ही उत्पन्न होते हैं। और प्रकाश किशोरलाल माई को आनने के साथ ही उन पर भडा और प्रेम दोनों समरे अंतर पेश हुए निना नहीं रहे। किशोरलाल माई का एक विष

वसी तो विनोबाजी ने एक दिन कहा था : "किशोरलाल माई के संघ विचने प्ये हैं, पंच-पञ्चकार देला है, चर्चार्थ विचने सुनी हैं, बह दो उरें जानते ही हैं, लेकिन उरवे भी अधिक बह आदनी उरें जानता है, विचने परोप-पार के लिए उनको अपना शरीर शिखते देला है। उनके हृदय के परिशुद्ध गुण इतने आकर्षक थे कि विश्व प्रकाश हृद में डाले ही विभी के इच्छने के विरय में जान और प्रेम दोनों एक साथ ही उत्पन्न होते हैं। और प्रकाश किशोरलाल माई को आनने के साथ ही उन पर भडा और प्रेम दोनों समरे अंतर पेश हुए निना नहीं रहे। किशोरलाल माई का एक विष

वसंत रूप में बाबा विनोबा

सत्य सत्य, कठुया की त्रिविध समीर साथ,
पंच दान, पंच हाथ साथ, छिडे धायो है।
दिस-देसन्त में कुण्डित पुण्य-मस्तिन को,
प्रेम के प्रकाश में सुरभित कर जायो है।
जै जगत् का नारा, कोकिल की सुखीली तान,
संग शांति-सैनिक विविध विधि जायो है।
भारत के बाप्य से भारत की धरा अन्न,
चतुषा के अंगार हेतु बांसा बसंत बनि जायो है।

—मन्त्रिका प्रसाद

● पंचदान—भूदान, धर्मविदान, अन्नदान, धार्मिक, शरीर पर धान

मनन 'संत परम हितगो' वा।
मन्नन उन्होंने आधम
लिए खाव कर के सुखाय था।
आरिणी पर 'मिनाभावोत दिन
धवायों किशोरलाल माई के वंन
भरान लग्गु होता था।"

किशोरलाल माई की मृत्यु ने
महीने पूरे उनकी भागी ही मृत्यु हुई,
तब वे उनके सपने में और उनकी मृ-
मृत्यु को अत्यन्त निश्चलते उ देखते थे
था। उनकी भागी मृत्यु के समय मीरों
वेदना तथा कष्ट सहते हुए भी डेड अन्न
पान तक बह पदार अन्न ही, ए
अनुत्त बात ने उन्हें गहरी बितन में र्ण
दिखा था, जिसके विचय में गीतले
छानवीन करते हुए, विनोबा ने जू
लिखा था :

"भी किशोरलाल माई!"

शुद्ध निमित्त बितन पर बह
अंत में अपने निश्चर निकलने
कासत रहे हुए वेदक को घाटे
सहन करने की शक्ति काँवर।
लेकिन इतना हीने पर भी वह मरने
दया नहीं, यह भी अपने सल
नाम है। वह संभय ही है ही।
क्या है कि बाबा की शक्ति
शक्ति में मित्र पदनामना ही पय।
दोनों का भेद समर्थन और मरने
वीक बह सभय है। लेकिन सुभे
मश भी मझी दवा में नि
लगाती है।

"उज्जवा भुजङ्गमिष"—एक उज्ज-
इतनी परिचित ही गई है कि अंत
परिचय के कारण बह कोरें भर
नहीं कर रही है। लेकिन उर
पचप से अगर इन मुक्त हो सके,
बह इतनी गहराई है कि नावी है
जवनी गहराई में और कोरें विचर
नगरी नहीं पृथ्वी, देला सुभे
क्या है।

गीत में 'वीर' शब्द दोहरे अर्थ
में आया है। (४०) एक बल्लेक १४,
१५) एक 'सुवि' पर वे (बल्लेक
१५) और इक्षुव 'री' पर वे
(बल्लेक १९) दोनों के योग के
बिना अपने राम का काम नहीं
बनेगा, देखा विनोबा ने समस्त
बिधा है।

"विनोबा के प्रमाण।"

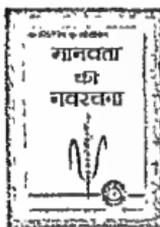
किशोरलाल माई का संभलक दर्श-
एक हठ मकर अथवा भोर प्राण इतनी
अभरता के निकले कि प्रायः अंतिम क्षण
तक उन्हें जगति रहे और 'प्रेम' धर
मीने आधानी से उचरारन कर रहे।
न्यान उनकी सुप्रतिथि के अमर
पर इन उन्हें शारद श्रद्धांजलि अर्पित
करते हैं।

—नरोपासकृष्णा मलिक

साहित्य मानव-समाज का दर्पण है

सर्व सेवासंघ के अल्पमोली और बहुगुणी साहित्य की कतिपय विशेषताएँ

- सर्व सेवा संघ प्रकाशन, काशी ने ऐसा उत्कृष्ट साहित्य आपके समक्ष उपस्थित किया है, जो आपके नैतिक, सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक जीवन में संतुलन पैदा करता है।
- उसने साहित्य-प्रकाशन के क्षेत्र को एक नया मोड़ देकर उत्कृष्ट साहित्य सस्ते से सस्ते दामों में उपलब्ध करने की परम्परा को जन्म दिया है।
- सर्व सेवा संघ प्रकाशन की प्रत्येक पुस्तक आपके एक साथी की भाँति सही विचार देती है और जीवन को प्रत्येक क्षेत्र में आपके सहारा देती है।
- हम नहीं चाहते कि आपको ऐसा साहित्य दिया जाय, जो गुरु ध्रमया डिक्टर बनकर आपको उस मार्ग पर चलने के लिए बाध्य करे, बल्कि हम इतना ही चाहते हैं कि साहित्य आपको केवल विचार करने का दृष्टिकोण दे दे। फिर आप स्वयं अपने मार्ग का निर्णय करें।
- साहित्य यह नहीं है जो आपका मनोरंजन करके आपके समय को पूरा करने का बहाना बने, बल्कि साहित्य यह है जो आपके कर्तव्यों का तथा समाज के प्रति आपके उत्तरदायित्वों का आपको भान कराये।
- सर्व सेवा संघ-प्रकाशन इसी उद्देश्य से आपके आस-पास कुछ घुना हुआ साहित्य बिखेर देना चाहता है। उसमें उपयोगी चीजें आप स्वयं चुन लें।



जीवन, समाज और विश्व की उन बेसीरी बातों पर शा. शी. कीन का एक वास्तविक दर्शन, जो हमें अंध परंपराओं, रूढ़ियों

और बह मान्यताओं से ऊपर उठ कर धोखे के लिए बाध्य कर देने वाली यह पुस्तक अमृत मित्र की भाँति हमें नया जीवन प्रदान करती है। पृष्ठ ३२०, मूल्य २-५०



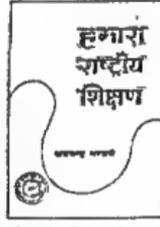
मानव के साथ अनेक कर्तव्य जुड़े हुए हैं। समयसार भी जुड़े हुए हैं। उन समस्याओं के प्रति शोध का मार्ग भी तो एक नहीं। पवित्र हेमन्त विचार

रुद्र ठेकेदार हैं- विनोद उन समस्याओं के प्रतिरोध का अद्वितीय मार्ग बताते हैं। टीक उरी चार वेदों में बताया। पृष्ठ ८४, मूल्य ०-५० न. २.



साहित्य का दर्शन जीवन को ग्रहण है और मानव को जीने की कला सिखाना है, यह निष्कर्ष अमृततर में विनोद तथा देव के द्वारा मुख्य साहित्य

कार्यों ने मिल कर निराला है। यदि इस बर्तमान का जीवन ने न किया तो वह अपना महार को देना। पृष्ठ ८८, मूल्य ०-५०



यह देश शिक्षा है, हमें हमारे देश के लिए शिक्षा देनी चाहिए और हमारे देश के लिए शिक्षा देनी चाहिए। पृष्ठ २३६, मूल्य २-५०

को राष्ट्रीय-शिक्षण की दृष्टि में लेने की एक प्रेरणादायी पुस्तक, जो कुछ दिनों के पठन में अपना महानुभूति योग देने के लिए प्रकट हुई है। पृष्ठ २३६, मूल्य २-५०



यह शरीर महत्त्व की ही देन है। महत्त्व की इस उपलब्धि पर साहित्यिक प्रयोग ही सफल हो सकता है। इस अत्याधुनिक तर्कों के मोह में

क्यों कर्म! पर सुविचार को यह है कि हमें साहित्यिक जीवन का आनंद ही नहीं है। इस आनंद की पूर्ति के लिए यह सुलभ उप-योगी शिक्षा होगी। पृष्ठ २२४, मूल्य १-५०



वेदों में वेद उल्लास उन सभी उपलब्धियों के मित्र लिखते हैं, जिन्हें पढ़ कर केवल मनोरंजन किया जाता है। यह एक ऐसा उल्लास है,

जिसे पढ़ कर हमारा हृदय कण्ठ से भर उठेगा और हम सेवा के लिए प्रवृत्त हो जायेंगे। पृष्ठ ३२०, मूल्य २)



बर्तमान और अहमदाबाद के कला के लिए हृदयक भारतीय जनता का ही एक स्व-व्यवहारी, यह

वही कला के आभिलषित को अस्वीकार कर देगी। पृष्ठ २८०, मूल्य २-५०



साहित्य का दर्शन जीवन को ग्रहण है और मानव को जीने की कला सिखाना है, यह निष्कर्ष अमृततर में विनोद तथा देव के द्वारा मुख्य साहित्य

कार्यों ने मिल कर निराला है। यदि इस बर्तमान का जीवन ने न किया तो वह अपना महार को देना। पृष्ठ ८८, मूल्य ०-५०



देव का भी और माता का लक्ष्य था-आत्म-स्वराज्य। पर आत्म-स्वराज्य भया है। इस प्रश्न का उत्तर यह पुस्तक

देगी। पृष्ठ २१६, मूल्य ५६



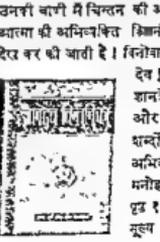
स्वराज्य की को धरने के स्व-राज्य की अनुभूतियों से भर दे। अपना स्वराज्य भी पकड़ने का लेख बन जाता है। स्वराज्य की शान्ति, स्व-

नीति का यह प्रयोग और स्वराज्य का मुक्त आनंद देते मिले। यह समस्या के लिए इस पुस्तक का अत्यंत-उपयोगी लेख। पृष्ठ २००, मूल्य १)



मारी यह शक्ति है, जो शरीर शक्ति को प्रेरणा प्रदान करती है। विनोद जी की शक्ति को पहचान लें। हमने भी जो उत्तम जीवन

रखान न देकर एक ऐसी मूल्य की है, विनोद का हमें आभिलषित करना है। पृष्ठ १५४, मूल्य १)



साहित्य का दर्शन जीवन को ग्रहण है और मानव को जीने की कला सिखाना है, यह निष्कर्ष अमृततर में विनोद तथा देव के द्वारा मुख्य साहित्य

कार्यों ने मिल कर निराला है। यदि इस बर्तमान का जीवन ने न किया तो वह अपना महार को देना। पृष्ठ ८८, मूल्य ०-५०

साहित्य-प्रचार अभियान के लिये कुछ सुझाव

पूर्णाचन्द्र जैन

[११] निम्नपर से न अन्तर-हक को सर्वोदय-साहित्य एवं पत्र-परिचर्याओं के प्रचार का अभियान प्रारम्भ होने जाना है, उनसे लिए सर्वे होना सम से नयी धी पूर्णाचन्द्र जैन से कुछ उपयोगी सुझाव दिये हैं, उन्हें हम यहाँ दे रहे हैं। —सं०]

(१) लोकवेदक व गौरी-सैनिक

(क) नरार्थों में पर-पर साहित्य जिन व मूढान पत्र-परिचर्याओं के माहक बनाने का प्रयत्न करें। एक समय देवे राणी की गीत व मूढान पर से लेकर छापी का प्रचार पर-पर सर्वे द्वारा लिखित अन्तर-हक व पत्र-परिचर्या का, उस प्रकार यह नार्थक हो।

(ख) गौरी में पंचाशत, तदानी व किला देव व नरार्थों पर, यही साहित्य-परिचर्या व मूढान-पत्र-परिचर्याओं के माहक बनाने का काम किया जाय।

(३) हम अर्थ में पुस्तकालयों में लिखित व अल्पक गौरी-परिचर्या के प्रचार करने व देवेके लता कान-परिचर्या में मूढान-परिचर्या के माहक जानन का विद्येय प्रयत्न हो।

(४) छापी साहित्य रचनात्मक संस्थाएँ (क) लय आने के लिये साहित्य व मूढान पत्र-परिचर्याएँ (ख) लगे दें।

(५) अपने कर्तव्यताओं की उसके लिये प्रेरित, मोलाहित करें।

(६) अपने लिखे के लिये पर साहित्य व मूढान परिचर्याओं के माहक बनाने की सर्वोदय-हक करके लिये तथा जनता को इनके लिये प्रेरित करने के लिये, हम निरन्तर विद्येय प्रयत्न करें।

(७) अपने कर्तव्यताओं की उभरे लिये प्रेरित, मोलाहित करें।

(८) अपने लिखे के लिये पर साहित्य व मूढान परिचर्याओं के माहक बनाने की सर्वोदय-हक करके लिये तथा जनता को इनके लिये प्रेरित करने के लिये, हम निरन्तर विद्येय प्रयत्न करें।

(९) अपने कर्तव्यताओं की उभरे लिये प्रेरित, मोलाहित करें।

(१०) अपने लिखे के लिये पर साहित्य व मूढान परिचर्याओं के माहक बनाने की सर्वोदय-हक करके लिये तथा जनता को इनके लिये प्रेरित करने के लिये, हम निरन्तर विद्येय प्रयत्न करें।

(११) अपने कर्तव्यताओं की उभरे लिये प्रेरित, मोलाहित करें।

(१२) अपने लिखे के लिये पर साहित्य व मूढान परिचर्याओं के माहक बनाने की सर्वोदय-हक करके लिये तथा जनता को इनके लिये प्रेरित करने के लिये, हम निरन्तर विद्येय प्रयत्न करें।

(१३) अपने कर्तव्यताओं की उभरे लिये प्रेरित, मोलाहित करें।

(१४) अपने लिखे के लिये पर साहित्य व मूढान परिचर्याओं के माहक बनाने की सर्वोदय-हक करके लिये तथा जनता को इनके लिये प्रेरित करने के लिये, हम निरन्तर विद्येय प्रयत्न करें।

(१५) अपने कर्तव्यताओं की उभरे लिये प्रेरित, मोलाहित करें।

(१६) अपने लिखे के लिये पर साहित्य व मूढान परिचर्याओं के माहक बनाने की सर्वोदय-हक करके लिये तथा जनता को इनके लिये प्रेरित करने के लिये, हम निरन्तर विद्येय प्रयत्न करें।

(१७) अपने कर्तव्यताओं की उभरे लिये प्रेरित, मोलाहित करें।

(१८) अपने लिखे के लिये पर साहित्य व मूढान परिचर्याओं के माहक बनाने की सर्वोदय-हक करके लिये तथा जनता को इनके लिये प्रेरित करने के लिये, हम निरन्तर विद्येय प्रयत्न करें।

(*) विद्यालय और प्रचार का एक कर्तव्य यह भी हो कि विद्येय प्रयत्न के वाता-
वरण में अल्पक गौरी-परिचर्या व मूढान-
परिचर्याओं में सर्वोदय विचार के संकल्पित
रूप का पूर्ण प्रयत्न व लोकप्रिय सुझाव
की पर्याप्तता का प्रयत्न करना, कार्य-
प्रणाली के लिये द्वारा ही प्रयत्न।

(२०) साहित्य व पर-परिचर्याओं
की सर्वोदय-हक करके लिये तथा जनता को
इनके लिये प्रेरित करने के लिये, हम निरन्तर
विद्येय प्रयत्न करें।

(२१) एककोप विद्या विद्यालय व
सर्वोदय-हक करके लिये तथा जनता को
इनके लिये प्रेरित करने के लिये, हम निरन्तर
विद्येय प्रयत्न करें।

नई तालीम में अटक कहाँ ?

[भागमी १, १०, ११, तिसम्बर की पंचमरी सम्पत्तिका में लिखित भारत नई तालीम कायंदा में सम्मेलन हो रहा है, उस सम्मेलन के निमित्त लेखक ने कुछ विचार लिखा है, जहाँ में एक वर वर विचार करने—सं०]

यह कहना अत्यन्त न होना कि विद्या की वर्तमान स्थिति, कार्य और जन-मानस को देखते हुए एक विचार की घड़ी हो है। आज महाभारत-नाल जैसा ही दुःख ही, एक ओर नई तालीम में नये गिने कार्यकर्ता और दूसरी ओर अज्ञात अज्ञानिता से भी नही अल्पक देश में प्रचलित बालेय-विद्या को विदित वेकर; अज्ञेयी विद्या पर जीवन-निर्वह करने के बाध्य-प्रोत्साह और भीषण-निताह जैसी पूर्य विद्या-निताह जैसी शिक्षण का सम्पन्न करते हैं। सामाजिक भाग्योत्तरे से विद्येय-निताह अज्ञेयी विद्या में ही कि यात्रु की बुनियादी विद्या या पाठ्य की नीवोटी वाली तालीम ? इन सम्मेलन से अज्ञेयी और अज्ञेयता है कि जीवन के लिए जीवन व द्वारा नही जाने वाली विद्या का स्वयं स्पष्ट हो।

आज जय-जगत् के संदर्भ में पूर्ण और पश्चिम की संस्कृति के बीच केवल सम्मन्वयकारी शिक्षण की आवश्यकता है, जिसमें दोनों के सुझाव का सम्मन्वय हो। जनता में विद्या का आकर्षण हो, जो वर्तमान जीवन-सूक्ष्म की प्रवृत्ति पर-परिचर्या और कार्य-प्रणाली से उभर विचार बाधती नले हो, पर उसे प्राप्त करने के बाध जीवन में प्रवेश करने पर विद्येय जीवन के लिये बोई विरोधा-
भास न हो।

इन सम्मेलन में विचार-व्यवस्था निरप
वे है :-

- (१) निम्नलिखित सार्यों में नई तालीम
विद्येय का विकास तथा उत्पत्ती प्रवृत्ति।
विद्येय पत्र-परिचर्या -संभव में वर्तित
कार्यक्रम।
- (२) अन्तर्-विद्येय का कार्यक्रम।
- (३) उत्तर-विद्येय की विद्येय की
सम्पत्ता।

(४) विद्येय-निताह गौरी-परिचर्या के दिशि
प्रवृत्त के बाध निताह जीवन की नये में प्राप्त
सम्पत्तियों के प्रयास में स्वयं नरे तालीम
के कार्यक्रम पर विचार।
विद्येय-निताह गौरी-परिचर्या के अन्तर्-
नई तालीम की बाध। जैसे प्रवृत्ति प्रवृत्त

साहित्य की प्रवृत्त न ही वे; उभरी-परिचर्या
का स्वयं को बाध कर दिया जाय।

(१५) हम वरों तो नही, लेखक
आपनी पुरी में छापी प्रचार करते देवे-
परिचर्याओं से तब वर ही जाय तो दुःख-
परिचर्याओं में ही प्रवृत्त प्रचार की अर्थि
के बीच अज्ञेय रूपों द्वारा साहित्य-परिचर्या
की प्रवृत्त लिये और इन प्रकार साहित्य-
प्रचार की प्रवृत्त बना साहित्य।

अपनी ही कुछ कार्य-प्रणाली को छोड़ें,
को साहित्य-प्रचार में मदद दें। इत्यादि
परिचर्या में उत्तम वर बना साहित्य।
सुझाव बाध स्वच्छता में मूढान और साहित्य
व सुझाव द्वारा कार्य-प्रणाली द्वारा इस काम में
पूरा प्रयत्न व अर्थि लिये जाने की है।
साहित्य की प्रवृत्त व साहित्य नही साहित्य
का रूप उत्पन्न करने की है, जिसमें नरे
वेदक लय आदि साहित्य के प्रचारकों
की रूप उत्पन्न करने की विद्येय न ही,
बाध-नाह विचार शीघ्र रहे और प्रवृत्त
व अर्थि लिये को इस काम में उत्तम
के लाना चाहें, उन्हें साहित्य के विकास
के लिये पूर्ण प्रवृत्त की प्रवृत्त न ही।

अन्तर्-
२५ अगस्त, १९११

• गुप्तदत्त

विद्येय है, कष्ट होता है, प्रवृत्ति व-
लगी है, प्रयत्न बाध है, नई प्रवृत्त
आती है, उनी तब नई तालीम वेदक
के अन्तर्-प्रवृत्त कार्य-प्रणाली से उत्पन्न
द्वारा निताह नई तालीम का रण वेदक।

यह लय होना वेदक व जीवन-परिचर्या
का स्वयं साकार वर विद्येय को वेदक की
आवश्यकताओं से बाधेगा व जीवन-निताह
की भी भावना को मूर्त बनायेगा। प्रवृत्त
एक ही उत्तर है हम और आप। उत्त-
रणी प्रवृत्त में वर का "अन्तर्-
कार्य" को भी उभरे लय वेदक ही, जब कोई
बदले-प्रवृत्त हो।

"ने आज नई तालीम की आवश्यकता
में लय एक मात है। वैचारिक प्रवृत्त पर
कर सहज है। दय जहाँ-तहाँ अज्ञेय
व्यवहार है। दय दूरे का है, राते के
शेरे शाक बनाने है। परवृत्त न-
विद्येय के अर्थि आशाओं को नया सत
लिखेगा, नरे सति लिखेगी।

सदुमानापूर्वक सत्याग्रह समाप्त

विमलराज के मद्रास जिले के मेडुर तालुका में, जहाँ सचचे यथि प्रायदान राज्य भर में हुए हैं, वहाँ के म्यूचरलेंडीपट्टी गाँव में वेदरकी के शिलाक को सत्याग्रह प्रारम्भ किया गया था, यह २५ अक्टूबर को दोनों पक्षों में समझौता होने से बन्द कर दिया गया।

राजहोले के अनुसार बहुपक्ष भूमि-स्वामी ने यह मान्य किया, कि विवाहादर जमीन, 'मुचरलेंडीपट्टी प्रायदान सहायरी समिति' को लीज (किराया) पर ही जाय और सदुत्सार उसी दिन शाम को सम्पत्तीका बमल में लाया गया। यह भी सच रहा कि छायापरियों के शिलाक जितने भी मुकदमें दायर किये गये, वे पास ले लिये जायेंगे और उनको बरखल छोड़ दिया जायेगा। समाज के मालिक ने यह भी मान्य किया कि कोई नै गाँव के तीन बच्चियों पर बलस हारक करने के कारण जिला रफम की 'डिप्टी' दी गयी, वह भी शांत होत।

राजहोले के एक सर्वेक्षी अन्वेषी, अल्पक पंचायत बोर्ड मेडुर, पैकटापल्लु अम्पद, एडकोट्टे; कम्पळी नायडू, आर वरदन, मद्रास जिले के भूदान-अन्वेषक; मुचरलेंडीपट्टी के प्राण्य नागरिक एचबी इत्यान और अल्प प्रवृत्ति लोग भी उपस्थित थे। समझौते की शर्तों के तौर पर शोर्टन पक्षों ने एफ-नूरो को पत्र के बीचे रिचे और एफ-नूरो के प्रति मंगल वरमानताएँ प्रकट की।

स्व० सरदार वेदरत्नम् ! विनोवा-पदयात्रा वृत्त

सरदार वेदरत्नम् हमल्लाक के रचनात्मक कार्यकर्ताओं के एक मेरुस्तम्बी नेता थे। अपनी कार्यवाही और संपादितता से उन्होंने सब लोगों के प्रेम और आदर पाया। यद्यपि उनका हृदय राजनीतिक शक्तिधियों में था, किन्तु आत्मा गांधीजी के रचनात्मक कामों में ही थी। नरै लालीय जनको बहुत प्रिय थी। इन्होंने आत्मा जीवन धर्मों के लिए 'कल्याणवृद्धक' बनाने में समर्थित किया, जो बसुला नरै लालीय की एक प्रमुख वस्था बन गयी है। उनकी मृत्यु से देश को और विशेष तौर से रचनात्मक कार्यकर्ताओं को क्षति पहुँची है। ममक-व्यवहार के एक अन्वेषी को वैधिकात्मिक भूमिका अदा की है, उनको सारा देश जानता है और पूरी सत्याग्रह में लगे हुए हैं उनको 'वेदरत्न' का पद सन्निवाह किया। हम सब भगवान से प्रार्थना करते हैं कि वह उनकी आत्मा को क्षति न दे।

—ए.ए. जयप्रभाप्

श्री आशादेवी सत्या प्रार्थनापत्रकम्

जी का पंजाब में दौरा
अखिल भारत शान्तिसेना-मंडल की संवेष्टिका, श्रीमती आशादेवी तथा श्री आर्थात्मकसमी इस समय दार्जिलिंग के नाम से पंजाब में गये रहे हैं। सर्व देश संघ की प्रवर्धनसमिति भी वेदरत्न बाद, १५ अगस्त को काशी से भीरे पंजाब में गये। अमृतसर, बालरूप, पानीक आदि शहरों में प्रपुकर से एक बार दिव्दी आये थे, अब दुबारा फिर पंजाब क दारे पर निकले हैं।

अगस्त मा०	पंजाब	मंडल	प्रायदान
१५	सर्वप्रथम	११३	११
१६	चित्रसखी	७	११
१७	१७	१७	१७
१८	१८	१८	१८
१९	१९	१९	१९
२०	२०	२०	२०
२१	२१	२१	२१

कुल १०

२२ अगस्त को प्रातः शीघ्र रवे विनोवा की यात्रे परामुद्र सञ्चितवन का आगरी पंजाब, सिंधिपुल छोड कर नाब से डिग्गुद के लिए पलाया हुआ।

एलीगुद जिला के रिप्टी कमिश्नर, अविशेषतः कमिश्नर और एक डिप्टीमेन्सल अडिटर तीन दिन यात्रा में रहे। यात्राद्वय के बाद एक भयानक होनी चाहिए, इस विषय पर चर्चाई हुयी।

—आश प्रदेम में साककणुलु में एक प्राकृतिक चिकित्सालय ७ अगस्त को शुरू हुआ।

इस अंक में

विनोवा का साहाय्य	१
दार्जिलिंग के संस्मरण	२
सत्याग्रह की ओर से	३
विनोवा यात्रीदल से	४
विहार यात्रा: शीमे में कट्टा	५
जनशक्तिवाक शान्तिसेना और विहार में देश की शक्ति को	६
निजोल्लस भाई	७
सत्याग्रह	८

[वादां को संस्मरण]

हिंसे के उग्र भी शक्ति पर रहते हैं। ऊपर आकर उग्र नमस्कार किया है वे बोले— 'क्यों बोले नमस्कार आये या विना बोले-समझे।' मैंने उनर दिया—'विना बोले, समझे।' वे बोले—'आइए जले माना क्या अम्बर है।' दारा उन समय शीघ्रता से उठे थे। उस क्षण प्रपुल अग्रक ही गये थे। 'उम समय वे मुझे एक का एक पत्र पढ़ने थे। दारा मुझे आभय का कार्यक्रम समझा रहे थे। उग्र की शक्ति पर ही इमरी शक्ति ही रही थी। उग्र वे शहर जाने हुए गांधीजी पर विवाह पड़े। अंगुनी से शीघ्र कर 'श्री भीमती' की एक प्रकार दारा ने उनकी परचयन कर दी। उसी समय मैंने हृदय में आया कि मुझे मैंने जिम्मे नमस्कार किया वे गांधीजी नहीं थे। उस समय गांधीजी भी गांधीजी थी, अन्वेषक ही उनर बालटोरी और तिर पर कतिपयकी एगरी। उस समय वे ही भी पौरी रहते थे। यह बोलाकि कि वे शहर जाने समय चलते थे। आभय में मुझे एक का पत्र था और शरीर विकृत लुप्त। मुझे बाढ़े कर रहे मैं उनके साथ चर्चा की थीने के लिए बैठता, यह मेरा मान्य था। उनका एक हाथ पन्द्रह शीत मिट्टा एक बलत चलता रहता। उस समय दोपहर को वे एक समय भीमक बनते थे। वो कर्मियों की सहायता में आभय के दोपहर का सभ भोजन वे आगे लेनते थे। दोपहर आभय में मेरा नाम गुम्बदास रखा गया। उस नाप से गांधीजी बुरे बुजारे। उस समय दोपहर आभय में खने के संघर्ष में बहुत कठोर नियम थे। कर्मियों को छोड़कर भी-पूष किसी को नहीं मिलता। वनक भी बहुत मोटा मिलता। मारने से दो तीन छोटी छोटी बरियों मिली एक छोटी की एक बाटी है वे दो-तीन बाटी भरे लिए वेसल से-हीन प्राप्त होती। अब समय मेरा दार शुरु वसकत था। इन्होंने यह शहर का नाशक मेरे लिए एक इमारत के उपहार ही था। दोपहर को ननी वेष्ट (ममक के विना रहे का मास) में मुझे मैंने सल तक उनी कसता था। मुझे मैं जानने ही है शरीरको होने क्षमता था। दोपहर में मुन नाम कसता था।

पूठ दो का तोप
उस समय आभय में मित्र का एक ही नाम था। उस समय आभय में प्रत्येक गांधी, माना पत्र ही छोड़े-छोड़े ही थे। मुझे चार का पत्र मिला था, पर आभास बहुत कर्तु अभासी। एक पत्र में गांधी दयाते। कोई किसी की गु-निता में उठते, फिर भी उठते फिर-उठे विना चारा नहीं था। दारा उन हम अभी रचनापरते से उठे थे, इन्होंने एक नाम नहीं बोले थे। मुझे मारते मैं उन्हें देने मित्रों थे। दारा को उनके वर ही छोटा था। मेरे लिए आभय में न बसना पर माना ही कभी भेदरहते हैं, पर एगरी को भेदरहते ही दे दे दे दे दे दे समझते रहते हैं। मैं उन्हें कसता—मुझे मान्य में मुने वीरिये। परन्तु उनका विनोवा हो रहा था। इन्होंने मुझे हमने प्रपुल करते रहे। मेरे आगे के बर दारा उन्होंने पर वर मिलकर बर सुविधा कि कि छोटा एक माने के लिए मारी बर मेक ही बोले। पर वे भी समय चर्चा का प्रतीति-रि-मेन रिया गया।

वीधा-कट्टा के लिये

शिविर

पूर्वियों विना के शीघ्रता मान्य के उद्देश्य एवं सत्याग्रह-कार्यकर्ताओं का एक दिवसीय शिविर १७ अगस्त को उनर विवालय, कट्टा के अग्रभ में आयोजित किया गया, जिले में भी वैधान्य उत्तर भीमती पर विहार परकर के भीमतीने उपनवी की कमलेश्वरी नारायण भी शामिल थे। श्री श्रीपरी में वेदरत्न में उपस्थित १०० दिवसीयों को सम्मोहित करते हुए बाकि 'श्रीवा कट्टा अभियान' की सहायता में ही सामाजिक समानता को सहायता मिलिये। कट्टा पूरे पंजाब अग्रभ में भोया-कट्टा भू प्रति से लिए कसता था और का एक आश्रय निह के मेडुर में दो दोलियों का गढ़ना किया गया, जिसे अग्रभ २५ कार्यकर्ता शामिल रहे।

१८४५ कट्टा अन्वेषी प्रातः

पूर्वियों विना के साहसिक यात्रा में १७ अगस्त से २० अगस्त तक भी वैधान्य प्रसाद चोरीने से शिव कालिभ शिव पूर्वियों के अंगी, भी विधान्य निह एवं साकुराज मंडल कामेश कसिने के अग्रभ को कार्यात्मक प्रसाद कि से सभ 'श्रीवा कट्टा अभियान' में दौरा किया। मद्रास मंत्र एवं अग्रभालक के पंचावर से दुर्लभ एवं अन्य पदाधिकारियों ने श्रीवा-कट्टा अभियान' को सहायता मान्य में सहायता एवं योग दिया। श्री श्रीपरी एवं पंचावर के पदाधिकारियों के सहयोग से १० दारुन दारा १८४५ कट्टा अन्वेषी यज्ञान में स्थित है।

१० नवंबर १९३५, कोन सं० ४३११ एक संक०—११ नवंबर १९३५

श्रीवा-कट्टा मद्रा, सं० मा० शीमे मेका संघ द्वारा प्रार्थनापत्रक प्रेष, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पत्रा : एकमात्र, वाराणसी-११, कोन सं० ४३११

विमल संक० की छपी मतिगो १९१० : इस संक० की छपी मतिगो १२००

वह है 'अभंग-गीतों'। सावरमती आश्रम में आने के बाद वेदोपनिषद् के अध्ययन के लिए विनोबा एक वर्ष के लिए आश्रम से गये थे। वहाँ उन्होंने पठन प्रामाणिकता स्थापन का जीवन शिवाय। पूरा होने आया, तब विनोबा ने अपने काम की शिथिल देते हुए एक घर गांधीजी को लिखा था, जो अब कई भगद प्रकाशित हो चुका है। इस पत्र में यह उल्लेख नहीं था कि उन्होंने क्या क्या काम किया, पर एक वर्ष के आश्रम में बाहर रहे उन दार्शनिकों में आश्रमवासी के नाते उदात्त ब्रतों का उन्होंने बितने अर्थों में पालन किया, उसी का विचार था। विनोबा ने इनको (एकादश ब्रत को) अभंग-वीथन भी जानी माना है। एकादश ब्रतों के विवरण में लिखते हुए गांधीजी की 'मनसूखप्रभात' पुस्तक को 'विनोबा उनका ही आत्मकथन'। क्या महत्त्व का नहीं मानते हैं? वे हीनेषा करते हैं कि पारंपरिकों में से विचार ही तो उनमें 'मंगल प्रभात' का नियम पठन होना चाहिए। 'अभंग मंत्र' यह 'मंगल प्रभात' का मराठी अनुवाद है। एकादश की इस पुस्तक को इतना महत्त्व देना समालोचना में देने का एक स्पष्ट कारण है। यह अनुवाद पत्र में, मराठी अनमन में है, और यह भी केवल भाषान्तर नहीं, भाषानुवाद है। 'अभंग मंत्र' की प्रस्तावना विनोबा ने कुछ अल्पव्यय श्लोकों में लिखी है। ये श्लोक विनोबा की मूल्य को बहुत अच्छी तरह स्पष्ट करते हैं। उदाहरण के तौर पर उबका पहला श्लोक :

मेरेना परमात्मपर्यन्त-सुखानुभवायो प्रत्यक्षात्, बाणो संलक्षणेभो नि शिवोवायो ह्यतिगुणवता ।
 'हृद हृदि मे परमात्मा की प्रेरणा, महामाया का प्रसाद, चतुर्भुजा की बाणी से पर बहुदूर है हुए है। विनोबा की तो इसमें केवल श्रद्धा ही है।' पर आगे जाकर वे कहते हैं कि यह स्पष्ट है, हरीलिय 'पावित्य प्रविष्टापरि ।' गणित में शिव तब ही प्रकृत, अंधों की कीमत दल हुन कर देता है, उन्हीं तरह विनोबा हृदमें सरल हुए हैं। 'गांधीजी की गुणवती' के बारे में विनोबा का एक वचन देखिए :

गुणवती साधारी भाषा, मोक्षदात्री तमोहारी ।
 मोक्षन की समोहन माया और तमो-हन मोक्षन की आशा, ऐसा दुःखर अर्ध-इक्ष्वा होता है, और गुणवती तथा साधारी (मार्तन्दा) धर्मदा का मेल भी तमोहन और मोक्षन । कम अच्छा नहीं बसा है।
 मराठी भाषा का अर्थ परिवर्तन रखने वाले भी 'अभंग मंत्र' समझ सकते हैं, ऐसी सरल उभरी भाषा है।

सबसे सेवा संप, राजघाट, काशी
 'भूदान'
 अंग्रेजी साप्ताहिक
 संपादक : सिद्धराज उद्दारा
 मूल्य १ छद रुपये वार्षिक

उत्पादक श्रमः अध्यात्म का निकटतम पदार्थी

सर्वकेशय हमारा प्रेम था सम्बन्ध बुद्धे, हममें अंतर्धान था, आत्मा वा किसी तरह का संबंधन न रहे, हमारे पास किमाने की कोई चीज न रहे, हम और सारी सृष्टि एक-कन वन जायें, इच्छित्त वही ही सत्यीय देन की जरूरत है। जैविक, पौष्टिक, भौतिक संबंधन मिले, इतने से अध्यात्म नहीं होता। ये चीजें वही ही स्वरूपता के लिए सहायक होती हैं, लेकिन ज्ञानात्मकविद्या के लिए सबसे ज्यादा बहुमूल्य और सबसे ज्यादा महत्वही अजर कोई चीज है, तो वह है उपरतक शरीर-परिचय, ऐसा मैं, अपने अनुभव से जाहिर करता चाहता हूँ।

मनुष्य को भूल लगती है। यह भूल परस्पर ही मेरणा है, जो हमें अध्यात्म में किंच दिशा की ओर आना चाहिए, यह पलाती है।
 (बटव, जम्बू रमणी, ७-१-५८)

निःस्वान निद्रा सर्वश्रेष्ठ संभाव

यही यह माना गया है कि कोई ध्यान करता है तो आध्यात्मिक साधना करता है। परंतु जैते देखा जाय, तो गाढ़ निद्रा से बहुत कोई ध्यान नहीं हो सकता है। इसका अर्थवचन क्या रहे है कि गाढ़ निद्रावस्था, निर्दोष निद्रा के विनाया उचय निकार होता है, उसना निर्दोषता समाधि छोड़ कर दूसरे किसी मासुली काम में नहीं होता। निःस्वप्न, निर्दोष निद्रा एक आध्यात्मिक बंधु ही सचती है और यह है एक मीठिक बंधु भी ही सचती है। जानवर निद्रा देता है, तो वह आध्यात्मिक बंधु नहीं है। लेकिन निद्राका फर्मसोपी दिन भर काम करके जो बाबा है, तो निःस्वप्न, निर्दोष निद्रा में वे वारे अनुभव आ सकते हैं, जो निर्दोषत्व समाधि हीज पर दूसरे किसी काम में नहीं आते।
 (बटव, ७-१-५८)

सेवा, सफाई : भगवान की पूजा

हम इस बात को अभी तक समझे नहीं है कि परमेश्वर की सबसे बड़कर और आसान को पूजा, सफाई, सफेद हाथ कर सकते हैं, यह है—दुःखी, रोषी, गीतों की सेवा, गिरे हुए की मदद देना। हिन्दुस्तान में कुछ लोगोंने भी सेवा अक्षर देनाई करते हैं। रंसारों लेख दूर-दूर से देशों का बाहर सेवा करते हैं, यह उनके लिए हमजब भी चीज है। लेकिन हमारे देश के लोग अपनी तक उस बात में नहीं पहुँचे हैं। शीघरी ही सेवा में बिगड़ी गई कला साधना

की पूजा है, क्या मैं समझ कर हम उध नम को करते हैं। बहुत थोड़े लोग इस नाम में खोते हैं।

हमने मेहरवा का एक ऐसा वर्ग पैदा किया है, जो सफाई करता है। हम अपना काम इतना ही समझते हैं कि घर में कचरा पड़ा हो, तो रास्ते पर फेंक दें। फिर उसे उठाना मेहरवा का काम है। इन मेहरवों को हमने बहुत ही म्यान रखा है। दरअसल हमें सफाया चाहिए कि सफाई करना याने परमेश्वर की पूजा है, सेवा है। हमें सम्माना चाहिए कि किसी बंधु को यदा बनाया अर्थात् है, भगवान के प्रति दोह है। ठीक वैसे विपरीत गदगी उठाना, सफाई करना, भगवान की पूजा है। याने गीतों की सेवा करना ही दरअसल में भगवान की सहायता है।
 (जम्बू, ११-१-५८)

साइन्स ने 'मैं' और 'मेरा' को तोड़ दिया

आज साइन्स की इतनी बरफकी हुई है कि एक मनुष्य की आँख भिन्न पानी हो, या उसकी जगह अन्धी-अन्धी नरे हुए मनुष्य की अन्धी आँख दिखायी जाती है। फिर क्या यह मनुष्य 'मेरी आँख' कह सकता है कि जो लाल रोग हुआ और उसकी टाँग बल गयी, तो उसकी टाँग काट कर तबकाक नरे हुए मनुष्य की टाँग लगायी जाती है।

विचारों का संकलन

बिनोबा

और यह पत्नी लगता है, तो क्या फिर वह 'मेरी टाँग' रहेगा। साइन्स का यह परिचय है कि वेबे सोच का परिचय दूसरी सोच में क्या उकते है, वेही ही एक सचके के सुख दूसरे के विरम में क्या करते हैं। बीच में बाहर तक हमें नारी दौब परतया था। फिर मैंने वे दौबें फेंक दिये; मैं समझ कर कि सुहायण आकर, तो यही मासक अग्रभा है। जब मैं वे नपुंसकी दौब परतया था, तो देखने पाते की वे दौबें परतया मादस होते थे। कभी-कभी लेबे दौबों की संवेदकी करते थे। मुझे फर्मी भी उन दौबों का कभी अभिमान नहीं हुआ, क्योंकि मैं भावना था कि वे दौब जाकरने वे बनाये हैं, मैं तो शिर्क परतया हूँ। इतलिय दौबों की वारी होती है, मेरी नहीं। अब साइन्स और सचकी करेगा, तो फिर 'मिड-वेग' नहीं पड़ेगा। (गणेश, जम्बू, १-१-५८)

ज्ञान और कर्म का समन्वय आवश्यक

मैं बुद्ध अर्थात् हूँ और अर्थक प्रणय हूँ। मेरा एक बंधु मिनेके साथ अध्यात्म की अग्रणता के बन्धे प्रेम हुआ है, यह अर्थक दया नहीं। ऐसा ही विपुल

और छावों का संयम होना चाहिए। कर्म और ज्ञान का समन्वय ही उनके यादी दिखाए है। जिनका नेत्र कि है, काम करता है, वह 'गुंडु' है। 'पु' केवल निर है। जिमका नेत्र बंध काम कर सकता है, वह है 'भंडा'। ऐसी एकमी शिक्षा में व्यक्ति का विकास होता है। व्यक्ति का विकास नहीं होगा तो राष्ट्र का विकास भी संभवेगा। इतलिये ज्ञान और कर्म समन्वय होना 'चाहिये'। भारत के लिये यह ज्यादा बरकी है, क्योंकि हिन्दुस्तान के लोग काम करते बालों के नीचे भावना से देखते हैं। अंध आने के बाद अन्धी शिक्षा देना तो शारीरिक अम को और भी है, गिना जाने लगा है। एक हाक छाटी है परिभम कर नहीं सकते और पूरुष तपः जीवन का साधक 'ज्या विद्या' इतलिये उन लोगों को ज्यादा ज्ञान से आसक्तकरा होती है। अगर देखी गीतों की सहाय्य नदे तो हिन्दुस्तान के लिए यह बहुत खतरनाक बात है।

हम सकि के मानी समझे नहीं

इस बात को मानी समझते कि अपने गौत्र-गौत्र के गरीबों को ही मदद कर भागवान को पूजा है। अक्षर होना है कि हमने अपनी आँखों के समझे कहीं बहुत बलादा हुआ है, तो आँखों की सहायती की पर, वे विचार होकर दया के मारे हुए हुए रहे देते हैं। इस समझ

हम यह समझते हैं कि सामने छिपी नहीं की देखा है, याने हमें परमात्मा का दर्शन हुआ है। हमारे सामने भूदा, ध्यान भगवान् पता है। उसकी पूजा और प्रार्थना मियाना; वही है भागवान् की पूजा। कि हम कभी कभी दया के काम कर लेते हैं, लेकिन कितने पूजा की तरह क्या कर महत्त्व करते हैं। हमें गौत्र-और हनुवा है और परपर जाकर हनुवा है कि केन-दुःखी है, गरीब है, बीरता है, बीरता है और कितने मदद की जरूरत है। बलवान् और मदद पहुँचाने की शिवाय करेगी, एनी हमारे हाथ के भागवान् की पूजा नहीं है। यह मूर्खता के दिन बर गी है। अब मैं हम अपनी भावनाओं को गिनें मुँह लीमिय रखते हैं, निरुद्ध बनते हैं, बगार हैं। दूसरों को टगते हैं, यह धारणा लेते हैं। हम यह भी नहीं समझते कि यह मनुष्य का दोह है। भाव हर चीज में सिद्धांत होती है। एतने को हमने भी और हाथ में ही नियंत्रण होती है। हम तरह तरह से तो हम ऐसी मिलवट करके भी दे सकते हैं और दूसरी तरफ मीमा अर्थ का कर्म कर लेते हैं, तो फिर की कर्मनी है।
 (जम्बू, ११-१-५८)

विनोबा-पत्र व्यवहार

[१]

महाप्राज्ञ के प्रतिष्ठित समाज-सेवक और लोकसभा के सदस्य श्री रामजीव सिंहके हाल पंचाब में तीन दिन पदयात्रा की गई है। उन तीन दिनों की विदेह उद्योगों एक छोटी विज्ञान के रूप में प्रकाशित की है।

उन दिनों का उन पर इनका प्रभाव पड़ा कि "पदयात्रा" यही वेना का सर्वोत्तम उद्देश्य है, ऐसा वे मानने लगे। उनके अनुसार उन्होंने महाप्राज्ञ में २१ दिन की समता-पदयात्रा करवायी। इस यात्रा में भिन्न-भिन्न वर्गों के, खासि के माई-बहनों थे। उन बरों में भी एक विज्ञान उद्योगों मण्डली में प्रकाशित की है।

बाद फाल्गुनी में पहुंचने वाले छात्रों का अगर सर्वसाध किया जाय तो सायद यहीथा यह आशा कि ८०-१० पौखड़ी या उसके भी ब्यादा छान घहरती परिचयों के निकलेंगे। हमारा उद्देश्य "पुराणों का विज्ञान", इस तरह के कर्मों की माचना को बढ़ावा देने का नहीं है, किन्तु यह दिखाने का है कि प्राणवृत्ति की जो योजना प्रातः-संस्कार ने सोची है, उसका स्वयं गरीब साधन-हीन लोगों को बन-बन ही मिलेगा। जो पुत्र भेद करभरने में पाँच सौ रुपये मासिक वे कम और उनके पुत्रों का आयुष्मन् की कति परिचयों में किया है, वह चन्द्र के ही चमक सन्य और पचादा सन्य लोगों में नोट कर दे जायगा। यह कहा जा सकता है कि "प्राथमिक विद्या संस्कृत मुद्रित" मिलनी चाहिए, ऐसी नीति पहले से ही सरकार ने बना रखी है, पर हम जानते हैं कि आज भी देश में छात्रों गौर ऐसे हैं, बाँटें बरुल नहीं हैं और चरणों बन्दे देखें हैं, जो नव-श्रीक में दृष्ट होते हुए भी उसका पयदा नहीं उठा सकते। राष्ट्र के पास छात्रों की कमी है। देखिए विद्यार्थी में यह और भी सकृद है कि जो सीमित साधन हमारे पास हैं, उसका उपयोग करना जो सबसे गरीब हैं, उनको उद्योग में होना चाहिए। अगले पाँच बरस में प्राणवृत्ति की इस योजना पर सरकार बनौं बार फाल्गुनी रूपया खर्च करने वाली है। एक तरह के यह प्रथम नमक है, पर यह भी एक नमूना है। इसी तरह अन्य कई लोगों में जो छोटी-बड़ी पैकेटों योजनाएँ आज सरकार बना कर रही है, उनका विशाल सन्नाय जाय और उन पर संचर् होने वाले सर साधन पहले अल्पोद्योग की दृष्टि में करने गये लोगों को उद्योग में लगाने आये तो आज की परिधिभर में धारी जराक यह सकता है। परना, हम कर्त्तव्य भी, योजना की विज्ञान में चाहे हमने यह विज्ञान हीके हमारा उद्देश्य गरीब और अमीरी के बीच के अन्तर को कम करना है, चाहे हमें राष्ट्रीय प्रयत्न का च्येद हमने सम्यक्सादक रीतिका प्रकृत हो-पर साधन में गरीब और अमीरी के बीच की खाई दिनों दिन बढ़ती ही जायगी।

● निम्नपत्रान

एन जियाओं की पुरुष देने हुए विनोबा ने लिखा,
"अनुकृपा से आपके, हमारे और सबके प्रयत्नों ॥ जल्दो ही वय मिलनेवाला है ॥ बाँटे बिचक में कृपया का राज्य होनेवाला है। यह दिन नबन्दीक काल के लिए हम सब कोसिजा करे और एक ही नमस्कार का नाम लेकर हम सब भेदभाव बूल जायें ॥"

[२]

श्री बाबा फाटक महाप्राज्ञ के एक भग-निर्दर कार्यालय में। विनोबा ने मिलने के दिने वे अल्प जाना चाहते थे। इच्छिते वीथ दिन गुजारें और गनी भरो का काम करते, उन्होंने १४० रुपये बनाये। वेकिस नाम से उनको सम्पत्ति नहीं दी। बाबा ने लिखा :

"आपके प्रति तेजस्वरक्षण और निरंदर परिधय करने वाले सेवक देव में बम् हों हैं ॥ आपसे मिलने में मुझे आनन्द का ही साध होने

पाठकों से

आप सब जानते हैं कि भूदान परिषद् एक विरोध उद्येय को लेकर प्रकाशित हो रही है। इसके पीछे कोई व्यक्तिगत, वर्णगत या भ्यापारिक हान का सौर नहीं है। उनसे अस्तित्व का एकमात्र औचित्य प्रचार का उद्देश्य है। हम यह साक्षा करते हैं कि "भूदान-पत्र" का हरकत पाठक भी उन उद्देश्यों के प्रति सहानुभूति रखता है। अतः इसके प्रचार से उनको भी खुशी होगी।

भूदान-पत्रों में विज्ञान लेने की नीति नहीं है। इसके अन्वया, उनकी कोसम भी कम-से-कम रली जाती है, विशेषतः वे सर्व-सुख ही उन्हें। अतः आर्थिक दृष्टि से भी इन परिषद्वालों का अधिकतम बाह्य-निर्दर पर ही निर्भर है "भूदान-पत्र" की रचना हम समय बरीर १ हजार है। अभी ३३ बरों हैं वेचक रूप को उनके लिए धारी राचने करना पर रहा है।

कई सेठसंघ के अन्वय की नवश्रेष्ठ्य वीथरी में अमी हाल ही में अतिभर ११ से २ अक्षरपत्र तक की अर्थचर्चा में भूदान-पत्र-परिषद्वालों के बाहक बनने तथा सर्वोपरि-साहित्य का प्रचार करने को व्यव-अधीन की है। विनोबाजी ने "भूदान-पत्र" में धारक की उल्लेखना" के इन कारणों का सम्पर्क किया है।

"भूदान पत्र" के हर सौभाग्य बाहक पाठकसे हम यह प्रार्थना करते हैं कि वे

साक्षा है। पर इनको दूर उभे सर्वा नीर भाव बने यथिन से अपने भय का उत्तरा दित्ता बचन पढता, इससे ज्ञाप पर विनोबा की प्रार्थना, ऐसा सोचकर नैने प रहा है।

[३]

श्री चारुभाबू अमी कलकत्ता में अं संयुक्त-विधियाना का नाम पर रहे है। वे में मंगल मधेय में जो विशेषी प्रकार हुए, उसके कारण गंगाजी भावपूर्ण से कम सर्व-मिल रहा है। इस काम के धार है चारुभाबू "भूदान दल की ओर दौड़ें, अपनी इस विज्ञान का सहोपाय भी प्र रहे हैं।

अगले महीने के माघ में फिर वे जाना करने का जगता निचारी है। श्री चारुभाबू ने अपने उन में लिखा है कि सर्व-साधों के लिए एक सम्पत्ति सेगमिष्ठुव भाव ० एवम् औचित्यर मिले है। बाबा ने विनोबाजी ने लिखा :

"मेरा विश्वास है, वह फिर दूर नहीं, बाणाल में सर्वोपरि का लोभ सु मिलनेवाला और सबक महारा एवम्। इस प्रकार प्रयास में इन जनानों में ही विद्व-व्यपन्न विज्ञान की धारा प्रसू हई है, रामधोहन से भी अधिक सब वह व्यर्थ नहीं जायगी।"

हे तो निश्चय ही यह बहुत गम्भीरता से सोचने का प्रयोग है। इसमें तो कोई भेद नहीं कि इस देश में हम की जोग ऐसे होंगे, जो सुविध को अपने रुचक असे मिन के रूप में देखते हों। सुविध के बारे में अधिकांश लोगों की प्रतिज्ञा २२ और आवक वी ही होती है। इस छापी परिस्थिति पर न सिर्फ सु-चार वी, बल्कि युद्ध विज्ञान विभाग के बर्माचारियों को भी गम्भीरता से सोचना चाहिए। अग्रा है, नायबसूत्रि इत्यय वी टीका उन्हें हमके लिए प्रेरित करेगी।

गणपतीय महोदय ने अन्ते पौखले में कहा है :

"मैं अपनी पूरी जिम्मेदारी के साथ यह कह रहा हूँ कि सारे देश में कानून की भारदस्ता कार्रवाई एक भी ऐसा अल्प कोरें विरोध नहीं है, बिकले उनमें ना देखाई उन संश्लिष्ट "भारतीय का मुफासल करता हों, जिसे "भारतीय सुविध" के नाम से सम्बोधित किया जाता है।

मेरी आकांक्षा है कि शासन का कारोना छुट हो। लेकिन एक बिकले प्रयत्न से कुछ व्यवहार अब्दा नहीं हो सकयनी। मैं अन्ती ही अपने कार्यपार से मुक्त होनेवाला हूँ। १. ... अन्ते मेरे सामने काम का कुछ रम्या भी था भी होता तो मैं अपने अनुकूल को, जो बाह्य था इस तरह समाक बनाते हैं, वही से कमी संका देना रहता। कानून की संपादा को कायम रखने और उसकी दृक्क बढ़ाने की अनीचा, ऐसे लोगों का सवय कम फायद को दोहन का ही माध्यम होता है।"

छात्रवृत्ति

भारत-सरकार के विद्या-संश्रालय ने छात्र-वृत्ति की एक राष्ट्रीय योजना स्वीकार है, जिसके अनुसार भारत-एक या मैत्रिक के बाद पढ़ने वाले छात्र द्वाँरे हजार कोष विद्यापीठों की हरजाल छात्रवृत्ति दी जाती है। किन्तु दाखल-बलिशाओं के माता-पिता या विद्यापीठों की आमदनी पाँच सौ रुपये बढाने से कम होगी, उन्हें पूरी छात्रवृत्ति मिलेगी और विनकी आमदनी पाँच सौ तथा हजार रुपये मासिक के वीध होगी, उनके बन्धों की आयनी।

दिलने में यह योजना अगुणी माध्यम होती है, पर हमें उर है कि अगले में हमका परिणाम यह होगा कि आज देश के गरीब सवके और छात्राटी "शाबू" यर्गों के बीच को आर्थिक और सामाजिक दारद्वै बढ़ती या रही है। यह और भी अधिक गहरी हो जायगी। छात्रवृत्ति के उपरोक्त नियम का धार्मिक अर्थ है तो यह गरीबों के पाँच सौ रुपये माहभार से कम आमदनी वाली गरीबों में सबसे गरीबों की आय होगी है, जिनका वस्तु-स्थिति यह है कि देशतो में जो कनेमें साधनहीन गरीब परिवार हैं, उनसे बन्धे अन्वय को दूद दी नहीं पड़े, और पढ़ने भी उी होरेंसक तक पहुँचके से ही पुरुषते हैं। धार्मिक और उनके

११ विज्ञान (विनोबा-वर्षणी) के २ अक्षरपत्र (गायी जपनी) तक के एक सम्पत्ति में कम-से-कम एक सपा माहक एक पत्रिका का और बनयें। जिन उद्योगों की सेवा "भूदान पत्र" विज्ञान रहा है, उनके महान्त को देखें हुए ॥ तो यह समय भूदान बढ़ी है, न हम अर्थ में एक सपा माहक और क्या देना किनी के लिए भी सुविध है। हेरक माहक और पाठक हनेना-पठ देते "भूदान-पत्र" की तथा फिर उल्लेख को देखें यह विज्ञान रहा है, उन उद्योगों को बहुत काफ मिलेगा। अन्वय है, पाठक इन प्रार्थना पर पचान देंगे।

नया माहक बना कर रचना और मेरते समय वृत्ता अन्ता माहक नमक को आगरी गनेकाडे पर है पर उरक रली है, अन्त है, शिमने हमें अन्वय-स्थिति में सुविध है।

—संसारक

चम्बल के वागी-क्षेत्र में क्या अहिंसा विफल रही ?

डा० दरवारीलाल अय्याना

पिछले साल मई-जून में वाघार्थ विनोदा भावे चम्बल के वेहरो में अपना पदयात्रा कर रहे थे। इन्दौर के समीप प्राप्तरूप होने वाली चम्बल नदी प्रायः पाँच सौ मील की टेढ़ी-मेढ़ी यात्रा करती हुई, उत्तर प्रदेश के इटावा जिले में यमुना नदी में मिलती है। चम्बल वही उग्र नदी है। इसकी पानी धारा में पिछले चार सौ वर्षों में लगभग पन्द्रह करोड़ क्यूबिक फिट समतल जमीन थपकर रूप से काट दी है। फलतः वहाँ मीलों तक पहाड़ियों की घाटियाँ और बन्दरगाहों जैसे प्राकृतिक स्थल बन गये हैं। छुपने के अनेक सुरक्षित स्थान हैं। वर्षों से यह टोटों, बटुओं और बागियों की पनाहगाह है।

इसका बादशाहों से लेकर आज तक सभी सरकारों से अपना पूरा और चम्बल के वेहरो की वागी-सुक्त करने में लगाया है। बिम्बु अर्थात् तब किसी को इस कार्य में पूर्ण सफलता नहीं मिली है। कारण प्रत्यक्ष है। वहाँ सबसे दृढ़-शक्ति पर भरोसा रहा पर इस विषय के उन्मुखन की चेष्टा की है। सदा वेहरो के साथ काम किया गया है। हमदर्दों के साथ कभी नहीं। किसी अधिपतियों से यात्रा तक उस क्षेत्र के निवासियों की सामाजिक, आर्थिक और मनो-बैज्ञानिक दशा का हमदर्दों से अध्ययन करने की चेष्टा नहीं की। उन कार्यों को दूर करने का जो प्रयत्न ही नहीं उठता।

आज सरकार के सभी अन्तर्गत-विशेषण इस बात को मानते हैं कि अन्तर्गत के मौखिक कारण, समाज और परिपारों की विवेक आर्थिक और मनोबैज्ञानिक परिवर्तनों में निहित है। वे बहुत कमजोर देने के बजाय आज गुबार और विद्या में अधिक विश्वास रखते हैं। अब यह विश्वास केवल शास्त्रीय विद्यालय मात्र नहीं रह गये हैं। बल्कि दुनिया की सरगर्भ आज अनेक जेलों में इन पर अमल करने की कोशिश कर रही है। भारतीय सरकारों भी इसका अन्वय नहीं है। हमारी सरकारों के पास केवल मनोबैज्ञानिक हैं, समाजशास्त्री हैं। लक्ष्योन्मत्त देने वाली सुमंगलित मैरिजरीय समाज सेवा संस्थाएँ हैं। कभी न हम सब मिल कर एक बार इन्द्रवज्रा से हम हमसब के दुर्निवादी कारणों का अध्ययन करने की चेष्टा करें और उनका कुछ रथायी हल ढूँढ़ निकालें।

क्या हम मानवीय और मनोबैज्ञानिक दृष्टि में बहुत अधिक पैसा खर्च देना चाहेंगे? हमकी एक ही-काली इरादा क्या है? क्या हमारी परिस्थिति निराले है? हमें हमसब की स्थिति और आँखें खोल कर देखनी हैं कि हम क्यों मरना चाहें, नहीं।

उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और राजस्थान की सरकारें, १९५१ ई० में जो बंधन बंध कर लागू करने लगीं। बहुतसे गाँव मारे गये, बहुतसे बच्चे मरे। बिम्बु विप्लव उनका अधिपत्य के लिये की गई अर भी मारी है, जब कि पिछले अनेकों की सरकारों विचारों के अनुकरण एक एक गाँव की सीट के बाट उठाते या बिम्बा बचाने में भीतजन हल हम लाख लाख रुपये खर्च करते हैं। यह शक्ति की यह प्रशिक्षण का भी मारी है।

काम के वेहरो में पदयात्रा में विनोदा के कामने दू० अन्तर्गत वाटुओं में अन्तर्गत-समर्पण किया। वे कोहरे भावूरी वाटु नहीं है। हमने से बहुरी एक फरद-अन्तर्गत, नील-रीय अन्तर्गत अन्तर्गत-इन्तर्गत-मौखिक-या। क्या विनोदा ने उन्हें यह आश्वासन दिया था कि अन्तर्गत-समर्पण से वे बेल धर पानी से बच जायेंगे? नहीं, किन्तु वह हमसे उम्मीद की बात विनोदा ने उम्मीद की। "आत्म-समर्पण से उन्हें न्याय मिलेगा। वे यह वहाँ समाज में हमें जो आश्वासन के पास उन्हें करी करार मिलेगी। हैं, हमसब के कि उनसे साथ न्यायदी का करनी न होगी। मेरे पास पूर्ण-वैयं मैं उन्हें कोहरे तकलीब न होगी।" विनोदा की न अनेगी हवा, "अन्तर्गतों हल करने, कई उम्मीद करने, उम्मीदों में मारी का आश्वासन देना है और वे अन्त-

समर्पण नहीं है तो हमसे आत्म समर्पण की कोहरे नील नहीं होगी। हमने आने की नील हलते हैं कि जो भी न्याय मिलेगा, मेम के भागू करें और जो यह दक मिलेगा नहीं हलते हल करयेंगे।"

क्या वागी-क्षेत्र विनोदा के वर्षों में अपनी-अपनी क्यूँसे रहते थे, उस वक्त वे क्या करते थे, 'अब तक जो गलत बात चिन्ते हैं, उनका हमें दूर है, आरन्त अब हम कोई गलत बात न करेंगे। हमकी-जेली का के बाट ही, किन्तु वेम में गुप्त डाकुओं पर सुकरने चले। उन कालों की सने लुछी लुछी अपने दुर्ग का हवा करार लिया। हद-अन्तर्गत के इन अन्तर्गत उदाहरणों से हाट सकार प्रमाणित हुआ। भी आध्यात्मिक शक्ति के अर्थिक हैं, उनमें हमका हद-अन्तर्गत में अधिक फलदायी नहीं हुई होगी।

किन्तु अन्य लोग, जो अपने ही वैधानिक (वाग्द्विगिक) शक्ति बाल मानते हैं, उन्हें भी हमसे अनुभव-समर्पण की प्रेरणा मिलनी-आदिगी की। हक नया यस्ता लोभने के लिये, जिम्मेदार सनान की सोहरे-दूर अन्तर्गत-समर्पण की जगते, उम्मीदों हेतुन के सम्यक-अन्तर्गत-मौखिक-कामने की सन्तुष्टि-समर्पण मिलित है।

सभी हद प्रक्रिया को अन्तर्गत आसानी से समल करयें, ऐसी अन्तर्गत हदना जो मूल होगी। किन्तु हमसब उच अधिपतियों, जो अन्तर्गत और सनने के करे में नये विचारों और विद्याओं से अन्तर्गत हैं, जो को सिद्धी सन्तरी की हदिये भी आसिद्ध हैं, वे-अन्तर्गत दूमे हदर में सेलें वी मन में उचर होता है।

हृद दिन हृद, मध्य प्रदेश के इन्दौरकर अन्तर्गत पुलिस ने कहा कि अन्तर्गत के बाटु क्षेत्र में विनोदा की प्रेम-अन्तर्गत से कुछ लाभ नहीं हुआ। वहाँ के सभी वागी-विरोधों ने आत्म समर्पण नहीं किया। अन्तर्गत-विरोधों की सन्तुष्टि अब वहाँ छोटे-छोटे अन्तर्गत विरोध बन गये हैं, दूर मार भी बर गयी है। उनके सन्तुष्टि-अन्तर्गत अन्तर्गत पुलिस ने भी हृद-अन्तर्गत किया है। उत्तर प्रदेश के इन्दौरकर अन्तर्गत सहाय ने भी 'दूर मार' करने की घोषणात की। किन्तु मध्यप्रदेश पुलिस और ने सने हीका सहाय किया है कि आत्म समर्पण करने वाले बटुओं में अन्तर्गत के पुत्र, सन्तुष्टि-अन्तर्गत शिष्ट को पौनों से बचाने के लिये, विनोदा के सन्तुष्टि-अन्तर्गत-समर्पण किया था। विनोदा और उनके सन्तुष्टि-समर्पण करने का हमारे पास कोई कारण नहीं है। वहाँ हम उनके अन्तर्गत अन्तर्गत नहीं रहते।

हाम दम दलील के लिये यह मान लें कि हद-अन्तर्गत शिष्ट को पौनों से बचाने के लिये ही उनके सन्तुष्टि-समर्पण किया, भी भी आसानी यह मानना पड़ेगा कि वह 'आत्मोत्सर्ग' है, दूरे के लिये अन्तर्गत में गुप्त हल करारी है। किन्तु अन्तर्गत में गुप्त हल करारी है, बल देना सन कर सन्तुष्टि है। दोस हल करारी है और हल कर कर जो हमका देते हैं, उन्हें क्या डाकुओं से लेंना मानना चाहिए।

अनुचित धन-नीति और समाजवादी हल करे में प्रायः अन्तर्गत है कि मध्य-की पटुला चमने और चमने की विमो-दारी सने आत्म समर्पण और धन की दे। शिष्टा, आर्थिक तथा सामाजिक सन्तुष्टि, सन्तुष्टि के उन चमने को दूर किया जा सकता है, किन्तु अन्तर्गत से जो मन में निराशा या अनुचित मानसिक दमन आदि की शक्ति होती है।

किन्तु हमसे बहुत अधिक सन्तुष्टि-समर्पण की है, प्रेमयत्न, सन्तुष्टि-समर्पण अन्तर्गत। यह पदयात्रा है। अन्तर्गत कर में दूर अन्तर्गत-हद-विना आसिद्धि में भी पूर्ण समल सन्तुष्टि में सन्तुष्टि-समर्पण वाली थी। सन्तुष्टि के लिये श्रद्धा सनत प्रथम सन्तुष्टि-समर्पण वाली के

किया। शुरु-शुरु में विनोदा-समर्पण भी हल सम्यक नहीं मानते थे। आज उनसे अन्तर्गत कम है। किन्तु हमें उन्हें भी सम-हद-हद है और अन्तर्गत रहना है। हमारी के बाट विनोदा का पानी मयात है। उनकी आत्म-समर्पण का बही अन्तर्गत है। हल सनने के कार्य को विनोदा ने प्रेम-अन्तर्गत पहा है। विनोदा-समर्पण का आज यही अन्तर्गत सनत रहना है। और और शिष्टा, बाटु वह आसिद्धि के कारण हो, भाव-आदर का आश्वासन अन्तर्गत विनोदा के कारण। प्रेम और सन्तुष्टि-समर्पण द्वारा ही उन्तर्गत निराकरण सनत है।

आप यह न समल लें कि सरकार अन्तर्गत पुलिस में ऐसे निराशा-समर्पण नहीं है। यह बात बोधे ही लोभ मानते हैं कि चम्बल के वेहरो के डाकुओं का अन्तर्गत करने में वागी-समर्पण मात्र करने के बाद भी, मध्य प्रदेश के किन्ती हद-अन्तर्गत अन्तर्गत पुलिस, भी कोहली ने ही सने हल अन्तर्गत की सन्तुष्टि-समर्पण का कि हल अन्तर्गत-समर्पण में अन्तर्गत प्रेम-अन्तर्गत अन्तर्गत के लिये आश्चर्य विनोदा सने को आश्चर्य किया था। एक पुलिस-कामने बने में विनोदा का सन्तुष्टि करने हुए कोहली सनत न रहा था,

"आज के तीन घण्ट पले निष्ठ, सुरेता, दलिया, सन्तुष्टि आदि में बटुओं का बहा-अन्तर्गत पैदा हुआ था। सन्तुष्टि का बहा-अन्तर्गत सनत करार डाकुओं को सनत किया जाय। हम दम में है दूर गिरीह सनत करयें में सनत हल। अब सनत, धनो की सन्तुष्टि-समर्पण में गिरीह करारी है। सनत के सन्तुष्टि पर उठे हल चोरे का आश्चर्य-समर्पण ही हमने कर डाला, पर हलसे सन्तुष्टि हल नहीं होटी। सनत न रहा दूर दल देवे निष्ठ। पर सन्तुष्टि-समर्पण लो, तो सिने ही सनत सनत पले ही सब सुशा-दलिया का कि हलसे लिये आश्चर्य विनोदा आते ही सनत को सुशा-समर्पण का सन्तुष्टि-समर्पण से ही सनत को भी सन्तुष्टि-समर्पण हो सन्तुष्टि है। सन्तुष्टि के बाट सनत सनत सनत सनत हल हुआ।" हलसे सन्तुष्टि-समर्पण होता है।

विनोदा के धार्मिक-समर्पण चम्बल के वेहरो में आने की लिये के धर्मों की मर-बेमरों में सनत है अन्तर्गत है। इन्दौर से उनके एक अन्तर्गत-समर्पण की सन्तुष्टि-समर्पण के लिये, निर-समर्पण सनत सन्तुष्टि-समर्पण के सन्तुष्टि-समर्पण की।

युद्ध-विरोध पर्याप्त नहीं समाज-परिवर्तन का अहिंसक आन्दोलन चाहिये

शंकरराव देव

पिछले कुछ दिनों से इंग्लैण्ड में वट्टेड रसेल और माइकेल स्कॉट के नेतृत्व में अणु-अस्त्रों के उपयोग के खिलाफ आन्दोलन खड़ा हुआ है, जो दिन-ब-दिन जोर पकड़ता जा रहा है। उनकी मांग है कि सम्पूर्ण निःशस्त्रीकरण न होता हो, तब भी कसे-कम अणु-प्रस्त्रों का उपयोग न करने की बात सब राष्ट्रों को मान लेनी चाहिए। अणु-अस्त्रों के त्याग के बारे में इन्होंने १४ से १८ तक लम्बे समय में एक छोटी-सी गैर-सरकारी स्तर की अन्तर्राष्ट्रीय परिषद भी आयोजित की गयी है, जिनमें भ्रम लेने के लिए श्री जयप्रकाशजी भी गये हैं।

अणु-अस्त्रों के खिलाफ जो यह आवाज उठी है, उसका कारण यह है कि इन अस्त्रों के उपयोग से मानव जाति के सर्वनाश की सम्भावना है। मानव के सामने अपने अस्तित्व (सुरवाहल) की ही समस्या खड़ी हो गयी है। अणु-अस्त्रों के पहले के अस्त्र-सस्त्रों से भी समाज का कुछ तो नाश जरूर होता था, परन्तु उन दास्यों के उपयोग का अनिर्वाह परिणाम अर्थनाश नहीं था और हसींकि उन दास्यों के उपयोग के मानव मानव जानि बची रहती। पर अब वह बात नहीं है। अब युद्ध हुआ तो इन अस्त्रों के कारण सर्वनाश ही होगा। इस दृष्टि से अणु-अस्त्रों के नियंत्रण को मांग दुनियाँ के हर एक मानव के लिए अत्यन्त महत्त्व रखती है।

यह मानने हुए भी यह कहना होगा कि उपरोक्त आन्दोलनों के पीछे की प्रेरणा एक प्रकार से उपयोगितावाद (युक्तिवैदियनिष्ठ) से ही जन्मी है। मनुष्य के स्वभाव की यह विशेषता है कि उपयोगितावाद चाहे जिसने ऊँचे दर्जे का हो, फिर भी वह उसके लिए पर्याप्त नहीं होता है। मनुष्य को महारू और उन्निकृत कामों को करने की प्रेरणा देने की शक्ति केवल उपयोगितावाद में नहीं है। उससे प्रेरित होकर मनुष्य महान् कार्य सम्पन्न कर भी ले तो भी वह आध्यात्मिक दृष्टि से असंतुष्ट ही रह जाता है; क्योंकि उपयोगितावाद किन्तु ही क्षात्र हो, उसमें भय का छुटका-न-छुटका अंश जरूर रहता है।

अस्तित्व की बिना वे दौर हुए इन आन्दोलनों के अलावा, परिचय के देवों में शान्ति और अहिंसा के अन्य आन्दोलन भी काफी कमों के बल रहे हैं। इन आन्दोलनों के पीछे की प्रेरणा मुख्यतः उपयोगितावाद की नहीं है, ऐसा कह सकते हैं। यह प्रेरणा एक प्रकार से धार्मिक है। इसका एक उदाहरण यह है, इस प्रेरणा का मूल ईसा मसीह के उपदेशों में है। सामान्यतया 'ईश्वर हमारा है' और सात बरसे 'चर्चों' में, तबतः और प्रवचन दिना और युद्ध को मान्यता मन्ने दे दी थी; फिर भी पाश्चात्य ईश्वर हमारा है बहुत सीरक्षक के दिने धारी लोग और सामान्य हुए हैं, जो युद्ध और मानव-हत्या को ईसा के उपदेशों के विरुद्ध मानते आये हैं। इस्लामि उन्नीम युद्ध-रक्षा का विशेष विषय है। यूरोप के कई देवों में सेना में मर्त्य होना हर एक मानव के लिये कानून लज्जित है। इस कानून का उन लोगों ने हमेशा विशेष विषय है; क्योंकि युद्ध उनही धर्म-दृष्टि (कॉन्सिक्वेंस) के खिलाफ है। इस्लामि में श्रेय 'क्याप्राप्रायस' आन्वे-करी' के नाम से पहचाने जाते हैं। इनकी

वैलयेन-सम्मेलन के मंच से:

(१)

"यह इस सम्मेलन में अपने देरा के प्रधानमंत्री की हैसियत के धलावा एक ही और एक माता की हैसियत से भी आयी हूँ। मैं एक बालू के लिए भी यह विचार नहीं कर सकती कि दुनिया में एक भी माता ऐसी होगी, जो आधुनिक प्रभाव के कारण अपने बच्चों के धीरे-धीरे युद्ध-युद्ध कर देने की सम्भावना की बचपना को भी सह सके। इन बड़े राष्ट्रों के राजनीतिज्ञों को, जिन्हें सत्ता पर बैठने वाले आम लोग युद्ध नहीं चाहते, यह समझ लेना का कोई अधिकार नहीं है कि उन्हें निरी भी जीवन-पद्धति या किसी बालू-विरोध की रक्षा के लिए महत्त्व विनाश की सम्भावनाओं से भरे हुए आधुनिक युद्ध शुरू करने का अधिकार प्राप्त है।"

—भीमती भण्डारलायक, प्रधान मंत्री, श्रीलंका

(२)

"...यह सम्मेलन मानवीय इतिहास के एक संकट-काल में मिला रहा है। और सारी समस्याएँ—चाहे वे साम्राज्यवाद की हों या आजादी की—वे सब इस संकट के कारण बची बच गयी हैं। क्योंकि, अगर युद्ध होता है तो सभी चीजें मट्ट हो जायेंगी।" मानव जति स्वतंत्र है। इन्होंने इसी सन्दर्भ में सोचना चाहिए और जो सबसे अच्छी चीज है, उसको प्राथमिकता देनी चाहिए। यह जरूरी प्रश्न यह है कि दुनिया में युद्ध होगा या शान्ति। ऐसे समयों में, जब कि दुनिया सर्वनाश की ओर जा रही है और सब वहाँ गीय है—'या तो निःशस्त्रीकरण ही होगा या विनाश। इसके अलावा और कोई विकल्प नहीं है।"

यह बहुत गम्भीरता के साथ यह महत्त्व करता हूँ कि शान्ति-स्थापना की यह समस्या दुनिया की हर एक सरकार और हर संस्था व व्यक्ति का प्यान अक्षरिणित करती है।

युद्ध इस बात का वास्तविक है कि बड़े राष्ट्र कदा और कबसे हल अस्तित्वा पर कर रहे हैं। वे शान्ति-स्थापना की पचाँ करने की पहल करने के दिने अपने से बहुत बड़ा और ऊँचा समझे हैं। मैं नपचायुक्त कहना चाहता हूँ कि यह सही नहीं है। इस समय उनका अपना स्वाभिमान खतरे में नहीं है, बल्कि मानव-जाति का अस्तित्व खतरे में है।"

—जवाहरलाल नेहरू, प्रधान मंत्री, भारत

(३)

"इस सम्मेलन का उद्देश्य बड़े राष्ट्रों को यह महत्त्व देना है कि दुनिया का अस्तित्व केवल उनकी क्षाम में नहीं है। इसका उद्देश्य हिंसा और जोर-जबरदस्ती के हिमायतियों को यह मान कराने का भी है कि दुनिया के अस्तित्व का यह समझना ही है कि दुनियाँ का सहारा लेने को गलब मानते हैं। सारी दुनियाँ के अस्तित्व की जिम्मेदारी मोटे-से राष्ट्रों के हाथ में नहीं रह सकती, चाहे वे कितने भी बड़े या शक्तिशाली क्यों न हों।"

—मार्शल टोली, राष्ट्रपति, यूरोसोवियिया

सुख भाग यह रही है कि के लेते अर्द्ध धर्म-दृष्टि के कारण युद्ध का विशेष कर है, उनको सेना में मर्त्य होने के लिए मानव मनुष्य न किया जाय। इस मांग को धेन इन लोगों ने बहुत बल रहे हैं। उनका यह धारा इतिहास महा रोमांचकारी और प्रेरणादायी है।

पर अति मानव और इतिहास में ये यह भाग पैदा हुई है, उलटा स्वरुण है, ऐसा है कि चाहे ही हमें जो लक्ष्मी मान्यता मिली है तो भी हमारे मानव के सामने अणु-युद्ध के कारण ही सर्वनाश की समस्या खड़ी है, उसके मानव को युद्ध नहीं मिल सकता, न उल्टे है अणुधर्म का निःशस्त्रीकरण भयना अन शान्ति का संघर्षातुक्त त्याग संभव है। उपयोगितावाद या धर्म-दृष्टि के कारण युद्ध का विशेष करने चाहे अहिंसा की संघर्षा-चाहे अहिंसा बची हो, पर जब तक हमें शशापण-मानव युद्ध-विरोधी और मानवीय नहीं बनता है, तब तक मानव हत्या विरोधी भी प्रकार से युद्ध के मय के मुक्त नहीं हो सकेगा।

यह इन युद्धों के मूल कारणों की खोज करने लगे और उन कारणों को निपटारण करने का प्रयत्न करेंगे, तब उन प्रयत्नों के परिणामस्वरूप मानव के मन ही परवरण और युद्ध के प्रति भाव को बदल और प्रेरणा है वह हुए होगा और वह अहिंसक जीवन के लिये उल्लेख और ईश्वरता होगी, क्योंकि विश्व और लक्षण युद्ध की बड़े आद्य के मानव के मन में और मानवीय स्वभाव की आत्मा की रचना भी ही मौजूद है। यह जटिल समस्या की तरफ देखने की इमारी दृष्टि हम और वैशान्तिक होगी तभी इसका सही हल निकल सकेगा।

बत दिग्दर्शन में वाणीप्राम (महाय युद्ध) में 'बार शिष्टर्य इन्द्रविद्यमान' का जो अन्वेषण हुआ था और अहिंसक परिवर्तन के मूल में शक्तिशाली एकजुट थे, उसके निवेदन में इस महत्त्वपूर्ण मुद्दे पर प्यान दिखाना है, यह सही है। निवेदन में कहा है कि प्रेम और अहिंसा का अर्थ केवल अहिंसक जीवन पर ही नहीं होता चाहिए, बल्कि आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक रचना और संघर्ष पर भी अहिंसा चाहिए। यह सभी को सचता है कि जब एक निरक्षित आर्थिक और राजनीतिक

दक्षिण भारत में एक महीना

सुरेन्द्रराम

"माफ़ कीजिये, क्या आपका नाम—हूँ, और आप इलाहाबाद से आते हैं?"

माद जून में लखनऊ सिटी-रेलवे-स्टेशन पर एक फुटलैंड नवयुवक ने भी ओर ठण्डी हवा चल रही थी।

उसके मुँह से इतनी सुन्दर हिन्दी सुन कर ओर ओर धारण्य, दोनों हुए। नवयुवक ने मुक़्त कहा कि आपकी मेरे साथ गांधीनगर आती है। वहाँ से स्नान आदि के बाद विश्वनीयम् जाना होगा। मैं अपने मित्र के साथ हो लिया। मोनो दूर चल कर मैंने उनके कंधे पर हाथ रखते हुए पूछा कि "आपने इतनी अच्छी हिन्दी कहाँ से सीखी?"

"हम दक्षिण में तो हिन्दी खूब सीख रहे हैं। हमारी राष्ट्रीय भाषा है।"

दक्षिण के अपने एक महीने के प्रवास में मैं तमिलनाडु, कर्नाटक और केरल में रहा। वहाँ मैंने देखा कि दक्षिण के विभिन्न कन्नडाय हिन्दी का विशेष बोल है, लेकिन नहीं दीखी है। के साथ हिन्दी भी चल रही है। और यह दिन दूर नहीं है, अब दक्षिण में हिन्दी के उभार छाटा और शिक्षक होने लगे और उत्तर भारत आकर हम लोगों को शिक्षायें।

मेरा अग्रिवाद्य समय रचनात्मक कथाओं में और उद्योगियों के हाथों में बीता। फिर भी दक्षिण भारत के जन-जीवन में जो धार्मिक-उत्पादों और मार रही हैं, उनका भी कुछ अध्ययन कर रहा। तमिलनाडु का लोका प्रार्थिक स्वयंसेवक-सम्मेलन देवीर किले के पाण्डुराम नाम में हुआ। इसकी अध्यक्षता तमिलनाडु मूदान बोर्ड के नती, श्री जगन्नाथन्नी ने की।

वहाँ उद्योग की बात है कि देश में भूमि-सुधार की बात बहुत की जाती है, मगर भूमि के स्वामित्व के सम्बन्ध में जोर दिया जाता अभी तक मौजूद है। इसका भयानक रूप तमिल किले में देखने को मिलता है। लखनऊरी किले के भाग पर, कल्याण धर्मोद्योगों में अपना जाल दूर दूर तक फैला रहा है और भूमिहीन मजदूरा का समानता दण्ड ॥ धोषण करते हैं। वैदिक-लिखों भी खूब चल रही हैं। विशेषकर मद्रास किले में, वहाँ कानूनी मामला हुआ है, जहाँ शार गौरी में रहते भी नहीं, लेकिन किसानों को बेवला करते हैं। इस विषय पर तमिलनाडु के हमारे मित्र शशी धितित है और बीच रहे हैं कि इस अन्याय के प्रतिशस्त्रक रूप नैतिक बन्द उठाये जायें। मगर देश की बात यह है कि प्रांतीय सरकार अपनी जिम्मेदारी का ठीक से अनुमान नहीं कर रही है। इस तरह गरीबों के साथ न्यायही होने पर, किस प्रकार समाजवादी बौंच का उभार बन सकेगा। समझ में नहीं आया ॥

० श्री सुरेन्द्ररामजी के प्रवास के बाद तमिलनाडु में बरेलियों के विचारक एक सप्ताह दिया गया, जो लखनू हुआ है, इसकी जानकारी आपने "सुरेन्द्रराम" के पिछले हीन अंशों में लगातार लिखी रही है।—सं०

अपने देश में बंगलूर-विषय "प्रतिभान इन्स्टीट्यूट आफ़ बाल्य" शुरू करिदें। विज्ञान के अध्ययन और गुरुणा का जो उत्तम फल है। यहाँ डॉ० टी. एम. अनन्तायन्म नामक एक प्राध्यापक हैं जो सर्वोदय के बड़े प्रेमी हैं। उन्होंने अपने एक मित्र-मंडली खरी कर ली है और सुवचाप काम करते हैं। उनके एक बच्चे प्रेरक-शक्ति उनकी धर्मनी, भारिने छाऊकेलें हैं। हमारी यह बदन चर्चने में रहनेवाली हैं। चार घण्टे हुए यह हिन्दुस्तान आरं और विचारकों के हाथ पदगण में रही। भारत की आध्यात्मिक परंपरा के प्रभावित होकर इतनी भारत में ही वेणु मय जीवन विज्ञान का निर्माण किया।

विनोबा ने इन्हें देना बहुत का ध्यान दिया है। विनोबा के ही हाथों से मद्रास १९५८ में इन दोनों को खारी हुई। देना बहुत जो सर्वोदय-यान के काम में विशेष रस आता है। बालकों को जो यह खूब मन छाया कर फरती है। डॉ० अनन्तायन्म "सर्वोदययान" नामक एक छोटे से अमेरी मासिक का भी संपादन करते हैं।

बंगलूर में "सुरेन्द्रराम" नाम का एक कला साप्ताहिक भी निकलता है। इसे सप्ताहिक मीनियराल रूप है। श्री मीनियराल अपने काम में लगे रहते हैं।

गौड़ राज्य में जल-पात का सवाल बहुत बड़ा है। हाल में मैं, वहाँ की सरकार ने एक काल विशेष को विद्या हुआ और देकर उसे विशेष सुविधाओं का निर्माण किया है। यह छोटा न जो ही बन दें, न विद्युत् काटि के हैं। फिर भी, यह पदगण किया गया। इसके द्वारा जातिवादी में हीनो पैदा होता स्वामित्विक है। इस सबका दुःखकारी अन्त देखें की राजनीति पर रहे निना नहीं रा शकता।

केरल में आम होर से अलवादी में फेरक का नाम अस्पर आता है। जून के महीने में भी एक के गोपालन के अवसर के कारण बड़ी चर्चा रही। श्री गोपालन केरल के निवासी हैं और संसद में कम्युनिस्ट पार्टी के उनेता हैं। केरल के कोझामंडिल में अलवादी नाम के इलके में सरकार ने कुछ सुविधाओं को देवला कर दिया, जिसे वे बहुत संकट में बड़ गते। इस अन्याय के विरुद्ध भी के. गोपालन ने उपाय शुरू कर दिया। केरल के कुछ विद्व, श्रीवास्तु नेता और जति केने से थेवानी, श्री केळण्णनी ने जय बंद हुआ तो गोपालनजी को एक वार मेवा। तार में उन्होंने कहा: "हृदय उजवाला छोड़ सोचिये। मैं विचारक बिलाल तो कि बरेलम जिने पत्रें विज्ञानों के सुचारिक के लिखू जो

हाल में कुछ बच्चों को नादरे में मोंगा मोहन दोहर कर जो देना एक मनाक नहीं जो क्या है। और फिर हम पूछना चाहें कि जो बच्चे एक तरह की खुशक पर रहें, वे बड़े होकर क्या फी भी घर ऊंचा करके देकर छत्रों, न विद्वानों के चपेटों को बरतकर पर पायें, न किसी अन्याय के सामने टकर के चरेंगे।

तमिलनाडु से कर्नाटक --
फिर कर्नाटक का मैगूर राज्य में एदना हुआ। बालूर शहर के बीच मील की ली पर एक बड़ा रम्य स्थान है। लगभग तीन ली एकड़ बगीचा है। वहाँ पर १८ अगले १९६० को विश्वनीयम् नामक एक बड़े संस्था का स्थापना हुआ। वहाँ एक नाम के विदित है। इसका संचालन और देखरेख श्री बरठमस्वामीजी के सुपुर्दे हैं। श्री बरठमस्वामीजी योए दिन पहले तक अष्टिाल भरत सर्वो देना संघ के अध्यक्ष थे और पिछले चालीस बरसे से वह विनोबा के साथ हैं। वे सर्वोदय वाद के अत्यन्त खेडरिय और निष्ठावान् चरचरते हैं।

उसका स्वप्न है कि विश्वनीयम् में तीन बौद्धों हो—सर्वोदय के आधार पर जलपाय, मज्जा और लोका, बार्थु-कल्याणों का पुरा परिवार बहू बने, जो क्लेशों और उदोत के चतने-बाले सम्पूर्ण जीवन का चित्र बेश कर सके।

वहीं विश्वनीयम् में कर्नाटक प्रार्थिक सर्वोदय संघत का प्रधान कार्योत्तर भी है। इन्के मधी हैं श्री सुभाषचन्द्र, जो बहुत ही सरल और मधुर स्वभाव के हैं। उनके परिभाम के परिभामरकर मैगूर राज्य में सर्वोदय का काम देल रहा है और उतावरी चरचरते हैं। सर्वोदय के प्रथम नगरों में से है। सर्वोदय-देहा ने भी यह बहुत महत्त्व का स्थान देना या रहा है। बन्धु भया के सुप्रसिद्ध लेखक, आर्यण धर्मो वहाँ रहते हैं, जिन्होंने विनोबा के "श्रीराज-यन्त्र" का कन्वड में अनुवाद कर, कन्वड मध्य-मार्गियों को विनोबा का पदल परिचय दिया। नैवे, यह मद्रासा गांधी के सामाजिक "हरिजन" के कन्वड संस्करण का सम्पादन करते थे। उनकी गांधीजी पर लिखी एक रचना "पंच-मुंठी" बहुत प्रसिद्ध है और अपने दंग भी भारतीय साहित्य में अनोखी रहती है। श्री धर्मो की वे अपने मित्रों की सहृदयता से "श्रीधी भवन" नामक एक जानदार हाठ मैगूर में बनाया है, वहाँ सर्वोदय विचार की कई प्रशुधियाँ बहती हैं।

पद्यात्रा का एक पावन प्रसंग

सुन्दरलाल बहुगुणा

उत्तराखण्ड के उत्तरकाशी जिले का जखोल गाँव चारों ओर अंगुल से घिरा हुआ एक ऊँची चोटी पर है। मुख्य सड़क से गाँव तक पहुँचने के लिए दो मोल की सीधी चढ़ाई चढ़ कर जब दश क्षेत्र के प्रमुख महादेवी की पद्मनाभ सिंह के साथ २७ अक्षरत की चाम की में गाँव में पहुँचा, तो बरसात की जंघेरी रात में केवल २-३ परिवारों से ही गाँव हो सभा।

गाँव में पत्तकरी न होने के कारण इस गाँव के लोगों को धारा पीसने के लिए २५ मील दूर जाना पड़ता है। इस दश गाँव में द्वायकियों में रातने के लिए बाल-विधिग लेकर आते थे, पर वह काम सके दश साकफ मोटे पाट की चबको ही गाँव में नहीं थी। सुबह भी २-३ परों में गये, बख-हावलबंद आदि की चबको भी, पर बौयो (बाबुरे की तरह का एक पहाड़ी छातन) को फसल पकने के कारण छोड़ कर मुख्य ध्याय फसल बटो देने की चोर था, क्योंकि बाहु फसल को पीस कर देते थे।

इसी वृत्त में बहने बारा नौरी नौरी था। अपने सोले पीट पर एक कर दस कूले गले के लिए एकतर लेके खोले। एक ओरन के गुजर रहे थे कि एक बुढ़िया वहाँ की चबको इलाई दी। आँगन में अनाज दूधने वाली महिला के पूछा तो

बाहुप हुआ कि उनके पैर में दर्द है। कई दिनों के ध्याना नहीं उतरा। मैंने अपने दोस्तोंकेके के ओर बख में उठे, कोरें ओरचि नहीं थी। सोने में एतिया अक्षर था, पर कौन दे? एक उत्तरण लकी। एतिया देने को निच बुढ़िया के

बेटे को मगलार्द जीर उन्होंने अपनी पत्नी को। इस बहिन ने बुढ़िया को एतिया दिया और उसे लुके अक्षर हुआ। परोस में एक दूध्री अंभार लटकी को भी उठने एतिया दिया। अतः तो गाँव की निचों के बीच वह 'अक्षरती' के नाम से प्रसिद्ध हो गयी।

इस बीच मैं गाँव के २३ बुढ़या, जो पसल पाटने का रहे थे, हमारे पास बैठ गये। एक चमन की दाढ़ी और लुके धनु कड़ी हुई थी। वे और चार अपनी दाढ़ी खुलवा रहे थे। मैं आँस मचा कि वे अनिच्छा से उन पर धिन्नी हुई दाढ़ी के दुलिय पावा चाहते हैं। पूछने पर माकन हुआ कि गाँव के 'बायली' को, बा कयरा लिये, दोस बजावे और दाढ़ी बनाने के लिए गूरे गाँव का बुढ़या कर्तव्य था, कई दिनों के दुलसत नहीं मिली। दूधरे किन्ही के दाढ़ी दुबाने का बखाल को नहीं उठता, क्योंकि वह काम तो हरिनाम का है। मैंने अपने सोले के छोटी की निचारी और उनगी दाढ़ी पूरती छूक कर दी। दाढ़ी हलकी बड़ी हुई कि पहली दुबाने में हलके से फडक कर बाल काता। तीसरी दुबाने में वह सतक हो गये और नूटो की छोटी हो गयी। एक सतक पूरा लेते ही मैंने उन्हें घीसा दिखवा और वे खुल छुट हो गये।

उत्तर वेचसकस सिद्धी वे लेग मेरा परिचय दूजने लगे। इतर के गाँवों में बहने वे अपने बाल एक ही अक्षर लेते है और वह होता है निचय विनय का कोई कर्मकारी। इतएक परिचय में एीग ही दो गाँव बानने के लिए उलुगु रहने है कि किन्ही सनकराह याने बाल दे और कथाकथा पूछ और अलुतार दिख उपनारी है। इन सवाली वे उन्हें विनोच, भुदुग, शायरना, शाय सखाप और सखीद की कहानी गुलावे का अक्षर दे दिया।

"तो क्या हल अपने गाँव पर वह दान ही दूर कर चको है?"—उनका प्रश्न था।

पद्मनाभसिद्धी ने कहा, "हाँ, दन्के लिए न किन्ही पूछा की अक्षर कहा है और व अलुतार की। केवल एक-दुसरे की ही न अक्षर करने के लिए कथय पा पीन अक्षर है। इस गाँव में भी यही सुनिधीन है क्या?"

"हाँ है। ओरसिद्ध है। ८-९ अक्षर का परिचय है। ओर लेह है केवल बार। अक्षर के जमीन निचकी नहीं। हमारे पास भी अक्षर के बुधारे लक

है। कन्ने छोटे हैं और पर का अंशना है। मीग (संवेचनिक निगम निगम) में भी मन्मूरी घनने नहीं जा सकता।' जमी नूटो हुई दाढ़या पर ह्याय परेरे हुए भी अक्षरिद्धि नै क्या।

अब एक सारी बैठन ने सभा का रूप ले लिया था। "हो। मीरसिद्धी भी अगया। कथो भारी मोरसिद्ध, बोनेबा लोक में मेरे दो लेत लगे। भुरान में देखा है।' लेती के बीच में है। किन्ही तरह के पद्यों के उल्लान का मय नहीं।"

भी बुँवसिद्धि ने कहा, "हीन नालो के तीन लेत सुभुय लोक में मैं देना हूँ।" पीले बेटे हुए जन्मिद्धि ने न रहा तथा-उलके अपने पास भी गुधारे के लिए पूरी भुल नहीं थी, शेष उर, "गोरे के बीच में ही एक हुई का मेरा लेन भी ले को।" यह वनते उल्लान लेत था।

भुदियापू लोक में मीरसिद्धी ने भी एक नालो (नेत्र एकत्र) भुदिये दे की। भुदियोन मोरसिद्ध के लक्ष मादे पाँच नारी भुदिये हो लयी। इतसिद्धि ने कहा, "इतने के क्या होता। मेरी ओर ते काली और लिजे।"

"अब एक जमीन का कथा तो पटवारीकी ही हो। इतना ही जगलें गाँव है। जाने कथ तक आयेगे। सब तक क्या होगा।"—एक हाजत ने पूछा।

यह सचमुच बड़ी सखपाय थी। मैंने कहा, "शान अपने रिपय है तो कथा पटवारीकी कथी दिने। भाय ही नेगे। हॉ। लिखा पढ़ी दे कर छिने। उरकी भाय विनोच है।"

"तो को भारी मोरसिद्ध भाय ही लेते लेतीं को के को।" एक सताभी ने कहा। इतसिद्धि ने कहा, "बोनेबा लोक के मेरे दो लेता में गद्य (रास) की पठले है। उते भी इस ही काठ लेता।"

जखोल में दाढ़ी-दुबाने के दूधरे के दिल में ह्याय पाते का सच केकर हम अपने बड़े। घने बाल, उर-सखाप रहते और सखानी नाउं को बार कले हुए गुरगली गाँव में दूधरे तो वहाँ भी दो दाढ़ी मुँगेने वाले मिल गये। गुधारी में हलके दो नाली मुलूत में मिली, निचका कथा बहोके एक सुनिधीन की वहाँ आ दे दिया गया।

उकनोर हाथी की चार दिन को इन पाटों में १० दाढ़ीके वे दने ३३ नानी-नूडि का मुलान मिला, को ५ मुनिधीन में कहा। याने नाली में तीन दिखन थे, निनेके नाय पकडे के भीलकी में एक मुट्टी भुदिये भी गयी थी।

सुनिचारी अग को यानों भुल जाते हैं

—अन्ना। दिन दिन उस पर शेष लुद रहा है और उनकी पोषाणियों भी नूटती आ रही हैं। भीषों के चकने हुए एक ओर गने-गने वनों के बाएल बनल दु ली है। गिर, अपने देस भी में यह होय है कि को लोग सभा में हू, वे छह निचों के नाय पर भाय निगम प्यार करते हैं। इन सब कारणों के, दल-नाय उरनोति के सखि नाराय का आग्रहण कम होता का रहा है। कौर नहीं कर सकता कि बग उलका शेष मन्क बाये और नकल कर बाये।

लेकिन केवल में क्या होगा, यह बहुत दुःख हुए पर भी निर्मर है कि देस में क्या होता है। इनाय अन्ना अखाल तो यह है कि हम एक अन्ना अखाल के उर बेटे हैं और अन्ना हम सखपाय नहीं रहते हैं और पारसिक विचयत तथा कथि की कथि कथि नहीं करे हैं तो रिच्छी बेराह हो सकती है।

रक्षिक का प्रयास कथि की बहुत दुर्दि और आनन्द देता है। इन दिनों उरिय एकता की नती चर्चा है और फल बाला है कि यह सतर में है। इन गेयचर को हम नहीं मानते। इनाय विचार है कि बार बीच एकता की नती बहुत गहरी है और देके होते बारी सखाय व गिदधान है। इतएक बुढ़ी अक्षर लिखा नहीं कपती है। कहीं जगसा महान है इधरी जमीन सखाय है और नीयन का। अन्नी निच की एकता हम अंशल लुके, गुँगेन एकता की कोरें सतय नहीं है। और रक्षिक के प्रयास के मुते काम कि अन्नी निच की एकता का उरिय सखाय में हमें दक्षिण के हाथी पीसना है।

पुत्र सखय है, वह कथने को सखकार

को राजी करेगा। अक्षर से अपनी कथिना में अक्षरत चहु, तो फिर अक्षरके साथ मैं ही उपबाय करूँगा।" एक बड़े बालक की अक्षरत वली काकर भी मोपाजनी के मिले। वहाँ की निचिये देकी, सखिपल लेताओ और मिनिटपों से सखपाय थी। सखार के श्याय के लिए उन्होंने अन्नुपेण किया। नेल प्रोय कावेरके अक्षय मे भी परिधिधि की सखीरता की माना। अन्नुपेणका सखसीला दुग्ग और बायदें दिन भी गोप-अन में उपनाल होय दिख, एतके बाद वे भी सखनीके के आग्रेषण में कई पाणि-नेचि उर ह्यायके में सहायता का भाय बन रहे हैं।

केवल का निक आते ही वहाँ की सिन्धी भी वारे मे विजाल वेत होती है। वहाँ कावेर प्रया-सखायवारी और सुखिलर को—लेनी सिन्धर सिन्धीरत चल रहे हैं। ओरे दिनों के उरमें कुछ सल-येके के सखाय अन्नापी में आवे है। प्रया-सखायवारीके के तो सखरी ने भी सखनी पाटो वे इक्षीय देर सिन्धीर के सिद्ध सखिपल का प्रस्ताय वेत किया—जो बुड़ी सखर अक्षर हुआ। साथ ही प्रोय कावेर के से गुलावो के सिन्धीरी और कावेर सख-उन के बीच मनमुहाय को सख कर दिख है। गिर, सिन्ध में कथुमिद्धि का तादाद में है—निचल दूधरे सखन अक्षर का। सखाय उरता है कि यह सखं अक्षर तक चलेगा है क्या उरनीय भी उरक कावेर अक्षरें सखी की नेत ले सखपाय की कथुमिद्धी का सखिय देगा है। इन सखीय का पद्य सखाय अन्ना किन्ही के पास गयी है।

लेकिन इनके पूछने काले एक



गुजरात पदयात्रा—रविशंकर महाराज—विनोबा को धामंत्राय—विदेशों से चंपलपाटी को उपहार—सर्वोदय-विजय—समालोचन राष्ट्रीय विद्यालय—आगरा गांधी स्थापना संस्थान—विद्यादायकत्व में गांधी—संस्थान—यज्ञा बाजार सर्वोदय-संप—कानपुर में पोस्टर आंदोलन—'एवाड' की पचासवें समिति—गांधी संस्थान का प्रथम दिनांक—सर्वोदय—सर्वोदय अकादमी—राजगिरि से सर्वोदय कार्य—गुजरात में सर्वोदय कार्य—सामूहिक मानव-साक्षीगुरुसंघी में सर्वोदयपात्र—दलनदी का त्याग—गुजरात में सर्वोदय-साहित्य पर्व—

● गुजरात में कहीं भी माह से भी हरीश-भारं व्यास के मार्गदर्शन में अनेक पदयात्रा चल रही हैं। अभी अहमदाबाद काहूर में दो महीने की नगर-यात्रा का कार्यक्रम रखा है, सामाजिक, शैक्षिक, उद्योगिक और सर्वोदयदायक के अंत में विचार समुदाय जाता है। हरीश भारं ने लिखा है कि एक कार्यक्रम का लोगों की ओर से अच्छा स्वागत हो रहा है।

● श्री रविशंकर महाराज इस साल काग्रेसीय अहमदाबाद से १०० मील दूर, एक देहात में गिता रहे हैं। हर साल के प्रयासिक इस साल भी उनका उपवास शुरू है। उपवास-काल में और ऐसी रुठा-भस्मा में गी से रोज ४-५ घंटे सुन-कराई करते हैं। उनकी सेवा कोई न करे, वह उनकी हमेशा रक्षा रहती है। इस समय मुंबई से एक भारं मालिन्य बौद्ध के लिखे उनके साथ रहे हैं। दो-तीन महीने महाउपवास की राह में रहेंगे।

● वर्षों बिते हैं जगह-जगह की प्राम-पंचायतों ने विनोबाजी की आनंद देने का प्रस्ताव किया है और प्राम-पंचायतें उसकी पूर्ण तैयारी में लगी हैं।

● श्री दामोदरदास 'बुद्धा ने अन्नकी मलाई की ओर से विनोबाजी को निराला दिया है। वन में कहा गया है कि वहाँ के कार्तवीर्य अपनी पूरी शक्ति और बुद्धि लगाकर संघस्य पूरा करेंगे।

● श्री भाग्यनारायणजी के यूरोप प्रकाश में वहाँ की जनता से १०० भारतीय बाळकों के लिखे उपहार स्वच्छ आर्थिक सहायता मिली थी, उद्योग से प्रति भाग चंपल पाटी के १० निराल बाळकों को सहायता की जा रही है।

● सर्वोदय-साहित्य-समिति राखनान में गये साल ३३ हजार रुपये की साहित्य-विजय की। १५ साहित्य प्रकार पूरा रहे हैं और अमरेर, कोटा, उदयपुर और जयपुर में स्थानिक अधिक सहायता से साहित्य-विजय भी चल रहे हैं। अगले वर्ष में और नये साहित्य भंडार चलाने का होकर है। साहित्य-प्रचारकों की संख्या भी बढ़ाई जायेगी।

● पंजाब के फनाल बिले के समाकला गौड़ में सारी धर्मोद्योग विद्यालय चलता है। विद्यालयों ने १५ लाख के अल्पवय के बाद उद्योग निरीक्षण के लिये पंजाब के कुछ पड़े-बड़े गाँवों में प्रथम किया। छात्रों में भी उद्योग निकालकर और नाराज आदि के माध्यम से सर्वोदय-कार्य का भी प्रचार विचार्य करते हैं। पिन्डोली, दुधियाना, अमृतसर, पठानकोट आदि शहर में लोगों ने कामे सहाय्योग किया।

● उ० प्र० ने राखनान, दा० श्री० राम-दुधराय ने आगरा में गान्धी स्थापना संस्थान का उद्घाटन करते हुए कहा कि आज के युग में गान्धीजी के दर्शन का अध्ययन और उनके सिद्धान्तों का समल आवदनक है। समारोह की अध्यक्षता दा० हरिशंकर उर्मा ने की। संस्थान के संचालक ने बखयया कि मत दो वर्षों में ४० छात्रों ने गान्धी-दर्शन के वर्णों से लय उदाय और इस साल २३ छात्रों ने प्रवेश लिया है।

● विशालपदनम में, गांधी शक-प्रचार केन्द्र में ६ अगस्त को श्री हरीराल जैन की अध्यक्षता में एक भाषा समारंभ हुई। उसमें अध्यक्षता विनोबा-पोस्टरों के हटाने के बारे में भी एच० नायणपण्य, सर्वोदय-संघ, एच० एच० वि० साध्विप मूर्ति, "बाजुओं के हृदय-परिचरकों" पर, श्री प्राध्यापक वि० वि० एच० बाजु "गान्धी विनोबा का परस्पर संबंध" पर, लोकसभा के भूतपूर्व सदस्य श्री वि० जे शुभा और गांधी स्थापक मि० आनंद प्रसाद के सचालक श्री एच० रामानन्दजी बोले।

● धनरत्न में २० अगस्त को श्री बाजु-राय देव ने गांधी स्थापना संस्थान का उद्घाटन किया। इस अवसर पर मत सब की रिपोर्ट पेश करते हुए संघोचक, डा० श्री हरीशंकर अहमदाबाद ने बखयया कि मत पर उन छात्रों ने संस्थान से प्रथम उदाय, विनोबा अधिकायक एम० ए०, कायल और बोले के उद्घाटन थे। सत्र की अध्यक्षता विनोबादायक के कुलपति, बरदीस रणधीर-मिह ने की।

● बलरत्न में २० अगस्त को बल बाजार सर्वोदय सभ का उद्घाटन श्री बालचन्द्र भट्टारी ने ५० गांधीय विद्यार्थी की अध्यक्षता में किया। इस अवसर पर श्री बाजु बाबू ने कहा कि असम-बांड के बंधकों में वहाँ गया था। वहाँ का हाल देखकर यह प्रश्न उठा कि भारत मानावत को हुआ है, लेकिन एक नहीं हुआ है। गान्धीजी के रखने चल कर ही भारत एक हो सकता है।

● एच० अमरुत ने प्रयास व्यक्तिकि श्री विन-रत्न सेन ने कडू कि दुर्भाग्य की बात है कि प्राचीय अक्षरकार के कारण हिंदी का विशेष विकास पाया है। जब इस तरह नये भाषना यहाँ थी, तब सब भी वेलाय-चन्द्र सेन ने हिंदी का जोरदार समर्थन किया था।

● कानपुर नगर में एक बालविजय के अयोगमीय पोस्टर के कार्वेयक प्रदर्शन समारंभ करने के हेतु २० अगस्त '६१ को प्रातः आठ बजे कार्वेय-कार्य की एक तैयारी में एक अयोगमीय पोस्टर को गदरे नीले रंग से पोस्ट दिया।

● आन-मदर से लिखे दो चाल से पंचायतीवज का कार्यक्रम शुरू हुआ है। "मास सेवा संगम" (एवाड) संस्था की योग से पंचायतीवज के इस प्रयोग का अध्ययन करने के लिए एक समिति नियुक्त की गयी थी, जिसमें श्री आर० ए० पाटिल और श्री राम-प्रकाश ने १ से दोनोँ डा० २० से २० तक देहभाना के पांच बिलों में पंचायतीवज से अध्ययन के लिए गये। "एवाड" के लिए वे रिपोर्ट तैयार कर रहे हैं, जो दो-तीन सप्ताह में पूरी हो जायगी।

● ग० २१ अगस्त को कानपुर में "गान्धी-स्वास्थ्य-संस्थान" का उद्घाटन करते हुए श्री रंजितरावजी ने मत महाउपवास की शिक्षादायक प्रथमि और विद्य की वर्तमान जनप्रचलित स्थिति के संदर्भ में बहिन श्री समरता का निराला किया और कहा कि आज तब काही भी शिक्षा उल्लभितियों की प्राति नीतिक लक्षणों से करने का प्रयास ही इस स्थिति का मूल कारण है। मन्वस गांधी ने नीतिक उद्येयों की पूर्ण के लिए नैतिक एवं आध्यात्मिक लक्षणों का ही प्रयोग करने का बल दिया है, यही इस समय का सही विधान है।

● प्रामदाजी गाँवों की आगे की व्यवस्था की हित के अरथ-सदकार एक प्रामदान-कारुण्य बना रही है। यह कारुण्य ६ अमरु-कर तब तक हो जायगा, यहाँ उम्मीद है। प्रामदान एकट के बन जाने से प्रामदान के काम को अरथ में अधिक अनुदुलता मिलेगी, ऐसी भावना है। इस कारुण्य के अनुदार आरंभ वर्षों से ५० पीठों-मीन और ५५ पीठों-मीन के मायिक दामिक हो आवे हैं तो वह प्रामदान माना जायगा। १०० व्यक्तियों तक के छोटे प्रामदाजी गाँव में भी प्राम-पंचायत बन सकेगी।

● श्री० ए० जी० कालेक, कानपुर के प्राध्यापकों की एक सभा में सर्वोदय अकादमी की स्थापना का निरूपण किया गया। सर्वोदय अकादमी का नगर के सभी कुलेजों में विस्तार रहेगा। अकारमी के सर्वोदय विचार पर भाग-भाषना, अध्यापन, समामुलक चिन्तन तथा सेवा के कार्यों को योजना है।

● क्लमगिरि विजय सर्वोदय-मण्डल ने सा० ११ सितम्बर से अर्ध-संगद, दादी-दादी को साहित्य-मन्थार के कार्वेयक का विजय आयोजन किया है। क्लमगिरि नव विद्यालय समिति के दल वर्णों से आयोज्य श्री गोविंदराय सिंघे और सँजी श्री मधु शिरोडकर जुने गये हैं। क्लम-संगर पर सुनातों के संबंध में आन-संविदा देहियत करके वह प्रथम ही शुरू किया गया। शान्तिविकल्प में नेताओं ने एकत्र आने पर आवाहन किया है। यह सभा शिव-मर के मध्य में होगी।

● अर्ध-संगद अभियान के दौरान प्रकाश में निरुधर ता० २२-२३-६१ में लिये अनुहार हुआ है।

६० वर्ष	
बहीदा	८८७०
पंचमाल	१३२५००
अहमदाबाद	८९६
बेगला	१३००
सूत	१४४
सीपाठ	२०१०
रोटा	७५
कुल	१६५०

● बहीदा बिले के रंगपुर क्षेत्र के १५ लोकसेवकों में से प्रत्येक ने सभ एक हितान के अपना हिसा देकर हटकर भावना व्यक्त की। हरी प्रकाश अहमदाबाद में कुछ सक्दों ने एक प्रति-महदुरी इस काम के लिए देकर अपने सहायक प्रगट की है।

● कानपुर नगर सर्वोदय समिति के ताबाधकारों में एक विश्वीय विचार का आयोजन ६ अगस्त को हुआ।

● सर्वोदय सभ के संके, श्री सुबोध-जैन १६ से १६ सितम्बर तक प्रयातों के स्थापक संस्थाओं और प्रामदाजी बने के बारे पर बात रहे हैं।

● श्री शिवरत्न निम, हाथी-सलीमपुर तीरी से लिखते हैं: कर्णाल तीरी में सर्वोदय-पार्थकों में अरथ जतरी के हुवायं, सार मधीनों में अरथ के एम और नगर प्रकाश के हल में कुल २०४ २५ मने पैले मिले। इस सार कुल का वलोक अ० भा० सर्वोदय ५५ की सेवा गया। काही फल का सत्यप्रकार पंचायतीवज विनोबाय किया गया। १५४ ५१ मने पैले अरथ है।

● आदीपद लिखे की साहित्य विजय राउ के प्रसिद्ध कविता कार्वेय, श्री प्रामदायक सिंघे "सरोच" में क्लम सौं देव मरठ के आयुक्त को वन डाउ हलक किया है कि "मैं वन दलगत सुनने में भाग नहीं दूँगा। अपना समय और विचार सर्वोदय-स्थापि के कार्य में व्यय करूँगा।"

● गुजरात सर्वोदय-मण्डल की सँजी बादीजी की सभा सा० २० अगस्त को अहमदाबाद में हुई, जिसमें विनोबा-बन्धीय के भी अरथ को सर्वोदय-साहित्य पर्व मनाने पर विचार हुआ। प्रत्येक लोकसेवक इस अवधि में "विजय" (गुजराती) "प्रधान-संग" आदि वर्णों के धन-लेखन "२०-बाद-मन्थार, ऐसी अरथा सरोच-मण्डल ने रली है।

एकिक की अमीन पर भिन्न उलकी इयाक के दलल करते है या उलके असहयोग करने है तो हम उडे अन्ना मन उदोलेके की प्रेरण, नहीं के, बरिह विचार बा रासना उलया बन्द करे देते है। 'सब कया दूबया मतयन यह दे कि सयामीनी कायबतौ अन्वय को सुपचार देलता रहे वा सदन कलता रहे।' पर येसा अन्तरा बरिहज नही है। सयामीनी को निरन्तर येवे उअरष की मोचन में लो रसना पाविष, विषेस बह धान्नेवाले के दिल हो सु सडे। यही सयामीनी की कसोयी होयी है। अगए कोरि उदाय न रहने के ये पर अन्ने रालो की टोङ बर आधन दिवने वाला टालो अन्नाने खो लो यह अन्ने संकल्प के हवा, देसा हला जायगा।

हम विचिंते में विनोय मे एक उपाय यह बतलया कि जो लोग मामदान में शरीक नहीं हुए हैं, ऐसे मामलों की बचनी को मजबूर अर तक काम करने रहे हैं, वे आगे और भी खान और भेस के साथ उस काम की जारी रलें। अब तक मामलों के मजबूती के साथ की रहने-रहे के लिए निरीक्षण या फरदून रिपोर्ट देने होंगे, पर सामान्य और मजबूर निरीक्षण मामलों को यह आश्वासन दें कि अब आगे उनको इस प्रकार के निरीक्षण की व्यवस्था करने की कोई आवश्यकता नहीं रहेगी, मजबूर पूरी ईमानदारी के काम करने और फल के अन्त में ब्यापार को उसका हिस्सा, शिवाय भाव ठक बर छेडा भाव है, उनका वे सुधु-सुधी होंगे। शायी के भूदान या मामदान का विचार समझना सयामीने और प्रेम की बात समझना, एक चीज है और अन्नी हलि से उलकी सावित्र करना दूसरी। क्या हमसे इव प्रसार की कोई हलि आसामाई है? यह ठीक है कि सयामीनी कनी पुन न रहे, पर यह धीरज भी न होने पर अलरी है और निरन्तर येवे उपायी की खोज में बह लया रहे, विषेस बह धान्नेवाले के हृदय में प्रवेश या सके। विनोय मे एक लड़का सयामीना है, विषका विन ऊपर किशर लया है। हमे इमिसे धीरे सहेर नहीं है कि नयागयन और उनसे साधियों से निराश्रय कायबतौ दूले विचार को समझते हुए अगए हल खोज में लगे रहेंगे सो ये निरपच ही सयामीने के और भी बड़े शीघ्र और शोष्यर लीके हूङ्क निवारण है।

पछि के रास्ते से

सं १२ सितम्बर की अमीन को एक सभा में आन देते हुए विचारजन के प्रारंभिकी, भीष्टान मिनन मे यह बरिह दिया कि सल्लसलसलर मे यह लन किया है कि "११ को बार हलफा और सल्लसलर की सी. सी. (सयामीने उपाय-निर्देश दन को) सयामीने की सी. सी. मे यह भी बरिह दिल की सी. सी. की ये दूरीयों सेना के केन "सो मंत्रयन"

नहीं है, बरिह उनमें कन्वैरे अरि सयन कयने की लौकीय धारापया की चावी है। उन्होंने यह भी बरिह दिया कि यही उअर की सल्लसलरों के लिए भी कन्वैरे कयने की लौकीय आ सावित्र की वा रही है।

जो नौजीवान सल्लसलरों सेना में लिए भरीयें होना चाहें, उनसे लिए वैदिक लौकीय की उचित व्यवस्था करना एक चीज है, उँकन ॥ नौजीवान सल्लसलरों के लिए वैदिक लौकीय हल तब अनिवार्य बनता निरन्तर दूसरी। सामान्य विचार के साथ योजी लौकीय को मिलना एक बहुत सुमियाये प्रश्न पान बनता है कि हम हमारे सामाजिक जीवन को किस दिशा में ले जाना चाहते हैं—आधि वा सुध। हय यह जानते हैं कि हल सुध ॥ भी येसे लोग होंगे, जो हल धर में विचारण करते हैं, या येसा चाहते हैं, कि बारे सुध का साधारण एक योजी धारनी की तरह का हो और लोगों को हलियों सुध की तरफ मोठी जावे। लेकिन वे भी जानते हैं कि अन्तर यह मजल भीसे हल में सुध के सामने येव किस खय लो हन विचार वा सुध बहा विशेष आब भी सुध के बुद्धिमान लोगों द्वारा होया, इललिए योजी सुध को अनुयायन के नाम पर 'पीठ के शरदे के' वे सुशाना चाहते हैं। सल्लसलरों की लौकीय के साथ योजी लौकीय देने के पल में यह बात फो जती है कि योजी लौकीय के धारों में अनुयायन की मानना अती है। यह न केवल सिद्धा का और विचारों का उपाहार है, बरिह सामान्य बुद्धि का भी। अनुयायन एक "भीतरी" हय है। उलका संशय मन की सुधि से है, न कि गिरी अन्तर की सारी कयायन वा बरिह के। सिद्धा ही अनुयायन का लकना उपाय है। अतः अनुयायन के लिए विषयन सयामीने में योजी लौकीय

सावित्र करना सिद्धा और विचार-संस्थाओं की हार कन्वैरे करने लया है।

आज हमारे देस के प्रधान-मंत्री जहाँ भी जाते हैं, वहाँ समूची मिशनीयल की शान करके और कहते हैं कि अज हय मिशनीयल में बुद्ध की बत लोचना की सुल्लवा है। पर दूसरी ओर हल देस में ही देस के नौजीवानों के लिए योजी लौकीय अनिवार्य की वा रही है, यह आरचण की बाव है। येही दूसरी बात बनना न किं करार की प्रविद्य की घडनेवाली है, बरिह हल की आकलना के भी प्रविद्य है। हन आज करते हैं कि हल तब "सौर-दयाके के" यौवन की घर में युवाने की हल प्रविद्य के हिलान न लरि देस की विचार-संस्थाओं, बरिह सब लोयों की ओर के आवाज उअरें जायगी।

वच्चों का उपयोग

वन्द हो

अखण प्रदेस कावेस कमेटी मे एक प्रस्ताव द्वारा विचारियों में बरिहो हुई "अनुयायनहीनता" और दिवक प्रविद्य के बारे में गम्भीर चिन्ता व्यक्त की है। प्रस्ताव में ली कहा गया है कि अन्तर यह परिस्थिति जारी रही और समय रहते हलका कोरि हलन नहीं किया गया का "सिद्धा की ही नहीं, बरिह सल्ले प्रान्य के बीजन को हानि" पहुँचेगी।

हमें सल्लसलरों कि प्रिये कावेस कमेटी मे वेबन चिन्ता व्यक्त करने के अल्यथा हल परिस्थिति के कारणों का विवेचन भी किया या नहीं। विचारों सना में अन्त को साधारण नबर आया है, उनके बरें कारणों में मे एक ब्या बारस यह भी है कि सार्वनीयक पारिषों अमी सार्वनीयक के लिए विचारियों का और छेरे बच्चों तक वा उरनेय करली है। युवानों के यौवन में बिल प्रसार की पाटी-

शायी, दूद, में में और अलंके विचारों और लोटे बच्चों के विना है, उअरक अन्त उनके लो जीवन पर न हो, यह सम्यक मानव इतिहास में नेर और समरक हमेशा रही है। निर १९२५ हल भेद और संघर्ष के सान्य रहे हैं। किमी अन्नाने में सेने मानना का पायदा उअरक हल सयाय बाता वा, आब हल मति हल संघर्ष के साधन बन हयारे देस में हो नहीं, हुनकर देसों में ही, पाठ करने उन देसों में हल अमी नपानीनी हानि हुई है सार्वनीयक की सार्व परामर्श नही सार्वनीयक पारिषों सल को भी प्रसार के कारणों का

नहीं चुकी। सय में दिख हुन लके के एक धार का हल एक प्रविद्य हल विषय में पाठक हेतों कि स. १९२५ वरें के, कम्पिन लसेरल-सुध के ही वैदी लौकीय बिल रही है। सल्लसलरों कलता में सल्लु पाटी को एक बीर को सल्लर सनी-अती रहे हैं। बचन के ही विने देली क. मिली है, वे सल्लसलरों में सार-पसाद करे और अनुयायनहीनता लवें को उअमें अउभरें कया और विचार है। अगए प्रदेस है काने बने में को विन्ता सल्ल की है, बरिहो पर सल्ले सार्वनीयक पारिषों की ही पारि में गम्भीरता से सोचना होना। प्रान्यों में सार्वनीयक लके के नेल्ले मिलर ॥ आचार-संस्कार लके वा लय करने आ रहे हैं। युवान के सल्ले न नाकलिन बरिह-विचारों का इलेने गिरी हलल में न हो, हल लयन न सयामीने को हल पाटी को लीकर लकी की बाधि है।



मद्रास-मार्ग की बार ब चीज बन कर लीसे हुए, बडों के बचनों का एक दृश्य

मानव को स्वभावतः दुष्ट मानने में निश्चित मानव-जाति का अस्मान उड़ ही, निराशावाद भी इसमें कमाल का है। मानव मूलतः दुष्ट हो, तो शिवांक्री कोई आशा नहीं रह जाती। चूँकि तार्किक दृष्टि से किसी वस्तु से उलटा स्वभाव सदा से लिए अलग कर देना सम्भव है, इसलिए यदि मानव-स्वभाव मूलतः दुष्ट हो, तो उल्टे सुन्दर के जैसे मानव स्वभाव शिष्ट होकर निराशावाद का और सत्य ही पारदर्शक दृष्टि का आश्रय ग्रहण हो जायगा। कारण, शिक्षण की आशा समाप्त होने का अर्थ ही है, दण्ड-तन्त्र की स्थापना !

आज के शिक्षक का चित्र

आज के शिक्षक का अर्थ है ; १. किसी तरह की भी चीन-नेपोमी की निरापीडिता के शून्य, २. कोई काम भी नहीं सोचने और न स्वभावतः अत्यर्थ और निष्प्राथम्यता से सदा के लिए उलटापटा हुआ, ३. नैतिक शिक्षण का समुद्र खने वाला, ४. दुष्टता में मग्न हुआ और ५. आत्महीन।

मेथल विद्या का महत्त्व है, जीवन से तोड़कर सिखाया हुआ दुर्ग शिक्षण ! और शिक्षक का अर्थ है 'मृत जीवी' मनुज।

और निरिद्धी मरणा : इन दोस्तों कि

केट में जाने से बहनें रहती हैं। जो विराजित करने वाले हैं उन्हीं से दर । ह्री-लिय कि बहादुरी और शहादत अलग-अलग हैं। दर सिवामी की बराबरी और भले आदमी की धारापत्र मिलाना चाहते हैं। सभी गाथ से जैसे सुनता लख होनी है ही कायलता भी लख होनी। वे का हो मुस्ता है वा गाथिल है वा मधे में खर रहते हैं। उन्हें सावधान करना होगा !

हमें सावधान बन जानैनी दोनों चाहिए। शराप ही हमें काम से भागरीक प सेवक के अन्दर को भी मिदाना होगा। अस्पष्टता सेवक का पैसा शेका करना और शराप वाले का पैसा हाथे करना मल्ले पैदा करना होगा। दर नहीं होना चाहिए। पैसा एक अलग मर्ग नहीं है। हम सेवक श्रेयण बनता का लक्ष्य ही है। हम सेवक सेवा के उद्देशर नहीं बन कर आए।

इस आत्म-सम्मान की धाम को क्षयपण करना चाहते हैं। इतने निर्य हमें सिगादी, साहूकार व श्राविक भी राज की लम्ब बनता होगा। वह बही कर करेगा निर्य के पाव बहादुरी होगी। धन का शल्लभ नहीं होगा। धारापत्र से भाव्य होगा।

अन्ततः हमारा लक्ष्य हाथे की दुमि-याई रमिडी, अमीरी, आवातण, भाग्य, सम्पदाप अदि मिदाना व काम ही सेवाको का अलग वाम न काम सेवक को मान्यिक व न्यायिक होक सेवक बनाना होगा।

विन्दिगी की विद्येदारों कोई उरावनी नहीं है। वह आनन्द से ओतगोत है, बर्षों कि ईश्वर की रची जीवन की सरल योजना को ध्यान में रखने हुए अजुक वाक्यान्वयों को दूर कर रहा जाय। पर जैसे वह आनन्द से भरी चरु है, कैसे ही शिक्षा से भी मगूर है। यह पक्षकी उर सम्मानो चाहिए कि जो विन्दिगी की जिन्मे-दारी से बाचित हुआ, वह शारी शिक्षा मंगा वेदा ! बूजों की धारापत्र है कि बनयन ॥ ही विन्दिगी की जिन्मे-दारी का मान बदि बन्वको को रहे, तो जीवन दुष्टपण जायगा। पर विन्दिगी की जिन्मेदारी का मान होने से अन्तर जीवन दुष्टपण हो, तो बहना होगा कि जीवन कीर्त जीमे योग्य चरु है ही नहीं।

दुष्ट और अध्यापक का संबंध

पचण से अन्तर एक में सदा विद्यापी रहा हैं और अध्यापक भी। वह नहीं उलटा कि कि विद्यार्थी अधिक हूँ वा

अध्यापक ? कारण, विद्यार्थी और अध्यापक दोनों एक दूसरे के अध्यापक हुआ करते हैं। वा और जैसे के बीच ऐसा संबंध नहीं होगा। वाप, वाप ही सेवा और वेदा, वेदा ही। विन्नु मिनों के बीच ऐसा सम्बन्ध हो सकता है। भाव्यों के बीच भी ऐसा संबंध हो सकता है। दोनों में परस्पर भिन्न-भिन्न और भयं-भयं का सम्बन्ध हो सकता है। इसी तरह विद्यार्थी और शिक्षक के बीच भी परस्पर सुष्ठ-विप-सम्बन्ध हो सकता है। यह एक मूलतः विचार है। शिक्षक और विद्यार्थी मिल कर एक समान बनता है और दोनों एक दूसरे के मददगार बनते हैं। विद्यार्थी के विना शिक्षक का नहीं चल सकता और न शिक्षक के बिना विद्यार्थी भी नहीं। दोनों मिल कर ही एक समान बनता है।

विचार-संकलन

विनोबा

विचारसम्बन्ध से तीन अर्थ हैं। अपने उतर निराह से लिए दूसरी पर आधार रखना व दे, व उलटा पहल्य अर्थ है।

स्वावलम्बन को तीन अर्थ

स्वावलम्बन से तीन अर्थ हैं। अपने उतर निराह से लिए दूसरी पर आधार रखना व दे, व उलटा पहल्य अर्थ है।

उमता द्वारा अर्थ यह है कि करने की स्वतंत्र राति जाट है उमता तीवरा अर्थ यह है कि अपने-आप पर कायू एतेन ही आनी चाहिए, इन्दिगी को भी गरा करने ही राति आनी चाहिए। जो परिपूर्णता मल्ल है। धन की मता मल्ल है। शरीर पेट के भोजन बनता है। इच्छित मूल्य को अनीकता सि सहायद करने का हन के द्राप मिलना चाहिए। धार की मुष्टि विपिन और विचार स्वतंत्र नहीं है, तो मनुष्य स्वतंत्र है। इसलिए उने स्वतंत्र चिन्तन हासिल होनी चाहिए। मग और ही तुम्हारी मित्रता की स्या औदि हासिल होनी चाहिए।

माला विद्या बरने स्वर्गी की बारे में सोचने समय से तीन विचार सामने रहेंगे, तो उन्हें बहुत सुप है। सात विचार को ही पद से हुन विष है कि उनको बन्वो मुत्तरी और् बननें और लोगों में उनकी दम्ब हो। के स्वर्गी की नीडी मिल बां और उने घादी चरिह का रचना हो गरा, उने कि शिक्षा की अन्वेषा हो वां मानना उोक नहीं है। (विद्यार्थ विचार)

दिल्ली का नशाबन्दी सम्मेलन

दो और तीन विचार को दिव्दिगी में अखिल भारत नशाबन्दी सम्मेलन का पहला अधिवेशन सम्यक हुआ। विहार संघ-अध्यक्ष को लख से सम्मेलन में सम्मिलित होने का मोका मिला। इस सम्मेलन का आयोजन दिल्ली नशाबन्दी समिति ने किया था। प्रायः नौ को प्रतिनिधि आये थे। दक्षिण भारत से आने वाले की संख्या अधिक थी।

पहले सत्रणों के आदमी इतने आये थे कि यह कदना कटिन्द है कि पचास सर-वाणी प्रतिनिधि वा रैलवारों। सम्मेलन-स्थान में कोई उलटाही नहीं थी-विनोद विरोधी एक बम-का हांडा लिये बैठे थे, हागेकि सम्मेलन में घुसवान करने वालों की लक्ष्य कम नहीं थी।

पहले दिन की पहली बैठक अनीन-पारित रूप से हुई, क्योंकि भारत के विच-मंथी सुधारकी भाई, जो सम्मेलन का उद्-पात्र करने गले थे उत समय दिल्ली में मौजूद नहीं थे। आता मंत्री भी अन्त-मन्त्रण्युक्ति से अध्यापक ही। अनीन-पारित और पर हर प्रांति के आन देव चर, दो-ती लोणी ने अपने पदों की हावक वा निर्य किया और प्रांति का कैस रहा, वह नहीं चरने, पर दिवार की ओर से विन लोणी को सुलक्षण मधे वे एक तरफ से सरकारी नीति के लक्षण-पत्रे और विन का नशाबन्दी से अन्वृत्त कोई समय विहार में न देगा गया और न तुम्हा गया वेने है। इन शोनों के मान्यों का बही प्रयाप अनुदाप परपदा कि दिवार लखर मुम्बेई से नशाबन्दी कर रही है।

दूसरी बैठक में नशाबन्दी सम्मेलन के सहायकपत्र वा दुष्ट-दृष्टि निन्दे से लक्ष्य स्थापन किया। अन्वृत्त भला-सहस्युक्ति ने भी नशाबन्दी की बन्वत बन्वते हुए उने बन्व-सहायिक की प्रताप। भी सुधारकी भाई देशांर में दि-नी में उन्व-प्रदान आयन किया।

बहुत सुन्दर और उसाहयय भाषण था। जो सत्रणों पाठे के हर के नशाबन्दी नहीं कर रही हैं, उनको उन्हीने सत्रणों और प्रदान के अनुभव से उन्वर दिया। उन्हीने लक्ष्य कि नशाबन्दी प्राय में विन के समग्र पहले नशाबन्दी में तर बन्वाई उग रहे थे, नशाबन्दी होने पर उनेके वेके थे। इन्वो उन्की मान्य हावक मुत्तरी। विन से और उनेके आभित लोच-अन्वृत्त पाने-पहल्ये एगे। उन्गी अन्व-पक्षिक पक्षी। इन सत्रण मने के हर से होने वाले उ बन्वो की अन्व बन्वो पक्षी, वही वेचन मन्व की आम्बरी १८ बन्वो-को गरा है। गन्वोकी भी तो बही बन्वते थे कि नशा-बन्दी से देश-राशिपों का लक्ष्य होगा और वापे उत कर श्राविक आश भी बनेगी। बन्वते, प्रदान सम्बन्ध का उन्व-हृष्टण ऑल लोखेने वाप्य होना चाहिए। पर उने देरना ही नहीं पावते, उनको बन्वो बन्वत मन्व।

दूसरे दिन की बैठक पार विचार-मोचिने के रूप में हुई। उन्में के अन्वृत्त पारिन्दे हुए पर पारो मोचिने के विष की

विषय रखे गये थे उनमें हुए हुए विचार किसी मोचिने में नहीं हो सके। अग किरी प्रदेही की सत्रण मन्वों नहीं करे तो बन्वो के शोग मन्व-लौ। लिए क्या उन्व-अर्थ हैं। विन, शैल आन आदि बन्वो मने के उलटाही लोखे। इन बारे में बही दीक्ष-पक्षी।

आम्बरी बैठक से का को २ बने ५ बने तक हुई। इतमें पारो बन्वोने की दिशेई सेवा की गयी थी। अन्व-समिति द्वारा नारा दिने गये अन्व-पत्र और पत्र लिखे।

सम्मेलन बहुत अच्छा रहा। पर अलिख भारतीय इन्व-पत्र इस अन्व-प्रदान पर उनेहित विषय की होने लगी। उ पर यह बल सत्रणने बागे कि इन्व-पत्र सहायकी सम्मेलन में उन्व-परिचरणी बने को, को अन्वने मने उन्व-पत्रि बन्वो ने कोई मार्गदर्शन नहीं मिला। ऐसा लख है कि यह सहायक मन्व-लौ के विन-पत्र ही दिया गया। विन-पत्र बही सहायक अन्व-सहाय है। अनी भारत के मुन तीन मन्व मुन्वरा, महापद और मन्व में उ नशाबन्दी है। मुत्त आम्बरी (अन्वृत्त) हैं और अन्व-पक्षिक सत्रणों अनी प्रता को पचास ही हुवाये रचना चाहती हैं। अन्व-पत्र है 'पारिचरणी' को 'सम्बन्धित' के उन्व-पत्र जाय। मन्व-पत्र मन्व-पत्र के विन-पत्र का है। क्या हाव सत्रणों ने मन्व-पत्र का ही आशा करेता है व नशा-बन्वो मने उन्व-पत्र है। अन्व-पत्र इन बारे में मोचर है।

— रमावलम्बन बन्वुती —

व्यक्ति की जमीन पर रिना उलकी इयाज के दखल करते हैं या उधे अवहयोग करने हैं तो हम उधे अपना भन टटोलने की प्रेरणा नहीं देते, बल्कि विचार का रास्ता उलटा बन्द कर देते हैं। 'सब क्या इयाज मतवते यह है कि सत्यापदी कार्यकर्ता अपना को सुव्याप देवता रहे या सदन नस्ता - रहे।' पर ऐसा मल्लय इगिज नहीं है। यथार्थता को निरन्तर ऐसे उपाय की शोच में लगे रहना चाहिए, जिससे वह सामनेवाले ने दिल को छु सके। यहाँ सत्यापदी ने नखीटी होती है। अगर कोई उपाय न दखले तो वह अपने रास्ते को छोड़ कर आसान दिखने वाला तरीका अपनाते लगे तो वह अपने संकल्प से हट्य, ऐसा माना जायगा।

हम विचारों में विनोबा ने एक उपाय यह बतलाया कि जो लोग प्रामदान में शर्क नहीं हुए हैं, ऐसे मालिकों की जमीन पर जो मजदूर का एक काम करने रहे हैं, वे आगे और गी छगन और प्रेम के साथ एक काम को जारी रखें। आज एक मालिक को मजदूरों के काम की इच्छा के लिए निरीशुक का कार्खाना चलाने पड़ने लगे, पर कामसभा और मजदूर मिलकर मालिकों को यह आशवासन दें कि अब आगे उनको इस प्रकार के निरीक्षण की व्यवस्था करने की कोई आवश्यकता नहीं रहेगी, मजदूर पूरी ईमानदारी से काम करेंगे और पहले के अन्त में जमींदार को उसका हिस्सा, बिना भाव सङ्क वह देना आया है, उतना वे चुधी-सुधी देंगे। सर्वां से भूदान या प्रामदान का विचार समझना सर्वोपर और प्रेम की बात समझना, एक चीज है और अपनी हित से उलकी साहित करना दूसरी। क्या हमने इस प्रकार की कोई हति अनुसरें हैं? वह ठीक है कि सत्यापदी कभी हुए न पड़े, पर वह पीरज गी न रोगी यह जरूरी है और निरन्तर ऐसे जपानों की शोच में वह लगा रहे, जिससे वह सामने वाले के हृदय में प्रवेश पा सके। विनोबा ने एक तरीका बतलाया है, जिसका कि उपाय किया गया है। हमें हमें कोई तरह नहीं है कि जयप्रामद और उनके साथियों जैसे निश्याप्य कार्यकर्ता मूल विचार को समझते हुए अगर इस शोच में लगे रहें तो ये निरन्तर हैं। सत्यापदी के और भी कई सोच और सीधवर तरीके द्रष्ट किजाने।

पठि के रास्ते से

रा. १२ गिवाभर की भी नगर की एक सभा में भाषण देते हुए दिव्यदत्तन के प्रस्तावामरी, भी कण मेहन ने यह जाहिर किया कि भरत-सरकार ने यह बात किया है कि "१९ वर्षों का हर लड़का और लड़की एक सी-सी-सी-सी (सीपीएम-निर्दिष्ट-दल का) छात्र बनने।" भी मेहन ने यह भी कहा कि एक-सी-सी-सी-सी के दुर्दृष्टियों सेना के केस "सर्वोत्तर"।

नहीं हैं, बल्कि उनमें कन्वें आदि शब्द बचने की तारीफ बतलाया ही जाती है। उन्होंने यह भी जाहिर किया कि वही उस की लड़कियों के लिए भी कन्वें बचने की तारीफ अब दाखिल की जा रही है।

जो नीबवान लकड़-लकड़ों सेना में लिए मरते लोग पाते, उनके लिए ऐनक लाठीय की उचित व्यवस्था करना एक चीज है, लेकिन हर नीबवान लकड़-लकड़ी के लिए ऐनक लाठीय हर तरह अनिवार्य करना निरन्तर दूसरी। सामान्य चिन्तक के द्वारा पीजी प्रत्यक्ष को मिलना एक बहुत सुविधाही प्रयत्न बना रहा है कि हम बहुत सामाजिक जीवन को विह दिसा में ले जाना चाहते हैं—शान्ति या युद्ध? हम यह जानते हैं कि हर युद्ध में जी ऐसे लोग होंगे, जो हम बात में निरन्तर रखते हों, या ऐसा चाहते हों, कि धारे मुक्त या ब्याजबन्ध एक पीजी छात्रों की तरह का हो और लोगों को सुविधा युद्ध की शरक मोटी जायें। लेकिन वे भी जानते हैं कि अगर यह प्रश्न सीधे रूप में मुक्त के सामने पेश किया जाय तो इन विचार का बहुत बड़ा विरोध आएगी भी मुक्त के बुद्धिमान लोगों द्वारा होगा, इसलिए पीजी हित को अनुशासन के नाम पर 'पठि के रास्ते से' से सुधारा चाहते हैं। स्कूल-कालेजों की लाठीय के साथ पीजी लाठीय देने के पक्ष में यह बात कही जाती है कि पीजी लाठीय के छात्रों में अनुशासन की भावना आती है। पर न केवल विद्या का और चिन्तकों का उपग्रह है, बल्कि सामान्य मुक्ति का भी। अनुशासन एक "भीतरी" गुण है। उसका संक्षेप मन की शक्ति से है, न कि किसी प्रकार की बाहरी कचबद या करती से। विद्या ही अनुशासन का सच्चा उपाय है। अतः अनुशासन के लिए चिन्तन सत्यापों में पीजी लाठीय

दाखिल करना विद्या और विद्युत्-संस्थाओं की हार कबूल करने जैसा है।

आज हमारे देश के प्रधान-मंत्री जहाँ भी जाते हैं, वहाँ सम्पूर्ण निम्नजीकरण की बात करते हैं और कहते हैं कि अब हर निम्न-युग में युद्ध की बात शोचया भी मूर्खता है। पर दूसरी ओर एक देश में ही देश के नीबवानों के लिए पीजी लाठीय अनिवार्य की जा रही है, वह आश्चर्य की बात है। ऐसी दुर्घटी बात करना जितने सरकार की प्रशिक्षण को घटानेवाली है, बल्कि युग की आकाशवाणी भी प्रतिबुद्ध है। हम ब्याज करते हैं कि इस तरह 'चोर-दरवाने से' घैठान को घर में शुभाने की तरह प्रशिक्षण के विनाश न 'घर' देश की विद्युत्-संस्थाओं, बल्कि लव लोगों की ओर से आवाज उठाई जायगी।

बच्चों का उपयोग बन्द हो

आज हमें प्रश्न क्रांति कमेटी ने एक प्रस्ताव द्वारा विचारियों में बढ़ती हुई "अनुशासनहीनता" और विश्व प्रभुति के बारे में गम्भीर चिन्ता बरक की है। प्रस्ताव में सही कहा गया है कि अगर यह परिस्थिति जारी रही और समय रहते इसका कोई हल नही किया गया तो "विद्या की ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मान्य के जीवन को धारि" लुंकेगी।

हमें मालूम नहीं कि प्रश्न क्रांति कमेटी ने केवल 'चिन्ता व्यक्त करने के अलावा इस परिस्थिति के कारणों का विश्लेषण भी किया या नहीं। विचारों समाज में अज्ञान को मातारण नजर आता है, उसके कई कारणों में से एक बरा कारण यह भी है कि राजनैतिक पार्टियों अपनी स्वार्थ-निष्ठ के लिए विचारियों का और लोभ-लालच से बरा जनेय करती हैं। चुनावों के दौरान में विद्युत्-संस्था की पार्टी-

वाजी, दू-प, मी-मी-मी अलग-अलग विचारों और लोभ-लालच के बावत है, उसका अन्त उनके जीवन पर न हो, यह हमारा मान्य इतिहास में देर और समयवा हमेशा रही है। विद्युत्-संस्था इस भेद और संघर्ष के - साधन बन रहे हैं। किसी जमाने में लोगों की भावना का पद्यवा उठाकर उन्हें उन्मत्त बनाया था, आज लवा और लोभ नीति इस संघर्ष के साधन बन रहे हैं। हमारे देश में ही नहीं, दुनिया के देशों में भी, साक्ष्य करते उन देशों में लवा अभी नयी-नयी हाकिम हुए हैं। राजनैतिक की संस्था परम्परा नहीं है। राजनैतिक पार्टियों लवा की शोच है कि भी प्रचार के साधनों में विद्युत्-संस्था नहीं चुनती। साथ में दिव्य दत्तन के एक वाक्य का हृदय एक प्रतीक है। एक विषय में पाठक देखें कि १८-१९ वर्ष के, कमजिन लकड़-लकड़ों शुरू से ही वैसी लाठीय मिल रही हैं। लकड़-लकड़ों के साथ में संयुक्त रूप की एक पीर की बलवर अभी-अभी शुरू है। बचपन से ही 'घर' देनी दे मिलती है, वे स्कूल-कालेजों में आगे न पकड़ कर और अनुशासनहीनता लवें ही उसमें आश्चर्य क्या और किजाना है? अलग प्रश्न है क्रांति कमेटी ने जो चिन्ता व्यक्त की है, वह लगी पर पहले राजनैतिक पार्टियों को ही धारें में गम्भीरता से सोचना होगा। प्रस्तावों में राजनैतिक दलों के नेताओं मिलकर कुछ आचार-संघर्षों का हल या सर करने का रहे हैं। चुनाव के लव न माताजिन लकड़-लकड़ियों का उलकी किसी हालत में न हो, कम-से कम मर्यादा तो हर पार्टी को स्वीकार करने चाहिए।



मध्यम शास्त्र की बारा व बीच तथा पर लोभों हुए, बर्तान के बच्चों का एक दृश्य

विनोबा का वाङ्मय : ३

नारायण वेसाई

विद्वत्सुत बचन में ही विनोबा ने गीता का अद्भुत बरने का प्रयत्न किया था। क्रिस्तोप-
बन्धन में निम्न महापुरुषों को "गीता-व्याख्यान" को, जो टीका-टीका सुविधित माना जाता है, वे ८-९ बार पढ़ गये और
फिर एक बार सुन्दर लोकमान्य के पास जाकर उस विषय में उनसे शास्त्रार्थ भी करवाये। बाराहों में गंगातट-तट के
दरमियान बन्धन-श्रम में जाने के लिए जाते वर यहों पहुँचने के बाद भी जो बर विज्ञान में सुदृढ़ हो पढ़-पढ़ पढता भीत
जाता था। दूसरे विद्यार्थी तो यह समय गर्षों में सुखार देते, पर विनोबा इस समय का उपयोक् पुरी गीता का मन
ही मन पढ करके में करते थे।

आज विनोबा पदवाजा तगर प्रविष्ट हो गयी है, वे जब १९२०-२१ में महाराष्ट्र
में प्रवास्य करते थे, तब भी काम को गीता पर प्रबन्ध करते थे। एक बार पोर में
छात्रे ल गये। वे पढ़ गये। सारे दिन विनोबा का ध्यान उर प्रवण रहता, परन्तु
उन्हीं के धर्मों में "बस देहू दो घण्टे वर दर्में विद्वत्सुत मूल ज्ञान बर में गीतावी
पर बोलता तो मैं अपने आचरों ही भूत अरु था।" गांधीजी द्वारा दी गयी बेल की
वा में उनसे गीता के अरण्य, समन, निर्यन्निदर्यजन करने का मनेतुदृढ अरुणर
रिया। बेल में ही "गीतावी" लिखी गयी, जेल में ही "गीता-अवबन्धन" लिखे गये।
सन् १९३० से १९३२ तक के दो बरों तो विनोबा के निरु कर्णों रूप से गीताप्रय में
रणीत हुए। उरते बर ही जेन-पार के दरमियान फिर से गीता बर बोले का भी रा
आया। उनमें से हमें "शिवतप्रज्ञ-वर्तन" मिल आर उनमें से ही एक-दुपरी पुतक
वीरार हो रानी गाम्नी और है। जेकिन विज्ञानों को कर्ण में रल कर रिये हुने वे
हृदये "गीता प्रबन्धन" अवी अग्ररालिये है।

निर भूजान-वदर्यास आगी तो उनमें
भी गीता चिन्तन को ब्याह हो रहा। उनमें
से हमें "साधन-पुत्र" और "गीतावी-
विन्यन्निदर" मिलीं। इन महार हुबारी
बनों से जिन कर्ण वे अनेक रनी, पण्डित,
रणीतबारी और शास्त्रों को प्रेषण दी
है, उनसे आधुनिक युग के रल सन्-निवत-
रिवाज-वदर्यास के बोनन को गिण
प्राप्त प्रेषण से स्पष्टित रिया है। कोई
हदुना बारी तो विनोबा के दर्शन के रल
बीर उरों इस गीता-भक्ति में से मिल
बायेंगे।

पुलिषा की वेद में कही २०० सत्या-
श्री भोवाभी के समष्ट रर रविचर की
एक प्रबन्ध चिन्ता का होता था। महार-
राष्ट्र के अज्ञान-सन्निवत, बाने दुष्करी ने
कि भण्ड से इन प्रबन्धों के मोट लिये।
उरते अणार पर को सुल्लक वीरार हुने,
उने विनोबा एक वे अविध बर परिम-
वित कर चुके हैं। आज इस "गीता प्र-
बन्ध" का अद्यार १९-२० भागमें है।
ही मुखर है और बर १० भाग (बननी
प्रतीती इसकी लार मुकी है। इसमें से
के बीरन वर उनके अण्यजन से गृह
अण्यर इत्यादी है। बहुत से तो गीतमन के रल
पढ़ने से एकदम पढत ही गये हैं।

द्विधं मुनेने में आर है कि भी बन-
रवासुत विद्वत् में एक बार "गीता प्र-
बन्ध" के बारे में विनोबा की वृत्ता। "अर्थ, अर्थ,
द्विधं रानी के जो अर्थ आये लिये हैं,
वेने परने में ही विनोबा ने कर्ण है क्या?"
निम्न में बहा: "अर्थ, यर आण्य वरुने
के रल उरते अण्य का उरु अण्य बरने का
है, जे- उरते अण्य तभी तो मैंने ४९ वों
अण्य बरने का जो अर्थ लिने

आज बैठ कर वेने पढ़ देला और अण्य
बना करे-भरने पूण वर उरको देल रहा
है। शिवत अण्यदृढ और उरके गेला,
दोनों एक अण्यदृढ में लिने बने बा रहे हैं,
पढ़ रल वर ईकर की दी लोला का चिन्तन
करना और हुनर कुण नहीं बोचना, देला
हुने लया है।"

विनोबा ने शिवत प्रथ को गीताका
आरंभरुप चिन्ता माना है। रलके अण्यर
है उके आन के बनने का आरंभरुप
चिन्ता भी अण्य है।

चिन्तन बर रानी प्रगति कर पुत्रा
है, का अण्यरुप की मन की भूमिगत वे अण्य
उरने की बरुदर है। रलके अण्यर,
विनोबा बर रानी जेनी तो गयी है और
एक रान्य र्ण्य, य उरयोचलिय का केना

रिषय दे देला, अर्थ ज्ञानेचर ने रिया है।
हुने धर्मों का उरि प्रकर का अर्थ
अण्ये भीजन में ओकर देलने से जो सगदा
में आया, वह भीने रल है।" विनोबा ने

"गीता का और मोर सन्बन्ध तर्कों परे हैं। वेरु शरीर भी र्णों के
दृष्ट पर जिनना बला है, उससे बहों अण्यिक मेरु इदय और बुद्धि, दोनों
गीता के रूप से भीतल हुए हैं। जहाँ इदयिक सन्बन्ध होता है, वहाँ तर्कों
की गुंजाबत नहीं रहती। तर्कों का बर बन्दा और प्रयोच, इन दो
पर्यों से ही मैं गीता-अण्य में यथाशक्ति उरन आला रहा हूँ। मैं प्रया-
ग गीता के ही वातावरण में रहा हूँ। गीता मेरा प्राण-वत्त्व है। जग में
गीता के सन्बन्ध में किसी से बात करता हूँ, तब गीता सागर पर देला
है और अण्य अण्येला रहता हूँ, तब उस अण्य-सागर में गहरी डुबकी
लगा कर बैठ जाता हूँ।"

—विनोबा—

गीता को एक कर्णुक्ति बीजन, आण्यरुप की
बीजन के रूप के रूप में देला है और
उरके एक एक अण्यर में उरोंने परिपूर्ण,
सम, उरत अण्य का र्णन पाया है।

"निवृत्त-वर्तन" "गीता-अव-
बन्ध" के बर का अण्य है। निम्न
इसके शिवत में बरने है: "गीता-अव-
बन्धन" बर का बरुदर अण्यरुप, सल, सुभ्य
विनयेन है। "शिवतप्रज्ञ-वर्तन" उनसे
आगे का अण्य है। इसमें वही शिवत एक
लाल भूमिगत पर से रल्य गया है। वह
गीता का र्णन अण्यरुप बरने कने के
रिषय है। शिवत के शिवत में गुने को उरु
करने का है, वर इन जीनों में मिल कर
बाने गीतार्थ, गीता-अव-बन्ध, शिवतप्र-
वर्तन में अण्य में अण्यरुप बरुदर अण्य है।
के पुण्यमें लिखी तो ली और उरता वर
ली है कि वर वर अण्यरुप विद्वत्सुतों
को उरनीकी होनी और किने की उरु
उरते रल्य हुभा भी है, जेकिन हुनर
हुनर उरणेक मुने मेरे अण्ये लिप है।
अण्य का नाटक में देला बरुदर है। एक

पण्य का उरनी अण्यर के कर्णुप की एक
छोटी-छोटी लाल अण्यर वर अण्यर लाल
कलही है, देला है, तब उरने निर्वणरिचर
दृष्टि में हुए र्णों, वर अण्यरों की बारा
है। शिवत में बर रानी शरणि गरी वी
की, दुभिय बर इतनी छोटी गयी,
गयी थी, और सगदर एक-दुपरी वर अण्य
रल सके, रल प्रकृता अण्यर में गुण हुनर
नहीं थ, वर उरने की अरनी बरुदरों
के र्णों वरुदर भूने करवा जेला तर्क्य
था। आज वर अण्यर है।

इन महार वर पुण्यर एक और
लाल के बरने अण्यरुप की र्णित है और
हुने और सुभिय के अण्य के प्रन्य का
निवृत्त-वर्तन अण्ये के प्रण्य के रल ही एक
अण्यर का अण्य है। वह आन के पुण्य
के सान्यर का अण्य है। उनके र्णों विनोबा
के र्णों वर के निवृत्त-वर्तन से शिवत बना
हुभा अण्य है।

रुण्यर अण्य-वर्तन के सगदर अण्यर
रुण्यर में हम जेनें एक को उरण्यर
उरण्यर र्णित है, उरने एक वर है कि

हमारे बहुत से उचय चिन्तार्णों को उरनीने
वैल्यरुप का मौडा समय है। वण्य
बीजन के उरनेक उचय के १९-१९ उरने
पण्डित नेरुदर ने जेन में न गिज्ञित होने
तो हमें पण्डित नेरुदर के अण्यरुप अण्य नहीं
लिख लक्ये थे। विनोबा की भी वैल्यरुप
ने देला अण्यर पण्डित महार में रिया है।
"गीता-अवबन्ध" को तगर "शिवतप्र-
वर्तन" भी जेन की उरण्य है। १९४४ के
वर्तकाल में अण्यरुपों के शिवत र्णों में
निवृत्त-वर्तन और वातावरण जेनें के
वहसय में तथा शरदा घर्णोगरी जेनें
के भोतागण्ड में, इतने हुनर प्रबन्धों का
वदर रणन है। गीता के गुणों अण्यर,
के अण्यर अण्यरुप र्णों पर इरमें १८
प्रबन्ध हैं। वे लल र्णित २०० र्णों
में ही हुनर हुए हैं। वर वर लल चिन्त कर
साधक के लिए एक कर्णुपुण्य अण्य बन
जात है।

विनोबा के आर्यों में विद्यार्थी लरुने
छोटे हैं। विनोबा को लरुदी की घण्टों के
मूल में बने वरने, निज्ञान सेहे हो गीत-
मल्य वे हैं। शानेबरी वर रणा हुनर उनका
कीन कर्णवित एक इविय वर सगदी भाग्य
में अण्यरुप माना बावना है। "गनीर-
लारुदर-वर्णोप" वर विनोबा शिवतार्णों के
रुण्य, पुण्यरुप का परिणय है।

वह कीन अण्यर लरु है। अण्यरुप
है। वह "गीतार्थ" वर एक अण्यर ही
है। इसमें हर वण्य का सगदर इवियरुप
के लाल र्णित है और हर उण्य के उर-
ण्य र्णों में होने का लाल अर्थ भी र्णित है।
अर्थ का लुण्यर बीजन में कर्णुप अण्यरों
के लाल र्णित गया है। एक विनयेन के
वीर वर विद्वित वण्य-वर्णुप अण्यर का र्ण्य
के अर्थ का भी शिवत र्णित है। इतने
के बरुदर हुनर मान का र्णन उरने
रिषयों की भी गयी है, किनेमें अण्यरुपों
की सगदि, र्णोंके के र्णित अर्थ, अण्यरुप
करनेरुप अण्यरुप अण्यरुप करनेरुप
रिषिते हैं। वर और इदुण्यमें वण्य हुने
पण्य से गीता का सगदर इविय अर्थ
करने का र्ण है। अण्य, उरनेके अर्थ में कर्ण
वरुदर इरने र्णों के परिमल्लिक र्ण्य
रुण्यरुप र्णित है।

सगुणों गीता के शिवत में अण्यरुप
रिषिते देने बरुदर एक वर विनोबा की
वाणी का उण्यर है। वर वर ही एक
रुण्यर पुण्यरुप के लाल वर "गीता-अव-
बन्धन" के नाम से छल्य है। सगदी
गीता प्रबन्धन में वर र्णित-किण्य
बारा है।

गीता के शिवत में विनोबा की लरुने
वर्णुप है। "गीता-विनियोग"।
अण्यरुप की वर उरनी वण्यरुप और शरुद
के अण्यर वण्य-का लाल र्णित है। उण्यर
वण्यर उरनेमें "विनियोग" की उरनी
वाणीरुप की। वरु उर उर अण्यर का
कण्य लरुने में उण्य शिवत हुनर वर
विनोबा के बरुदर का "पूण्यरुप का लान्य

दलगत राजनीति लोक-शक्ति के लिए घातक है

एम० एन० राय

[पने डिप्टे लोगों में भी यह धारणा व्याप्त है कि दलों विना राजनीति संभव नहीं थीर सत्ता की प्रेरणा बिना दलों का संगठित अस्तित्व असंभव है। १९० मन्त्रसभाय राय की गणना साम्यवादी संसार के प्रमुख विचारकों में रही। 'पाकिस्तान, पाजर और पार्टीज' खीरक सुलत में इन्होंने जिन राश्यों में इस धारणा की आमनवा सिद्ध की है, वह यहाँ दे रहे हैं।—अं०]

प्रचलित चुनाव-प्रणाली द्वारा सत्ता लोक के प्रतिनिधियों को स्थापना-रिख हो जाती है, और इस कारण से ऐसे शासन की स्थापना नहीं हो पाती, जो जनता का हो और जनता द्वारा बना-रिख हो। सर्वोत्तम परिस्थिति में भी इस प्रणाली द्वारा जवहतिपारो शासन की स्थापना हो सकती है, जो बहुत अच्छा होकर भी एक प्रकार से सुभूमी अविनायकत्व हो सकता है, परन्तु लोकतन्त्र नहीं। यह बहना आदरस्व नहीं कि बिना बडे़ देस में, जहाँ करोड लोग बसे हो और जिनकी पब्लिक केन्दीय शासन में बंदिद हो, वहाँ जनता पर शासन जनता द्वारा ही सम्भव नहीं। अतएव हमें एक विवेचिद शासन-प्रणाली की ही बात सोचनी है, जिसे तब प्रत्यक्ष जनतन्त्र की व्यावहारिकता भी सिद्ध हो सके।

हमके लिए हमें किसी चुनाव की प्रतीक्षा नहीं करनी है। इस एक लोग का निर्वाचन-लेख चुन ले जिसमें हीत-पर्योच परदेर नरे दस की शासन प्रणाली की आवश्यकता का अनुभव करते हैं, क्योंकि वे प्रचलित प्रणाली से असंतुष्ट हैं। वे एक प्रयोग के पक्ष में निर्णय करते हैं। शेष शासन के लिए पक्ष परम है—लोक विज्ञान, ता से लोक विज्ञान की व्यवस्था करते हैं। तर कुछ समय पश्चात् उस निर्वाचन-लेख में स्थानीय समाजों की आयोजना समय हो जाती है, जिनसे पूरे निर्वाचन-लेख की सभ्य में देसके के लिए प्रतिनिधियों का चुनाव हो जाता है। और चुनाव के समय सब विभिन्न देसके के नेता आकर अपने अपने विधियों को रखे करते हैं, जो स्थानीय सभ्य में डेरे बरकर बना अपना निर्वाचन-लेख की सभ्य में डेरे स्थानीय समाजों के प्रतिनिधि द्वारा मनीषित प्राप्ति की अपना मतदान नहीं देते, वे अपने में से जो एक को चुनते बरते का निश्चय करते हैं और उस निर्वाचन-लेख के लिए उसे ही अपना काल देते हैं। इस प्रकार निर्वाचन होकर जो बंधक केन्दीय सभ्य में दृष्ट-बाह्य है, वह रिडी दलगत सभ्य की अपेक्षता नहीं रखी-कर फलतः।

यह तो स्थानीय लोकतन्त्र की ही अपेक्षता मानना और मानना रहेगा, जिनका वह स्वयं भी एक अंग है। वह फिर उन्हीं मतदानकर्ताओं के प्रति उत्पत्तावी शक्ति, जिन्होंने उसे सभ्य में भेजा था। यह किसी बाहरी सत्ता के आदेश से या अनुशासन में काम नहीं करेगा, वह अपने निर्वाचन-लेख का नागरिकों की ही अपनी कार्यवाही की ही धरना देगा, उनके शासन के राश्यों में ही सन्देशों की रचना करेगा, अपने अपने विचारों तथा उद्दि के भीतर उन आशियों का पालन करेगा।

शासन की स्थापना
हम आधार पर एक स्थानीय सभ्य पब्लिक योजना की बहना सम्भव है। विविध केन्द्रित अधिकारों का बस-व्यवस्था उद्योग की आधारभूत इकाईयों की जगहों। जहाँ आक्रामक विंगरे और अग्रगण्य जन समन्वयक प्रयुक्त का ही अनुभव करते हैं, यहाँ स्थानीय की रोजिन्स नागरिकों की रक्षण से अपने-अपनी स्थानों को राष्ट्र के विवेचिद-अपनी स्थानों, उन्हीं उम्मेदवारों पर विचार करेगी, उन्हीं के लिए निवारणों और उन्हीं अपने दलगत का, पालन करेगा। यदि इन सगठित स्थानीय जनताओं का फल दलगत सभ्य तो इनके सम्भव से बहुतायत वैदिक प्रयास प्रभावित पर सन्देश और जनता राष्ट्रीय शासन पर उनका स्थानीय निश्चय ही जागृत। तब राष्ट्र की एक 'सर्वोपेक्ष-मान दानव' बनने का अवसर नहीं मिलेगा।

जनता पर सत्ता बरका है और इन निर्णयों में जनता का कोई दलन नहीं।

विरोधित जनसभ्य के नये समाज में राष्ट्र का समय के सार-दोष। प्रत्येक नागरिक का आवश्यक सूचना मिलेगी और राष्ट्रीय सभ्य में उन्हे राय की जायगी, अर्थात् उसका समाज के समन्वयक प्रभाव में दलन रहेगा। प्रत्यक्ष है कि ऐसे समाज की सृष्टि के लिए नागरिकों का शिक्षित होना आवश्यक है और उन्हीं शिक्षा का स्वतः निरंतर उत्तर होना पड़ना चाहिए, परन्तु दलगत और पब्लिक के निर्वाह ही में उत्तर बहुत कुछ प्रविष्टता नहीं लेगा। अतएव यह प्रयोग नहीं करनी के प्रारंभ होना है और हमें उस काल्पनिक परी की प्रतीक्षा नहीं करनी है, उस रिडी के चुनाव सेतने पर सर्वोत्तम प्रणाली पर है हमारे लिए जाना, कर ही जायगी, स्थानीय सभ्य पर प्रारंभ होकर उसे अमल से अपनी उपयोक्तता सिद्ध करनी है। का अमल तथा उसके सन्वय प्रेरणाओं, एक दूसरे के मिल कर प्रयोग के अन्तक प्रसार में सफल होगी। तभी पड़ती बार हमें सभ्य लोकतन्त्र का अनुभव प्राप्त होगा।

निर्वाचक वापसि
इस योजना के विवेचिद पक्ष ही सारित हो सकती है, कि वह बहुत देसतन्त्र होगी। किन्तु समय कमोपर समय ही कि बहाना बनें लगेंगे, या सत्तापन्नी ही बनें भी लग जायें—तो भी समय का प्रश्न नहीं बनेगा—है। फिर विवेचिद यह भी है सारित होगी जनता की। यदि कोई ऐसा सुभाव है तबे जो कम देसतन्त्र हो, जो लोक बचें पर सत्तापन्नी हो जो बनें के भीतर कल्पनासिद्ध सत्ता का अस्तित्व सारक कर सके, तभी समय का प्रश्न विचारपर्योच होना। परन्तु यदि कोई विवेचिद नहीं हो, तो इस योजना के विवेचिद अने समय को व्यर्थत निर्वाचन है।
हमारे धामने अभी तक दो ही निकल आये हैं—अनतिरिक्त जायना अन्तक जनतन्त्र या जनतापारी। फिर किसी की

ग्राम-पंचायतों की जवरदस्ती

ग्रामपंचायत पटवर्धन

हमारी सारी राज्य-सरकारें गाँव-गाँव में ग्राम-पंचायतें स्थापन कर रही हैं। ग्राम-पंचायतों की और उनके प्रतिनिधि-संघों को बहुत से अधिकार की बख्ते का रहे हैं। इस "लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण" की सब तरफ से तारीफ़ भी हो रही है, जतना "ग्रामपंचायत" कहा जाता है। जिन "बदायत" के साथ पंचायतों की और पंचायत-संघों की अधिकार दिए जा रहे हैं, उस उदारता की भी तारीफ़ें हो रही हैं।

पर ग्रामपंचायतों की स्थापना के इस कार्यक्रम में दुनियादी दोष हैं। गाँववाले चाहे या न चाहे, वे पंचायतें जवरदस्ती से उन पर खरी गयी हैं। पहले वह ग्रामपंचायतें विधिको हो जाना है। राज्य-सरकार अमीरी बर्मीन-महसूल का कुछ हिस्सा ग्रामपंचायतों को दे देती है, लेकिन उसके साथ उन्हें लगानी जाती है कि ग्रामपंचायत स्वयं जो कुछ न कर सके वह अपनी स्वतंत्र व्यापक रखी करे, अर्थात् प्राचीन लोगों के समझ के अनुसार ग्रामपंचायत के मानो होवे "नया कर"। पञ्चायत लोगों को ग्रामपंचायत बला भी समझती है।

एक और कारण

ग्रामपंचायतों की स्थापना का और भी एक कारण होता है। गाँवों में दररी से भी विनयवा दृष्टक होती है। बर्मेन-महसूल होते हैं, लेकिन जाति-भेद बहुत ज़ोर होते हैं। जो मजदूरवा और गरीब हैं, उनका मासूलदार पर विचार नहीं होता। लेकिन ग्रामपंचायतों की सत्ता वाले मासूलदार लोगों ही के हाथ में जाने वाली है, इस लिये भी गरीब वर्ग ग्राम पंचायत के प्रति उदासीन रहते हैं। गरीब लोग ही अक्षर-पत्र विचार "नीची जाति" की ही होते हैं। अपने लोग ही के लोगों के हाथ में सत्ता सब साथ, इसका उनको डर ही लगता है।

जो पड़े लिये वा मासूलदार होते हैं, उनको भी ग्रामपंचायत एक तदार-सी लगती है। ग्रामपंचायत का मासूल अडेमी में और कानून की अडवरी सभा में ही होता है। उधरों ही तक पाचार्य और पंच की तक उपाचार्य होती है। फिर उन पाचार्यों के अनुसार कुछ अडवरी नियम भी होते हैं। गाँव बला अडवरी का आक्षर्य करना, उसके लिए नुसूरक होता है। लिखाया मासूलदार वर्ग को भी ग्रामपंचायत परदे नहीं आती, बापबूद इसके कि पंचायत की सत्ता उधरों के हाथ में आने वाली होगी है।

लिखाया मासूल की तरफ से सब रिवाज होता है कि "ग्रामपंचायत के चुनाव के लिये आवेदनपत्र पत्रवनी कारील तक आने चाहिये" कहे, सब गाँव में ही अक्षर एक भी आदमी राज नहीं होता। फिर लड़कोंका मासूलदार खुद गाँव में जाने हैं और कुछ लोगों को समझ-भुग, एक कर उनही नियुक्त करके ग्रामपंचायत की कार्यपालिका बनाते हैं। उधर लोगों को तो यह नियुक्त करके मजबूती ही लगती है। गाँवों में मुठ-बर्दी और ज़ातगी नज़रबंद आक्षर हुआ ही बरते हैं। फिर गाँव के अन्य ज़ातगी को इन नियुक्त सदस्यों के प्राँई र्णों से तो लगती है। पञ्चायत दूरीय बार सब चुनाव का एक भाग है, वे र्णपञ्च पञ्चस्य चुनाव में सरे होते हैं, वे सख

न हीन पाये, हलकिये पहले सरसों की गी सख रहना पडता है। इस तरह गाँव-बासी और लुना-दरदी वाली होती है। गाँव "बापु" बनता है और ग्रामपंचायत का कार्यवाह बहसूत बनने लगता है। कन्या अलिख भारतीय सबकोन पक्ष भी गाँव के अभावे में उलठे है। अब मासूल को ग्रामपंचायतें बनाने की निक नहीं करती पडती, साथी देमाक्षर करती होती है। आग को मुचगाने के लिए एक घागी र्णवर्दीक उठाने के बाद उस आग की ज्वालार उठने आग बहती चल्ती है और उसकी रोपनी भी चारों ओर फैली रहती है।

पञ्चायत: ग्रामपंचायतों को चल्ती है, यह मासूलों के देख पर नहीं, बल्कि प्रतिबोधिता पर ही चल्ती है। यह मासूल बन नहीं, ग्राम पंचायत ही है। यह मासूल बन नहीं, केन्द्र-कर्म की गाँव पर पडता है। उधरों के केन्द्रिय सत्ता की सखलता वा परिपूर्णता है, न कि पञ्चायतों में।

राष्ट्रीय के लक्ष्य १९२०-२१ में किसी संगठनवा लिखा था: "लेखक सेल्फ-गवर्नमेंट बन बन आग की ब्रेडेत कर्षक एकर लेखक आक्षर अतय ही चीलुत।"

अर्थात्, स्थानीय स्थानस्थ लोगों को थोटा देने की सखे तरी तारकी रही है। हमें पता नहीं चलता कि तब के स्थानीय स्थानस्थ और आक्षर के स्थानीय स्थानस्थ में क्या गुथात्मक बर्तते हैं। हालाँकि आक्षर का विकेंद्रीकरण ज्वालर दुसुगामी वा परिवर्तते है। प्रया को कुछ पञ्चायत अधिकार बख्तो सगे हैं। यह उतर से बख्सा और लखर हुआ स्वतन्त्र है, कि लिये लोगों के सुख के अभिमान से उगा हुआ।

होना चाहिये ऐसा कि गाँव में लोग सुख ही हकस होकर और आक्षर में स्वतन्त्र-मज्जित करके निरचर करके इस ग्रामपंचायत कायम करें और उनके साथ आने पडने-पडाने स्वबेकार चलते और उठने बख्सावा का अधिकार, केन्द्र सख उठाने लिये होत है।

लेखक हमें लिये गाँवपालों में एक-दूसरे के प्रति विराज और आक्षर्य होना चाहिये, जो आक्षर लिखुत नर हो गया है। उस तक अलिख उन्नीचक,

पञ्च, शिरदार, और हेग, आक्षर विमलडा, धरनी दाए अधिकतों का खोना बारी है, सब तक गाँवों में एकर होने वाली नहीं है। बिना देवी के एही अक्षरों है, और बिना देवी के स्तेला-मुठक ज्वालरबायत भी अक्षर है।

स्थानीय अधिकार वा उठाक बगाने का कोई लखि उगाय नहीं हो सक्य। उसके लिये विगमान परिस्थिति में मूलगामी सुधार करना चाहिये। सामाजिक बला काज्द वे नहीं हो सकती, उसके लिये विगमाना लोगों को पखक वाली होगी। आक्षर सखलता कपूत वे हो सकती है, बख्तों कि वह काज्द लोक्षर्यत हो। आक्षर सखलता के या पञ्च के उठन, सारे आक्षर स्ववहारी की एकराज्य खपू करने हैं ही आक्षर सखलता का काज्द लोगों को मखू होना। इसके लिये घोषणा-बंदी की घोषणा-अभियं मेरे विचार के कज्दारा (१) बर्मीन बखरी (२) पञ्च-बंदी और (३) हुता-हला-लोगों की सखलता से वे सरे उठने बखे बेंबेनी की और फिर सब कपूत बनेगा, सब उठाक स्वागत और पालन होगा और उसके सनाम में संपर्न के मूल सब होगे।

सामाजिक बला के लिये यह बखरी है कि हर उगाय रोब कम-से-कम १५ मिनिट का समय आने वा आक्षर-बंदी वा हर-दिनी की उठरों में लगाने। पहले आक्षर उठरों के काम से लिये को एक बारी ही अग्या सख गयी है, भंगियों की, और बिल्के घागा सामाजिक विमलडा बड़ी है। उसकी बहू पर मुठपचारा होगा। वे सामाजिक सखलता का सारे कार्यर उठान बनेगा।

ग्राम पंचायतों की सखलता इन दो आदोसों की सखलता पर निर्भर है।

सुख-दुख, दोनों आयदयक

अक्षर उठाक के घागा भी निरुधर बानी है, इस लिये बर्षिक के अनुसार काम करना चाहिये। अक्षर बर्ष कि हुता-मुगा होखे के सरे निरुधर ही अग्यी है, तो वह लोकर भी पक्ष बनेगा। यह हुता-मुगा से मूठ जीवन ही पडनेगा। हुता के बार हुता और दुख के बह मुग आक्षर है। इसी तरह निरुधर के बार बगने की जर्ण होती और निरुधर के बार उलठे भी आदोस।

-विनोबा

(१) सत्ता हो राजनीति का प्रामाणिक उद्देश्य नहीं। यदि यह एक सामान्य हो तो अन्य सामान्य भी विचारणीय है।

(२) दलगत राजनीति को यदि सत्ता के वैयक्तिकरण की ओर उद्योग है और इतनीज जनतंत्र को मजबूत करना वा फिर उसके साथ चलना है। राजनीतिक लक्ष्य सत्ता पर अविचार विचार विना भी प्राप्त किये जा सकते हैं। बसलत सत्ता, विचार भी राजनीतिक सेवा संभव है। ऐसे राजनीतिक प्रयोग का उद्देश्य होगा प्रत्यक्ष प्राप्त बनना को अपने मज्जल के प्राणपंचयन का अचरार रोग, बनल को इस बात के लिये रानी चलना कि किसी को मज्जल बन रह अपना मज्जल उठे समर्थित न करे है और उठने आया करे कि वह उनके मले के लिये कुछ करेगा। इसके विपरीत लोग एकत्र होकर अपने की ही मज्जल बन है और अपने मले के काम सख करे। जो काम सरकारी माने जाने रहे उठे, वे स्वयं करते हैं तो वे अपने आक्षर उठाक हो जाने हैं और इस प्रकार वे जन हला जन-राज्य का निर्माण करते हैं।

यदि बहसूत लोग पचेत बड़ी सत्ता में अमी से बहसूत बनना कर, राजनीति की इस प्रकार इतिहास करके, कर्म-बेन में उठर आक्षर, तो थोड़े ही बर्षों के भीतर मज्जल परिगम लिखने समभव होंगे। देवी चारुबाणी किसी भी निरिचर्यत में प्रारंभ की जा सकती है वा सख में बर्षों निरिचर्यत सेवो का कोई समुद्र ही इस प्रयोग का बीजा उठा सखता है। ऐसा प्रयोग चाब होने पर वे लोग, जो निरिचर्यत बन-बेनी होने के सारे किचर करते हैं और जो सारे विनय को आक्षर में सख भी भूल सख करने के प्रयास में हैं, उनकी पीडा को बासपी और जोड़ के लिये उनका बासुपुगा की गोल सुख बागनी; बर्षों कि इस कार्यक्रमी-से आक्षर्यतकारियों की संघटित होकर सत्ता पर अधिकार बली का अचरार नहीं मिल सकेगा। जो लोग इस प्रकार कार्य करिये, वे जन सब कामों को संचल कर पायेंगे जो सक्षर्यत पञ्च-विधियों में सखि लिये हैं।

वे जनता को सहायता देंगे, उनका मिश्रण करेंगे; परन्तु वे उनसे कोट नहीं बाँटेंगे।

नर एक विप्लव नईन बात है और ऐसी-एक निरुधर तथा सख अग्या मासू का राजनीतिक वातावरण देस में बन

गुण अडेमी से, अनुसूचक भी फ़ालि-कार)

उत्तराखण्ड में सर्वोदय-कार्य की योजना

उत्तराखण्ड में सर्वोदय कार्य को विनोदनी के चरम्य की दृष्टि से मति देने के हेतु श्री दत्तनी आश्रम कौशली में एक क्षेत्र के कार्यकर्ताओं को एक विचार-मोर्चा १२-१३ जून को हुई। श्री करम भाई तथा श्री जगदेवजी चारवैरी इनमें विशेषरूप से उपस्थित थे।

मोर्चा में विभव हुआ कि सारे क्षेत्र के कार्य को सुनिश्चित ढंग से चलाने के लिए विनियमित सदस्यों का 'उत्तराखण्ड सर्वोदय-मंडल' बनाया जाए, जिसकी बैठक १ माह में एक बार हो।

- (१) अलमोड़ा-भी सरण नदिन,
- (२) विनोदगढ़-भी राधा शरण, श्री लक्ष्मी चन्दनी,
- (३) पदवाला-भी मानसिंह रावत,
- (४) चमोली-भी चण्डीप्रसाद भट्ट,
- (५) आरमनिक विह, (६) दिहरी भी कृष्ण शरण, (७) उत्तरकाशी-भी सुन्दरलाल।

विचार मंडल का विचार प्रसार करने के लिए निम्नलिखित कार्यकर्ता हैं—
 (१) श्री सुन्दरलाल (२) श्री सोहन लाल धर्मगुप्त (३) श्री मानसिंह रावत (४) श्री हनुमन् सिंह मारीच्य (५) श्री लक्ष्मीचन्दनी

इस समय निम्नलिखित प्रामेसा और प्रसार-केन्द्र हैं—

- प्रामेसा-केन्द्र :** कार्यकर्ता
 (१) विनोदगढ़ — श्री लक्ष्मीचन्द
 (२) गोगाङ — कुं राधा शरण, कुं राधा पोलिया
 (३) चमोली — श्री हरिभाई, रामभू प्रसाद, आराम सिंह, चिरजीलाल
 (४) शहनुप — भागीदा—भिनवर सिंह बर्मा,
 (५) हनुमन्ना-गढ़वाल — श्री हरि शरण, कुं सीमावती
 (६) चमोली — श्री चण्डी प्रसाद भट्ट
 (७) बासल दिहरी गढ़वाल — कामरूप बहन, भीमती बलती देवी
 (८) उत्तरकाशी — मनी कौर, कार्य-कर्ता (मौ)
- (१) पीपल भस्मोडा — श्री हनुमन्, श्री करम भाई से बहादुर सिंह विनोदनी

कार्य प्रसार : साहित्य का रसक रसने के लिए इस समय निम्नलिखित केन्द्र हैं—

- (१) श्री दत्तनी आश्रम कौशली—अभ्युदय व विनोदगढ़—श्री सत्य बहनजी की देखरेख में।
- (२) गौरीधर साहित्य भण्डार दिहरी-दिहरी व उत्तर काशी—श्री सोहन लाल सोमान की देखरेख में।
- (३) कौटार में गौरी आश्रम के शासक भगवान् ठोरी।
- (४) गौरीधर के लिए घर में निवृत्त किया जायेगा।

दिहरी व गौरीधर मण्डलों के लिए एक एक हप्ता रुपये प्रति भण्डार दूबई देने की व्यवस्था भी चरणभाई करवायेंगे। साहित्य सिखें वर मालिक मोरार भी गौरी आश्रम को उपस्थित साहित्य भण्डारों द्वारा भेजे जाने पर रिरी वर २५ प्रतिशत भी काफी आश्रम कोमान्डन देना। साहित्य के कमीशन से उपस्थित मिले के सर्वोदय-मंडल का सर्वोत्तम होगा। इस कार्य में श्री करम भाई भी गौरी आश्रम के सहकारियों से मिल कर व्यवस्था करेंगे।

कार्यकर्ता-सिद्धांत

सुविचारित योजना के अनुसार प्रत्येक क्षेत्र में एक-एक साहित्य-गणकालिका और अर्थोपार्जन करने वाले। महिला कार्यकर्ताओं के शिक्षित की व्यवस्था भी लक्ष्मी आश्रम कौशली में वच सुचर्चा का गिरि विचारण आश्रम में आयोजित किया जायेगा।

प्रामेसा-केन्द्रों की कार्य-योजना
 प्रामेसा केन्द्रों की कार्य-योजना में विचार प्रसार के अलावा साप्ताहिक प्रार्थना सभाओं में प्रकाश आदि धार्मिक प्रयोग का पठन भी हो।

कुटार सिद्धांत

इस क्षेत्र में महिलाओं के कार्य-रत्ना जीवन में कुछ और कम करने की दृष्टि से कुटार और गिराई के लिए धान व आटा-बाबिकों का प्रसार किया जाये और इस कार्य में सारी कमीशन की सेवाओं से काम उठाया जाय।

उत्तराखण्ड की विविध बलवाण्ड के बरफ घटों पर कम-उपयोग के विशाल की कार्य समाप्तगाए हैं। इसकावम के लिए कम उपयोग प्राप्त करने के हेतु प्रत्येक मास सेवा-केन्द्र में एकमात्र एक कम ऊपर रखा रहे, जिसमें से १० सेर तक किसानों में वित्त हो जायेगा। और १० सेर केन्द्र में रिडी के लिए रहे।

सारी-मास-उपयोग की योजना

उत्तराखण्ड क्षेत्र में सारी प्रामोयोगों की योजना प्रारम्भ करने के लिए निम्नलिखित कार्यकर्ता हुए।

- (१) इस समय आज भेजने को सचयन्धी कुटार के लिए दत्तनी उन नहीं मिले हैं और यह कार्य हुंदरे काशी-चण्डीका भी मास करवा करहे हैं और जलने लीक से भी कुछ मास-उपयोग होना करहे हैं। ऐसा मास-उपयोग होगा है कि सिलकुरा के एक विचार में जाने कर से कुछ कमक बनाया और कुछ बाव कम कर रिडी और कुटार में बिना लगे।
- (२) कडवाण के सोम में—
 (अ) कुटार के सोमान और कांडिम उन आराम से मिल रहे, इसका प्रसार हो।
 (आ) दत्तनी का 'सर्वोदय' का प्रयोग हो।

(३) कुटार के लिए मुक्तिवा हो। कुनकरों को विचारण वर वरआम मिले।

(४) लूरी खरी के उलाहन ना भी प्रभाव हो।

(क) रघम-उपयोग चलाने के लिए माग, मंगल व गणवी विद्युत् पास कर देना उपलब्ध है। ऐसे की कुतार व साराई के प्रथम का प्रभाव हो। प्रथमका देने वाले स्थानीय कार्यकर्ता को ट्रेनिंग के लिए उल्लेख जाय।

(ख) तेल मिच्छाने के लिए हाथ से चकने वाले आवाज कौचू का योज व प्रसार हो।

(ग) हाथ से धान-कुटार व आटा-सिद्धाई की सुविधा बढ़ाई जाय।

(घ) मूल्यकली-वाहन के बर्बाद व बिलार हो।

(ङ) गिराल-उपयोग (शीत व बरफ) बनाने के लिए के लिए स्व-विद्युत् व बरफ मास जागने की सुविधाएं हैं।

सारी प्रामोयोग के कार्य को चलाने के लिए स्थानीय सरदारवार सौदा हो और मनेक दो मिल के क्षेत्र के लिए एक-एक अर्थोपार्जन सयन्धानों विद्युत् किया जाय। उन्हें आवश्यकताअनुसार मान देय दिया जाय।

गोपालन-सर्वधी प्रयोग :
 पदमी क्षेत्रों में गोपालन बढी वर

सारी प्रयोग सारी ने न टिक बनने के कारण अक्षय हो रहे हैं। इस कार्य में सुनिश्चित व समिति से प्रयोग करने की प्रार्थना की जाय। छोटी उम्र के अच्छी माल के बच्चे बाहर से बाहर साइर बनाने के लिए यहाँ वाले कार्य को बढ़े होने पर आने को स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार बना लें।

चौक के जगलों की समस्या

चिसाओं के लिए चोट के जलक पैना-मास तथा चण्डीका की दृष्टि से अधिक-कारण हैं। यहाँ के जंग, एगुलान और बागवानी पर कुछ प्रभाव पड रहा है। इस समय में सरकार को सुझाव जाय कि कौड़े पते-जलवा, हुदम और एड्ड के लिए उपयोगी पैदा की हो गौरी के निरट बनयाजाय। जहाँ जल के बगल के बीच चोट पैक रहा है उसे रोना जाय।

सारी प्रामोयोग विद्यालय

प्रामोयोग सारी-प्रामोयोग विद्यालय के रूप में विस्तार के बर्बाद हुए। ऐसी आम तार हैं। इसी स्थानीय सहाय को हले चलाने का साधित करने व विचार करना चाहिए, जिससे विद्यालय का काम अधिक परनाउत्पन्न कर लें और उसमें शिक्षण देने वाले विद्यार्थी भारी कार्य के लिए प्रेरणा ले लें।

उन मान-नेवा केन्द्रों का बर्बाद सुल्य कार्यकर्ता हैं, प्रथम कार्य-रत्न अधिक कार्य की वरगरी समितिओं का उपहन व उनको उल्लेख बनाना होना चाहिए।

'खादी भवन' नई दिल्ली द्वारा स्पष्टीकरण

[आ १८ भासल के 'भूदान-पत्र' में नई दिल्ली के 'सारी-प्रामोयोग मन के सच में भी नैरे-नारे का एक पर प्रकाशित हुआ था, जिसमें यह बताया गया था कि उक्त 'सारी भवन' से सारी हुई कुचण्टों पर एक एक निपण के चुनाव प्रसार करने का एक कथन हुआ था। 'सारी-भवन' के सचकारों ने प्रामोयोग के लिए सच में जो पत्र भेजे थे, वह निम्न प्रकारित कर रहे हैं। इनमें यह जाने कर छापी है कि उक्त पत्रमा अनवगत भी ही हुई थी, उसके पीछे कोई साह उदरप नहीं था।

जिसमें कुछ बातें उतने दिल्ली प्रथम को भी छाप कर दिया। दिल्ली भवन के कुचण्टाकारों का उल्लेख इस क्षेत्र नहीं मान और वह देरी लाने में भी कोषात हो गया। वह कुचण्टाकारों का उल्लेख कर कल्पित भाव नहीं था। ऐसा लगता है कि कुचण्टाकारों का उल्लेख कर उल्लेख के रूप में उल्लेख किया गया है।

जिस बलवाण्ड का उल्लेख किया गया है, वह एक कोसेली बनवाया गया है, इसकी बात यहूतों के उल्लेख की उल्लेख नहीं है। सारी के उल्लेख करनेवाले कुचण्टाकारों और यहूतों के उल्लेख करनेवालों का भी उल्लेख करवा करहे हैं और जलने लीक से भी कुछ मास-उपयोग होना करहे हैं। ऐसा मास-उपयोग होगा है कि सिलकुरा के एक विचार में जाने कर से कुछ कमक बनाया और कुछ बाव कम कर रिडी और कुटार में बिना लगे।

हमारा क्रांतिकारी साहित्य

यह साहित्य मानवता को नव जागरण का प्रतीक बनकर हमारे जीवन में प्रकाश भर देगा

- विनोबा-साहित्य
- सर्वोदय-साहित्य
- गांधी-साहित्य
- मानवीय-क्रांतिक जीवन साहित्य

It is a thrilling account of the exciting experiment to evolve a stateless and classless society based on non violence. It is an important, valuable, informative and fascinating book by Suresh Ram Bhai Illustrated, Pages 291, Price Rs 37 Bound Rs 350

काम्यन की सतिसताओं को जाने नूते बिना, गो धन अपने सतिसों को समझने में सक्षम भी बन सकते हैं। महात्मा महाशान्तिनदी की इस पुस्तक में नाचनों की जगों का सतिस विवरण, पृष्ठ ६५ और मूल्य ०-१०।



सातह को विचारने के लिये उसकी दूर भाषा और उसकी आत्मा दुर्बल को समझना जरूरी है। महात्मा महाशान्तिनदी के विनोबा के अक्षरों के पुत्र इस पुस्तक का मूल्य ०-१० पृष्ठ १६।

जिना हथियार के धारिण काम्यन एतन सारी, धारिण केना ही हा सक्षम हैं, सुते पीर नहीं। विनायास ही कलम के धारिण-केना ही पूरी योग्यता पहिरे। हीन महाशान्ति में उपजत, पृष्ठ १०८ और मूल्य ०-१०।



सारी सभति समान की है और सारी धर्मन गार की है, स्वकिक का हृदय की नहीं, इस सभटे प्रयोग का साहस साक्ष्यक भंगारी की इस पुस्तक में पहिरे। पृष्ठ १००, मूल्य ०-१०।

८० प्रतिजन सामीय बरतन का सुत और कलकाल किमती हैन सौर के लगे नई अर्थशास्त्री की नेनी, दुन सतन को इस पुस्तक में पहिरे। पृष्ठ २०८, मूल्य केवल २-१०।



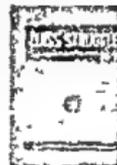
उदीषा में विनोबा के साथ विज्ञाने उन मार लगे रा विरग को जीवन में मायुर्व पर देता है। पृष्ठ १५४, मूल्य २-१०।



'शांतिनी नवदिया' विज्ञान के क्षेत्र में विज्ञाने एतिसानी पुस्तक 'विज्ञान विचार' का उद्देश्य मायुर्व पर देता है। पृष्ठ २००, मूल्य २-१०।

Achara Kripalwar, the great Sarvodaya thinker in this small book says that the concept of class struggle is basically against the 'good of all'. P. 24, Price Rs 1 25

'सायन सायन सेवा की और, के साथ के प्रभावित पर पुस्तक सायन सेवा के कर्म में एतिसानी के लिए सायनद्वारा है। पृष्ठ १००, मूल्य २-१०।



नई सभति का नया हथियार 'मृतन पत्र', को अतिरिक्त समाज रचना का आधार बनना का रहा है, उदीषा के नई साक्ष्यक भंगारी की यह पुस्तक पूरा जान कराता है। वीर भाषाओं में उपजत। मूल्य २-१०।

इस पुस्तक में कर्तव्य धर्मोदगी, भी अग्रगण्य न हरे महापुरुषों में आने जीवन की सतिसद्वय के अक्षर उद्देश्य के प्रयोग का सतिस और सतिसक धारिण विचार है। महाशान्ति में की, पृष्ठ ११२, मूल्य ०-१०।



'सभति सान पत्र' आत्मो-धन के वैचारिक पत्र का सतिस पहिरे। पृष्ठ १२२, मूल्य ०-१०। यह पुस्तक सात भाषाओं में उपजत है।

मृतन साक्ष्यक, सारी की नई, अतिरिक्त एक आक्षेप है। विचारधारा मानवता की मुक्ति का साहस करने वाली एक उदासीन पुस्तक। पृष्ठ १००, मूल्य २-१०।

सूचीपत्र मंगाइए अखिल भारत सर्व सेवा संघ प्रकाशन

राजघाट, काशी

धार्मिक विचारों में जुलिपादी सतिस वैसा करने वाले महात्मा पुस्तक के विचार धर्मवाद के अनुवाद पर सतिस में पहिरे। मूल्य सतिस नये पैसे।

मूढानयन

साप्ताहिक

हिन्दुस्तान प्रबलकोशिकासिद्धि... (Small text at the top)

आसाम में ५ सितम्बर से १२ सितम्बर तक को हफ्ते में कुल २६ ग्रामदान हुए। २५०८ रुपये की साहित्य-बिक्री हुई।

मास्यमी : शुक्रवार

संपादक : सितदास बहुला
२९ सितम्बर '६१

वर्ष ७ : अंक ५२

बापू : 'वैष्णव जन' का आचरित जीवन

चित्रवा

वैष्णव जन तो तेने कहिये,	जे पीड़ पराई जाणे रे।
परहूखे उपकार करे सोखे,	मन अरिमान न धाणे रे।
सकल लोकनी सहुने संदे,	निवा न करे कंठी रे।
याच काय भन मिश्रवल राखे,	धन-धन जननी लेनी रे।
समदृष्टि ने तुज्या त्यागी,	पर-रक्षां जेने मात रे।
जिह्वा धकी असत्य न धोले,	परधन नव जाले हाय रे।
सोहू नाया स्वप्ने महि जेने,	बुद्ध बेरतय जेना सनसा रे।
दाननामदां ताली खागी,	सकल तीरथ तेना मनसा रे।
बगलोमी ने कण्टरहित छे,	काम धोष निवार्या रे।
भजे नरसंयो तेनुं दरसन करता,	कुल एकतेर ताया रे ॥

यह मजन अब तो आखेनु हिमाचल, सब दूर गंगा जाता है। यह नरसिंह मेहता का मजन है, लेकिन महात्मा गांधी ने उसका प्रभाव नुल शरद में अपने आचरण से फैलाया। उन्होंने इस मजन पर अपने जीवन से ही एक माध्यम लिख डाला और हमारे लिए एक विरासत की तीर पर यह मजन ने छोड़ गये हैं।

मनसा उपकार करने वाली बर सिंदरे, फिर भी गीन बरद होयो। मुदम कारं तो मनसा ही करेला। हय बोधी ही लेस करेने। वय

समने 'वैष्णव' की जो एक व्याख्या की है, यही व्याख्या एक तीव्र की है, यही एक विद्विषयन की है, यही एक कृतज्ञ, एक बौद्ध की भी यही है। यह जन की भी यही व्याख्या है कि जो भी पीड़ पराई जाणे रे।—दूसरे की धर्म, हरे किसके हृदय में प्रकट होता है, परिश्रितिक होता है, धर्मिक और धर्मिक तीव्र बन जाता है, जिसकी कर्मा दुःख तो बर्दाश्त होता है, सहन कर लेता है, लेकिन वैष्णव को दूसरे का दुःख सहन नहीं होता। इसलिए दूसरे के दुःख से त्रिजि होकर कुछ बर्दाश्त करता है।



मैंने बहुत दया कहा है, भाद भी लिखा है कि यह 'जगत्कार' नाम बहुत सुबकर है। आज उसने अहंकार की छत्र बन गई है, लेकिन मूल में बहुत ही बुरा मगर है। इनका अर्थ होगा है, कर्मा-साक्षात्कार से दूसरे को भयन नहीं बनाता, उनका संकट निवारण करता है।

यानी मत्प, कार्य यानी मदद। योही ही मदद उले दोगे और उसका भी निवृत्त पर अहंकार, चरद छत्र है; इस-लिए नरसिंह मेहता ने हृदय बना दिया कि "परहू खे उपकार करे तोखे, मन अरिमान न धाणे रे"—दूसरे के दुःख को नेंदना मन में परिश्रितिक होना, उन वाली मद में हीमना, जो भी मद की बुरा अरि है देश मानना, उसका भी अहंकार न मानना, ऐसा पूर्ण लक्षण रहता है। ठीक यही वैष्णव, भक्त के लिए भगवान ने रीति में बताया है: "अद्वैता सर्वभूतानाम् मीमं कथयत्त यद्यत्, निर्ममो निरर्कादः" यह मत्प का लक्षण भी गीता में बताया है, यही नरसिंह मेहता अपने पत्र में देता है और गांधीजी के जीवन में हमने यही चीज देती है। खुल हो पवित्र जीवन उनका है। उनका आचरण लक्षण होता है जो अति भीरी होती है। भय है हम विनयी उनके बाप बाप करने का भीम भिन्न, उनकी सेवा करने का भीम भिन्न।

महात्मा सकाचार्य ने तीन परम भाव बताये हैं: "सत्य-धर्म-दण्ड-सुख-महादुःख-छाया"। यानी मानव-भाव-मिष्ट, यह बहुत ही बड़ा भाव है। अनेक ब-यो के परिधम के बाद यह मिष्ट है, यह पहला भाव हुआ। सुख, सुदुःख-व्यथ-यानी मोक्ष की इच्छा हो, अनेक लोगने भी इच्छा की, छत्रवदाह ही कि यह मोक्षवाच के बचन का-हूँटेंगा, तो यह बूला भाव। तीव्र भाव है,

महादुःख का काव्यमिष्ट, उसकी छाया में रहने का, शक्यता का, सेवा का, साथ रहने का और दर्शन का भीरा मिष्ट। परम माय है वह। कुछ लोग कहते हैं कि यों की पाप रहने वाले छोटे करते हैं, जैसे किसी बड़े पैर की छाया में बूछत पीया बहुत नहीं है, उसकी मंगलि कुटिल होती है। वह बहुत नहीं है, इसलिए बुर रहना चाहिये। दूर से शर्म होता है, नहीं तो वह परधीन, फलन होते हैं। यह उन बड़े गुणों पर लागू होता है, जो बड़े होते हुए भी स्वार्थी होते हैं, जैसे बड़ा पैर साथ पीया, जो बड़ा के और पूरे से मिलता है, वह नष्ट होता है। इसलिए उनकी छाया में जो पीया है, वह बहुत नहीं है। तो बड़ा पैर स्वार्थी ही गया। बड़े गुण आया है, महादुःख अलग है। बड़ों की छाया में रहने से विचार कुटिल होते हैं। लेकिन महात्मा गुण भाव के समान बचन होते हैं। साथ बड़ों को बुरा है, सुद लीन होती है, लेकिन बड़ों को

मेरा अपना जीवन नहीं रह गया

विनोबा

भारत, भूमि जो हम लोगों में पुण्यभूमि माना है, अर्थात् में नहीं मानता कि योरोप और अमेरिका से या दूसरे देशों से कोई आत्म अधिक पुण्य आज हमारे पास होगा, सिवाय इसके कि महापुरुषों के स्मरण हमारे साथ रहे है। अगर हम एक-एक महापुरुष को माद करेंगे और उनकी एक-एक त्रिभि मानें-रहेंगे तो याकड़ ही कोई विनास दबेगा, जिस दिन किसी महापुरुष का जन्म या मृत्यु न हुई हो। चौदह-गन्त्रह जन्माएँ यहाँ हैं। तब मंगल जन्माएँ हैं। उन मरते मूल में संस्कृत है, जो। इतनी सब जायाओं में जिन लोगों ने अपने विचार व्यक्त किए और लोगों की सेवा की, जिन्होंने आध्यात्मिक क्षेत्रों करने में अपना सर्वोत्तम किया, ऐसे की अघार भीकें भारत पर हुई हैं। अनेके फलवन्द में कुछ ३०० पुरुषों के नाम आते हैं। उन सबके नाम हम जानते भी नहीं। जब ऋषियों का तर्पण करने हम बैठते हैं, तब "वसिष्ठ तर्पणामि"—विश्वामित्र तर्पणामि और आतिर में बहते हैं "शर्वा ऋषि तर्पणामि"—सब ऋषियों को हम तर्पण करते हैं।

वह हमारा भाव है कि भारत पर सतों की, सत्पुरुषों की, जानियों की और मत्तों की वर्षा हुई है। परों के साथ पुरुष आपसमें नै गाया है कि भारत भूमि में जन्म लेकर छत्र विषयों की दानता जो जीव रमेगा वह बहुत अभागी होगा। ऐसा ही करनेकों ने कहा है, यह बहुत बड़ो दोलत हमें मिली है। "सुखज्ञानं सुकलान् मत्तयन् रीतिज्ञानम्," ऐसी सुन्दर भूमि हमें मिली है। लेकिन इसके अधिक भीमार्थ और सम्पन्न देश भी दुनिया में हो सकते हैं। हम गांगा, यमुना और प्रयाग के मुग्धा गाते हैं, लेकिन उनसे बहुत अधिक विशाल नदियाँ दुनिया में हैं। यहाँ की भूमि उपजाऊ है। लेकिन इसमें भी अधिक उपजाऊ भूमि दुनिया में है। इसलिए भारत का मुख्य भाव "सुखज्ञानं सुकलाम्" यह सही है।

आजकल—वह राज्य चाहेदें में आया। सब हवार शाह एक उसी ही उन यहाँ के लोगों को रही। उनमें गौतम बुद्ध जैसे कल्याणदान, दयावान महापुरुष निर्माण किए। उनसे फकीक महात्तम जैसे ता-कलानि निर्माण किए। अब नाम किस-किके जाने बरों। उनसे उन्दिपर, गौतमि अशक्ति करेय दिने। यह हगरी तीरह है।

इन दिनों एक बर हमने बर-आर करी है, हमारे नेताओं ने इस बात को उठा लिया है। यह पद कि इनके अगे छोटे धर्म नहीं चलेंगे, उनका बचनना एह हूय है और छोटी-छोटी अयोग्यता 'भाउउ अरे' की पीढी है, अभी नहीं चलैगी।

अनिक यह "सुखज्ञानं सुकलाम्" यही है—बहु उपका भाव है। यह "सुखज्ञानं सुकलाम्" यही है—बहु उपका भाव है। यह "सुखज्ञानं सुकलाम्" यही है—बहु उपका भाव है।

महान् पुरुष की संमत्त में छोटे बड़े बनते हैं, छोटे सच्चे बनते हैं। मरु हरि ने कहा है।

वे उरु-उरु पहाट दिवालन, मेरु कबो उरनी मरिगा है कि उनके आभय में बचो पेर रहे, वे मेरे ही आगे। हम तो मलय पर्वत की मरिगा गाते हैं, जहाँ साफल्य बरु भी धारन का पेर चलता है। तो पार मरिगा मलय पर्वत की है। दिवालन मेरु मरान से भी महान है, लेकिन दुवरे की महान नहीं बनता है, लेकिन मलय की छाया में भी पेर रहते हैं, वे चर्चन के बन जाते हैं।

परी महापुरुष का स्मरण है कि उनके आभय में रहने वाले छोटे बड़े होते हैं, महान होते हैं, वो गांधीजी के जीवन में हुआ। उनके जीवन में अनेक छोटे-छोटे लोगों का उपर हुआ और वे बड़े हुए।

पारिवारिक भी शाराओर अपने हाथ में लाने की अस्तुर बनाने आभय जिना को मरु-यन हुए। उनमें उनका हाथों भी का ऐश नहीं। वे जानते थे कि अगर वे अपने हाथ में धारनो नहीं लीने, दूसरे के हाथ में शाराओर भागिने की पयिकस्तान रहना मुश्किल नहीं रहेगा। उनके आभय में जाने हुए पेर चंडन नहीं हुए थे। उनका विचार-धर्मिक बुद्धि हुई। कैपलन महात्तम एनी की हसरीकी अकरत मराने नही हुई और का देय एवरीर हुआ वे नोभासारी में रहे। उन्होंने छोटे-छोटे लोगों को बहुत पता बना दिया। ऐसे मरान का विषय २४ मरन में लिखा है।

[सं. २२-१२-००, पार-वे-बुद्धी]

हमारी ६६ साल की उम्र में हूच ईश्वर गो यह नहीं कह सकते कि तुम हमें दुःख या दर्शन कराया। मरुवन सुख ही मुस हमने पाया। जिनना भंग हमने पाया, उसना एक अघ मात्र भी हूय नहीं पूया रहे है। प्राचीनो से, नबीनीनो से, दूरदरवाओ से, मरुकीक वालों से शरीर के कयाल से; इस तरह कभीर से कन्यासुमारो तक और यहाँ असम तर हमें जो मिला उतना बर्षन हूय नहीं कर सपते थे। हमें जो मिला है वह इतना अत्यधिक मिला है कि हम भंग से रहे है, मरुच वृका रहे है ऐसा आस हमें नहीं होता है। गांधीयनने मरु के लिए जो लिखा है, वह हय जनता के लिए बरुवे है "बाही अंजलीत पर"—नमस्कार बनने के विनाय मरुच कोरें उपाय मही है। सबको हय मरुचतार से प्रमाण करले है।

कि अनेक आकण्य हुए, अनेक हूच भाषे, अनेक नासकत सुंते गये कि किसमें आभय भी चीकन रहा; फिर भी भारत-नासत के कोरुं पर हास्य हो रहा और उनसे अनेक बाणो का हो उभारकन किया।

ओर देते हमारे महाकवि ने कहा— "जिने भी भावें आये, चाहे वे अर्थयें, चाहे अराने, उनकर वशात हो कि—"एचो है भाषे, एचो अभाषे"। उनका फार हय भूमि में आध्यात्मिक कोरें है। तब मलय एक है, इतना ही नहीं आभय एक है—अपपर एचो एक है—करी आभय अरुमरुं यहाँ के कविने भी को। और हम जेगो के लिए बरुच बरी दोलक, यिगल लोनी। बरी मात्र मरु चलो तीरह है। "विश्वामित्र"—हय विच-

हके भाये अध्याय और विशद पचेगा। अर्थात् की भूमि (निधि) जो नहीं कह सकते, क्योंकि हमें सारा शिक्षण कहाँ माल्य है, लेकिन मैं जानता हूँ कि भारत है, और विद्वान परिचय में बुर रहा है। वे शान्ती कोरें आगे के उमानें में चलनं बानी हैं। अर्थात् के यामंदुशन ॥ विद्वान परोया जो हय बुनिया में वगों ला सकते। येभी सुके भागा है। मरु अर्थात् बर परिचय है—अवना ही शिक्षण विद्वान पर है। यह मुक्ति का हान है और अंजल मरुच का, कात्ता का हान है, जो माल की कयको कोरुं है। विद्वान भी भारत में एक उमाने

में था। आज परिवर्तन में उदय हुआ है। बसों से एने सि सियना होगा। और अंजम पूर्व-परिचम मेरु को मूच होगा। यह समय फिर है ही और हम समय विरते हैं इतरते कोई काम बाँक बाँक है नहीं चलैगी। परों ते अभाय में इस कर हम मरुचन हुए पूया रहे हैं। पर विताम में अने को दो है, उतना अरुपम आता है कि प्र-राय मेरा आगम जीवन है यहाँ है, नहीं दीकता। अंर है, का हाँ है पीना "बह चलैगा मरुच वक।" है किम में कोई एपिकलत भाषे, बावना वर अरुपम नहीं हैक है। मरुविधों हीती है बीने में, मरुवार में, कने में। यह मैं देखता हूँ, तैने म हीती है, लेकिन उरकी विरत नहीं ह

अभी भाषने तुला कने है तुना। "जहाँ जाता है, मुं साय हो।"—आर उतक मरुचने है नेरा बावना कने है तिनी का हाय पकता है कि के लिसे, तौ में पंते मरुच हूी कयकता हू—हीना अरुपम जाता है। हय मरुच हूँ, तो जिनी मरुच के हाय कितो कवरी का हाय देना लिता। मरुच-कने का कने जाता है। यह हाय का विरत है। इसको बावना मही को सकनी है। यह अरुच का विरत सब तक मारपन है, मरुच कने के लेकिन ऐसा मरुच होता है कि भा मरुच मरुचि है कि मरुच के मरुचि मरुचि हरि की सेवा हो—भोर हीनी। मरुच पार है और कैना। "मारुच के कने" शान्ती में मरुच भाव से नहीं है, उरकी ही हमयो मरुचि है, कन्या मरुचि मरुच के साथ हमारा अरुचन परिचय हुआ। परों की दुना भावने अरुपम में ओरें पीना ही गयी। मरुच मरुच में येभी मरुच-पी कानो में मरुच मेरे हय रही निरुच की वेत हय है दुरी आरुह एह कर कोरें मरुच मरुच कि विरतन एतन एह रहा है कि मरुच के मरुचि मरुच में पूया नहीं गये कि कने ऐनी अरुपम, अरुच बावना मरुच में जाती है कि उरके फेरे-फेरे अरुच देवन" (मरुच) का उरनेय मरुच के शायम निर्माण हुई है, कि ही एने में आध्यात्मिक भावना कती होनी कि जिने एरुके कने में एने ही है, वरुं वे एने विच को मरुचवि विरत का मरुच है। उनके जिने वरुं एरुच एरुच मरुच भावको और एने हीती एरुच एरुच मरुच ही कती मरुचन के मरुचन है। [सं. ११ मरुच ११; बावने मरुच ११]

खादी ग्राम-स्वराज्य के संदर्भ में.....

है। क्या बिना सरह सेवक-चार के समाज वर्गों की प्रथा में न्याय-व्यवस्था का परिचय दिया और अपनी सरकार की हस्तगत होने के लिए मजबूर किया गया ही प्रयोग किए उसके लिए अब उपस्थित नहीं हुआ है? हमारे सवाल से यह भी साफ़ जवाब नहीं पाया महत्त्वपूर्ण और सरफ़ है।

रुस की सरकार और यहाँ के अधिनायक का अवस्थी स्वतन्त्र भी इस मामले में साफ़ नजर आता है। रुस अपने को साम्राज्यवाद का शिकार और मजदूरों का दोस्त जताता है। पर यूँकि बंटग में शुकुत राष्ट्रपति की कार्यवाही से रुस का शरण नहीं सकता है और यूँकि हैमरसोल्ड पर यूँके पक्ष में ही माराज था, क्योंकि उसने बिना अपना कर्तव्य समझा उसे निगाम में रुस की भी परवाह नहीं की थी, इसलिए बंटग में भी उसे इस चारे क्षमता और जबरदस्ती के लिए अलग रह भी चुक है।

बंटग की घटना में यह साफ़ बाहिर कर दिया है कि टिमिया की सरकारों के म्याद और मानवता की रक्षा की भाधा मुद्रित से ही भी का सतक है। उनमें भी अपने-अपने निहित स्वार्थ में ही वे स्वयं ही निहित स्वार्थों के हाथों टिकी हुई हैं। अतः केसमें भावा है, जब कि सरह के प्रयुक्त जनमत को अन्तर्राष्ट्रीय व्यवहार की बाँटियों की छोड़ कर अपनी आशाम दाह रूप से उठानी चाहिए। वेदा भी वाचस्पत देव में प्रकृते मगम में सुशापा वा, दुनिया के आम लोगों की सेवा के आधार पर लोकनित्तिनिष्ठी का एक विपर्यय रव फल के लिए चलती है।

जीते हुए जमाने के लोग

पिछले हप्ते हमने भी आधुनिक धर्मों के टिकाऊ प्रदर्शन करने वाले में जो सतिनाथ फलदा-भंग किया उठे, अपने भाषणों समझदार समझे वाले आन भले ही 'सम्राज्य' की धमक बढ़े पर वारी परिस्थिति को देखते हुए समझना चाहें कि कुछ बर बाद यह घटना इतिहास के एक महत्त्वपूर्ण मोड़ के रूप में बच ही जाएगी। जो मन्त्र अथवा निष्ठा और स्वार्थों में उभर उठे हुए कुछ दूर की देपते हैं, वे हमेशा सारवाजन्य समान के द्वारा 'सम्राज्य' माने जाते हैं। १० वर्ष पूर्व दार्जिलिंग और प्रसिद्ध ऐलवा स्ट्रेन्ड रकस, तथा सुद अवेच पदवी दोहे हुए भी असीमना लालिभों के दिलों के प्रथम समर्थक मारेक रसत दोहे सेना अपनी दूरदृष्टि और मानव-प्रेम के कारण वह चीज हरक दे रहे हैं, जो अनेक शत्रुजन दिलों में 'सम्राज्य' श्रेणें मर्दा दिल वा रहे हैं। वही कारण था कि 'सुलेट' जैते देव में वहाँ सँकड़ें बगैरे वापस की प्रतिष्ठता नागरिक का स्वभाव नर स्या है, वही वा हमार व्यक्ति में वा १० अतिमर को रुदन सर और सास्टेन के एक अमे-

सर्वे वेवा सप की धारी ग्राम-स्वराज्य लमिधि की बैठक पर जुलाई को पूरा में हुई थी, उसके कुछ प्रसार हप पिछले अंशों में दे चुके हैं। यहाँ हम कुछ महत्त्वपूर्ण विषयों की चर्चाओं का शार दे रहे हैं और दो अगले अंशों में देंगे।

कामन प्रोडक्शन प्रोग्राम और रिजर्वेशन बिल रिफ्रम

राजीव-मागोचोर्गों के निरोधित उलटान के कार्यक्रम के संक्षेप में, विदग्ध लगे तथा अन्य प्रायोजकों को जैते देखना, धान-पुआई तथा चर्चों-गमिनि, अन्य उद्योगों के साथ निश्चित करने का भी वा मिले तथा पारदी-मागोचोर्गों के सं में सरकार कोई निश्चिती अमनते और उनके जिने अपने हाथ के भी ही कि कुछ गमस हुए पारदी-मागोचोर्गों के जिने सुविधित रहे जायें, चर्चों में। विदेश का से अम यह, पारदी के प्रियेण प्रकाश तथा धान-पुआई का क्षेत्र हमें शामिल है।

विस्तार से चर्चा होने के बाद लोचन गया कि धान-पुआई उद्योग के संप्र में भारत सरकार ने कुछ निहित अनायाही है। प्राचीन सरकारों की उठ और यह और प्रयोगों की परिस्थिति को देखते हुए प्रादेशिक स्तर पर रव पर चौर दिया जाय पर चलती है।

उसकी स्थितिगत आगे पर आगे विचार दिया जा सकेगा।

धान-इकाइयों का संयोजन

ग्राम-पुआई के कार्यक्रम पर रिफ्रम के चर्चा में हैं। ग्राम-पुआई को लाल्वा, जिने आनुषंगिक है कि मारम से ही संयोजन में पूरी सावधानी रखनी चाये, जिने स्थानीय शक्ति को अधिक बल मिले और ग्राम-पुआई चलाने वाली संस्था भी कार्य में अधिक ग्राम-विद्योयन के कार्य में सहाय हो सके।

विचार-विमियम के बाद निमन प्रोडक्शन किये गये :-

1- ग्राम गाँवों में इकाई बन रहे हैं, जहाँ गाँवों को ग्राम-पुआई में धार करने वाले कार्यकर्ता चुनने की सुविधा अथवा ग्राम में धान-पुआई संगठित करने वाले संस्था उक्त कार्यकर्ताओं का चुनाव करे।

2- ग्राम इकाई किने गाँव में ग्राम की जाय रचना चुनाव रव मरेद में कमी धान के धारा, जो चुनाव समितिमें निरुद्ध की गई है करेगी। वंचकता से ही समिति जिने आगे चल कर ग्राम-पुआई को सफलतापूर्वक चलाने और जननी प्राप्ति के निरीक्षण एवं मार्गदर्शन के कार्य करे दो अच्छा होगा।

3- ग्राम इकाई के जिने कार्यकर्ताओं के प्रतिष्ठान की जिने-सहाय पारदी-मागोचोर्गों, ग्राम-पुआय समिति उदाये, हके जिने पर उभ-समिति बनायी जाय, जो हक संभाल में निश्चिती योजना बनाये।

4- ग्राम-पुआई की चलाने के जिने मंडल और उद्योगिकों की आधारभूत होगी। यदि मंत्र वही की ग्राम-पुआई ग्राम बनने वाली संस्था के सदस्य से पर धाम दिया जाय। मंत्रिय वे सावर हकम कटिगार हो, दलितों आनी स्ट्रेट जेरे की देव देव में से नाम करे।

5- १००० की आधार की अग्रम ग्राम-पुआई के जिने न रचना जाय, जिने विद्योयन में जो मानव-व्यय की न उठे रहि में रा कर संभाल के देव रर पर ग्राम-पुआई संगठित करने में प्रयास हो।

लाई बने-र रकस और उनके साथी आर्थिक अर्थों के रिवाकल को अग्रम उठा रहे हैं, वह भी उहाँ पर आन के जमाने की गाँव है और हमारा विश्वास है कि दुनिया का प्रयुक्त जनमत ही 'सम्राज्य' लोगों की यह समझ देवा कि वे जीते हुए जमाने में रह रहे हैं।

'अन्दरूनी मामला'

हमने के इस समिन्धन फलदा-भंग की एक बड़ी दिलचस्प प्रतिनिधा हुई है। लाई बने-र सल की गिरफ्तारी पर केमेव हुए पश्चिम बंगाल-साल नेहरूने अपनी प्रेस-कॉन्फे्रंस में लाई सल के नाम की प्रस्तावा की और कहा कि उन्हें 'लाई सल से हटाने' ही नि काय, वे सुद भी पैसा पर सकते। इन्दन के गमरनिगम के अग्रम को नेहरूजी की मासपूर्व प्रतिनिधा वही नामवार सुनरी और उसकी आलोचना करते हुए उन्होंने कहा कि एक राष्ट्र के प्रधानमन्त्री को दूर रहने के 'अन्दरूनी मामलों' के बारे में हक प्रसार सम्बन्धी नहीं जानी चाहिए। मादम होता है कि उद्योग-निगम के अग्रम मरेद-र अनु-अर्थों को पर वा सिलेना समझते हैं, जिने अग्रम उन्हें फेलने रं ही कोर हर्ष नहीं है, और जिने बरि में दलर देवे वा 'लाई' लोगों की कोरों अंगार नहीं है। निगम के अग्रम मरेद-र को यह मादम ही होता कि जननी सुद भी सरकारने रुस दाख किए जाओ किने गये अनु-सिधियों के सिक्क निरीक्षण जाहिर किया है। हक रुदन को चाहिए कि वे अपनी सरकार को रणार रहे कि वह रूप के 'अन्दरूनी मामलों' में दलर न करे। इन्दन निगम के अग्रम मरेद-र की सुलगाट और जो कुछ भी बाहिर फली हो, उससे यह प्रथम हो कहा है कि वे किने जीते हुए युग के सर्वकर्ता हैं।

अम्बर का सतर और हृष्टलून

रिने चर्चा हुई कि हैमरस और पारदी का परर परिव अथ है। अमर चलने की सुल उलटान होगा उठ दल को अमर हैमरस केन में रबीकर निगम जाय तो क्लार्क का वाक्यम पूरे वे में देम में चलया जा सकेगा है। अमर से जो अति-रिक्त दल उलटान हो उसके जिने ऐसी मरपरवा हो कि सरकार यह सारा सुल उलटान के जिने ले है। इससे अग्र को हैमरस को हार देने के जिने वाग-बाहक कल मिले लोचने का अयोग्य हो रहा है वह बकना और क्लार्क योजना, जो लकर गाँवों में वसुत दल कल को-सकरी को दूर किश जा सकेगा। अमर क्लार्क तथा हैमरस का परर गमिद संबंध होने के निश्चित उद्योग की बही कल गिनी है।

कुछ लोगों का यह भी विचार रहा कि पारदी किने विवाह और मान्य पर आधारित है। हम प्रसार अमर हमने हैमरस के साथ रहने जेता तो किम मानक के आधार पर हम पारदी-पुआई पाय रहे हैं वह आनम टिम जायनी और पारदी-पुआई चलाने मान नहीं होगा। दलतिने हकको अपने ही हक से पारदी पारदी चलाना चाहिये।

पारदी चर्चा के बाद में निधय हुआ कि कुछ विषय जेते हैं जहाँ पर अमर क्लार्क के आधार पर इन्टरल की चल देने का आयोग हो सकता है और इसकी संभावना है, जहाँ पर हक प्रयोग किया जाय। यहाँ के अनुभव के आधार पर आगे की चीज निर्णय हो सकेगी। पारदी ग्राम-पुआय समीपान की अने-उद्योगिकों को विचार करने के जिने जो उभ-समिति बनी

पूजन हो या अनुसरण भी ?

विद्योगो हरि

कहा जाता है कि हिन्दुधर्म का जीवन आदर्श जीवन मानवामील होता है। वह जिस किसीको बहुत प्रभावित कर देता है, उसे अलो-
न पूजन माना जाता है, यद्यपि उसने प्रत्येक अपने जीवनकाल में कभी अलोचिन्ता का ध्यान नहीं किया था। उसने क्या-क्या शिक्षाएँ दी-
की, अन्त-अन्त आसरे पर क्या-क्या महत्ता का जोर स्वयं यथा आवश्यक किया था, उधर उन भक्तों के प्रति जो ध्यान प्राप्त हो जाता है। वह तो
उपरोक्त अलोचिन्ता ध्यान-पूर्विक ही पूजा करने में ही उद्योग मानता है। अपने महापुरुष को धरती पर से उठा कर वह नहीं ऐसा उद्योग पर विद्या देता
है, वहाँ पर आसानी से पहुँचा नहीं जा सकता। यह उद्योग नाम आसता है, जगती जय बोलता है और जहाँ जन्म-दिन एवं प्रयाग-दिन पर उत्सव
मनाता है। पर उसने विद्यार्थे रातों पर चलने को बहुत तैयार नहीं होता। पूजे तो बहुत है—महात्मा के रातों पर कोई महात्मा ही चल सकता है, मेरे-
बेधा दुनिया का अन्तर्गत नहीं। मानता है कि भूँतिक वह अलोचिन्ता पूजन था, इसलिए सत्य सोचता था, सत्य बोलता था और सत्य ही किया करता
था। उद्योग भवन उसकी बराबरी में ही कर सकता है ? करना चाहते भी, तब भी नहीं। भी पूजनीय है, वह व्यवहार में 'अनुसरण' नहीं हो सकता,
ऐसा कुछ मन उस व्यक्ति में बना दिया है।

मगर वह जिस महापुरुष को पूजनीय मानता है, उसके जीवन-वृत्तों में से ऐसे भी कुछ प्रयोगों को चुन-
कर प्रमाण के तौर पर कभी-कभी पेश कर देता है, जो उसकी अपनी कमजोरियों के साथ, उसकी राय में,
निष्कर्ष-निष्कर्षों में मेल पा सकते हैं। रामायण और महाभारत और दूसरे ग्रन्थों में से महापुरुषों के कविपय
प्रयोगों और बचनों के प्रमाण यह भी देकर दे दिया करता है। महापुरुषों के जैसे उदाहरण दे-देकर अपने अक्षर
का और अपनी हिसा-मसिद्धि का औचित्य यह सिद्ध कर देता है। सिद्धान्त और व्यवहार में साम्य देखने का
व्यक्ति करके का उसका स्वभाव शायद ही होता है।

पुरुषों के महापुरुषों को अलग-अलग एक एक रूप देते हैं। उनके चरित्र और
व्यक्तियों पर अलोचिन्ता के आधार होते अलग-अलग रूप देते हैं कि वही कौन का
रूप है या कविता ही माता है, कविता या कविपय है। विस्तृत भी आवश्यक करने
पर वह मानवामील रूपक उन पुरुष पुरुषों का मक और अनुप्राय्य अपने अर्थों
करता सकता है।

उनके जीवन-चरित्रों और विद्याओं के
अर्थों को अलग-अलग रूप के प्रमाण दिया
जाता है। मान लिया गया है कि वे महा-
पुरुषों के 'कविता' हैं। तो अलोचिन्ता
कविता अपने आप अलग-अलग रूप में भी
की बात की विस्तृत रूप छोड़ देते हैं।
हजारों वर्षों के सामने से ही एक
पुस्तक बनने लगी अन्तर्गत पुराण है,
दिवने अपने द्वारा कर्त्तवी के चरित्रों
के महात्मा का वर्णन का किया था।
है कोई अक्षरार्थ नहीं था, हस्तलिखित
उपेक्षा-कर्मों से भी मान लिया
गया। उनमें कोई अलोचिन्ता लोका
नहीं रहती है। अक्षरार्थ में उनमें
धरती पर कोई अक्षर अक्षरों पर।
साहित्यिक पुरुष होने का उद्योग भी
साक्षात् नहीं किया था। ऐसा ही वह
एक माने का, जैसे एष और
मारा। कर्मोचिन्ता और अनुप्राय्य

उद्योगों को नहीं माने नहीं की।
उद्योगों को कुछ पुरुष-मन, कर्म-धर्म-धर्म,
और ह्यान शान पर मानने और समाज
की धर्मों के लिए कहा गया था, वही
है उद्योग दौड़गया। मारा अपने निजी
पुरुषों की अनुप्राय्य के पुरुषों आधार
पर अक्षरार्थ की कि अपने अक्षरार्थों के
महापुरुषों की। किन्हीं के साथ अलोचिन्ता बल्लो
वार, न अलोचिन्ता और अक्षरार्थ के अपने
कहा जाने। निम्न रहा मारा, मारा
निम्न। धरती आसता है। किन्तु उद्योग
है। रिश उद्योग है। निम्नने के धरती
मानवोक्त विद्यार्थे, योद्योग, लोक-लोक कर
सम्प्राप्त, और सुद अपने व्यवहार में
उद्योगों वह था हमारे ही युग का एक
देखा जानक, जिसे दुनिया में सर्वथा
वह कर उद्योग है।

उद्योग अन्तर्गत और हमारे-धरती को

दिया नहीं उद्योग तो नहीं वह
ही नहीं ?
जगत् दे तो दिये गये, मारा धरती
की लोचन नहीं हुआ। जैसे धरती में
अक्षर ही मारा देने का ही विद्यार्थी
नहीं भी, पूरे, के अन्तर्गत मारा मारा
की जोष पदताल का नियम नहीं बनाया
जाएँ थे। उनका विद्यार्थे ही अक्षर में
वह था।

महात्मा की विद्याओं को आधार में
उद्योग के लिए महात्मा की हवा का वह
बाहिर। उनका वह अनुप्राय्य अपने
पुरुष के रूप पर कर ही क्या करता है।
उद्योगों की साथ महात्मा का ही है,
बाकी मारा अभिमान है।

जिसे महात्मा दिया था वही उस पर
बल्लो का हवा भी देगा। उद्योग मारा
अनुप्राय्य के अपने पुरुष के मन पर ही नहीं,
तब जिसे अक्षर वह पदाल यह मारा ही
वही उद्योग है।

ही मारा क्या तो धरती दिया है
और क्या उद्योग, इत्यादि भी उद्योग अक्षर
नहीं।

उद्योग प्रयोग के लिए अक्षर-धरती
में अक्षर ही माने हैं। वह धरती देते
जैसे धरती के उद्योग है।

मारा धरती के कुछ मारा उद्योग
उद्योग तो बाहिर ही है। हस्तलिखित, उद्योग
दे दिने धरती के हन मारा।

वह मारा बाह्यधरती अपने-अक्षरों
धरती धरती है, उद्योग अक्षर के साथ
साक्षात् मेल लेना नहीं चाहता। अक्षर
उद्योग धरती मारा मारा मारा हुआ
अक्षर धरती धरती उद्योग। धरती धरती
की उद्योग विद्यार्थे साक्षात् मारा धरती है।

ही मारा दिया को और और
धरती धरती अक्षर के धरती तक धरती
की धरती धरती मारा धरती है। धरती धरती
की धरती धरती धरती है। धरती धरती धरती
कि हन मारा धरती धरती अक्षर धरती
अक्षर धरती है।

धरती धरती धरती धरती धरती धरती
और धरती धरती को धरती धरती धरती
के लिए धरती धरती धरती धरती धरती
धरती धरती धरती धरती धरती धरती

उद्योग विद्यार्थे धरती धरती धरती
धरती धरती धरती धरती धरती धरती
धरती धरती धरती धरती धरती धरती
धरती धरती धरती धरती धरती धरती



विहार की चिट्ठी

श्री जयप्रकाश नारायणजी के निर्देशानुसार १ जुलाई से विहार के मुख्यफरपुर, दरभंगा, सहाय, पूर्णिया, सहाय परगना, मुंगेर एवं गया जिले में बीघा-कट्टा अभियान जोरों से चलाया गया । फरपुर एवं मुख्यफरपुर जिले में १०० बट्टा, दरभंगा में ४९३८ बट्टा, गया में ४६५५ बट्टा, सहाय परगना में १२,७७५ बट्टा, सहाय में २५०० बट्टा, पूर्णिया में ८,७३७ बट्टा एवं मुंगेर में २२७३ बट्टा जमीन मूदान में मिली, जिसे दात ने अपनी इच्छानुसार जोरने वाले भूमिहानों ने वितरित कर दी । ११ जगस्त, १९६१ को अम्बर विद्यालय, एम्बलासराय में विहार सर्वोदय मंडल की कार्यसमिति की बैठक अन्य कार्यक्रमों के साथ-साथ मुख्यतः बीघा-कट्टा अभियान पर विचार-विमर्श करने के लिए हुई । जहाँ तक किये गये कार्यों के सिद्धान्तलोकन करने के बाद बैठक ने निर्देशन वाले निर्मित सात जिले के अथवा सारण एवं सामलपुर में भी बीघा-कट्टा अभियान चलाने का निश्चय किया ।

इस प्रकार कुल ११ जिलों में लगभग ३१ दिवस तक बीघा-कट्टा अभियान "एक ही लक्ष्य के साथ" चल रहा था जिसका एक लक्ष्य यह बनने का निश्चय किया गया । बैठक ने इन ११ जिलों के आर्थिक अन्य विषय के कार्यों में भी जोर दिया ।

प्रसिद्ध सर्वोदय नेता श्री राजराज देवजी ने भी पूर्णिया जिले के इसमें सक्रिय भागीदारों का दौरा किया और आम सभा में उपस्थित लोगों को सर्वोदय-कार्यक्रम, बीघा-कट्टा अभियान के माध्यम पर समझाया । सर्वोदय नेता प्रसाद जीवरी, श्री हजामतुल्लाह प्रसाद, रामानाथपथ सिंह, रामचंद्र झा, मोतीलाल केजरीवाल, शिवपुरी पथक, हजामतुल्लाह खिर, निजामगंजी, छुनापथ ठामा एवं अन्य नेताओं ने बीघा-कट्टा अभियान को समर्थन के लिए उत्सुक होकर प्रदान किया है । सातपरगना के अग्रज वे लाला है कि मूदान-आन्दोलन के प्रति एक बार फिर जनता में जागृति पैदा हुई है । मिठौरी बाबू एवं विनोदभाई ने कहा भी क्यों तक विहार के लोगों में पैदल चल कर अन्न भजाना । उनके वाक्य ही मूदान-आन्दोलन की शूल-बाँध रहे थे । कुछ दाताओं ने तो अपनी जमीन इसलिये भी दी की कि अन्य लोगों को भी जमीन देनी ही पड़ेगी । ऐसे दाता जमीन देकर प्रसन्न रहे थे । जिन्होंने जमीन नहीं दी, उनका जमीन बन जाने वाली नहीं है । ऐसा जनता विश्वास ही गया था । बीघा-कट्टा अभियान ने ऐसे दाताओं के मन में मूदान-आन्दोलन के प्रति विश्वास पैदा किया है । साथ ही उनसे भूमिहानों के मन में भी आशा बसायी है । बीघा-कट्टा अभियान को सफल बनाने के लिए विहार सर्वोदय मंडल द्वारा संचालित विहार सर्वोदय परगना योरी पूरी दृष्टि लगा रही है । परगना योरी सहाय परगना जिले के लोगों की यात्रा कर टोटोने संतोषजनक जमीन इच्छा की है । हाथ ही में उन्हें तथा संघ ने भी विहार के बाहर के कार्य-कर्ताओं को इस अभियान की सफलता के निमित्त सहयोग प्रदान करने के लिए आह्वान किया है । सर्वोदय संघ के आह्वान

पर भाग्य ही महाशय से तीन एवं उरीना से एक कार्यक्रमों मानवपुर जिले में चल रहा रहे है । अखिल भारतीय छात्र-सेना मंडल का प्राथमिक भी भीमसे आराधिका अर्थान्यायिक के साथ विचार के द्वितीय सप्ताह में पटना आ रहा है । आगामी ३ दिवस तक विहार में बीघा-कट्टा अभि-

जायताओं को मिलने वाली है । उपरोक्त अवसर का नाम समाप्त कर विद्यालय टीली मीर जिले के मुख्यमंडल, बरियारपुर, हाहा एवं खुदई अन्नम में काम कर रहा है और अन्य तक १८३ गाँवों के १९६२ जमीन-जाने द्वारा २४६१ एकड़ ७८ टिंसिल की जमीन भूमि की जॉय की तथा प्राप्त जमीन में से ३१३ एकड़ ९३ टिंसिल जमीन २५५ बीघेवा गले मूदानों को दी है । इस प्रकार उपरोक्त १४ अवसरों में अभी तक ६८८ गाँवों के ४६५५ भूमिजानों द्वारा ६४५७ एकड़ २३ टिंसिल की जमीन जमीन में से ६१६ एकड़ २७ टिंसिल जमीन ५५० आदाताओं को दी गयी है ।

विहार में बीघे कट्टे संचालन की प्रगति

विहार में बीघे-कट्टे संचालन के सिलसिले में अगस्त माह तक इन सिलों में इस प्रकार भूमि दात में प्राप्त हुई और सुरंग निरतिरि हुई ।

जिला कट्टा	मिला
मुजफ्फरपुर, सहाय	१,५००, २,५००

जिला कट्टा	मिला
संखाल परगना, मुंगेर	१,२७,५५, २,२७३

यान में छात्र सैनिकों का सहयोग प्राप्त होगा । अभियान में सहयोग प्रदान करने के लिए जारे देय के लगभग एक हजार लोखण्डों एवं छात्र-सैनिकों के आगे भी संभाषना है । बीघा-कट्टा अभियान के अधिकारि मुंगेर जिले में भूमिजानों का कार्य भी चल रहा है । विहार टोटोली मीर जिले के योगीश, बीघम, परबल, बंदितापुर, रामपुर, जोगपुर, बरौरी, वेराय एवं पंडाबाबू, नौ जंजली में विहार का कार्य कर चुकी है । इन जंजलों में ५५५ गाँवों में २६,२२,२७३ गाँवों द्वारा ३९,८२ एकड़ २२३ टिंसिल जमीन मूदान में प्राप्त हुई थी, जिनमें टोटोने ४२६ गाँवों के २४०० हावाओं की २०,१५ एकड़ ७६ टिंसिल जमीन की जॉय की । विहार-टोटोने के पहले इन जंजलों में ४०० एकड़ ७१ टिंसिल जमीन ५२६ आदाताओं में बँट चुकी थी । अतः टोटोने में जमीन जमीन में से २,१९ एकड़ २५ टिंसिल जमीन ३२२ भूमिजानों में वितरित की । इससे अधिक बीघे की २४३ जमीन में से १०२ एकड़ ३७ टिंसिल जमीन विहार-योगीश, जो बीघे में

सिलसिले में अगस्त माह तक इन सिलों में इस प्रकार भूमि दात में प्राप्त हुई और सुरंग निरतिरि हुई ।

विहार टोटोली का कार्य सफल चल रहा है ।

मुनाब के अन्तर्गत पर राजनेतिज्ञ हर्षों में आक्षेप के संघर्ष के कारण जो देत में बना और दलदली का सहायक नेता है, उसे हट कर देने के लिए विहार सर्वोदय मंडल के सर्वोदय भी समन्वय प्रसाद बीघे में विहार के सभी राजनेतिज्ञ हर्षों के नेतृत्व में मिल कर सर्वोदय आचार-संस्था पर अमन करने के लिए निर्देश किया । सर्वोदय मंडल के इस कार्यक्रम पर भाग्य सभी राजनेतिक दल के नेतृत्व में सुची बाहिर की ओर सर्वोदय आचार-संस्था पर अमन करने का आग्रहण किया । अग्रणी अन्तर्गत मंडल के नेतृत्व में सभी राजनेतिक हर्षों के नेतृत्व में एवं पत्रिका-संस्था का समन्वय प्रदान करने का निश्चय किया गया है ।

विहार सर्वोदय मंडल के मन्वयनी उपसमिति के निर्देशानुसार इन वर्ष ५ अगस्त मन्वयनी दिवस के दिन में पूरे विहार में मनाया गया । पटना में भी उप दिन विहार लक्ष्मण ने मूदानों अन्तर्गत

में भी अगलख बीघे एम० एल० एम० एवं मूदानों पंचांग उन मरी भी हार नारायण बीघे एम० एल० एम० में विहार सर्वोदय मंडल के एक दर्जन कार्य-कर्ताओं के साथ पटना के विद्यालय दूरस्थ विद्य देवी छात्रा की वृत्तान्त में विद्ये की भीतर लगभग छः ही छात्र विद्ये को भावनों को समझा कर छात्र विद्ये के पीछे । समन्वय-मुनाब ने उन दिन लक्ष्मण प्यार ही छात्रा भारी की लौट देने, ऐतिहासिक भी भाव्यों में सर्वोदय कार्य-कर्ताओं को रात अनुभूति कर दी ।

छात्री-कार्य

विहार में छात्री एवं जनेनीय-वर्ग में प्रगति लाने एवं विहार के सभी छात्री-संघातों की आत्म में सशक्त स्थापित करने के लिए विहार सर्वोदय मंडल की कार्य-समिति ने एक समिति का गठन किया, जिसे सर्वोदय भी प्रथम मंडल प्रसाद आगल है । सचिव भी प्रथम मंडल २८ अगस्त को विहार छात्री मन्वयनी संघ के मुख्य कार्य-कर्ता संचालन, मुजफ्फरपुर में हुई । बैठक ने ११ दिवस में निर्माणों के आन-विजन के ३ अन्तर्गत मन्वयनी मन्वयनी के अन्तर्गत मन्वयनी लीन सहाय सर्वोदय मंडल अभियान चलाने एवं आम सर्वोदय-कार्य करने के लिए विद्ये को आग्रहण करने का निश्चय किया है । इस अवधि में छात्री प्रकाश, बीघा-कट्टा अभियान, सर्वोदय-कार्य को निरतिरि आदि पर जोर देने का निश्चय किया गया ।

पटना नगर में छात्रियान का कार्य संचालन कर के चल रहा है । यह मंडल छात्रियान-वर्गों में सशक्त मन शोध कर पावक, बार से ही एक बीघे कर आदा आदि का संवद किया गया है । पटना सिटी एवं दानापुर में भी छात्रियान के काम में संशोचन प्रगति हुई है ।

सहाय में जनेनीय के कर्मठ कार्य-कर्ता भी छात्र टोटोली बीघा-कट्टा अभियान में कार्य करने-करी दिशागत हुए । भी छात्रों के निमित्त से विहार सर्वोदय मंडल छात्रियान सर्वोदय मंडल सहायों की एक कर्मठ कार्य-कर्ता भी छात्रि हुई है । इस भी छात्रियान कार्य की पुष्प-मंडल में विहार के सभी जिले सर्वोदय मंडल की ओर में जनने आदि-दिवस २८ अगस्त को आम सभा का आयोजन किया गया, जिनमें विहार आचार्य की छात्रियान के लिए प्रशिक्षण की गयी तथा छात्रियान परिषद के प्रति हार्दिक सहमता प्रकट की गयी । सर्वोदय मंडल में छात्रियान के परिषद में उनका विचार पत्नी ही रह गयी है ।

विहार सर्वोदय मंडल के कार्य-कर्ताओं में उनका विचार पत्नी को आर्थिक सहायता भी प्रदान की है ।

—राजमन्वय सिंह

विनोबा यात्री-दल से

भारो सर्षा में भी यात्रा जारी—शिवसागर रामदान-सागर बने—अज्ञान में कौनसी मूर्ति बननी?—क्रांति का स्वरूप—अज्ञान की भाषा-समस्या—अप्यसंख्यकों को उनकी भाषा में दिखाना मिले—पातुभाषा, प्रादेशिक भाषा, राष्ट्रभाषा और एक विदेशी भाषा सीखनी चाहिए—पुराना मूल जाइये—सर्वोदय और साम्यवाद का फल—हम 'वादी' नहीं हैं, 'कारी' हैं—करनेवाले हैं।

कुसुम देशपांडे

नार्य लक्ष्मीपुर जिले में तीन महीने भारी बारिश रहने के बाद और कभी-कभी उठने तक के झिंझाते राते में यात्रा हुई। अक्टूबर के उत्तर दिनों से तो हल जिले में दो को गोंय में लोगों ने विनोबाजी के संदेश के अनुसार सामूहिक खोज की। अब एकर प्रत्यक्ष के दृष्टिकोण विचारें गाया हो रही है। विनोबाजी नहीं है, "एक ही नदी के किनारे आप रहते हैं। उत्तर लक्ष्मीपुर जिले की दृष्टिकोण से यात्री की भी वही पानी की है। वहाँ के लोग साधना देते हैं, तो आप क्यों नहीं देते हैं? एकर हम विभाग में कार्यकर्ताओं को भेज रहे हैं और साधना का आरम्भ यहाँ ही हुआ है। एव १५ दिनों में यहाँ २५ साधना हुए हैं।

टिप्टरुव नगी-तीवन की भाषा एतक बरके अब शिवसागर में जिले में यात्रा हो रही है। इस जिले में भी सामूहिक कार्यकर्ता और उनकी कमी-गुणरत, दोनों संघर्ष का काम उभार रहे करते हैं। विनोबाजी करने में, "अज्ञान घाटी (valley) का वह आदिमि विनोबा। अज्ञान में क्रांति घुसने है, मनुष्य का हृदय भी घुसने है। लेकिन एक कमी यहाँ है। यहाँ बहुत नहीं है। तो आप लोगों ने जिले का ही नाम शिवसागर रखा है। हमने कहा था कि सामान्य तरीका आरम्भ भी आरम्भ में हुआ है तो उधरा चले शिवसागर जिले में शेषा आदिमि। इस जिले को आप 'सामान्य सामर्य' विचार बना दीजिये। मुझे जिले में साधना नदियाँ हैंगी, यहाँ तो सड़क होना चाहिये।"

रेज सुनह ११ से १२ बजे तक कमी गोंब को शिवसागर-जिले के लोग, नगी विनोबा, या निज निज पक्ष के लोग विनोबाजी से मिलते हैं। एक भारी ने एक दिन सुनह, "आप यहाँ पाँच महीने से हैं, अज्ञान के बारे में आपकी क्या राय बनी है?"

विनोबाजी: "यहाँ संघर्ष की भाषना बन चुकी है। अभी भी नहीं है। गोंब की भाषना है। एकर भी आ करने हैं और उधर भी आ करने हैं। शेषा आरम्भ होगा देना लोग करीने। अच्छी मित्रि का रिज है। मित्रि में पानी टाकर है, अच्छी तरह से मूल भाषा है और मील जगह है। यह अज्ञान। अब इस मन्त्री मित्रि की मुँह बन लक्ष्मी है। अब कौनसी मुँह बनेगी? रायण की या दृष्टिकोण की यह शेषना है।"

शिवसागर जिले के तथा टिप्टरुव नगी-तीवन के विनोबाजी में क्या प्रश्न पड़ते हैं? उनमें भाषा का स्वरूप समझने हुए विनोबाजी में क्या, "प्रादेशिक भाषा का प्रश्न पूरा निरस्त है, सब लोग देते हैं। लेकिन उनमें जिने वैदिकी को एकरि के पेट में कितने ही दिवों ने, सारी के बा ही रही थी। लेकिन अब वह बाहर आगी, एव प्रश्न में उठे देना। यह है शक्ति का स्वरूप। यह होने के बाद वहा चलना है।"

आगे चल कर उधरने के बाद, "द्वारा यह काम अज्ञान के गुण के अद्वार है। आप का मुँह हमारे भाषा का अज्ञान-प्रकार प्रस्ताव है। मुँह तो आ रहा है। अज्ञान की उधरती प्रवृत्त नहीं है। अज्ञान के गोंब के नीचे के अज्ञान निरस्त है। उधर हासल में यह विचार लोगों के पास चलना होगा। और यह विचार लोगों के साथ ले जाने का कार्य भी संभव है तो उधर प्रस्ताव संभव

वि करने पर विनोबाजी के पास देना और सोचने लगाना, "आज विश्व में सब लोग भाषा बोलते हैं। लेकिन पिछले साल यहाँ अज्ञानि हुई। अज्ञानि भाषा बोलने वाले हम लोग चाहते हैं कि अज्ञान प्रदेश की राय भाषा बननी चाहिए। फिर भी उधर प्रश्न को लेकर यहाँ भी उठे हुए, उसके अज्ञानि हुई। हम चाहते हैं कि इस समस्या का हल ज्ञानि के तरीके से ही और फिर से अज्ञानि न ही। एकरा समाधान है।"

पुष्टा। हम लोगों के कर्ते कि विनोबा विचार छोड़ो और हम खुद उठे चक्रे रखें तो प्रस्ताव नहीं पूरेगा। इच्छित कार्यकर्ताओं की संख्या कम हो, एकरा परवाह नहीं। उनका 'किंगडम' अज्ञान होना चाहिये। उनकी अज्ञान बनवत होनी चाहिये। उनकी अज्ञान पर लगाने के प्रार

माण को सामूहिक बर्तनस्थिति में कार्यकर्ताओं में संरक्षण की आवश्यकता, संरक्षण की, क्रांति की भाषना और विचार साधना की शक्ति चाहिये। इन तीन प्थकों को बिना कार्यकर्ताओं का नहीं किया सकते हैं।

- (१) एकर संघर्ष संरक्षण होना चाहिये। दुःख, आदिमि, कष्ट सहने करने के लिए प्रयास करना है।
- (२) हमें बचने करने को नहीं मिला जायेगा, सब भी हम काम करते रहेंगे, जूझते रहेंगे, एकरा क्रांति की भाषना होनी चाहिये।
- (३) समाज को विचार समझना है, उसमें स्थान बनवाना है, तो उसको भी सब महसूस न हो, वह उठे नहीं, अनुभव-अज्ञान के स्वरूप बनना होगा। प्रस्ताव नहीं चाहिये। प्रस्ताव से ही काम करना चाहिये।

पर हो सकता है, उनका उधरन भी हो सकता है।

एत हाल अज्ञान में भाषा के सवाल को लेकर भी अज्ञान प्रवृत्त बनी, उसके बारे में बच-बाच बचाल विचारें जाते हैं। अज्ञान की भाषा कलकत्ते के बारे में आपकी राय एव है। यह शक्ति के गुण विनोबा के मिलने आने से, उठने में कुछ प्रश्न पूछेंगे, उनमें एक यह भी था। विनोबाजी में उनसे क्या, "आपने कुछ महान का सवाल किया है। लेकिन पहले मैं अज्ञाना का भाषा कि आप हल प्रश्न के बारे में क्या सोचते हैं। पहले आप मुझे सुनाइये। फिर मैं आपकी कलकत्ते दूँगा। हम तो जानें क्यों हैं और साथ ही आप जानें हैं, इच्छित आरम्भ विचारों का महत्व है।"

यह सुनते हुए एतक-एतकी में गौरी इच्छित हुई। उनमें चंद विचारों में अपने एक प्रतिनिधि को भेजा दिया। यह सबका

की, वैसा ही होगा। देना ही सब हुआ है। लेकिन इच्छित हाल उधर देना था। लेकिन हाल प्रदेश में दुर्गी भाषा बोलने लोग रहते हैं, उनको विचार की सब दृष्टिकोण होनी चाहिये। जैसे यहाँ भी और अज्ञान संघर्ष के हिंदी, अज्ञानि लोग यहाँ खरे हैं। उनको विचार उनकी भाषा में नहीं देते तो जहाँ मूल नहीं कर सकते। फिर वे कमजोर रहेंगे। देश के बच्चे कमजोर रहे, यह अज्ञान नहीं है। इच्छित उनको सह-दिव्य मिलनी चाहिये। यही सर्वसाधारण नीति सब गोंब को सार्व हीनी चाहिये। अज्ञान में प्रयास ही होनी। उधर जिले में अज्ञानि लोग ही जो उनको अज्ञानि भाषा में शालीन विचारों चाहिये। यह बात सही है कि साधने के अर्थों को केन्द्र-एतकी के तौर पर अज्ञानि भाषा लेवनी चाहिये,

उत्कं ये साधन सुन कर विनोबाजी प्रश्न ही राये और उठने के बाद, "अज्ञान को अज्ञान देना है। अज्ञाना भाषा के विचार में आने को इच्छित प्रवृत्त

होना है। उधर ही उठे हुए चाहिये। इच्छित में कर्ते जैसे काम हुआ है। इच्छित भूला ही रहकर होगा। मैं तो मूल ही गया हूँ। उधर प्रयास उधरन नहीं करता हूँ। एकरे ही लोग उधरने मिले हुए विचार पर उठना है। लेकिन अज्ञान नहीं करता हूँ। मैंने अज्ञान लिया है कि वे लोग अज्ञान करते हैं। मुझे किनी ने कहा था कि जो एतक जिने मील हुआ था, वह दुःखार होगा। बिना का, नहीं मार। अज्ञान का दुःखार मिला नहीं मील लेते। एतक एतकी हुआ है उधरने उनकी बहुत बदनामी हुई है।

"अज्ञान प्रवृत्त की नीति" का काम मुझे है। मुझे लगता है कि जो ईच्छित होगा, सभी इच्छित जाहिर करना चाहिये। उधर जिले में अज्ञान में अज्ञानि विचार नहीं होनी चाहिये। उन लोगों को साधने में नहीं अपना दे, "आज उधरने बारे में कर्ते एतक, अज्ञान अज्ञानि होने लगी तो उधरनी चम्पनी बार बार निकलती नहीं चाहिये।"

विनोबाजी: "द्वारा कोई वाद नहीं है। सर्वोदय साधने की नीति ने दिना था, वहीं लेकर हम सब रहे हैं। हम कार्य नहीं, 'सही' है-एतकी है। साधना है। [एव एतक पर र]

तनी ये वहाँ ने समाज के साथ जुगलित करने।

मेरी आपकी यह कलकत्ते कि आप अज्ञानि सामूहिकता का उच्च अज्ञानि प्रवृत्त है। उधरने सामूहिक अज्ञानि, हिंदी, जगती और अज्ञानि का भी आरम्भ कीजिये। अज्ञानि के कारण एतकी के साथ सार्व होगा। एतकी अज्ञानि की नीतिनी चाहिये देना नहीं, कोई-कोई संघर्ष, अज्ञानि भी होनी। एतक आप एतकी होगी। एतकी से अज्ञानि कर्ते आप अज्ञानि भाषा में एतक रहेंगे। हिंदी भी आप उच्चन नीति, साधने के साथ आज एतकी होगी। एतक भी नभ भाषाओं का मूल है। एतक अज्ञानि जगती की अज्ञानि भी अज्ञानि आनेगी। देते कोई भी भाषा विचारों की उधरनेनी से सारी नहीं जाती है। मैं १५-१५ भाषाएँ सीख। मेरा कोई उच्चन तो नहीं हुआ। अनेक भाषाओं का ज्ञान मुझे प्राप्त हुआ। आप जगती की अज्ञानि के हील करवेंगे।

एतकी उठे यह है कि एतकी तो कुछ हुआ है, उठे हुए चाहिये। इच्छित में कर्ते जैसे काम हुआ है। इच्छित भूला ही रहकर होगा। मैं तो मूल ही गया हूँ। उधर प्रयास उधरन नहीं करता हूँ। एकरे ही लोग उधरने मिले हुए विचार पर उठना है। लेकिन अज्ञान नहीं करता हूँ। मैंने अज्ञान लिया है कि वे लोग अज्ञान करते हैं। मुझे किनी ने कहा था कि जो एतक जिने मील हुआ था, वह दुःखार होगा। बिना का, नहीं मार। अज्ञान का दुःखार मिला नहीं मील लेते। एतक एतकी हुआ है उधरने उनकी बहुत बदनामी हुई है।

"अज्ञान प्रवृत्त की नीति" का काम मुझे है। मुझे लगता है कि जो ईच्छित होगा, सभी इच्छित जाहिर करना चाहिये। उधर जिले में अज्ञान में अज्ञानि विचार नहीं होनी चाहिये। उन लोगों को साधने में नहीं अपना दे, "आज उधरने बारे में कर्ते एतक, अज्ञान अज्ञानि होने लगी तो उधरनी चम्पनी बार बार निकलती नहीं चाहिये।"

विनोबाजी: "द्वारा कोई वाद नहीं है। सर्वोदय साधने की नीति ने दिना था, वहीं लेकर हम सब रहे हैं। हम कार्य नहीं, 'सही' है-एतकी है। साधना है। [एव एतक पर र]



विद्यार्थियों में शिक्षण-मंडलाय जिले के शक्ति-सैनिक पुना में—कानपुर में अशोभनीय होलर हट्टे-रोहक में पदयात्रा—औं शांतामल नारदकर का रामरथान में सौरा—राष्ट्रीय-विद्यालय की मद्रु—श्री दत्तार भाई पंजाम में—विपलवार में विनोदा स्तुति-दिग्गज—हिसार में साहित्य-प्रचार—'विरनोडम्' में प्राण्टिक विप्लवा-नेत्र—दिल्ली में 'राम' परिवार की बैठक और भूमिहीनों का जनरान—हिसार जिले में अर्ध-संगठ—देहरादून में गांधी तत्व प्रकाश का उद्घाटन-भीमगर में राष्ट्रीय एकता यूनो-पंजाब में अष्टाचार के रिलफक पाठ्या-पुर्नोर्णीय प्रतियों के रिलफक साहित्य-नाडेनैटी-लुक्का' के दूध पर २५ शुक्रद्वै-वर्द्धक रलेक को भारनीय समाजवादी दूध का सुप्रव-विद्युत्पुनरात्म में लोकभारती-महासचिव की अनुपस्थिति में राष्ट्रसच का ऋषियेवना-श्री रिंजन राष्ट्रसच के गये ऋषय-श्री दाम हेमररोहक श्री रावकीय अल्पेष्टि-दिल्ली में गांधी मेला-सर्वे सेवा संघ अष्टर सामुदायिक मंत्रालय की बैठक

विद्यार्थियों को शिक्षण दृष्टा था। विद्यार्थियों को प्रविष्ट विद्यालय-इय जिले में ही पठती है। इस विषय विधिर में विनोदी के सरोपेनीय मोरोरगे से हम पना बानी पंजाब वने अया। जिले में ११ विद्यार्थ के १२ अक्षर तक पद-पाना का कार्यम बना है। विनोदी में मोरेतर मिर्ठी की मद्रु के सरोपेय स्था-पना मरक बलमें का निरूपय किया है। पदपाना की समाति पर सा १५ अक्षर को मरकम में विर के विधिर का कार्यम रता है।

महात्मा के मंत्राया जिले के शक्ति-सैनिकों ने पूना शहर सथा देहाती बलिदों पर जो मद्रु का प्रयोग आया था, उसमें रहत पंजाब के लिप याग किया।

एन शक्ति-सैनिकों ने आगामी तीन महीनों के लिए एए परत का कार्यम बनाया। (१) हएएक शक्ति-सैनिक अने दूध में शक्ति शोधन एक रता करे। (२) सरोपेय पान रतने वाले परिवारों के प्रतिनिधियों का सरोपेय निम मंडल बनाया जाय। (३) 'भूदान' परिषाओं के कम-से कम एक शक बनये जायें।

कानपुर में अदलीत रोहदर-अनु-कन-अभियान के दूरे दूर में कुछ रोहदर कार्यकर्ताओं द्वारा १० विप्लव को हटा दिये गये। इस कार्यम का नेतृत्व उ० म० शक्ति-सेना के संघालक श्री मद्रदेय शानेपेनी ने किया।

जिला सरोपेय-मंडल, रोहक के संघोबक ने अगत माह में १२२ मीठ की पदपाना ८० गाँवों में की। १४ पंजा-पव विधियों में विचार प्रचार किया, ५१ १० की साहित्य विनी की, ५१ १० का संघि-दान मिला।

गांधी स्मारक निधि की रामरथान शरण द्वारा आयोजित अनेम, कुंडी, भीम-बादा, शशिदुव, एनाग, गामर, विचो-ग, उदरवृत्त, कालेडी आदि स्थानों पर गाँवियों में बुधियादी विद्या के बारे में सुश्री कानावदन नारकर ने अपने विचार प्रकट किये।

राष्ट्रीय प्रामोयोग-विद्यालय, मधुकी (निरंर) के विद्यक और विद्यापियों ने पूना की मद्रु में मद्र के लिए २०१ १० भेजे।

उ० प्र० के अर्द्धर पदपानी भी हलकर भाई पंजाब की भीम पर पदपाना कर रहे हैं। पनाब की हावद देकर उन्होंने पनाब में आना तय किया। सितम्बर के तीसरे हफ्ते तक पंजाब में रहने वाले थे।

महात्मा के विप्लवेर गों में विनोद-स्तुति दिन-इसी दिन विनोदनी तैल काठ पड़े इस गों में जाने थे, उसने स्तुति के रूप में-मन्नाया गया। इस अक्षर पर श्री मोरिद्वय सिं, श्री रामरथान मूदर आदि प्रवृत्त शर्वागत आये थे।

हिसार, हिसार, विनोदी में जुलाई माह में ४१० ०० की साहित्य-विनी हुई।

'विरनोडम्', अगले में एक प्राण्टिक विप्लवा-नेत्र प्रारम्भ किया गया और लय ही प्राण्टिक विप्लवा का नि-गुणक लयवारी नेत्र ४ नों रोड, गांधी नगर, कानपुर १ में प्र० मा० सचं सेवा सच के बालोवय में शुरू किया।

द्वारा की शक्ति-सैनिकों ने विद्यार्थियों 'राम' परिवार की एक बैठक हुई। १५ कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। मद्रदाता-मद्रक, भूमिहीन देवेवाम आलो-कन और समाजवाचक पर चर्चा हुई।

किराकती तस्वील में प्रति माह तस्वील के हएर हार पर रवाजीय मुक्तिमें देवेवामर १२० ०० का अन्वयन हुई है। उनको मंग दे कि हो-नीन हमार एकक संवर मुक्ति जारी है, वह उठे जिले।

दिल्ली सरोपेय मूदान मंडल, हिसार के अल-जुलदों में १२१२ ०० का कार्य-संगठ किया।

देहरादून के ११ मीठ दूर टापी प्राम में गांधी तत्व-प्रचार केंद्र का उद्घाटन देहरादून नगरपालिका के अध्यक्ष श्री राम-रथक द्वारा हुआ।

सा २० सितम्बर को भीमगर (कमरी) में "राष्ट्रीय एकता" के विषय पर एक गों हुई, जिला उद्घाटन कर्मचारी के मद्रु-र-सिंघल की कर्मचारी ने किया। उन्होंने कहा कि आज वार-वार को राष्ट्रीय एकता की दूध भी जाती है, उसके वह प्रम नहीं होना चाहिए कि भारत एक संगठित सच नहीं है। राष्ट्रीय एकता की मागना यहाँ पहले से मौजूद है। हमारा प्रयत्न है कि जो बाँटे हुए एकता के निरक जाती हैं उनको भी-संगठन करें। श्री कश्य मिह ने कहा कि राष्ट्रीय एकता के लिए भाषा एक मद्रकपूर्ण माध्यम है। अल-सच के विधिर दिल्ली के आपसी व्यवहार के लिए एक राष्ट्रीय भाषा का विकास आवश्यक है। पर यह काम अल-सच के देना चाहिए।

गोदी में भीमती इन्डिय गांधी की १० जो० सेप्टेन, डा० ची० के० आर० ची० शव आदि उपस्थित थे।

बाद साल के पहले तीन महीने अर्ध-अर्थक से जुन १९११ के अन्व यह पना में ११ मरतीय कर्मचारियों को, जिनमें १० अक्षर भी शामिल हैं, सुशोभित के अरथ में सजा दी गयी। इसके से २८ अक्षर जोरकी हैं मरलाक सिने में, जोरकी के अलम सिने गये और १२ की नैव-पद-देकी गयी। इस अर्थ में कुल १६४ विद्यार्थों अष्टाचार-विरोधी विभाग के पास आयी थीं।

स्वतंत्र मद्रदूर संघों के अक्षर-पुत्रीय संघ की २५ विधिर के सचिव, विधियों तथा ७० २२ विद्यारत से वेगोन (विपलवाम) को चुकी है, इस सुलभ पर विचार करनेकी है कि गोभा तथा पुर्नोर्णीय के अन्व उपनिवेशों की साहित्यिक मरकेदी की जाय, अर्थात् गोभा तथा अन्य पुर्नोर्णीय उपनिवेशों के कर्मचारियों में जाने वाले कर्ताओं की कर्मचारियों के अर्थ बढ़ाओ का मत भी मद्रदूर व दीर्य। अक्षर और हिन्दुस्थान के कर्मचारियों के मद्र नमदूर-पुर्नोर्णीय का समर्थन एत प्रवृत्त को प्राप्त है।

कानपुर के जूडिसियल मैजिस्ट्रेट की अदालत में 'विप्लव' तथा उनके साथी कर्मियों पर 'उत्तरेन जुन १९११' में विनोदनी के अन्व आत्म-समर्पण किया था, जो ४ अक्षर से बदरकी की पेशी कुछ होने लगी है। इस विरोध के सिवाक १५ शुक्रद्वै दारिलक विर गये हैं। राम-स्थान शरकर ने भी कुछ कर्मियों को, शिंथोंने उन माल की दर में चारदत्तों की सवाँरी, उन्हें सौध देने की प्रार्थना की है।

भारतीय समाजवादी पार्टी की राष्ट्रीय समिति ने लंडन शहर द्वारा लुंडक में अनु अर्थों के रिलफक दूध विद्य गए अदिलक आन्दोलन का समर्थन किया है। समिति ने अपने प्रत्यय में कहा है, "आर्थिक और दूरे-अर्थों की संपूर्ण रोड विषय के नागरिकों की समकित पालि योगेष्ट के मातल ही मरक है, अतः यह समिति अर्थ-रक से प्रार्थना करती है कि वे अपने आन्दोलन का दायरा बढा कर उरक पेश विद्य-पालियोगेष्ट की स्थापना का बनावे।

अक्षर साहरे से १८ मीठ दूध विद्य-दुष्टवृत्त में रामरथान छात्री संघ के रत्ता-नभन में 'लोकभारती' नाम की विद्यक कलाय चली है। "लोकभारती" में स्वामी-सरोपेय आयोग के निधिय अन्वयक-कर्मों के द्वारा दिए जाने वाले अधिवचन के अन्वया बुधियादी-विद्यक कार्य भी चलाये हैं।

गोधी-वपनी तह की अर्थों के लि साहित्य प्रकाश का एक विद्यो कार्यम बनाया है। सथा के छात्र रोड विद्यार्थ सुग रथेयन पर ३ नों के सचय यार्थने में सरोपेय-साहित्य का प्रचार और सिंटी करीने।

सा २० सितम्बर को न्यूल्की में संजुक्त शरणं का ११ वीं अतिथि दल हुआ। संजुक्त राष्ट्रक की स्वात्त के बाद विद्यार्थ ११ गाँवों में यह पदपाना मोह था, जो राष्ट्रसच का अतिथिपन संघ के सचिव की अनुपस्थिति में अक्षर हुआ। सच के नागरिक भी शाय देसलेर दो दिन पहले ही रत्तलमन परिधिपनी के गाँवों में गए थये।

इस वर्ष राष्ट्रसचों के अन्व— जो हर मास सचर पठनी के प्रतिनिधियों में से गांधी-परी के चुने जाते हैं—अनीनक महादीप के उत्तरी विर और भूमरपणा के हए पर विद्यल दूधनीधिया के प्रतिनिध भी मोंगी रिजम चुने गये हैं। यह वर "अनीनक" नों, जो राष्ट्रसच के अक्षर वर हैं। ५२ गाँवों को रिजम मंत्र-संगठ के रिलफक दूधनीधिया में हुई करीने नेतारों को प्राप्त है।

संजुक्त राष्ट्रसच के महासचिव श्री डाग हेमरोहक का शर उनके सरोए स्वतंत्र बना गया है। स्वतंत्र की सकार ने भी हेमरकड के परिवार की स्वीकृति से शव किया है कि उनकी पर कीय अन्वेषी की जाय।

गांधी-वपनीयों के उपलक्ष्य में दिल्ली नगरनिगम ने चार दिन के एक गांधी मेले का आयोजन किया है। मेले का १२ सितम्बर को शाम को ५ बजे शुरू होगा, जिसका उद्घाटन मद्राच-मैत्री भी बेशारखलक नेहक करती है। अक्षर की मेला समाजवादी। यह मेला, जो हर हफ्त दिल्ली में शुरू करने देहात के भागनेवाये शाय में देहात है, दिल्ली का एक राष्ट्रीय प्रथम शान ल्या है। मेले के कार्यक्रम में गांधीजी के जीवन और उनकी विद्यार्थों पर निवच प्रतिरोधिता और भाषण-मंत्र का भी आयोजन है।

विद्यार्थ दिनों दिल्ली में सर्व सेवा संघ और सामुदायिक विद्यार्थ-मंडलय की संजुक्त बैठक हुई। सर्व सेवा संघ की ओर से सर्वोच्च वपनीय मादामन, संकरोए ब, अण्णादाव और गोडक भी मद्र में अया किया। सामुदायिक विद्यार्थ में किच सरर के व्यापार। व्यापार शरणों से शकता है, हय पर चर्चा हुई।

हमारे महत्त्वपूर्ण प्रकाशन



पृ. ७५ नवें.



पृ. ७५ नवें



पृ. २५ नवें



पृ. २-४० नवें तीन भागों में



पृ. २-५० नवें पाँच भागों में

सर्वोदय-साहित्य मानव जाति-रूपी उपवन को ऐसी पुष्प-माला है, जो जीवन में सौंदर्य और समाज में सुख भरकर सारे वातावरण को प्रसन्न कर देता है। आपको घरने पुस्तकालय में सजा हुआ सर्वोदय-साहित्य आपकी सुविधा का परिचायक है।

- मनुमेंट-प्राथमिक शिक्षा द्वारा पूर्ण जातीय ०-५० नवें
- सोवियत-महत्त्वा प्रयत्नवादी के स्वभाव पर भाव विवेक विचार ०-५० नवें
- महादेव भार्गव की कान्ती-गांधी जी की कल्प १० के १५ तक की स्वीटिसार काप्टी मूल्य २-००
- नगर अभियान-बाबा के द्वारा नगर में प्रथम २-००
- कोटापुट में ग्राम-विचार का एक प्रयोग २-००
- विदेशों में शांति के प्रयोग ०-७५ नवें



ROVER ONE

ENGLISH BOOKS

- (1) TALKS ON THE GITA—VINODA Rs 200
- (2) SCIENCE & SELF KNOWLEDGE —VINODA Re 100
- (3) SHANTI SENA—VINODA Re 1 50
- (4) THOUGHTS ON EDUCATION—VINODA Re 3 00
- (5) SWARAJ FOR THE PEOPLE Re 1 00
- (6) TOWARDS A NEW SOCIETY Re 1 00

आप उपन्यास और कहानियाँ पढ़ने तथा सिनेमा और नाटक देखने में समय बिताने के जब हमेशा यही सोचते हैं कि समय ऐसे ही व्यर्थ भया, कुछ हाथ नहीं लगा ! फिर सर्वोदय-साहित्य पढ़ कर समय का वास्तविक उपयोग क्यों नहीं करते ?



दो रबी छपाई . तीन भागों में मूल्य २)



द्वितीय मसौदा रचित विचार संकलन मूल्य १)



द्वितीय २)५० नवें उद्देश्य ३)००



पाँच भागों में मूल्य १)२५ नवें



बना और शिक्षा के मदद ५० अन्तरी पुस्तक मंत्रालय मूल्य ८)

यदि सूचीपत्र भेगाइए : : द्वारा सेट लेने में विशेष सुविधा

लालबाग में विनोबा जयन्ती पर विशिष्ट कार्यक्रम

सर्वधर्म-सम्मेलन, शान्तिसेना-शिविर, अज्ञोभनयोग पोस्टर जन्मस्तन मुहूर्त

लालबाग (वरभंगा) दिनांक ११ सितम्बर को विनोबा जयन्ती के पुनर्जित अवसर पर इनके सभी संस्थाएं संस्थान की ओर से सर्वधर्म-सम्मेलन का एक विशेष आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न धर्मों के विद्वानों ने भाग लिया।

उसी अवसर पर दिनांक ४ सितम्बर से ९ सितम्बर तक जयन्ती-भिक्षा का एक शिविर चलाना गया। शिविरार्थियों की संख्या २६ थी, शिविर के समापन समारोह में प्रवेश के प्रतीक रचनात्मक कार्यक्रमों के और उनके माध्यम से शिविरार्थियों ने स्वयं उठाया। आयोजन की वरुदा बनाने में नवय-नवविधियों का साहजिक सहयोग प्राप्त हुआ। नगरपालिका के हार्डवर्क के छत्र-छायाओं ने भी कार्यक्रम में सहयोग दिया।

दूसरे अतिरिक्त दिनांक १० सितम्बर को अफ्रीकल वेस्टर अभियान में बहनों का एक मील दूरव की निकल, जिसमें करीब ६० बहनों ने भाग लिया। ३ मील के लम्बे दूरव का काम भारतीयों पर गहरा पड़ा, नगर के सार्वजनिक स्थानों पर लगे अस्वीकृत-निषेधा वोटों को हटाया गया। क्षेत्रों को एक कार्यक्रम में सम्मिलित किया।

[पृष्ठ ९ का पंथ]

एक गांव है। उसमें अरिक्त लोगों का माल, घोषा, डोक है। आग धोके का ही धर्म है, उसके पहले अरिक्त का होगा। लेकिन उससे हमें संजोय नहीं होगा। खाने के लिये आरभी खाने में परवर रहा था, ही परोखने चाहे में समझा इनकी दंड देनी चाहिये। परवर से पहले ईंट रखी, तो क्या होगा। वे दोनों समान ही हैं, उल्टे, भूल ही नहीं बिडकी। बिडी आग की साम्यवाद की हाव है। सर्वोदय उसके लिये मजबूत करने की बाध करता है। उसमें सबकी विद्या है। शिके को बंदे में नहीं करादी, उसका एक बेटा सुंरार हो, दूसरा कुल। बह समान प्यार करती है। बिडे ही सर्वोदय करता है आपके पाठ कुंकि हो, तो उलगा उपयोग टटने में मज करे, उसके प्रति करणा नहीं, को सन्ति सुपरी है, उसे पहले मजदू हो। यह गांव-नी की ना विचार केर हम पूरा रहे हैं। हम कोई नया विचार नहीं दे रहे हैं। हम दिवा दिग्गने चाहे हैं। उचटनन के सख देवने से नहीं होगा, अल्ला पड़ेगा। गांधीजी ताव है, मूच साय, लख दिवा में हम परला बना रहे हैं। हममें फर्क यह है कि वे ऊपर से सम्मन-रूप। वे भोगी बनते हैं, दूर आने दे। उभिन नीचे जाते हैं। लेग उकर देल रहे हैं, रोच देवने रहते हैं। तो हमें दया मानी तो हमने आग काट कर सखा बना दिया है।"

सीकर (एनखान), रिपवा (धान, विहार), यीकमगढ़ (अध प्रदेश) तन-कुड़ी, देसरीय (उत्तर प्रदेश), मलयन मुचन्मपुर (मिझोर), मल्लपुर (राजस्थान), में विनोबा जयन्ती मनाई गयी। शिवरा में इस अवसर पर पचास कछा बनीन, पचास रुपये की साहित्य-विही भी "भूदान लो" के चार साहक बने। तन-कुड़ी में ३४ लोगों ने ४०५००-२६०००० नकद समर्थनदान दिया। खलमग में "गीता प्रचलन" का अलग पाठ हुआ।

चौदहवें अखिल भारतीय नई तालीम सम्मेलन पंचमढ़ी में स्वीकृत प्रस्ताव

श्री श्री ० पञ्चमढ़ी में आयोजित चौदहवें अखिल भारतीय नई तालीम सम्मेलन पंचमढ़ी (म० प्र०) में १० और ११ सितम्बर १९६१ को हुआ। इस सम्मेलन में सर्व-सम्मर्षित से ३ प्रस्ताव पास हुए, साथ ही उच्च विद्यालयों शिक्षा को सर्वगम्य परिवर्धित तथा उनके विज्ञान की योजना, शिक्षकों का प्रशिक्षण आदि विषयों पर विचार-मोर्चियों हुए।

प्रथम प्रस्ताव में नेशनल कौशल आक बौद्धिक एडुकेशन बनाने का लक्ष्य

गांधी जयन्ती के अवसर पर खादी पर अतिरिक्त दृष्ट

खादी और माधेययोग कार्यक्रम की एक श्रेणी के अनुसार गांधी जयन्ती के अवसर पर २ अक्टूबर, १९६१ से ४ दिनों तक खादी लोडने-पाठों को स-मजबूत प्रथि करने की अतिरिक्त दृष्ट (रिड) हर प्रकार को पूर्णतः पर ही बचीये। यह दृष्ट, इस समय सितर से १९ नरे श्रे प्रथि करने की दृष्ट के अतिरिक्त होगी। यह अतिरिक्त दृष्ट के सभी प्रमाणा खादी-मजदारी को रिकी पर खगू होगी। यदि हम खादी और माधेययोग मजल चाहें तो वे अन्ते प्रदेशों की आवश्यकताओं पर दृष्ट के अग्रथि में पैरार कर सकते हैं और उसे दो अर्थ-पथों में बाट सकते हैं, जैसे पहले २ अक्टूबर से ३० दिन के लिये और बाद की अतिरिक्त-अर्थ-१५ दिन के लिये। राज्य मजल अपने जवानी को खादी-संस्थाओं के परामर्श से इस दृष्ट में अति ही पर सकते हैं।

विनोबा-पदपाना वृत्त

ता० ११ सितम्बर को बाग का कर्म दिन यात्री-दल में मनाया गया। उमक के बारे में मेमेकी ने दो वक्क कहे कि बाग के प्रथम परिषद में ही वे प्रमाणा हो गये थे।

बाबा ने एक बार उसकी कहा था कि सामने के सब लोगों में ईश्वर का रूप है, सब से को मेरेको सामने के हरे आदमी में अलगना ही रूप देते-साथों हैं। अन्ते उन्होंने

इस अंक में

१	विनोबा
२	"
३	"
४	समाधायी
५	पुनन ही वा अन्धकार थी
६	विनोबा का साहस्य
७	कर्मकर्तव्यों की ओर से
८	विहार की विधि
९	विनोबा यात्री-दल से
१०	समाचार-सूत्र

१	विनोबा
२	"
३	"
४	विनोबी हरि
५	नायक देवाई
६	मस्तिन्, मातृ भाई, मोहिन्दुराव
७	कुमुद देववर्दे

से अनुरोध किया गया पर भी कदा पस कि "राज्यपाल महामाना मंत्री को दूर-दृष्टि की कि उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा के लिये बुनियादी सामान्य का कार्यक्रम देना को दिया। अनेक उताव-उताव भी अनुभव के बाद बाबा सारे देश में बुनियादी सामान्य का तरीका समझाना गया है। सारे देश में इसका सही-सही के विचार हैं, चलते हुए काम का मुना-बन होता रहे। साथ-साथ सारे देश के बाप को सही विद्या में मार्गदर्शन दिने, इसके लिये पद अलग-अलग प्रस्तावों है कि अखिल भारतीय स्तर पर बिठे हों।

"यह सामान्य केभीय लक्ष्यार से अनुरोध करता है कि अखिल भारतीय स्तर पर एक नई सामान्य परिवर्तन (नेशनल कौशल आक बौद्धिक एडुकेशन) का निर्माण है। इस परिवर्तन में सरकारी और परसरकारी दोनों प्रकार के संस्थाओं। सरकारी और परसरकारी दोनों ही सन्मिलित शक्ति इस विषय में सहारा लिये होंगे।

"सर्वोत्तम संघ से भी यह सम्मेलन माधेययोग करता है कि ऐसे परिवर्तन का निर्माण करने में योगदान है।

"विहार तरुण सशिक्षित भारतीय स्तर पर परिचय हो, उसी तरह हर प्रदेश में बुनियादी सामान्य का सही विकास, सार्व-प्रथी और मूल्यांकन के लिये प्रस्ताव स्तर पर सरकारी-परसरकारी स्तरों के सिल कर प्रदेशीय बोर्ड भी बनने कायें।"

दूसरे प्रस्ताव द्वारा एक मध्यम-प्रमाण बनाने को साधेय-समन महसुस की गई, जो सभी प्रदेशों में होने वाले खादी को परवर-आगकारी और इस कार्य के विकास के लिये सम्मिलित बिन्दु कर बने, साथ ही प्रदेश की परसरकारी संस्थाएँ और बाबा-संस्थाओं से सम्पर्क स्थापित कर लाने।

तीसरे प्रस्ताव द्वारा यह सम किया गया कि विनोबाजीय के सामान्य में समन-साधय, पर शिक्षा-संविधानियों के परि-संवाद और अध्ययन-मोर्चियों का आयोजन हो।

मार्थना की कि बाबा दीर्घांतु हैं और फिर-तन हमारे हृदय में रहे।

बाबा के प्रथमच (१९२९, एकी अंक में पृष्ठ २५९) के बाद कार्यक्रम समाप्त हुआ। उस को गाँव के लोगों में प्रचार पर दीर्घ बलये।

श्री वल्लभभाभी, जो राग से मिलने पद-पथ में गये थे, बहों ने मार हो गये थे, अर डोक हैं। आयुष्य के लिये वे शिला गये हैं। श्री माधेयजी लार् की उनके साथ हैं।

मूदानयज्ञ

साप्ताहिक

मूदानयज्ञमूलकआमोद्योगीप्रधानअखिलकामात्रिकाप्रतिदेशिकासाहसिक

संपादक : सिद्धराज बड्डना

६ अक्टूबर १९११

तापसी : शुक्रवार

वर्ष ८ : अंक १

शिक्षा और राष्ट्रीय एकता : १

शंकरराज बेब

इस विचार-मोटी का विषय है शिक्षा और राष्ट्रीय एकता। आज बहो ब्रा भी और कैंसा भी सराल हो, उधवा विचार विचार के सधर्म में ही करना पजना है और विचार के सधर्म में विचार करने तो ही वही जवान मिथ्या समक है। विज्ञान में देवा और बाल को नष्ट करने भिन्न विम्व देवों और मानवों को समीप लाया है, अतिन वह मानव के मन को समीप नहीं ला सका है। जोर दधी में आज के सपर्य और अवाप्ति का मूल है। मानव के शरीर समीप भा पने है, जीवन मन व्यापक नहीं होने है, तो जैसे आन हय देव रहे है, मानव के शरीर और मन दोनों को ही लतपा है। विज्ञान देवा और मानव को समीप ला सका, इतना शौरण्य विज्ञान में है उड़ी ठेकू मानव के मन को वह समीप नहीं ला सका, इसका भी कारण विज्ञान य ही है।

आज का विज्ञान अधिजाता 'रिचिकल' है, यानी यह भौतिक शास्त्र है। यह सृष्टि और मानव के अंदर जो अज सच है उसी का प्राप्ति है। लेकिन मानव केंद्रित अज नहीं है। इसमें एक मनरत्न भी है, जो वेमन से संरक्षित है। एनी कारण है कि केन्द्रित अजत्वय को लेकर चलने वाला शास्त्र मानव के मन पर व्यापक नहीं हो पाता है। मनोविश्लेषण शास्त्र यानी तक एक भौतिक शास्त्र लेला शास्त्र नहीं बन पाया है, बरिक्त वह बन जाय तो भी मन के मनम ब्यारार का ज्ञान उसको हो जायगा, देसा नहीं लगय है, क्योंकि आज मनोविज्ञान भी शकलर को लेकर चलने वाला भौतिक शास्त्र ही है। धुंकि मन वेमन से संरक्षित है, इसलिये जब तक वेमन को शास्त्र (साधुत्व आक विरिक्त) का हम व्यवयोग नहीं करेगे तब तक मन को यह जैसा और विचार है देसा और उनका समझ नहीं पायेगे तथा मन को व्यापक बनाने का यह जो शिक्षण का काम है, वह भी हम नहीं कर पायेगे।

मार्तीय शिक्षण परम्परा प्राचीन है अरिष्ट-मुनिर्षीं। प्रैलि और प्रकृत है। जित वेमन शास्त्र की मन को व्यापक बनने की शक्ति है उन वेमन के बारे में मार्तीय श्चि-मुनिर्षी में क्या कहा है, एव जामना व्यापक है। सभी आज की शिक्षा प्रणाली मन को व्यापक करने का काम कर लगी है। नररत उन उमार श्चने के पत्र थाया, की जलगायुक्त उलगा विन बना और उनको कहू, "मनम को प्रापयि" - भगवतः, श्री शुकमयजी । "म को अथ-कोरव वार तावउ" - देवे, मुने घोके वे वार उगरे। नररत मरिदः वर, गिर की शुकुडन नहीं था। इतना कारण वह स्वयं मुने से कहा है "मो हउ मनो मनवे-किमनः। मर्यादितः" - दे मानवः, श्री वेरा मरिदः है, एर में आता की नहीं बनय है। नररत भौतिक और मनवे-मन पाइगा है। "मुन अतो रिचिकामः" - दे मरिदः। मुने शुक का माम

दिया है। यह मानव की गुण वे सोंग है। एन एर तनउउमर श्चि में अजय दिशा- "मो में मुन तापुनय, नाचे मुन-कर्मिणः" - यो मुने दे वह मुने है, अरम में छत्र नहीं है। मुन यानी मानव, श्वाकः, गिरीपया। यानी को व्यापक है, वह अरिष्ट है। एकमनरितीपणः। जो श्वाक है, वो अरिष्ट है, यो अरिष्ट है, जो अरिष्ट है, अरिष्ट देव है, नर मुने है। "यो में मुन तममूकः, वरय तमययः ।"

जो एक महाव और श्वाक (अभि नररत) है, वह अनेक, अरु और विधि (रिचिकुनर) बनता है, ता उसका "मुन" स्वतः हो जाता है। "एकेरे वरुतमः"। रिचिक वर यो 'व' है यह एक वर हो सकता है - एकेरे अरि रिचि श्चुका वरपित ।

शरीर श्चि में और मानव श्वाक में जो रिचिकव और रिचिकव एव वे शोके है, उनका रहस्य श्चि है

और श्चो मानव जीवन की इतनी अरिक्त जोर मुन समस्त है। श्चु-सकः। यो मुनसक है, इरिन्विम मानव मुनू और अजत्वय के बीच एकतर बरताया रहता है। वरु नामा में एकर को पून जगत है तो मुनू को पता है और नामा में एकर को वेमन है तो अमृतन को ज्ञान करना है। अविषयस विमलेषु। मुनिते इन श्वाकविते - विविधता में एकता और अजकविते इव मुनिते - एकरता में विविधता। किन्तु जैसे जीवन के इन रहस्य को पहचाना और जीवन में उसको उतार, मुन और श्चि श्चो को करय करे है।

मार्तीय श्चि-मुनिर्षी में एव जीवन रहस्य को दीर्घ-दीर्घ समझा था और प्रा- (रिचिकुनर), अथवा (रिचिकु-आरिष्टी), विचार का दर्शन (याद), कय (अर्थ), श्चरहि (अथवा) आदि, जिनको (विम्व आरदि माउर) श्चि की श्चि कहने है, उन मानवीय सामाजिक जीवन के अरु वेरों में उभे उभारे का प्रभाव भी किंच था और श्चो हर वरक संकलन की शक्त भी थी। उनको श्च समस्त का कारण था कि वाय-यु हनके कि विषय रिचि तथा ब्रह्मणे, ये श्चि के जन्म जोर रिचिकि दे वर पने को जानते थे कि - "अरुदे अरिष्टी मरिषीय मुने मुने मुने मुने" । (अरिष्टी रिचिक का अरिष्ट-अरिष्ट विचार और अरिष्ट पीकर का अरिष्ट-अरिष्ट श्चि)। श्चिने अरिष्टी भी लता श्चो को मानवने है। श्चि की उरिष्टी अरिष्टी की मुन का अरिष्ट का एक श्चक

ही माना था और भौतिक और मानवीय विम्व के आधार पर जीवन के भिन्न भिन्न वर्णों में जो सधर्मों ने उनके विचार के लिये उनको स्वयंसा या स्वायत्तता दी थी। यही कारण है कि भारतीय धार्मिक, आध्यात्मिक और वास्तविक जीवन का महाहृद हमारी कर्ण श्चुव हउ तक अनाथ और वात रहवा रहा और यही कारण है कि भारतीय सधर्म में भिन्न भिन्न धर्म, संस्कृति और सधर्मों को आत्मसात् करने की और समरीता करने उनको साथ सधर्मोन्मत्त बनावे की एक विलक्षण शक्ति विराट देती है। कई प्रकार के हकीमों और आचार्यों के नाबूद भारत ही एक देश है, विवका आन भी अविचल है, इतना भी पेटो कारण है। चीन एक ऐसा मुक्त देश था, लेकिन वह आज अपनी मानवीयता की आत्मा को खो बैठा है, ऐना लगता है। आज देश के सामने विधायक या इमोचनल श्चि-प्रधान (राष्ट्रीय का माया-सक समरता) को एक ही समस्या लगी हो गयी है, ऐना वात जाता है और अना भी जाता है। लेकिन जिन श्चर का मन उपयोग करने है, उनका अर्थ श्च समस्त कर करना चाहिये। नहीं तो "शरि मीव हउ क रली की ही पीठो रह गते" की समायना है। कहा जाता है कि भारत के आज इकडे इकडे ही रहे हैं और भारतीय श्चो में मानवता एकता का अभाव दिख रहा है।

पर जब वह कहा जाता है कि भारत में कभी एकतरा की भावना नहीं थी, तब मन में अरु उजता है कि जिन एगारे बुद्धों ने "मुने में आरये लय, मानुव तम मुनेम" कहा, वने एकर में श्चिपते श्वाका थी? भारत के प्रति अनेक मन में अरु था अरिष्ट न होने को क्या वे कह पाते कि भारत में जन्म बुद्ध है?

आज भी कौन भारतीय होगा, जिनके मन में भारत के श्चि-मुनि, भारत का अथवा, वेद, प्रथ-युव, उपनिषद, गीता, भिन्न-भिन्न दर्शन, सामायक-अज्ञान और श्चि-प्रापण मय, श्चरीक, आचार्य, अरु, श्चि अरिष्ट के बारे में देव-नाय, श्चयन-मिरेलुम मय या अरिष्ट की भावना नहीं है। उनके नायकवय-युव में अरु मा भारतीय श्चि-प्रधान श्चो है और उन श्चि-मुनिर्षी, श्चु-मुने, अथवा-रिचिकारों की श्चि से उन्नत श्चो है, अरिष्ट श्चक जाता है। अरिष्टी काल में श्वाक की लख पायाश और आजायमन के लखन नहीं थे। गिर की श्चो के श्चिनाय को यने-अरिष्ट के रिचिक वर से रीज लाय करवा जाता था। इय बनने थे, एव लख पर मुने की अने है। एव का इतने थे, तो इतना मन पतिव आचयन से अर लता का और को पड जाने थे उनको प्रति मिनाम अरर और अरिष्ट का अरुअन श्चो था। गिर, मरिद, श्चोरी नादि श्चक मरिद, श्चक मरिद, श्चान मरिद-अरिष्ट का अरय हउक भारतीय विषय रहता था। एव भी मरिदः के देशो

उपसभ उद्देश्य ही दुःखम को खत्म करने का था। आत्मनि के मन्त्र पर परिचय नहीं रही है। ऐसी हालत में आस भी उत्पन्न नहीं के साथ उसी प्रकार का व्यवहार करना, जो उस समय भी उत्पन्न हो नहीं माना जाता था, पर हमस में आ सकता था, यदि और अन्वय दर्शन का व्यवहार करता, उन्हें कृतमहादत्त प्रेरणा करना और अकारणिक करना, यह निमी भी इच्छित उचित नहीं कर पायगा। व्यक्ति नहीं भी हो, उसका व्यक्ति एक व्यक्ति और आदर्श-योग्य बल है। व्यक्ति का अस्मत्त्व करना इच्छी भी स्वयं समझ में रहन नहीं होगा चाहिए, चाहे वह व्यक्ति सामान्य मानविक हो, चाहे अस्वामी ही।

आत्मिक बुद्धि उक्त करें अपना एकात्मिक-स्वभाव हमने दे रहीं हैं। इस विभाग की व्ययगत को १०० परं उभे होते हैं। क्या हम आशा करें कि अपने अस्तित्व की एक एकात्मिक बूढ़ी करते बुरी में प्रवेश करने के साथ बुद्धि विभाग अपनी तुलसी परतारों को भी छोड़ कर नये युग में प्रवेश करेगा और एक आशा हरक की बुद्धि के योग्य होती में आदर और प्रेम का स्थान प्राप्त करेगा।

गोराजी का कदम

आप्य के हमारे सामी भी गोराजी के चौबीस-चारोंको अपनी तरह परिचित हैं। वे उन निरादर वृक्षोंमें से हैं, जिनका अस्मान निमी को स्वर्ण नहीं है और जिनमें से अपना जीवन स्व-नैका को बनाना कर रहा है। यह खरी है कि उनके बहुलके विचारों और तरीकों से स्वर्ण विजिना का और स्वर्ण सेवा संघ का गठन में रह रहा है, फिर भी उनको मराधापण, उनको लज्जन, उनको कार्य-शक्ति और निम्न के बारे में किसी को काम नहीं रही है। वहाँ तक अहिंसा की प्रतिपाद का सञ्चार है, उनके और हृदयों के विचारों में कोई मतभेद नहीं है, ऐसा हम मानते हैं। यही कारण है कि गोराजी अपनी कुछ विद्वान्मात्रोंके से वाद-वद सौंदर्य परिचार के ही एक सामी माने जाते हैं।

सा ८ अक्टूबर में वे वेराप्राम से दिल्ली की दरवाजा पर अपने कुछ सार्थकों के साथ प्रस्थान हो रहे हैं। जैसा उन्होंने पुर से उदा किया है, इन कार्यक्रम से सर्वे सेवा तथा का या सेवा-आन्दोलन का संघन नहीं है, फिर भी हम उनको मन्त्रि-निधि को उल्लेख से देखने रंगे। कर्षण चीन महीने में वे १०० मील की दूरी कर करके दिल्ली उदा लुंयेगे। उनके इस 'वैद्यमन्त्र' से वे प्रथम उद्देश्य उल्लेखी आदर दिव्य हैं। एक तो यह कि लोक-सभाम में वे विधान-सभाओं में रह के आधार पर संघ-कार अलग-अलग बनें की जो पद्धति अभी मान्य है वह संघ की और विधान-सभाओं में उदरों को किसी भी विधान पर वही को विचार से न देव कर रहना मत देने का अधिकार प्राप्त हो। हुए उद्देश्य को उल्लेखी आदर-

किया है वह यह है कि प्रांतीय या क्षेत्रीय अंशिकता और विचलन अपने मौजूदा परों को-जो लार्गान्वय लोगों के विनये से 'प्रति-निधि' है अस्तित्व परों के ज्यादा खचित है-छोड़ कर दास प्रकाश में रहे। पहले आगे गोराजी और उनके साथी वरुणशी और रत्न-रत्न उन्हे उन्हे कृष्ण-रत्न जलों का प्रदान भी उठाया। वेपमें में गोराजी के दो उद्देश्य हैं—एक तो यह कि यान्त्रिक पद्धतियों के आधार पर न चले और दूसरा यह कि जनता के 'प्रतिनिधि' जनता के यथान्त पर ही रहे। इस सर्वे काम के लिए उन्होंने और उनके मित्रों ने 'वैद्यमन्त्र समारं' के नाम से एक संगठन भी बनाया है।

यहाँ एक उद्देश्य का उदाहरण, अस्मान तौर पर ऊपर को दोनों वाली से, कम-से-कम सौंदर्य कार्यक्रमों का गठन नहीं होगा। पर उनके लिए जो वहीके सोचनी अस्तिपाद कर रहे हैं, यह हमारे लक्ष्याव से दूरतक को उपायों के लिए उनके पते और दक्षिणों को जोचने के लिए है। अहिंसक नति का परीक्षा हमारा मूल में विचारक लीसा है, अर्थात् नीचे से जनता की दक्षिण को जायत और संशयि जपना हाकि, स्वयं नाम और धन्द के समान को व्यवस्था जनताकिक होते हुए भी उद्यम को निर्णयित है, यह न रहे। नौ-नौ प्रजापतिक कारण और संगठित होती साथ, स्व-नौ ऊपर का निर्माण होना अपने आप निरता और हृदय काय। इतीहास माफी में एक बार कदम है कि 'कन्दमिदम' बनें 'रुदी कुल्लिअदम' अर्थात् स्वभाव-रचनात्मक कार्यक्रम की पूर्ण ही स्थापन है। स्थापना के माधुमी का प्रथम अहिंसक आभाव-रचना से था, यह हम उदा मानते हैं।

हमारा मतलब यह नहीं है कि विधान-सभ प्राति के दूर उभे में देते भीते नहीं आये, न कि तात्कालिक विधि अन्वय का प्रविष्टार करना पड़े। पर इस प्रकार के प्रतिपाद के भीके भी उन साथ विचारक प्राति के कार्यक्रम के अग-स्वरूप ही होंगे। इसमें कोई संशय नहीं है कि अहिंसक प्राति की विधानक उदरे पर रचने की नीयता में वही वे अग्रतक रूप से मौजूदा व्यवस्था के उल्लेख या विनिवारणक न बन पाएँ। गोराजी का रचनात्मक काम का विन भी यह नहीं था जो आर इस नाम की विभिन्न प्रातिवियों में हमें देखने को मिलता है। 'रचनात्मक काम' से उनका मतलब सामाजिक जीवन के संरक्षण विधि पद्धतियों को एक प्रकार पलने के था, जिनसे हमस में नुसुने मूल-समाप्त होकर नये मधुमी का निर्माण हो। यह नहीं है कि आज की इच्छी नतिपादक प्रातिवियों में यह उदा देखने को नहीं मिलता और हमस वही कारण है कि गोराजी ने के हाथियों का अहिंसक दूट जाया है।

—गिण्डराज

कार्यकर्ताओं

हृद्यतायाम जिनके में सभी बिलों से अधिक मन्त्रिय मन्त्रिय में मिली है और दूरी लोगों के बीच चली गयी है। बहुत जमीन मिलने पर भी अलग-अलगों को अनेक कठिनायों का सामना करना पड रहा है। कुछ कठिनायों को अलग-अलग करने-परिचारे के और भी बढ जाती है। विधान-सभार मन्त्रिय-आन्दोलन को प्रद्वर देना तथा मन्त्रिय-विभागों को भी हृद्यता करना चाहते होंगे, परन्तु उनके ही कार्यकारियों द्वारा मन्त्रिय-विभागों को कठिनायों दित तदा बढ़ती है, उनको एकर-परिचाल में रहें पर पेश करना चाहते हैं।

(१) जिन मन्त्रिय-विभागों को मन्त्रिय-नियमों की और से जमीन दी गयी है, उक्त जमीन को अन्वय कर-बन्ने विधान मानव्यत दंग से अन्वियार लोगों के पुराने कर्मकारियों में जयोकरनी का बलाग मान्य-कारके सभारों कर्मकारियों से सभार-विचारों को दखन देते हैं। जनता: प्रथम-विभागों और पुराने कठिनायों के बीच दृष्टकर होती है और मन्त्रिय-विभाग केवल होते हैं।

(२) हृद्यतायाम जिनके में अधिकतर जमीन बड़े-बड़े दानकों के द्वारा मिली है और वह जमीन नहीं गयी है। जमीन व्यापक करने के लिए मन्त्रिय-विभागों को मन्त्रिय-नियमों की और से (केन्द्रीय सभार द्वारा मन्त्रिय-विभागों को जाम देने के लिए दिए गये कोष से) पैसा, धैर्य, औषध तथा नन्दर रक्म भी दी जा चुकी है। हस्त्य होने पर भी जमीन उक्त मन्त्रिय-विभागों के नाम से मालुमबारी नहीं होनी गयी है। सभार से अन्वयत विन्पु अन्वयर सेग करते हैं कि जूँके ये दानव्य दूट नहीं हैं, इच्छित वास्तुजाती नहीं होयी जा रही है। बड़े दानव्यों के द्वारा जो जो जमीन मिली है, वह अधिस्तर दे-नन्दर-आ-स्वय कसीन मिली है और जमीनदारी उन्मूद के ही दया नहीं पर बहकर कर एक ही गवा है। इतलने कर इस तरह की जमीन

विहार सरकार : भूदान-किसान

यैट चुकी है, तो दानव्यों की पुर्के अभाव में काजूनी मानव्य नहीं हो अन्वयित है। यह आशा नला मन्त्रिय नहीं होगा कि जो जमीन किसानों को दी गयी है उसे हठकर होना नहीं चाहेगी, तो कर्षों नहीं उठाकर विचार दूके के द्वारा देते मन्त्रिय-विभागों के नाम से मालुमबारी बंध देती है। मालुमबारी नहीं बंधने के कारण वे हठकर अने को कुम्भारत नहीं समझते हैं। सभार ही कर्मकारों मन्त्रिय-विभागों के करते हैं कि मन्त्रिय-नियमों द्वारा दिये गये प्रक-पयों के आधार पर मालुमबारी नहीं होनी गयी है, इच्छित काजूनी बंध के हठ प्रकाश परों का महाव नहीं है। नन्दर-रत्न इसे भी वैदल-नियमों होती हैं।

एक और सभार 'केवरी' लता कर भूमिदारी को जमीन देना चाहती है और हृद्यता और भूदान के द्वारा हृद्यारी एक-एक जमीन उक्त बीच बंध चुकी है, लेकिन उस का प्राण-किसानों को कसना किसान का हठन सभार नहीं करती।

आप्य है, विहार सरकार इस को प्यन देती और मन्त्रिय-विभागों को वैदल-रत्न होने से पचानी है।
विद्य सौंदर्य मंडल, —स्वयमभार, हृद्यारीय सवेदक

पाठकों की-आसे से : ट्रेन-डकेती

'भूदान-वर्क' के मत में विहार के अंक में 'ट्रेन ट्रेनी' की शाले पर कर अन्वय लगा। इस कारण पर हरे-तो-नहीं हुआ, बरकर उक्त मन्त्रिय पर हरे-दुःख। सेक में नीयनी लकीके ही लट-नियमों को न देना नहीं है, पर मनें लदर-वर्क है, जो विन व दिन बढ़ता ही था रहा है।

अभी योहे दिन की बस है कि हमारे गाँव का एक लड़का नाराज बचपुत्र का लामन सवारी के लिए दो को बरने के साथ गया। मानी रोजन पर रात को मानी में सभार हुआ। उन दिनों में सभार आगयी थी, जिनके पास भी सैन-सैन हो पारते थे। वे भी एकलान गरीबने जा रहे थे। ट्रेन में आकर रोजन पर वे आगयीं पड़े। वह गरीब सुदरान बहद से बा रही थी, उनी समय उक्त १ लोगों ने दो सवारी को जूनी-जुकीके मर कर मिला दिया। पुनरे दोनों को

नाराज नहीं हुआ कि कुछ लोगों, जूँके उन लोगों ने पुरम भी निहाल किया था। हम सार उनके कर्षों से उदर बंदी कर कर वे उतर पड़े। अन्वये रोजन पर नाराज में विचारव्य भी तो मारी वे नाराज दिव्य में विचारव्य पर गहन-नाराज को धरता लता बरोग्य और देकित रंगी को अन्वय। इसके अन्वय है कि पुरादर बाभी। सन गरीब कर अपनी सवारी बान कर वे भोग पायी हाथ कलज आ गये। वह बच गरी है कि ऐसी भी रचना अने दिव्य भानी रहती है।
कवानी, विन-नाराज —आमसभार सभार

भूदान-पत्र, भूदान, ६ अक्टूबर, १९



क्या हम गांधी को भूल भी सकते हैं ?

• मणीन्द्रमुबारक

करीब डेढ़ साल पहले प्रिचमी जर्मनी के एब भाई ने, जो छह महीने के लिए हिन्दुस्तान आये थे वहा, 'मे वही आत्मा से हिन्दुस्तान आया या। मुझे अपने देश में यह लगता था, कि हिन्दुस्तान गांधी के रहने चला होगा, किन्तु यहाँ का एक भूमे वही निरस्त हुई है।' उन भाई का जोर वही भी बहना था कि युद्ध और भीति-वता से तवाह हम यूरोपीय राष्ट्रों के लिए गांधी का खम्बा हो एवम्बर तारक रास्ता लगता है। किन्तु हिन्दुस्तान में आने पर दूसरा ही दृश्य दिखाई देता है, वगैर-नयी तो यह भी लगता है, कि गांधी नाम पर मगिन क्या केवल १२-१३ वर्ष पहले ही क्या घटी पर रहता था। ऐसा ही करीब-नवीन दिनों से आये हुए गांधी को अहिंसा के विचारों से प्रभावित भाई-बहनों का मानना है।

यह जो विदेशियों का एक खयाल-अभेध है, किन्तु हमारे देश में लोग भी अन्तर क्या बढ़ करते नहीं हुये जाते हैं कि हम गांधी को भूल रहे हैं ? देश के अन्तर खोदोसी विचारों की शक्त अहिंसाकारियों ने अपनी विविध रंग जैसी में यही प्रगट रखा।

'करीब डेढ़ साल होने के आये, गांधीजी का शरीरगत दुःख। गांधीजी के अहिंसा की भाव एव देश के अन्तर-अन्तर अन्तर्गतों में प्रवाहित की गयी थी। उन वक्त आने पर हम लोगों ने सोचा होगा कि अगर हम देश के लोग को पानी पीनेमें, उनमें गांधीजी की कुछ खोजों से गोपा होकर हमको भी गांधी की भावों को भावसे में लाने देखा होगा, तो यह करते हुये होगा कि हम भी अहिंसा को का हूय पीने हैं। इस देश का मनुष्य गुणित के आगमें लडा ही कर आया क्या यह वह लडा है कि अने यह पानी पीया है, जिनमें गांधीजी की मधो प्रवाहित की गयी थी ? अगर हम यह नहीं कह सकते हैं, तो हमारे लिए यह सोचने का विचार है।'

वहलः जिसे गांधी विचार की शोरी भी मानकारी है, वह भी महत्त्व कहा है कि भारत में गांधी विचारों का उदय-अस्त है।

पर और लता का लहरा, बड़ना हुआ अन्तःकार, भारतीयता, भावा और सभ्यता के नाम पर बहने हुए बने और कला-कर्म से क्या सम्बन्ध करते हैं ? क्या गांधी इन सबके लिए ही विचार को करत ? क्या गांधी की लक्ष्यों का आभाव भारत है ?

देश को आजाद हुए बीहड़ साल हो गये। इन बीच में ही पञ्चनीय योजनाएँ बनी ही गईं, किन्तु क्या वे सब गांधी की नीति ही हुईं? क्या गांधी की पूरी अर्थव्यवस्था ?

'अब तक दुही भर बनवालों और करोड़ों मुझे रहने वालों ने बीच, वेतलका अन्तर बना रखा, सब तक अहिंसा की विचार पर आने वाली राजस्ववशा प्राप्त नहीं हो सकती है। आजाद हिन्दुस्तान में देश के बड़े-बड़े जनकों के हाथ में अन्तर का जितना दिखा देगा, उतना ही देशियों के हाथ में होगा और वह नई दिशा के चरित्रों और जनकी यत्न में भी हुये गये अन्तर-अन्तर के हुये-हुये लोगों के बीच जो दरनाक चर्च भाव नभर आता है, वह एक दिन ही भी नही देगा।' (एन. का. ए. १२-१४-१५)

आजोवन के गरीब और अमीर का अन्तर कम होता ही हुये हुए, उठते अन्तर आजाद बहना का राह है। एक बार गांधी ने योजना के विचार पर विचार प्रकट करते हुए कहा था कि योजना के अन्तर में एक अन्तरगत मुला मेठ यह है कि योजना बनाने के पहले अहिंसा की नीति पर ही आरम्भ के वेदों को धार देते, जिसे हमने नहीं देखा हो और सोचो कि गुणवत्ता योजना से उठको क्या अन्तर लुप्त होना है और अन्तर कायदा उच

गरीब का नहीं कर सकते हो, तो कम-से कम देश को करो कि उनके उठको गुण सुखदान न हूये।

आज अहिंसा में सफल अधिक सफल बनने का रहे हैं और किन्तु अधिक विचार बनने का रहे हैं। कहीं

अहिंसा के आचार पर खड़े स्वराज्य में...

अहिंसा को आधार पर खड़े स्वराज्य में कोई कितनी का सानु नहीं होता, सभी सामान्य ध्येय के लिए अपने-अपने मानव हितों का काम करते हैं, सब बढ-लिक सकते हैं और उनका ज्ञान दिन-दिन बढता रहता है। रोय और बोमाटी कम-से-कम होती है। कोई दखि नहीं होता और नजदूरी को हमेशा काम मिल जाता है। ऐसे राज्य में शूद्र, श्राव्यलोपी, दुर्गार या बर्ष-द्वेष के लिए कोई स्थान नहीं होता।

यह नहीं होना चाहिए कि मुट्टी पर अमीर लोग दो उलजदित बहलो में रहें और करोड़ों लोग शूद्र और प्रकाशहीन बड़े भोयदों में रहें !

—गांधीजी

गांधीजी का गुलाब और बहो आजोवन को देता ? क्या इसमें ही लक्षण मिलता है ?

गांधीजी ने अंगोरा भी जो कि हमारे नेता सब का हाथ में लेते, उन कारकी से रहते और जीविका चर्च के लिए पैसा लेते। किन्तु अन्न क्या मिलता है ? गांधी ने कहा था, हमारा ही अन्न को नष्ट कर आगती का उपयोक्त रात्रिस्थान में नहीं करना चाहिए। किन्तु इनके गांधी, किन्हीं गांधीजी के बर्ष शूद्र अन्न में हुये भी था चरना दिया जाने स्वयं बरकरार में था गये तो अहिंसा की अन्तर्गतों कार्य-क्रम मानने लगे।

यह जो अन्तर और आगे की नीतियों का निक है, किन्तु रचनात्मक

माने जाने वाले कार्य-क्रमों की क्या कहल है ? जहाँ में सरकारी अन्तरगत को भी प्रण उत्तर नहीं हो रहा है। शाही-महायोगी, नई नालीम, हरिजन-सेवा, गांधी-नारति (अन्तरगत का नाम), आदिवासी आदि रचनात्मक कार्य-क्रम अन्तरगत बनने भा रहे हैं और अपना अन्तर अन्तर और नये शोते जा रहे हैं। वे सब कार्य-क्रम क्या एक प्रकार के सरकारी विचार नही बन गये हैं ? बहो वे कार्य-क्रम और लने आचार पर नही लपटाएँ नजक से रोय पानी की और जला को चिखल देते थी। रचनात्मक कार्य-क्रमों से यह हालत देकर कर शर ने अन्तर हीकर एक बार यह : 'हमारा गांधी का नाम केकर दिखल बुरे लने पर का रही है, पर हम भी

मिली है, कम चला है। ऐसे ही छोटी छोटी-रचनात्मक कार्य-क्रमों-अन्तर बन करते हैं और देश में ही मानना होगा कि वे चर दिव के लगे हैं।'

इन सबके अन्तरगत में मन में एक बुनियादी सवाल नभर-नभर उठ रहा है कि क्या हम गांधी को भूल भी सकते हैं ? क्या हमारे लिए संभव है कि हम गांधी को भी गांधी को भूल जायें ? गांधी क्या थे ? गांधी की कसल नही था। क्या तो अन्तरगत भारतीय सभ्यता के मन में मिलना हुआ विचार-नरणीत है। बल्कि कोई बहना चाटिए कि गांधी विचार-नरणीत का वह जाल-अन्तरगत नभर-अन्तरगत है, जो अने बालों का चरित्रों तक बुनियाद को प्रभावित करता रहता है। गांधी अहिंसा को एक अन्तरगत माने की पुति था। अन्तर में जहाँ एक ओर विचार में बढता अन्तरगत की, बहो दूसरी ओर अन्तरगत लुप्त की दास भी हुआ। जहाँ विचार में अन्तरगत का अन्तरगत ला दिया, बहो अन्तरगत के लिलों को जोड़ने के अन्तरगत होता गया। गांधी-विचार की लुप्त यही है कि वह विचार को अन्तरगत की शक्ति देता है। वह अन्तरगत है, किन्तु एक अन्तरगत की नहीं, एक लीम की नहीं, अन्तरगत पर ही अन्तरगत अन्तरगत बहलता है। चाहे अन्तरगत गांधी को कम कार्य ला अन्तरगत विचारों की उपेक्षा करे, किन्तु अन्तरगत को नभर के अन्तरगत एक-एक दिन गांधी के लिलों पर आना । परना। अन्तरगत अन्तरगत विचार, ही ही अन्तरगत है कि बुनियाद को बुरा कर लीं अन्तरगत की लिलों पर बर्ष करे लता प्रकटा है।

सर्वोदय-विचार का संदेशदाहक 'प्रायश्चित्त' साप्ताहिक

अन्तरगत की लुप्तगांधी मट 'आचार्य' बहल ही आचार्य और अन्तरगत एक अन्तरगत अन्तरगत है। लव लव की अन्तरगत अन्तरगत रहती है। राजस्वदान के हर विचार भाई-बहनों के हाथ में यह अन्तरगत ही जाहिए !

—हिन्दोबा
 आदिवासी : लिले अन्तरगत अन्तरगत का नाम : 'आचार्य', किन्तु अन्तरगत अन्तरगत, अन्तरगत (राजस्वदान)

विनोवा का वाङ्मय : ५

नारायण देसाई

“राजनीति के विषय पर लिखने या बोलने का विनोवा का अधिकार किताब है-?” इसने उधर हा संकेत पिछले डेर में हमने किया था। दुनिया आज जिसको राजनीति के नाथ से पहचानती है, उसमें विनोवा प्रत्यक्ष रूप में नहीं पड़े हैं, फिर भी उसके साक्षी वे रहे हैं। सच तो यह है कि सत्य के शोषक के मन में जीवन के अलग-अलग हिस्से होते ही नहीं हैं। ऐसे शोषक को सत्य का जो दर्शन मिलता है, वह जीवन के समान ध्यों को स्पष्ट कर सके, ऐसा होता है। गीता को हम क्या मानेंगे ? वह तत्त्वज्ञान की पुस्तक तो है तो, पर भारत के अनेक राजनीतियों ने उसे अपनी पाठ्य-पुस्तक बनाया है। इसके अलावा उसमें सर्वोच्च मानस-साधक है; और हमारे समाज-दाल की भी यह सुनिश्चय है। इतिहास के परिणत उसमें से इतिहास निकाल कर बतला देंगे; साहित्यकारों को ७०० श्लोक के सक्रिय कालवर में इतना उत्तम साहित्य भाग्य से ही किसी और जगह मिलेगा। इस प्रकार गीता की सर्वतोमुखी मतिमा है। वह किन्तु भाव्य से है ? भगवान् देवध्यास के सत्य-दर्शन के कारण। उनके सत्य-दर्शन की जीवन के विभिन्न धर्मों को स्पष्ट किया था। इसी प्रकार विनोवा के चारे में कहा जा सकता है।

‘व्यतान्य-वाक्य’ के अर्थवा जिन गुरुजी सुलकों में विनोवा के राजनीतिक विचारों का मुख्य रूप के समावेश हुआ है, उनमें “मतिरुं भाषु”, “व्यवसायक राजनीति” और “वाचनीय सुनिश्चय”, इन तीन का उल्लेख गत संघ में किया गया है। इसके अन्वया दो-तीन पुस्तकें गुजराती में और दो राजनीति के विषय पर प्रकाश आली हैं। राजनीति के आधार यह कर विनोवा ने क्यों तक आत्म-वेदा, ध्यात-धरणा और धरणी भ्रम के अनेकविध बाधें करते हुए भी अपने हान और ओंठें हमेशा खुली रखी हैं। किन्तु राज के छोड़े-के नाँव में उन्हें समन देष का दर्शन हुआ है। एक-दूसरे-दूसरे शताब्दी के भी अधिक के अनेक समय का यह निरीक्षण और विचार “महात्मा यश” के विनित आत्म प्रकट हो रहा है। अपने अल्पका भूतान-नाथा स्वयं इस दर्शन और विचार में बड़े बदोती कर रही है। देश के लोक-जीवने में अपने वाले विनोवा की सारी परिस्थिति को ओंठों से देखने का अन्वय तो सिखा ही है, पर उन्हें एक दूसरा समय भी है। विनोवा लि-पत्र और सर्व-समीची होने के सय पलों के लोग उनके सामने सिमंकीय भाव से अन्ना हान कोल सचकें हैं। अन्ना लोक-द्वय में प्रवेश होकर भारत के राजघराय को देखने का जो मीका मिलते हैं-व्य-वाहक नगों में विनोवा को सिखा है, देश कायरी ही किसी को सिखा होगा।

राजनीति के विषय पर विनोवा ने मिलने विचार प्रकट किए हैं, उन्हें अन्वय एक ही शब्द में कह सकते हैं तो वह शब्द है, “रोजनीति”। सद्यः के समय राजनीतिक विचार को परिचित करने कायरा सर्व विनोवा द्वारा प्राप्त हुआ यह शब्द है। “मतिरुं भाषु” और सुलकों में यह लोकनीति का विचार ही प्रचार गया है।

लोकनीति के समय विचार को एक-दम सद्यः में—धोत-वस्तु अन्वय होने की जोसम उठा करके भी—अन्वय हमें समत देना हो तो वह नीचे के कुछ दृष्टान्त कायरी में आ जाता है :

१—आत्म विचार-वर्षत ही विचारों, दृष्ट दक्षि के विचार, देना एक हीनी की अधिक लोक-वर्षत ही आचरणका है।

२—स लोक-वर्षत का अधिक परि-पुर्ष विचार होगा तब विचार कायम और

कृत्-विचारान सधेय, विषय में अन्व-दोगत्वा हमें सर्वोप के अन्व-अर्थात् योग्य-हीन और साधन-मुक्त समाज रचना की तरफ जाना है।

३—लोकनीति की रचनाप के लिए, परास की दक्षि को पश्यने वाली पत्र-पत्रदि के बन्धे सर्वोपमिता वा सर्व-गम्यति पर तानी हुई किन्तुलि लोक-वादी की रचना करनी पड़ेगी।

४—एकके लिए आत्म, किन्तु सय पत्र वा पाठकों सामिल ही सके, ऐसे विचारक शायद ही आचरणका है।

५—जिनमें एकही लमनि न हो सके, उन कामों में भी लोकवादी की दक्षि से कुछ आचार-निष्पत्ति आदि सय फलने की जरूरत है।

६—लोकनीति की साधना के लिए सय की राजनीति से दूर रहने की जरूरत है वर देके लोक-वर्षा की आचरणका है, जिसका काम बरतर पर्यग करती हुई दक्षिओं के-धीन लोक-वर्षा का, नया विचार-अन्वय-संगीक बनने का, जरूरत ही नहीं अर्थात् ही सद्यः-वर्षा के अन्व की भूलों के अर्थ बनना का प्पन्न रीचने का और निष्पत्ति का रहेगा।

गोपीजी की मन्त्रु क ओंठे समय काय एक बार औपचारिक नारायण विनोवा से मिलने के दिने जन्मदा-आत्मक में गये थे। उस समय विनोव हाथ से दृष्ट बचने का प्रयोग करते थे। अन्वकारणी भी दृष्ट बचने के काम में सामिल हो गये। इस मुलाकात के बाद विनोवा ने “सर्वोदय मासिक” में एक लेख लिखा था, जिन्में उन्होंने कहा था : “हमारे हीन अनेक अन्वेष ने, फिर भी दृष्ट बचने के अन्व में हम दोनों सम्यक् हुए और हमारे दोनों के दृष्ट बचने के पत्नी विचार और उसके हमारा हीन हीन गया। यह जन्म किन्तु कर ही है कि अन्व-वर्षा हीन होने के दिने रचनात्मक काम में विचरन भव रहने

वाले लोग भी दृष्ट हो सकते हैं ?” आदि में उन्होंने लिखा : “दृष्ट बचने वा सय रीच-वर्षा में ‘किन्तु-किन्तु’ अन्वय होती थी। इस अन्वय को र्ण करने के लिए दृष्ट में वेक देना पड़ता था।” और अन्व में उन्होंने अन्वय के प्रार्थना की थी कि भारत के दृष्ट में वे तैक का काम कर सकें, ऐसी शक्ति उन्हें है।

इस पत्रका को आज २२ वर्ष हो हैं। “भूतान-वन्द” में सद्य-निर्माण का जो दृष्ट प्रयास है, उगमें सद्यःसय से अनेक विचार-निष्पत्ति विचार रखने वाले लोगों का बहुरार सिद्ध है, और अनेक बार उनके बीच में पर्यग होने हुए विचारों ने वेक पर काम किया है। इस प्रकार लोकनीति का भी विचार उन्होंने अपने वाचन्य में पेश किया है, वह जीवन में भी बरिवायं किया है।

अब हम उपरोक्त सुलकों को योश नबरीय से देख जायें। वेदुं वर के ओंठे-के समय में जिनों १५ हजार से ऊपर प्रवर्षों तब गयी ऐसी छोटी-छोटी सुलिका “मतिरुं भाषु” (गुजराती) में विनोवा के लोकनीति विषयक योशिक विचारों का सम्यक् ही जाया है। पाण्डित सर्वोप-समीकन के सम्य दिने हुए उनके अन्व-भाषणों के उपरान्त दूसरी ही कुछ महत्त्वपूर्ण माणकों का उगमें सम्यक् है।

“व्यतान्यक राजनीति” वह संसारक दृष्ट लोकनीति के दिने सय हुए समय है। इस सुलक में उनीया भी आचरणक के सद्यों के सम्य दिने हुआ एक प्रयत्न

है, जो प्रत्येक प्रदेय के आचरणक से लिए संभव-योग्य है। अन्वित मायक अन्व-कामेरी की बैठक में दिया गया दालन वैचारिक और दिग्दर्शक दक्षि से अन्व विचार रचना करता है। पुरी-समीकन पर उनका मुख्य प्रयत्न मुद्राकर ही पत्तु रिलवा है। इस प्रकार यह संभव अन्व तरह से मूह्यमान बन गया है।

आज भारतीय राजनीति और सत्य ॥ गांधीजी का नाम कौन नहीं लेक ? सभी सामाजिक पत्र अन्वें कायरी के मूल में गांधीजी का ही विचार है। दृष्ट किन्तु का प्रथम करते हैं। एक एक कार्यकर्ता तो अपने को गांधी के रूप काचित मानते हैं। विनोव गांधी का नाम फर्षित ही लेते हैं। उनके वर के उल्लेख मात्र से उन्हें मद्रादर होने का अनेक बार हमने देखा है। गांधीजी विचार आज के अन्वकूल किस तरह से हैं, इसके प्रयोग में ही उन्हें दिखसही है। “गांधीजी जन्मे” इस सुलक में गांधी के नाम से अपनी पहचान करने वाले अन्व-मायक के वगों को बहुरार करके दिने से प्रयत्नकों का संभव है।

१५५ का सर्वोप-समीकन सुलक, समिलकन में हुआ था। मन्व-पुत्र की २५०० की बचपनी का यह प्रयत्न था। विनोवा ने बुद्ध और गांधी के नाम पर दृष्ट और हीन शब्दों में पक्षी १५,००० बचरार के निम्नकालीन की मीका की थी। इस विषय से सन्व-अन्वित प्रयत्न सय हुकें भी कुछ महत्त्वपूर्ण प्रयत्नों संभव “गांधीजी समिलकन” सुलक में हुआ है।

१५६ का सितार मनीना ॥ अन्व विनोवा के गुजरात-अन्वयन की शब्द रहे हैं। गुजरात के सय मित्रासिधों को-अन्वयदादक के पत्नी-अन्वयन की अन्वें शाल्य समेल-विनोवा में गांधी-अन्व के समोचित किया है और इस गांधीपु ने उन दक्ष के सामने अपने एक विचार का ठान वार प्रयत्नकों में दक्ष दिया है। इसका संभव “गांधीजीता गुजरातके” नाम की सुलिका में हुआ है। इस सुलक के ही प्रयत्न विनोवा के सय गुजराती में हैं दिने थे। विनोवा के सय गुजराती प्रयत्नों का यह पत्रक संभव है। उनके वर “मन्व-दान बटले बयवन्वय”, “विश्व-मन्वित” इत्यादि सुलकों में विनोवा के और भी दृष्ट पत्नी मायक रहे हैं।

“आचार्य” की व्याख्या

सिधकों को ‘अन्वें’ अन्वयों’ कहा जाता था। आचार्य अन्वयों आचरणक। सर्व अन्वों जीवन का आचरण करी हुए सद्य से उगता आचरण काय लेने का ही अन्वयारी है। ऐसे आचार्यों के गुजरातों वे ही सद्यों का मित्रण हुआ है। आज किन्तु-अन्व ही नहीं बर-भेदारी है। सद्य निर्माण का काम आज हमारे सामने है। आचरणक सिधकों के निना बर समय नहीं।

सभी को सद्यीय मित्रण का प्रयत्न सधे मन्वयनी है। उगमें ही अन्वयों के उगमें सद्यीय में अन्वय हीन सद्यः पत्नी कायरी है। सद्य का उगमें ही निर्माण और निर्माण होगा या सद्य है। इसका दृष्टान्त उदक सद्यीय विषय की अन्व मुद्रातना ही है। [‘मिषय-विचार’ से]

—निर्माण—

नागपुर जिले को कायदे तहसील में २५ विभागों में ६ अक्षरपुर तक सामूहिक परदादा होने वाली थी। महाराष्ट्र भर के कड़े जायतों हल परदादा में खरीज देने जाते थे। लेकिन यहाँ नदी को बाढ़ के कारण इन तहसील के अनेक देहातों की नुस्त ही क्षति हुई, इसलिए परदादा का भावार्थम रक्षित किया गया। कार्यकर्ता साहू-पीड़ितों की सहायता में लगे हैं।

भी अण्णासाहेब पटवर्धन की सचो-दण्डन्यायायतनमाल जिले को पुनः तहसील में बाढ़ रही है। १२ अक्षरपुर को है बचतमात्र रहेंगे। इस क्षेत्र में पुनः, यतमात्र आदि साहू पर सारा-सिद्धि भी चलेंगे।

विधायकों के जन्म-स्थान गागोदे (तहसील वेण, जि० कुडवा) गाँव में विनोबाजी की ६७ वीं वर्षादी मनायी गयी। १९१९ में यहाँ सर्वोदय-आश्रम की स्थापना की गयी थी। तब से हर साल विनोबा जयंती का आयोजन होता ही है, फिर भी गांधी स्मारक निधि में इस साल यहाँ प्रथम सर्वोदय-आश्रम करने के कारण कार्य का ब्यय बढ़ गया है। इतिहास के देहातों में समाजकारियों में विनोबाजी के योग्य अनुपमोदक, साधु कामनामें प्रकट की गयी।

बायेंदतों के निवारण की दृष्टि से अभी विनोबाजी के जन्म-स्थान का सफाई कर सम्मत्त गांधी स्मारक निधि की ओर से हो रही है। उसके पूरे होने पर वहाँ के विद्यार्थी भी १००० बच्चयुद्धे द्वारा बनायी और भेंट की गयी विनोबाजी को धर्म-प्रतिभा यहाँ स्थापित की जाएगी।

रत्नागिरी जिले में अक्षरपुर माह में प्रामदान नवनिर्माण कार्य के महाराष्ट्र प्रदेश के कार्यकर्ताओं की एक हुने पी समा होगी। ऐसी तमाएँ हर बीस माह में होती हैं। निर्माण-कार्य की बाधाएँ और आगायी को बनायी पर इधे विचार-विमर्श होगा। उपरिष्ठ कार्यजो उस क्षेत्र के प्रामदानी गाँवों में हो रहे कार्य का निर्माण करेंगे। महापुत्र सर्वोदय-मंडल के अध्यक्ष भी ४०० पाठिक और साठी-समीदन के नवनिर्माण विभाग के कार्यकर्ता इव सभा में भाग लेंगे। सभा के साथ ही एक सारा-सिद्धि और भंगी-मुक्ति विषय पर परिभाषित होगा।

महाराष्ट्र प्रदेश के प्राम-वंचामतों के प्रतिनिधियों का सम्मेलन पुष्पिग में आयोजित करने का निर्णय पुष्पिगा जिले के हाथ ही में हुए प्राम-वंचायन प्रतिनिधियों की सभा में किया गया। इसके लिए एक स्वागत-समिति बनायी गयी है। इस उद्ये-दन में प्राम-वंचायन के काम की व्याख्या

के बारे में विचार होगा। नये होने वाले निर्देशों के कार्यों के बारे में उप-आदिश की जायेगी। इस सम्मेलन में महा-पुत्र राज्य-परिषद परिषद की स्थापना करने का सोचा जा रहा है।

राष्ट्रीय-समीजन की नयी नीति के अनु-सरण महाराष्ट्र राज्य में पाँच हजार जन-संख्या के जेज युवा कर जन कुणों का विभाज करने की दृष्टि से प्रकल किया जायेगा। इस लाल देते व्यापीय जेज युने जायेंगे। उनमें से बीस सैज युने गये हैं। इहाँ में पाँच सैज प्रामदानी गाँवों के हैं। कोहापुर, रत्नागिरी, पुष्पिगा, पुष्पिगा और याना, इन पाँच जिलों में एक-एक जेज युवा गये हैं।

रत्नागिरी जिला प्रामदान नवनिर्माण समिति

रत्नागिरी प्रामदान नवनिर्माण समिति की स्थापना सभा कुडवाल में १९ अगस्त '६१ को हुई। सभी सदस्य उपस्थित थे। सभा के अध्यक्ष महाराष्ट्र सर्वोदय मंडल के मंत्री श्री एकनाथ मगत थे। समिति के मंत्री श्री मधुकर तिरिडकर के गत वर्ष की रिपोर्ट सभा में पेश की। गत लाल २००० रुपए का उत्पन्न हुआ। विभिन्न प्रामदानी गाँवों में १६ अक्षरपुर को और २५ किसान चरले चल रहे हैं। ३ अनुकर खाती सुनने का काम करते हैं। प्रामदानी गाँवों में रहने वाले यानीयों के जो विधियों का और हो महीने के एक धाँ का आयोजन किया गया था। १२ प्रामदानी प्रामदानी अपनी सेतो और उचीम बरते हुए गाँवों का काम कर रहे हैं। दो प्राम-दानों द्वारा किये गये। औद्योगिक प्रामदानी गाँव में तहसील पदविदे कोषला सेवार करने का उद्योग शुरू किया है। नये साल के लिए कार्यकारी मंडल बनाया गया। अध्यक्ष श्री गोविन्दराय जिंदे और मंत्री श्री मधुकर तिरिडकर चुने गये।

रत्नागिरी जिला सर्वोदय-मंडल की सभा ३१ अगस्त की शाम को कुडवाल में हुई। इस सभा में विनोबाजी की रिपोर्ट पेश की गयी। मुख्यतया लोगों में हुए नानम और बाढ़ के पीड़ित लोगों को सहायता पहुंचाने के लिए कार्यकर्ता चुना गये थे। आर्थिक सहायता का सहाय करने भी योजना गम। सभा में जगन्गी गाँव की योजना सेवार की गयी। यानी आर्थिक सहायता प्राम की जायेगी। साठी-सिद्धि और सहाय-यों के माहक बनाने का निर्णय कार्य-अक्षरपुर माह में एक सहाय कर लिया जायेगा। जिसे में सारा-सिद्धि और परिजनार का व्याज-मूल खाती कर के हाथ हो रहा है, उसमें सहायता करने का उद्योग हुआ। कुडवाल में एक विधिर और परिजनार

होगा। प्रामदानी गाँवों के प्रामियों का दो महीने का एक विधिर गोपुरी अध्यक्ष में होगा। ऐसी के विद्येन श्री गोविन्द-रैड्डी ने लेनी-प्रयोग में सहायता करने की योजना तैयार की थी। उनकी योजना के अनुसार जिले का एक सैज-उमझे मुस्ताया जाय। वरदा-प्रेष्ठ की 'बैरदेवी' प्रामदानी गाँव में केन्द्र शुरू करने के लिए प्रार्थना भी जाय। इस गाँव में प्रामदानी द्वारा एक प्राम मंत्रार भी चुनना। सप हुआ कि हरएक कार्यकर्ता सचय सर्वोदय गुण रहने वाले १० विन बन्ये।

रत्नागिरी जिला राठी-संघ

रत्नागिरी जिला राठी-संघ की स्थापना सभा गोपुरी अध्यक्ष में २ सितंबर को हुई। जिले भर के अधिकतर सदस्य इसमें उपस्थित थे। आब तक श्री अण्णासाहेब पटवर्धन उपस्थित होकर सर्वोदयन कर सभा में किया करते थे। लेकिन इस बार पदायता के चरले नए लगे।

इस बार यहाँ में मुख्य विषय संघ के परिषद के बारे में था। वर्ष १९१९ से राठी-संघ अपनी शक्ति के अनुसार लाठी-प्रयोगों और सभा-परिषदों का कार्य कर रहा है। संघ के मुख्य अंग ये हैं: चरलों का प्रसार, साठी उत्पादन-सिन्ने, साधुन बनाना, मृत बानयों के बचपों

महाराष्ट्र सर्वोदय मंडल द्वारा पूना के वाद-पीड़ितों के लिए उद्योग-केन्द्र की स्थापना

पूना की वाद में विनाश मगन, उमाना-आदि सब बच गये, ऐसे लोगों को अत तक सहाय करे, सामग्री रूप में और कुछ बर्तकों से कई तरह की सहायता दी गयी है। लेकिन इन सबके पुनर्वसन की बहुत धी समर्या है और यह दीर्घ काळ की समस्या है। पहले का साथ बह गया और अब मई-जुनकी राठी बनी है, ये बाढ़-विद्येन से केहर सबके माय बड़े हुए हैं। लताम मल केने रहना, जिरी को भी प्रतियोग्यमें नई मसहल होगा। सारे परिचार की व्याप में ही कुठ शक्ति को, ऐसी कुठ व्यवस्था होनी चाहिये।

सर्वोदय-कार्यकर्ता इसके लिए कुठ दिन से प्रयत्न कर रहे थे। आब पूना में एक उद्योग-धन्धे हैं, उनमें से हरएक परिचार के अन्य लोगों को काम मिलेगा, यह भी समर नहीं। इनसे सब लोगों को संभाल लेने की, व्यक्तियों की शक्तिनुसार उनको काम देने की समर्थता इस उद्योग में नहीं। पुनः उद्योग में के बानयुक्त कर कुठ काम ठीक कर ख नये काम निगल कर उनमें वाद-विधिर परिचारों की काम मिले, इस दृष्टि से सर्वोदय मंडल के कार्यकर्ता विचार कर रहे थे। उसके अनुसार पूना के प्रामाष्ट्र केस संघ, महाराष्ट्र प्रायोगिक मण्डल, सल-सिन्नेन व्यादि संस्थाओं के सदस्यों के

का सहायता करना, मान और की खाद बनाना, चरतो और विने को भी उपयोग में किया जा सकता है, यह लोगों को समझाना। मृत बानयों का चमटा उतारने के काम को हीन कर माना जाता है, इसलिए हरिकों ने भी उसका व्यवसाय। उसकी उपयोगिता, पवित्रता की बलना लोगों को देने के लिए जगद-नाग पर जिले भर में १२ सैज-सप-केन्द्र शुरू किये गये हैं। सबमें हिंदू में लगन से उनमें काम कर रहे हैं।

श्री अण्णासाहेब पटवर्धन ने सारा का एक साहब बनाना है। उन निर्मित 'गोपुरी संघाट' से केहर गैल स्पन्द है। संघाट एक एक प्रयोग के संघाट उत्पत्ति बन्ये। इस प्रयोग के लिए गोपुरी आरम बना और यहाँ आब समझना का शब्द चल रहा है। जिसे भर में विधियों को आयोग्य करने सारा और मृत मुक्ति की भाव-सहायता लोगों को समझाई जाती है। यह सारा काम समाज-परिजनार का काम है। प्रयोग चलने रहते हैं, इन्हें हर साल आर्थिक हाथि होनी है। इन हाथि की पूर्ति के लिए साठी-निधि का कार्य व्यापक परिमाण पर करना चाहिये, अन्य उद्योग भी बनाने चाहिये, इस विषय पर विचार-निर्माण हुआ और हमने इस विचार को स्वीकृत किया।

महाराष्ट्र सर्वोदय मंडल के मंत्री एकनाथ मगत ने रत्नागिरी जिले में एक सहाय देना दीना किया। आग्ने, औद्योगिक और विपुल रूप प्रामदानी गाँवों में जाकर निरीक्षण भी किया।

इस हल काम का संवेजन करने के लिए एक उपस्थिति विद्युक्त की गयी है। उनमें श्री चैतन्दास मेहता, अण्णा, अ० मा० साठी-प्रामोयोग अयोग्य, अ० श्री पद-सहायता सहायिनी, श्री ४००० पारील, अण्णा महाराष्ट्र सर्वोदय मण्डल और श्री ४००० देवयों आदि १५ व्यक्ति हैं।

मूलन-युक्त, युग्मगत, ६ सप्टेम्बर, '६१



सरजनरु में २-१ अक्टूबर को प्रांतीय प्रातिनिधिकों की एक बैठकी के आयोजन का कार्यक्रम था। कार्योत्पत्तिक्रम में बताया गया है कि इस आयोजन की अध्यक्षता सर्वोत्तम रूप से अध्यक्ष श्री मदनलाल चौधरी करेंगे।

सरजनरु गांधी स्मृति निधि उद्घाटन में मन्ने सिनेमा-गोस्टर्लियों के संघ में सिनेमा-गोस्टर्लियों को पूर्वसूचना दी गयी है कि सिनेमा के अशोभनीय पोस्टर खर्च हटा दें, अन्यथा प्रातिनिधि दंग के इताने को जनतक बाध्य होगी।

सत्याग्रह के पहले शराब का ठेका बन्द

दिलार मिल्स सर्वोदय मण्डल की ओर से यह प्रस्ताव वापस करने पर कि ११ सितम्बर 'विनोबा-जयन्ती' तक अगुए पंजाब सरकार लखीव पद्मावती के भण्डू बलों के प्राय में शराब का ठेका बन्द करती है तो २ अक्टूबर 'गांधी-जयन्ती' तक सत्याग्रह प्रारम्भ किया जायगा। सुधी की बात है कि पंजाब सरकार ने टोक म्याद सितम्बर की तक प्राय में शराब का ठेका बन्द करने का आदेश दे दिया।

भीमबाड़ा जिले में शराबबन्दी अभियान

भीमबाड़ा जिले में शराबबन्दी कायम विनोबा-जयन्ती के शुरू हो गया। इस प्रकार के प्रचार-कार्य बाद में २६ जनवरी १९६२ तक अगुए सरकार पूर्ण शराबबन्दी नहीं करती है। सत्याग्रह किया जायगा।

भूदान-आंदोलन का दशक

राजस्थान में भूदान-आंदोलन : एक नजर में

राजस्थान-भूदान-यज्ञ क्षेत्रों की ओर से प्रकाशित एक विज्ञापन में बताया गया है कि अगस्त १९६१ तक राजस्थान में भूदान-ग्रामदान की स्थिति इस प्रकार है :

ग्राम भूमि	४,९६,१२१ एकड़	स्वाभि भूमि	८५,१९५ एकड़
राजा	८,६४२	रेश भूमि	२,४८,१२० एकड़
भूमि-विरासत	१७,८०६ एकड़	ग्रामदान	२२२

विनोबा का चरमा

कुछ रोज पहले विनोबा का चरमा टूट गया। उन दिनों बाबा लखीमपुर के छोटे-छोटे गांवों में हों रहते थे, इसलिए कठोर ८-१० रोज विनोबा ने बिना चरमे के ही काम चलाया। सब काम और धारम यथासक्त चलती रही है। किङ्गड पड़ने पर बाबाओं की जांच करते विनोबा की नया चरमा तैयार होगा।

असम में ग्रामदान और उसके बाद निर्माण

श्री लोचनचर चौराई, अम्पड़, अहम सर्वोदय मण्डल द्वारा भी भूमि, सर्वोत्तम रूप से को मिले गये उन का उद्घाटन :

“पुत्र बाबा श्री मेरखदायक पद्मावती से वातावरण बना और वहाँ पर काम मजबूत आधार पर सजा करने के लिए हमने सतत कोशिश जारी रखी। हमारे १५-२० कार्यकर्ता उस क्षेत्र में बाकी ग्राम ग्रामदान में प्राप्त करने के लिए काम कर रहे हैं। जमींदार करता है कि १ अक्टूबर तक और कुछ ग्रामदान प्राप्त हो जायेंगे। पुत्र बाबा के सुहाय के अनुसार असम सर्वोदय मण्डल का कार्यालय मार्च सारायपुर सचय क्षेत्र में और मण्डल की निर्माण-समिति का कार्यालय ग्रामदानी क्षेत्र वाटघरिया अंचल में स्थापन किया जाय। मण्डल का कार्यालय वहाँ स्थापना करने का निर्णय लिया गया। हम अपनी ग्रामदानी गाँवों का सर्वे, ग्रामदान-विवरण, ग्रामसभा व प्राय-समिति निर्माण आदि का काम रहे हैं।”

इस अंक में

विद्या और राष्ट्रीय परता	१	सौराष्ट्र देव
विचार-संकलन	२	विनोबा
बच्चों साहित्य के पत्रक 'कोई भीतर नहीं समावृत्ति	३	—
नया हम गांधीजी की मूल भी सफे हैं ?	४	मण्डल-गुण
समाज-परिचय, जीवन-योग्य की प्रतिष्ठा	५	सामुहिक
सिद्धि प्रोबलून की चिट्ठी	६	नाएण देवार्थ
'विनोबा का बहस्य	७	—
विहार में दलों के लिए आचार-संहिता	८	—
महासभा की चिट्ठी	९	—

विद्यार्थी मंडल, का० मा० सर्व सेवा मंत्र द्वारा मार्ग मूल्या प्रेष, वाएणसी में मुद्रित और प्रकाशित। वतः राजपाठ, वाएणसी-१, जून २० १९५० एक संकः १२ नं० १९

किस में जमीन-महाराष्ट्र साहित्य मंडल कि संकल-प्रायस का राष्ट्रीय एकता समिति के नियंत्रण-सलनरु में शांतिमेवा रेती और अशोभनीयता विचारण मुद्रित।

विभाजन के फलस्वरूप पूर्वी पंजाब से भी जमीन-मालिक जमीनी जमीनें छोड़ कर पकिस्तान चले गये थे, उनको जमीनें पश्चिम पंजाब से आये हुए जमीन-मालिकों को वहाँ पर छोड़ने दूने, उनकी जमीनें के बहने में देने के बाद पंजाब बंद करार एकदम लागू बकी थी। इसके बारे में पंजाब सरकार ने यह फैसला किया है कि उठे नौलाम करने का अन्वय तरीके में बचने के बजाय पॉच पॉच, हल-रुस बर्न की अवधि के लिए हरिकर्मी तथा अन्य बेरुजल मिले गये मुबारों को यह दे ही जाय। पॉच या रुस राक की अवधि समाप्त होने के बाद वे लोग उध जमीन की कौतुक फिल्लों में लुप्त कर उठे लौट कर चकेंगे।

बाई (महाराष्ट्र) में संतोष और विदानी की एक छोटी-सी बरती बनाते का महाराष्ट्र राज्य साहित्य और संस्कृति-संरक्षण ने घोषा है। मराठी के अग्रज विचारक विचार करने का काम बर्नो बछेगा। इसके लिए महाराष्ट्र सरकार ने १५ लाख रुपये की मदद दी है। यह काम पॉच साल में पूरा होने की आशा है। विश्वदोष की प्रथम आकृति निकलने के बाद विश्व मित्त प्रयोगों के अनुभव का काम शुरू होगा।

कामिसे की ओर से निवृत्त राष्ट्रीय एकता समिति ने देशनागरी की दिग्दर्शन की सर्वोदय-सिद्धि के रूप में “आम टौर” पर आगो रसोयित दी है। समिति की मीटिंग ता० २७ सितम्बर की भीमदोष दृष्टिवा गांधी की अध्यक्षता में दिवसी में हुई।

समिति ने राजनैतिक पार्टियों के लिए एक सर्व-सामान्य आचार-संहिता के प्रश्न पर भी चर्चा हुई। सदस्यों ने यह राय व्यक्त की कि बग रुस प्रकर की आचार-संहिता के पालन करने के लिए कोई संन नहीं होगा, वरत तक संश्लेषा अकार-रानी नहीं होगी।

बनने यह तस्मिन् कामेठ पार्टी की ओर से निवृत्त की समी है, पर एक बैठक में प्रजा-समाजवादी नेता भी अगो कौतुक और की मंग-सचरण लिल सचय अन्य विम-तित सज्जन भी उल्लिखित है।

विद्यार्थी मंडल, का० मा० सर्व सेवा मंत्र द्वारा मार्ग मूल्या प्रेष, वाएणसी में मुद्रित और प्रकाशित। वतः राजपाठ, वाएणसी-१, जून २० १९५० एक संकः १२ नं० १९

विनोबा पद्मावती-पु

ता० २१ सितम्बर के २० के दिनों में सर्वोदय मण्डल द्वारा वाएणसी, राजपाठ, वाएणसी तथा वाएणसी में अग्र पद्मावती में विनोबा ठेकिले। जो और भी सत्वेमार्ग पेटल की बीच में बाधा के मिलने आये थे। इस सब लोगों के अनेक महसूस के विषयों पर चर्चा हुई।

सर्व सेवा संघ के नये प्रकाशन

(१) वैनविनी १९६२

एक १९६२ की दैनिकी २ अक्टूबर को प्रकाशित हो गयी है। संगने बने कचन कश्मिल करे। विमार्ग हावक की साधारण दैनिकी का मूल्य २) है और १) कोरे प्रती बाली का ३ ३० १५ नं० है। किस प्रकार की दैनिकी काहित्य इनका उल्लेख शुरू रूप से करना चाहिये।

(२) नगर अभियान : विनोबा

द्वितीय नगर में वाग लिखे करे एक महीने तक रहे। बर्नो उनकी बी अमरुप पर्यो हुई, उधका सलन प्रकाशित भी गया है। वृत्र-संख्या ३२८, मूल्य २ ३०।

(३) सधुसुधे : सांस्कृतिक-संस्कृतिक

मुमुदेर उठे आणक-रानी के लेख पर प्राशुतिग उनकरके के उद्योग का विवरण। मूल्य ७५ नं० १०।

(४) विदेशों में शांति के प्रयोग : मार्तरी साहस

विदेशों में आन मंथर दिशा के वातावरण में अहिंसा और शांति के जो प्रथन कर रहे हैं, उनका सविन शोधक तथा शक भाग में। वृत्र-संख्या ८८, मूल्य ७५ नं० १०।

अ० भ०० सर्व सेवा मंत्र-प्रकाशन राजपाठ, बरती

मूदान यज्ञ

साप्ताहिक

मूदान-यज्ञ मूलकाद्यसोद्योगप्रधानतःओहित्यकालिकाप्रतिष्ठासहित्यस्यैवहकते

संपादक : सिद्धराज बड्डहा

१३ अप्रैल '६१

प्राग्वही : झुकराज

वर्ष ८ : अंक २

हम मालिक नहीं, सेवक वनें !

विनोबा

सूत्रसंकेत अक्षर को प्रेरणा-स्रोत थे। जो भी चीज आर बढ़ाती है उसका मूक बड़ा तक पहुँचेंगा ही। साहित्यिक साहित्य की चर्चा करने तो सरकारदेव को साहित्य तक पहुँचेंगे, समाज-सेवक समाज-सेवा को बात करने तो सरकारदेव की प्रेरणा से करेंगे। साप्ताहिक चर्चा में तो वे आवेंगे ही। लगभग हर चर्चा में वे आयेंगे। नाटक की चर्चा में भी उनका नाम आयेगा, क्योंकि उन्होंने नाटक भी लिखा था। वे ऐसे पुरुष थे कि जहाँ भी जाय वही हट जाता है कुछ-न-कुछ लिखा।

विर भी एक बात याद रखनी चाहिये। महातुलों के जो गुण होते हैं, वे कभी कभी उनके मूल स्वरूप को खींचते हैं। ऐतरेयविर की चर्चा चलनी, तो उनके साहित्य के बारे में होनी। रामदेव के बारे में भी साहित्यिक उनको साहित्यिक सम्यक रूप उनके गहिल की चर्चा करेंगे। वह भी उनका दुर्दिन मानना ही, हालाँकि मैं किसी साहित्यिक ची देवी चर्चा के दौरान नहीं। ब्रह्म में प्रवेशिका चर्चा की कि सरकारदेव की सम्मति पर ही न करने अपना विचार लिखा है। कहीं सरकारदेव का नाटक लिखेंगे। यदि संभव होगा तो उनमें भी सरकारदेव के साहित्य की चर्चा होगी। इसे मैं सरकारदेव का दुर्दिन ही मानता हूँ। हम आर उनके साहित्य के बारे में ही जो चर्चा की उनका साथ हमें नहीं मिलेगा। इस दृष्टि से सचचे भाग्यवान नबर एक भी मिलते तो वह हमसद सेवक। उनकी चर्चा में उनको साहित्यिक सम्यक रूप चर्चा नहीं होगी। वे साहित्यिक नहीं थे, क्योंकि वे न ब्रह्मा जानते थे, न लिखते। इसलिए वे बच गये। लेकिन उनका भी एक अन्य दुर्दिन था। वे राज्य-संस्थापक हो गये। इसलिए सामन्तिय चर्चा करने तो उनकी भी चर्चा करेंगे। एक राजनीति के गाने और एक पीछा के गाने उनको चर्चा होती है।

विनोबा देवी चर्चा नहीं चलती है-न साहित्यिक के गाने, न राजनीति के गाने-ऐसे आचरण भाव में हो गये गीतानुष्ठान। वे थे विद्वान, लेकिन उन्होंने लिखा नहीं। इसलिए साहित्यिक उनको चर्चा नहीं करने। वे राज्य छोड़ कर चले गये, इसलिए उनकी राजनीति के बारे में चर्चा नहीं होगी। उनके कम दिन पर देवी की चर्चा नहीं चलनी, पुत्र वर्धन चर्चा की चलेनी।

यह भाग्य ईश्वरदेव को हाविल नहीं है। इसलिए उनके बारे में विविध चर्चा चलनी और लोग उनमें विविध रस लेते।

महातुलों की चर्चा करना का भाग में उनके साहित्य के नहीं चर्चा में। उन लोगों में जो साहित्य लिखा है, वह उन बचन की परिचित है। परिचय ॥ लिखा है। उनके

उनका सम्बन्ध नहीं होगा है। वह सर्वत्र उनके हृदय में होता है, उनके चरित्रों में प्रकट होता है। महातुलों की चर्चा, कल्याण, कल्याण, कल्याण, वे गुण हूँ के होते हैं। पर उनके बचने में उनके साहित्य और काम की तरफ ही हमसद ध्यान बचा है, अपने आम देना, उनके रम और रूप की कल्पना की, रस मिचने का कठोरि में रसा। विनोबा मुसुर रस है। वे कल्पित, लेकिन सारा नहीं तो आगने क्या किया। जो अक्षर बाल देना, वह संसार में नहीं पहुँचें, यन्त्रा मारम कर देना। वे साहित्यिक संकटरेव को चप नहीं लगे। वे उनका संरक्षण, चचे दक्षिण ही देना रते। लम्बन वेवक उनके काम के बारे में चर्चा करेंगे, लेकिन उनका रस उनमें नहीं है। उनकी पर-निष्ठ पर भ्रम ही, उनमें उनका रस है। उनका संकलन परमेस्वर में उनकी जो भ्रम है, वह है।

आज के दिन हम क्या लोचें कि हम सरकारदेव की ही मानव हैं। मयमान ने

उनको भी चीज ही जो रही हमें ही। कोई चर्चा नहीं है। इसलिए उनमें को निरा को, वह हममें हो सकती है। लोग सम्यक्त हैं कि सरकारदेव को महातुलन थे, हर यतुन जोके ही महातुलन को कलन है। मैंने इन पर विचार ॥ लिखा है। मैंने लिखा है कि हर मनुष्य विचारय को कलन है, हाला कि हर एक मनुष्य संपूर्ण ही या मया सतमान नहीं तो सदा। कते हैं कि सरकारदेव ने हापी को नयाव था। इन का आर हापी को नय नहीं लखेंगे। लेकिन आर और नबर दोनों को उनके विवे निरपटंड बन गये हैं। पर बहुत आवाज है। विर हम को करो है, वह न करने की ला है। हम को-करते हैं, हाय भी उदारी हैं, सपर भी चंच देते हैं। इन तक गुला चले में बचन चर्चा चरचें होती है। इन लगे आर चते, याने वह कुछ करना नहीं। आर और हम बूट नारा करते हैं। एकले जिज्ञासे, उदके जिज्ञासे, इन्के काम में वह बात न पहुँचें, उनके काम में वह बात न रहे। पर जिज्ञासे कदा कि 'छाव नोले। वो कुछ करना ही नहीं रहेगा। याने कल्पे 'आठनी' नय आरते। विचिठे गुणा मय करे, यह वान बालनी को भी लपेनी, नचेंकि हमने न करनी की ही बात है।

पहों को लन करने की ही बात है। उनमें वे कामभवा रती तो किनी तकनीक मोगनी पती। पर सारा का क्या कामभवा नहीं रचना। जो चीज चार सारा के बचने को भी करी है, वह हमें नहीं मिलेगी। आर हम में देव हो तो लय में अच्छे नींद नहीं आनी। देव करो है तो उनका अनुमान बैसे करना, वह सारा कोयमा फेना। इसलिए पहों नींद नहीं

२६ सितम्बर से २ अक्टूबर तक के साप्ताहिक अक्षर की विनोबा-पर्यात्रा में—
 भागदान-अक्षर : १६
 साहित्य-विचार : १४० ह०
 लोकसेवक : २२

आनेगी। जिज्ञासा मानव, देव मत कते को आनंद ही आनंद रहेगा और सत में आर बने आगने के जो बचने। यह तो निरनुक भावनी को भी लय सपर है। इसके मनुष्य छाते पायेगा।

इकलिय हम मयमान से देवी प्रार्थना करें कि हे मयमान, हम देना तुम्हारे करेंगे कि अगले समय लय करें, याने न करने सपरक कुछ न करें। ऐसी वेला आर मिले ही सरकारदेव का नाम दिन सारें। नहीं तो उनका साहित्य देना है, उनमें वीर (क, म्कार) रस कैला है, रच चर्चा के हमें कोई लय नहीं होगा।

अक्षर में आने के बाद एक सभ दि मैंने कहा था कि अक्षर मेरे लिखा की बचनदा है। यह भी मेरे मेरे लिखा कि यह मेरा ही पर है। सरकारदेव मेरे पर हैं और मैं उनका भेदा हूँ। हम सत देते महातुलों की कलन हैं, पर हम परमान और उनके लयक हम करते तो उनका भारीपार हमें हाविल होगा। मयमान और महातुलन, दोनों मय के लिगे विचार करते हैं। लेकिन कम काम ही देना करो है कि उनको मरद हो ही नहीं, मैंने देला नाम कते हैं कि विनोबा सरकारदेव की मरद भी बचन ही नहीं है। अगर आर मरद लेगे तो वे तीव्र हैं। आगे आगे रते हैं, लीं सते, देना प्रसार सते कि इन गीते नहीं।

पहों प्रार्थनाएं हम आने लामने रच रहे हैं कि कल्पे सार वे सुको और अपने गुण वे ॥ ली यह यतुन का नहीं, बचन का सपर है। लिख की विचार चर्चा को नहीं होगी है। पर सदा का सया है कि अपने गुण से सुनी और अपने गुण से सुनी। पर भिन्ना नहीं है। मकि मानें यह है कि तुने के गुण के सुनी और तुने के डल के सुनी, किसे कि हम सुनी की मेरा करे, हाथों के डल लें, मय लें। लेकिन पहों साहित्य पर देते हैं। हम देवक हैं और वे लार नरजने, सारा हमारे लामनी है। महातुलों के समक के यह सकि आर बचन तो यीन का गेना रन भाग, देवी की चर्चा हममें चरते है।

लोग तुने हैं कि इन क्या करें। इन मुद बूटन सुनी है। पर सयाम में देते मनेपे सुनी पदें हैं कि जो सयने के मयान को रहे हैं, उनको उपेक्षा हो रही है। उनकी सेवा नहीं करनी है। उछने देवदर सेवा, उनसे देवदर रसयम सकि चर्चा को हैनी। मनें वे कदा, हमें सुचित नहीं चरते। आना कुछ है। इन हर चरण कते कते आने हैं। वे सत करते, सयम मकि करते आने हैं।

भा० १५ सितम्बर की अक्षर के लं सरकारदेव ॥ अक्षर के अक्षर पर प्राग साहित्य (जिज्ञा विनयमान) में लिखे हुए अक्षर का सार।

असम सरकार की गांधी-जयन्ती की भेंट

ता० १ अक्टूबर १९१० को असम विधान-सभाने सर्वानुमति से 'ग्रामदान एक्ट' स्वीकृत किया।

ता० २९ जून १९११ को 'विधान सभा की ग्रामदान-बिल के लिए नियुक्त की हुई 'सिलेक्ट कमिटी' बिल के बारे में पत्रों करने के लिए और विनोयानों के मार्गदर्शन के लिए उनके पास ध्यायी थी। बिल पर बहुत गंभीर और विस्तृत चर्चा हुई।

विधान-सभा का कार्यक्रम इस दृष्टि से बनाया गया था कि यह बिल 'गांधी-जयन्ती' के शुभप्रसंग पर स्वीकृत हो। अतः गांधी-जयन्ती के अवसर पर असम सरकार की अपने राज्यकारियों को यह भेंट दे।

मार्च अलीपुर में हुए कैफ़ेई ग्रामदान के धारापरम के लिए यह 'एक्ट' बहुत अट्ठहाल है। इस कानून की बंद विद्ये-पता है कि यदि बीच परते के छोटे गाँवों में भी अपनी भूमि का स्वामित्व विस्-

तित किया और जमीन के स्वामित्व के सम अधिभार गोंव के समाज को समर्पित किये, तो उन बीच परते के समूह को ग्रामदान माना जायेगा और उनको पंचायत के वती सब अधिकार मिलेंगे, जो दाईं ह्वार आचारी की पंचायत को मिलते हैं। इससे ग्रामवासियों गाँवों में एक बहुत बड़ी शक्ति पैदा होगी। असम का यह 'ग्रामदान-एक्ट' भारत में अपनी तरह का पहला ही कानून है। उसके बारे में भारत को मार्गदर्शन मिलेगा, ऐसा आशा है।

वस्त्र-स्वावलम्बन की दिशा में ...

ग्रामभारती आत्मन, टनशार्ड, (शि० धार, म० ३०) के कुमार मन्दिर (सुविधायी बाल्य) में 'गांधी-जयन्ती' के निमित्त से १३ दिन का प्रत्येक और १२ घण्टी का अलसत्त चल-पल चल। सिक्कों, सिधायियों और कार्यकर्ताओं में इसमें भाग लिया। १३ दिन में १ से ३० बॉ कला तक के कोई २५ बालकों में कुल ८०० गुरुधर्मों परत जाता। इसी बीच कार्यकर्ताओं ने २५० गुरुधर्मों पाता। अलसत्त चल-पल में कुल १२१ गुरुधर्मों का।

श्री दौं हुलाई से दो अक्टूबर तक हमारे छोटे-से परिवार ने लगभग १२०० गुरुधर्मों परत काता। इसके आभार-परिवार का बन्ध स्वावलम्बन बड़ी बढ़ तक सिद्ध हुआ है। इमार मन्दिर के छात्रावास में ८ से लेकर १५-१५ की उमर के कुल १९ छात्र हैं। सिक्कों सहित १ कार्यकर्ता हैं। यों मन्दिर के छात्रों सहित कुल ३२-३३ छात्रियों के सहयोग से इस बरत परतल में हम १२०० गुरुधर्मों तक पहुँचे हैं। सिक्के

इस साल से हमारा यह प्रयत्न चल रहा है। इस साल हमारी अरेवा से बापी कमर, हर साल के लगभग कलौदा काम गांधी-जयन्ती के निमित्त से हो पाया है। ता० ६-१२० की स्थिति से काजू का नगम-बिल है। हमने नगम प्रेषण केप के माधुमिकियों की मदद के लिए एक दिन एक-एक गुरुधी प्राप्त करने का निश्चय किया है। लगभग ५० गुरुधी कल सकेंगी। (एक पत्र से) —नातिनाय त्रिवेदी

(५) चुनाव के बाद एक पक्ष के 'टिकट' पर चुने गये व्यक्तियों की विना अपनी जगह का त्यागपर दिखे हर दूसरे पक्ष को चाहिए कि ऐसे अपने पक्ष में प्रवेश न दे।

(६) चुनाव-पत्रार के किसी भी काम में १८ वर्ष से कम उमरवाले

विद्योरो का उपयोग न हो, प्यान रहे।

(७) चुनाव के समय पालक लोग कोई धारापरम-योगी संग हो जाके उक्त पार्टी को हर्ष में ही प्रकट कर देना चाहिए तथा उसकी पुनरावृत्ति न हो, ऐसा उसे ब्यान रहना चाहिए।

'गांधी-जयन्ती' से मलयपुर में शराब की दुकान बंद : बिहार सरकार का निर्णय

सिक्के १ महीने से मलयपुर (बिला-मुंगेर-बिहार) में शराब की दुकान पर ही धारिणी परिधि बंदों के निवासी और बिहार के पुराने रचनात्मक कार्यकर्ता भी एक-पक्षवासी चतुर्वेदी में शुरू किया था, यह गांधी-जयन्ती के दिन सारकार-पक्ष कानून हुआ है। बिहार सरकार ने गांधी-जयन्ती के जन्म-दिवस, दो अक्टूबर से मलयपुर की शराब की दुकान बंद की है।

गांधीजी के निर्णय-दिवस, यह ३० जनवरी से थी समाकलनी ने अपनी अन्तःपुर से इस दुकान पर एक-की रिपेटिंग शुरू किया था। कुछ दिन बाद शल के अन्य रचनात्मक कार्यकर्ताओं तथा बिहार सर्वोदय-संगठन का समर्थन भी इस सत्प्राप्त की बात हुआ और जनसमूह भी

इसके पक्ष में बढ़ल गया। सिक्के १ अक्टूबर की भी सत्यप्रकाश नाटयमही भी मलयपुर की छात्रव की दुकान का रिपेटिंग की। बिहार सरकार ने अन्तःपुर की मांग का आहार करने के अन-सत्प्रा की धारण की दुकान बंद करने का सत्प्रा नीय कदम उठाया है।

अलीगढ़ के दंगे में शांति-सैनिकों द्वारा शांति-प्रयास

अलीगढ़ में विधायित्वम के छात्र-मुनिप नुनान को डेकर अक्टूबर की धार्याधिक दंगा हुआ, शिवमें १० अर्थिक बारे नये और कई सारक हुए हैं। वेले साथे समाचारों से सारक हुआ है कि रिपति बाजू में है। नगर में दंगों के पक्षरूप का तनाव भी रिपति है, उषरो

बुर करने के लिए अन्तःपुर शांतिम मन्त्राल की सर्वोनिन भीमली आचार्यी आर्यानाक-के आदेश पर खीं सेवा हर के कानी किया साहित्य विद्यालय के बर शांति सैनिक अलीगढ़ गये हैं। उ-का शांति सेवा मन्त्राल से भी अरेवा है कि वर प्यादा संस्था में धारि-नीतिक मेरें।

चुनावों के समय राजनीतिक पक्षों की आचारमार्गदा के लिये सर्व सेवा संघ के सुझाव

अखिल भारत सर्व सेवा संघ के मंत्री श्री पूर्णचन्द्र जैन ने संघ की ओर से आगे चुनावों के समय राजनीतिक पक्षों की आचार-मार्गदा के लिये सात मुद्दे सुझाव के रूप में प्रवेद्योग सर्वोदय-संगठनों को वरिपत्रिता त्रिये हैं। वे किना उर्वानियम के लिये नीचे दिये जा रहे हैं।

(१) राजनीतिक प्रचार के प्रवाह में दूसरे पक्षों की टीका-टिप्पणी करनी हो, वो उनके नीति-नियम और कार्यक्रम पर प्रमुखतया विचार करना चाहिए। उसी तरह दूसरे पक्षों के नेताओं या कार्यकर्ताओं की टीका-टिप्पणी करने समय उनके सार्वजनिक जीवन से संबंध न रखने बाडे ब्यपिगत मामलों में बसल्य या मिथ्या प्रचार नहीं करना चाहिए।

जिससे जाति-जाति, धर्म-धर्म या कर्म-कर्म में द्वेष पैदा हो वा कर्मों कटुता बदे।

(२) राजनीतिक पक्षों को चाहिए कि अन्य पक्षों की समा, सुल्लस आदि कार्यक्रम में भाग्य पैदा न करें वा दंगा करके उनको अल-न्यस्त न करें।

(३) किसी व्यक्ति को एक पक्ष द्वारा 'टिकट' के लिए प्रचार किये जाते वर उस व्यक्ति को दूसरे पक्ष उसी चुनाव में अपना 'टिकट' न दें।

—श्री देवरवर्मा ता० २५ विवासर को दिल्ली के लिए रकना हुए। शरा के साथ उनकी गोप्य-सभ और राष्ट्रीय एकाधीनता के बारे में चर्चा हुई।

—बिहार सर्वोदय मन्त्राल के आप्पव श्री गौरीनाथ, जो बन्ध के साथ चर्चा करने के लिए आये थे, आदेश (अन्तःपुरा धार) के साथ सिद्धम गये। वे वहीं से आने बिहार की ओर गये।

—श्री भी सत्यप्रकाश, प्रयागकी बहन, आकरना देव, कीमन्धारी बाबा के निक कर ता० २७ को सारक रहना हुए।

—श्री रामाङ्गणनी मन्ना १ अक्टूबर को यहाँ से सारक गये।

—असपरजद श्री सर्वोदय-कार्यकर्ता भी सत्यप्रकाश अपनी छठकारी भी मंगा बदन के साथ यहाँ आनी हैं। १०-१२ रोज थागा में रहने का उनका कार्यक्रम है।

बिहार में आचार-संहिता मान्य

साथे समाचारों के अनुसार बिहार सर्वोदय-संगठन द्वारा प्रस्तुत आचार-संहिता समय की स्थिति राजनीतिक पार्टियों द्वारा सर्वोदय-संगठन से स्वीकृत कर ली गयी। एक नीतिक पाठियों के प्रत्येक की बैठक ता० १ अक्टूबर को बिहार के मुख्यमंत्री श्री विनोयानंद झा की अध्यक्षता में हुई। आचार-संहिता के लिए पूर्व-चर्चा के दौर पर सिक्के बार २५ विवासर की हुई तथा में जो दुदे पैदा किये गये, वे आम तौर से सौभार कर किये गये।

अपने विचार प्रकट करने हैं। सिद्ध या भाषा से संबंधित कई तारीखों की बातें होती हैं, जिनके बारे में एका-सम्मेलन के निवेदन में जो विचार प्रकट करने हैं, उनके सम्बन्ध हो सकता है। इन विचारों की तारीखों में हम अपने कर्मा जने की योग्यता करेंगे।

(४) सम्मेलन से बढ़ भी महत्व दिया कि राष्ट्र में एकता की भावना बनाये रखने के लिए यह भी जरूरी है कि देश के हर क्षेत्र और हिस्से के विचार पर ध्यान दिया जाये और राष्ट्र का विकास समीचीन ढंग से संतुलित हो।

(५) सम्मेलन के निवेदन के आधार पर, संक्षेप में ही थोड़े, पर इस विचार को भी स्पष्ट किया है कि देश की शक्ति के आर्थिक विचार को और ज्यादा ध्यान दिया जाना चाहिए और राष्ट्र की आर्थिक शक्तियों और व्यवस्था अधिनायक नियंत्रित होनी चाहिए।

उपरोक्त निर्णयों को कार्यान्वित करने और राष्ट्रीय एकता के प्रश्न पर आगे भी आवश्यक काम उठाने की इच्छा है प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में एक राष्ट्रीय परिषद का निर्माण किया गया है।

इसमें कोई शक नहीं कि एका-सम्मेलन से अपने निवेदन में उपरोक्त निम्न दो बातों की ओर संकेत किया है, ये राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने की इच्छा से प्रत्येक के प्रश्न हैं। सम्मेलन के निवेदन में इन विचारों पर जो ऊपर की बातें आयी हैं और जो अपने चारित्रिक की गयी हैं, उनके बारे में और अधिक सोचने की जरूरत है, ऐसा हम मानते हैं। उनमें से कुछ के बारे में मतभेद भी हो सकता है। पर कुछ बात यह है कि इन प्रश्नों के प्राधान्य और अन्य महत्त्वपूर्ण रूप पर राष्ट्रीय जीवन के विविध क्षेत्रों में अनुसंधान और प्रसार एक नया पर मिले, उन्होंने राष्ट्रीय एकता के प्रश्न पर विचार-निमित्त किया और अन्त में सर्वप्रथम नतीजों पर पहुँचे। विनोबा भण्डार करते रहे कि अगर राष्ट्र की सशक्त विकास और उन्नति के पथ पर ले जायें तो ही निमित्त विचारों और बातों के कारण महत्त्व कायम रखने हुए नी कर दें, जिनके रचनात्मक कार्यक्रम हो सकते हैं, जिनके बारे में सब लोग मिल-जुल कर एक सोच बनाने हैं। ऐसा हो तो विचारभेद भी अपने आसक्ति और ऊँचे स्तर पर लोगों के सामने पेश होने तथा राष्ट्रीय जीवन का स्तर भी ऊँचा बढ़ेगा। सन् १९५५ में विनोबा-भण्डार के समय हम प्रसार के सर्वप्रथम कार्यक्रम और राष्ट्रीय एकता की ओर परका करके उठाया गया था। यह परिषद ही केवल यह और नितीनाथी दादा आचार्य की गयी थी और इन्होंने सभी निमित्त उप आगमन का आधार करने परिये में उपस्थित हुए थे और

राष्ट्रीय एकता-सम्मेलन में आचार-मर्यादा का प्रश्न

सांख्यिक व्यवहार को आचार-मर्यादा के सम्बन्ध में राष्ट्रीय एकता-सम्मेलन को निवेदन में कहा गया है—

इस सम्मेलन की यह धार है कि राष्ट्रीय एकता को कायम रखने और बढ़ाने के लिए, यह जरूरी है कि राजनीतिक पार्टियों, समाचार-पत्रों, विद्यार्थियों और आम जनता के व्यवहार से सम्बन्धित आचार-मर्यादा का भी ध्यान। सम्मेलन की यह भी धार है कि आने वाले आम चुनावों की दृष्टि में यह एक चुनाव-प्रणाली के निर्धारण में राजनीतिक पार्टियों के मार्ग-दर्शन के लिए एक विशेष आचार-संहिता भी तैयार की जाय। इन सब विचारों पर सम्बन्धित बातें से सख्त-समाधान मिले तथा सख्त आचार-संहिता तैयार करना समझ नहीं दे। सम्मेलन में उपस्थित लोगों में इस बारे में अग्र सहायता की राजनीतिक पार्टियों के लिए नीचे लिखी मर्यादा उल्लापनीकार को आया।

(१) किसी राजनीतिक दल को ऐसी कोई बात नहीं करनी चाहिए, जिससे भ्रष्ट-विषयक व्यवहार, पार्षिक-उपचारों या आचार्यी समूहों के बीच जो मौजूद मतभेद हैं, वे बढ़ें या परस्पर घृणा की भावना पैदा हो या जिनके कारण समाज पैदा हो।

(२) हर राजनीतिक दल को यह उपाय करना चाहिए कि वह किसी मामले में (अगर) कोई सम्बन्धित राय करे, तो उसके दिनांक को उल्लेख न मिले और न उस सम्बन्धित के दौरान दिशात्मक कार्यवाही की जायें। सब प्रश्नों के सम्बन्ध अग्र दिनांक ही परे जो उल्लेख उल्लापनीकार किया जाय।

(३) राजनीतिक दलों को चाहिए कि सहायता और बीच-बचाव के समान संभव उपाय कर लेने के पहले, वे चाँहि, सम्बन्धित क्षेत्र या माग्यवी तुल्य से सम्बन्धित निर्णयों (विचारों) को दूर करने के लिये कोई ऐसी सम्बन्धित राय न करें, जिससे शांति भंग होने का खतरा हो या जिनके कारण समाज के विभिन्न वर्गों के बीच घृणा का जन्म हो।

(४) राजनीतिक पार्टियों को चाहिए कि वे दूसरी पार्टियों की समाजों, उद्यम आदि कार्यवाही में बाधा पैदा करने अथवा भंग करने की कोशिश न करें।

एक सर्वप्रथम नतीजों पर पहुँचे थे, फिर भी यह एक नया और जेडा ही प्रयत्न था। सन् १९५१ का यह राष्ट्रीय एकता सम्मेलन इस दिशा में दूसरा और महत्त्वपूर्ण चरण है। सम्मेलन में जिन भावनाओं के प्रेरित होकर सब चर्चाएँ हुईं और उसके द्वारा एक सर्वप्रथम निवेदन स्वीकृत हुआ, वही भावना और प्रेरणा कायम रखें—और हम जाना करते हैं कि यह अवश्य कायम रहेगी—तो हमें कोई शक नहीं है कि यह सम्मेलन हमारे राष्ट्र के भविष्य में एक महत्व का संकेत-चिह्न साबित होगा। इस एकता के निवेदन में उन बातों के बीच मौजूद हैं, जो राष्ट्रीय जीवन को एक नयी दिशा की ओर ले जा सकते हैं और दुनिया के दूसरे देश भी हिलतुलान से विचकी अर्थवा-रखें हैं।

-सिद्धांत

सत्ता का उपयोग अपने पक्ष के लोगों के, व्यक्तिगत स्वार्थों को आगे बढ़ाने में ब-दूसरी पार्टियों के हस्तियों के दिनों को हथि-पट्टाने के लिये नहीं किया जाना चाहिए।

सम्मेलन की राय में विभिन्न राजनीतिक पार्टियों के प्रतिनिधियों को पूरे तथा प्राथमिक स्तर पर आचार-संहिता विकसित करने तथा परस्पर विचार-निमित्त के लिये आवश्यक तंत्र पदा करने की शीघ्रता करने उरना चाहिए।

इस सम्मेलन द्वारा जो राष्ट्रीय एकता परिषद कायम की जा रही है, उसे चाहिए कि वह आम जनता के लिये, विद्यार्थियों के लिये, समाचार-पत्रों के लिये और आम जनता के उद्यम पालन करने योग्य आचार-मर्यादा तैयार करने का काम करे।

(५) सरकार को चाहिए कि सम्बन्धित और व्यवस्था कायम रखने के लिये कार्यवाही करने समय नागरिक अधिकारों पर अनुसंधानक प्रतिबंध न लगाये, न देश को कष्ट उठाने दें, जिनसे राजनीतिक पार्टियों की राज्याधिक गतिविधि में बाधा पड़े।

(६) किसी भी स्तर पर राजनीतिक

राष्ट्रीय एकता-सम्मेलन द्वारा शांति-प्रतिज्ञा का विचार मान्य

अ-शांति-निवृत्त संघर्ष की ओर से सर्वप्रथम संघर्ष की शक्ति की शक्ति के रूप में यह उपाय आया था कि देश में बढ़ती हुई हिंसक प्रवृत्तियों को रोकने का प्रत्येक नागरिक शांति की प्रतिज्ञा करे, इसके लिए राष्ट्र-व्यापी प्रयत्न किया जाय। उसी दृष्टि में यह भी तब कहा गया था कि यह उपाय समाहित राष्ट्रीय एकता सम्मेलन के समान स्तर था। देश-व्यापी और व्यापकता प्राप्त करने सम्मेलन में यह उपाय पेश किया था, जिसे सम्मेलन ने सर्वप्रथम से मान्यता दी।

“शांति-प्रतिज्ञा” (निवेदन पत्र संख्या १) से सम्बन्धित राष्ट्रीय सम्मेलन के निवेदन का अर्थ इस प्रकार है—

“यह सम्मेलन सर्वप्रथम संघर्ष के इस सुसात का स्वागत करता है कि भारत का प्रत्येक नागरिक आपस के झगड़े हूर हासत में शांति-मय उपायों से निपटाने की सम्पूर्ण सहायता की सर्वप्रथम निष्ठा में अपना विचार व्यक्त करे, इसके लिए एक राष्ट्र-व्यापी प्रयत्न किया जाय। इसके लिए नीचे लिखे अनुसार एक शांति-प्रतिज्ञा की तैयारी की जाय—

“भारत का नागरिक होने के नाते मैं सत्य समाज के इस सार्वभौम सिद्धांत में अपनी निष्ठा जाहिर करता हूँ कि नागरिकों, या उद्यम के समूहों, संस्थाओं व संगठनों के बीच उत्पन्न विवाद शान्तिमय उपायों से ही निपटारने वाले चाहिये; और राष्ट्र की एकता व एकतात्मता के लिए बढ़ते हुए खतरे को ध्यान में रखते हुए यह प्रतिज्ञा करता हूँ कि भरे आसपास या भारत के और किसी हिस्से में किसी झगड़े को सिलसिले में मैं स्वयं प्रयत्न हिंसा का सहारा नहीं लूँगा।”

कणुप की भावना जितनी उत्कट होगी, सख्त-सख्त उतना प्रभावशाली होगा। संतुलन की भावना उठ नहीं दे सकती। जैसे चक्रवात का प्रहार है विना तेज ही, उन्मूलक हो; फिर भी जीवन ही होगा, वह कभी संप्रदायक हो ही नहीं सकता। उसी प्रकार सख्त-सख्त की शक्ति चक्रवात योग्य ही होगी। इसलिए विनोबा कहते हैं कि सत्तामय चोम होय, चोमकर होगा, चोमकर होगा।—दादा परमपिता

शिक्षा और राष्ट्रीय एकता : २

शंकरराव देव

[संस्कृत विद्यापीठालय, काशी में उपरोक्त विषय पर परिसंवेदन में श्री शंकररावजी ने जो भाषण दिया था, उसका यहाँ उम भाग का उल्लेख है।] पूर्वार्द्ध में यह बातलाया गया था कि आज जिन राष्ट्रीय एकता के अन्तर्गत चीन बढ़ती जाती है, उनमें समानता के साथ ही एकता भी और उतने जितने जितने के अन्तर्गत है, वही भावनात्मक एकता के अन्तर्गत है। भावनात्मक एकता तो भारत में प्राचीनों के समय से धनी आ रही है। इस उल्लेख में बतलाया गया है कि आज जो विद्वत्पण्डित श्री-श्री भावनात्मक एकता में जोच रहा है वह "अतल में धर्म और संस्कृति का संघर्ष" नहीं है, बल्कि स्वायत्तता और वैयक्तिकता का संघर्ष है। इस अर्थ में हम कह सकते हैं इस संघर्ष का अर्थ है—संघर्ष।

आजकल हिन्दीवालों का 'शास्त्राध्ययवाद' जैसी एक नया मूल्य में आती है। भारत के इतिहास में भी राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्रों में शास्त्राध्ययवाद उदात्त है, लेकिन धर्म, संस्कृति, भाषा आदि क्षेत्रों में इस शास्त्राध्ययवाद से भारत हमेशा अलूता रहा है। राजनीतिक क्षेत्र का वह शास्त्राध्ययवाद भी अनात्मक रहा है। संस्कृत भाषा का शास्त्राध्ययवाद जैसी बात हमने कभी सुनी नहीं। आज भी संस्कृत का राष्ट्रभाषा बनाने की माँग इधर-उधर कहीं-कहीं सुनाई देती है, पर वह नहीं है वरन् प्रारम्भ है, न वह उचित ही है। तो भी आज धर्म, वेदा में संस्कृत को भाषाया व्यवस्था ही और संस्कृत के प्रचार की माँग होती है। यह इसलिये कि भारतीय धर्म, दर्शन, संस्कृति आदि का पट्टियत कर लेना ही तो संस्कृत का अर्थपूर्ण अन्तर्भाव है। यह संस्कृत को राष्ट्रभाषा ही है, जो उसे यह मान्यता दिला रही है। आज भी भारतीय परिस्थितियों में व्यवहार का माध्यम संस्कृत ही है।

आज भारतीय लोक-व्यवहार के लिये ऐसी भाषा की आवश्यकता है और यह हिन्दी हो सकती है, हिन्दी ही होनी चाहिये। लेकिन जब यह माँग होती है कि हिन्दी राष्ट्रीय राजकीय भाषा हो और यह हो तो ही राष्ट्रीय एकता सम्पत्ती, पथ लोगों को इस भांग में शास्त्राध्ययवाद की रांघ आगे ढगती है; क्योंकि आज की सरकार लोकशाही सरकार है, यानी बहुमत से चलने वाली सरकार है, लेकिन वह वैयक्तिक राज्य है। इसलिये काहिरी लोगों के भाग में-भाषा या भूदा-वह भाग नहीं होगा कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा बना कर उसके लिये हिन्दी भाषी लोग अपना राज्य प्रायम करमा चाहते हैं।

परिषद का आज का राष्ट्रवाद भाषा-मक सिद्ध हुआ है। राष्ट्रीय सरकार-नेशनल स्टेट-युज केन्द्रित संगठन है और उसकी प्रवृत्ति जारी क्या अपने आप में केन्द्रित करने की है। उसके सम्बन्धन उसके साम्राज्य मित्र मित्र यन्त्रों, परस्परिणी और साम्राज्य मित्रिणी यन्त्रों को बनाने के लिये मौज्जा बहुत कम मिलता है। उल्लेख प्रथम एकदमता को एकता 'सुविधा-मिन्दी' की ही 'सुविधा' मानने की ओर होता है। उदात्त राष्ट्रवाद का ईश्वर एक नया है, तो भी ईश्वर, इश्वरकेन्द्र, वेद आदि भूभाग में आज भी यहाँ के लोगों की अविज्ञान अपनी अविज्ञान के लिये छटाटा रही है।

आज भारत में जो हथ धावसी संघर्ष हो रहे हैं, उसका भी मूल कारण यही है कि प्रादेशिक अस्मिता, संस्कृति, भाषा, साहित्य और समाज-धर्मन को जग जग है कि भारत को यदि एक ही सरकार बनती है तो कहीं उनके अस्मिता को धरना न देसुं। इसलिये इस संघर्ष को वेदक सत्ता का संघर्ष मानना सही नहीं होगा।

इस संघर्ष में यह भी हुना जात है कि अनेकों के समय हमने जो एकता और राष्ट्रीय भावना भी, वह भी आज नहीं रही। लेकिन यह कौन-से अन्तर्गत घटना नहीं है। दोम और भीक साम्राज्य के प्रथम साम्राज्य तक संश्लार न के समी-साम्राज्य का यही अनुभव आया है और

नाट के प्रविष्ट करणम से वे कोसे लोगों को छेउ कर और कोरि स्वयंदिनी के अल्ला होना नहीं चाहते हैं। यह अपने-अपने मतेय में अपनी संस्कृति, भाषा, जीवन आदि की रक्षा के लिये स्वायत्तता चाहते हैं और प्यादाके-प्यादा हुए यही है कि यह दिनी की सत्ता में दिसेदार बनने की इच्छा और ईर्ष्या रखता है। प्रविष्ट करणम वालेको दर्शन प्रविष्टरक्षण की योग करते हैं, उसका कारण भी यही है कि वे अपने को नहीं, सभ्यता आदि की इति के भारत से हुना मिय मानते हैं कि दिनी के केंद्रिक शासन से दूर जाने का उनको कर है। यह जो अलग-अलग बनने की आवश्यकता का अनुभव किया जाता है, इसका कारण यह है कि भारतीय सुविधा-मिन्दी धर्म और संस्कृति का एक वैयक्तिकत्व के आधार पर संघर्ष करने के अपने प्रयोग में उक्त हद तक नहीं पहुँच पाये और यहाँ तक पहुँचें यहाँ भी अग्रुप रह गये।

भारत में आज भी संघर्ष दिखता है, यह दरमजल धर्म और संस्कृति का संघर्ष नहीं है, बल्कि वह एक और 'दिव्यी-सु-आदिनी' और 'अन्तर्गत' तथा दूसरी ओर 'आरोही' और 'कलेक्टिविटी' या 'येते-लिपिपयिन्' का संघर्ष है-यह वह 'येते-लिपिपयिन्' और 'येते-लिपिपयिन्' के बीच का संघर्ष है। सामन्वयी दय का-रुध प्रकार संघर्ष कौन-नया नहीं है, बहुत स्वायत्त है, और यही मित्रमित्र साम्राज्यों के उदय और अस्त का कारण है। भारत में धर्म, संस्कृति और धर्मात्म-जीवन को जो विविधता है, उसे जो ध्यान में लेकर ही स्वतंत्र भारत का संघर्ष-धर्म बनाने वाले ने भारत को एक संघ-राज्य घोषित किया। लेकिन आज जो संघ-राज्य रखा, पर अभी क्या दिनी में केंद्रिक कर ही और वह साम्राज्य (अन्तर्गत) का प्रयत्न वही शुरू हुआ जब वे संघ-राज्य का। उक्त यह प्रकृत था, पर अब युग रूप में और कभी-कभी भाषा का तो, कभी संस्कृति का रूप लेकर धर्मने आता रहता

है। इसलिये धर्म जो स्वायत्तता में एक (अन्तर्गत) इन सुविधा) का ही है, एतन्तता (संस्कृति) का नहीं है। यदि वह विदेशीय लयी है तो आज के ल, संघर्षों का इलाज भी दूसरे प्रकार का ही होगा और आज की परिस्थिति देखते हुए इलाज सही इलाज यही है कि भारतीय संघर्षयुक्त अन्तर्गत एकत्रीय प्रदान की जाय। यह स्वायत्तता केवल ही का प्रतीक ही संघर्ष है वरन् जो बन नहीं सोगा, परन्तु सामाजिक जीवन में भी छोटी-सी-छोटी इकाई होगी, यहाँ तक उठे कि जाना होगा। हेतु का सोचना है कि इस दिशा में करम उठने का है और पचासी राज्य की स्थापना ही ही का पर्याय करम है। यहाँ भी इलाज यही है कि धर्मने भी यहाँ केंद्रिक सत्ता के शासन के लया निरासे-जीवना में शासन-मध्य नर नर रह जायें। यह यह एक बात है कि वे धर्मने धर्म-भागे में लोगों के धर्म जीवन का निरूपण करने वाले राज्य का अधिकार करें। जो लोग विविधता की ही मानते हैं जीवन को संरक्षता मानते हैं, उनसे भी राजनीतिक शासन के लिये जो कुछ-कुछ भी विद्या में सोचना अनिवार्य है। यह सामने में हमारे सुबं प्रविष्ट-मिन्दी भाषा ही रहे ही और ही और ही धर्म, प्रयोग अर्थोंमें किया न हो ऐसी बात नहीं है। उन लोगों ने ऐसा पचास के लेकर सम्राट्त्व तक एक हुना हुआ संघर्षयुक्त राखा किया था, जो अन्तर्गत के विभिन्न धर्म, संस्कृति, भाषा, समाज आदि सामाजिक जीवन को विविधता की दृष्टि के लिये का, उनमें इलाज देने के लिये नहीं। उनको निरपेक्ष का निरपेक्ष नहीं था सत्ता के मत पर किसी को हद पर दिनी का उन्माते का प्रयास वे नहीं करते थे। परन्तु उनका यह मयौना अन्तर्गत भाग में ही सफल हो पाया।

एकता के मूल आधार है, अर्थात् (संस्कृति) और संस्कृति (व्यवस्था) के लिये कि एकता मत के संघर्षित रहते हैं। मत के सम्बन्ध में नैतिक का प्रशासकीय कर्ता काम नहीं होता है। इतिथे एकता की स्थापना और उसकी हदता, ऐतिहासिक या राजनीतिकों का काम नहीं है। यह तो संस्कृति और संस्कृति का काम है। यह ही है भारत की एकता को यदि हम देखें-सुल और उसे शासन बनाना चाहते हैं, यह काम संस्कृति और संस्कृति का है, यह शासन तक उसकी स्थापना और उद-उद कला चाहिये।

के लिए अनशन अनुचित

श्री जयप्रकाश नारायण ने ४ अक्टूबर '६१ को पटना में मास्टर सारा सिंह को अनशन-मार्गान्तिक के नाद एक बस-न प्रसारित करते हुए कहा कि राजनीतिक और आर्थिक उद्देश्यों के लिए अनशन करना अनुचित है। उनके बक्तव्य का प्रभावनात्मक और प्रेरणादायक श्रोत 'ट्रस्ट' ने किया है, वह हम सभी के पक्ष में है :

“सुनो की बात है कि मास्टर साहब सिंह और योगिन्द्रासन सुंदर ने अपने अनशन प्रस्ताव प्रस्तुत किए। इसके लिए वे, राजनीति तथा व्यापक उद्यम बाधाओं के साथ हैं। एक प्रकार से यह प्रतीकात्मक है कि एक सितल और हिन्दू एक-साथ अनशन कर रहे थे; परन्तु यह परस्पर-विरोधी उद्देश्यों के लिए था, किन्तु भेरे बिना-वे सही विरोधी और संयुक्त रूप में मास्टरजी द्वारा उठाये गये समर्थन का समाधान थे।

मैं यहाँ यह मानना चाहता हूँ कि यह अनशन प्रस्तावकारों के उद्देश्य ही नहीं, विधायी की यह संभावना के हिन्दू और विधायक तथा उनके उद्देश्यों के हल करने के हल की है। हिन्दू और शंकर भार्गव हैं। यदि दोनों की उभरती हैं तो राज्य का भी श्री राजनीतिक शक्ति हो, उन्हें एक-साथ सम्भालना के रहता है। मैं अब यह कहना चाहता हूँ कि इन

अनशनों में यह प्रयत्न हो गया है कि सामाजिक उद्देश्यों के लिए इस आध्यात्मिक अन्तः का सारा प्रभाव उचित नहीं।

यह विधायी शक्ति यह है कि मास्टरजी ने वह अनशन संघ करने का निश्चय किया और उसे लागू करने का यह वे जो कुछ अन्तर्गत चुकने में गये सारा वह पर योग्य की कि पंचमी सारा प्राप्त होने तक अनशन जारी रहता

वत तक मास्टरजी के, ऐसी बात यह कर मैं उन्हें मैं उल्लास उचित नहीं हूँ, मैं चाहता हूँ कि देश के सामाजिक तथा धार्मिक नेता इस पर गाम्भीर्यपूर्वक विचार सामाजिक जीवन में अनशन करायें।

राष्ट्रीय एकता सम्मेलन में श्री कि. मास्टर-सिंहन में एक शक्ति प्राप्त का कि विमूर्त नीतिक और आर्थिक समाधान करना आवश्यक है।

किन्तु यह विचार कि देश का कि यह शक्ति प्राप्त हो किन्तु के रूप में समर्थ। आशा है, एकता परिषद इस पर आ विचार

विज्ञान-युग की मांग

भारत आज गांधी-जीवन-शिक्षा को अलूका आ रहा है। आज का भारत गांधी के अनुकूल नहीं, गांधी के प्रतिरुद्ध हो रहा है। सरकारी तन्त्र का भारत, दिल्ली, कलकत्ता, अजमेर और बम्बई जैसे बड़े-बड़े नगरों का भारत; बड़े-बड़े प्रशासनिक अधिकारियों और मशीन-आयुक्त उद्योग-धर्मियों का भारत; वैज्ञानिक व्यापार का भारत; बड़े-बड़े सेल-साहसकारों, पूंजीपतियों और भूमिपतियों का भारत अपने-आपके से गांधी-जीवन-शिक्षा के विपरीत व्यापारिक को बढ़ावा दे रहा है। गांधीजी का आम भारत, परसेल और मामोयोग का भारत, सत्याग्रह, सत्य और अहिंसा का भारत आज एक स्थान बनकर रह गया है!

भारत की प्रत्येक समस्या के हल का आधार हिंसा, सत्य और धैर्य उपायों की ही रखा है। अत्याचार के नाम पर इस-प्रकार का पड़ा है। इधर हम उतावे के विज्ञानोद्योग, पंचायत राज, कामजो की मांग करते हैं; परन्तु उतार-चढ़ाव का केन्द्रीय-करण पक्का होना आ रहा है, सत्य का बोध बढ़ता चल आ रहा है। मामोयोग, उद्योग और आर्थिक विज्ञानोद्योग पर भाषण को होते हैं, पर काम ही रहा है एक विपरीत। मामोयोग, उद्योगोद्योग सत्य होते जा रहे हैं और उनके स्थान पर बड़े उद्योग, शिक्षा-उद्योग आ रहे हैं। आर्थिक विज्ञानोद्योग की बात जुराहे और गैर-नीति अमाने की बात हो गयी है। धर्म-मैत्र, जाति-भेद, वर्ग भेद, भाषा-भेद, प्राचीनता के भेद के कारण मानव के मानव करता चल आ रहा है। धर्म का स्थान अत्यन्त में, प्रेम का स्थान और विरोधी में, करुणा का स्थान निर्दोषता और मरुत के लक्ष्य है। बहुत इस प्रकार का हृदय व्यापक हो, वहाँ इस दुनिया के भावों की बात को सुनता है। निष्ठा-आदि का विचार किष्कि अन्तः उभरता है!

कुछ लोगों का कहना है कि गांधी-जीवन शिक्षा का विचार अभीष्ट नहीं हो सकता। आदर्श के विचार से यह विचार अच्छा है, परन्तु जीवन के प्रत्यक्ष आचरण

में नहीं स्थान आ सकता। आज का सामाजिक हलके कि अनुकूल नहीं है।

हमारा कहना है कि आज का विज्ञान-युग गांधी-विचार के विरुद्ध अनुकूल है। पिछले ५० वर्षों के विज्ञान की शीघ्रता बढ़ती चली आ रही है। अणु विज्ञान, अंतरिक्ष-विज्ञान, अंतरिक्ष-विज्ञान, भू-विज्ञान, जीव-अणु-विज्ञान में अत्यन्त उन्नति पिछले १०० वर्षों में की है, उतनी उन्नति मानव-विज्ञान में केवल कभी नहीं हुई। समाजशास्त्र और अर्थ-विज्ञान भी अपने-आपके पड़ा है। परन्तु एक विचार-युग में हमारा धर्म, हमारा व्यवसाय, हमारी नीतिकता, हमारा मानव-व्यवहार वहाँ का वही साज है।

गांधीजी ने आत्मभक्त पर बल दिया था। गांधीजी के साथ विज्ञानोद्योग पिछले १० वर्षों से गांधी-जीवन, परन्तु वैज्ञानिक युग की मांग-अर्थ और राजनीतिक को छोड़ने और आत्मभक्त और विज्ञान को छोड़ देने को मानव-व्यवहार हो रहा है। अर्थ-व्यवहार की चीज है। इसे वे गांधी-जीवन-शिक्षा का एक विचार का अर्थवादी हुआ है। इसी में भारत और कुल विश्व का व्यवसाय है।

—ओमप्रकाश विद्या

विश्वशांति-सेना की स्थापना के लिए भारत में पूर्व-चर्चा समाप्त

१० दिनांक '६० में मद्रास (दक्षिण भारत) में 'युद्धविरोधी अंतर्राष्ट्रीय' की दो परिषद हुई थी, उसमें विश्वशांति-सेना की स्थापना पर जोर दिया गया था। तदनुसार 'युद्धविरोधी अंतर्राष्ट्रीय' की कार्य-समिति ने २८ दिसंबर '६१ से १ जनवरी '६२ तक दूमाणा (बेल्जियम) में विश्वशांति-सेना की स्थापना के लिए अंतर्राष्ट्रीय परिषद आयोजित की है। परिषद को आभारपूर्ण में भारत से भी निमंत्रण भी जयप्रकाश नारायण, श्री श्री रामचन्द्र और श्रीमती अनापिरी कार्यन्तायक हैं।

इस अंतर्राष्ट्रीय परिषद को भारतीय आत्मज्ञ और सर्व सेवा संघ की ओर से केन्द्रीय-सम्मेलन की पूर्णतयायी के लिए भारतीय पूर्व-चर्चा समाप्त ३१ अक्टूबर और १ नवम्बर को साराणा केन्द्र, बरतों में होगी। इसमें विश्वशांति-सेना के विभिन्न पहलुओं पर विचार-विनि-युक्त होगा।

सर्व सेवा संघ के दफ्तर में

कार्यवाही-प्रतिष्ठा का एक प्रस्ताव पिछले सत्र-सत्र-सत्र में हुआ था, उसको अर्थवादी रूप देने के लिए प्रकल्प समिति ने एक उदाहरणित नियुक्त की थी। उदाहरणित ने प्रतिष्ठा का एक अर्थवादी प्रकल्प प्रस्तुत किया। परन्तु २५ अक्टूबर से ३१ अक्टूबर तक शाखा केन्द्र, काशी में 'संशालक विचार' होगा। इसमें वे लोग भाग लेंगे, जो घर में अन्य स्थानों में अभ्यन्त-निष्ठि का संशालन करेंगे। विचार में प्रत्येक मानव से दो-दो कार्यवाही आय लेंगे।

एक के सार्वजनिक-आचार समिधान में कि विधान काय हुआ है।

इस वर्ष उत्तर प्रदेश में प्रत्येक वर्ष सत्र-सत्र न कर सकते के कारण अर्थ-सर्व सेवा संघ के मंत्री ने एक परिषद प्रदेश के समस्त विश्व सत्र-सत्र-सत्रों में विचार किया है कि वे एक अंतर्राष्ट्रीय सत्रे सर्व सेवा संघ के प्रधान केन्द्र कर लेंगे। सर्व सेवा संघ का नाम में एक प्रस्ताव से अन्वय-वक्त का काम कर रहा है। इसलिये अर्थ-संघ अन्वय-वक्त सर्व-सत्र, अन्वय-वक्त आदि का जो प्रकल्प 'कोर' है, वह भी संघ के अन्वय-वक्त में अन्वय-वक्त भेदा बाय।

शांतिसेना मद्रास की ओर से एक परिषद की स्थापना देश में देश के समस्त शांति-समिधियों से अन्वय-वक्त कोर है कि 'विश्व-सर्व-वक्त' के 'गांधी-सर्व-वक्त' के

सर्व सेवा संघ की अन्वय-वक्त समिति की बैठक २-३ नवम्बर '६१ की स्थापना केन्द्र काशी में होगी।

धूलिया में औद्योगिक परिसंवाद

दामोदरदास मुंदड़ा

[पिछले दिनों धूलिया में औद्योगिक परिसंवाद हुआ था, जिसमें जिले की औद्योगिक समाजवादीयों पर धरती हुई। उस परिसंवाद के आधार पर श्री दामोदरदास मुंदड़ा ने योजना को क्या सुझा है, इस विषय पर प्रकाश डाला है। —सं०]

एक औद्योगिक परिसंवाद धूलिया में कुछ दिन पहले हुआ। उसका उद्घाटन करते हुए भद्राचार्य के उद्योग-उत्पन्न भी पाठिल ने कहा, "तीसरी पंचवर्षीय योजना ने हमारे सामने जो आशय प्रकट किया है, उससे स्पष्ट होना जरूरी है। हमें नये समाज का निर्माण करना है। युवकों को उसके लिये आवश्यक वृष्टि प्रदान करना है। इनको भी कार्ययोजना की दृष्टिकोण प्राप्त हो ऐसा प्रयत्न करना है, नई औद्योगिक शक्तियों के रूप में 'नवयुगी' निर्माण करने हे, भारतीय सार्वकर्मिक को औद्योगिक जनता का बना पहचानना है। हमें अपने-पन की, प्रेम को, स्नेह को जोड़ना बनानी है। धूलिया का यह परिसंवाद सुवर्ण पंचवर्षीय योजना के सिलसिले में पहला परिसंवाद है। इसलिये स्वाभाविक तौर पर उस पर भारी-दरती की जिम्मेदारी आती है।"

परिसंवाद ऐसे काफी सफल रहे मानना चाहिये। तारे प्रतिनिधि ६ उप-प्रतिनिधियों में बैठ गये थे। दो दिन तक उन्होंने अलग-अलग विषयों पर बर्षों की और रचना की रिपोर्टें भी पेश कीं। इन सब रिपोर्टों की सिलसिला यह है कि अपने पर-स्वर से सहकारिता की सुविधाएं पर ही मानने आर्थिक सचोत्पन्न करने की सिकारिणी की है। पहले कर्म के तौर पर यह एक लंबी तरीका मानना चाहिये। धूलिया जिले में ऐसे भी सहकारिता का सही परिचय काफी सरकारी तरीके से बताया जा रहा है। इस मिलाकर यहाँ फरीब १५० औद्योगिक सहकारी संस्थाएँ हैं, जिनमें १२,००० उत्पाद हैं और फरीब ४५,००० की पूंजी लाग रही है।

धूलिया जिला महाउद्योग के भीर जिले के जेठा इतिहासना जिला है, जिसमें ४८ प्रतिशत ग्राम पर निर्भर करने वाले लोग हैं। इनमें से २० प्रतिशत मजदूर हैं, जिनके पास अपनी कोई भी चीज नहीं है।

जिले का फरीब आधा इलाका आदि-वासीयों का है, जो जल-पहायों में रहते हैं। इनमें साधारण १.५ प्रतिशत से अधिक नहीं हैं। इन्हें खेती का भी टीका मिल नहीं है। औद्योगिक-वर्गित एक इस मानव समाज को सुदृष्टिक से ३ महीने का अपने का सामान उपलब्ध रहता है।

परिसंवाद में जिन उद्योगों की विचारों की गयी है, उनमें हीन दात-कार्याई की विवेक है। तेल की विवेक तथा अन्य कारखाने की लोहाई की विचारियों की गयी है।

परिसंवाद के आधार पर जिले की समाजसे देने वाली एक सुविधा समाज की गयी है। इसमें भी जिले के आगामी औद्योगिक संयोजन में एक जिले की विचारियों है, जिसके लिये ५० लाख २० की पूंजी को आवश्यकता जगती गयी है, जिसके दैनिक उत्पादन २०००० वीडें का होना चाहिए २०० आर्यमी काम पर सके।

पहली दो पंचवर्षीय योजनाओं के संदर्भ में कर हीन जिले की भी योजना बनाने है, जो पिछले अनुभवों से व्यंग्य उत्पन्न चाहिये। योजना कर्मियों ने काफी आर्थिक संयोजन के लिये एक इति-हासना देना में 'इति-उद्योग समन्वित' (इंटर-इंडस्ट्रियल) समाज निर्माण करने की विचारियों की है। समाजवादी समाज-रचना के संकल्प के संदर्भ में इसमें एक

इति-उद्योगसंपन्न समाज का अर्थ समझ लेना चाहिये।

समाजवादी रचना सब तक नहीं कायम हो सकती, जब तक समाज का संवर्धन समाज तक से होने की कोई प्रक्रिया समाज आर्थिक संयोजन में ही सार्वकर्मिक हो जाय। सबसे हुए संवर्धन के साथ अन्य विवरण को भी व्यवस्था हुए बिना समाज में सज्जा मुल और कार्मिक का अनु-बन्ध नहीं हो सकता, राशियन तो बन्ध हो ही नहीं सकता। विधानों को योजनाओं में यह सब हमारे सामने एक रूप से प्रकट कर दिया है।

इसलिये सब योजना कर्मियों धुलि-उद्योगसंपन्न समाज की विचारियों करत है तो उद्योग अर्थ है कर्मों से कर्मों, विद्यमान से तेल, ईंधन से उपकरण आदि बनाने की प्रक्रियाएं नहीं कर सकेंगी, उद्योग स्थानों पर हुए हैं। कर्मों में यह कर्मों का पैदा होना है। कर्मों से पक्का गांधी बनाने के लिये आवश्यक नहीं की दृष्टि से अलग विचार किया जाय तो कोर्रिज कारखानों में ३ मजदूर हुए, जहाँ २५ से ५० हजार रुपये तक पूंजी जुटाना पड़ती है, विवेचित उद्योग में २०० से ५०० तक की पूंजी पर्याप्त होती है। दूसरे तरीके से धन-समाज हो, जो कारखाने में दो १ रुपये के आज के उत्पादन के लिये ५ से १० रुपये तक की पूंजी लगानी पड़ती है, तो विवेचित उद्योगों में १ हजार के आज के लिये ६० से पैंतीस की पूंजी पर्याप्त होती है।

अब इस बारे में हमें पूछनी की यह तेल की मिला शुरू करने के परिणामों को तोचिये। तेल की मिला शुरू की ५० लाख रुपये लगाना होगा, उनमें ५० हजार भार चलेते चल सकते हैं, विवेक दैनिक कम-से-कम २०,००० वीडें माने हुए। पूरा उत्पादन होगा, और २०० आर्यमिते के बजाय ५० हजार आर्यमिते को गम मिलेगा।

यही हाल तेल-उत्पादन का है। एक लाख की पूंजी में 'पैरी नजर' द्वारा १० लोहा योजना ३० मल तेल पैदा करने। उतनी ही पूंजी में तेलखानी द्वारा कम-से-कम १०० लोहा १०० मल तेल का उत्पादन कर लेंगे।

आ अर्थीय उत्पादन की दृष्टि से देखिये। १२,५०० उत्पाद करने के राष्ट्रीय उत्पादन में कारखानों का हिस्सा ८५ प्रतिशत परिसंवाद है, तो उद्योगियों का ८८ प्रतिशत और यह भी जब तक विवेक २० वर्षों में कारखानों की उत्पादित ८० प्रतिशत हुई है, जब कि समाजियों की उत्पादित केवल २५ प्रतिशत ही।

और विवेक उत्पन्न के रूपमात्र 'नवयुगी' के रूप में नई औद्योगिक शक्तियों बनाने के हम विवेक नहीं हैं। भारत के ३०० जिलों में ऐसे २०० नवीं, ३००० नवयुगी निर्माण करने का उत्पन्न है। विवेक नहीं बनाने वाली औद्योगिक शक्तियों ऐसी नहीं होनी चाहिये, जिनके कारण भारत के लिये उत्पन्न धर्म, जो हमारे उत्पन्न हुए ही है और जो अनेक आचार्यों को सह कर भी अन्धे तक रिजे हुए है, सब हो जायें। इसके लिये इति-हासना-उद्योगसंपन्न मजदूर-रचना की दृष्टि से जीवन को सुविधाई उपकरण-उद्योग, अन्ध-नव आदि गांधी में निर्माण होने वाले कर्मों का पैदा हो तेल ही पूंजी हो सकती है और उत्पादन बेकारी, शोषण, अस्वस्थता का समाज निर्माण आदि के परिणाम करनेवाली व्यवस्था का भी सदन ही एक हो सकता है।

दिएर सब को सामान की विवेकित होने का रहा है और विवेकित अन्ध-रचना के बिना विवेकित समाज नाममात्र बना ही होगा। इसलिये न निर्णय विवेकित अन्ध-रचना करनी होगी, चाहे भी चलेने वाले उद्योगों

को तत्पक्ष भी देना होगा। उनकी विवेक, उनके भाव, उनके लिये प्रतिभण और उनका संभव, सबकी गांठी देनी होगी और ऐसा करने में हमें तर्क भी बनाना या लज्जा का आशय नहीं होना चाहिये। आज मिला की चीनी की बहुरे से अपने दासी चीनी के मुकामले करीब २० वं मन का उत्पादन किया जाता है। इन्हें नई बहुरेकी भी मिला की चीनी ॥ मुकामले में तत्पक्ष मिलना चाहिये? कर्मों, आज मिला की चीनी के लिये लंछनाई पर ईंधन लागूया जाता है। मिला की चीनी नहीं बिकती है, तो क्लाना पूरा नहीं करता है। कारी नहीं बिकती है तो क्लाना पूरा जाता है। 'पानी अन्ध-रचना में इत तर्क भी पर-पेलाकी व्यवस्था तत्पक्ष मिला की वृष्टि से तत्पक्षिने बर्दास मानने वाली चाहिये।

अतर्कपूर्ण विवेकित मिला तेल के मनीर-से-मनीर तेल और मनीर-तल बनती का रही है, ॥ अन्ध-रचना की कमी, विवेक और विवेक से नहीं, तो मजदूरी, के ही छोटी गान्धी की भी माननी होगी। विवेकित मिला का हमारे पड़ोसी ही उत्पादन करना चाहते तो यह अन्ध-रचना बिक और से बच-कारखाने गांधी-गांधी में अदरप हो सकते हैं। लेकिन गांधी की नीरप से रहने वाला अन्ध-रचना का होना कभी नहीं पूरा करता।

मनी बहारी बहारी में इलाहा तेलों सोईज के कारखानों के विचार, मीरों मीर-कारखानों, कारखानों, सिंगारों की मशीनों, मशीनों, गाउटन-मशीनों, वेस्टीज, की की की, जोड़े का पर्नाकर, छोटी छोटी मशीनों, जिनकी के सामने, सीधे के पारख, दाखल, नर वेस्टल आदि अनेक चीजें बन सकती हैं। यह वाली की गांधी के उद्योग जुटने की आवश्यकता नहीं।

गांधी से तेल और बहुरेकी के अलावा गुण, उद्योग, गांधी, गांधी, बन्दे का काम, इससे युवा पक्ष के अर्थ से पचपरा, खाद, तेल, बखर आदि बनाना भी चाहिए है, उपा देवती की नई-उद्योगों के दूध बनाने, रेमाइक गांधी से रहती, गांधी, नोरा आदि बनाने, पके और कच्चे चने को अन्ध-रचना करने में रूप में सुदृष्टिक रखने के काम; में सब उद्योग देताप में आरामती ॥ चल सकते हैं, चलना चाहिये और सुदृष्टिक लिये अनेक आदि-उद्योगसंपन्न जिले में तो बच-चलना चाहिये। देला होना सभी उद्योगी मशीनों की दृष्ट-उत्पन्न न निर्णय धूलिया जिले में, कर्मों तारे महाउद्योग हमें देम और आलोचना

असम में विनोबा के साथ कुछ दिन : १

महेन्द्रकुमार शास्त्री

भारतवर्ष के तीन छोरों पर असम, कश्मीर और केरल अपने प्राकृतिक छाटा और रमणीयता के लिए प्रसिद्ध हैं। तीनों प्रांतों की समस्यार्यें मिलें हैं। इनमें असम की गिन्ती चिरकाल से लेखक्याओं में एक अद्भुत प्रांत में रही है। कामरूप के घाटे में तो अनेक कबायें प्रसिद्ध हैं। दसवां शताब्दी में अपनी योग्य ज्ञान-साधना से सारे भारत को आक्रान्त करने वाले महात्मा गोररामनाथ अपने गुरु अत्येनृत्ताय को जामत करने के लिए इसी प्रांत में गये थे। मान-योग्य के साथ जन-जन में बुद्ध भक्ति का संचार करनेवाले संकटरेष और माधवदेव इसी प्रांत में हुए।

यहाँ हिमाचल जैसा पर्वत, प्रदुग्ध के समान गंगा से भी नहीं बरी, विद्यालय अथवा अनेक प्रकार के शृंग, पर्वत और अनेक प्रकार की वनस्पतियाँ हैं। आँखें उदाय कर विचार देते हैं, उपर जाती और देखे हुए भीलों तक रोते, पौर अन्ध और अनेक प्रकार के पशुओं से परिपूर्ण इस प्रांत की छटा अद्भुत है। प्रायश्चित्त की रमणीयता भी तादा यहाँ की वनता भी सरल, भद्र एवं शीलवती है। यहाँ के फिजी भी वधर में समाज और राष्ट्र के लिए बंधक-बन्ध बंध्याएँ नहीं हैं।

यहाँ की भूमि भी अत्यंत सुलभ है, जिसके विचारण को विनेय परिभन नहीं करना पड़ता। बारिश होने पर वे एक बार पानी को देखें हैं। पलकल्प यहाँ के जनवासी घुसे-प्रातवाली की सुलना में कुछ कम काम करते हैं। पर यहाँ की जी-जाति पुरुषों की अनेका अर्थिक कर्तव्यव्यय है। सारे भारतवर्ष में केवल केरल और

असम प्रांत में ही हमें मातृविक का मान होता है। असम के अनेक विभेदियों के नाम रिपों में अपने हाथ में ले रहे हैं। आर्यवे है कि अत्येनृत्ताय प्रांत की गिन्ती विचारण के जादुओं के देख की कति में भी जाती रही। सब विनोबाजी सारे भारत की प्रसिद्धा सब असम जाने लगे, सब लोगों ने उनसे कहा—

वह तन-मन का देव है, वहाँ सब जाये। पर बाबा भी अपने साथ सत्सेवक प्रसाद प्रसादनेकर नहीं लगे। उनका मंत्र है 'अव-मन्' और तन ही कामदान। आज तो सब और असम में बाबा का यह मंत्र और तन उस मात्र है। यहाँ वहाँ से बाबा निकलते हैं, यहाँ शक्तिवत जनता एक-दूसरे से बहती है, 'अमार बाबा, सब जानूँ; अमार तन, कामदान'।

मेरे लिए भी असम जाना-गया से एक विशाल का विषय रहा है। असम सब प्रांतों की फिजी-नफिजी वधाने देन पुत्रा, था, पर असम का दर्शन नहीं था। सितंबर महीने की १० वां को भी सपाउष्मानी बखाने से कुछे वडा कि, बाबा के जग विभव के दिन उन्हें संरक्षित 'भीती प्रभवचन' गेट करता है, उसे केर आस प्रायः। विर-कला की बातमा को इस प्रकार उलट होते देख मैं कुछ प्रसन्न हुआ, नगीचि इतमें केवल कम-मर्यादों की धो बात नहीं थी, पर बाबा की लंगमिधि सुनने अवसर भी था। किन बाबा के अक्षरेदर का धारिण्य वा सिधे बहुर चनों से मैं सव्य-युग बलात रहा थी। बुर खले हुए भी सो सदैव मेरे लिए अल्प सोच रहे, उनके निकट रहने का सुव्ययय था। मैं को १० की संख्या को बना के पठय पर, मोशन पहुंच गया। असम में बाबा बने-काल को बने उठ जाते हैं और तीन बने अपनी भावा उरु कर देते हैं। विर दिन मैं पहुँचा, उसके ठूरे दिन बाबा

का चन्दनिय था। उस दिन उठने से समय आकाश मेघाच्छादित था, योगी योगी देर में निजती चमक कर प्रकाश की रेखा खींच देती थी। ऊपर आकाश में मेघों के चरण नवनों के छिग जाने पर वृषी पर कुमुद्यों का समूह नवनों की तरह चमक रहा था। धरमती हवा बह रही थी। ऐसे वातावरण में जीक तीन बने यज्ञ में अपनी वाजा मारम कर दी। बाबा के साथ पल्ले-पल्ले वाली-मनु ने प्रार्थना की। इसी बीच कुछ बर्ष होने लगी। ऊपर वे नीलनदायिनी अद्भुत धारी और नीचे वृषी माता के शबन हवा में साथ बाजा के मुँह से निरुद्ध शानवनों में स्रवमान। आनी इस बाजा में नाय अशय की कुछ बहनों की चलो-पलो गीता भी पढ़ाते हैं। उनमें तीन बहिनें सुखर हैं।

महायान इषण ने कुंवरके के मैदान में गीता का उपदेश दिया था। एक ओर ग्यार अशिलीयों और वृषी और सात अशिलीयों केना सती हुई थी। इस कालती के वातावरण में अद्भुत विरह के तन में आने को गीता का उपदेश दिया। स्थितप्रज्ञ ही गीता के उपदेश का अतिशय ही था। बाबा स्थितप्रज्ञ अथवा गण्डुप दोकर धारणों को गीता का पाठ पढ़ाते-पढ़ाते सम्यक् हो जाते हैं। उनमें से एक अक्षर है। सब तक ज्ञानार्थ प्राप्त उपाचारण नहीं कर लेती, सब तक उठने के श्यारर नाचार निरहली रहती है। कभी-कभी जो समझने से निरर बखले चले रहते में नीचे बैठ कर लिखर से देवार्थ खीच कर विषय को स्पष्ट करते हैं और पर तक ज्ञानार्थ के माधुर पर विषय का स्पष्ट विषय नहीं खीच जाता, तब तक ने अन्त्या यह नाम रद नहीं करते। बाबा के शान्तों में—

मह उनको 'उपनिषद्-मन्त्र' है। केवल, व्यापार्यार्यार्य आर्यिक, उपनिषद् प्रवृत्त है। उपनिषद् बर्णन करती संख्या, कुछे दिखर से बर्णन करती। कान्ती को सुप्रसिद्ध होने पर जब कुछे दिन से चर्चा करते हैं, तो कुछे 'उपनिषद्-मन्त्र' कहते हैं। बाबा का 'बार्थिक' के साथ 'दार्थिक' चलाता रहता है। इसके अधिपतिभरण के साथ विद्याय वाता रहता है। आकाश के सफर से नीचे विचार रहते, वे अन्य किसी सफर से नहीं। हमारी मर्या में एक

अद्भुत दृश्य है 'मृग'। 'हु' अर्णु-मृगता 'मृ' अर्णु-मृगता। वहाँ मुख्य आकार है, वहाँ कुछ शान्त आशयवत्, वहाँ सुरा। इसीलिए वाता सृष्टे अथवा के नीचे बसता, उठ और गामी में बन्ने छाब-शबाभी को पढ़ाते हैं और ल-मृदुयों में उनकी की वया वरं की। नियमित रूप से चलाती रहती है।

बाबा के अन्दिश्य के दिन बने परदाया कर रहे थे, तब पहले तो वने में सदाक अभिनेक कर दिया था। बर्ष 'दृष्टकान के सारी' माने पक्की सार के बलमा छोट कर उठाने करने लगे बलमा छोट फिच, तब नाका की लंग-नी गाजा का सुखद स्वराण होने लगा। उन्हें में सुन्दे-सुन्दे तक कीच और लगी। कहीं-कहीं पर बल के नालों को पार करते हैं, कुछ उभर कर केवल कुछे वेद का बन्धन दिने थे। कोड़ेसे चूड़े की सब नाते में अन्दर। बाबा उभर चुके पर वे भी कुछे निराण भवें। ऐसे धरने वे पले समय उनके मुँह से कभी-कभी निरर पठना-प्रसिद्धा रक्षण म। बहने किंवा मायमानी राधा है। उरु, उरु राधा भी ही इलेकान के सारे हैं। बाबा-मङ्ग और स्वागतवत् होता है, कुछ नहीं। फिर राधे से '... वे यह वीर अल्प था, फिर भी इल' पूर भी बर्णन धरने थी। वहाँ कड़ी बाधा निररने; बाका, सुवा, इद-व-करते हुए राधे में एक त्रिभार ५ माव है। राधे दिखाएँ है। बाबा अपने एक भावा के केन्द्र के रूप दिखार दे रहे हैं। बाबा अपने सब व अपने पदार् हैंडियोरस के निरर पुत्रों तर कुछ बुरे पल्ले से ही लोग टारन कर कुछे बुरे पल्ले से आति दिखार देते हैं। बाबादान के साथ माधवदेव का एक मजन का रहे है।

'ए हरिवर भज दे मन, हरिवर भज दे कि किरकि किरकल, मोरन म कर्ण मंत्र के पदके को भासि कला करि हरि दे। हस मजन में रह्य गया है। उक्ति के भगवान की भासि कला है, उक्ति के कान, और, नाक, मुँह, हाथ और पैरों की सार्थकता है। भासिक के निरर देखे ही मील स्वतीत करने वाले प्रणी की शान्तिनी और कर्णदेवों उनके लिए मार-रहते हैं। अपने हस मन दिवस के दिन मन्त्र के एकदाक शाल में सचयन सार के रूप में छोटा सरीर उद्या रहा था। वारों और सुरम्य हरिली की ही इति-बाबा की तन भासयान मिले। इसी दिन बाबा के अन्दिश्य के साथ उपदेश की पुण्यविषय भी पडती थी। दोनों का मनि-बाबानवत् प्रिय मिल था। पद्मर पहुँचने पर कुछ समय के बाद सधानी बन्दा ने कीर्ण प्रार्थन किया। उस समय बाबा ने श्यामिने सर से अपने अन्दिश्य में उत्तर में कुछ उद्गार प्रकट किं, जो 'भूतान-मण' के सिधे अंश में प्रकाशित हो चुके हैं।

की महेन्द्रकुमारजी शास्त्री सर्व सेवा सप-श्रकाम में सपारन-मार्ग करते हैं। पहले दिनों से सहजते गीता प्रवचन विनोबा को, उनके काम-विन के अक्षर पर परदाया में भेट करने गये थे। परदाया का उरुका संस्करण यहाँ प्रकृत है। —सप्त

अद्भुत दृश्य है 'मृग'। 'हु' अर्णु-मृगता 'मृ' अर्णु-मृगता। वहाँ मुख्य आकार है, वहाँ कुछ शान्त आशयवत्, वहाँ सुरा। इसीलिए वाता सृष्टे अथवा के नीचे बसता, उठ और गामी में बन्ने छाब-शबाभी को पढ़ाते हैं और ल-मृदुयों में उनकी की वया वरं की। नियमित रूप से चलाती रहती है।

बाबा के अन्दिश्य के दिन बने परदाया कर रहे थे, तब पहले तो वने में सदाक अभिनेक कर दिया था। बर्ष 'दृष्टकान के सारी' माने पक्की सार के बलमा छोट कर उठाने करने लगे बलमा छोट फिच, तब नाका की लंग-नी गाजा का सुखद स्वराण होने लगा। उन्हें में सुन्दे-सुन्दे तक कीच और लगी। कहीं-कहीं पर बल के नालों को पार करते हैं, कुछ उभर कर केवल कुछे वेद का बन्धन दिने थे। कोड़ेसे चूड़े की सब नाते में अन्दर। बाबा उभर चुके पर वे भी कुछे निराण भवें। ऐसे धरने वे पले समय उनके मुँह से कभी-कभी निरर पठना-प्रसिद्धा रक्षण म। बहने किंवा मायमानी राधा है। उरु, उरु राधा भी ही इलेकान के सारे हैं। बाबा-मङ्ग और स्वागतवत् होता है, कुछ नहीं। फिर राधे से '... वे यह वीर अल्प था, फिर भी इल' पूर भी बर्णन धरने थी। वहाँ कड़ी बाधा निररने; बाका, सुवा, इद-व-करते हुए राधे में एक त्रिभार ५ माव है। राधे दिखाएँ है। बाबा अपने एक भावा के केन्द्र के रूप दिखार दे रहे हैं। बाबा अपने सब व अपने पदार् हैंडियोरस के निरर पुत्रों तर कुछ बुरे पल्ले से ही लोग टारन कर कुछे बुरे पल्ले से आति दिखार देते हैं। बाबादान के साथ माधवदेव का एक मजन का रहे है।

'ए हरिवर भज दे मन, हरिवर भज दे कि किरकि किरकल, मोरन म कर्ण मंत्र के पदके को भासि कला करि हरि दे। हस मजन में रह्य गया है। उक्ति के भगवान की भासि कला है, उक्ति के कान, और, नाक, मुँह, हाथ और पैरों की सार्थकता है। भासिक के निरर देखे ही मील स्वतीत करने वाले प्रणी की शान्तिनी और कर्णदेवों उनके लिए मार-रहते हैं। अपने हस मन दिवस के दिन मन्त्र के एकदाक शाल में सचयन सार के रूप में छोटा सरीर उद्या रहा था। वारों और सुरम्य हरिली की ही इति-बाबा की तन भासयान मिले। इसी दिन बाबा के अन्दिश्य के साथ उपदेश की पुण्यविषय भी पडती थी। दोनों का मनि-बाबानवत् प्रिय मिल था। पद्मर पहुँचने पर कुछ समय के बाद सधानी बन्दा ने कीर्ण प्रार्थन किया। उस समय बाबा ने श्यामिने सर से अपने अन्दिश्य में उत्तर में कुछ उद्गार प्रकट किं, जो 'भूतान-मण' के सिधे अंश में प्रकाशित हो चुके हैं।

श्री बोद्धर राय, श्री एन० बंधुद राय आदि विद्यार्थी ने माप लिया है। श्री दुर्गा-मोषा ने बताया कि एक ही प्लेटबर्न की दुनाय-धमाओं में हर एक पत्र अपने शोषण-मय और उन्मीदीकार अन्वी बनें जन्म के क्षणों से। पर-पर आकर माप डुपाने की प्रवृत्ति लक्ष्मण बंद हो जानी चाहिए।

आगम में १९ दिवस की गांधी स्मृति निधि के गांधी-तन्त्र प्रचार विभाग द्वारा आयोजित धाम में श्री भीमराजरायणी ने कहा कि गांधीजी ने जो कुछ तन्त्र या दर्शन है, वह स्पष्टतर में है। गांधीजी ने वर्ष १९२० में जो विचार रखे थे, आज भी उनही आवश्यकता है।

१९ दिवस के २१ दिवस हर गांधी अभ्यन्त-केन्द्र, आगम में 'परमानन्द मुनिय प्रवृत्ति में शोष तथा उनके निष्कारण' इस विषय पर परीक्षा है।

२०-२२ की आठ में एक गोष्ठी में श्री० सप्रेमर प्रसाद लोहिया, श्री अमी अमरीका के वापस लौटें हैं, उन्होंने गांधी और विनोबा के प्रभाव के बारे में बताया कि वहाँ के लोग गांधी और विनोबा के विचारों की निम्न से आनन्द पाते हैं।

२१ दिवस की भीमती आचार्यी आर्यानायक का एक मापण विधि महा-विद्यार्थ्य, आगम में तथा वृत्त अभ्यन्त-केन्द्र गोष्ठी में हुआ, जिनमें उन्होंने वास्तु-विद्या पर विचार व्यक्त किये।

गांधी आचार्य संस्थान की छात्राओं के वर्ग हुए, जिनमें तिरोर का से डा० इरिपकर धर्मा, श्री दामोदर मिश्र, छात्रा श्रीमती रत्न, श्री महाश्वर सिंह महोदय के मापण हुए।

संबंधित समाज की ओर से बहोत्र रहत की निरासरी तथा उनको सभा दिने जाने के विषय में एक सभा हुई, जिसकी अध्यक्षता स्वामी इत्यात्मरूप ने की।

कोती बला उपरान्त में श्री० हलधर धर्मा का मापण हुआ। १२५ व. का संबंधित-महिला देखा गया।

श्री बाबा धर्माधिकारी का कार्यक्रम

श्री बाबा की उपासना की योजना २३ दिवस की तरह की इतिहास के मापण हुई। उसी दिन २२ मील का मोटर-सवार अनंतर तक रहा। २४ सा-को भीमराज के उपासना और वहाँ से सैर, २५ मील मोटर और २ मील परदाया करके ब्राह्मणी लुई, २६ को मुनराजी, नारायण कोटी और सा० २८ को केन्द्रमापण हुआ।

बोद्धर राय, श्री एन० बंधुद राय आदि विद्यार्थी ने माप लिया है। श्री दुर्गा-मोषा ने बताया कि एक ही प्लेटबर्न की दुनाय-धमाओं में हर एक पत्र अपने शोषण-मय और उन्मीदीकार अन्वी बनें जन्म के क्षणों से। पर-पर आकर माप डुपाने की प्रवृत्ति लक्ष्मण बंद हो जानी चाहिए।

विदेशों में शांति और अहिंसा के प्रयोग

**रूस में अहिंसक प्रतिकार का प्रचार
विदेशी पदयात्री-दल मास्को में**

अमेरिका के पश्चिमी तट पर सेन्सिटिविने से मत नृप १ दिसम्बर की पान्तिवादियों का जो पदात्री दल रूस की राजधानी मास्को के लिए रवाना हुआ था, वह अब मास्को पहुँच गया है। कमिश्नरी पश्चिमी तट से पैदल-चल कर क्रीव ३ हजार मील की पदयात्रा करके यह दल न्यूयार्क पहुँचा। वहाँ से न्यू-यार्क के सन्धन बोट कि बतुं से जर्मनी, पोलेण्ड होना हुआ अब यह दल रूस की राजधानी मास्को पहुँचा है।

इस दल में इस समय ९ सदस्यों के ३२ सौ-मुद्रण सामिल हैं। इन पदयात्रियों का उद्देश्य हिंसा और युद्ध के विनाश, शासक वर्ग के आग-विक अर्थों के विनाश प्रचार करने और जलपथ सँभार करने का है। इस की घोषणा में प्रवेश करने के बाद रास्ते में जीर मास्को पहुँचने में अब तक इन पदयात्रियों ने करीब ५० हजार पत्रें बाँटे हैं, जिनमें कहा गया है कि वे "अहिंसक प्रतिकार के उन विद्यार्थी का प्रचार कर रहे हैं, जिनके द्वारा गांधी ने हिन्दुस्तान की आजादी प्राप्ति की थी।"

पदयात्री दल के लोगों ने सत्र इस पदयात्रा के संबोधन में यह बतलाया है कि रूस में उनमें कठोर करने की, पत्रें बाँटने आदि की सुविध कातर ही नहीं है। पदयात्रा के संबोधनों में यह स्वीकार किया कि अधिकांश रूसी "युद्ध और शांति" के अर्थ पर उनके विनाश प्रचार करते हैं। एक पदयात्री ने बतलाया कि "हमारे विद्यार्थी के प्रचार में एक मुख्य बात यह है कि रूसी लोग अपनी सरकार के शासिकारी इच्छा से अपने आपसे हैं और उन पर इतना प्रभाव रखते हैं कि वे सत्र की कल्पना ही नहीं कर सकते कि रूस में जो सैनिक दंपारियों चल रही हैं, उनके विनाश-वादी को कोई खतरा है।"

रि की रूसी सरकार ने अभी हाल

में आगिक अर्थों के प्रयोग रि के किने हैं, उनके रूसी लोग विचार हैं, रूसी आगिक में उनके दुःख, परमाणु के प्र-सम्पान है।

रूस विगत एक पत्रकार तथा परस्पर का बन्धन है कि "कोविन्द कृत के इतिहास में यह अनुभवपूर्वक पटना है कि विदेशियों के एक दल को इस तरह रूस में ही इन सरकार की बर्तमान नीति विनाशक प्रचार करने का मौका दिया गया है, हाँकि यह दर्शन है कि इस प्रकार से सत्र निःशास्त्रीकरण का जो बुरा हतियार है सोच किया उसको बल मिलता है।"

विहार में सन् '३४ के मूकप से भी अधिक वाद द्वारा विनाश

विहार में इस साल जो वाद आरंभ हुए, वे बहुत अत्यन्त ही हैं। सन् '३४ के अंत में जो विनाश का बहुर विहार पर आया था, उसके भी उतार विहार की एक ही ही बात और बर्षों से लया है। तावे समाचारों के अनुसार ८५५ व्यक्ति "उद प्रत्ये" के विचार हुए हैं। वरते अधिक विचार लीय का विचार मुनेर निरा का है, वहाँ ७९३ व्यक्ति हुए मत गये हैं। इन्हीं एकदम लेता का १५७ मत भी गयी।

इस विषय का सुबांला करने में विहार सरकार के लक्ष्य अर्थात् होते। सन् '३४ के समाज विहार पूरे भारत की बतला की मदद का इच्छाकर बत गया है।

विनोबा का स्वास्थ्य

विनोबा के स्वास्थ्य के बारे में अब बारी में कुछ विनाशजनक समाचार मिले थे। परधान से प्राप्त खबरों के अनुसार भी लिखे अनुसार हैं। आगे के समाचारों के अनुसार विनोबा अब स्वस्थ हैं।

सा० ३ अक्टूबर को द्वारा अन्तर्गत विनोबाजी का स्वास्थ्य विचार सत्र सुनह उठने ही उनको से हुई और जोरी परदल होने लगी। टीक लगे ही साथ हुए हुई। दो मील जाने के बाद बाय की आगे धारणा मुद्रिण ही गया रास्ते में ही लेट कर पीछे हो गये किय। भागे पर हाला गांधी से ही कटाना गया। पत्र पर पहुँचने के भी अक्षय लिये। साइड में बीच बरक हाथ कि यह तकसीर-भौतिक प्रकृतियों में पापु विचार-ने हुई है। अब आराम है।

भूत-भूयाद 'भयानक' के २१ दिवस '११' में अंक में श्री एन० धर्म ४५० धार का छन है। वहाँ उनके भीमराज ने उक्त हुए नाम 'मन्यमान' नाम पर लिखा है। उनही बहुर 'मानविक' नाम ही होता चाहिए।

इस अंक में

१	द्वितीय
२	विनोबा
३	—
४	—
५	अभ्यन्तारक महलदुजे
६	संश्रयण देव
७	अभ्यन्तारक निरायण
८	शोभनराज विचार
९	आत्मिक प्रवृत्त
१०	मोहनकुमार धामी
११-१२	—

श्रीसमन्वित, भा०, ४० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा आयोजित मूकप प्रेस, बाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पत्रा : राय बट, बाराणसी-१, कीर्त नं० ५५
प्रिन्टिंग अंक की सभी प्रतियाँ १५०० = इस अंक की सभी प्रतियाँ १५००

जनतंत्र में सामंतशाही पद्धति नहीं चलेगी

उत्तर प्रदेश शान्ति-सेना रैली और सम्मेलन में श्री नवकृष्ण चौवरी

'आज प्रजातन्त्र का युग है। लेकिन रचनात्मक सेवक हों या राजनैतिक कार्यकर्ता हम सबके सपना प्रजा प्रणाली कात काटना चाहते हैं और उनके मन में क्या चल रहा है, यह सुनने की हमारी तैयारी नहीं है। हम सबको काम करने की अपनी पद्धति में अब शान्तिकारी परिस्थान करना होगा और सामन्तशाही पद्धति टोड़ कर सही अर्थ में जनतान्त्रिक तरीका अपनाना होगा।

युवा-वृद्धी सभाओं और प्रवचन-माला का समय अब नहीं रहा है। हमको दूसरों की बात सुननी चाहिये और शान्ति के साथ सहचिन्तन करना चाहिये। केवल अपनी बात पर अड़े रहना सफल नहीं है। हमको साथ के वारों में दूसरे का जो मत है, वह भी समझना होगा। सलाहपट्टी होने के साथ-साथ हमें सत्य-प्राप्ति भी बनना चाहिये। हमें मिल कर टोपना चाहिये और जो कुछ भी प्राप्त हो उसका सहयोग करना चाहिये। तभी हम नया समाज बनाएंगे व बनने में मददगार हो सकेंगे।"

अनुसूचित जाति महासभा की साप्ताहिक शान्ति-सेना सम्मेलन की परिष्कारिता पर अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री चौवरी ने प्रगट किये। यह सम्मेलन २ और ३ अक्टूबर '६१ को सज्जन्त में मेरठ-बाग-नारायण में सम्पन्न हुआ और प्रदेश के विभिन्न जिलों के आने वाले ८० शान्ति सैनिकों ने भाग लिया। इस सम्मेलन का उद्देश्य उत्तर प्रदेश शान्ति-सेना के संघालक श्री प्रमोदसिंह बाबरेयों ने किया और उसकी व्यवस्था का आयोजन श्री अयोध्यासिंह चौध ने किया। श्री नरहरि चौवरी सम्मेलन में दोनो दिन शामिल हुए।

'गोपी-बनगरी' के रूप में उत्तर प्रदेश शान्ति-सैनिकों की एक रैली (कूच) की स्तलनक मगर २० दिनों के लिए। इसका लीन चले की नगर-पट्टी के बाद शान्ति-सैनिकों का यह झुंड धार्य ६ बजे गोमती के किनारे घड़ीय स्मारक पर पहुँचा। उसको भी नमस्कार ने सशोभित किया।

शान्ति-सेना सम्मेलन का प्रारम्भ आये धंटे के धार्य-पट्टे से हुआ। फिर शान्ति-सैनिकों ने अपने-अपने जिलों में

हमारे धारे नेता स्वच्छिप्ट वित्तिये हैं, निमित्त होने, वही परिधिगत भी है, वही ही काम हुआ है। योद्धे दिन पहले सभ्युद्ध में एक घटना हुई, परिणामस्वरूप सोम हुआ, उसका परिणाम पाकिस्तान पर हुआ। अब यह अस्वीकार की घटना हुई है। इस तरह हम सबको जो भारत का भविष्य बना होगा, वह नहीं सकते। लेकिन हमारे आदर विरहात है कि

इस देश में युवा की और साथ की विचार्य होगी। मही की हवा के रूप-क में चर्चिय और सत्ता की तपस्या है, यह सब सभ्युद्ध की भूमि है। यही यथा केरु हर्मचलने का रहे है।

[पदावः जायी, अयम, ६ अक्टूबर '६१]

चल रहे काम की जानकारी दी। जिलों के प्रात जाणकारी की रोषणों में सम्मेलन में चला के सुच विवर्य हए प्रसार रहे। पोस्टर-आन्दोलन, साराचर-दी, युधि-समरथा, कार्यकर्ताओं का प्रविष्टान और योग्यता, भूदान-आन्दोलन की गतिविधि, साम्यवादिता और युवाश्रम, इन पर दो दिन एक विस्तार से चर्चा हुई। इन दिने दिन धाम को निवेदन के रूप में इनका सार सम्मेलन के अग्रे रखा गया।

श्रुति-समरथा के सच में यह सच

रहा कि यूनान की बमोन पर भूमिहीनों को कब्जा दियाया चाहिये, और राजि-पूर्ण एवं अहिंसक ढंग से वेदरालिओं को भी रोचना चाहिये। यदि बरुत हो तो वेदरालिओं के शिष्टाक सत्याग्रह का प्रदम भी उठाना चाहिये। इंग्लैण्ट के इण्डियन श्राविकि और वेदरालिओ भी बरुत को उनके अग्रुपूर्व कदम और उनके नेतृत्व में चलने वाले मिःमालिकरण के शान्ति-आन्दोलन पर बरुतारी दी गयी और उनके साथियों का अभिनन्दन किया गया। इस किरालिमें में सम्मेलन ने इस बात पर युक्त प्रकट किया कि भारत तथा उत्तर प्रदेश की सरतारों कालेज और शिक्षावालयों में शैिक-विद्युध पर बरुत दे रहे हैं। इस नीति का विरोध करते हुए, सत्कार से अग्रुरोध किया गया कि यह रचनात्मक और निर्माण के साधन-प्रयुधियों में अानी पालि और साधन सजाये, शक्ति देय में अहिंसक शक्ति बनयुव हो और विश्व शांति का स्तन बकाार हो सके।

सातपुडा सर्वोदय-मंडल, घडुगाँव

महाप्राण्ट के १० खानदेय शिले के सातपुडा सर्वोदय-मंडल, घडुगाँव की शालिक बैठक १-२ दिवस की हुई। बैठक में शारिगठन रमितर, कीआपरेण्टी गोवाहूदी, अजायी महाल के गोवेचर अरुत, अपयध और साम-संरक्षण गोवाहूदी के वंच भी उपस्थित थे। प्राथमिक मागण में श्री दामोदरदास मुंदरा ने बताया कि अजायी के नवनिर्माण-कार्यों में शिष्ट अर्थिक सहायता देने के शिष्ट बाहर की बनता सत्तर है, किन्तु हमें यचना के बजाय अपने युवायों पर अम से स्वचलनी बनने की आवश्यकता है और शही दिया में प्राथ-संरक्षण गोवाहूदी की स्थापना के रूप में हमने कदम बढाया है।

शारिगठन में शालिक विषयक बैठक में वेध लिये। नेत्र के गोंधों की पशु-अध्याय के विषय-अपक पर विचार हुआ। अंगो की शिष्य की शिष्ट से 'कीवेन' की औषध पेटियों का बहुत उपयोग होता है। शर-दीनी की योगियों पर दवा का अपयध परिणाम हुआ।

अगस्त माह में अनाज की बहुत कमीरहती है, स्वच्छिप्ट अनी अजाय में अजा का माय भी मज ४००० है। मंडल के १०००० सो-ने कर्न रूप में २८०२०० का अजाय भी मज २०००० के दिसाव से नौ केन्द्रों के गोवाहूदीयों को दिया।

वचनस्वला गाँव में दो दर्जे में अर-नीय का साराह हुआ और मासला सुश्लिष तक या सदा का। लेकिन मंडल के कार्य-कर्ताओं ने समझौता कराय। सभी एक-दूसरे के च्या-याचना की और प्रेम से मिले।

सामानों को अलवा प्रशिक्षण की ओर से एक दुय-नेत्र शुक किया है। ता. २७ के २९ दिवस तक मराठों में हुई रमा में विवर भाद के विवरण में म्हाय का शिष्य हए लेम में सतव वनों के नारार काज अजी और आसामयन में पचावट हुई। सव वर्षों की अयेवा मकर की औषध फालू कुज फल ही रही। पान, सुंणनी, बावरा, आदि की फलते अन्धी है। सातपुडा विभाण-लेव की ओर से सावधारी के शिष्ट लीन सुचर्च अये गने।

यहाँ शिष्य भी नहीं मिनीय-पयली मनायी गयी। जनता और मिः-गहाण में वेले का 'पोला' उलय में सजाते सयय शी-दी-थी बदरनी-थी अशोभित की गयी। दसमें ५० बैलशो-पिं आरी की, विनमिं से १२ शी-पिं के शिष्यों की गुणानुभव से शही के काने दनाम में बरि

गये। यहाँ गोशोसयव में सधमेकन, कीनन का आयोजन कर अदिवासी सभ में सामुहिक लीन के प्रति रवि सभे गयी। २६ आदिवालयों में सभ्य हने की प्रविता की। इस विभाण के १४ अ-सत्कार होसाहटियों की बरिंय सभालों में उपाय हुए। एकासी बसर भूवि ११० एकड़ का शिष्य हुआ। अनी भूवि १२००० एकड़ भूवि विचालि की गयी।

गांधी-संघर्षों के अरुतन पर २८ म का शाधिप शिषा। "शाम्योग" की के ५५ स्राहक गये। १२ लोकेतवों और १ शान्ति-सैनिकों के वाम भरे गये।

— ४० छ० मर्मिक, का —

चण्डई में सर्वोदय गतिविधियाँ

भरद सचोदय-मंडल के अगल में कुल ३,५०,५००३ व ९९ न.००० अर्थ-व्यय। इसके साथ ही ११ नागरिकों ने २०९५ व. का वारिक वने दान देया तव किया है।

१६ माह में १० स्राहकल्लों में शालिक विचार-संरकार के शिष्य हुए रमाओं आचार्य मिरे, श्री रा कू यालि श्री दामोदरदास मुंदरा आदि प्रयुक्त कालों के मागण हुए। कतिब ६० का, सर्वोदय-सहित गया। एवबती शालिक प्रविता 'सर्वोदय-साधना' की एक हवार प्रविणों निकी है। इसके अलवा अन्य सर्वोदय-भूदान के पत्रिकाओं के कुल १५८ स्राहक वने और ५५ अक उदकर निकी है।

भरद के कई वेशों में सर्वोदय-पार कार्य चर रहा है। मालाक, कुस, सारको वेश में विरोध पयन दे रहे हैं। इस सर्वोदय-पारों के अगल रूप में ५३० ६९ नये पैठे संघटित हुए।

कार्यकर्ता अपने-अपने जिलों में लोय की कतिगार्यों एवं शी-दी-थी शरणों में मुलसाने की कोशिश करते रहे हैं। शिष्य दिनों की वेदरालिओ अरुतयव है। अरुत वेवा में शिष्य की-र-न-शरीर अरुत रहता ही था।

शारी-आशोयोग कमीशन एवं सार करकार द्वारा शिष्य शिष्य पदवक की शिष्य का प्रदर्शन किया गया, शिष्य शोनों ने बहुत सलद किया। पूरे सार नार में उरके प्रदर्शन की योग्यता रही है।

भरद स्रद में विचार प्रसार के ८ कैच चल रहे हैं। इनके अलवा माह में शान्ति-सैनिकों का साहसिक शालिक सभ्यक करी है। बेश हर शान्ति-कार की बरुत शिष्य की साहायिक बैठक भी अगल से हो रही है।

को भीम बनाती जा रही है। यही नहीं, इसी विपत्ता को साधिका रूप अन्य विकारों भी दिखायी पड़ रही है। इसी समस्याओं का अग्रोद्योगधर्म संघर्ष हमें अन्न समझने लगा है। इन समस्याओं में कौन कबो और कौन छोटी प्य बहना मुश्किल है। 'को बड़ छोट बहल बतराए।'

मलयपुर की कलावी हरिजनों के मूल्ते में है, इसलिये रिफ्रेजिड मूल्त कले हो। हरिजन-समस्या भी सीधे तौरों के सामने आ गयी। ... अब ऐसा करना है कि नरायणी और हरिजन-सेवा अलग अलग काम नहीं है। हरिजन-सेवा छूट को ही की हि चरते हैं अपना काम दे दिया। ... फिर नारायणी से संबंधित गांधी विचार का प्रचार प्रारम्भ हुआ। एक दिन ऐसा लगा कि सर्वोदय-ग्राम का निस्कार छाँटा होना ही चाहिए। बर्माकि बहू जन-सम्पर्क का सुन्दर प्रतीक है। १५ अगस्त से यह काम प्रारम्भ भी कर दिया और जब तक १०० वार स्थापित हो चुके हैं। लोगों के अन्त-प्रश्न के समाप्त भी हुए हुआ है।

शारदायन्त्री में प्राप्ति नहीं (?)

शारदायन्त्री-आन्दोलन में जो हुए हम लोग अन्तर ही अन्तर होते कि भूदान-समयदान के सर्वप्रथम के अन्त का वन्य भावों की तरफ लक्ष्य बना उचित नहीं है। यह सही है कि जो काम हमें लिख ही, उसको पूरी परामर्श और वास्तव के प्रस्ताव ही मनुष्य का कर्तव्य है। पर हमें यह नहीं मूल्ना चाहिए कि भूदान-आन्दोलन आदि कार्यक्रम सुदूर दूर तक एक 'साधक' की ही दृष्टि होते हुए भी अन्त-प्रश्न के 'साधन' ही है। हमारा मुख्य 'साधक' तो प्रेम का द्वात्राय स्थानित करने का और अन्तिम विद्या अन्त्य के स्थान पर स्वायत्त और नैतिकता की स्थापना करने का है। गांधीजी ने हमें यह समझ दिये हमारे सामने रखी थी। पर हम अन्तर कार्यक्रम अन्त-प्रश्न की ही साधक मान कर प्रकाशनी और साधनी बन जाते हैं। जिस प्रकार जीवन बहुसुखी है, उसी प्रकार सेवा भी बहुसुखी ही होती चाहिए-यह निश्चय मिन बात है कि जिस समय को काम होनी है, उसी ही पूरा समय और प्रकाश होना चाहिए। अन्त-प्रश्न ऐसा भी हमसे नहीं है कि अगर कोई कार्यक्रम सारी का, मित्र का, हरिजन-सेवा का या शारदायन्त्री का काम करते है तो वह 'साधक' के काम में नहीं लगा हुआ है। 'वही' वरि यह है कि अगर दिये हुआ है और लक्ष्य स्पष्ट है तो सेवा का कोई भी एक काम हमें ही से उन्नत सदा अन्त-प्रश्न का प्रथम प्रश्न ही परामर्श चाहिए, जैसा कि मलयपुर के उदाहरण के सट है। चतुर्वेदी भी मलयपुर के रहने वाले

हैं, लेकिन गांधी-विधि के काम में ७-८ वर्ष तक अपने देन से कुछ दूर रहे हैं। अपने गाँव में वे पहले सर्वोदय-ग्राम की था मूल्न आदि की बात करते थे तो कोई सुनता नहीं था। हमने मूल्न सुधाया तो नहीं थी, लेकिन देन से दूर रहने के कारण अन्त-प्रश्न वर आ गयी थी। अन्त-प्रश्न के विभिन्न विधाओं का विवरण लेखों में देता कर दिया। 'नतीजा यह हुआ कि शारदायन्त्री के छोर से वे आरंभ हरिजन-सेवा, साहित्य-प्रचार, नरले और सर्वोदय-ग्राम तक पहुँच गये।

सद्भावनायन्त्री गयी

विनोय अन्तर वहा करते हैं कि सर्वे सत्याग्रह की कड़ीयें देन वन में है कि सत्याग्रह के कारण लोगों को मय न लगे, बल्कि अन्त-प्रश्न मनुष्य को। बूँकि मलयपुर के सत्याग्रह में न थे उन्त-प्रश्न के रिफ्रेजिड, न भीने जहाँ से लिखन, न लक्ष्य के रिफ्रेजिड बटुटा थी, इच्छिय सत्याग्रह के लिफ्रेजिड बिकी के अन्त में अन्ति-प्रश्न नहीं हुआ। बल्कि उन्त-प्रश्न वरना-अन्त-प्रश्न गयी। मलयपुर की जलसी हरिजनों के मूल्ते में थी। इनके पर भी आरंभ की अन्त-प्रश्न का बहुत-सा भाग ही जाती थी। पर उन्त-प्रश्न रिफ्रेजिड आगे बढ़ता गया, स्वयं-स्वयं इन हरिजन अन्त-प्रश्न की भी आरंभ में सचाँ होने लगे। 'सूचक' भीना तक लराय है। स्त्री-विचार आदिप्रकार हम लोगों की मर्याद के लिए ही हो रहा है। मलयपुर में यह कलसी कलसी दूत था।' सत्या के मूल्ते के हरि-जन भी भी अन्त-प्रश्न आगे एक दिन तक मूल्ते के लोग एक निश्चित अन्त-प्रश्न लेकर चतुर्वेदीयों के पास आये कि 'अन्त-प्रश्न लोगों में सचाँ गयी देना दिया है। हर उन्त-प्रश्न के दिन हम हरि-जीवन करते हैं, अन्त-प्रश्न में उन्त-प्रश्न की अन्त-प्रश्न भी किया और उन्त-प्रश्न के अन्त-प्रश्न कि कि वे लगे 'भी-मूल्त' के कथा सुनाये। इसी प्रकार इन्त-प्रश्न के दिने गल्लों के इन्त-प्रश्न-परिचरों की परामर्श भी हर उन्त-प्रश्न के दौरान में हुई।

यह सही है कि मलयपुर की जलसी दूतने से नारायणी की समस्या दूर नहीं हुई है। मलयपुर की शारदायन्त्री विचार की दृष्टियों उन्त-प्रश्न में से एक है और निरंतर प्रश्न भी आदिप्रकार विन्त-प्रश्न का एक छोटा-वा दिसा है।

पर नरायणी के विचारक निहित-स्वर्णों वालों का जो भी प्रचार हो, मलयपुर का सत्याग्रह इस बात का सुख है कि नरायणी की काम सर्वथा नैतिक और जन-हितकारी है तथा सर्वथा अन्त-प्रश्न-नितायुक्त काम में लगे ही रहे अन्त-प्रश्न जन-सम्पर्क मिलेगा। जन्त-अन्त-प्रश्न होने से देश भर में सर्वप्रथम नरायणी के सत्याग्रह संसार में लगे ही रहे अन्त-प्रश्न नहीं होगी।

मलयपुर का सत्याग्रह, चतुर्वेदी के विन्त-प्रश्न में ही नहीं, लेकिन दूर-दूर विन्त-प्रश्न में

भी सत्याग्रह के भीम, औपचारिक स्वरूप के विचार में हमारा मार्ग-दर्शन कर सकता है।

१२-१०-६१

-सिद्धराज

सत्य की प्रतिध्वनि

सिन्धे अंक में हमने अमेरिका के पदयात्रा शुरू करते प्रतिध्वनि के एक दल के रूप की उल्लेखनी। मारको पूरुवे और वहाँ निम्न-प्रदेश तथा अन्त-प्रश्न-प्रतिचार का प्रचार करने का उन्त-प्रश्न दिया था। प्रतिध्वनि का यह पदयात्रा दल अमेरिका और योरोप के विभिन्न देशों में शान्ति का प्रचार करता हुआ १० महीने की पदयात्रा के बाद 'ता. ७' अक्टूबर की मारको पहुँचा था। निन्द के उन्त-प्रश्नों के अन्त-प्रश्न, मारको निन्द-विद्यार्थी के मन में शान्ति-वादी विचारों की एक सजा में बोल रहे थे, ता मलयपी का चल देन कर वहाँ के अन्त-प्रश्नों और अन्त-प्रश्नों में शौर्यशक्त हुए और उन्होंने बंद कर देना चाहा। इन्हें पर लक्ष्य विचार-प्रियों ने ही विशेष प्रार्थना किया, देखुलें पर उनके मारे और एक विचारों ने उन्त-प्रश्न कहा कि अन्त-प्रश्नों की सचाँ को मानिये नहीं, लेकिन अन्त-प्रश्न ले सही। इस पर अन्त-प्रश्न लु लु है। सचाँ १० मिनट तक होती रही और बा-शान्तिवादी सचाँ-सकल के चलने लगे तो दूर विचारियों ने 'सेविथ ओगेशन'-कले द्वात्राय साधिका बर कर सम्मान दिया। सचाँ तो हुई, लेकिन आदिप्रकार तो जो अन्त-प्रश्न या बदी हुआ। ता. ७ अक्टूबर की मारको की चरते है कि 'प्रचारों पर के १० चरतों को मारको से अन्त-प्रश्न पर रचना कर दिया गया है। ऐसा लगता है कि रूप में अन्त-प्रश्न बात शर-लाग करने, न करने के प्रश्न पर पदयात्रियों में भी आदिप्रश्न में कुछ मतभेद हुआ, पर अभी दूर विन्त-प्रश्न का प्रथम प्रश्न नहीं हो सके है। विचारियों की सचाँ में हुई पटना जाँह इस बात का सुख है कि रूप में वहाँ के अन्त-प्रश्नों के विचारों के निरंतर दूर-दूर विचारों के प्रचार का अन्त-प्रश्न नहीं है वहाँ यह सचाँ सचाँ दूर बात का सुख है कि यान्त-द्वन्द्व में सचाँ की प्रतिध्वनि को कोई बाधों निम्न-प्रश्न रोक नहीं सकता। सत्य का प्रथा साक्षि अन्त-प्रश्न प्रथम करता ही है।

सच्यों में सर्वोदय-कार्यों का एक प्रयोग

सर्वोदय-आन्दोलन के बारे में एक टीका यह की जाये है कि यह गाँवों तक ही सीमित है, शरों के जीवन में उन्नत प्रयोग नहीं है। आन्दोलन के गाँवों में केन्द्रित होने के पीछे क्या कारण है और क्या सही है, इसकी चर्चा हम अभी नहीं करते, लेकिन शरों में भी कहीं-कहीं

सर्वोदय-कार्यों में ही आगे से जे हो रहे हैं, उनमें से एक का विवरण यहाँ करते, ताकि दूर-दूर अन्त-प्रश्नों में भी जो शरों में काम करना चाहे है, कुछ दिया मिले।

कानपुर में उन्त-प्रश्न गांधी स्वर्ण-विधि के उन्त-प्रश्न विन्त-प्रश्न की अन्त-प्रश्न के लिए बा-शान्ति के एक गाँव की विचारों के चल रहा है। तन्त-प्रचार विन्त-प्रश्न के सामान्य कार्यक्रम स्थापना-अन्त-प्रश्न-गाँवों में, सचाँ-समझने, विन्त-प्रश्न, सचाँ-प्रचार आदि का सहाय है, वह सचाँ हुए बंद के कार्यक्रमों में तन्त-प्रश्न सचाँ का एक छोटा-सा मूल्न है वहाँ पर-पर है सचाँ-सचाँ सचाँ सर्वोदय की दृष्टि से कुछ गहरा काम किया जाये। हमने सिन्धे अन्त-प्रश्न के अन्त-प्रश्न में वरीय ६ हजार की जनसंख्या अन्त-प्रश्न के अन्त-प्रश्न से १० लाख परिवार-वास्त एक सचाँ उन्त-प्रश्न मुना। पिछले सात ता. २ अगस्त से बह प्रश्न, हुए हुआ।

ही महीने के प्राथमिक सच्यों बाद २ अक्टूबर, १९६० से हुए सच्यों सर्वोदय-यत्नों की स्थापना शुरू हुई। अक्टूबर के अन्त-प्रश्न तक के ११ महीनों में कुल २६५ सर्वोदय-स्थापित हुए, विन्त में २००। अन्त-प्रश्न अन्त-प्रश्न रूप से चल रहे हैं। अन्त-प्रश्न का पाठ अन्त-प्रश्न उन्त-प्रश्नों के, जो शरद चल गये हैं। इस 'प्रिय-प्रश्न' के स्थापना ५५० परिवारों के सचाँ-कार्य-कले का सचाँ-अन्त-प्रश्न लु लु है और इन सचाँ का सचाँ-प्रश्न सचाँ भी काम में मिला। सचाँ के १०० परिवारों के स्थापना १५५ सचाँ 'गांधी विचार-अन्त-प्रश्न' के सुलक्षण के सर्वोदय-सचाँ अन्त-प्रश्न सचाँ सचाँ लु लु है। ५६ परिवारों में सर्वोदय-प्रश्न-निम्न-प्रश्न रूप से जारी है।

सर्वोदय-कार्यों के सच्यों और सचाँ-कार्यों की प्रेरणा से हुए सचाँ के नागरिकों में एक 'सर्वोदय-विन्त-प्रश्न' सचाँ-साक्षि-विचारक के लिए एक 'सर्वोदय-मदित मण्डल' की स्थापना की। १ अक्टूबर, १९६१ से साक्षि-सचाँ-कार्य-कले सर्वोदय-ग्राम के अन्त-प्रश्न ही उन्त-प्रश्न निर्माद चलते हुए, पूरे समय दूर लेव में काम कर रहे हैं। अन्त-प्रश्न सचाँ के १० महीनों का जो विचार प्रार्थना हुआ है, उन्त-प्रश्न जादिर होता है कि दूर अन्त-प्रश्न में सर्वोदय-कार्यों के द्वात्राय द्वात्राय ६०० चरत-प्रार्थना हुए और प्रश्न १०५ चरत-प्रार्थना प्रश्न से सचाँ के नागरिकों से प्रार्थना हुए हैं। सर्वोदय के सचाँ का उन्त-प्रश्न निम्न-प्रश्न से सर्वोदय संघ की सेवा गया, सचाँ ५५० सचाँ-सचाँ-कार्य-कले के निर्वाह में लगे हुए और सचाँ १९६१ सचाँ-सचाँ-कार्य-कले में लगे हुए। सचाँ अन्त-प्रश्न में अन्त-प्रश्न एक 'कमरा' की सुलक्षण,

संगठन-शक्ति से ही

सिद्धराज

अन्वीकृत, चन्द्रीकी, मेश्ट तथा उत्तर प्रदेश के दूधरे विभिन्न विद्वानों को दूधरे हुए उन्हें दूध अर्थात् सांप्रदायिक कहना या समझना गलत होनी सिद्ध है कि-सुसमस्याओं के आसानी नैतिकता के माध्यम हुए। अथवा हम लोग का मित्रता लोक नहीं कर पाये तो उनका हत्या भी नहीं हो पाता। इन्होंने जनजातगत को यह समझ जेता बन्दो है कि इस तरह के दंगों की वाज दरमालक नहीं है। पत्नी, फस, जाति, धर्म, भाव, भाव आदि के दूधरे श्रेय में ही और कुछ तो इस तरह के मेश्ट होसया खुलने ही वाले हैं। इन मेश्टों के कारण अपने पराये का मेर भी मनुष्य में खरब ही पैदा होता है और परलोकन कभी-कभी आसानी सखर-आदि भी हो जाता है। समय-समय की कमीनी ही यह है कि इस तरह के लम्बे न होने पाय और म्मयदे तथा आचार-विचार की मिलाज होतो हुए भी रीज साथ मिले कर रहे, पर फिर भी ऐसे लम्बे कभी सामाजिक रूप से हो जाते हैं तो बहुत विनाही की गलत नहीं होती।

पर विनाही की गलत ठहरे वन समान के ही कुछ लम्बे अपने शरीरों को पूर्ण के लिए जान बुझकर बीजनापूर्क काम लोनों की भावनाओं उठाउने और उन्हें बराने का काम करते हैं। एभिनी उपर-प्रदेश के वे दूधरी भी लोनों की सहज साम-प्रदायिक भावना के परिणामस्वरूप हुए हुए नहीं गये, पर इनके पीछे हिंदू और मुसलमान, दोनों पक्षों के पारलोक लोनों की और उनसे प्रभावित हुए सामाजिक तथा सामाजिक व्यवस्था की योजना भी, यह सब ओर से आने वाली दरवी से शक्ति होता है। साम-नृत्त कर काम और अतिव्यय करने पैदावी गरी, इस काम में विभिन्न विद्वानों को हजर उपर मेला गया और दूधे करताये गये। आगे आने वाले आम चुनाव की योजना में इस तरह लोनों की महादुर्भूति अपने लिये बना करना और दूधरी पाठियों को नीचा दिखायान पर उतारने का भी है। इतना ही नहीं, इन दंगों के बीरान में भी देवा की दुर्भाव

बधाय कि एक ही सम्प्रदायवालों में नैतिक सामंतिता या प्थविश्व देय से प्रेरित होकर होगे न चायता उदा कर उनी सप्रदाय वाले अपने प्रतिपक्षी को मार डाल।

इस वन सगठित और निवेशित कार्यवाही को रोक्ने के लिये देय के सम्मत्तर तथा प्रभावकारी लोनों को तो कहकर उठावे की आवश्यकता है ही, पर आवश्यकता स्वरूप यह है कि अग्रम लोनों में वन साकारण में को सम्मत्तर और मते लोनों को उपलोक प्रसार के सगठनों से या स्यापों से सगठित नहीं है—और उन्मय में ऐसे लोनों की ही कल्पना चकार होती है—उन्हें सविन होना चाहिये और इस प्रकार की अस्मार्थिक प्रवृत्तियों परनने नहीं, इसके लिये योजनापूर्क प्रयत्न करना चाहिये। दूधरी होने के चर परिणों की मद्रद प्दुभाना यह तो कभी करते हैं, मर्मक ही देय के लिये विमोहना होते हैं ये लोग ही साथ लोरे के इन बाजों में भी आगे रहते हैं, क्योंकि समाज में दुर्भाग्य वे वे ही आम लिये लय हैं। पर कुछ शय यह है कि दंगे होने ही न पाये या ही भी जायें ही पैरने न पायें, इन्की योजना की धार। अमरिफकार तो कयने वाले भी पहले के अने शांति लय और म्मवस्था की योजना लिये हुए पाते ही हैं कि कभी भी कोई अतिव्यय मिले वाते तो उरका धरदार मुत्र कर अपना मालन साथ बायें। उनी तरह शक्ति जादने वाले लोनों की भी हमेशा ऐसी प्रयत्नों के लिये पैदाय करना चाहिये। अल्पेय मोरुहल में मरुत अग्रजाओं को रोक्ने, यही समाचारों की जय-सखी देने, यही भी अस्मार्थिक या रक्षायी अने उन पर बल रखने, उनका पर्याय करने, देने के समय लोनों को जान्य और काय में रखने, अतिव्ययों तथा अस्मार्थों से उरक रखने आदि के लिये अस्मार्थकर लोनों को स्यापी और संगठित योजना बनाये रखनी चाहिये। मित्र लय अन्वीकृत और आचर-पार के देय में हमारे सामाजिक तथा अतिव्यय आगत सेवा मरुत की सयो-अतिव्यय लयें सुनी है। उरक लय ले हुए-वने अस्मार्थिक की बरद सुभुचना ही चाहिये; पर इस नैतिकता के साथ ही हम कति-पैठकों को बचो इस लये ही बरों

सामाजिक आदि प्रवृत्ति के लिए नि:सुख दिया है।

कहिए एक बर्न के लामय आये परि-बर्नो के समर्थन स्थापित हुआ और उनके परिणामस्वरूप कृषिक काम हुए। यह कहिये ककर है कि निरल और अस्मार्थिक काम आरंभ किया जाय तो हर बाह्य काम हो सकता है। सगठन काम, सामाजिक प्रचार आदि तो सामाजिक बरन हैं, अतएव इन कार्यक्रमों के परलोक नामके भी परिचारिक मानना तथा सामाजिक त्रैतिक शक्ति का विकास हो, यही मुख्य उद्देश्य है तबले समय-समय पर उनका होनाही सम्भवतया सब समाधान जागरिक रूप में अपना ही उद्देश्य ले कर रहे। जागरिक-समर्थन के विनाश का यह प्रयोग सदर्थों में आम करने वाले अन्य कार्यक्रमों के लिए भी उपयोजी शक्ति होगी, ऐसी भावना है। अथवा लोनों-कार्यक्रमों को अथवात्त स्यापी रूप से कही लये हैं, वे अपने-आपने शर में हल कराने 'प्रिय-पुत्र' बनने की नीवित बरें तो म्मय-परिणत की प्रविष को भी हमारा अकरी पये है, हम आम बने बने हमने म्मये नहीं है, -सिद्धराज

अथवात्त, ऊपर लहाने अथवात्त सगर्थों को लिये-प्रयत्नने तथा शक्ति की स्यापी योजना कार्यान्वय करने की और अत्यन्त प्रयत्न देना चाहिये और उरक काम में पूरी शक्ति लगायी चाहिये। आगे आने वाले आम चुनावों की प्रयत्न में खलने हुए यह काम और भी बन्दो है, क्योंकि देय के लगी पक्षों के नेतृत्व में चुनावों के बरने में आचार-मार्ग मानने की पैरनय को बकर किशारे, पर एक ही उरक शर में आने में समय भी लगेगा म्मयदूधरे, उनी कागिया के सगर्थ भी चुनाव में दिना में हल तरह आगतिय भाग होने को उरक-सुख सम्भवता नहीं हो।

जो चेतन हैं, वे सामने आयें

राममूर्ति

अथ 'नये मोड' को अपनाया है तो लारी-कार्यकर्ता को हुजामदारी से मुक्त करना चाहिये, क्योंकि अकार का हुजाम लगे का नो सगर्थों है, पर बर-रिक्तों के चरित्र को प्रभावित करने बिना नहीं रह सकता। बरिन पैरल अर्णो निरुत और र्ज-सक्ति से ही नहीं बनना, बरिन पैरल के बिना भी नहीं बन सकता, निरुत लयके लिए प्रविश लिये जायत काम और लय-स्यपी ऐश्ट होना चाहिये, तबले काम, तबले काम का प्रभाव सम्भव हो। विरो और हर की स्थिति में बरिन विनाश भाव: नहीं होता। पर कभी म्मयल कते हैं कि आम को लिये है, उरके निकले ही बकरत है। इस पर कीरें म्मयल नहीं है, लेकिन कतिनारे यह है कि इन स्थिति में वे परले कीन बनते, ऐसे निरुत और विनाश कर काम आये।

खारी के काम को पूरे सरोद-आयोके लय की र्जमान सुविधा में रखने की बकरत है। खारी के 'नये मोड' के नो अस्मार्थ हो कते हैं—एक ही खारी को लोक सय की विचार में से नायक का लकत है और बुदरे, खारी परिचार सयक लय और साम-समलक्य के द्वारा साम-सखरान को शक्ति का मायम देवावी जा सगर्थो है। रोनों में अत्यन्त और है—रजय अकर है कि लय है, बुदर बरद एक-नूरे से रिहदक अन्ना दिखायो देने लय भाव। जये मोड की बर्चों में शोच एक एक कर गोवी के सति-परधान पर रिच विचार कर लेना चाहिये, यो चरके-केन स्यपीर रि-अर, खारी का क्या रथय है। शिन लय नयी सामल विद्युक्त के विचारों को केरल लय 'प्रामर' बरने की रदाति नहीं है, शक्ति उरके पीछे अतिव्यय शक्ति की 'अस्मार्थिक' है। उनी तरह खारी केरल करके के लिए नहीं है, शक्ति उरके पीछे अतिव्यय शक्ति को पूरे एक सुविधायी स्थिति र्जमान है। अं अर देय मानने लय है कि नो मोड की सगर्थों के लिए लोक-स्यपी और खारी का अकार लय हो चयन चाहिये।

इस बात की है कि हमारे पैरनापील सुख-स्थिति लुने हुए सगर्थों को केरल कर लेने में पैरल काम और लय लेने में नये मोड के विचार के अथवात्त खारी को नयी दिशा में ले जाने की आवश्यकता है। आने प्रभाव के कारण वे लयय को शक्ति और सगर्थ को अपने कार्यक्रम के लिये हलेशान कर सकते हैं, उनी स्थितिवा का यह लय लोनों की सगर्थों के विचार का मुदत लय विरोध नहीं कर पायेगी। आर हमारी मुख्य खारी-लंशथाय 'नये मोड' की पैरना लयने वाले शक्ति को एक लय स्थिति के नेतृत्व में उरक विधिप में काम रखने के लिए निरुत चले तो पादों कुछ आवे बर सकती है। नये मोड की सामय परलोकनों के लिये म ह देने के नाम दिगमय नहीं केरल। सगर्थ आन्वीकृत के अन्य कार्यक्रमों की तरह 'दश मोड' की पैरन स्थिति को लेना बर बनेगा, इवलिप पैरन लयिचों की लयय होनी चाहिये और उने लिए अथवात्त पैरल कली चाहिये।

['आपस की बात' से]

बरने सामाजिक "सामयिक" यह पर महत्तर प्रदेश का गौरवपूर्ण सामाजिक है। सामाजिक प्रवृत्त - चार सगर्थ बरन - पीठूरी, बरन (महाराष्ट्र राज्य)

आप्यायी सभ्रदाय से राष्ट्रिय एकता के खंड-खंड होने का खतरा

सत्तावाद के चक्कर में राष्ट्रिय व्यक्तित्व का लोप

—दादा पनापिकरान्त

आज कुछ ऐसी बातें बहना चाहती हैं, जो आपके और मेरे लिए अग्रिम हैं। कृपा कर यह न मानिये कि इससे मुझे कोई आनन्द होने वाला है। जिस तरह एक रोषग्रस्त मनुष्य के मुँह से व्याधा-भरी भाह, कड़ाह निकलती है, उन्ही तरह मेरे मुँह से ये बातें निकलेंगी।

आज हमारे देश में राष्ट्रीय राजन्यावाद का घोलकाल है। उसके कारण इस देश के छिन्न-भिन्न राष्ट्र हो जाने का दर बढ़ा हो गया है; क्योंकि राजन्यावाद और सत्तावाद, मनुष्यों को आपस में मिलाने के बदले उन्हें एक-दूसरे से अलग करते हैं। सत्ता और सम्पत्ति का यह स्वभाव ही है कि वे मनुष्यों को जुटा करती हैं।

आज इस युद्ध की अवस्यकता उठी हो गयी है कि क्या भी होट में पड़े हुए राजन्यातिक पक्ष आपस में मिल कर यह संकल्प करे कि इस लड़ा की प्रतिस्पर्धा में देश के दुर्बल होने देंगे। आज एक ऐसा अवस्यक और संकीर्ण राजन्यावाद प्रवृत्त हुआ है, जो इस देश को दुर्बल-मदाराष्ट्र की रचना के धर आन और मदाराष्ट्र की रचना के धर आन विरुद्ध या विभाव लड़ा हुआ है। देश के बँटवारे के समय एक पनाह के दो पनाह हुए थे, और अन्त वहाँ अलग पनाही एते का वागदोलन शुरू हुआ है।

कहीं आप यह न पात्र बँटें कि यह कसबायों के प्रति प्रेम का अन्वेषण उल्लेख साम्य के अतिमान का एक परिणाम है या कि इसके पीछे कोई सांस्कृतिक भूमिका है। यह तो निरार राजन्यावाद है। इस राजन्यावाद का प्रतिहार कौन कर लेगा? कहीं साधारण साम्यवाद बर रहेगा, जो अपनी राजन्यावारी बना नहीं है। देश के कुछ विचारवान लोगों ने इसे यह समझाने की कोशिश की है कि यह एक देश ही नहीं, वह तो एक उपलक्षण है, यानी अनेक देशों का बना हुआ एक महादेश है। और एक मात-पराष्ट्र के बन जाने के बाद फिर एक बात का कोई अन्वेषण नहीं रहता कि वह अन्वेषण है या कि उत लय है। भारतवर्ष एक उपलक्षण नहीं, बल्कि एक महादेश है, और यह ही ही हमें समझाने में मिले है। हम देश के इतिहास में कभी भी ऐसा दिन नहीं आया, जब यहाँ के किसी साम्राज्य सामरिक्त ने भी भारतवर्ष की एक एकजमे के गये में अन्वेषण ही। जब सेगो में एकता की प्रतिष्ठा नहीं थी, राजनीतिक का निवारण भी नहीं आया था, जब समय भी इस देश के युवाज्य अग्रिम और इतिहास में पानी इसकी एकता के विचार में प्रान्त नहीं उठा। जब देश में आधुनिक राष्ट्रीयता का एक भी अन्वेषण प्रवृत्त नहीं हुआ था, जब निम्नो भी मनुष्य मारत में भार-

तीय एकता एक सिद्ध वस्तु रही है और आज उन्ही एक भारतीय राष्ट्र के अनेक राष्ट्र बनने के दिने हम तलर हुए हैं। पहले इस देश में अलग-अलग प्रान्त थे। अब यह अलग-अलग राज्यों का एक देश है। इस बहुराज्यवाद के साथ ही देश में बहुराष्ट्रवाद आया है। अतिमान के सुलभमयों को हमने बहुत योग दिया है। उन्हीं देश के दो राज ही नहीं,

राष्ट्रीय एकता के लिए कुछ सुझाव

● इसीलिए मैं कहता हूँ कि अलग-अलग भाषावाले लोगों के बीच सम्पर्क बढ़ाये और एक-दूसरे की जितनी भाषाएँ परस्पर सीख सकें, सीखिये। तुलकों की मदद से भाषा सीखें, जो जरूरत होत लगेय, लेकिन जैसे जैसे आपसी सम्पर्क बढ़ेय, जैसे-जैसे एक-दूसरे की भाषा का ज्ञान भी सरलता के साथ बढ़ता जायेगा। बालकों को तो अलग-अलग भाषाएँ समझने में सुग्री ही होती है। इसीलिए मेरा पहला सुझाव यह है कि निम्नलिख भाषा-भाषियों के बीच सम्पर्क वाहिए।

● दूसरा सुझाव यह है कि हर एक प्रान्त की नौदरी में दूसरे प्रान्तों के अग्रुक्त प्रतिहार लोग होने ही वाहिए और पक्षीसी प्रान्त के तो जरूर छोने वाहिए। हर एक कॉलेज में दूसरे प्रान्तों के कुछ अध्यापक होने वाहिए। हर एक निम्नविद्यालय में दूसरे प्रान्तों के विद्यार्थियों के लिए अग्रुक्त स्थान सुरक्षित रहने वाहिए।

● तीसरा सुझाव यह है कि समूचे देश में वय शिक्षा एक अखिल भारत माण में ही दी जानी वाहिए। कुछ लोग हिन्दी को अखिल भारतीय नहीं मानते; क्योंकि वह मेरे भाई की भाषा है। अखिल भारत की भाषा तो बही हो सकती है, जो किसी एक प्रदेश की भाषा न हो। यह एक दुःख-परिस्थिति है। मैं कहता हूँ कि अगर आप हिन्दी को न अपना सकें, तो अंग्रेजी को अपनाइये, वय शिक्षा की व्यवस्था एक अखिल भारतीय भाषा में ही कीजिये।

बन्धक तो राष्ट्र बना दिने। उन्हीने तो तो राष्ट्र बना दिया, जब कि हम तो आज बहुराष्ट्रवादी और बहुराष्ट्रवाद के गते में पुर हैं। हमने पाकिस्तान का विरोध किया था, लेकिन उन्हीने एहिक नहीं की। जिनके देश में बहुराष्ट्रवाद, उन्हीने द्विराष्ट्रवाद का निर्देश करने का फैसला बन देना नहीं होता। इसीलिए देश का कोई बँटवारा कुछ दे-अन्वेषण हमें बहने पड़ेगा है। आप की धनी देश के अग्रुक्त नागरिकों के लिए अग्रुक्त उद्देश्य की पक्षी है। यह भारतीय

व्यवसाय है, उग्रव भाषावाद है। इतमें से आगामी राज्यों का नय हुआ है। क्या अखिल भारतीय जीवन कहीं दोख रहा है ?

अब हम नय इस बात पर विचार करें कि भाषायी राज्यों का परिमाण क्या होगा ? माना कि विचार मात्राभाषा में ही आप। यह भी माना कि राजन्या उत भाषा में चले, जिसे अन्वेषण समझते है। लेकिन क्या एक अनन्त दूरी जनता के के सम्पर्क में ही नहीं आयेगी ? अब अन्वेषण उन्हीने विचार कर छोटी हो रही है, यह नकली हो गया है कि एक देश के लोग दूसरे देश में जायें। अब अन्वेषण दिन विरोधी

और अग्रिम के राजनीति वेदावर चुन सकते थे। लोग उन्हीने बंधारी या मन्त्री मेरा नहीं, अग्रिम भारतीय मेरा नहीं है। अब मैं यह सुझाना चाहता हूँ कि उन्हीने मिलने के बाद देश में ऐसे कितने देश-भक्त निकले हैं, जो इस तरह के अखिल भारतीय जीवनवादी में आन इस देश में कोई अखिल भारतीय जीवन रहा ही नहीं। यही हाथ धरा, तो आगे पहलन यह होगा कि बासी का विचार ही देश में नहीं मिलेगा और उन्हीने भारत का विचार ही नहीं लेवेगा। इन परिस्थितियों पर गम्भीरता के साथ विचार करना वाहिए। अखिल अखिल भारतीयता का आधार क्या होगा ? किस प्रतिष्ठा के सहारे हम अखिल भारतीय जीवन बना करना चाहते हैं ? विचारों की एक प्रतिष्ठा थी, पर उन्हीने तो हमने बुरा हुआ विचार। और मैं भी कोई हब नहीं। कन्डि विचार अन्वी-अन्वी भाषा में निम्न वाहिए। लेकिन आरंभ तो इस पहल लगेगा है कि कहीं हमारे देश में कहीं भाषावाले लोग बनी संख्या में अग्रुक्त लय न जायें ? अलग में और अलग में भाषा बही उतर हुआ हुआ है। भाषा के अन्वेषण वाहिए इस देश में अग्रुक्त भी बन सकते हैं। एक भाषा मिलने के लोग दूसरी भाषावाले प्रान्त में निर्गमित बन जाते हैं। क्या, इन्हीने यह अन्वेषण ऐसी बातें सुनी थीं ? पहले साम्यवादिक निर्दिष्ट हो गये और आज आपी निर्गमित लगे हुए हैं। इतना अग्रिम क्या होगा ? अग्रे बल कर उन्हीने दूसरे के प्रान्त ही भी मानना होगा।

इस समस्या को हम सुलभ या भी के हवाले नहीं कर सकते हैं। इन्हीने के ही विरोध में ही यानी को अखिल भारत पनाह है और जो उन्हीने अग्रुक्त देशवादी देशवादी है, उन लगे लगे यह अग्रुक्त समस्या रही है। विचारों के उन्हीने अग्रुक्त निर्दिष्ट हो गये और आज आपी निर्गमित लगे हुए हैं। यही, वे अन्वी आधुनिक है उन्हीने।

लेकिन वय देश के समग्रता, विचार और अग्रुक्त भाषावादी का अग्रुक्त कर से कि विचार अग्रुक्त अग्रुक्त अग्रुक्त यह ही नहीं लगे और ही लगे। कहीं तो हम अग्रुक्त अग्रुक्त के उन्हीने लिए कोई भी भाषा नहीं लगे, तो विचारों तो बना, उन्हीने अग्रुक्त अग्रुक्त विचार ही आ लगे तो भी के कुछ नहीं कर लगे। हमका संकल्प को साम्यवाद भाषावादी को ही करना होगा। कहीं हमें कर लगेगा। मनुष्य की अग्रुक्त उन्हीने भाषावादी, कहीं है। क्या मनुष्य का अग्रुक्त, बने

कहीं का के विचार में तां १२-११ की विचार में भाषावादी। 'पुस्तक' में भाषावादी, अग्रुक्तवादी; जो अग्रुक्तवादी विचारों।

"विन्या विनाभूत शाला सार्यनाम । प-रि-भू-र्ण-का-म श्रात्मा-राम ॥"

पिछले महीने की १५ ता० को पदयात्रा के समय प्रातःकालीन प्रार्थना के बाद बाबा ने मुझे बुलाया । मैं जिस जेहरेय से पाया के पाम गया, उसके संघर्ष में एक दिन पहले ही वातनीत हो चुकी थी । आज चर्चा के पहले वास्तव्य-भाव से उन्होंने पूछा, "बाबा का महेन्द्रकुमार नाम तो माता के लिए उच्चारण करने में कुछ गठिन और बड़ा है । क्या आपकी माता भी आपको उसी नाम से बुलाती है ?" मैंने कहा, "नहीं, वह तो मुझे 'मोहन' कह कर बुलाती है ।" बाबा ने कहा, "महेन्द्र से मोहन नाम कुछ सरल हो अच्छा है । माँ के लिए तो मोहन ही गहरे-हैं और उसकी दृष्टि में मोहन से भी गहरे-हैं बल्कि नाम नहीं हो सकता ।" फिर कहने लगे "मेरी माता भी मुझे 'विन्या' कह कर बुलाती थी । मुझे भी माँ का दिया वह नाम बहुत अच्छा लगता और मैंने स्वयं माँ के द्वारा प्रदत्त इस नाम पर एक प्रशस्ति भी लिखी है ।" मैंने पूछा : "वह क्या ?" तो बाबा ने ऊपर का यह दोहा हीन-चार बार कह कर सुनाया ।

"विन्या विनाभूत, शाला सार्यनाम । प-रि-भू-र्ण-का-म श्रात्मा-राम ॥"

"विन्या विन्या" काशीय शून्य हो गया । शून्य-रूप होने से उसका नाम सार्यक हुआ । अथ यह (धन होने पर भी-या-शून्य होने क कारण) —उ०) परिपूर्णताम है, उसकी सांसारिक कामनाएँ पूर्ण जीवन में ही शांत हो जाने से यह निष्काम है । इस जीवन में यह कार्यव्यवहार से लोपायुक्त्युक्त की दृष्टि से जो कुछ काम करता है, उसमें उसकी निष्काम-वृत्ति है । इसलिए यह हीनता का ही प्रदर्शन है और उसकी दृष्टि से सुख करने के लिए अनवरत परिश्रम करने पर भी अपनी धारणा में रमण करता है ।

एक छोटे से दोरे में घूर कर से बाबा ने अपने जीवन का चित्र अतिरिक्त पर दिखा है । आकाश की एक लंबा दृश्य है । पर शून्य होने पर भी वह निष्क और श्यामक है । एक कर्म में विचारों देते भारी आत्मा भी शैतान और वैरागियों की दृष्टि से पर्याप्त है । बाबा ने अपने आपकी दृश्य अर्थात् अति नम्र बना कर विषय के प्रयास एवं प्राणियों के हृदय में रमण कर दिया है । ईशान्यात्मोपनिषद् में कवि भी एक लंबा 'परिभू' है । 'विभिर्मेरी परिभू' की सुष्टि के हीनमें और सुख-दुःख की तटस्थ भाव से आत्मसात् कर पुनः उनी कर्म में प्रकट कर प्रकट करता है, वह 'परिभू' कहलाता है ।

बाबा भी भारतीय शक्ति प्रकाश के शुद्ध-रूप का आकलन कर चुकना कथना शून्य प्रकाश के सामने प्रकट करते हैं और उनके मानस में निराली जनना की, यह आनंद बुद्धि बुनने वाले के हृदय में प्रवेश करती है । शून्य-रूप बन कर बाबा में उपनिषद के विराट् बुद्ध का रूप धारण किया है ।

इस दोरे के बाद बाबा की मैंने पंच-पद से अमी तक के अपने जीवन की कुछ घटनाएँ भी सुनाई । प्रथम शून्य अस्ती २० पत्नी का भी ब्रिक किया; क्योंकि यह यम में पड़ने समय सुगौन से बाबा के साथ एक वर्ष तक काम-सम्पन्न का काम कर चुकी थी । उषाश उठलेख आने पर बाबा कहते थे— "तुम ही उसने साथ में। अनेक बार साठवती हुई है, क्योंकि सभ्यर्ष के लिए आने वाले हैं। अपने काम से निरन्तर के बाद मुँह प्रार्थनी करती थी ।" फिर तो अपने उक्त शरण्य-पत्र के शरण्य सुनाते हैं ।

आजकल की भ्रूतान-पत्र की तरह मैंने अपना यह भी प्रार्थन किया था ।

उसके पीछे एकल-पत्र था । अपने कर्म पर बाबा का मन में अतिरिक्त चर्चा के लिए था । उक्त समय से मेरे कर्मों को देख परशुमान की तरह मेघ नाम भी 'पावनानाम' रचना 'आदि' । अपने इस पत्र में मैंने कभी नाम नहीं दिया । वर्षों, वर्षों, गर्मों, हर श्रद्धा में मेरा सभ्यर्ष का यह कार्य चलता रहता । एक बार तो अति दृष्टि के कारण मैंने भी से बंद आयी, उक्त पर आना कतिना था । इसलिए मैंने वहाँ पढ़ने एक आदमी से कहा— 'निरि' में भगवान के पत्र माफ़ कर निवेदन कर देना कि गौब का मगी गौब की चर्चाई करने के लिए आया था, पर नदी में बाढ़ आने के कारण वह आकर वारिण लोट गया ।' उनमें इस बात का भी अर्थ पढ़ले ध्यान नहीं दिया । इसलिए पुनः दो-तीन बार कई कर मुझ पर पत्र दुःख की ओर उल्टे लघपत्र के उक्त निरि में बाबर भगवान से प्रार्थना की— 'गौब का मगी गौब की चर्चाई करने आया था, पर नदी में बाढ़ आने के कारण वह वारिण आकर लोट गया ।'

बाबा के इस शरण्य-पत्र के समय आजकल की भ्रूतान-पत्र की तरह लेख उनसे कहते : 'आप दो तीन दिन तक सभ्यर्ष के लिए आकर आना वह राम बंद कर देंगे । आगरों कर्मों करते देख लेख उलगाह के हर वह में कर्मों को जाते हैं, पर आप के मुँह परेते हैं। पुनः सर्वत्र पढ़ले की तरह 'श्रीमत्: मन्त्रधर्मनाम' की उक्ति 'नरत्तयं ब्रह्म'— 'मिया यह सब एक दो दिन के फिर नहीं, दो तीन तक चल्ते बाबा है; क्योंकि मैंने यह मान रखा है कि बीच में इन सब को छोड़ देना से कदाचित् लेख अपनी आदत के अनुसार पुनः अपनी दृष्ट गरी आदत के अनुरूप हैं । भील तक लक बरार

वह एक चल्ता रहेगा तो नई पीढ़ी में सभ्यर्ष के संस्कार कर देंगे । फिर वे मितने पर भी नहीं भिद सकेंगे ।"

निर्गो निव किणी काम की लेते हैं, उले पूरा करते ही छोड़ते हैं । उलमें उलना लय-योग रहता है, अपरदा रहती है । अपने जीवन में उन्होंने अप-व्यव से लेबर मजदूरी तक के भी भी काम लिये, उनमें यह शाला का दृष्टिकोण होता है । प्राचीन आर्यणक, उपनिषद् तथा ब्रह्मकालीन वादित्व में यमन भाता है कि अग्नेयक वह अवेवाधी के रूप में किसी भी शाला का अप-व्यव प्रदर्शित करता, तो उसका वह अप-व्यव बाहर वहाँ तक बराबर चलता रहता । बाबा के परले उक्त शाला से पूर्णतः नहीं आती थी । एक शाला का अप-व्यव समझ करने के बाद वह यह पुनः कथना का अप-व्यव प्रदर्शित करता, तो उसके लिए भी उसे बाहर वहाँ का समय देना पड़ता । इस प्रकार सतत अप-व्यव करने के बाद ही वह उक्त शाला का पारगामी विद्याय होता था । अपने हर जीवन में बाबा ने न माझुव कितनी सभ्यर्षाई की, वह सबके मूल में योग-बालक का साहसिल-जीम और चित्त की अद्भु-मन्ना है । हीनस्थि-उनकी अग्नेयक बात पर अनवा की दृष्टि रहती है । शीम समजते हैं— 'आप कर्म नहीं देती बोल सफल । वह

को कुछ बोलता है, उसके पीछे उम्र चित्तन, बाबा और सामर्थ्य उन हैं ।

इसी तरह बाबा की यह भ्रूतान पत्र भी लिखे लाहें दस सात से थपार कर रही है । इस यात्रा में आने के अर्द्ध-चिदरे के अनेक लोगों का पान्य आर्षि किया है । अपने समय पर अनेक शिष्य लोग उनकी इस यात्रा में समिलित हैं; मेरणा प्राप्त कर पुनः अपने देस लेंगे । देतिवत का वीष का दुःख मान बन था । वह बाबा के साथ पढ़ते । उनमें आकर एक किताब लिखी और न. पदयात्रा भी निकाली । लोगों में उक्त श्रवात किया । बाबा की इस यात्रा देल अमेरिका आदि के लोगों में अल्प-धरणी के विपणन बहुत ही पराप्त पावती है । वे लोग अमेरिका के भी तक गये हैं । लखते-लखते प्रचार करते हैं आशावादी के निरिद आशावा उठाते हैं ।

बाबा का यह सातव-गण्य लेख है । कुछ सुलदायक प्रतीत होता है, न. की दृष्टि में यह उनके लिए अनुरूप है अपनी यात्रा के दौरान में अनेक सुगौनी सहायनी गहरी-हैं उनमें से

"ओ बन्धु इच्छाविदह लयो बने" उलमें ताप होता है । लामना है । से कर्मों बड़ाई बने बाबा को लक होता है । लव में बोलते हैं । भीमोवना के लिए भी लक होता है । उलमें श्लेष का लेख बाबा में अनुरूप नहीं होता । मेरा भी लक लक है । इतने लार्त हो है ।

एक आशा का सुल-पत्र, वह लिख सके रहे था (निरिद होता है) । इसी लक द-प बन कर 'विन्या' में भी लक सुनि. पर विषय प्राप्त कर ही है । वह उन तटस्थ रूप से दर्शन बनते हैं । आशा-वर्धन की तरह 'विन्या' के दर्शन में भी आनंद होता है ।

होड़, सहयोग और सहाययोग

जगत् में तीन प्रकार के काम चल रहा है—होड़ (धर्मोपनिषत्), सहयोग (वीभारण्य) और सहाययोग (धर्मोपनिषत्) ।

होड़ सर्वत्र हो रही है । लोगों की ऐसी प्रवृत्तना बन गयी है कि होड़ के लिए काम नहीं चल सकता, विषय नहीं हो सकता । होड़ के लिए, ईर्ष्या और आनंद पैदा होते हैं, फिर भी इनकी आवश्यकता समझी जा रही है । महापुरुषों में होड़ के सुरे परिणाम देख कर सहयोग का उस्ता निकाला ।

एक तरह होड़ कर सहायता के लिए भी पड़ता है । आरंभ-रहता है, कीमन के रूप में इस "सहाययोग" को बोलते हैं की । इसी काम सहयोग है । "सहाययोग" में किसी की दानि नहीं देते, न सहायता करते पाते हैं, न पाने पाते हैं । सहायण करने साथ भाग्य की दृष्टि से परे में जगत् समुद्र और इच्छा-पत्र है, पाने साथ ही सुनी देती हो है ।

सहाययोग की पध्दना समी ईच्छ-दत्त को पूरे है । उनी अल्प की देता कर दूसर बरिद होय वा लक्ष्यो की पान



दिसार का सर्वोदय-पुस्तक प्रदर्शनी—सं छाववलेकरनी की 'अर्द्धाँषि' की उपाधि—सीरर में पदयात्रा—शाहजहाँ-
पुर में पदयात्रा सर्वोदय-सम्मेलन—रतलाम के रहलें में धर्माई-व्यविवोगिता—शारारनी के लिए एक गॉन
की सुनौ बिन्नी—तमगुली रोड में सर्वोदय का सपन कार्य—करनाल की एक बहन का अनुपस्थीय प्रवास—कानी में
साहित्य-शरार—गाववाट में साहित्य-संचार—विहार में पशु-रक्षण सभा—जोधपुर में नरानंती की समा-
योग में मामलगा की स्थापना—जोधड़ा रामनगर माम-सोव केन्द्र—चनलाई में शारारवर्दी के संकल्प—उज्जैन के
धार्मिक अंवर सहकारी मंडल का लक्ष्मी-कार्य—गो-मोरानी की सारारवाट-धारा रामध-माता शरित्तियों दिग्गज।

हिसार के सर्वोदय पुस्तक भरण के
११ विवरण के २० विवरण तक 'सर्वोदय'
पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया था।
उपरोक्त सर्वोदय-साहित्य के अलावा दरिद्र,
शालारूप आदि बहान विचारधारा की
पुस्तकें भी रखी गयी थी।

पंचगला (देविया) में देवराज
का उप केरी के सर्वोदय विधान
में भीयद हामोदर सातकेर के १५-२०
अनुदर की 'अर्द्धाँषि' की उपाधि देने का
अयोजन होगा।

सीरर जिले में ११ विवरण के
२ अनुदर तक २६ मीठ की पदयात्रा
हुई। पंचगला में के ११ आरक बने।
शारारवर्दी के सर्वोदय-मंडल के
समाधान में २१ ११ अनुदर तक
सर्वोदय-समाधान का आयोजन हुआ।

उपरोक्त सर्वोदय-समाधान के अतिरिक्त
विधे में आम समीक का विवरण भी किया
जाएगा। ३-५-५ नगर की गाववाट-
पुर जिला सर्वोदय-सम्मेलन होगा।

रतलाम जिले में 'गामी-बन्दी' के
अनुदर पर १६ मासिक विचारधारा में
कानी प्रविणिकारण हुई।

सुरनामा आम, गी-सुर के ग्राम-
पविर्णों में एक सुधी बिन्नी में विहार
अनुदर पर ४४ एली और सहायों के
अधीन की है कि 'दस घो वामरे गॉन में
कर' ५३ के शरार की तुकान न सोलने
पर शोर दे दे के और सलम ही हुए।
किनु आववादी विचार कानों में अन्त
'११ के तुकान सोलने का पुनः प्रारंभ
हिया। ५ विहार की एक और विहार शरार
के आरकारी मकी दिवदी में नरानंती-
सम्मेलन में मासक दे दे के और सुधी रोड
पर धरतना में छापन की तुकान का
सुदरान भी हुआ। हमारे लष प्रयत्नों
की तुकानसे हुए आरकारी अनुदर में
दरिद्रन के नाम पर सुगरे के धनी मणिक की
शरार की तुकान सोलने के लिए मोझा
हिया।

समगुली रोड, देरिया में निम्नलिखित
सुधियों को चली है: सर्वोदय-मंडल और
३४वें अनुदर-सम्मेलन तथा चनलाई।
दस प्रविर्णों के मासक दे दे के गॉन में
सर्वोदय-वप, सपनिरान, सुधो-बधि आदि
कार्यकों पर शेर दिवा जाता है। पिछले
२५ माह में कर १०० धारों के ३५४ रु.
७० नये पैके शरारिय हुए हैं। इध करके
दोन सलम हैं। एक परगण सह कानम
की नये पैके कि 'विनो-नरानंती' के अनुदर
पर सपनिरान पर शेर दिवा जाय। तुज
सोय नये रुकन मी दे दे और तुज भोग

दोन मूख की खादी पदन कर सहायका
करते हैं। कर ५० में ७ सुधियों द्वारा
वर्धे में दिवदी। ५६ में सह संलसा ११
तक कुंची। इध गॉन में 'भूदान-वप'
पन के ११ आरक बने हैं। सुधकाधन में
२०० के बरतन सुलके हैं।

पिछले तीन साल के प्रविर्ण-वर्धि-
कोलष मनाय सारा है। १९५०-५१ के
आरक सपन में १२६८ रु ८९ नं ० पै
की आरके और ८१४ रु १४ नं ० पै
राने हुआ सप ४३४ रु २५ नं ० पै
सोय कमा है।

इध प्रार ५०० धारों के इल छोटे-से
गॉन में सपन सप के सर्वोदय की मणिकों
चल रही है।

विहार शरार सर्वोदय पदयात्रा-जोरी
मागलपुर जिले के पनगाव गाँव के १०
सिधकों की आनी। इध सपन पर
'भूदान-वप' पबिका के ६ आरक बने और
१८ शरारकों द्वारा १६१ रुदर्य धनीन
हो गयी।

करनाल की एक बहन भी सपनचली
सप में एक विवेरी में विहार है कि
२ सिलकर पर २ अनुदर तक का सपन
एकर गॉन देवनागरी दिवदी में सिलने
का मोझा मिला। सह सपन ८ सल पहले
५५ सल तक चली था, उध सप एक
सहिल सपन सप सोलनी का, जो अरनी
उरत पर है। बरानों में सुल-बराई की
कानी पर १०० कालेमास किं। ५६ रु.
५० साहित्य सप एक मणिक की अरधि में
केषा और जो कानीधन सप सह सीव
सुधों में बौं दिवा गया। इधके और भी
अन्तक प्रमाय गया। एक सपन में ११ रु.
पविर्णों के सिलके दिवदे हैं। इधके सुधों
की धारों के सेवों में सर्व सेवक संघ की
अरीक पर १०५ रु ५० अर्य-संग अरधियान
में सपन सर्वोदय-मंडल की रोपे।

कानी के सिल्य सर्वोदय-मंडल के
प्रथम सुधना के अनुदर कानी में ११
सिधकों पर २ अनुदर तक भी अरधि की
८५ रु का साहित्य सप और भूदान
पन-विधानों के २५ आरक को एक कानी
के सिलिज सुल-कार्यकों में सर्वोदय के
प्रसल अर्य-मणिकों के मासक हुए।

वाजपवाट के सर्वोदय-सम्मेलन में विनो-
गामी-बन्दी की अरधि में २०५ रु का
साहित्य-वेस और १ आरक बने।

विहार सप पशु-रक्षण निवारण
सहित में ५ से १ अनुदर तक ३५४
रुदर्यक सहाय' मनाया।

जोधपुर में गामी-बन्दी के अनुदर
पर एक सपना नरानंती-समा के रूप में

आवोचिक की गयी। सपान में शरर में नया-
बन्दी-अरधियान चल्तने पर शेर दिवा।

योगेश राम (पि-मिलराम) में
सर्वोदय-सम्मेलन के अनुदर पर शरारका
की स्थापना की गयी। प्रामसपान में शरार-
बन्दी और अरधियान सप पर शेर दिवा।
किंजी भी शरार का ठेक बनरा कर न
रुमाने का अनुदर्य करे हुए प्रवि नरक
हएक परिसर एक सपना होकर से है,
देसक-सम्मेलन के प्रमाण पर हुआ।

विहार के मासक केन्द्र, जोधपुर
शरारणर द्वारा तीन माह में २०० रुदर्य
कमीकी प्राप्ति हुई और ३ भूदान-किरानों
की सहाय विवारा और पबिकाओं के ५
आरक मनाये गये।

५० विहार (मध प्रदेश) जिले के
ग्राम वललाई में २१० अरधियों में शरार
न चले के और २१ स्थलिकों में छापन
न बनाने के सपन किये। प्रामसेवा-केन्द्र
की ओर के सापुणिय सहायकों के रूप में
७५१ रु ६० नरक और १५५५ मल अन्तक
मेजा गया।

उज्जैन में आर्य अन्तक सहकारी
मंडल ने उज्जैन विहार के शरुणिय
सप में शररतीन बने ४० की खादी
विनिर्ण की है। 'गामी-बन्दी' के अनुदर
इध सपन में २ से ६ अनुदर तक २५
हजार ६० की खादी सुधी और १२
हजार ६० की खादी सेवी। अरक का
भयल है कि इध माह के अत तक
१ सप ६० की खादी सेवी धार।

सुवप्राम के ६ अनुदर की सुल-
वार कानों में से-० सोलनी और उरके
१२ सारिकों की सहायक सप के उरके
प्राम-आरधय के सहायक भी विधानसलसी

एवं भी अराना-सपनचली तथा भी सपना-
सुधनी आदि में केवापन-सपनर की
ओर के विनारी हैं। पदयात्रा में महाशर,
आर, मीर, म-५, उ-५ नं ० एव शरार
के १२ पदयात्री हैं। एध दल का १५-१५
की मागपुर टोते हुए ३५ नगर के
बनलपुर पहुँचगा।

हिसार की एक विधानक मंडल
कार्यकों माध शरित्तियों का शरारवास
पिछले सिलकर माह में हुआ। विवक
आराम की शरित के लिए सपना है।

गामी-जयंती समाचार

गौषे दिवे हुए सपानों के 'गामी-
बन्दी' अरधियों के सहायक हमार सधों
प्राप्त हुए हैं।

सर्वोदय तुलक सम्मेलन, आगवाट,
पनगाव शरार सर्वोदय संघ, करकल, मास
कक शरारिय (जिला हलाहादर);
शरारनी गॉन मणिक, मामसेवा-केन्द्र,
बनरई (शिव पविच मणिक); सर्वोदय
समाधान-जोधरा धर्य सहाय-अरक,
जोकरा; लोकनारी, शरारवर्दी,
विहार पदयात्री-सोव-सप, सौष्य
शरारिय, मागलपुर, गामी सारक सिधि
सलपुर (मध प्रदेश); मरिधियुत-सु-
कणर (विहार); प्रामसपन केन्द्र
सुलर (जिला बलवाट); गामी
अरधियान केन्द्र, विहार; मासिक-सहित,
सहारी मारकन, मारत सेवक सपान,
सुधि; विहार खादी-सम्मेलन सप,
पनगाव, मागलपुर; जिल सर्वोदय मंडल,
देहरादून; गामी अरधय, शाहबखीर,
सहायक आरधय, मरिधियुत (म-५०)।

नई तालीन अध्ययन-मंडल

अ. मा. सई तालीन-सम्मेलन, जो १-१०-११ विहार की पचपदी में हुआ
था, उरके परिण प्रसलन में नई तालीन अध्ययन मंडल की स्थापना पर शेर
दिया गया था। उरुदरार १९११-५२ के लिए एक अध्ययन-मंडल मनाया गया।
नीचे दिने हुए सपन सलके सलके हैं:

- | | | | |
|---------------------------------|--------------|---------------------------------|--------------|
| (१) भी जी-० रामचन्द्र | अध्यय | (११) भी औयस्यद विहा | (पंजाब) |
| (२) डा. हरिहर प्रसाद (विद) | (विहार) | (१२) भी निलेकरद | (राजस्थान) |
| (३) सपन आर्य | (उरध प्रदेश) | (१३) भी देवीशर | (महाराष्ट्र) |
| (४) शरित्तिय विवेरी (मध प्रदेश) | | (१४) भी अरारकल | (सामिपना) |
| (५) सुवप्राम दवे | (सुवप्राम) | (१५) भी सी-० आनरकर (आन) | |
| (६) के. एल आचार्य | (आप) | (१६) भी सारंसे शरुके (तमिळनाडु) | |
| (७) सपनराम मेरान | (केरल) | (१७) भी आचार्य रामनूदि | (विहार) |
| (८) सुधील सय | (पंजाब) | (१८) भी सपनर | (ओर) |
| (९) नगर सर्वोद-अ-गानी | (दिल्ली) | (१९) भी के-० छपन | (दिल्ली) |
| (१०) भी एत-० अरधय | (अरधय) | (२०) भी सी-० नारर | (दिल्ली) |
| | | (२१) सपनराम | संगेवक |

अपने पीड़ित भाइयों की सहायताय

वाढग्रस्त क्षेत्रों की ओर दौड़ पड़ें

विहार की सभी सर्वोदय एवं रचनात्मक संस्थाओं और कार्यकर्ताओं से

श्री जयप्रकाश नारायण की अग्रणी

मुंगेर तथा भागलपुर, गुना और पटना जिले के कुछ हिस्सों में प्रकृति के प्रकोप से उत्पन्न विध्वंसिता के प्रति-दिन नये-नये समाचार सुनने को बाद ही उस संकट की विचालता, जित पर वृक्षा विस्थाप नहीं होता, मेरी समझ में आयी । दो दिन पूर्व मुझे इसकी कल्पना नहीं थी कि हमारे सामने एक ऐसी विपत्ति आयी हुई है, जितनी गंभीरता संकटग्रस्त क्षेत्रों की प्राचीन जनता के लिये सन् १९३४ के संघर्षर भूकम्प से भी अनंत गुनी ज्यादा है ।

विहार की सरकार अत्यंतव्यव सव कुछ करने का प्रयास कर रही है । केंद्रीय सरकार की भी पूर्ण सहयोग हमें प्राप्त होगी । लेकिन यह एक बेरोषी घड़ी है, जब योग्य सरकार पर ही सब कुछ बतने के लिये नहीं शेष बचते । अपने पीड़ित भाइयों के प्रति जनता की कोरे आग्रहपूर्ण कर्तव्य है, जिसे दाय्य नहीं था सक्ता ।

हमारे वहाँ बरते हुए प्रकृता रोगों के निवारण कार्यय मूलक है कुछ समय के लिए अपने छोरे कार्यक्रमों की रचनात्मक कर दिया है ।

में इसकी ओर से तथा अपनी ओर से मैं सभी शांति-सैनिकों, लोक-सेवकों तथा सर्वोदय कार्य-कर्ताओं से अपील करता हूँ कि वे अपने छोरे बर्तमान कार्यक्रमों की रचनात्मक कर इस संकट की पुकार पर दौड़ जायें । विहार प्राची-प्राची-समाज संघ, गांधी-स्मारक निधि, बुद्धिजन संवक संघ तथा अन्य सर्वोदय संस्थाओं के कार्य-कर्ताओं से भी मेरी अपील है कि वे अपने-अपनी संस्थाओं से आवश्यक अमुक-मुक प्राप्त कर पीड़ित क्षेत्रों की ओर दौड़ पड़ें ।

आशा है, इस ओर पर हमी धुक्नी-दिग पवों, अग्रज-सेवी संस्थाओं और विश्वविद्यालयों के प्रतिनिधियों तथा अन्य प्रमुख व्यक्तियों की एक निरंतरकारी कमिटी द्वारा ही धरगंगा की अपवधता में गतिव होगी, जो (क) विहार की तथा भारत की जनता से सहयोग के लिए अपील करेगी और (ख) सभी गैर-धरायी प्रयासों में, जिनसे सर्वोदय-संस्थाओं के प्रयास भी सामिल होंगे, अनुपम सहाय करेगी ।

पटना, ११-१-३४ जयप्रकाश नारायण

राष्ट्र-समाधार : मुने मेला संघ के अध्यक्ष भी नयनरु दलिन के द्वारा पर गये हैं । ता० १०-२८ दो दिन मजरी काय के यहाँ कीरजिन में, ता० १९ को मैप में और ता० २० के २५ अक्टूबर तक दमनगुप्त दूरे हैं । उनका कार्ययम था । पर वहीर मनात करके अक्टूबर अतक प्रकृत-कमिटी की मीसिंग में भाग लेने के लिए वे वापसी आये हैं ।

श्री कृष्णकर मद्र. ३० मा० एवं सेवा संघ द्वारा आयोज्य भूकम्प भेष, बाराणसी में मुद्रित और प्रकृतित । वरा ३ रात्रपाट, बाराणसी-२, फोन नं० ४१११ धारिक मूल्य ६०

मिहार में 'बीघा-कट्टा' अभियान

—पूर्विकां जिले के पूर्व कोदा अंचल में बीघा-कट्टा अभियान-योजना के ११ प्रस्ताव क्षेत्र के २०० भूमिवानों के ४२०० कडा करनीय के दानपत्र प्राप्त किये । इस कार्यय में ६८ मील की परतका द्वारा ४० रुपये की सर्वोदय-शास्त्रिक की विदेशी की गये तथा विविध गाँवों में २६ आय समारंभों द्वारा सर्वोदय विचार प्रस्तावता गये ।

इसी प्रकार प्रस्तावना-परिचय अंचल में ६८ दानपत्रों द्वारा २२५ कडा एवं कोदा परिचय अंचल में १४०० कडा कार्यय प्राप्त मिले ।

—मुकणपुर जिले के सीतामढ़ी उप-विभाजन के सिद्धर गाँव में १ से १५ शिवरत तक ८ दानपत्रों द्वारा १२६ कडा १५ घूर का अम्जन मिला ।

वाढग्रोहित क्षेत्रों में सहायता के लिए

'बीघा-कट्टा अभियान' १५ दिन के लिये स्यगित

विहार सर्वोदय-अंचल की कार्ययमिति ने यह वर विचार दे कि मुंगेर एवं कोदा इलाकों में वाढ के कारण जो विनार हुआ है, उसके लिए 'बीघे में कट्टा' अभियान पंढर दिव के लिए स्यगित किया जाय और सब कार्ययकों एकदम वाढग्रोहित इलाकों में राहत एवं सहायता-कार्य में लग जायें ।

श्री जयप्रकाश नारायण वाढग्रोहित क्षेत्रों में ता० १६ अक्टूबर से घूमेंगे ।

विहार सर्वोदय मजक, पटना (ता० के प्रारंभ)

इस अंक में

प्रति प्रतिष्ठ और सिधदा का 'रिसेपि-डेप्ट' १	विनेय
हस्तनरु में शांति-सेना अन्वेल्य २	—
आग्रजकारणी प्रेष ३	विनेय
सम्पदीय ४	सिद्धय
राष्ट्रीय देण परियर ५	विनेय
कार्यकर्ताओं की ओर से ६	राष्ट्र-समाधार : मोहनगर्द
मायावी सम्पदाय के राष्ट्रीय पक्ष्य को सला ७	राष्ट्र-समाधार
अल्प विचारणी के ८	विनेय
अपन में विनेय के साथ कुछ दिन ९	अरे-कुमार छापी

अलीगढ़ में शांति-सैनिकों के आगमन से लोग आश्चस्त

अल्लिह माल शांति-सेना मजक की संघोषिका अंमली आजादीके के नेगुम में कई दिव संघ के शांति-सेना विद्यालय के तथा उत्तर प्रदेश के कुछ शांति-सेना, जो दूरी को सतर पाकर अल्लिहगढ़ पहुँचे थे, जहार में शांति कायम रखने के काम में स्थित कुछ दिनों के लगे हुए हैं । वहाँ के शात समाचारों के अनुसार—

“शांति-सेना के आ जाने के लोग प्रसन्न हैं । फिर पर पीछे रुकाळ तथा हीन शांति-सेना की पूरी समारो हुए शांति-सेनिक विहार से निकल जाते हैं उत्तर प्रदेश में “शांति-सेना आ गयी” कह कर आवाहन को आगवा प्रकट करते हैं । वहाँ ६ से ८ बजे तक शांति-सेनिक घर में प्रसार-रिती निकलते हैं तथा १२ १२ ६४ बजे माल परिवारों से प्रसन्न संम्पर्क करके उनकी कठिनाइयों, समस्याओं, आग्रह-कृत्यों की जानकारी अन्वयण करते हैं, उन्हे सल्लाह देते हैं और सर्वोदय-विचार के शांति-सेनिकों की कार्य-पद्धति आदि के विचार समझाते हैं, विचार-अभ्यास प्रयास करवाते हैं । विविध क्षेत्रों के लोगों के सम्पर्क-स्थापित कर लिया गया है और वे भी प्रशासकीय में भाग लेंगे ।

राष्ट्रपाल ४ बजे शांति-सेनिक तथा अन्य रचनात्मक कार्यकर्ता एवं अमुक व्यक्ति आगन में मिल कर दिन भर किये हुए कार्य के बारे में सब अल्प समस्यारों पर विचार करते हैं तथा आगे के दिन का कार्ययम निश्चय करते हैं ।

राष्ट्रपाल ४ बजे शांति-सेनिक तथा अन्य रचनात्मक कार्यकर्ता एवं अमुक व्यक्ति आगन में मिल कर दिन भर किये हुए कार्य के बारे में सब अल्प समस्यारों पर विचार करते हैं तथा आगे के दिन का कार्ययम निश्चय करते हैं ।

श्री जयप्रकाश नारायण वाढग्रोहित क्षेत्रों में ता० १६ अक्टूबर से घूमेंगे ।

विहार सर्वोदय मजक, पटना (ता० के प्रारंभ)

विनेय १	विनेय
— २	—
विनेय ३	विनेय
सिद्धय ४	विनेय
विनेय ५	विनेय
विनेय ६	विनेय
विनेय ७	विनेय
विनेय ८	विनेय
विनेय ९	विनेय
विनेय १०	विनेय

श्री कृष्णकर मद्र. ३० मा० एवं सेवा संघ द्वारा आयोज्य भूकम्प भेष, बाराणसी में मुद्रित और प्रकृतित । वरा ३ रात्रपाट, बाराणसी-२, फोन नं० ४१११ धारिक मूल्य ६०

वाढग्रोहितों की सेवाय एक लाल के लिये प्रशिक्षण स्यगित अमराठी वारीयाम, अरुंरें के विरुध और प्रतिकारियों में आचार्य की उन्मूर्दि के मार्गदर्शन में सुप्रि वरर उन्मूर्दि के वाढग्रोहित सज्जगुर देन । अस्तन उदायता एवं चला-कार्य के लिये १२ अक्टूबर को प्रारंभ किया । अल्प है कि भी अन्वयण में स्यगण की अन्वित को में नया रलगे हुए हैं । ऐसा विनय किन गया । विज्ञप्ति और कार्ययमों की संख्या २६ है ।

विनेय का के महाशक्ति की सुविकारा विरती 'निराकार' का १५ वरं के अन्वयण में ता० १५ अक्टूबर ११ सुबह १० बजे इलाहाबाद में बेशुकायत हो गया । 'निराकार' कागल भापी छात्रागरी तक विनेय के कार्तिव्यक कार्ययम के लिए वे वैतन्य-माल नभर की सहाय बमकते रहे । 'सुरण-वत' बतिवार अनेके दिन बरनी अन्वयण करन करवाते रहे ।

खादी किधर जाय ?

विचार की दृष्टि से खादी आज जिन्से संकट में है, उतने संकट में आज तक चायद नहीं थी। संकटमय बात का है कि यह चाय फिर ! जब जब समाज को युग के साथ जीने का प्रश्न आता है तो इस तरह वा वैचारिक संकट पैदा हो जाता है।

समाज को युग की मींग के साथ जोड़ने की विषय को मान्य करते हैं। युग-युग का यह काम होता है कि वह जोड़ने के लिए कोई नयायन ढूँढ निकाले। गांधीजी ने अपने युग में खादी के माध्यम से समाज को स्वराज्य के साथ जोड़ा। यही कारण है कि खादी को लोगों में अत्यन्त ही अधिक प्रसन्न हुई। आज हम देख रहे हैं कि खादी में वह शक्ति प्रकट नहीं हो रही है। कारण क्या है ? कारण यह है कि हम आज खादी को नये युग की मींग के साथ नहीं जोड़ पा रहे। नया युग आधुनिक सभ्यता और सहकारी जीवन-प्रवृत्ति का है पूर्वी और परिवार की संकुचित सीमा में जीने का युग अन्त रहा नहीं।

दृष्टिदायक जो इसी बात को निम्नोयन से 'साम-स्वराज्य' का नाम दिया है। दृष्टिक्रम अन्तर हम खादी में फिर अत्यन्त ही दृष्टि भरना चाहते हैं, जो उसे युग की नयी मींग के साथ जोड़ना ही पड़ेगा। खादी के 'नये मोड़' की यही समस्या है।

साम-स्वराज्य की जो कल्पना गांधीजी ने दी है और जिसकी साधना आज निनोत्राजी देव के सन्तान प्रयत्न कर रहे

कि संयुक्त राष्ट्रकर्म अपने दुनियावारी रूप में हो सकेगा होगा, जर्मनिक भारत किसी को युक्त करने अन्तरी रूप आदि करने का मौका नहीं मिलता है ही विचारप्रवृत्त परिवर्तन को सुझाने का केवल एक ही रास्ता यह होता है और यह है विरुद्ध-युद्ध। यह सही है कि सभ्यता अन्त मत्त आधुनिक युग में संयम से काम ले, कोई अपराधनात्मक या ओटी बात वह न करे। यह ऐसा करे तो अन्तमत्त को उसे रोकना का अधिकार है। पर इस बात को रोक कर और किसी प्रकार का प्रतिबंध लगाया जा अन्तान मत आदि करने पर किसी की मर्त्तना करना हमारी दृष्टि से न सिर्फ अन्याय के विरोधारी उच्च ले, निरान्या है, बल्कि अपराधीप्रवृत्त से ही वह अनुसूचिततापूर्वी नी है।

इस दृष्टि से संयुक्त राष्ट्रकर्म की दृष्टा में, मुख्य तौर पर अन्तरी और पृथिव्या के युद्धों में हस्तान्त है। स्वोत्तर उस प्रस्ताव का हम समर्थनपूर्वी मानते हैं, जिनके द्वारा दक्षिण अन्तरीका के विदेश-मन्त्री की उनके भाषण के लिए मर्त्तना की गयी है। हमें इस बात का साक्ष्य हीर से इसल है कि भारत के प्रतिनिधि ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया। ऐसा करने अन्तरी भारत की उदारता और सहिष्णुता की परीक्षा को भ्रष्टाचार लाया है। हम अन्तरी और अन्तरी में पृथिव्या और अन्तरी के राष्ट्र संयुक्त राष्ट्रमंत्र में अपने संयुक्त हस्तान्त का उपयोग प्यार समझदारी, सन्तानेतिक दूरदर्शिन और सहिष्णुता के साथ करते हैं।

—सिद्धार्थ

प्राप्त हुआ। ऐतिहासिक अन्तर हम यह युग में कि हमें दूरवाच्य साम-स्वराज्य प्राधिष्ठित तो समझना; खादी को कुछ दिन विनोत्रा संकट से मुक्त कर सकते हैं। के साथ 'विद्युत्-धारा' में रहना पड़े।

खादी को इस 'किस्म' संकट से मुक्त करके 'संस्कृत से मुक्त कर सकते हैं।

—राममूर्ति

सूत मजबूत बनाने का प्रश्न

अभी पिछले दिनों पूरा में खादी-मान्योग्य साम-स्वराज्य-सभ्यता की नयी विचारणीय युग यह थी कि क्या अन्तर चलने का अतिरिक्त सूत को हस्तान्त थाय ? चतुष्टय यह जो अतिरिक्त दृष्टा का प्रश्न है, केवल अन्तर के सूत का ही ही नहीं लगता। अर्थात् वह विचार का मेरा अन्तान प्रत्यक्ष अनुभव है और खादी-मान्योग्य अन्तरी प्राथमिक है, उसके पला चलेगा कि परंपरागत चलने के 100 मी बढ़ा है। मुख्य सवाल न अन्तर का है, न अतिरिक्त उदारता का है, बल्कि की समस्या और विकिरे के प्रश्न का है।

दुनार की समस्या दृष्टिक्रम नहीं है कि हमारे सूत का अन्तर उदारता है, बल्कि दृष्टिक्रम है कि हमारा सूत कमजोर है। सूत का दृष्टा, दृष्टा समस्या के साथ खादी की मर्त्तना का भी प्रश्न है। जिस प्रकार हमारा सूत होता है, उसके भीतर दुनारकों को एक रूपका मजबूती प्रदियित मिलना पड़ित हो जाता है। अगर सूत मजबूत होता है, तो दुनार के लिए दुनारों न केवल आगमन, बल्कि दुनारों की गति में भी बहुत दृष्टा अन्तर भी आ जाता है। यही कारण है कि दुनारका वा तो मिल का ही सूत दुनारान संकट करता है या खादी में मिल का सूत मिलने को ही विचार्य करता है। यदि हमें दृष्टिक्रम और दृष्टिक्रम बनाया है तो खादी के सूत को मजबूत बनाना ही होगा।

हमारे सूत की कमजोरी के लिए अन्तरी-प्रवृत्ति दुनारों की प्रतिक्रिया प्यारवारी है। इस लेख अन्तरी मिल के रुई लाने हैं और मिलों में रुई के कोमल दृष्टा को बाट लेते दुनारों गोंमें मैं लेते देते हैं। परिवार यह होता है कि मिल में भी उस रुई को काम में लाने के पहले मिल को 'कीर्ति' करवा पड़ता है। जिस रुई के देते को मिल भी नहीं पचा सकता, उसे कतिन को कलरों की कलर की परीक्षा के लिए दृष्टा देते हैं। यह तो कतिन की कलर है, जो कि देते विगड़े देतेवाली रुई से भीतर दृष्टा के साथ निराल लेती है। यदि हम दृष्टिक्रम के आगे बढ़ना चाहते हैं तो प्यारिण के अन्तान पुन कर, जिसे हम 'कोमल' की बंध सकते हैं, देते को दृष्टा का पद्य काम-धोर देते को निराल कर पद्य बना दें। यदि भी-न्यादा पद्य कतिन को मिल जाती है, तो कतिन आठ दृष्टा तक की कलरों आगानी के पर करती हैं। इसके निम्न समस्या होता है।

(1) दृष्टा तक कतिन को प्रविष्टित करने का प्रश्न हल हो जानेगा। (2) यहाँ तो अपने प्रति युटी देते पर भी कतिन भूली रहती है, यहाँ उस पद्यति के एक अन्तान प्रति युटी मजबूती देकर भी उसके कर्म के-मत्त सुनी देते रोड की अधिकता दे सकते हैं।

सूतान-यत्न, गुप्तद्वारा, 23 अक्टूबर, 1948

सर्वोच्च-विचार का संस्कारार्थक

‘सामराज्य’ साप्ताहिक

सम्पादक : श्री गोविन्दभारि मह

‘सामराज्य’ बहुत ही सामान्य और सरल ही मुख्यतः पत्र निकल रहा है। सब तरह की समाचारों, इन्हें पढ़ती है। राजपत्रों के हूट मिलिन भाई-रुतन मह हाथ में वह अधिक होती पाठिए।

—विद्युत्

वाकिक कथा : पंच हाथन

सामान्य का पत्र : ‘सामराज्य’, निराल विचार, निरालीन्या, नन्तर (साम-स्वराज्य)

शासन, राजनीति, पक्ष और सर्व सेवा

अप्पा पटवर्धन

जाहिर है कि चुनावों की प्रचलित प्रवृत्ति कई दृष्टियों से अशुभित और अस्मित है। उसमें वर्गीयद्वार याचक बनने हैं, जो यहूदा मादस्य होता है। इसके अलावा वह पैसे का खेल है। फिर चुनावों का फैसला बहुमत से होता है। इससे बहुमतवालों में उन्माद और अल्पमतवालों में ईर्ष्या-वैषम्य पैदा होते हैं और सत्ता की होड़ चलती है। इस होड़ में से संपर्प, छिन्ना-गदगी और कई अस्मित घातें निकलती हैं।

इस पर श्लाज के नीर पर सर्व सेवा संघ का लोकनीति का कार्यक्रम निरूद्ध है। लेकिन वह अप्रूरा-सा लगवा है। उसमें जो मतदाता-भंडारों की ओर इनके द्वारा अत्यल्प और सर्वसम्भव चुनावों की, अर्थात् 'मनोरं' की, याव है वह आन तो धक्कर धससंभव है। वह विंजन का विषय जरूर रहे, लेकिन आगामी धाम चुनावों में अमल का विषय नहीं हो सकती।

इत हाजल में मतदाता के सामने जो सवाल पंरा होता है, वह क्यों का मनो हो रहा जाता है। मैं १९६२ के चुनावों में मत पूं या न पूं ? पूं तो शिक्का पूं ?

मत विलगुल न देना उचित नहीं मानून होगा। वह मनकर का मनो गुप्ता-पीडा ही है। ग्यायापीडा अलग बाबो-व्रतिकादिघों के बीच उंडला करना के इन्कार करेगा तो यह अपने को नालायक समित करेगा और अपने वर का जोड़ करेगा। उसी तरह किसी को मत ही न देना नरदरुण के बाकिर का धर होगा। आम नीर पर उलका यह कर्तव्य ही है कि वह लगे रहे, उन्मोदवायो के बीच पसवो करे और मत दे।

और मेरी राय में मतदान भी वह आज ही सिरी रीति से नहीं, लुगी तरह करे। स्वतंत्र ॥ हर आदमी को अपना मत जाहिर करने का अधिकार है; बल्कि मत जाहिर करना उचित कर्तव्य भी होता है। जिरी रीति से मतदान करना अभा-कुल्ला है।

उम्मीदवार की पसंदगी करने एक लुका मत, कार्यक्रम और नेत्रुष ध्यान में लेना ही होगा। सज्जनता, विचारक, कुमत्ता इत्यादि वैपक्षिक गुण ध्यान में लेना आवश्यक है, लेकिन उनसे भी बडकर महत्व उनसे एक को देना ही पड़ेगा। विचारधारा, कार्यक्रम और नेत्रुष को लेकर ही एक बनते हैं। पक्ष-पक्षों में जो लडा भी होइ होती है, वह अशुभित है। फिर भी हमारा प्रतिनिधि हमारी विचारधारा से सहमत हो, वह विलगुल बलती है। आदिनिश या शिक्ष के हमी पक्षों की मत नहीं देना चाहिए; अर्थात् पक्षों में निराधामक चुनाव तो हमें करना ही होगा। पक्षों में उलका परमा होती।

“सर्वोपकारिणो के लिए का एक समान है” इसके मानी यह नहीं कि किवचा राज्य होता है, उस बारे में हम उदासीन हैं। हम एक पक्षों के लोगों के प्रति समान प्रेम और आदर रखते, बनी सम्यति और उद्योग के लिए मरबड कोषिय करेते, जिना उननी सम्यति के केवल बहुमत से आधार पर, उन पर दंग-धरियल सत्ता अधिका भी नहीं करते। पक्षों को होइ से अलग दंग निरुल अस्मित

दहना चाहते हैं, तो हमें किसी को मत नहीं देना चाहिए इतना ही नहीं, औरों को भी मतदान से पराजित करना चाहिए—तक-दृष्टि से यह एकात्मिक नहीं, लेकिन निरिदो भूमिका होती। लेकिन अगर हम मत देना चाहें तो फिर हमारे निजी मत जैसे किसी-न-किसी पक्ष को दिवे बनने में जैसे ही औरों के मत भी हमारे उद्योगों के एक को दिखाने की हमारी कोषिय होती चाहिए। मुद मत देना, लेकिन प्रचार न करना, यह तो “इतो अल्लतो प्रभः” कैसी रिगति होगी।

सर्वोपकारिणों में आपल में भीथिरी प्रचलित प्रभ के विरय में भिन्न रायें हो सकती हैं। उदाहरण के लिए, रिदों का अलग राय को या मरदो-भाषिणी का एक ही-राय रहे, इस मरदो में सर्वोप-कारिणों में भी तो रायें हो सकती हैं। अस्मी-अस्मी राय को लखटा के लिए वह दिख तो नहीं ही, बल्कि नैर-नगरी (अनुनान्टीयनमल) संपर्के भी जलवार नहीं करेते। फिर भी नागरिकता की अर्थों में उनमें मतदेव रह सकते हैं। फिर विद्वन्वादी सर्वोदयी मतदाता एक उम्मीदवार का प्रचार करेगा और मरदो-भाषिणी सर्वो-दयी मतदाता वरदे उम्मीदवार का प्रचार करेगा। मतदेवों के पक्षवद भी चुनाव जैसे उन्मादपूर्वक रोखे जा सकते हैं, उनका पक्षवद आम लोगों के सामने प्रस्तुत करते वह बावद चुनाव-प्रवृत्ति का उन्मी-धरन भी कर सकते हैं।

ऐसे-ऐसे प्रचार-विरोधी विचार मन

में उठते हैं और उनका हल नहीं हासिल होता।

और एक सवाल। जयपरासनी ने लोकतांत्रिक विरोधीदरणी की योजना देना के सामने प्रस्तुत की है। वह प्रस्ताव के रूप में लोकतन्त्र के सामने रखी जानी चाहिए। वह कौन रखेगा। लोकतन्त्र उतको एक ही दिन में अमल करेगी सो थव नहीं। वह अर-नर भी रखनी पड़ेगी। लोकतन्त्र का लोक-मत परि-धीरे बनवा चायगा। फिर जय-परासनी की योजना का प्रचार करने ही के लिए कोई लोकतन्त्र में जाना चदि प्यो उतको—और कोई आसिदि न हो तो—आसीबांद देना जयपरासनी के लिए आवश्यक है या नहीं। अपनी योजना के प्रचार के लिए लोकतन्त्र का भी उपयोग करना क्या संभवित होगा।

नुसार सच प्राप्ति के ही लिये रुड़े (या खेडे) चारे हैं सो थव नहीं। कुछ लोग सत्ता से अलग रह कर मात्र सच-प्रचार करने के लिए भी शिबि-मणों में जाना चारेते। ऐसे सर्वोद विचार-धारा के प्रचारार्थों को हम क्यों न हल मत दें।

मेरी अपनी भी घोषणार्थिक को एक योजना है।

- (१) समीन लक्ष्य की।
- (२) व्याव-नष्ट पर ही।
- (३) इस लाल से १०० रु. अगले थाल २५ रु. अगले थाल को।

लोकतन्त्र की सम्यति के निना यह योजना भी अयल में आ सकते बानी नहीं हैं। मैं नहीं चाहता कि पूरा पूरा देश लोक विपुल के पदों लोकतन्त्र उद्योग मरुत करे, या उस पर द-बल से अमल करे। फिर भी लोकतन्त्र-यद भी उतके प्रचार का एक महत्त्वपूर्ण पयन है। उनका भी इन कथों न उपयोग करे।

सर्व सेवा मय विजिन भी सर्वोदयी की स्वयत्ता के लिए कि सत्ता मिलने पर वे सर्वोद यजियेगे। इतिवृत्त

सच विचारात करता है कि निरुद्ध सेवा करते हैं और मतदाताओं को इन दल लोग ही चुने जारें।

एकनाशन मतदाताओं को उल मरना है, तो सच कार्यरतोंकी को

हम भी प्रचलित सत्ता में जो छुपी है और राष्ट्र को ही और यदि सत्कार किसी को और आधिपत्य में है, जो को मतदानक कार्यक्रम के चले में सेवा देकर उन्मादजनक नर्याउठती ही उन्मो आनी समत है। मान-मुल विपक्षीय रवनी को देनी चाहिए कि के अपने मत की योजना की सुझा और मतदाता के उपयोग करता लोते।

मतदाताओं में सच भी उन्मो उनकी राय में सार्वजनिक जीवन में वह उन्मो बल की ओर से ही बल मति है। उन्हें यह भी याव रखना साम्य की सल्लखा से लिए हिल लो की बल तो कौची की नहीं आ लोते।

मैं सेवा सच का सम्य और के गारुड अस्मित लखर कामन सम्यति है, यह तो मानी होइ मत है और बनन बखाना आवश्यक है। का जयप्रत्यक्ष विरोधी प्रचार का विरु-पस अपने हाथ में हुकुरन देना पड़े केला है। आज-कालतन सच विरु-धीन पराजित भूमिती की यह भी नीर में कोई विरोध विचरणीय प्रतिप्या हार और बोल में परे है। के भी हृदय-परिवर्तन हो जसनी भी विरो तोइ का हिल्ला हो जसनी भी, जो सकार्य देना उतक ही मानेगा।

लेकिन आज की हाउर में नहीं। अधिचार का प्रयोग करता जाइते हैं बाले, अथवा लखरवायणी उन्मोद निरुधिर राजनीतिक पक्षों के लखर देने का न-बन्ध निरुधर बिकन मतदा-ता नरतय भी पसिब है। इतलिये भडार करे तो हारुल सल्लिगत नरतये होने हुए भी यह उन उन्मोदवाय-का

सर्व सेवा सच की यह मरदो मानी सामन के अस्मित ही, बल्कि पसिब के आधार पर ही होइ मरदो है। कि वह सत्ता प्राप्ति को उन्मोद-नेगा। मतदान-प्रचारक अस्मित के कोनीरिधि को पसिबता के दंग विरु-द गलन बाले-बालों मरदो, लखरवाय राजनीती और लखर बुरावों के लख-या चुनाव में लख सके ही। का निरु-

जिला सर्वोदय-मंडल को अध्यक्ष, मंत्री, संयोजक एवं अन्य प्रमुख कार्य-वाहियों को नियुक्तानुसार बिहार के मुजफ्फरपुर, दरभंगा, सहरसा, पूर्णिया, संग्राम परगना, मुंगेर और गया जिलों में बीषा-नट्टा अभिमान तो चल्त हों रहता था, ११ अगस्त को उत्कीलसराय में 'विहार सर्वोदय-मंडल को' कार्य-समिति में भागलपुर और सारण में भी अभिमान चलाने का निर्णय किया। समिति ने उन्नी बैठक में अन्य जिलों के सर्वोदय-मंडल को भी अनुरोध दिये गए इच्छानुसार अपने जिलों में नाम करने की अनुमति दे दी।

निर्णयानुसार विहार सर्वोदय में मुजफ्फरपुर जिले के शिवदल, रूनींदरपुर, मधुआ, चन्द्राहा एवं गुरो, इन पांच अंचलों में पौर; दरभंगा जिले के जेनीपुर, बदेरी, मनीगाड़ी और शिरोल अंचलों में चार; सहरसा जिले के सोनरसा, सिधमनांग और गौर, तीन अंचलों में तीन; पूर्णिया जिले के बुराबाजार, बलराम एवं पूर्ण सहर, तीन अंचलों में तीन; संग्राम परगना जिले के रामगढ़, सरमा, आगतदा और कालरगाम, चार अंचलों में चार; मुंगेर जिले के गोगरी और बरहिया, दो अंचलों में दो; सारण जिले के गौली, गौर, महालनांग एवं नैतुपुर, चार अंचलों में चार; पंचास जिले के मोतीहारी सहर एवं सारन, दो अंचलों में दो; भागलपुर जिले के सवौर अंचल में एक; गया जिले के घोराही अंचल में एक एवं फाजल जिले में एक; कुशीनर जिले में 'बीषा-नट्टा अभिमान' में लगी रही। पटना जिले में भी बलियारपुर, बाढ़, मोरामा, सिधम, विहार एवं एकनासराय अंचल में अभिमान-दोली ने कुछ दिनों तक परफाया की।

पटना जिले के कार्यकर्ताओं ने अपने जिले के अनुपम वसांत हुज्जत बहा कि पटना जिले में उन्नी जमीन मिलने की आशा नहीं है, चाहे किनासा भी प्रचार किया जाय। इसलिये पटना जिले के कार्यकर्ताओं का एक दल भागलपुर एवं बुरुवा दल मुंगेर जिले में काम करने के लिये भेजा गया। भागलपुर जिले में कार्य करने की तैयारी नहीं थी, इसलिए दल को बिहार छोड़ पटना छोड़ आना पड़ा और पीटने के बाद वे पूर्णियाँ जिले में काम करने के लिये गए हैं।

विहार राज्य के बाहर के महाद्वार के ९, उड़ीसा के २, दिल्ली के २, मैसूर के २, गुजरात के ९, बंगाल के ५ और उत्तर प्रदेश के २६; इस तरह कुल ५१ कार्यकर्ता अभिमान में लगे हैं। इनमें से ४ कार्यकर्ता भागलपुर में, ३ मुंगेर में, १ गया में और १५ पूर्णियाँ में 'बीषा-नट्टा' अभिमान में लगे थे। उत्तर प्रदेश के २६ कार्यकर्ताओं को बाहर भेजने की व्यवस्था की जा रही थी कि अल्पसंख्यक बाढ़ एवं गौरी के कारण मुंगेर, भागलपुर, पटना और गया जिले में बाची इच्छात्मक हुआ। मुंगेर के तीनों कार्यकर्ता लौट कर पटना चले आये, बिहार उत्तर प्रदेश के २१ कार्यकर्ताओं के साथ मुंगेर जिले में गाढ़ी-सिद्धि लेंगे। पैसा करने के लिये भेजने की व्यवस्था की जा रही है। उत्तर प्रदेश के अन्य ३ कार्यकर्ता लौट गये, क्योंकि उनका ब्याज-दल गाढ़ी-सिद्धि लेंगे में काम करने के अक्षम नहीं था। गाढ़ाघर जिले के ७ कार्यकर्ता पंचास में एवं पटना जिले के ८ कार्यकर्ता पूर्णियाँ में काम कर रहे हैं। पटना जिले के कार्यकर्ताओं का बुराब दल मुंगेर जिले के बरहिया में काम करने गया था, जब ओट कर मोरामा लेंगे में काम कर रहा है। एक प्रभार कामगार २५० कार्यकर्ता बीषा-नट्टा अभिमान में लगे हैं।

२५ विहार को हवाई में नव विरोधवादी ने प्रथम विचार था, उस दिन से अभी तक नीचे दिने अनुभव भूदान मिले हैं।
सारण जिले में ६०० बट्टा, मुजफ्फरपुर जिले में १०५ दानकों द्वारा १५०० बट्टा १२ पूर; दरभंगा जिले में ८०० बट्टा, सहाई जिले में १४५५ बट्टा, पूर्णियाँ जिले में २५१५ दानकों द्वारा १५५५ बट्टा, संग्राम परगना

जिले में २१९६ दानकों द्वारा ३०,१४१ बट्टा १५ पूर, मुंगेर जिले में १,५०० बट्टा, गया जिले में ८०० बट्टा, पटना जिले में १०० बट्टा, भागलपुर जिले में २५० बट्टा, चन्द्राहा जिले में २१ दानकों द्वारा ६०६ बट्टा।

कुल ८७५,५२४ बट्टा ६ पूर जमीन के दानपत्र मिले हैं। लम्बे लम्बे दानपत्र चलाने में २,११८ दानकों द्वारा ४०,१४१ बट्टा १५ पूर भूमि मिली है, जिसमें केवल ४००० बट्टा में १,७३१ दानकों द्वारा ३२,०१३ बट्टा ११ पूर जमीन मिली है। बाका की परबतना के समय लगभग १५०,००० बट्टा जमीन के दानपत्र मिले थे।

इस प्रकार निजोगनी को विहार प्रयोग के समय से अभी तक १६,००० बट्टा जमीन भूदान में मिली है, जो हमारे लक्ष्यका, ११ लाख की इच्छा में बहुत ही कम है। इस विहार-सरकार ने भी दरभंगा जिले के अन्तर्गत एक एकड़ से अधिक और पाँच एकड़ तक के भूमिदानों से बीजकों भाग, पाँच एकड़ से अधिक एवं तीन एकड़ से कम जमीन वाले भूमिदानों से दूरवाँ भाग एवं बीस एकड़ और दूधले अधिक जमीन वाले से छटा भाग (३०) के रूप में लेने के लिये विधान-सभा एवं विधान-परिषद से स्वीकार कर लिया है, जो कवर ही सार्वजनिक के हस्ताक्षर के बाद वास्तु काम चलाए है। जमीन की अधिकतम सीमा एवं परिवार की जगह मिलने को पैदाते से सरकार को सामान्य के लिये ही जमीन मिलेगी। लेकिन फिर अन्तर्गत 'डेवी' स्वीकार कर सरकार ने हमारे मूल विधान-संघटित पर प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार है—को स्वीकार कर लिया है।

इस प्रस्तावित कानून से लाभ के दो अनुभव बताये जाते हैं। पटना जिले के कुछ कार्यकर्ता बताते हैं कि इस जिले के दबीहाई जाने से जमीन वाले भूदान-कार्यकर्ता पर नाशक ही गये हैं और भूदान में जमीन देना नहीं चाहते हैं, लेकिन कार्यकर्ताओं की वही बलात् का पटना है कि इस जिले से सरकार को जमीन न देकर भूदान ही देने वाले की संस्था अस्थापित है।

नतायन्त्रो-आंदोलन

विहार-सरकार ने महात्मा गांधी के जन्म-दिवस, २ अक्टूबर के मुंगेर जिले के नुसुरी गाने के मलेजूर गौर से बंदी छापण को भूदान को उठा लिया है। वहाँ कई महीनों से सर्वोदय-कार्यकर्ता परिचित कर रहे थे। ६ जूलाई को भी अन्धकार नाश करने में भी विवैदित की।

राजनीतिक दल और आचार-संहिता

२६ सितम्बर, '६१ को ६ बने भाग की परबतना के विचारक कर्म में राजनीतिक दलों के प्रमुख व्यक्तिों की एक बैठक का आयोजन विधान-परिषद के अध्यक्ष के सभापतित्व में किया गया था, जिसमें गोरेल, प्रभा-भवा-बाड़ी, कम्पुलिन, सोरहित, सतार एवं आरकर पाटी के छायाग ३० व्यक्तियों ने भाग लिया। विहार सर्वोदय मंडल द्वारा प्रस्तावित आचार-संहिता पर सर्वोदय-समिति बनाने के लिये ५ अक्टूबर को विहार-सरकार के मुख्य मंत्री के सभापतित्व में विचारक मन्त्र में एक बैठक हुई, जिसमें ११ वृद्धि आचार-संहिता स्वीकार की। सचीव संहिता के प्रचार की दृष्टि से २० अक्टूबर को विधान सभा के सदस्य एवं अन्य रचनात्मक सहायकों के कार्यकर्ताओं की एक आम सभ का आयोजन भी प्रत्येक प्रसन्न नाशपान की सम्पन्नता में किया गया। भी अन्धकारवादी से ही-उत्त आन्धकार-सभ पर प्रभाव डाले।

प्रचार-यानत्रो एवं विचार २ अक्टूबर से भी उपन्यास नाशपान की यात्रा का कार्यक्रम शिार के विभिन्न स्थानों में 'बीषा-नट्टा' की इच्छा के लिये बनाया गया था। अभिमान के नाम से सर्वोदय-कार्य के लिये सर्व-सभ एवं सर्वोदय-सहित ही विधि का भी सर्व-सभ बनाया गया था। लेकिन महात्मा, एवं बाढ़ के कारण भी बलात्कार काग ने अपनी यात्रा स्थगित कर लक्ष्मीपुरी की सेवा करने का निर्णय लिए सर्वोदय मंडल की कार्य-समिति को जलाय। भी अन्धकारवादी के सहायतामें कार्यकर्ताओं ने कठिन परिश्रम कर संतोषदा-जमीन भी प्राप्त कर ली थी और सर्वोदय-कार्य के लिये काही एकम की पैदी भी देने वाले थे। लेकिन प्राकृतिक प्रकोप के कारण एवं बलात्कार स्थगित कर दी। १० अक्टूबर से ७ नवम्बर तक मिला-सतर पर तीन दिन के विचार का आयोजन किया गया था। लेकिन परिस्थिति पर विचार स्थगित कर देना पड़ा।

प्राकृतिक प्रकोप एवं सेवा-कार्य

१ अक्टूबर से ५ अक्टूबर तक लगातार वर्षा होने के कारण विहार के मुंगेर, भागलपुर, पटना और गया जिलों के गौरी की जल और माल की बरा तुकड़ाने हुआ। मुंगेर जिले के सहर, लक्ष्मीपुर, सूरदासा आदि जिलों में एक हजार से अधिक व्यक्तियों की मृत्यु हुई तथा पचास हजार से अधिक जानवर मरे। हजारों घर पानी में नष्ट रहे तथा कई गाँवों का तो नाशोनाशन नहीं था। विहार सर्वोदय-मंडल के मंत्री-कर्म की उप-नाशपान विह ने अंतर्गत देना इच्छा-प्रकार-दृष्टय का सर्वोदय मंडल को कार्य-समिति के बैठक में किया। इसके पहले मंडल को बाढ़ की अपार स्ति का भाग नहीं था, बैठक में बीषा-नट्टा अभिमान की स्थगित कर जाहोरी-दोली की सेवा करने का निर्णय किया और विहार के सभी क्षेत्रों में सर्वोदय-कार्यकर्ताओं को सेवा-कार्य करने का निर्देश दिया। निर्देशानुसार उत्तर प्रदेश के २२ कार्यकर्ता एवं विहार के अन्य जिलों से भी कार्यकर्ताओं की दोली मुंगेर के लिए रवाना हो गयी। बीषा-नट्टा अभिमान में लगे कार्यकर्ता गाढ़ी-सिद्धि को सहायता एवं सेवा में लगे गये। भी अन्धकार एवं बाढ़ के कारण भी १५ अक्टूबर से १० नवम्बर तक बाढ़-सहित क्षेत्रों में काम करने का निर्णय किया है।

—रामानन्द विह



दुर्ग जिले में गांधी-जयन्ती-विहार की वाह में धनधारण-“अमर भारती” देहरादून-बागती में सर्वोदय-पत्र-परचाया-सहमदानन्द में साहित्य-प्रचार-हिसार में सर्वोदय-प्रचार-दुन्दीर में साहित्य-प्रचार-विहार में गोपा-पुस्तक-समिपान-मुंगेर छापी घामोयोग संक का निवेदन ।

दुर्ग जिले में गांधी-जयन्ती के अवसर पर सब राजनीतिक दलों ने मिश्र-बुल कर आयोजन किया । भीमती राखरती दुर्गे ने महिला-संघों में बहोते सर्वोदय-कार्य में अनेक योग दे रकती है, सब समयगता । अयोध्या-नीय गेठदुर्ग के हिलार मद्रिणओं की आदोक्षण करने की भी उन्होंने अनीकी की । क्या मैं भी रघामन्द दुर्गे, भी-कलेन्द्र दुष्क, भी उमेर सिंह आदि कार्यकर्ताओं के साथ दुर्ग ।

बिहार की वाह में सरोप अर्थक सुप्रधान हीर जिले में हुआ है । भनभारत, मराठी, पारसीभाषा भी मुंगेर जिले में है । बहो की बिच्छी के अनुगार, आभम के मद्रास केन्द्र पारसीभाषा को विरोध सुप्रधान मरी मुकुना है । लेकिन रामचन्द्रपुर के एक उपकेन्द्र विद्यालये में सुरु-कलेन्द्र भीग गया है । वही के निराने से ५० बराने दूर-दूर गये और कुछ छात्रों का सुप्रधान हुए ।

देहरादून में भी हीरपाल घामा, वो दूरा विद्यापीठाओं की और कामिल, मासु उत्तरार और हिलार राज्य में कई वर्षों पढ़े-र का काम कर चुके हैं, उन्होंने सन् १९१३ से “अमर भारती” की रघामना छापी-सामो-योग, सामसुप्रधान के विकास के लिए की है । “अमर भारती” का सुरु देहरादून, टिहरी गढ़वाल और उत्तर काशी है । “अमर भारती” के माध्यम से अंतर एरिभ-माध्यम, अंतर मद्रिण विद्यालय, मद्रिण छात्रागरी विद्यालय, छापी उपादान बिन्दी-केन्द्र, चिकित्सालय, सुप्रधान, मधुमन्की-पालन केन्द्र आदि मद्रिणों बरती है ।

काशी के सर्वोदय-अंशक के अनुगार : बिनोद-जयन्ती के गांधी-बागती उक का कार्यक्रम इस तरह रहा : भुविचरण के लिए २२ गाँवों में १०० मील की परचाया हुई । ९ गाँवों में भुविचरण-कार्य फाल रदा और २ एकड़ ३९ बिघमिल भूदान किया । दो की रखे की छापी-बिन्दी हुई । इन्हें अतिरिक्त ५० ६० का सर्वोदय-साहित्य परचाया के दौघन में पढाया में पेशा गया । गांधी के अंचल में परचाया का आयोजन भी सुरु मारी में गाँव के अगने कुछ साधियों के साथ किया, जिले में विकास-उपेन्द्र प उद्देशी के तल्ले-पित राजकीय कार्यकर्ताओं का स्रोत सु-सहयोग मिला ।

ता० ७ से ११ अक्टूबर तक कलम-बाद की मद्रिण पैरिलीक मिला में सर्वोदय-कार्यकर्ताओं में मजदूरी के बीच साहित्य-वार्त्तिक मूत्र, ६० भा० सवे सेवा संक हाथ मांयम मूत्रय प्रेष, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित । पत्र : उजवादा, वाराणसी-१, कोन नं० ४३११ एक संक : ११ नये पैले

प्रचार का काम किया । इन दोघन में बरती २२ की रखे का साहित्य मजदूरी के बीच विद्यार और भूदान-परिभाओं के साहक बने । इस साहित्य-सहाय के अन्तर्गत को सर्वोदय-साहित्य विद्यार, उत्तर पत्र को अनेक के आधी कीमती की सहायता भी दी गयी । यह मिला ३ “विद्यार” में चौबीसों पत्रय चलती है । एत की “विद्यार” में बाने वाले मजदूरी में भी साहित्य-प्रचार करने की हरि के एक एक और दिन, पूरे १४ पत्रे तक सर्वोदय-कार्यकर्ताओं में साहित्य-प्रचार किया । बिन्दी की बुद्धे-पत्रों के लिए मजदूरी के मद्रिणपरिओं की एक प्रचार-सभा दुर्ग में की गयी थी, जिले में भी बसभार्य मद्रिण ने सर्वोदय-विचार-प्रचार का मद्रक समयाप्य ।

हिसार के जिले सर्वोदय-अंशक के विद्यार माह के विचरण में सयाप गया है कि ५१ बीघा २ हिसार मूलि का विचरण किया गया । पत्रिकाओं के ११ माहक बनाने गये । १२८६ की साहित्य विन्दी की मयी । १७५ ६० का समुचरण मिया और ११० सर्वोदय-पत्रों से १४ रखे संग्रहित हुए । भीमती आशादेवी जयमंयमयष की छासा में १८ छापीर्य और गेठियों अयोधिन की मयी । २८ मद्रिणिक नवागरी-समेलन में रिस्की गये । इत तक जिले में ५० कार्यकर्ता काम कर रहे हैं ।

“बिन्दीका-जयन्ती” के अनुगार पर हीन दिन तक छापी-ठेना विद्यालय कल-सहाय, हीर की अन्धपरिभाओं एवं छात्रागरी में १६०१ मय में रघामनी सर्वोदयमें बहनी के सहयोग से एक हिसार रखने के सर्वोदय-साहित्य की मजद

दिली की । उन्होंने हीनों दिन नगर में उन्ही रघामनीय बहनी के यहाँ निवास किया तथा भर-पूर पहुँचने का प्रयत्न किया । एत० ही० ओ० टी० को बहनी ने भी प्रचार-कार्य में हाथ देखाया । “गांधी जयन्ती” पर पुनः हीन दिन तक सभी बहनीयों ने नगर में साहित्य-प्रचार का कार्य किया ।

सहराज जिले के हीर, हीनवाला और कियामंय अंचल में हीन टेलियों बीघा-कल-अभियान को कार्यागत करने के लिए गाँव-गाँव गुरु रही है । विद्यार मद्रिण में टेली से ६५ दानपत्रों द्वारा १८५ कल-बनीय भूदान में प्राप्त की है और १२६ पत्रों की साहित्य-विन्दी की है अभियान में प्राप्त वंचासके के मुद्रिण एवं सरोप के उरिभ सहयोग प्राप्त किया है ।

—बिहार प्रांतीय परचाया-बोली को संवाक परधान में २०४ दानपत्रों द्वारा १८५० कल का दान मिला ।

मुंगेर की वाह के काल को सति इस जिले को पहुँची है, उकका सुप्रधान बने के लिए एत की मयोयोग संप, मुंगेर में अगने सभी मिनों एक सहयोगियों की सेवा में निवेदन किया है कि इस कार्य में निग्न प्रहार से अपना हीन-दान दें । (१) बरार्य टेली बाने बहनी के सेठन में से एक दिन का सेठन दें । (२) कलिन, बुधक, चौबी और कशीरगरी के चंदर माया बाव । (३) संवाक परधान बहनी में भी चंदर माया बाव ।

मुंगेर की वाह में भी उमपूर्व्य भार्य, भी निर्मल बरार्य तथा अन्य १-१५ कार्य-कर्ता उकके काल में रहे हैं ।

विषय-सूची

१	विनोद
२	बसभारा नागपण
३	विनोद
४	—
५	सामुहिक
६	निर्मल पत्र
७	विनोद
८	उ० न० देवर
९	अन्ध परचयन
१०	सुप्रधान देव
११	सुप्रधान देवा
१२	सामान्य विद

रघामय और सर्वोदय विद्यार का भूमि-दरबंदी कलर और भूदान राजनीतिक और निरर्थक समर्थकीय सेवा और छापी की मुर्ति बागती । छापी विचार बाग । सुप्रधान बनाने का प्रयत्न विद्यापी वरीयों के मद्रक सह नदी होंगे राजस्थान में गोवालय की अनुसन्धान मद्रिणों के संवाक सनी सेवा सके के मुनाय संघी प्रस्ताव नीति का सरोक्षण विनोद गांधी-दल से विहार की विन्दी

विहार की राजनीतिक मद्रिणों द्वारा स्वीकृत आधार समीपार्थ ११

मादेशिक पद्यात्रा

गुजरात सर्वोदय-पद्यात्रा

बरीर २२ माह से गुजरात में एक अराटः प्रांतीय पद्यात्रा सातवन्तक चल रही है । ७-८ छापी वाय में रहे हैं । १५ विदों में पूरा कर अनी सेव जिले में आये हैं । इस पद्यात्रा में ४५ अमयक, ७० विचार विचार, १९५५ छापीर्य, २९४२ मील का प्रवाक हुआ । ८६,७८१ ६० का साहित्य-प्रचार हुआ । ८६६ “भूमिपुत्र”, १११ “विद्यार”, १६ “भूदान” व “भूदान-संक” के माह बनाने गये । सम-वचान, कर्ण-वचन, वन-वन और विच्छुको के ७१ अमयक-नई मल्ला-अमल विचार पर लिखे गये । १५ मुद्रिण का सुप्रधान, ६२-१८ एकड़ भूमि-दान-माहिक, १५८-१४ एकड़ बनीय क विचरण हुआ । १४-१४ एकड़ दान क किया । १० छापीर्यदान, ३०० ६० नकद दान, १ सुप्रधान, १४४५ सार्य और ७५ नगर्य और कर्ता में सेकः यह पद्यात्रा आगे दूध कर रही है । पद्यात्रा में सर्वोदय हीरय आस, सुप्रधान, माह, घाजान, देवादि, विनोद, विच्छुको, मद्रिण, मद्रिण, भूदान-मद्रिण, नयी तादीय आदि निग्नोय का कागंयन, पाठ-पाठ, गोपितियों आदि हीरय । गांधी-विनोद, रघामय-संक, अमिभ-हनुमन्ति के विचारों का अमयक पर-पाथिको का संवाक है ।

बिहार प्रांतीय परचाया-बोली

विहार प्रांतीय परचाया-बोली का संवाक परधान जिले में भी अमयक-पत्रों की सेठनमा प्रसार कोषरी एत की सेठनके केवरीवाल के नेतृत्व में ३११ मील की यात्रा हुई । कुल ७५ पत्राओं द्वारा २७५ गाँवों में उमर्क हुआ और सर्वोदय विचार का प्रचार हुआ । इस अवसर पर १४४ दानपत्रों द्वारा २८५० कल्ले का भूमिदान मिला । “भूदान-संक”, १११ “विद्यार”, १६ “भूदान” व “भूदान-संक” के माह बनाने गये । १५ मुद्रिण का सुप्रधान, ६२-१८ एकड़ भूमि-दान-माहिक, १५८-१४ एकड़ बनीय क विचरण हुआ । १४-१४ एकड़ दान क किया । १० छापीर्यदान, ३०० ६० नकद दान, १ सुप्रधान, १४४५ सार्य और ७५ नगर्य और कर्ता में सेकः यह पद्यात्रा आगे दूध कर रही है । पद्यात्रा में सर्वोदय हीरय आस, सुप्रधान, माह, घाजान, देवादि, विनोद, विच्छुको, मद्रिण, मद्रिण, भूदान-मद्रिण, नयी तादीय आदि निग्नोय का कागंयन, पाठ-पाठ, गोपितियों आदि हीरय । गांधी-विनोद, रघामय-संक, अमिभ-हनुमन्ति के विचारों का अमयक पर-पाथिको का संवाक है ।

१६ विद्यार को टेली का प्रेष मायलपुर जिले में हुआ है, बहो एक मद्रिण तक परधान होगी । बह में टेली मुंगेर जिले में मीठा करेगी । टेली ७ भाई निरंतर भूने । १६ विद्यार को टेली का प्रेष मायलपुर जिले में हुआ है, बहो एक मद्रिण तक परधान होगी । बह में टेली मुंगेर जिले में मीठा करेगी । टेली ७ भाई निरंतर भूने । एक संक : ११ नये पैले

महक अंग्रेजी लारी है। यह तो उधे भूख ही आयेगा, न भूखे तो आसर्ष्य !

हम अन्धी अंग्रेजी शीर्ष हैं, कर्णिक तब हम दारुस्तल में पढ़ी थे तो हमें अंग्रेजी में ही शिक्षण मिला। हमारे गुरुजी की अंग्रेजी हमारी मातृभाषा एक ही थी, मरुटी। लेकिन कक्षा में प्रवेश करने समय 'मे आर्द्र कथ दन हरे' (क्या मैं अन्धर आ सकता हूँ)। हम तब अंग्रेजी में गुरुत्व पत्रका था, मरुटी में गद्दी पुत्र लगे थे। दारुस्तल में प्रथम रत्ने के अन्ध अंग्रेजी न बोलना था था—'चाहे भूगील भीरुना ही था गणिन। कोई बारा गुरुनी हो, तो सवाल अंग्रेजी में बना कर पूछना पड़ता था। अंग्रेजी में नही बना सके तो संका मन की मन में ही रही। शाना अर्द्ध अंग्रेजी का बोर था यहाँ 'गाना-गाना, गीतग' यहाँ तक कि स्वयं ही अंग्रेजी ही, मैं आते थे। 'शाहन पोटर' अंग्रेजी में, 'मासल स्टोन' अंग्रेजी में। जैसे जहाँ-जहाँ अन्धजन होता है, नैरो अंग्रेजी ही। शाना परकनी का वातावरण उल्लेख था। अन्ध हम आजार भारत में हैं, तो अंग्रेजी का वातावरण देना ही बना रहता है तो 'विभव इतिषा' (भारत छोड़ो) के इच्छे 'रिदन् इतिषा' (भारत छोड़ो आओ) करना होगा। अन्ध 'मिमिअन्धररुडिग' (गलतवादी) न-होने हीचिथे। अंग्रेजी शीर्ष और मैं पूरा चाहता हूँ कि कक्षाके अन्धी तरह सीखे या तो मिलकुल ही सीखें, या तब अन्धी तरह सीखें। इरेक की अंग्रेजी का 'टो' कोई काम का नहीं है। इलायत में कृषिण कि पहले सात-आठ साल में वैदिक शिक्षा सारे भारत में बाले तो उदमें अंग्रेजी न लिखायें।

अमेरिका के एक मानव शास्त्रज्ञ ने कहा है कि बचपन में अनुप्य बयादा बस्ती चीलका है। चार-पाँच भाषायें भीत लेता है। मुझे भी अनुभव है। मैं अन्धको तरह जानता हूँ कि मेरी विदोयता यह है कि जिन विषयों का मुझे ज्ञान नहीं है, इन्का मान मुझे देता है। मैं जाने भेरे अज्ञान का ज्ञान मुझे है। मैं हर विषय में नहीं बोलता हूँ, कर्णिक मैं अज्ञान का एक-दो नही हूँ, इरुणिण हर विषय का ज्ञान नहीं रहता। लेकिन मैं जानता हूँ कि पचन में मेरी अन्ध-अन्ध अन्धी थी। आज भी अन्धी ही है। मेरी भी मेरी शारीर कर्णिक ही कि निर निर में निरुणा संशुत्र संशुत्र सीला 'और पदोकिणी' को मेरी का बचपन यह बतानी थी कि 'हमाप विषय चीन दिन में संशुत्र साया सीला।' मैंने एक दिन उसके पूछा कि तु एक बात जानती है कि मैं चीन दिन में हास्तुत्र मुया चीला, लेकिन हम यह नहीं जानती कि चीन विषय में मैं बह भूख भी गया। यह दूसरी बात यह नहीं जानती थी। यह कर्णिक ही बात है कि बस्ती चीन दिन में सीलाके है और चार दिन में भूख बसता है !

विहार के वादग्रस्त क्षेत्रों का अनुभव

सहायता-कार्य के लिए जनता में कोई उत्साह नहीं

सबकी आँखें सरकारी रिलीफ पर — जयप्रकाश नारायण

विहार के वादग्रस्त क्षेत्रों का दौरा करके आने पर भी जयप्रकाश नारायण ने एक इतन्वय में कहा है—

"अतिथि, यद् और दान ने भी हवन उपरिष्क रिष्क, उसके बारे में बहुत कुछ कहा और मुना गया है, किन्तु कोई व्यक्ति अपनी आँखों से उधे नहीं देखता उधे यह निश्चय नहीं होगा कि जनी और हरा निष्कार के निम्न हवन उपरिष्क लक्ष्य है। अन्धके शोच तो ऐत प्रमोद होवे है, जैसे उन एष एष निष्कार गय है। कई हरिबन्-उपेक्षीयें वां नामनिष्कार नहीं हैं। अंग्रेज और पक्षों की बरवारी को यीयों चोट की होगी।

पर बादग्रस्त क्षेत्रों का प्रथम करने समय जो सबसे बड़ी रचनायें बाली सात मिली, यह यह भी कि सहायता-कार्य के लिए लोगों में कोई उत्साह नहीं होता था। यहाँ स्थूल और वाक्ये चरुधरे की सुविधों के लिए कर थे, किन्तु युवकों और छात्रों की उद्योगियों को गिरे हुए मद्राजों के मल्ले साक करते, निष्कारियों के लिए शोधियाँ पत्नी करते, मरुटी आदि साक करते अथवा अन्ध केंद्रें मद्राजगण काम करते हुए कर्णिक भी नहीं देया। ऐसी वास्तविक के लोग को अपने हाथों से काम करने में कोई काम की बात नहीं समझते, वे अन्धर जाननी मन्दर आर करते हुए देले गये। किन्तु सामाजिक प्रगतिशील समाज के लोगों को तो मानो हडका आर गया था। ऐसे लोग कर्णिक कुछ करते हुए नहीं देते गये। सामुद्रिक रूप के काम करते हुए तो वहीं भी लोग नहीं देया पड़े।

साधारणतः हर एक बचपन पर लोगों की आँखें सरकारी रिलीफ पर लगी हुई हैं तथा बच्चों के कोई उन्ध मन्दर करने के लिए आयेगा, ऐस ए समय पड़े हैं। कुछ उद्योग-व्यापारियों तथा अन्ध सामाजिक कार्यकर्ता बर्षों-बर्षों सेवा-कार्य में संलग्न

उप मानव शास्त्रज्ञ के पूछना पादिप कि अंग्रेजी शास्त्र में अंग्रेजी शीर्ष, लेकिन यह 'टो' नहीं—इसका मैंने रसेगा। मनुष्य की सात आदर नही रही है तो मनुष्य भूखा नहीं, आदर नहीं रही तो मनुष्य भूख खाता है। बचपन में बच्चे माया सीरते हैं, तो वह अन्धक समाज से सीखते हैं। मैं तो बात करते हुए मैं ही सुझाव देते देल कर वह 'क' बैला बोखी है, 'क' बैला बोखी है, पन्नापिच से देल कर उन्ही पयति से बच्चे सीखते हैं।

अंग्रेजी अन्ध इरुणर के बच्चे अन्ध-रुणरुणर नहीं सीखते हैं। वे 'उपारुणर' पद्धति से सीखते हैं। लेकिन यह नादान्य यहाँ देते होगा, इरुणिण यहाँ तो यकी को अन्धजन दार सीखना होगा। इरुके लिए पहले मनुष्यत्व के अन्धजन का अन्ध-जन होना चाहिए। मैं अन्धगना अन्धजन लोग दिन में हीपा। उनका कुछ माय मरुटी अन्धजन के नयदीक है। यह जन्दी हन्म हो जायगा। यह निराले लम्ब मरुटी अन्धजन मुझे बाद आया था। इरुणर नीचिने, मैं अन्धी अन्धगिण हीर रहा हूँ। उन्दी के साध-साध संशुत्र, शीरली यकी और बगद कर्णिक, कर्णिक, निष्कारण अन्धजन और मैं न अन्धी भाषा का अन्धजन बाईर, न दूसरी भाषा का, तो मेघ अन्ध कर्णिक ही रहा, ऐस कर्णिक ज्ञानबन्ध रुष्का कोई भी भाषा अन्धी बहद नैरे लियेगा। इस बास्ते अन्धी अंग्रेजी सीलाना पावते हैं तो अन्ध साक के नद निरुधद है।

धीर पड़े, किन्तु सामाजिक पाठियों के कार्यकों बादग्रस्त क्षेत्रों में नाभाष्यः नहीं गये गये। वे या तो सुखन के लिए स्टिक के चक्कर में हैं अथवा सरकारी बाजों की अन्धोचना कर रहे हैं। अन्ध-वादात्मक बर्षों-बर्षों कुछ उद्योगीय कार्यकों सेवा-कार्य में लगे हैं, किन्तु उनमें शरका नगय है।

स्वामीय समितिजें कर्णिकी कुछ काम कर रही हैं, किन्तु उध मानके में पटना का कार्य बदा ही रुष्कारण रूपा है। बर्णिक रिस्कि, कलकत्ता और बरवाई जैसे स्थानों से हमारी सहायक में शोष

भारत का अपना समाजवाद

दुनिया में आज सर्वत्र समाजवाद का बोलचाल है। लेकिन हमारा देश का अपना एक समाजवाद है, जो प्रगतिष्ठ समाजवाद से अन्धक अन्धक है। भारतीय समाजवाद में गांधी को अपने समाज का एक अन्ध माना है, शीर उसको पूरा खाय देने की जिम्मेवारी उठायी है। जिम्मेवारी उठायी तो वही, लेकिन उधे यहन करने में जिन दो मुगों को अन्धकता थी, उन दोनों में हम्द गुणकाम सावित्र हुए हैं। वैज्ञानिक अन्ध-और-अन्धक कर्णिक यो है वे दो मुष, जिनके बिना हमारा दाया या हमारी जिम्मेवारी हम्द गुणर नहीं कर सके हैं।

विज्ञान और अन्धजन के सम्बन्ध को आवरवकता हम दिनों में हात लोभों के सामने रख रहा हूँ। हर क्षेत्र में इसकी आवरवकता बहसुस ही रही है, गोरसे के क्षेत्र में विषयों हैं। इसमें आम जनता, व्यापारी वर्ग, सरकर और तन्पक्षी सशोषक चारो का पूरा सहयोग होना चाहिए।

सर्व सेवा संपन्न वे गो-सेवा के काम को लिपे एक गो-सेवा समिति बनार और वह जसिल भारतीय स्वर पर गो-सेवा के वारे में सोचती है, यह एक वृष्ठ ही शुभ वार्य है।

अन्धम गांधी
१८-१-६१

उत्तराखण्ड में दादा धर्माधिकारी

सुन्दरनाल बहुगुणा

साँधों, कमजोरी और बुरे मौसम को बावजूद भी दादा धर्माधिकारी ने उत्तराखण्ड को सर्वोदय-यात्रा का निमंत्रण स्वीकार किया और २३ सितम्बर को वे हरिद्वार पहुँचे। वहाँ से २ सितम्बर को रथप्रयाग से मन्दाकिनी के किनारे-किनारे हम केंदरालाय की ओर बढ़े। १२ मील तक मोटर और फिर उसके बाद पदयात्रा प्रारम्भ हुई। २५ सितम्बर को चन्द्रपुरी से चल कर दोहराह की मुच्य काची और शाम को नारायण-कोटी पहुँचे।

पहायण कोटी में रात को दादा को सुधार आ गया। इन्से १२। मील की सफ़्तने वाली नदरिया बाबा की थी, जिसमें दो मील की खड़ी पहाड़ी थी। फिर शाम को कुछ भूतनागरी भी हुई और रात को मुशगभार था। सुबह उठे वो बड़े पयोगेय में थे। सय हुआ कि आज नारायण कोटी चके। पर थोड़ी देर में नारुल उठ गये और दुर्ल भागवान के रथान हो गये। हम मोहन बना रहे थे कि दादा उठ कर नीचे आये और कहते छे, "मेरी तवियत का असमान के थादा बडा सम्भव है। बहो, जब तक वहाँ नहीं आती, आगे बढ़े। देवे देवल चलते की दिम्पल है, निम्नु चोड़े की खरवी मिल बायेगी, ती आत्मा भी होगी।" बोश नहीं मिल सधा। फिर भी हम आगे बड़े। एक मील चलकर मुशगभार बाधे हुए हुई। दो घंटे तक राते में ही खाना पका, निम्नु राय ही उठते में चौड़े का प्रबंध हो गया और २५ सां की रातको हम घटा पहुँच गये।

पहाडी से वेदाभ्यास १५ मील है। आश पास छोटे-छोटे पहाडी गॉन कीटियों केले टोनों से थिरे हुए हैं। नीचे मंडारिनी की मेघवती धारा और उस पर पहाड की थोड़ी से डेट तलहडी तक मदाकिनी की सुर्वाड कले धारा बना सगल। राश के स्नियर हारवल्स के कुछ सके रात को सिधुको के साथ बाई रहते हैं। राम की ला गीकर धारा के शास सातचीत बन के लिप्ये वे बाडी पर आ गये और बाई ओर से दादा को थेर कर बैठ गये।

दादा ने मारदर सादर से पूछ, "कहाँ चके के सके हैं और इनके सितामी क्या क्या करते हैं?" मारदरनी ने बताया कि वे आठ-पाठ ने हैं और इनमें से मधिकारा से लिखा सेती बाधी करते हैं। कुछ मन्वरी करते हैं। दादा ने सक्ती से पूछ, "तुम क्या करना चाहते हो?"

एक सके ने कहा, "हम सर्वोदय-प्रचारक बनना चाहते हैं।" तो दुले ने कहा, "हम सक्ती सेवा करना चाहते हैं।"

और दुले ने कि नैरी सेवा। उलर मिला कि "नीकर करके सेवा करना चाहते हैं, निवसे देव में नाम हो।"

दादा—"नीकरों का मोड़े ही नाम होता है। क्या तुम किसी नीकर का नाम रवा सके थे? मंगीनी वा नाम है? नीकर नहीं थे। परन्तु जो मन्वरी बनाते हैं, सेती बनाते हैं, उसमें इजल नहीं है। जो मन्व है उसकी इजल है। इल्लिह तुम चाहते हो कि तुम मन्व बनो। मन्वर साधनी, कन्वर साधनी, प्रोवेकर साधन की-सधनी इजल है। लेकिन तुम्हारे सिवाही की ऐसी इजल नहीं है। अतः तुम यह नजानो कि तुम्हारे सितामी मन्वरी न करे जो इनका काम बलेगा।"

सके—"महाँ चलेगा।" दादा—"महाँ चलेगा न। अतः

उत्तराखण्ड में विजयी नदियों हैं, वे ही इम्हारी नदी हैं। बायेवी भी इम्हारी है, उलतल भी इम्हारी है। हर लच्छा बहता है कि में पवासी हैं, बंगाली हैं, म्हापूरी हैं। तुम्हें कहना चाहिए कि हम हिन्दु-सत्तानी हैं।

"तुम मानते हो कि देव में हमारे को रहे हैं। मारदर दादा विह करते हैं कि पंथानी दूरा बायते। दूविया बायते करते हैं कि अलग प्रेष्य चाहिए। फिर भातार्थ किचका है? वो किडी का देव नहीं, उले कौन बचावेगा?"

दादा—"अब एक-दुकरे की और देलने स्पे। राश ने पूछ, "क्या सितामी क्या वेगा?" उनके थव कोई उलर नहीं था। दादा ने कहा, "दूवलिप्य हर लउने-सखरी की सीरना चाहिए कि मनुवाय मनुवायिनी का भी है, मुकवलिनी का भी है। तो क्या मैं थरा रह सक्ता हूँ?"

सके—"अथर रह सके हैं।" दादा—"तो फिर मैं किच पाया में बाच कलेगा?" सके—"दिमी है।" दादा—"और अथर तुम मनुवासी में और मैं मरती में बाच कले तो एक-दुकरे की मया सयल सके हैं नहीं। फिर इम्हारी से बात करेगी। तो यर मूँ का देव बनेगा। इल्लिह तुम्हारे सिधुय में भी ऐसी मया सेनी चाहिए, विरुमें सारे देव के लेग एक-दुकरे से थव कर सकें।"

"थिला देव तुम्हारा बने। इसे हम कनायेगे कि तुम बनओगे।" सके—"कय बनओगे?" दादा—"यह सर्वोदय का काम है। सर्वोदय का काम किसी एक का काम कर देना नहीं, सर्वोदय का काम कर देल को बनाना है। सवडा उदय। आज सक्ते सिद्धे हुए वे हैं, जो मेवलन करते हैं। म्हादी है, मन्वरी है, सिधाम हैं, उनही इजल नहीं है। उनकी इजल पवनी इम्हारा काम हो।"

एक सिधिवरणी का सिधिवर २५ सिधिवर थो प्रातः खुले आसमान ने हले धरतल में आते बहने का म्थोता दिया। २ मील तक रासल थने बजल के बीच से गुजरता था। "थरायों में चहाँ पर सेती से तुम्हारे के सक्थक पूर अथाम नहीं होय, चहाँ सवतजन थो उथेगा। और फिर बाबाय रहे सिधिये।" यह सवाल

मिने दादा ने पूछा। उनका उलर था कि "कभी तक मन्वी सख से इल्की लेख नहीं हुई है कि थरा पर क्या उलय सथो सखी हो सकती है। चहाँ तक बाबाय का प्रभ है, आचरकता भी थिने हो कि मिने, इले लिप्ये हीग सखरिगि के आभार पर कोई स्वस्था करे। परन्तु उमेरी मुनाके का सवाल नहीं रहेगा। यह उली म्हाग होय। जैसे धीने के पानी का इल्लियान थिया जाता है।"

हम आगे बढ़ रहे थे कि गेले से बाडी हुई एक पहाडी नदी का पुल आ गया। नदी से गुले निबात कर उनपुनियों पलने के लिप्ये कलदाका का उपयोग किया गया था। दुले का बने के लिप्ये भी सक्ता उपयोग थिया का सख था। परन्तु दादा ने बताया कि उही हर ल किया जाना चाहिए चहाँ तक म्हादी की केकर न बनाये।

पामरु एक गौरी मील का रासला हले म्हादानी से तव कर लिया। इलमें तीर चले लये। हर गौरी में कुछ दिन सके भी केदार सिंह सधायिक साहित्यिक बन गये। हम उनके पास ही डिक्ने बासे थे। उनकी हृत्ताप पर बाबाय बैठ गये। दादा बैठसुल सगल गौरी और बाथिया पदिने हुए दादा के सामने हाथ जोडकर खर गये। दादा ने पूछा, "क्या वेदाधिकारी से सके हो?" "नहीं, मैं ही केदारसिंह हूँ।" उलर मिला।

दादा ने उलर कर उनको पीठ बाधे पाई बाहर की दुनिया में दूर रहने सके इल सगल को तो मानी लजाना ही किच गया। दादा से पूछने ल्या, "आप बाई रहते हैं?" दादा—"साथना केड, बायाी है।" वेदारसिंह—"सर्वोदय में कय से है।" दादा—"इल सगल मेरी उलर १५ वर्ष की है। २० वर्ष से सर्वोदय का काम करता हूँ।" दादा ने केदारसिंह से पूछा, "तुम सर्वोदय के बारे में क्या जानते हो?" वेदारसिंह—"थोदा-बहुल जानता हूँ। आप कुछ बताए।"

दादा—"तो बागनी कापी सेकर आओ। तुम्हें लिखा देव है।" मैं दादा के कई सिधिवरी में रहा हूँ। इनमें माय पूर पदोसिने लेग मोता रहे हैं। कुछ दूर दूर से भी उनके प्रबंधन सुनने के लिप्ये आते रहे हैं, परन्तु वेदाभ्यास के निम्न्ये हर छोटे से मनुवी पड़े-लिने केवल एक बायकता का सापर यह उनका पहल्य सिधिवर होय। उनने बाते दो गीने थोरी और भी आ गये। दादा ने छेले-छेले केदार सिंह को धरल सगल में संचयन से सर्वोदय का अर्थ लिखा दिया।

दादा का नाम भी सधायक का सिधायक पर मन्दाकिनी के किनारे-किनारे आगे बढ़े। यहाँ से वेदालाय तक बाते भीतर बायत

विनोबा यात्री-दल से

कुसुम वेदापट्टे

सूल राम की बात है कि त्रिधाधिकारी को धरत पर एक छास सन्देहवाटक आया था। उनमें हाथ में तार का मजबूत धातु। ब्रिजग ने असम-सरकार ने तार भिजवाया था—“विनोबाजी को इतना दौड़ानेवा कि आज असम की अवेन्नी में रामदान का दिल सर्वानुमति से पान कर दिया है।” उस वकन रामदान की गाँव के भाई विनोबाजी की सहायता से ईर्ष्यादि वेदे ही थे। उनको वह खुशामतरी सुनाते हुए विनोबाजी ने कहा:

“यह एक महान् की घटना है। भारत में रामदान का दिल पाल करने का नाम प्रथम असम प्रदेश में ही रहा है। इसमें मदरच की बात यह है कि यह दिल सर्वसम्मति से पाला हुआ है। अब चुनाव के दिन नजदीक आ रहे हैं, भाई हो रहे हैं। ऐसे वकन पर विरोधो पाठियों अकार चाहतीं को इस किल का विरोध कर ही सनवीं थीं, लेकिन किमों ने भी विरोध नहीं किया, दूसरा कार्य ही यह है कि सत्र पर्वतियों इस काम को चादती हैं। उनकी सहायभूमि है। लेकिन सरकार को दिल पाल करने से क्या होगा। तुम लोगों को अब रामदान करने चाहिए। असम में २५ हजार मीट हैं। सत्र के सब रामदान होने को असम की सरकार का रंग बदल जायेगा, समाज में जानि होगा।”

विनोबाजी जिसे भी तीन सप्ताह से रास्ता चल रहे हैं। इतने दिनों की यात्रा में थकावत हुए हैं। रोज की वा तीन घण्टा तक जाति रहते हैं। आज के सप्ताह में गाँव में कुछ भोजन का आना था। वह भोजन भी के एक भाई ने लाया है। वे भाई गाँववासी के साथ विनोबाजी से मिलने मुक़्त आये थे। उन्होंने अपने मन को बात प्रकट की। उन्होंने कहा कि वे उस दल को विनोबा की सेवा करना चाहते हैं। वे चाहते हैं कि उनके सर्वोपकार आरंभ करें।

जब उन्होंने “सर्वोपकार आरंभ” की कल्पना की होगी, उस वकन न रामदान करने का सोचा होगा। लेकिन इतना प्यार है कि वेही कल्पना तो उन्होंने नहीं की होगी कि विनोबाजी सुनिश्चि से ल्याया है। ललायन दिखते हैं। विनोबाजी ने पहले कुछ भी मानकी पूछा भी। उसमें क्या था कि कहलें में २०० विद्यार्थी हैं और ५०० से एक हज़ार तक लड़के हैं। हजार से है। सत्र तो कुछ लानगी है, सरकार की हज़ार हज़ार तो कुछ मिश्रित ही है। विनोबाजी ने सत्र ही दिखाय करने कहा, “चार हजार लड़के आया है, लड़के मानी यह है कि हम मानी हैं। लड़के एक एक के लिए आता है। अमर छात्र तो पण लक्ष्मण खुल को ही और बाव पण लड़के तो अमर होता। मान लीजिये, दो लड़के में से एक कामते हैं तो हज़ार की मदद होगी। कुछ कम पता तो बालक हैं। मालव, सरकार की सहायता से विना, को-ऑपेराइवा के आरंभ हल करायेंगे।”

“क्या भी सोचा है—और सामर्थ्य है।”
“निय, मुझे अविद विचारते हैं। विद्यार्थी का कुछ पता नहीं, हल को अविद कहे कि अविद की भावना उठान होगी। मागवान ही भी कुछ के पर पैदा ही काम करते हैं। एक-दो काम का नाम भी के करने के और साथ साथ विद्यार्जन का भी। पैसा ही मुक़्तवर्ष नचकी की करने कीजिये, से से केवही नचो।”

शिवाङ्क: “गामीन नहीं है तो लड़के काम करो कहे।”

विनोबाजी:—“वर्षा का लड़के है। दो पण काम करे। गति कम होगी के कुछ कम निरक्षरता। २०० विद्यार्थी आरंभ करवा चलते और साथ ही करने चलते हैं। अमर का लाना और दूसरे चलना का काम। इतने आद-अद पके बरपाय चलने का काम किया है। कलु हुगी मानी की। मैं अनुभव है कि चररो के मानी में कुछ

आनन्द आता है। हर तरह का करने के लिए अमर आग तयार है और सरकार मानी ही तो हल हल पर हीन करने हैं।”

हैन अमरद्वार को दो बने राग की उठने की सीदी बनी, मिश्रत लड़के की टीपटी छुल हुआ। इतने में लुगा, विनोबा को उठती ही सीदी—अद-अद। तीन बार—बहुत जोर की आवाज। दोसु सुक हाथ हीं बीकर बाबा “नामगीरणी” पढ़ते हैं बा को अभ्य कोई मय को ठेकर बैठते हैं। पर आज देखा, विनोबा प्राति से केते थे। महादेवी तो हीं विराजक हीकर पठिया के पास बैठती थीं। उन्होंने कहा: “यस में मया को तुलार था, बहुत सखरी लगी और के हुई हैं।”

तो क्या होगा? बाबा नहीं चले। पर बाबा तयार हुए। तारी में बहुत बहा, “आज आरंभ का चलिये।” लुगा चलने चलने लगे। मैं लान के ही—मिथिल का पोडा, कल कर हीका नाम चला मीगन—

दो-तीन दिन से चर्चा है, कीचड का रास्ता है। कसम कसम पर पौं निरक्षरते हैं। हर कदम पर साधनापनी से चलना पड़ता था। कटी कटी तो, पानी भी था। मैं बने लक्ष्मण के प्रथम में दोनों हाथ बकर कर बाबा पीर-पीर सह सह रहे थे।

तो दाईं मीठ सह सह चलना हुआ। फिर जाय के चले, “अस में कच मया है।” बालमयों ने कचे के छोले से कचन निरक्षर, मनी नामन पर निरक्षर। सडक में भी बह। कच केते तो मचरों ने हमलक बरता मुक़्त किया। लक्ष्मण को रसा। अरि-पाव देना, पने पौं के हीन लमल ही था। बड़ी सत हो गये। अमर के पने इहाँ के पर निरक्षरों हुई हीन चंदनी उस सल्ल पर चले रहती थी।

दय लोगों के जिे वह हल अमर था। अमरद्वार पदन, बगमार्ड, अण्डुल मार्ड, बालमय, गुलाब बदन-अमर सलार की और पौच मिमट के अर अर एक और अण्डुल मार्ड पण पर वार्ड की तरार देने को मोटर जाने दौड़े, दुपही और गुलाब बदन और गोबर मोटर को राते पर रोचने के लिने लीने नहीं भावून अमरे में वे दोनों वीसे चले हीं। मोटर का दलबान जिसे विना चल नहीं था। अण्डुल मार्ड तीर के समान वजन पर चले। हम लोग जिस स्थान पर चले थे, उहाँ के डेड बमों पर सक्की उठक थी। पर चूँके वह जोरदार सक्की जीवनीन में थी और बाबा विरलार सक्की-वजन में ही रही थी, मोरें उली पक्की उठक से जाने बारी थी।

द्वार २० २५ मिमिट दबा को वाह दिख लगी। तिर ने उठ कर बैठे। पोड धनी, सोडाबाब कारं का पथान करके पीवा और चलने की टीपटी करने छो। सब मार्ड ने कहा, मनी-मनी पानी पीया है पौच हल मिमट और आरग कीजिये।

सचसच ही साथ सह चके हुए थे, नहीं तो वे फि की मारने। हल तरार कुल आपन पण परय बहो नील, तिर ने धीरे धीरे चलने लगे। लकके हिल में करार था—“साथ मोरड में चदने के रकार तो नहीं करिये।” उनको और चले ही इतनाम को हो गया था।

वह बल्लार डेड बल्लार का कच्चा रास्ता कानो एक मीठ का है, पैसा अम। मके हुए घरीर को बाबा सलीट रहे थे। लाने एक और सडक था। घुलने के उतरक लक पानी साथ लाना सल्ल रोके बढ़ता था। हे मागवान। कच बजा को कचे पर उठ कर चले चले। मोरड का लाने मुता। नाले के उस पर “रक्षर” (बाबा के सामन की गाडी का नाम) राखी थी और शरद ही। उस गाडी की सहायता उभार। उस वक तो उल्लेख नाम सल्लक हुआ, पैसा लय रहा था।

उस जाले में चली और कीचड, दोनों में। बाबा लतने, उनसे, मनी मय के नाया वाव किया। घुलने के उतर लक

पूरे भाग गये थे। नाला वाव करने के बार देखा, उनसे घरीर ने कुछ सलन करने के साग उभार किया था। बाबा के मुँह से कमी ऐसे उचक नहीं लगे थे—“अब सलन नहीं रह सकता है।” उनकी “अब आने लगे, वे एकदम बैठ गये। हाथ बन्दे हुए थे। और तिर “रक्षर” में बिग पर तार, बगमार्ड, बालमय उनको आगे ले गये। नचने पर वे केश था, वह हागा हो गया। काली लुगी देना कि गाडी में चदने के लिने इतने कदवी बाबा तयार हो रहे। उल्लेखला बाबा कि उनका घरीर सलन सकि की आसिरी हीन बड लुगी था।

पथान पर लुगने के चर ने लगे थे। कुलार १००००० मिमी था। नाडी १०० थी। एक डेड पते के बाट रथानीय कोनकर भाये। उन्होंने पहले ललाया कि दौरे के लकलीन है। शिवलार बरदे से १००००० मीटर है। बहो ही मल्लक बरमा पण ही की दारर लुगी। वे विनोबा-बाबा के सवार-सुनिश्चि के अमरद्वार की घरीर चले वे पण में अगे-जाते हैं और कमी साथ भी रहते हैं। उन्होंने आनी बहार पीवा लोमन दान में दी है। उन्होंने पीन अमरद्वार को गुलाब और उनके साथ ही वे पताच पर चले। जोरदार बरदे से २० मील लुगी है। शिव-लार सवविधानक वा किले का बल्ल जोरदार है। जोरदार के मिथिल लपन, शिवलार सवविधान के मेरीकल अमरद्वार और रथानीय बाकदर, तर चदुने।

भी मुल्ल कानू ने कहा, “बाबा बीमार हो गये, नीर के पथान पर चले”, चले एक बाकच मिथि में पड़ा। आये कुछ पड़ ही नहीं सका और हलर हीग। बाकदर के पण पर बात की। अब उन्होंने कुछ ही लेनिन बाबा को बुला कया है। तब मुझे तिर के चिट्ठी की दुखना पड़ा।

तीनों डॉक्टरों ने बाबा की और कहा “पण” में बोटी सखरी है। अमरद्वार १०००००, नाडी १०० और टैरेवर भी १००००० था।

बाबा ने विनोद में कहा, “अब सपान है, रुचने भी पीया है।” तीनों डॉक्टरों ने कच लुगे के अमर मागविर करके दवा का भी सुझार रसा।

बाबा ने कहा: “हमारे जिने लो एक ही दवा है—मागविर की। पर दवा तो, हम अदो ही बायें।”

दर पर सह हल पड़े। लेकिन सने क महलद किया कि काम के बारे में उल्लेखी चीनल निवनी के ही कर डॉक्टर

विना छेदे स्त्री, वो ज्ञान ने कहा—“दूध, मूल तक बच रहेगी, फिर दूध के बारे में सोचेंगे।”

डॉक्टरों ने कहा : “दुमारे स्थिति सामान्य की बात है कि आधुनी जेहा का; मौका हमें मिले है। हम प्रायः मानते हैं कि आधुनी स्त्री अत्यन्त निष्ठा।”

तिनोवा : “दुमारे स्थिति कन्ना की बात है। आप भगवान ने वह प्रार्थना कीजिये कि आधुनी दूध राज को जेनी न देते।”

रिज भर बाबा ने अत्यन्त किया। कुलारविन भर बा। आचार में शिर्षकम धनी और गृहदर विन। धाम को धार बने प्रायः-समा में विन। १५ मित्र-साथक दुःख। उभरें उभरें बरा कि—“दुमारी धाम ने रूबर में हमें हुमेया बरा किया है। अमी बरिद में दिनों में सुबर, विन भी, नीर में, रात में भी बरिद होती रही। लेकिन धाम की सजा के बक हमें रा सामान्य लुण, हाक रहता था। अमी आर हमें ओ सफ़ीक हो रही है, रसमें रूबर का दोष नहीं है, हमारा ही दोष है। हमारी अमी कुछ अग्रवस्था ही जाती है। हमनी स्त्री माया में हम अग्रवस्था रहते हैं, फिर भी कुछ अग्रवस्थानी हो जाती है, उलका यह परिचय है।

आगे उभरें बरा कि “सत के अक्षय आगे, साधक के ‘नामयोग’ में हमारा स्थान लोचन है। उभरें उभरें स्थिति है कि भगवान ने मनुष्य की बारी की है, उसका उपयोग असत्य बोले, मित्रा करने में, हमारा करने में हम करें यह सोभादायक नहीं है। हमारी बारी का उपयोग भगवान के पुण्यम में होना चाहिये। भगवान द्वारा है। हम उनके उल पुण्य का धार-धार लालन करें। ‘भगवान हृदाय है, दयाय है, करुणामय है’ को नोले-नोले उल दूध का, बरवा का अर्थ हमने भी आयेगा। जाने हरि हमारे हृदय में प्रवेश करते हैं और हमारे अंतर के शेषों का हरा करते हैं।

प्रवचन के राह बाबा ने फिर भी आशय किया। दिन भर कुलार और धन की थी। हृदाय सरी में जेते चउर आते थे, वैशे दिन में नहीं आते। रिज मायम में बीया। दिन भर में जेल भर गरम धनी १५ सोने और १० सोल चउर किया था। रात में धीना दूध और चउर किया।

बाबा का कुलार नोले है। रही स्थान पर पौध विन बाबा रने में। हमें आराम भी होगा। १० बरिदों की मोनों में आर मोनों का बर नज ही निकते हैं। बाबा के स्थान के जिने ‘मामयम’ की दवा खरीने, वैसी उभरें के वे निरते हैं।

(पराय। रितायु, १-१०-६१)



पंजाब की चिट्ठी

मास्टर ताराचिंद, स्वामी रामेश्वरचन्द्र और योगीराज सुबेदेव के अनुराग के कारण पंजाब के बाजारों में जो तनाव आ गया था, वह अत्यन्त समाप्त हो जाने पर अब दौड़ हो गया है। मास्टर ताराचिंद की मांग की कि भाषा के आधार पर पंजाबी सुबे के सिद्धान्त को स्वीकार कर लिया जाय, परन्तु इस मोर्चे के पीछे जयता या समर्थन नहीं था। पंजाबी सुबा के क्षेत्र में हिन्दू ४५ प्रतिशत और सिख ५५ प्रतिशत, आज के पूरे पंजाब में हिन्दू ६२ प्रतिशत और सिख ३८ प्रतिशत हैं। पंजाबी क्षेत्र के हिन्दू पंजाबी तथा मिली-जुकी हिन्दी बोलते हैं। सिल्ले-पड़ने की भाषा उर्दू और हिन्दी रही है। हिन्दी क्षेत्र के हिन्दू हिन्दी बोलते हैं और उनमें लिप्यन्त पड़ने की भाषा हमेशा हिन्दी रही है। दोनों क्षेत्रों के सिख पंजाबी बोलते हैं और लिप्यन्त-पड़ने का नाम गुरुमुखी में होता है, कुछ लोग उर्दू में लिप्यन्त-पड़ते हैं। हिन्दू पंजाबी सुबे की भाषा को साम्प्रदायिक मान कर इनका विरोध करते हैं। कुछ काफ़ेरी और नेशनलिस्ट सिख भी अचानकियों की इस मांग का समर्थन नहीं करते।

सच तो यह है कि पंजाबी छोटे की मांग को पंजाब में लोकप्रिय बनाने की कोई कोशिश नहीं की गयी। अत्यन्त मेधा समन-समय पर सिल उभरें के १५ दिन हाक की ओरते रहे। पंजाबी भाषा (गुरुमुखी) की लिपियों की भाषा बनावे रहे। पंजाबी एक आधुनिक को शार्वनिक रूप न देकर सिल सुबेदार में केन्द्रित आधुनिक बना दिया गया। लिपियों के साथ लक्षार अनेक व्यवहार में भेद-भाव बरती है। इस बात को भी आधुनिक का एक अर्थ बना दिया गया। इस प्रकार के उपाय कुछ अन्य भाषाओं में पंजाबी एक आधुनिक को देकर भाषा का आधार न सिक लक्ष और एक आधुनिक को शार्वनिक रूप न दिया जा सका।

नेत्री तथा उभर-उरवार ने इस कारण के पंजाबी एक की मांग को स्वीकार करने के इन्कार कर दिया। इस मत पर हिन्दू सिल उभरते के अभाव में आधुनिक की गति मन्द-प गयी। इनमें कोई सन्देह नहीं कि अन्तरी अन्तरी भाषा पर हायम है, परन्तु उभरें बच कर उभरें यह मज दूरी हो, इच्छा की ओर अग्रगण्य।

शास्त्रि-धारा श्रीमती आचार्यनी आचार्यकमल, सचिका, अखिल भारत छात्रेन्द्रिया मण्डल तथा पंजाब के प्रमुख सर्वोद-कार्यकर्ताओं की एक छोटी-सी हुकूमती में मास्टर ताराचिंद, स्वामी जेहेश्वरचन्द्र तथा योगीराज सुबेदेव के अनुराग के पंजाब में पैदा होने वाले बाजार-वर्ष की हासत बने रहने के विचार के अनुसरण, बाळय, बरिदाय, डिवात तथा जनाल रिनें का दौरा किया। श्रीमती आचार्यनी ने उन स्थानों पर राज-नैतिक, सामाजिक तथा धार्मिक स्थानों के क्षेत्रों में सिक कर उभरें सिख भाषा के संघर्ष में स्थान-समान पर शास्त्रि बनावे रहने का विचार किया, शास्त्रि-केन का अर्थन किया।

परिणामस्वरूप हर जगह क्षेत्रों में शास्त्रि बनावे रहने का धनी समर्थन को भी अक्षयक उपयोग के इन करने का विश्वास दिखता। एगोदय धार्वनिकों की यह हुकूमती मास्टर ताराचिंद तथा अन्य प्रमुख नेताओं के भी मिली। सच बनावे पर सिल, लिप्यन्तों और लिप्यन्तों की छोटी-सी सजाओं में भी शास्त्रि-केन तथा लोचन-का कसुद मुचुया गया। पंजाब की शास्त्रि-धारा अने उभरें में लक्ष हो। स्थान १०० शास्त्रि-केन तथा धार्वनिक-धारा बने रहे।

असौभनीय पोस्टर आधुनिक पंजाब के आरुध, रोहताक, पानीत, विरोधक, विचार, विधानी, शैली, सिखा आदि विचारों में यह आधुनिक उभर-वन्द्यें द्वारा चलाया गया। अर्थ सचर्चा की गयी। कुलार निकाले गये। बनाव की बनाव तथा सवी रावनीतिक, सामाजिक और धार्मिक स्थानों में हमारे विचार का समर्थन किया। वरदादी बरिदायों तथा लिप्यन्त-वर्षाओं का सन्दर्भ भी किया। उभर-वचन पर विरोध भी हुआ, परन्तु कुछ सिख कर आधुनिक उभर रहा। सर्व-सी दास सर्वोत्थक, हर-उपलक्ष पर, निरन्तर सिध, उभर-वचन, बरानन्द, भवनेय धर्म, अन्तर सिध, बरार-शेखर गोयल, बरानन्द-गुप्त, गुमेर-गुप्त आधुनिक के मायक रहे। लक्षी-विधान, उभर-वचन, गांधी-व्यार-विधि, वरी बर-वचन तथा सारी अर्थन, पानीत पर बर-वचनों में आधुनिक को शरत बनावे में हमारी वरी बर की।

संघात-सम्बन्धन वरी उभर-वचन में शैली-व्यार-विधि के अन्तर्गत, बर-वचन, उभर-वचन, हाय-वचन प्रविधिधियों तथा अन्य बर-वचनों का १०, १५, २०, १० विचार-वरी अर्थन आरत अर्थन-वचन। अर्थन में बर-वचन के विधि के साथ का देखा-जोया, उभर के सिद्धे-नीकल, शिखे-वचन आदि विचार लिने गये। भी सिध-वचनो समीपन के अर्थन रहे। पंजाब-व्यार-वचन के अर्थन-वचन के लिने १०००० का अनुदान तथा सचर्चा वरं पर स्थान एक की सच-वचन को नाल-व्यार-वचन वरि लिप्यन्त की अर्थन का। धार्वनी-व्यार-वचन प्रारंभों

श्री अमीरु में एक विचार पानीत-वचन प्रारंभों का आयोजन किया गया। पंजाब-वचन १० अर्थन-वचन में प्रारंभों की देखा और पंजाब के क्षेत्रों में अर्थन की कि धार्वनी-व्यार-वचन के पीछे से धार्वनी की बरानन्द, उभे अर्थन-वचन कर अर्थन की बने के आरत है।

पानीत में सर्वोद-वचन धार्वनी व्यापन, अर्थन-वचन के वर-वचन का बने के कारण पानीत में सर्वोद-विचार की मिल रही है। मासिक वर-वचन-वचन कायम हो गया है। वरी अर्थन-वचन के लक्ष-वचन में अर्थन-वचन वर-वचन कायम कर दिया गया है। वर-वचन-वचन के लक्ष-वचन कायम कर दिया गया है। भी सर्वोद-वचन-वचन कायम कर दिया गया है। अर्थन-वचन-वचन कायम कर दिया गया है।

धाम-वचन-वचन धार्वनी वर-वचन-वचन के लक्ष-वचन-वचन कायम कर दिया गया है। अर्थन-वचन-वचन कायम कर दिया गया है। अर्थन-वचन-वचन कायम कर दिया गया है। अर्थन-वचन-वचन कायम कर दिया गया है।

पंजाब में धार्वनी-वचन-वचन वर-वचन-वचन कायम कर दिया गया है। अर्थन-वचन-वचन कायम कर दिया गया है। अर्थन-वचन-वचन कायम कर दिया गया है। अर्थन-वचन-वचन कायम कर दिया गया है।

काशी में संचालक-शिबिर

साधना-केन्द्र, काशी में शरं केवा संघ ने नारायणजी मुखर्जी-कार्यक्रम के अन्तर्गत २५ अक्टूबर से ३१ अक्टूबर तक संचालक-शिबिर चला। इतनी विभिन्न प्रश्नों के प्रमुख धारकोंओं ने भाग लिया।

जमलपुर में सर्वोदय-सम्मेलन और २० प्र० शांति-सैनिकों की रेखी

२६-२७ नवम्बर के अक्टूबर में संभारानि सर्वोदय-कार्यक्रमों समीपस्थ तथा म. प्र. शांति-सैनिकों की रेखी का आयोजन किया जावेगा। अ. भा. राष्ट्रीय एकता सम्मेलन में अ. भा. सर्व केवा संघ का प्रस्ताव, 'प्रतिश्रम-पत्र' पर प्राथमिकी 'शांति-विषय' आयोजन किया जाने का भी घोषणा है।

सत्याग्रह पदयात्रा

मध्यप्रदेश में

प्र० गोरा की सत्याग्रह-पदयात्रा अन्त मध्यप्रदेश के सिवनी जिले में चल रही है। ८ अक्टूबर से २३ अक्टूबर तक पदयात्रा सहायक के चर्चों और नागपुर जिले में चली। पदयात्रा से प्राप्त एक विद्युत् के अन्तुहार भी गौराजी के निर्देशीय विचारों का स्वागत राबन्धनिक दृष्टि से भी किया और उनके कार्बन्धन में हर जगह एक राबन्धनिक दृष्टि से भी पचा-संगर बढ़ चुके हैं। जनता में गौराजी के विचारों को सुनने से एक नवजन्म उड़की आती दिखती है। अग्र-अग्र जनकों पदयात्रा का स्वागत किया जा रहा है। लोग पचासकित उनके पाणी-दक की सहायता देते और अपना धन्यता देते हैं।

सोचाना-बजावतों में शिक्षण

गांधी स्मारक निधि द्वारा संचालित केंद्रस्थ बजावतों, वेनामाम में २ बंदों को आकर्षित करी और निवृत्तों के विद्युत् डैट प्रेषित किया जावेगा। प्रेषित के बाद प्रथम ब्राह्मण-भारतीयों के पर कार्य करना होगा। उनके पंचवत्, सहायी की कार्यनीति। अरणाजी अन्धनि में अपने स्वर्ण से छात्रावास में रहना होगा। श्रमगी होने पर अन्धनी कार्य की अन्धनी की वीरों में मान कर भावपूर्ण शीघ्र करने की छात्रावधि दी अन्धनी। दयालामें में गांधी स्मारक निधि के सामान्य नियम लागू होंगे। योग्यता कम-कम आठवीं कक्षा उन्धनी तथा ३८ और ३५ साल में शीघ्र की होनी चाहिये। इन्होंने पर पर भी अन्धान्य विभेद-निवृत्ति नहीं दी तथा सहायक उन्धन हो। अन्धुत् करने १५ नवम्बर तक पंच-स्यवहार करें। पचा। कस्तूरान् दगावत्, वेनामाम [विना कर्ण, सहायक]

विहार में सर्वोदय-कार्यकर्ताओं द्वारा

वाढपीड़ितों की सहायता और राहत-कार्य

बिहार-सर्वोदय मंडल के कार्यकर्ताओं द्वारा नाइससूचक दिने में समिपस्थ रूप से किये जाने वाले अनेक सेवा-कार्यों के अधिकाधिक सहायक दिनों में बाद के दुर्द किये का शीक-शीक अनुमान लगाने की इच्छा से सर्वोदय-कार्य भी किया जा रहा है। उन दिनों में धरोबधार व्यक्तियों को धन देने के विचार से चलेते का भी विचार किया जा रहा है।

बिहार सर्वोदय-मंडल के कार्यकर्ताओं में प्राप्त सूचनाओं के अनुसार सिद्धे लकी-सहायक क्षेत्र के सर्वोदय-कार्यकर्ताओं द्वारा 'सुपुत्र' एवं 'सर्वोदय' के १००-धनों का अथ एक अन्धान संस्कार किया जा चुका है। १४ धरमें में उत्तर प्रदेश से आये सर्वोदय-कार्यकर्ताओं में प्रचलनीय कार्य किया है। लकी-सहायक क्षेत्र के सर्वोदय-कार्यकर्ताओं में १०० से अधिक व्यक्तियों की चिन्तिका भी की है। बाद से विद्युत् रूप से पचास कमीठा तथा निर्यायाया दिनों में कृषिप्रसन्न प्रदानों के अन्तर्गत एक करने का कार्य भी सर्वोदय-कार्यकर्ताओं में किया है। अन्धान सहायक दिनों में अन्धान के बीच भी उन्होंने अधिक सहायक प्रदान करने का कार्य किया है।

सहायक क्षेत्र में शिरे हुए मरानों के मरने का कार्य भी विद्युत्प्रसन्न कार्यकों के पुनर्वास के लिए सोचियों के निर्माण में सर्वोदय-कार्यकर्ताओं हुए गये हैं। उन्होंने अथ तक ५६ गाँवों में सर्वोदय-कार्यकर्ताओं द्वारा किया है तथा सचिव कार्यालयों और संस्थान किये हैं। साहायक क्षेत्र के लगभग ५१ गाँवों का सर्वोदय हो चुका है। गांधी-दीर्घों के बीच प्रेषित व्यक्ति ०० कर रहा और एक पाक हई कीटी जा रही है। एक प्रकार अथ तक १०० धरों कीट जा चुके हैं। ये चलेके बिहार प्राची-आलोच्य संघ द्वारा प्रदान किये गये हैं।

गुरुदत्त की एक महिला सर्वोदय कार्यकर्ता भीमती कर्मकर देन, जो बिहार में भीम बट्टा आयोजनों में काम करने के लिए आयी थीं, इन दिनों बाइससूचक हलकों

आवश्यक पकटा और भाग का सवाल बिहार के नाइससूचक दिनों का अन्धान्य न्याय एक, सहायक अनेक सहायक की उ० प्र० के सहायक दिनों पर विद्वन्मय दृष्टि अन्धान में विद्युत् के साथ सुन्दर उन्धान-सहायक में द्वारा परमविचारों स्वयं और सहायकी का अन्धान-सहायक भी निराला का प्रथम विधियों परधानी दल से प्रदान की विद्युत् सहायक सार अन्धि

में प्राथमिक सहायकों के बीच सेवा-कार्यों में संलग्न है। अन्य सेवाओं के साथ साथ वे विद्युत् रूप से प्रेषित सेवा भी कर रही हैं। वे नवम्बर दिनों में एक नवम्बरी महिलाओं की सेवा कर रही हैं।

सुंदर जिले में केटीय केवा समिति द्वारा प्रिन्स-सहायक पर चलेने का रहे सेवा-कार्यों के अधिकाधिक सहायक, लकी-सहायक, जमलपुर तथा बरधिया क्षेत्रों के विद्युत् विद्युत् संस्थाओं के सहायकों से स्थानीय

में प्राथमिक सहायकों के बीच सेवा-कार्यों में संलग्न है। अन्य सेवाओं के साथ साथ वे विद्युत् रूप से प्रेषित सेवा भी कर रही हैं। वे नवम्बर दिनों में एक नवम्बरी महिलाओं की सेवा कर रही हैं।

सुंदर जिले में केटीय केवा समिति द्वारा प्रिन्स-सहायक पर चलेने का रहे सेवा-कार्यों के अधिकाधिक सहायक, लकी-सहायक, जमलपुर तथा बरधिया क्षेत्रों के विद्युत् विद्युत् संस्थाओं के सहायकों से स्थानीय

आगरा में शांति-स्थापना में सफलता

अंगरेजों में साम्यवादी दंग होने के फलस्वरूप आगरा के सभी शांति-सैनिकों और लोकसेवकों ने सब तय किया कि अन्धान का सुप्रभास आगरा पर न ले, इन्होंने भी शीघ्र और विभेदहीन हमारी होनी चाहिये। सहायक आगरा के शांति सैनिक अन्धान में न आकर आगरा में ही शांति बनाने रहने के लिए योजनाबद्ध काम करने लगे।

४ अक्टूबर से १० अक्टूबर तक आगरा के शीघ्रसेवक, शांति-सैनिक एवं अन्य सभी वर्गों के लोगों की सहायता से भी बाह्यलक विद्युत् के नेतृत्व में मगर में गस्त लगाते रहे। इन्होंने एक सर्वोदय-कार्यकर्ता में प्रेषित किया, विद्युत् सहायक-सहायक के अलावा पुनः-पदवृत्ति की विद्युत् भी, विद्युत् के कारण अन्धान में दंग हुआ। जनता को सहायक रखने और शांति बनाये रहने के लिए प्रथम विचार गये।

५ अक्टूबर को सयलीन, ६ को विद्युत्प्रसन्न का सुन्दर, ९ को 'धर्मबन्धन' आदि कार्यकर्ताओं और प्रदर्शनों में पूरी पूरी शांति बनाये रहने की सहायक दिनों में

इस संक में

- १ विद्युत्
- २ विद्युत्प्रसन्न नाइससूचक
- ३ विद्युत्
- ४ अन्धान
- ५ अन्धान-सहायक
- ६ सुन्दर जिले सुपुत्र
- ७ अन्धान
- ८ सहायक
- ९ सुपुत्र, सहायक
- १० भीम-सहायक विद्युत्
- ११

सेवा-समिपियों भी स्थानिक की गयी है। इन सहायकों द्वारा अथ तक सहायकों के लिए ५०० रुपये तथा ५० नू अन्धान और कुछ अन्य काम किये गये।

भागलपुर जिले में सुव्रतान्धन सहायक नागपुर में सर्वोदय कार्यकर्ताओं के दो सेवा-केन्द्र चलाये जा रहे हैं। इन दिनों की देवमात्र एवं सहायक की विभेदों भी विद्युत्प्रसन्न तथा भी सहायक, सिद्धे की सुपुत्र की गयी है। बाइससूचक सहायकों का सर्वोदय काम आगरा एवं का निर्माण करण इनके प्रमुख कार्य हैं। एक प्रकार सहायक, पचना तथा सुपुत्रों के बाइससूचक दिनों में सर्वोदय-कार्यकर्ताओं द्वारा सेवा-कार्य किये जा रहे हैं।

राजस्थान गोतेवा संघ की निर्णय

राजस्थान गोतेवा संघ की एक निर्णय बैठक २० अक्टूबर को जयपुर में हुई। निर्णय सत्रों के अन्धान शीघ्र गौर-संग परिषद के सहायक, भी देवर गाँव, सहायक के अन्धान की मोहनलक सुहायक, सहायक की नाइससूचक विद्युत्, विद्युत् की हीमामें उन्धान्य तथा मोहन-आयोज के सहायक की भीम-सहायक उपरिस्थान है।

राजस्थान-सहायक को गोतेवा संघ की कार्यनीति के लिए सुहायक का निर्णय बनाम विचार और सहायक आगरा पर उन्धान्य पर के लिए भी सहायक सहायक और नाम-सहायक के देवरी के लिए भी केन्द्रपीठ गोतेवा का नाम प्रस्तावित किया। इस बैठक में विद्युत् क्षेत्र में 'गोतेवा-सहायक, सुपुत्र गोतेवा के कल्पने की शीघ्रान और भीमकरन बनाने की धोरना को पार्य करने का निर्णय लिया है।

राजस्थान में नशाबंदी-कार्यक्रम

गांधी स्मारक निधि, राजस्थान प्रशासक के चेतने से राजस्थान में नशाबंदी कार्यक्रम को चोर से कामे चलाने का भीमामें शीघ्र भीमामें सहायक की सहायक के साथ के प्रतिनिधियों की एक सहायक में एक सहायक में विद्युत्प्रसन्न विद्युत् प्रदान करने के दिने ५ नवम्बर को अन्धान में

मूदान यज्ञ

साप्ताहिक

मिदानयन मूलकाग्रामोद्योगप्रधानअधिकांशकान्तिप्रकाशप्रदेशकावाहक

संपादक : सिद्धरत्न बहदा

१० नवम्बर '६१

शाराणी : शुक्रवार

पृथ ८। अंक ६

विश्व-शांति का असली उपाय : ग्रामदान

विनोबा

एक प्रश्न यह है कि विश्व-शांति का क्या उपाय है ? यह प्रश्न सभी कुछ विश्व के सामने है। इसके पहले सारे विश्व को कोई नहीं जानता था। पता ही नहीं था लोगों को कि विश्वने देश हैं, जितने समाज हैं, जितनी भाषाएँ हैं ? आज इन सबके बारे में जल्दा-जल्दा भी जानता है। विश्व-समस्या के बारे में दुनिया के अन्तर्-अन्त लोग सोचते हैं। बहुतों को लगता है कि जब विश्व में बहुत अशांति है। पर ऐसा नहीं है। अशांति तो पहले भी थी, लेकिन कहाँ अशांति हो गयी है, कहाँ कलह हुआ है, यह मातृम ही नहीं होता था। इसलिए विश्व में शांति है, ऐसा लोग समझते थे। आज दुनिया के किसी भी कोने 'घट' आवाज होयी है तो सबको मातृम हो जाता है। लेकिन करने की जरूरत नहीं है।

एक बच्चा रोना इसलिए करता है कि लोगों के हाथों में मातृम कलह है। परेशान के हाथ में सहाय पाक है। ऐसी सहाय पाक मानव के हाथ में पैदा होती है। एक बच्चा जले तो हमारे लिये कसमी हो उठते हैं, गालों पर उठते हैं, बानर और रोती का भी दुःखान होता है, इस तरहका अन्तर्-अन्त एक बार दुनिया भी भास्य है। यह सहाय पाक मानव के हाथ में आती है, इसलिए अब आधुनिकों के कलहा चाहिए। पहले के कलहे में रहना लगता नहीं था।

मान लीजिये कि जगत्पंच का दिमाग सिद्धरत्न को भीम के अन्तर्-अन्त ही जाती है और बाकी लोग उसे देखते थे। भीम भीम ही जलके हाथ की शीश दुर्ग और पलक के हाथ की परामय दुर्ग। लोगों को बाहक होने को मिला था, और कुछ नहीं। एक ने हाथ काय किया तो अपने हाथ की कसमीत नहीं होती थी। आज दुर्ग के नेता हैं। कल, अमीर, लीज, जगत्, भीम, भारत, पाकिस्तान, इतने के किये एक हाथ के नेता का तिर गिरा और वहीं आन्तर्-अन्त हाथों का हाथ आरंभ की बात थी की दुनिया को लहर है। इसलिए आरंभिकों के चमत्ता चाहिए।

हमने के हाथ में विश्व आने को कोई बिना नहीं, लेकिन दुनिया पर विरोध अपने तो लहर है। उनमें बिना तो भीम को कसती चाहिये। केनरी और सुन्दर के छोड़े कसने हैं और हम हैं उनके

मिदानयन जितने भी मातृम का ग्रामदान हुआ है। ११ नवम्बर '६१ को वहीं विनोबाजी का बहाय था। जल्दा-जल्दा के लहर दूरे गये 'विनोबा' का बहायवाणी है '१-११ प्रश्न के सार में विनोबाजी में जो प्रश्नक दिया, यह हम नहीं के रहे है।

निर होकर क्या है कि एक देश दुर्ग के घर में एक दुर्गा है। भारत की कसमी नहीं केना है। यह कसता है कि देवी, पाकिस्तान अपनी केना रहा है तो हमें भी केना कसनी चाहिये। पाकिस्तान भी देवा ही को क्या है। चीन, कल, सुन्दर अन्तर्-अन्त, ये सब अपना अपना आरंभक नहीं करते। सिद्धरत्न की केना पर कितना लम्बे कलहा चाहिए, यह नेहक के हाथ की बात नहीं है। पाकिस्तान की केना पर पाकिस्तान विनोबा लम्बे करे, यह पाकिस्तान के हाथ में नहीं है। देवे ही न्यूवाँ और मातृम की बात है। क्या एक-दुर्ग का देव कर वे रोचना बताते हैं। याने अन्तर्-अन्त दुर्ग के हाथ में है। यह आरंभ की सिद्धरत्न है। यह सब कसने ही रहेगी, यह कस कसनी लहराए हम सुद नहीं करिये। इसलिए हमारे दुर्ग में जरा भी सँके नहीं है कि ग्रामदान ही विश्व-शांति का साधन है।

अभी केना में विश्व शांति के लिए कलहने हो रही है। उनमें हमें वे ज्ञेय लुब्धते हैं। उस कलह-युद्ध भी हमने समझि दी है। लेकिन हमने कहा कि मातृम, अन्तर्-अन्त में हम विश्व शांति का कार्य कर रहे हैं। इसलिए हम नहीं नहीं आये। वे भी लम्बे कर रहे हैं कि याव अन्तर्-अन्त में जो कलह कर रहा है, यह विश्व शांति का नाम है। यह उन्होंने बताया है।

उत्तम में ग्रामदान प्राप्त करते हुए हम एक रहे थे। वहीं कुछ कसुमिन्त नई कसने लिये आये और उन्होंने इनके एक नाम की। यह वह कि विश्व-शांति के किये लुब्धते जो पलक मिश्रण था उस

पर हम हस्ताकर करे। किने नदर, में कसो हस्ताकर कसने। में तो विश्व शांति का काम ही कर रहा है। ही यह बात उन्होंने कसुम की।

ग्रामदान का काम विश्व शांति का ही काम है। यह भीलता है उँदा, इसलिए उनमें कसनी पाक नहीं रही है, दुर्गा भाव नहीं होता है। कसने-कसने अन्त कसने हैं, तो वे प्रयोगशाळा में बनते हैं। पहले उलका पता नहीं चलता है।

हम कहना यह चाहते हैं कि मानवान एक छोटा-सा प्रयोग है। लेकिन उसमें अनुभव को ज्वारा हाकित है। इसमें करना कसने है कि कसने की किन्हे-कसनी कस करके कसानी-कसानी विनोबाजी कर कसते हैं।

लोग समझते हैं कि सहरार ही हमारी गौनाप है। किने एक तुलाप रखा है। कसुम को सुनी ही रही है, कसनी और बहाकर भी कसनी सुनी किये हैं; देवे सारी सहरार को एक जाल के लिये सुनी बहाकर है, ही कस होना। क्या पाकिस्तान कस ही, अन्तर्-अन्त नहीं होगा, बहाकर नहीं चलिया। क्या हलक का मात उलक नहीं केना है। लोग भीमार हो गये, तो क्या उनकी केना नहीं की पाकिस्तान। क्या सब दूर सुद-कसनी होगी। क्या आरंभ और केने हाक कसने और सुद कसने के लिये निरुब्धते। आज कसुम का कर है इसलिए यह काम नहीं करते, ऐसा तो नहीं है। यह कसुम धर है। कसने में और सुद-कसने में हमें नीति सिद्धरत्न है। उस पर ज्ञेय कसनी है। ज्ञेय एक कसने के लिये दबाकने कर हो करते हैं, तो क्या न्यूवा लोच भीमार पड़ेगे। करते कसने, कसने वाले भीये। मारते बहा और किलने काय पलेकर है। यह लहर धर है कि सहरार है, इसलिए हमारा किल जल रहा है।

इसलिये पहले वे कसने लिये कि कसने को कसने पाँच पर लख कसने की कसने प्राप्त कसनी चाहिये। कसने कसने-कसने लहर को और नीचे न्यूवा वे-न्यूवा, कस तो विश्व-शांति होने के लिये देर नहीं कसनी।

समाज के निर्वल अंग मजबूत वने विना देश का विकास असम्भव

भारत सरकार ने नये दिग्दर्शन में श्री जयप्रकाशजी की अध्पयनता में आठ सदस्यीय अध्पयन-दल की नियुक्ति सामुदायिक विकास-कार्यक्रम और पंचायत-राज आदि संघटन किस प्रकार से समाज के निर्वल अंगों के विकास के लिये कार्य कर सकने हें, इससे लिये निश्चयित करने के लिये की थी। इस अध्पयन-दल का प्रतिवेदन अभी हाल में ही प्रकाशित किया गया है।

इस दल का अध्पयन-दल प्राणों को ही रखा गया था, इसका कारण यह था कि सामुदायिक विकास-कार्यक्रम पर यह आशय लगाया जाता रहा है कि इसका लाभ प्राप्त के उच्च और साधनवान लोगों को ही हुआ है और साधनहीन और निर्वल लोगों को सहानुभूत करने में यह कार्यक्रम असमर्थ-मा ही रहा है।

इस अध्पयन-दल ने योजना के निम्न पक्षों के अध्पयन के साथ ही ग्राम के निर्वल अंगों की दशा का सूक्ष्म और विस्तृत अध्पयन किया है तथा बहुत महत्वपूर्ण सिफारिशें प्रस्तुत की हैं। इसकी प्रमुख सिफारिशें हैं निर्वल अंग की परिभाषा, भूमि पर सामूहिक-सुधार का स्वामित्व तथा उसके लिये विद्यमान, सहायी निर्माण कार्य द्वारा देश-अंगारों तथा निर्वलों को प्रहासित और रोकथाम की शक्तों, लाभ का नवीन औद्योगिकीकरण, शिक्षा का समुचीनीकरण तथा कुशल शिक्षा, सहकारी इति व अन्य-सहकार सामुदायिक विकास में प्राथमिकताएँ तथा पंचायत-राज में रोकथाम का उच्चतराधिकार प्रदान करना है, आदि सिफारिशें प्रस्तुत हैं।

अध्पयन-दल ने इस बात पर जोर दिया कि समाज के कमजोर अंगों का जयान, कल्याण और निस्तार सभी सम्भव है, जब कि देश में एक सहयोगी-मूलक अहितक सामाजिक शक्ति द्वारा भारतीय समाज के जातिव्यवस्था को नष्ट करने के उपाय केंद्रित जाय। इस का यह ही निष्कर्ष है कि जाति-व्यवस्था के कारण उत्पन्न समाज-व्यवस्था, सामंजस्यहीन आर्थिक ढंका तथा आर्थिक अक्षमता एवं अन्वय-व्यवस्था में संशुद्धि के कारण ही हमारे सामोय अंग विद्यमान हैं।

अध्पयन-दल ने निर्वलता की कठौटी आर्थिक परिस्थिति को उदाहरण है। एक कठौटी के अनुसार गाँवों के ८०% समाज की निर्वल अंग मानना पड़ेगा। जिस परिवार की आय एक हेक्टर क्षेत्र पर आर्थिक से कम हो उसे समाज का निर्वल अंग मान पर विशेष उदाहरण दी जाय। इसमें ही अध्पयन-दल ने प्राथमिकता निहित करने की सिफारिश की है। एक भेगी उन परिवारों की मानी जाय, जिनकी आर्थिक आय ५००० से कम हो। ऐसे परिवारों की सहायता देने में सामूहिकता ही चाहिए, क्योंकि देश में ५०% ऐसे परिवार हैं। अल्पम आय की उन परिवारों की मानी जाय, जिनकी आर्थिक आय १५०० से कम है इन परिवारों को 'निर्धन' ही माना जाना चाहिए एवं उनके कल्याण और सुधार की ओर सबसे पहले ध्यान देना चाहिये। हरिजन एवं अल्पवृद्ध आदिजनों को तो निर्वल अंग सामाजिक दृष्टि से माना ही गया है तथा इन अपने कल्याण के लिये प्राथमिकता देने में पंचायत राज अभियान से तथा उच्चतराधिकार बनकर है।

लैंगिक के छोटे-छोटे दुर्घटनों में बड़े होने के कारण इति-उत्पन्न की स्थिति बहुत सदाय से समाज विघ्न की ही शक्ति बनने के अत्यन्त गहरा हाट में डाल रहा है। इस सामाजिक आर्थिक शक्ति से मुक्ति लानी

समय की बा सक्ती है, वर भूमि पर समस्त ग्राम समुदाय का स्वामित्व एवं व्यवस्था बनना है। इसके लिये अध्पयन-दल ने सिफारिश की है कि सामुदायिक विकास-कार्यक्रम तथा उचित रुचि-व्यवस्थाएँ भूमि पर सामुदायिक स्वामित्व की शोधा-इष्ट करने के लिये अपनी नीतियों पर परिष्कार करने तथा एक स्वच्छ विद्युत-पार्यन्तम संरक्षित करें। इसके साथ ही सामुदायिक विकास-मंत्रालय सामाजिक धर्म एवं आर्थिक औद्योगिक विकास की दृष्टि से वैज्ञानिक अध्पयन करने का प्रबंध करे और भूमि पर लाभ का स्वामित्व से ही एक सक्ता है तथा विधान आदि कति प्रकार के समाज का सक्ता है इसकी शोधा करे।

अध्पयन-दल ने निर्वल अंगों की सहायता के लिये सरकारी निर्माण कार्य को अक्षम महत्त्वपूर्ण माना है। निर्वल अंगों को शक्ति से तथा आर्थिक रूप से सहायता बनकर दुर्दी कार्यप्रथम द्वारा पूर्णकारी का सक्ती है। इन निर्माण कार्य-क्रमों की 'सहायता-कार्यक्रमों' शैला बचवा जाय तथा अन्य-सहकार संस्थाओं को ठेके दिये जायें।

हरिजन-संघर्ष के ऐसे सभी लोगों को भी शक्ति प्राप्त कर सकने हैं तथा शारीरिक शक्ति बनना चाहिये हैं, रोकथाम की शक्तों देनी चाहिये।

अध्पयन-दल ने अपने प्रतिवेदन में कहा है कि इति-विशेष से भी अधिक महत्त्व गाँवों में उद्योगों की स्थापना को देना चाहिये। इसके लिये गाँव के मजबूत उद्योगों को ही प्रोत्साहित न किया जाय वरन् नवीन-उद्योगों को कल्प दिया जाय। ये उद्योग सारे सामोय क्षेत्र में फैले जायें तथा उनका समान्य क्षेत्रों के साथ निरन्तर का संबंध बनायें चाहिये। इसके लिये शासक सरकार से एक विशेष संघटन (सह इन्टरिफ़ेसिडेशन

प्रोग्राम) की स्थापना करने और उसे व्यापक अधिकार और साधन देने का अनुरोध दल ने किया है। ग्रामोद्योगों के विकास के योग्यता के अन्वय बनें तथा अद्यतनता में लनी होगी। एक अमेरिकी १५ में प्रकाशित आँकड़ों ने भी यह स्पष्ट को सिद्ध किया है—'भारत में ऐसी ८००० फैक्ट्रियों हैं, जिनमें २०% अधिक क्षेत्र काज करते हैं तथा जिनमें अधिक का उपयोग होता है। ये २१ प्रकार की हैं, किन्तु कुल उद्योग-प्रकार जनसंख्या के १% दिखते को हैं। योग्यता देती हैं, जबकि दुर्भाग्य उद्योगों से २ करोड़ लोगों को रोकथाम प्राप्त है तथा ७००५ लाख क्षेत्र क्षेत्र हाय कल्याण उद्योग में ही शोये हैं।

निर्वल अंगों के शक्तों को उच्चतर सामाजिक स्तर तक मुक्त शिक्षण, सुख भोजन और विविध छात्रावृत्तों की व्यवस्था करना जरूरी है। योग्यता के अन्वय पर उच्च शिक्षा के लिये छात्रवृत्ति भी दी जाना चाहिये। आर्थिक शिक्षण में दलकों को दोषकार का भोजन सुख हो तथा सभी को खेल, गैरिख, तुल्लक आदि भी सुख ही मानी चाहिये।

अध्पयन-दल का अनुमान है कि सामोय का साहूकार एवं योग्य प्रशासक शक्ति से लिये साज-सज्जा-कारिता, उत्साह तथा विविध सहायता शक्तियों को संरक्षित किया जाय तथा इनका क्षेत्र विस्तृत किया जाय।

दल की सिफारिश है कि सहकारी इति के लिये कम-से-कम २५ करोड़ के लिये भूमि को खिलाना चाहिये। कुछ समूहों को सहकारी समिति के दिखले सत्तों के लिये प्रोत्साहित किया जाना चाहिये। सार्वजनिक विद्यालयों पर उत्साह का ५% उन क्षेत्रों में बाँटना चाहिये, जिनमें अपनी भूमि सहायी इति के लिये दी है, ५%

उत्साहन शक्तियों में विविध शिक्षण-कार्यक्रम तथा क्षेत्र २०% शिक्षण-कार्यक्रम बनना चाहिये।

अध्पयन-दल के अनुसार सामुदायिक विकास-कार्यक्रम न केवल साधन ही है, पर साधन भी है। एक दृष्टि से तृतीय क्षेत्र में सहायता तथा सुख का को प्रदान है, उनके द्वारा निर्वल अंगों को इन पूर्णकारी का एकीकरण अपनाया जाय। शक्ति की प्रतिष्ठा के हरकत में, प्रदान किया जाना चाहिये कि निर्वल अंगों की भूमि के छोटे-छोटे दुर्घटनों को निर्वल अंग एक एक में बदल दिया जाय, जिससे उन्हें आर्थिक शक्ति हो सके तथा भूमि का सु-उपयोग किया जा सके।

अध्पयन-दल ने सिफारिश की है कि पंचायत-राज संस्था का एक निर्वल अंग के बनना की ओर होना चाहिये। अल्प-वित्त साधन-विशेष सक्ती-द्वारा शोधा-मंत्रों में दोषकारों को रोकथाम देने तथा अंगों के समुचित उद्योग का उच्चतराधिकार प्रदान पंचायत का हीना चाहिये।

ऐसे सभी मंत्रालयों में, जो सामंजस्य-कार्यक्रम में संलग्न हैं, एकीकरण की पूर्ण आवश्यकता है। इसके लिए सामुदायिक शिक्षण एवं सहकार मंत्रालय, साज-सज्जा इति मंत्रालय, सामाजिक एवं उद्योग मंत्रालय, युवा और कार्यक्रम मंत्रालय संघटन एवं जनशक्ति एवं अनुसूचित जातियों के कर्मिन्तर के प्रतिनिधियों को एक समिति बनाने का सुझाव भी अध्पयन-दल ने दिया है।

आशा है कि इन सिफारिशों पर सारे कार्य-संरक्षणों गम्भीरतापूर्वक विचार करेंगी। सारे सत्त-निर्वल अंगों की सहायता और उद्योगी शोधा-मंत्रालय का प्रदान की भी हो सके नहीं हो सके। सारे साधन और शक्ति की अक्षम कर्मिन्तर है, जिसे व्यापक शारीरिक यतना द्वारा ही दल किया जा सकता है।

['भूमि-शक्ति']

साहित्य : एक महान् शक्ति

आने वाले युग में जो ही शक्तियों पचने वाली हैं—भारतमन्तर और विज्ञान। आज तक विश्वास्त और मनहरी शक्तियाँ पचली, पर आने वाले युग में ये दोनों शक्तियाँ समाप्त होने वाली हैं। भारतमन्तर और विज्ञान, इन दोनों शक्तियों को जोड़ने वाली जो शक्ति शक्ति है वह साहित्य-शक्ति है। इसलिये साहित्य का भविष्य उज्ज्वल है, इतना ही नहीं साहित्य-शक्ति है। इसलिये साहित्य का भविष्य उज्ज्वल है, इतना ही नहीं साहित्य-शक्ति है। इसलिये साहित्य का भविष्य उज्ज्वल है, इतना ही नहीं साहित्य-शक्ति है। इसलिये साहित्य का भविष्य उज्ज्वल है, इतना ही नहीं साहित्य-शक्ति है।

—विनोय

भारत की भावनात्मक एकता : १

दादा धर्माधिकारी

[विचारक १९, ३० और ३१ अगस्त '६१ को इन्कोर के माँझ-मध्यम केन्द्र तथा महाराष्ट्र शासित समा के संयुक्त आन्दोलन में एक 'सात-सात' धारा, जिसे भी दादा धर्माधिकारी ने प्रथम दिन 'भारत के विपटनकारी तंत्र' के रूप में विचार प्रकट किया था। 'भारत की भावनात्मक एकता' शीर्षक से दादा के उन विचारों के सार का यहो रूप में दिया जा रहा है। आशा है, दादा ने अपनी कर्तव्य कर्मों में देश की भावनात्मक एकता का प्राविष्टार करते हुए जिन विपटनकारी तंत्रों को और इंगित किया है, उस दिशा में हम सब कार्यरत रहेंगे। —सं०]

आज का हमारा विषय है भारत के विपटनकारी तंत्र। एक वात प्रस्ताविक रूप से यह है। मेरे विचार इस विषय में साहित्यों से और ज्येष्ठ मित्रों से कुछ निम्न रहे हैं। गांधी और विनोबा के साथ भी मेरे विचारों का इस विषय में बहुत ज्यादा मेल नहीं है। दूसरे विचारकों से भी बहुत कुछ मतभेद ही रहा है। कर्मोन्मत्तों ऐसा होता है कि विचार की स्वतन्त्रता के कारण मनुष्य को जहाँ कल्पना नहीं होनी, वहाँ उसे सहायक और साथी मिलते हैं। इस विषय में जिनका समर्थन मैंने पाया, अत्यन्त रूप से उन्होंने यही कहा कि तैरे विचार हमारे विचार हैं। उनमें दो व्यक्त प्रमुख हैं : एक आचार्य कृष्णलानी और दूसरे गोलवलकर गुरुजी।

मैंने बहुत आश्चर्य से यह माना है कि भारतवर्ष की यह विरोधता नहीं है कि यह भूतल यहाँ के निवासियों के लिये एक और पवित्र राह है। साथ भारतवर्ष एक है, साथ भारतवर्ष पवित्र है, यह भावना देश में अति प्राचीन रही है। किन्ती प्राचीन रही है, इसका मुझे पता नहीं, क्योंकि मेरी दृष्टि इस अर्थ में ऐतिहासिक कभी नहीं रही है। जिस अर्थ में साधारण लोग देखते और समझते हैं उस अर्थ में इतिहास में बहुत अन्दा भी मेरी नहीं है।

परन्तु जब दो हम ऐतिहासिक बात मानते हैं तब वे और उलझे रहते हैं और साथ देश में दो भावनाएँ दोहरे के निवासियों में रही हैं—भारत एक देश है और साथ भारत पवित्र है। यह आधुनिक राष्ट्रीयता की भावना नहीं है, जिसे हम राष्ट्रीयता की मानना करते हैं। यह भावना हमारे देश में प्राचीन काल से बनी नहीं थी। इसे हमें स्वीकार कर कर लेना चाहिये। यह भावना अमेजी राज्यपाल से उचित होने लगी और तब से इसका कुछ विकास हुआ। लेकिन जिसे हम राष्ट्रीयता थी, राष्ट्रधर्म की भावना नहीं है, यह भावना हमारे देश में नहीं थी। फिर भी एक भावना थी कि साथ भारतवर्ष एक है, साथ भारत पवित्र है।

उत्तर भारत युद्ध सन् १९४७ हिमाचल प्रदेश का सन्तान बर्षों भारत-युद्ध नाम भारतीय युद्ध मानती है। किन्तु भारत में यह एक ही भावना है। इससे पहले जो अर्थगत है, उनमें मेरे भारतवर्ष का था और भारतवर्ष का उल्लेख इतना था नहीं है। अन्तर्गत था है, अन्तर्गत देश का है, मध्य देश का है, आन्तर्गत था कर्म भावना है। आन्तर्गत, दक्षिण देश का भी उल्लेख आता है। परन्तु जिस हम लोनी की प्रशासनिकता करते हैं, जिसे आजकल हम राष्ट्रीयता मानते हैं, यह हमारे देश में नहीं थी।

राष्ट्रीयता में विकास

आज की राष्ट्रीयता में भी विकास हुआ है। बीच में मध्ययुग के बाद सीरोप में राष्ट्रीयता का विकास आया। राष्ट्रीयता का विकास ही हमारे देश में निरिप किया। विजयनगर की स्थापना का उग लोनी में रवि लाडूर ने, एक मध्ययुग में भी अर्जुनदेव ने और बाद में गांधी और उन्मत्त के साथियों ने भी निरिप किया। मेरे अन्तर्गतवादीयों की ओर रहा है, क्योंकि उनका अपना दर्शन उन्मत्तों की ही था। १९२० तक राष्ट्रीय दर्शन का ही नहीं है। इटालिन के अन्तर्गत में बर्ष 'सोसियलिज्म इन वन कौरी'—एक देश में समाजवाद—का नाम ब्रुन्द हुआ, तब उन्मत्त राष्ट्रीयता के कुछ भाग आने लगे। तब तक यह एक अन्तर्देशीय दर्शन था। इतिहास समाजवाद की मैं अभी मामिल ही नहीं कर रहा हूँ। हमारे देश में यह की प्राचीन भावना थी, इस प्राचीन भावना का आधार क्या

था, यह बहुत स्पष्ट रूप से नहीं बतलाया जा सकता। जिन लोगों ने, समाज-वैज्ञानिकों ने, इतिहासकारों ने इस विषय में लिखा, वे किसी एक निश्चित दृष्टान्त की तरफ अंगुली निर्देश नहीं कर सके। वे हमको यह नहीं बतला सके कि यह एक ही है, जिसे हम उल्लेख उत एक का साथ भारतवर्ष एक था। फिर भी कुछ स्पष्ट दृष्टान्त हम देख सकते हैं।

एकता के लक्षण

धर्म की भाव एक थी। संघटन भाषा पुणेदितों की भाषा थी, पंढरी की भाषा थी। मैंने अन्तर्गत अर्थ कहा है, मुझे इस बात का पता नहीं लगा है कि संघटन भी कभी एक-भाषा थी। राज्यधर्म भी मध्यभारत में, प्रगतता में विचारों संघटन गौरीदेव है, लेकिन बाद के काल में नाटकों में निरिपों अन्तर्गत संघटन नहीं बोलती। बातिदास की चतुर्दश, मधुसूति की सीता अर्जुनकी नहीं दर्शाता था यह सच ही है, अन्तर्गत कहती हैं। और जो नीकर-प्राकार वे उनमें के बहुत कम देखे थे, जो संघटन भाषा नोजे हैं। जो संघटन भाषा भारतवर्षीय भाषा थी, लेकिन धर्म की भाषा, पंढरी की भाषा, पुणेदितों की भाषा थी। साहित्य की प्राथमिक, पार्थिक था। उन्मत्त भाषा का अन्तर्गत नहीं की विजयनगर भाषाओं में अन्तर्गत करता था। इतिहास कुछ इतिहासकारोंक संघटन उन्मत्तों के यह देश में रचाने हो गये।

द्विपालय भारतवर्ष कहें हो गया। द्विपालय भारतवर्ष में किसी एक प्रदेश का वर्णन नहीं था। मया किसी एक प्रदेश को नहीं बर्षी थी। द्विपालय अन्तर वेस्तायना था, तो तारे भारत का था। मया अन्तर वेस्तायन-रोहण बंभजनी की ली वह तारे भारतवर्ष की थी।

आज यह चीज हमकी अन्तरही दया सच ही है, जब कि गोदावरी और इन्ध्या नदी के बच के इन्ध्या हावड़ा हो रहा है। एक भाग बोलने वाले करते हैं कि यह भाग मेरु है, इसमें वे मराठी भाषा निकलती है। दूसरी भाग वाले करते हैं कि यह पानी हमारा है, इसमें वे तेलुगु बंगाली निरुद्ध सचते हैं। आ पानी की वेही ही दृष्टि ताहरी है। हमारा और आप सबका भाव्य है कि अन्तर सब-मया-अन्तर हिमाचल के लिये समाज ही हुआ है।

लेकिन एवम कुछ देखे माझूर होवे हैं कि वे दित बहुत मूर नहीं हैं, बर 'द्विपालय' के लोग कहते हैं उनमें कि 'द्विपालय' पर्वत हमारा है, हमको रहने दो, और तो हमने सब के ही लिए है। हम वे कप 'द्विपालय' हमारे लिए रहने दो। एक बरि से बह मर कि द्विपालय तो सबके लिए तथा सबका है ही, बर-के-बम बह बहादुरी हो हमारे लिए रहने दो। 'मया' तो सच ही है ही, बर-के-कम 'द्विपालय', 'वीरगण' और 'वीर' तो हमारे लिए रहने दो।

नामसुर में एक उन्मत्त मेरे पास आये और करते ल्ये कि ताँगी की बनी का उल्लेख है कल, आरके भाग देने के लिए आना चाहिये। मैंने कहा अन्तर्गत आउंमग, उन्मत्त होने बाल्य है धार में। उन्मत्तों कदा, वह जो मलग एक सार्वभौमिक उन्मत्त होने बाल्य है। उनमें तो मया जाने बाल्य होमे, लेकिन हमारे उन्मत्त में माझे। उन्मत्तों कदा, 'कदाये मालग संघ' का यह उल्लेख है। जो मैंने कहा कि यह ताँगी की पानी 'कदाये मालग' कदा वे हो गयी। मैंने कुछ देना साथ था कि यह अन्तर्गत मालग की नीलगाता है। क्या आज यह 'कदाये मालग' के बच में दालिक हो गयी। अब तक तो मैंने यह नहीं समझा है।

लेकिन बाद में मुझे पता चला कि पिछले मराठा होने बाल्य है। गांधी गुरुदेव होने बाल्य है। रवि लाडूर गंगादी होने बाल्य है। राजगोपालाचार्य होने हो आने बाल्य है। और इस देश में अन्तर्गत मारापी देरने बाल्य कोई नहीं है। मैंने लोगों के निरिप विचार धर्म धिवानों की मूर्ति बर्षमें मैं 'जिरे वे अन्तर्गत' पर स्थापित की गयी, इसमें ही विषेय आनन्द नहीं है। वह बहुत बर अन्तर्गतमात्र में रचाने की बाल्य लेमें दालित होता। और महाराष्ट्र की शासित-समा में मराठी मराठा का विचार में है इस काल, तो यहवा कदा होवी कि मारापी का विकास होने बर है। अन्ती तो नहीं हो रहा है, लेकिन आगे होने बाल्य है। इसकी मुझे कुछ आशा होती है।

मन्तव्य यह कि वहाँ राष्ट्रीयता भी, भावना ही न थी, एकता की भावना भी। यह एकता की भावना का आधार क्या था। एक समान भाषा, एक समान धर्म और सब धर्म के हुए संघटन—युद्ध प्रकृत, युद्ध प्रकृत। सब यह भावना अन्तर्गत निरुद्ध कर्म के लिए, एकदम रहने बैठाता था तो निरुद्ध बर्ष का आशाग करता था। 'मंगे बर मंगे' संघ गोदावरी बरबालती। मंगे कि कावेरी अन्तर्गत मन्तर्गति बरु।

हमको जो पहले-पहल यह एक पढ़ना पडा, तो मैंने अपने चाचा के पू कि विनोदी हमें यह विचारों पर आर भूगोल भावना था कि नहीं। बालग था जो यह मुझे पहले लगे कि यह भूगोल नहीं बालग था, मुझे यह पड़ेना बरु तो मैंने कहा कि इसने नाम भी निर्मा तो पड़े निर्माते। मंगे बर वलने प। बर मंग, बर्षी अन्तर्गत, गोदावरी न बरबाली तिर रोना मने इन्ध्या कावेरी-नीरुद्ध विचार है। यह भूगोल नहीं बालग था यह भूगोल अन्तर्गत जानना होना तो एक दूरीक नहीं मता बरुता था। जो उन्मत्त मुझे उन्मत्त विचार कि एतका भारतवर्ष के बर्ष भूगोलिक नहीं था। एतका भारत वैश्व मिट्टी के उन्मत्त बर बना हुआ नहीं था, पालिय उन्मत्तों लिये मया यद आने थे लिये। 'आगे वहाँ जो निरिपों भी भारत वर्ष में ही, एतना उन्मत्त लिये आधारक था।

परन्तु हमारा और आपका आज का भारतवर्ष नचको पर है, किसी की भी हदर क नहीं है। हमारा भारतवर्ष ही अन्तर्गत नचको में देखो है। एक दया मुझे नेरले से पंढरत बालग पडा। वहाँ हमारे निरिपे। उन्मत्तों

मेरा पंचक बरखा, 'बंद सारे भारत-
 नदी में दूधवाही और जमी बरख
 के, नीचे से आ रहा है। मैं देरान
 हुआ। मेरी वमल में नहीं आया
 था कि 'मीरे के' बंधों से आ रहा
 है। कोरे पासल से तो नहीं आ
 रहा है। तो उठने बहा कि नहीं
 आन दृषिय से आ रहे हैं। मैंने
 कहा, दृषिय नीचे बहो है। तो
 उठने बहा कि 'मनके' मैं है।
 दृषिय नीचे है और पक्षर उकर
 है, यह नकसा बर हमारे मन में
 हमनया हुआ है। इतलियद भारतीयवा
 इत्यन तक नहीं पहुँची। यह भारती
 यवा हमारे लुल में अभी तक
 नहीं है।

उन लोगों के लुल में क्यों थी।
 हमारे थे, हारे लीबेचन बार कोनों पर ये-
 दृषियवा, धारि-बाहरी, कानायावा और
 हर रामेपर। हमको कल्पि में लिखाया
 गया था कि सिरे की ही लक्ष्यमें पर
 भावनें दमनयण हो तो बीच की
 बहावों पर आ जाता है, अपने आप।
 बंधने बर अग्रजवा का चिह्न बार
 कोनों पर रस दिया। तो हारे देर में
 मानमक द्याया आ गया। अंधिय
 हो पान लात राउ, राष्ट्रीय भागम
 के। मैं राउ और राष्ट्रीय भागम
 पर भावों का प्राचिन अर्थ में प्रयोग कर
 रहा हूँ। आर के अर्थ में नहीं। उस
 परवा की भावना के आधार आज
 नहीं है। वे रक्षान की नहीं धारिप,
 काके के लिए वे उपयुक्त नहीं हैं।
 पल्लु एक बहाने में वे आधार के
 और उन आधारों के हारे भारतवर्ष
 को एक लुल में सिरोया था। इतलिय
 को बह कहते हैं कि राष्ट्रीयता के
 मालुवा विवाह काना है उन लोगों के
 मेर निवेदन है कि

भारतीय राष्ट्र एक सिद्ध राष्ट्र है,
 जिसकी राष्ट्रपिता जिसकी एवला
 काही कही थी, राजनैतिक
 नहीं थी।
 हारे भारतवर्ष, पर रिस्ती एक सार-
 वती राजा का राज्य रहा थी, देते हुए
 कुछ बंधे आवे। कभी किसी ने अस्पष्टप
 वर और सारवत वस किया हो, देते बहुत
 भेदे बना हुआ। धनवर्ती राजन वर देण
 में चड़े हुए और आरज दिताना भारतवर्ष
 विवाहते उनके कुछ हिस्से, प्यारा हिस्से
 उरके के राज्य में, जितना हाप पूर्ण
 और सारा दृषिय सिक्तान आर हम
 भारतवर्ष मानते हैं, उतान उनके राज्य में
 नहीं था। इतलियद यह कोरे राजनैतिक
 परवा की भावना नहीं थी। चक्रवर्ती
 रपर है-राजकीयभावना। लेकिन सार-
 भीकितव की भावना भी देता है। एकल
 की भावना के साथ किसी हुई नहीं थी।

आर्थिक समानता ही बहुत कम थी।
 अरतल में धन्य होर देरा के विगो
 मान था हिस्से में, तो हारे म्याग और
 हिस्से को उरवा सधम नहीं होत
 था। एक हिस्से का अरतल उभी हिस्से
 का अरतल होता था। किसी एक हिस्से
 को बरसे हो करे आरजगाणों आरकर
 नीत के तो उरवा ही दिखना जाता था।
 सारे भारतवर्ष पर उतना कोरे परि-
 व्याम नहीं होत था। बांधे लोगों में कोरे
 व्यामलपता थी भावना नहीं थी। लीब-
 देवों की एकलमज्जा की भावना लोगों
 में थी।

सार का सारा भारतवर्ष लीब-ल्लुल
 था लीब का सार था, लेकिन भारतवर्ष
 के लोगों के नियम में एक हारे के सुत-
 दुतार की सुत उरवना होती थी, यह भाव
 नहीं थी। इतलियद आरम सारवापये वा
 भारत का धार्मिक प्रयास जनकी सार
 नहीं। उरवने दिग्बधन दिया। काली,
 काकी, भद्रकाली, इन पुर्णों में धरिदों
 में कुछ एतका को भावना का विकास
 हुआ। परलु काकी, जाली, अम्बिका में
 रक्षने वाले लोगों के सुतदुतार के
 साथ रक्षने वाले लोगों का कोरे विवेर
 संभव न रहा। इतलियद भारतवर्ष
 की ली में एक उरव के सिद्ध राष्ट्र
 मानता हूँ। मैंने इतलिया इतलिय सारा
 कि हम अब इसकी इतना हारे यहाँ के
 साथ बरते ही तो इतना के लिए विवेर
 अमकर नहीं है।

इस देण की एक विवेरता की ओर
 अर्थ लोगों का प्यान दिखने के लिए मैंने
 एक विवेरता का उल्लेख किया है कि इस देण
 में एकलमज्जा की भावना थी। उनका
 आधार उस तक लुलन धार्मिक संवेत,
 समान पुर्णदितक, समान धार्मिक
 लुलिय और एक समान धार्मिक भाषा
 थी। इतलिये अनुवाद सारे लुलिय में
 होते थे। इतलियद यह सारे लुलन सार्व-
 नित्य हो गये। आर भी हमारे देवों में
 की गांधी के नाम हैं उनमें सुर, नगर देते
 प्रारथें को आप निवाहते ही बहुत से
 मान रहते हैं। काकी का वती 'गंधी' ही
 आवेगा, सिधु का वती 'सिधु' ही आवेगा,
 वती 'सिधु' को आवेगा, का 'विठ्ठल' ही
 आवेगा, 'विठ्ठल' का वती 'ज्वा' ही
 आवेगा। वती 'चक्रवर्ती' का 'चक्रवर्ती'
 ही आवेगा, 'लली' ही आवेगा, वती
 'लुलकी' ही आवेगा। लेकिन संकेत समान
 ही। 'गीरावती' नदी के किनारे रक्षता है,
 वती 'सिधु' नदी के किनारे है, जो
 भीमती के किनारे रक्षता है, नगरी आवे है,
 तो 'गया' ही बरता है। ये कुछ समान
 संकेत रहे। इतलियद एक दिग्बधन की
 भावनाव्यक्त रक्षता है कि सिधु आर
 राउ बरती है, उनमें देते लुलन संवेत
 कमी नहीं रहे। यह देण की एक
 विवेरता है।

घातकों की शोर में अणु-अस्त्र और अहिंसा

पिछले दिनों अपनी शक्ति परवार-परिपूर में प्रधानमंत्री पं० नेहरू ने अर्थ बतों
 के साथ साथ यह भी कहा कि दूध अणुमय बनाने में सक्षम हैं। भारत में दूध सभी
 घातकों के लिए यह विचार का विषय है। एक तक हम सगुण मिरस्तीकरण के
 लिये दुनिया के अने-ने राष्ट्रों के आनीक कर घातक-स्यारण का प्रयत्न करें और दूध
 और सेना सामग्री का निराल निर्माण करते आर, यह निश्चयना की बात है।

सिद्धे दिनों 'एवर' एवर सिध-
 इल-नेच गति से बरने वाले विमान एर
 ऐथी ही अन्य सामग्री बना कर उरवा
 सलक प्रयोग ही हुआ। इतली प्रारंभ रूप,
 अमेरिका, रितिन, जपान के पत्राभय पेट
 विमानों की एर अन्य अरतल सारों की
 लक्ष्मी बड़े कोरों के भी ला रही है, को कि
 हारी घातक गति से गेल नहीं आती।
 एक हार इतलिय नेच पकिस्तान
 देण में लार्ड कूटन रवेत वैधे विचारक को
 याधीकी की राउ पर बल कर अणु अस्त्रों के
 विवक प्रयत्न कर दूध रक्षने के लक्ष्यपर
 में उ दिन ही उका पुगलनी पयी। दूध
 हार जीन ली की चीरद लीयों में अभी हाउ
 ही में लुलन में दूध बड़े प्रयत्नों में और
 प्रयास होना पर, और दूध की विवेर
 पूर्व-आर-सगुणों के विवक एक आवाह
 भी न उडे, यह हारमान रहा है।

अरि हार देश नहीं बरते जो हमें
 मानना होगा कि ह्ययी आरिषा दिखारकी
 और विपलक की है। उरक होये पर
 हम भी सधकपरि वर, अरिषा और
 घातक की नीति का परिवार कर, सति
 और दम का प्रयत्न करते हुए हर सलते

दूधों में नीलामी रोकने का सफल प्रयोग
 सिद्धे बतों में हमने दो बार 'दुध-वर्षती' के हारे में घातकों के वर सिधे में।
 अरि वर-वर्षती का तोसको रोकने का एक तकव प्रयोग है रहे हैं। —सं०

अरिबक दुध लोगों ने बरती दूधों में नीलाम करने का देण अपना लिया है।
 वे लीब थी-थारी बनवत को लुलका कर अरतल दूध की अणुपरणी बरु देकर
 अर्थिक देते बरता पेट देते हैं। बरुका बनते और घातकों से लुल देण में सारवा तक
 कावते हैं। इनके पुर्णिक मिली रहती है, अरक कोरि हुनवाही भी नहीं होती।

अणु-अस्त्र पर भी वे देते सगार कर
 ग्याः उरक पर्थें हैं। नर रक्षक ही अणुकर
 हो गये, उस लुलकर दे कषा अरवोकी का
 सलता है। प्रलेक नागरिक इल उरसस्य
 के तक ला बरता है। मैं रक्षक कोरि देण
 इल देहू बहा था, सिधे इतका सगारान
 हो लके। एक दिन अरानक इतका इल
 सिद्धे अणु।

एक बार मैं बरने के योजनना का रहा
 था। गयी सुनने ही एक नीलाम करने
 वाला मेरे किनारे में आया। वती ही उरने
 नीलाम की सल उरक थी, मैं लीब में ही
 बोल उरक, 'वती नीलाम नहीं होना।'
 'परों नीलाम नहीं जाते हैं। उरने सुक।
 अरने नीलाम करने की अरुतलिव ररकर
 से ली है क्या।'
 'तो, ली है।'
 'दिया लुल है।'
 अरिषा,
 —सलियद कुमार

“जो घर जाले आपना....”

• कियोनी हरि

कृतीदास की एक गाथी में “जो घर जाले आपना” यह बाया है। पूरी गाथी है :

“कपीरा रक्खा धनार में, लिखे लुकाठी हाथ । जो घर जाले आपना, चले हमारे साथ ॥”

घटले है, में बाजार में आकर खड़ा हूँ, चौड़े में, जन-समुह के बीच में । हाथ में मेरे चूहे की यह अपनानी लकड़ी है । इस लकड़ी से जो भी अपना घर-घार बना कर रात कर दे, यही मेरे साथ चल मगना है । वहाँ, किंग ? जहाँ कि मेरे प्यारे गाईं वा छोड़ दे, उनी जगह, उती सदय-स्वाण पर ।

खलनाक हाथी है वह ! अरुं की एकन्ते बाल बोंहें धनुचुके के घर में आग लगा चढा दे और उँधी आवाज से पुकारे वाले कपीर पर गाथियों की बीछार पर धमकी है । समाप्तनी दूर रदने छडे धाने हुए घर को देर-देर कर बनों छुड़ दोगे, तबो घर को दूँक देने वाले की नारानी पर पर-नुदुर के लेग गिम्गे कि लिख पागल की पुकार पर लंका-दाद कर दिया । जो अपने आपको चकना मानते है, वे ऐसी ‘घर-दूँक पुकार’ पर बनों प्यान देने वाले !

मगर कपीरे ने जो कहा वह शिष्टतुल्य वरी है, वह प्यान देने की चीज दे । तबो यह है कि उमके अन्दर का वही आसय घर बना दिया बाप ।

घर से घसलना है, वहाँ बुनिया की उन बौदों पर की आसक्ति से, धाने लगावट है, जो जीवन के लक्षण-इलान तक पहुँचने वही देनी, हुमेना प्रकरोपनी रहती है बुनिया में और विगा देनी है ताबे पारते पर से । चित्त भोजी-भोजी लगावट से लिखाव से बिल हुमेना इवाबोल रहता है, और रिखा वही बुजाती कि अरुंने उँके बंठे-बंठे की बीर कर प्रसल में बिचर प्राण है !

यही है वह घर, जिसे दूँक देने की लहाह बनीर ने दी है !

और-मगना में चारों तरफ से घेर लिया है भीज के कनीर की, सुन कर कि वह आसनी एक ऐसी जगह का राह है, जहाँ खुल-खी-खुल है, धानि की धानि है । बाजार में बना भीज की भी उलाह हुआ, बाहर दूँक उलके साथ-साथ वहाँ पर बजने की । ल मन उमगा अन्दर-अन्दर उन पीतों की और भी, साथ ही-साथ, वही रहा था, बिनफी मोहिनी, जलन करदे पर भी, मुझसे नहीं वा नबनी थी । दान-रक्षण की बाधा, सह-सह के पत्थी की आवाह हर किरी की अपनी और लीच रहती थी और उधर अनाज बगह की कठिन मंजिले हाथ फरने से रोक रही थी । ऐसी बुनिया की चारों-ओर बिनाने में छेड़ चुके मेरे दी लोह । कैवल नदी कर वा रहते थे वे ऐसी बास में ! अहाँ पीर में पड़े थे, वह पण्ड जानी बचानी पीर; देखने में सुन्दर और मनकी छुआने वाली थी । लिखित विज जगह का वर्णन मुन रता था, शिकरी लपकके कनीर ने लीची भी, वह और भी प्यदा सुन्दर मारुद दे रही थी । वे चाहते थे कि जो पीच कौली के हाथीने है उलके नाला न तोध बाण, और मिथ चीच के बारे में सुना है, उसे भी हासिल व लिया बाप । अन्दर-अन्दर ऐसे कनीच दिखते पर वे सनते सन छल रहे थे ।

नकीर साइड उनके मन की मोंगे गले ।

त्या कि एह भीर को, जो उनके चारों ओर बसा हो बसो है जिची लीम से, कानिरी फेडल कर देना चाहिये । देडल यही कि

बोध के लखे और उँके लख जो अजर बना है, तो बोह और लीम में झलने वाली आसक्ति में भाग लना देना चाहिये । उस घर को, जो अलस में उलतर अलर नहीं है, पूँच कर में उलतर में जा बनें, जो लखपुच उलतर अलर है, पर-जिले के भूज बडे हैं और जो पर उनको का-बार मीम के लोतों से बुरा रहा है ।

जो उलर की लोती में कहा गया है यह न केवल क्यपि कर, बल्कि पूरे समाज पर और ही अलग-अलग घरों पर और लोच-लंघाओं पर भी लागू होना है । इह लोती की वीही मसाल में न उठा दिया बाप कि इह मीम के घर दूँकने की लहाह ही बर्ह है वह निरी लखपुचनी बजने है । लिखित ऐसी लहाह देने नाला वह लखपु पर-निराली लाल वा, अलस तक लिखे अरुना काम-पंथ की नदी लोहा वा । पर एक लखीच से उलने नाम लिया । पर को और काम-पंथों को अनेन धर के गहरे रंग में रंग जलवा वा उलने । लिखिती लखीच से घर में आग रया दी थी और अलर की लहाह ! जो घर की बसा भी लिखा था ।

नई-नई चीजना बनाते अल-अप्योचक, ताद-तरर के वातुतो की बुनियाद पर रहनी को लखत वलने वाले धावक और निविध रचनात्मक संस्थाओं के द्वारा बन-बोधा वा रया करने वाले धार्षनिक कार्यको इह अनमोल लाली से धीतना चाहते तो बहुत-बहुत लीच उलते हैं । ने सही-अप्योचक, धावक और धार्षनिक कार्यको-बुनिया की सक्ती के लोतों के बीच डुपी बाह सिग रहे हैं । बिन उलने के से काम ले रहे हैं, उँके खडिरे पीच ल्प तक वे नहीं पहुँच वा रहे हैं जहाँ पहुँचने की उठनीज उर-उर धोषण की है । लोच-बालि तक लीह पहुँचे बजले देती वा विदेनी धनारविषयों के द्वारा, सक्ने अर्थ में, निरी मो राट्ट ने लुजे और अमृद नहीं बनाच का सकता । लिं

गातुतो और लैप-शिकियों के आधार पर, जलना के साथ समल हुए निना, बोई की धावन सल नहीं हो सकना । इलीमशर अपने हाथ वे की नई पुपनी और नई भूयें के लिख, इदर ॥ अपरिचय निवे वगी, सामाजिक छुडे के लखपु तक पहुँचना संभव नहीं । वरीयों वरणी और उरग वे प्रात यथेष्ट रहदीय के होगे हुए भी, समामुक्त रचनात्मक कार्य कपी साधार नहीं हो सक्ते ।

निविध लोखले आयोजनों,

गातुतो और सैप-शिकियों के रूप करने पर आधार रखने वाले कार्यक्रमों के प्रांन जिस क्रान्ति ने इन सभी क्षेत्रों में घटना पर बना लिया है, उसको आप लपानी ही दोगें, उसे दूँकें-मगर निरिष्ट सशय को, मंजिले नकरुंर को, लोख जलन बले पर भी, पहुँचा नहीं जा सकना ।

जो लहाह आन वे बिन लोहावटने कनीर ने दी थी, वही लखह कल मीची ने दी और आन वही निनीज दे रहा है । हम लोमों की मीच बस जान लेख का इह नेक लखह को मुने, अपनी लोह उँके अनाते है, उस घर वही लोहा अलर लीच न देवे, तो वह अनुप्रासिमें ही मीह लख-लख बुरे के लिख वही तो उँके पर बिचरी और लिपि देरी, जिसे उलने बनाना नाल रता है, उलने आन लहा वर वह नालनी नहीं करी ।

साहित्य-समीक्षा

भोजन और पावन : देकर-ज्योतिषी टाट्टु, प्रस्तावक : धार द्विपती सुलख-आल, दारानव, प्रयाग । इत-रंका २०४ । मूल्य : २ वचना ५० नणे पैसे ।

लेखिका का आहार और स्वापर पर वह विचरणात्मक प्रयास अलक्ष्य है । भोजन की प्रतिविधा पर जो भी स्वाधुपय के लिखा है, उसके समाधिइ करने की कोशिया की है । सुलख के देरर परिच्छेदी में भोजन की उपादेयता, पावन रिधा के लिखे पल्ल, कनर और उलके दूर करके के उलय, लख-नरायण के लीचक तरों में अंध नर देते यों आदि के स्वाधुशक्ति धन व वही इलर छडि वे विवेचन रिधा सधा है । नाव-‘कान्ठी और आर्थ की प्रसन्न में उलहा बरती गयी है । इलके मिलने कले प्रीतन, कावो-वैद्य, वैदिययण और लोहा के लिखे इलख नहीं लोहा चाहिये । लेखिका ने उक्त सुलख लिख कर देविक भूयें के प्राति सपने लिख है, लख-पान में लखोच (विचारिणी) के लख को बिलने नाथी लालिका से साधारण छेड लिखे भी निमित्तिक जान-बुद्धि कर सचेंगे । सुलख उपरोधी है । —नरिपिउलत सवस्त्री

जीवन-दृष्टि : विबोध, सम्पादकः ओमप्रकाश विरत, इत लहाह १६०, मूल्य १ अथ २५ नणे पैसे । प्रस्तावकः भाग लोख प्रकाश, वडो बल्लवाण, बिला वरलाय, पंजाब ।

निबोनीय की पंजाब-नामा में भी ओमप्रकाश लिख उलने साथ वे । उलनीय निबोय के प्रसन्नो और धनोमों वा सार प्रखुड सुलख में लिखा है । अल पाठनी (विचारिणी) के लख को बिलने

सुलख धाय उपरोधी है । सुलख में देरर और धर्म, धर्मना, आलजल और विनाम, प्रायमर्म, पूरण, मासना, अम धडि की उलानल, लहमीन, वायोपन, नई लालीम, लारी-भामोयोग, लाली-केना आदि रिधनी पर रिनिच के प्रमदर विचार है ।

सर्व धर्म एकता : ओमप्रकाश विरत, इत-रंका १५५, मूल्य ५० नणे पैसे । प्रस्तावक उररोक ।

धर्म योमों में बुनियादी एकता है । हमी सर्व जीवन के सनातन सद्धी पर जोर देते हैं, हिन्दु बण लोमों में अपने धर्म के लिखे विचार आगह आन लहाह है, वर साधुगि कला अा जाती है । भारत जैते देश में बर्हो अदेक सर्व लय-लख विरिधित हुड, कुछ धर्म बलर से आकर भी योमों के लन नये, वैसी धून में रा बजों के बीच आसनी कल्पना और उलनघोला आचरकर है । प्रमदु सुलख उलनी अदान प्रयास वा कलुं कदम है । सुलख में संक्षेप में मनुष्य बतों की बुनियादी बलर दी गयी है । आधा-है, इह सुलख का अन्ध स्वापन होना । ‘सम्पदा’ माह सितम्बर, १९२१ ‘इतीव पंचपरणी’ योजना विरोधक पधरदः भी कल्पना विचारामक, मफा ० अयोध प्रजाधन मन्दिर, कनिचनगढ, दिल्ली । विचारक लखि देह देकर । ‘धमार्थ’ साविक पणिका में अपनी लपरता के अनुवार दल वरों में यह वार-ही विरोधाक दुषिय पंचपरणी योजना पर प्रकाशित लिख है । योजना के बारे में सुलनाम इ छिडे से अविष्टत वानकारी पैठ करती का एव उरु में प्रपल किया गय है । कुल मिला कर निरोधक अल अल वा रहे है । —नरुरामल

असम में विनोबा के साथ कुछ दिन : ४

महेन्द्रकुमार शारदा

‘प्रभातो मन्वसुतो पदम्, व्यथमावो अगत पदम्’—धर्मपदम् । प्रवाद मूल्य और व्यथमाद अमरता या चिह्न है। अपने जीवन के क्षण-क्षण का उपयोग कर प्राणी मृत्यु बनाता है, वह अमाध्य कार्य को भी हाथ्य कर सकता है। यद्यु ऊंचे पर्वत से छोटे-से प्रयात के रूप में निरली हुई नदी अपने दोनों तटों के बीच प्रतिक्षण, प्रतिफल, वह कर समुद्र में मिलती है, पूर्वी सूर्य में चाही और निरन्तर परिक्रमा करती रहती है, छोटे-से परमाणु में धरात प्रिया होती रहती है। विरत को अत्येक वस्तु स्पन्दनशील है। इसी तरह जो व्यक्ति सहज भाव से अपने घटोदर, वचन और मन से किसी-न-किसी सन्त्रियाम से रत रहता है, वह सतों का सहज योग है। इस सहज योग की छावना में वह समार से नदी भागना, अथ से जो नही चुराता और सोंब तो उसके जीवन का मुखय अय होती है।

प्रवाद समय गोपण है। प्रमादी व्यक्ति आखर के बारण किसी अन्धे कार्य में घापी नहीं लख सकता। वह अद्वैत जीवितानरूप में मूलक जीवन विद्या रहता है, पर अमयव बर्जन के लिए नव्याण प्रारक है। अमयव कल्प अपने छोटे-से जीवन में विरत को हीन प्रियत करने और देखे कार्य करता है, जिससे उसका यथाःशरीर और अक्षर देह और विनयन रहता है, उसकी कमी मनुष्य नहीं होती। वह अपनी उत्कृष्टियों के रूप में गुणवत् हीनर अमरता को प्राप्त करता है।

मेरी कभी क्या, बाबा के हाथ रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति का वह अनुभव है कि प्रमाद तो उन्हें हूँ तक ही नहीं गया। वे सतत हृदय विनय के द्वारा उन्होंने प्रेषा वाच-मिषा को प्राप्त किया है, बागी वा घट-परीय वर प्रथमन और छेलन के रूप में कल्पविल की सृष्टि की है और कर्मल वर-वैरागिण्य हरि से कार्य कुशलता प्राप्त की है। इसीलिए उनकी सतत शोचन, विनोद, लय वाच आदि लक्ष निवारण लोगों के लिए सहीचिन्त है।

अमयवर्ष के एक माई बाबा के घर बापे। वे अत्यन्त मादुन, परिधमी और शक्तिप्राप्ति के हैं। बाबा ने वाचकीन-प्राप्ति के पहले उनका नाम देवक कहा—नाम तो आषाढ तीतल प्रसाद है। ठीक है, पर अय अमी अविश्वसित है या विरायित।

उन्होंने कहा—विभासित।
बाब—तब तो आप पीतल प्रमाद नहीं थे, पीतल प्रसाद मिल कर उणा प्रमाद ही थे। अक्षय ही, पहले हमिन अक्षय-पद, उसके पीछे कोई ‘क’ नहीं होने से सपरिद कर सपरिद दीश चलत वा रहा था। अय हमिन के पीछे निरन्तर गुड गगन है, वह एक सपरिद करता रहता है। इसीलिए अय बाबा के ही राय नहीं लख सकती। मेरा नाम है अविश्वसित होया हो तो उसके लिए जानी कती की भी उदरवधि चाहिए।

इस उदर में बाबा की दीण प्रकाश, विनोद मुक्ति और उन्मत्त प्रत्युत्पन्न मति का दर्शन होता है। इस दिन बाब के निरक रने से बार उन्होंने माई को बाब में विरत कर—‘अय मेरे पुत्र के सपरिद है, निरक-रने में आने के विनास की हरि से पाची उं-उं सपरिद है। यदी जाकर काम कीजिये। यदी आराम में काम करना होगा। बासिद में अविश्वसित और कम वैनन पाने-शक्ति अनेक लोग रहते हैं, अन्धे और बुरे अंगे की सृष्टि है। उन के सतों में अन्धे बुरे अंगे का अनुभव करना होगा, पर बाबके अविश्वसित अय आना जाना बाब रहते बाबने, कभी

जिसी की ईश्यां लल कीजिये। अत्यन्त ही और अक्षय। निरन्तर हरि रहे, अक्षय-अक्षय। सुलके निरचित रूप से सपरिद रहते हैं।’

अमयवर्ष के एक माई के बचने बाबा ने बासिद में काम करने वाले लख माहवी को हाथपान किया है। रनमें एक कोर बड़े अक्षितर से अपना अक्षर छोड़ कर छोटे कार्य-रतों को उपनाने की और शोचन है, तो बुरी और छोटे कार्य-रतों के लिए निरन्तर तुच्छन तुच्छन जो लोके का उर-देह है। विश्वे के अनेक के घर दीनों में बाब और अमयव की हीन न रहे, और और दोनों एक-दूसरे के मित्रक आ बापे। इसमें भी अमयवर्ष के लक्ष्य-रतों और प्रसाद है। छोटे-बड़े की निरन्तर मित्र कर सायकोण का प्रसाद है।

अमय के एक माई ने प्रातःकालीन पदान्तरक क लयन वाच से ब्रह्म—बाबा, अक्षय की उमाञ्ज-अनन्यता की हरि से नई लक्षीय क बना उपनिषद है।

बाब—अहम अहम दिलास देने वाले हैं ‘नामपद’ ही नमी लक्षीय की उपनिषद है। नन्या लय अहम दर्शन होता है। नामपद को अय बाबा पर ज्ञानो और कान पर भी।

सतों में काम पर में नैत कर उच्च के उच्च सादियर की सृष्टि की है। तुलने का काम करके हुए बरके के मुष्ट से ‘दीनी दीनी दीनी चरपरिण’ का उमन्जन प्रकट हुआ। यद्यु प्रमादों की चौर-व्यव करने वाले संत-देवता में प्रथु की उद्युप वन्दन हम पनी। ऐसी प्रथवदलन पक्षियों उन्मत्तारि की। और ने लय उदर में पहले हुए भी स-शक्तियों में विरोधलि मिने जाने हैं। अमय के नामपद को तद्व माहवतों में हिन्दुओं के सादियर-महवतों की सपरिदों पर नम आने। अमययोग के साथ ललत कर्मयोग चरखर हो तो बाब की हरि से नई लक्षीय के सारे हिन्दुस्तान में एक साथ दर्शन होने लगे।

उदाई माई ने अग्रे पुञ्ज—बाबा, लय विश्वविशालय नेने होता है।

बाब—नामपद ही नाम-विश्वविशालय है, मिलने कोई दिमी नहीं होती।

अमयी माई—बाब, विश्वों में भी प्राथमिक शिक्षण की उन्मत्तवद कर दे और काश्चित के अमयवर्ष को बयार मिश्रक है। दोनों की हर दृष्टि का निर-व्यय नेने होता है।

बाब—अमयवर्ष को प्राथमिक एक रूपय विन्यास चाहिए। वह अपने घर में रहैगा, लेती फेला और दिग्याही रनय उल्लेख कर पढ़ने आरंभें। वह उन्ने अधिक से अधिक तो बड़े-बड़े रहते।

आकाशक तो बाब की शरीर शक्ति प्रायदाय की अविद लगी हुई है। विन-वृत्त हो को भी विरन चलता रहता है। कभी कभी लोण प्रनन करते हैं कि बाबा, अय माई के योग से पुरवी के प्राथियों का कली विनाश करने वाला है। ऐसी हठवत् में अय लक्षण करने के क्या लय होया? बाब सद्यत के माचनी दार्शनिक श्रुतियों की तरह यह उदर लेते कि यदि कली ही प्रमाद होने वाला है तो प्रमादतन करते अधिक से अधिक पुत्र्य करना उद्धार्य अर्न है और अमय नहीं होने वाला है तो स-हित की इति से साम्यन करना उद्धार्य अर्न है। दीनों हरिच्यं । उद्धार्य लय ही होया।

अनेक अमयवर्ष जीवन के विनोय ने मन, वाणी और कर्म का अद्वयुप योग सिद्ध किया है। उनके अविश्वसित मन-व्यव-सिक्तन में होती है, उनके काम माके में और वाणी से भी कम सबावत सपरिद-अय में होती है। पर लययोग विनोय ने इन तीनों में लक्ष्य स्थापित किया है। सपरिद-अय तो उनका प्रथिद है। अपने हर हर देह द्वारा उन्होंने पुरी ललत को कार्य किता बरह लय सपरिद होता है। वाणी के बारे में सद्युपन में एक वचन है—‘पाषण्डतो जीवन्मृत्यु ममोदर’—वाणी का पानन पीर-पाव से भी सपरिद होता है। ललत को लने वाले की आद्य लय शक्ति लीण होती है; पर विनोय प्रतिदिन पीव वर दे अ-पाव, प्रथवन और प्रथवन के पानने लोको ही रहते हैं, फिर जो उदरें बजायी भी सपरिद ना अमयवर्ष नहीं होता। प्रलेक काम शिष्टे पर नहीं उल्लास, वाचकी और विज्ञान इति दर्शियों पर होती है। किञ्च

में उन्होंने जो अद्वयुप शक्त्या प्राप्त की है, वह उनके लेतों और मयवर्षों में पद-पद पर दिलास देती है। उन्होंने अपने सूर्यों की हुण के अद्वयुप नवीन व्याख्यार्य की है।

बाबा में चलेते चलेते गभीर नातचीत के बीच कभी कभी बाब अपना पीछा छोड़ कर अपने उन्मत्त का बासिद पक्षा कर देते हैं प्रातःकाल वादी लीन वा पार बने के आसपास पुत्रां तु-कु-कु करके भाग दे रहा था। एक तरफ उसके नाम की भावना सुनाई देती थी। उसके कर्म-द्वयन दुःखी और बाब के मुँह से और ते यह ध्वनि निरन्तरती थी ‘आगो रे आगो!’ लक्ष्मण दूत-व्यवहार बाब दृष्ट मन्त्र-लेते होते। इसके बाद तो सुनें की बाग ही इमें ‘आगो रे आगो’ के रूप में सुनाई दे रही थी।

अर तो वे अमय में अपने लय अम-यवों द्वारा सामयानी गौरी में मनुष्यल कठजन करके नचनलक्ष काय बनना चाहते हैं। अमय से बाहर नहीं निकली जाने की इच्छा नहीं। एक बार इसी उन्मत्त-सिद्धि में उन्मत्तने गौरी बाबा के लट पर कहा—‘अमय ने कार्य के बार मेर सव्यां शोचन का विचार है, हर सव्यां शोचन में मेरे हाथ आने के लिए कौन तैयार है?’ बाब के हर प्रनन पर सत गुण-दे, पैकल अमयवर्षा वरने में सारल के साथ कहा—‘ये तैयार हूँ।’ हर पर बाबा ने कहा कि मुझे नैनन एक का आशय मिलता है। वह कनी मेरे कार्य को नहीं छोड़ने वाली है। सद्युप अमयवर्षा बाब देती ही शक्ति-प्राप्ति में है। वह सबावतीरणी है और अपने लयग और सपरिदक जीवण द्वारा अमय में अनेक बनेने उदर की है।

सपनाल कुड की तरह हीर्यवद सदा-विर में भी अमयवर्ष जीवन को और अधिक बाब दिया है। अमयवर्षा लय में वे गौतम नर उरपरिद देते हुए बाब-बाब कहते हैं—‘अमय गोपण, ना लामा’ गौतम, एक चण के लिए भी प्रमाद मत करो। अमयवर्षा कर्षिक के लिए दृष्टे के प्रकाश की अकलत नहीं दिया। उंचका जीवन लय प्रसाद-रल होता है। बुद्ध के कर्मों में वह ‘अमय-दीन मन’—‘आसरीय वनी’ का सबा उरारण्य होता है।

सुदुन और सपनालमयुक्त अपनी हर नवीन प्रकृति द्वारा विनोय आन ‘आसरीय’ वन कर बाब की मकतित कर रहे हैं।

‘सुबोध’
अंग्रेजी मासिक
संपादक - एन० रामस्वामी
वाणिज्य मुद्रक : साईं बाब हरचने
स. बाबोदर-मुमुकुन्दन, नवीर
(अ बाब हर देवा वन)

प्रेम का विचार

में बहुत बड़ा आध्यात्मिक बदल उठाने के लिए नहीं पड़ता। इतना ही पड़ता है कि प्रेम को आपने घर में बन्द रखा है, यह रोल है, स्वागत मतानें, ताकि प्रेम-समाज नसे। इतना तो बनना ही चाहिए। इतरा मजल नह नहीं कि गोम में रहोइया कर हो। ऐसी विनूक बातें नहीं करनी चाहिए। हम कोई कुटुम्ब-धनपत्या खरी प्यारा नहीं चाहते। जहाँ तक सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था का सवाल है, वहाँ तक गौर एकर हो और प्रेम का स्थान माना जाता। पर मैं क्या होता है? कुछ एक बयान करता है, जो ब्राह्म आना, लहना आत आना और लगी बार आना, तो यह तरी कमाई करे पर ही मानी जाती है। लड़की बार आना कमाती है, इसलिए बार आने का लगेनी और कुछ एक रुपये का सायेग-पह प्रेमता हम पर मैं नहीं लागू करते। पर मैं प्रेम का कानून बखला है, जिसमें सारी कमाई वारे घर की मानी जाती है। उसमें दो को नहीं कमा सकता, उसका भी हक है। इस तरह पर मैं हम बॉन्ड कर पाते हैं। कौही व्यवस्था पर मैं है, वैसी ही गौर मैं करती है, यही अहिंसा का सन्देश है।

[सूच्यपत्र (राजस्थान) २७ ७-५९]

हिन्दुस्तान मुक्त-चिंतन का पक्षपाती

हिन्दुस्तान में हमने किसी एक पक्ष के नाम से वन नहीं खलाया। यह इस देश के लिए अभिमान की बात ही सक्ती है। भारत इस उनका नाम लेकर, उनसे कार्य को आते बढ़ाने की प्रविष्टा करते हैं, जो उनके नाम का गौरव हो सकता है। फिर भी हमने किसी भी महापुरुष के नाम के साथ अपने विचार को नहीं बाँधा, किसे कि ईसा ने ईसाई धर्म को 'नाइस' के साथ बाँध दिया। हम ईसा का भी नाम गौरव के साथ लिखते हैं, क्योंकि महापुरुषों में हम फर्क नहीं करते। फिर भी वे विद्वान भी नवें हैं, हम यह मानने को राजी नहीं कि किसी

एक महापुरुष के जरिये ही यह भगवान के पास पहुँच सकते हैं। इतरा और भगवान् पर तीया समन्य हो सकता है। हमारे बीच ऐसी किसी 'पूजे-वी' को आय-रक्षता नहीं। अतएव हम मार-जोयों ने हमेशा मुक्त-चिंतन किया है। हिन्दुस्तान के दर्शन ने विज्ञान के साथ जमी सगका नहीं किया। संघर्षधर्म ने तो यहाँ तक बह रहा है कि यदि साराए कुत भी 'मानि' टंडी है' ऐसा कर, तो हम उसे अपने के लिए बाध्य नहीं। अर्थात् विज्ञान की प्रयत्न अनुभव पर जो बात होनी, उसके विरुद्ध वेद भी नहीं बोलते और न चीलना चाहते हैं।

[संवेदनपत्र, अकोश, २८-२-५९]

दूसरों पर विद्वत्ता: महान् धारण

आज भारत-भारत में अविद्या है, मित्र-मित्र में अविश्वास है। विमित्र पदों, दलों और गुटों में अविश्वास है। किंतु हम इतना चाहते हैं कि अविद्वत्ता का इस जमाने की चीज नहीं है। आज मान्य के हागों में इतने मन्थन चलाया जा गये हैं कि यदि एक-दूसरे पर अविश्वास करते रहेंगे, तो मान्य-मुद्राए मित्र बनना। हिन्दुस्तान और आधुनिकता में किंग उरख अवि-श्वास बलया है। अविश्वास से बात बनती नहीं, मित्रता जाती है। अ.भर हमारा दारी-अधर फेनल लठ्टी पर होना, कि अविश्वास के परिश्रमरतन हुए फिर प्रयोग होकर ही रह जाती। ऐतिहासिक हमारे हागों में हाउजोय कम है। इसलिए अब अवि-श्वास के कारण कर्नास हुए निना नहीं रहेगा।

इसलिए जैसे हम मित्रों पर विश्वास करते हैं, वैसे ही प्रतिस्त्री पर भी विश्वास करना सीधे। विश्वास रखने से हम कुछ लाभें नहीं। सोचना बही, जो विश्वास-घात करेगा। बात के पास नहीं बाहू दे कि वह तब पर विश्वास रखता है। आज की सभ्य आरंभ करते समय कुछ शीघ्र हो रहा था। तब मैंने कहा कि

भागी में सरी-सरी बोलेंगा। लेकिन जैसे ही बोलना शुरू किया, चोर बन्द। अन्ध धीरे बोलने से काम न चलता, तो मैं मीन रहवा। जैसे हिंसा में सत्य जीते तो सौम्य हो जाते हैं, वैसे ही अहिंसा में लोभ में लोभ-प्रेम ही लोभ-प्रेम ही होते हैं। सर्वप्रथम ही प्रवृत्ति में प्रवृत्ति पर विश्वास रखना ही बहुत बड़ा कार्य है। [कलाचौर, पत्रा, ७-५-५९]

कार्यकर्ताओं के लिए

सौ का बन्द सत्य-की लड़ाई लड़ी गयी है। लड़ने वाले महापुरुषों का स्वागत ही है और सही-सही विचारों को देनी हैं। अ.भर आया जमाना नहीं गूडी का। उठने अपने को देवता है। स्वराज्य की लड़ाई लड़ने वाले ब्रह्मों के समने लोभसा विद्या या, जिसे एक कर वे आते बड़े। अंधकार में यह बर, जलता उठकर कर जलने एल्ला देवता और इतनी महापुरुष पर भी हमें संतोष नहीं, या जो हम साधनी हैं या निकमें।

रजामाजी में विश्वास सिद्ध क्यों का होता है, वहाँ पर यह उतर बाजों है। इतमें हम को कि क्यों भाई, मैं आये वा रहा हूँ, तब क्यों नहीं मैंने रहार बालों। तो पक्ष्य मुसगार वही कि अरे भाई, तूय अगे जाओ, हममें एहलन क्या। फर्काल शिस्ता लगर आपने आगे करवा है, उसके कहीं अर्थिक मेल करर पूरा ही गया है। अ.भर बरा बरकर देरेंगे।

सोव्हा मलिकावर्तों की इति अकर आन ऐसी नहीं रही, जो काम नहीं बनया। दूसरे पर आदेश करने भरनी बन-बोरी को लिखने वैसी बात यह मयानर अन नहीं गुनने बाले है। इसलिए हमें कोई हक नहीं, दूसरे की संशय रिपनी और आलोचना करने का।

वे लोभ मेरे मार्गदर्शक नहीं हैं और

मन में ही रह जाते हैं, काम नहीं आते। जो अनुशासन हिंसा में बनाते, उसे अधिक अनुशासन अहिंसा में होना चाहिए। कुछ लोगों का सवाल है कि अहिंसा में अनुशासन नहीं है। बहुत अहिंसा का अर्थ ही अनुशासन है। अहिंसा में अन्ध हैं अनुशासन होना है। वहाँ अन्ध-दे अनुशासन आता है, वहाँ बला से अनुशासन की धरन ही आ जाता है। शिष्ट केना में इतिहास से अनुशासन खाना पड़ता है। अहिंसा में यह संन मेरणा से होगा। शिष्ट केना में संनय कार्य होता है, इतिहास अनुशासन नहीं है। अहिंसा में इत्य-परिचरन होता है। इतिहास अनुशासन सदा होता चाहिए। [सूच्यपत्र, पत्रा, ११-१-५८]

आत्म-निरिक्षण की वेला में

न होने ही चाहिए और मैं भी इनका आर्थिकों क्या कर लूँगा। संनय नहीं, इसलिए हमें तो इनकी सचनी ही करनी है—जैसे अन्धे सर्गशील विद्या की, क्योंकि कि हाँ के अन्धे अन्धे हमें बनुता। हमें तो सदा नहीं बनना कि कौन रहे हैं और कौन छोटे हैं। और अगर हम देश नहीं करे तो हम कबेराए हॉन, मारपर हॉन और पैरिभिस्तर जाति हवें हैं। इसलिए न, ये तो कौन बतों तक लगे रहे हैं। शिष्टों में कौन हीन बर, कौन हीन बर, कौन असी बर और इन सभी मन् ५९ के प्रति के लिए निकले। किन्ते दिन हुए। इन शिष्ट दे वरें।

बस तक नहीं हैं प्रवाह है, प्रवाह में गति है, गति में प्राण है—बरेवेति-बरेवेति। विश्व पर्यवेर्न-बल

भल्लवारापण

माराणठी

चरखों के बीच में मिल।

जलखरों से नामकरी मिले है कि कपड़े की एक नई मिल भीखारवा (मेशाई, सफ़ायन) में लुली। उल्लख उद्यमान देश के अन्य स्थानों की तरह मेसार की धनवा भी देहातों में ही विद्योपयोग पाती है और किसानों की एकमात्र सहायता कर लेंगी का है। यह कपड़ों के विचारों आदि इतिहास करते हुए भी यहाँ के लोगों को लाभ में करिये कर मास योश-योश कलेबेकार बैठना पड़ता है। उन दिनों उद्योग के समय लोग अपना कारका लूह अपने बरों में बैयार कर लें तो अतिरिक्त आयदनी हो सकती है, किन्तु खाने पीने में दिक्कत नहीं होगी।

इसी मेलके एक एक, डिसेलिया में मालवा गांधी ने कुछ कारखानों १९२९ में खोले थे। उन्होंने चार साठ सार्ह रर कर ७५५ से कपड़े तक की बर विचारों लीनी

की हिता दी। इनका, बीलवा, बरले रचना का छापना भी पर-पर विद्या सिख या। इस विद्याओं में अपने बाले औरवा भी बही बना देना सुल्यों को हिता सिख था। वहाँ के अनेक गाँवों के अनाज रू, की पुर्णों के मिल के नहीं होते थे। अ.भर उन्हीं के बीच ऐसी मिल लगी की जाती है, जो हजार में दो को तो चार देती है और चार को बेवार रर कर उनकी लुकी-खुकी रोटी चीन लेती है। यह भी ऐसे दार्शों द्वारा, जो 'गांधी की जन' बोलते हैं, कपड़ों मानते हैं और उनके पितामह सभ्यता का दायर करते हैं—देश ही बलवा रहेगा क्या।

कलकत्ता -जेठाणाल गोविन्दजी

इससे प्रचण्ड विद्रुत प्रवाह होगा

"विद्वार के वारे में हमारे कार्यकर्ताओं का आकलन होने के लिए इतना दिन कैसे लगे, इसका मुझे आश्चर्य लगता है। यह एक हमारी दस समय की बहुत महत्व की 'भट्ट' है।... इस काम से भारत में एक प्रचण्ड विद्रुत प्रवाह शुरू होगा। जहाँ ३ सितम्बर ६१ तक काम पूरा न हुआ तो यह तक (अवधि) बढ़ाई जा सकती। राजेन्द्रनाथ मुँदू गाने में दिल्ली से छुट्टे में। मोचसमरर का वाक्य है: 'उत्तरें इज ए टाइड इन रि एफेरेन्स आफ मेन'—जैसी यह भरती की वेला है। मैंने लेकिन ३ दिसम्बर ६१ तक विद्वार न पहुँचने का तप किया है। यह मेरा निश्चय भी उस भरती की मध्य देने के लिए ही है।

।-विनोबा का जय जगत

महाराष्ट्र प्रदेश के समाचार

पूना की वादपीडित रचनात्मक संस्थाओं की सहायता

महाराष्ट्र के आधुनिकी गोंयों के कार्य करने वाले कार्यकर्ताओं की हर दो तीन माह में बैठक होती है। इस बार यह बैठक रत्नागिरी जिले के कुडल गोंय में १० से १२ अक्टूबर तक हुई। इसमें पूरे महाराष्ट्र के कुछ ५० कार्यकर्ता उपस्थित थे। लादी कर्मिणा भी विशार-गोयना के उपनिदेशक भी नानासाहेब कर्णिकारी ने माग इतना बोना ही जानकारी दी। आयासाहेब घिरने और भीमाम देशपांडे ने भी मार्गदर्शन किया। कार्यकर्ताओं ने अपने कार्य के विवरण सुनाये। पूना के वादपीडितों की सेवा में सब कार्यकर्ता गये थे। उनके बाद मुख्यतया सेवार्थ वा नाम हुआ। कई कार्य भी उपरोक्त हुईं और सामूहिक लेखी के प्रयोग छल दिये गये हैं। प्रातः अनुभव और कठिनतरी के बारे में चर्चा हुई। स्थानिक स्वतन्त्र-संस्थाओं के और सामूहिक सुनाय आदि के लिए प्राणीको वा तैय्य कार्यदर्शन दिया जाय, इस पर भी चर्चा चर्चा हुई।

पानवेल गोंय के दूने के कारण आभी हुई गोंयकर बाई में पूना की रचनात्मक संस्थाओं वा कार्य प्रकथन हुआ। वा १६ विगतकर से २६ अक्टूबर तक विचार संस्थाओं तथा रचनात्मक कार्यकर्ताओं की और से सहायता-रक्कम निम्न रक्कम मिली-

१. छविनाथ सर्वोदय संघ, माधीनगर, तिरहुत	५०१-००
२. श्री आचार्य ज. व. टक्क, गागोदे	२५-००
३. श्री जीनेचर सिंह, गिम्बिनी छात्री गंगाधर, कजहर (हरमंगा)	५०-००
४. ज वा सन वैद्य संघ, कापरागी	७७५-५५
५. रचनात्मक समिति, नरथिदुत	५०१-००
६. सह-१० छात्री-माधोवीय मंदार, नडुवार (महापुर)	१००-००
७. सर्वोदय आश्रम, चादावार (मधुपुर)	१०१-००
८. छात्री-समिति, मुकानपुर	१०१-००
९. आशोदय आश्रम नानासल, लक्ष्म (मिरत)	१०१-००
१०. महाद्वार सेवा संघ के कार्यकर्ताओं की ओर से	२१५१-००
ज. १६ विगतकर तक की प्रात रक्कम	५०९९-०८

कुल ९,५९१-०५

पूना और माधान में विमोक्षा और गांधी-जयंती

पूना के महापुर सेवा संघ-कार्यालय के कार्यकर्ताओं ने ११ अक्टूबर से २ अक्टूबर तक हर दोन दिन छह घंटे से शाम के छह बजे तक अलग-अलग चलाया। १५-२० कार्यकर्ता बारी-बारी से सतत अंतर चलाये चलाते रहे। कुछ २८० सुविधों का काम गया। कई आदि का लक्ष्य काम करने अथवा के रूप में ५१ व ८८ नं० से बना हुआ।

अभ्यवृत्ति जिले के माधान स्थित कल्याण इष्ट के विद्यालय के शिक्षक और छात्र-छात्राओं ने 'गांधी-जयंती' के निमित्त ५० गोंयों में रचना की। इन ५० गोंयों में स्थान कार्यक्षेत्र का प्रयोग पाया है। ८ गोंयों में वे चारे गोंय बंटे हैं। १६ वेति-कार्यकर्ता पूर्ण कार्य करे ली हैं। इनमें कुछ आदि-कारियों के भी गोंय हैं। शिक्षक-कार्यों के मार्गदर्शन के लिए हाल ही में ८ दिन का एक शिक्षण हुआ।

बादपीडितों की सेवा में कार्यकर्ता

बर्धो मदी की बाइ से काटोल (जामपुर) तहसील के कुछ गोंयों में कारी प्रकथन हुआ, सेवा छात्रावार पाते ही सर्वोदय-कार्यकर्ता उन तहसील की निरीक्षित भूतान-व्यवस्था का काम स्थानिक कर सहकृषि-कार्यों में लगे हैं। बर्धो धखों की सुबरी, लपार आदि कार्य चरते रहे। चरवा-संघ का अन्तर केन्द्र बनान में प्रैल गया था, उसे छोड़ कर थाले बाहर निगाते गये। अनता का अन्वय सहकार मिश्र। जलालेवा गोंय के लेगी में कार्यकर्ताओं के चर्चा के प्रवि सतिय प्रकट किया।

कैसांगा और बर्धो जदी की बाइ से चारा और चर्चा जिले में क्षणिक बनान की सहायता के लिए भी कार्यकर्ता गये। भी २०० ह० पाटल और चारा जिले के सर्वोदय-मंडल के संयोजक भी रूपामधुकर-कुल ने आटपीडित गोंयों में पहुँच कर प्रत्यक्ष सहायता-कार्य में भाग लिया।

— श्री अथासाहर पदवणुदे ११ मार्च १९११ तक के लिए छात्री-माधोवीय कर्मिणा के उपायपत्र बनाये गये।

— १०००० पंचायत परिषद की कार्य-कारिणी समिति में आचार्य के प्रतिनिधि के रूप में भी गोविन्दरघु सिंघे की नियुक्ति हुई। इस परिषद के अध्यक्ष भी जय-प्रकाश नारायण हैं।

इन्दौर नगर में शांति-सेना के प्रशिक्षण-वर्ग

गत सा० २९ के २६ अक्टूबर तक प्रत्यक्ष शांति सेना विद्यालय की संस्था-लिका हुए। श्री मिर्मिल देशपांडे तथा नगर की सुविधित वा० श्रीमती चतुर्वज्य देशपांडे के अध्यक्षता में खलौं के लिए इन्दौर नगर में शांति सेना के प्रशिक्षण वर्ग चलाये गये, जिसका उद्देश्य था कि इन्दौर की कोशल शांति रक्षा और वील-रक्षा के लिए कार्य करे। इन वर्गों का उद्घाटन १९ अक्टूबर को आचार्यवादी के द्वारा

जापान में सर्वोदय-केन्द्र की स्थापना

अल्प परिचय-देशों में महात्मा गांधीजी के तात्काल का अन्वय और प्रवि होने के लिए भारत के बाहर सर्वोदय-केन्द्रों की स्थापना होना आवश्यक है। इति से विचार-निष्कर्ष, अन्वय जापान स्थित योशिवागाम में प्रथम सर्वोदय केन्द्र की स्थापना हुई। जापान के राजदूत श्री जालुती मेइरोसा ने ६ अक्टूबर १९११ को एक केन्द्र का उद्घाटन किया।

जापान के महाद्वार गौड गिडु श्री निदासुइजी के अध्यक्ष पद पर है। इस केन्द्र की स्थापना हो ली। श्री निदासुइजी तृतीय मासुदे के पूर्ण कार्य-समय तक माधीनी के साथ सेवा-कार्य में रहते थे।

उद्घाटन के अवसर पर भेजे गये संदेश में श्री केशवहरल्ल नेहरू कहा है कि—'अल्पे इन्दी के नेतृत्व में जापान में बल रहे सर्वोदय कार्य की जानकारी भी प्रेषण होना और जापान के पूरुषों राबहुत भी २०-३० मास विचार के धुरे लिये। यह सुलभ ही अन्वय कार्य है और यह भारत चरण की निराला वा मीलक है।'

अभर किया इन्द नेतृत्व, कि मैं ऑफ इंडिया और म्यू इंडिया एजल कर्मनी ने केन्द्र की सहायता के लिए हर एक ने दस हजार अन्वय सहायता-रक्कम दिये हैं।

इस अंक में

१	विमोक्षा
२	काविरिचय
३	धनिके
४	राज्य प्रगोषिकारी
५	अधोनायक्य मारुती
६	दास्य भूमिपति
७	कामनाय सेठिय, मैकेन्द्रकुमार
८	विमोक्षी हरि
९	अधोनायक्य छात्री
१०	विमोक्ष
११-१२	अलखनारायण, जेठालाछत्री

इन्दौर में नारायणो

एक समाचार के अनुसार सचरेश्वर की सहायता इन्दौर सहर में पूर्ण कार्य-बन्नी लापु करने के प्रयत्न कर विचार कर रहे हैं।

काँग्रेस का चुनाव-घोषणापत्र

सुरेश राम

झामसो, फरवरी १९६२ में आग चुनाव होने वाला है। उसकी तैयारी की घूम मची है। विभिन्न राजनीतिक दल अपने घोषणा-पत्र देना के सामने पेश कर रहे हैं। यहाँ हम काँग्रेस पार्टी के घोषणा-पत्र पर संक्षेप में विचार करते हैं। गत ४ अक्टूबर को दक्षिण भारत की सुप्रसिद्ध नगरी मद्रास में अखिल भारत काँग्रेस नगरी की एक बैठक में यह घोषणा-पत्र जाहिर कर दिया गया।

यह घोषणा-पत्र मूल अंग्रेजी में है, जिसमें साठे छह हजार के ऊपर अक्षर हैं। साधा समझ है। लेकिन खुशी की बात कि इतकी भाषा में संक्षेप और नम्रता है। अर्थ की सींग नहीं आती गयी है। और न कौंसिल ने अपनी कोई खासिक ही की है। ज्यादा श्रेय का भी अपने लिए दावा नहीं किया है। देश में जो आज अंध दौर है जन-मानस हारती है, उसकी हलक भी उसमें मिलती है। हलके पला चलाव कि काँग्रेस अपनी जिम्मेदारी को महसूस कर रही है।

साथ ही, इसमें चार बाँद लगा जाते, यदि काँग्रेस अपनी भुँले भी दिल रोल कर सामने रखती और उन्हें कष्ट करती। कम-से-कम उस एक चीज का जो निकल उसे काना ही चाहिए था—कैरल में चुनाव के लिए मुसलिम लीग के साथ गठ-बन्धन। देश का हर नागरिक जानता है, काँग्रेस ने जो कष्ट उठाये हैं और रह-रह कर महसूस भी करते हैं कि अगर कैरल में काँग्रेस ने कैरल उठा ही पाएँ तो वह दुःखद फल नहीं उठाया होता, जो आज देश में साम्यवादी समस्या यह रूप नहीं लेती और हमारी एपत्ता इतने बड़े उकट में न पड़ जाती। शायद काँग्रेस ने यह समझा कि इस तरह कुछ मानने से पार्टी की तुकड़ाम भूलेंगा। भारत हलके देश को ही बरकर पानावा पड़ेगा। मजबूत होकर यह काना पकवा है कि आज काँग्रेस के चिन्तन और प्रयत्नों में, काँग्रेस पार्टी पहले आती है, भारत देश काय में।

नियोजन और विकास
काँग्रेस के चुनाव-घोषणापत्र का काफी दिक्का, लगभग तीन-चारों दिक्का देना ही आर्थिक गतिविधि के सम्बन्ध रखता है और नियोजन तथा विकास की क्षमता, गणतन्त्रवादी और समाजवादी पर शीतली बन गई है। उसमें कहा गया है कि अनेक लक्ष्य और लक्ष्यो का सामना करने हुए काँग्रेस, अपने का लक्ष्यो के घोषणापत्रों के देखी रही है। अगतिशील समाजवादी अर्थनीति का एकमात्र रूप रहा है और अर्थिक के विकास न स्वतन्त्रता पर उसने पूरा भर दिया है। और-पत्र के अन्त में :-

“हामने की काम है, यह बहुत प्रियकर है और हर अरसे में बहुत ही नरउमोदियाँ और नाशामयारियाँ भी हुई हैं। लेकिन गतिविधि और भुँले के बावजूद और हर हाथ भुँले पानी साठुटि मुहोदोके के बावजूद भी विचारधारा ही-सुद-व संकेतों के देना होने वाली कतिनारवों के बावजूद, हिंदुस्तान की जनता के कष्ट हलती मान्य ही-पत्र-पत्र की

आपकी गतिविधि की सफ लयाकर बढ़ते रहे हैं।”
इससे हीन इन्कार करना? अगर इस तरह है कि इस “ही-पत्र-पत्र” का मूल सुद उसके अर्थनाथ याचितो के नामों को रख है। अर्थात् विरहित है कि यहाँ की गयी की चलने वाले से महसूस करते हैं कि हम आगे बढ़ें, अगर जो से-पत्र-पत्र-पत्र है उनको देना लयात है कि हम नहीं के नहीं पड़े हैं।

आर्थिक विद्यमता और बेरोजगारी

भारत के संविधान में हर तन्त्र पर अर्थ और विद्या गया है कि देश का आर्थिक नियोजन इस पद्धति से हो कि निरमत्ता कम हो और लोग एक-दूसरे के ज्यादा निकट आये। इस चुनाव घोषणा-पत्र में भी कहा गया है कि भारत की दुनियावादी समस्या केवल यह नहीं है कि लोगों की रहन-सहन का स्तर उठाया जाये, बल्कि यह है कि तेजी के साथ सामाजिक और आर्थिक समानता स्थापित हो। उसमें वेतानवी दी गई है कि व्यक्ति को प्रोत्साहित करने के लिए साम्य व सुधिया तो मिलनी चाहिए, मगर वे इस प्रकार से न दिखें काँच कि समाज में ज्यादा विपत्ता बढ़ जाये और कुछ लोग दूसरे का घोषण करते रहे। यह विद्यमता बढ़ा सुदर है और आशाकरक है।

लेकिन दुःख की बात है कि घोषणा-पत्र के हर बात पर कोई प्यार नहीं दिख कि हम देख क्यों नहीं देना हैं, नियोजन के बावजूद, आर्थिक विपत्ता बढ़ी है। यही नहीं है, जो हमारे हीन-दुःखी मुश्किल समझ रहे, उनकी दृष्टि और भी ज्यादा कमजोर पड़ गई है। किने आश्चर्य की बात है कि

देश में जो औद्योगिक कल्पनान्वित, जनम को भुँले लगी है, उसका ६० प्रतिशत, कैरल काय परिवारों के हाथ में है। बावजू, लक्ष्य और उरर के कालान्तर-मूल-मूलों को भीनीनी बनने का यह है। देश की आर्थिकता में जो बढ़ि होनी है, उनका लाम जोड़ों तक ही सीमित है। घोषणा-पत्र में कहा गया है कि उन्को

द्वारा खदर की आमदनी पर पबन्दी ला रही है और आर्थिक विपत्ता की कम होनी है। अगर सच यह है कि जिसके दस साल में, प्रत्यक्ष टैक्स (आइरेक्ट टैक्स) में कमी आई है और प्रत्यक्ष टैक्स (इन्डायरेक्ट टैक्स) बढ़े हैं। इसका प्रभाव यह है कि

१९५१-५२ में देश की आमदनी बढ़ी ६,९०० करोड़ रुपये थी, १९६०-६१ में १४,९०० करोड़ रुपये हो गई। लेकिन इस दौरान ही इन्कम टैक्स की आमदनी की प्रतिशत टैक्स की आमदनी की प्रतिशत १९६० के पट कर १८६ लाख वर्षों। फिर, “आय और उम्पयि” पर १९५१-५२ में प्रत्यक्ष टैक्स द्वारा कुल टैक्स आय का बढ़ा ३२१ प्रतिशत थी, १९६०-६१ में यह २९५ प्रतिशत ही रह गई। और प्रत्यक्ष टैक्स की आय ५९-९ के अक्टूबर ९२० प्रतिशत पर पहुँच गई !!!

नियोजन के दौरान भी सेतिहर मजदूरों की जो-इच्छा हुई है, उस बारे में सरकार की ओर से बुरी नीतिगत मजदूर को-मिनिटी रिपोर्तों की निकल गई है। उसके अलावा, हर मजदूरों के काम के दिन घटे हैं, इनकी औसत मजदूरी कम हुई है और नरुं का नो प्यार बढ़ गया है। आर्थिक विपत्ता की इतकी भयानकता का अन्तगम इतने हो सकता है।

और नहीं एक देयनगारी का खयाल, यह लयातार बढ़ रही है। पवती और दूसरी योजनाओं के बीच लक्ष्यी विपत्ति

- (१) दूसरी योजना के अन्तर्भ (सालों में) में सुदने से-पत्र-पत्रों की संख्या— ५२
- (२) योजना के हीनम में काम करने वालों की इच्छा— १००
- (३) दूसरी योजना में काम पाने वालों की संख्या— ६५
- (४) योजना के अन्त में बेरोजों का संख्या— ८८
- (५) कम काम पानेवाले की संख्या— २५०

उपर से बढ़ती हुई महंगी है। साथ ही देवता में सल्लो-पत्रों ऐसे पड़े हैं, किनास नाय-दुःख, पानी-देना भी बढ़े यही है, किने एक लड़ मरने-उ लया भी उल्टी बन ही दोल। घोषणा-पत्र में इन दोन के निराकरण का कोई आश्वासन नहीं मिलता।

खेती और भूमि-सुधार

हमारा देश देहात में रहता है और उसका आधार खेती है। इसलिए खेती भारतीय अर्थनीति का सबसे महत्त्वपूर्ण अंग है। योजना-पत्र में उसको महत्त्व दी गई है। यह ही महत्त्वपूर्ण गया है कि अनाज के उत्पादन का दूसरी योजना में उद्धर ८०५ लाख टन या १ लीगारने इतने ८०५ लाख टन मिली और उत्पाद ७७२ लाख टन हुआ। लेकिन उत्पाद में अनाज अभी तक आ रहा है और आता रहता।

बड़े पैर की बात है कि अन्त-स्थावतन्त्र की महत्ता नहीं महसूस की जाती और उस पर आसन्न और भी नहीं किया जा रहा। उत्पाद, ईंधन और पत्थन और पर प्यार को देना हमारे लिए यातक विद्य ही रहा है।

उत्पादन निर्भर करता है भूमि विपत्त पर। आज देवते कया है कि जो बगन है मालिक है, वे आम लोग से कुछ कोनें बोते नहीं और जो कोने-बोते हैं, उनके पास बमीन नहीं है, या बहुत कोने है। भूमि का यह ब्यसमान विवरण उल्लूक भूमि में सत्यते कही जाया है। यह नहीं है कि निम्नल क्षेत्रों में अनेक ही बमीन को उत्पादन क्षेत्रों (सोसिय) के बाहर बन गये हैं। लेकिन उन पर अनाज की दे आयक हो तो मुक्तिर हो नी-रुठ कया एक बमीन मिशकतो। इतने कया गये उल्लूक उरर का, बाँद एक करोड़ भूमि हीन परिवार हैं।

हर दिना भी काँग्रेस खुद उररती दीखती है। भूमि समस्या की लक्ष्य कोने पर पर प्यार कलती की और जनता जनार्दन की अन्तग संदेश दे कलती है। लेकिन घोषणा पत्र के देहात नहीं लयातारि बह इतिहासायक की सातिर को उररती उठाते की-पत्रों है। आज यह लयातार की इच्छा में पंक्ती या रही है और उररता काम पानी उठा का रहा है कि लयातार के कारनामों का उररपन करे। यह बरर है कि लयातारदी कोने का कदम लयातार के काँच के ही बावजूद लयातार विद्या, मगर एक लयातार लयातार को प्यारने के लिए काँच को अगुयार कलती चाहिए। देहात न कर, यह उररते लयातार के की उररती है तो उसमें लयातार कति कती वे आ लगी है।

राष्ट्रीय एकता

आज सबसे बड़ा खयाल एकीकरण का है। अगर देहात लगी है, कि देव इच्छा है और हम लयातार काँच लयातार है। कर लयातार, इह लयातार की अन्त-कोर प्यार रही है। योजना-पत्र में उररने अनेक पंक्ती पर विचार किया गया है। उसमें कहा गया कि कतिनारव एर नी-किस क्षेत्रों में आ सुगा और नुसार में उसने एर-कली का रूप दिया। फिर

वे दो शत्रु एक-दूसरे के मित्र बन सकते थे

वह जर्मन सैनिक ।

द्वैतविषय के अनेक नगर में एडिच कायेक नामक एक अमेज प्रदेश की जर्मन सेना ने १९१६ में एक अवसर के काल गोवी मार दी कि उनके कुछ वेल्डियन के सैनिकों की वहाँ से मृत्यु मागने में मदद की थी। इसी मार के बाद वेल्डियन भी। यह मादकी की केना शुभ्रय नरी तन्मन्ता के बाकी थी। मुझे बस इस घटना का पता चला तो मुझे यह विषय में कुछ अहंसी भी। इस घटना का सच्चा अर्थों देना विचलन २० वर्ष बाद मिल और मेरे हृदय दबीभूत हो गया ।

इसकी कानि को एक भिन्नविधन कलितयान में के साया गया । वहाँ उसकी एक दुर्घा में पैदा कर बना दिया गया । गोली तथा बन्दूकों से खेल के सैनिक विन्नीने शरीर बना ही था, उसके केवल १५ बदन पर लगे थे । उस मीन की टुकड़ी के अग्र-र ने सैनिकों को बन्दूकें दानने का आदेश दिया । म्यारद बन्दूकें उठ गईं, सैनिक एक ही जगह पर ।

अधर शेष के बस उठा और बलका, "स्यल, हुन क्या 'आर्डर' का बलन नहीं करोगे ?" "स्यल, "श्रीमान, मैं एक सैनिक की हुना नहीं कर सकता ।"

अधर ने सिलोस की गोली से सैम-क को मारा क रीप और यह सिलोस, "गोली चलाओ !"

मिड एडिच कबैक का शरीर उन म्यारद बन्दूकों की गोलियों के बीच रिया गया ।

स्यल ने अपनी आत्मा की आशाय दूर की थी । वह जानता था कि अधर की कला चलन न करने का अर्थ है मृत्यु । उनसे आत्मा की आशा शिरोचरनी की । सैम-क ने आदुवी काकि पर निशय मारी । उनसे चार डेकर भी श्मशानि पद नहीं छोड़े ।

सुविषय । इसी ओर हम गोचलकों और शिराचोकी को देखें हैं, वैसा कि इस रूप में पहले कहा गया है, इनमें से कुछ को वैज्ञानिक तरीकों के आधार पर चलायी जाने वाली रेडियो-वै के मानदार नमूने हैं । अन्य गोचलकों की कार्य-प्रणाली इन्हीं के सिद्ध माध्यम के रूप में इन इन मान-दार गोचलकों के द्वारा उदाहरण पारिगे । यह कहना शरिफक है कि इन आगे की कहने में । काम बहुत बड़ा है । गोचलों के अन्त में यह एक ऐसा काम है, जो हमें अपने शरिफक है । तथापि हमें क्या है कि

सोनी हलकों में परस्पर-कहणों के यह सत्यन हो लगेगा कि लोचनी गोचलन के दौरान में ही ऐसा अंतर पैदा । कि पाय काविलि मात्र और बाद के अन्तःकारण-प्रकार अथ ही काम, पाय तिरके भावनात्मक अस्तित्व में यह कर देता है । अंतःकारणों को अर्थ-अवधारण में मद्दतपूर्ण शक्ति-मन बाध, मान-सोच में रूढ़, कर्तवी भावनाओं अथवा काम की अवधारण और चरणोंको शरारक के रूप में लक्ष्य के सत्यन और उसकी शरित में निराल-मोचनार करती रहे ।

इस घटना के पूरे विवरण को जब मैंने कल्पन से निकलने वाली की प्रसिद्ध मानसिक-विद्या "पीन न्यू" में देखा, तो इसके छोटे ही मेरे पाठ शरिफक के बहुत-के पत्र आने प्रारम्भ हो गये । कोई सैम-क के परिवार के विषय में जानना चाहता था, कोई मृत्यु का कि क्या उसके नाम से कोई शायदगार जर्मनी में बनी हुई है ?

दुःखकर के नाम से इन्की के किसी स्थान पर उनकी शरुद्ध सेवाओं के कारण एक आदरपत्र बनी हुई है, ऐसा मेरे अनेक मित्रों ने मुझे लिखा । सैम-क के परिवार के विषय में कुछे कुछ पता नहीं चल सका, तथापि मैंने बहुत सेवा की थी ।

वह फ्रांसिसी सैनिक !
सुविषयी जर्मनी के "सैन्-रोलर" क्षेत्र में सन् १९१४ के प्रारम्भ में फ्रांस की सेना चुन गई । एक छोटे-से गाँव में जिल्के छोटे-पुत्र केना में अर्ली होकर वहीं शरार चले गये थे, फ्रांसिसी सेना के अग्रगण्य पर, गाँव की सभी बिरों और बच्चे अपने-अपने घरों के देलने के लिये बाहर निकल गये । गाँव के बाहर पीन की गाड़ियों की शरार लगी थी । पीन इपर-उपर बढ़कर कदनी कर रहे थे । एक सैनिक गाड़ी से उतर कर गली में पड़ा । उसकी कम्मर में

एक हथौड़ा लटक रहा था । गाड़ी बन्दों तथा शिरो से उलटकर गरी हुई थी । अरु-रमात् उस हथौड़े में आग लग गई । यह सैनिक जानता था कि कुछ ही क्षणों में यह गोला चट बागना और उसके साथ वे ही और बच्चे भी काल के प्राप्त बन पायेंगे । यह सैनिक जोर से बिलगल, "साचनान" । पर-वे मायोनी नासिडी मास नहीं समझते थे । यह सैनिक अब भी उस हथौड़े को बँक कर अपनी जान बचा सकता था, तथापि इसके अन्वय शिरो की तथा बन्दों की जान बचा, जो उस सली गली में लड़े थे । उनसे उन निरापरा रहिगों की तथा मायुष बचकों की जान कीकी सवादी और छोटे को नहीं रँका । यह वेले स्थान पर इस प्रकार खरा हो गया कि शरीरियों तथा बन्दों की जान बच गई, जन्मि उनके शरीर के दुकड़े-दुकड़े ही गये ।

उस फ्रांसिसी सैनिक का नाम नहीं मालूम, पर उस गाँव के लोग उसकी बहादुरी की नहीं भूलेंगे । फ्रांसिसी तथा जर्मन बन्दे शिरियों के एक-दूसरे के दुश्मन रहे हैं, पर यदि इन दो देशों के वे दो अमर सैनिक, शिरियों अपनी आत्मा की आशा को खदान लिया था, कमी एक दुर्घरे को मिलने तो एक दुर्घरे को दे रणा केडे ।

● 'दुहृकुहृय-बीर-केव' का- 'जोरोर' शक्ति के अन्दरित । अन्वयकर : हरिभ्रमर फल, गोली आभन, पत्ती कल्याण (वि० बराला) ।

इसके सिद्ध प्रस्ताव किया है । कुछ उलगादी शिक सेवकों ने, जिनके दिनों में इसके शिक मारी उकटा है, प्रत्यक्ष आन्दोलन भी प्रारंभ किया है ।

जिना सहोदर नमल । अल्पस की सोहनलाल मुखिम ने ९ अक्टूबर १९११ को शरार को सब हुकनों पर अन्वयार मारी मीन का कार्यक्रम शरार मीन सादा-बन्दी के बल में लोकमत जावल करने की चेष्टा कर रहे हैं । उनके बल में अक्टूबर को हुजुतालों में कई पहिलानों भी शांतिनक हुईं ।

परन्तु मरु सह आन्दोलन ने एक मया ही मोड ले लिया है । कई गाँव के प्रयास के बाद मद्रास के पयोरुड नेना की सफल-मय कोणल गदुवाउ लीडे और वे अन्-रिम शिरागरिद के अल्पस तिरीरीष निराचिण हुए हैं । १४ अक्टूबर की बल उनसे मयकुद-न की शायप शिपाने के समारोह में शिडे के सफल अशिरारी और सार्वजनिक कार्यकों उपरिषय वे (साता-शिक 'कर्ममि' भी शिरो में अनुत्तर) बल उन्नीने करा ।

● मैं नहीं परलोत्सता तथा शादे लीन ही सवे कमाने नहीं आया हूँ । मेरी एक-काम कामना यह है कि मिले में इतने शरारक-बन्दी की जाये । मैंने वे शरारि हो मारी च-मोडगुण, म० अजाहलाल नेरक और मारी गवेरुमवादी की एक हाउर खचना है ही है कि यदि शरारक-बन्दी के बारे में इतने लोचनक आधारकाम न मिले तो १५ अक्टूबर १९ के अर्थ 'दर सिक' में शिरो की समय खराबाइ बल अन्वयार मादम कर दूँगा । इतने भी अया है कि इत शिधान में शरारता मात करनी, मैं शरिडे के प्रतिनिधियों तथा जनता से अनीक करता हूँ । वे इत कार्य में इतने पूर्ण सहयोग दें ।"

विदारे गदबका, —सुन्दरलाल मधुगुणा

गदवाल में शराब-बन्दी

सुसाराखण में देस के कोने-कोने से आने वाले हवायों कीपिचानी फलक शरिदेरार ।

मोडर दुर्घटनाओं के बाद शरारक-बन्दी की ओर धरकार का प्यान नहीं मया, संकेत सत्यन अल्पक प्रकार करने के सिद्ध शरारक की हुकमों पर निराचिणित खनन-मय कामने गये हैं ।

"हर क्यकि कानूनी जोर पर देशी शरारक की शरार कोतय एक मयार खे जा सकता है और शरारने शरार बल भी सकता है ।

१-५-१९१९ आशा से—'एस्ताराज कमितनार, द्रमहाबाद' शरारक में शरारक-बन्दी के सिद्ध कर शरारने शरारकों में शरारक शरारकों में शरारक की है । बगोली शिडे में तो शरारक शरार शिरिष मिय अन्वयदर-शरारिने ने

"नई तालीम"

शिक्षा विषयक सर्व सेवा सच
का मुखपत्र

- शिक्षा के सिद्धान्त
- शिक्षा की प्रवृत्ति
- शिक्षा-केन्द्रों की योजनाकारी
- शिक्षा के सामुनियतम प्रयोग
- शिक्षा और अहिंसा

शिक्षा । सम्बन्धित अनेक प्रश्नों पर प्रकाश डालने वाली मासिक पत्रिका ।

"नई तालीम"
शरारक

देशी प्रकाश को मनोहृत
पता : मजिन शरारक सर्व सेवा सच
को० शरारक (दर)
मद्रास



विहार की चिट्ठी

वादापीडित क्षेत्रों में सहायता-कार्य

'वीया-कट्टा अभियान' का सिंहावलोकन करने एवं आगे का कार्यक्रम बनाने के लिए १० अक्टूबर को विहार सर्वोदय-मंडल की कार्य-समितिके सदस्यों एवं विशेष आमंत्रितों की बैठक महिला चरखा-समिति, पटना में हुई। निम्नलिखित कार्यक्रमके अनुसार बैठक में कार्यनिष्पत्तियों ने गत बैठक की रिपोर्ट पढ़ कर सुनायी, जिसे बैठक ने सर्वसम्मति से स्वीकार किया। गत बैठकके निर्णयानुसार विद्ये गये कार्यों का ठेका-बिठाव बैठक में प्रस्तुत किया गया। विहार सर्वोदय-मंडलके संयोजक, श्री रामनारायण सिंह ने—बो बैठक शुरू होने के कुछ देर बाद वादापीडित क्षेत्र से धीमे बैठक में शामिल हुए—बाढ़ एवं तूफान की विभीषिका का वर्णन कर सम्बन्धीकरण के नदियाँ एवं मत्स्योद्योग की स्थिति का हृदयद्रावक वर्णन किया, जहाँ प्रथमः १५ और १५५ व्यक्तियों की चरहेट में यह कर भर गये।

आपने विस्तारपूर्वक बतलाया कि गाँव में पान के पेड़, बौंछ के साइध एवं केले लागू के आश्रय से रहने लगे हैं एवं हवाओं जानघों की जय लज रही है, जिसे धुने पाला कोरे नहीं है। बैठक में श्री रामनारायण बाबू के आने के पहले फिरी की भी बाढ़ की शराव-लीला का धोरा भी मान नहीं था। लोगों के हृदय लाल की बाढ़ प्रतिबंध की बाढ़ से कुछ अधिक बेसी ही लगती थी। रामनारायण बाबू ने बाढ़ बाढ़ से बचान और नाल की क्षति का ओलों से बचाव करने के लिए, छत्र भी बचप्रायः नारायण ने बड़े मार्मिक शब्दों में बैठक से वादापीडितों की सहायता करने का निवेदन किया।

बैठक ने सर्वसम्मति से 'वीया-कट्टा अभियान' की तत्काल स्थिति कर वादापीडितों की सेवा एवं सहायता करने का निश्चय किया। निम्नलिखित चरखा-समिति के २, मुख्यालय के ८, शाला के १०, दरभंगा के ५५, सहायक के ४, पूर्वियों के ७३, संयोजक पटना के ११, पान के ११, इमारत-बाल के २ एवं बचप्रायः के ४ कार्यकर्त्ताओं की सेवा एवं सहायता में पीडितों की सेवाएँ शुरू गये। हृदयके अतिरिक्त मुखेरे जिले के ५२ एवं भागलपुर जिले के ३ कार्यकर्त्ताओं आने-आने में भाग-वहाने में लगे थे। पटना जिले के ११ कार्यकर्त्ता बाढ़ एवं विहार सर्वोदय-मंडल में सेवा करने लगे। सिखा जल-सामोयोग संघ, मुजरे के २१ कार्यकर्त्ताओं के जो श्रम से ही पीडितों की सेवा का प्रारंभ किया गया।

विहार सर्वोदय-मंडलके निवेदन पर विहार राज्य के बाहर के कार्यकर्त्ता भी 'वीया-कट्टा अभियान' में सहायता करने आये थे। वादापीडित क्षेत्र में सेवा करने के लिए पत्र वीया-कट्टा अभियान कुछ दिनों के लिए स्थगित किया गया तो उनमें से कुछ कार्यकर्त्ताओं को हट कर गये। डेकिन उधर प्रदेश के २५, मुख्यालय के १, मीरत के २, मीरत के १, आला के ५ एवं उजोग के २, कुल ५४ कार्यकर्त्ताओं ने वादापीडितों की सेवा करने का निश्चय किया और पीडित क्षेत्र में चले गये।

इस प्रकार विहार के २६८ एवं विहार के बाहर के ५४, कुल ३२२ कार्यकर्त्ता वादापीडितों की सेवा करने में लग गये। इन कार्यकर्त्ताओं ने बर्तनी मनुष्य-सामग्री एवं सैकड़ों कुर-शायों को बलया एव दानपान। उड़ी लघु के इतनी दुर्गम निकल रही थी कि उत्तरार्ध द्वारा भेजे गये बोट भार में भी लग चुके थे अनाक-कोसी, डेकिन सर्वोदय-कार्यकर्त्ताओं ने ठेका-भाव में मेरिड होकर सिना फिरी अनाकनी के शायों को बलया एवं दानपान, विद्ये में मिल लक्ष्मी-प्रभोयोग

संघ, लक्ष्मीचरण के कार्यकर्त्ताओं का प्रयास विदिप प्रसंगीयों के

वादापीडितों की सहायता करने की भी बचप्रायः नारायण ने विहार लक्ष्मी के मुख्य मंत्री से मिल कर दैर-लक्ष्मी उत्तर-पर वादापीडित बहायता जलमि कमाने का सुझाव दिया। भी बचप्रायः नारायण को अत्यन्तवचक करने के हिले जाना अभियान था। अतः आगरे १० अक्टूबर से वादापीडित क्षेत्रों की यात्रा करने का निश्चय किया। निम्न के अनुसार १० अक्टूबर से २२ अक्टूबर तक मुखेरे जिले के पश्चिम, लक्ष्मीचरण, सुवंदना, लालपुर, लखनपुर, दलमिया, केरलपुर, बलिया, डिम्पुर, भागलपुर जिले के सुन्दरानाथ और नालपुर पूर्वियों जिले के बारी और मनिहारी, पटना जिले के बाढ़, मोरनाथ, अररिया, चम्पारण और विहार तथा गया जिले के नरदा, रावलीगंज और मोरिन्दर जाने के वादापीडित क्षेत्रों की यात्रा की।

भाद के विलेजिमें सामाजिक एवं सामूहिक कार्यकर्त्ताओं के अतिरिक्त अधिकारियों के भी सेवा कार्य सम्पन्नी विस्तार-कार्यकर्त्ता की। कामेल, प्रभासमानवादी एवं कम्युनिस्ट पार्टी के कुछ विभागकी उन्नती याना में साथ थे। आपने पैरल, रिहता, नाथ, भीर, ट्रेण एवं हवाई सहाय के वादापीडित क्षेत्र का निरीक्षण किया। साथ में कर्मठ समाज-सेविका श्रीमती प्रमथवी देवी मुखर साथ थीं। विहार-लक्ष्मी के संशरीय तथ्य एवं केन्द्रीय वादापीडित सहायता-समिति के अध्यक्ष-मंजरी भी लखनपुर स्थानी में भी व्यभिचार सेवकों की यात्रा आरंभ कर ली।

पीडितों की हालत देख कर सब करते समय भी बचप्रायःकी हृदय गल ब आला का तथ्य अत्यन्त रुक जाती थी। दूर देहात में चले जाने के कारण व समय पर प्रथम न नदी क्षेत्रों के कारण कई

बार बार बने पान रुक जाना नहीं मिल। समय पर जीवन आदि नहीं मिलने एवं कठिन परिश्रम करने के कारण रुकी और रुकी हो गया, फिर भी आपने अपनी यात्रा जारी रखी। कई दिन जो रात में सुतर भी आ गया। मिर्चों ने सुतर के कारण यात्रा स्थगित करने का निवेदन किया, फिर भी वादापीडितों की हृदयप्रसन्न वरुणन ने उन्हें अपनी यात्रा जारी रखने के लिए मजबूर किया और आपने यात्रा जारी रखी।

वादापीडित क्षेत्र की यात्रा के बीच से ही आपने सहायकारियों में अत्यन्त बचप्रायः प्रकाशित किया, विद्ये में विहार, सिधेनगर पटना की बनला से वादापीडितों की सहायताएँ नगर लगे, नये और सुदाने करने एवं अन्य सामग्री हस्तगत करने का निवेदन किया। उनके निवेदन पर विहार की बनला में दोषी बना कर पीडितों की सहायता के लिए चम्पा हड़दंडा बनला शुरू किया।

विहार सर्वोदय-मंडल की ओर से भी वेदनाय प्रदात वीरपी 'रीलीक' के 'ईबाब' बनाने गये और आपने भी पीडित-क्षेत्रों की सपन यात्रा की। विहार सर्वोदय-मंडल के संयोजक श्री रामनारायण सिंह, भूतपूर्व संयोजक श्री चम्पलक्ष्मी प्रसाद, श्री विद्येनर धारण, श्री पथम बहादुर सिंह, श्री महादीर शर, श्री तुनाय धामों आदि भी सहायता-कार्य में लगे गये। सर्वोदय-सम्पत्ति सिंह, गोखले वीरपी, निर्मल कुमार सिंह आदि ने तो कुछ से ही पीडित क्षेत्रों का दौरा शुरू कर दिया था। इस प्रकार कार्यकर्त्ताओं ने क्या चलते एवं दृष्टान्तों के अतिरिक्त कुम्भों उजदावा, मन्वेरी कार्य, पत्र-निर्माण आदि कार्य भी किया, निरवक अरर पीडितों एवं अन्य समाजसेवकों पर जारी पत्र।

श्री चम्पलक्ष्मी नारायण से विहार-लक्ष्मी के मुख्य कार्यकर्त्ता श्री मुखर, रिहता ईबाबों की टी०पी०सि० पटना-कमिश्नर श्री लोदीन एवं मखलपुर के कमिश्नर श्री वेदिए आदि ने पत्र भेजे और रिहता सम्पन्नी प्रकल्प पर विस्तार-पूर्ण चर्चा की। आपने अन्तुग के आधार पर उत्तरार्ध की रूप सुहाय भी दिये, जिसे उत्तरार्ध ने तो मान लिया,

डेकिन तंत्र के केन्द्रीकरण के कारण, लक्ष पर उचित अतिरिक्तियों को आदेश नहीं मिलने के कारण राहत-कार्य में कई प्रकार की दिक्कतें बराबर होती हैं।

विहार सर्वोदय-मंडल की कार्य-समिति के सदस्यों एवं विशेष आमंत्रितों की बैठक २५ अक्टूबर को विहार सर्वोदय-मंडल मुखेरे के कार्यालय में हुई, जिसे आगे के कार्यक्रम पर विचार-समिति किया गया। पीडित क्षेत्र में काम करने वाले कार्यकर्त्ताओं के अनुभवों के आधार पर १ दिवस, ६२ एक पीडितों की सेवा करने एवं सामूहिक भावना बनाने के लिए क्षेत्रीय विद्ये में लक्ष्मीचरण, बरहिया, डिप, बरियापुर, अररिया, लक्ष्मीचरण और लक्ष्मीचरण; भागलपुर जिले में सुन्दरानाथ और भागलपुर; गया जिले में नरदा और बकरीचरण और पटना जिले में हद और विहार तथा पूर्वियों जिले में सुवंदना, लक्ष्मीचरण ६५ तथा-मैत्री का कार्यक्रम करने का निश्चय किया गया, विद्ये में संघ कार्यकर्त्ताओं दिये। इन वीर कार्यकर्त्ताओं में से गापी स्मार्क निधि विहार शाखा के दो, पंचास-संयोजक के एक एवं विहार सर्वोदय-मंडल के दो कार्यकर्त्ता दिये। मन्वेरी स्मार्क निधि विहार शाखा ने दत्तक-हवा करके सहायता-कार्य एवं कार्यकर्त्ताओं के लिए स्वीकृत किया है। निधि के संभालक भी उत्तर-प्रदेश में निधि द्वारा सहायिता प्राप्त-सेवा केन्द्र, मखलपुर-मैत्री एवं मखलपुर-पटना के कार्यकर्त्ताओं की वादापीडित क्षेत्र में सेवा करने का निश्चय किया।

पीडितों के संघर्षों को करोड़ों रुपये को बरताने और विहार उत्तरार्ध के अतिरिक्त कई गैर-उत्तरार्ध संघर्षों में ही इन काम में लगे हैं। डेकिन सर्वोदय-मंडल के धार-सेवा के अतिरिक्त जोड़ी-जोड़ी करके की वीरों द्वारा पीडितों की सहायता करने का निश्चय किया है। इन बरतनी की वीरों में रोहता के लिए विद्ये का लक्ष्य एवं विद्या, पर काम करने के लिए लक्ष्मी-सिन्हा पासनी के लिए बाड़ी आदि शामिल हैं। पीडितों की भी क्षति हुई है जहाँ पूर्व में तो उत्तरार्ध कर लक्ष्मी, न हदवी कोरें संस्था ही। बननी क्षति-पूर्ण अनाथ स्वयं कर लक्ष्मी है।

श्री चम्पलक्ष्मी नारायण ने पीडितों के बीच भी आपण दिया, उजवा मुक्त शर रही था कि उत्तरार्ध एवं अन्य संघर्षों की सहायता को दही बनाने के लिए गलप दूध में बानन लोहा है। निवेदन एवं बन्धन-बन्धन है और भारी सहायता जमाना। श्री चम्पलक्ष्मी बाबू के माध्यम का भरत वादापीडितों की 'सयमान की उन्नती की सहायता करता है, जो आनी सहायता आप करता है।' यह बचप्रायः सहाय करणों के एवं बर-लेक, आदि के निर्माण-कार्य में उत्तरार्ध से उन्नत बनेंगे, वही आशा है।

—रामनारायण सिंह



'कार्ट' और 'क्रेडिट' का उल्लेख नहीं होगा—मं० प्र० में जोर की अधिकतम सीमा—उत्पत्तान में विहार के माधुवीयियों की सहायता—मोदीनगर सर्वोद्योगिक मंडल—जोगीय में क्षेत्रीय सर्वोद्योग-सम्मेलन—दागारामजी का लेखा-जोखा—बाराखसी में राष्ट्रीय सुस्नान-पंचादेह ।

केंद्र पर प्राचीन सरकारी में यह मान था कि सरकारी मोटरों के लिए, प्रथम संस्थाओं में दार्जिलिंग के लिए और दूसरों को कार्बाई में जो रजिस्टर प्रथम बनाई इरीयाल होते हैं, उनमें कृषि या समुदाय 'कार्ट' और 'क्रेडिट' का उल्लेख आगे के नहीं किया जाया । केंद्रिय विद्या विभाग के अन्तर्गत दिवनी, अम्बर, बनारस और काठिन निकेतन के जो बार विद्याविद्यालय हैं, उनमें भी इस प्रकार की विद्यार्थिणी भी गयी है ।

मध्य प्रदेश सरकार में घोषणा की है कि कौत की अधिकतम सीमा के रूप में जो कानून राज्य-सरकार में बनाया है, वह १५ नवम्बर '१९ से हटारे राज्य में लागू होगा । इस कानून के अन्तर्गत मध्य-प्रदेश में लैडी शाही समीन की अधिकतम सीमा एक एक के लिए २५ 'मिटर' तक मानी गयी है ।

जयपुर में विहार के गांधीजी की स्मरणार्थ के लिए राजस्थान समग्र सेवा-दल द्वारा १० नवम्बर को प्रदेश के प्रमुख स्थानों पर कार्यक्रमों के प्रतिष्ठितियों की बैठक हुई, जिनमें विशेष विचार गया कि गांधीजी के लिए माल में बाह्य-व्यय अभाव, कष्ट, लक्षण और फल बढ़ाये किमा जाय ।

इस अवसर पर राजस्थान समग्र सेवा समूह के अध्यक्ष श्री जगजितलाल जैन ने एक भाषण में प्रदेश की जनता के विहार के सहायितों की सहायता करने के लिए निवेदन किया ।

मोदीनगर, मेरठ के सर्वोद्योग मिय मंडल के संस्थापक में ६ दिवसपर की घण्टावृत्तों के लिए सामूहिक सभा हुई ।

वाराणसी, गया में ६ दिवसपर की भी मोदीनगर की बैठकाल के कार्यक्रमों में सर्वोद्योग मिय मण्डल की स्थापना हुई । मिय मण्डल के सर्वोद्योग सहायितों के लिए मोदीनगर पर अर्थसहायता आयोग का आगमन किमा । उसमें १५४ रु० ५० गेने प्रथम मूल्य, जो विहार राज्यपाल के सहायितों को, परना को देने गये ।

मोदीनगर, मिला उत्तरप्रदेश के प्राथमिक सर्वोद्योग मण्डल आयोगिक सर्वोद्योग मण्डल की सहायितों की अर्थसहायता में सहायता । समीजन का उत्तरप्रदेश की सहायिता विदेशी ने किया । मोदीनगर के अपने मण्डल में मोदीनगर पर प्रथम माल । सम्मेलन में श्री महेश कुमार 'मानस' का भी भाग्य हुआ । सम्मेलन में ५० भार-वहनों ने भाग लिया । २५ की सहायता में, इतनी में भाग

लिया, यह इस क्षेत्र के लिए नहीं बात है । इसके बराबर नवनों में अपनी सहायिता हुई ।

कलकत्ता के सुप्रसिद्ध लेखक श्री दातारामजी मकरन्द ने एक पत्र में लिखा कि दिवाली के इस दिवाली तक के एक वर्ष के कार्य की जानकारी और-दो देते हुए लिखा है :—६०१२ रु० ८९ नये की साहित्य विनी; १०२२ रु० ७ नये की भूदान-पत्र पत्रिका की मित्रि हुई । ८१२ रु० ६ नये का सम्प्रदायन मित्र और एक परिवारों के ७२ माहक करे ।

श्री. मा. सुलोक प्रकाशक रूप की ओर । नवम्बर में 'हरिजन' ने जलन हुए 'वेदिक' 'भेदोती' द्वारा नागरी प्रचारिणी सभा, काशी के मजम में १५ नवम्बर के १९ नवम्बर तक प्रथम राष्ट्रीय सुलोक समारोह मनाया जायेगा । इस अवसर पर सुस्नान की एक प्रदर्शनी भी होगी ।

वित्तालें बंधई का 'सहयोग संघ'

(१९२९) के ३०-११ के बाईं वर के दिवसों के रूप में १९२९-३० मित्रों ने वित्त का 'सहयोग संघ' की स्थापना की । यह एक प्रकार का सहायता है, जिनमें हिन्दुस्तान के विभिन्न भागों के विविध लोग सहयोगी भावना से काम करते हैं ।

अम्बरान, कच्छों के सदर-केन्द्र, सार्वजनिक धार्मिक, राजकीय कार्या, लेख, निवृत्ति आदि गतिविधियों के क्षेत्र में नवम्बर आदि और धीरे धीरे अनेक 'पट्टी' की सहायता करने की भावना का विकास हुआ ।

बिजिलसा-न्योजना का विचार

सुधमाल में श्रीमण्डल के टीके, सम्पत्ता, कच्छों की स्थापना परीक्षा आदि विशेष कार्यक्रम लिये गये । नवम्बर की भी विचारणीय की मोर्चों भी थीं गयीं । कच्छी-कच्छी मोर्चा पर 'सांख्यिक बैठक' में सर्वजनिक निर्बंध लेखर मोर्चा सर्व में सुध समुद्री-सीमा-परिषद् की स्थापना की विचार गये । इस के साथ विचारों के लिए एक फंड है और उल्लेख सहायित-सदस्य के. वरिष्ठ की सेवाएं उल्लेख सेवी रखती हैं ।

सुध की स्थापना के एक साल के भीतर ही वरगी सोन विचार के बाद निम्न योजना बनायी गयी । जिन परिवारों की आयननी की रचना के एक-४, जिनकी भी दो से दो-४, जिनकी तीन से दो से तीन ४, जिनकी चार से दो से चार ४ आदि-बचत देते हैं । वरुके में सदस्य परिवारों की नि सुलोक विचारों की आदि हैं । उत्तर के सुधों पर 'बिजिलसा' की दो ४ देनी परती हैं । वरुके ५० परिवारों ने इस योजना में भाग लिया । जो सहायितें देना वेवगी के तौर परकित करती

गया जिले के वाद्युपीडित क्षेत्रों में दिवाली !

गया जिले के नजदा सारहिनीन में अतिथि और सुस्नान के कारण क्षेत्र में जो कृषि हुई है, उसके लिए गण नगर के नागरिकों ने वयापक सुधी-सुधी मदर करने की कोशिश की है । साधन ही कोई ऐसा वां रहा हो, जिनमें अपने पवित्र भाव्यों के लिए फल, पैसा और अनाज आदि के रूप में सुधन हुआ दिया जा हो ।

राजस्थान सुधक रूप, जैन सुधक नलक, सुधो-मती, दीदी नलक, नार-स नर, साधु-पिंड वहा-वहा सपिदि, हायें पत्थिक-वयोरी आदि गण की स्थापना में सहायक कां काम किया । गया के सहाय ने पाँच को मन समाज वितरण करने का विचार किया । हिन्दुस्तान जोडर स्वीदेर, विहार-सपीर ने दो हजार रुपये के दावा किया ।

दिवाली के अवसर पर निम्नप्रस्तुत भाव्यों के लिए उपरोक्त सहायकों द्वारा की गयी मदर विद्येय मदर रखती है । स्वाधि

सब लोगों की पूरी मदद तो नहीं की जा सकी, किन्तु सुधे-सुधे हो-परे में भी दिवाली के दीपक देकर एक तवीर अवषय लिया जा सकता है ।

गांधी स्मारक जिति की ओर से नयागा, पच्छी मण्डल के 'रिलीज केम्प' में दस-बाद कार्कात्त काय कर रहे हैं ।

इस प्रकार गया नगर में वधधि सेवान्वी लीकी ही रही, फिर भी अपनी पीडित भाव्यों ही सेवा और मदर के कारण यह क्षेत्रीय मानवीय मान्यताओं का प्रतीक बन कर अस्तित्व भी । वाद्युपीडित सहायता —विशालकर धार्मी समिति, गया

(२) महेश मोरना-भारतीय, आर्थिक दृष्टि से लम्बर और पारंपर्य । (३) इतके द्वारा सब वरस परी-वर्षों की बिना आर्थिक प्रेरक के स्थान विकिशा की सुविधा मिलती है ।

(४) सॉन्डर और बीमार के बीच आर्थिक सम्बन्ध के स्वेच्छक-रूप रखते हैं ।

(५) सुध की सहायता के माध्याम में चिकित्सा सेवकों को नदरसा दिया और चिकित्सा-सेवकों ने सहायता के माध्याम को और बढ़ाया ।

(६) योजना में सहायक की सब अन्धी-बन्धी आ गयी हैं । इतमें सहायक जन-समिक बनना है । योजना में न तो अर्थसहायता है और न सहायता-सहायता-सहायता भी ।

जो योजना को सफल बनाने में सहाय्य हो सहायता आचना के अतिरिक्त इतक उल्लेख ही एक कर्मिक ही सहायता और सहायक, ने सुधक बन रहे हैं । संघ सहायक है कि सुध योजना का और भी विचार किया जाय, जिससे लोगों को विशेष विचारों की सुविधा मिले के ।

बिहार में 'बीदा-कट्टा अभियान'

भागलपुर जिले में ६ दिवस के १२ अक्टूबर तक चलये गये 'बीदा-कट्टा अभियान' में ८९६ कट्टा भूमि प्राप्त हुई । ७५ रु० का सर्वोद्योग-साहित्य किया । कुल ७८ गाँवों में १९५५ मील की परिक्रमा हुई । सुधसुध गाँव में 'आत्म-विचार' बनाया गया । इस अभियान में महाशय के ४ और उदीका के ९ कार्यकर्ताओं ने भाग लिया ।

दागाराम जिले के अल्पतम राजपुर गावे में ३० सर्वोद्योग मण्डल विचार द्वारा सारहिनी परधानी सेवी कमी । उस समय कुल १९९ कट्टा भूदान किया ।

श्री रामनरेशजी दिवंगत !

'बीदा-कट्टा अभियान' तथा साहिनी-केटी कट्टे हुए १०० २९ अक्टूबर की भी सारहिनी सारहिनी सेवी कमी । ७ नवम्बर को इस सहायक को छोड़ कर चल रहे । भी सहायता का सहायक सारहिनी जिले के प्रमुख कार्यकर्ताओं में का । वे सहे ही कर्मठ तथा निर्विकल्प-कार्यकर्ता में । १९१० से लेकर अरुण तक वे सारहिनीय कार्य करते रहे । इस बीच इतके कई बार क्लेश भी जाना पडे । उन्होंने अपने परिवार की विन्ता कभी नहीं की । विन्ता के भूदान सेवा सर्वोद्योग सहायता में लक्ष्य में थे ।

विश्वशांति-सेना की आवश्यकता और महत्त्व

वाराणसी में श्री जयप्रकाश नारायण का भाषण

विश्वशांति-सेना के संगठन के लिये १८ दिसम्बर '६१ से १ जनवरी '६२ तक प्रमाना (देवत, सेनान) में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा होने वाली है। इस अन्तर्राष्ट्रीय परिषद् के भारतीय आमंत्रितों में डॉ० भीमसेन, जयप्रकाश नारायणजी, रामचन्द्र और श्रीमती आशादेवी आचार्यप्रभृति हैं। विश्वशांति-सेना के विभिन्न पक्षों में विचार-विभिन्न करने के लिये ११ जयप्रकाश और १ नवम्बर को लायन्स क्लब, काशी में भारतीय पूर्व-चर्चा समा हुई।

१ नवम्बर को काशी में काशी के छात्रमंडल में विश्वशांति सेना पर एक सार्वजनिक सभा हुई तो सेवा संघ के अध्यक्ष भी नववर्षण चौपटी की अध्यक्षता में हुई। सर्वप्रथम भी नारायण देव ही संबोधित थे विश्वशांति-सेना के विचार का विश्वप्रसार विचार्य हुआ और पर प्रकाश डाला। श्री जयप्रकाश नारायणजी प्रमुख बक्ता थे। यद्यपि वे अल्पवय थे, फिर भी विस्तार से इस विषय पर प्रकाश डालते हुए आपने मानि-संनिधि के एक ऐसे अन्तर्राष्ट्रीय सचयन को आवश्यकता पर बरोर दिया जो दुनिया में कहीं भी अज्ञात-वि संघर्ष की निमित्त पैदा होने पर बर्ह जाकर महिंसक हथ से शांति कायम कर सके।

आज दुनिया में कहीं भी अज्ञात-वि संघर्ष होनी है वहाँ शांति कायम करने के लिये संयुक्त राष्ट्रसंघ को भी हिला का सहारा लेना पड़ता है, वह वहाँ अपना समाज कीजें भेजता है; किन्तु भेरे विचार से संयुक्त राष्ट्रसंघ को सार्वजनिक कीजें रजनी ही नहीं चाहिए। उसका यह कार्य अन्तर्राष्ट्रीय शांति-सेना के लिये (उत्तरा गहन होने पर) कहीं अधिक जरूरी तर्क से कर सके।

आज यह विचार अभाष्यहारिक और शास्त्रिक भाव्य पर उठता है, किन्तु शांति-सेना का अन्तर्राष्ट्रीय संघटन इन अने पर यह संभव ही क्या होगा।

जब तक ऐसा सचयन नहीं बनता तब तक विश्व में बहुल-निरस्त्रोक्त हो रहे सकेगा, इसमें शक संभव है। अन्तर्राष्ट्रीय शांति सेना के संघटन की रूपरेखा पर प्रकाश डालते हुए श्री जयप्रकाशजी ने आगे कहा—

“आज भी दुनिया में शांति के लिये कार्य करने वाली बहू-सी संघर्षों और संगठनों हैं और शांति के लिये खतरा पैदा होने पर उन्हीं में बोरदार दग से अपनी भागने की उदासी है, जैसा कि अभी हाल में इटली में परमाणु परीक्षणों के विरोध में भी बड़े-बड़े शक्ति के नेतृत्व में हुआ है और सहारा में मान्य के परमाणु-परीक्षण के समय किया गया है।

इसी प्रकार की एक संस्था शांति परिषद् भी है, किन्तु इस संगठन कम्प्यूटिस्टों द्वारा संघालित है। इसमें कभी अन्धों और उन्धे कोटि के लोग भी हैं।

ये संस्थाएँ शांतिवादी हैं, बुद्ध रोचना चाहेती हैं, किन्तु ये अहिंसा में भी विश्वास नहीं बाली हैं। इस इन सभी संघटनों तथा शांति के लिये काम करने वाली अन्य सभी संस्थाओं के सहयोग से दुनिया के सभी देशों में शांति-सेना का संगठन करना है, फिर इसमें से ऐसे लोगों का चुनाव कर एक ऐसा अन्तर्राष्ट्रीय दल बनाया

जाति-सेना का संगठन ही इतना मजबूत बनाना चाहिये कि वह विदेशी आक्रमण होने पर अहिंसात्मक दम से उठता मुकु-क्य कर सके।”

आपने बलपुर, आलाय मीर अली-गढ़ की हाल की घटनाओं की खर्चा करते हुए कहा—“ये घटनाएँ हमारे लिये दम-जनक हैं। दुल है कि बरकार भी ऐसे अवसरों पर हिंसा को दबाने के लिये हिंसा ही बहाय लेती। अहिंसक दंड के शांति रणायन पर ही शास्त्रिक शांति रणायन ही उभरती है।

खादी-ग्रामोद्योग ग्राम-स्वराज्य समिति की बैठक

आ. ३ और ४ दिसम्बर '६१ को अन्त में विनेवासी के पडाव पर सं-सेवा संघ की खारी-ग्रामोद्योग ग्राम-स्वराज्य समिति की बैठक रही गयी है। इसमें अ. मा. खारी-ग्रामोद्योग बोर्ड के सदस्य तथा अग्रगण्य प्रमुख कार्यकर्ता भी आमंत्रित थे। इस बैठक में कलकत्ता-इन्डियन कमीशन, इन्डियन और अंग-इंग, खरी के रिजि. भी नई पदवि, ग्राम-स्वराई आदि प्रमुख विचारों पर चर्चा होगी।

गुरुद्वेष !

“जीवन साहित्य” मासिक पत्र के ‘रवीन्द्र-भक्त’ के लिये दो घण्टे लिखते हुए विनोबाजी ने कहा : “गुरुद्वेष तो पूर्ण गर्भ में ‘गुरुद्वेष’ के। उन्होंने हमको हला विविध मार्गदर्शन दिया है कि उस पर अमल करते-कहते दिया सारा जीवन पीछे जायेगा। उनकी विचार्य व्यापक प्रतिभा में निष्ठा क्या बंध नहीं हुआ, ऐसा विषय ही नहीं। इस हमने ‘श्रम बगदू’ में उल्लास, उठके भी ये दया है और हमारा तप को सामदान बन रहा है, मैं मानता हूँ, उनका ‘विश्वभारती’ हृदय उठको आशीर्वाद देता होगा।”

इस अंक में

३	विनोबा
२	दादा चर्मादेवारी
३	विनोबा
३	निद्रादान
३	सच-सत्य
४	मुकुट राम
५	१०१ रमावती चर्मा
६	८ न. देवर
६	द्वेष मैथिली
७	कृष्णा मन्ना
८	कुमुद देवायने
९	निगम-कन्द्र
१०	शामलानन्द सिंह
११	शरद्वि
१२	बनप्रकाश नारायण

साहित्य का मूल्य : १

• जनैन्द्र कुमार

हम यह! देश की सभी भाषाओं के लोग इसको ही नये है। हिन्दी भाषा को आधार में लेकर जबकि ऐसा नहीं हुआ करता है। समूचे देश की समग्र हीरो है, वो अंग्रेजी भाषा से काम लिया जाता है। उसी में सुविधा समझी जाती है। अंग्रेजी अक्षरों की भाषा है और अभी कुछ वर्ष पहले तक अंग्रेजी का यही राज्य था। यह राज्य सारे देश पर छाया हुआ था और इसलिये अंग्रेजी से यह सुविधा थी कि लोग भाषा-प्रवेश की सीमाओं से बाहर अपना व्यवहार फ़ैला सकते थे। उस समय ऐसा बताया जाता था, समझी थी, खाने लगा था, नि राउट-भाष देस भारत देस में अंग्रेजी से जाया है, जयगा भारत विचार और बेटा हुआ था और उसमें राष्ट्रकर्म भाषा न था।

अंग्रेजी भाषा और राज्य के रहने ही एष देस में को कल्पने को एक मानने की चेष्टा देखी तो चरकीकी की इतमें सटका मादय हुआ। उन्हे प्रतीत हुआ कि यह आत्मा की एक्ता नहीं होगी, यह वो विदेशी और नवनी एक्ता हो जायगी। उन्हें यह अंतरकर्म मादय हुआ कि भारत अपना विकास प्राप्त रह कर रहे, उनवि श्रेयोही उन्वि हो और आत्मा को श्रीमत में देकर समुद्र विचरत या राज्य की यन्तो-इते युद्धिनी न पणे। इहलिये दुःख में हो उन्वोने यहाँ सुदूर दक्षिण में हिन्दी अक्षर की नीब शाली और पुन देवराज को रज काम के लिये अपना विष। ज़िन्दगी, गायत्री की मातृभाषा न थी। भाषा उनकी सुव्यवस्थी थी और अंग्रेजी ही को लिखना पड़ता, उसे छोड़ कर अपने अक्षर प्रम की सह वात यह सुव्यवस्थी में हो प्रकट करते थे।

हिन्दी भाषा पर प्रेम के मते हिन्दी से मांघीकी का अत्यन्त प्रेम की उम पर अन्वय आग्रह रहा। कारण, भारत के सन्तान में उनकी भाषाका इतनी ही नहीं थी कि वह राजनीतिक रूप से स्वाधीन देश होगा, बल्कि उन्वमें यह ही शामिल था कि स्वाधीनता का भाव ऐसा उन्वोका करेगा कि उसकी विरासत का नाम सुविधा के लिए एक प्रकार बन लगेगा।

भारतमाता की एकता
मानव-जाति के इतिहास में अगर संघर्ष की कोई संस्कृत अथवा मानवीय के संघर्ष भवमान तक अविच्छिन्न मानी जा सकती है, तो वह भारतीय ही है। यह भारतीय कि भारत अंग्रेज से पहले राष्ट्र के रूप में एक न था, अथवा सच्चा भी हो, तो आभरपक होता है कि एष ऐतिहासिक रूप के प्रभाव में एवं राष्ट्र-भाष की बाँध-पतवार की बाध। कारण, यदि सन्तानिक राष्ट्र के रूप में भारत अपने इतिहास-भर में कभी एक नहीं रहा तो कुछ वह संपन्न और अमीरतर ही होगा, निवृत्ते परसासिमेंसे वे अक्षर और अमित्र भाव से वह आश तक सीमित और स्थण बना रहा है।

यह एकात्मक व्यवस्था या शासन की नहीं, मनुष्य की, समाजता की थी कि फल उन्वका कुछ प्रिया नहीं उठा। इस चानकर के प्रभाव में शासन इमें स्वयं राष्ट्र और राष्ट्रवाद के संकल्प में फिर से सोचने और अभिप्रेरणा हो सकती है। यह विचार और पुनान्तरकर्म ही सकती है कि विश्व का आज का संकट ता. १५-१६ अक्टूबर '६१ को तिष्ठ-विचारकों में समारोहित अतिरिक्त हिन्दी प्रचार-सभा द्वारा आयोजित सत्रिक भारतीय भाषा-सम्मेलन में किंज गणे प्युमानात् में छे आचार्यव्य भ्राजण से।

में से है। उनकी परम्परा सचीव है और साहित्य प्रकल्प प्रकल्प है। लेकिन अज्ञान-विक्रम कर्मियों के कर्म हुए विरत नहीं है।

हिन्दी की-विस्तारणता

...राज्य को संकेत नहीं और उन्मुख ही रहना है। सीमेंसे यह एतन् परस्परता के विचार द्वारा विरत और विरत के विरततर होता जाता है। भाषाओं के विकास की दृष्टि में यह सत्य और भी प्रकटित हो सकती है।

मातृवी भाषाओं के बीच हिन्दी की विकास विधि है। यह उम रूप में बोधी-बाधी नहीं वाली का बहुत शीघ्र प्रवेश में बोधी जाती होवे। अन्वय एवं बर्ही कुल न-कुल इसका नवनीय रूपान्तर हो जाता है। अन्वयपरक प्रादेशिक शीघ्रिमें, यहाँ तक की भाषाओं में निरालुल कर उन्वके विरत है। यह एक सामिभ नगरिक भाषा है, विश्वके क्षेत्र हाद-कर्म में काम में उरते हैं; और पर-उपर पहुँच कर फिर अपनी मूल शीघ्रिमें से काम लेने लाते हैं। हिन्दी का इतिहास उम अर्थ में सबसे कम प्राचीन और सरदर ही है परिचिति एवं सुकीर्ति के उन्वे अधिक अधीन रहा है। उन्वके यह नियोग में बात भाषाओं का यत्न प्रभाव है। यहाँ नैकतो हुई परस्परता में से उन्वय पाया है। अन्वय हात तक खरी बोधी हिन्दी की उन्वे के अन्वय व्यवधान सुविज्ञ का है। उन्वे ही उन्वे ही सरदर और क्षान्ती की है। अन्वय विरत और संवे में से रूप और विकास घटे हुए अन्वय के अन्वयपरकता में से उन्वय जम और योग हुआ है। इस उन्वय उन्वय कर कम-से-कम सुविज्ञ है और अन्वयके अन्वय उन्वय अन्वय है। राजनीतिक रूप आधार उन्वय विचार है और आरंभिक महानता अन्वयपरकता के उन्वय की है। अन्वयपरकता का पहलवे के अन्वय अन्वयों संकल्प भी नहीं है। हिन्दी का उन्वय उन्वय उन्वय उन्वय विचार और अन्वयपरकता मानो विश्वपरक राष्ट्र-जीवन के उन्वय ही होना ही होना ही है।

यह भाषावाद ?

भाषाओं के संकल्प में विचार करने हुए अन्वय मूल्य होता है, नन भाषावाद की एक संकल्प बताया जाता है। भाषा एक बहल है, दुःख समता है, एक लिखता, तो दुःख उन्वे पढ़ता है। अन्वय उन्वकी यह एष वे परस्पर से होवे है। परस्परता का विचार और इतिहास अन्वयार्थ है। काल और इतिहास का हलके विद्या और दुःख अर्थ नन है कि वे परस्परता का उन्वयपरक उन्वय हैं। यह प्रकृत नन कन्वी है, वन अन्वय और संकल्प बना पड़ता है। अन्वय दुःख को आपन रखत वन भी उन्वय ही और उन्वके विनोती की दुःखता में रहने की भी उन्वय करणे हैं, पर भाषा वह सत्य है, जिसे कृति उन्वय के भीतर बंध या पकड़ नहीं किया जा सकता। उन्वय अन्वय-नन्वय बाहर की ओर और अन्वयपरक के साथ होता ही रहता है। इस प्रक्रिया में, भाषा में समय के साथ हतना वेर-बदल हो सकती है कि पहचाना सुविज्ञ हो। उन्वय ही प्रकृत भाषा नहीं है, यह निरमों द्वारा संवेदी और सचीवी भाषा है। उम उम में निरन्त अन्वय अन्वय है। इस प्रकृत की प्रकृत प्राचीनत्व भाषाओं

और नाना मत, संप्रदाय उन्वमें रहके अने नामों। उन्वय नानता के सन्कल्प और यामी विरती, सीरी यामी की प्र-विद्या, कते, हुए, एक ही दूने देने यथा यामी रहे हैं। भारतीय सन्वय के मानव की यह यथा-इतिहास में कर्म से कर पायी है। उन्वय अनर विनो नित्यी भांगी कर-व्यवस्था है और भाषा अन्वयपरकता को रूप में इतने में रही है, कभी नष्ट नहीं हुई है। अन्वय आने पर अन्वय एक मादय हुआ कि उन्वे यत्ने में विरतता और विरतने नन्वय से बाहर हो जाना पया है।

किंज अन्वय इतिहास कहते हैं, अन्वय अन्वय में विरत उन्वय उन्वय का इतिहास-या अन्वय ही यामी रहे हैं। यह अन्वय, जन भाषा हिन्दी को इतिहास में बाहर नन हुआ है देला जा सकता है। किन्तु यह नन भाषा 'हिन्दी' को ही देवी निरिदर ही विनयित भाषा नहीं है कि अन्वय वन व प्राम्य उन्वके सन्कल्प में अन्वयपरक उन्वे। यह सुधी भाषा है, बल्कि लक्ष्मी और बर्ही हुई भाषा है, उन्वमें एष ही नन को ही अन्वय नहीं उन्वय उन्वय ही सभी भाषाओं का अन्वयान उन्वय सक्ता और उन्वे स्थण, उन्वमें में अन्वय मन्वय नन योग है निरमों में।

यह अन्वय है कि वन मातृवी भाषाओं का सन्कल्प एक और एक ही है। एक ही सन्कल्प में उन्वय उन्वय देला हो नहीं सकता कि एक ही सन्वे इन्वे को मात न हो। यह अन्वयपरक नन्वयपरक ही ही सन्कल्प है कि अन्वयपरक है कि वन भाषाओं की परस्परता अन्वयपरक विरत न होती पाया। अन्वय उन्वय ही, नन वन एक-दूने के विरत भाते हैं और अन्वय-अन्वय विरत और अन्वय-भाषा को ही कर आते हैं। यन्वय उन्वय को अन्वयपरक के इतिहास को बना है, मानो काम-काज तक ही रहता है। उन्वे अन्वे दोनों को अन्वय-अन्वय विरत पर उन्वय जाता है। इन्वय के अन्वयपरक उन्वय उन्वय देला हो जाता है और अन्वयपरक उन्वे की विरत नहीं वैश होना। अन्वयके रूप में अन्वय की सन्कल्प या हिन्दी कन्वे सन्कल्प है अन्वय की भी प्रकृत ही अन्वय है।

निन्वय मातृवी भाषाओं की सुदूर दूर तक एक ही प्रति है। उन्वय सन्कल्प अन्वयपरक भी एक ही सन्कल्प है। इस उन्वय वे अन्वयपरक ही पराद-सन्कल्प में अन्वय तो एक-दूने में उन्वय और विनो नित्यी है कि एम एम कर को कन्वी-से उन्वयपरक उन्वयपरक कि वन भारतीय भाषाएँ एकता में और एक सन्कल्पन में बंधी हैं। अन्वय अन्वय की सन्कल्प के लिए वन पराद-सन्कल्प ही तो मानो अन्वय ही अन्वय और अन्वयपरक को नन्वय और सारे देश को नन और करती हैं।

सन्कल्प और अन्वय ही भाषा
कि भी, यह हिन्दी विधी बर्ही प्रकृतता का प्राचीनत्व में ही नहीं उन्वय करती। यह अन्वय देला यामी पराद-सन्कल्प द्वारा वरदा के एक नन बना रहा है।

सूदानयज्ञ

दस रुपये से कम में गुजर करनेवाले हम !

शोधनगरी लिपि •

ग्रामदान ही क्यों ?

हाथ पचूचू है वही अंक ही शीघ्र दस भात से समझाते हैं, भात खाए रहें हैं, तो आपका पकान कौन नहरे खाती ?

असम दरदस के आप लोग जन्म से मरत भात खाते आये हैं। जो प्रात मात वी आर, तो भात नहरे हूँगा। प्रात छाते शीत के और कूज, मीठी के शीत नहरे हाँडा है, मोदना बह एरीय हाँडा है। मुझे भूदान और ग्रामदान-बीवार के छाते भूदान ही एरुम है। हम समझते हैं का प्रात के बीना अरुम के छाते का नहरे बकागा। आप समझते होगे को हमारा तो पक ही हुआ है।

मजम में बार तो ग्रामदान हुआ। बीडने का क्या हीगार है अरुम में गाँव तो पचने हुआ है। पचने हुआ गाँव में लोग प्रात खाते हैं। बीडने में ग्रामदान का प्रात ही भूदान कौन है वी प्रात के बीना तो नहरे शीत है, पर ग्रामदान के बीना तो बह ही रहा है-आता आप समझते होंगे। काँहीन हमारा राव में ग्रामदान के बीना शीतक मजम के ही नहरे, हीट्टु-भूदान के गाँव का मज नहरे बकागा, गाँव का कुरपा नहरे हाँगा। अरुम बह बीवार कायक भवेगा तो घर काकर प्रात पका कर छाते काँहीन ग्रामदान-प्रात ही बीडने वी नहरे। वह असम के छाते प्रात ही वीन प्रात के बीना अरुम का बही बकागा।

(लंगपतीवा, अरुम) - बीनीन

किपि-संकेत १=१; १=२, ख=अ, धुआअर हलं विदुं से।

हाट में उद्योगिय संसार के अर्थशास्त्र और आर्थिक-विभाग को वरुण से एक बाँच लखें की गयी थी। उनसे हमारी दरिद्रता पर अरुण प्रकाश पडा है। उन्हें मैं भाग्य बला है कि उत्तरदेश की एक-बीवार अन्त-निर्गम देहातवाली की सपर्यायिक से अर्थिक हे-दर माद आने भोवन और बीडने की जन्य अवधारणा थी पर हर स्थिति पर दर नमना वह उनसे भी वम शक्य लखें करती है।

घरों की अवेदा देहाते में विभिन्न धार वाली जनता की रूपशक्ति में बहुत अर्थिक विपन्नता है। साथ ही यह भी है कि विन लोगों की आयवनी बहुत कम है, वे अन्तरीय विदेश से भी अर्थिक रकम भोवन पर लखें करते हैं। आरंभ वेत को अपना ही है। कदा-कदा तो लोग अपनी ८२ पीसी रकम भोवन पर लखें करते हैं। और वे भोवन पर ८२ पीसी रूप्य लखें करते बाके लोग १०-१५ पर उनसे भी कम रकम भोवन की मद में लखें करते हैं। उनका कर्मा-पी डीमी रक्षित है। कम आयवाले लोग भूष लभ कायक देने वाले अल्प बीवी पर ६ से शीघ्र १० पीसी तक ही लखें कर पाते हैं। कलाय पर केवल अपना ही देना लखें किया जाता है, किन्तु विना किसी तरह कमा नहीं करी जा सकती। देहात में विन लोगों की हाथक कुछ अल्प है, वे भोवन पर २२ पीसी रकम लखें करते हैं। घरेले में भोवन की अनेक अल्प बटुआँ पर अर्थिक पैसा लखें किया जाता है।

इसारी राष्ट्रीय आय १९५५-५६ में २०४८० अरि अर्थिक सूची गयी थी, १९५८ में २२८० और १९५९ सालमाद १९५८-५९ में २२६६ ह। इस अनुमान में मोदी मोदी आयवनीय भी शामिल है। इसका स्पष्ट परिणाम यह है कि हमारी देहाती जनता की आय बहुत ही वम, उनमेंसे की उन्हें के अरुणार वह १५००० छातना से अधिक नहीं मानी जा सकती। उत्तरदेश के देहाती की जो हातक है, वही पर उनके मिलती सुखी हातना से के अल्प अवली में है। उरीय, बीनम आदि प्रदेशों में तो छातक उलठे भी गयी-बीती हाते हैं।

हमारी यह अवसर दरिद्रता विचर में अन्तम कानी नहीं जाती। आरुडिया में अरुम से १२ लाख पदते हैं। वही अर्थिक की आय २५५०० ह, कनामा में ३२२५ ह, जिन में १५७० ह, फिदवलेट में २९२० ह और अरुडिया में ५११५ ह, यहाँ अरुम २२ लाख के बार हमारे देय में ४४ अर्थिक की सातना आयवनी है २२६ ह और देहात के गरीबों की आय-दानी है १५०० सातना।

भोवन वरुण के १० रुपये मासिक से भी कम लखें करते बाके हर देहातवाले से एकाअर हीन और हीनरी दगा अन्तरना ही तो गाँव की पुच्छा की। वही पुच्छर विनीय वी है।

अप, हम दस दिना में बह लखें।

पुच्छि से यह बोली-मिरा पति तो अब जाता ही रहा है, अब आग इन लोगों की दिहा कर दीजिये।

विनीना ने इन बलिदान की शरणा करके हुए एक ब्रह्मागीश बदन को पचन-बाद दिया है और कहा है कि हल पटना से कापि-विनीय को निभार ही बरा बल मिलेगा।

सम्प्रदा। हमें हल बदन के बन्दों में वीन के उन बन्दों की अर्थिकिय सुगरी पवती है, जो उन्होंने मरु पर रचनासे वाली के लिए वही से-हियर मनु, ए इन लोगों को दमा करना। वे नहीं मानते कि वे क्या कर रहे हैं।

दोनों को हमारे कोटि-कोटि मंगल।

एक अनुकरणीय बलिदान !

बलीन ज्यों ही वहाँ पती रहती है, फिर भी बलीन की भाव को उलट आनंद तक लखें आदिगियों को माने जा चुकी है।

अभी कुछ ही दिन पहले रोहताक किले के युद्ध-विहल गार्ड में दो किसान बलीन की बात को केवल आपस में उलक गये। बाद मुझे-नदुवे छायाघाट की नीरुत आ गयी। विपति शिन्दे देख कर अमान्य नर नाम का एक घाँस वीच में डूर घास और उलठे दोनो के यह प्रार्थना की कि आप लोग अर्थक में न लें।

‘दू कौन-दोहरे है हमारे बीव में बीनेने वाला’ में देहा कड़ वर उलठेति किसान ने उल ७०-७० के बूदे के तिर वर तीन लखिये बना गये। लखे वर में धारनक का देहात ही दुखा (दो भारती की अर्थाय मिलाने के लिए खाननद छोड़ने हो वम। उनके छातिने केना में अरुम नाम नही लिखाया जा ली, पर वम बह बरसा य-‘यि छातिने निक को हूँ ही-’ मीका भावे पर देल केना।’ उनसे अरुने अर्थियान इधर अपनी यह अर्थियवाणी लख सिद्ध कर दी।

और उलठे विषय पत्नी।
पुच्छि वर उन दोनों हागने बाके किशाना की लीव कर के बाने लगी तो

बाबा की तीव्रता

शिार में ‘बीबा कटा अभियान’ बड़े उल्लाह से पाजू है। बाबा इवे अत्यन्त महान् वा मोरवा मानते हैं। उनका विश्वास है कि हल अभियान के बारे देहा में एक प्रभाव विगुण, प्रभाव छरु होगा। इ दिवसक एक काम न पूरा हो तो वे नहरे लक-रामेन बाबू के अगने लक-उलठे की अर्थिक बढाने के लिए भी उलठे हैं। हाट में उलठेने भी उनको की लिरे एक पच-० में शीघ्रशीघ्र का एक कायक उलठु किया है-‘एरुम हल उलठु हल एरीय आर मैन।’ वही वर भरती की लिहा है। अरुम दे वे लिखक तक विहार में न आने का तर किया है, वर ही ही अरुमी में मरद देने के लिए है। बाबा के हलप की हल हीनार के हमारे काँकनामी को निभार ही प्रेरण मिलेगी, देहा हमारा विचार है।

-भीकणन्दत भट्ट

● हेतुं 'भूदान वर', सा ० १-२१-५१

प्रादेशिक भाषाएँ नागरी लिपि में भी लिखी जायें

अबकी में छा हुआ मैं पदु वक्रता हूँ, लेनिन लिखा हुआ पदुने में वरु लखली होवी है। लिखा हुआ नागरी में ही तो पदुने में आगत होवा है। इली-लिपि राष्ट्र के नेताओं ने छुआकर है कि हिन्दु-जन की हरएक माया नागरी में भी लिखी जानी चाहिये।

सुख लोग संनता हैं कि नागरी उन पर जारी वर रही है, पर देहा मरती है। एक लिपि ददा कर उलठे की अरु दुकोने नहरे लखे जा रही है। इत्याय वर है कि नागरी में भी लिख जाय और किस् लिपि में आज लिख जाता है, उसमें भी लिख जाय। मेरे घब 'नामपोष' नामते लिपि में आरी है। एक मति अरुमी लिपि में भी है। दोनों लिपिसे में माय लिपि नाय तो आगन होगा। उरी तरह से कासिन, वेणुय, कननर वर भी को। अरुनी अरुमी लिपि तो नले चले। उनसे साथ-साथ नागरी में भी लिख जाय तो लारे माय को एरु-दुकरे भी माय पदने में लिख जायगी। 'नामपोष' अरुमी में लिपि माय तो पचन वाले और मरुदा बाके भी चूने, याने उनका प्रचार बहुर होगा। मजम प्रदेश में अर्थियान में अने। दरुडिये राष्ट्र-नेतकों ने कहा कि दोनों लिपियों में छापने से देय को अरु होय।

[नवीय, अरुम, २२-१-५१]

-विनीन

विज्ञान एवं अध्यात्म की संयोग-वेला

सप्तमीनारायण भारतीय

श्री जवाहरलाल नेहरू ने विज्ञान का महत्त्व प्रतिपादन करते हुए पिछले दिनों मद्रास में एक भाषण में कहा था कि 'अनन्ता आध्यात्मिक पहलू को भी न भूलें।' इसी प्रसंग में विनोबाजी को एक वक्तव्य को उन्होंने प्रस्तुत किया, जिसमें विनोबाजी ने कहा है कि 'राजनीति एवं धर्म के दिन अब लट चुके हैं। विज्ञान एवं अध्यात्म ने उनका स्थान ले लिया है।'

राजनीति की भूमिका : भेदमलक

सत्यतः राजनीति भी अर्थ विज्ञान की एक शाखा मानी जाने लगी है, भले ही मौलिक विज्ञान के रहस्य उलका स्थान न हो। समाज में बस के संघटन की प्रेरणा कायदा हुई, तब ही राजनीतिक संघटन की नींव पड़ी एवं राज्य-सत्ता का उदय हुआ। इसके साथ-साथ राजनीति-शास्त्र का भी उदय हुआ एवं राजनीति आग के सामाजिक, राजकीयिक संघटन का एक अतिरिक्त अंग बन गई है।

राजनीतिक संघटन के, अपूर्व राज्य-सत्ता के निर्माण-संघटन प्रचलन आदि का निम्नोत्तर 'राजनीति-शास्त्र' यदि नहीं, तो नियामक, नियंत्रक, प्रेरक आदि के रूप में उठने अलग हीरकगण कम नहीं किया है। विभिन्न राजनीतिक शाखाओं में तो दुर्भाग्य को हमेशा ही पर्याप्त विविध विचारों की प्रधान की है एवं यह विविधता आज भी जारी है। ऐसी स्थिति में राजनीति का स्थान समाज-संघटन में न रहना एक विचित्र स्थिति का ही निदर्शन होगा, जब कि राजनीति ने तबसे समाज को राजनीतिक संघटन में लाने में एवं उसके ढांच समाज में बसने, निर्माण आदि स्थिति बनने में पूर्ण योग दिया तथा अवकाश को दिया न आने ही।

परन्तु यह विचार ही दुर्भाग्य की एक पहलू है। राजनीति-शास्त्र ने जो कुछ किया हो, स्वयं राजनीति ने इसे लेना एक सत लेने में एवं लेना नहीं है कि समाज में उसके न केवल विभेद की ही सृष्टि हुई है, अपितु मैलिता के ढांच का भी सामान उठने लुप्तवा है। ये, राजनीति के अर्थ एवं पर्यायों हसी अधिक है कि उसके किंच भाग को विभेदकाक मानना एवं किचको संघटनकारक मानना, यह सच करने में जारी पत्तीनेता हो वषता है; तथापि राजनीति से विभेद बढ़ाने में सहायता ही मिली है, नकि राजनीति विभेद पर ही खड़ी है, तथा कदा काय को अतिशयोक्ति नहीं होगी। भारत तो, वन के कम उष्णक गढ़ विभेद-दर्शन मद्रुल चीन को बसा है। उनमें कि सत्ता उलको सुलान बन गयी है। वर्तम में राजनीति यह मानी जाती रही है कि किसी एक मद्रुद पर कसके एकत्र साजर सफरी पकि का संघान बनना। पर आज जिन्ने भी विभेद हो रहे हैं, उलको बड राजनीति बन रही है। परिचय भी सप्याडी ने तो विभेद की यह सृष्टि बुलु हो लीर रूप के बदा ही है। राजनीति के सारे गुणवगुण आज एक ही चीर पर सकार टिक गये हैं एवं यह है विभेद ही सृष्टि। प्रगली, सलसान, उलका सवराज में अनुकरण, सत्ता प्राति के मार्ग, विभिन्न पक्षियों एवं उलके का आदि किच बडी आकार किचो है, वो विभेद पर।

राजनीति राष्ट्र को राष्ट्र से, समाज को समाज से, दल को दल से एवं व्यक्ति को व्यक्ति से जोड़ कर अलंकरण विभेद इस प्रकार लगे कर रही है कि मानव की सहीनन की एवं स्याल-मानना की सुनिवादी यह रही है और जनता पकि-नीन होती वा रही है, पल्लः लोचनन चीन ॥ सैनिङ शाखाओं के अचीन होता वा रहा है। और यह वन हो रहा है, मैलिता की भीमसत, कचोकि क्वच ने-नेन मद्रुलने प्रगुल-स्यपान, स्या-मालि आदि एक ही सौमिङ यव गया है।

धर्म का विघटक स्वल्प

धर्म की समाज की धारणा के लिए ही हो रहा है। सभी धर्मों के अल-साल एवं खासत लयों का पुरस्कार करते रहे हैं कि वे मानव-वीर्य के उपायन ही है कि वता सजने हैं। धर्म अध्यात्मका भी धर्म के अनेक लक्षणों में से कमा है। महापुरुषों एवं सन्तों ने भी धर्मोवासि विचारों द्वारा ही मानव जाति के लिए साधना की है। वना व्यक्ति जीवन के लिए, एवं क्या लसु-वीरन के लिए, धर्म अनिवार्य रहा है तथा उपायनार्थ का अथार रहा है। सारी मानव जाति की एकता का ही नहीं, सृष्टि की एकता का भी लय धर्म ने प्रविशयन किया है।

गान्धू आनतकि एकका का सनेद देते हुए भी वो नास देते, धर्मों के कारण, प्रसक्त हो उठे, उलकोने उव सनेद को येसा द्यना दिया कि अब फर्मिद ही प्रगुल ही चले एवं उनमें ही लने नेद, स्यप्राय-भेद आदि बंदने लगे। स्थिति मानव ने आज यह पर डारपी है कि अनेक धर्म एवं उलके अनेक नेरोभेद मानव पर आगम्य परके उलको ही डुडने-डुडके कर रहे हैं। सभी धर्म मद्रुल लयों का उदयोप सृष्टि हुए भी विभेद की ही सृष्टि से बना उलके मानव-मानव के बीच ही सार्य न षट सके। इसीलिए धर्म, स्यप्राय, स्य आदि के नाम पर आज भी कय सपन्य नहीं होता है, कय मयनस्यन नहीं होता है एवं कय भेद नहीं होते हैं।

धरनी एवं धरनी में इस वार्ष अद्युत पर्ये आ पडी है।

विज्ञान का महत्त्व

इसके विरुद्ध विज्ञान हसी वेडी से, सृष्टि में एका ही इति एक रहा है कि अब जोरें अन्या-अन्या ही लोच नहीं सवता। फिर करना तो अर्थ ही रहा। एक लुच में मानव अलंकरण में 'लुचनवा है। एक तिरे की सृति का अलर दूनेने सिरे पर उलका होता है। सारे मानव अलंकरण को वेडी से विज्ञान मिळट रा रहा है। इसके साथ-साथ लय के सार्यन की एक-विधियों भी वेडी लुल रही है कि सृष्टि अन अज्ञान के सहारे सार्य भी काम नहीं कर सती एवं सान विज्ञान के निना उलका पर्ये ललित ही नहीं मान्य आ सवता। सार्य की लोच में विज्ञान ने हसीन प्रसिधि कर रही है कि जीवन की एक भी शाखा-प्रशाखा अन उसके आसुरी नहीं रा पा रही है और सृष्टि एवं सृष्टि के निवासियों को एक रूप देकर यह वन हो रहा है एवं स्र पर एकल की सुख भिचि विज्ञान ने सकी कर रही है।

ऐसी हासत में विज्ञान का महत्त्व नानत अनिवार्य है। उनके लयमें यह सत्य राजनीति का सहर मरना स्यामा-किच है, कचोकि 'एकल एवं 'संगलन' वा लनेके देने वाले 'धर्म' वा 'राजनीति' विभेद की सृष्टि में सय गये; पर विज्ञान उनके अहीहल सार्य को लुल ही उव सुता है। इसलिये आज विज्ञान सचोचपी है एवं धर्म तथा राजनीति उलके अमान है। वह एकता एवं लय की चीन की कामपी लुयता है, ये विभेद की एवं बसपाना की सृष्टि ॥ ही रमते हैं। विज्ञान उनसे इलका आये वद सया कि अब विज्ञान की ससोडी पर ये ही वडे काले लय गये हैं। सयति सार्य एवं राजनीति आर मो प्रसक्त रिस्तार देते हैं, कचोकि उलका प्रगुल स्यारे सिल एवं मय पर लय गया है, सयस्य विज्ञान के सयपुल वर प्रगुल भी विवच होता वा रहा है। राजनीतिक आग मसोडो के लिए पर लना नहीं होती है, तो विज्ञान को उने मयदूर कर रहा है, कि 'आरय में समोडीन सरो, अनयथा सलनाउ मीरद है। ससोडीन में चीर ८०० अलु सार आर तेसा है। को रसोडे को संभासने की सयति से बलुल ल्यार है। अय ही गलडी से विरुद्ध होता है तो ससोडे सदा ही भासत है, कचोकि रिसेयिमा के उपर सिरे हुए धर्मों से ससोडी गुना पकि

वाले ये आसुप है। इसलिये ससोडे लामने सतन पर सय लगे है कि कचोडी गलडी से, भूल से, ससोडी से वा सिसेरे। भी कचोडी विरुद्ध होकर ससोडे को बसदत न कर दे। मयदुल आर निना की नीरक आना वो उलके लयस निर भय है। ५० मेगारन के बम की सरे ही नचें। आदिमय का रही है, जो उलके पयोग की बसना ॥ सारन मया देती है। ऐसी हासत में सरे ही एकनति को उलका सृष्टि, ससोडे उलका सदेगा, विभेद की सृष्टि में स्र लोडनी होगी एवं इस तरह अनेक नरे-नयने स्थान से हडना पड़ेगा। सारे बह प्रगुल के मिळन में विज्ञान की सत करे य लय ही मान्य है। ही 'धरनी के दिन लट चुके' वा सवरायण परद है।

विज्ञान की विज्ञान

आध्यात्मिक हो विज्ञान की पकेल किडी-न किरी के हाप में तो वाहिए ही, अनय यह भसमदर के समान सनीयक पर उल सवता है, यह भाग सत रिज रहा है। राजनीति पर यह अनवी मद्रुल वता रहा है एवं धर्म में अब यह सति नहीं रही है, कचोकि यह विभेद का आथार वन कर शानका 'धर्मो' लोड का रहा है। फलतः विज्ञान की सरे केवल अध्यात्म के ही हाप में लती वा सवती है, कचोकि रोडो के लय एक ही है। विज्ञान के समान ही अध्यात्म में सार्यनीय एकता के सरीचका वा मासक है। सचको एक इत्यन मान कर यह 'आनी-पयो' भास ही उपायना सिखता है, सार ही धर्मों वा उपायनार्थों का धर्मो, निरर्ण का आथार नहीं होता है। यह एक मान्यता है, एक सृष्टि है, एक प्रेरणा है। उलकी आकार देता है, रूप देता है, सरीर देता है - विज्ञान, एवं विज्ञान को आलाप, इत्यन सिखता है, 'अध्यात्म' ने। यह उलके रोडो परररर के एक है, एक ही सार्य के पकिडे, एक ही लयके के उलके है एवं सने पडी गये हैं, धर्मो मद्रुल सचोचपी रोडो के कारण रोडो को रोडो में आसककता है, कचोकि विज्ञान के लिये अध्यात्म मानव स्याक रूप भाग नहीं पर सवतो एवं अध्यात्म के निना विज्ञान की सकि को नचने नहीं मिल सती। हसीन ही नहीं, रोडो के संतुपु स मद्रुल से मद्रुल 'सुर' बम' का इत्यन भी कर सती है, कचोकि एक अलंकरण सलके, दुलथ सल सकि से परिपूर्य है। इसीलिए विनोबाजी, सवरायणसारी, सवरायण एवं दुनिवा के नेता रिजने के साथ अध्यात्म को अनिवार्य मान कर राजनीतिक पक्ष में उलर उलर रहा है। एक लय को हय बन अनन में सनेने।

बिहार का हदवन्दी विल एवं सर्वोदय

रामनन्दन सिंह

से मन मर गया, तो स्वभावतः ही उठा की पुस्तकें। क्या करती, आरिष खाती बैठें। बहन में पहले से ही एक टेलिफ पर अपनी हृदयन उभा थी थी। पहले पर उन सपनें रस आया, रबि पैदा हुईं, फलस्वरूप बगरी 'सहित' खरीदा उन बहनोई में।

हमारे एक हृद भारी ने, जो अधिक वन न पर सके थे कइ ही उठे, 'अच्छा फंफा निजारा है, जिसे कुछ काम न मिले लटकाए सोओ और न गये देव-सुधारक।' नेट की रोटी तो बाकिने में। आज के ये शब्द 'क', 'ल', 'म' अधिक प्रयोग में आते हैं—'कमाना, पाना, गहना'।

मैंने कहा—'आप अनुभव करें। आपके हाथ कड़े ही सुदृग्गी हैं। सत्य ही है 'क' 'ल' का मैंने अपना।' पर विना ही एक शरीर की मर्दाना ॥ कुछ डाले चंचला बैठे। 'हलसित' 'ल' याने खाता और तिर्य्य 'ल' याने हाथ को खानसुख होता है उसे खो न देना, बहिक 'म' याने सहना, दान-प्रदान करना।

हमने उन हृद नई के आगे अन्दा के मस्तक छुड़ाया, तो कुमिल मारि हैं पड़े और हम भी चल पड़े भगवान बुद्ध के 'धम्मपद' का श्लोक गुणगुणते हुए अपने कार्य-वेद।

“अथकरोम तित्ते कोचम्
अत्तापुम सारुणा जित्ते।
जित्ते करारिपत्त बालेम्
तत्तन्नेः लोच-वाचिणम् ॥”

इन बात दिनों में ऐसे अनेक अवसर आये, जब मान-अपमान दोनों द्वारा हमें लुभा मिली। कुछ-कुछ के लिये तो हम अवसर खिलमिला उठीं, हमें नैराश्य का दर्शन हुआ, सोचा कि यह काम हमारे बने का नहीं। पर उठी वन अन्दर की आवाज सुनाई दी कि मीठ, सम्मान की चाह ही कर बैठती। उठी समय गाद आया कार्यकारीन प्रार्थना का वह मंत्र, बिचका गिरप पाठ हम करते हैं।

“सः सर्वज्ञानविभक्तोः तत्-
सत् प्रप्य सुभ्राह्मणम् ॥
मानिनघति ॥ द्वैष्टि-
सत्य प्रज्ञा प्रतिविकता ॥”

बाबा का समय ही आया, किन्ती-किन्ती अभाइ-रखी है बाबा अपनी शक्ति-सेना है। उस दिन बाबा वहीं छोटे तो देरते कि चारों ओर हृदयों में 'विनोबा-बपती' पर स्वी-बुक्ति ही काम कर रही थी। बहों गली-कुली में देले, दोनों फेंकों पर बोझ लटकाये गोन जा रही हैं। प्रति-सेना की नहीं। उन दिनों पुत्र-व्यापकता कीर नहीं मिलता था।

अपमानित होने पर बाबा की रघुवि ने बहा लू दिया, और पर नहीं मरवर्द्धि पर शक्ति-सिद्धि अल्प उदाहर और उमंग से स्वर्ग की ओर, वे तब अर अगमान का दुःख हलु आकराम में मर उठी थी। हम शब्दा का मानव होते हुए भी अधिक समय नहीं दे सकी, क्योंकि हमारा

“भारत जैसे कृपिप्रधान देश में जब तक भूमि-समस्या का सही समाधान नहीं होता, तब तक हमारा जायिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक विकास एक धीमा से आगे नहीं बढ़ सकता है। भारत की कुल आबादी को बस्ती प्रतिघात जनता पांच लाख गाँवों में रखती है। इसलिए भारत के लिए अन्य खेतित्तर मूलकों के समान भूमि-समस्या एक ज्वलंत प्रश्न है। भारत की आबादी का सचा अन्न का परावलम्बन भी विघात के रूप में मिलता है। प्रतिपन्न करोड़ों रुपये का अन्न आयात करना पड़ता है। अन्न का परावलम्बन भारत के लिए न केवल उच्चजावनक ही है, बल्कि राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिए सार्वजनिक भी है।”

यही हालत हमारे बिहार राज्य को है। बिहार की ४ करोड़ ५० लाख जनता के ८८ लाख परिवारों में से लगभग ११ लाख परिवार भूमिहीन हैं, जिनके पास खेतों की जमीन नहीं है। विनोबाजी प्रथम बार १९५२ में जब बिहार आये थे, तो लगभग सवा दो करोड़ भूमि उनके प्रयाग से लगभग २१ लाख एकड़ एकड़ भूदान में मिली। बिहार ने विनोबाजी की प्रथम यात्रा के समय ही बिहार में भूमिहीनता मिटाने के लिए ३१ लाख एकड़ जमीन हड़कटा करने का संकल्प किया। कार्यकर्ताओं के प्रयास से २१ लाख एकड़ एकड़ भूदान में मिली, जिसमें से १ लाख एकड़ का सँवारा हुआ। १९९१ साल एकड़ में से साठहड़ लाख एकड़ जमीन नहीं, पचास एवं छठ की थी और चारों ओरों लाख एकड़ बाँट की थी, जो भूमिहीनों को दे दी गयी। उक्त जमीन में से लगभग ५० लाख एकड़ जमीन पर भूमिदान एवं अन्न सेवकों ने फिर से सफल क किया, लेकिन १ लाख एकड़ जमीन पर अभी भी आराधनाओं का अधिकार है।

जब विनोबाजी ने दुरभी बार अन्न की बातें ५४ दिनों तक बिहार की यात्रा की, तो बिहार-विगत के प्रथम दिन २५ दिसम्बर, १९५० को दुर्गावती में बिहार के ठकावती सुदृग्गीनी स- ३१-० श्रीपुत्र सिंह ने विनोबाजी से मिल कर बिहार में भूमिदानों की जमीन का शीर्षकों भाग 'लेवी' के रूप में देने का बिहार-सरकार का संकल्प गठना। २५ दिसम्बर को ९ बजे दिन में दुर्गावती जाम-मंडले में

करुणाधाम दूर पडाया था। कुछ बात दिन ही हम दूर पुष्प कार्य में लगा सकी। चार दिन 'विनोबा-बपती' पर तथा तीन दिन 'बापु-बपती' में। पर अपने आत्मनिर्णय के बल पर हम अपने प्रेमोत्साहना हाथ सफलता पा सकी। मन में तो हम यह डान ही चुनने से कि कुछ भी हो, हमें पंढरी के पर-पर यह प्रेम-संसार तो बिलकुल समझ ही है। यही समय हमारे जीवन की सन्ती कही जाती है, और यही समय है जहाँ-जहाँ की प्रथम पौधा का। यदि हम हृदय में उठीं-उठीं हुए ही सफलता हमसे पहले पुष्प-कर कर्ता मान लकड़ी है।

जब और स-० भी जाऊँ की बात हुई और उठी दिन ४ बजे शाम की प्रार्थना समा में विनोबाजी ने बिहार-सरकार का निम्न बगले हुए कहा कि बिहार सरकार भूमिदानों के उपायी जमीन का शीर्षकों भाग देने वाली है।

“सरकार तो लेवी यात्रा 'लेवी' लका-वती, लेकिन अहिंसात्मक आन्दोलन को तो अस्वीकृत किया है। अन्न में तो भूमिहीनों से देने के लिए ही कहूँगा” और तब देने की पदाति का विनोबाजी ने विनोबा से 'लेवी' नाम रखा।

येही तो बिहार विधान-सभा में भूमि-हड़कटी तिल २१ अक्टूबर १९५१ को पैदा हुआ, जिसमें 'लेवी' का शिक नहीं था। प्रवर-संसदित्ति ने पाँच एकड़ से अधिक जमीन रखने वाली की जमीन का शीर्षकों भाग 'लेवी' के रूप में देने की विचारणी की थी, लेकिन विधान-सभा ने एक एकड़ से अधिक और पाँच एकड़ तक जमीन रखने वाली के उपायी देने वाली के उपायी का शीर्षकों दिया, पाँच एकड़ में अधिक और शीर्षकों से कम जमीन रखने वाली के उपायी देना एवं शीर्षकों का शीर्षकों भाग 'लेवी' के रूप में देने के लिए शिक रखीकर दिया है, जो विधान-परिषद में स्वीकृत होने के बाद सम्पन्न पर राष्ट्रीय के हस्ताक्षर से सफल बनने वाला है।

'लेवी' बन्ने से भूदान के मूल सिद्धान्त को स्वीकार कर दिया है, देखा मानना चाहिए। भूदान का मूल सिद्धान्त क्या है? 'जमीन किसी व्यक्ति की नहीं है, अमानता की है, अमानत की है' और इस मूलसूत्र सिद्धान्त के आधार पर ही भूदान के प्रस्ताव विनोबाजी ने सर्वप्रथम भूमिदानों से उनकी जमीन का छठा भाग भूदान में गीया था और इस बार की विहार-न्याय में शीर्षकों भाग। विनोबाजी ने जिनके पास अधिक जमीन थी नेवल उनसे ही भूमि ही माँग नहीं की है, बल्कि जिनके पास थोड़ी ही है उनसे भी माँग की है। ऐसी जमीन वालों से जमीन माँगने का क्या अर्थ है? अर्थ सत्य है कि जिनके पास थोड़ी ही है वह उनका नहीं, और समाज का है और विधान-सभा ने भी 'लेवी' द्वारा हड़कटी मानस्य दी है। विधान-सभा ने जिस में सत्य रखीकर दिया है कि २५ दिसम्बर, १९५० का उक्त के बाद जो भूमिदान भूदान

पल कर्मिणी का विनोबाजी को मिले जमीन दोगे उन्ही जमीन उन्हें 'लेवी' में बाँट कर दी जायगी।

इस लेवी-न्याय ने ११ लाख एकड़ जमीन मिलने वाली है, देखा बिहार-सरकार के राजस्व-मंत्री ने बिहार सभामें बताया है और वेदु लाख एकड़ जमीन भूमि हदवन्दी-मालुम मिलने वाली है। इस प्रकार लगभग ११ लाख एकड़ जमीन बिहार से भूमिहीनों के लिए मिलने वाली है। बिहार हदवन्दी-मालुम एवं लेवी-न्याय से जो जमीन मिलने वाली है, उसे सरकर सम्पत्ति प्राप्त पेशवाली की व्यवस्था से लिए देगी। ग्राम-संविधान खेतिहार शक्ति हीने की सर्वप्रथम-सिद्धि बिहार कर लेते करती। यदि किसी कारण से हड़कटी लेखी संयम न हो सके तो बिहार समा हीने दाम-व्यापक की व्यवस्था से बनें केकर उक्त गौन के भूमिहीनों को लेखने के लिए जमीन दे एकड़ है, मिल गौन जमीन करती है, याने सरकार द्वारा हीने जमीन के बँटवारे में भूमिदानों का कोई अधिकार नहीं देखा। लेकिन भूदान का सत्य है। भूदान में जो भूमिदान सत्य जमीन देते, उक्त जमीन का हदवन्दी जमीन जोलना बहो भूमिहीनों को दे रहा है सके हैं। बँटवारे की इस पदाति में सर्वोदय का मूल दर्शन, हृदय जोलने का दर्शन समिहित है। जिस भूमिहीन को भूदान की जमीन भूमिदान हीने उन्हीं हृदय में भूमिहीनों के प्रति अधिक दिन योग्य तथा भूमिहीनों को भूमि देने वाले भूमिदानों के प्रति अन्दा लेगी। बिहार के भूमिदानों को देय और फाल की पवि प-प्राण कर भूदान-संग में स्थान करते का प्रयास करना चाहिए।

भारतीय सर्वकारों को जापति में पर

“भूमि-क्रांति”

सुदृग्गीण सत्य सार्वारिक

सर्वोदय-संग

संघारकः देवेन्द्र गुप्त

कारिक मुखः चार सारे माष

मन्त्रों की प्रति के लिये लिखें:

“भूमि-क्रांति” मार्गालु

नेहा-संग, इंदौर (म.प्र.)

विनोबा-पदयात्री दल से

असम में राति-सेना शिविर—कर्मों के साथ शान और भक्ति भी आवश्यक—यह सचवाट सच पार्टी-नेताओं से पृथिवी—सत्य-संस्कार पूरा ही होता है—भक्ति के लिए जीवन-समर्पण की आवश्यकता है—जुनाव जीवने का नुस्खा—साधन-पथ का 'नामधोष'—पाप पुण्य की व्यवस्था—कार्यकर्ता संख्यायुक्त होकर सर्वत्र काम करें—असम का दोष : आलस्य—प्राग्भूत : लोभों की दीक्षा—विनोबा का प्रत्यायनवाद—नय अग्नौ लक्ष्यविन्दु और आत्मदान धर्मचरित्रिन्दु, भीष का दस्ता सर्वोदय ।

● कुसुम देशपांडे

शिवसागर जिले में श्री माणिक माई साहिबिया और उनके पत्नी रेणुबहन उस्ताह से विनोबाजी की यात्रा का लाभ उठा रही हैं । रेणुबहन ने सहन में प्रचार करते साति-सेवित्राओं की संख्या बढ़ायी है । पिछले सप्ताह में कुल ग्रामदानी गाँवों की और कुल अन्य गाँवों की तीस साति-सेवित्राओं का शिविर गढ़गाँव में हुआ था । वहाँ से डेढ़ मील पर भागीरथ शहर में विनोबाजी का निवास था । इसलिये शिविर का उद्घाटन विनोबाजी में वहीं किया । यह शिविर चार दिन चला, जिसमें पदयात्री दल के माई-बहनों ने भी हिस्सा लिया था ।

अपने प्रांगणिक प्रवचन में विनोबाजी ने कहा कि जैसे वीरार की सेवा करने के लिए हाथों में कड़ा होनी चाहिये, उसके शौर काम नहीं होगा; वही तरह से सेवा-कार्य में कर्म-रहित पर निर्भर रहना पड़ता है । कर्म की योग्यता ज्ञान से और अधिक से बढ़ती है । कर्म-रहित के साथ-साथ ज्ञान हो, तो उस कर्म में विशेष प्रबल होकर रहती है । इसलिये सेना में कर्म-रहित के साथ ज्ञान और प्रीति, दोनों चाहिये । भक्ति होगी तो प्रीति भी होगी । दूसरी बात यह है कि विनोबे कापका कोई नाता, रिश्ता नहीं है उनका भी सेवा आत्मिय भाव से करनी चाहिये ।

दूर ही पर गाँवों में विनोबाजी को एक लवाल बूजा जाता है कि आरका यह धारणा, भूदान का काम कब प्रारम्भ होगा । इसकी खबरें बरते हुए विनोबाजी ने एक दिन कहा, "यह लवाल आरक क्यों पूछते हैं ? यह लवाल तो मुझे आरके पूछना चाहिये । आरको प्राप्त होगा कि १९५५ में शिवरत्न पदवी में कुछ आरके के नेता रहते हुए थे, उन्हें सर्वोदय-कार्यवाची भी थे । उन अपने मित्त कर एक प्रस्ताव पार किया था कि आरदान, भूदान के काम को समर्थ देना, बढ़ाया देना, देना का वर्तक है । और अर बाबा भी ही कुछ आरक है कि आरका काम कब चलना होगा । लेकिन आप ही एकका वचन दे सकते हैं ।

आत्मा सत्य-काम और सत्य-संस्कार होता है । अगर सत्य सच करते हैं कि यह काम नहीं होगा तो भी आत्मा सत्य-काम है । यह कि होता है । आत्मा आर काम करते हैं कि आरदान ही । और आरदान होता है, तो भी आत्मा सत्य-काम है, यह कि होता है । आरदान का विद्यालय कि होता है । आरक में जो सत्य कामना होती है, वह पूरी होती है । आरक ऐसा काम पूछते हैं कि मानी बाबा कि गुनाह-कार है और अक्षयि 'आरक प्रकाश-मिशन' आरक करते हैं । आरक में तो आरक ही गुनाह-कार है । इसलिये मेरी आरक शिविरों में कि आरक-मुद्राणा छोड़ो । आरके नेवनों में यह सच कि या कि आरदान हीना चाहिये । सच तक अक्षय-सुख-सुख को छोड़ो । उरका ही ही अक्षय ही है ।

बाबा आरके प्राप्त में आरक, उनको यहाँ समय दिया, लेकिन आरके हमें किनार काम दिया । बाबा की आरको तो सब दावत सार ही तो होती है । उरको तो एरको का 'आरक' कि होता है । यह यहाँ से एरक में भी चकका है, कि-उरको में भी वा चकका है । इसलिये सब-कार के पाक किनार समय है, यह आप ही देखिये और आरक काम में लाया करते । तो दिन पूरने के काम नहीं होगा । क्वा लेकिन और गाणीनी ने भाँति भी रो दिना का समय दिया था । १९०८ में भी-भी-भी ने 'दिन हरताप' पुस्तक लिखी और कहा कि यह हम सम्पद है, उरके में भी आरक समय है । बागीरथ सार अक्षय-कार ने उरके में एके और चकका अक्षय, आरक

को सुखी करती है । उरक प्रक भी उरक ही पर रहते में चर्चा होती है । एक माई ने एरके में चकका पूछा कि चर्चा के साथ भक्ति का क्या संबंध है ? विचार से धर्म और भक्ति का विच्छेद करते हुए विनोबाजी ने कहा—

"एक न करना, दूर काम न करना, अच्छे काम करना, प्रेम करना, सर्वोत्तम करना, सृष्टि न तोड़ना, संपन्न न करना, सुखियों की मदद करना—यह सब है । उरक उरक से धर्म का आचारण सब समुक्त करते हैं, सब उरके के साथ धर्मों में और विचार भीत में अक्षय पैदा होती है । उरके 'देयत्व' करते हैं । उरके बाद भक्ति का उरक करते हैं । भूदान, आरदान की गाँवों में सब यही समझते हैं कि आ-आरक सब करते, दूर को सब दूर, ब्यापार में दया सब करते । गाँव में जो हुली है उरक मान रखे । उरके पर सब बनाने है तो उरक किना देना चाहिये । सर्व-नि-विचार है । निर दय सब गाँव की परिवार के समान एक होने की सहो है । मतलब यह कि योग सबका जो सेवा सेवा हीमल बन कर, काम करने सब यह गाँवों है । योग हम सबको वैराग्य आनेवा ।

भक्ति के लिये जीवन समर्पण करना पड़ता है, चाहे वह हिंसा की भाँति हो, चाहे अहिंसा की । असम में तीस-बातीरु शैले शीव निकले, जो उरके में विदुगी प्रथम करने के लिये सेवाएँ हैं । उनके अलावा कमिष्ठ, पी० एच० पी० गौरह सब पार्टी वाले इमारतें खड़े हैं, उरक-पुष्टि करने वाले हैं । सब उनको करते हैं कि आरको जोन उरकवा है । आरके काम करने के लिए । विचार में है कि जुनाव गैले कीर्तियों के लियुन क्या दमि-कर से होगा । यह काम करो और कही लोगों के कि हमने साथ दान किया । आरक मरीच हीना तो आप पुन कर आँवेंगे । कि आरको रोकने चलन नहीं है । मैं न विचार आरक न वेरक आँवेंगे । यह सच सब लिये कि शिवरि की उरक में सवा आगेगी उरके पीले बाय उरक रहेगा यह जुनाव मीकवा ही रहेगा, सब तक सब आर्थिक आरक नहीं । सब तक आर्थिक नहीं चाहते, पुने भी नहीं मानते, उरक तक सब प्रत्य-अर्थक जुनाव जोकता ही रहेगा ।"

असम के मधुघरुण भाषणवचन ने 'नामधोष' भाषण को सब लिखा है, उरके मानने वाले लोग यहाँ ब्यादा हैं । विनोबाजी का भवना है कि प्रक के आरक में अक्षय भी सचवाट है, सब सचवाट है । उरका अक्षयन विनोबाजी अक्षय में आने के पहले ही कर उरके हैं । कर्म-कर्मि कर्मा में आने मायण में उरक दिवक से करते हैं, तो आध्यात्मिक ही अक्षय के लोगें

रहिते हम मधुघरुण नदिर बाँटें लोल सफते हैं, वहाँ लोहें । किनके हाथ में पत्नी करीं आरके से दूसरी भी नीके मास करते हैं ।"

भीकती चतुर्भुजा घोषी अक्षय मास की कल्पन दूर ही प्रतिदिनि है । सब से विनोबाजी अक्षय में आने से अक्षय हाथ में और विनोबाजी के मायणों का अनुवाद करते का काम करती है । भूदान, आरदान और शक्ति सेना के काम के लिये एक सार से लिये से संस्था के एक रहने का योग रही है । उनके साथ चर्चा करते हुए एक दिन विनोबाजी ने कहा :

"अक्षय में भी योगी हो रही है । अक्षय में जो 'वैकुण्ठारविण' एक ही होती है, यह सत्य में नहीं होती । इस कमी-कमी करते हैं कि सचवाटों को 'पावर हाउस' सेवा होना चाहिये, लेकिन 'करंट' भी नहीं होगा तो 'पावर हाउस' किन काम का । सचवाटों में वैद्य एकि अक्षय पर काम अक्षय कर सकता है । लेकिन सर्व ऊरके पर में नहीं रहता है । किर भी अननी किने चर्चा के अक्षय देकरा है । जैसे सर्वत्र अक्षय बनें सचवाट के शरार रहे और उरके मार्गदर्शन करें । ऐसी कोशिय काम हमारा होना चाहिए, किनके आत्म-काम में विश्व है । हमारे सब आरकोलन में वैद्य शक्ति है । उरक मान ही साथ तो सब आरकोलन । भी जैसे अक्षय निर्माण ही सचवाटें ।"

असम की लोग और सुन्दर मजुठी की सचवाट विनोबाजी श्रेष्ठिया करते हैं । उनकी आँवों को उरके सुन्दर अक्षय का प्रतिनिध कोरों के हृदय में दीखता है । लेकिन उनको हाथ में अक्षय में एक बहुत काम होता है, किनके कारण अक्षय से पुणों का योग किनार नहीं हो सकर है । इरके बारे में है अक्षय-नर लोनों की शक्तवती रोमें । एक दिन मिठ सले के यात्रा की पत्नी भी, उरक सचने में कहाँगी एक माई ने बताया, कहा कि यहाँ आरक अक्षयों का एक चकका था । उनमें से एक पुण ने देखा कि यहाँ के लेन बहुत आरकोली है तो उनको काम में लगाया चाहिये । इसलिये यह एक पक्ष बनने का काम किया । इस उरके को 'आरकी शकल' करते हैं । विनोबाजी करते हैं कि 'यहाँ बनाने बहुत सचवाट है, इसलिये अनिय में विश्व दाने में क रहे हैं और जुन

हमारे अक्षयिनी का विद्यालय सब प्रथम रहे—इके अक्षय में शैक्षिक, सुविधाही लालन है । सचनी लालन सचको मिलनी चाहिये । गान से वाचना-संग और किर-रत्नलन, यह आरकी भी शिविर है । उनके

चम्बल घाटी शान्ति-समिति की डायरी

(माह जून '६१ से अक्टूबर '६१ तक)

चम्बल घाटी की शान्ति समिति की देखरेख में जून के आत्म-समर्पणपत्रों वाली भारतीयों की पैरवी का कार्य जो टीक के तहत था। सभी दलीलें भारतीयों की भूमि को छिछोरे वाक्य ही ज़ुतार दी गई थी, लेकिन समिति के कार्यकर्तियों के सामने खोटी सुरक्षाओं को सफराने की ज़िम्मेदारी थी। इतिहास में पिछले पिछले दशकों से तब तक उस समय की हल करने का उपाय ही होता रहे, दोनों पक्षों के लोगों के सुलभ सम्पर्क जारी था, लेकिन व्यवधान दृष्टिकोण नहीं हो रहा था।

रुजिंदी की टिक में तब किनासा कि कौरे की नदरनिह और रामदास की रूप ही उन लड़कानों के लिए समिति के कुछ कार्यकर्ता वहीं पर आग्रह बना था। बर्बर सख्त ज़ुतार का प्रकल्प करें। निग्रह को कार्य रूप में परिष्कृत करने के संकल्प में ही तब तक मंग दरदर के इतनी तब पर पकड़ कर हुई। नदरनिह के जेठ में गाँव में हुए हिंसे के बाद कौरे की नदी करने के लिए ही वाक्य माना प्रारम्भ कर दिया गया।

अभी-अभी दुनियाघर ही जारी गई थी, हिंसे का देर लेख में पता हुआ था, बारंबारी नदी के बचने के लिए और भोजन के लिए बाढ़ के कार्यालय पर चले आये थे, सभी को ६० घंटे ११ की सुझाव करने में ही दुनिया कि आग्रह की इतनी की किनी में ही तब तक जूट में पकड़ दी है। साँपों को हवा आग्रह हुआ। बर्बरता वाली भीने पर पहुँचे ही दुनिया हुआ सब आँसों के बहा। जूट में ही इतनी ही नहीं, धरि जूट के देर भी वाली सराह करने की हिंसे के उभरी में कि गिरा गया था।

हल बनाना के लिए समिति में क्या उपाय हो गया। उनके मन में वह जानने का ही तब तक आग्रह हुआ कि देते, बाप के ही तब तक सख्त करते हैं। हम लोग ही तब तक प्रतिष्ठा के सम्बन्ध में सामने के लिए सुझाव ही लोग दुनियाघर आकर हम लोग ही गतिविधि करने को, बाप ही तब तक भी दुनिया के लिए कि अब बाप को सख्त करते हैं, आगे का ही क्या सम्बन्ध हुआ। तब हम लोगों ने क्या शुरू किया-अपने साथ जोरें अग्रवाय नहीं हुआ है, बल्कि हिंसे जेठने वाले सख्तों में ही हमारे कार्य में मदद ही हुई है, क्योंकि हम लोगों को ही तब तक हिंसे कर ही काम करना परता। तब पर लोगों को हवा आकर हुआ। उन्होंने ही देखा हमनी इतनी ही नहीं था। वे ही वाली बानने के कि अभी रिपोर्ट हीगी और अभी तब तक आग्रह शुरू लोगों को पकड़ कर जेठनी, देखा कि वे लोग अग्रव के सामने में देते रहे थे। लेकिन आज किडुल उठवा अग्रवाय देल कर गति-बन्धन के आग्रह में तब गये। इस लोको के विचार-परिवर्तन के प्रयोग ने हम लोगों के कार्य को बना ही सफल बना दिया, जेठनी जितनी भी सख्त परा हीगी की परा। भी उसी अग्रव के न करने के लिये प्रयोग जान कर अपना कार्य-संचालन कर रहे थे।

एक दिन उन्होंने देखा कि एक मारें हुए लिये हुए था रहे हैं, बाप पर आये की सख्त कर कर बोले- 'दरा, आज ही हमनी निग्रहान प्रेम रहे हैं। यह ही अग्रव हुए, यह वही हुई है। मैंने आग्रह कोरें उग्रमान ही देखा है।' इस पर दरा ने कहा कि हिंसे की ही शिवालय

हुमा। आर्चनाकर्मवी लोगों-पैरों पैरुल पर ही आग्रह पर पहुँचे। ग्राम को शान्तिस्थलों में आर्चनाकर्मवी के आग्रह में पचावत की भूमि देने का प्रस्ताव किया, लेकिन आर्चनाकर्मवी इस प्रस्ताव से सहमत नहीं हुए। उन्होंने कहा कि लोग अपनी सक्ति के अन्तर्गत का लाभ उठा रहे हैं, कोई का र्नाम अन्तर्गत आग जल, तो जलमें हीन सभी सख्तों के जो उत्तर रहे हैं। इस प्रकार के कार्य के लोगों में आत्मसन्तुष्टि पैदा होगी, मित्रों के सम्मान-रचना को बल मिलेगा। कठिन दल रहे साथी कार्य-कर्ताओं की चर्चा हुई। आर्चनाकर्मवी ने समिति के कार्य की सहायता करने हुए कहा कि वास्तव में आरोग्य प्रभाव कार्य कर रहे हैं। यह केवल विचार का कार्य नहीं, बल्कि विचार को अग्रवाय में बदलने का कार्य है। देते हमने में बाप का मार्गदर्शन ही आरोग्य के लिए उचित पथ-पर्यटन होगा, हम लोग अपनी सक्ति पर हमने सख्तों को बदलने रहे हैं।

भी आर्चनाकर्मवी ने हल जेठ के ४-० गीण बन्धों की सख्तों पर प्रस्ताव के योग्य और विद्युत हल सहायता देने का सख्त विचार, जिसमें २-२ बन्धों की ही बचाना सेंट ही है। ता-३-० विद्युत की आर्चनाकर्मवी तब आग्रवादी की विचारों के लिए सख्त आग्रवादी की विचारों के लिए सख्त आग्रवादी के हल जेठ में युद्ध जाने का बाप केकर लगी लोग बाह के आग्रह प्राप्त आये।

बनेपर में आग्रह बन्धों के लिये सहायता पैदा हो, सक्ति आग्रवाय से बापों परितो-॥ सख्त सम्पर्क बनाये रखने में मदद मिले। इसके लिये ही उपोद्धार मारें, भी सख्तों-कर्मवी तथा भी दुर्गाभारें हुए रूप में बरबर सम्पर्क हल सहायता कर रहे हैं।

जेठ के प्रारंभ में सक्ति-संस्थापना में सहायता-पूर्वकाने के लिए कार्यकर्ताओं की के हलकों को अग्रव में तब कराने का प्रस्ताव करने रहते हैं।

जिन्हें जेठ के माघ घाटी क्षेत्र में एक भूमि सख्तों सहायता चल रहा था, जिसको भी सख्तों-घाटी-सैनिक ने कार्य-सहायता करने उठवा करारा।

बाद जेठ के अन्तेला प्राम में आग्रह में ५-० हुकरने चल रहे थे, जिनमें कठिन ३-० बन्धों पहुँचे हुए थे, तो दिन तक प्रयास करने की निग्रहनी, हानी गुण-सम्बन्धों तथा भी सख्तों-सिद्ध में गाँव के लोगों में अग्रव में प्रेम पैदा किया। तब ही लोग सक्ति आग्रवाय गये, यहाँ अग्रवाय में सभी मानने शय करने थे। दली सक्ति के सख्तों-सिद्ध सख्तों में तब कराने का प्रयास भी सभी सक्ति-सैनिक करते रहे हैं।

मृदातन्त्र

गढ़वाल में शराबबन्दी

नगिन माई परेख !

सोचनीय विधि

अहस्रतीत्वका आदर्श

हिनदुस्तान आक्रमण के मही, १९११ में शोशवात रजता है। कारठ के शक, हण, आर्य, महार, पारस, अलाउ, अंग्रेजी, आर्या, सही आये। हमने सषका कहुल कीया, सषका वलायत, सष आर्याकाईया, सषका 'अ'हस्रतीत्व' काया। हमने 'अहस्रतीत्व' काई कहुलया हिनदुस्तान में कलाये। काय हीदुस्तान के 'पं'वशील' का नाम काई कहुलया के भोका जा रहा है। 'पं'वशील का अरथ है, बीशन में बीपीयता का सहज करण। यही भारतीय संस्कृती है। ब्राह्मण, कषवरीय, बंधुय और शूद्रक भवने-भवने कहुल भोशन है। बीनय, भारतीय संस्कृती बता रहते है की 'ब'ंधु या शूद्रक भी भवने होने के सोने ब्राह्मण भवने की शूद्रक नही। नैयकान भावना से जो भवने-भवने करण से रत रहने, 'ब'ंधु के करणभोग भी परमेश्वर से द्राष्ट कर सकते है। 'ब'ंधु के करणभोग मारकः संतोष्यी कसते नर-भवने-भवने करण से संशुभर रह कर तीव्रकान भावने में सषकपुत्रा समक करवापार काने वाकें व्यापारी मी कहुल भी सकते है। हमार पदम पठठाता के की व्यापारी भवने सोने नही, दूधरी के सोने बला कने और दूध के कसके टरहटरे रने। बीनय कर दकी टरहटरी रन कर भू सका कषमोग कसती है। ती व्यापार और धन-संग्रह करते हुअे भी वे मीर्य पा सकते है।

मोडवाला, १२-२-१९११ - नौतीवा
लिपि-संकेत I = १, II = 2, III = 3, ४ = 4, ५ = 5, ६ = 6, ७ = 7, ८ = 8, ९ = 9, १० = 10, ११ = 11, १२ = 12, १३ = 13, १४ = 14, १५ = 15, १६ = 16, १७ = 17, १८ = 18, १९ = 19, २० = 20, २१ = 21, २२ = 22, २३ = 23, २४ = 24, २५ = 25, २६ = 26, २७ = 27, २८ = 28, २९ = 29, ३० = 30, ३१ = 31, ३२ = 32, ३३ = 33, ३४ = 34, ३५ = 35, ३६ = 36, ३७ = 37, ३८ = 38, ३९ = 39, ४० = 40, ४१ = 41, ४२ = 42, ४३ = 43, ४४ = 44, ४५ = 45, ४६ = 46, ४७ = 47, ४८ = 48, ४९ = 49, ५० = 50, ५१ = 51, ५२ = 52, ५३ = 53, ५४ = 54, ५५ = 55, ५६ = 56, ५७ = 57, ५८ = 58, ५९ = 59, ६० = 60, ६१ = 61, ६२ = 62, ६३ = 63, ६४ = 64, ६५ = 65, ६६ = 66, ६७ = 67, ६८ = 68, ६९ = 69, ७० = 70, ७१ = 71, ७२ = 72, ७३ = 73, ७४ = 74, ७५ = 75, ७६ = 76, ७७ = 77, ७८ = 78, ७९ = 79, ८० = 80, ८१ = 81, ८२ = 82, ८३ = 83, ८४ = 84, ८५ = 85, ८६ = 86, ८७ = 87, ८८ = 88, ८९ = 89, ९० = 90, ९१ = 91, ९२ = 92, ९३ = 93, ९४ = 94, ९५ = 95, ९६ = 96, ९७ = 97, ९८ = 98, ९९ = 99, १०० = 100

भारत सरकार के संदर्भ-पत्र 'पत्रिका' (१९११) में उक्त प्रदेश में अग्र-बन्दी की बन्दी करने हुए हुए १९१२ पर लिखा है कि 'पुलवा, हरिद्वार और चण्डिगढ़— इन तीनों स्थानों में तथा नरारु, पला, पंरदुलवा, पंरदुल, जौनपुर, कानपुर, मैरुती, प्रयागपुर, रायबरेली, मुल्तानपुर और उन्नाव— इन जिलों में सुकमिल शराब-बन्दी है।'

गत १० नवम्बर १९१६ के 'भारत-पत्र' में 'मृदातन्त्र में शराबबन्दी' शीर्षक समाचार में बताया गया है कि इस वर्ष में प्रारम्भिक के दो मील पर दालबाग में जमीन की एक नयी खुदान खोनी गयी है। उन्नावक के मार्ग में, कडीया, गमोली और बजोली के तीनों गांवों के रास्ते में कोटवा, कसपुर, गीरी, बीनय, लीरी, चम्बोली, नरेन्द्रपुर और हरिद्वार में तो शराब की दुकानें पहले से ही थीं। इन सभी दुकानों पर इलाहाबाद के आगरीय बमिन्वर ११ १ अप्रैल १९११ का यह आदेश सुनना-पढ़ कर रमा दिया गया है कि 'हर स्थिति कम्पनी शीर पर देवी परमाण की भात कोतने दल बार से जा रहते हैं और अल्पे भात रस भी सखा है।'

इसे अग्रदुख की मानना चाहिए कि एक ओर हमारी सत्ता का रत देण में कसरी के कसरी पानगरी करने के लिए इतदकष्य है और तोयों में विशेष रूप से सत्ताकाल का उरन पीरती है और दूसरी ओर 'निर्दिष्ट' के काल में नयी दुकानें कोल कर आठ आठ कोले करीये,

ये खेतिहर मजदूर !

पश्चिमी काल के खेतिहर मजदूरों के काल में भारत सरकार के अग्र मंत्रालय की ओर से हाल में ही एक रिपोर्ट प्रकाशित हुई है। उसमें कहा गया कि आरिष्टी पीरती है कि खेतिहर मजदूरों की हालत दिन दिन गिरती जा रही है। १९१०-११ में वहाँ ५३ २१ पौण्डे खेतिहर मजदूर परियार थे, १९११-१२ में उनपर अग्राल मजदूर ६१,५१ ही गया। पश्चिमी काल में ५०-६० में ऐसे पौण्डे की संख्या १०,००,००० थी, १९१०-११ में यह मजदूर १६,६६,१०० हो गयी। देहाली परिवारा में लगभग बीसवाँ परिवार खेतिहर मजदूरों की ओर रत करती है। एक ओर तो खेतिहर मजदूरों की संख्या बढ़ रही है, दूसरी ओर उनकी आमदनी घट रही है। १९१०-११ में उनकी औसत आमदनी १ रुपया ६ पैसे थी, १९११-१२ में १ रुपया ४ पैसे थी यह गयी। पहले से यह २३ पैसे थोड़े कम थी। इसका ही नतीजा हाल में काम मिलने के दिन भी पहले से घट पड़े हैं पहले २३० दिन काम मिलता था, ४ साल कम २२० दिन ही काम मिलने लगा। पहले जहाँ जहाँ हाल में १२ दिन मिलजुल मेका देना पड़ता था, वहाँ ६ हाल कम उरने १२३ दिन

रखते और पीने के लिए कस्ययत्त प्रचार करती है। मृदातन्त्र के सभी राजकीय पद और यहाँ की सभी सार्वजनिक संस्थाओं में इस बात की जोरदार मांग की है कि गढ़वाल में पूरी उद्यमन्दी की जाय। चम्बोली जिले में सरकार द्वारा बनायी गयी जिल सलाकारी कमिटी में ही अग्रदुखी का प्रस्ताव किया है। हाल में मजदूरों के बने-पडे नेया भी सफल-वन्द योग्यता— अग्रदुख, अग्रिम जिल परिषद में अग्रदुख की संघ सेते समय यह कोणक भी है कि ये अपने जिले में इतद शराबबन्दी चाहते हैं। यदि यीम ही उचित करार-वन्द हो गयी तो उन्होंने शराबबन्दी के लिए सहाय्य और अनजान करने का भी निश्चय-वक किया है।

इस सभासे ही कि मृदातन्त्र की जनता की यह उचित मांग सरकार को अविचल स्वीकार करनी चाहिए। केवल अधिकांश यम ही सरकार पर दृष्ट नही होना चाहिए, जनता की राय और उसके पक्षर प्रभाव भी और भी उजे पान देना चाहिए। अग्रदुख, सरकार इसके लिए सहाय्य की नौबत न आवे है।

मेकरा मेकरा पर रह है। इन सषकों का सहाय्यक परिलया पद हुअा कि १९१०-११ में वहाँ जलना ११० रुपया १४ नये पैसे आमदनी थी, वहाँ १९११-१२ में यह घट कर १६६ रुपया ४८ नये पैसे रह गयी। अग्राल आमदनी में २६ रु. ५६ नये पैसे की कमी हो गयी है।

खेतिहर मजदूरों को १९११-१२ में पहले की अपेक्षा काम कम, मजदूरी कम, आमदनी कम तो हुई ही, खर्च उरने बढ़ने लया। उनके जलना सषके में ६८ रु की इति हो गयी। पर वहाँ थोड़े पूरा ही उरने के लिए 'अ'प उरना पड़ता है। १९१०-११ में वहाँ ३२ प्रतिशत परिवार शूधी थे, वहाँ १९१६-१७ में ६१ प्रतिशत परिवार शूधी तो थे। १९१०-११ में प्रति परिवार पर यहाँ ४४६० अंगुल कने था, वहाँ १६-१७ में पर ५६०० ही गया। अग्रदुख का औसत पहले १५ पं था जो १६५० में बढ़ कर १२६ ही गय। अग्रदुख उरने १६० पीरती इति हो गयी।

उक्त प्रदेश और अग्रदुखी को जोड़ कर भारत के सभी राज्यों में १९१६-१७ में खेतिहर मजदूरों की संख्या में इति हो

हमें यह जान कर अत्यन्त दुःख हुआ कि गत १९ श्राविक को हमारे राष्ट्रीय भारें परेख का देहाजन हो गया। गुजरात के सख्य परिवार के नगिन माई केलेउ तथा पुरीय के अन्य देवों के उच दिवा प्राप्त कर बब भारत छोटे तो वे विनोय के पक्ष पड़े। मृदातन्त्र और आमदानी पर विचार उरने हुना अंका कि उन्हीं कोरा-पुट के आदिवातियों के लिए अरुना बीनय ही समर्पित कर दिया। भी अग्रदुख सहजउदे के मार्गदर्शन में वे कोरापुट जिले के वेण्टेरुटा क्षेत्र में काम निर्देशन के काम में निठा रहे उट पड़े। अपने प्रेमिल और हेतुवर्तयय अग्रदुख के उरनेसे कोरापुट के आदिवातियों के इत्य में अत्यन्त धनैवर्तु स्थान बना लिया था। मृदातन्त्र के देवे कर्मउ विरक के उठ जाने के कोरापुट की ही मही, इस सषकी मारी छति हुई है। इस मारी भारें के वीन-वतत अग्रदुख परिवार के अग्रि हारिक सभेदेन प्रकट करते हैं और परमप्रभु से प्रार्थना करते हैं कि बर दिवगत आत्मा को शानि प्रदान करे।

गयी है। उगीत, केल और पत्रय को जोड़ कर सभी राज्यों में खेतिहर मजदूरों की संख्या की दर पड़ने के घट गयी है। प्रति व्यक्ति की आमदनी १०५ रु. ६ पैसे घट कर ९९ पं ४० नये पैसे रह गयी है। उरत परेख, उगीत, पश्चिमी काल केलेउ, मद्रास और बिहार के खेतिहर मजदूरों के अग्र की सख में विशेष रूप से इति हुई है। खेतिहर मजदूरों की यह अपनी स्थिति केवल पश्चिमी काल में नहीं है। वरं भारत की हर प्रांती इति है। दिन दिन बिगने वाली यह स्थिति हथ पान पर उरने के लिए इतद शूधरमा अग्र-वक है। छोटी और जमीनोती के विस्तार के ही हमें कुछ हारा सिध बा सकता है। शरारत ही रत दिशा में उचित कदम उठाना चाहिए सषकी रूप से इसके निराकरण का एक ही उरय है और यह है— अग्रदान।

— श्रीकृष्णदास मट्ट

'संतोष्य'
अंग्रेजी मासिक
स्थापक : एन० रामचन्द्राणी
वार्षिक शुल्क : साढ़े चार रुपये
का : शांति-व्युत्पन्न, नगरी
में एक सँके देना करे

जिनके उलटवटव से सभी साहित्य रसिकों को
दिया जात करे।

भाषाओं को लेकर यदि कही स्वल्प वा गर्व-बहुवार देखा जाता हो तो यह राजकारण को देन है। जस्तितव के क्षेत्र में स्वल्प की चिन्ता रखनी होती है और वहाँ सचितमूलक स्यात्-प्रतिस्पर्धा की वासना भी नाम करती है। निम्नु हम जानते हैं कि स्व और पर के बीच चुपचाप ही तो यह साम्यिक है, इतलिये कि स्व-पर भाव में धीरे-धीरे परस्पर-भाव जाग्रत हो।

आवश्यक यह है कि निदान साहित्यिक राजनीतिक मन्वेष्यों के अधीन होकर तत्काल पर ही समाप्त न हो, बल्कि वर्तमान को भावी की दिशा में निर्माण देने की, अर्थात् मूल्यों की भावना में जोने। अस्विय की अट्टा लेकर वर्तमान के प्रति व्यपचार करने से ही इस दिशावत् के अंगभूत हो सकेंगे, जन्मना विना और भाषा सम्बन्ध आयेगे। यह राजकारण, जो उत्तम को ही प्रधानता देकर चल्ता है, चापूर समरया उपमावा जाता है। संभव है कि राजकारण के पास कही नाम हो और उच्चरी औरवि साहित्य के पास ही बच जाती हो। जो हो, दूरदर्शन की सुविधा साहित्य को ही है और उनकी यह कही जिम्मेदारी है।

हो सकते हैं। इसीलिए राजनीति में वे प्रथम पाव अग्रणी बना रहते हैं। अनेकता को करने में तो एकता आती नहीं है; और राजनीति का प्रयत्न कुछ उदात्त दिशा में दृष्ट्य करता है। वहाँ सचिक की युक्ति है और मूल्य के आधार परस्था और एकता होती है। उद्यम अत्यन्त को अद्यत्तायें बना पड़ता है। इसीलिए यह एकता विचारधारा नहीं दृष्ट्य करती, सं-सुधील हो जाती है। साहित्यिक समराल के यद्यन के लिए आधारभूत है कि प्रत्येक विविधता के लिए आधार ही और उद्ये केवल उद्य परस्पर आदर की ही सीमा हो। इस बहुधावयवता के निम्न यद्यन, दल-सन्धान बन जाते हैं और राजनीतिक समराल पैदा करने लगता है।

साहित्यिक के साथ सामगरी को

सामगरी सामग्री आपस में मिलनी दूर सम्यकी है, असत्य में वे उतनी दूर नहीं। समी में संकल्प के तत्काल और स्वल्प यद्यन की कृत्वावय विभेदनी। क्रियापद आदि में कुछ भेद हो सकता है। लेकिन अल्पिक भेद और अल्पिक लिपि भेद के कारण होता है। संकल्प के कारण देवनागरी लिपि सरके लिए बहके से ही परिवर्तित है। वर्णमाला की अक्षरलिपि मिल हो सकती है, आधार पर बहक स्थानम अभिव्यक्ति है। परभाष्य यदि अपनी विशिष्ट लिपि के साथ आपसी लिपि को भी अपनाते हय चायें तो आपसी की साईं काफी कम हो सकती है।

देवनागरी लिपि यदि भारतीय बनती है तो आपस के रोग का साधन और साथ वेदने के लिए उसमें आधारभूत सुधार भी अपनी विवेक का सकते हैं। यदि यह लिपि हिन्दी की हो, तो साधन-सम्बन्ध को आपस कर संशुभाष्य का सकता है।

कुछ सुझाव

विभिन्न भाषाओं में आपसी परिचय की काफी नहीं है, बल्कि उद्यवय की दिशा में समराल और बहुधावय भी आधारभूत है। इसके लिए एक साहित्य परिषद की संस्था होनी चाहिए, जो भारत के अन्तर्गतों को प्रतिदिशि हो। भारतीय भाषा, इतर देशों के भाषी मन्त्रों यह आलोचनायें हने। एक नैत्रोप सुधार की इहमें सहा-सक होना। उद्यवय प्रतिष्ठानों परस्पर के साथ होनी चाहिए। उनमें उद्यवय नेत्रोप साहित्य का सुधार हो। उद्यम भाषा का प्रयत्न हो और अक्षरों एक देवी भारतीय दृष्टि करके सम्यक आनी रहे,

कानूनी एकता का खतरा

निम्न मातृवी साहित्य न इस भाषा में है, न इस भाषा में है; न देवी भाषा में है, न आर्यनी भाषा में। इस तरह भारत के पास एक साहित्य नहीं है, अनेक साहित्य हैं। उनमें ही साहित्य है जिनको कि भाषाओं है। राज्य अन्तर्ग एक है, कानून एक है, विधान एक है, केंद्रीय सेवाएँ एक हैं। साहित्य यहाँ कम से कम चौरही हो ही है। यदि साहित्य चौरही हो तो भारतीय मनोभाव चौरह विभागों में खंडित बने तो कथा आकाश है। कानून और कानूनविद्य के बीच के देह को अन्तर एक बना दिखाना या बना देना चाहता है जो निम्न अस्विय कि यह एकता आमक है, उनमें पूर के भीष है। वहाँ अनेक कानूनों के ही गणों, बल्कि अन्त्या-अन्त्या स्वतन्त्रों और स्वतंत्रों के बीच में भी वहाँ लिखावत और ज्ञानम दृष्ट्य करता है। अनेक यहाँ अक्षरों मादर हो ही है, लेकिन एक एक अक्षर-अक्षर नकबो रखता है। वहाँ देवना आकाशों की एकता नहीं होती, हर एक अपने दाँव और दुवरे के पास में रहता और केवल अपने लिए अन्तर देखाता हुआ अन्तु अन्तुप्राधन में पच्छ्या प्रतीत होता है।

साहित्य एक है साहित्य ठीक इसी राजनीति से मिल है। वहाँ मूल इसी रसिकता का निवर्तन है और हर परवक का स्वीकार और स्वीकार है। इसीलिए यत्रि भाषाओं चौरह हैं, लेकिन साहित्य एक है। सब प्रुष्टिय ही मास का ही साहित्य एक नहीं है, समुचे विषय का साहित्य एक है। भाषाओं के भेद से साहित्य में भेद नहीं पड़ता। कारण, साहित्य का सत्य मनुष्य है और साहित्य में उस भाषा की ही परिचय है। इस दृष्टि से देखेंगे तो जान पड़ेगा कि राष्ट्र और पद्ध-वाद के आधार पर बने हुए अभिनिष्ठों और मतादेशों से उत्पन्न बहि मानव जति को दमी मिलने वाला हो तो, वह साहित्य के दृष्टियों के हटकार पर है। मिलेगा। अन्त्या अक्षरों में इष्टव्य ही होगी, उनमें परस्पर विवर्तन का भाष्य नहीं पायेगा।

साहित्य एक है

उपरोक्त का यद्यन नैत्रो है। एक है कि स्व-पर भाव में धीरे-धीरे और एक पर देहों से तो किसी अक्षरमाला में ही

ऊपर से नहीं, मूल से

आपसी की ओर से भारतीय साहित्य एक ही है, लेकिन इस कारण और भी आवश्यकता है, पचना और यथायें में उद्यके क्षेत्र को अक्षर और पुट किया जाए। राजनीति स्तर पर इस सम्बन्ध में काफी कुछ किया जा रहा है। विधायन आसक्त्यन्त बहनागरील है और इस ओर कुछ कुछ आगे भी कला चायेंदा है। किन्तु शासन और शासक की चायेंदा है। घटिक के आद्यन से आधार उद्यवय वर्णम-माला-द्वय पर दृष्ट्य डाले किना नहीं रह सकता।

इतलिये एकता का काम स्वल्प राज-अन्तर और जन-सन्तित के संयन से किया जाना चाहिए। उसके अन्त्या-अन्त्या को ऊपर के यन्त्रमाल से माना है और विभिन्न भाषाओं के साहित्यिककर्तों को स्वल्प अन्त्या-अन्त्या में इस साहित्य को और स्वायत देना और उत्तरी प्रुति में लगाना है।

यह दृष्ट्य की बात है कि आपसी में साहित्य के बारे में परस्पर चौर अपरिचय है। संस्थाओं द्वारा होने वाला काम इस विषय में हमेशा अनुरूप रहता है। स्वाय-साहित्यिक कौशल की आगे आना चाहिए, जो प्रगाथियों का निर्माण करे और आद्यन-प्रदान के प्रकाश को परस्पर सहेन कर दे। वर्तमान में त्रिनेया और बन्ध आदि के क्षेत्र सांस्कृतिक एकपुत्रता की दिशा में नाम करते हैं तो यह अत्यन्त रहता है। उनका स्तर विचार की समझता तक नहीं उठ पाता। यद्यक का साम्य यह है जो उद्यव के साथ विचार का भी सहेन करता है।

सामगरी भाषना के स्तर पर यदि मास को एक और सम्यक बन कर विषय के सम्यक आना हो तो यह देह की साहित्यिक और नैत्रिक सम्यक के साधन और यद्यन से ही हो सकता है।

राजनीति का प्रयत्न

उपरोक्त का यद्यन नैत्रो है। एक है कि स्व-पर भाव में धीरे-धीरे और एक पर देहों से तो किसी अक्षरमाला में ही

सर्वोत्पत्ति-कार का संदेशात्मक
‘मामराम’ तात्कालिक
 संपादक : श्री ओ.कुमार श्री
 ‘मातराम’ ब्रह्म हो साधनार और बहुत ही सुन्दर एक निष्ठा पत्र है। एक तरह की जनता की हममें रहती है। राजकारण में हर निष्ठा अक्षर-अक्षर के द्वारा यह वह विचार ही की चाहिए।
 -विनोद
 साहित्यकार : वीर राम
 साधनार का पता : ‘मातराम’, इन्दौर
 निष्ठा, विनोद, जन्तु (सम्पत्तम)

साम्प्रदायिकता : एक विरलेक्षण : १ • दादा धर्माधिकारी

सम्प्रदायवाद का अंग्रेजी में शब्द है 'कॉन्वन्शन्स'। इससे भाषांतर के लिए बहुत-से पर्याय शब्द मुझे मिले हैं, जैसे जमातवाद आदि। 'जमातवाद' से 'सम्प्रदायवाद' अधिक उपयोगी शब्द है। यह जैसे बटुए उपयोगी शब्द तो नहीं है, पर फिर भी 'कॉन्वन्शन्स' से जो मतलब होता है, उसको व्यक्त करने के लिए हमारे अपने नाम के लिए 'सम्प्रदायवाद' शब्द उपयोगी है। 'सम्प्रदाय' पहले समझ लें, बाद में 'सम्प्रदायवाद' को भी समझें। सम्प्रदाय एक विचार के पक्ष को कहते हैं। जिस विचार का एक पक्ष हो और उसकी परंपरा चले उसे सम्प्रदाय कहते हैं। अंग्रेजी में 'कूल ऑफ वाट्स' का अर्थ है, सम्प्रदाय। एक विचार-पंथाली को परंपरा हो जाती है। किसी व्यक्ति के अनुभावों में गुह-स्थित भी परंपरा भी सम्प्रदाय कहलाती है। ऐसे बहुत सम्प्रदाय आज भी दुनिया में हैं, पहले भी थे।

हमारे ब्राह्मणों के मित्रों के सम्प्रदाय रहे। वेतों में जो अनेक शाखाएँ हैं, उनके भी सम्प्रदाय रहे। वे सम्प्रदाय अपने में एक ही माने जाते थे और एक ही भी नहीं। एक विचार की परंपरा चल पड़ती थी, किसी पुरुष की एक परंपरा चल पड़ती थी, उसका एक सम्प्रदाय बन जाता था। परन्तु साम्प्रदायिक अभिमान का परिणाम साम्प्रदायिक द्वेष है। उस बन्धन को होता था। जैसे ब्रिटिश और फिजिजियन के कुछ सम्प्रदाय हैं। उनका परिणाम यह हुआ कि वे एक दूसरे के मन भी नहीं पड़ते थे। यह सम्प्रदाय अभिमान है।

अन्धे गुह के लिए मित्र होना, एक गुण की है और सम्प्रदाय का अन्ध-मान होना निरनुकूल अन्धता की है। इसके सम्प्रदायिक कष्ट पैदा हुआ और फिर साम्प्रदायिक द्वेषिणता का विचार भी उसके अन्धे बन्धन। परन्तु सम्प्रदाय अपने प्रतिकूल शक्ति में कोई हानिकारक बन्धन नहीं माने जाते थे। साम्प्रदाय में अपने मान में यहाँ तक चला है कि चाहे एक पाप सम्प्रदाय हो, लेकिन वह किसी सम्प्रदाय का नहीं है तो मुझे दण्ड उपेक्षणीय है; क्योंकि उसके पीछे कोई विचार-परम्परा नहीं है। तो वहाँ वहाँ गुह सामान्य और सर्व-सामान्य होता है, वहाँ परम्परा का महत्त्व होता है। जिनके धर्म हैं और जिनके धर्मिक स्वार्थिक हैं, वे या तो एक सामान्य-समूही होते हैं या गुह-सामान्यतावादी होते हैं। वे एक-सामान्यतावादी और सत्य-सामान्यतावादी अथवा आदर्श और अभिमान-सत्य बन जाते हैं और साम्प्रदायिक अभिमान से ही साम्प्रदायिक अन्धता पैदा होता है। साम्प्रदायिक आन्धता में वे ही अपने स्वयं के साम्प्रदायिक अन्धता पैदा होता है, जिसे अन्धता में 'धर्मोद्योग' कहते हैं और वही सम्प्रदायवाद का मूल-कारण है।

गुह की मित्रता, सत्य की मित्रता अगर धर्मिक है, तो उसमें से कोई दुर्भाव पैदा नहीं होती, किसी मंदार का कलर पैदा नहीं होता, लेकिन गुह की मित्रता और सत्य की मित्रता का अन्धमान, अन्धता और उन्माद का रूप ले लेती है। तो उसमें से कलमकल सम्प्रदायवाद पैदा होता है। जिनके सम्प्रदाय धर्म हैं, इन अन्धों में धर्म-धर्मों का धर्म, हिन्दुओं का धर्म और एक दूसरे तक आकर का धर्मियों का धर्म आदि हीनता का धर्म, जिसका के हीन करीब सभी धर्म 'सम्प्रदाय' हैं। सम्प्रदाय के दो मुख्य लक्षण होते हैं। एक लक्षण उसका यह होता है कि दूसरों को अपने से दालिद करना चाहता है।

इनकी कोई एक दुर्भाव शक्ति नहीं की जा सकती है, दूसरों की शक्ति भी नहीं की जा सकती चाहिए। किसी सामाजिक समस्या की व्यापक नहीं हो सकती। फिर भी दूसरों सम्प्रदाय की अन्धभावना होती है, इसलिए अन्धता से अधिक अन्धक व्यापक किया हो सकती है, उसका प्रयत्न करना जाय।

नाटो में उचने बमाले में एक सुलक्षण वैरिटर है—सुदम्भद आरण्य ॥ शरीर हृत्त के थे, वहाँ देण भक्त थे। सुदम्भद आरण्य में एक श्रावक ही और भक्त का समकाल ही उनसे और अधिक अन्धक व्यापक उसके बाद मिलने नहीं को। उन्होंने अन्धक यह भी कि वह भी अन्धे था या सम्प्रदाय को अपनी नागरिकता या राष्ट्रीयता का आधार बतवाते हैं तब में सम्प्रदायवादी बनते हैं। इसका प्रकाश कर दोला ॥ में सुलक्षण हैं, इस लिए मेरी विचार नागरिकता है, मैं हिन्दु-इसलिए मेरी विचार नागरिकता है, मैं सिख, पारसी, यहुदी, बौद्ध, जैन, अनुक भक्त का हैं या अनुक सम्प्रदाय का हैं, इसलिए मेरी विचार नागरिकता है; अन्धक मुझे कुछ नागरिकता के विचार अन्धक प्रकाश होता है। एक तरह से सम्प्रदाय के कुछ विद्व होता है। इस तरह वे ही सम्प्रदाय होते हैं, यह विद्वान्ता होत है। इसके साथ-साथ यह अन्धता परिलक्ष होता है तो दूसरे सुलक्षण पैदा होते हैं। नाम बरलता है, भंग बरलता है और हमारे देश में मुख्य अन्धता प्रकाश हो बरलता है। इनके सारे लक्षण इनके पैदा होते हैं। यह दो गुह सम्प्रदायवाद। अब यह गुह-सम्प्रदायवाद अब धर्मोद्योग में प्रवेश करता है तब वह समाजकी सम्प्रदायवाद बन जाता है। याने इस लक्षण से सम्प्रदायवाद जिन्हे सुलक्षण ही बनते हैं, वे अपने सच नहीं हैं। यह वह राजनीतिक अन्धता है 'दालिद को मान, तो उसमें जो भारतीय पुराई आनी चाहिए थी, वह भी आनी नहीं। यह हमारे देश के 'कॉन्वन्शन्स' का अन्ध का शक्ति है।

अब इसका एक लक्षण यह है। यानी अन्धों तक सिवाये लक्षण बरलते, इनकी अन्धता व्यापक करनी ही तो नहीं थी जाय। अन्ध में जिनके सामाजिक प्रकाश होते हैं, उनमें भी कोई एक लक्षण यह दो कि इसके अन्धे सम्प्रदाय के अन्धक ईश्वर का सत्य स्थापित करना है। इन अन्धों के तीन

ईश्वर हो गये। हर सम्प्रदाय का ईश्वर अन्धके सच में वर्णित ईश्वर होता है। मैं हिन्दुओं के सम्प्रदाय को बात कर रहा हूँ, गांधी के सम्प्रदाय की नहीं। गांधी ने राम शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थ में किया था और इस देश में जिनके सम्प्रदाय हैं, वे कर सकते हैं। शब्दों का अन्धता का अन्ध-अन्ध अगर बुरान से न हो या दुर्गम से न हो, 'किंगडम ऑफ गाँव' का मतलब शास्त्रिक में जित शब्द का वर्णन है, वह शब्द न हो, जैसे गांधी के सम्प्रदाय का मतलब नेरल अन्धक राज्य, सुलक्षण, एक आदर्श राज्य से था; उनका तो हमारा ही मतलब था। यह दुर्गम का राज्य, ईश्वर ईश्वर का राज्य, इस प्रकार का कोई साम्प्रदायिक मतलब न हो, हठ को लेनी का शब्द एक हो जायगा, ईश्वर भाषा का नहीं जायगा। परन्तु सम्प्रदायवाद में ऐसा नहीं होता।

सम्प्रदायवाद में ईश्वर भी सम्प्रदाय प्रणीत होता है। हर सम्प्रदाय में ईश्वर को जिन रूप में है। और मतलब है, उसी रूप में ईश्वर के शब्द को उनको अन्धभावना से होती है। यह इसलिए होता है कि शारीरिक प्रतीक मान के अन्ध-अन्ध के लिए ही है। ऐहिक अन्धता का एकमात्र उद्देश्य यह है कि हम अपने धर्म का अन्धभाव गुहाई रूप से प्रतीकों के कर लें। यह सारे धार्मिक पुराणों में रहा, जो साम्प्रदायिक थे और जो साम्प्रदायिक नहीं थे, दोनों ने कहा। शारीरिक अन्धता यानी सम्प्रदायिक अन्धता के लिए है कि सत्य को आत्म-विलय के लिए और ईश्वर चिन्तन के लिए अधिक के अधिक लुप्तवादी मिले, यह सारे स्वयं सच का नुकसान माना गया है। किन्तु सम्प्रदायवादी अन्धता है कि मेरे किंव यह बन्धनता बन्धन अन्धता है, जिसमें हमारे अन्धता है। यहाँ तक ही शब्द सत्य वह शक्ति, क्योंकि हमने अन्धता प्रकाश है कि मैं अपने सम्प्रदाय का प्रतिद्वन्द्व बन लूँगा, मैं उसका प्रभाव कर लूँगा, मैं उसका आचरण कर लूँगा और अन्ध में मन पर चलते कर लूँगा को अपने सम्प्रदाय में दालिद कर लूँगा तब ही नहीं यह है कि अन्धता अन्धता मानता है।

सर्व-मित्र मंडल
"सर्वोदय मित्र मंडल" अर्थात् केवल सर्वोदय का ही दो तो उसका गुणान्वयन करना चाहता। सर्वोदय, यानी और वैश्विक आदि तो उसमें नहीं माना है। उसका अन्धता उनका महान् और दुःख को है कि अन्धता में सर्व 'मित्र-मंडल' बन जाय। अन्ध एक भाव निभाव में उन्धे को एक पद ही माने हैं। उनके प्रयत्न नहीं मिलती। मित्रता को मुक्तता से ही मिलती है।
—नागरिक सम्प्रदाय

समाचार-सार

अमेरिका के एक आइटर ने पर-
साव में अपने सतीसों को देवाने जाने में
कोर को दोसती के अन्दर व एक
'सार्थक' का निर्माण किया है। यह
'सार्थक' एक ही जाती है, जिसमें २०
दरों और २ पदों। फिर भी यह 'हवा
की गरी' पर प्रति पदे साठ मील की रस्ता
है होती है। यह भूमि के ऊपर लगभग
एक फुट की ऊंचाई पर से चलती है।
मन्थन में वे कारें ऐसे प्रयोग के लिए
उत्तरी होती हैं, जहाँ पर लम्बे नहीं होंगी
और बर्तन उबार-नकार होती हैं।

अखिल भारतीय लेखक सम्मेलन में
भाग करने हुए पत्रकार के उपन्यास २०
दिन गणना में कहा कि जिसमें एलि-
स्कार ही एक और शांति काव्यम रजने
की इतना उल्लेख पर सज्जने हैं।

भारतीय लोकनाट्य में नयाव गवा है
अथ १९२० पद्यों की मातृ हुई है। कुल
आयिक पद्य २१ करोड़ व की हुई है।
०.६ अर्थक प्रति निहार में हुई है।

गुरु नानक जयन्ति के अवसर पर
प्रधान मंत्री हुजूर दास 'साधारण' में कहा
कि मनुष्य-सुख में मैद करने का तथा
नानक को विभक्ति न करने का संकेत
बनना को अर सेना चाहिए।

सर्वत्र शास्त्र-मै एक साथ एक
'अकार' सर्वो मानने का भारतीय
प्रस्ताव सर्वोचित है हीनार के लिए
या। यह सर्वोपेय शास्त्रिक, आर्थिक
और सामाजिक क्षेत्र में होगा। लखन-
ऊ, सिद्धि निर्मा अथवा अमेरिका भाषा के
विश्वविद्यालय में भी नेहरू के सर्वत्र एक
में 'भूतेश्वरी सर्व' की तरह अर्थक क्षेत्रों
में 'अकार सर्व' मानने का प्रस्ताव
रिखा था।

'भाव में सद्यः विचारों के लिए'
२० करोड़ ०० की एक पत्रकारिता योजना
में सर्वो होगा।

'सुखिते' अर्थक का साधारण भाग
में सेना करने के 'सिद्धि' और अर्थों में
अच्छे (अर्थ-साव) की ही जाता है, यह
का 'मिन्निक बनल' में प्रकाशित
हुई है।

कभी अर्थक वाली नेत्र साधारण
में भारतीय जनता के नाम एक पत्र में कहा
है कि सुखी के अर्थक लोगों को हमारी
अर्थक उपाय समर्पित है। भी साधारण
२१ नवंबर को भारत आ रहे हैं।

'भूदान सहयोग'
उर्दा साहित्य'
५० सा० सर्व सेना संप
राजपट, काशी

हवाई-कार-साहित्यकार एक्य शीर शांति की मानना पैदा करें-बादों के कारण महान् क्षति-मान्यता को
रिमानित न करने का संकेत-हो-सुख संप में 'सहकार सर्व' का प्रस्ताव-संतति-निर्वाचन पर २० करोड़ रुपया
रखे होगा-'अर्थक' से 'सिद्धि' और अर्थों में अर्थक उल्लेख-अर्थक गरी साधारण भारत में अर्थक-
शास्त्रक जिला सर्वोद्योग-व्यापणनी जिले में प्रकाशित-पंजाब प्राची-भारतीय संग-सिद्धि की एक शस्त्र
की प्राची-विकी-मीलना-पत्र में प्रकाशित-अर्थक-आगत में गांधी उल्लेख-अर्थक अर्थक मनदाता-संकेत-बाद-
बादों-सिद्धि की सहायता-मेठ में साहित्य-कार्य-सुखी जिला प्राची-संव-अर्थक-अर्थक में महावती-मनुष्य-सिद्धि की मा-
न्य-संवायत का प्रस्ताव-मनुष्य सर्वोद्योग संकेत-विश्व-अर्थक, हन्नीर द्वारा कर्दार शिवाय-रोहक जिले में पद्याना-
२५०० कट्टा जमीन संवायत पद्याना में-भीष्ट पर गांधी न चलाने का आदेश-अर्थक शस्त्रक शस्त्रक में साहित्य-व्याप-सिद्धि-
माद में गांधी विचार-केन्द्र-विद्यासपुर सर्वोद्योग सम्मेलन-बनरजी विद्यापीठ-गोराही की पद्याना-दीर्घमाद
में सर्वोद्योग-प्रतिनिधि-प्रधान में सर्वोद्योग-पंजाब-विद्यालय कार्यकर्ता-सिद्धि-व्यापार में गांधी-विचार-प्रकार।

हाइवाइव जिले के प्राथमिक सर्वो-
द्योग मंडल बुजपुर, विचार में की जाणता
प्रकाश राव की पद्याना में ७ नवंबर की
उपन्यास में दो सप्ताहों से ५० कट्टा
भूमि मिली, जो उन्नी सप्ताह सौ परिसरों
में विद्यार्थक पर दी गयी।

व्यापणनी जिले के सर्वोद्योग क्षेत्र में
अर्थक शास में शास इकाई का प्रारम्भ
की बरफालत इकाई किया गया।

पुर्वार्थक प्राची-भारतीय संग, कौल
काय, दिल्ली में २ अक्टूबर से १ नवंबर
तक २ सप्ताह सप्ताह से अर्थक की प्राची
निक लुकी है। मन्थन पर प्राची भीष्ट रोम
अर्थक रहती है।

सर्वोद्योग के भीलवाय जिले में
सर्वोद्योग अर्थक से ही पर है। भीलवाय
सर्वोद्योग के ५० पद्याना सुखी की अर्थ
कट्टा साव-भारतीय में अपने गांधी से शस्त्र
की बरफालत इकाई और 'विद्यार्थक' को
सर्वोद्योग पर करने के लिए राज लखार के
सौंग की।

आगत में गांधी तत्त्व प्रचार में
की विभिन्न साहित्यिकों में विचार गोष्ठी,
गांधी जयन्ती, सर्वोद्योग-संवाय की रचना
आदि कार्यक्रम हुए। केन्द्र के हीन-अर्थक
साहित्यिक-सिद्धि विचारों के लिए अर्थक
गये। अर्थक में सर्वोद्योग सुख-सम्मेलन
द्वारा ११ अक्टूबर, विद्यार्थक-विकी की
भी बरफालत सावण का अर्थक-विद्यार्थक
संवाय गया, सिद्धि नवंबर के सावण
सावण के उपस्थित थे।

आगत के सर्वोद्योग मंडल के एक
महावती मंडल की विचार प्रचार सभित
के एक कट्टा में जनता के प्रकाश-
मंडल बना कर अपने क्षेत्र के
उन्नी-द्वारा पद्या करने का अनुद्योग
किया है। कार्य-साव यह भी सहाय है
कि सुभाष चण्डे के अर्थक पर न होकर
सर्वोद्योगित से हो।

सावण जिले के सर्वोद्योग-सुख-
सम्मेलन में एक सिद्धि-संवाय
को वादनी-विकी की सहायक के लिए पत्र,
अर्थक, कर देने का अनुद्योग किया।

मेठ में सर्वोद्योग दलों के अर्थक-
कार पर विचार सर्वोद्योग मंडल में साहित्य-
प्रकाश का कार्य किया। २० से २५
अक्टूबर तक, पाँच दिन प्राची कार्य बरफालत
रहा। नवंबर में एक नवंबर साहित्य
सभित वनी है। इस अवसर पर भील-
वाय-अर्थक अर्थक-कार्य-संवाय की वीच-सिद्धि
में आना बना बना रहा।

सुखी-विद्यार्थक-संवाय-द्वारा २१ से
२८ नवंबर तक आगत-सिद्धि-संवाय

के निष्कर्ष के साहित्य गाँव में सवय
हुया है।

अनुसूचक सर्वोद्योग मंडल ने नव-
वती-जयन्ती के लिए बरफालत प्रचार
सुख कर दिया है। गाँव-गाँव में नव-
वती के लिए प्रकाश पत्र लिखे गये।

मनुष्यपुर, सुखी में भी समाव-संवाय
सुखी में की जाण रही के लिएक विद्यार्थक
सिद्धि किया था, उन्नी सप्ताह पर सवय
पुर की सावण प्रकाश में एक प्रकाश में
भी सुखी-विकी और सिद्धि की सवय-
अर्थक दिया कि पर्वों के सवय की
सुखी-संवाय की गयी।

सुखी जिला सर्वोद्योग मंडल की एक
वेठक में विद्यार्थक सर्वोद्योग में सर्वोद्योग-
अर्थक प्रचार, हेमलीर नवंबर में सर्वोद्योग-
पत्र के सावण के सवय कार्य और सवय-
के अर्थक के सुखी जिले की सवय भूमि का
विद्यार्थक करने का निर्णय लिया है।

सुखी के सिद्धि-अर्थक के
भीलवाय अर्थक के साहित्य-संवाय में
कर्दार विद्यार्थक की उन्नी सप्ताह के लिए
विद्यार्थक प्रचार किया। सिद्धि के एक पत्र
के अर्थक ५०० सवती-भारतीय सर्वोद्योग
के सुखय कार्यकर्ता में सवय-संवाय
कर्दार का अर्थक-संवाय।

रोहक जिले के सारोठ नवंबर के
लेडकेव भीलवाय भगत में अर्थक
संवाय में सवय १६० मील की १० अर्थक
में पद्याना की पर्व करके की साहित्य
सिद्धि हुई। तीन सप्ताह-सर्वोद्योग की।

संवाय पद्याना के गोठे बरफालत घने
में 'विद्यार्थक-अर्थक' के लिए जिले के
१५ नवंबर तक २१०० कट्टा जमीन
मिली है। सुखी घने में १ लाख कट्टा
अर्थक प्राप्त करने का अर्थक किया जा
रहा है।

अर्थक में सुखी-अर्थक-संवाय के
एक सम्मेलन में एक अर्थक का अर्थक
रिखा गया है कि 'अर्थक उन्नी के सिद्धि
में भी' सुखी (अर्थक की) 'सिद्धि
गोठे न चलने।

अर्थक प्राची क्षेत्र में विद्यार्थक-
अर्थक के प्राची-अर्थक की सवय १२०० क
की साहित्य मिली हुई। 'सुखी-संवाय'
के अर्थक नवंबर से २००० क अर्थक-
विकी सिद्धि सावती-भारतीय की हुई।

आगत के गांधी सारक सिद्धि,
उत्प-प्रचार के अर्थक सिद्धि-संवाय
में गांधी विचार-केन्द्र का उद्योग

भी नववती-संवाय सुखी में १६ नवंबर
की किया।

सिद्धि-संवाय में १५ अर्थक-संवाय
सुखी में सम्मेलन में सर्व भी सवती-
नार्थक, रामानंद सुखी, दीपचंद वीन ने
भाग लिया। सुखी नवंबर पर सवती-
की एक सवती हुई। सिद्धि में आगत-संवाय
अर्थक और सर्वोद्योग सवय करने का
निश्चय किया गया।

सुखी-विद्यार्थक का २५ वीं
कार्यक्रम १ सितंबर '६१ की सा०
सि० सा० सवती की अर्थक-संवाय में
पद्याना जायेगा।

सुखी-संवाय की पद्याना सवय-
संवाय में सवय रही है। ५ सितंबर को
साहित्य जिले में प्रचार करके।

सिद्धि-संवाय में सर्वोद्योग सवय-
संवाय एक कट्टा-संवाय में एक प्रकाश
में सावण-संवाय, विचार-संवाय, सर्वोद्योग-
संवाय-संवाय आदि सवती-संवाय को सवती-
करके के लिए उपस्थितियों बनायीं और
सर्वोद्योग सवती-संवाय प्राप्त करने का
निर्णय लिया। सावण-संवाय में ११
सर्वोद्योग-संवाय की सवती-संवाय।

सुखी-संवाय-संवाय में अर्थक-संवाय
११ के सिद्धि-संवाय ११ तक सर्वोद्योग सवती के कुल
७६ क सवती-संवाय। इलमें २० २०
की २० २० २० २० २० २० २० २० २० २०
की गरी। गाँव के साहित्य-संवाय में
सर्वोद्योग के क्षेत्र-संवाय के क्षेत्र-संवाय-संवाय
में सवती-संवाय। सुखी-संवाय की गाँव में सवती-
संवाय-संवाय सवती-संवाय। १५
सर्वोद्योग-संवाय के साहित्य-संवाय
सर्वोद्योग-संवाय सवती-संवाय।

सिद्धि-संवाय के सिद्धि-संवाय के सवती-
संवाय में गांधी सारक सिद्धि-संवाय सवती-
संवाय-संवाय की सवती-संवाय के सिद्धि-संवाय-संवाय
करके हुए सवती के सवती-संवाय की सवती-
संवाय की सवती है। सिद्धि में १५
सर्वोद्योग-संवाय में सवती-संवाय।

सर्वोद्योग-संवाय की गांधी-
संवाय-संवाय की एक सवती में सर्वोद्योग-
संवाय, सवती-संवाय २० ५० मील-संवाय,
सर्वोद्योग-संवाय सवती-संवाय २० ५० मील-संवाय
में गांधी-संवाय। सवती-संवाय पर सवती-संवाय की और
विचार-संवाय कि अर्थक सवती आ गया
है कि 'संवाय-संवाय' सवती-संवाय २५
अर्थक-संवाय।

“दान दो इकट्ठा-बीघे में कट्टा”

धीरान्त

विहार को यह नारा विनोबाजी ने अपनी द्वितीय विहारयात्रा के प्रथम दिन २५ दिसम्बर, '६० को दुर्गामिनी (साहायन) पड़ाव पर दिया। सप्ताजाठ वर्ष पहले विनोबाजी जब पहली बार विहार आये थे, तब इसी दुर्गामिनी के प्रथम पड़ाव पर विहार के प्रमुख जनसेवक उनके स्वागतार्थ हज़ारों एकड़ जमीन के दानपत्र गंकर जमा हुए थे। विहार के ८५ लाख बेनिहर् मजदूरों और भूमिहीन किसानों की भूमिहीनता मिटाने के लिए विनोबाजी ने ३२ लाख एकड़ भूमि की मांग की थी और वटा या कि हर विहारवासी अपनी भूमि का छटा हिस्सा भूदान में दे। इस सक्षय की पूरा करने का संकल्प विहारवासियों की ओर से वहाँ उपस्थित जनसेवकों ने किया था।

मद्रास के मंत्रियों का अनुकूलिणीय नश्व

मित्री की शैल या लक्ष्मी नश्व वह सामान्य विषय होता है कि उसमें भाग देने वाले 'प्रतिस्पर्द्धियों' की स्थिति सामान्य तौर पर स्थावर होती पादिह। इच्छा के टोप में विभी की कल मुनिपा और किसी को प्यारा मुनिपा नहीं होती पादिह। चुनाव की एक तरह के टोप ही है, पर यह रील जरा गम्भीर है। आम की स्थिति में चुनाव के दोष की दृष्टिक्रम का केला होता है। इच्छा में वह और भी कल्पनी है कि चुनाव में भाग देने वाले प्राक्कीर्णों में से कोई ऐसी बहुसंख्यिक का उपयोग न करें, जो दूसरों को मान न हो पवती ही। जब आम चुनाव आते हैं तो उनमें से श्रेष्ठ मनी उन्हें ही या लगे हो साने हैं, जो उच्च समय गति-गन्तव्य में या साधन में हैं। इसी प्रकार वह उपाय उचित है कि मीठस संलग्न को चुनाव में पवने हों। पदवी प्राप्त की वह कि इस अर्थ में वे मजबूत छात्रों के छात्र छात्रों मीठस-पादिकों का उपयोग नहीं करते। दूसरा वह कि वे किसी भी छात्रों समर्थन में भाग नहीं लेते और शीघ्र ही मांग उठि दीरों के समय छात्रों शिम उच्छि-कारियों को वे अपने छात्र नहीं रखेंगे। इस आशा करो है कि मजबूत के अधि-पति के इस निषय का अनुकूलन आम समय के और केन्द्रीय छात्रों के गति-गन्तव्य भी रहेगी। छात्र जनन के लिए इस प्रकार की कुछ परामर्शों का कायम कला अनन्त आभार देते हैं।

-मिच्छान्त

विहार को अपना संकल्प पूरा करना पादिह। इस बार इस विहार के छठे दिवसे ही माग नहीं करते। बीघे में एक कट्टा देने से ही संकल्प पूरा हो जायगा। इस-लिए हमारा निवेदन है कि विहार का प्रत्येक भूमिवाग प्रति बीघा एक कट्टा भूदान अवश्य करे।”

विनोबाजी ५७ दिनों तक इस बार विहार में रहे। निगमल रूप के अपनी प्रत्येक प्राचीन-भाग में 'बस को इच्छा-बीघे में कट्टा' का नारा बुलन्द करते हुए विहारवासियों के हृदय में प्रभुत्व लाय, प्रेम, श्रेष्ठ कल्पना की उद्भावना की उन्होंने जगया। इस छत्र सचका की पूर्ति के लिए एक पवित्र दिन भी उन्होंने निष्ठा-व्रत कर दिया। यह दिन है हमारे प्रा-चिन डा० रामेश्वर प्रसादजी का ७८ वीं जन्म दिवस-२६ दिसम्बर, १९६३।

विनोबाजी ने कहा-“एकदम बाबू 'राहुण्य' की गठो ठार कर अब हमारे बीघे भा रहे हैं। मैंने अलग पर उनके कल्पनाश्रेष्ठ विचार-कल्पना के प्रतिभा अपनी जमीन के बीघे में कट्टे के दानपत्र दे दू-वह दूसरी बीघों की विहारवासियों के पास समर्पण करने लायक नहीं है।”

विनोबाजी की यह वाणी विहार में रूब उठी। सभी समन्वितिक हयोग के योग, उच्चमार्ग संस्थाओं के कार्यकर्ता, प्रावि-दैनिक, शोधकेवक, पत्रकार-वीर्यद के प्रतिनिधि और अन्य हयोग के छात्र-बगड विनोबाजी ने जिता कर हम लोग ही का उन्हें आभारजन दिया। इस आभारजन पर पूरा आशा है वे ५ पवते, '६३ को विहार के आगत वने।

विहार का संकल्प पूरा ही और १० लाख एकड़ जमीन सक्षय की जाए, प्रेरक इच्छा विनोबाजी ने बीघे में कट्टा देने का माग नहीं दिया है। भूमिपति

“बीघे में कट्टा” मंत्रोत्पन्न में एक एक प्रत्येक भूमि के पुत्र बावज राहुण्य-कल्पनाश्रेष्ठ रामेश्वर प्रसादजी के प्रतिभा, उच्चमार्ग के अन्तर्गत विहार के अन्तर्गत जन्म लेने वाले प्राक्कीर्णों के मनी हयोग में मजबूत जगमग विचार।

का नारा को कट्टा के बीघे भी हो जा सक्षय है और विहार के ७६ लाख जमीन डा० श्रीरामविन्दजी ने उरी दुर्गामिनी पड़ाव पर विनोबाजी को यह सूचना दी थी कि बीघे में कट्टा भूदान (हैट डेजी) प्राप्त करने के लिए विहार छात्रों शीघ्र ही एक निषेधक विधान-समय में पेश करने का रही है। अब विहार-मजल द्वारा अविषयक भूमि-हीन विचारों निषेधक अधिषय को चुनने है। उरमें १ एकड़ के ५ एकड़ तक भूमि रखने वाली हैं प्रति बीघा एक कट्टा, ५ से २ एकड़ तक बावों के प्रति बीघा दो कट्टा और २० एकड़ से अधिक जमीन वाली से छटा दिशा जमीन के देने की दारणवा की गयी है। इससे जगमग १५ लाख एकड़ जमीन निष्पत्ती की संभावना है।

विनोबाजी नेनकर प्रकाश जमीन परीक्षा नहीं कराते। किंतु लरीके से वह जमीन भूमिहीनों के लिए बना होती है वे इसको अधिषय मानते रहे हैं। वे इस विषय काम के लिए पवित्र साधन का ही उपयोग करना चाहते हैं। वे एक से दूसरे के लिए की बीघा देना पवते हैं। वे पवते हैं कि शीघ्र ही परस्पर पार देते, गंग एक-दूसरे के सार-सुख को बँटें, एक-दूसरे की मदद करें, प्रारम्भिक प्रेम और कल्पना पर आधारित एक नये सहयोगी समाज का निर्माण करें, जिसमें कोई किसी का योग्य नहीं करे, कोई किसी के छात्र नहीं करे, सब स्थावरही हों, और अपने जीवन की कल्पनी बीघे में भिन्न भिन्न के योग्य पैदा करें और अलग में सार-सुख कर लयें सक्षय सुल-सम्पत्ति से रहे। यह कार्य कल्पना के द्वारा संभव नहीं है। इसलिए

विनोबाजी ने कहा-“मैं 'सब तेजो' नहीं चाहता, 'सब छोटे' चाहता हूँ। कर्णव्य कल्पना में बीघा-बगड मनीन की जाय, के वह लगे पावते। अन्त-मजल-हल कर जगमग भूमिहीन लोगों भाई के लिए प्रत्येक भूमिवाग प्रेम से के, के पवती पावते हैं।

विनोबाजी के इस वचन की पूर्ति शेरचन्द्र बीघे में कट्टा देने के हैं लोगी और यह लगे हैं विचार-कल्पना हैं ही। अब लख छटा दिशा दान देने में कट्टा-कट्टा देने के काल को हम चुन कर हैं। अद्य जेने से बचन नहीं रहे। हम कर उरको मनी पूरा श्रेष्ठ निवेद है। हों, शीघ्र ही विनोबाजी के सार-सुख को बीघे

ले लेते थे, पर इस बार उरका लख पर विचार और है कि दान करने की आवश्यकता नहीं है। इससे एक-दूसरे का सम्बन्ध बढेगा। शीघ्र ही भूदान-कर्मिणी पर नहीं है। दान, कर्मिणी मिच्छा की पर २२ लाख जमीन निच्छा है, यह सब सह-सह-सह है। उनका कल्पना है।

“हस्ता हस्त” की जगमग नारा का करने वाले किसी से विचार नगु या किसी भूमिहीन बगडों को लगे के हैं और दानपत्र पर लख जगमग कर भूदान-कर्मिणी हो ग-अने किसी निष्पत्ती भूदान-कर्मिणी का के हैं।”

विहार में कट्टे की कट्टे दान जमीन मीठ-आगत की जाती है। ये सभी भूमिवाग बीघे में कट्टे से विहार में अपनी जमीन का दानपत्र भर रहे हैं और अपने किसी किसी भूमिहीन के लिए पूर्णक गीट देते हैं ही आगमनी से १० लाख एकड़ जमीन भूमिहीनों को लिये जा रही है। इससे न केवल विहार के भूमिहीनों की भूमि मिट जायगी, बल्कि पारसी अभिरिवाज, लट-लट और निगमपत्ती मजबूत पावते हैं। विचारों संभार निरत के आगमने में प्रेमपूर्ण हैं। भूमिहीन की मनी मनी मजल उपस्थित होगी, जिसे एक नयी दिशा मिलेगी, और वह विचारों के साथ, प्रेम और कल्पना द्वारा सभी स्तर की सत्यताओं के समागत होगी।

विहार के विनोबाजी की ये वरें दान मनीने हो रहे हैं। वे आगत में लगे हो रहे हैं, पर उरका प्यार विहार की ही लगा हुआ है। समय-समय पर देकर वे हमारे मनीनों का दान कर ली पावते हैं। इसीलिए लगे-लगे आन्वि-प्रेरक, भूदान और शीघ्र-संभार जगमग, सभी छात्रों-कर्मिणी के कल्पने उच्चमार्गक लख भाई के कार्यकर्ता, उच्चमार्ग परसंघ और अन्य सभी के छात्रों-कर्मिणी का वह सुख-सुख का है कि लख भाई शान्ति-मार्ग के लिए काम में लगे हैं। इससे लगे ही विहार के इस भूमिवाग की यह कल्पना है कि देव में सुख, लो-और लक्ष्मी की सदानों के लिए, लो-कल्पना के लिए और माग, प्रेम लो-कल्पना पर आधारित मनी-मनी, लो-कल्पना एक नये लो-कल्पना के निर्माण के लिए ही में कट्टे का दान देकर सब लया सुख के मनी है।

[विहार भूदान-कर्मिणी, पत्रिका]

दुर्गामिनी का समागत-कर्मिणी के लिए आवश्यक मनी की सुल-सम्पत्ति है। अ-वह लक्ष्मी-कर्मिणी का माग।

[संस्थान के जने वरें है। -विचार]

निधि-मुक्ति और जनाधार के दृष्टिकोण में कार्यकर्ता

काकन अग्रे

मैं जन महापट्ट के परमणी जिले में जिला-निवेदक के रूप में जनवरी '४७ में काम करने आया, तब सब लोग तब के उस समय पाठित निधि-मुक्ति और जनाधार के प्रस्ताव के अनुसार मने वहाँ कार्य करने का निरूपण किया। मैंने निधि-मुक्ति और जनाधार के संबंधित कल्पनएँ अधिक स्पष्ट नहीं हुई थीं, लेकिन मेने उस विषय का अग्रिम सफर, भोजन आदि का कोई भी खर्च संचित तबिच से न लेकर काम करने देवूँ। सबीय मुझे इस जिले में भेजा गया, वहाँ के लोगों से मेरा परिचय तक नहीं था। लेकिन मराठवाड़े के बृहत् कार्यकर्ता थी अल्पतमाई देवनाडे ने स्वयं मेरे साथ आकर परमणी गाँव के कुछ स्वजनों से परिचय करा दिया। उन्ही तरह हैदराबाद साही-समिति द्वारा-हाल ही में वहाँ काम शुरू होने के कारण उसका भी आधार मुझे मिला।

मैंने बार-आठ दिन तक परमणी के एक-दो मित्रों के घर-घर भ्रमण किया, लेकिन योंही-योंही स्वयं लोगों से भी योजना के लिए ईमानदारी मिलने लगे, इसलिए उनके घर जाता था। मन में कोई स्पष्ट चित्र न होने पर भी किस दिन किसके घर भोजन किया, इसकी नोंध मैं दायरी में करता रहा। इस आरहण का साथ साथ सेक्स गाँव में और सुमह-शाम किसके घर भोजन हुआ इसकी नोंध मेरे पास है। पहले बरें समाज होने पर उस नोंध को बाँट देना उदा था, तो सहज ही मन में विचार आया कि जिनके घर मैंने भोजन किया, वह भोजन हुआ कहाँ किस निमित्त से मिला, इसका साधारण वर्गीकरण देना करना था।

मेरे जैसे निवृत्त व्यक्तियों ने अपने-अपने क्षेत्र में जनाधार प्रस्ताव सफल करने में भी काफी काम की होगी, उन्हे अपने-अपने का आदान-प्रदान करना पड़ेगा, इन उद्देश्य से जो बार सप्तेलों में मिले कुछ प्रयत्न भी किए, लेकिन अभी तक देश मीका नहीं आया।

उपरोक्त यह निष्कर्ष प्राप्त था कि अपनी किस जिले में मेरे काम करने की अवकाश है, उस जिले में हालके ११५ दिनों में से लगभग १५० दिन ही मैं हाथ और बाकी दिन जिले के बाहर काम सपेलों, बैठकों के आयोजनों में, मित्रों और रिश्तेदारों के माँगे बीने।

मिन सत्रनों में भोजन दिया, उनका विचारप्रताप नीचे दिने अनुसार वर्गीकरण किया गया है-

- (१) सर्वोच्च कार्यकर्ता को भोजन प्रदान सामाजिक विमोचकों का एक पैदा है देना मानने वाले स्वजनों के पर किया गया भोजन।
- (२) कुछ कार्य से उन अंतर्गत, के लिए कुछ कार्य के कारण होने हुए मित्रों के पर प्राप्त भोजन।
- (३) रिश्तेदार। (४) मित्र-जन।
- (५) कार्य के दौरे पररार बाहर के परम सपेलों में हुआ भोजन।
- (६) मेरे कुछ सहयोग, महामन होने के नाते प्राप्त भोजन।
- (७) भोजन न मिलने से उठे देकर भोजनारण में किया हुआ भोजन।

उन्ही तरह राजनीतिक वर्गीकरण से विचार-प्राप्तिको दूरी के लोगों से विचार भोजन।

बापि एक धार्मिक इति है किने हुए परीक्षण में भी इन्ही तर्कों का उपयोग किया गया नबर आया। सुविधिव-कार्यकर्ता, परं मेरे, जति मेरे, सवी-अभर और विचार-योर आदि मेरों की न

मानने वाले मुझे, मेरे अधिकतर भोजनों का अनुयाय यह कहा रहा था कि मैं इसका वाति का एक सुविधिव, सम्पन्नता, कौशल की विचारधारा वाला कार्यकर्ता हूँ और यह विषय मन औरों के सामने रज्जा रहा, सब मुझे अपने घर हँसी आती। फिर मन में विचार आया कि इन सजुचित इति के बाद निष्कर्ष की कौचित्य में है, पर अनजान में ही उन्ही लीक में एक रहे है।

ये सब क्यों होगा है, इस पर विचार करने समय मेरे मन में आया कि इस सजुचित इति के मैं सुद ही बाहर नहीं था अपना मेरा अपना अर्थ विन सजुचित सामाजिक का अर्थिक है उस अर्थ का त्याग करने नहीं हो रहा है, अर्थात् देना होने के लिए मुझे कई तरह का कार्य उचित समर्थन प्राप्त होता है। मत उल्टा देना नहीं होता तो इन्हे बारे में मुझे कायदा हाँक काम करना आवश्यक है। इसलिए नीचे दिने अनुसार अपने कुछ विचार प्रस्तुत किने-

- (१) हाल के १५५ दिनों में के काम के काम से तद्विधि निधि मिले में मैं काम कर रहा हूँ, वहाँ निधि जाँच।
- (२) एक माह निधि बनने के बीच।
- (३) एक माह प्रारण होने बाहों के स्थानीय क्षेत्र में।
- (४) एक माह प्रारण से बाहर और (५) एक माह रिश्तेदारों और अपने परिवारिकों के बीच।

इन्ही जिले का विभागी होने से विन-कर्ता, रिश्तेदारों के लिए मुझे महामन देने से रहे हैं। अगर देना नहीं होता तो जिले से बाहर दो माह से अधिक समय मिलाता उचित नहीं होगा। मैंने देना अनुभव किया कि हाल में एक बार अतिरिक्त भारतीय सम्पन्न के लिए बाहर जाना पड़ा है। ऐसे ही एक बार मित्रों की जो बुलावाव के लिए भी जाना अनुभवक

कला है। अतिरिक्त भारतीय सम्पन्न के लिए कम से कम दो बार जाना कर्ता जाना बाध्य है। प्राणीय स्वयं के लिए हाल में बार बार अनिर्धार रूप से जाना पड़ता है। सेविका चर्चा समाप्त के लिए हाल में छह बार दो देना होता ही चाहिए और जिले की बैठक महीने में एक बार तो होनी ही चाहिए न। इन दूर दूर के सभा-सम्मेलनों के लिए आप आते समय रास्ते में पत्ते वाले आधुनिक, धार्मिक और पूर्व-परिचित स्थानों में गये निजा लहर लंच का अनुभव हुआ, ऐसा नहीं महसूस होता। इतिरिक्त हाल के बारे में भी देना एक महत्व सामने रखने की मुझे आवश्यकता महसूस हुई कि अगर परमणी विचार-अभार का एक सुकर अग हो, तो पैरल घुड़ने, मोटर से जाने, रेल से चलकर और हवाई बहाम की बाधि में कुछ अलग देना चाहिए। इन इति के मैंने एक केंद्रका उल्लेख भी, यह वहाँ से रहा है।

मैं जिसे 'जनाधारित भोजन' कहता हूँ, उसमें जार किने वर्धन के अनुसार उच्छा को सजुचित स्वयं है, उसे दूर करने की इति है, यहिच क्षेत्र में रहूँए बनों के नवदीक के परों में भोजन मिलेगा, एक इति से मेरा प्रचार कार्य होना चाहिए। मुझे अतिरिक्त मेरी मुझे के अनुभव होने वाले लोगों के पर ही भोजन करना चाहिए। जाने जाति, वर्ण, उचित आदि के कारण महसूस होने वाली सामाजिक बंधों के बारे में परंपरा पर्ये के चरखे आरथीयता पैदा होनी चाहिए। विर-बाँटे ने केली किनी भी जाति, वर्ण, इति के हैं, भोजन मिलना देना चाहिए। इस तरह देना है या नहीं, यह उन्हा मेरे सामने उपस्थित हुआ। पर ध्यान में आया कि सर्वोच्च के कार्य का स्वरूप सर्वोद्य-नार्थकर्ता और समाज के सामने स्पष्ट नहीं हुआ है। जैसे, पर में अगर कोई भीमार हुआ तो टाकरर को बुलना चाहिए अपना किने योग का प्रदर्शन या डाक्टर को दौरे का काम उपचार करना चाहिए। लज्ज न यह रहा हो ही बालर रचना चाहिए और निष्ठा की आवश्यकता है, इतिरिक्त सरकार को सजुचित

पर विचार या प्रश्न करना चाहिए; महान विचार को ही हीनियर को बुलना चाहिए और बाव के दूधने से महामन यह गये ही तो इन्हीनियरों को ही देना चाहिए। इच्छा पूर्ण के लिए सत्यनाराजन करना ही, तो समाज की बुलना चाहिए और अग्रिम यैनी विरति का पत्ती हो तो यने के लिए दूधसित लोगों का आवाहन करना चाहिए। पररार सम्पन्न के कार्य का यह स्वरूप है जानती है, लेकिन सर्वोच्च कार्यकर्ताओं को लोग कल्पनाएँ अपना ही तो सर्वोद्य-नार्थकर्ता कर बुलाएँ, यह बात अब तक किने को भी स्पष्ट नहीं हुई है।

मेरी सभस में सर्वोद्य-कार्यकर्ता का काम जाता के कायों में संसा है। जैसे माना पुन को लिताली है, लेकिन यह लिताली नहीं; बीच-बीचपर करती है, लेकिन कपटर नहीं; सेवा-पुत्रता करती है, लेकिन नर्त नहीं; खाना खिलाती है, लेकिन सचोना नहीं; कमी भावनी भी है, लेकिन दुर्लभ नहीं; उन्ही तरह सर्वोद्य-कार्यकर्ता औचित्य के ही, जैनी-मुआर का काम करते हैं, शासन सेने का काम करते हैं, कमी-मिकी, साहित्य-विषय करते हैं, सब भी जनक यह काम 'धधा' नहीं, बकि यह सब जीवन की एक मेरगा है। पुन को निरत सजुचित माना के कार्यों में दुरता कुछ नहीं, केरल मेम ही लिताएँ पड़ता है, उन्ही तरह कार्यकर्ता के हृदय में निहित प्रेम का अनुभव समाज की ही, उन्ही सर्वोच्च विचार हाथपा कर शुरू है।

बाई बार सर्वोच्च कार्यकर्ताओं के काम की बुलना विचारनी लोगों की कार्य-वर्धि के जाय की जाती है। मित्रनी लोग स्वाभाविक, विदुष्य सस्था, पत्रोपयोग की क्षाला आदि के जरिये जन सेवा करने हुए लोगों को सार्वभ्य में काम की इच्छा रखें; लेकिन सर्वोच्च स्थान स्वस्थता की किरी धार्मिक पर से बुलना करना उचित नहीं होगा, क्योंकि

सर्वोद्य विचार देई समाज-स्वस्थता की अर्थका करता है कि विमोचक-व्यक्ति के आपल के सभ-निर-बाँटे के अर्थिक मित्र दण्ड, मित्र बंध, मित्र उद्योग, मित्र दण्ड और मित्र धर्मों के हैं, पर भी उनके परलर-सभ-रक्षण, प्रेम और सजुचित के हैं।

इतिरिक्त कार्यकर्ता अन्वये दैनिक जीवन पद्धति में जिम अनुयाय में हम सुख-परिचरन के दर्शन-चरणों और सेवा, उन्ही अनुयाय में सर्वोद्य-कार्यका का प्रचार और प्रचार होगा। लेकिन सुख-चरण बढ़ है कि 'डुप' में ही म हो तो बालटी में नहीं के आयेगा। अन्वये में हारा मायदा री जाया बड़ा हुआ है। (मूल पृष्ठी ३)

गरीब दिन-दिन गरीब हो रहे हैं !

• विद्यासागर पन्ने

उदरगो में थोकड़ो से अमीर अधिक अमीर होते-से जान पड़ रहे हैं, उसी प्रकार भारत के करीब साडे पांच लाख श्रामों में उलटादक-गरीब अधिक गरीबों की ओर बढ़ रहे हैं—एसा आभास जीवन्त प्रस्तुत करने जान पड़ते हैं :

(क) भारत की कुल करीब ४२ करोड़ जनसंख्या में से दसरी जनसंख्या १७ प्रतिशत पर के सामीय जनसंख्या ८२ प्रतिशत है ।

(ख) जनसंख्या का पनल (डेमिग्री आफ पापुलेशन) जहाँ मास में ३१८ व्यक्ति (सि वगैरह) हैं, वहाँ हाइलेण्ड में प्रति वर्गमील ८२५-९३; कैम्ब्रियम में ७३४ ५; आगन में ५७५ ५ और इंग्लैण्ड में ५३० ८ व्यक्ति हैं ।

(ग) भारतीय प्राचीन विदेपर तीन क्षेत्र में कार्य करते हैं : (१) प्राचीन गरीपर व ग्याली (२) इणक और (३) भूमिहीन इतिअनर ।

प्राचीन क्षेत्र

प्राचीन गरीबों व श्वापरियों के क्षेत्र के अन्तर्गत भारतीय बोक्याओं का क्षेत्र कहाँ तो अत्यधिक आधाधान व वहीं दोहनक समझा है । शेष :—

(१) सामुदायिक बोक्याओं का कुछ प्राचीन भारत के विकास का शेषित तर्क आधाधान ही कहा जायेगा । पल्लः

(२) औद्योगिक स्टेटों की श्वापनका के क्षेत्र में प्राचीन क्षेत्रों की योग्य न्याय नहीं मिलता जान पड़ता है, क्योंकि जहाँ दुसरी बोक्या में कुल २० औद्योगिक स्टेटों सामीय क्षेत्र में बनायी गयी हैं, वे बढ़ाकर इस क्षेत्र में सहासी बोक्या के अन्त तक करीब १०० कर दी जायेगी, जब कि दसरी क्षेत्र में कुल औद्योगिक स्टेट ८०० के करीब बना जायेगी । क्योंकि की मनुष्यों का एक 'नवभारत शासक', १२ अक्टू १९११ के बकपत्र के अनुगार तीसरी बोक्या के अन्त तक भारत में कुल १०० औद्योगिक बहिराण (इन्डस्ट्रियल स्ट्रेन्ज) बनायी ।

(३) प्राचीन औद्योगिक क्षेत्र के लिए तीसरी बोक्या में अतिरिक्त क्षेत्र के बरीर विरुद्ध २ अन्त कार्यों की ही दूरी निर्मितोचित (सर्च) करने का आधाधान भी शाह ने हास में ही दिया है, जब कि दसरी बड़े उद्योग में करीब तीसरी बोक्या में ही २४०० करोड़ की दूरी खरानी व निजी क्षेत्र से निर्मितोचित करने की योजना बनायी गयी है, जिसके कि निर्ण १०,००० प्राचीन कर ही औद्योगिक (ग) क्षेत्र, जब कि भारत में कुल गाढ़े तैल हास प्राप्त है ।

(४) बोक्याओं में प्राचीन मयन निर्माण के लिए रहे मने इण्ड भारत के ही निम्न थे और हैं, जैसे कि तीसरी बोक्या-आस में प्राचीन आगन के लिए निर्ण १२,३०,००,००,००० खरब रगत पड़ा है, जब कि कुल सर्च १,८२,००,००,००० (एक अरब बहानी बोक्या) खरब कुल उद्योग में मयन-निर्माण के लिए देखित विभाग पड़े ।

प्राचीन मयन निर्माण तर्कः
१२ करोड़ ७० लाख खरब मयन मनुष्य-मयन निर्माण-तर्कः
७० लाख खरब कुल सर्च प्राचीन क्षेत्र में :

१२ करोड़ ४० लाख खरब

(४) प्राचीन क्षेत्रों में न्यूनतम जीवन-अनुरूप (सिचियेन्स आक मिनिमम सिचिये डेवेज) निर्देशक का कार्य भी राष्ट्रपति के निर्देशन (उपरेक्टिड इण्डरक्चस्) के बावजूद अनुभवी ही पढा-ना जान पड़ता है और हासक नहीं-कहाँ से यह हो गयी है कि बोक्या के अन्तर्गत केन्द्र-उद्योग के कार्यक्रमों में गुनगार व श्वापनका वैदी मनुष्यों की सामान्य मनुष्यों के सामिक मनुष्यी व जीवन की अन्य प्रत्यक्ष सुविधाएँ अतिरिक्त ही मनी जान पड़ती हैं । यानी वैदी वन का हमारे खरबन भारत में खरानी काम प उकते हैं, अन्तका प्राचीन क्षेत्रों से ही मनुष्य क्षेत्र के लिए १९२०-४ बोक्याहीन अवस्था में छोड़ दिये गये हैं । यह आर्थिक स्थिति समाज को गुनाही की रह कर हास पवती है ।

कृषकों के क्षेत्र में

हमारी बोक्याओं के कार्य व नतीजे अभीअभीयन जान पड़ते हैं :—

(१) इतिअनर का सर्च (अन्तर्गत) भी योग्य नहीं है । करीब एक ही कपेड सर्चों का वार्षिक अन्त हम विदेशों से हर वर्ष आयात कर रहे हैं । २५ करोड़ खरब से हम विदेशी बहानों के निर्याते के बरीर तीसरी बोक्याहास में ही अन्त अपने से लिए अतिरिक्त के ४८०० करोड़ की कुल्लि कर दे गये । अन्त अन्त की प्राथमिक मांग के क्षेत्र में राष्ट्र विदेशों पर पलकपवती रहते रहे तो हमारा राष्ट्रकमनक का शहीन दुसरा का खरब १० व नये मयन का कामका के पन्ने के बनावे हुए मयन वैदी बमबोर नीव पर लता जान पड़ता है ।

उत्पन्न दुसरी में क्या भारत के देश व विदेशी समन्वेषण पर नहीं बर

उकते कि विश्व राष्ट्रीय परिवार में जाने तक की अन्त नहीं हो, यह अन्ते के ५०० करोड़ तक की टिकने वाले श्वापनको की देने सहास खरब है । हमी तो एक सहयोगी की दृष्टि से भी बोक्या की पूर्ण करने के लिए मनुष्य, नये, अतिरिक्त व अन्तर्गत भारतीय भारत के लया व दिखपवती की मांग और हासिक व पारिवारिक सहयोग की अन्तर्गत रगत करों तक योग्य माना जायगा व बहोते तक खरबका प्रथम करेगा, देश व लाल बोक्या-कार्यों के समुच्च भी उपस्थित होगा ही ।

ऐसी हालत में इतिअनर की प्रथम-प्राथमिक महावृत्त का क्षेत्र बना कर भी भारत-तीय बोक्याओं का कुल सर्च बढ़े उद्योगों व उनके सहायक-उद्योग, श्वापर तथा संभार और औद्योगिक शक्ति अन्तर्गत पर प्रथम बोक्या में करीब १।९, दुसरी बोक्या में २।२ व तीसरी बोक्या में करीब ३।३ सर्च योगित बला बहोते तक भारत-तीय उद्योगों की महासमृद्धि इतिअनर में योग्य आवदन (अन्तर्गत) का तर्क बहा जायेगा । (बस कि रोनी के अंतर्गत की दृष्टि से भारत के कुल १००० व्यक्ति में से ७०६ व्यक्ति को इतिअनरों देती है और विर १९१२ व्यक्ति को उद्योगों में रोनी मिलती है और बारी के स्थिति अन्त श्वापर का खरब जान करते हैं ।)

(२) भारतीय इतिअनर वर्गमन विद्येत्तराएँ ये हैं :—

७६ प्रतिशत इणक १ से १० एकड़ तक ही योगित भूमि पर कृषि करते हैं । १०० करोड़ खरब का अतिरिक्त वार्षिक अन्तका आधारी के बाद से निरिक्त से भारत में अन्तका इतिअनर का रहा है । जनसंख्या-वृद्धि हर शेष १२ हजार नये लाने बालों को रहा देती है । देश की उत्पन्न निम्न दो तरीके से ही की जा सकती है :—

(अ) वैज्ञानिक कृषि के माध्यम से : उद्यत शीत, लान, शक्ति, वन-विषय और पचय वन आदि को लया करने इस क्षेत्र में अन्तर्गत बड़े लान-कारणों व सामुदायिक शिक्षा-बोक्याओं के अन्तर्गत कारी समन्वेषणक प्रयत्न हुए हैं और बोक्या-सर्च व जन-सहयोग और लान-कारणों के द्वारा वन्तःसहक सहाय का रहा है ।

(आ) कृषि मूल्यों की समरथा : भारतीय इतिअन्तका का दुसरा अन्तर्गत यहावृत्त पर है । "अन्तर्गत" के इतिअन्तक लानकी नीव का कार्य । इतिअन्तक की मनुष्य निरक्षण सहाय व श्वापरी की दूरी का के लानी बोक्याओं तक

अनुवी ही रही है । इस कारण से इस क्षेत्र में अन्तर्गत हालत पायी जाती है, जिसे कि एक अनुसंधानक (सिचरिं रीट) के उदरगण व प्रोफेसर अन्तर्गत ही निम्न इतिअन्तका में (एक ए० बोक्या) की र्ण विराटि से समझा जा सकता है :—

"दृष्टिका के प्राचीन छोटे उदरगणों को आर्थिक उन्मत्त मनुष्यजन व श्वापर देकर एतिा में इतिअन्तका रगत बन सकता है ।"

(गो) अन्तर्गत, एक=२।३००

भारत में विगत के हास का आधाः—

प्रति निशान की कुल निशानों का जमीन का आन्तर अनुगतः प्रतिशतः

१ एकड़ से कम	११
१ एकड़ से ५ एकड़ तक	३१
५ एकड़ से १० एकड़ तक	२४
१० एकड़ से ऊपर	३४

यानी भारत के, ७६ प्रतिशत श्वापर कार्यों के पास १० एकड़ से कम ही भूमि है ।

उत्पन्न स्थिति में अगर अन्त की लानी में श्वापर को आन्त-निर्गत करके है इन्-७६ प्रतिशत छोटे निशानों (मार्निंग लेण्डरीइस) की औद्योगिक (सिचरिं रीट) करनी है तो इनके द्वारा इनकी परिधि आधरकता से अतिरिक्त अन्त के जन्तक को उन्मत्त कीमती व मयन रचनाएँ व योग्य सामीय संध्याओं के माध्यम से हास खरानी खरीद कर इन छोटे इतिअनरों को मायस उन्मत्त बोक्या का भीसासत है सकता है ।

सहरी जनसंख्या को भी वर्गमन साधारण दूरी पर पड़ता देतो व अन्तर्गत हीने वर विदेशी अन्त प्राप्त हो, देशी श्वापर वरवार पदवत् सहायकी संस्थाओं, प्रमोत्त श्वापरियों व श्वापर समाज के ली संस्थाओं के माध्यम से प्राप्त करते । उत्पन्नक मनुष्य में को मानीय व कैपेड सहायकी की आर्थिक शक्ति हो उन्मत्त श्वापर बनाया, शेष कि प्राचीन व के-नीय लान व लानी बोक्या, उत्तरी उदरगण व लानी-रिक्त की भीसासत पर अतिरिक्त श्वापर रचनाएँ रखने के लिए देती हैं ।

उत्पन्नक बहानों में इतिअनरों की कि भारत में अंतर्गत की दृष्टि से लानी की दृष्टि से कुल भारत के १००० वर्ग-उत्पन्न में से ७०६ वर्गमन में ही श्वापर रगत है, कृषि मने में उत्पन्नक श्वापर अन्तर्गत मनुष्य की दृष्टि से भी माना जा होगा ।

"वैज्ञानिक इतिअन्तःसहक" को अन्त आधाधान में हीरगत करने में हमारी के लक्ष्ये करेगा ।

इस प्रकार तीसरी बोक्या में ही अन्त के क्षेत्र में अन्तर्गत करने की लानी का मने लानी का लानी । अन्तका अन्तः

हरिजन सेवक संघ के निर्णय प्रेम और सेवा से अस्पृश्यता-निवारण

अखिल भारत हरिजन-सेवक-संघ के केंद्रीय बोर्ड ने सोकर (राजस्थान) में अपनी सालाना बैठक में इस महत्त्वपूर्ण सवाल पर, हर एक पक्ष को ध्यान में रख कर विस्तार से चर्चा की कि पिछले २८ वर्षों में अस्पृश्यता-निवारण का काम किस प्रकार और किस हद तक हुआ, और जड़मूल से अस्पृश्यता नष्ट करने के लिए मौजूदा परिस्थितियों में किन साधनों को लेकर कदम उठाना चाहिए।

इस प्रश्न पर भी विचार हुआ कि केंद्रीय सरकार और राज्य-सरकारों द्वारा हरिजनों को ऊपर उठाने और समान स्तर पर खेती भी शिक्षा में जो काम हो रहा है, उसमें संघ आपन क्या योग दे सकता है तथा स्वयंसेवक रीति से भी वह उनके उत्थान के लिए कितना क्या काम कर सकता है। इन प्रश्नों पर को सन्धी प्रार्थी हुए, उससे केंद्रीय बोर्डें इन परिणामों पर पहुंचे—

“अस्पृश्यता का जैसा भयंकर और व्यापक रूप कुछ वर्ष पहले जहाँ तक देखने में आता था, उसमें फर्क पड़ा है। लेकिन यह मान लेना सही नहीं है कि अस्पृश्यता का प्रत्यक्ष अन्त नहीं, उसे दूर करने के लिए कोई खास प्रयत्न करने की जरूरत नहीं है। अस्पृश्यता की बड़े दिलवाह गयी है, कमजोर यह गयी है, पर अभी भी उजगी नहीं है, जमाने की ठीक नहीं रही है। अस्पृश्य देखे प्रयास करने और उनमें में आते हैं, जो इस सम्बन्ध में जो सिद्ध करते हैं कि अस्पृश्यता एक-न-एक काम में न कि प्रामाण्य में, बल्कि चारों में भी मिटाई है।

शिक्षा-प्रसार के और विनाश-प्रकार के शैक्षिक हरिजन बहुत काम पाये हैं, इसलिए अस्पृश्यता से पैदा हुआ अपमान उनको दिन-पर-दिन महसूस होने लगा है।

गांधीजी ने अस्पृश्यता को शिक्षा-प्राप्त कर के दूर बना हुआ कलंक माना था। वे मानते थे कि अस्पृश्यता के साथ धर्म का, दाने साथ और अहिंसा का मेल नहीं हो सकता। इसलिए अस्पृश्यता-निवारण का अन्तर्दालन सर्व-गुणिक की भावना से गांधीजी ने चलाया था। यह भावना, यह प्रेरणा और यह धृति, ऐसा छाया है कि अन्धकार मानने से हथकी जा रही है और इस आन्दोलन में जो पैरु था वह मन्द पड़ गया है।

अनुभव में आया है कि सरकार की मदद के बहुत कम उद्यमों को कार्यनीति को चलाया जा रहा है, और अपनी छुद्र की प्रेरणा और छुद्र का पुष्पायें बरते के सैन्य नहीं होख रहा है। इसी विषय किन्हीं की रचनात्मक संस्था और कार्य के इन्हें में अपनी नहीं है, इसलिए इस विषय की दृष्टि देने और अस्पृश्यता निवारण-कार्य में प्रामाण्य और तैयारी बनाने की आवश्यकता से इन्कार नहीं किया जा सकता।

सरकार के अन्तर्गत अन्धकार-व्यवस्था-वारी (विन्डरो) सरकार मानती है, (स्मर) में भी के विचारों से दूरी तक चले नहीं गयीं, इसलिए कुछ लोग नती पर लाने करने के लिए अस्पृश्य

व्यवस्था उससे सम्मान्य कृती वा उच्छेदी है, परन्तु केवल उन्हीं की उदाहरण पर कार्य आधार रखना उचित और सहाय-नीय नहीं है।

गांधीजी ने अपनी आन्दोलन-वर्तमान में जो लिखा था, उसे ध्यान में रख कर मूल आधार को अस्पृश्यता-निवारण का काम बनाने में बड़ने के लिए सरकार से संग्रह किये हुए पैसे का खर्चा माना चाहिए। विचार-प्रसार और जन-तन्त्रण का काल-अन्तः प्रभाव-प्रकारको समान गरी माना जा सकता है।

शैक्षिक अस्पृश्यता एक लक्ष्यमूलक विचार है, एक मुद्दा पर जाय है, इसलिए मासिक-चौक धर्म-भावना से ही उसका समुक्त नाश किया जा सकता है। इसके लिए जरूरी है कि अपनी मुद्द की जीवन-द्रष्टि और प्रेम और सेवा के द्वारा अस्पृश्यता मानने वाले विरोधियों के दिलों को जीता जाय।

कुछ छात्र और कर्मचारी प्रयोग में हरिजन और अस्पृश्यता (अप्रान्त)-प्रदान का उपयोग करना चाहें, तो ऐसा पैर कर सकते हैं, इसका ही नहीं, बल्कि उनको उचित संस्था और छात्रागारा भी ही वा करती है, यह ध्यान में रख कर कि आज में बहुत न बढ़ने पाये।

संघ के कई लक्षण में अस्पृश्यता-निवारण का काम अन्तःपक्ष है, इसलिए ऐसे कुछ और भी बनाये जा सकते हैं, और अस्पृश्यता अन्तःपक्ष पर में देखने में आये, और जहाँ छात्र पाठे परिभाषी कार्यकर्ता तथा एक काम में दिलचस्पी रखने वाले और अस्पृश्यता-साधन प्रदान के कुछ निर अनुभव हो सकते हैं। ऐसे लक्षण कुछ भी करती है पर छात्रों का कि अन्तःपक्षों का साथ चलने के लिए आये काम कर अधिक छात्रागार न भी मिले, उस भी काम हट न हो, और वह संघ किन्हीं कार्य-संघों पर निर्भर न रह कर काम को अपने उतर-उठा है।”

उपर के निष्कर्षों को ध्यान में रख कर केंद्रीय मंडल ने आपने क

कार्यक्रमों की इन प्रकार की रूप-रेखा बनायी :

“चाय की दुकानें, भोजनालयों, कुम्भी व दूध के बन्दियों, नार्सी दुकानों और बन्दियों पर सामाजिक व धार्मिक क्लबों को, जो हरिजनों के घरों में आयी हैं, वे भी से दूर कृपा वा करे, ताकि वे उनके साथ समान रूप से व्यवहारों का उचित उपयोग कर सकें। इसके लिए विशेष कलसे गांधी को दलों के द्वारा प्रेष-पूर्वक सम्मानना जाय, साथ ही हरिजनों में अपने बन्धुबन्धु अधिकारी का उपयोग करने के लिए साहस बढ़ाया जाय। जो धार्मिक-विद्यालय हरिजनों के लिए खुल गये हैं, उनमें वा-वा-वा उनको के जाया जाय।

संघ की प्रादेशिक शाखाओं के अध्यक्ष और मंत्री लक्षण ऐसे में सरकार जायें, और कार्यकर्ताओं को प्रेरणा दें और उनमें उत्साह भरें और अपने प्रयास से उन्हें के लोगों में और बहुरंगी व्यवहारियों में अस्पृश्यता निवारण कार्य के प्रति दिलचस्पी पैदा करें और उनका समय-समय पर सहयोग भी दें।

बड़े घरों के साथ-साथ छोटी छोटी सम्प्रदायों को अधिक महत्त्व दिया जाय। निरक्षर कर लिया जाय कि प्रादेशिक शाखाओं की साधारण अन्तः के साथ सम्पर्क करते अन्तः पक्षवर्ति काल में अवश्य हटती आये।

‘अंगी कृष्ण-सुविता’ और उसके भी अधिक ‘अंगी-सुविता’ की समया हल करने पर जोर दिया जाय। उसके लिए सपके कार्यकर्ता तथा अधिकारी धार-धार

इन्सान की सेवा ही परमात्मा की पूजा है।

पंजाब में आनन्दपुर साहिब क्षेत्र पर मुसलमानी ने आक्रमण किया। दोनों लक्षों के निकट जलती होये के और मरते थे। भी प्रेरणा मारें गुप्त साहिब के अनवरत भजन थे। वे हाथ खुल मित्र के मद में हैं। उपर उन कर नारायणजी किताबें हैं। लोगों ने दयाभी मायाजी भी शोधित विरही मराठक हैं। पिछानवी कि वह पनेस मर्द हैं। मित्रको हन को मुक्ति के माते हैं, यह उन खली विचारों की महापुरुषी करते उन्हें स्वयं कर देवा है और आते दिन वे विनाही हमारे साथ चलने के लिए आ जाते हैं।”

तीस मारों को मुलतः साथ और बचाव लीग गता। उनसे प्रथम के बहू-‘गुप्त माराया, जब मैं शेर कर रहा हूँ वो मुझे हन नरक नहीं भयकि कीन मुने है, मेरे मित्र है कीन शेर है, मित्रा है पर मुशक्यत है। मुझे तो केरा मरने आया का ही नरक आता है और मैं उसकी आरता ला सकता हैर अन्तः-मय से लेना करता हूँ।”

बड़े मुन कर गुप्त माराया मरुद ही गये और उन्होंने पनेस मारों को आनी भू-उते लान लिया। उसकी आयाय में परमात्मा का प्रोप है। इन्सान की सेवा ही परमात्मा की पूजा है।

स्वर्ग-वर्माचारियों, मूर्खिजन और-रिषी और आम जनता के साथ अन्ध सम्पर्क होये।

हरिजनों की विचारों में सुती बने, उनमें योंच रूपकी बाप और उनके लक्ष्मी और धर्मादिओं की दूर-कल-की, मितीनी भी हो रहे, कोविच को बाप।

पामों में भूमिहित हरिजनों को सेतो के लिए पक्षर सरदार है व भूदान के कार्यकर्ताओं के विचारों का प्रयत्न किया जाय। नयी बनते हो प्रभु के साथ, और बनते बाज और तकावी और तने हा भी प्रयत्न किया जाय।

हरिजनों की मज्जा बनवाने के लिए भी सरकार से बर्मान दिहायी जाय भी यह उमीन, बहो सुह हो, आम आनी के नबदकी हो, जिसे कि सुशुभद वि-वर्ते। इसके लिए शा-निर्माण-कार्य-सहितियों की संगठित करायी जाय।

उपर के कार्यक्रम में वे विचारों में काम मान्य साधनों और साहित्य के अनुदान हाय में लिया जा सके, उनका अन्तःपक्ष जाय और उसकी शिरोरि (निमित्त कर, सही आँकड़ी और धरकों के साथ बड़े प्रमाण कार्यको को पैसी, जाय व अन्तःपक्ष-वर्तियों में प्राणित करायी जाय।

संघ का केंद्रीय बोर्ड १० और ११ विचार, ११ की सली परामर्श के पर ऊपर के परिणामों पर लुंवा और उनके आधार पर धराने का यह कार्यक्रम बनाया गया।

आया की जाती है कि संघ की समग्र प्रादेशिक शाखाओं और कार्यकर्ता अन्तः-संघोपन के इस माराय बरने पर पूरा पान होंगे, इसके लिए संस्कार भी और एक प्रकार का प्रयत्न करेंगे, जिसे बर-के, अन्तःपक्ष के अन्तःपक्ष कलसे है इत्याद लाया, इत्याद धर्म और हाम्य राष्ट्र-सुवर्ग की बाय।

—विद्योती हरि —पनेरपरी मेहर

व्यपणध

विनोबा-पदयात्री दल से

● कुमुम देवनागरे

दूर नहीं, नवरीक ही नीले भागा-पहाड़ी की कटार उड़ी है, उन पहाड़ों के और हवासे रीच बड़ी चाबल के रीत वीले हुए हैं, तो कड़ी हरे नये भाव वागन। इस गाँव का नाम बरहाट है। कुदुरती की मोड़ में बसा हुआ छोटा-सा गाँव है। दोधर में विठवीं के बाहर वील दहा था—तुड़ अ बीच तरह के छोटा शोडा टोते हुए भा रहे थे। शतमत्ता बदन से बढाना, "हलिये। ये ही है गाणा-सोग। आज यहाँ बाबादर है, हलियर आ रहे हैं। क्या जानेगी बाबादर भी उन्हें देखे?"

यहाँ बाबा कि देव योग से दल-पदरत मील लुपे ही वही नामा-भूषि कले तीभाय है। विषयभारम विषय के दून लोटे के बर्तों में भी जाने मैदान में भी कुछ बराग लोग रहते हैं। अने नाम के बड़े ही हैं, नये बदन। एक लडोटी के शिखर ओर कुड़ भी नहीं है बदन पर। बदन में पैर के पट्टे हैं। बजते हैं, पहाट बटने के लिए उठकर उठारा लेते हैं। उले बजरा रंग दिया हुआ था। काल में बड़े-बड़े थे—किरी ने उन छेद में जाल था पूछ रहा है, चिचिने केपटीपनी ही रही है। किरी के शिर पर फाले टोपी है, तो किरी के शिर पर कुड़ नहीं। अने बहनें थी, उनके शरीर पर भी नाममात्र का ही फल था। बाबू बहादर बने विनोबा बाबादर ही गये।

वहाँ नाम लोग अपनी छोटी छोटी दुकानें लगाये बैठे थे। ये दुकान चाये क्या। एक मूँडे कपड़े पर गोदी हरी और हाट मिच, मोड़े बरसी के बर, बिसे यहाँ की भाषा में "चिचु" करते हैं, बब। विनोबाजी एक दुकान के सामने खड़े हो गये और पूछ-छाँची दुकान यदि मैं खरीदना चाहूँ तो कितने पैसे देते होगे?" वह माने पड़ले तो बस हाँकिया बोले नहीं। दुधरे रूप उनसे देख लो विनोबाजी के बहरे पर खेद और मुँह पर दुःख, वह फिर उलने बहा, "११ ब० ७ आना।" अब उठना माल तो बिदेगा नहीं। उस १-००० आना के लिए वह आठ मील की भाषा था और उधनी ही दूर पावक प्राये काल था। ये छोटा गाँव में बीच एक बड़ी हुई मोटर से विनोबी मील की रेकार्ड गुनारें रीची थी। हलियरें १०-१५ पवक पावक टाने हुए देखे थे, हँसी मखाऊ हो रही थी। बीच-बीच में मोटर में बैठा हुआ भारी बिलकाला था—"पदी विगरेट पीओ—यह सजोयें दे।"

हलाक दुःख। किन करते हुए विनोबा ने काम की कहा—"हमने इन साराथी की किमती उठका ली है। इन गाँव में हम नहीं गये हैं। इनकी लेन बजने नहीं की है। यह है हमारे देह की हलाक। मैं उर देह रहा। उर देह की नि बस देखे छोटे छोटे गाँवों के बर बाबादर में नवरीक-पदरत हुए रहे हैं, हलियर-बज रहे हैं; कहीं बायोली भी बाच्यी-बज्यी की बने बने रहे हैं। बाबादर में ही लोचनम, पदरत रमान बना कर यहाँ बैकक समझ रहे हैं कि नपलासीरी छोडो। अच्योटी खोरे के बने बनावत यह हान भी ये रहे रहे हैं। मिन देण है कि देखे छोटे बाबादर में मिराड ली लोग बर्तिये बने हैं। बाबू बनाय बने हैं, पर ये नये बने हैं। छोटी छोटी ही यह देह बर। वर हमारे पाठ पदले से ही बाच्यी-बज्यी किमती है, यह उर कहीं पहुँचाने हैं। खोरेड देवकी की पत्र दूर लेना चाहिये।"

आपस-आपस काय के माराड बहुत रीकते हैं। वहाँ हवावी बगुडर अपना केन बहा रहे हैं। उनमें हलाक विचार भी उरक है। मदी पुँवका उके है, कयोंकि बनेर बाबूकाले उरने पड़ने हुए था पड़े नरी के हैं। एक दिन खूब बगुल गले बगुडर आपसी-आपसी टोकियाँ उठा कर पावक बने तरह का रहे थे। उली छोटी के किनेनीनी मुकर रहे थे। मन्वरीं यो से कुछ प्रमाण करते थे और कुछ देखे ही बाबादर में या बुजुल के देहाने में और अपनी हाथ पकडते थे। उनमें से एक के पाठ बाबादर में तदथ हुआ—"बाबादर, हरी टोपी पदत कर कोन बा रहा है।" उनमें से एक ने कहा, "हाँ। मथाना मथी बा रहे हैं।"

वो दिन पहले नागाओ की बरसी काये गाँव में पदरत था। पना जलत और पदरत की तरह में देवकी की, 'बाबा' बजो वीली है। सब छोटे बड़े हैं—उनकी आँखें भी बरसी के बने बने हैं। उले बजरा रंग दिया हुआ था, फल बर रहे थे। मिन देण देह के बने, "पहले, दोसरे। हलाक देवकी मुँह।" उलका हाथ पकड कर में पीने लगी। बाबा पर देण बढने में बाबा की मथक आकर उठारी थी, खूँ

वीली है। सब छोटे बड़े हैं—उनकी उनेबा ही हमने की है, केवा नहीं। उन लोको में बरा ने खेद के बतले की। उन लोको से पता चल कि उले पाठ जमीन बगुडर कम है। विचो के पाठ पद एकड, वी किरी के पाठ आया। उनमें पाठ बहुत कम पैदा होता है। मन्वरीर बगुडर री, बिसे यहाँ अरथ में "चिचु" बहते हैं, पैदा करते हैं। वीर की टोकी बगीच बनाने का काम उनमें से कुछ करते हैं। नवरीक के पाठ अठ मील के बाँर में बाबादर के बने हैं। उली पर उन उ गुवाय होता है।

बाबा ने उरने समझाया कि पर-की से उरने न रहना, बाबाप न पीना और नोयाप न पाना, ये तीन बने बरखीया वन में फाली गयी हैं।

वीधर में ली बने बाबूना लता में गाँव की बनें अयो थी। वहाँ का किउर 'असमिन्' अयो थी। 'बादर-असमिन्' उले कहा जाता है। बाबाक गया कि इन लोको में रहना वह गुवाय हुआ है। बाबा ने छोटे के मथक में कहा, "कम्परी नी दिदुलान का एक गिर है। पर वहाँ गुले बर भाग नहीं हुआ कि मैं एक गिरे पर भागूँ है। उलका बाबाक बह दो कलक है कि मेरी बचान वहाँ के लोग लीची मत-लेते थे। यह ही दो कलक है कि वहाँ के पदरत हलियर उके, पहाड़ों के हमें दीवत नहीं। तीसरा यह भी उलका है कि किरी मुँह के नवरीक थी। लिखित कि हम मुँह के नवरीक नहीं हुआ कि हम एक गिरे पर भागूँ हैं। वहाँ को सामने एक प्रबत उठर था। पर इन दिनों उठर लेखल नही है। पदरत के हाथ बचक, आना-नामा हीन ही है। नही दान आने हैं तो माल देता है कि हम मारत के बर खिरे पर भागूँ हैं। वहाँ के बने बने ही दर्जन गुना। आज यहाँ के लोगों से बात करते हुए बाबादर में आया कि ये लोग पुनर्जन्म नहीं मानते हैं। उनको उलका मान ही नहीं है। कारे बाबादर में यह नहीं देखा था। अलग-अलग बने के जलन-जलन विचार बाबूदर हैं। सुवदयान वहाँ के बह विचारक हैं। पुनर्जन्म नहीं है, पर खेद, डर, बँहरे और पदरतों में भी यह नहीं दाना है कि मनुष्य मती के बह बर रजल होय है। आ वहाँ के लोग ईश्वर का भाव लो लेते हैं। मिन

वो ही छोटी लोचनियों में रहना हुआ था। वहाँ को बतले की एक सजान है। हलियरें मिराक के सामने पकड ली थी और उधनी ही उर गाँव में हैं। हमारे मिराक के सामने ये कि वहाँ के ३२ मील पर मन्वरीक की लीगा है।

उर दिन पदरत के मन्वरीं के सामने सेलोले हुए विनोबाजी के बहा, "आप पदरत में जो बाबा करते हैं, यह बहुत कठिन काम है। लेकिन आपके काम से मन्वरीक बनता है। आपकी सेवा हवाती मन्वरीक है कि कभी हम उले भूल नहीं उलते हैं। भाग देण भी केय करते हैं और देण के आप नागरिक हैं। आपकी उर हक हलियरें। इर देण में रिशका घन हीम, यह भाप उर कर उलते हैं। हलियरें अपर यह मर समजिये कि आप नीच हैं। हमने देहालें के लेन-भगुडरी का आँदोला उठाया है। वही देण के मन्वरीक-आंदोलन की बर है। हम जय पर दहरे कर रहे हैं। हलियरें आपनी तरह भाग का रमान नहीं है, देण मत उगलें। हम बाबाकी प्रविशक प्रविशक करते हैं। आज अलनी मीमड, मन्वरीक नहीं मानते हैं। मन्वरीक-मावतन आंदोलन से मन्वरीं की मरिडा नयेगी।"

उली ओग में चद नगाभा भाई बाबा से मिलने गये थे। वहाँ की लेने-री बुजिया मिन उले उले के लोग बाबा की खरिया के बल बैठे। इधर मैदान में रहे हुए इन नागाओ में बैकक धर्म का-रिहे अरथ में "पदर-बाच्यी" करते हैं—बाबादर कुछ गुनारें लोगों ने किश था। एक जमाने में अरथ के बहादुरपक बहरे-द तथा भाष-बदने ने भी इन लोको की केव की थी। उनके बने में इन लोको का किमती भाषा है।

हलाक छोटे हुए भी आज इन नागा भाहरी की हलियरें सुधी हुईं नहीं

राजस्थान नवम् सर्वोदय शिविर सम्मेलन

की माला दी और अत्यंत बढ़ावा । बाबल के दाने जो राखी पर डीले थे, उन्हें देख कर राजगोरी के मन में एक खयाल पैदा हुआ । बाद में बाबल से पूछा, "बाबल क्या यह बाबल का 'पिछ्ट' नहीं है ?" बाबल ने हँसते हुए कहा, "यह तो हमारे ही ही भांगना है । लोग बाबलते हैं कि बाबल के खानगान में पक्षी भी आनन्द लेंते । उनसे लिखे यह 'पिछ्ट' (भोजन) को आदि है ।" यह शब्द राजगोरी मुन वर रोज खुश हो गयी ।

बहादुर गोंय में विनोबाजी का दस दिन निवास रहा । रोज मुन्द और चाम आस-पास के गाँवों में बाबा बाबल से और बहूँ सभा होती थी । अलग अलग के अन्य भाई-भयन मिलकर २२ शेषक भी इकट्ठी हुईते रहे । उन सबके काम के परिणाम-स्वरूप चालीस गाँवों में भूदान-प्राम्थान का विचार संकल्पित ।

उनमें से पाँच गाँवों ने प्राम्थान दिया । ३०० सर्वोदय-पत्रों की श्रृंगारना हुई । २६ सर्वोदय-भिन्ना दने ।

इन्हीं दिनों महाप्रभु सर्वोदय-ग्रन्थ के मंत्री श्री एवनाथ मगन बर्बर शहर के संतोषक भी राम देवपते, रत्नामित्री शिष्टे में काम करने वाले श्री रामकाण्ठ पाटील, दुम्भारत सर्वोदय-ग्रन्थ के अध्यक्ष डा जोशी और बहीदा शहर के काम संतोषक भी बाबरीय जातिवा; ये पाँच भाई विनोबाजी से मिलने आये थे । ये एक सहाय्य लाय रहे । उनके लिए विनोबाजी ने एक ही गाँव में रहना लाभदायी कहा था । उन गाँवों में मिल कर विनोबाजी के सम्मने एक 'प्रदान एक्का' रली और फिर चार दिन विनोबाजी ने उन प्रदानीं पर उनसे हमने चर्चा की । 'प्रदानपत्रिका' के कुछ सहायक भाग में काम के बारे में ये और कुछ कार्यकर्ताओं के बारे में, कुछ आचार्यिक और सर्वोदय-ग्रन्थ ।

उस चर्चा में एक दिन विनोबाजी ने कहा, "आपको मजिबुब का समझ लिये जानना है, इसलिए आपको जानने के बारे में होचना चाहिए । इसीमें देखी हवा में तो नहीं होती है । उसके लिए 'मोनेकट' चाहिए । हमारा धाम में भूदान और प्राम्थान को आपने लिए 'मोनेकट' ही है ।

दूसरी बात होगी, समाज के पुरानी भूकृषी को बदलना, नये भूकृषी का प्रचार करना ।

तीसरी बात समाज में दिनों को जोड़ने का काम भी आपकी करना होगा । 'नेशनलिटी' का भी एक काम दूसरे लोग भी करेंगे । उनमें सरदार, अन्य समाज श्रेण्य भी आयेगे । लेकिन टाकि केका का काम आप ही करेंगे । यह काम दूसरे नहीं कर सकेगे ।

कार्यक्रमों की विचार देने का काम आप हीन चाहते थे दर करने दें : (१) चलेते फिरते और काम करते हुए वर सबको

हूत वार राजस्थान समग्र सेवा संघ का वार्षिक सर्वोदय-शिविर सम्मेलन टोंक नगर में १७ नवम्बर

१९ नवम्बर १९१६ तक आयोजित किया गया । शिविर का कुलप्रतिष्ठक श्री सिद्धराज उड्डा तथा सम्मेलन अध्यक्षता श्री नमकृष्ण चौपरी, अध्यक्ष, ७० भा० सर्व सेवा संघ ने की । शिविर के प्रथम दो दिनों में भू-निष्ठित विभिन्न विषयों पर साप्ताहिक रूप से तथा दोहोनों में गहराई से चर्चा की गयी ।

प्रथम बैठक में श्री क्वाडिरलरखी जैन ने प्राम्थान के संदर्भ में पंचायती-राज के स्वरूप विषय का अर्थ किया तथा श्री नरेशपुरीजी गोस्वामी ने सर्वोदय-आन्दोलन के अर्थों का अर्थनम वर किया-अर्थना किया । इन दोनों विषयों पर श्री पूर्णचन्द्रजी जैन, श्री कर्णधाराजी स्वामी, श्री मनोहरसिंहजी मेहता ने प्रकाश डाला । विशेष उल्लेखनीय है कि शिविर की प्रथम सभा में राजस्थान विधान-सभा के अध्यक्ष श्री रामनिवासजी विद्यो ने प्राण लिख और अपने विचारों को समाजित किया ।

शिविर की दूसरी बैठक में उपस्थित सभी कार्यकर्ताओं ने पाँच दोहोनों में विषयक होकर उक्त दोनों विषयों पर गहराई से चर्चा की । इन दोहोनों का मरदन शायियों ने उद्घाटन था : (१) श्री पूर्णचन्द्रजी जैन (२) श्री रामकृष्णजी पुरोहित (३) श्री कर्णधाराजी गोस्वामी (४) श्री केशरपुरीजी गोस्वामी (५) श्री मोहनधरजी शर्मा (७) श्री क्वाडिरलरखी जैन (८) डा० चन्द्रशला शर्मा (९) श्री राजकाण्ठजी

दे, (२) शिविरों में कर सकते हैं और (३) प्रदापिका के आधार के बाद ।

"प्रदापिका जाने क्या है ?" - नववीध-भाई ने पूछा ।

बाबा ने कहा, "बापक लोग शास्त्र का बहुत ज्यादा शोध विचार कर कर्षों उठाते हैं, समाज में नहीं आता है । सब शास्त्राओं पर शास्त्र पढ़ी है कि विश्व पदार्थ, निरमल ही । यही कलौटी है । निरमल विश्व का उद्भव यही है कि सर्वत्र हरिश्चर देते । शेष देते हैं कि, गुण आभा भी, यह भाग ही । शांतिपूर्ण अर्थ है, इसलिए अत्युच्च बर्बर देखा नहीं करेंगे । गुण-अद्वय ही वाहिए । सामने रहने लोग बैठे हैं, उनमें ईश्वर का अर्थ है वा नहीं । शोडुभ्रमक के समाज में व्यापक रीति, अमर आप में मोक्ष लीक ही ।"

त्रिपुर के गांधी-स्मारक शिष्टि के एक भाई जीब में शरण में आकर गये । उन्होंने अत्याचरपूर्णक भावा से किन्ती की कि त्रिपुर में क्या अर्थ है । वर देते थे कि 'त्रिपुर' पंचायतों के नाँवले देय करलगाते हैं । पर त्रिपुरात असम की वादी (कैले) जीब कर ली जाने का बाबा का खयाल नहीं दीलात । बाबा ने विनोद में कहा, "पंचायतों नेता आये हैं तो हमारी बहादुर में बैठ कर आये हैं, दो दिन वा चले घटे देते हैं । बाबा को तब ५०० मील पैदल जाना होगा और उतना ही बापक उद्या होगा । रो, यदि कोई 'देय' आया देते हैं—१०० आनन्द करेंगे ऐसा कहने की शिष्टात करेंगे, तो हम सोच सकते हैं । शिष्टात-सहायक निमन्त्रण हम अभी पाहले में रहते हैं ।"

महेश्वरजी भाषण हुआ, जिसमें सर्व साम-समाजों के संवेदन तथा हम सभी मित्राभियों को सम्मानित करने का दावा देती, रोमी शिष्टि जाने के बाद दिया ।

इस पंचायत राज-सम्मेलन के द्वारा बारा उच्च-सम्मेलन का समाविष्ट-करो हुआ, जिसमें प्रान्त के मुख्य मंत्री श्री मोहनलालजी तुलाजिवा भी सम्मिलित हुए । सर्वप्रथम निवेदन के शरण में श्री पूर्णचन्द्रजी जैन, भाराजी जैन । आधार-मणोपार से सम्मेलन में श्री गोस्वामी मर, मन्ना-कदी के सम्मेलन श्री मनोहरसिंहजी मेहता के साथ एगि देना, वाकि प्रिष्टिा के सम्मेलन में श्री टी. प्रसाद वरामी ने भाषण हुए ।

इनके बाद पंचायत मंत्री श्री हरिण उपाध्यक्ष तथा मुख्य मंत्री श्री मोहनलालजी तुलाजिवा के शिविर-सम्मेलन में हुई चर्चाओं से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण भाग हुए । दोनो में ही इस बात के शिष्टि-वकीलन में हुई चर्चाओं के आधार पर निरिष्ठित कार्यक्रम को पंचायती-राज की संस्था के लिए महत्त्वपूर्ण बताया ।

अन्त में अध्यक्ष ने अपने संसारनिष्ठ संघित भाषण द्वारा सर्वोदय शिविर को भाष्यकारिता में परिणत करने के लिए आग्रह करते हुए उपस्थित को सम्मन किया । इस प्रकार इस बार शिविर सम्मेलन के उद्देश्य के साथ तथा बड़े महत्त्वपूर्ण सामाजिक निम्न-लेख सम्पन्न हुआ ।

इस बार के शिविर में प्रान्त के कर्षी २०० रचनात्मक कार्यकर्ताओं ने भाग लिया । सम्मेलन में रचनात्मक कार्यकर्ताओं के द्वारा वीक शिष्टि व भाषने के समग्र हमारे द्वारा ही सागरिणी ने अर्थ केका शरण उदाया ।

इस बार सम्मेलन के अन्तिम दिने १९ ता० को माता ज्योतिबा लाडिनी जी एक रेली भी आयोजित की गयी, जिसका और प्रेम के अर्थवर्षो में हुए ६ प्राम्थान-गीत गाने हुए वार-प्रथम शिष्टि का नगर-विचारियों पर अच्छा अर्थ हुआ । इसके अलावा एक सम्मेलन शिष्टि शिष्टिगत रूप के लिए टोंक नगर के मरद, पंचायती कार्य-रिचर-मिष्टि । पूर्ण अर्थ दिनों का कार्यक्रम सम्मानित कर दिया अर्थवर्षो आया । कुछ निम्न शिष्टि-सम्मेलन सम्मानित कर दिया । साथ शरण हुआ ।

शाम (१०) श्री कर्णधाराजी जैन । इसमें वरीन-वरीक सभी शायियों ने भाग लिया । ये चर्चाएँ सबके लिए उपयोगी और उल्लासवर्धक रहीं ।

दूसरे दिन ता० १८ को प्रातः बैठक में दोहो-चर्चाओं का शहर इन दोहोनों के अर्थवर्षो में प्रस्तुत किया । इसके बाद चर्चाओं के शर के सम्मेलन में कर्षी लोनों ने अपने विचार प्रकट करते हुए कुछ सुझाव दिए । १८ ता० की दोपहर की ३ बजे से ही नमकृष्ण बाबू की अध्यक्षता में नवम् सर्वोदय-सम्मेलन प्रारम्भ हुआ । श्री क्वाडिरलरखी जैन के स्वागत भाषण के बाद सर्व के मन्त्री ने प्रान्त के पिछले १० वर्षों के सर्वोदय आन्दोलन की प्रगति को बानारस दी ।

उत्ते का ही नमकृष्ण चौपरी का अध्यक्षता भाषण हुआ, जिसमें सर्वोदय कार्यकर्ताओं को अपने स्वर्ग के जीवन की ओर प्यान देने और सर्वोदयी जीवन का प्रयोग करने पर अत्यन्तक कर लिया । अल्पवयसि भाषण के बाद सम्मेलन की प्रथम सभा सर्वोदय मजदर द्वारा उपासत की गयी । राति को ८ बजे इस बार सभा अधिवेशन भी आयोजित किया गया । सप के अध्यक्ष श्री क्वाडिरलरखी जैन की अध्यक्षता में अधिवेशन की कार्यवाही सप के मंत्री श्री कर्णधाराजी स्वामी ने प्रारम्भ की । सर्वोदय उद्देश्यों के शर मरने का कार्य व दिशा-वक्ता प्रसारित केला-बोला अत्युच्च किया । इसके बाद भावी कार्यक्रम और सम्मेलन में प्रस्तुत किने जाने वाले निवेदन पर विचार किया गया ।

ता० १९ को प्रातः सप-अधिबेशन प्रुमः प्रारम्भ हुआ, जिसमें निवेदन पर चर्चा लोनों ने सुझाव प्रस्तुत किने और उरुदुभार उरुमें सौधोन्न किने गये । दोपहर की १ बजे तक दिने के शरणों का सम्मेलन श्री मोक्षुल्लारी मर की अध्यक्षता में आयोजित किया गया, जिसमें पंचायत-मन्त्री श्री हरिभाऊजी उपाध्याय व राजा-मन्त्री श्री दामोदरलालजी श्याम को वाकि-उ हुए । पंचायत के शिष्टि-वक्ताओं पर निष्ठा प्रकाश, सबर मन्त्री तथा कर्षी वर-वकी ने प्रकाश तथा सप अध्यक्ष का

राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद को 'चीवा-कट्टा अभियान' के दानपत्र समर्पित

बिहार और अन्य प्रदेशों के प्रमुख स्वयंसेवक-कार्यकर्ताओं और शांति सेनिकों ने नयी दिल्ली में एक समारोह में राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद को उनके अत्यंत जनप्रिय के अन्तर्गत पर विचार में १५ दिग्दर्शक १०० के अन्तर्गत प्राप्त हुए दानपत्र समर्पित करते हुए एक विवेक में उनके हृदयस्थ की हानि कायम कर की और उम्मीद की कि वे जब राष्ट्रपति-पद से निवृत्त होंगे, उन स्वयंसेवक-कार्यकर्ताओं को उनकी मार्गदर्शन देंगे।

बिहार में 'चीवा-कट्टा अभियान' विनोद की प्रेरणा से बिहार के २२ लाख एकड़ भूमि प्राप्त करने के संकल्प की पूर्ति के लिए एक नया कार्यक्रम है। विनोद ने इस कार्यक्रम की आरंभ मई १९४२ तक करने का उद्देश्य दिया है। जीवा-कट्टा एक टोपा, जब कि बिहार के विपक्ष नेता राजेन्द्र नाथ राष्ट्रपति-पद से निवृत्त होकर बिहार में आकर रहेंगे।

इसी अवसर पर डा०-सैनिक्स एक रेली दिल्ली में हुई, जिसमें भी महादत्तलाल नेहरू, भी वसन्तदास नारायण आदि के भाग्य हुए। डा० राजेन्द्र प्रसाद ने स्वयंसेवक और शांति-सेना के कार्य के प्रति हृद्यकामना प्रकट करते हुए कहा कि अब जीवन का योग्य भाग व्यतयायी इसी कार्य में लगावे की कोशिश करना।

आरामपुर बुझाना में सारी-भामोयोग का 'स्वायम्भवा-दिग्दर्शक'

आरामपुर बुझाना में १७ नवंबर को पंचांग सारी-भामोयोग का 'स्वायम्भवा-दिग्दर्शक' समाप्त हुआ। इस अवसर पर डा० गीरीशचंद्र मारांग ने स्वयंसेवक-श्री प्रेमदास पटना में आरामपुर भाग्य से, सब वहाँ के निवासियों ने इकट्ठा हो कर आरामपुर के लिए एकत्रित किया था। इस अवसर पर पंचांग के आयोजक भी न वि गार्हपत्य के 'भामो भवन' का उद्घाटन किया और कहा कि संसार में दो तरह के काम करते हैं—एक तो श्रेय, दूसरे तो श्रेय के। सारी का काम श्रेय और स्वयंसेवक का काम है। उन्होंने आर्थिक हठका मरुत करते हुए कहा कि यह काम बहुत बड़ा कार्य है, जिसके समाप्त दंडपणिक का प्रयोग करने की जरूरत न रहे।

जिला सर्वोदय मंडल, हिसार का कार्यक्रम

हिसार जिला सर्वोदय-मंडल के कार्यक्रमों में अक्टूबर माह में ८८५ रु. १० न. पै. की सहाय्य-विविधी की। ६४ सहाय्य-दान-अर्थ से १७५ रु. और ६ स्वयंसेवक-विधियों से ६१ रु. का संग्रह हुआ। मंत्री, जयशंकर, विरमा और होंषी के ३०० स्वयंसेवक-कार्य से पंचायत की रूपरेखा संघटित हुई। पार गाँवों में १२२ दीवा, १५ मिथा भूमि विद्यमान थी गयी। २४ ग्रामों में वदयानाई हुई। हिसार में कार्यकर्ताओं के प्रयत्नों से विरमा बनकर सर्वोदय ने अष्टोत्तरीय सार्वभौम की न जेम्बे के अन्तर्गत गयी। यहाँ पर नवाभय-शक्ति से भी की गई। बिहार में नवाभय-शक्ति के संकल्प में प्रसार किया गया।

बिहार प्रांतीय पदयात्रा-टोली का परिभ्रमण

आरामपुर जिले में बिहार प्रांतीयक अरुण स्वयंसेवक-पदयात्रा टोली द्वारा प्रभ्रमण भी सोमवार के मीरवाला, भी प्रभ्रमण-मार्ग एवं भी देवानंद सिम के नेतृत्व में २८५ मील की पदयात्रा पंचायतों में हुई। प्रभ्रमण-मार्ग, वर्ष एवं प्रभ्रमण-पथ के उमर भी प्राप्त अरुण रूप से चलती रही, अरुण २ अक्टूबर की रात को अरुण, पार भी कट्टे का दान-पत्र किया। कट्टा गाँव जाने के बाद पंचायत विधान-विधानी एकल प्रयास हुई है, पर फिर गिर गई—वे भी प्रभ्रमण-पथ उतराते से दान दे रहे हैं। उब जाने के

वर्ष पदयात्रा में लगभग १५ की कट्टे में दान-पत्र मिले हैं। १४ नवंबर में 'भूराज-पत्र' के १५ पत्र बने तथा तीन हजार रुपये के दान-पत्र मिले हैं।

१ दिग्दर्शक की टोली का प्रभ्रमण, जिले के हरियाण ग्राम में हुआ। १५ दिग्दर्शक का उपाय कर टोली दान-पत्र जिसे प्रभ्रमण करी। टोली के संघोषक के पत्र, पत्र के उपाय में रिशोभनी में आरामपुर से पदयात्रा करने का आदेश दिया है, जो सभी कार्यकर्ताओं के लिए उपयुक्त होगा।

"श्री धार्याजी, ता० २५-८-१९ का पत्र मिला। प्रभ्रमण के विषय में दाने पृच्छ। मेरा जवाब है कि अरुण पदयात्रा उपाय काम में आपकी सहाय्य करती। श्रिय ने स्थान में जाना, प्रेम का प्रसार करना, वहाँ की कार्यविधि की मुद्रा-कट्टा नदी, निरुण आकाश का होना, इससे अरुण प्रभ्रमण के लिए और बड़ा साधन हो सकता है। "सिंहारामनयन सब नव नवनी"—युक्त रहे, उसकी ध्यान महसूस मत करो। पदयात्रा प्रचलन को पहले ही छोड़ें। रामायण का भी पाठ करते होंगे। सीता, राम, लक्ष्मण के पीछे-पीछे हम जान रहे हैं, ऐसी भावना बन में किया करो।

—विनोद का "जय जगज्ज"

मद्रास प्रान्तिय के निमित्त श्री साधु सुनक्षयम् का उपवास

श्री वे सुनक्षय धरने २८ नवंबर १९४२ के पत्र में लिखते हैं:

"श्री साधु सुनक्षयम् ने विना-माया जिले के कोटली गाँव में आध्यात्मिक प्रान्त के निमित्त में ता० २२ नवंबर १९४२ की आध्यात्मिक प्रान्त के दिन उपासक शुरू कर दिया है।

उसी दिन आपकी १२ वीं वर्षोत्सव समारोह के साथ मनायी गयी। ६२२ पत्रों में ६२२ पत्रों का उत्तर देना पड़ रहा है।

आप की शेष-शक्ति के कारणों और अन्य कारणों की, जिनमें बहने नगर लाहौर में भी, एक ठका हुई। इस वर्ष में भी आपने उपासक शुरू करने के पहले जेठाना में दूध त मन्-विष का प्रयास काम करने की प्रवृत्ति समारोह की है।"

असम के शांति-सेनिकां से

विद्यमान और मार्ग अलीपुर, इन दो विभागों में अपने-अपने नाम से स्वयंसेवक के लिए प्रयास किए गए हैं। इन दोनों विभागों में कामरान भी हैं और आध्यात्मिक भी हैं। दूसरे वर्ष के आध्यात्मिकों की पूर्ण प्रवृत्ति है। ये न आ करें तो न भायें। लेकिन अब उचित है, तो अब ही कार्य।

—विनोद

- | | |
|--------------------------------------|----|
| इस संक में | |
| गांधीजी गये वह परिचित अर्थ भी बनी है | १ |
| यदि की उपासना | २ |
| कहातः मन्त्र-कहातः | ३ |
| समाप्त-कहातः | ४ |
| "दाम दो हकत, दोरे में कडा" | ५ |
| विधि-मुक्ति और अनाकार | ६ |
| मही दिन-दिन मोहो हो रहे हैं। | ७ |
| कार्य-प्रकार | ८ |
| प्रेम और सेवा के अन्तर्गत विचार | ९ |
| विशेष-प्रकार की हक के | १० |
| समाप्त नवम्बर स्वयंसेवक विचार-समेलन | ११ |
| आत्म-समाप्त-कार्य के प्रकटने | १२ |
| १३ नवम्बर आदि | १३ |
| १४ नवम्बर आदि | १४ |

साध्यात्मिक एकता के निमित्त श्री चोमप्रकाश-गोड़ का उपवास

पत्र २५ नवंबर को साध्यात्मिक समाज में एकत्र में श्री चोमप्रकाश-गोड़ (भूभुवने में, उपाय प्रभ्रमण श्रिय-मंडल) में प्रत्यक्ष-विचार प्रारंभ किया। पत्रों की संख्या १५०० के उपवास कर रहे हैं। बिना हो कि गोड़ों की बला में प्रयास-कार्य में स्वयंसेवक-कार्य कर रहे हैं। हाम में अतीव, करीने हक शेषों जतर-उपाय के साथ-साथ भी प्रभ्रमण करने के साथ-साथ ही प्रभ्रमण-पत्र प्रकाश-विचार प्रारंभ किया।

"भूभुवन सहरीक" का पाठिपत्र का १० वर्षों से का उपवास, पत्रों

दूसरी कोई प्रेरणा हो सकती है।

कोई शिक्षायत्त नहीं

हमें साधन और प्रवृत्ति के कोर्दे दिखाएत नहीं। लेकिन हम यह कहना चाहते हैं कि साधन का नैतिक सम्बन्ध प्रवृत्ति के सम्बन्ध नहीं है। हमें जो शिक्षायत्त अपने से और आसते हैं, शिक्षा देने एक अध्यापक-समस्या को नैतिक और सामाजिक सम्बन्ध नहीं माना है। अभी तक एक केवल सामाजिक प्रभावण और सुयत्त-नों एण्ड आईई-नी समस्या माना है। क्या साधन सामाजिक समस्याओं का हल कर सकता है? इसका उत्तर हम नहीं देंगे। जो सामाजिक अस्तित्व होते हैं उनको भूमिका अथवा होती है, जो अध्यापक धारण होते हैं उनको भूमिका कुछ अलग होती है।

मूदानयन

साप्ताहिक

मूदानयन समाजकल्याणोद्योगप्रधानीके वित्तिकार्यालयद्वारा प्रकाशित

संपादक : सिद्धराज दहडू
१५ दिसम्बर १९११

वारणसी : शुक्रवार

वर्ष ८ : अंक ११

अपराध : कारण और निवारण

• दादा धर्माधिकारी

सांस्कृतिक कार्यकर्ता का जीवन ही ऐसा होता है कि उसको जन्मपक्षी में क्या-क्या लिखा है, इसका उसे पता नहीं होता। सांस्कृतिक जीवन में अपनाई से लेकर आगवत्त तक उसे सोचना और बोलना पड़ना है। बहुत-से विषयों में ज्ञान के साथ-साथ उसका समान अज्ञान भी रहता है। मुझे भी अध्यापक-आपत्तक सम्बन्ध में कोई 'ऐकनिकल' ज्ञान नहीं है। जैसे विरासत के दाजे करना चाहुं तो कर सकता हूँ कि पिताजी जन में, आई और बेटे बकीर हैं, धर्माधिकारी परिवार में जन्म हुआ है, जिसकी परंपरा धर्म-कर्मों में व्यवस्था बना रह रही है, लेकिन धर्माधिकारी, शास्त्री और पंडित में सभी सतो और जातिधारियों के विरोध में रहते हैं। ईसा, बुद्धवाद, शान्देय, एकतावादी आदि का मुख्य विरोध उस समय के धर्माधिकारी, शास्त्री और पंडितों ने ही किया।

यूरोप में भी सुधार का विरोध उस समय के ज्यवाकोशों ने किया। भी पंचमन काक जूडिशियरी इन्ड इ इन्टरमीडिट वि कॉल एंड गॉट्ट क्रिस्टिये दि नूँ।—कानून की शरणवा मान ही 'जुडिशियरी का नाम माना गया है, जब कि नाति में सदैव पटनाई पहले मानदित होती हैं, जिन्का कानूनों में प्रमाण नहीं मिलना। लेकिन पटनाई मानदित होती हैं, इसलिए उनका कोई फल 'को' भी नहीं होता, कोई नकार नहीं होती। जो कभी हुआ ही नहीं वह 'को' और आईई' का विषय नहीं हो सकता। अनेकों के सम्बन्ध में हम सभी देशांतरीय थे, उनसे कानून के तहत गुनाहवार थे। लेकिन इस प्रकार गुनाहवार होने पर भी हमें गर्व था। अस्तित्वगत-निष्ठाएँ कानून बनने से पहले हीकानों का मन्दि-नवेश एक गुनाह था, लेकिन मानवा का ही दृष्टि से यह उचित ही रूपमें ही मान्य था।

विनोय की असफलता भी साफलता

बादली दृष्टि से वैदिक काल माना गया यह कि हमें पता नहीं है कि यह कानून इस पर लागू नहीं होता। अध्यापक कात गणपत दिवस पर जब धर्म-दीर्घ का अधिविषय अनेकों ने चर्चाया तो नकलें में चली कहा कि लोकमान पर यह अधिविषय लागू नहीं होता। लेकिन एकतरफ में नमीनी व उनके अन्य कार्यों के मुद्रामें भी दृष्टि ही भूमिका रही। उन्होंने हर कहा कि हमने कानून धर्म-मूल पर रोजा है। नमक-कलाह आदि सब हमी मानवा का सकेत करते हैं। कानून तोड़ने वाले ने कुछ कर कहा कि आनेके कानून में जो भी उपाय हो, यह हमको मिलनी चाहिए। आज न तो यह आत्म समर्पणार्थियों की ही भूमिका है, न हमारा को, और न सरकार ने ही इसे समझा है।

मांसीवी ने कहा था कि 'हम यह समझते हैं कि जैसे गुनाह किया है तो न्याययोगी, आचार्य यह कल्पने के कि गुण्य है कि गुण्य द्वारा कल्पने के-कल का री:आवर का नहीं हैम पाएते-ते-तुर्नी शीर ही' आज हमारी यह धारणा नहीं है।

हम विद्युत को तहद बीच में रखते हैं। हमारे प्रवृत्ति कहती है कि विनोय असफल हुआ, पर विनोय का विचार जो छोटा था, वह एक छोटी-की डिमिआती हुई ज्योति केरक था, जोई अस्तित्व उसके एक नहीं थी। इसलिए यह नहीं सोचना चाहिए

कि यह असफल हुआ। असफल तो सब होकर, वह कि वह कोविद्य करने ही विमल ही नहीं करवा, वह युज हीना चाहिए था। दुनिया में समस्त कार्य ऐसे वेकर आते हैं, जो सुविस्त बनने की ही शीघ्र करते हैं और असफल होते हैं। उनकी असफलता से ही प्रवृत्ति का वदम आगे बढ़ता है।

नैतिक प्रेरणा

एक निजने बहर कि वह देव हो गया, तो उसका वृत्त साथी होता कि वह तो कभी वेच ही नहीं हुआ। पर वह निजने ने वृत्त कि आनेके कोनकी वहीवा पाव ही है। तो उनके साथी का उत्तर था कि वह वहीवा में कभी पैदा ही नहीं। ऐसी ही वृत्त बात इत आत्म समर्पण के विषय में दिखती है। आर्थिक दोस्तर ने मानव की समस्या में पहले बहुत कुछ किया है, परन्तु हाक में उन्होंने अपनी वृत्तक, 'दि लोडन एण्ड दि रोस्ट' में आरुध ही शीरी कोरके कोनकी है। इत गुण्यक में गांधी विनोय पर एक अप्पाप है, जिसमें उन्होंने निजने के कि धर्म-विनोय अवलोक

मनुष्यों का अन्त कर देने से समस्या का हल नहीं होता। मनुष्य का हल हो जाता है, समस्या ज्यों की त्यों बनी रहती है।

हुए, लेकिन उन्होंने ठिक कर दिया कि कर्तवी लेग नैतिक आत्मनो जेरेक हो सकते हैं, अनुपस्थित हो सकते हैं। जोमें के दिमें में प्रिचक प्रेरणा की शीकी दिख सकती है। क्या और कल्पि की दिष्ट के अस्तित्व में

अध्यापक हमारे देव में एक समस्या है। विधिप दृष्टि के प्रतिपक्ष में हमसे पूजा कि विनोय अध्यापक कभी नहीं बन कर रहे हैं, तो जैसे कहा कि विनोय के परशा भी आधेमें, तो भी अध्यापक लागू नहीं होता। इसका क्या कारण है। यह मैं आशा नहीं था, तो विनोय ने मुझे बहर कि यह अध्यापक हो दिखाधार हो रहा है। सब धनी कोय उत करनी को, तो यह अध्यापक नहीं बहूआर, बकि शिक्षाधार हो नाश है। अध्यापक दर तक रहता है, सब तक वह एक ही आदमी बन रहे, लेकिन सब उसे धनी करने सगते है तो यह शिक्षाधार ही होता है।

शरीर चंगा तो मन चंगा

कोर के लिए दुनिया में कोई आधार नहीं होता, पर डाडूओं की चीन्वी पर उपस्थान मिले जाते हैं, बहानियाँ मिली जाती हैं, प्रसक्त मिली जाती हैं। बीमारी के कीटाणु मनुष्य के गुणन नहीं होते, मनुष्य की गुणन, उदाहरण और अनुपस्था ही उसके गुणन हैं। शिन्ती बीमारियाँ-सौंगी, उनके अपने उपचार भी होने चाहिए। मनुष्य की वैकुरी ही उसके गुणन है। जहाँ स्वस्थता है, वहाँ स्वस्थता होती। अगर शरीर चंगा होगा, तो मन चंगा बन कर होगा। अधेरिका आदि दिमें में जहाँ स्वस्थता बरम लीना पर है, लेकिन शकटों का कदना है कि वहाँ शरीर तो स्वस्थ हो गया, अगर मानविक बीमारियों बहू रही हैं, इसलिए प्रिचक इतिहास में न्याय योग्य है। हमारे धामने रनी समस्या यह है कि स्वस्थता से हृष्ट हो बह रहा है, लेकिन उसके साथ लोगों के अपराध भी बढ़ रहे हैं।

बीरता बताना कूरता

मनोविधि को डेरर आर ही साधन-सम्बन्धों का विचार नहीं करता स्तर पर होने लया है। अध्यापक कला का विचार भी मनोविधि कला पर हीना चाहिए। आत्मन प्रवृत्ति का उपचार मनोविधि कला ही कर रहा है, हीना चाहिए, बकि आध्यापिक होना चाहिए।

नयी तालीम और सर्व सेवा संघ

अब हम अरा हथ पर धीरे-धीरे कि कर्मी हम इन लोगों को बंध उपर्य समझने समने हैं, इन्हें नीकर उपर्य कर्मी मानने हैं। ये बहुत सेकर आते हैं, विदेशी को उतारी हैं, निजी का पर पक्ष देखें हैं, किसी को कर्मीन हट्ट लेते हैं, जो सामने आता है उसे हम उतारे हैं। कोई ऐसी नीरता को इन सारे कर्मी में दे नहीं। विचार धीमे-धीमे जो यह करता है। यह तो साम्य आर नहीं कहेंगे कि नरता और नीरता एक ही चीज होती है। अराधियों को देने यह बात समझानी है कि यह प्रस्ताव है, चीरता नहीं है। हमने पुलिस को और सरकार को अपनी तरफ समझाने की कोशिश की है कि नरता सेने में बहादुरी कम है, पिता की हीनता व प्रस्ताव अधिक है। जहाँ प्रस्ताव अधिक होती है, वहाँ चीरता कम होती है।

अपराध की बुनियात

कुछ समय पहले मित्र-सुरेना के क्षेत्र में भ्रूतान के विरुद्ध हमें वच में दूसरा या तर वच में, अराधियों में और राक्षसी में जो लोग मिलते थे, हेतुमास्टर और मित्रिय से केकर पीड़ित तक, वे सब बाहुनी के बहुत प्रभाव को। अब उनके कथन-रथे कि मित्र-सुरेना में पहले से ही इसकी वच प्रयोग प्राप्त हो, जो वर्य उपर्य समने पाते हैं, उनके अराधन व निराकरण करने की शक्ति-उच समान में बैठे रह सक्ती है। इस प्रकार के समाज में अराधन के निराकरण की शक्ति रह नहीं पाती। सरकार कुछ नहीं कर पाती, यह सही है, पुलिस अधिक ही नहीं कर पाती, यह उरसे भी अधिक सही है, विनोच मायापान हुआ, यह उरसे भी कहीं अधिक सही है। लेकिन इन सबकी बुनियात क्या है ?

इनकी बुनियात मेरे और आपके भीतर बैठी है। सवा के कचना और देक से कचना, से दो चीरें बड़ी निरव की उरती पाती हैं। केवल उपर्यार ही नहीं, साधारण नागरिक भी यह मानना है कि आप उरसे वर उरसे और तुमने मानने के पाव आने, तुनी नरु ने आरका सामान नहीं देता तो निरक गये, यदि देता तो और आरके पाव कोरें नया कचना हुआ भी तो आपने यह दिया कि बुध नहीं है, रोके के हेतुमाको की नीरें हैं और उरसे भी यह दिया कि आपने जाते। अब यह होविपार निकले। हमारे एक मित्र ने कहा कि हमारे यहाँ सांख्यिक संस्थाएँ हैं, जो दो-दो हीनको उरती हैं। तो देक से वच कचना है वह होविपार समता वाला है। जो सवा के वच कचना है, जो देरी जेत से मात कचना है वह वही अधिक अराधन्य उरसा याता है। मिने सेक की अराधन्य को मात कर दिया उस देरी को सब लोग होविपार मानते हैं।

इसका मुख्य कारण यह है कि

[सर्व सेवा संघ के सहकर्मी श्री राधाकृष्ण ने जो धोरित भाई को एक पत्र में पूछा कि सर्व सेवा संघ का नया तालीम के उद्योग 'शेव' हो ? वह जोर को धोरित भाई ने जो जवाब दिया है, वे दोनों पत्र हम नीचे प्रकाशित कर रहे हैं। —सं.]

मित्र धोरित्य,

पत्रकरी नयी तालीम-समेलन में जो पत्राई हुई और जो निष्कर्ष हुए उपकी देने सुनाया है। मित्रने जो पत्र ने सर्व सेवा संघ को तारक से नयी तालीम के सेव में नाम बाने कंठे बने, इसकी पत्राई बरनार होनी न्या रही है। जब वे नरिया में आपने जनसाहित्य समथ नयी तालीम का प्रयास प्रारंभ किया है। इससे कुछ परता निरक रहा है, ऐसा सोच पकटा है। इन उपक योग्य से सारी-नारोकरकी नयी नया मोक्ष तक पहुंचे पचा है। जिसमें समथ नयी तालीम के प्रयोग का अनुकूल वातावरण और सोच मूल आया है। मैंने अपने नम में पूछा ही मान किया है कि यही सर्वोदय-युक्तियों में नयी तालीम का पत्र पकाना है।

अब सवाल बर-बार मन में उठता है और सारी लोग वच एरनिन होने हैं तो पत्राई को होके ही कि मात्र जो समारणें नयी तालीम का काम करती हैं, यह काम आगे कैसे करे, उनको समारणें हल कैसे हो और स्वतंत्र समवाय नयी तालीम का काम उत्तरोत्तर विकसित कैसे हो ?

इसके साथ पत्राई संबंध यह भी है कि बरनार सरकार बुनियादी तालीम के नाम से जो प्रयास कार्यरत पकती है, उसके दुष्प्रण करने में क्या सामन्य धोर कर्मात्मक हमारे पत्राई है। सज्जिनी सीर पर तालीम के मात पर सरकार विनय का प्रसास मूव लेती के बहा रही है। इसकी सही पाने पर के जने के लिए कुछ हमको सोचना पड़ेगा। सजीको वच का यह एक पुराना कार्यवेध रहा, जो आज भी उनको ही महत्त्व रखता है।

इन दोनों बातों को केकर कर्दा सारी सोचने से हमें कि समथ के वर यह वारा काम समुचित कने ही रहा है ? जो सामंजस्यपूर्ण से मित्रनी प्रथम तमिनि में यह कहा या कि समथ से ऐसा समना ही कि दोनों नरिनें समुद्र में न जाकर पुष्प में निर पती हैं। यह दोनों लोको की मनकी मरपना है। इस वारे में बरनार क्या सोच रहे हैं और प्रयत्न कविनि को क्या समथ केने हैं ?

मयापान २०, बारीकाम

२०-११-११

आपका

साचाष्ट्यम्

मित्र साचाष्ट्यम्,

प्रारंभिक पत्र मित्र। नयी तालीम के जो अनेक निर्माण हुई हैं, वह सामाजिक है। लोकतंत्र का विकास समथ ही नहीं है, अब तक तालीम की पूर्ण मान्य के विकास का आधार नहीं माना जायगा।

हमने संवैधित सामाजिक शक्ति को हेतुमा कचना विरोधी ही माना है। उनको बरना मित्र नहीं रखना, बुलान माना है।

कुत्रि का निगामी हयाक मित्र नहीं है, कुत्रि कावद है कि वर हमारे पर वर आये। किसी दिन पनीकी के पर पर देर लिखा जो सब नीरकने हो जने हैं। इसके यहाँ कुत्रि का निगामी कर्मी आया होगा। मेरे मित्र ने कहा कि

गुनाई भी एक बड़ी धोमारी है, लेकिन डाक्टर साहब जब पसीसी के पर में आने हैं जब मैं सह-सुमूहि होती दे, पुत्रि कावद कावद है जो अपनी पुत्रि संज्ञाओं बाने हैं।

इन दोनों की बुनियात में किना अन्तर आर पत्र पचा है।

पुत्रि के निरव में किना आरक, अविपार-अन्तर में सेपा, उर समथ

[२०-११-११]

इस वर का परसाव कै-कै-कै प्येगा, इसको उर यों की पुति का उपाय सोचना होगा। तुम लोग वच उरकी नरु-रचना के वारे में सोचते हैं, प्रायः उपरनी परितिक के समर्थ में विचार करती हैं। इसपर सर्व सेवा संघ के समर्थन को इसके लिए साधनी हेतने लगे थे, लेकिन कचुपा ऐसी पचा नहीं है। यह कचर है कि वर सर्व संघ का जो देव में समान है, उसके समर्थ में समर्थ के वेसाधन का अधिपत उरकी

को लेना होगा। इसका मूलन यह नहीं है कि वर का सारी उरका मानने का है। इसके लिए सर्व के 'शेव' के को में समारें होनी चाहिए। पर एक ऐसी संस्था है, जो मित्र पराउरमूल परितिक के समर्थ में जो समारणें उरितिक होती हैं, उनका समायन कूँडे वच वर उर सर्व को मान-न्या के अनुकर समथान को समथन का उरव-अन्य नहीं करता है, वर उरकवडा प्रयोग भी करे। वर और विर देर वर समथन का उरव उर मान कर दे, उर उर देर वर वर वर का वरक समथन व समथ में होगा ऐसा मानना चाहिए।

सर्वी वर उरारण के से। पुत्रि-सुत्र में वर देर मानक हुआ उर समथ देर के वार कर्मी राशीन विचार में

उसका समथ विरोध है, ऐसा नहीं माने थे। उरक समथ वरला-सर्व ही वारा वर का काम पकता था। लेकिन वर दान ने यह स्वीकार कर लिया कि एरिण विचार में वरला आकरक है, वे वरला-संघ के वरला-से उरकी 'पराउर-नेर' बना और उरना दिरगा यानी सारी ही उरती और निजी सारी वरके में। मान्य वरने लगा और वरला-संघ तप वच वर में सेग वच कीरें को समथ देता व। लेकिन वरला मान-वसतप का मान है, उरक विचार को वर वर सारी-नेर स्वीकार नहीं किया, वर एक मान्य-संघ का काम उर वर संघ की सेरे वरला गया। आज वर वर काम के भी 'कर्मि'ने में मान्य कर लिया तो उरने भी संकीरना का काम 'कर्मि'ने ही रह रहा है। सर्व सेवा संघ का सरकार मान्य-वच उरने के लिए बहाव है। सर्व सेवा संघ के संविधान सारी-संघर्ष भी संधि संघ की उरती का है।

उसी तरह वर वर सरकार ने बुनियादी शिक्षा को-पूरा पूरा मान्य नहीं किया वर, तां तक हम लोग संधि उरव प्रयोग करते हैं। प्रयोग के परिणत एक पिन सता हुआ। अब उरने सामान्यतः उर मान्य वर रही है, उरने पकने का नाम भी नरकर वर कीरें बना कर पकने, यह हट्ट है। सर्व सेवा संघ का सर्व बुनियादी शिक्षा में है वही सोचना का काम 'कर्मि'ने ही है तथा सर्व सेवा संघ के उररु-नेर नयी तालीम-समथान का समर्थन उरकी के वही है, जो सारी समर्थन का दारी-कर्मि'ने उर है।

अब प्रश्न यह है कि नयी तालीम के लिए सर्व सेवा संघ का संधि कीरें का नाम दे क्या ? कचर है। उरना का नाम सेवा संघ को संधि-वरा हीना विने के लिए उरने समथन से वराने में मान्य कराना है। मेरी समथ से केने के वार में (१) सन् १९०७ के दिरनी समथन के अनुकर समथ नयी तालीम के विना की रोग करता वर (२) रचनात्मक कार्यरती को नयी तालीम-संघ बनने वर संधि कर्तव्य।

अरु वर लेती को सरकार भी वर सरकार को धोरित कि दे एक 'वि'क एरि-संधि वी'क बना कर उर काम को उरने। नर की सारी संधि उर उर को वररनेको को समथ बाने में ही रगामी चाहिए। मैं मानता हूँ कि इने निरकी विरोध-परितिक की वर की है उर पूरा वर वरने में।

पुत्रात्त परिचय भाई

शुद्धमनस्यज्ञा

श्रीकृष्णगीतिरिति

ग्रामदान जीवन का कार्यक्रम है

जंगल हमें सावधान कर रहा है, कड़वा है की सब ग्रामदान होने, भौंडी बात मत बोलो, जरा धरती छेड़ना कम करो। हम दूधवाले हैं की हम क्यूँ करे। ग्रामदान का कूल लोग मरने, जीवन वांछनी का है। कोजी भाग मरना, कोजी मल, कोजी पर हो। ग्रामदान ही जीवन का कार्यक्रम है। यह जीवन के लोभ को प्रतीति बनें नहो। कोलकोम हेमाले मन मोड़ना नहो है। कोले हर गाँव को लोग जीवन जतने है, कोले हर गाँव ग्रामदान होगा कोलकोलकारकारकार वदकोम। कोल जगह डोरो हीं न हेमको पूजा की जीवन ग्रामदान हो रहा है, अब भीतको छेड़नास गकोन। कोलकोम को ग्रामदान को न होनासना। अब को वाने मरे कार्यकरना। कोले कादकना है-को डोरो हीं, सरकार को दुबारे अकसर, कागरेसवको, कोलेके और ग्रामदान करने कोले को आदी स हमार कोकर है। जीवन की वीकीको बचनदीया जा रहा है। कोलकोम डरो मते और रूप ग्रामदान है डाको, को करकार का रंग बदकोम, नीली बदकोम, मारस का नकसा बदकोम, कोलको छेड़ना नहो है। दस साल पहले कोलको सुफरती हेमको थी, कोसको कम सुफरती मगर हीको को हम कहको की यह नहो हीं वाहा है। कोकोन यह कोले बाळा है, यह तो परमेश्वर को सुकना है।

जीवनपत्र, २२-९-६१ श्रीवीरवा

लिपि-संकेत F = 1, I = 2, स = 28, अनुच्छेदर हरेच चिह्न है।

सत्ता की होड़ और लोकशाही

आगामी चुनावों को लेकर चुनाव प्रतीक प्रयोग में जो विवाद उत्पन्न हुआ है, उसमें एक ओर से 'बिजनेस' पक्षों के सुप्रीम अत्याचार, भी यथानुसार देहाई और दूसरी ओर के गुजरात के सर्वप्रथम मुख्यमंत्री, डा० जीवराज मेडता ने सार्वजनिक रूप से आक्षेपों में बचाने दिये हैं। इस विवाद में एक ओर भी मोरारजी भाई और दूसरी ओर भी देहाईपक्ष के नाम भी लिखे जाते रहे हैं। किसी भी चीज की जब होड़ खसती है तो अन्धे-अन्धे लोग भी उस होड़ के परिणाम से बच नहीं सकते, फिर उपाय की होड़ को और भी जीतवासी होतो है।

नृणाव को जब आयेगे, तब आयेगे और नृणाव में विफल होत मिले, यह दूसरी बात है; पर अभी तो मुख्य होड़ इस बात की है कि चुनाव में उदरे होने की आवश्यक-दिशि-विशेष मिले। उदरे-बर्न हर प्रांत में जायेके के दिक्कतों के लिए एक अभीय तरा की होड़ लगी हुई है। मुख्यतः देश उन चन्द प्रांतों में से था, यहाँ से सार्वजनिक जीवन में गुजराती सामने नहीं आनी थी। पर अब यह स्थिति आती है, सब मादस होना है कि पहले भी अन्दर अन्दर यह रही होगी। और, यह सब क्रमेल सभजन का आधुनिक मामला है और हमें इसमें नीरों पिरोप दिखवनी पड़ी है।

लेकिन गुजरात के इस सार्वजनिक विचार में एक भी गड़बड़ी नहीं है, मिश्रणी और लोगों का यथान आयोजन। भी मन्म भाई देहाई के इस आरोप का कि डा० जीवराज मेडता ने गुजरात प्रदेश चुनाव समिति के निर्णयों का भी विरोध किया, उलते न केवल कोलेके वरथा की प्रतिष्ठा को धक्का लगाया, वरकि "भी मोरारजी भाई के नेतृत्व" को भी लोके आयेगी, जगह देते हुए डा० जीवराज को भी बचान दिया है, उसमें उदरोंने कहा है।

दुष्प्रकार यह है कि (कांचेले पार्टी में) कुछ लोग अने कलम्य का रूप रखते हीं, जब कलम्य से त्रिभुज प्रकाश का मतम्य रखने का मुझे या इतरो को अधिकार है या नहीं? की घोषणाकी भाई के मतम्य से त्रिभु, पर कांचेले के रिचाल की मरवाते के अन्तर्गत सब लोके की बात को भी मोरारजी को तोतागरी की घनीनी हीं वा कांचेलेको निर्भर करने कोना किया जाय, तो केने मरवात के अन्तर्गत यह प्रामाणिक मत-नेह को बना लेते के बराबर होना। इतना ही नहीं, कलम्यको कलम्य बहु कांचेले के लोकशाही स्वकष को भी कलमको बनने के कारण होना।

डा० जीवराज की यह कलम्य से नृणाव सार्वजनिक केवनेको को देना खजना है कि कोलेके अन्तर्गत आज देही रिपट में या रहा है को प्रामाणिक कलम्य की भी गुजरात कम रह गयी है और 'देहा' के अनुभव का अनुभव को ही लोकेके हीं जाती है। इन लोगों की इस बात से दुःख

देना स्यामाधिक है। पर इतरो कलम्य से सत्ता-भासि होउके में लगे हुए किसी भी सभजन के लिए उलके "लेवशाही स्वकष" को दिवाये रजना स्वकष नहीं है। लोकशाही का नाम इस मुले हीं उदरे रहे, पर अयोगिक और राजनैतिक केंडीकरण और केंडित स्वकषका के इस नमयने में लोकशाही की आत्मा को बचाने रजना स्वकष नहीं है, यह डा० जीवराज जैसे अनुभवी लोगों की समल में आ सजना चाहिए। लोकशाही की आत्मा रहना स्वकष नहीं है, और उसका जीवा लारा भयं भी यह है कि लोके एक-दूसरे के मत का आदर करे और निज राय होउे हुए भी एक-दूसरे को अपनी राय प्रकट करने का और उलके अनुहार काम करने का जोबा रहे। पर सत्ता भासि की होउ में लगे हुए स्वकष के लिए एक प्रकाश ही लोकशाही अन्वेषणा यह दिखस हीं सारिज होती। लोकशाही का बेहोरा कायम रखने के लिए हम जोडी

अस्पृश्यता का कलंक

"अस्पृश्यता के साथ बर्न का, लय और अदिश का कमी भी मेल नहीं देत छकता" - ऐसा मान कर आज के कोई भील वरी एके कहलामा धापीने अस्पृश्यता मिदान का देष्पण्य आलोचन प्राप्त किया वा। यह अस्पृश्यता आज भी चल रहा है। उलका परिणाम भी यह हील-वालील उलका पहले हीं सुभाकुव का जेल अमरक सब रिखले पैरवात था, जेवा नहीं है। मरवात के इतकष होने के बाद परिणाम से भी हमने अस्पृश्यता को मित्राल वादर कर दिया है। रिचनेको के प्रति दुष्प्रकार करना कानून अराधन है। इव गाम में कन्दे नहीं कि देष्पण्यी अस्पृश्यता, लोक जायति और कानून के कारण अस्पृश्यता की बने दिख गयी है और ये कदी कलमको सज गयी है।

इतना सही होने पर भी इस बात से दुष्प्रकार नहीं किया वा सज्जा कि अस्पृश्यता अभी कानून के चरु नहीं हो सकी। अरुमें में जो कम, देहाते में आज भी यह कायम है, हास्यिक उलकी उलकात में धरि धरि केंडी जाती वा रही है।

केवली स्वकष, प्राणिक स्वकष और हरिजन स्वकष लोके दया किलनी हीं रजना सब लंघावो हरिजन-सेवा का काम कर रही है। फलतः जेवा कि कमी अन्तिक मरवाते हरिजन सेवक रूप में

जा, चुनाव का और कानून-असमल का रोत मले हीं देते-और भोले लोगों को हम कोले में रूचि कि यही सच्ची लोकशाही है-पर निरुके दे-ए-प्रदर वषों के अन्तर्गत से जस सभी समता गते हैं कि यह बेहोरा दिखावटी है। अन्दर ही अन्दर जिल सार से कुचक चलेते हैं उलके से सब नीचे वेगानी हो जाती हैं। सत्ता ही होउ की और वैदित व्यवस्था को रीशार बनना और फिर लोकशाही की आत्मा के इनन पर हुल प्रकट करना, इतका कोई अर्थ नहीं है। सच्ची लोकशाही को अगर भीवत रलना हो तो हमें सत्ता के केंडी का विपदक करना होगा, जिन्हे उलकी होउ भी समता हीं और फिर कामप्य लोगों के मरुं को खरीदते, जगह वाले जगदल लोगों के मरुं को दाने, साधियों को गिराने, आदि का यह सारा कुचक बचाने की आवश्यकता न रहे। दूसरे के मत का आदर हीं सज्ज स्वकष में ही सभक है, देते केंडित और प्रतिष्ठाको मूलक स्वकष में नहीं, यहाँ अपने को आगे लाने के लिए, वरकि डिबाने से लिए हीं इतरे की धक्का कर देना गिराना जरुरी ही। अरर लोकशाही से हीं कालक में प्रेम है, तो आज की रचना को आनूक रहना होगा और समाज की आर्थिक और राजनैतिक व्यवस्था को सच्चे माने में विकेंडित बना होगा।

-सिद्धराज

कीर की भयनी सामना बैठक में कहा कि गापीनी से पर्न छुडि की वेडी भावना से यह अस्पृश्यता बरथा था, यह भावना, यह प्रेरणा और एडि, देना छाता है कि आज सामने से हटती वा रही है और इस आन्दोलन में जो जेव था, यह मरुत पर गया है।

यह रिपति अच्छी नहीं है। सरकारी उदाहरण से अथवा कानून से अस्पृश्यता में कमी आ सकती है अररपर, आधी भी नहीं है, पर उलके सभलका का निराकरण होना सामने नहीं। अस्पृश्यता की कलमके का मूल वे निराकरण से लिए आवश्यकता इस बात की है कि जिन लोगों के इदर में शकत कुचकरत हुए देहा है, उनके इदरों से उठे निकाल जाय। और यह कुचकरत निराकरण वा कलम है केवल प्रेम, सेवा और सद्भाव द्वारा हीं।

हमारे कार्यक्रमांशों की कडोती है- अररपरना। जीवन-दिशि और प्रेम, सेवा और सद्भाव द्वारा हीं इस कलंक को मिदना वा सज्जा है। सामान्य और जेवली वारंभको हीं मारवा और सुल्लय-दिनु धरने पर एके इव कलंक को दिवा कलने हैं। अररपरना से रहते भारत का मरवात केंवा नहीं उठे सकता। हमें एक कलंक की मिदान में प्रकणते से नेष्ठा कनी चाहिए।

-नीरुधर रतन भट्ट

मद्य-पान के विरुद्ध श्री साधु सुब्रह्मण्यम् की पद्यात्रा

छ २१ विजयपुर को निजोब की "म-म न-न-वी" के दिन कैमथाना के नेट्रक पिने के तुरान नामक गाँव से श्री साधु सुब्रह्मण्यम् की पद्य-पान छत्र हुआ। श्री साधु के साथ "गायीत्री" में श्री गायित्रय शक, श्री रामोद्गी, श्री मूर्धन्य, योगिनि आदि चारकनत शामिल थे। ककर ३०० मील चल कर पद्य साथ निवास दसमी के दिन जेवन वातुबक के कोटमर गाँव में समाप्त हुई। उसी दिन गायीत्री सत्ययुद्ध विजय किन्निर का उद्घाटन हुआ। कोटमर के करणभ श्री के रामचन्द्र राव ने समाप्ततिय में रमानिक पूज्य १०० पूज्य १००, श्री माधवराव देशपांडे ने विजिर का उद्घाटन किया। राँच की लोको की लघा में साजुजी का मर्मरस्ता भाग्य हुआ। इस लघा का उपरिवाचनगत पर साजी प्रभाव पडा।

प्राचीन दिनों की यात्रा में श्री साधु को पैंतालीस गाँवों का अनुभव प्राप्त हुआ। अक्षर गाँवों के सरपंच ही साधु के अग्र्यत्व बने थे। साथी, श्रावण की तुल्यशर्मा के बरे में श्री साधुजी का हृदयस्पर्शी स्वागत होता था। मध्य निवेश का साधुन ननानिके प्रसन्नता पाव होते थे। मद्य-पान के विरुद्ध मुक्त कदम के पारे ल्या कर मद्य निवेश को मान्य करी हुए सभ निर्वाचित होती थी।

काजी जमीन के रुब वे रास्ते, विरहर बंटे और रोचक।

विजय गाँव में प्राची दल की एक नलके के प्रवाह ने देर लिया। देतोही देवते पूरा गाँव तक मज्य हो गया। गाँव में हरिजन निराश्रमी हो गये। उन निचारी के मकानों में पानी सुनने की बजह से उन्हें सवनों के मकानों में आश्रय देना पडा। माधुय हुआ कि हर लाल हल गाँव की पानी हावत रहती है। पाना भयते बहती। विरिपुर गाँव पुँचनी, तो बहती की नदी में कि कि गोदावरी नदी की एक बड़ी क्षावत है, बाढ़ भी। नदी पार करके होपन हाडका के पीतगल गाँव पुँचनना था। कदुपुँओं की पदर के हीम मील लक हीर की साधु ने बड़ी हिमत के उठको का किया। इस घटना में श्री साधु की हिमत और आत्म समर्पण की एक विशाल प्रस्तुत की है। श्री साधु ने नदी में अपने एक साथी की लाशको को साथ लेकर शकी क्षारिणी को जौटा दिया।

मदरू के सारस्वत्येकर ने विश भक्ति और भद्रा के श्री साधु को नदी पार कराया है, उनको रिजनी भी साधुजी की साथ, मोनी ही है। वे सुर और साधु के साथ मील मील अपने बारा कामरोंको को केकर उठाने हुए आये। पद्य देसामपुँ चल के साथ उन्होंने अपने कर्षक का पालन किया है।

उस दिन शाम को पीतगल में बड़ी सभा हुई। उसमें माधुय करने हुए श्री साधु ने नदी पार करने के भाले अनुभव को भी व्यक्त किया—

मदरू मुक देनी गहरी और पौनी नदी को नदी में बहती की लवणत्व के पार कर सका, तो बह-सागर को पार करने में अणुपणु मक्ति का प्रदर्शन करती नवीं साधु बाव। उस मागपणु प्रतिक को हासिल करने में तादी, श्रावण आदि मादक द्रव्य भयत-बावक है।

मदिरालन के पुनारिषी पर मद्य के एक प्रकार का कर्णी प्रभाव पडा। सभा के अंत में कई विप्रसन्न भाई सामने आये और साधु के मित्र कह निजनी की कि तारी की यहाँ से दूकानें ही उठा देनी चाहिये।

कोटमर, —हृष्णापार

"कदली" (बहने वाला) या "वज्र" है, लेकिन व्यवहार में अक्षर के लिए उलगा दुबारापणे होने लगा। मूल साधुप्राचीन आदमी कोनी बदा और "जेनापूलेन पापानि" इस वचन के अनुसार देने के लोभ को लेकर ही कोरी, उडैही, रिशालकोरी, काया बाजार जैसे पान मुनिया में बढ़ते चले। पयोरी पान मिद गया और अरण्ये बदा। "पयोरी की आगत पर मेरी जागत," शेष कविपुत्र छत्र हुआ।

मुनिया में आज को दर तार की कामरन जारी है और तीव्र के तीकरन बनी का रही है, उसके मूल में यह अमर पैदा है।

नवंबर पंसा।

कारि है कि इस वर्ष की घात करने का इराजा भी देते को मर्य बनना है। ककर १९१६ के कपो-नोट छत्र १९१२ में न चलें, पाने वाली बनें। उनको सहायी दरभाने में लोका कर नोवे हाल के नीट करने बहते में सेना होना। लेकिन पिछे हाल के ही करने के बहते में अगले साल के पचासवे मिले। देते में हर लाल गाँव को लकी कदोती होनी चापनी। श्रावण मया चलना हर लाल छात्रा कर वीरार होनी, सैते सुकलेपन नया लाल रूप होने के पहले ही नदी सारपिरी हुए रहला है।

एक को गाँव को लकी कदोती होनी, बह पानोनी देते पर होनी। लकार को पाने मिले नीट छत्रा पर ररररं कर लरती है। अणुय नीट उपरनी के मर्हीगाँव बहती है और लोको में अणुयोन बहता है, हरलिप लकारको सपनके काम सेना पडला है, पर अलम हाल है।

एक मुद्रा हाल है, कपाज अपने अणु पूज्य पड़ेगा। पिउकडु अणु-बन बहेगा, लेकिन बह समाज में निहित होगा और कणुय वे भी बना होगा। अणुय बह होने के विनाय जैसे योग्य के दूरे प्रेते भी किये पड जायेंगे। जमीन की पारि बहती है, लेकिन तो बह अनेनी के बह उठको मित्राव, अर्थात् जमीन को किसान के हवाले कर खलना अणुय हो जायेगा।

लोक-संसार कानुम

कारि है कि वह मुद्रा-हाल कानुम के ही परगा। कानुन व्यवस्था हो। देते कोरुते के लिए सभकी सभकी हासिल करना अभयन नही है। आज बूँतीशाली को विधान के लिए तीव्र सपन चल रहे हैं, लेकिन मुद्रा-हाल के विनाय अणु-उन्नत, मिग देव ककरपरेण इराज अणु नही हो सकता। बह अपने में सितागुपुत्री भी है। आज का देस ही मर्हीगाँव है। मुद्रा हाल सत्य है, माधुय है, दिनकारी है, उणुय बह, अणुय विरालन आररररक है। इसके सपन के पूनी ही उणुय बापों, मेम ऐक्य बड़ेगा। अथ को पूज्य मुद्राबहा

तिलेय, उजोगीराला बड़ेगी और उणुय का कल्याण ही कल्याण होगा। इसके सम्प्रयोग का एक अणुय नमूना भारत मुनिया के सारवे प्रस्तुत कर रहेगा।

कुछ सुझावों पर

(१) मुद्रा हाल के पैसा नउ को कायगा ऐसी बात यहाँ है। अदनी को देते को जलरन कपूने परिमाण में रहने जानी है, और उणुकी छति के लिए लरररर हर लाल पचास नोट छरती जायेगी। एक सपन मुद्रा-हाल और दूरी तरन कपन में हूँकि (मिलने वाला हर हजार करोड़ कपनी के सेन देन लिहा के उणुय के ही लका तो अगले साल प्यावर हजार करोड कपनी की आवश्यकता होगी।) उनके द्वारा तरनको को अणुयय आमादनी होनी रहेगी और कर नसुनी में कदोती हो सकेगी।

(२) उठते योग्य के मीडे करिये पुँचेंगे, फिर भी लोका जैसे सपन करिये कपनी ही। उनका दलन फिर लखेगा।

(३) इसके संवद और लोभ हलका होगा, लेकिन सभद तिलकुल अलमन यही होगा। ककर बाई विरता उणुयवा ना लडेगा, लेकिन उलका अविवा होला लोकर-वैत। सेल उणुय देने के कदोती डरेगी। देते ही मैं एक सभलु मकान खींच कर उसको किराये पर दे दूँ तो उसकी लीजक विरता किराया सुनको और भेरे पुन-पनी को को डेड तो लाने कर, बा विरनी उस मकान की आयु ही, उस तक विरता देगा। परना मेरी पूँची वीर सानों में सतत होगी। इस तरह सुनको के सत्य करिभर और बचने से सकोठी की विरि-क-नल लकी का सभेनी, लेकिन पर विद्रोह, निरसवी, लकालेणकी विरि-क-नल रहेगी।

(४) अर्थिक विरमता भी रहेगी, लेकिन बह योग्य मरुत नही, उणुयक-उणुय और बचने को केकर-वैत। ऐसी विमला मरुत नही, प्रेरक होगी। कदि विचारिणी के मरुद हउतेरु करने नन विचारिणी को समान बउ देने के सारे विचारों अणुय लोड बँटेंगे।

अनुनिवेश के एक अणुयोन के लिए निजामादार पिता ही कपों पुन्य गया? हरलिप कि सेनापना के नी जिनमें के निजामादार की मिश्र परिपद नही बहती है, मिश्रक मद्य-निवेश की मार कते हुए प्रसन्नता पाव किया है। श्री साधु ने अपनी तरफा के लिए उठके बिले को पुना और नन उठिके की बारा कर लकार की जरूरत दूर करना चाहा।

योग्य और मदरू की वसतिगियों के मजदूरी का उदिय प्रदोय प्राप्त हुआ। पीतगल गाँव की लघा में शेकर सलिकि के प्रमुल श्री किमनरय ने अणुयदर प्रदल किया और श्री साधु की परपापा का सहागत किया।

२ अणुदर को भी साधु का परिशर मदरू में पड। उनको कोरिप और बवारा के बरों की लानी की दूकान के साथ कलारों की दूकानें भी खल हो गईं। मद्य की पुन्य बलनी मयापी गई। शाम को बही सभा हुई, किमें साधु के द्वारा करण का एक मया लोच गया।

२ अणुदर के अलाय हूँकि के लिए साधु ने परपापा में भी उणुयवा जारी रला। लाल-बला मील का बालन चक कर धाम की साधु का माया हर दिन होता था। एक तो बराली जीवन, दूसरे

(५) मुद्रा हाल मरुत होने के बाद जमीन के डेडकरे में पिछेले मालिकों को उनकी जमीन का पुनर्भाव उदरगत से देने में भी आसक्ति नहीं रहेगी। छतत (एडलनल) योग्य के बचने के लिए मुद्राबहने की किने दो-चार सपन लकार भी देनी हों, जो उसकर रंज नहीं होना चाहिये। इससे जमीन मालिक भी इस सरी मालिक के लिए अनुदुत हो सकेंगे।

आदरे, जमीन का उणुय और मुद्रा-हाल के द्वारा हर एक कायदेम को विद करे। इसके लिए हर कायदेम को चाहने वाले को उणुय दकते हों, लरिप हों और अणुयवली हों; सत्य मरुतक पालन करे, भरेके करे और सारुदिक रूप में भी करे और सुवर्ण को लघावार्ते।

विहार के वाढ़-पीड़ित क्षेत्र में श्री जयप्रकाश नारायण

• रामनन्दन सिंह

विहार सर्वोदय-मंडल की कार्य-समितिके संसदों एवं विद्योप आमत्रितों की १० अक्टूबर को बैठक के निर्णयानुसार सर्वोदय-कार्यकर्ता 'बीषा-मूठल अभियान' स्वर्णित कर वाढ़-पीड़ितों की सेवा में जुट गये। श्री जय-प्रकाश नारायण ने भी वाढ़-पीड़ित क्षेत्रों में दौरा करने का निश्चय लिया। अत्यावश्यक कार्य के तहत दिल्ली जाना अभिनाय था। अतः विहार सर्वोदय-मंडल ने १६ अक्टूबर से उनका यात्रा का कार्यक्रम बनाया, लेकिन श्री जयप्रकाश नारायण के सुझाव के अनुसार विहार के राज्यपाल ने १६ अक्टूबर को बृहत् प्रमुख लोगों को बैठक वाढ़-पीड़ितों की सहायता करने के कार्यक्रम पर विचार करने के लिए सुझाव भी, इसलिए यात्रा एक दिन के लिए बढ़ा दी गयी।

पीड़ित क्षेत्रों के दौरों में श्री जयप्रकाशजी के साथ भीमती प्रभावती वदन, जिन्हें भद्रा से हम लोग 'दीदी' कहते हैं, सुनयना वदन और मैं ट्यारवाया। १७ अक्टूबर को हम देह शारा पटना से फिजल गये और आगे फिजल से राहिया आये। राहिया टाक-संगले में आगान पर कर देह लोग पाव के सुखदोरे के लोग गये। एक-एक कर उनका सफाया गिर गद्य था और वे स्थानीय घमंटाका एवं उच्च विद्यालय में समय बित्त रहे थे। वहाँ बीमार व्यक्तियों को भी देखा तो स्थानाभाव से दवायदे के एक कोने में पड़े थे। हरिनोने के अग्रप्रकाशजी के गिकाउर की कि बिश धामन पर वे पनीव नपं के मरण बाने हुए थे, उम्र जमीन पर अब बनीन-माहिक सफाया बनाने के उद्येधे हैं। साथ ही राहिया क्षेत्र के विहार विधान-सभा के सदस्य श्री फरिखेय सिद्ध, विद्युत बाहेक-कमिटी, मुंगेर के अध्यक्ष श्री धनुमदास धर्म, विहार संघोच-मंडल के संघोचक श्री रामनारायण सिद्ध के अतिरिक्त कुछ सामाजिक कार्यकर्ता भी

राहिया में पराङ्क विद्यालय पराङ्कियों ने बताया कि 'एच-आवाक बानुन' अवि-धुवित क्षेत्र में छाग नहीं होता है, फिर भी वे बनीन-माहिकों से सफाया बनाने की सुविधा प्रदान करने का प्रयास कर रहे हैं। श्री अग्रप्रकाश नारायण के सुझाव पर बहुरिया के प्रमुख व्यक्तियों की बैठक में सर्वोदय वाढ़-पीड़ित सहायता-समितिके का गठन किया गए, जिसके संयोजक स्थानीय सर्वोदय-कार्यकर्ता भी प्रदान प्रसाद सिंह बनाये गये।

चार बनें इतना हम लोगों ने राहिया के छह भील दूर बहुरुरर बाट के लिए प्रस्थान किया। अगद-अगद सड़क टूटी हुई थी। सड़क के दोनों किनारे वाड़-पीड़ित अनाथ बैठे पड़े थे। न राते का ठिकाना, न राते की व्यवस्था। रज्जुबन्ध, बालूबन्ध, उतरोल, संगोठराय, जैतपुर, देहरिया, प्रयागपुर, पहाड़पुर, हरियापुर होते हुए बगीरथापार आये। जो नाव का हलंसाया था। डेरे ही नाव सुलझे हमी कि स्थानीयों को दौर कर आते हुए देखा। श्री शरद सिंह त्यागी, विहार सरकार के संघोचक सचिव नरेंद्र ही, विहार राज्य संघोचक परिवर्द्ध के प्रधान मंत्री एवं अखिल भारतीय पंचराय परिवर्द्ध के उय-समाजिक हैं। स्थानीय के साथ हम लोग नाव पर चलें पड़े। राते ही कर बानवों की रास घब घब एक मनुष्य की आवा मिली, जिससे दुर्गम्य भा रही थी। मनुष्य-रास की वेकल हट्टी बच रही थी। सामन्यीय में नाव स्थानीयों को दौरा कर आते हुए देखा। श्री अग्रप्रकाशजी के बसों में बच कर छद्म के रूप पर बन निर्गुण्य बने का आकाङ्क्ष किया। सामन्यीय गाँव शाकिपुर दंवा-सत क्षेत्र में परदा है, जिसके दुरित्वा भी बहरीनी गाँव थे, लेकिन अब भी बाने-बचर बहरीनी ही है। फिर नाव आये बाथी

और गाँव को देखते हुए हम लोग शाकि-पुर पहुँचे, वहाँ वे दो भौल वेकल चल कर लखौलराय अग्र विद्यालय में आना था। रात में लखौलराय अग्र विद्यालय में मौजबद एवं विश्राम किया।

हम १८ अक्टूबर को सुबह लखौली-उदय के भीर द्वारा प्रस्थान कर लखौलराय नदिवालों गये। वहाँ के सामाजिक कार्य-कर्ता भी संत प्रसादजी पहले थे ही उप-स्थित थे। लखौलराय उस स्थूल का अग्र-प्रयोग देखें, जिस स्थूल की दायरे में १५ हेक्टेरन छायापी नाइ की धारा में बह गयी। उनमें पानी की बाना एक-दो बॉल के लगे नगर आये। उनके बनेने की कबज कबानी सुन कर अंतों में आँसू के अलसा आ ही क्या उठता था। अग्रप्रकाश गाँव को यह दृश्य दर्शक नहीं हुआ और वे अपने बड़ पड़े। पृथ गाँव मानस परदा था कि मनीषी किलोने गिरा दिया था। उस रिके के पक्के मंडान को भी देखा, जिस पर पूरी बसों के निवासीवने ने बहू कर अन्नी धार की पानी की थी। बाढ़ के समय अन्न में पानी इकट्ठा हो जाया था, जो अब सड़ रहा था। लोग वहीं दारा और लडा हुआ पानी पीकर जान की रक्षा कर रहे थे। मनीषीय ही दिव्य परदा थी। दस नहीं रहा था कि वे क्या करें।

श्री अग्रप्रकाशजी के बूटने पर लोगों ने बलाया कि बुजों भी उपस्थाने के लिए उन्हें 'पिंगल सेट' चाहिए। एक लखवा के अफिक हुए एक पमिल सेट सरधावा की ओर के मेधा रथा था, लेकिन उससे कुछ सुद्ध लगता थे। स्थिती में अपने सुन्दर गद्य है, वह अभी दसवीं किलो है। १२०० पयो में से केवल दूध पर बने हैं, बाकी सिद्ध-रुद्ध परदा ही है। श्री अग्रप्रकाशजी ने प्रमनीयों को सहाय कि 'पमिल पिंगल सेट' आने में दिव्य हो को बर्यं बुरें का उपाय

पर देना चाहिए। पिंगल सेट के आधि-कार्य हुए किनारे दिन हुए है। इतके पहले भी नाइ आती थी और लोग बुजों उदाह कर पानी पीते थे। आने में छिने हुए उपचार्यों को बलाया अलापर्यक है।"

माध्य हुआ कि उस बसों में जोरों के 'अग्रप्रकाश' का चर देखा है। एक बाइरर जयवा बा रैन्य है, लेकिन रथा नहीं है। अग्ररर राहने में बलाया कि साधारण दवा भी है, लेकिन 'अग्रप्रकाश' की दवा अभी तक नहीं आयी है। कल सुन्दर बाइरर राना है, लेकिन बीमती होने के कारण बसलत के अनुवाक मिलने में फिटिनाई होती है। गाँव बासों में बलाया कि लखौलराय में छोटा बुज होने के कारण ही उनकी दुर्गति देखी हुई है। पहले केवल हीमें नदी की धारा थी, इसलिए छोटे बुज से नाम चर लखवा था, लेकिन अब किडल, कोइवाली, नारी और सीमे, वे चार नदियों मिलने के धारा दूढ़ गयी है। वसने एक स्तर से देखे में बस उपस्थाने का सुझाव दिया। लखौलीउदय से नदिवालों दूक साथ में विहार सरकारी की ओर से लखौलीउदय के 'पिंगल सेट' वाले 'अग्र' १० 'एल०' अविधारी थे। वे नदिवालों के ही लौट गये।

नदिवालों में बीच द्वारा हम लोगों ने मरीचों के लिए प्रस्थान किया। राठो-प्रयोगीय लोच के अती भी विरलें बुजारी पहले थे ही सुद्ध पर लगे थे। सुद्ध से दो पंथों की धारा पर मरीचों गाँव बुर के ही अग्रस नगर आया था। मरीचों बाते समय सिक्का लोच के हरिनम येथी को देखा, वहाँ से लोग बिकल यदी की धारा में बह गये। अग्रस मयाव भी सुझाव था। पमिल-पिंगल परसे सुखद कर रहे थे। दस के लुँकेने के समय बहरीनों की दो बसों मिलीं। हरिनोने की कबज बहानी सुन कर हम लोग पानी और बीचय में लौटे हुए मरीच लुँकेने।

संरक्षय मरीच उच्च विद्यालय का हूँता था अग्रस देहा, जो नीचे गिर घटती था। अग्रस था किनी रोडगिर पर बाइरर में अन्नी बाठगी से अग्र कर नीचे गिर घटती थी। सुझाव की सुगरी के कारण विद्यालय अग्र था। अतः उपा-धारा में वेचन सार अग्र दे गये थे और छात्र अग्र पर बह गये थे। दो सुझाव ही किलो छह विद्यालय के मिलने पर विद्या-

लय के छोटे हुए सुझावलेर के पक्के छत्र पर बने गये और बाकी गाँव पर दूध की मोटी लकड़ी के साथ धार में रह गये। कुछ बुज बाने पर लकड़ी छात्रों के हन रहे। बुज के टकरापी एक छात्र को बुज पर बह जाने का मौज देना, बस चार बह गये, मिनदा कोई पता नहीं चला। संकट की घडी में विहार की भी किलो की नहीं छाटेने, हलका हलक उपगारण सुझाव-मयाव पर चले उन दो छात्रों को मिला। उन मयाव पर दो छात्र और छह विहार की छात्र-सभ अन्नी-अन्नी बान की रक्षा में एक-दूरे की मारते एवं बासों को बुज गये थे।

श्री अग्रप्रकाशजी के साथ हम दोनों, ने गाँव में भ्रमण किया। गाँव अग्र प्रयोग के १५ सर्वोदय कार्यकर्ताओं के साथ विहार के कुछ कार्यकर्ता राठो की अर्वा, गिरे हुए पर के सामान मितालेने पर अन्य ठेका बान में लगे थे। वहाँ हुए अग्रसय एवं चारों की सुविधा के हन उप-रहा था। अग्रद-अग्रद बड़े हुए अग्रस की टोटी बसती मकर आयी, दूध गाँव भयभीत था। 'बिज विद्यालय के पारसे ही मय अग्रस था वह आया था पर जाने के अग्रस में भूय से हन गाँव है। सरकारी की ओर से निष्का-रुधन का भी सुझाव मिला परदा था। उस गाँव के निवासी की लठगी लखौ-लखौल के कर्मबारी थे, उन्होंने गाँव छवि, आबारी आदि का दूरा बरिच भी अग्रप्रकाशजी की पढ़ कर दुनाया। मरीचों गाँव का टोला मरीचों के हन है। रामनगर बहुरुरर हीन बसों के हन था। १० परिवार उस टोले में थे।

बाह टोला सिद्धुज टोला बान हुआ हीन है। कहीं-कहीं दूरे हुए कर्म बनें परकी बॉल के रामे मयाव आये हैं। उस टोले के एक ५० बर्षीय अग्रस गाँव में हन बने गयी, जो बाढ़ के कारण न बने लकी थी, यही भीमती थी। टोले के बाकी कर्म निवासी बाढ़ में बह गये। बाजरी की धारा को बाढ़नी ही क्या है। उस अग्रस स्थान पर बाइरर गाँव के निवासी भी लोग

मरीचों में दो-तीन बच अन्नी अग्रस कबानी बुजने समय बलाया कि हमने उनसे परिवार के छत्र बिकल बनें में बहू गये और के बनेने पर दूध तो उपस्थान नहीं बालियों की बालों ने आना बिकल बड़े। मरीचों गाँव की मरीचों लखवा १२०० थी, जिसमें २०० परिवार थे। १५५ अग्रस बान में बह गये हैं। १५५ बकलाने भी टोला बनें परदा के हन अग्रस थे। मरीचों के लठगी ५५ विद्यालय में मरीचों अग्र-प्रकाश के सुझाव गीर के हीन बनें

स्त्रियाँ अधीनता से कैसे मुक्त होंगी ?

• विनोबा

स्त्रियों ने बताया कि सुदूर पूर्व में वे १०५ मकानों में से केवल दो बचे हैं, बाकी १०२ का भग्नावशेष ही देखने को मिलता। वहाँ लोगों ने अब-लेगों के अधिकिक मनोद्वेष से सुदूर पूर्व को गिराने के लिए नदी में पुख की मंत्र की।

श्री अय्यरकाय नारायण ने अपने भाषण अथवा लोगों के बातचाल में वाचस्पत्य विषय कि वे न तो सफ़ाई की अपेक्षा करते हैं, न राजनीतिक नेता। वे तो सफ़ाई का एक केवल हैं। बापू जीतों को उनके अधिकार करना नहीं चाहिये। वे तो हाथ-उठाईने देनी सुनी हैं और लोगों की ओर वे जो मींग दे उठे वे दिग्ग और भाव सफ़ायर वह अल्प-पुंका देने और सफ़ायर करने कि उचित तथ में उन्हें सफ़ायर मिले, लेकिन सफ़ायर सहायता तो मान्य दूध में मान्य ली होगी। गरम दूध को जलाती भी अपनी दृष्टि है।

अब केवल पांच सफ़ायर के भरोसे पुनर्वास की वृत्तें से न के अल्पमें वे ही घर उभारें होंगे, वे उभार देंगे न।

प्राचीनों की हिम्मत बांध कर अपनी सहायता भाग करनी चाहिये।

एसी उच्च विद्यालय में भीयन के बाद सर्वोपरि कार्यकर्ताओं की बैठक में प्राथिक दृष्टि देकर नै बापूजी की भी सहायता के करने का निश्चय तो किया ही था, इस आगे के निम्न बीच कार्यक्रमों को बनाने के करने का निर्णय किया।

(१) स्त्री की सही जानकारी का भीयन विचार करना।

(२) प्राचीनों की हिम्मत बढ़ा कर बापूजी सहायता के आधार पर प्राथमिक निर्माण करने के लिए विचार करना।

(३) राघव एव अन्य सहायक के उचित दिशाओं में सहायता करना।

(४) अनुभव के स्वच्छिन्नों के समान आदि इच्छा कर जलपरिवहन व्यवस्था के बीच विचार करना।

(५) बीमारियों के बीच भीयन विचार-कार्य करना।

केवल में सेलपुत्रा पाना के सुलान-संग में ही की कुछ आई आने में सेलप कि

मुलानपुर धाम के १२० परिवारों में से ५२ परिवारों के घर तो निम्नलिखित व्यवस्था की गई है तथा संकड़ों बसू बाड़ में बह गये हैं।

विगत में हीन जिन में इस बीच स्वर्गीयपत्र लीए। पहले में विजय गाँव की देखा, वहाँ २२९ घरों में के २१५ तो विपुत्र ने स्वस्थान दूर थे। उस गाँव में 'अनुभव' को कोशों के दृष्टि को गया था 'अनुभव' में बताया कि उस समय भी १०० स्त्रीक सहायक से पीड़ित

श्रावण विषों को पुण्यों के अपेक्षित रहना पड़ता है। यह आन की ही बात नहीं है; बल्कि बीच के समान में जो आन में भी अधिक अपेक्षा थी। बहुत पुण्ये नमाने में जाने वेद के काल में स्त्रियों को आशुदी दी। उसके बाद अन्ततः काल गया, खास नरके बाहर से देख पर आक्रमण हुए उस काल में, स्त्रियों की रक्षा करने पड़ी। तब से स्त्रियों की अनौपचारिक का आरम्भ ही गया—स्त्री का कोई दायित्व ही, ताकि वह उसका पचास करे। यह दिव्यस्तान की शुभगी का आरम्भ है। यह गुलामी इन्कार सारद को सखीं से चली जाती है।

श्री लीशॉ गॉव की आशुदी १२८ है, निम्न में से तीन व्यक्ति की मृत्यु बाद में खा जाने के कारण हुई। गॉव के लोगों में ही पूर्वपण्यदलों के मजान पर चढ़ कर अपनी जान की रक्षा की। स्त्रियों के बच विपुत्र ने सेलपानुद गॉव विद्वान मिल। वहाँ के सामाजिक कार्यकर्ता भी बापूजी के रायरी में से केवल दो मजान बचे हैं, बाकी विपुत्र गिर करे हैं। इन्होंने के कलाय वा जैसे किसी ने बम गिर कर पूरी सखी की ही सफ़ायर कर दिया है। विद्वान में ही गरमदूध के लोग आने हुए थे, किसी ने बताया कि

उस गाँव में ही व्यक्तिों एव २५५ भविष्यी की मृत्यु बाद के कारण हुई है। २६० मकानों में से १५० विपुत्र व्यवस्था की गयी और पूर्ण सखी के लोगों में भी सहायक विह के मजान पर अपनी बात बचायी।

१० अक्टूबर को सुदूर में स्त्री-राशियों घटना होत आने और एक लोग भी तब प्रकाशनी के साथ सफ़ायरों के टांग-पुत्र के लिए चले। एकलौटाप सहायक काते समग्र सफ़ायरों के कुछ राम पुत्र गॉव में भी सहायकपत्र गाँव के आगमन के अक्षरक पर गुरंगदा अक्षरक के प्रकाशनी के सुविधाय एव समग्र स्त्रियों की आम सभा का आयोजन प्रवा सोशललिस्ट नेता भी सहायक प्रशाद सिंह ने की थी। सुदूरदा अक्षरक के बीबीस प्रकाशनी की आशुदी एक सहायक सहायक की है; श्री गीता प्रशाद सिंह एव अन्य स्त्रियों ने सहायकपत्र सुदूर-बसू, सुदूरगाँव, नानागिरा, सखी, विपुत्र-पुत्र आदि गाँवों की सखीं में बापूजी के हुए सहायक का योग्य किया। उद्वेगियों में चले कोशों का ही देखा सहायक सखाई और उद्वेग स्त्रियों में भी देखा एव सहायक अदि सुदूर होने भी आशुदी है। अन्तः अक्षरकी सखी के एक सहायक भी विपुत्र की भी लीगी ने भी। रामपुर, नाने, किमारा, नानागिरा, अन्तःपुत्र, अन्तःपुत्र रहानी आदि सखीयों की ओर से आम सखी में स्त्री का योग्य प्रथम परवाच के सुविधा ने किया। श्री सहायकपत्र गाँव ने उद्वेगित अन्तःपुत्र की सहायक के महत्त्व पर सहायक पूरे स्त्रियों के योग्यता बस कर दूरी गाँव में दूरे के मजान बचाने की व्यवस्था की।

स्त्री बीच में और आन भी नहीं देती हैं कि स्त्रियों परदे में रहती हैं। अराम में तो बहुत आनन्द है। लेकिन विचार में बच देतिये। मेरी सभा में तो बनें वहाँ जाती हैं, लेकिन दूधो सभाओं में नहीं जाती हैं। सुधा पर एक निजा पैरी है, एरलिप, वे आती हैं। फिर भी कुछ स्त्रियों को नहीं जाती, रात में आठ-नीचे आती हैं, दूधाने जाती हैं और देखा कर चली जाती हैं। अराम और जान करने के लिये मैं स्त्रियों आया हूँ। विपुत्र में भी; बहिक यह समतले नहीं है। एरलिप सखी का नाम लक्ष्मी होता है, पार्वती होता है। पर लक्ष्मी का नाम कमी विपुत्र, नारायण, हरि नहीं होता। वे नाम सुदूरों में अन्तःपुत्र हैं।

स्त्रियों को यह नहीं सिखाया गया कि स्त्री-देह में उतनी ही विपुत्र है, जितना सुधर देह में। यह सिद्धन हमारे देह में होना चाहिये। यह सान स्त्रियों और पुत्रों को भी सिखाया चाहिये। यह पराधीनता तभी पायेगी सखी हन हन विपुत्र व्यवस्था हं, अन्तःपुत्र हं यह आम लोग। जब स्त्रियाँ अपने को स्त्रीको सहायक समझेंगी, तब तब उनकी पराधीनता नहीं जायेगी।

एक सफ़ायरों के साथ-साथ जान और सहायक चाहिये। सखी में प्रेम तो है, सखी में भी है, लेकिन सखी में विचार है। यह अन्तःपुत्र है। लेकिन प्रेम को साथ साथ और सहायक नहीं होगा तो स्वाधीनता पूरी नहीं होगी।

मैंने बहुत दूर कहा है कि स्त्रियों में सहायक नहीं हुई, बह स्त्रियों हुई हैं। मीरासरी का नाम तो बन जाने हैं। इस प्रदेश में स्त्री का नाम सहायक बताया है। ऐसी विचारों तो हैं, लेकिन ऐसी शिक्षा अभी तक नहीं मिली है कि स्त्री सहायक सहायक है और उसका अन्तःपुत्र सहायक है, सहायक का सिधयन उसके दृष्ट में है। सहायक सखी है कि जान और सहायक का अन्तःपुत्र है। प्रेम के कुछ काम बसाते हैं, पर में अन्तःपुत्र और लीकन होता है। पर एतने के स्वाधीनता नहीं होती। देह के अन्तःपुत्र, अन्तःपुत्र का सहायक सखाई, यह जोरने की अन्तःपुत्र होती चाहिये।

'पुत्रों के अधीन होने के लिए मैं जो का क्या हुआ', ऐसी सखीय आन स्त्रियों को जलपन दे मिलती है। सहायक में लीकन देह का है। स्त्री और पुत्र दोनों अन्तःपुत्र हैं। पर सहायक अन्तःपुत्र में उद्वेग है। लोग सहायक के कि भावित तो भाव्य का अन्तःपुत्र है। सखी सखी है और पुत्र अन्तःपुत्र है। यह आन-देखन और बह सखाई। अन्तःपुत्र सखीय को आनन्द। यह है सहायक और बह पार्वती। यह है विपुत्र और बह लक्ष्मी। ऐसी सखीयों हवाएँ लोग करते हैं। विपुत्र तो पुत्र-पुत्र है और सखी-देह में भी है। सखी दोनों के देह में है। स्त्रियों में जो उद्वेग विपुत्र

बह विचारों प्रहरी है। समग्र में ही जलपन है कि सहायक-सहायक का सहायक सुधर पर और सहायक-सहायक का सहायक सुधर पर और यह विपुत्र सखीय का सहायक सखीय है। जो देह-सखी है, बाहे विपुत्रों का हो, बाहे स्त्रियों का, दोनों सहायक के सहायक और अन्तःपुत्र-सखी दोनों का जो है, बह है सहायक-सहायक। बह सखी और सहायक सखीयों को होना चाहिये। सुदामी ने, सखीयों ने सुदूरका जाने का सही सहायक सहायक है।

विपुत्रों को यह नहीं सिखाया गया कि स्त्री-देह में उतनी ही विपुत्र है, जितना सुधर देह में। यह सिद्धन हमारे देह में होना चाहिये। यह सान स्त्रियों और पुत्रों को भी सिखाया चाहिये।

यह पराधीनता तभी पायेगी सखी हन हन विपुत्र व्यवस्था हं, अन्तःपुत्र हं यह आम लोग। जब स्त्रियाँ अपने को स्त्रीको सहायक समझेंगी, तब तब उनकी पराधीनता नहीं जायेगी।

मकानों में सेलने हैं-एकली' घर में नहीं है। सेत का साहित्य होला दे-काम करने के लिए घर 'स्त्रियों' को जलपनी। अन्तःपुत्र बापूजी की। इस सहायक 'स्त्री' की 'स्त्रियों' के साथ जोड़ा है। अब स्त्रियों स्वाधीनता चाहती हैं तो अपनी स्त्रियों के नाम नारायण, हरि, विपुत्र रखने चाहिये। पर निराना है ही नहीं के आरम्भ करना चाहिये। कोई सखाय नारायण है और कोई लक्ष्मी की है। कोई सखी लक्ष्मी की है, कोई सखी नारायण भी है। सुधर सखायों की स्त्री लक्ष्मी नहीं बनें-नाम, हन, हरि सखी और स्त्रियों लक्ष्मी, पार्वती सखी। लेकिन जो आशुदी जाती है, वे सखी परदे नाम रखें।

बह विचारों प्रहरी है। समग्र में ही जलपन है कि सहायक-सहायक का सहायक सुधर पर और सहायक-सहायक का सहायक सुधर पर और यह विपुत्र सखीय का सहायक सखीय है। जो देह-सखी है, बाहे विपुत्रों का हो, बाहे स्त्रियों का, दोनों सहायक के सहायक और अन्तःपुत्र-सखी दोनों का जो है, बह है सहायक-सहायक। बह सखी और सहायक सखीयों को होना चाहिये। सुदामी ने, सखीयों ने सुदूरका जाने का सही सहायक सहायक है।

विपुत्रों को यह नहीं सिखाया गया कि स्त्री-देह में उतनी ही विपुत्र है, जितना सुधर देह में। यह सिद्धन हमारे देह में होना चाहिये। यह सान स्त्रियों और पुत्रों को भी सिखाया चाहिये।

“हिंसक सेना सिर्फ उपद्रवों के समय ही कार्यप्रवृत्त रहती है। लेकिन शान्ति-सेना उपद्रवों के समय तथा शान्ति के समय भी कार्यप्रवृत्त रहती है। शान्ति-काल में शान्ति-सेना रचनात्मक कार्यों में लगी रहती है, जिससे देशों का ही जाना ही असम्भव हो जाता है। वैसे ऐसे लोक के फिरेक में रहते हैं कि दोनों सड़ने-समाजने वाली जातियाँ सम्पर्क में लगी जायें, शान्ति-अन्वयन किया जाय और इस प्रकार के कार्य किये जायें, जिससे हर व्यक्ति, पुरुष और स्त्री, प्रौढ़ और बच्चे, जगस से एक-दूसरे के सम्पर्क में शान्ति से, रहे। ऐसी शान्ति-सेना किसी भी खतरे का सामना करने के लिए उन्मत्त रहती चाहिए और जनता के क्रोध को शान्त करने के लिए आवश्यक मात्रा में उन्हें अपनी जान तक ओसित में डाल देनी चाहिए। इस प्रकार के कुछ ची या कुछ हथारों का ही गुप्त शक्तिदान इन देशों को हमेशा के लिए यचना देना।”

“साधारणतः शौची आने के बिना पहले ही नजर आते हैं। अगर इनका पता लग जाय, तो शान्ति-सेना काय भयंकर सक्न नहीं छहरेगी, किन्तु पहले से ही परिस्थिति पर काबू पाने का प्रयत्न करेगी। काय यह ज्ञानोन्मीलन अधिक पैला जाता है, तो यह अचका होगा कि कुछ कार्यकर्ता अपना पूरा समय दे दें। लेकिन विनाकुल ऐसा ही हो, यह आवश्यक नहीं। मूल उद्देश्य यह हो कि इस विचारधारा के अधिक-से-अधिक जगुणे और सचचे स्त्री-पुरुष निर्माण हों।”

सैनिक की शिक्षा

सिख प्रकार किसी को शिक्षा की शास्त्रीय पाने के लिए हत्या करने की कला सीखनी पडती है, उन्ही प्रकार अहिंसा की शास्त्रीय पाने के लिए आत्म-समर्पण की कला सीखनी ही पडती है।

मैंने इस विचार का विशेष विचार कि अहिंसा सिर्फ पुरुष ही जैसे वनों के लोगों के लिए अभाव है और मेरा दावा है कि अगर उचित विचार की साथ तथा ठीक मनुष्य विचार जाय, तो सर्वसाधारण लोग भी अहिंसा का अध्ययन कर सकते हैं। हिंसक सेना की प्राथमिक शिक्षा का कुछ योजना का शिक्षा धारित सेना के लिए भी आवश्यक है। यह है मनुष्यजन, कथानक, 'कोरिज' में माना, ध्वजरोधक आदि।

धायक को अन्क कैसे ज्ञाना, यह हर स्वयंसेवक को जानना चाहिए। प्राथमिक शिक्षा के लिए उसे अपने साथ पथी, पेंसिल, चूरी, चागा, जल-नियंत्रण का बाहू आदि से चलना चाहिए। आगे भेजे हुशाना, तिना जले शान्त के क्षेत्र में भेजे हुशाना, सामग्री के साथ भा उलठे विचार कथानक के लिए अंधारा पर कैसे चलना और सुरक्षापूर्वक कैसे उतरना, यह सब उसे मालूम होना चाहिए।

शान्ति-सेना की शिक्षा में यह अत्यावश्यक है कि ईश्वर के प्रति अत्यंत भ्रम हो, शान्ति-सेना के प्रयुक्त की आशा का पालन अन्धकारपूर्वक तथा पूर्ण रूप से हो और शान्ति-सेना के विभागों में सामाजिक एवं साक्ष्य प्रयोगों को रूप से हो।

लेकिन एक बात इन सब धारकों में सर्वसाधारण स्त्री और बच्चे, ईश्वर में अत्यंत भ्रम। तिना उन्में विश्वास हुए से शान्ति-सेना प्रयुक्त है।

हमें शिक्षा चाहिए कि शिव शान्ति-सेना की हमने कथना की है, उसके सदस्यों की कथा योजनाएँ होनी चाहिए।

होना चाहिए।

(३) यह राम अथेले या कल्पों में हो सकता है, इतिहास किसी को इतना ही करने की संकल्प नहीं। गिर भी आरम्भ सम्भावना: अन्तर्नी बली में से कुछ शान्तिपूर्ण हो हर हर श्वानिक सेना का निर्माण करेगा।

(४) शान्ति का यह रूप व्यक्तिगत सेवा द्वारा अपनी दली या किसी गुने हुए क्षेत्र में लोगों के साथ ऐसे सम्बन्ध स्थापित करेगा, जिससे वह उसे मही स्थितियों में काम करना पड़े, तो उपद्रवियों के लिए वह विरुद्ध ऐसा अवयवी न हो, शिव पर वे शक करें वा वो उन्हें नागपार मालूम पड़े।

(५) यह करने की वो जरूरत ही नहीं कि शान्ति के लिए काम करने वाले

प्रथम शान्ति-सैनिक

शान्ति-सेना के बारे में जोसता वा। मैं एक मनुष्यजन में वा कि बापू की आशिराई इच्छा की शान्ति-सेना की स्थापना, जो पूरी नहीं हो सके की, शान्ति-सेना नहीं बन सकी थी। लेकिन एक दिन मेरा धर्म हुए ही गया। इस साल तक मेरे विचार में जो बात बंद न सकी थी, वह एक दिन में बंद हुआ। इस साल पणजी की के समुक्ति-विचार पर मेने कहु-शान्ति-सेना बन चुका। उसका प्रथम शान्ति-सैनिक बन चुका। उसका प्रथम सैनिक बन चुका। वह अपना काम करते बला गया। मन हमें उसके पीछे जाना है। गांधीजी शान्ति-सेना के प्रथम सेवापति से और प्रथम सैनिक को थे। सेवापति के नले जून्ने बनेश विषयों के शान्ति के बने उनका पालन करके वे बने गये। इसलिये इस भ्रम में नहीं रहना चाहिए कि शान्ति-सेना नहीं बन सकी। हमें सचसना चाहिए कि शान्ति-सेना की स्थापना ही हुके। एक नया शान्ति-सैनिक बन चुका। अपना काम कर चुका और हुतारत सां-रहित कर चुका। [४ दिसम्बर, १९४०-५८]

कि उसके हृदयों में ईश्वर का निवास है और ईश्वर की उपस्थिति में किसी भी मन की संकल्प नहीं। ईश्वर की सन्-स्मरणकता के शान का यह भी अर्थ है कि किन्हीं विशेषी वा गुणों का वा सकुमा हो, उनके श्रावों का भी हम सहायक हों। यह धरतन देखनाही उस समय मनुष्य के शोष को जाल करने वा एक लीका है, जब कि उसके अन्दर का प्रथम्यार उल पर हाथी हो।

(२) शान्ति के इस रूप में शिव्या के सभी साक्ष्य-साक्ष्य बलों के प्रति समान अन्ध होनी चरती है। इस प्रकार अन्ध बने दिन्तु-हो, जो वह किन्तु-हो में प्रचलित अन्य पन्ने का साक्षर करेगा। इसलिये देव में माने जाने वाले विभिन्न पन्नों के सामन्य विद्वानों का उसे जान

बाव कि स्वयंसेवक ऐसे लोगों में वे जो जीवन के विविध कार्यों में लगे हों, पर उनके पास हतना कि अपने इलाकों में रहने वाले छोटे-छोटे काम निरता का सम्भार देना हर तथा उन सब शोषणाओं को ऐसे जो कि शान्ति-सेना के उद्देश्य में चाहिए।

(८) इस सेना के सदस्यों को खास योजना होनी है। नार में उन्हें तिना किसी कठिनता जाना वा छे। वे लिट्टे आम हैं। इसके आधार पर हर एक अपना विधात बना सकता है।

उन्में अन्धता, सखे बन्द

मार्ग नीचे वे केकर हमात तक

करने का है। जन लहू का मा न

उसके लिए विचार है। गीतों में कौन

की हथि से ककरी हो गया है। स

के उलाहल और विचार का कार्य पों

केन्दों में ही चलने के बहने उसे

गौतों में तैला देने का सम्यक कार्य है।

हर एक गाँव की एक एक स्वयंसेवक

सहायक चरन भवाना चरती है। उन्

लिये बाहरी है। भर प्रस्तावों की जरूरत

नहीं है। इसके लिये तो सिम्क, बाहरी

और शान्तिपूर्ण कार्य करने की संकल्प है।

विशेषांक-परिचय

'जीवन साहित्य': एन.ए.

सं० हरिभाऊ उपाध्याय, यशवन्त देव, सं० धरमा शारदा मजूम, नई दिल्ली। विद्योत्क गुरुप गुरुक, गांधीनगर का।

'जीवन-साहित्य' में अन्ध-रुदनक का अंक 'सर्वोदय अंक' के रूप में प्रकाशित किया है। इस अंक में एक ओर वा. रवि बापू की सुनी हुई रचनाएँ हैं, वही दूसरी ओर उनके बारे में विभिन्न हथों के

—साहित्यिक, सामाजिक कार्यकर्ता और उनके निवृत्त हथों में अन्ध-रुदन-साहित्य के अन्वयण हैं। शिवजी वर 'जीवन साहित्य' में शारदावर्ष में विद्योत्क प्रकाशित किया वा। रवि बापू और शारदावर्ष में साहित्यिक हैं, जो आने वाली कई शिदियों तक दुनिया की मकाम देते रहेंगे। कुल मिलाव कर अंक अन्ध और अन्ध-नीय है।

'उत्तराज': यदोदीग शिवोत्क, सं०-२० वि ना. बाहेरीनगर, धरमन्त एकरेडिगन, नागपुर-१। साहित्य मूल्य ७ रु; हर अंक का १ रु ५० न पे।

'उत्तराज' साहित्य पत्र में दीवानी अंक 'यदोदीग विद्योत्क' के रूप में प्रकाशित किया है। वेले की पाउडर, डेव अन्ध, रविना व शारदार अंक दीवनी, होर बाउर, वेपेल आदि यदोदीग की मानकरी प्रयुक्त अंक में दीवनी है।

—पण्डित

मनुष्य-वक्, सुधारक, २२ दिसम्बर, १९४०

विनोवा-पदयात्री दल से

प्रदक्षिणा का महत्त्व—जनसम्पर्क के लिए मणिक की आवश्यकता—ईश्वर का शरित्त—धामदान को मेघो के लड़कू की उपमा—विश्व में मिश्रण हो—पहले विचार और फिर आचार—कम तक संता करने रहोगे ?—प्रशिक्षण में तंत्र नहीं, वास्तव्य की आवश्यकता—एकत्र जीना सोचोगे—श्री नीलमणि फूलन का वस्ताह।

● क्षुण्ण देवपति

शुरूकाल प्रसन्नता लेकर आया है, हवा आह्लाददायक बनी है। ब्राह्म मुर्तन पर यात्रा का आरंभ होता है, तब घना जड़ता यात्रावहन को व्याप्त किये रहता है। उममें वृष्ण पथ का चंद्रमा भी डेक जाता है। उपमा धुसला प्रकाश उठता अस्तित्व का भाग कर देता है। सारी सुविष्ट एषा महीन परदे को पीठो छिपी रहती है। विनोवा के आगे दोस-पचीस बंदमों पर चम्पने वाले 'पेताजी' के हाथ में लालटेन की बत्ती भाग दोपनी है। ज्योति आगे-आगे जा रहते हैं, पर उसे हाथ में लेने वाली व्यभिचर नहीं दोपनी है। धीरे-धीरे पी फटने लगती है। पची सामने, तो कभी यात्रु में सडो परंतमाला के पीठे गुलाबी आभा बिजली जाती है और मुक तारा अपनी दाम में बभरता हुआ मजर आता है। फिर दिन को प्रकाश में दीखता है कि हरएक शायी के बाजों पर भोर के मानों मोनी चमक रहे हैं। रात के दोस-बिडुओ के कारण धाम और पीठे, मुष आदि इतनी गोलों हो जाते हैं कि मानों राल में क्या हो जाते हैं।

सूर्योदय का आगमन होता है, तो विनोवाजी ओट्टी हुई अपनी घाल हटा देते हैं। कभी भीने पहले टुट कर देते हैं, तो वह भी निचाल देते हैं। एक दिन करते थे—'कलें अर 'अपलात-विमर्जन' करते।' याने क्या? तो देता कि लखे होकर वे अपनी गरम घाल हटाने लगे थे और पुनजानते थे—'पानी असाहजन, पैसे विमर्जन, सखीयल लीन मानेये।' भूप का लाम उठाने के लिए वे कई घर लखे बदन ही चलेते हैं।

एक दिन विनोवाजी कहते थे, 'टुट के दिनों में मुझे प्रदक्षिणा यात्र आती है। उनमें झुल करार को समान भूप मिलती है। कभी एरज मेरे पीठे है तो पीठ को मरमी मिलती है, पर जो उठ। पीठ को पुठो कि कौनला महिना है तो कहेगी 'अरिष्ट' और पैठ बड़ेया 'पिखर'। प्रदक्षिणा भी कहना जितने हुँद निकाली, उनमें बुचलता का काम किया है।'

उसीका भी अनारिमाई, जो इन दिनों कटक बाहर में शिवांगी में काम कर रहे हैं, तो वस्ताह यामा में रह कर बापस लीठे हैं। वे काम के साथ बावचीव करते थे तो बाव कमी-कमी 'माकपोषा' का 'अनादि अनंत वे अावन्' यह पुन-गुनाते थे और पुछते थे—'कवीं माई अनादि, तुम्हारे ती अनंत सचाऊ हीं।'

एक दिन विनोवाजी ने उनको भजन माने के लिए कहा, तो अनारिमाई ने कहा, 'मैं गाना नहीं जानता।'

बाबा: 'तुम्हारी बगह कोई बंगाली होता तो बकर गाता।'

अनादि माई ने कहा, 'मैं भजन नहीं गाता।'

बाबा ने पूछा, 'तो क्या लिने-गीत गाते हो।'

अनादिमाई: 'शोकगीत गाता हूँ।'

बाबा: 'शोकगीत याने क्या।'

और फिर बाबा खुद जोर के गाने लगे—'अरे ठाठो उठ बाट दे उठ बा; मेरे लेत की चमल मल खर दे मत हल।' यह सुन कर सब हँसने लगे।

बाबा कह रहे थे, 'देली, तुम्हारे लिए वह शोकगीत बनना मैंने।'

अनादिमाई: 'बाबा, भजन में इह-छिद्र नहीं गाता कि लोग समझेंगे कि यह कोई सखु ठानी का गीत है, यह माई हमसे अट्टा है, ऐसा मानेंगे।'

वे वह सचमुच कुछ होना चाहते हैं और बाबा के नाम में समर उठाना चाहते हैं।

उनके हाथ बंधे कौ हुएदर वर को विनोवाजी ने कहा, 'एक लकीं नदी के प्रगाह में पीठे और प्रगाह के लखुन को मिली, तो यह नहीं कह सके कि वह तर गयी। प्रगाह के लाम बन करना अलग बात है और लुर उठन करने काम करना दूसरी बात है। उनमें चित्त इधर उधर होता नहीं है। वरिष्ठ में चित्त का निश्चय होता ही रहिन बर है, इसलिए हमारे फारफारों को अपने चित्त का निश्चय करना चाहिए।'

हेमावहन या पहना या कि छवि केना के काम के लिए विमर्जन चाहिए। उनके साथ ही विपच-पी चर्चा करते हुए विनोवाजी ने कहा, 'हद को एक एक नाप होता है। जहाँ आकर अया पहुँच होना पया। हद का फरदमा-कमा या फरद यह अलग बात है। अत पहले तो नहीं या, बाद में आता, ताँ पल का असाहज आया। आगे कम मरक बनना चाये। पहले वह कम्पन होता है, बाद में फरद और भीडा होता है। पर वह फरदी ही, दूर नहीं। देते ही धारि वैदिक चर ही, आचार है, धीरे धीरे वह पड़ेगा।'

नीले आसमान के नीचे मुक हो कर जलीली हो छवि। यहाँ तो विरं हैं ही रंग दीखते हैं—नीला और हरा। नीले आकाश को हल कर हमारे फरम में मरु की गीली अशक्ति का स्पर्श होता है, हरा रंग तो कड़ी की याद दिखत है।—और धीरे धीरे और प्रला वेदा विहाते हुए भाग चलते हैं।

हमारे एक साथी ने अब कहा 'प्रजलिया का नाम इन हुनते हैं, कलर की बावें हुनते हैं, और इन दोहलें। तोरें की सारह। हमारे जीवन में बह का प्रकट होगा।'

बाबा की माचपदेव बाह भाषा। बापकेरने ने 'अमपोषा' में जो बर है, वही काम माने लगे—'कवीं-पने मखर दिखत प्रवेधि हरि। इवठंका जोह सम-ल्लय।'

और बहने लगे—'दुरि का मरुष पहले मान वे ही होगा। फिर वह अंतर में जायेगा, बाद में बाणी में आयेगा, फिर हाथ में आयेगा और आरंभ होये। वे सग होयी। फिर पीठ में जो उठका प्रवेध होगा और मेरा है लिए अपने 'पौर अमको के बाणों। आरंभ होने फान वे ही। याने हरि वा—मरिच और;

बीच में चीन दिन अलग सखौद मंडल की चरफरिषी के लखर विनोवाजी छे मिले। उनमें मुद्रपत्तया अलग पैठी के भूदान-मर्या की चर्चा हुई।

धामदान की चर्चा में विनोवाजी ने कहा, 'उन काम में बहुत चावपनी होनी चाहिए। उन गाँवों में पीरल बनीन बोटे का काम हो जाना चाहिए। यहाँ देस अनुभव आता ही कि गाँव के लोग अमन-विमलर के लिए शिषर नहीं हैं वे रॉन आसरी संकर वे कम कर देने चाहिए। ऐसी विरु-द्व होनी चाहिए। संकर का शोक नहीं होना चाहिए। धामदान याने मेघी का लखर है। उचमें उठ का भीडा अय होता है, तो कर्वन का अय कड्या होता है। वे दोन बह लखर पीठिक होतें हैं। शीव बाने को समझते समय किर्क 'मुक' का ही अय उचने लगने नहीं रखना चाहिए, सकि लय-लय कर्वन का मान ही बनना चाहिए।'

उत्तर लगीमधुर में दिखने के लखे सताह में विनोवाजी प्रेषा करते। कुछ अलमय में विवहाल विपचपनर और उत्तर लगीमधुर में फीप ४० अरफको मेरन के लय किया गया था। विनोवाजी ने कहा कि 'अरफको परले हुए होये चाहिए। वेहे शीव के हर पिपाही की दरतनों के लिए 'कमातर' और लखर विमर्जन होनी है, वेहे हम और आप उनके काम के लिए विमर्जण होंगे, यह बात ध्यान में रखनी होगी।'

श्री हेमावहन अलम की उल्लाही, यकिगारी नबनवान लेविचा हैं। इन दिनों लखी कमीयम में धनकुयार के अरने भी हलरेनेट्रे हैं कानून उरत में रह लुरी हैं। खरयोया आरम्य और भी अमपयब बहने के साथ उठकर हुँदो रिखार है। विनोवाजी की गणका में नर अमने-पिंडी की व्यवस्था का, रमायिक लोगों को हुनये का काम बढी है। छावी नमिय के काम



ब्रिटेन में परमाणु-विरोध प्रदर्शन—मद्रास में अग्रहार कुटों को फेरान' देने की योजना—उत्क में नागरिकों को परिचयम्पत्र जारी होंगे—विष्णु-समाज का विज्ञान ही आज के जीवन की मौलिक समस्या—पाकिस्तान में अंतर परना—बन्नासुर सर्वोदय मित्र-मंडल द्वारा वाद्यपिठियों की सहायता—देवाकी की 'सर्वोदय-पात्र जर्दी'—अध्वतसर में शराबखंदी के लिए विचार-अन्वय—जनाकी में सर्वोदय पाल समाज की स्थापना—दक्कन में सर्वोदय रिजि—ख० चोला अधिवचनमजी के लिए शोक ।

ब्रिटेन में १ दिसम्बर को परमाणु-विरोधी प्रदर्शन के विरुद्ध में सेवकों पक्ष में विचार कर लिये गये। कई बगद प्रदर्शन होने के संवाद मिले हैं। प्रदर्शन के समय सर्वत्र पुलिस का बखर पहरा था।

मद्रास के रिजिस्ट्री में १९६२-६३ का अंतिम बजट उपरिपत्र करते हुए विरोध मित्रों को छोड़ कर १५ करोड़ के अतिरिक्त उन्नत के सभी विभागों को २०-५० लाख बढ़ाना देने की नयी सरकारी योजना की है। इतिहास, १५ तथा सुदुरीगियों के लिए यह उन्नत-मर्यादा ६० करोड़ की सीमा रखी है।

सर्वथा सरकार इस आशय का एक मान्यत विचार कर रही है कि जिसने अंतर्गत देश के समस्त नागरिकों को परिचय-पत्र जारी करने बादेगे। इन परिचय पत्रों पर नोटों की विपणन करेगे। प्रमाणपत्रों कीमती अभावकाल में प्रत्येक कि देश में एक समान एक लाख अक्षर आगवाही की है। सरकार इनके विरुद्ध कड़ी कार्रवाई करने वाली है।

संघटित विचार-विरोध के कारण अविरोधन में उपग्रहणित का उपाधुत्तम में १५ दिसम्बर को फर—विचारसमाज का विज्ञान ही अत्यधिक जीवन की मौलिक समस्या है। सुदुरीग में प्रमाणक का भारतीय इतिहास अन्वय विना विषय की सुरक्षा रहने में है।

एक बन्नासुर के अनुसार शासिका में बढ़ती हुई कैपटी का सामना करने के लिए शासिका ने भारत सरकार से अन्वय करते की सीमा की है। यह दरभर बल्लपुर में म. प्र. शासी मामोयोगी की है अन्वय की लक्ष्य-वर्धन कीमत में प्रकट किया है। यह भी प्रत्येक कि विदेशों में टाकी की रिजिस्ट्री विरुद्ध की जाय, इस के लिए भारत सरकार ने सर्व उपरणीय समिति का भी गठन किया है।

मुंबई मिले के बन्नासुर के सर्वोदय-मित्र मंडल ने वाद्यपिठियों की सहायता १००४ २० ८० न० ३० नगद, ४० मन गन्ना, १८० न० सूती कपड़ा और ४०० ३ इन्चर पोटी-सामानों इच्छती की। इच्छे अन्वय ८८८६ ४० २५ न० ३० के १२५ इच्छे लखी दूर गद्य-लेखकों को भी निरतिरिक्ति भेजे हैं। उदाहरण का हाने आगे पाये है।

देवाकी (गुजरात) में निरुद्ध सर्वोदय-मित्र मंडल ने निरुद्ध सात की वरर एक शाल की ३ दिसम्बर को सर्वोदय नूतन कल्प-दिन 'सर्वोदय-पात्र जर्दी' के रूप में प्रकाशित।

अध्वतसर जिला सर्वोदय-मंडल ने अन्वयकाल के आनेकेन के निमित्त विभिन्न को बालों पर प्थान किया है। (१) वाद्य-पर बाहर शराब पीने वालों के शराब न पीने की सहायता करना (२) शराब की सख अर्थसाधों के लिए बर मर्यादित के अनुसार प्रशासकाल देकर करना।

तेनाली में 'साल दिवस' के अन्वयकाल पर सर्वोदय पात्र गणना का उत्पादन का ३० दिवस उन्वयकाल में किया। हर विचार की छाया को चार से चौक बने तक एक समाज के सर्वथा तेनाली के सर्वोदय केन्द्र में मिले। इस समय के अन्वयकाल के लिए भी निमित्त बनाने गये हैं।

निम्नलिखित की बन्नासुर (मद्रास) के आगवाही-केन्द्र में सर्वोदय-विचार विचार ४ से ६ दिवस तक हुआ। निमित्त में विचार के अन्वयकाल, १५, मार्च-कर्ता, विचारों और नों की के ठोरी में भी गणना किया। विचार का अन्वयकाल की वाणिज्य विदेशी ने किया। इसमें सर्वोदय-कार्यकार, नार्क, वि० ४० चौदे, अन्वयकाल केन आदि का विचारविरोधों को लाभ मिला।

छात्री मामोयोगी विद्यालय, अन्वयकाल (कन्नाडा), जिला सर्वोदय मद्रक, विचार और शिला सर्वोदय-मद्रक, देवाकी ने अन्वयकाल के २०० मद्रक अन्वयकाल की प्रत्येक पर लोक मद्रक किया।

- इस अंक में
- १ अन्वयकाल
 - २ देवोदय-मद्रक
 - ३ विरोध
 - ४ विचार
 - ५ अन्वयकाल मुंबई
 - ६ सर्वोदय
 - ७ बन्नासुर नेहरू
 - ८ विरोध
 - ९ विचार
 - १० अन्वयकाल
 - ११ अन्वयकाल
 - १२ अन्वयकाल

हिन्दू-मुस्लिम एकता और सौहार्द के लिए चन्दौसी में श्री ओम्प्रकाश गौड़ का उपवास समाप्त

श्री ओम्प्रकाशजी गौड़ ने २० प्र० के साम्प्रदायिक हंगों के निरोधक के दिवस चन्दौसी में १५ वीज का भी उपवास किया था, पर २० दिसम्बर '११ को समाप्त किया। इस अवसर पर एक दिन माण्डलाक चन्दौसी में सर्वोदयकाल हुआ। समा में भी उपवास काकोषी में अन्वयकाल काले हुए फटा कि आज देश में विचार की चर्चाओं बढ़ रही हैं। देश में और कीमती में एकता और सौहार्द हो, इसके लिए हमारा सभी ओम्प्रकाश गौड़ ने उपवास किया। परमाणु का फलने के बाद ही पूर्वक समस्त हुआ। यह उपवास कोई ब्रह्मण के लिए नहीं, बल्कि आल-सर्वोदय के लिए किया गया था। इस लोग भी अन्वयकाल में साम्प्रदायिक एकता और सौहार्द के लिए संभव करिये।

इसके अवसर सर्वोदय प्रभुदास गौड़ी, श्री ० दामयन्त, प्रया-सौहार्दिकिता देवा भी मुक्ति शिष्ट, कान्प्रमिष्ट नेत्र भी सुदुरीग, अन्वयकाली नेत्र भी देविकार, श्री ० बनर्सी, भी विरोधी सहायकी और श्री ० से ० श्री ० टाता ने भी अन्वयकाल मद्रक मिले।

अंत में भी गौड़ी ने इच्छकाल प्रकट करते हुए कहा कि इस उपवास में जनको सत और अन्वयकाल अन्वयकाली की अन्वयकालमार्गों और आलोचन मिले हैं। श्री गौड़ी ने कहा कि देश का प्रदर्शियों में को लागे लेते हैं, वे अन्वयकाल का शिष्टों के कारण नहीं, बल्कि अन्वयकाल के अन्वयकाल के कारण लेते हैं। अन्वयकाल का भी सुरक्षा को अन्वयकाली अन्वयकाल वाली की है और उन्हें हर विरोधकारी की निम्नता चाहिए। आने को देकर कहा कि इस आगे किसी भी का

श्री ओम्प्रकाश गौड़, २० मा० सर्वोदय संधि द्वारा अन्वयकाल मुद्रक प्रेष, बन्नासुरी में मुद्रिक और प्रकाशित। पत्र : अन्वयकाल, बन्नासुरी-१, पृथे नं० ४१११ पक्ष अंक : १२ नये नये

मुमुक्षु स्व० श्री गारदीभाई !

काशिनाराय धिवेदी

पुष्पात्माओं का स्मरण और मुग्धान ह्यारी एक पवित्र परम्परा रही है। मनुष्य इसी तरह अपने लिए आश्वासन पाता थाया है और अपने को पुष्पात्माओं का नम्र अनुयायी मान कर अपने सदा सुख और कल्याण का अनुभव किया है। इदं० श्री गारदीभाई ऐसे ही एक अनुयायी थे। उनका पुष्प स्मरण हममें से हजारों के लिए सदा ही स्फुटिकाएँ रहेंगा, इन्में सन्ने रहेंगे। एव इदं नवम्बर '६१ को श्री गारदीभाई ने स्वर्ग को अपनी माया समायक्त की! उनके मासिक-मासिक के निमित्त से यह स्मरणार्थकित उन्हे सादर-सल्लोह संपन्नित है!

श्री गारदीभाई का पदल परिवर्तन मात्र से कोई आठ साल पहले पंचिम निगाह के निशाने में हुआ था। कन्दुना प्रहरी भी और से एव '५२ के मार्च महीने में, सन्मन्ती के दिन, निवाली में एक आरोग्य-वेन्द्र और कथा-आश्रम का भीषणत हुआ। बड़ी कठिन और विचरित परिस्थिति में केन्द्र को छेड़िछाड़ों को झुक्त के तालों में डाल करना था। विष्णुल अमरनामा प्रेषण था और अमरनामे ही लेना था। एषीय इति से केना का काम करने वाला कोई वेन्द्र इतने पहले निशाने-वेन्ने में सुन नहीं था। श्रीमान्गत नने विचार और नवी इन्फेक्टिव के लिए विचार नहीं था। अन्तर्गामी वेन्ने होने से आम लोगों में विचार और शरकर का भी कोई साक्षात्कार नहीं था। विचार-प्रवाह सारा रक्षितक की मायना से सुना और श्रव्य था।

वेन्ने सेच में कित्तु भाइयों ने प्रहरी को केनाय बहनों का मुक्त किल और उतार मान से कइने स्वागत किया, उनमें श्री गारदीभाई सबसे पहले और श्रेष्ठ थे। उच समर तक निवाली-वेन्ने में रहने वाले 'मोना' समाज का जीवन सुनाने कीति-रिचामी, अविषयवाणी और विविध भावनाओं से विरा हुआ था। अज्ञान भी जो कमी नहीं थी। औपन्य तो चारों दिशाओं के होवा रहता था। प्रहरी केवा श्रीमान्गत से कोई दूर दैवान में बाकर प्रोत्साहो समान की विपणनत भाव थे, उचम सेवा कर सकता है, इहवा किसीको नो विपणन था और न इह हदक का कोई अन्वय ही किसी की गौठ में था। शरर से अपने बाजों के छात्र समर हीने की और उन्हीं अपने मुक्त-मुक्त का हाथी बनाने की भावने की बात तो किसीके प्लान में भी नहीं रहने।

वेन्ने कठिन क्षेत्र में दशा ही देरी और वेच की पूर्ण मन कर किल दो बहनों ने निशाने-वेन्ने में अज्ञान आश्रम बनाया और पूती रगारों, उनके सेवा प्रनर होने केने और कठिन-से कठिन परिस्थिति में भी कमी निचलित न होने बाते सुनारों को देय-देय कर विन आदिवासी भाई-बहनों ने अपने जीवन में पहले बार देना से इन इदं मात्र सल्ल और सेवायुक्त जीवन विगत के मत निपा, उचमें श्री गारदीभाई अग्रणी रहे।

मुक्त श्री गारदीभाई एक सत्यजन और सत्य-सेवी सत्यजन थे। आश्रम की केनाय बहनों के सन्नेके से उनका उचम सेवा भाव सत्य रूप से सामा। उनकी संतुष्ट आश्रम में अपने अत्यन्त सत्य को प्रकाना और कल्या-के कनक कल कर माने देन और अपने समाज की सेवा से उचर सत्य को सपने। अज्ञानी भी-भगारों ऐसी थी। प्रहरी अन्ने, मेहनती और उचम विमान थे। अपने क्षेत्र में उन्हींके

सेली के अनेक प्रयोग किये थे और उनमें पयोग सफल भी प्रयोग भी थे। निवाली में वेच-वेन्द्र सुन माने के धार उनकी जीवनचर्या पाली थी सेली की दिशा से हुए कर मन की ऐसी ही दिशा में रहने लगी। उन्हींके बड़ी सत्यता से अपने मन को मानना मुक्त और जीवन को अधिक-से-अधिक उचलक तथा वेगप्रदान बनाने का मत ले लिया।

एक एक करके अपने सारे सधन उन्हींके छोड़ दिये। सारा, सौते, तनका, चाय आदि सधनों के मुक्त होने में उन्ने देर न लगी। भावाहार भी छोड़ दिया। सारी सधने ली। चरला चण्णना सील किया। जुड़ सीकेके के बाद अन्गनी कीति लियारा। केठे देते वी की शिखरा। कथ क्षेत्र में अन्वय धरला सुँवा, उन्नेके अन्वय में उचम की बड़े वेग से सन्ने कर लिया। सारे परिवार में भरले हा एक सातारा बन गया। सेठें सूर कनने सग्य। गुण परिवार चलसवाकम्भी बन गया। सत्य हतना करने के बाद उन्नेके आश्रमके के लोगों में रहने वाले अज्ञानी विचरित के 'गारेण' भाइयों की भी सत्य विचार और नवी सत्य उचन का अर्थ समझाया। फिर वीरे अनेक परिचयों के कर्ता पत्नी लेग उन्नेके साथी बन गये। वीरों चाँगीय पन्नाय परिवारों ने अपना जीवनकम बरल, सखी धारण की। वेच के रहलकामे। भागी विचार और विनोय-निवार। नै उननी सखा बनने लगी। सत्य परिवारों के कृतिकाओं से सुदाम में अज्ञानी चर्चों में, सत्य सत्य और धर्मविचार भी दिया। समन सत्य और भी शौके न रहे। सखी-कथ-पाप की भी अज्ञानता। कथीय-कथीय में और सौते-अन्ने-कथीय में निगना तथा सुँवने के और सत्य-कथ सुँवने का एक विचलित ही चरक पर। उचर अत्यन्त उचम के योग अपने गैर और क्षेत्र के कमी सादर नहीं निकले थे।

उन्नेके इह निमित्त से अपने हिन्दुत्वान की माया कर ली। काशीरपर, अज्ञानप-पुरी, पदपुर, अमनेर, केसवाम आदि स्थानों में हुए सचंविच सम्मेलनों में निवाली क्षेत्र के कई भाई बहन बड़े उचलक से सम्मिलित हुए। देह दर्शन का और सत्य का भी सत्य हुए निमित्त से उन्ने गिरल, उचने नये शाले पर चण्णे का उनका उचलर बढ़ा और सखा सत्यर इहू होली बनने लगी। निवाली क्षेत्र के सारेण समाज में वद को भाई और कति-परसे परिवर्तन आया, उन्नेके पूरु में गारदीभाई की प्रवच साधना और अहूठ-वेणनी ही प्रवच थी।

निवाली के सत्य-आश्रम परिवार के साथ से वे रहने मुक्तमने थे वे कि विचका कोई दिखान नहीं थे। अपने घर परिवार से भी अधिक सत्य उन्ने आश्रम परिवार में गया था। उननी जीवन-सागर के अन्वय दिन भी अज्ञान परिवार के दीप ही रहे। आश्रम की सवालिता भीमनी कल्याण-सागी को वे अपनी सगी रहन और वेदी से भी अधिक मानते थे।

विचले सार-तन साठ से वे अपने क्षेत्र में गानी सिय के प्रानवेक बन गये थे और अपने निच, सुखी में एवे हुए मोनरीतेवा गौव में बच रहे प्रानवेक क्षेत्र में ही अज्ञान अधिक सत्य और अधिक चित्त लगने थे। उचनेके इहरे सामनेवक भी किमुनसारी सत्य के वे बने सारे बच गये थे। दोनों ने मिल कर उच लेन में लेखकिया का को अत्यन्त बनाया, उचकी सत्य सारों और वे-ने लगी थी। उचके अज्ञानक उच सारे से कथा-आश्रम और सामनेवक उच की ही नहीं, पूरे निगाह की और विवेक-प्रमाण के जाल-साज की भासी सति हुई है। उचके क्षेत्र सत्य और वेचक निवाली-वेन्ने में फिर सखी ही सखा हो, इहकी सत्य को उन्नेके सम्मानना नहीं दोखली।

अ स्मरण की साम को श्री गारदीभाई प्रोगरीतेवा से वैदत निवाली अपने कथा साम में भी अज्ञान-सत्य से मिले। कदा कि सत्य में मुक्त हुई है। उच को प्रार्थना के बाद आश्रम की कथाओं से देर तक सातवीक करे। सत्य अन्ने सत्य से। उच वही शोये।

उसी रात उन्नेके उचर सुनार आया। इहरे दिन के इहक सत्य हुआ। फिर-बरे सुनार विगतक गया। उचकी सुनार-सा समने स्या, इहक सत्यर चलाया रहा। सत्यनों ने भी देता और इहक विच। १-१० नमर तक तमिच कमी अन्नी, कमी सत्यर चली रही। १४ नमर के आश्रमके तमिचने ने गम्भीर रूप धारण कर लिया। तमिचो सते एवी। सुनार १०१ डिमी तक सुँवक गया। इहक वेचसु हो गयी। उन्ने आश्रम के बटा कर श्री सत्यरके के घर से आया गया। गिनों और परिवार वालों के आग्रह पर अतीर-अन्नेर में साठ पूँक भी हुई। सत्य तमिच सत्यर नहीं खोले। वेचो भी बने रहे। ११ नमरकी पर उच को १११ के समान भी गारदीभाई ने अज्ञानी देह जीवा समान की। वे सत्यर से और इहकी भी भावना रहने थे। भावना से उनकी सुती और उन्ने रहलके से मुक्ति मिली।

उनके मन में अपने समान की सेवा की नती लगन थी। गिनों और सत्यरके बटा लेकिया और लोकसमति कर करने को उ-र-क भावना उनके मन में कमी रहती थी। अपने क्षेत्र में उन्नेके बहनों और भाइयों के अनेक विचरित कि-कराये थे। परगारदी भी थी। सत्य-सत्यर के लिए अपने क्षेत्र को ही सार बनने के समये वे सौँय करते थे। उनकी बहनी, से के सारी सत्यर वरके सत्य-सत्य जीवन ही शिखता पदक करते। सेवासुते थे ही। उचके सेवा सत्यर, निवेन, विचलक, निरन्त और सत्य सत्यर सेक हुनार वीर देलने को नहीं मिला। अज्ञानी विगत से भाव ही थे। श्री छा-भा निरसक से भाव ही थे। अन्वय-कीलेन में सत्यर सत्य रहने और कई सत्य सत्य और अज्ञान उनको जीवन पर सदा लेटा करते थे।

वे अपने पीछे अज्ञानी पत्नी, चार पुत्र और तीन पुत्रियाँ छोड़ गये हैं। छत्ते छोटा पुत्र विचर ११ बों में पढ़ रहा है। मोनहार है। सत्य के सत्य उनकी उचर कीर ११ उच की थी।

एव० श्री गारदीभाई की सत्य के सत्यारा पुत्र बने मुक्त विगतक हुनर हुआ, उचनर गिरले १६ ३० बों में किशो आरवीकी की सु-पुत्र भी बड़ी हुआ था। और अज्ञान अज्ञान परिवारों से सत्य केने वे भी विचले आठ बों में सत्य दोनों के बीच सत्य विचलक और आभीका भी बीच भी विचन कमी गारदीभाई को स्या कि में उनने सत्य हुँ और न सुते ही सत्य कि वे मुक्त विगत हैं। उनको सत्यर इहने न केवल एक सत्यर और सत्यर को सार था, सत्यर एक मुमुक्षु आत्मा के सत्यर सत्यर की सत्य से इह सदा के लिए सत्यर हुआ है। श्री गारदीभाई का यह सुधारण हमें अधिक नय, सत्यर और अज्ञान-सत्यर नला, सती प्रार्थना है।

गांधीवादी अर्थशास्त्री श्री जे० सी० कुमारप्पा

एम० विनायक



Dr. J. C. KUMARAPPA

गांधी-आंदोलन ने जिन नये सिद्धान्तों और विचारधाराओं को जन्म दिया, उनसे भारतीय अर्थ-व्यवस्था के क्षेत्र में बड़ी भारी प्राप्ति की स्थिति आ गयी। स्वदेशी धर्म के प्रति गांधीजी की प्रबल आस्था, विवेक और मुक्त विचारों के परिणामस्वरूप ही खादी-आंदोलन का जन्म हुआ। उन्होंने लिखा है— "समाज के प्रति स्वदेशी धर्म के निर्वाह का सर्वप्रथम और अनिवार्य साधन है खादी का प्रयोग। स्वदेशी के भवत का सर्वोच्च है कि अपने आसपास की व्यवस्थाओं का अध्ययन करे और जहाँ तक सम्भव हो, स्थानीय उत्पादकों को, मले ही वे हीन कोटि के और महँगे हों, बाहर की सस्ती और उत्तम वस्तुओं के पुकारके तत्प्रीव ही देख, अपने पड़ोसियों की सहायता करे। उसको चाहिए कि स्थानीय उत्पादकों में जामे दोषों में सुधार करवाये और उनको प्रयोग के योग्य बनाये, न कि उन उत्पादकों के कारण उनका त्याग करके विदेशी चीजें अपनाये।" ("वस्तु-वा-मिदर", पृष्ठ १५ से)

विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का आंदोलन जिन्हें जाने पर यह आवश्यक हो गया कि स्वदेशी वस्त्र उसका स्थान ग्रहण करे। इस आवश्यकता की पूर्ति खादी ने की। फलतः खादी-आंदोलन का जन्म हुआ। विन्तु खादी-आंदोलन प्राथमिक औद्योगिकरण की राह से बड़ी विचारधारा के एकदम विपरीत पड़ता था।

उच्चतर विचारक और शोधकर्ता रिचर्ड डी. ब्रेम ने, जो बापू के साथ काफी समय तक शिष्यमयी आश्रम में रहे, इस विषय पर गम्भीरतमपूर्वक विचार किया है। उन्होंने इस संबंध में एक पुस्तक लिखी है, जिसका नाम है, "इकानामिक्स बाफ बाहर"—सूत्र का अर्थशास्त्र। यह पुस्तक सन् १९२८ में प्रकाशित हुई तो लेखक के विषय-विशेषज्ञ के रूप में देश के गांधीजी बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने भी ब्रेम को बहुत सन्तुष्ट वाद दिया। इस पुस्तक में खादी के बारे में प्रथम बार धारणीय दृष्टि से विचार किया गया था। इसके पश्चात् गांधीजी देखे स्थिति की खोज करने लगे, जो उनकी मानसिकता के अर्थशास्त्र का आधार और भारतीयों के अध्ययन कर इस विषय को आगे बढ़ाये, जिससे इस पर और भी अनुसन्धान हो सके।

उन दिनों भारतीय अर्थ-व्यवस्था के बारे में कुछ बोलने-की सुझावें प्राप्त थीं। कुछ सुझावें प्राचीन अर्थ-व्यवस्था पर भी थीं। इनके केन्द्र सुयोग्य स्थिति थे, जिनमें से कुछ तो विदेशों से अध्ययन करने लीये थे। किन्तु इन सुविधित और पठित विद्वानों तथा अन्य लोगों के बीच सबसे बड़ा अंतर यह था कि वे विद्वान लोग व्यावहारिक ज्ञान से सर्वथा दूर थे और दार्शनिक प्रयोग आस्ताओं का उन्हें कोई अंश नहीं था।

इन विद्वानों की इन सुझावों का प्रभावित बड़ी-बड़ी निधि में डाल डाला था। उदाहरणार्थ इन सभी की प्रथम भारतीय प्राचीन सेवी की सांख्यिक-विविध प्रकृत करने के निर्यात भी, क्योंकि उनका आर्थिक व्यवस्था का सही स्वरूप सामने आने पर सिद्धि शकल की स्वरूप बाहिर होती और इसके लिये सिद्धि सकार का योग्यमान बना पड़ा। इसलिए इन सुझावों के केन्द्र आम और सरकारी आर्थिक पर निर्भर रहते तथा अपनी धारणाओं भी इन आर्थिकों के आधार पर बना ले। भारत की आर्थिक स्थिति का ठीक-ठीक परिज्ञान इन आर्थिकों को आधार मान कर पालने से कभी नहीं हो सकता था, अतः यह सत्य था कि गांधीजी की दृष्टि कभी सत्य नहीं हुआ।

प्राचीन अर्थ-व्यवस्था का अनुचित और निरर्थक अध्ययन प्रकृत किने जाने के लिए गांधीजी कितने उत्सुक थे, यह भी कुमारप्पा ने ही उनकी पत्नी शारदादेवी के लिए गांधीजी के अर्थ-व्यवस्था के लक्ष्य में अपनी विचारधारा ठीक करे ली है तथा भरे आर्थिक विचारों को आधार मान कर अर्थ-व्यवस्था का अध्ययन करने वाले आप पहले व्यक्ति हैं। "सुखदतीत्याय की आनन्दती के निरा यह काम मैंने ही किया है।" यह कह कर कुमारप्पाजी ने जान बखानी बाड़ी; किन्तु गांधीजी ने उनकी दृष्टि न सुनी और सुखद-विलासिता के कर्मचारियों तथा रिटायरिंजों की वेधार्थ उनसे विदुर कर दी।

इस प्रकार के सर्वेचन के लिए गांधीजी काफी समय से तैयार थे। ऐसी हालत में मला कुमारप्पा के मित्र बने

रिचर्ड डी ब्रेम सुयोग्य हुआ। उन्होंने १९ अगस्त, १९११ को भी कुमारप्पा के लिए— "अप अपना नाम धारी ली। यह समय मिले तो मद्रास की हमला पर भी विचार करें और तमिल आर्थिकों के आधार पर कार्य कि इसके रूपों की बराबरी के अतिरिक्त अन्य किस तरह की बराबरी और किस तरह हो सकती है। आप इस बात की भी खबरों कर सकते हैं कि विरोधक लोगों, आधार के गलत तथा मानव-मूल्य का खार दे जाने में उपयोग के लिये के किन्हीं आर्थिक स्थिति होती है। इस प्रश्न पर भी सुझाव सुझाव दिया। आश्रम में बहुरी-उत्तु की प्रकृत की। आधार का संश्लेषण होने से पूर्ण बराबरी होती है। उन पर विद्वानों के काम की चर्चा करने वाले बर्नल मेनिस्टर अपना ही नाम के किन्हीं अर्थिक से विरोध का से विचार किया है। यह तो मैंने कुछ शकल पर कर दिया।" (अपना नाम धारी ली। आधार का संश्लेषण होने से पूर्ण बराबरी होती है। उन पर विद्वानों के काम की चर्चा करने वाले बर्नल मेनिस्टर अपना ही नाम के किन्हीं अर्थिक से विरोध का से विचार किया है। यह तो मैंने कुछ शकल पर कर दिया है।) "इस दंग से परि अर्थ-व्यवस्था तथा आर्थिक स्थिति पर विचारों किए गए तो, विरोध का से वैचक आकर्षक होगा ही, अतः इसके लिए यह पर्यन्त रूप से लाभदायक भी होगा। आप लीये अर्थ-शास्त्र के लिए इस प्रकार अध्ययन प्रकृत करना और अध्ययन और कठिन कार्य भी नहीं है।"

प्राचीन चीन की धारणात्मक अर्थ-व्यवस्था के व्यावहारिक अध्ययन और उनकी वैधु-विधियों पर विचार करने के द्वारा भी कुमारप्पा को भी सही काम प्राप्त हुआ अतः उनके लक्ष्य का आर्थिक विचारधारा में अनुसन्धान कार्य करने के बाद रिचर्ड डी ब्रेम का यह सकार था। बड़ी प्रकृत है कि भारतीयों ने गांधीजी को देश सुयोग्य विषय मान कर देने के लिए प्रकृत है। विरोध की यह एक सुचक माने में कुमारप्पा की बुद्धि इसी प्रकार की और उनके निर्णय करने लगी लीये के कि वह इन दोनों मानव-व्यवस्था में "सही बरेली" के प्रश्न पर रिचर्ड डी ब्रेम कुमारप्पा को विचार निर्णय के रूप में सुझाव माता।

पर उन्हें वे वैधु छोट सकते थे। बाहे विव कीमत पर हो, कुमारप्पा की वेधार्थ से काम उठाने का निरर्थक गांधीजी ने कर लिया था। अतः उनकी कोई भी बहाने-पानी बापू के सामने न चल पायी। कारण-सुधे कष्टकेकर ने लिखा है— "गांधीजी ने पहले एक पक्ष दिया, जिसमें उन्होंने यह इच्छा प्रकृत की थी कि भारतीय अर्थ-व्यवस्था का लीया खार करने समय में सुनिवार्य तथों का समक करने पर बोर देना चाहिए और उन तथों के आधार पर ही विवेकपूर्ण वैधानिक निर्णय निष्पन्नना चाहिए, जिनमें आर्थिकों के भ्रमबल के कारण कोई गारवी पैरा ही जाने की संशय न हो।

अब गारवी आगे बड़ी। कुमारप्पा ने बहुत ही भय और डर के साथ स्वर्ण किताबों से घारे विवरण प्राप्त किए। सारी व्यवस्था का धंधा करने में उन्हें तीन बरीने का समय लग गया। रिचार्ड के तो निष्पत्ती अतिरिक्त उनका वेधार्थ में लगे रहे। इनके दिनांक के आधारक भी आर्थिकों के शंका में समय-समय पर उनकी सहायता करते रहे। इसके बाद भी कुमारप्पा ने करीब डेढ़ वर्ष तक इन आर्थिकों की धारणाओं की, गारवी धारणाओं को व्यवस्थित रूप दिया और अपने निष्कर्ष अनेक मन्त्रों के बारे में लिखते और तब सुबरात के एक ताडके की आर्थिक स्थिति के बारे में यह आर्थिकों विचार सकार हुआ। काबालाहम अपने एक पत्र में लिखते हैं— "मालर काजरा के बारे में जो रिचार्ड आप सकार कर रहे हैं, उनमें आप विस्तृत रूप से अपने निष्कर्ष निकाले और सुझाव लिये। इसके एक नती दिया का शकल मिलेगा। आप इसे विचार ही लेखक बनाने का रहे है, इसलिए रिचार्ड के इन कोरे भेजना न होये।"

भी कुमारप्पा की रिचार्ड की इस सकार में किया गया तबसे प्रकृतों और सकार प्रकृत बहना बाहिरें। गांधीजी की इस

